

महाभारत

वा

भीष्मपर्व

श्रीवेदव्यास रचित संस्कृत मूल

हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद सहित

THE MAHABHARAT.

BHISHMA PARV

The Sanskrit text of Mahabhi Vyas
with complete English and Hindi translations.

जिसको

रामकृष्ण कम्पनी मुरादाबाद ने

“सन्तप्रधान प्रेस” में छपाकर प्रकाशित किया।

Published by

Ram Krishna & Co, of Moradabad

पुस्तक मिलनेका पता—

रामकृष्ण कम्पनी

मुरादाबाद.

To be had of the publishers
RAM KRISHNA & Co

Moradabad.

॥ श्रीः ॥

महाभारतम्

भीष्मपर्व

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

जनमेजय उवाच । कथं युयुधिरे धीराः कुरुपाण्डवसोमकाः । पार्थिवा सुमह
त्मानो नानादेशसमागताः ॥ १ ॥ वैशम्पायन उवाच । यथा युयुधिष्ठिरे धी
कुरुपाण्डवसोमदाः । कुरुक्षेत्रे तपःक्षेत्रे शृणुष्व पृथिवीपते ॥ २ ॥ तेष्वतीर्यकु
क्षेत्रं पाण्डवाः सहसोमकाः । कौरवाःसमवर्तन्त-जिगोपगतो महाबलाः ॥ ३ ॥

अध्याय ॥ १ ॥

राजा जनमेजय बोले कि महावीर योद्धा कौरव पांडव सोमक और अ
नेक देशोंसे आये हुए वडे २ महात्मा राजालोग कैसे २ युद्ध करते हुए उ
को वर्णन कीजिये वैशम्पायन बोले कि हे राजा जनमेजय वडे वीर शूर प्रताप
कौरव पांडव सोमक आदि अनेक राजालोगों समेत महा उत्तम तीर्थ कुरुक्षेत्र
जैसे युद्ध करते हुये उसको मैं कहता हूं तुम चित्तलगाकर सुनो कि वह महाबल
युद्ध में प्रशंसनीय विजय के चाहनेवाले वेदपाठी पांडव सोमकों समेत कुरुक्षेत्र

Bhishma Parv

CHAPTER I

Having looked down to Narayan and Nara the best of males as well as to the goddess of Learning, let us say of the great victory. "How," said Janmejaya, "did the brave Kauravas, the Pandavs, the Somaks and other kings, assembled from different countries, fight?" "Listen, king," replied Vaishampayan, "how they fought on the sacred plain of Kurukshetra. Entering that plain, the mighty Pandavas, and the Somaks, desirous of victory, advanced

वेदाध्ययनसम्पन्ना सर्वे रक्षाभनानन्दन । अशिसन्तो जय युद्धे बलेनाभिमुखा
रणे ॥ ४ ॥ अभिवाय चतुर्धर्मा धार्तृगणस्य बाहिर्नाम् । प्राचमखा पश्चिमभागे
न्याविशन्त ससैनिका ॥ ५ ॥ समन्तपञ्चबाह्व्यु शिवावगणि सहस्रश । कारया
मान्म । पधिवत् कुन्तीपत्नी युधिष्ठिर ॥ ६ ॥ शू या च पृथिवी सर्वा बालवृद्धाव
शोपिता । निष्कुरुरूपेवासी द्रष्टुकुम्भरवर्जिता ॥ ७ ॥ यावत्तपात्त सूर्यो हि जम्बू
द्वीपस्यमण्डलम् । तावदेव समायात बल पार्थिवसत्तम ॥ ८ ॥ एकस्था सर्ववर्णा
स्तेमण्डल वपुयोजनम् । पृथ्वीकामन्त देशाश्च नदी शैलान् वनानच ॥ ९ ॥
तेषां युधिष्ठिरा राजा सर्वेषांपुरुषर्षभ । व्यापदेश सवाहाना मन्थभाज्यमनुत्त
मम् ॥ १० ॥ सध्याश्च त्रिविधास्तात तपाराजौ युधिष्ठिर । एतवेदी वोदत्त्य

में उतरकर कौरवों के सम्मुख बर्चमान हुए, और पराक्रम के द्वाग विजयपी
आशा रखनेवाले युद्धभूमि में बर्चमान दुर्पोषण क उस दुःखमे महाखदित सेनाक
सम्मुख पहुँचकर कुक्षत्र के पश्चिम भाग में सेनाआक मनुष्यों सभेत पूर्वाभि-
मुख हो स्थिरता से निपतहुए । ५ । फिर कुन्तानन्दन युधिष्ठिर ने स्वगणपचक
से बाहर अपनी बुद्धिक अनुसार हजारों शिष्टिर अर्थात् खपटर तबु तैयार किय
और बुद्ध बालक स्त्री इनको छाडकर सब पृथ्वी क मनुष्य मात्र हार्थी घाड रथ
इत्यादि सभेत यहाँतक इकट्ठ हुए कि पृथ्वी के मद्दश निर्जन स हागये, इ राजन्द्र
जनभोग्य जहाँतक कि सूर्य में प्रकाश करना हुआ स तप्त कता है उस पृथ्वी
मंडल के सबराजा लोग अपनी २ सेनाओं सभेत आकर इकट्ठ हुये सब वर्णों
देशनदी पर्वतों की और बहुत योजन क उम पृथ्वी मडकका उल्लघन करक एक
स्थानमें निवास किया । ९ । तब गहा बुद्धिमान राजायुधिष्ठिर न उन अष्टश्री
राजाओं से लेकरम्लच्छउपर्यन्त लोगोंक निमित्त बहुत उत्तम २ प्रकारक भोजनों
के बनवानेकी आज्ञादी और भोजनक अनन्तर गति क समय सब लोगों का

against the Kurvyas Those scholars of the Vedas too great
delight in war and being desirous of victory faced the battle
field with their troops Approaching the army of Duryodhan the
invincible Pandu is stationed their armies to the west of the plain
with their faces looking East and 5 Yudhishtir the son of Kunti
caused thousands of tents to be pitched in a regular order beyond
Samantprachak It seemed as if the whole earth had poured down
there all its heroes men chariots and elephants and had kept only
the children and aged people at home The whole of Jambudvip
under the sun joined to make up the force People of all races
assembled there having marched for miles over hills rivers woods and
plains 9 Yudhishtir, the best of men ordered good food and other
necessities to be supplied to the warriors and their lists He gave

पाण्डवेषोऽय मित्युत ॥ ११ ॥ अग्निज्ञानान सवेषां सद्वाध्याभरणानिच । योजया
 मास कौरव्यो युद्धकाल उपान्धते ॥ १२ ॥ दृष्ट्वाध्वजाग्र पार्थस्य घास्रराष्टो
 महामनाः । सह सर्वैर्महापाले । प्रशयव्यूहतपांडवम् ॥ १३ ॥ पाण्डुरेणातपत्रेण ध्रियमाणेन
 मूर्द्धनि । मध्ये नागसहस्रस्य भ्रातृभि परिवारित ॥ १४ ॥ दृष्ट्वा दुष्योन्धने
 दृष्टाः पात्राला यद्धनन्दिन । दध्मु प्रीता महा शयान् भेश्वरं मधुसूतना । १५
 तत प्रहृष्टां तां सेनामग्निमोक्षयाध पाण्डवा । यमबुद्धृष्टमनसो चात्रदेवथ दीर्यवान्
 ॥ १६ ॥ ततो हर्ष समागम्य चासुदेवघनत्रयौ । दध्मतु पुरपन्व्यात्रो । दर्श्याशंसां
 रथे स्थितौ ॥ १७ ॥ पञ्चजन्यस्य तिघोष देवदत्तस्य चोभयो । श्रुत्वा तु
 तिनदं योधाः शरुन्मूत्र प्रमुष्टुः ॥ १८ ॥ यथासिंहस्य नदत स्वन श्रुत्वेतरे

उत्तम स्वच्छ विस्तरों समेत शय्या सोनेकादीं इस प्रकारसे इस बुद्धिमान पांडवों
 के वड़े भाई युधिष्ठिरने सबका यथोचित मान सम्मान करके युद्ध दर्शनान होनेके
 समयपर अपनी सेनाके मनुष्यों की पहचान के लिये सबके चिह्ननाम और
 आभूषण रणआदि में लगवादिग्ये, तब तो पशामाहसी दुर्योधनने अर्जुनकी ध्वजा
 पताकाको देखकर सब राजाओं समेत अपनी सेनाको पांडवों से लड़नेके लिये
 युद्धमें सज्जद क्रिया और आपभी अपने श्वत छत्रका धारण करके भाइयों समेत
 हजारों हाथी घोड़ों समेत उपस्थितहुआ । १४ । दुर्योधन की इस धूमराग और
 तैयारी को देखकर युद्धभिलाषी मसन्नचित्त निगय के चाहने वाले पांचालन
 वड़े शब्दापमान शंख और मधुसूतानी चाली दुन्दुभी को बनाया तदनन्तर पांडव
 और श्री कृष्णजी उस अपनी सेनाका मसन्नचित्त देखकर महा आनन्दितहुये
 फिर श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों वीरशूरोंने रथमें सवार हाकर अपने दिव्य
 शंखों की धनिनी इनदोनों शूरप सिंहशैरोके पांचजन्य और देवदत्त नाम शंखों-
 की ध्वनिकां सुनतेही कौरवी सेनाके वीरोंने मोर भयके मूत्र और विष्टा

his men various watchwords in order to distinguish them from others and fixed for them names and badges for recognition during battle. Seeing the banner of the son of Kunti, the magnanimous son of Dhritiashtra, with the white umbrella raised over his head, surrounded by a thousand elephants and accompanied by his hundred brothers and kings began to array his own troops against the Pandavas. 14 The warlike Panchals blew their conchshells and beat the sweet-sounding cymbals in glee at the sight of Duryodhan Arjun and valiant Vasudev were delighted to see those troops. The best of men, Vasudev and Arjun seated on the same chariot blew their celestial conchshells in great glee. The warriors were terrified by the sound of their peals as deer do on hearing a lion roar. A terrible dust enveloping the sun and hiding all things from view, arose with

युगाः । व्रसेशुर्निनदं श्रुत्वा तथासदित तद्वचनम् ॥ १९ ॥ बरतिष्ठद्रजो भौम
 न प्राज्ञायन किञ्चन । अतं गत इवादित्ये सैन्येन सहसा घृतः ॥ २० ॥ वचर्ष
 तत्र पर्जन्यो मांसशोणतवृष्टिमान् । दिक्षुसर्वाणि सैन्यानि तद्द्रुतामिषाभयत् ॥ २१ ॥
 वायुस्ततः प्रादुरभून् नीचै शर्करकर्षणः । विनिघ्नस्तान्यनीकानि शतशोधसहस्रशः
 ॥ २२ ॥ उभे सैन्ये च राजेन्द्र युद्धाय मुदिते धृशम् । कुरुक्षेत्रे स्थिते पक्षे
 सागरक्षुभतोपमे ॥ २३ ॥ तयोस्तु सेनयोरासीद्द्रुतः सतुसङ्गम् । युगान्तेस्रम
 नुप्राप्ते द्वयोः सागरयोरिव ॥ २४ ॥ शर्यासी पृथ्वी सर्वा बालवृद्धावशेषिता ।
 तेन जेनासमूहेन समानतिन कौरवै ॥ २५ ॥ ततस्ते समयं चक्रुः कुरुपाण्डव-

कादी जैसे कि सिंहाकी गर्भनाका मुनकर अन्य युगादि पशु भयभीत होकर मूत्र
 पुरीषादि करडालते हैं वैसेही कौरवी सेनाभी शंखोंके शब्दोंको मुनकर व्याकुल
 हागई और पृथ्वीकी धूलि आकाशको ऐसी उड़ी जिसके कारण सूर्य अस्तंगतसा
 हागया और कुछनहीं जानागया । २० । और बादलने उससमय सेनाके चारों
 तरफ के मनुष्यों पर मांस और रुधिरकी वर्षाकी यहबडा आश्चर्यरा हुआ तदन
 न्तर नीचेकी आरसे पृथ्वीके कंकड़ोंका खींचनेवाला वायु बड़े वेगसे ऐसा मचण्ड-
 हुआ कि जिसने संपूर्णसेना के मनुष्यों को घायल कर दिया हे राजेन्द्र इस
 प्रकारसे पीड़ित होकर दानों ओरकी सेनाओं के मनुष्य युद्धकरनेके लिये अत्यन्त
 प्रसन्नचित्त कुरुक्षत्रके मैदानमें नियत हो सावधान और व्याकुल होकर शोभित
 सागरकी सपानताको प्राप्तहुए अर्थात् उन दानों सेनारूपी समुद्रों का ऐसा अपूर्व
 योग हुआ जैसा कि मलयके समय दानों समुद्रों का सम्भवात हांता है, और सब
 पृथ्वी जिसमें केशल बालक और वृद्ध ही शेषरहगये वह कौरवोंके बुलायेहुए
 उनसेनाओंके समूहोंके कारणघोड़े मनुष्य रथ और हाथियों सेभी शून्य हागई २५

the march of the army 20. Flesh and blood dropped from a black
 cloud over the army It was a strange sight. The wind blew
 pieces of stone which hit hundreds and thousands of warriors Both
 the armies stood in great j y ready for action on the field of Kuruk-
 shetra, like two agitated oceans The encounter of the two armies,
 was very wonderful like the two oceans at the end of the Yug. On
 account of the great muster of the armies by the Kauravas the
 cuth was divested of men and only children and aged people were
 left at home. 25. The Kauravas and the Pandavas with the Somaks
 then entered into certain conditions and rules to be observed during the
 battle as people under similar circumstances do to fight fairly and to
 secure safety to the party which has to retire Those engaged in
 contests of words should be fought against with words, those leaving

सोमका । धर्मान् सस्थापयामासुर्दुश्चानां भरतर्षभ ॥ २६ ॥ निवृत्ते विहिते युद्धे
 स्यात् प्रीतिर्न परस्परम् । यथारथ यथा योग नच स्वाच्छलनं पुन ॥ २७ ॥ वाचा
 युद्धे प्रवृत्ताना वाचय प्रतियोधनम् । निष्क्रान्तौ पृतनामध्यान्नहन्तध्या कदाचन २८
 रथी च रथिना योद्धो गजेन गजधूर्गत । अश्वेनाश्वो पदातिश्च पादाते नैव भारत-२९ ॥
 यथा योग्यं यथा काम यथोत्साह यथा बलम् । समाभाष्य प्रहर्षय्य न विश्वस्ते न
 विह्वले ॥ ३० ॥ एकेन सह सयुक्त प्रपन्नो विमुञ्जस्तथा । क्षीणशस्त्रो विवर्माच न हन्
 तन्यः कदाचन ॥ ३१ ॥ नसूतेषु न धुर्त्येषु नच शस्त्रोप नायिषु । न भेरी शस्त्रवादेषु
 प्रहर्षय्य कथञ्चन ॥ ३२ ॥ एवं ते समयं कृत्वा कुरुपाण्डय सोमका । विस्मय परमं

तदनन्तर उन कौरव पांडव और सोमकोंने नियम करके युद्धके इन धर्मों को
 नियतकिपा कि इस नियत क्रियेहुये युद्ध के समाप्त होनेपर हम सबकी प्रीति
 परस्परमें होवे, इस निमित्त कि फिर किसीके एक से गिलाप में भिन्नभाव न
 होनेपावे वचन रूप शस्त्रों से सम्मुख होने वालोंको वचनोहीसे लड़ना योग्य है
 सेना से वाहर होजाने वालोंको कभी न मारना चाहिये रथीरथी से हाथीका
 सवारसे अश्वारूढ अश्वारूढस पैदल पैदल से लड़ने का योग्यहै अर्थात् जैसा कि
 उचित युद्ध होता है वैसाही अपने बलपराक्रम के साथ करना योग्य है और मुख
 से धोळ कर शस्त्र प्रहार करना चाहिये परन्तु विश्वासित और व्याकुल मनुष्य
 पर शस्त्र प्रहार करना अयोग्यहै १० और एक के साथ भिडेहुए शरणमें आगेहुए
 वा ऐसे व्याकुल लोग जो दूटे शस्त्र और बिना बस्त्रके हों उनको कभी न मार
 ना चाहिये इनके सिवाय सोवेहुयों का शस्त्रों के लाने वाले वा बनाने वालोंको
 भी न मारे और भेरी शस्त्र नगाड़े आदि वाजोंपर किसी दशा में भी शस्त्र न
 चलायना चाहिये इसप्रकार वनसय परस्परदेखने वाले कौरव पांडव और सोमकों
 ने नियम करके बड़ा आश्चर्य क्रिया इसके पीछे वह सब महात्मा वीर युद्ध-

ranks should not be slain, a charioteer should have a charioteer for an
 antagonist, an elephant rider with one of his own sort, a horseman
 should engage with a horseman and a foot soldier with a foot soldier
 Guided by considerations of fitness, willingness and courage one
 should give notice to another before striking No one should strike
 another who is unprepared, terrified, engaged with another, seeking
 quarter retreating, having unfit weapons or destitute of armour
 None should slay chariot drivers, beasts, men engaged in carrying
 weapons, beaters of drums or blowers of conchshells Having enter-
 ed into the above-mentioned covenants, the Kaurvas, the Pando-
 vas and the Somaks gazed at one another with wonder And
 having thus formed themselves into battle array, those great warriors

जम्मु. प्रेक्षमाणा. पस्परम् ॥ ३३ ॥ निर्विश्य च महात्मानस्ततस्ते पुरुषर्षभा ।
 ७१. सुमनसो यभुवु सहसैनिफा । ३४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्वाणपर्वणि सैन्याशिक्षणे
 प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततः पूर्वापरे सैने समक्षि्य भगवानृषिः । सवभेदवि-
 दांश्रेष्ठो व्यास सत्यवर्तासुतः ॥ १ ॥ भविष्यात् रणे घोरं भरतानां पित मह' ।
 प्रत्यक्षदर्शी भगवान् भूतभक्ष्यभावस्यावत् ॥ २ ॥ वैचित्रवीर्यं राजान स रक्षस्य
 प्रवीदिदम् । शोचन्तमार्तं ध्यायन्त पुत्राणामनय तदा ॥ ३ ॥ व्यास उवाच ।
 राजन् पगीतकालासो पुत्राश्चान्ये च पाथिव । ते हिंसन्तिव सग्रामे समासाद्यतरे
 तरम् ॥ ४ ॥ तेषु कालपरीतेषु विनश्यन्त्येव भारत । कालपर्यायमात्राय माम्
 शोके मन कृथाः ॥ ५ ॥ यदि चच्छसि सग्रामे द्रष्टुमतान् विशास्यते । चक्षुर्देदा

भूमि में प्रवेश करके, अपने पराक्रमी सेना के प्रसन्नचित्त मनुष्यों समेत मनमें
 मत्तन्न हुए ॥ १४ ॥

अध्यायः ॥ २ ॥

वैशम्पायनबोल कि युद्धके नियम होन के पछि सब वेदज्ञों में श्रेष्ठ सन्यस्तों
 के पुत्र भरतवंशियों के पितामह आगे होनेवाले युद्ध के वृत्तान्त के प्रत्यक्षदर्शी
 भूत भविष्य वर्षपान के ज्ञाता सपर्य भगवान् वेदव्यास ऋषि कौरव पाण्डवों
 की सेनाको दानों और तैयार देखकर उस शोचग्रस्त अपने पुत्रों के अन्याय के
 ध्यान करने वाले राजाधृतराष्ट्र से गुप्त प्रगजन के साथ यहवचन वाले कि हे
 राजन् तुम्हारे पुत्र और अन्य तुम्हारे सहायक राजा लोग मृत्यु के पशी-
 भूत हैं यह युद्धभूमि में एक दूसरे से सम्मुख लड़कर नाशवा पावेग, हे भरत-
 वशी उन मृत्यु के वशीभूत और नाश होन वालों में सपर्य की विपरीतता को

and best of men, with their troops betrayed the happiness of their
 hearts from their cheerful faces 34

CHAPTER II

"Seeing the two armies on the east and west ready to fight," said
 Vairahampy in, "Vyasa the holy sage, son of Satyawati, best of men,
 scholar of the Vedas and grandfather of the Bharatas, to whom the
 past, present and future were like the present," spoke the following
 words to Vichitravirya's royal son who was at that time distressed
 and sorrowful for the destructive policy of his own sons. "The days
 of thy sons and of other kings," said Vyasa to Dhritrashtra, "are
 numbered. They will destroy one another in battle and shall perish
 all, because the hour of their death is nigh. Keep in mind the changes
 brought about by Time and do not give yourself up to sorrow. I shall

निने पुत्र युद्ध तत्र निशागय ॥ ६ ॥ धृतराष्ट उवाच । न रोचये ज्ञातेवद्यद्द्रु
 प्रह्वमित्तम । युद्धमतन्वशापेण शृणुया स्व तेजसा ॥ ७ ॥ वैशम्पायन उवाच ।
 एतस्मिन्नेच्छति द्रुपुः सप्राम धोतुमिच्छति । वरुणामीश्वरो व्यास सञ्जयादवर
 ददा ॥ ८ ॥ एषते सञ्जयो राजन् युद्धमेतद्वाक्यमिति । एतस्य सर्वसप्रामेनपराक्ष
 मविभ्यात् ॥ ९ ॥ अशुपासजये राजन् दिव्येनैवसमवित । कथयिष्यतितेयुद्ध
 सर्वैश्चसविष्यति ॥ १० ॥ प्रकाशयाऽप्रकाशं वादिवागयदि वा निदि । मनसा
 चन्तितमपि सर्वं चेत्स्यति सजय ॥ ११ ॥ वेन राज्ञाणि च्छेत्स्यति नैव वाधि
 स्यो श्रम । मायामणिरय जीव युद्धाद्दिस्माहमोक्षयते ॥ १२ ॥ महन्तु कीर्त्तिमे
 तेन कुरुणा भरतपते । पाण्डवानाञ्च सर्वेना प्रदयिष्यामि मा शुचः ॥ १३ ॥

जानकर मनको शोकग्रस्त मतङ्ग हे राजा जो तुम्हने युद्धमें देखा चाहताहै तो
 मैं हे पुत्र तुम्हा नेत्र देसाहू तू उनमें युद्धों को देख । ६ । धृतराष्ट्र बोके कि हे
 ब्रह्मर्षियों में श्रुष्ट मैं अपो पाति क-धु और पुत्रोंका पारना नहीं देखना चाहताहूँ
 स्वयं यही चाहताहूँ कि आकर तेज स युद्धका सब वृत्तान्त सुनाकर, वैशम्पायन
 बोले कि जन्मगमनीने जाना कि यह युद्ध देखना नहीं चाहना किन्तु पूरा पूरा
 वृत्तांत युद्ध का सुनना चाहना है तब महावरादायी होकर बन्धों न सजय का
 वरदिया और राजा से कहा कि हेराजा यह सजय तुमसे सब छटाई का वृत्तांत
 दरेगा १० । दिन में या रात्रिमें तुम प्रकट कैसाही वृत्तान्त हो सब तुमसे वर्णन
 करगा और यह सजय दूसरे के मनकी शोचो हुई बातको भी जानेगा उसी से
 स्सना बात नहीं होगा और यह परिश्रम स कभी भवित भी नहीं हागा हे पुत्र
 धृतराष्ट्र यह गालगनका बेटा इस युद्ध स अलग रहेगा और हे भरतर्षभ मैं इन
 कौरव पाण्डव और सब राज ओं की कीर्तिको कथाओं के द्वारा विरुपात करुना

grant thee my son, eyes to see the battle if thou wish to do so
 Behold the battle! 6 'Best of Brahman sages' replied Dhrit
 rashtia "I have no desire to see the slaughter of kinsmen, though
 I would like to hear the minute details of it through thy power"
 Vaisampayan said that as Dhritrashtia expressed his eagerness to
 get ear of the events of the battle without having to see it with his
 own eyes Vyas the giver of boons gave him a boon saying "This
 Sanjaya will describe the battle to thee living. Not a single detail
 of it will escape his notice. Gifted with a divine vision Sanjaya will
 give thee the details and will have a knowledge of everything 10
 Sanjaya will know everything connected with the war whether it be
 by day or night even the extent of what men think in their minds.
 He will be safe from weapons and will not be subject to fatigue This son

दिष्टमेतद्वरव्याघ्र नाभिःशोचिषुमर्हसि । न चैव शक्य सयन्तु यतो घर्मस्ततो जय ॥ १४ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंमुक्त्वा स भगवान् कुरूणां प्रापतामह । पुनरय महाभागो घृतराष्ट्रमुवाच ह ॥ १५ ॥ इह युद्धं महाराज भाविष्यति महान् त्वय । तपेह च निमित्तानि भयदानुपलक्ष्ये ॥ १६ ॥ शयना गृत्राश्च काकाश्च कथाश्च खड्गितायकैः । सम्पतान्त नगाग्रपु सगवायाश्च कुर्वते ॥ १७ ॥ अभ्यत्र-च प्रपश्यन्ति युद्धमानन्दिनो द्विजा । क्रव्यादा भक्षयिष्यान्त मासाणि गजघाजिनाम् ॥ १८ ॥ निर्हयन्नाभिघाशन्तो भैरवा नयवेदिन । कङ्का प्रयान्ति तन्धन दक्षिणा गभितो दिशम् ॥ १९ ॥ बभ्रुपूर्वापरैः स ध्ये गित्य पश्यामि भारत । उदयास्तमने सूर्य्य कवचैः परिवारितम् ॥ २० ॥ श्वेतलोहितपयन्ता वृष्णग्रीवा सन्धिभुत ।

हे नरोत्तम ऐसाही होनेवाला है इस तु मका शत्रु करना अवश्य नहीं है, वह होनहार वान रोकने में नहीं आसक्ती जिधर धर्म है उधरही विजय है । १४ । वैशम्पायन बोले कि यह कुरुनशियों क पितापह महाभाग भगवान् कासजी ऐसा कहकर फिर घृतराष्ट्र से बोल कि हे महाराज यहाँ इस युद्धमें बड़ी हानि होगी क्योंकि मैं यहा भयकारी कारण का देखा हू वाज गिद्ध कौबे और करु नाप पक्षी बगलों सभेत वृक्षों की डालियों पर पर सापही गिरत हैं और इकठ होजाते हैं यह सगपक्षी बड प्रसन्न होकर युद्धका सम्कुरा देवमै हैं और कच्चा मास खानेवाले जीव हाथी घाड़ों क नाम का खाएंगे, भयानक और भय उत्पन्न करनेवाले बकना । पक्षी निर्हयना क शब्द करते हुये मध्य में से दाक्षणादिशा की ओर चलजाएँ हे भरतवशी हैं पहली और पिठली दोनों सध्याओं में उदय और अस्त होनेवाले सूर्य का सदैव प्रतिदिन राहु से घिरा हुआ देखनाहू । २० । श्वेत लाटा रक्त इत्यादि अनक

of Gavdgani will live to see the whole man as on myself I shall spread the fame of the Kuruv and the Pandav. It is predestined I shall not give way to grief and sorrow it cannot be averted. The victory will of course fall on the side where righteousness is.

11. Vairampayan continued that the blessed and holy grandfather of the Kuruv as addressed Dhritishtra saying. The omens at the ensuing battle will be great O King. I see here omens indicative of disaster — Hawks, vultures, herons, crows and cranes are perching in great numbers on the tops of the trees and are looking down on the field well pleased at the prospect of battle. Beasts of prey will feed on the flesh of horses and elephants. Fierce herons foreboding disaster are hovering from the center to the south. I see the rising and the setting sun daily surrounded by the headless trunk. 20. Three coloured clouds with their ends white and red

त्रियणाः परिधाः सन्धौ भानुमन्तमवारयन् ॥ २१ ॥ ज्वलिताकौन्दुनक्षत्रं निर्वि-
शेषदिनक्षयम् ॥ अहोरात्रं मया दृष्टं तद्गुणाय भविष्यति ॥ २२ ॥ बालहयः प्रभया
हीनः पूर्णिमासीच कार्तिकी । चन्द्रोभूद्गणवर्णश्च पञ्चवर्णे न भस्मत्ले ॥ २३ ॥ स्वप्-
स्यान्त निहता चीरा भूमिनामृत्य पाथिषाः । राजानो राजपुत्राश्च गूराः परिष
वाहयः ॥ २४ ॥ अन्तरिक्षे वराहस्य वृषदंशस्य चोभयोः । प्रणादं शुष्यतोरात्रौ
रौद्रं नित्यं प्रलक्षये ॥ २५ ॥ देवताप्रतिमाश्चैव कम्पन्ति च हसन्ति च । वमन्ति
रुधिरं च्चास्यैः स्थिद्यन्ति प्रपतन्ति च ॥ २६ ॥ अनाहता दुन्दुभयः प्रणदन्ति
विशाम्पते । अयुक्ताश्च प्रवर्तन्ते क्षत्रियाणां महारायाः ॥ २७ ॥ कोकिला शत
पत्रश्च चापा भासाः शुकारतथा । सारसाश्च मयूराश्च यच्चो मुबन्ति दारुणाः

रंग धारण करनेवाली विद्युत्के संध्या के समय सूर्य को घेर लिया है यह मैं रात्रि
दिन देखताहू यह भयंकर उत्पात के सूचक लक्षण है और सूर्य चन्द्रमा नक्षत्रादि
से आग्नि के वण निकलने) गालूप होते हैं यह भी गडा अशुभ सूचक उत्पातहै,
कार्तिकमास की पूर्णिमासी के दिन आकाश में लालरंग चन्द्रमा प्रभारहित अपने
कृष्ण चिह्नके बिना आग्नि के समान वर्णवाला दिखाई दिया, इसका फल यह
दिखाई दे रहा है कि परिष के समान प्रलम्ब भुजवाले शूरवीर और मृतक राजा-
लोग वा राजकुमार पृथ्वीको आच्छादिन करके सोवेंगे और अन्तरिक्ष में उछलर
कर लड़ते हुये सूकर और वृषदंश दोनों के भयकारी गदाशब्दों को रात्रि के
समय नित्य देखना और सुनताहू । २५ । और देवताओं की मूर्तियां कांपती
हैंसती हुईं मुखोंसे रुधिर बगलतीहैं और पत्नीनों में तरहो होकर पृथ्वीपर गिरती
हैं और हे राजन दुन्दुभियां विनादजाये आप अच्छे प्रकार से वज्रोंहैं और क्षत्री
लोगों के दृष्ट और उत्पन्न दिव्य रथ घोड़ों के बिनाही चलते हैं योकिल शतपत्र
नीलकण्ठ भास और तोने सास मोर यह सब पक्षी भयानक शब्दोंको करते हैं

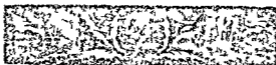
and neck black, charged with lightning assume the forms of maces and envelop the sun both at its rising and setting. I have seen the sun, the moon and the stars all blazing of an evening simultaneously. I have seen this both by day and night. This forebodes consternation. On the full moon night of Kartik, the moon became lightless, invisible and fiery (by turns) and the sky became lotus like in colour. Many valliant kings and princes of great bravery and of arms like clubs, will be down slain on the earth. Night after night I have been noticing in the air the cries of fighting boars and cats. The images of gods and goddesses have been seen laughing, trembling, vomiting blood from their mouths, sweating or falling down from their pedestals. Drums give sound without beating and the great chariots

॥ २८ ॥ गृहीतशस्त्रा क्रोशन्ति चर्मिणो वाजिपृष्ठगा । अरुणोदये प्रहृद्यन्ते शतश शलभप्रजा ॥ २९ ॥ उभ सन्ध्ये प्रकाशते दिशो दाहसमन्वित । पर्जन्य-पांसुवर्षा च मासवर्षाश्चभारत ॥ ३० ॥ या वैवा विश्रुता राजस्रैलोक्ये साधुसम्मता । अरुन्धती तर्पाप्येष वसिष्ठ पृष्ठत कृत ॥ ३१ ॥ रोहिणीं पीडयन्नेव स्थितोराजन् शनैश्चर । व्यावृत्त लक्ष्म सोमस्य भविष्यति महद्भयम् ॥ ३२ ॥ अनन्ने च महाघोर स्तनित श्रयते स्वन । बाहनानाच्च रुद्रां निपतन्त्यश्रुचिन्द्व ॥ ३३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्वाणपर्वणि श्रीवेदव्यासदर्शने द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

और घोड़ोंकी पीठोंपर बैठेहुये वाज अपन जहा रूपी शस्त्रों से शब्द रूपी आघातों को करतेहैं और सूर्य के उदय होने पर दीड़ियों के हजारों समूह-दृष्ट पडते हे हे भरतवंशी दिग्दाह युक्त दोनों सन्ध्या प्रकाशमान होतीहैं और बादलों से मांस और धूलि की वर्षा होती है । ३० । और यह जा साधुओं की मानी हुई अरुन्धती तीनों लोकों में प्रसिद्ध है उराने भी वसिष्ठजी की ओर पीठनी हे और गह शनिश्चर रोहिणी नक्षत्रका पीडित करता हुआ वर्तमान है चन्द्रगान्धारु रूप टरु गया इन सत्र उत्पातोंस महाभय उत्पन्न हागा और बिना बादलोंके आकाश में बड़ी भारी भयानक गर्जना सुनी जातीहै और रती हुई सवारियों के अशुपातों की दृष्टि पृथ्वी पर होतीहै ३१ ॥

of the shatryas move without being drawn by beasts Cuckoos, woodpeckers, jays coals, parrots and peacocks cry in shrill tones Horse men bearing arms and armour cry out of a sudden Hundreds of insects are seen in swarms flying in the morning Both morning and evening the four quarters are seen ablaze and the clouds pour showers of dust and flesh Arundhati celestiated throughout the three regions and pruned of the righteous keeps her back turned on Vashishta When the planet is seen harassing Rohini The sign of the deer in the moon has changed its proper place All this denotes great evil The cloudless sky sends forth pearls of thunder, and tears falls down from the eyes of beasts 3)



व्यास उवाच ॥ लग्न गोपु प्रजायन्ते रमन्ते मातृभिः सुताः । अनासत्वं पुत्रपत्नं दर्शयन्ति च नृमा ॥ १ ॥ गर्भिण्योऽजातपुत्राश्च जनयन्ति विभीषणान् । क्रव्यादाः पक्षि भिक्षापि सहाश्रन्ति परस्परम् ॥ २ ॥ त्रिविषाणाश्चतुर्नरा पञ्चपादा द्विमहता । द्विशिपाश्च द्विपुच्छाश्च दीष्टिण पञ्चवोऽशिवाः ॥ ३ ॥ ज वन्ते विवृतास्याश्च व्याहरन्तोऽशिवा गिर । त्रिपदा शिपिनस्ताहर्षाश्चतुर्दंष्ट्रा विषाणिनः ॥ ४ ॥ तर्धेयान्याथ लक्ष्यन्ते स्त्रियोधै ब्रह्मवादिनाम् । वैनतेयान् मधुरांश्च जनयन्ति पुत्रे तुव ॥ ५ ॥ गोवत्सं वडवा सूते श्वा नृगाल महीपते । कुन्कुरान् करभाश्चैव शुकाश्च शुभघादिनः ॥ ६ ॥ स्त्रियः काश्चित्प्रजायन्ते चतस्रः पञ्च कन्यकाः । जातमाशाश्च नृत्यन्ति गायन्ति च

अध्याय ॥ ३ ॥

व्यासजी बोले कि हे राजा गधे गौओं के साथ विषय करते हैं और पुत्र गजाओं के साथ रक्षण करते हैं और वनके अनेक वृक्ष विना शत्रु के फल फूलोंको दिखलाने हैं गर्भवती पुत्र उत्पन्न करने वाली स्त्रियां भयकारी बालकोंको उत्पन्न करती हैं गधेआदि पशु कधे भांष खाने वाले पक्षियों के साथ मिलकर परस्पर भोजन करते हैं, तीन सींग चार नेत्र पांच पैर दोलिंगेन्द्री दो शिर दो पूंछ वाले असभ्य अशुभ रूप गांमाहारी निर्गताहारी पशु उत्पन्न होते हैं और तीन पंजे चोटी चार दाढ़ सींग बाण किये गरुड नाम पक्षी अशुभ और भयानक शब्दोंको बोलने हुये उत्पन्न होते हैं । ४ । इसी प्रकार ब्रह्मवादियों की स्त्रियां भी विषरीत दृष्ट आती हैं तेरे पुरों गरुड पक्षी गोरोंको उत्पन्न करते हैं हे राजा घाई गौ के बछड़े को और कुनियों नृगाल को और ताने अशुभ बोलने वाले कुकुर और करभोंको उत्पन्न करते हैं कई २ स्त्रियां चार २ पांच २ कन्याओंको एक समय में उत्पन्न करती हैं आश्चर्य यह कि यह कन्या पैदा होनेही नाचती गानी और

CHAPTER III

‘Asses,’ continued Vyas, ‘are born from line; sons have sexual pleasure with mothers, forest trees bear fruits and flowers out of season, pregnant and impregnant women give birth to monsters; birds and beasts of prey feed together; ill omened beasts having three horns, four eyes, five legs two sexual organs, two heads or two tails, are born with fierce teeth, and with gaping mouths utter forth ominous cries. Garuds are born with three legs, with crests, with four teeth or with horns. Brahman women in the city have been found giving birth to garuds and peacock. Mares give birth to calves, bitches give birth to jackals and cocks, and antelopes and parrots utter ominous cries. Some women gave birth to four or five daughters who, as soon as they were born, set about dancing, singing

हस्तान्तिच ॥ ७ ॥ पृथक्जनस्य सर्वस्य क्षुद्रकाः प्रहस्तान्तिच । नृत्यन्ति परिगायन्ति वेद्यन्तो महद्भयम् ॥ ८ ॥ प्रतिमाश्चालिखन्त्येताः सशस्त्राः काल चोदिताः । अन्यायमाभधावन्ति शिशवो दण्डपाणयः ॥ ९ ॥ अन्यान्यमभिमृद्नन्तिनगराण युधुत्सवः । पशोःपलान दत्तेषुजायन्ते कुमुदानिच ॥ १० ॥ विश्व ग्वाताश्च चान्द्युग्राः रजो नाप्युपशाम्यति । अभीक्ष्णं कम्पते भूमरकं राहुरूपैत च ॥ ११ ॥ श्वेतो प्रहस्तया चत्रां समतिक्रम्य तिष्ठति । अमावांही विशोपेण कुरुणां तत्र पश्यति ॥ १२ ॥ धूमकेतुर्महाघोरः पृथ्वीकम्य ततिष्ठति । सेनयो रशिंघ्रं घारं कार्प्यात महं ग्रहः ॥ १३ ॥ मघास्वङ्कारको वक्रः श्रवणे च बृहस्पतिः । भगं नक्षत्रमाकम्य सूर्यपुत्रेण पीड्यते ॥ १४ ॥ शुक्रः प्रोष्ठपदे पूर्वं समाख्य

हँसतीहँ और सध नाँच मनुष्यों के नातेदार भाई वन्धु शाने कुबड़े आदि भी हाकर हाँसप करते भयको दिखलाते हुये नाचते और गात हैं यह शस्त्रधारी मूर्ति-या काल के विपरीत होनेसे गिरती हैं और बालक लोग हाथों में दण्ड लिपेहुए परस्पर में एक दूसरे कं सन्मुख दौडत हैं और युद्धागिलाधी हाँकर अपने बनाये हुये नगरों को परस्पर विध्वंस करते और स्थानों को ढाते हैं, पद्म, उत्पल कुमुद और सूर्य के उदय में खिलने वाले कमल वृक्षों पर पैदा होतेहँ । १० । और संसार में चलने वाले वायु भयानक चलते हैं और धूलोंकी उड़ना शांत नहीं होता है, पृथ्वी अत्यन्त प्रकाशित हाँती है और राहु सूर्य स मिलता है । ११ । इसी प्रकार केतु भी चित्रा नक्षत्र को घेरे हुये नियत है यह अधिकतर कौरवों के नाशको देखता है और बडा घोर धूमकेतुं बुध्प नक्षत्र को दबाये हुए उस्थित है यह महाउग्र ग्रह दोनों सेनाओं क घार अंकल्याण को करेगा । १३ । मंगल विरछा होकर मघानक्षत्र में और बृहस्पति श्रवण नक्षत्र में है, और सूर्य के पुत्रशर्नईचर से पूर्वाफाल्गुनी वा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र दक्कर पीडित

and laughing The members of the lowest orders laugh, dance and sing and thus indicate the consequences. Infants as if actuated by death, draw armed images, run against one another armed with clubs and desirous of battle break down the towns (erected in sport). Lotuses and lilies of sorts blow on trees, strong winds blow and bring dust continuously. Earthquakes are frequent and Rahu is coming towards the sun. 11. Ketu has stopped its course after passing the planet Chitra This in particular foretells the destruction of the Kauravas. A fierce comet has arisen to afflict Pusya. It will cause great destruction to both the armies. Mars inclines towards Magha and Jupiter towards Sravan. Suan the offspring of the sun afflicts Phalguni by its approach 14. Shukra shines on Purva-bhadrapad and conjointly with Parigh, casts its influence on Uttara bhadrapad.

विरोचते । उत्तरेतु पङ्क्तिम्य सहितः समुदीक्ष्यते ॥ १५ ॥ श्वेतो ग्रहप्रज्ञास्ततः
सधूम इव पावकः । ऐन्द्रं तेजास्वनक्षत्रं ज्येष्ठामाक्रम्य तिष्ठति ॥ १६ ॥ ध्रुव
प्रचलितो घोरभयसद्व्य प्रवर्त्तते । रोहिणीं पीडयत्येव मुमोचशशिमास्की । चित्रा
स्वात्मन्तरे चैव चिष्टितः परुषत्रः ॥ १७ ॥ बहानुवहं कृत्वाच श्रवणं पावकप्रभः ।
ग्रहाराशिं समावृत्य लोहितांगो व्यवस्थितः ॥ १८ ॥ सर्वसंशयपारिच्छत्रा पृथिवी
सस्यमालनी । पञ्चशीर्षा यवाश्चापि शतशीर्षाश्च शारायः ॥ १९ ॥ प्रघानाभ्यर्ष
लोकस्य यास्वायसामिदं जगत् । ता गावः प्रस्तुता वरसै शोणत प्रक्षत्पुत ॥२०॥
निधेरार्द्धिद्वपश्चापन् सद्गाश्च ज्वलता भृशम् । व्यक्तं पर्याप्तं शस्त्राणि संग्राम

निधे जाते हैं और शुक्र पूर्वभाद्रपद नक्षत्रों चढ़करउपको दवाये हुये प्रकाश
कता है और परिघ नाम उपग्रह के संग होकर उत्तरभाद्रपद नक्षत्री और
देखता है । १५ । और कतुग्रह सधूम आग्नि के सगान जल रहा है और
पद्मप्रचलित भयकारी राहुन्द्रते संवेधरखनेवाल तेजस्वी ज्येष्ठा नक्षत्रको जगत
कर के वर्धमान है । १६ । और अपमव्य होकर वर्धमान है वह पटिन
ग्रह चित्रा और स्वाती के मध्यमें वर्धमान रोहणी नक्षत्र और दोनों मूर्ध्नि और
चन्द्रमा का पीडा देता है और अग्नि के सगान प्रकाशवान् भंगल वारम्बार
निरछा होकर वृहस्पतिजी से दवाये हुये श्रवण नक्षत्र को पूर्ण दृष्टी से वेधे
हुये वर्धमान है, । १८ । खेती से प्रशंसा पानवाली पृथ्वी सवपकार के
खेतोंसे आच्छादित होकर पांचशिर वाले गौ और गौ शिरवालेधानों को वदन्त्र
करती है, संसारमें पूज्य और जिनमें यह सवनगत् वर्धमान है ऐसी गीएं अपने
बछड़ों के समीप हाकर रुधिरको छोड़ती हैं । २०। इस का यहफल है कि धनुषों से
अग्नि निकले और खड्ग अत्यन्त अग्नि रूपहों और शस्त्र व्यक्त होकर संग्राम

15. *Ketu* burns like smoky fire, menacing *Jyeshtha* the bright constellation sacred to Indra. 16. *Dhruva*, blazing fiercely turns towards the right and afflicts *Rohini* as well as the sun and the moon. Fierce *Rahu* is staying between *Chitra* and *Sicati*. Mars of fire-like glory in its oblique course casts a full gaze on *Shravan* which is already under the influence of *Vrahaspati*. The earth which used to produce particular crops at fixed times is covered with the crops of every season—barley and rice at the same time! Cows the best of creatures upon whom all the world depends give out blood when the calves have sucked them. 20. Rays of light come out of bows and swords blaze forth brilliantly. This shows that the weapons themselves are alive to the approach of the great battle which is

गमपादितम् ॥ २१ ॥ आग्निवर्णो यथा भास शस्त्रागामुदकस्यच । कवचानां
 ध्वजानञ्च भावपात महाक्षय ॥ २२ ॥ पृथिवी शोणतावर्षा ध्वजोद्भुपसमा-
 कुला । कुर्वागं वैशसे राजन् पाण्डवै सह भारत ॥ २३ ॥ इक्षु प्रज्वलितता
 स्याथ व्याहरन्त मृगाहृता । अत्याहित दर्शयन्ता चेदयन्तो महद्भयम् ॥ २४ ॥
 एकपक्षाक्षिचरण. शकुनः पञ्चरोनिश । रौद्रं वदति संरब्ध. शोणत छहृदयप्रिय
 ॥ २५ ॥ शस्त्राणि चैव राजेन्द्र प्रज्वलन्तीव सप्रति । सप्तर्षीणामुदाराणां सम
 वच्छाद्यते प्रभा ॥ २६ ॥ सम्बत्सरास्थायिनो च ग्रहो प्रज्वलितानुभो । व-
 शास्ययाः समीपस्थौ वृहस्पतिश्चैवथौ ॥ २७ ॥ चन्द्रादद्यावुभौ प्रतावेकाहना
 द्वित्रयोदशौ । अपर्वाण ग्रहंयती प्रजासंज्ञयमिच्छतः ॥ २८ ॥ अशोभतादशः

में धूँधको मकड़ देखें और शूलोंकी चपक का रंग अग्नि के समान है कवच
 और ध्वजाओंका बड़ा नाशहोगा, हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र पाण्डवोंक साथ
 कौरवोंकी शत्रुता होनेपर पृथ्वीपर खरिष की नदियां बहेगी और ध्वजारूपा
 नौकाओं से व्याप्तहोकर वाहकूल होंगी और अत्यन्त क्रोध रूप मुख से पशुपत्नी
 वज्रभगको सूचिनकरते आर अशुभका प्रकाश करते हुए दिशाओंमें चलते हैं
 । २४ । रात्रि के समय एक पक्ष एकत्र और एकही चरणका रखनेवाला अत्यन्त
 नाभी आकाशवारी पक्षी खरिषका उगलना हुआसा भयकारी शब्दों को करताहै
 हेराजिन्द्र शूलअग्नि के समान वर्षमानहै जिनसे महातेजस्वी सप्तऋषियों के प्रकाश
 भंदहोकर टकेहुएमे विदिता होतेहै । २६ । और अत्यन्त तेजस्वी वृहस्पति और
 चनेश्वर दानोंग्रह वार्षिक गति में नियत होकर विशाखी के सम्मुख नियत दाखते
 हैं एकही दिन तरस त्रिंशको दानो मूर्य और चन्द्रण ग्रंथगर्भ और बिना पर्वकेराहु
 ग्रह से भिले हुए प्रभाके गाथको चाहते ह, चारों ओर धूलिकी वर्षा से सब दिशा

imminent. The colour of weapons, water, armour and standards is like that of fire. This shows that a great slaughter is at hand. A river of blood will run out of the bowels of the Kauravas and the Pandavas with the banners for its matters. Animals and birds on all sides, with their mouths blazing like fire and with fierce cries, are displaying evil omens and terrible consequences. A bird with one wing, one eye and one leg, hovering over the sky in the night, makes a frightful noise and vomits blood 25. The weapons are blazing like fire and the glory of the constellation known as the seven risus is dimmed. The bright planets, *Prahaspati* and *Shani*, having approached *Vishakhā*, have stopped their annual course. The moon and the sun have undergone an eclipse within thirteen days in the same fortnight. Such a strange coincidence of two eclipses forebodes a great slaughter.

सर्वा पञ्चदशस्य समन्ततः । उत्पातमेघा रौद्राश्च रात्रौ घपन्ति शोणितम् २९ ॥
 कृत्तिकां पीडयन्तीश्वर्णेनक्षत्र पृथिवीपते । अर्भीक्ष्णवाता वायान्ते घूमकेतुमवस्थिताः
 ॥ ३० ॥ चिपमं जनयन्त्येते आक्रन्दजननमहत् । त्रिषु सर्वेषु नक्षत्रेणु त्वशा-
 म्गते । गृध्रः सम्पतते शीर्षं जनयन् भयमुत्तमम् ॥ २१ ॥ चतुर्दशो पञ्चदशी
 भूतपूर्वाश्च पीडशीम् । इमातुनाभजानेहममावस्यात्रयोदशी । चंद्रसूर्याणुमौप्रस्तावेरु-
 मासी त्रयोदशी ॥ ३२ ॥ अर्षणिग्रहेगेतौ प्रजा, सक्षययिष्यतः । मालं वर्षं
 पुनस्तीव्रमासीः कृष्णचतुर्दशी । शोणितैर्वकसम्पूर्णा अतृप्तास्तत्र राक्षसा ॥ ३३ ॥
 प्रातःप्रातो महानद्यः सगिताः शोणितोदकाः । केनायमानाः कृपाश्च कूर्दन्तिदृष्यभा
 इव ॥ ३४ ॥ पनस्तुदकाः सनिर्घाता शकाश्च निसमप्रमाः । मद्यं चैव निशां

अशोभितहोगई और रात्रि के समय बड़ भयानक उत्पात और रुधिर को मेघ
 बरसात है, और हे राजन राहुकृत्तिका को पीडा देता हुआ अपने कटिनरुग्णों से
 भरा हुआ देखागया है, धूमकेतु नाग उत्पात में निपत होकर वायु चक्रतेहै । २० ।
 यह वायु महा पुद्गकारी शत्रुता को उत्पात करतेहै, और हे राजा सब नक्षत्रोंके
 मध्य रक्षा न करने वाला पणग्रह बड़े भयका पैदा करता हुआ तीनों छत्रों में
 सबके शिरों के छत्रों कलशों पर गृध्र पक्षी होकर गिरता है, एक मासकी तेरस
 तिथिको बिना पर्वके चन्द्रमा और सूर्य दोनों राहु ग्रहसे ग्रसेगये हैं । ३२ ।
 यह दोनों प्रजाका नाशकरेंग इस लिये मैं चौदशपूर्णमासी और व्यतीत प्रतिपदा
 को जानताहू परन्तु अभावास्या और तेरस के याग का नहीं जानताहू वहां रुधिर
 से भरे हुए मुखवाले राक्षस लोगोंकी तुष्णा अधिक शोणित पीनेकी होगी और
 नदियों में बड़ी नदियां ता रिकद्व प्रवाह पुक्त होई और छोटी नदियां रुधिर
 सागान जलकी बहने लगीं कुणं फेनोंमें भरेहुए घैलों के समान क्रीड़ा करते हैं

The land being overwhelmed in all directions by storms of dust, looks desolate. Fierce and ominous clouds nightly pour forth showers of blood. Fierce Rahu is also afflicting *Krittika*. Rough winds portending ill are constantly blowing. 30 All these portend a dreadful war. One planet or other has shed its evil influence on every one of the three sorts of constellations. A lunar fortnight usually consists of fourteen, fifteen, or sixteen days, but never of thirteen days, yet in the course of the same month there have been lunar and solar eclipses within thirteen days of each other. 32 This will cause a great slaughter of the creatures of the earth. The Rakshases drinking blood by mouthfuls will not yet be satisfied. Great rivers are flowing in opposite directions, their waters have become bloody and the wells foaming up are bellowing like bulls.

व्युष्टामनय समवाप्स्यथ ॥ ३५ ॥ विनि सृत्य महोलकाभिस्तिमिर सर्वतो इशम् ।
 अन्यान्यमुपतिष्ठद्भिस्तत्र चोक्त महर्षिभि ॥ ३६ ॥ भूमिपालसहस्राणा भूमिपाल
 सहस्राणा भूमि पास्यति शोणितम् । कैलासमन्दाराभ्यान्तु तथा हिमवताविभो ॥ ३७ ॥
 सहस्रशोमहाशब्दः शिखराणि च पतन्ति च । महाभूता भूमिकम्पो चत्वार सागरा
 पृथक् । वेलासुद्धर्त्तयन्तीष क्षोभयन्ती वसुन्धराम् ॥ ३८ ॥ वृक्षानुनमथ्यवान्गुप्रा
 याता शर्करकर्षिण । अभग्नाः सुमहाघातैरशनीम समाहता ॥ ३९ ॥ वृक्षा
 पतन्ति चैत्याश्च ग्रामेषु नगरेषु च । नीललोहितपतिश्च भवत्यग्निर्हुतोद्विजै ॥ ४० ॥
 वामार्चिचकुण्डप्रगन्धश्च मुञ्चन्वै दारुणस्वनम् । स्वर्शा गन्धा रसाश्चैव विपरीता
 गृहीपत ॥ ४१ ॥ धूमध्वजा प्रमुञ्चन्ति कम्पमाना सुहर्मसु । मुञ्चन्त्यङ्गारवर्षव

और इंद्र के बज्र के समान प्रकाशमान महाशब्दावधान उल्कापात होतेहैं अब
 तुम मातृकाल अथाय के फल को पाओगे । ३५ । और महर्षियों ने भी सब
 दिशाओं में अंधेरा देख मसालें बल घरसे बाहर निकलकर परस्पर में एकत्र
 होकर कहा है कि पृथ्वी हजारों राजाओं क साधर का पीवेगी और हे सगर्भ
 इसी प्रकार कैलास मन्दराचल और हिमाचल पर्वतों से हजारों बड़े घोर शब्द
 शिखरों पर गिरतेहैं, और पृथ्वीके कम्प से चारों समुद्र पृथक् २ अपनी २ मर्या-
 दाओं को उल्लंघन और सब संसारको व्याकुल करत हुए बड़ी वृद्धियुक्त हुए हैं
 और कंकड़ों से भराहुआ भयानक वायु ऐसा चलता है कि जिसके बगसे चिन्नी
 से सजाये हुए अनेक वृक्ष टूट २ कर गांठोंकी सीमाओं और नगरों क भीतर
 जाकर गिरते हैं और ब्राह्मणों से दोषीहुई अग्नि नील रक्त और पीतर की हानी
 है यह दुष्टगंधा वापार्ची भयानक शब्दको करनी विदित हानी है ह राजा स्वर्श
 गंध और रससवावपरीत हैं, चारंवार कावधान हाकर भ्रमों धूमका छोड़तीहैं

Meteors effulgent like Indra's thunderbolt fall with loud hisses Evil
 consequences will overtake you when this night passes away Great
 risals with lighted brands emanate from their houcs and met together
 in the thick gloom of the night. After observing these signs they
 say that the earth will drink the blood of thousands of kings. From
 the mountains of Kulas Mandar and Himavat thousands of explo-
 sions are heard and thousands of summits are tumbling down. In
 consequence of the earth's trembling the four oceans are much swollen
 and are ready to transgress their bounds and to afflict the earth.
 Fierce winds charged with sharp pebbles are blowing crushing
 mighty trees. Odour and sacred ties in villages and towns are
 uprooted by fierce winds and lightning. When Brahmans pour down
 libations on fire, it burns with blue, red or yellow flames bending

भर्यश्च पटहास्तया ॥ ४२ ॥ शिखराणां समृद्धानामपरिष्ठात् समन्ततः । चायसाश्च
 रुचन्मुग्रं चाम गण्डलमाश्रिता ॥ ४३ ॥ पञ्चापश्चेति सुभ्रश चावाद्यन्तेवयां
 सि च । निलीयन्त ध्वजाग्नेषु क्षयाय पृथिवीक्षिताम् ॥ ४४ ॥ ध्यायन्त प्राकर-
 न्तश्च व्याला वेपथुसयुता । दानात्पुरङ्गमाः सर्वे वारणा सलिलाश्रया ॥ ४५ ॥
 पतच्छ्रुत्वा भवानत्र प्राप्तकाल व्यवस्यताम् । यथा लोक समुच्छेद नाथ गच्छेत
 भारत ॥ ४६ ॥ वैशम्पायन उवाच । पितुर्वचो निशम्यैतत् धृतराष्ट्रोऽब्रवीदिदम् ।
 दिष्टमतत् पुरामन्ये भावष्यति नरत्नम् ॥ ४७ ॥ गजान क्षत्रधर्मेण यद्विविध्य
 न्तिसंयगे । वीरलोक-समासाद्य सुरा प्राप्स्यन्ति केवलम् ॥ ४८ ॥ इह कीर्त्ति
 परे लोके दीर्घकाल गहत् सुखम् । प्राप्स्यन्ति पुरुषव्याघ्रा प्राणास्त्यक्त्वा महा

और चागोदिशाओं में अच्छे फूले फले वृक्षों के ऊपर अग्नि पंडल में बैठे हुए काक
 भयकारी रादन करते हैं और पक्षी पक्षा २ अर्थात् नाश होने वालों का परस्पर
 युद्ध है ऐसे अत्यन्त शब्द करते हैं और राजाओं के नाश सूचन करने की
 ध्वजाओं की नोकों में छिपनात है दुष्ट हाथी ध्यान करते हुए मूत्र विष्ठाको
 करत कंपापान हैं और गरीबहाथी और घोड़े पसीनों में चूर हैं अब तुम यहां
 यह बातें सुनकर समय के अनुसार निश्चय करो जिससे कि हे भरतवंशी यह
 संसार नाश न होवे । ४६ । वैशम्पायन बोले कि पिताक इन वचनों को सुनकर
 धृतराष्ट्र यह बोला कि हे पिता व्यासजी मैं इसको सीपही होनेहार मानता हूं
 और मनुष्यों का नाश होगा, जो राजा लग क्षत्रीधर्मसे युद्धमें मरेंगे वह सब
 वीरों क लाकों को पाकर मोक्षरूप सुख को पावेंग, इ पुरुषोत्तम भारी युद्ध में

towards the left, yielding stench and accompanied by loud report. Touch smell and taste have lost their powers. The standards tremble and give out smoke drums and cymbals give out showers of coal dust and from the tops of the trees all round, crows wheeling in circles from the left are uttering fierce cries of *pakka*, *pakka* and perching upon the tops of the standards for the destruction of kings Vicious elephants, trembling all over, are running hither and thither giving out urine and excreta. 45 The horses are melancholy and the elephants are resorting to the water Having heard all this do what is needful so that the world may not be depopulated, O king Vaishampayan continued that on hearing these words of his father, Dhritrashtra said, ' I think all this has been ordained of old A great slaughter of human beings will take place. If the kings die, doing the duties of kshatriyas, they will obtain bliss in the regions of the heroes. These lions among men,

हवे ॥ ४९ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवं मुनिस्तथेत्युक्त्वा कवीन्द्रो राजसत्तम ।
 धृतराष्ट्रेण पुत्रेण ध्यानमन्वगमत् परम् ॥ ५० ॥ स मुहूर्त्तं तथा ध्यात्वा पुनरेवा
 ब्रवीद्ब्रह्म । असशयं पार्थिवेन्द्र कालः संक्षयते जगत् ॥ ५१ ॥ सृजते च पुन-
 र्लोकान् नेह विद्यति शाश्वतम् । ज्ञातीनां च क्रूरुणा च सम्पन्धसुहृद्भान्तथा ॥ ५२ ॥
 धर्मं देशय पन्थानं समर्थो ह्यास चारणे । धुर्दं जगतिवध प्राहुर्मा क्रुधममा
 प्रियम् ॥ ५३ ॥ कालोऽयं पुत्ररूपेण तव जातो विशाम्पते । न वध पूज्यते वेदे
 हितं नैव कथञ्चन ॥ ५४ ॥ हन्यात् स एन यो हन्यात् कुलधर्मं स्वकांतनुम् ।
 काले नोत्पद्यन्तासि शम्भे सति वशापदि ॥ ५५ ॥ कुलस्यास्य घनाशाय
 तथैव च महीक्षिताम् । अनयो राज्यरूपेण तव जातो विशाम्पते ॥ ५६ ॥ लुप्त

पाणोंको त्यागकर यहाँ तो कीर्ति और परलोक में बहुत काल तक महा सुखको
 पावेंगे । ४९ । वैशंपायन बोले कि हे राजेन्द्र जनमेजय वह कवीन्द्र वासदेव
 मुनि ऐसाही है यह कहकर अपने पुत्र धृतराष्ट्र के साथ विनागों ग्रसितहुये और
 एक मुहूर्त्त पर्यन्त ध्यानावस्थित होकर यह वचन बोले कि हे राजा निम्न-वेद
 काल जगत् को नाश करताहै और फिर उत्पन्न भी करत है यहाँ किसीका सदैवता
 नहीं प्राप्त है, तुप जानबोले, कौरव, नाभेदार और भिन्नो के धर्मरूप पाणों को
 उपदेश करो और तुम्हीं उनके राकनेमेंभी समर्थहो ज्ञातिबालों का गरना नीचकर्म
 कहाजाताहै इस से इसपेरी अमियघातको गनकर हेरागन् यह काल तेरेवेदेतुयोंधन
 के रूपसे मकट हुआहै, मारने वाले को वेदों अच्छानहीं कहतेहैं और किसीदशा
 में भी वह मियकारी नहीं है । ५४ जो धर्मो मारताहै वह धर्म उसी का मारताहै
 कुलका धर्म अपना देह है, समर्थ होनेपर इसकुल क और इसी प्रकार अन्य राजाओं
 के नाश के लिये काल से प्रेरित हाकर तू आपाचिकाल के समान कुर्गमि में चलता

dying in the great battle will gain fame in this world and happiness
 in the next" 49. Vaishampayan continued that on hearing the
 words of Dhritrashtra, Vyasa the prince of poets, concentrated his mind
 in supreme yoga and having contemplated to a short time, he again
 said, "No doubt, it is time that destroys the world and creates it
 again" Nothing is immortal here. It is your duty to preach
 righteousness to the Kauravas, kinsmen and friends as you have the
 power to restrain them. The slayer of kinsmen is sinful and
 you should not do what I do not like. Death is born in the shape of
 Duryodhan thy son. The destroyer is not applauded in the Vedas
 and is not beneficial to any country 51. He who destroys Dharma
 is destroyed himself by it, for the Dharma of one's own family is one's
 body. Being in authority, thou art made by Time to deviate from

धर्मा परेणास धर्मं दर्शय वै सुतान् । किन्तो राज्येन दुर्धनं देन प्राप्सोसिद्वि-
 पम् ॥ ५७ ॥ यशो धर्मव क्रीर्तिञ्च पालयन् स्वर्गमाप्स्यसि । लभन्तां पाण्डवा
 राज्यं शमं गच्छन्तु कौरवा ॥ ५८ ॥ एनं व्रुयति । वप्रेन्द्रे धृतराष्ट्र-
 म्बिकासुतः । आक्षय्य धान्यं चान्यन्नो चान्यन्नंवात्रधीत् पुन ॥ ५९ ॥
 धृतराष्ट्र उवाच ॥ यथा भवान् वेत्सितधैवनेत्ता भावामाघं । उदितं मे यथार्थं ।
 स्वार्थं हि समुह्यात तात लोकौ मात्रापि लोकात्मक मेव विद्धि ॥ ६० ॥ प्रत्यादये त्वा
 मतुलप्रभावं त्वं नो गतिर्दर्शं पितामहधीरः । न चापिते महद्दशगा महर्षे नचाधर्मं कर्तुं
 महार्हि मे मति ॥ ६१ ॥ त्वहि धर्मप्रवृत्तिश्च यशः कर्तिश्च भाती । करुणां पांडवा
 नाच मान्यथापि पितामहः । ६२ ॥ व्यास उवाच ॥ वैचित्र्यीर्यं नृपते यत्ते मनास

है, हे राजा तेरा अनर्थ राजरूप से उत्पन्न हुआ है तू अत्यन्त अर्थी है अपने
 पुत्रोंको धर्मका उपदेशकर, हे दुर्धर्म तुझको राज्य से क्या लाभ है जिसके लिये
 पनेपापको विनाश है अपन यश और धर्मका पालन कर जिससे कि तू स्वर्ग को
 पावेगा पाण्डवोंको राज्य दो और कौरवों का शान्ती दो । ५८ । यह पिताके
 वचन सुनकर अम्बिकाका पुत्र वचन का जाननवाला धृतराष्ट्र पिताके इनकिक्षा
 रूपी वचनों को तिरस्कार करके फिर यहवचन बोला कि जैसा आपजानते हे
 वैनाही मैंभी जानताहूँ और मुझको अपना और दूसरोंका जीवन वा नाश ठीक २
 विदिन है हे तात यह लोक अपने प्रयोजन में बड़े २ गोहोंको पाता है आप
 मुझकोभी लोकरूपी जानो । ६० । हे परा नभाव वाले मे आपको प्रसन्न करता
 हूँ आप पंडित होकर इगारी गति और उपदेश के करनेवालहा परन्तु हे महर्षी
 वह पुत्रपेर स्वार्थीन नहीं है और मैं बुद्धि से अर्थ करने का नहीं चाहताहूँ आप
 भरत वंशियोंके यश और कीर्तिके कारण रूपहो और कौरव पांडव दानों के पिता-

the path of right in order to cause the destruction of thy family as well as of other kings Thy evil genius clings to thee in the shape of thy kingdom. Thou art very unjust as thou dost not prevent thy sons from doing wrong What is the use of thy being a king, when for the sake of thy kingdom thou art immerging thyself in sin ? Preserve thy fame and virtue so that thou mayst attain heaven Give kingdom to the Pandavas and peace to the Kauravas" 58 Having heard the words of his father, Dhritrashtra the wise son of Ambica, disregarding the wisdom of Vyas, said in reply, " I know as much as you do about the life and death, but man, in what regards his interests, is unable to use his judgment and I am not an exception to this rule 60 I entreat you, learned and great man, to teach me My sons are beyond my control It is never my intention to lead a

वर्तते । अभिघत्स्य यथा काम छेत्तास्मि तव सशयम् ॥ ६३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ यानि
 लिङ्गानि सप्रामे भवन्ति विजयिष्यताम् । तानि सर्वाणि भगव-छ्रोतु मिच्छामि तत्त्वतः ।
 ॥ ६४ ॥ व्यास उवाच ॥ प्रसिद्धिभाः पावक ऊर्ध्वरश्मि प्रदाक्षणा वत्त शिखो विधूमः ।
 पुण्या गन्धाश्चाद्गतीना प्रधाति जयस्यैतद्भाविनो रूपमाहुः ॥ ६५ ॥ गम्भार
 घोषाश्च महास्वगाश्च शलाशृङ्गाश्च नदन्ति यत्र । विशुद्धरश्मिस्तपनः शशीच
 जयस्यैतद्भावो रूपमाहुः ॥ ६६ ॥ इष्टा वाच प्रसृता वायसनां सप्रस्थिता नाच
 गमिष्यताच । ये पृष्ठतस्ते त्वारयन्ति रज्जु येचाग्रतस्ते प्रति पेघयन्ति । ६७ ॥ कल्याण
 वाच शकुना राजहसा शुका क्रौंचाः शतपत्राश्च यत्र । प्रदाक्षिणाश्चैव भवन्ति
 सखेय ध्रुव जयस्तत्र यदान्त विप्रा ॥ ६८ ॥ अलङ्करीः कवचैः केतुभिश्चसुख

गह भीने, । ६२ । व्यासजी बोले हे राजा धृतराष्ट्र जो तेरेपन में वर्तमान है उस
 को तू इच्छा पूर्वक कह मैं तेरेसब सन्देह दूरकरूंगा धृतराष्ट्र ने कहा कि युद्ध के
 बीचमें विजयपान वालोंक जा चिह्न होने हे उनसबको हे भगवन मे आगसे मूल
 समेत घुना चाहगाहु, । ६४ । व्यासजी बोल कि स्वच्छ अग्ने प्रकाशमान लंची
 ज्वालायुक्त प्रदाक्षिणावर्ति निर्धूमहा और जिसमें आहुतियोंकी पवित्र सुगंध उठताहाय
 ता विजयहान वाल पुरुषका शुभलक्षण है, आर जहां शंखमृदगोंकी बही गम्भीर
 ध्वनिहा और बड़े शब्दसे बजतेहों और सूर्य चन्द्रमा की स्वच्छ किरणें पड़नीहों
 उसका विजयहानका लक्षण जाना । ६६ चलतेहुय वा जाना चाहते काकोंक बोले
 हुये चित्तराचक एमे बचन विदितहों जाकि पीठकी ओरसे तेरी यात्राको जल्दी
 करते हैं और आगे से तुझको निषध करते हैं, जिस स्थानपर युद्धभूमि में राजहंस
 तोते क्रौंच और शतपत्र नामपक्षी शुभचचन बालतेहुए । ६८ । दक्षिण ओरको होंप

life of sin You are the cause of fame and greatness to the descendants
 of Bharat as well as the grandfather of both the Kauravas and the
 Pandavas” 62 “Open thy mind freely to me and I shall remove
 all thy doubts” said Vyas. I tell me, Bhagwan, in detail, what
 occurs to those who are victorious” 64 “It is a sign of victory,”
 replied Vyas, “that Agni, when libations are poured over it, burns
 with a bright flame inclining towards the right without smoke, and
 gives out a sweet odour The conchshells and cymbals are sonorous
 and the sun and the moon shed clear light to the victorious. Crows,
 flying or about to rise on their wings, give out agreeable sounds
 Those behind urge you to go on, while those that are before keep
 you back from doing so Where stans, parrots, cranes and wood
 peckers, utter delightful notes to the right of the battle field, the
 Brahmans predict victory to that side. 68 The Kshatryas whose

प्रणाद्वैर्हृषितैर्याहयानाम् । प्राजिष्मन्ती दुष्प्रतयीक्षणीया येपाञ्चमुस्ते विजयन्ति
 शत्रून् ॥ ६९ ॥ हृष्टा वाचरतथा सत्वं यांघानां यत्र भारत । न म्लायान्त म्रजथैव
 ते तरन्ति रणोद्गाधम् ॥ ७० ॥ इष्टा वाच प्रविष्टभ्य दक्षिणा प्रविद्विततः । पश्चात्
 सन्धारयन्त्यर्धमग्रे च प्रांतपेधिकाः ॥ ७१ ॥ शब्दरूपरसस्पर्श गन्धाश्च विकृताः शुभाः ।
 रुदा हर्षश्च योघानां जयतामिह लक्षणम् ॥ ७२ ॥ अनुगा वायवो यान्ति तथा
 प्राणि पयांसच । अनुसृवान्त मेघाश्च तथैवेन्द्रचक्रं पिच ॥ ७३ ॥ पनानि जयमानानां
 लक्षणानि विशाम्यत । भवन्ति विपरीतान् ममुर्पूर्णा जनाधिपः ॥ ७४ ॥ अल्पायां वा
 महत्यां वा सेनायामागत निश्चयः । हर्षो योघगणस्यैको जयलक्षणमुच्यत ॥ ७५ ॥

उस स्थानपर विजयकाहोना ब्राह्मण वर्णन करते हैं जिनसत्रियोंकी सेना अलंकारदि
 और कवच ध्वजा वा घोडों के हींसने के सुखदायी शब्दों से शोभायमान कष्ट
 देखने के योग्यहो वह क्षत्री अस्य शत्रुओं को विजय करते हैं, हे भगतवंशी जहां
 शूरवीरों के वचन प्रसन्नता से भरे हुए पराक्रम में तुलंहुये होते हैं और जिनकी
 माला कुंभलाती नहीं है वह पुरुषरणरूपी समुद्रको तरजाते हैं । ७० । शत्रुकी
 सेना में प्रवेश करके देखनेकी इच्छाकरने वाले योद्धाओं के प्रसन्न मन सावधानी
 से संपुक्त हो उनके वचन विजय का घाण करते हैं और जो सम्मुख निषेध
 करनेवाले हैं वहभी मृत्युसे विदित करने वाले हैं, रूप, रस, शब्द, गन्ध स्पर्श
 यह शुभ और स्थान्तर दशांसं संहितहो अर्थात् अपने मुख्य रूपमें ही नियतहो
 और योद्धाओं में सदैव प्रसन्नताहोय यहभी विजय पानेवालोंके लक्षणचिह्न हैं,
 अनुकूलवायुहो इसीप्रकार बादल वा पक्षीगी हो अथवा बादल पीछे चलनेहो
 और इन्द्रधनुषभी इसीप्रकार हो, हे राजा यह सब विजयीलागोंके लक्षण हैं और
 यही सब लक्षण करने वालोंके लिये विपरीत हातेहैं थोड़ी वा बहुत सेनामें योद्धा

armies are embellished with armours, banners and the cheerful neigh-
 ing of horses, are strong enough to conquer their enemies. Those
 warriors who speak cheerfully with one another, who are full of
 prowess and whose garlands do not fade, are able to cross the ocean
 of war. 10. Those who, having entered in the thick of the battle,
 utter cheerful shouts, who warn their enemies of the approach of
 death and to whom the objects of senses appear just as they are,
 can win victory. 72. The winds, the clouds and the birds as well as
 the rain-bow appearing after the clouds are favourable to the
 victorious; the same phenomena occurring unfavourably are a sign
 of destruction. Whether the army be great or small, the cheerful-

एको दीर्घो दारयात सेनां सुमहतीमपि । तां दीर्घाभनुदीर्यन्ते योधाः शूरतरा
 अपि ॥ ७६ ॥ दुर्निपत्तया तदा चैव प्रभग्ना महती चमूः । अपामिव महावेगा
 खस्ता मृदगणाइव ॥ ७७ ॥ नैव शक्या समाघातु सन्निपाते महाचमूः । दीर्घा
 मरत्येव दीर्यन्ते सुावद्वांसोपि भारत ॥ ७८ ॥ भीतान् भग्राथसम्प्रेक्ष्य भयं भूयोभि
 वद्धते । प्रभग्ना सहस्रा राजन् । दशो विद्रवते चमूः ॥ ७९ ॥ नैव स्थापयितुं शक्या
 शूरैरपि महाचमूः । सत्कृत्य महतीं सेनां चतुरङ्गामहोपतिः उपायपूर्वमेधाधीयते-
 तसततोत्थन ॥ ८० ॥ उपायायजयं श्रेष्ठमः दुर्भेदेन मध्यमम् । जघन्य एव विजयो
 यो युद्धेन विशाम्पत ॥ ८१ ॥ महान् दोषः सन्निपातस्तस्याद्यः क्षय उच्यते ।

लोगों की केवल एक प्रसन्नताही विजयनी देनेवाली है । ७५ । एकभी मागाहुआ
 योद्धा बहूबलवी सेना को भी भागा हुआ कर देता है उस भागे हुएके पीछे बड़े
 शूरवीर योद्धाभी भागजाते हैं भागी हुई सेना बड़ी कठिनता से फिर लौट सकती
 है जैसे कि गलोंके बड़े वेग और डाहुये मृगों के समूह कठिनतासे नहीं लौटसक्ते
 इसी प्रकार भागीहुई सेना कोभी जानंग, हे भारतवंशी बड़ी सेना को सम्मुख
 निपत करना असम्भव है क्योंकि भागे हुआ में बड़े युद्धिमान् भी भाग जाते है,
 भयभीत और अलग २ होजाने वाले शूरवीरोंको देखकर और भी भय बढजाता
 है हे राजा अत्यन्त व्याकुल सेना अरुणात् चारों आरों को भागती है ऐसी
 बड़ी सेना शूचीरों से भी निपत करनी कठिन है राजा अपनी चतुरांगिणी सेना
 को अच्छे प्रकार से ध्यान करके युद्ध करे । ८० । युक्तियों से अर्थात् शत्रु के
 चाहने से वा कुछ धन देन से जो विजय होती है वह उत्तम विजय कही जाती
 है और शत्रु के मनुष्यों क मध्यमें विरोधता डलवाने से जो विजय होती है वह
 मध्यम विजय कहाती है और जो विजय युद्ध के द्वारा होती है उसको निकृष्ट

ness of the warriors is the giver of victory 75. The flight of even
 one soldier can be ruinous to the whole army, for when one soldier
 turns back the bravest of the army find it difficult to stand their
 ground, and when once an army is routed, it cannot be checked like
 the flow of waters or a herd of panic-stricken deer 77. A large
 army, when once fallen into disorder, is incapable of being rallied,
 for even the most-skilful in battle run away after the flying. The
 terror multiplies on seeing brave men turn back and the whole army
 is then dispersed in all directions passing out of control. A king
 should therefore keep a careful watch on his army of four kinds of
 forces 80. The best kind of victory is that which is achieved by
 negotiations, the middling one is that which is brought about by

परस्परताः संहृष्टा व्यवधूताः सुनिविताः ॥ ८२ ॥ अपि पञ्चाशत् शूरा मृदुनन्ति
महर्ता चमूम् । अपिवा पञ्च पट्सप्त । धनपन्थनिवर्त्तिनः ॥ ८३ ॥ न धैरतेयोग-
रुडः प्रशंसति महाजनम् । दृष्ट्वा सुपर्णोऽपन्निति महत्या अपि भारत ॥ ८४ ॥
न बाहुव्येन सेनाया जया भवति नित्यशः । अधुवो हि जयो नाम दैवशात्रपरायणम् ।
जयवन्तो हि संग्रामे कृतकृत्या भवन्ति हि ॥ ८५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्वाणपर्वणि निमित्ताख्यानने
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

विजय जानो क्योंकि युद्ध में बड़े २ दोष होते हैं उसका प्रथम फल तो
नाश है । ८२ । परस्पर में ज्ञाना प्रसन्न चिच स्त्री आदि में मोह से रहित
दृढ़ निश्चय रखने वाले पचास शूरीर पुरुष भी बड़ी भारी सेना को विध्वं-
स करते हैं अर्थात् एमे लड़ने हैं कि सबको मार कर विजय पाते हैं और
मुख न फेरने वाले पांच छः वा सात शूरीरभी पूरी विजय का करते हैं, हे
भरतवंशी उत्तम पक्षधारी विनता के पुत्र गरुड़ जी बड़ी सेना से भी हानिको
देखकर बड़े भारी समूह को अच्छा नहीं कहते हैं सेनाकी आधिक्यतासे बहुधा
नित्य विजय नहीं होती है निश्चयकरके विजय नाशवान है इस में मारव्यभी मुख्य
है क्योंकि मारव्य वालेही पुरुष युद्ध में विजय प्राप्त करके अपने अभीष्टको सिद्ध
करते हैं । ८५ ।

causing disunion among the enemies and that which is gained by
bloodshed is the worst For war has many defects of which the
foremost is destruction. 82 Even fifty warriors, knowing one another,
cheerful and free from worldly cares, when firmly resolved, can cause
the destruction of a large army. Even five, six or seven warriors
may gain complete victory. Vinata's son Garud of beautiful plumage
has no desire for an army even when he is surrounded by great
numbers It is not always the great numbers that give victory.
Victory is uncertain. Fate has much to do in that matter, for it is
the fortunate who gain victory in battles and accomplish their
desires. 85.



वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा ययौ व्यासो धृतराष्ट्राय धीमते । धृतराष्ट्रे
 पितृकृपा ध्यानमेवान्वपद्यत ॥ १ ॥ समुहूर्त्तमिव ध्यात्वा चिन्तित्वस्य मुहुर्मुहुः ।
 सञ्जयं संशितात्मानमपृच्छद् भरतर्षभ ॥ २ ॥ सञ्जयेमे महीपालाः दूरा युद्धामि
 नन्दिनः । अन्योन्यमभिनिस्रान्ति शस्त्रैश्चावचैरिद् ॥ ३ ॥ पार्थिवाः पृथिवीहेतोः
 समाभ्यन्त्य जीयितम् । तथा शम्भ्यन्ति निस्रन्तो दधैर्यन्ति यमक्षयम् ॥ ४ ॥ भौम
 मैश्वर्यमिच्छन्तो न मृष्यन्ते परस्परम् । मन्ये बहुगुणा भूमिस्तन्माचक्ष्वसञ्जय ॥ ५ ॥
 वहानि च सहस्राणि प्रयुतान्यर्धुदानि च । कोट्यत्र लोकवीराणां समेताः कुरुजाङ्गले
 ॥ ६ ॥ देशानां च परीमाणं नगराणां च सञ्जय । श्रोतुमिच्छामि तत्त्वेन यत् पते

अध्याय ॥ ४ ॥

वैशम्पायन बोले कि हे राजा जनमेजय व्यासजी इस प्रकार की अनेक बातें
 बुद्धिमान् धृतराष्ट्र से कहकर चल गये और उनकी बातोंका ध्यानकरके धृतराष्ट्रभी
 चिन्ता युक्त हुआ और हे भरतर्षभ उमग एक मुहूर्त्त पर्यन्त ध्याना वस्थितहो
 वारम्बार भासलेकर उस बुद्धिमान् संजयसे पूछा कि हे संजय इस स्थानपर
 यह युद्ध में प्रसंजनीय शूरवीर राजा लोग छे ट दड़े शत्रुओं के द्वाग परस्पर में
 मारतेहैं, यह सब जीवनकी आशाको त्याग हुये बुद्धिमान् राजा लोग पृथ्वी के
 कागुण मारते हुये शान्ती को नहीं पाते हैं और यगलोक को बढ़ाते हैं पृथ्वी
 संबंधी ऐश्वर्योंको चाहत हुये परस्परमें क्षमा संतोष इत्यादि नहीं करत हैं मैं जान-
 ता और मानताहू कि पृथ्वी बहुत गुण धारण करने वाली है हे संजय इसको
 मुझसे कहो । ५ । कुरु और जांगल देशमें संसार के काव्यनाथि क्षत्री इकट्ठे हुये
 सो हेसंजय मैं उनके देश नगर ग्रामोंकी संख्यामूछ समेत सुनना चाहताहू जहां
 जहां से यह आगे हैं, हुए उनपहोंगस्त्री ब्रह्मन्त्यापि व्यासजी के प्रभावसे दिव्य

CHAPTER IV

Vaishampayan continued. Having spoken, as mentioned above, to King Dhritrashtra, Vyas went away and the former reflected on it in silence. During his meditation he heaved deep sighs and asked of wise Sanjaya, "These brave kings of different countries who are so anxious to join the battle, have assembled here to die for the sake of earth and will strike one another with different sorts of weapons. They will not be satisfied till they have filled the region of Yam, and are destitute of mercy and peace of mind after worldly gains. Methinks the Earth must possess many attributes. Tell me, Sanjaya, all about it. 5. Millions of Kshatriyas have assembled at Kurujangle to die, I wish to know in detail the number of their countries, cities and villages from which they have come. By the

समागता ॥ ७ ॥ दिव्यबुद्धिप्रदीपेन युक्तस्य ज्ञानचक्षुषा । प्रभावात्तस्य ॥ ७ ॥
 ध्यामिष्यामितनेजस ॥ ८ ॥ सत्राय उवाच ॥ यमप्रज्ञ महाप्रज्ञ भौमान् यद्यथाभिते
 गुणान् । शास्त्रचक्षुस्त्वेष्य नमस्तेभरतर्षभ ॥ ९ ॥ द्विविधानीह भूतानि चगणि
 स्व्यगणान् च । भस्मानां त्रिविधा योनिरष्टस्वेदजराजाः ॥ १० ॥ प्रमाणांस्तु
 सर्वेषां श्रेष्ठा राजन् जगद्युजा । जगद्युजानां प्रथम मानवाः पशवश्चये ॥ ११ ॥
 नानाकायग गर्जस्तेषा भेदाश्चतुर्दश । देवैका पृथिवीपालयेषुयज्ञा प्रतिष्ठता ॥ १२ ॥
 प्रभ्याणांपुरुषाःश्रेष्ठा सिंहाश्चारणवासिना । सर्वेषामेवभूतानामन्योन्येनोपजीवन १३
 उवाच ॥ अधातराः प्रोक्तास्तेषा पंचवजातय । वृक्षगुल्मलगाचक्षुर वनसारास्तृणजातय
 ॥ १४ ॥ तेषांविंशतिरेकोशमहाभूतेषुपंचसु । चतुर्विंशतिरिष्टा गायत्रीलोकममता
 ॥ १५ ॥ यएतां वेदगायत्रीपुण्यांसर्व गुणान्वता । तत्त्वेनभरतश्रेष्ठ सलोकैनप्रप

बुद्धिरूप दीपक और ज्ञानरूप नेत्रों से संयुक्त है, संग्रह बोले कि हे भरतर्षभ
 महाज्ञानी धृतराष्ट्र मैं अपनी बुद्धि के अनुसार पृथ्वी के गुणोंका वर्णन करूंगा
 तुमभी शास्त्ररूपी नेत्रों का धारण करके विचार करोगे मैं आपको नमस्कार करताहूँ
 यहां दो प्रकारके जीवधारी हैं एकस्थायर दूसरे जंगम अर्थात् नहीं चलने वाले
 और चलने वाले और सब जीवमानका उत्पत्ति स्थान तीन प्रकारसे है अर्थात्
 अंडज स्वेदज जरायुजस है । १० । और जंगम जीवों में जरायुज उत्तम है और
 जरायुजों में मनुष्य वा पशु हैं वह दोनों अत्यन्त उत्तम है वही अनेक प्रकार के
 रूप धारण करनेवाले हैं उनके प्रकार जो वेद में कहेगये हैं वह संख्या में
 चौदह हैं उन्हीं में यज्ञादि धर्म नियत है और ग्राम वा नगर के वासिनों में
 मनुष्य श्रेष्ठ है और वनवासिनों में सिंह उत्तम है सब जीवों का जीवन निर्वाह

boon of the greatishi Vyas, you are endowed with the light of
 wisdom and the eyes of knowledge" " Best of Bharats!" replied
 Sanjaya. " I shall tell you the merits of the earth to the extent of
 my knowledge. Hear and compare it with your knowledge of books
 I bow to you The creatures of the earth are of two kinds, moveable
 and immovable They are again divided into three sorts according
 to their system of birth—Oviporous, Viviporous and those born by
 effect of heat and damp 10 Of moveable beings those who are
 born alive are the best and of the latter the foremost are human
 beings and animals These appear in various forms which according
 to the Vedas are fourteen in number and on which sacrifices rest. Of
 those who live in villages and cities, human beings are the best,
 while lions are the foremost of those living in forests. They all live
 with the help of one another 16. These which come out of ground,

इयति ॥ १६ ॥ अरण्यवासिनः सप्तसत्तैषां ग्रामवासिन । सिंहाध्याघ्रावराहाश्चम
हिपावारणास्तथा ॥ १७ ॥ ऋक्षाश्चवानराश्चैव सप्तारण्या स्मृतानृप । गौरजावि
मनयाश्च अश्वत्थानराश्चैव ॥ १८ ॥ एते ग्राम्या समाख्याता पशव सप्तसाधुभि ।
एते वै पशवो राजन् ग्राम्यारण्याश्चतुर्दश ॥ १९ ॥ भूमौ च जायते सर्वं भूमौ सर्वं विनश्यति ।
भूमि प्रतिष्ठाभूताना भूमिरेव सनातन ॥ २० ॥ यस्य भूमिस्तस्य सर्वजगत्स्थायरजगमम् ।
तत्रातिगृह्णारजानो विनिघ्नतीतरेतरम् ॥ २१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड विनिर्भाणपर्वणि भौमगुणकथने
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

परस्पर में है । १६ । पृथ्वी को फोड़कर उत्पन्न होनेवाले वृक्षादिकु स्थानर कहे
जाते हैं उनके पाँच भेद हैं वृक्ष, गुल्म, लता, बदली, त्वचासार और तृणजाति, पंच
महा भूतों में उनके उन्नीस प्रकार हैं अर्थात् स्थानर जीव ५ और जंगम
१४ और लोक में गायत्री भी चौबीस अक्षरों को उपदेश की जाती है सो हे
राजा जो जीवधारियों में से उस सर्वगुणसम्पन्न गायत्री को मूल समेत जानता
है वह संसार में नाश नहीं होता है, सब पृथ्वी में ही उत्पन्न होते हैं और पृथ्वीपर
ही नाश होजाते हैं पृथ्वी सब जीवों का निवास स्थान होकर बहुत प्राचीन है
इनजीवों में सात ग्रामवासी वा सात नगर निवासी हैं सिंह, व्याघ्र, बराह, भैंसा
हाथी, रीछ, बानर यह सात वनवासी कहे जाते हैं गौ बकरी भेड़ मनुष्य घाडा
खिचूरगधा इन सातोंको साधूलाग ग्रामवासी कहते हैं और यही ग्रामवासी और
वनवासी चौदह पशु हैं इन्हीं चौदह पशुओं में मनुष्यभी गिना जाता है जिसकी
पृथ्वी है उसीका यह सब स्थावर जगम जगत् है उसमें छाभी राजा लाग परस्पर
में मारते हैं ॥ २१ ॥

such as trees, etc. are immovable They are five in number, viz, trees, shrubs, creepers *vallis* (creeping on ground) and grasses Thus of moveables and immoveables there are nineteen Their constituents are five which with the above make up twentyfour, the same as the letters of *gayatri* He who knows this *gayatri* possessed of every virtue, is free from destruction All who are born on earth die on it The earth being the refuge of all creatures, is of very old standing Of the animals seven live in forests viz, lions, tigers, boars, buffaloes, elephants, bears and monkeys, and seven, viz, cows, goats sheep, men horses mules and asses live in habitations Of these, man is one He who possesses the earth, is the lord of all its moveables and immoveables and it is for the sake of the earth that avaricious kings slay one another" 21

पृथराष्ट्र उवाच ॥ नदीनां पर्वतानां च नामधेयानि सञ्जय । तथा जनपदानां च ये
 चान्ये भूमि माश्रिताः ॥ १ ॥ प्रमाणञ्च प्रमाणज्ञ पृथिव्यामम सर्वतः । निर्गिलेनसमा
 चक्ष्य काननानि च सञ्जय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ पञ्चेमानि महाराज महाभूतानि संप्र-
 हात् । जगतीस्थान सर्वाणि समान्याहुर्मनीषिणः ॥ ३ ॥ भूमिरापस्तथा वायु रग्निरा
 काश मेव च । गुणोत्तराणि सर्वाणि तेषां भूमिः प्रधानतः ॥ ४ ॥ शब्दः स्पर्शश्च रूपं च
 रसो गन्धश्च पंचमः । भूमेते गुणाः प्रोक्ता ऋषि भिस्तत्त्व वेदिभिः ॥ ५ ॥ चत्वारोऽप्यु-
 गुणा राजन् गन्धस्तत्र न विद्यते । शब्दः स्पर्शश्च रूपं च तेजसोश्च गुणास्त्रयः । शब्दः
 स्पर्शश्च वायोऽस्तु आकाशे शब्द पवतु ॥ ६ ॥ एते पंच गुणा राजन् महाभूतेषु पंचसु ।
 वर्तन्ते सर्व लोकेषु येषु भूताः प्रतिष्ठिताः ॥ ७ ॥ अन्योन्यं नाभिवर्तन्ते साम्यं भवति

अध्याय ॥ ५ ॥

पृथराष्ट्र बोले कि हे संजय नदी पर्वत देश और अन्य अन्य जो पृथ्वी पर
 नियत हैं उन सबके नामोंको वर्णन करो, हे प्रमाण के भी ज्ञाता संजय पृथ्वीका
 प्रमाण जैसा कि सब ओरसे हे उस सबको मूल समेत मुझ से वर्णन करो,
 संजय बोले कि हे महाराज पंडित लोगों ने इन सब पञ्च महाभूतों को एकत्र
 होजाने से ब्रह्माण्डरूप और ब्रह्मरूप वर्णन किया है पृथ्वी जल, वायु, अग्नि,
 आकाश यह पाँचाँ क्रमसे एक से दूसरा एक एक गुण अधिक रखनेवाले हैं,
 मूल जाननेवाले ऋषियों ने पृथ्वी के शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध यह पाँच गुण
 कहे जलमें चार गुण हैं एक गन्ध गुण नहीं है अग्नि के तीन गुण शब्द स्पर्श
 और रूप वायु में शब्द वा स्पर्श है आकाश में केवल एक शब्दही गुण है, हे
 राजा पञ्च महाभूत रूप सब लोकोंमें यही पाँच गुण वर्धमान हैं, उन्हीं में जीव-
 धारी नियत हैं, निश्चय करके जब मलय मुपुक्षि, समाधि, गोल इन् चारोंमें ब्रह्म-

CHAPTER V.

Dhritrashtra desired of Sanjaya to name the rivers, mountains, countries and other things of the earth as well as its dimensions. "The learned, O king," replied Saujaya, "regard all things of the universe to be of same form on account of the presence of the five great elements in them. Space, fire, air, water and earth are the elements of which each succeeding one possesses the quality of the former ones in addition to its own. Their attributes are sound, touch, vision, taste and scent respectively. The whole world is made up of these five elements or attributes. All the living beings are made up of these. The eater and that which is to be eaten do not come face to face with each other as long as they are united with Brahm in the four states, viz. *Pralaya*, *sushupti*, *samadhi* and

यै यदा ॥ ८ ॥ यदा तु विषयीभाव माविशति परस्परम् । तदा देहे देहवन्तो व्यतिरोहति
 नान्यथा ॥ ९ ॥ ज्ञानं पूर्वात्वनश्यति जायते चानु पूर्वाः । सर्वोपवपरि मेयागि तदे-
 योरूपमैश्वरम् ॥ १० ॥ तत्र तत्र हि दृश्यन्ते धातव पांच भौतिका । तेषामनुप्यास्त
 केषु प्रमाणानि प्रचक्षते ॥ ११ ॥ अर्चित्याह खलु ये भावा न तास्तर्केण साधयेत् । प्रकृ-
 तिम्य परं यत्तु तदचित्यम्य लक्षणम् ॥ १२ ॥ सुदर्शनं प्रद्युम्नामि द्वीपंतु कुरुनन्दन ।
 परिमण्डला महाराज द्वीपसौ चक्रसंस्थितः ॥ १३ ॥ नदीजलप्रतिच्छन्नः परतैश्चात्र
 सन्निभैः । पुंश्चित्रविधानादरे रम्यैर्जगत्पद-तथा ॥ १४ ॥ वृक्षैः पुष्पफलोपेतैः सम्पन्नघन
 धान्यधान् । लवणेन रामद्रेण समन्तात् परिवारितः ॥ १५ ॥ यथाहि पुरप पश्ये दावर्षी

भाव होता है तब वह भक्ष्य भक्षक परस्पर में सम्मुख नहीं होते और जब वेह
 ब्रह्मभावसे गिरकर परस्पर भिन्न २ रूपों में प्रवेश करते हैं तब निश्चय करके
 जीव जीवों पर गिरत हैं क्रमसे ही उत्पन्न होत हैं और क्रम क्रम से ही नाश
 होजाते हैं और वह सब अमरता हैं इस कारण इन सबका ब्रह्मरूप है । १० ।
 फिर प्रलय के पीछे पञ्चभूत सम्बन्धी भूगोल आदि धातु जहां तहां दृष्टिगोचर
 होते हैं-उनके प्रमाणों का अनुप्य बुद्धिहीन तर्कण ओ स कहने हैं निश्चय करके
 जो ध्यान से भी बाहर हैं उनको तर्कणाओं से कैसे सिद्ध करसकते हैं, जो तीनों
 गुण और पञ्चभूतादि से पृथक् है वर ध्यान भी अगम्य ब्रह्म का लक्षण
 है, हे कौरववन्दन अब मैं सुदर्शन नाम जम्बूद्वीप का दर्शन करता हू कि यह
 परिमण्डल नाम द्वीप चाँदों ओर से देशरूप अथवा चक्र क समान निया है,
 नदियों के जल से और बादलों क रूप पर्वतों से अथवा नानाप्रकार के रूपवाले
 पुर वा देशों से ढका हुआ है और फूल फले वृक्ष धन धान्य आदि प सयुक्तकारी
 सहस्र से घिरा हुआ है । १५ । जैसे कि अनुप्य दर्पण में अपने मुख का देखता

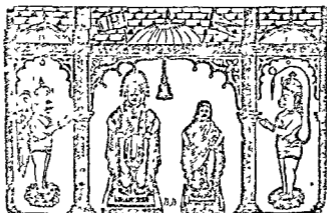
moksh But when, disunited from Brahm, they appear on the earth
 in different forms, one living being falls upon another. The living
 beings are born one by one and meet their death in the same order.
 They are innumerable and like Brahm in form. 10. After Pralaya,
 things made of the five elements are seen here and there. People
 try to ascertain their dimensions by the exercise of their reasoning
 powers. But those matters which are inconceivable should never
 be sought to be tried by reason. That which is beyond nature is an
 indication of the inconceivable. I shall now describe to you the
 island of Sudaishan, joy of the Kauravas. This island is circular like
 a wheel. It is covered with rivers, mountains looking like clouds,
 cities and provinces. It is covered with trees bearing fruits and
 flowers and with crops of various kinds and other wealth. It is

सुप्तमात्मनः । एवं सुदर्शनद्वीपे दृश्यते चन्द्र मण्डले ॥ १६ ॥ द्विरंशे पिप्पलमन्त्र द्वि-
रंशे च शशो महान् । सर्वौषधि समावायः सर्वतः परिवारितः ॥ १७ ॥ थापस्ततोन्वा
विज्ञेयाः श्रेयः संक्षेप उच्यते । ततोन्व उच्यते चाय मेन सक्षेपत' शृणु ॥ १८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड त्रिनिर्वाणपर्वणि सुदर्शनद्वीपवर्णने
पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

है उसी प्रकार सुदर्शन द्वीप ब्रह्माण्ड स्वरूप चन्द्रमण्डल रूपी मन में दिखाई देता
है, उस चन्द्रमण्डलके एकभाग में दोरूपधारी पीपलका वृक्ष है और दोभाग एक
बड़े खर के कीर्नाई दिखाई देते हैं वह सुदर्शन द्वीप सब औषधोंका रखन बाटा
सब ओर सं समुद्र और अन्य देशों से घिरा है इसका आनक्ति और जो कुछ है
उसका संक्षेप से सुना । १८ ।

surrounded by the salt waters of the ocean. The island is seen in
the lunar disc just as we see our faces in a mirror. Two of its parts
are seen like a *pipal* tree, while the other two look like a large hare.
It is overgrown by medicinal herbs and is surrounded by seas and
countries. I shall, in short describe to you what remains besides
this." 18.



धृतराष्ट्र उवाच । उक्तोद्धोपस्य सक्षेपो विधिवद्बुद्धिमंस्त्वया । त्वज्ज्ञश्चासि सर्वस्य
वितरन् वृद्धि सञ्जय ॥ १ ॥ यावान् भूम्यधकाशोय दृश्यते शशलक्षणे । तस्य
प्रमाणं प्रवृद्धि ततो यक्ष्यसिापप्लम् ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंराज्ञासपु
ष्टस्तु सञ्जयो वाक्यमवधीत् । सञ्जय उवाच । प्रागायतामहाराज पठेतेवपपर्वता-
वगगाढाह्यभयतः समुद्रौ पूर्वपश्चिमौ ॥ ३ ॥ हिमवान् हेमकूटश्च निपद्यन्मनोत्तम ।
नीलथ वैदूर्यमय, श्वेतश्च शशिसन्निभ ॥ ४ ॥ सर्वधातुवचित्रश्च श्रृङ्गवाप्रागपर्वतः ।
पतेवै पर्वता राजन् सिद्धचारणसेविता ॥ ५ ॥ तेषामन्तरविष्कम्भो योजनानां
सहस्रशः । तत्र पुण्या जनपदास्तानां वर्षाणि भारत ॥ ६ ॥ वसन्ति तेषु सत्वानि

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे बुद्धिमान संजय तुमने अपनी बुद्धि के अनुसार जंबूद्वीप
का आशय वर्णन किया और तुम मुख्यताके भी जानन बालहो इससे इसको
मूलसमेत व्यापारेवार वर्णनकरो पहले उस भागका वर्णन करो जा खरहे की नाई
दिखाई देता है और फिर उसका वर्णन करना जो पीपल की सदृश दिखाई पडता
है सञ्जय बोल हेराजा अब जंबूद्वीप का सपूर्ण व्यापारेवार वृत्तान्त सुनो छः खडों
के पर्वत दोनों ओरको पूर्व और पश्चिम समुद्रसे मिलेहुयेहैं, हिमवान्, हेमकूट,
निपथ, वैदूर्यनील, शशिसन्निभ, सर्वधातुमय शृङ्गवान् पर्वत इनछःओं पर्वतों
पर सिद्ध चारण लोग निवास करतेहैं, हे भरतवर्षी इनपर्वतों के मध्य स्थलका
विस्तार हजारों योजन है और इन में अनेक पवित्र १ देशहैं उर्ध्विका खण्डनाम
है । ५ । उनखडों में नानामकारके जातिवाले लोग निवास करत हैं यहभारतवर्ष
है इस से दूसरा हेमवत नामखण्डहै, और हेमकूट पर्वत से परे हरिवर्षनाम खण्डहै,

CHAPTER VI

“ Wise Sanjaya,” said Dhritrashtra, “ You have given a good
account of Jambudwip. Tell me all about it in detail. Give me an
account of the dimensions of that portion which looks like a hare and
then of that portion which resembles a pipal tree. “ Hear a
full account of Jambudweep,” replied Sanjaya, “ Touching the
eastern and western seas are six ranges of mountains, viz, Himuan,
Hemcoot, Nishadh, Vaiduryanil, Shashiprabh shwet and Shringwan
which is full of all sorts of metals. These six mountains are inhabited
by Sidhas and charans. The space between them extends for thou-
sands of miles and several holy cities are situated over those areas.
They are known as varshas. People of different tribes live in them
and the whole land is known as Bharat-varsh. The next portion is

नानाजातीनि स्वयेश' । इदन्तु भारत वर्षे ततो ह्रमवत् परम् ॥ ७ ॥ हेमकूटात्
परञ्चैव हरिवर्षे प्रचक्षते । दक्षिणेनतु नीलस्य निपद्यस्योत्तरेणतु ॥ ८ ॥ प्रागायतो
महाभाग मत्स्यवात्राम पर्वत । तत पर माल्यवत् परतो गन्धमादन ॥ ९ ॥
परिमण्डलस्तयोर्मध्ये मेरु कान्तपर्वत । आदित्यतरणाभासा विधूमद्वयवक्र
॥ १० ॥ योजनाना सहस्राणि चतुरशीतिरुच्यते । अद्यस्ताचतुरशीतयोोजना
नामद्वीपते ॥ ११ ॥ ऊर्ध्वमधय तिर्यक् च लोकानावृत्य तिष्ठत । तस्य पार्श्वे
श्वमी दीप्ताश्रवार सन्निता विभो ॥ १२ ॥ भद्राश्व केतुमालश्च जम्बूद्वीपश्च
भारत । उत्तराश्चैव दुरयः क्लृप्तपुण्यप्रतिधया ॥ १३ ॥ विहग सुमुखोयस्तु स्रुपर्ण
स्यामजः । जल । स वै । वचि-तयामाम स्वीर्णान् वीक्ष्य वायगान् ॥ १४ ॥ मेरु
चममध्यानामधमानाच पक्षिणाम् । आशेषरुतो यस्मात्तस्मादेन त्यजान्यहम् १५

नील पर्वत के दक्षिण और निपद्य के उत्तर ओरसे पूर्व और पश्चिम समुद्र
का स्पर्श कानवाला माल्यवान् पर्वत है इस माल्यवान्मे आगे गन्धमादन
पर्वत है और उनदोनों के मध्यमें सुनहरी और चारों ओर से मण्डलवर्षी मेरु
पर्वत है, बहुतरुण सूर्य के समान प्रकाशमान और निर्धूम अग्नि के समान
है । १० । और चौदासी हजार योजन ऊंचा है और नीचे की ओरभी उतनाही
है वह ऊचानीचा त्रिंशत् लोकों को व्याप्त करके वर्तमान है, हे समर्थ भरतवशी
धृतराष्ट्र उम मेरु के अन्तर्गत यह चारद्वीप नियत हैं एकमुख्य जंबूद्वीप और
तीनउपद्वीप भद्राश्व, केतुमाल, कौरव नाम से पुण्यवान् पुरुषों के रचे हुये आश्रम
हैं । ११ निश्चय करके जो सुमुख नाम गरुडपक्षी है उसने सुनहरी कौरवोंको देख
कर विचार किया है 'जोकि मेरुपर्वत उत्तम और विस्तृत वा छोटे २ पक्षियों की
भी मुख्यताको नहीं करनेवाला है इसकारणसे मैं इसको त्याग करताहूँ, मनाशोंका

known as Hemvant and Hirivarsah lies beyond Hemkut To the
south of Nil and north of Nishadh, touching the eastern and western
seas, is the range known as Malyavan and beyond it lies Gandhmadan
Between these two lies the golden Meru which is round in shape,
shining like the morning sun or smokeless fire. 10 It is eightyfour
thousand yojans high and is as much below as above It supports
the earth on all sides Besides Meru there are four islands, the chief
of which is Jambu and the minor ones are Bhadrashwa, Ketumal
and Kaurav, inhabited by virtuous men. 13 The bird Sumukh,
son of Suparn, beholding that all the birds on Meru were of golden
plumage, thought it better to leave that mountain because there
was no difference there of good, middling or bad. 15 The sun always

तमादित्योनुपर्येति सततं ज्योतिषाम्बर, । चन्द्रमाश्च सनत्तत्रो वायुवैवप्रदक्षिणः
 ॥ १६ ॥ सपथतो महाराज दिव्यपुष्पफलाभितः । भवतैरासुत सर्वभ्राम्बुतदप
 रिच्छतैः ॥ १७ ॥ तत्र देवगणाराजन् गन्धर्वा सुराराक्षसाः । अप्सरोगण संयुक्ता शैले
 कीडन्ति सर्वदा ॥ १८ ॥ तत्र ब्रह्मा च रुद्रश्च शक्रश्चापि सुरश्वरः । समेत्य विविधै
 र्भक्षैर्यजन्तेऽनेकदक्षिणैः ॥ १९ ॥ तुम्बुरुनारदश्चैव विश्वावसुर्हहाहुहू । अभिगम्यामर
 श्रेष्ठोस्तुष्टुविविधैः स्तवैः ॥ २० ॥ सप्तर्षयो महात्मान कश्यपश्च प्रजापतिः । तत्रगच्छ
 न्ति भद्रैत सदा पर्वण पर्वणि ॥ २१ ॥ तस्यैव मूर्धन्युशनाः काव्यो दैत्यैर्महीपते ।
 इमंनि तस्य रत्नानि तस्यै मे रत्नपर्वताः ॥ २२ ॥ तस्मात् कुबेरो भगवांश्चतुर्थं भाग
 मश्नुते । तत कलांशं विचस्य मनुष्येभ्यः प्रयच्छति ॥ २३ ॥ पार्श्वं तस्योत्तरे दिव्यं

स्वामी सूर्य सदैव उसकी परिक्रमा करता है और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा और
 वायुभी उसकी परिक्रमा करते हैं, और वह दिव्यफल फलफूलमूलों से संयुक्त है
 और सब स्तर्षणय स्थानों से व्याप्त है जिसपर देवताओंके समूह गर्भव असुर
 राक्षस अप्सराओं के समूहों संगेत कीड़ा करत हैं, और उसपर ब्रह्मा रुद्र और
 देवेन्द्र आदि देवता मिलकर पड़े २ यज्ञादिक कहनेहैं और तुम्बुरुनाग विश्वावसु
 हाहाहूहू नाम गन्धर्व उन देवताओं के सन्युक्त जाके उनको अनेक स्तोत्रादिकों से
 प्रसन्न करते हैं । २० । आपका कल्याणसे उस पर्वतपर महर्षिग सप्तऋषि
 काश्यप प्रजापति सदैव पर्व पर्व में जाते हैं, और उभी पर्वत क मस्तक पर शुक
 जीभी राक्षसों समेत विहार करते हैं उन शुकजी के यह हेमरत्न हैं उन्हीं रत्नों
 के पंहाड भी अनेक हैं और कुबेर जी उग के चौथेभाग को भांगते हैं उस
 धन के सोलहहों भागको मनुष्यों के निमित्त देते हैं, उग भूके उत्तरभाग में
 कर्णिकार राजपुत्रों का वन है जो कि दिव्यरूप सब ओरसे प्रफुल्लित मनाहर

goes round Meru the best of lumaries, and the moon with her
 attendant constellations and the god of wind follows the wake of
 the sun That mountain brings forth celestial fruits and flowers and
 is dotted all over with houses made of gold There the gods, the
 Gandharavas, the asuras and the rakshases join in sport with apsaras
 18. There Brahma, Rudra and Shakra the prince of gods performed
 many sacrifices with large donations Tamvuru, Narad, Vishwavyasa
 Haha and Huhu go there to adore the king of gods with various
 hymns 20. The high minded seven rishis and Kashyap the
 progenitor of all beings go there on every parva day. On the brow
 of the same mountain Shakra roams along with the rakshases To
 him belong all the jewels and gold as well as the mountains abounding
 in such commodities Kuvei enjoys a fourth part of those valuables

सर्वतु सुसुमैथितम् । नृणिंकार वनं रम्य शिलाजालसमुद्गमम् ॥ २४ ॥ तत्र साक्षात्
पशुपदिभ्यर्भूतेः समावृत । उमासदायो भगवान् रमते भूतभावनः ॥ २५ ॥ कर्पि
कारमयीं मालां विव्रत्पादावलम्बिताम् । त्रिभिर्नेत्रैः कृता द्योतस्त्रिभिः सूर्यैः रितादितैः
॥ २६ ॥ तनुप्र तपसः सिद्धा सुव्रता सत्यवादिनः । पदयन्ति नदि दुर्वृत्तैः शम्बोऽष्ट
महेश्वरः ॥ २७ ॥ तत्र शंलाय शिपरात् क्षीरघारा नरेश्वरः । तद्व्यवस्थापारामता
भीम निर्यात नि रचना ॥ २८ ॥ पुण्यापुण्यतमैर्जुष्टा गंगा भागीरथी शुभा । प्लवतीत्रप्र
वेगेन ह्रू चन्द्रमस शुभ ॥ २९ ॥ तथा ह्युपादित पुण्य सद्भूद सामरोपमः । ता
घारवामास तदा दुर्धरां पर्यनैरपि ॥ ३० ॥ शत वर्षं नदस्त्राणा शिरसैव पिनाकधरू ।
मेरोस्तु पश्चिमे पार्श्वे केतुमाली मदीपने ॥ ३१ ॥ जम्बुद्वीपे तु तत्रैव महाजगपदोत्तप ।

शिला जालों से अन्यन्त ऊंचा है उमपेरुके ऊपर जीवोंके तत्पन्न कर्ता कर्णिकार
फूलोंके चरण पर्यन्त मालाका पहने हुये सूर्यके समान प्रकाशित तीननेत्रधारी
साक्षात् शिवजी गदारान अपनी उमादेवी समेत दिव्य जीव्य रियों से व्याप्त
रहते हैं । २६ । उमापी शुद्धरत्ना सत्यवक्ता शुद्धलोग जनका दर्शन करसक्त
हैं वह गदोबाजी कुचाली पुरुषों में देसनेके योग्य नहीं ह । २७ । हे राजा उसी
गहनतके शिखरसे दूध के समान घारा रखने वाली विष्णुरूपा भवानक गम्भीर
शब्दवाली वायुमे टकरा खाती हुई श्रीगंगाजी प्रगट हुई, वह पवित्र और पवित्र
गनुष्यों से सेवित शुभ भागीरथी गंगा बही शीघ्रता और तीव्रतासमेत चन्द्रपके
शुभ हृदयमें विलास करतीहुई मन्त्रहुई है उसीन वह ससुदोपर पवित्रहृदय अपनी
तीव्रधारामे उत्पन्न निपाई जो पहाड़ों से भी धारण नहीं कीजाती थी ऐसी गंगा
को शिवजीने एक 'लाव दर्प पर्यन्त अपने शिर में धारण किया और मेरुके
पश्चिमी कोणमें जंबूद्वीप के मध्य केतुमात नाम खण्डही उसमें बड़ादेश है । ३१ ।

and gives a sixteen h part of it to men The northern part of Meru
is covered with the forest of Karni/ar trees which bear flowers
throughout the year It is very high with its network of stone
There resides the creator of all Le ngs, Shiv the three-eyed, wearing
a garland of Karni/ar flowers extending to his feet, glorious like the
sun, accompanied by his goddess Uma and surrounded by gods 26-
Great ascetics, observers of vows, the truthful and the pure only can
see Him, the great Lord cannot be perceived by the wicked. 27
From the summit of the same Meru flows the Ganges with her milky
current extending far and wide and raising a tremendous uproar
when her waters come in contact with the wind. Bhagnathi the
holy Ganges appears with a tremendous velocity, forming an ocean like
lake The Ganges whom even the mountains cannot bear, was kept
by Shiv on his head for a hundred thousand years. In the western

आयुर्दशसहस्राणि वर्षाणां तत्र भारत ॥ ३२ ॥ सुवर्ण वर्णाश्चनरा स्त्रियन्ऽप्सरसोपमा
 अनामया वीतशोका नित्य मुदितमानसा ॥ ३३ ॥ ज यन्ते मानवास्तत्र नप्रतकनक
 प्रभा । गन्धमादन शृंगेषु कुबेर सह राक्षसै ॥ ३४ ॥ सवृतोऽप्सरसा सधैर्मोदते
 गुह्यरूधिप । गन्धमादन पार्श्वे तु परे त्वपरगण्डिका ॥ ३५ ॥ एकादशसहस्राणि
 वर्षाणापरमायुष । तत्र हृष्टानरा राजस्तेजो युक्तामहाबल । स्त्रियश्चोत्पल वर्णाभा
 सर्गा सुप्रियदर्शना ॥ ३६ ॥ नीलात्पन्तर श्वेत श्वेताङ्गेरुण्यरु परम् । वर्ष मैराघत
 राजरानाजनपदावृतम् ॥ ३७ ॥ धनु सस्ये महाराज द्वेषे दाशणोत्तरे । इलावृत
 मध्यमन्तु पञ्चवपाणि चैव हि ॥ ३८ ॥ उत्तरात्तरमेतभ्या वर्षेनुद्रच्यते गणै ।
 आयु प्रमाणमारोग्य धर्मत कामतोर्धत ॥ ३९ ॥ समन्वितानि भूतान तेषुर्वेषु

उसमें मनुष्यों की अवस्था सतयुगादि में दश हजार वर्षकी है वहाँ के मनुष्यों
 का सुवर्ण के समान वर्णहोता है और स्त्रियाँ अप्सराओं के समान होती हैं वहाँ
 के मनुष्य नीरोग आनंदी सन्देश भक्ति स्वर्ण के समान वर्ण रखनेवाले सुंदर
 रूपवान् उत्पन्नहोते हैं और गुह्यवर्षों के राजा कुबेरजी राक्षसों समेत अप्सराओं
 के समूहोंसे संयुक्त गन्धमादनके झुके हुए शिखरोंपर आनन्द करते हैं, गन्धमादन
 के दूसरेभागके समीप अपरगण्डिका नामछाटे २ पहाड हैं । ३५ । वहाँ के जीव
 ग्यारह हजार वर्षकी उमरके होते हैं, वहाँके मनुष्य तेजस्वी और महाबली हैं और
 स्त्रियाँ उत्पल नामकमल के समान सुन्दर अत्यन्त दर्शनीय हैं, नील पर्वतके आगे
 श्वेतपर्वत है और श्वसे आगे हैरण्यरुनामखण्ड है और शृंगवान् पर्वतके आगे अनक
 देशोंसे व्याप्तपरावा खण्ड है और दक्षिणोत्तरमें भरतखण्ड और एरावत खण्ड यह
 दोनोंधनुष समान अर्थात् त्रिकोणरूप है और बीच में इलावर्त्तादि पाँचखण्डवर्ष-
 मानहैं, उनसे आगे क खराड गुणों में अधिकहैं और अवस्था बानी रेगताभी

corner of Meru is Ketumal 31 In satyug the people living there
 attained the age of ten thousand years The men are of the colour
 of gold and the women are beautiful like apsaras The people living
 there are healthy happy free from care and beautiful Kuber the
 king of Guhyals and yakshes revels with the apsaras on the
 summits of Gandhmadan In the vicinity of Gandhmadan there
 are other smaller hills 35 The people living there attain the age
 of eleven thousand years and are glorious and strong The women
 are beautiful and of the colour of a lotus flower Beyond the blue
 mountains are the white mountains and farther on are the golden ones
 Beyond these are the Anavat hills dotted over with many provinces.
 Anavat in the north and Bharatvarsh in the south are of the form
 of a bow These five provinces are in the middle of which the centre

भात । एवमेवा महागज पर्वतेः पृथ्वी चता ॥ ४० ॥ हेमकूटस्तु सुमहान्
 कैलासो नाम पर्वत । यत्र वैश्रवणो राजन् गुह्यै सहस्रोदते ॥ ४१ ॥ अस्त्यु
 चरेण कैलास मैनाक पर्वतं प्रति । हिरण्यशृङ्ग सुमहान् दिव्यो मागमयोगिरिः
 ॥ ४२ ॥ तस्य पार्श्वे महाद्विध्यं शुभ काञ्चनयालुकम् । रम्य विन्दुसरो नाम यत्र
 राजा भगीरथ ॥ ४३ ॥ दृष्ट्वा भागीरथो गङ्गासुवाम् वदुता सम । याम
 णितपास्तत्र चैत्याश्वाप हिरण्यया ॥ ४४ ॥ तत्र दृष्ट्वा तु गत सिद्धिं सहस्र शोमहा
 यशाः । सृष्ट्वा भूतपतिर्ग्रन्थ सर्वलोकैः सनातनः ॥ ४५ ॥ उपाभ्यने तिग्मतजायत्र
 भूतेः समन्तत । नानारायणो ब्रह्मा मनु स्थाणुश्च पञ्चम ॥ ४६ ॥ तत्र दिव्या
 त्रिपदा प्रथमन्तु प्रतिष्ठिता । तद्गलोकान्दपक्रा ता सतथा प्रातिपद्यते ॥ ४७ ॥

एकमे दूमे में उचरोत्तरहै उनखण्डों में सद्य जीवधारी धर्म काग अर्थ से संयुक्तहै
 हे राजा इसप्रकार से यह पृथ्वी पर्वतोंसे व्याप्तहै ४० और बड़ापर्वत हेमकूटनाम
 कैलास है जिसपर कुबेरजी गुह्य गक्षों सगेन विज्ञाम करतहै कैलास पर्वत क उचर
 मैनाक पर्वत के सम्मुख दिव्य धुनिलोगों से भरा हुआ हिरण्य शृंग नाम बड़ा
 पर्वत है, उम क मपीप स्वर्णरज युक्त पनोहर और दिव्य विन्दुसर नामतड़ाग है
 जिसपर राजाभगीरथन भागीरथीगंगाको देखकर बहुत वर्षोंतक निवाम क्रियाया
 वहां गणि जटिनपङ्कस्तंभ और सुवर्णजटितवृक्षही यज्ञकी सीपाहै ४१:वहीं बड़ेपञ्चस्वी
 इन्द्रनेभी गङ्गको करके महानसिद्धीको पाया, वहांही सब समारकेस्वामी सबसे प्रथम
 महातेजसी शिवजी चारोंओर से परित्रात्गापुरुषों से सेवाक्रिये जाने हैं और नर
 नारायण ब्रह्मागनु पाँचवें स्थाणु नाम रुद्रजी भी वर्चमानहै वहांही प्रथम पृथ्वी

is Elavrita. Of the seven provinces that which is farther north, excels the one to its immediate south in respect of longevity, stature, health, reghteousness, happiness and profit. Creatures live together in these provinces and thus the earth is covered with mountains. 40. The huge mountain named Hemcoot, also called Kailas, is the resort of Kuver and his yakshes and gubhys. To the north of Kailas and opposite Menak is the huge mountain Hiranyashring in the vicinity of which is lake Vindusar, containing gold dust, on the bank of which king Bhagirath stayed for the sake of the Ganges. There the pillars and trees, studded with gold and gems, mark the boundaries of sacrifices. It was there that Indra of great glory won great success by his sacrifices. It is there that Shiv the lord of all the world and the foremost of glorious beings, is attended by persons possessing pure soul. It is the residence of Nar, Narayan, Brahma,

चस्वीकसारा नलिनी पावनी च सरस्वती । जन्वुन्दीच खीताच गङ्गा सिन्धुश्च
सतमा ॥ ४८ ॥ स्वचिन्त्या इत्यलकशा प्रभोरैव सारिणीषु । उपासत यत्र
सत्रवहस्रगुणपर्यये ॥४९॥ इत्याऽहस्याच भयाततातत्रलस्वती । एतादस्या सतगङ्गा
झिपुलोकेपायश्रुता ॥५०॥ राक्षासैर्विहमजातेऽमकूटतुगुणका । सर्पानाम् निपथेगोर्कर्ण
च तपोवनम् ॥ ५१ ॥ देवासुरेण सर्वेषांश्वेतपर्वत उच्यते । मन्थर्वानपथेनित्य
नीले ब्रह्मर्षयस्तथा । शङ्खवास्तु मह राज द्यावा प्रतिस्वरः ॥ ५२ ॥ इत्यतान
महाराज सप्त वर्षाणि भागशः । भूतान्युपायविष्टानि गतिमान्त ध्रुवाणिच ॥५३॥
तेषु सृष्टिर्बहुविधा इत्यते देवमानुषी । अशक्यापरि सत्स गतु शङ्खवास्तुभूषता ॥५४॥
यान्तु पृच्छसि मां राजन् दिव्यामेतां शशाङ्कतम् । पार्श्वे शशस्य द्वे वर्षे उके

पाताल और स्वर्ग के मार्ग में बहने वाली दिव्यनदी श्रीगंगाजी नियत होकर
ब्रह्मलोकस चली हुई सान प्रकारसे चस्वीक, सारा, नलिनी, पावनी सरस्वती,
जंवुनदी, खीता गंगा, सिन्धुतापों से ध्यानस अगम्य और दिव्य रूपसे बहती है
यह प्रभु ईश्वरकी रचना है हजार वर्षोंके चक्रमें इन्द्र उपासना करते हैं वही २
सरस्वती गुण और प्रकृत शरीरें, यह सातों गंगा दिव्य रूपसे तीनों लोकों में
वर्तमान है । ५० । हिमालय में राक्षस, हेमकूट में गुह्यक, निपथे, सर्प, गोर्कर्ण में
तपोवन श्रुति लोग हैं, श्वतपर्वा सत्र देवता और असुरों का कडागता है निपथ
में मन्थर्व और नील पर्वत पर ब्रह्मकृपिलोग सदैव निवास करते हैं, महाराज
श्रुतवान नाम पर्वत देवताओंका निहार स्थान है और यह सातोंखण्ड विभाग
रूपे गये हैं उनसत्र में स्थावर और जगज जीव रहते हैं उनका देव संबंधी और
मनुष्य संबंधी धन बहुत प्रकार का देखन में आता है । ५४ । हे राजा तुम जिस

Manu and Sthamu It was there that the divine Ganges, flowing
on earth, heaven and subteranean regions, issuing out of the region of
Brahma, first showed herself and then dividing herself into seven
streams, flows as the Vaswoksua the Nalmi, the cleansing Saraswati
the Jamvunadi, the Sheeta the Ganges and the Sindhu The supreme
Lord has made this arrangement. Indra has performed thousands of
sacrifices there. The Saraswati is visible in some parts and invisible in
others. 50. Himachal is the home of rakshases, white mountain
of gods and asurs, Hemecoot of Guhyaks, Nishadh of snakes, Golarn
of asceticishus, Nishadh of Gandharavas, Nil of Brahmurishus and
Shringvan is the pleasure ground of gods. These are the seven
divisions over which movables and immovables are found and
possess divine and worldly wealth. I cannot count them, although it

ये दक्षिणोत्तरं । कर्णौ तु नागद्वीपश्च काश्यपद्वीप एवच ॥ ५१ ॥ राम्रपर्ण
 शिलो राजन्वृत्तमान् मलयपर्वतः । पतद् द्विनय द्वीपस्यदृश्यते शशनेस्थितम् ॥ ५६ ॥
 इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्वणि भूम्यादिपरिमाण
 विवरणे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

धृतगङ्गा उवाच । मेरोरधोत्तरं पार्श्वं पूर्वं चावश्वसञ्जय । निस्सिलेन नदा
 बुद्धे मालयवन्तश्च पर्वतम् ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । दक्षिणेनतु नदिष्य मेरोःपार्श्वे
 तथोत्तरं । उत्तराः क्रुद्धो राजन् पुण्याः सिद्धनिषेविताः ॥२॥ तत्रवृक्षामधुफला नित्यपु-
 ष्पफलोपगाः । पुष्पाणि च सुगन्धीनि रमयन्ति फलानि च ॥ ३ ॥ सर्वकामफ-
 लास्तत्र कौचद् वृक्षा जनाधिप । अपरे क्षारणो नाम वृक्षास्तत्र नगाधिप ॥४॥

दिव्य विराट् स्वरूप को सुझते पूछनेहो उमकी संख्याका मणान करना दुझमे
 असंभव है परन्तु उसका सुननाही श्रद्धाके योग्य है विराट् पुरुषके दोनों आर
 दोखण्ड यह है दाहिने में भरतखण्ड अर्थात् कर्मभूमि और बायें में ऐरावत खंड
 अर्थात् योगभूमि दोनों कानों में नाग द्वीप और काश्यपद्वीप है । ५६ ।

अध्याय ॥ ७ ॥

धृतगङ्गाले कि हे बुद्धिमान् संजय प्रथम मेरु पर्वत के उत्तरीय भाग के
 मालवत पहाडके मूल समेत वृत्तान्तों को वर्णन करो, संजय वाले कि हे राजा
 नील पर्वत क दक्षिण और मेरु के उत्तरभाग में उत्तर कुरुदेश हैं जांकि पश्चिम
 और सिद्धियों से शोधित हैं नदांपर वृक्ष अधुर फल फूलों से सदैव शोभित रहते हैं
 और पुष्प अत्यन्त सुगन्धित और फल महा रमील होते हैं, हे राजा वहाँ कोई
 कोई वृक्षतो सब अभिलाषाओंके पूर्ण करनेवाले हैं और अन्य बहुत से वृक्ष अ-

is good for the believers to hear of them. I have told you about the
 two divisions, that on the right is called Bharatkhand and that on
 the left is Aravatkhand. Nagdwip and Kashyap-dwip are the two
 ears of the hare." 56.

CHAPTER VII

"Tell me Sanjaya," said Dhritrashtra, "of the regions to the
 North and East of Meru as well as of Malavat." "On the south of
 the Nil mountain and the north of Meru," replied Sanjaya, "are
 sacred northern Kurus the residence of Sidhas. The trees there bear
 sweet fruits and flowers. The flowers are fragrant and the fruits are
 excellent in taste; some trees give fruits according to desire, while
 others give milk and other kinds of food of six different flavours."

येक्षरन्ति सदा क्षीरं पद्मसनामृतोपमम् । यस्याणि च प्रसूयन्ते कलेश्वाभरणानि च ॥ ५ ॥ सर्वा मणिमयी भूमिः सूक्ष्मकावतवालुका । मणिरत्ननिभं रम्यं वज्रवैद्युत्सन्निभम् ॥ ६ ॥ भूभागदृश्यते तत्र पद्मरागलक्षप्रभम् । सर्वसंसुखसंस्पर्शा तन्पद्मा च जनाधिप ॥ ७ ॥ पुष्करिण्य श्मास्तन सखस्पर्शा मनोरमा । देवलोके व्युता सर्वे जायन्ते तत्र मानवाः ॥ ८ ॥ शुभलाभजनसम्पदाः सर्वसुप्रियदर्शना । मिथुनानि च जायन्ते स्त्रियश्चाप्सरसोपमा ॥ ९ ॥ तेषान्ते क्षीरिणां क्षीरं पिबन्त्य मृतभाद्रभम् । मधुनं जायते काले समन्तच्च प्रवर्द्धते ॥ १० ॥ तुल्यरूपगुणोपेत समवेश तथैव च । एवमवानु रूपं चक्रवाक समं प्रभो ॥ ११ ॥ निरामयाश्चते लोका निरयं मुदितमानसा । दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च ॥ १२ ॥ जीवन्ति ते महाराज न चान्योन्यं जहात्युत । भारुण्डानाम शकुनास्तीक्ष्णतुण्डा महावलाः ॥ १३ ॥

मृत सपान स्वादुयुक्त छः रस से युक्त दूधों के देनेवाले हैं और फलों में वस्त्राभरणों को उत्पन्न करते हैं । ५ । हे राजा सब पृथ्वी मणियों की बनी हुई और दिव्य सृष्टि की वालू रखनेवाली और सब ऋतुओं में सुख से स्पर्श होने वाली कीच आदि से रहित है वहाँ पर दालांक से पतित लोग उत्पन्न होते हैं वह सब विष्णुभक्तों से सगकरनेवाले और अत्यन्त स्वरूपवान् होते हैं और अप्सराओं के सपान स्रवणं वहाँ जोड़ों को उत्पन्न करती हैं वह जाड़े उन दूध देनेवाले वृक्षों के अमृतरूपी दूधों का पिते हैं समय पर जोड़े उत्पन्न होते हैं और सदैव बढ़ते हैं और रूप गुणसंयुक्त सदैव एक ही पोशाकवान् होते हैं । १० । हे समर्थ वह जोड़ चक्रवाकों के सपान एकसे रूपान्ते भी होते हैं और निरोगतापूर्वक सदैव प्रसन्न मन रहते हैं उनकी अवस्था ग्यारह हजार वर्ष की होती है और समान अवस्था हानिके कारण कोई किसी को नहीं माता है अर्थात् एक ही समय में देहोंको त्यागते हैं

They also yield cloths and ornaments, 5 The land abounds with golden sand. One portion of that beautiful land is radiant like rubies, diamonds, or lapis lazuli and other gems. All the seasons are agreeable and the earth is without mire. The tanks are charming, delicious and full of crystal water. People who are born there, come down from among the gods. They are pure of birth and very beautiful. They are born in pairs and the women there are like apsaras in beauty. They suckle on the nectar like milk of these trees and are of equal stature, beauty and virtues, wear the same sort of dress and love each other like chakravaks 11 They are cheerful and free from illness. They live eleven thousand years and never abandon each other. Bharunda, a bird with sharp beak and great strength, lifts them up when they are dead and throw them in mountain

ताम्रिहन्तीह मृतान् दरीषु प्राक्षपन्तिच । उत्तरा कुरवो राजान् व्याख्यातास्ते समा
सतः ॥ १४ ॥ मेरोः पार्श्वमहर्षपूर्वं यस्याभ्यगयघातयम् । तस्य मूर्धाभिषेकस्तु
भद्राश्वस्य विशाम्पते १५ भद्रसालवनं यत्र कालाम्रश्च महादृमः । कालाम्रस्तुमहाराज
नित्यपुष्पफल-शुभः ॥ १६ ॥ दुमश्च योजनोत्सेधः सिद्धचारणसेवितः । तत्रते पुरुषाः भेदा
स्नेजोगुक्ता महावलाः ॥ १७ ॥ स्त्रियः कुमुदघर्णाश्च सुन्दर्य प्रियदर्शना ।
चन्द्रप्रभाश्चन्द्रघर्णाः पूर्णचन्द्रान्मानना ॥ १८ ॥ चन्द्रशीतलगव्यश्च नृत्यगीत
विशारदाः । दशवर्षसहस्राणि तत्रावुर्भरतर्षभ ॥ १९ ॥ कालाम्रसर्पितास्ते नित्यं
सन्धिगतयौवनाः । दक्षिणेन तु नीलस्य निषधस्योत्तरेणतु ॥ २० ॥ सुदर्शनोनाम
महान् जम्बूवृक्ष सनातन । सर्वकामफलः पुण्यः सिद्धचारणसेवितः ॥ २१ ॥

यहां वड़े पराक्री और तीक्ष्ण दंष्ट्रनाले मारंड नामकी वन पुरुषों को पकड़कर
शुफाओं में डाल देते हैं, इं राजा यह मैने उत्तर कौरव देशका संक्षेप से वर्णन
किया । १४ । अब उस मेरुके पूर्वीभागके वृत्तान्त को यथावस्थित कहनाहूँ
हे राजा उस भद्राश्वखंडका मूर्धाभिषेक नाम महाराज और भद्रशाल नाम वन
और कालाम्र नाम वृक्ष है वह कालाम्र नाम शुभ वृक्ष फल फलपुक्त सिद्ध चारणों
से सेवित एक योजन ऊंचा है, जिस स्थानपर श्वतवर्ण पुरुष तेजसे भरेहुये
महावली और स्त्रियां कुमुद कमल के समान सुंदर स्वरूपवान् चन्द्रमा के समान
प्रभाव और पूर्ण चन्द्रमा सा प्रकाशवान् सुखवाली और चन्द्रमा के ही समान
शीतल देह नृत्य गान में मधीण वर्धमान हैं और वहां अवस्था दश हजार वर्षकी
होती है वह कालाम्र कर्पूरस पीने से सदैव तरुणरूपही रहतेहैं । १९ । निलिपर्वत
के दक्षिण और निषध पर्वत के उत्तर सुदर्शन नाम बड़ा जंबूवृक्ष सनातन है वह
सब अभीष्टों का दाता पवित्र सिद्ध चारणोंसे सेवित है अर्थात् मनुष्य उसको

caves This is, O king, a brief description of the northern kurus
14 I shall now describe the eastern part of Meru Bhdrashwa is
the best place there A large forest of Bhadrashals and a tall tree of
Kalamras yielding good fruits and flowers, are situated there. This
tree is a yojan in height and is adored by Sidhas and Charans. The
men of that place are of white complexion very energetic and strong.
The women are of the colour of lilies, very beautiful and enchanting.
They possess the radiance and whiteness of the moon and their faces
resemble a full moon Their bodies are cool like the rays of the moon
and they are accomplished in singing and dancing. The duration of
life there is ten thousand years, and the people always remain
youthful by drinking the milk of the kalamra tree To the south
of Nil and north of Nishadha there is a huge Jamvu tree that is

तस्य नाम्ना समाख्यातो जम्बूद्वीप सनातन । योजनानां सहस्रञ्च शतञ्च भरत
 पम ॥ २२ ॥ उत्सेधो धृतराजस्य दिवस्पृष्टं मनुजश्वर । भरतनीना सहस्रञ्च
 शतानि दश पञ्च च ॥ २३ ॥ परणाहस्तु वृक्षस्य फलानां रसभेदिनाम् । पत
 मानानि ताभ्युर्ध्वं कुर्वन्त विपुलं स्वनम् । २४ ॥ मुञ्चान्त च रस राजस्तस्मि
 न् रजतसन्निभम् । तस्या जम्वाः फलरसो नदी भूत्वा जनाधिप ॥ २५ ॥ मेहं
 प्रदाक्षिण कृत्वा सम्प्रयायुत्तान् कुरुन् । तत्रतेषां मन शान्तिर्न पिपासाजनाधिप
 । २६ ॥ तस्मिन् फलरसे पीते न जरायाधते च तान् । तत्र जाम्बूनद नामकनकं
 देवभूषणम् ॥ २७ ॥ इन्द्रगोपकसकाश जायते भास्वगन्तुतत् । तरुणादित्यवर्णाथ
 जायन्ते तत्र मानवाः ॥ २८ ॥ तथा माल्यवतः शृङ्ग इश्यते हृष्यवाट् सदा सदा ।

नहीं पासके इसलियेकि यहभी दिव्य है इसी के नाग से यह सनातन से जंबूद्वीप
 मसिद्ध हुआ है हे भरतवशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र उस वृक्षगण जंबूवृक्ष की
 ऊँचाई आकाश की छूनेवाली ग्यारह सौ योजन है उस वृक्षके पकेहुये फटनवाले
 फलों का विस्तार दस हजार आरती है अर्थात् कोई संख्या विशेष है वह फल
 जय पृथ्वीपर गिरतेहैं तो बड़ेभारी शब्द को करतेहैं २४ और जहाँ जहाँ गिरतेहैं
 वहाँ वहाँ चाँदी के समान श्वेत रसका छोड़तेहैं हे राजा उगी जंबूफल के रसकी
 नदी होकर मेरुको मोक्षण करके उचर कुरु देशों को आती है हे राजा वहाँ
 पिपासा लगने के कारण उन्होंके चित्तकी कान्ती नहीं है परन्तु उस फलके रस
 पीनेसे उनको जावस्या दुग्धदायी नहीं होती है वहाँही जाम्बूनद नाम कनक
 देवर्ताओं का भूषण वीरवधुर्जद के समान रक्तवर्ण उत्पन्न होता है उसमें बच्चा
 तेज हानाहै वहाँ मनुष्य तरुण और सुवर्ण उत्पन्नहोते हैं २८ इसीवकार माल्यवत
 के शिखरपर सर्वकर्तृ नाग अग्नि सदैव दिखाई देती है हे भरतर्षभ वह सर्वकर्तृ

eternal It is adored by Sidhas and Churans and grants every desire. Jambudwip draws its name from that tree. It is, O prince of Bharats, eleven hundred yojans high and its branches touch the very heavens. Its circumference measures twenty five hundred cubits and its fruit bursts open when ripe falling on earth with a loud noise and giving out a silvery juice which flows like a river and passing round Meru comes down to northern Kurus. If the juice of that tree is quaffed it conduces to the peace of mind and allays thirst. Those who drink of it are never weary and weak. There is a species of gold called Jambunad which is used for the ornaments of gods and shines like glow worms. Men born there are of the colour of the morning sun. 28 On the summit of Malayavat is always seen the fire called Samavatak which bursts forth at the end of the yug for

नाम्ना सम्बन्धको नाम कालाग्निर्मरुतपर्वम् ॥ २९ ॥ तथा माल्यवतः शृङ्गे पूर्व-
पूर्वानुगण्डिका । योजनानां सहस्राणि पंचपण्माल्यवानथ ॥ ३० ॥ महारजतसं-
काशाः जायन्तेतत्र मानवाः । ब्रह्मलोककथ्यताः सर्वे सर्वेषु लाघवः ॥ ३१ ॥ तपस्तप्यन्ति
ते तीव्रं भयन्ति ह्यध्वरेतसः । रक्षणांश्चतुभूतानां प्राचशन्ते । द्वाकाम् ॥ ३२ ॥ पष्टि-
स्तान सहस्राणि पाष्टरेव शतानिच । अरुणस्याग्रतो यागि परिचार्यं दिवाकरम्
॥ ३३ ॥ पष्टियसं सहस्राणि पष्टिमेव शतानिच । आदित्यतापतसास्ते विशन्ति
शशिमण्डलम् ॥ ३४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्वणि माल्यवद्वर्णने
सप्तमाऽध्यायः ॥ ७ ॥

नाम कालाग्नि है और बनेही माल्यवान् के शिखरपर चारों ओर को छोटे छोटे
पर्वत हैं और माल्यवान् पर्वत ग्यारहहजार योजनहै । ३०: वहां ब्रह्मलोकसे गिरेहुये
चाँदी के समान श्वेतवर्ण सब के सब साधु गजुष्य उत्पन्नहोते हैं वह गजुष्य क-
ठिन तपस्याओं को करते हुये ऊर्ध्वरेता अर्थात् ब्रह्मचारी होते हैं और जीवोंकी
रक्षा के निमित्त सूर्य में प्रवेश करते हैं वह संख्यामें साठहजार माल्यखिल्यऋषि
सूर्य को घेरेहुये अरुण नाम सूर्य के सारथी के आगे २ चलते हैं वह सब छयासठ
हजार वर्ष तक सूर्य की ऊष्मा से तपेहुये, होकर चन्द्रमण्डल में प्रवेश करते हैं अ-
र्थात् सूर्यलोक में विराट् पुरुष की उपासना करके मन के स्वामी चन्द्रमामें प्रवेश
करते हैं और सूत्रात्म भाव को पाते हैं ॥ ३४ ॥

the destruction of the universe. On Malyavat's summit towards
the east are many smaller mountains; the former is eleven thousand
yojans. 30. People born there are of the complexion of gold. They
come down from the region of Brahma and are utterers of Brahma.
They perform very severe asceticism and are permanently celibates.
They go up to the Sun for the good of all. They proceed in front
of Arun and surround the sun to the number of sixty thousand.
After being heated for sixtysix thousand years by the rays of the sun
they enter the disc of the moon. 34.



धृतराष्ट्र उवाच । वर्षाणाञ्चैव नामानि पर्वताश्च धनञ्जय । आचक्ष्वमे यथा तत्त्व ये च पर्वतवासिनः ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । दक्षिणेनतु श्वेतस्य निषधस्योत्तरेण तु । वर्ष रमणक नाम जायन्ते तत्रमानवाः ॥ २ ॥ शुक्लाभिन्नसम्पन्नाः सर्वे सुप्रियदर्शना । निःसपत्नाश्च ते सर्वे जायन्ते तत्र मानवाः ॥ ३ ॥ दशवर्षसहस्राणि शतानिदशपचच । जीवन्तितेमहाराजानत्यमुदतमानसा ॥ ४ ॥ दक्षिणेनतु नीलस्य निषधस्योत्तरेणतु । वर्षहिरण्यमय नाम यत्र हिरण्यतीनदी ॥ ५ ॥ यत्र च य महाराज पक्षिराट् पतमोत्तम । यक्षानुगा महाराज धनिन प्रियदर्शना ॥ ६ ॥ महाबलास्तत्र जना राजन् मुदितमानसा । एकादशसहस्राणि वर्षाणातेजनाधिप ॥ ७ ॥ आयु प्रमाण जीवन्ति शतानि दशपचच । श्रुद्वाणि च विचित्राणि त्रीण्येव मनुजाधिप ॥ ८ ॥ एकं मणिमय तत्र यथैक रौक्ममद्भुतम् । सर्वरत्न-

अध्याय ॥ ८ ॥

धृतराष्ट्रबोले हे सजय तुम ने खण्डों और पर्वतों का वर्णन किया अब उन पहाड़ों में जा पास करते हैं उनका मूलसमेत वर्णन करो, सजय ने कहा कि श्वेत पर्वत के दक्षिण और निषधक उत्तर रमणकनाम खण्ड एक पृथ्वीका भाग है वहाँ ऐसे मनुष्य उत्पन्नहोते हैं जोकि विष्णुभक्तोंक साथ स्नहरखनेवाले अत्यन्त स्वरूपवान् हैं उनमें कोई परस्परमें शत्रु नहीं होता है, नीलपर्वतके दक्षिण और निषधके उत्तरभाग में हिरण्यमय नामखण्ड है वहाँ हिरण्यती नाम नदी है । ५ । वहाँहीं पक्षियोंमें श्रेष्ठ गरुडजी हैं उसस्थानके धनवान् स्वरूपवान् मनुष्य यक्षों के सेवक महाबली और मत्स्य चित्त होत हैं और सदैव मसनता पूर्वक रहकर साडे ग्यारह हजार वर्ष पर्वन्त अवस्था को भोगते हैं और कोई उनमें से साढे चारहहजार वर्षनक भी गीते हे उस पर्वतके तीन बड़े विचित्र शिखरहैं उनमें एकतो गणियोंका शिखर है दूसरा अत्यन्त सुन्दर सुवर्ण का अपूर्व शिखर है

CHAPTER VIII

“Tell me the name of all varshes, mountains and their inhabitants, Sanjaya.” Said Dhritrashtra. “To the south of the white mountains and north of Nishadhi” Said Sanjaya, is Amanakvarsh. Men of white complexion are born there. They are of noble birth and handsome appearance. They have no enemies and live happily for eleven thousand five hundred years. On the south of Nishadhi is Hiranyavarsh where the Hiranyati flows. 5 There lives Garuda the foremost of birds. The people are the followers of yakshes, wealthy and handsome. They are strong and cheerful and the duration of their life is twelve thousand years. The Shringivat mountains have three beautiful summits, one, made of jewels and

मयवेक भवनेरुपशोभतम् ॥ ९ ॥ तत्र स्वयम्भवा देवी नित्य वसति शाण्डिली ।
 उत्तरेण तु शृङ्गस्य समुद्रान्ते जनाधिप ॥ १० ॥ वपमैराघत नाम तस्माच्छृङ्गमत
 परम् । न तत्र सूर्यस्तपात् न जीर्यन्ते च मानवाः ॥ ११ ॥ चन्द्रमाश्च सनत्तत्रो
 ज्योतिर्भूतश्चावृत । पद्मप्रभा पद्मवर्णा पद्मपत्रानभेक्षणा ॥ १२ ॥ पद्मपत्रसुगन्धाश्च
 जायन्ते तत्र मानवा । अनिष्पन्दा इष्टम घा निगहारा जितेन्द्रिया ॥ १३ ॥ देवलोक
 व्युता सर्वे तथा धिरजसे नृप । त्रयोदशसहस्राण वर्षान्ते जनाधिप ॥ १४ ॥
 वायु प्रमाण जीवन्ति नरा भरतसत्तम । क्षीरोदस्य समुद्रस्य तथैवोत्तरत प्रभु ।
 हरिर्वसति वैकुण्ठ शकटे कनकामये ॥ १५ ॥ अष्टचक्र इह तद्यान भूतयुक्तं मनो

और तीसरा शिखर सवरत्नों से गिश्चिन अनेक स्थानों से शोभित है । ९ । वहाँ
 स्वयं प्रकाशवान् शोण्डिली देवी निवास करती है, 'हे राजा शिखरके उत्तर एशुद्र
 के समीप एरावत नागखण्ड है इसीकारण यह शृंगवान् पर्वत से घिराहुआ उत्तम
 खण्ड कहाना है उपमें सूर्य किसीको संतप्त नहीं करते हैं मनुष्य वृद्ध नहीं होते
 और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा व्याधि रूपके समान घिरा रहता है वहाँ के मनुष्य
 कमल के समान कमल वा सुन्दर रंगनेत्र और सुगन्ध युक्त उत्पन्न होते हैं
 । ११ । हे राजन् वह सब देवलोक से गिरे हुये पश्यद से रहित अर्थात् देवता-
 ओंके समान इष्ट गन्धधारी निगहारी जितेन्द्री और रजोगुण से रहित हैं और
 उनकी अवस्था तेरहजार वर्षतककी होती है इसीप्रकार दूध के समुद्रकी उत्तर
 दिशा में अनेक मायाओं के स्वामी ज्योतिरूप श्रीहरि नारायणजी सुवर्ण के शकट
 पर निवास करते हैं वह सवारी आठ पहियोंकी है जिसमें एक पहिया तो पञ्चकर्म-
 त्रिप समूह दूसरा पञ्चज्ञानेन्द्रिय समूह तीसरा मन बुद्धि चित्त अहकार का समूह
 चौथा पञ्चमाण पांचवां पाँचों मूर्क्ष्ण तत्त्व छठां अविद्या सातवां काम अठारं

gems, another is very wonderful, being made of all kinds of gems and adorned with palaces. There the self luminous lady, known as Shandili lives. On the north of Shringvat, extended to the sea shore, is Aravatvarsh which is superior to all on account of its jewelled mountain. The sun gives no heat there and the people are free from old age. The only sources of light are the moon and stars. Beautiful like lotus and having their eyes like lotus petals, the men born there have the fragrance of the lotus. Their eyes donot wink they donot take any food and their senses are under control. They come down there from the region of gods and are free from sin. The duration of their life is thirteen thousand years. On the north of the milky ocean, Lord Hari of boundless prowess dwells on his car of gold. That vehicle having eight wheels, has numerous super-

जचम् । अग्निवर्णं महातेजो जाम्बूनदविभूषितम् ॥ १६ ॥ स प्रभुः सर्वभूतानां
विभुश्च भरतर्षभ । सक्षेपो वस्तरश्चैव कर्त्ता कागयिता तथा ॥ १७ ॥ पृथिव्या
पस्तथाकाश वायुस्तेजश्चपार्थिव । स यज्ञ सर्वभूतान् मास्य तस्य हुताशन ॥ १८ ॥
वैशम्पायन उच च । एवमुक्त सजयेन धृत इष्टो महामना । ध्यानमन्वगमद्राजा पुत्रान्
प्रति जनाधिप ॥ १९ ॥ सावचिन्त्य महातेजा पनरेवाब्रवीद्धृच । असशय
सूत्रपुत्र काल सक्षिपतेजगत् । २० ॥ सृजतेच पुः सर्वे नेह वद्यात शाश्वतम् । नरो
नारायणश्चैव सर्वज्ञ सर्वभूतहृत् ॥ २१ ॥ देवविकुण्ठमित्याहुर्नरा विष्णुमितिप्रभुम् । २२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डाविनर्वाणपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये
ऽष्टोऽध्याय ॥ ८ ॥

कर्म भारी शुद्ध ब्रह्मपुक्त मनके समान अग्निवाणी अग्निवर्ण तेजस्वी जाम्बूनद नाम
सुवर्ण से शोभायमान है, हे भरतर्षभ वह सब संसार पात्रवा स्वाधी व्यापक
सबका अपन में लग करनेवाला और मरटकरने वाला जीवरूपसे कर्त्ता और
ईश्वररूपसे कर्म करनेवाला है हे राजा वही पचतस्ववही सबका यज्ञ और मुख
उसका आग्ने है । १८ । वैशंपायन वाले कि हे जनमेजय यह सब बातें संजय से
सुनकर बड़ साहसी राजा धृतराष्ट्रने अपन पुत्रोंकी चिन्ताकरी और फिर भी
बहुतसा विचारकरके बोला कि हे संजय निस्सन्देह काल जगत्को भक्षण करता
है, और फिर सबको उत्पन्न करता है यहां कोई भी विनाश रहित नहीं है नर
नारायण अर्थात् जीव ईश्वर भी दोनों रूपोंमें अविनाशी नहीं हैं अर्थात् दोनों एक
रूपहोकर अकेलाही सर्वज्ञ और सर्वजीवोंका मित्र है उसीसमर्थ पुरुषको देवता
और गनुष्योंने मायाधीश और सर्वव्यापी वर्णन किया है ॥ २१ ॥

natural creatures seated on it, and has the speed of the mind It is
fiery in colour, is very strong and is adorned with *Jambunad* gold
The lord of all creatures possesses every sort of wealth 17 The
universe merges in him and from him it emanates again He is the
actor and makes others act He is the earth, water, space, air and
fire. He is Sacrifice's self for all creatures and fire is His mouth"
Vaishampayan continued "The high minded king Dhritrashtra,
thus addressed by Sanjaya, became absorbed in meditation about his
sons and having reflected for a time the powerful king said, "Without
doubt, Time is the destroyer of universe and Time creates everything
again Nothing is eternal Nar and Narayan the omniscient destroy
all creatures. The gods calls him Vaikunth while men call him
Vishnu" 21.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ यदिद् भारत वर्षं यवेदं मूर्च्छित्तम दलम् । यत्रातिमात्रं लुब्धो
य पुत्रो दुर्योधनो मम ॥ १ ॥ यत्र गृद्धा पण्डुपुत्रा यत्र मे सज्जते मन । एतन्मे तत्त्व
माचक्ष्व त्वहि मे बुद्धिमाग्मत ॥ २ ॥ सज्जय उवाच ॥ न तत्र पाण्डवागृद्धा शृणु
राजन् उचो मम । गृद्धो दुर्योधनस्तत्र शकुनिश्चापि सौवल ॥ ३ ॥ अग्रे क्षत्रियाश्चैव
नागाजनपदेश्वरा । ये गृद्धा भारते वर्षे न मृत्यन्ति परस्परम् ॥ ४ ॥ अत्र ते कीर्त्त
यिष्यामि वर्षं भारत भारतम् । प्रथममन्द्रस्य देवस्य मनायैव स्वतस्य च ॥ ५ ॥ पृथो
स्तु राजन् वैन्वस्य नद्येक्ष्वाकोर्महात्मन । यथाते रम्परीपस्य माघानुर्नहुपस्य च ॥ ६ ॥
तथैव मुचुकुन्दस्य शिवे रौशो नरस्य च । ऋषभस्य तथैलस्य नृगस्य नृगतस्तथा ।
कुशिकस्य च दुर्यर्षे गाघेश्चैव महात्मन ॥ ७ ॥ सोमकस्य च दुर्यर्षे दिलीपस्य तथैव

अध्याय ॥ ९ ॥

धृतराष्ट्र ने कि यह भरतखण्ड जिनमें यह सबसेना भूली हुई है उस में
यह मेरा पुत्र दुर्योधन अत्यन्त लोभी हारहा है और जिसमें पांडव लोभी हैं और
मेरा भी मन लग रहा है उसका मुझ वृत्तान्त मुझसे कहीं मेन तुमको बुद्धिमान
माना है, १ । सजय बोल ह राजा मेरेवचनको सुनो उसमें पांडव लोभी नहीं हैं
इसमें केवल दुर्योधन और सौवलका पुत्र शकुनी ही लोभी हैं, नाना प्रकार के
दशाने स्वामी अन्य क्षत्री लोग जो भरतखण्डमें लोभी हाकर परस्पर में ईर्ष्या
करते हैं । ४ । इस स्थानपर मैं भरतखण्डका वर्णन तुमसे वर्णन करवाहूँ कि यह
भरतखण्ड इन्द्र देवता और सूर्यके पुत्र वैवस्वत मनुका अभीष्टहै हे राजा धृतराष्ट्र
इनके विशेष यह भरतखण्ड पृथु, वैन्व तथा महात्मा इक्ष्वाकु, ययाति, अवर्रीष,
औशीनरके पुत्र शिवि, ऋषभ, ऐल, नृग, कुशिक, महात्मा गाघि, सोमक दिलीप

CHAPTER IX

“Give me a detailed account of Bharatvarsh, where these senseless
forces have been collected, which my son Duryodhan covets and which
is so desired by the Pandavas and myself as well Tell me all this
Sanjaya, for, methinks you are very intelligent in this matter” asked
Dhritrashtra of Sanjaya. “Listen, king,” replied Sanjaya, “The
Pandavas do not covet this country, it is thy son Duryodhan and
Shakuni the son of Suval that are covetous I shall now tell thee,
descendant of Bharat, of the land known as Bharatvarsh This is the
favourite land of Indra and of Manu the son of Vivaswat, of Prithu,
of Vanya, of Ikshvaku, of Yayati, of Amvarish, of Mandhata, of
Nahush, of Muchkund, of Sivi the son of Ushinar, of Rishabh, of
Ila, of king Nrig, of Kushik, of Gadhi, of Somak, of Dilip and of

च । अन्येषांच महाराज क्षत्रियाणां बलीयसाम् ॥ ८ ॥ सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत
 भागतम् ॥ ९ ॥ तत्र वर्षे प्रवक्ष्यामि यथापथ मारिन्दम् । शृणु मे गदतो राजन् यन्मां
 त्वं परि पृच्छसि । महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षानापि ॥ १० ॥ विन्ध्यश्चपारियात्र
 च सतैते कुलपर्वताः । तेषां सहस्रशो राजन् पर्वतास्ते समीपतः ॥ ११ ॥ अविज्ञाताः
 सारवन्तो विपुलाश्चित्रमानव । अन्ये ततोऽपरिज्ञाता ह्रस्वा ह्रस्वोप जीविनः ॥ १२ ॥
 आर्या म्लेच्छाथ कौरव्य तैर्मिश्राः पुरुषा त्वमो । नदीं पिवन्ति विपुलां गङ्गां सिंधुं सर
 स्वतीम् ॥ १३ ॥ गोदावरीं नमदांच वाहुदांच महानदीम् । शतद्रुं चन्द्रभागांच यमु
 नांच महानदीम् ॥ १४ ॥ दृपद्वतीं विपाशांच त्रिपापां स्थूलचालुकाम् । नदीं वेत्रवतीं
 चैव कृष्णवेणांच निम्नगाम् ॥ १५ ॥ इरावतीं वितस्तांच पयोष्णीं देविकामपि । वेद
 स्मृतः वेदवतीं त्रिदिवामिश्रुलांकमिम् ॥ १६ ॥ करीपणीं चित्रवाहां चित्रसेनांच निम्न

आदि बहुतसे पहा पराक्रम क्षत्रियोंका प्याग है, हे शत्रुहन्ता यह भरतखण्ड
 कर्म भूमि होनेके कारण सबकाही प्याराहै और महातेजस्वी खण्ड है । ९ । इसको
 मैं कहताहू मरिन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिवान्, पारियात्र ऋक्षवान, विन्ध्याचल यह
 सानों पर्वत बड़ेकुलवान और प्रतिष्ठितहैं और इन्हीं सातोंके समीप हजारों पर्वत
 उत्तम पदार्थों के रखनवाले विस्तृत और पर्वतके निवासियों के निवासस्थान रूप
 युक्त हैं, इनमे अन्य छोट २ पर्वत छोटी २ वस्तुओं के रक्षास्थान रूप सबके
 जानें हुये हैं हे कौरव्य धृतराष्ट्र जो आर्ष मनुष्य अर्थात् वर्णाश्रमी धर्मावाले और
 म्लेच्छ अर्थात् वेद से विरुद्ध मतवाले उन में निवास करते हैं और गंगा
 सिंधु सरस्वती इत्यादि बड़ी २ नदियों के जलकट पीते हैं । १३ । और
 गोदावरी, नर्मदा और वाहुदा नाम महानदी शतद्रु, चन्द्रभागा और महानदी,
 यमुना, दृपद्वती, विपाशा, त्रिपापा, स्थूलचालुका, वेत्रवती, कृष्णवेणी जो नदियों
 को चलीतीहै, इरावती, वितस्ता, पयोष्णी, देविका, वेदस्मृता, वेदवती, त्रिदिवा,

many other Kshatryas. I shall now describe to thee, chastiser of
 foes, the country I have spoken of, as far as I know. 9. Attend to
 me; king; as I proceed to satisfy your curiosity. Mahendra, Malaya,
 Sahya, Shuktivan, Pari yatra, Rikshvan and Vindhyan are the seven
 mountains of the first rank. Besides these there are thousands that
 are unknown, of hard make, huge and having excellent valleys. Many
 of the smaller ones are inhabited by barbarians. Aryans and Mlechas
 live there and drink the waters of the Ganges, the Sindhu, the
 Saraswati, the Godavery, the Narmada, the Valuda, the Shatadru,
 the Chandrabhaga, the Yamuna, the Drishadvati, the Vipasha, the
 Vipapa, the Sthulvaluka, the Vetravati, the Krishvena 15., the
 Iravati, the Vitas'a, the Payoshni, the Devika, the Vedasmrita, the

गाम् । गेमनीं धृतपापाश्च यन्दनाञ्च महानदीम् ॥ १७ ॥ कौशिकीं त्रिदंवां कृत्यां
निचितां लोहितारणीम् ॥ १८ ॥ रहस्यां शतकुम्भाञ्च सरयुञ्च तथैवच । चर्म
पर्वनीं वेनवतीं हस्तिसोमां दिशं तथा ॥ १९ ॥ शरावतीं पयोष्णीव परां नीम
रथीमपि । कावेरीं चुलुकांचापि घार्णीं शतवलामपि ॥ २० ॥ नीवारा महितां
चापि सुप्रयोगां जनाघण । पवित्रां कुण्डलीं सिन्धु राजनीं पुरमालिनीम् ॥ २१ ॥
पूर्वाभिरामा वीरार भीमामोचवतीं तथा । पाशाशिनीं पापहरां महेन्द्रा पाटला
वतीम् ॥ २२ ॥ करीपिणामिक्षिताञ्च कुशचीरां महानदीम् । मकरां प्रवरांमेनां
हेम । घृतवतीं तथा ॥ २३ ॥ पुरावतीमनुष्णाञ्च शैव्या कापाञ्च भारत । सदा
नीरामधृष्याञ्च कुशधरां महानदीम् ॥ २४ ॥ सदाक्रान्तां शिवाञ्चैव तथा वीर
वतीमपि । वस्त्रासुवस्त्रा गौरीञ्च कम्पनां सहिरण्वतीम् ॥ २५ ॥ वरां वीरकरा
चापि पंचमीञ्च महानदीम् । रथचित्रां ज्योतिरथां विश्वामित्रां कपिजलाम् । उपेन्द्रां
बहुलाञ्चैव कवीरा मधुवाहिनीम् । विन्दों पित्रलां वेणां तुङ्गवेणा महानदीम् २७

इक्षुला, कृषी, करीपिणी, चित्रवाहा नीचे चरने वाली चित्रसेना, गोपती, धृतपा-
पा, महानदी, गंडकी, । १७ । कौशिकी, त्रिदंवा कृत्या, निचिता, लोहितारणी,
रहस्या, शतकुम्भा, सरयू, चर्मपर्वती, वेनवती, हस्तिसोमा, दिशनदी, शरावती,
पौष्णी, वेणा, भीमरथी, कावेरी, चुलुका, वार्णी, शतरथी, नीवारा, महिता, सुप्र
योगा, अंजना, पवित्रा, कुंडली, सिन्धु, राजनी, पुरमालिनी, पूर्वाभिरामा, अमोच
वती, भीमा, पालाशिनी, पापहरा, महेन्द्रा, पाटलावती, करीपिणी, असिबली, कुश
चीरा, महानदी, मकरी, प्रवरा, मेना, हेमा, घृतवती, पुरावती, अनुष्णा, शैव्या,
कायी, सदानीरा अधृष्या, महानदी, कुशधारा, सदाक्रान्ता, शिवा, वरिवती, वस्त्रा,
सुवस्त्रा, गौरी, कम्पना, हिरण्यवती, वरा, वीरकरा, महानदी, पंचमी, । २७ । २४
चित्रा, ज्योतिरथा, विश्वामित्रा, कपिजला, उपेन्द्रा, बहुला, कुवीरा, मधुवाहिनी,

Vedavati, the Tridiva, the Ikshula, the Krimi, the Krishni, the
Chitravaha, the subterranean Chitrasena, the Come, the Dhoot
papa, the Mahanadi, the Gandaki, the Kaushiki, the Tridiva, the
Kritya, the Nichita, the Lohitarani, the Rahasya, the Shatkumbha,
the Saryu, the Charmanwati, the Vetravati, the Hastisoma, the
Dishnadi, the Sharavati, the Payoshni, the Vena, the Bhmrathi,
the Cavery, the Chuluka, the Vau, the Shatvati, the Neevara, the
Mahita, the Suprayoga, the Anjana 20, the Javitra, the Kundali,
the Sindhu, the Rajani, the Purmahni, the Furva'hirma, the
Amoghvati, the Bhama, the Palashni, the Paphera, the Mahendra,
the Patalavati the Karishmi, the Asiki, the Kushchira, the Maha-
nadi, the Makri, the Pravara, the Meua, the Hema, the Ghritvati,
the Puravati, the Anushna, the Shrivya, the Kayee, the Sadanira,
the Adhashya, the Kusidhara, the Sadakanta, the Shiva, the
Brevati, the Bastri, the Suvastra, the Gouu, the Campana, the

विदिशां कृष्णवेणां च ताम्रां च कपिलामपि । खलुं सुवामां वेदाश्वान् हरिश्रवां
 महापगाम् ॥ २८ ॥ शीघ्रां च पिच्छिलाञ्चैव भारद्वाजीञ्च निम्नगाम् । कौशिकीं
 तन्मगा शोणा वाहुदामथ चन्द्रमाम् ॥ २९ ॥ दुर्गां चित्राशिलाञ्चैव ब्रह्मवेध्यां
 वृहद्वतीम् । यक्षामथ रोहीञ्च तथा जाम्बूनदीमपि ॥ ३० ॥ सुनसां तमसां
 दासीं वसामन्या वराणसाम् । नीलां धृतवतीञ्चैव पर्णाशा च महानदीम् ॥ ३१ ॥
 मानवीं वृषभाञ्चैव ब्रह्ममेध्यां वृहद्वतीञ्च । पताश्रान्याश्च वह्ना महानद्योजना
 धिप ॥ ३२ ॥ सदानिरामया कृष्णा मन्दगामन्दवाहिनीम् । ब्रह्मणीञ्च महागौरीं
 दुर्गामपि च भारत ॥ ३३ ॥ चित्रोपलां चित्ररथां मञ्जुलां वाहिनीं तथा । मन्दा
 किनीं वैतरणीं क्रोशां चापि महानदीम् । भुक्तिमतीमनङ्गा च तथैव वृषसाह्वयाम्
 ॥ ३४ ॥ लोहित्यां करतोया च तथैव वृषकाह्वयाम् । कुमारीमृषिकुल्याञ्च मापि

विन्दी, पिजला, वेणा, महानदी, तुंगवेणा, विदिशा, कृष्ण वेणा, ताम्रा, कपिला,
 । २७ । खलु, सुवामा, वेदाश्वान्, हरिश्रवा, महापमा, शीघ्रा, पिच्छला, भारद्वाजी,
 निम्नगा, निम्नगाकौशिकी, शोणा, वाहुदा, चन्द्रमा, दुर्गा, मंत्रशिला, ब्रह्मवेध्या,
 वृहद्वती, यक्षाम्, अथरोही, जाम्बूनदी, मुनसा, तमसा, दासी, वसा, वरणा, अमसी, नीला,
 धृतिमती, महानदी पर्णाशा, मानवी, वृषभा, ब्रह्ममेध्या, वृहद्वती इत्यादि सप्त नदियों
 का जल पान करते हैं । ३१ । और हे राजा इनके सिवाय और भी बहुत प्रकारकी
 महानदी हैं जैसे कि सदानीरा, अथा, कृष्णा, मंदगा, मन्दवाहिनी, ब्राह्मणी, महागौरी,
 दुर्गा, चित्रोपला, चित्ररथा, मञ्जुला, वाहिनी, मन्दाकिनी, वैतरिणी, महानदी, क्रोशा,
 मुक्तिमती, अनिगा, पुष्पवेणी, उत्पलावती, लोहित्या, करतोया, वृषका नाम नदी,

Huanvati, the Vara, the Virakata, the Panchmi 25, the Rath-
 chitra, the Jyotiratha, the Vishwamitra, the Kapinjara, the Upendra
 the Bahuli, the Kuvira, the Ambuvahini, the Vinadi, the Pinjala, the
 Vena, the Tungvena, the Bidisha, the Krishnavena, the Tamra, the
 Kapila, the Khalu, the Suvama, the Vedishwa, the Harsharya,
 the Mahopama, the Shighra, the Pichala, the Bharadwaji, the
 Nimmaga, the Nimmaga kaushiki, the Shou, the Valuda, the Chand-
 rana, the Durga, the Chitrashila, the Brahmabodhya, the Brihad
 wati, the Yavaksha, the Athrohi, the jambundi, the Sunasa, the
 Tamasa, the Dasi, the Vasa, the Vas, the Amasi, the Nila, the
 Dhritimati, the Pannisha, the Manavi, the Brashabha, the Brahma-
 medhya, the Vishadwati and others 31. Besides these there are
 other rivers, such as the Sदानिरा, the अथा, the Krishna, the
 Mandaga, the Mandavahini, the Brahmani, the Mahagauri, the
 Durga, the Chitropala, the Chitraratha, the Manjula, the Valuni, the
 Mandakini, the Anasuni, the Koha, the Muktimati, the Aniga, the

पाच सत्स्यतीम् ॥ ३५ ॥ मग्नाकिनीसुपुण्यांच सर्वा गङ्गाच भारत। विश्वस्य
 मातर सर्वा सर्वाश्रैव महाफला ॥ ३६ ॥ तथा नद्यस्तपस्याशा शतशोपस
 हस्रशः । इत्येता सरितो राजन् समाख्याता यथास्मृति ॥ ३७ ॥ अत ऊर्ध्व
 जनपदानिवोध गदतो मम । तत्रेमे कुरपाचाला शाख्यामात्रे यजाङ्गला ॥ ३८ ॥
 शूरसेना पुलिदाश्च वोधा मालास्तर्ध्व च । मत्स्या कुशल्या सौशल्या कुंत
 य कान्तिकोसला ॥ ३९ ॥ चेदिमन्त्यकरुपाश्च भोजा सिन्धुपालन्दका । उचमाश्च
 दशार्णाश्च मेकलाश्चोत्कलं सह ॥ ४० ॥ पाचाला कोसलाश्चैव नैवपृष्ठाधुरन्धरा ।
 गोघ्रा मद्रकलिहाश्च काशयोपरकाशय ॥ ४१ ॥ जठरा कुरुराश्चैव सदशार्णाश्च
 भारत । कुंतयोऽथ तयश्चैव तथेवापरकुन्त्य । ४१ ॥ गोमता मन्दका सण्डा
 विदर्भा रूपवाहिका । अश्मका पाडुराष्ट्राश्च गोपराथ करीतयः ॥ ४३ ॥ आद्य
 राज्यकुशाद्यश्च मल्लराष्ट्रं कवलम् । वारवाभ्यायवाहाश्च चक्राश्चक्रातय शका

कुमारी, ऋषिकुल्या, मारिषा, सरस्वती । ३७ । सुपुण्या, मन्दाकिनी, सर्वा, गंगा,
 यह सम्पूर्ण नदी विश्वकी माता और महाफलकी देनेवाली हैं इसी प्रकार हजारों
 नदी और भीगुणह हेराजा यहनदियांमिने स्वरणके अनुत्तर वर्णनकी ३७। अबम देशोंका
 वर्णन करता हूं वहां यह कुण्डेश, पांचानदेश, शाख्य, माद्रेयजांगल, शूरसेनदेश, पुलिन्द,
 वोधा, माला, मत्स्यदेश, कुशादिदेश, मौगल्या, कुन्तीदेश, कान्तिकोशलदेश, चेदि, मत्स्य,
 करुप, भोज, सिन्धु, पुलिन्दक, उचम दशार्ण देश, मेकल, उत्कल, । ४० । पाचाल
 कोशल, नैकपृष्ठ, धुरंभर, वोधा, मद्र, कलिन्द, काशय, परकाशय, जठरा, कुरुरा,
 दशार्ण देशयुक्त, कुंतय, अन्नत्य, अपरकुन्त्य, गोमन्त, मन्दक, खंड, विदर्भ, रूपवाहिक
 अश्वक, उत्तर, गोपराष्ट्र, करीत, अधिराज्य, कुशाद्य, मल्लराष्ट्र, केवल, वारवास्य,

Pushpveni, the Uipalayati, the Lohita, the Kartoya, the Vrshaka,
 the Kumari, the Rishikulya, the Marisha, the Saraswati 35, the
 Supunya, the Mandakini, the Sarva and the Ganga. All these rivers
 are mothers of the world and a source of great profit. There are thous
 ands of others unknown. I have given thee, King, all the names that
 I remembered. 37 I shall now mention the names of countries —
 Kuru, Panchal, Snalwa, Mudra Shursen, Pulmi, Bodha, Mala,
 Matsya, Kush, Soshlaya, Kuntz, Koshal, Chedi, Matsya, Karush,
 Bhoj, Sindhu, Pulundak, Dasharna, Melal, Uthal, 40, Panchal,
 Koshal, Nalprisht, Dhuanthar, Bodha, Madra, Kalind, Kashya,
 Parlashya, Jathara, Kukura, Dasharn, Juntya, Atantya, Apar
 Juntya, Gomant, Mandal, Khand Vidarbh, Ruprahik, Ashwal, Uttar,
 Goprashtra, Karit, Adhirajya, Kushadya, Malla Keval, Vartasya,

॥ ४४ ॥ विदेहा मगधा स्वप्ता मलजा।वनयास्तथा । अना वन कालहाथ
 यच्छोमान एवच ॥ ४५ ॥ मला सुदेष्णा प्रह्लादा माहिका शशिकास्तथा ।
 वाह्लीका वाटधानाश्च आभीरा कालतोपना ॥ ४६ ॥ अपगता परान्ताश्च
 पञ्चालाश्चर्ममण्डला । अटवीशिक्षराश्चैव नन्दूताश्च मारिप ॥ ४७ ॥ उपावृत्ता
 नृपवृत्ता स्वरादा केत्यास्तथा । कुदापरान्ता माहेया नृत्ता सामद्राण्डुदा
 ॥ ४९ ॥ अघ्राथ वद्वो राजन्नतर्गिर्यास्ताथेय च । वहिर्गिर्याश्चमलजा मागयामा
 नवर्जका ॥ ५० ॥ समतरा प्रावृषेया भार्गवाश्च जनाघप । पुण्ड्रभर्गा किरा
 ताश्च सुदृष्टवा यामुनास्तथा ॥ ५१ ॥ शक्रा निपादा निपघास्तथैवानत्तनैऋता ।
 दुर्गाता प्रतिमस्थादच कुन्ता कोसलास्तथा ॥ ५२ ॥ तीरग्रहा शूरसेना ईजिका
 कन्यकागुणा । तिलभारा मसीगाश्च मधुमता सुकन्दका ॥ ५३ ॥ काश्मीरा
 सिन्धुसौधारा गांधारा दर्शकास्तथा । अमीसारा उलूनाश्च शैवला वाहलिकास्त
 था ॥ ५४ ॥ दार्वी च वानवादर्वा वातजामरधारगा । घट्टाद्याथ कौरव्य सुदामान
 सुमदिका ॥ ५५ ॥ वघ्रा करीपनायपि कलिंगोपत्यकास्तथा । दण्यवोदशा

अपराह, वज्रवक्रान्त, शक्र, विदेह, मगध, स्वक्ष्य, मलय, विजय, अग, नग, कर्लिंग,
 यच्छूलनोम । ४५ । मल्ल, सुदेष्ण, प्रह्लाद, माहिक, शशिक, वाह्लीक, वाटधान,
 आभीर, कालतोपक, अपरान्त, परान्त, पाञ्चाल, चर्ममण्डल, अटवी, शिक्षर, मेरुभूत,
 मारिप, अपावृत, अनुपावृत, सोराट्ट, केकय, कुद, परान्त, माहेय, कक्ष्य, साम्द्राण्डु
 ट, अन्न, और हे राजा इनके विशेष पर्वतों में अनेक, देग आर पहाडों के बाहर अग,
 मन्ज, मगध, मानवर्जक, म्बत्तर, प्राविषेय, भार्गव, पोरुद, भर्ग, किरात, सुदृष्ट, या
 मुन । ५० । शक्र, निपाद, निपघ, आनर्त, नन्दूत, दुर्गाल, प्रतिमत्स्य, कुन्त, कुशन,
 तीर, ग्रह, शूरसेन, ईजक, कन्यकागण, तिलभार नमीर, मधुमत्ता, सुकन्दक, काश्मीर, सिन्धु
 सौवीर, गांधार दर्शक, अभिसार, उलूत, शमल, वाहलीक, दर्वा, नमाट्टवी, वातज,
 मयौरग, वाहवाथ, कौरव्य, सुदामान, सुमल्लिक, वना, करीपक, कलिंग, उपत्यक,

*Apsh Fakroth a' Sia' Fall Magda Swalsh Malaya
 Vyaja Ang Fing kalig Yirillo 45 Malla Sideshna Pra
 thad Mahik Shashil Tuhit Fllat All Kalteyak Aparant
 Parant Panchal Chermurudal Ati Sihar Merubhit Marish
 Aparit Anuparant Swraata Kehaya Kall Parant Mahoya
 kashya Samudra ushu Ad id oles which are situated
 in and out of hill 111 M. Mly Maredh Manvarjal,
 Mahyava Pravisera Bharg 10ind Bharg, Prat Sudesht
 Yamun 50 Shak No J N Luth Anrt Norit Dugal Prad
 matsya kuntal kural Tagah Suren Ijak kanyakagan
 Tibhar Saur Madhumatta Mulanda' Lohena Srdhu, Saur,
 Gantar Dehal, Alisar Urit Shray' Valik Deha Navan
 dast 10' j Ma ho 2, Vahya dya kaurava Sidaman Samulik
 Balin karishak kalmi Upatyak Venayu Dahan Rum Kust*

पार्थ रोमाण. कुशविन्दः ॥ ५६ ॥ कच्छा गोपालकक्षश्च जाङ्गला. कुशवर्णका. ।
 किराता वर्धरा सिद्धा वैदेहास्तमालतकाः ॥ ५७ ॥ वौद्रम्लेच्छा संसिंधिः
 पार्थतीयाश्च मारिप । अथापि जनपदा दक्षिणा भरतर्षभ ॥ ५८ ॥ द्रविडा. के-
 रला प्राच्याभूपका वनवासिकाः । कर्णाटका न हिपक चिद्वनमूपराम्नाथा ५९
 झिल्लिका. कुन्तलाश्चैव सौहृदा नभकनना. । कौकुटकान्तिया चोला कौकणा
 मालवानरा ॥ ६० ॥ समंगा. करकाश्चैव कुरुंगामागामाया. । ध्वजान्युत्सवसंके-
 तास्त्रिगर्भा शाल्वसेनय भ्यूकाः कोक वका. प्रोष्टा समवेगवशास्तथा । तथैवावभ्य
 चुलिका पुलन्दा वलकल सह ॥ ६२ ॥ मालवा वलुनाश्चैव तथैवापरवल्लवा
 कुलिन्दाः कालदाश्चैव कण्डला करटास्तथा ॥ ६३ ॥ मूपकास्तनपालाश्च सनी
 पापटसृञ्जयाः । अट्टिदा पशिवाटाश्च तनयाः सुनयाम्नाथा ॥ ६४ ॥ ऋषिकवि-
 दभाः काकास्तङ्गणा परतङ्गणाः । उत्तराथापरे म्लेच्छाः दूरभरतसत्तम ॥ ६५ ॥
 यवानाथीनकाभ्योजा दारणाम्लेच्छजातय । सहदग्रहा कुलत्थाश्चहूणा पारसिकै

वानायु, दशार्ण, रुम, कुशविन्द । ५५ । कच्छ, गोपालकक्ष, जांगल, कुशवर्णक,
 किरात, वर्धर, सिद्धा, वैदेह, ताम्रलिप्तक, औरंग, पौरंग, संसिकत, पयतीय, मारिप
 इतके विशेष दक्षिणमें । ५७ । दविण, केरल, भान्य, भूपिक, वनवासिक, कर्णाटक
 माहिपक, अविकलय, मूपक, जिल्लिक, कुन्तल, सौहृद, नभकानल, कौकुटक, चोल,
 कौकण, मालवानक । ६० । समंग, कारक, कुरर, अंगार, मारिप, ध्वजन्युत्सवसंकेत,
 स्त्रिगर्भ, शाल्वसेन, वक, कोकवक, प्रोष्ट, समवेगवश, विन्द्य, चुलिक, कलकल सहित
 पुलिन्द, मालव, मल्लव, परवल्लभ, कुलिन्द, कालड, कुंडल, करट, मूपक, तनवाल,
 सनीय, घटसृञ्जय, अलिंदाप, शिवाट, तनय, सुनय, ऋषिक विदर्भ, काक संगण
 परतंगण हे भरतर्षभ इसीप्रकार अन्य उत्तर देश वासी कठोरचित्त और म्लेच्छनाम
 में प्रसिद्ध हैं, यवन, चीनी, कावोज, सहदग्रह, कुलत्य, आहूण, पारसियों समेत
 हूण । ६५ । यह सब म्लेच्छजाति के लोग भयकारी हैं रमणः चीन, दशमालिक

vind 55, Cutch Gopalkuksh, Jangal, Kuruvarnak, kirat Barlar,
 Sidha, Vaideh, Tamrahptik, Aundra, Paundra, Saisikat, Pavatiya,
 Marish and besides these, in the South, Dravin, Keral, Prachya,
 Bhushuk, Vanvasik, Karnatak, Mahishak, Avikalya, Mushak, Jilhk,
 Kuntal, Sauhrud, Nabhtanan, Kaukuttak, Chol, Concan, Malvanak,
 60 Samang, Karak, Kurar, Angar, Maurish, Dhvajanyutsalsanket,
 Strigart, Shalwasen, Vak, Kokvak, Proshth, Samvegvash,
 Bndhya, Chulik, Pulnd with Kalkal, Malav, Mallav, Parvallabh,
 Kuhnd, kalad, kundal, Karat, Mushak, Tanval, Saniya, Ghatsrn-
 jaya, Ahndap, Shivat, Tanaya, Sunaya, rishuk, Bidarth, Kal,
 Tangan, Partangan, and others. The northern people are hard-
 hearted Mlechas These are Yavans, Chinese, Kamtojas, Sntgrahs,
 Kalath, Abun, and Persians. 65. The Ramans, the Chinese

सह ॥ ६१ ॥ तथैव रमणाश्चानास्तथैव दशमालिका । क्षत्रियो पनिवशाथ वैश्य
शूद्रकुलात्तच्च ॥ ६७ ॥ शूद्राभीराश्च दरदा वाश्मीरा पत्तिभि सह । खाशी
राथा तत्राप्य द हवा गिरिगह्वरा ॥ ६८ ॥ आत्रया सभरद्वाजास्तथैवस्तनपोपका ।
प्रोपकाथ कालदाश्च किराटाश्च जातय ॥ ६९ ॥ तामरा हन्यमानाश्च तथैव कर
भजका । एत च न्य जनपदा प्राच्यादीच्यास्तथैवच ॥ ७० ॥ उद्देशमात्रेणमया
देशा सङ्गीर्षित विभो । यथायग वल्-च्चाप त्रिवर्गस्य महाफलम् ॥ ७१ ॥ दुह्यत
धन कामधुक भूमि सम्यगनुष्ठिता । नस्या गृत्त्वान्त राजान शूरा धर्मार्थज्ञावदा
॥ ७२ ॥ त त्यजन्याह्वये प्राणान् यस्सुगृह्णास्तारिवन । दवम नृपकायाना राम
भूमि परायणम् ॥ ७३ ॥ व यान्यस्यावल्लुम्पन्ति सारमेया यथामपम् । राजानो
भरतश्रेष्ठ भक्तेनामावसु धाम् ॥ ७४ ॥ नचापि वृत्ति कामाना वद्यतद्यापिकस्य
चित् । नस्मात् परिग्रह भूमेर्धतन्त करपाण्डवा ॥ ७५ ॥ साम्राभेदेन दानेन

जो कि क्षत्रीयोनिने उत्पन्न वैश्य और शूद्रों के कुल हैं शूद्र, आभीर, दरद पशुओं
सभेन काश्मीर, खाशीर अर्थात् [खरासानी] अन्तचार, पल्हव (जिदकी भापा
पहलवी प्रसिद्ध है) गिरिगहर, आत्रेय, भरभज, स्तनपोपिक, प्रोपक, कलिग, किरातों
की जातें, तोमर, हसमार्ग, करभजक यह और अन्य पृथ्वी और उच्चरीय देशहै, हे
समर्थ धृतराष्ट्र यह मने सय देश उद्देशमात्रसे कहे । ६९ । मनोरथों के पूर्णकरने
वाले कामधेनु रूपी पृथ्वी श्रेष्ठपोषित गुण और बलके समान त्रिवर्ग अर्थात् (धर्म
अर्थ काम) हिरण्यगर्भरूपी फलके भी देनेवाले धर्म और अर्थ में कुशल युद्धि शूरीर
राजालोग उस पृथ्वीकी इच्छापुर्वक लालसाकरते हैं वह शीघ्रता करनेवाले धनके
लोभी युद्धभूमि में अपने प्राणों को त्यागकरने हैं, यह पृथ्वी इच्छानुसार देवता
और मनुष्यों की देहोंकी रक्षाका स्थान है हे भरतश्री पृथ्वी के भोगने की इच्छा
रखनेवाले क्षत्रीलोग परस्पर में एक एक को मारते हैं जैसे कि कुत्ते मानके टुकड़े
करते हैं इसीप्रकार से अवतकभी किसीकी वृष्णा न्यून नहीं होतीहै हे राजा इसी

and the Dishmaliks who are Vaishyas and shudras descend d from
Kshatryas, are very dreadtul Abhurs, Darads, Kashmere Khashur,
Antchar, Pathav Girigahvar, Atraya Bharadwaj, Stanposhik,
Prashik Kulng, Kirat, Tomar, Hansmarg and Karbhanyak are other
eastern and northern tribes and countries. I have now told thee,
wise Dhritrashtra the names of all the countries. This wonderful
earth, giver of all desires like the famous Kamdhenu, from which
virtue profit and pleasure may be obtained is coveted by virtuous
and powerful Kings who rashly lose their lives. The earth is the
refuge of gods and human beings. It is the bone of contention for
powerful kshatryas who desire to obtain it and whose avarice is never
satisfied. It is thus that the Kauravas and the Pandavas are

दण्डेनैव च भारत । पिता भ्राता च पुत्राश्च पत्न्याश्च नरापुङ्गव । भूमिभयति
भूतानां सम्यगच्छिद्रदर्शना ॥ ७६ ॥

इति श्री महाभारत भोगपर्वणि जम्बूखण्ड त्रिनिर्माणपर्वणि भारतीयनदीदेशादि
नापकपने नवमांशध्यायः ॥ ९ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ भारतभ्यास्व त्वस्य तथा हेमवतस्यच । प्रमाणताद्युगः सूत
पलञ्चापि शुभाशुभम् ॥ १ ॥ अतागत मनिप्रान्तं वर्त्तमानं च संजय । आचक्ष्व मे वि
स्तरेण हरिष्वपि तथैवच ॥ २ ॥ सजय उवाच ॥ चत्वारि भारते वर्षे युगान् भारतपंभ ।
कृतं त्रेता द्वापरं च त्रिभ्यं च कुरुवधन ॥ ३ ॥ पूर्वं कृतयुगं नाम ततस्त्रतायुगं प्रभो । स-
क्षेपाद् द्वापरस्याथ ततस्त्रिभ्यं प्रवर्त्तते ॥ ४ ॥ चत्वारिह सहस्राणि वर्षाणांकृतसत्तम ।
आयुः संख्या कृतयुगे संख्याता राजसत्तम ॥ ५ ॥ तथा त्रीणि सहस्राणि त्रयायामनुजा
धिप । द्वे सहस्रे द्वापरे तु मुवि तिष्ठन्ति स्वाम्प्रतम् ॥ ६ ॥ न प्रमाणस्थितिर्दस्ति त्रिभ्यं

कारण से कौरव पाण्डव भी साम, दाम, भेद, दण्ड इन चारों नीतियों के द्वारा पृथ्वी
के विजय करनेमें अनेक उद्योग करते हैं, जिसको अच्छे प्रकार से पूरा छिद्र दर्शन
है उसीकी पृथ्वी पिता भाई पुत्री आकाश और स्वर्गरूप भी होती है ॥ ७६ ॥

अध्याय ॥ १० ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सूत संजय इस भरतखण्ड और हेमवतखण्डकी अवस्था-
ओंकी संख्या बल शुभाशुभ भूत भविष्य वर्त्तमानको भी व्योरेवार कहिये इसी
प्रकार हरिखण्डको भी कहिये संजयबोले कि हे भरतर्षभ और कौरवों की छिद्र
चाहनेवाले धृतराष्ट्र भरतखण्ड में चार युग है सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग
प्रथम सतयुग फिर त्रेता फिर द्वापर और द्वापर के अन्त से कलियुग
जारी होताहै हे । ४ । कौरवोत्तम राजेन्द्र सतयुगमें चारहजार वर्षकी अवस्था होती
है त्रेतामें तीन हजारकी द्वापर में दोहजार वर्षकी और हे राजन् कलियुगमें अवस्था
की संख्या नहीं है इस कलियुग में उत्पन्नहुये बालक और गर्भ में वर्त्तमान बालक

striving to possess by negotiations, disuion, gift and bloodshed It stands in the relation of father, mother, daughter, firmament and paradise to him who looks well to it. 7.

CHAPTER X

"Let me know, Sanjaya," said Dhrttrashtra, "all about the period of life, strength, the good and bad things, the future, past and present of Bharat-khand, Hemvat-khand and Harikhand." "Best of the descendants of Bharat and dasirous of the welfare of the Kauravas replied Sanjaya, 'there are four yugs, namely, Krit, Treta, Dwapar and Kali successively in Bharatvarsh. Four thousand years is the duration of life in the first, three thousand in the second and two thousand years in the third; but in the last or Kali there is no fixed

ऽस्मिन् भरतपते । गर्भस्थाश्च त्रियतेऽन तथा जाता त्रियन्ति च ॥ ७ ॥ महाबलामहा
सत्त्वा प्रशामुष्णसमन्विता । प्रजायन्ते च जाताश्च शतशोऽथ सहस्रतः ॥ ८ ॥ जाता-
वृत्तयुगे राजन् धनिनः प्रयदर्शनाः । प्रजायन्तश्च जाताश्च मुनयो वै तपोधनाः ॥ ९ ॥
महेत्साहा महात्मानो धार्मिका सत्यवादिनः । प्रयदर्शना यपुष्मन्तो महावीर्या धनु-
र्धरा ॥ १० ॥ वगर्हायुध जाय ते क्षत्रिया द्यूक्षत्तमा । त्रेताया क्षत्रिया
राजन् सर्वे ये चक्रवर्तिनः ॥ ११ ॥ आयुष्मन्तो महावीरा धनुर्धराः युधि ।
जायन्ते क्षत्रियाः नृसखनायां वशवर्तिनः ॥ १२ ॥ सर्ववर्णाथ जायन्ते सदाश्चैव
च द्वापरे । महात्साहाधीयन्त परापरजयौषण ॥ १३ ॥ तेजसाह्वयेन सपुत्रा
क्रोधोऽपि पुत्रा नृपः । ह्युघा अनृतकाश्चैव तिष्ये जायन्ति भारत ॥ १४ ॥
ईर्ष्या मानस्वथा क्रोधो मायाऽस्त्रा तपैव च । तप्ये भवति भूताना रामोलोभ-
श्च भारत ॥ १५ ॥ सक्षेपो वत्तवे राजन् द्वापरोऽस्मधराघप । गुणोत्तरं हेमघत
हरिचरं तत परम् ॥ १६ ॥
इति महाभारते भीष्मपर्वणे भारतवर्षे कृत्वा यानुशाधे नायुर्निष्ठाणे दशमोऽध्याय १०
समाप्तश्च जम्बूद्वीपे विनिर्माणपर्व ॥

भी मरते हैं और सतयुगमें बड़े बलिष्ठ पराक्रमी और युद्धिआदि गुणयुक्त सैकड़ों
वा हजारों मनुष्य उत्पन्नहोकर सन्तानोंको उत्पन्न करते थे और धनी गियदर्शन
तपोधन मुनि उत्पन्नहोकर सन्ततियों के उत्पन्नकर्ता हुये बड़े उस्ताह मन धार्मिक
सत्यवादी भ्रियदर्शन उद्यम वर्णमहापराक्रमी धनुषधारी वरके योग्य शूरोंमें श्रेष्ठक्षत्री
उत्पन्न होते हैं और त्रेतामें सब क्षत्री चक्रवर्ती होते हैं । ११ । और बड़े अवस्था
वान् शूरवीर युद्धमें धनुषधारियों में उत्तम राजाओंके आज्ञाप्रर्ता उत्पन्नहोतेहैं द्वापर
युगमें सब वर्ण सदैव उस्ताह चित्त पराक्रमी परस्परमें विजयाभिलाषी उत्पन्न
होतेहैं और कलियुगमें थोड़े पराक्रमी क्रोधी लालची मिथ्यावादी मनुष्य उत्पन्न
होतेहैं और कलियुग में जीवधारियों में अहंकार क्रोध ईर्ष्या छल दूसरे की निन्दा
और विषयों में प्रीति करनेवाले लालची उत्पन्न होतेहैं और हे राजन् इम द्वापर
की अराधे अब थोड़ी रह गई परन्तु हेमवतावगड और हरिखंड सर्वोत्तमहैं ॥ १६ ॥

time of death as soon as they are born while others die in the womb. In Sat yug there were hundreds and thousands of wise, strong and energetic people born who produced children. Wealthy ascetics of handsome features were born in that age and produced children. Energetic, virtuous, truthful and handsome archers of noble birth and great prowess were born among kshatriyas. In the Treta age all the Kshatriya kings were emperors. They lived long and were brave warriors, best of archers and firm on duty. In the dwapar age all the classes are energetic, desirous of victory over one another and full of prowess. Men of Kali age are less warlike, wrathful, covetous and untruthful. In that age we are born covetous men full of vanity, anger, jealousy, deceit and malice. The dwapar age is about to come to its close, but Hemvathkhand and Harikhand are better than Bharatvarsh in these respects. 16

॥ अथ भूमिपर्व ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ जम्बूद्वीपस्य च प्राक्को यथावदिह संजय । विश्वम्भमस्य प्रभूहि
परिमाणन्तु तवत ॥ १ ॥ समुद्रस्य प्रमाणञ्च सम्यगच्छिद्रदर्शनम् । शाकद्वीपञ्च
गेशूहि कुशद्वीपञ्च संजय ॥ २ ॥ शाल्मलिद्वीप तत्पेन क्रौञ्चद्वीप तथैव च ।
ब्राह्म गावल्गणे सर्वे राहो सोमार्कयोस्तथा ॥ ३ ॥ संजय उवाच । राजन्सुच
ह्येषो देवा धैरिद् भन्तत जगन् । सप्तद्वीपान् प्रवक्ष्यामि चन्द्रादित्यो ग्रहतथा ॥४॥
अष्टादश सद्व्याणि योजनानि त्वदास्पते । पटत्रयानि च पूर्णानि विश्वम्भोजम्बुपर्वतः
॥ ५ ॥ लाघणस्य समुद्रस्य विश्वम्भो द्विगुण स्मृतः । नानाजनपदादीर्णो
मणिविद्रुमचिप्रत ॥ ६ ॥ नैकधातुवाचत्रैध पर्वतरूपशोभित । सिद्धचारणसकीर्ण
सागर परिमण्डल ॥ ७ ॥ शाकद्वीपञ्च वक्ष्यामि यथावदिह पार्थिव । धृष्टु

अध्याय ॥ ११ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय तुमने जम्बूद्वीपका वर्णन यथार्थ
कहा अब इसके केन्द्र और परिधिकी संख्याको मूलममेत वर्णनकरो और समुद्रकी
संख्याको भी कहो और सब दृष्टिगोचर शाकद्वीप दक्षद्वीप, शाल्मलद्वीप, क्रौञ्चद्वीप
इन सबको राहु चन्द्रमा और सूर्यसमेत वर्णनकरो । ३ । संजय बोले कि हे राजा
बहुतमे ऐसे ७ द्वीप हैं जिनमे यह युग बड़ाविस्तार युक्त है अब मैं सूर्य चन्द्रमा
और राहुसमेत सातोंद्वीपोंका वर्णन करताहूँ जम्बूद्वीपका केन्द्र और वृत्तफल अठारह
हजार उःसौ योजन है । ५ । और सारी समुद्र का विस्तार इससे बूना कहा
है वह समुद्र नानादेशों से युक्त मणि मृगे आदि से शोभित नानाप्रकार की
धातुओं से विचित्र पर्वतों से शोभायमान सिद्धचारणों से सेवित चारोंओर
मे मंडलाकारहै । ७ । हे राजा अब मैं शाकद्वीपको यथार्थ वर्णन करताहूँ हे

CHAPTER XI

Bhumi Parva — "Thou hast duly described Jambukhand to me Sanjaya," said Dhritrashtra; "give me now an accurate idea of its dimensions and extent as well as the extent of the ocean, of Shaka dwip, of Kushadwip of Shalmalidwip of Kraunchadwip, of Rahu of Soma and of the Sun, without leaving anything" "There are O king," replied Sanjaya, "many islands dotted over the earth I shall however, describe to thee only seven islands besides the moon the sun and the planet Rahu Jambudwip extends for eighteen thousand and six hundred yojans The extent of the salt ocean is said to be twice this The ocean is covered with many Kingdoms and is adorned with gems and corals It is also decked with many mountains covered with metals of various kinds The ocean is

मेव यथान्याय प्रवतः कुरुतन्दन ॥ ८ ॥ अम्बुद्वीपप्रमाणेन द्विगुण सनराधिप ।
 विष्कम्भेण महाराज स्वामरोपि विभागश्च ॥ ९ ॥ क्षीरोदो भरतश्रेष्ठ येन
 सम्परिवारितः । तत्र पुण्याजनपद स्तत्र न म्रियते जन ॥ १० ॥ कृतपचाहि
 दुर्मिक्षं क्षमातेजोयुताहि ते । शाकद्वीपस्य सक्षपो यथावद भरतर्षभ ॥ ११ ॥
 वक्तव्य महाराज किमन्यत् कथयामिते । घृतराष्ट्र उवाच । शाकद्वीपस्यसक्षपो यथावदिह
 सञ्जय ॥ १२ ॥ उक्तस्तथा महाप्राज्ञ विस्तरं ब्रूह तत्त्वतः । सञ्जय उवाच । तथैव
 पर्वता राजन् सत्तात्र मणिभूषिता ॥ १३ ॥ रत्नाकरस्तथा नद्यस्तेषां नामानिमे
 श्रुणु । धनीविगुणवत् सर्वं तत्र पुण्य जनाधिप ॥ १४ ॥ देवर्षिगन्धर्वयुतः प्रथमो
 मेरुश्च्यत । प्रागायतो महाराज मलयो नाम पर्वतः ॥ १५ ॥ ततामेघा प्रवर्त्तन्ते

कौरवनन्दन तुम भी न्यायपूर्वक मुझसे मुनो वह द्वीप जम्बूद्वीप के विस्तार से
 दूना है और समुद्र भी विभाग के अनुसार क्षीरोदनामी है हे राजन् जिस
 समुद्र से वह द्वीप चारों ओर को घिरा हुआ है उसमें पवित्र देश है वहाँ
 मनुष्य नहीं मरते हैं तो वहाँ दुर्भिक्ष कैसे होसकता है वह क्षमावान तेजगारी
 हैं यह तो शाकद्वीप का संक्षेप ठीक २ वर्णन किया अब दूसरी बात क्या
 सुनना चाहतेहो ११। घृतराष्ट्र बोले कि हे महाज्ञानी तुमने इसशाकद्वीप का
 संक्षेप तो ठीक कहा परंतु उसको व्योरेवार मूल समेत वर्णनकरो संजयबोले
 कि हे महाराज इसीप्रकार के सातपर्वत इसमें मणियों से भूषित वर्तमान
 हैं औरनदियांभी अनेक रत्नोंकी आकारहैं इनके नाम मैं कहताहूँ वहा सत्र लोग
 पवित्र और गुणवान हैं देवता गन्धर्व और ऋषिलोगों से संयुक्त प्रथम पर्वत
 मेरु कहाजाता है और पूर्व पश्चिमका स्पर्श करनेवाला दूसरा मलय पर्वत
 है उस पर्वतसे सब बादल प्रकटहोकर कर्ममें प्रवृत्तहोते हैं १५। हेकौरव्य उससे

circular in form and thickly peopled by sidhas and charans. I shall
 now speak of Shal'dwip Listen to my description Kauravi Its
 area is twice that of Jamvudwip and the ocean too is twice that
 island in area. Shal'dwip is surrounded on all sides by the ocean.
 The people inhabiting it are righteous and free from death 10
 Famine cannot prevail there. The people are forgiving and energetic.
 This is a brief account of Shal'dwip O king, what more do you
 desire to hear? "You have given in Sinjaya," said Dhritrashtra,
 "a brief account of Shakadwip, but I want to hear it in detail, wise
 man" 12 "That island," replied Sinjaya, "contains seven mountains
 decked with jewels and full of the mines of gems and precious stones.
 There are many rivers in that island Listen to me as I recount
 their names. Everything there is excellent and charming The

प्रभवति च सर्वश । तत परणकौरुष्य जलधरो महागिरि ॥ १६ ॥ ततो नित्य
मुपावृत्ते वास्य पशं जलम् । ततो चर्दं प्रभवति चर्पकाले जनेश्वर ॥ १७ ॥
उचैर्गिरिरैवतको यत्र नित्य प्रतिपद्यता । रेवतीदार नक्षत्र पतामहकृतो षधि
॥ १८ ॥ उत्तरेण तु राजेन्द्र श्यामो नाम महागिरि । तन्मेषप्रभ. प्रांशु श्री
मानुज्ज्वलविग्रह ॥ १९ ॥ यत श्यामत्वमापन्ना प्रजा जनपदेश्वर । धृतराष्ट्र उवाच ।
तुमहात्संशयोमेव प्रोक्तोय सन्नयत्वया ॥ २० ॥ प्रजा कथं सृष्टपत्र सम्प्राप्ता श्याम
तामिह । सन्नय उवाच । सर्वेष्वेव महाराज द्वीपेषु कुरुनन्दन ॥ २१ ॥ गौर
कृष्णश्च पतगस्तयोर्धर्णान्तरे नृप । श्यामो यस्मात् प्रवृत्तो वै तस्माच्छ्यामोगिरि

पर्व की ओर एक जलधारा नाम वज्र पर्वत है जहाँपर इन्द्र देवता उत्तम जलको
ग्रहणकरता है उसी जलसे यर्पात्रतु में पृथ्वीपर वर्षा होती है और उस्से भी बड़ा
पर्वत रेवतक है वहाँस्वर्ग में निवास करनेवाला रेवती नक्षत्र सदैव वर्तमान रहता है
यह ब्रह्माजी की उत्पन्न की हुई रीति है और उत्तर ओरको श्याम नाम वज्र पर्वत
है वह नवीन बादल के समान प्रकाशवान ऊँचा शोभायमान उज्ज्वलस्वरूप है
हे राजा उसीसे मनुष्यों ने श्यामकर्ण को पाया है धृतराष्ट्रबोले हे संजय अब तुम ने
यह मुझसे बड़ा संदेहयुक्त वचन कहा है मूत पुत्र संसार ने कैसे श्यामवर्ण को पाया
। २० । संजय बोले कि हे राजा सब द्वीपोंमें गौरा नररूप जीव और काला नारायण
रूप ईश्वर पत्नी है उन दोनों वर्णों में जिस हेतु से नारायण की कलारूप श्यामवर्ण
प्रकट हुआ इसी से उसका नाम श्यामगिरि विख्यात हुआ और उसमें निवास
करने व शाक भोजन करने से मनुष्यों ने भी श्यामवर्ण को पाया है कौर-

first of those mountains is Meru, the second is Mahya, stretching towards the east, on which clouds are produced and disperse on all sides. The next mountain is named Jaldhara from which Indra daily takes water of the best quality 16 It is from that water that we get showers in the rainy season Next comes the high mountain known as Ravatak over which permanently shines Revati from the sky by the order of Brahma himself On the north of these is the huge mountain called Shyam which possesses the splendour of the newly risen clouds, and is very high, beautiful and of bright body. The colour of these mountains is dark and therefore the people living there are of dark complexion " A great doubt " said Dhritrashtra, " rises in my mind from what thou has said, Sanjaya. What causes the complexion of the people there to be dark " 20 " The people " said Sanjaya, " of a place are either fair or dark or a mixed breed of the two, and it is from the people of dark colour inhabiting there that

स्मृतः ॥ २२ ॥ ततः परं कौरवेन्द्रदुर्गशैलो महोदयः । केशर केशरयुतो यनो
 वातः प्रवर्त्तते ॥ २३ ॥ तेषां योजनविभक्तम्भो द्विगुण प्रविभागशः । वर्षाणि
 तेषु कौरव्य सप्तोक्तानि मनीषिभिः ॥ २४ ॥ महामेरुर्भद्राकाशो जलद कुमुदोत्तरः ।
 जलधारो महाराज सुकुमार इति स्मृत ॥ २५ ॥ रेवतस्य तु कौमारः श्यामस्य
 मणिकाञ्चनः । केशरस्याथ मोदाकी परेणतुमहापुमान् ॥ २६ ॥ पारधार्य तु कौरव्य
 दैर्घ्यं ह्रस्वत्वमेव च । जम्बूद्वीपेन सहजातस्तस्य मध्ये महाद्रुमः ॥ २७ ॥ शाको
 नाम महाराज भजा तस्य सदानुगा । तत्र पुण्या जनपदा पृथ्यते तत्र शंकरः ॥ २८ ॥
 तत्र गच्छन्ति सिद्धाश्च चारणा दैवतानि च । धार्मिकाश्च प्रजा राजश्च-वारोतीव
 भारत ॥ २९ ॥ वर्षा स्वधर्मान्तरा न च स्तनेत्र हृदयते । दीर्घायुषोमहाराज
 जरामृत्युविचर्जिताः ॥ ३० ॥ प्रजास्तत्र विवर्द्धन्ते वर्षास्विव समुद्रगाः । नद्यः

वेन्द्रोत्ससे आगे बढ़कर महोदय दुर्गशैल केशरी और केशरयुत पर्वत है
 उसी से वायु उत्पन्न होती है उन दोनोंके विस्तार की संख्या क्रम से एकसे दूसरे
 की दूनी है हे राजा इनके मध्यवर्ती ज्ञानियों ने यह सात खण्ड दर्शन कियेहैं जिनके
 महामेरु, महाकाश, जलद, कुमुद, उत्तर, जनधार, सुकुमार यह सातनाम दर्शन
 किये हैं, रेवत पहाड़ का खंड कौमार और श्याम गिरि का खण्ड मणिकाञ्चन है
 । २५ । कैदार पर्वत का खण्ड मोदाकी है उससे परे महापुमान् है जो छोटे वड़ों
 को घरेहुए है उसद्वीप में एक शाकनाम वड़ा वृक्ष जंबूद्वीप के जम्बू वृक्षकी समान
 है और सब प्रजा उसकी सेवामें तत्परहैं इस द्वीपमें मूक्ष्म देहधारी होने के कारण
 सब वर्ण अपने-अपने धर्मों में प्रीति रखने वाले वड़ी अवस्था वाले जरा मरण से रहित हैं
 जहां चोरनहीं दिखाई देने हैं वहां प्रजा लोगों की ऐसे वृद्धि होती है जैसे कि वर्षा

the mountains are called black. After this come the large impreg-
 nable mountains Keshu and Keshar over which fragrant breezes
 constantly blow. Each succeeding one of these is double the size of
 the former one. That island is divided into seven parts, namely
 Mahameru, Mahakash, Jalad, Kumud, Uttar, Jaldhar and Sukumar.
 The portion containing Revat mountains, is called Kaumar and that
 containing the black mountains, is Manichan. The portion
 containing kedjar hills is called Madaki. Beyond this is Mahapumar
 which surrounds many large and small ones. That island contains a
 large tree known as Shak which is as large as the Jamvu tree of
 Jambuland. The people of that country adore it. Possessing
 divine bodies, the people of all classes there are lovers of virtue, long
 lived and free from old age and death. Thieves are not found there.

पुण्यजलास्तत्र गङ्गा च वसुधागता ॥ ३१ ॥ सुदुमारी रुमागीच शीताशीवेणिका तथा ।
महानदी च कौरव्य तथा माणजलानदी ॥ ३२ ॥ चक्षुर्धामका चैव नदाभरत
सत्तम । तत्र प्रवृत्ता पुण्योदा नद्य कुरुक्षुलोदह ॥ ३३ ॥ सहस्रणा दतान्पच यतो
वर्षति वासव । नतासा नामधेयानि परिमाण तथैव च ॥ ३४ ॥ शक्यतपरि
सख्यातु पुण्यास्ता हि सरिद्धा । तत्र पुण्या जमपदाश्चत्यागे लाङ्गसम्मता ॥ ३५ ॥
मगाथ मशकाश्चैव मानसा मन्दगा तथा । मगा ब्राह्मणभूयिष्ठा रचकर्मनरतानृप
॥ ३६ ॥ मशकेषु तु राजन्या धार्मिका सर्वकामदा । मानसाथ महाराज वैश्वध
मौपजीवित ॥ ३७ ॥ सर्वकामसमायुक्ता शूरा धर्मार्थनिश्चिता । शूद्रास्तु मन्दगा
नित्य पुरुषार्थशीलिन ॥ ३८ ॥ न तत्र राजा राजेन्द्र न दण्डो न च दण्डिका ।

ऋतु में नदियों की टाढ़े होती है । ३० । वहाँ नदियाँ पवित्र जलवाली हैं और
बहुत रूपधारी गंगा भी प्रचलित हैं इनके सिवाय सुकुमारी, कुमारी, शीतासी, वेणिक
का, महानदी मणिजलानदी, चक्षुवर्धनका नदी इत्यादि लाखों नदियाँ पवित्र जल
वाली हैं जहाँसे इन्द्र जलको लेकर वर्षा करता है उनके नाम विस्तार देय्य इत्यादि
संख्याकरने के योग्य नहीं हैं वह उद्यम नदियाँ पवित्रता और पुण्यकी बढ़ानेवाली
हैं वहाँ सप्तलोकों में प्रतिष्ठित पवित्र चारदेवा हैं वह मृग, मशक मानस, मन्दग नाम
से प्रसिद्ध हैं । ३१ । मृगनाम देश में बहुतसे ऐसे ब्राह्मण हैं जो अपने कर्मों में सुदैव
पट्ट हैं और मशक देशमें ऐसे क्षत्री लोग हैं जो धर्मचारी और सब मनोरथों के देने
वाले हैं मानस देशवासी वैश्य धर्म से निर्वाह करने वाले हैं मन्दग देश के रहने वाले
शूद्र लोग धर्मके अभ्यासी हैं हे राजेन्द्र उन देशोंमें न राजा है न दण्ड है न दण्डधारी
हाकिम है वहाँ सप्तमजालोगही धर्मज्ञ होकर अपने धर्मों से परस्पर की रक्षा करते हैं

and the people grow like rivers in the rains 30 The rivers there have
pure water and Ganga too of many forms flows there Besides these
there flow the Sukumari, the Kumari, the Sitasi, the Vemba, the
Mahanadi, the Manjaly, the Chakshubardhanaka and thousands others
of pure water from which Indra draws water to pour as rain It is
beyond my power to mention their names The rivers are sin cleans-
ing and givers of purity That land contains four provinces, known
as Mrg, Mashak, Manas and Mandag Mrg is inhabited by numbers
of Brahmans firm on their duty, Mashak is inhabited by Kshatriyas
that are virtuous and generous, the inhabitants of Manas are Vashyas
living by trade and those of Mandag are dutiful Shudras Those
countries have neither Kings nor punishment nor wrongdoers for the
people know their duties and are firm on them We know only this

स्वधर्मैषैव धर्मवास्ते रक्षन्ति परस्परम् ॥ ३९ ॥ एतावदेवशक्यन्तु तत्रद्वीपेप्रमापि-
तुम् । एतदेवचथातम्यं शाकद्वीपे महैजासि ॥ ४० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भूमिपर्वणि शाकद्वीपपर्वणि
एकादशाऽध्यायः ॥ ११ ॥

सञ्जय उवाच ॥ उत्तरेषुच कौरव्य द्वीपेषु श्रूयते कथा । एष तत्र महाराज
द्रुपतश्च निबोधमे ॥ १ ॥ घृततंत्राय, समुद्रोत्र द्वाघभण्डोदको परः । सुरोद, सागरश्चैव
तथा यो जलसागरः । २ ॥ परस्परणे द्विगुणाः सर्वे द्वीपा नराधिप । पर्वताश्च महाराज
समुद्रैः परिवारिताः । ३ । गौरस्तुमध्यमे द्वीपे गिर्गिर्मान शिलो महान् । पर्वत पथिमे
कृष्णो नारायणसखो नृप ॥ ४ ॥ तत्र रत्नानि दिव्यानि स्वयं रक्षति केशव । प्रसन्न-
दत्ताभवत्तत्र प्रजाना व्यदधत् सुखम् ॥ ५ ॥ कुशस्तव कुशद्वीपे मध्ये जनपदै सह ।

उस वड़े प्रकाशवान् शाकद्वीप में इतनाही कह सक्ते हैं और इतनाही सुनने के
योग्य है ॥ ४० ॥

अध्याय ॥ १२ ॥

संजय बोले कि हे महाराज वहां पूर्वकहे हुये उत्तर द्वीपोंमें जिस प्रकारसे कथा
सुनी जाती है उसको तुम मुझसे सुनो, कि वहां एकतो घृतका समुद्र है दूसरा दधि
का तीसरा मदिरा का समुद्र, चौथा मिष्टजलका समुद्र है हे राजा धृतराष्ट्र, सबद्वीप
और पहाड़ परस्परमें दूने-२ समुद्रोंसे घिरेहुये हैं और मध्यवर्ती द्वीपमें गौर शिलारूप
पर्वत है और पिछले द्वीपमें कृष्ण नाम पर्वत नारायणका सखारूप है वहां आप
केशवमूर्ति दिव्यरत्नों की रत्नाकरतेहैं और प्रसन्नहोकर प्रजालोगोंको सुख देतेहैं ५
और कुशद्वीपमें कुशस्तंभ देशोंसे युक्तहै और शाल्यलद्वीपमें शाल्यली वृत्त पृजनकिया

much about the island of Shaka and it is sufficient for you to hear." 40

CHAPTER XII

"Hear the account of the northern islands, mentioned above," said Sanjaya to Dhritrashtra, One of the seas there has clarified butter for water, another contains curds of milk, the third is full of wine and the fourth contains sweet water. All these islands and mountains are surrounded by seas that are double their size. In the middlemost island is a mountain of red stone and in the next island is the black mountain which is a favourite seat of Narayan who protects the divine jewels there in person and is pleased to deal happiness to his dependents. 5 The Kusha islands consist of the

सम्पूज्य ते शाहमलिश्च द्वीपेशाहमलि के त्रुप ॥ ६ ॥ क्रौञ्चद्वीपे महाक्रौंचो गिरीरत्नच
याकरः । सम्पूज्यते महाराज चातुर्वर्ष्येन नित्यदा ॥ ७ ॥ गोमत पर्वतो राजन् सुम-
हान् सर्वधातुकः । यत्र नित्यं निवसति श्रीमान् कमललोचनः ॥ ८ ॥ मोक्षिभिः सगतो
नित्यं प्रभुर्नागवधो हरिः । कुशद्वीपेतु गजेन्द्र पर्वतो विदुमेदिचतः ॥ ९ ॥ स्वतामनामा
दुर्धर्षो ह्रीनीयो हेमपर्वतः । घृतिम नाम कौरव्य तृतीयं कुमुदो गिरि ॥ १० ॥ चतुर्थ
पुष्पवानाम पञ्चमस्तु कुशेशयः । षष्ठो हरि गिरिर्नाम षष्ठेते पर्वतोत्तमा ॥ ११ ॥ तेषा
मन्तर विष्कम्भो द्विगुणः सर्वमागश । औद्भिद प्रथम वर्षं द्वितीय वेषु मण्डलम् १२
तृतीय सुरधाकार चतुर्थकम्बलम्भृतम् । घृतिमत्पञ्चमवर्षं षष्ठवर्षप्रभाकरम् ॥ १३ ॥ सप्तमं
कापिलं वर्षं अष्टैते वर्षलम्भकाः । एतेषु वैवगन्धर्वा प्रजाश्च जगतीश्वर ॥ १४ ॥

जाता है और क्रौञ्चद्वीपमें रत्न समूहोंका भंडारमहाक्रौंच पर्वतको सदैव सबवर्षा पूजते
हैं हेराजन् उसमें सब धातुओं का रखनेवाला बहुत बड़ापर्वत गोमन्त नामहै जिसके
ऊपर श्रीमान् कमललोचन विष्णु भगवान् सदैव निवास करतेहैं वह प्रभु नारायण
हरि सदैव मुक्त पुरुषोंसे मिलेहुये रहतेहैं और कुशद्वीप ही में एक पर्वत मुख्य ७
दृत्तों से आच्छादितहै वह दुर्धर्ष पर्वत स्वनाम नामसे प्रसिद्धहै इसमें दूसरा हेम पर्वत
है तीसरा घृतिमान् कुमुद नाम गिरि है । १० । चौथा पुष्पवान नामहै पांचवां
कुशेशय नामहै छठा हरिगिरि नाम है यह छत्तां उत्तम पर्वत हैं इनका मध्यवर्षा
विस्तार पूर्वक विभाग के अनुसार द्वा है प्रथम खण्ड औद्भिद है दूसरा वैशु
मण्डल है तीसरा रथाकार है, चौथा कंजल है पांचवां घृतिमत् खंडहै छटां प्रभाकर
नाम खण्ड है सातवां कापिल खण्ड है यह सातों पर्वत खण्डों के विभाग करने

province of Kushastambh and Shalmali tree is adored in Shalmali-
dwip And Kraunch mountains, the treasury of all sorts of jewels are
adored by all classes of people in the Kraunch island 7 The islands
contains the huge mountain called Gomant, containing all sorts of
metals, which is the permanent residing place of lotus eyed Vishnu
Lord, Narayan or Hari who mingles with emancipated Leings In
Kushdwip, there is a mountain, covered with large trees, bearing
the same name as the island. Next to it are Hem mountains and
the third is the glorious hill called Kumud 10 The fourth is known
as Pushpvan, the fifth is Kusheshaya and the sixth is Harigr.
All these six mountains are the best The intervening space between
these six increases in the ratio of one to two as they proceed further
north. The first portion is Audbhud; the second is Venumandal, the
third is Rathakar; the fifth is Kambal, the fourth is Dhritmat-
khand, the sixth is Prabhakar and the seventh is Kapilkhand.

विहरन्ते रमन्ते च न तेषु म्रियते जन । न तेषु दृश्यव सन्ति म्लेच्छजात्योपि
 वा नृप ॥ १५ ॥ गौरप्रयोजनं सर्वः सुकुमारश्च पार्थिव । शशशिष्टेषु सर्वेषु
 वक्ष्याम मनुजेश्वर ॥ १६ ॥ यथाश्रुत महाराज तद्व्यग्रमना शृणु । क्रौञ्चद्वीपे
 महाराज कौशा नाम महागरिः ॥ १७ ॥ क्रौञ्चात् परोवायनको वामनादन्धका
 रक । अन्धकारात् परोराजन् मैनाकः पर्वतोत्तमः ॥ १८ ॥ मैनाकात् पगता राजन्
 गोविन्दो गरिरुत्तमः । गोविन्दात् परतो राजन् निविडो नाम पर्वतः ॥ १९ ॥
 परस्तु द्विगुणस्तेषा विश्कम्भा वंशवद्धन । देशास्तत्र प्रवक्ष्यामि त-मं निगदत-
 शृणु ॥ २० ॥ क्रौञ्चकुशलो देशा वामनस्य मनोनुग । मनोनुगात् परश्चोष्णो
 देशः कुक्कुलोद्भिद् ॥ २१ ॥ उष्णात् पर प्रावरकः प्राचारादन्धकारक । अन्धका
 रकदेशं तुमुनिदेशः पर स्मृत ॥ २२ ॥ मुनिदेशात् परश्चैव प्रोच्यते दुन्दुभि

वाले हैं इनखंडों में देवता गंधर्व और प्रजालोग विहार पूर्वक आनन्द करतेहैं उन
 में मनुष्य नहीं भरता न चोर म्लेच्छ जाति आदि के लोग रहतेहैं । १५ । और सय
 प्रजा गौर वर्ण सुकुमार होतेहैं इनके सिवाय शेषद्वीपों काभी तुमसे वर्णन करताहूं
 इसको आप सावधानीसे सुनो कि द्वीपमें क्रौञ्चनाम वड़ापर्वतहै और क्रौञ्च से परे
 वामनहै वामनसे परे अन्धकारक है अन्धकारक से परे मैनाकनाम उत्तम पर्वतहै और
 मैनाकसे परे गोविन्दनाम उत्तम पर्वत है गोविन्दसे परे निविड नाम श्रेष्ठ पर्वत है
 इनकाही विस्तारद्विगुणित है, इनके देशोंकाभी वर्णन करता हूं उसको तुम सुनो
 । २० । क्रौञ्चद्वीपका देशकुशलहै वामनका देश मनोनुगहै, मनोनुगसे परे उष्ण
 देशहै उष्णसे परे प्रावरक है प्रावरकसे परे अन्धकारक देशहै अन्धकारकसे परे मुनि
 देशहै मुनि देशसे परे दुन्दुभी स्थान बोला जाताहै, हे राजन् यह सिद्धचारणों का

These seven provinces are divided by mountains and are inhabited
 by gods, gandharvas and other happy people. They are free from
 death, thieves and mlechas 15 The people are of white complexion
 and delicate I shall now give an account of other islands as I have
 heard Listen attentively, king In the Kraunch island, O king
 there is a large mountain of the same name Next to Kraunch is,
 Vamanak and then comes Andhakarak Next to Andhkar, O king,
 is Menak the best of mountains Next to Menak is Govind and after
 the latter, comes the mountain known as Nivid The distance between
 these mountains increases in the proportion of one to two. I shall
 now tell thee of the countries that lie there. Listen to me as I
 speak of them. 20 The country near Kraunch is called Kushal,
 while that near Vaman is Manonug Next to Manonug is Ushna;
 after Ushna comes Pravara and after Pravara is Andhakarak The
 country next to Andhkar is Mundesh and after Mundesh comes
 Dundubhsthan full of Sidhas and Charans. The people are of white

स्वनः । सिद्धचारणसंकीर्णं गौरप्रायो जनाधिप ॥ २३ ॥ एते देशा महाराज
 देवगंधर्वसेविताः । पुष्करे पुष्करो नाम पर्वतो मणिरत्नवान् ॥ २४ ॥ तत्र इत्यं प्रमवति
 स्वयं देवः प्रजापतिः । तं पृथुपासते इत्यं देवाः सर्वे महर्षयः ॥ २५ ॥ चाग्न
 भिर्मनोनुकूलाभः पूजयन्तो जनाधिप । जम्बूद्वीपात् प्रयत्नन्ते रत्नानि विविधान्मुत
 ॥ २६ ॥ द्वीपेषु तेषु सर्वेषु प्रजानां कुलसत्तम । ब्रह्मचर्येण सत्येन प्रजानां हि
 दमेनच ॥ २७ ॥ धारोग्यायुः प्रमाणाभ्यां द्विगुणं द्विगुणं ततः । एको जनपदो
 राजन् द्वीपेष्वेतेषु भारत । उक्ता जनपदा येषु धर्मश्रेष्ठः प्रसदयते ॥ २८ ॥ ईश्वरो
 दण्डमुद्यम्य स्वयमेव प्रजापतिः । द्वीपानेतान् महाराज रक्षतिष्ठति नित्यदा
 ॥ २९ ॥ स राजा स शिवो राजन् स पिता प्रपितामहः । गोपायति नरश्रेष्ठप्रजाः
 सजडपण्डिताः ॥ ३० ॥ भोजनश्चात्र कौरव्यप्रजाः स्वयमुपस्थितम् । सिद्धमेव

निवासस्थान बहुत गोरे वर्गीशाले मनुष्यों से पूरित है यह सब देश देवगंधर्वों के
 निवास और विहार स्थान हैं पुष्करद्वीप में पुष्कर नाम पर्वत मणिरत्नों का रखने-
 वाला है । २४ । उसमें आप देवदेव ब्रह्माजी निवास करते हैं और हेराजन् उन ब्रह्मा
 जी को सब देवता और महर्षि योगमनसे पूजन करते हुये सदैव चारों ओरसे उपा-
 सना करते हैं उन सब द्वीपों में प्रजाओं के अनेक प्रकारके रत्न जंबूद्वीपसे आते हैं
 ब्रह्मचर्य सत्यता और प्रजाओं की शान्ति से नीरोगता पूर्वक एक से एक द्वीपकी
 अवस्था दूनीर है इन सब द्वीपोंमें केवल एकही देश है उसी देश में सब देश कहे जाते
 हैं वह एक धर्मरूप देश दृष्ट पड़ता है अर्थात् धर्म फल भोगने के लिये छत्रद्वीप है और
 जंबूद्वीप कर्म और योगकी भूमि है हेराजन् आप प्रजापति ईश्वर दण्ड धारण करके
 इन द्वीपों की रक्षाके लिये नियत रहता है वही राजा है वही शिव है वही पिता पितामह
 आदि है । ३० । वही सब जड़ चैतन्य प्रजाओं की रक्षा करता है हे कौरव यहां के

colour. All these places are inhabited by gods and Gandharvas. In
 Pushkar is a mountain, named Pushkar which abounds in jewels
 and gems. There always the divine Prajapati is adored by the gods
 and great rishis. The gems of Jamvudwip are used there. In all
 these islands the proportion of celibacy, truth, and self control as
 well as the health and longevity of the inhabitants, is double as the
 place is more and more remote towards north. All these islands
 together make up one country as one religion is professed throughout.
 The supreme Prajapati himself dwells there, dealing punishment and
 protecting those islands. He is the king, the source of bliss, the
 father, the grandfather (30) and protector of all moveables and im-
 moveables. The inhabitants of these places have bowed foot to

महाबाहो न हि भुङ्क्षति नित्यदा ॥ ३१ ॥ तत्र पंच समानाम् दृश्यते लोकैस्त्वि
तिः । चतुरस्रं महाराज त्रयास्त्रशतं मण्डलम् ॥ ३२ ॥ तत्र तिष्ठन्ति कौरव्यचत्वारो
लोकसम्मताः । दिग्गजाः भूतश्रेष्ठ वामनैरावतादयः ॥ ३३ ॥ सुधतीकारदा
राजन् प्रभिन्नकरटामुप । तस्याहं पारमाणन्तु न सजयातुमिहात्सह ॥ ३४ ॥
असह्यातः स नित्यं हि तिर्यगूर्ध्वं मभस्तथा । तत्र वै वायवो वाति दिग्भ्यः सं-
वाभ्य एवाहि ॥ ३५ ॥ असम्बद्धा महाराज तन्निगूहन्ति ते गजाः । पुष्करै
पद्मसङ्काशैर्दिकसद्भिर्महाप्रभैः ॥ ३६ ॥ शतधा पुनरेवाशु ते तान् सुखान्तं नित्यशः ।
श्वसद्भिर्भुक्ष्यमानास्तु दिग्गजैरिह मारुताः ॥ ३७ ॥ जागच्छन्ति महाराजततस्तिष्ठन्ति
वै प्रजाः । धृतराष्ट्र उवाच । परो वै विस्तरोऽयं त्वया सजय कथितः ॥ ३८ ॥
दर्शितं द्वीपसंस्थानमुत्तरं श्रद्धि सजय । सजय उवाच । उक्ता द्वीपा महाराजग्रहं
वै श्रुणुतत्वतः ॥ ३९ ॥ स्वर्गानोः कौरवश्रेष्ठ यावदेव प्रमाणतः । परिमण्डलोमहा

प्रजालोग स्वतःसिद्ध प्राप्तहुये भोजनको खाते हैं, इसके पीछे समानाम लोकोंकी नि-
वास भूमि, दृष्ट पड़ती है हेराजन् वह चतुर्मुख कमलरूपहै और उसका मंडल तैंतीस
हजार योजन है हे राजेन्द्र वहां लोकोंके प्रधान चारादिग्गज वामन, और ऐरावत नाम
आदिसे नियत हैं और इसीप्रकार तीसरा । ३५ । प्रतीक है चौथा प्रभिन्नकरट है
उसका प्रमाण मैं वर्णन नहीं करसक्ता वह गजसमूह सदैव तिरछा ऊंचानीचाहै इसमें
गणनासे बाहर है । ३६ । वहां पर सब ओरकी वायु चली है वही गज उनको
वही प्रकाशवान खिलेकयलों की समान अयनी मंडोसे पकड़ते हैं और पकड़कर शीघ्रही
सो भागकरके छोड़तेहैं वही गजोंके श्वासोंकी छोड़ीहुई वायु यहां आतीहै उसीसे सब
प्रजालोग जीवते रहतेहैं धृतराष्ट्रबोले हे संजय यह तुमने बहुतबड़ा विस्तार वर्णन किया
और द्वीपों काभी रूप दिरताया अब हे संजय इनके विशंप, और २ जो भाग है, उन
का वर्णन करो संजय बोले हे राजन् मैंने द्वीपोंका वर्णन किया अब ग्रहोंका वर्णन

cat without undergoing any trouble for cooking it. After these regions comes the place known as Satva which, starlike, has four corners and thirty three Mandals. There dwell the four diggajas [elephants supporting the four quarters of the globe] adored by all. They are named Vaman, Airavat, Pratik and Prabhumna karat. I can not give you an idea of their size as the length, breadth and thickness of their bodies are as yet unascertained. 35. The winds blow there irregularly from all sides and being caught by those elephants in their trunks of the colour of lotuses and of great splendour, are let loose again in parts towards us and keep us alive." On hearing this, Dhritishtra said. "You have given Sanjaya an account of the islands in detail, now tell me about others that remain." I have given you an account of islands," said Sanjaya, "now hear from

राज स्वर्गान् ध्रुवते ग्रहः ॥ ४० ॥ योजनानां सहस्राणि विष्कम्भोद्वाद्दशस्य
 वै । परेणाहं पृथ्वीशब्दपुलत्वेन चानघ ॥ ४१ ॥ पृथ्वीः शतान्यस्यद्युः
 पौराणिकास्तथा । चन्द्रमानु सहस्राणि राजश्रेकादशः स्मृतः ॥ ४२ ॥ विष्कम्भेण
 कुरुश्रेष्ठ त्रयस्त्रिंशत् मण्डलम् । एकोनपञ्चविष्कम्भं शीतरश्मेर्महात्मनः ॥ ४३ ॥
 सूर्यस्तयैौ सहस्राणि वै चाप्ये कुरुनन्दन । विष्कम्भेण ततो राजन् मण्डलं त्रि-
 शता समम् ॥ ४४ ॥ अष्टपञ्चाशत् राजन् विपुलत्वेन चानघ । ध्रुवते परमोदारः
 पतंगोसौ विभावसुः ॥ ४५ ॥ एतत् प्रमाणमकस्य निर्दिष्टमिह भारग । संराहुश्चादयत्पती
 यद्य काल महत्तया ॥ ४६ ॥ चन्द्रादित्यौ महाराज संक्षेपोयमुदाहृतः । इत्येतत्ते
 महाराज पृच्छतः शास्त्रं चैवं ॥ ४७ ॥ सर्वमूकं यथातथं तस्माच्छममवाप्नुहि ।
 यथोद्दिष्टं मया प्रोक्तं रुनिर्माणमिदं जगत् ॥ ४८ ॥ तस्मादाश्वस कौरव्य पुत्रं दुष्टयोधनं

मूलसमेत सुनो । ४० । हे कौरवेन्द्र राहुग्रह गोल सुना जाता है उसका व्यास निश्चय
 करके बारह हजार योजन है और मंडल छत्तीस हजार योजन है और बुद्धिमान पौराणिकों
 ने उसको मुट्ठी में छः हजार योजन से अधिक कहा है और चन्द्रमा का व्यास ग्यारह
 हजार योजन कहा है उसका मंडल तैंतीस हजार योजन है और मुट्ठी में उंसठ योजन से
 अधिक है और हे राजन् सूर्यका व्यास दश हजार योजन है परन्तु मुट्ठी में तेरहसौ
 योजन से अधिक है इसी हेतु से इकतीस हजार तीन सौ योजनका मण्डल है यह शीघ्र
 गामी सूर्य बड़े उदार मुने जाते हैं हे राजन् यह सूर्यका ममाण कहा और बहराहु अपने
 बड़े देह से समय पाकर दोनों सूर्य चन्द्रमाओंको ढक लेता है यही संक्षेप से वर्णन किया
 है महाराज धृतराष्ट्र मैंने शास्त्ररूप दृष्टि से यह सब वृत्तान्त यथावस्थित कहा यह
 जगत् समेत मैंने जैसा गुरु से सुना है उसके अनुसार तुम से वर्णन किया इसे आप

me, king, about heavenly bodies. 40. We hear that Rahu is globular in form. Its diameter is twelve thousand yojans and the circular measurement is thirtysix thousand yojans. Its thickness as given by the writers of Purans, is more than six thousand yojans. The diameter of the moon is said to be eleven thousand yojans, its circumference is thirty three and its thickness more than fifty nine yojans. The diameter of the sun is ten thousand yojans; but the thickness being more than thirteen hundred yojans, its circumference is thirty one thousand and three hundred yojans. We hear that this fast-going Sun is very generous. I have given you an account of the dimensions of the Sun who like the moon, is sometimes hidden by the huge body of Rahu. I have told you all as I have read in books and heard from my teacher. From this you

प्रति । श्रुत्वेदः भगवन्नेष्ट भूमिपर्व मनोनुगम् ॥ ४९ ॥ श्रीमान् भवति राजन्यः
सिद्धार्थं साधुसम्मत । आयुर्वलञ्च कीर्तिश्च तस्य तेजश्च चर्षते ॥ ५० ॥ यः
धृणोति महीपाल पर्वणाद् यतन्नत । प्रीयन्ते पितरस्तस्य तथैव च पितामहाः
॥ ५१ ॥ इदन्तु भारत वर्षे यत्र वर्णमहे वयम् । पूर्वेः प्रवर्षितं पुण्यं तत्
सर्वं धुनवानास ॥ ५२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भूमिपर्वणि उत्तरद्वीपादिसंस्थानवर्णने
द्वादशोऽध्यायः ॥ १० ॥

॥ समाप्तञ्च भूमिपर्व ॥

शान्तीको पात्रो इन अनेक कारणों से हे राजन् तुम अपने पुत्र दुर्योधनमें शान्तीको
पात्रो हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ इसचिचरोचक भूमिपर्व को जो राजा सुनताहै वह धन
वानहो अभीष्टको प्राप्तकरके साधुओं में प्रतिष्ठाको पाता है और उनकी, आयु बल-
कीर्ति तेज वृद्धि बढ़ती है और श्रद्धापूर्वक नियम से जो राजा सुनेगा उसके पिता
पितामहादि तृप्तहोते हे यह भरतखंड जिसमें हम सब वर्तमान हैं यह पूर्वजोंसे बड़ा
पुण्यकृ वढ़ाने वाला नियत कियागया है इस सचको तुमने सुनाहै ॥ ५० ॥

may be pleased to obtain peace of mind and may now induce your son Duryodhan, by giving reasons, to become peaceful. Whatever Kshatrya will hear this charming account of the world, will get wealth, respect among righteous men, longevity, power, fame, glory and satisfaction of desires. Whoever hears this portion attentively with observances, gratifies his forefathers. You have heard an account of Bharatvarsh where we live and which has ever been praised by our predecessors,' 52"



अथ भगवद्गीतापर्व ॥

वैशम्पयन उवाच । अथ गाक्षलग्निविद्वान् संयुगादेत्य भारत । प्रत्यक्षदर्शी सर्वस्य भूतभव्यभावंश्यावित् ॥ १ ॥ ध्यायते धृतराष्ट्र्य सहसोत्पत्य दुःखितः । आचष्ट निहतं भीष्मं भरतानां पितामहम् ॥ २ ॥ अत्रय उवाच । सञ्जयोहं महाराजनमस्ते भरतर्षभ । हतो भीष्मः शान्तनवा भरतानां पितामहः ॥ ३ ॥ ककुद्दं सर्वयोधानां घाम सर्वघनुष्मताम् । शतत्वपगतः सोद्य शंते कुरुपितामहः ॥ ४ ॥ यस्य वीर्यं समाश्रित्यद्युतंपुत्रस्तवाकरोत् । स शंते निहतो राजन् संख्ये भीष्मः शिखाण्डना ॥ ५ ॥ यः स्वर्वान् पुंष्ववीपालान् समवेतान् महामृषे । जगाथैकरथेनैव काशपुर्या महारथः ॥ ६ ॥ जामदग्न्यं रणे रामं योयुध्वदपसम्पन्नः त हतो जामदग्नेयन सहतोद्य शिखाण्डिना ॥ ७ ॥ महेन्द्रसदृशः शौर्य्यं रथैर्य्येच

अध्याय ॥ १३ ॥

वैशंपायनजी बोले हे भरतवंशी इसके पीछे सबका वृत्तान्त प्रत्यक्ष देखने वाले भूतभाविप्य वर्तमान के ज्ञाता बुद्धिमान संजय ने युद्ध भूमि से आकर आकस्मिक ध्यान करनेवाले धृतराष्ट्र के समीप जाकर भरतवंशियों के पितामह का महाघायल होना वर्णन किया जो सब युद्धकर्त्ताओं में ध्वजारूप और धनुर्धारियों में महावीर, हैं अब वह कौरवों के पितामह शर शय्यापर सो रहे हैं जिनके पराक्रम के आश्रय को पाकर तेरेपुत्र ने पांडवों से जुवासेला वही भीष्मजी शिखण्डीसे विदीर्ण घायल होकर शरशय्यापर विराजे हैं । ५ । नित्तमहारथी ने काशीपुरी में एकही रथसे महाभारी युद्धमें सब मिले हुए राजाओंको विजय कियाया और वही महाभयकारी युद्धमें जमदग्नि जी के पुत्र परशुरामजीसे लडे और उनके हाथसे नहीं मारेगये अबवही

CHAPTER XIII

Vaishampayan said that having seen with his own eyes all that had passed in the field of battle, wise Sanjaya who knew of present, past and future, returned to Dhritrashtra who was plunged in thought and informed him that Bhishma the grandfather was fatally wounded in battle. 'The foremost of all warriors and archers, Bhishma the grand father of the Kaurvas,' said Sanjaya to king Dhritrashtra "is sleeping on the bed of arrows He on whose strength thy son engaged in the gambling match with the Pandvas, is lying wounded by the arrows of Shikhandi. 5. The brave warrior who alone conquered a large assembly of kings at Kashi and whom Parashuram the son of Jamadgam could not slay in a duel, has slain by Shikhandi. He

हिमवानिष । समुद्र इष गाम्भीर्यं सहिष्णुत्वे घरासमः ॥ ८ ॥ शरदंष्ट्रो धनुर्व
 क्र खड्गाजह्वो दुरासदः । नरसिंहः ।पत्न तेद्य पाशाद्वयेन निपातितः ॥ ९ ॥
 पांडवानां महासैन्यं यदृष्टोद्यतमाहवे । प्रावेपत भयाद्विभ्रं सिंहं दृष्ट्व गोगणः १०
 परिरक्ष्य स सेनां ते दशरात्र मनीकहा । जगामास्तामवादित्यः कृत्वा कर्म सुदुष्क-
 रम् ॥ ११ ॥ यः स शक्र इवाक्षोभ्यो वर्षन् घाणान् सहस्रशः । जघान युध
 योधानामर्घुदं दशभिर्दिनैः ॥ १२ ॥ स शेते निहतो भूमौ घातभद्रवदुमः । तवदु-
 मान्त्रते राजन् यथा नार्हः स भारतः ॥ १३ ॥

इति महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि भीष्ममृत्युश्रवणे
 त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

भीष्मजी शिखंडी के हाथ से मारे गये हैं । ७ । जो शूरतामें महा इन्द्र के समान और
 स्थिरचित्तता में हिमाचल पर्वत के समान और गंभीरता में समुद्रके सदृश और क्षमा
 में पृथ्वी के तुल्य हैं अब वह वाणरूप दंष्ट्रा और धनुष रूप मुख खड्गरूप जिह्वा दुर्धर्ष
 नरोत्तम सिंहरूप तेरापिता पांचाल देशी शिखण्डी के हाथसे पृथ्वीपर मारा गया पांडवों
 की सेना जिसको युद्धमें शस्त्र लिये उद्यत देखकर भयसे व्याकुल होकर ऐसे कांपती
 थी जैसे कि सिंहको देखकर गौओंका समूह व्याकुल होकर थरथराता है वह वीरों
 का मारनेवाला उसतेरे पुत्रकी सेना को दशदिन रात्रि रक्षाकरके बड़े कठिनयुद्धों
 को करता हुआ घायलों के समान अस्त्र होगया । ११ । जोकि हजारों वाणों
 को बरसाता हुआ इन्द्रके समान महा व्याकुलता से पृथक् है उसने अपने दशदिनके
 युद्धों में एक अर्जुन सेनाको मार डाला है भरतवंशी वह भेरी उरिसलाह के
 होनेसे वायु से गिरेहुये वृक्ष के समान पृथ्वीपर ऐसे सोता है जैसे कि कभी वह
 सोनेके योग्य न था ॥ १३ ॥

who was brave like Indra, firm like the Himalayas, grave like the
 ocean and like the earth in forgiveness, who had arrows for his teeth,
 bow for mouth, and sword for tongue, that invincible father of thine,
 the best of men, lies dead by the wounds of Shikhandi of Panchal.
 He at the sight of whose arms the Pandava army trembled like a herd
 of cows at the sight of a lion, that destroyer of warriors, having
 protected the army of thy son for ten days and nights and having
 performed matchless deeds of bravery, has set like the sun 11. He
 who like India himself, scattering arrows by thousands with great
 skill, daily slew ten thousand warriors for ten days, lies slain, though
 he did not deserve it, on the bare ground like a tree broken down by
 the wind, in consequence of thy evil counsels, O Bharat." 13.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ कथं कुरुणामृषभो हतो भीष्मः शिखण्डिना । कथं रथान् स
न्यपतत् पिता मे वासवोपमः ॥ १ ॥ कथमाचक्ष्य मे योधा हीना भीष्मेण सञ्जय ।
घलिना देयकक्षणेन गुर्वर्धे ब्रह्मचारिणा ॥ २ ॥ तस्मिन् हते महाप्राज्ञे हेष्वासे महाबले ।
महासत्त्वे नरव्यघ्रे किमु आसीन्मनस्तव ॥ ३ ॥ आसि परम विशति मनः संसालि मे
हतम् । कुरुणामृषभं वीर मरुत्पुं पुरुपर्यभम् ॥ ४ ॥ केतं यान्तगनुप्राप्तः के वाष्पासन्
पुरोगमाः । के तिष्ठन् केन्यवर्त्तत केऽन्यवर्त्तन्तसञ्जय ॥ ५ ॥ के शूरास्त्रशार्दूल मद्भुतं क्षत्रि
पर्यभम् । तथानीकं गाहमानं सहसा पृष्ठतोन्वयुः ॥ ६ ॥ यस्तमोर्क इवापोहन्य पासैन्यप्रमि
ब्रह्म । सहस्ररश्मिप्रतिम. पशोर्भयमादधत् ॥ ७ ॥ अकरोद् दुष्करं कर्म रणे पाण्डुसु

अध्याय ॥ १४ ॥

धृतराष्ट्रने कहा कि मेरापिता भीष्म कैसे शिखण्डी के हाथ से घायलहुआ और
कैसे रथसे गिराहे संजय उस पराक्रमी देवता के समान अपन पिता शतनु के लिये
ब्रह्मचारी होनेवाली गुरुरूप भीष्मजी के बिना भरे पुत्रों की कौन दशाहुई और
ऐसे महाबली धनुर्धारी महाज्ञानी शस्त्रवेत्ता नरोत्तम भीष्म के मारेजाने पर तेरा
चित्त कैसा होगया जिस निर्भय कंपरहित कौरवेन्द्र पुरुषोत्तमवीर भीष्मजी को मृतक
मुनकर मेराचित्त महापीड़ा से व्याकुल होताहै हे संजय कौन २ क्षत्री इस के आगे
और कौन इनके पीछे चलनेवाले हुये कौन स्थिरहुये और कौनलौट आये और कौन
से क्षत्री सम्मुख वर्त्तमानहुये । ५ और कौन से शूर उस महारथी क्षत्रियोत्तम युद्ध में
सेनाके दवानेवाले भीष्मजीके पीछे की ओरको चले जिसबड़े प्रबल सेनाके स्वामी
सूर्य के समान तेजस्वी शत्रुहंताने शत्रुओंकी सेना के मनुष्योंको मारहटाया और

CHAPTER XIV

" How was Bhishm my father wounded by Shikhandi," asked Dhritrashtra of Sanjaya, " and how did he fall from the chariot ? To what state were my sons reduced in the absence of that great elderly warrior Bhishm who was full of prowess like gods and who observed a vow of celibacy for the sake of his father Shantanu ? What was the state of your mind at the death of Bhishm the great archer, wise in the use of weapons and best of men ? Bhishm was the great intrepid Kaurava chief and best of men at the news of whose death my mind is perplexed with excessive pain. Tell me, Sanjaya, what Kshatryas were before and after him, which of them stayed there, which returned and which of them faced him. 5. What warriors followed that best of warriors, Bhishm the best of kshatryas, destroyer of foes and wonderful archer. While he was engaged in battle, what warriors opposed that slayer of foes, glorious like the

तेषु य । प्रसमानमनीकान य एन पर्यवारयन् ॥ ८ ॥ कृत्तिनन्त दुराघर्ष सञ्जयास्यत्व
मान्तके । कथ शाग्तनव युद्धे पाण्डवा प्रत्यघारयन् ॥ ९ ॥ निकृन्तन्त मनीकानि शर
दष्ट तरस्विनम् । चापव्यस्तानन घोर भासि जिह्व दुरास्रदम् ॥ १० ॥ अनर्ह्युरुपव्याप्र
ह्रामन्तमपराजितम् । पातयामास कौन्तेय, कथ तमाजत युधि ॥ ११ ॥ उग्रघवानमुप्रे
पु वर्त्तमान रथोत्तमे । परेषामुत्तमागानि पश्चिम्बन्तमधेषुभि ॥ १२ ॥ पाण्डवानां महत्
सैन्य य दृष्टवोद्यतमाहवे । कालाग्निमिध दुर्धर्ष समचेष्टत नित्यश, ॥ १३ ॥ परिक्रम्य
स सेनातु दशरात्रमनाकृष्टा । जगामास्त मिवादित्य, कृत्वाकर्म सुदुष्करम् ॥ १४ ॥ य
स शक्र इवाक्षय्य वर्ष शरमय क्षिपन् । जघान युधि योघाना मर्षुद दशभिर्दिने १५ ॥

शत्रुओं में महाभयको उपजाया और युद्धमें पाण्डवोंके ऊपर महाकठिन कर्मकिया और
हे संजय तुमने उसके सम्मुखहोने वाले युद्धमें कुशल दुष्पधर्ष महावली को भी देखा
है जिसने कि इस सेनाके निगलने वाले महावीर धनुर्धारी भीष्मको मारकर हटाया
हे संजय पाण्डवा ने युद्धके बीचमें उन भीष्मजी को कैसे प्रकारसे रोका और सेनाओं
के काटनेवाले वाणरूप दंष्ट्रा रखनेवाले वेगवान चापरूपी मुखफहलानेवाले खड्गरूप
जिह्वाधारी दुर्धर्षइस दशके अयोग्य पुरुषोत्तम लज्जावान अजित जितेन्त्री भीष्म
जीको अर्जुन ने किसप्रकार से गिराया जो भीष्म कि भयानक धनुष वाणयुक्त
उत्तमरथमें आरूढ़ वाणों से शत्रुओं के शिरों के छेदने वाले होते थे उसकाल अग्नि
के समान दुर्धर्ष शस्त्र धारण किये सन्नद्ध भीष्मजी को देखकर पाण्डवोंकी सेनासदैव
मृतकप्रायके सदृश चेष्टा करती थी वह शत्रुहन्ता दशरात्रि सेनाको खैचकर महाकठिन
युद्ध कर्मको करके सूर्य के समान अस्तहोगया । १४ । जिसने दशदिन तक इन्द्र
के समान अस्रण्ड वाणों को छोड़कर युद्धमें एक अर्बुद संख्याके धुरवीरों को मार

sun, who caused great terror to the warriors of the army and accom-
plished difficult exploits in the ranks of the Pandavas. How did
the Pandavas oppose the sun of Shantanu, that accomplished and
invincible warrior, when he was engaged in killing their armies?
Have you seen the man who opposed Bhishm and wounded him in
battle? How did Arjuna cause the fall of that destroyer of armies
having arrows for his teeth, the swift bow for his gaping mouth and
sword for his tongue, invincible, undeserving of such a fate, best of men,
modest, unconquerable and having control over his organs. Bhishm
who with his dreadful bow and arrows cut down the heads of the
enemies from his seat in his chariot, who was invulnerable like the
fire of yug, who appeared like death to the army of the Pandavas,
that destroyer of enemies having performed a difficult work in the
field of battle for ten days, has set like the sun. 14. He who like
Indra, discharged for ten days an incessant shower of arrows and

स शने निहतो भूमौ वातमुन इन्द्रम् । मम दुर्मन्त्रितेनाजौ यथा नाहति भारत १६ ॥
 कथं शान्तनव दृष्ट्वा पांडव नामनीचिनी । प्रहृतुं मशकत्तत्र भीष्म भीमपराक्रमम् ॥ १७ ॥
 कथं भीष्मोण सग्राम प्राकृर्धन् पाण्डुनन्दना । कथं नाजयद् भीष्मो द्रोणे जी-
 घति सन्नय ॥ १८ ॥ कृपे सन्निहिने तत्र भरद्वाजात्मजे तथा । भीष्मः प्रहृतां
 श्रेष्ठ कथं स निधनं गत ॥ १९ ॥ कथञ्चातिरथस्तेन पाञ्चाल्येन शिखण्डिना ।
 भीष्मो विनिहतो युगे द्वैरपि दुरासद् ॥ २० ॥ यः स्पन्दते रणे नित्यं जाम-
 दग्यं महाशठम् । आजत जामदग्न्येन शक्रतुल्यपराक्रमम् ॥ २१ ॥ त हतं समरे
 भीष्म महारथकूलोदितम् । सद्यश्चाक्षयमे चीरं येन शर्मन् विशद्वे ॥ २२ ॥ मामया
 के महेष्वासा नाजद् सजयाच्युतम् । दुर्योधनसमादिष्टा के चीरा पर्यवारयन् ॥ २३ ॥

हालां वह भरतर्षभ मेरेदुर्मन्त्रों से युद्ध में पराजय होकर पृथ्वी में वृत्तके समान गिर
 कर ऐसा वायल होकर सोता है जैसा कि वह कभी होनहीं सक्ता । १६ । ऐसे
 प्रतापी महाबली भीष्मजी को युद्ध में सन्नद्ध देखकर पांचाल देशियों की सेना किस
 प्रकार से उनके ऊपर प्रहारकरने व । मर्य हुई और पांडवोंने भीष्मजी के सम्मुख
 कैसे लड़ाई की और हे संजय द्रोणाचार्यजी के जीनेहुये होनेपर भीष्मजी ने कैसे
 विजय को नहीं पाया और प्रहार कर्त्ताओं में श्रेष्ठ भीष्मजी ने भारद्वाज के पुत्र
 कृपाचार्य और द्रोणाचार्य के वर्त्मान होनेपर कैसे मृत्यु को पाया और देवताओं
 से भी महादुर्धर्ष अति रथी भीष्मजी युद्ध में उस पांचाल देशी शिखण्डी के हाथसे
 कैसे मारगये २० । जिन्होंने महाबली परशुगमजीको युद्धमें प्रसन्नकिया अर्थात् उनसे
 ईर्ष्यापूर्वक लड़ाई होनेपरभी उनके हाथसे नहीं मारागया इन्द्र के समान प्रबल महा
 राथियों में मूर्ख रूप महावीर भीष्मजी युद्धमें जैसे मृतक हुए वह सत्र दृष्टसे वर्णनकरो
 और हे संजय मेरे कौन कौनसे बड़े धनुर्धारी बाण फेकने वाले पुत्रों ने उसदुराधर्ष

destroyed a hundred thousand warriors, that scion of Bharat race
 now lies on the bare ground in the field of battle, deprived of life,
 like a mighty tree uprooted by the wind, as a result of my evil
 counsels, although he did not deserve this fate 16 Seeing the son
 of Shantamu ready to fight, how was the army of the Pandavas able
 to wound him ? How did the Pandavas fight against Bhishm ? How
 was it that Bhishm did not conquer although Drona is still alive ?
 How did Bhishm die when both Drona and Kripacharya are alive ?
 How did Shikhandi of Panchal kill Bhishm who was invincible even
 by gods ? He pleased mighty Parashuram in battle and was not
 killed by him. Let me know in detail how that best of warriors
 was killed in battle What great archers of my army did not

याऽऽरुण्डिमुखा सर्वे पाण्डवा भीष्मभ्यम् । कञ्चित् कुरव सर्वे नाजहृ सन्नयाच्यु
तम् ॥ २४ ॥ अश्मसारमथ नून हृदय सुदह मम । यच्छ्रुत्वापुरुष-याग्र ह्य न भीष्म नदी
र्यते ॥ २५ ॥ यस्मिन् सत्यश्चमेवाच नीतिश्च भरतर्षभे । अग्रमेपाण दुर्धरे कथ स निह
तो युधि ॥ २६ ॥ गौर्वीषोपस्तनायित्नु पृषन् फपृषतो महान् । धनुर्हादिमहाशब्दो
महामेघ इवोन्नतः ॥ २७ ॥ योभ्यवर्षत कौन्तेयान् सपाचालान् ससृजयान् । निघ्नन् पर
रथान् वीरो दानवानिव यज्ञभृत् ॥ २८ ॥ इष्यस्त्रसागर घोर वाणप्राह दुरासदम् ।
कार्मुकोर्मिणमक्षय महीप चलमल्लपम् ॥ २९ ॥ गदासिमकराशस ह्यावर्ष गजाकु
लम् । पदाति मत्स्यकलिलं शरदु-दु भि नि स्वनम् ॥ ३० ॥ हयान् गज पदातींश्च

को त्याग नहीं किया और दुर्योधन के आज्ञावर्ती कौन २ से वीरोंने शत्रुओंको न
रोका जिससे कि वह सब पाण्डव जिनमें सब का अग्रगामी शिखण्डीया भीष्मजी
के सम्मुख आये हे संजय उस आजित वीर को सब कौरवों ने तो त्याग नहीं किया
मेरा निश्चयकरके वज्रके समान हृदय है जो ऐसे पिता भीष्म पराक्रमी के मरनेपर
भी नहीं फटता है । २५ । वह भरतर्षभ दुराधर्ष सत्यवादी उद्ध स्पर्ण में सावधान
शास्त्रों का ज्ञाता होकर युद्ध में कैसे मरा है जिसका धनुषरूप बादल वाणरूप
जल वाण और धनुषकी टंकारही गर्जनायुक्त घोरशब्दवाले बड़े बादलही के समान
ऊंचा है और जैसे इन्द्र दैत्यों को मारताहै उसी प्रकार शत्रुके रथियों को मारतेहुये
जिस वीरने पाण्डव और पांचाल देशीय वा सजय लोगों के पद वर्षाकी उसवाण
आदि अनेक भयानक अस्त्रों के समुद्र वाणरपी ग्राहयारि दुराधर्ष धनुष रूप तरंग
वाले आविनाशी निराधार नौकाओं ने रहित गदासङ्ग रूप मकर जीरों से व्याप्त
घोड़े रूपी आवतों समेत हाथियों से व्याकुल पदातीरूपमीनों से भराहुआ शर

desert Bhishm? What warriors of my s n's army did not help
Bhishm in checking the advance of the Pandavas who led by Shikhandi
were able to face Bhishm. Did the Kauravas desert that warrior?
My heart must be hard like adamant as it does not break on
hearing of the death of Bhishm. 25 That irresistible bull of Bharatrace
was truthful, wise and a great politician. Alas! how was he slain
in battle? Like a mighty and high cloud he had the twang of his
bowstring for the thunder and his arrows for showers, and showered
his shafts on the enemy as Indra does on the Danava. What heroes
resisted that chastiser of foes as the shore resists the waves of the sea?
He was a terrible ocean of arrows and weapons, whose shafts were the
irre-estible crocodiles and bows were the waves. He was a boundless
ang y ocean without an island, and without a raft to cross it over,

रथांश्च तरसा घृह्णन् । निमञ्जयन्तं समरे परवीरापहारिणम् ॥ ३१ ॥ विदह्यमानं
 क्रोपेन तेजसा च परन्तपम् । वेलेषमकरावासं के वीराः पयंवारयन् ॥ ३२ ॥ भीष्मोय
 द्करोत् कर्म समरे सञ्जयारिहा । दुर्योधनहिताधाय के तस्यास्य पुरोऽभवन् ॥ ३३ ॥
 केरक्षन् दक्षिणं चक्र भीष्मश्यामित तेजसः । पृष्ठतः के परान्वीरानपासेघ्नन् यतप्र-
 ताः ॥ ३४ ॥ के पुरस्ताद्वर्तन्त रक्षन्तो भीष्ममन्तिके । के रक्षन् सुत्तरं चक्रं वीरावीर
 स्य युध्यतः ॥ ३५ ॥ धामे चक्रे वर्त्तमानाः केऽघ्नन्सञ्जय सृञ्जयान् । अद्रतोप्रयमनी
 केपु केऽभ्यरक्षन् दुरासदम् ॥ ३६ ॥ पार्श्वतः केऽभ्यरक्षन्त गच्छन्तो दुर्गमां गतिम् ।
 समूहे के परान्वीरान् प्रत्ययुध्यन्तसजय ॥ ३७ ॥ रक्ष्यमाणः कपं वीरैर्गोप्यमानाश्चते

दुन्दुभियों से शब्दायमानयुद्ध में अपने वेगसे बहुतसे हाथीघोड़े पैदलों को डवाने
 वाले शत्रुओं के वीरों के हटानेवाले क्रोधसे आग्निरूपतेजसे शत्रुओं के संतप्तकरनेवाले
 को कौन २ से वीरोंने ऐसे रोकलिया जैसे कि समुद्र को उसकी किनारा रूप मर्या
 दा रोकलेती है । ३२ । हे संजय शत्रुहन्ता भीष्मजी ने युद्धमें दुर्योधन के अभीष्ट
 के लिये जो २ कर्म किये उस समय उनके सम्मुख कौन २ हुए और कौन २
 से वीरों ने भीष्मजी के दाहिने पक्षकी रक्षाकरी और पीछेकी ओरसे कौन
 से सावधान वीरोंने शत्रुके वीरों को हटाया और कौन २ वीर भीष्मजी के
 समीप में जाकर रक्षा करतेहुए आगे हुए और किन २ वीरों ने भीष्मजी के
 लड़ते समय उत्तरीय भागकी रक्षाकरी । ३५ । और धाम पार्श्व में होकर किस २
 ने सृञ्जय देशियों को मारा और किस २ वीरने उस दुर्धर्ष भीष्मजी की आगेसे
 रक्षाकी और चलते समय में किम २ ने चारों ओरसे उनकी रक्षाकरी हे संजय

having maces and swords for sharks, steeds and elephants for eddies,
 the numberless foot soldiers for fishes and the noise of conchshells and
 drums for its roars. He was an ocean that swallowed horses, elephants
 and foot soldiers quickly, an ocean that devoured the warriors of the
 enemy and seethed with wrath and energy as if containing within
 himself the subterranean fire. 32. When, for the sake of Duryodhan,
 Bhishma the destroyer of foes achieved feats in battle, who were in
 his van? Who were those that protected the right wheel of that
 great warrior of immense energy? Who were they that, with great
 patience and energy, checked the enemy from his rear. Who were
 stationed in front to protect him; who protected the fore wheel of that
 warrior while he was fighting. 35. Who stationed themselves on his
 left to beat off the Srinjaya. Who were they that protected the
 front ranks of irresistible Bhi hm? Who were they that protected
 him on all sides while he was moving with difficulty and who,

नते । दुर्जयानामनीकानि नाजयंस्तरसायुधि ॥ ३८ ॥ सर्वलोकेश्वरस्येव परमेष्ठीप्रजा
पतेः । कथं प्रहर्तुमपितं नेकः सन्नय पाण्डवाः ॥ ३९ ॥ यास्मिन् द्वीपे समाश्वस्य युष्यन्त
कुरवः परैः । तं निमग्न नारव्याघ्रं भीष्म शंससि सञ्जय ॥ ४० ॥ यस्य वीर्यं समाश्रित्य
मम पुत्रो बृहद्वलः । न पाण्डवानगणयत् कथं स निहतः परैः ॥ ४१ ॥ यः पुरा विबुधैः
खर्वैः सहाये युद्धदुर्मदः । काक्षतो दानयान् धनद्विः । पतामम महाव्रतः ॥ ४२ ॥
यास्मिन्जाते महावीर्ये शांतनूलोकं विधृतः । शोकं दैन्यञ्च दुःखञ्च पाजहात् पुत्रलक्ष्म-
णि ॥ ४३ ॥ प्रोक्तं परायणं प्राप्तं स्वधर्मं । नरतं शुचिम् । वेदवेदांगं तत्तत्र कथं शंस

उस समूहमें से शत्रुओं के वीरों से युद्धकरनेवाले कौन २ वीर थे वीरों से रक्षित
भीष्मजी ने और भीष्मजीसे रक्षित उन वीरोंने युद्ध के बीच वेगसे वा दुःखसे वि-
जय होनेवाली राजाओंकी सेनाओंको क्यों नहीं विजय किया हे संजय जो सब
लोकों के ईश्वर प्रजापति के समान भीष्मके मारने के लिये वह पाण्डवलोग कैसे
समर्थ हुए, कौरवलोग जिस रक्षाके स्थानपर भरोसा करके शत्रुओं से युद्ध करते
हैं उस नरोचम भीष्मजी को हे संजय तुम दूबाहुआ कहने हो । ४० । जिस के
बलका आश्रयलेकर बड़ी सेना रखनेवाला मेरा पुत्र पाण्डवों को कुछ नहीं सम्भ-
ताया वह ऐसा प्रतापी भीष्म पाण्डवों के हाथ से कैसे मारागया, युद्ध में दुर्मद महा-
व्रती जिसमेरे पिता भीष्मको सहायता में करके देवतालोग दैत्यों के मारनेके लिये
उपस्थितहुये और संसार में विदित राजा शन्तनु ने पुत्रों में उत्तम वंशपरा-
क्रमी जिस भीष्म के उत्पन्न होनेपर शोकभय और दुःखों को अत्यन्त दूर
किया और उसी पुत्रको रक्षाका स्थान वःज्ञानी और अपने धर्मों में आते

○ Sanjaya, fought with the warriors of the enemy in the general engagement? If he was protected by warriors, and if they were protected by him, why then could he not vanquish at once, the invincible army of the Pandavas? How could the Pandavas destroy Bhishm who was like Parameshthu or Lord and Creator of all creatures. You speak, O Sanjaya, of the disappearance of Bhishm the best of men, on whose strength the Kauravas are making this war on the enemies. 40 How did the Pandavas destroy that great warrior, relying on whose strength, my son Duryodhan looked down upon the Pandavas? My father Bhishm the great warrior of dreadful vows, whose assistance was sought by the gods to destroy the Danavas and on whose birth famous Shantanu laid aside all his griefs and cares and whom he called his refuge, was very wise, firm on his duty, scholar of the Vedas and their branches and of pure soul;

।स मे हतम् ॥ ४४ ॥ सर्वास्त्र विनयो पेतं शान्तं दान्त मनस्विनम् । हतं दान्तनचं
 श्रुत्या मन्ये शोपे हतं बलम् ॥ ४५ ॥ धर्मावधर्मो बलवान् सप्र्यात इति मे मातः । यत्र
 वृद्धे-गुहं हत्वा राज्य मिच्छन्ति पाण्डवाः ॥ ४६ ॥ जामदग्न्यः पुराणामः सर्वास्त्रविद
 नुत्तमः । अश्वार्थं मृगत संरये भीष्मण षष्ठानर्जितः ॥ ४७ ॥ तमिन्द्र समकमाण
 ककुदं सर्वं धन्विनाम् । हतं शससि मे भीष्मे किन्तु दुःखमत- परम् ॥ ४८ ॥ अशकृन्
 क्षत्रियश्रताः संख्ये येन विनिर्जिताः । जामदग्न्येन वीरेण परवीर निघातिना ॥ ४९ ॥
 नहतो धो महाबुद्धः स हतोऽद्य शिखण्डिना । तस्मान् नूनं महावीर्याद् भार्गवाद्युद्धम
 दात् ॥ ५० ॥ तजो वीर्यं बलैर्नूयान् शिखण्डी द्वादशजः । यः शूरं कृतिनं युद्धं सर्वं
 शास्त्रावशास्त्रम् ॥ ५१ ॥ परमास्त्रावदं शूरं जघात भरतर्षभम् । के वीरास्तम मित्रान्

पृष्ठ वेद वेदांग के मूलोंका ज्ञाता महापात्रिवात्मा वर्णन किया हे संजय ऐसे पुरुष
 को मराहुआ कैसे कहता है उन सब अस्त्रोंसे शिवायुक्त शान्तनु जितेन्द्री उदार बुद्धि
 भीष्मजी को मृतकमुनकर में शोप, वचीहुई सेना कोभी मृतकही मानताहूँ । ४५ ।
 कि जिसस्थानपर पांडव अपने वृद्ध गुरुकोभी मारकर 'राज्यको चाहतेहैं इससे यह
 भेरा मतहै कि अधर्म धर्मसे भयलतर होता है, पूर्व समय में सब अस्त्र शस्त्रों के ज्ञाता
 अनुपम युद्ध में सन्नद्ध जमदग्निजी के पुत्र परशुरामजीको युद्ध में भीष्मजीने विजय
 किया उसइन्द्र के समान कर्मकर्त्ता सब धनुषधारियों के ध्वजारूपभीष्मजीका मृतक
 कहताहै इससे अधिककौनसा दुःखदोगा जिन परशुरामजीने अनेक समय क्षत्रियों के
 समूहों को बारम्बार विजय किया परन्तु बड़ा बुद्धिमान मेरापिता नहीं मारागया
 सो अब वह शिखण्डी के हाथ से मारागया इन हेतु से निश्चय करके दुपदका पुत्र
 शिखण्डी बड़ा पराक्रमी युद्ध में परशुराम जीसे भी अधिक तेजस्वी बल पराक्रम में
 भी अधिक है जिसने शूरीर पंडित महाशास्त्रज्ञ धर्मअस्त्रके ज्ञाता भरतवंशियोंके उत्तम

how can you say, Sanjaya, that he is dead? Knowing the use of all
 weapons and having his passions under control the son of Shantanu
 was modest, gentle and energetic. Alas! hearing of his death; I
 regard the rest of the army as already slain 45. The Pandavas
 desire to rule by killing their grandsire; from this, I conclude that vice
 is stronger than virtue. What grief can be greater than that of the
 death of Bhishma the best of archers and of Indra like prowess, who
 vanquished Parashuram the son of Jamdagni of matchless prowess
 and knowledge of arms? My wise father who was not slain by
 Parashuram the destroyer of kshatryas, is now slain by Shikhandi.
 Indeed Shikhandi the son Drupad must be a greater warrior than
 Parashuram as he has destroyed the most glorious descendant of

मन्वयु शस्त्रससदि ॥ ५२ ॥ शस मेवत् यथा चासायुद्ध भीष्मस्य पाण्डवै । घोषेव
 हतधीरा मे सेना पुत्रस्य सजय ॥ ५३ ॥ अगोपमिव चोद्भ्रान्त गोकुल तद्वल मम ।
 पौरुष सर्वे लाफभ्य पर यस्मिन् महाहमे ॥ ५४ ॥ परासक्त चयस्तस्मिन् कथमास्तीन्
 मनस्तदा जीविते व्यद्य भान्धर्यं किमि वास्मात्तु सञ्जय ५५ घातयिष्यामहावीर्यं पितर
 लाकधार्मिकम् । अगाधे सलिल मग्ना नौका दृष्टव पारगा ॥ ५६ ॥ भीष्मे हते भृश
 दुःखात् मन्य शोचति पत्रका । अद्रिसारमय नून हृदय मम सजय ॥ ५७ ॥ बह्वृ
 त्वापुरुषव्याघ्र हत भीष्म न दीर्यते । यस्मिन्नस्त्राणिमेवाच नीतिश्च पुरुषवर्षमे ॥ ५८ ॥
 अप्रमेयाणि दुर्धर्यं कथ स निहतो युधि । न चास्त्रण न शौर्येण तपसा मेघया नच ५९

प्रतापी वीरको तारा युद्धभूमि में । ५२ । उस शत्रुहन्ता भीष्मजी के पीछे कौन २
 वीर चले और जैसे पाण्डवों से और भीष्मजीसे लड़ाई हुई यह सब मुझसे विस्तार
 समेत वर्णन करो हे सजय मेरे पुत्रकी वह सेनास्त्री के समान मृतक वीरवालीहै
 और वही मेरी सेना इस प्रकार व्याकुल है जैसे कि विनागोपके गौओं का कुल
 होता है जिसभारी युद्ध में सबलोगोंकी बड़ी वीरता है अब उस भीष्मजीके मरने के
 पीछे सबका मन कैसाहोगया, हे सजय अबलोक में धर्मवानबड़े पिताको मरवाके
 हमारे पुत्रोंमें जीवनकी क्या सामर्थ्य है भीष्मजी के मरनेपर मेरे वेदेसदैव दुःखसे
 ऐसे शोचतेहैं जैसे कि पारपर खड़े हुए मनुष्य गहरेजल में डूबीहुई नौका को देख
 कर शोचतेहैं हे सजय निश्चय करके मेरा बन्धसेभी अधिक कठोर हृदयहै जो ऐसे
 पुरुषोत्तम भीष्मजीके मरनेपरभी नहीं फटताहै जिसपुरुषोत्तम दुराधर्म में अस्त्रजुद्धि
 और नीति अत्यन्तथी वह युद्धमें कैसे मारागया कोई भी मनुष्यअस्त्रश्रुता तपजुद्धि

Bharat of great renown and skill in arms 52 What warriors
 followed that destroyer of enemies in the great battles? Tell me in
 detail how the battle was fought between the Pandavas and Bhishm
 Our army, in the absence of that hero is like a woman who has lost
 her protector or like a herd of cows without the herdsman. In
 what state did he leave the army when that warrior of matchless
 prowess was laid low on the field of battle? What is the use of our
 life in this world, when we could not save our father from being
 slain. My sons must be grieved at the death of Bhishm like those
 who having lost their boat in the midst of a swollen river, are
 standing on the opposite shore. My heart must be hard as adamant
 as it does not break at the death of Bhishm the best of men who
 was endued with immense skill in arms and policy. How has he been
 killed? No one can escape death by bravery, asceticism, wisdom

नघृत्या न पुनस्त्यागान् मृत्योः कश्चिद्विमुच्यते । कालो नूनं महावर्षैः सर्वं लोकदुरत्ययः ॥ ६० ॥ यत्र शान्तनवं भीष्मं हतं शशास संजय । पुत्रशोकाभिः सन्तप्तो महद्दुःखमचिन्तयन् ॥ ६१ ॥ आशंसेहं परं त्राणं भीष्माच्छान्तनुगन्धनात् । यदाहस्य मिघ्रापश्यत् पाततं भुवि सञ्जय ॥ ६२ ॥ दुर्योधनः शान्तनवमकन्तदा प्रत्यपद्यत । नाह स्वेषां परेषां वा वृद्धासंजय चिन्तयन् ॥ ६३ ॥ शोके चित् प्रपश्यामि प्रत्यनीके महीक्षिताम् । दारुणः क्षत्रधर्मोऽयं मृषेभिः सम्प्रदर्शितः ॥ ६४ ॥ यत्र शान्तनवं हत्वा राज्यमिच्छन्ति पाण्डवाः । वयं वा राज्यमिच्छामो घातयित्वा महाव्रतम् ॥ ६५ ॥ क्षत्रधर्मस्थिताः पार्था नापराध्यान् पुत्रकाः । एतदार्येणकर्त्तव्यं कृच्छ्रात्वापरसुसंजय ॥ ६६ ॥ पराक्रमः पराशक्तिस्तु तस्मिन् प्रसिद्धितम् । अनीकानि विानघ्नन्त हीमन्तमपराजितम् ॥ ६७ ॥ कथं शान्तनवं तातं पाण्डुपुत्रान्यवारयन् । यथा युक्तान्यनीकानि कथं युजं

धैर्य और तपस्या इत्यादिके द्वारा मृत्युसे नहीं छूटता है इससे निश्चयकरके सबलोकों को दुःखसे उल्लंघन करनेके योग्यकाल महावली है । ६० । हेसंजय उन शतनुके पुत्रभीष्मजीको मृतक कहताहै उनशतनु नन्दन भीष्मजीसे मैं पुत्रोंके शोकसे दुःखी बड़ेदुःखोंको स्मरण करताहुआ रक्षाकी आशा करताथा हेसंजय जब मूर्यके समान अस्तहुए भीष्मजीको दुर्योधनने देखा तब मन में क्या विचारकिया और मैं बुद्धिसे चिन्ता करताहुआ सेनाके मध्यमें अपने पुत्रोंको और अनपराजाओंको इछभी नहीं समझताहूँ यह वह भयका कारण क्षत्री धर्म ऋषिलोगोंने दिखायाहै । ६४ । जहां पांडव लोग भीष्मजी को मारकर राज्यको चाहते हैं अथवा हमकौरव लोग महाव्रत वाले भीष्मजीको मरवाकर राज्यको चाहते हैं, क्षत्रीधर्म में मृत्त भरे पुत्र पांडव भी कुछ अपराध नहीं करते हैं क्योंकि दुःख और आपत्तियों में उत्तम पुरुष को यह पराक्रम और महासामर्थ्य प्रकटकरने के योग्य है उसमेंही वह सबपांडव नियत हैं हेतात, उनपांडवोंने, उन, लच्छवान, दुरोधर्ष सेना के मर्दनकरनेवाले, भीष्मजीको

patience and penances. Surely, Time is too powerful to be transgressed by any one in the world. 60. You say, Sanjay, that Bhishm, the son of Shantanu, is dead. I expected relief from the grief of my sons through Bhishm. What did Duryodhan think when he saw Bhishm setting like the sun ? I fear for my sons and other kings who are engaged in battle. Hard are the duties of kshatryas enjoined by rishis 64. The Pandavas have killed Bhishm for the sake of the kingdom and we desire the same even after his death. My sons the Pandavas are committing no sin as when one is beset with calamities one must show prowess. How did the Pandavas check Bhishm the invincible, modest and destroyer of enemies ? How were the armies

महात्मनि ॥ ६८ ॥ कथं वा निहतो भीष्म पिता सत्रय मे परे । दुर्योधनश्च कर्णश्च
 शकुनिश्चापि सौवत्त ॥ ६९ ॥ दुःशासनश्च कितवो हते भीष्मे किमग्रवन् । यच्छरीररुपा
 स्तीर्णा नगराण्यवाजिनाम् ॥ ७० ॥ शरशक्त महासङ्ग ते मराहा महाभयाम् । प्रा
 पशन् कितवा मन्दा सभा युद्ध विशारदाम् ॥ ७१ ॥ प्राणद्युते प्रति भय केऽदीव्यन्
 नरर्षभा । केर्जायन्ते जितास्तत्र कृतलक्ष्यानिपातता ॥ ७२ ॥ अन्ये भीष्माच्छातन
 घात् तन्ममाचक्ष्वसञ्जय । नाहं म शान्तिरस्तीह श्रुत्वा दधव्रत हतम् ॥ ७३ ॥ पितर
 भीष्मकर्माण भीष्ममाहवशोभितम् । आत्ति मे हृदय रुद्धा महती पुत्रहानजाम् ॥ ७४ ॥
 त्वहि म सर्पिषिवाग्नि मुहीपयासि सजय । महान्त भारमुद्यम्य बधुत सार्व लौकिकम्

कैसे रौंका और जैसे २ सेनातैयारहुई और सब महात्माओंका युद्धकैसे हुआ और
 मेरापिता भीष्म दूसरों के हाथसे कैसे मारागया, भीष्मजी के मरनेपर दुर्योधन
 कर्ण और सौवत्तकेपुत्रशकुनी और छली दुःशासन ने क्या कहा, जिन देहों के
 विछौनों से संयुक्त मनुष्यहाथी । ७० । घोड़ोंसमेत वाण बरछी और बड़े खड्ग
 तोमर रूप पाशेवाले महा भयकारी सभा में प्रविष्टहुये और वह युद्ध में कुशल नरो
 चम उस भयकारी प्राणदेवत अर्थात् द्यूतरूपमेंखेले उनमेंसे कौनसा विजयी जीवताहै
 और जोभीष्मजीसे युद्धमें मारेगये इनमवको हेतंजय मुफ्तसे कहो, यद्वांपर भयकारी
 कर्म और युद्धमें शोभा पानेवाले महाव्रत पिता भीष्मजीको मृतक सुनकर मेरेहृदय
 में शान्ती नहीं होती, हे संजय तुम पुत्रकी हानि से उत्पन्न महा पीड़ा को मेरे
 हृदयमें ऐसे बढ़ातेहो जैसे घृतसे अग्निको दढाने हैं, और संघीलोग प्रतिद्व महाभार
 को उटाकर और भीष्मजी को मृतक जानकर शोचते हैं और मैं दुर्योधन के उत्पन्न

arrayed and how did the heroes fight ? How was my father Bhishm
 killed by them What did Duryodhan, Karṇ, Shakuni the son
 of Saubal and deceitful Dushasan say at the fall of Bhishm ? The
 dice board is made of the bodies of men, elephants and horses, (70)
 where arrows, javelins, swords and darts form dice, and entering
 that frightful mansion of destruction, were the wretched gamblers
 that staked their lives Who won, who were defeated, who cast
 their dice successfully and who besides Bhishm, were numbered with
 the dead ? Tell me all this Sanjaya, I can have no rest after hear-
 ing of the death of Bhishm of dreadful vows. The thought of the
 death of all my children gives me much pain and thou inflamest the
 fire of my grief as I by pouring over it clarified butter I think, my
 sons must be bewailing the loss of Bhishm the world renowned who
 had taken the burden on himself I shall listen to all the sorrows
 arising from Duryodhan's acts 74 Tell me, Sanjaya, everything

॥ ७५ ॥ दृष्ट्वा विनिहत भीष्मं मन्ये शेचन्ति पुत्रकाः । श्रोष्यामि तानि दुःखानि
दुर्योधन कृतान्यहम् ॥ ७६ ॥ तस्मान्म सर्वं माचक्ष्य यद्वृत्तं तत्र सत्रय । यद्वृत्तं तत्र
सद्यमे मन्दस्यास्तुद्धि सम्भवम् ॥ ७७ ॥ यपनीतं ह्यनीतं यत् तन्माचक्ष्य सत्रय ।
यत्कृतं तत्र सद्यमे भीष्मेण जय मिच्छता ॥ ७८ ॥ तेजो युक्त वृतास्त्रेण शस तत्राप्य
शेपत । यथातदभवद्व्युद्धं कुरुपाण्डवसेनयो ॥ ७९ ॥ द्रुपदो येन यस्मिंश्च काले यच्च
यथा भवत् ॥ ८० ॥

इति महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि धृतराष्ट्रप्रश्ने

चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

सञ्जय उवाच ॥ त्वद्युक्तोय मनुप्रश्नो महाराज यथाहंसि । ननुदुर्योधने दोष
मिमभासकमहंसि ॥ १ ॥ य आत्मनीदुश्चारितादशुभं प्राप्नुयात्तर । एनसत्तेननान्यं
स उप शङ्कितुमर्हति ॥ २ ॥ महाराज मनुष्येणु निन्द्य य सर्वमाचरत् । सवध्यः

नियेहुम् उन दु श्वोको मुत्तंगा इस कारण हेसंजय वहांका सत्र वृत्तान्त मुझमे कहे
और जो युद्ध में अल्पवृद्धियों की निर्बुद्धिता से उत्पन्न वृत्तान्त न्याय वा अन्याय
संबंधी कैनाईहो वह सब मुझ से कहे और युद्ध भूमिमें शस्त्रज्ञ और शास्त्रज्ञ विजया
भिलापी भीष्मजी ने जो अपने तेजसे कर्मकिया वह भी विस्तारपूर्वक संपूर्ण कहे
और जय जिम क्रमसे समय पाकर कौरव और पांडवों की मेना से परस्पर युद्धदुआ
उममें जैसा जो काम जिसका हुआ वह सत्र मुझमे कहे ८० ॥

अध्याय ॥ १५ ॥

संजय बोले कि हे महाराज यह सत्र प्रश्न जो तुम पृछतेहो सब ठीकहै परन्तु
आप इन दोषों को जो लगाते हैं सो योग्य नहीं है जो मनुष्य अपने बुरे कर्म से
दुःखादि को पावे वह उसपापकी शंका दूसरेपर करने के योग्य नहीं है । २ । हे
महाराज जो मनुष्यों के अध्ये में निन्दितके योग्य कर्मको करता है वह निन्दित कर्म

that has happened by the folly of my son. Tell me all, whether good or bad, whatever was done in battle by the energy of Bhishm who was desirous of victory. How the battle was fought between the the Kauravas and the Pandavas and the order and manner of each event as it happened." 80.

CHAPTER XV

"This question, great king!" Sud Sanjaya to Dhritrashtra, "is worthy of you. It is not however, proper to impute this fault to Duryodhan. He who incurs evil as the result of his own misconduct should not attribute it to others. He who does injury to others,

सर्धलोकस्य निन्दितानि समाचरन् ॥ ३ ॥ निःकारो निःकृतिप्रभौ पाण्डवस्त्वत्प्रती
क्षया । अनुभूत सहामात्यै क्षात्रश्वस्तुचरं वने ॥ ४ ॥ हयानाञ्च गजानाञ्च
राजानामिततेजसाम् । प्रत्यक्ष यन्मयादृष्ट दृष्ट योगबलेनच ॥ ५ ॥ शृणु तत् पृथिवी
पाल मा च शोके मनः कृपा । दिष्टमेतत्पुरातनं मिदमेव नराधिप ॥ ६ ॥ नमस्कृत्वा
पितुस्तेह पाशाशर्षाय धीमते । यस्यप्रसादाद्दिव्यं तत् प्राप्तं ज्ञानमनुत्तमम् ॥ ७ ॥
दृष्टिश्चातीन्द्रियाराजन् दुराच्छ्लेषणमेव च । परचित्तस्य विज्ञानमतीतानामतस्य
च ॥ ८ ॥ व्युत्थितोत्पत्तिं विज्ञानमाकाशे च गतिं शुभा । अखैरसगो युद्धेषु
वरदानान्महात्मम ॥ ९ ॥ शृणुमे विस्तरे णेदं विचित्रं परमाद्भुतम् । भारतानां
मभूद्युद्धं यथा तस्मिन् हर्षणम् ॥ १० ॥ तेष्यनीकेषु युत्सेषु व्यूढेषुच विधानतः ।

करनेवाला सबलोकोंसे मारने के योग्य है, छल संयुक्त वुयोंधन आदि ने निरादर
किया और पाण्डवोंने मंत्रियों के द्वारा तेरी ओर को ध्यान करके बहुत कालतक
वनेके बीच बैठकर उस अपमानको क्षमाकिया और मैंने प्रत्यक्षमें वोड़े हाथी और
बड़े तेजस्वी राजाओंकी जो दशादेखी और योगबल से भी जो निश्चयकिया हे
राजा उसको तुम मुझसे सुनो । ५ । और शोकसे चित्तको हटाओ यही होनहार
प्राचीन है मैं आपके बुद्धिमान पिता उन व्यासजीको नमस्कार करके कहता हूँ जिन
की कृपासे मैंने दिव्यदृष्टि और अनुपम प्रज्ञाको प्राप्तकिया, हे राजा ध्यानसे पृथक्
देखना वा दूरसे बातका सुनना अथवा दूसरे के मनका अच्छे प्रकारसे जानना
और भूत भविष्यका ज्ञानहोना, उडेहुए अस्त्रकी उत्पात्तिका जानना, आकाश में
शुभंगमन, लड़ाइयों में अस्त्रोंसे बचजाना इत्यादि सब बातें महात्माके वरदानसे प्राप्तहैं
इस अपूर्व विचित्र दृष्टान्त को व्याख्यान तुम मुझसे सुनो जैसे कि नह भरतवंशियोंका
रोमहर्षण करनेवाला युद्धहुआ । १० । हेमहाराज जब व्यूह रचनाकी रीतिसे उस

deserves to be slain by all men for his wickedness. The sinless
Pandavas, with their friends and counsellors, bore the injuries and
long exile for your sake and forgave them Hear, O King, what I
have seen of horses, elephants and powerful kings by the aid of
yog power 5 All this was predestined before Having looked
down to thy father, Vyasa the wise, through whose grace I have
gained supernatural powers of sight, beyond the range of eyes, hear-
ing from a great distance, knowledge of other people's minds, of past
and future, of the effects of weapons thrown, the delightful power
of ranging through skies and escape from weapons, listen to me in
detail as I recite romantic and wonderful battle that happened
between the descendants of Bharat, a battle that makes one's hairs
stand on end 10. When the armies were arranged in phalanxes,

दुर्योधनो महाराज दुःशासन मया ब्रवीत् ॥ ११ ॥ दुःशासन रथास्तूर्णं वृज्यन्तःभीष्म
रक्षिण । वनीकानि च सर्वाणि शीघ्रं त्वमनु बोधय ॥ १२ ॥ अथ समामभिप्रातो
पर्यृगामि धितित । पाण्डवानां सख्यवानां पुत्र्याञ्च समागम ॥ १३ ॥ नातः कार्य
तम मन्ये रणे भीष्मश्च रक्षणात् । हन्याद् गुप्तो ह्यसौ पार्थान् सोमकाञ्च ससृजयान्
॥ १४ ॥ अत्रथ च विदुःजात्मा नाहं हन्यां शिखण्डिनम् । श्रूयते स्त्री ह्यसौ पूर्वं तस्माद्
वर्ज्यो रणे मम ॥ १५ ॥ तस्माद् सीमो रक्षितव्यो विशेषेणति मे मतिः । शिखण्डिनो
पथ वक्ता सर्वे तिष्ठन्तु मामका ॥ १६ ॥ तथा प्राच्याः प्रतीच्याश्च दक्षिणात्योत्तराप
थाः । सर्वथास्तेषु कुशलाजं रक्षन्तु पितामहम् ॥ १७ ॥ अरद्वयमाणं हि वृको हन्यात्

भेनाही तैयारियाहुई तव दुर्योधनने दुःशासनमे कहा कि हे दुःशासन भीष्मजीके
रक्षाकरनेवाले रथशीघ्रही तैयारहो और तुम्हने बातका सबसेनाको शीघ्रबुनादो कि
सेनाके मनुष्यों से पाण्डव और कौरवोंका वह मित्राप वर्धमान हुआहै जोकि बहुत
वषों से विचारा गयाहै; मैं युद्धकेबीच इनभीष्मजीकी रक्षामे अधिक कोई बडाकाम
नहीं समझताहूँ क्योंकि जो भीष्मजीकी रक्षाहोगी तो यह अरुनेही पाण्डव सोमक
और संजय लोगों समेत सबको मारेगे । १४ और इन सत्य वक्ता भीष्मजीने कहाहै
कि मैं शिखण्डिभर वान्य और शस्त्रप्रहार नहीं करुंगा इसका यह हेतु सुनाजाताहै कि
यह पूर्व य स्त्रीया इनकारणयुद्धमें उसके ऊपर शस्त्र छोडना क्षत्रियोंको निषेधहै इस
गुण कारणासे भीष्मजी अधिक करके रक्षा करने के योग्य हैं । १५ । इस मेरेमत
से हमारी मव सेनाके मनुष्य शिखण्डी के मारने में सावधानी से उद्युक्त होजायें और
इभीष्मकार से पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण इन चारों दिशाओं के मव शस्त्रधारी-युद्ध
म कुशल राजा लोगोंको भी योग्यहै कि सब मिलकर भीष्मजीकी रक्षाकरें । १७ ।

Duryodhan said to Dushasan, " Order the preparation of chariots
for the protection of Bhishm Give at once notice to all the armies
that the encounter of the Kauravas and Pandavas, which has for
years been under consideration, is at last about to happen. I donot
think any duty to be greater than the protection of Bhishm; for,
alone he will destroy all the Pandavas, the Somaks and the Srinjayas,
if he is well protected Bhishm the truthful has already said that
he would not discharge his arrows and other weapons at Shukhandi
who is said to have been once a woman and that no kshatriya ought
to kill a woman. This is another cause why Bhishm should be
especially protected. 15 I let all the warriors of our army try their
best to kill Shukhandi and at the same time protect Bhishm from all
sides. 17 Let us not allow Shukhandi to kill Bhishm as a lion when

सिंहं महाबलम् । गा सिंहं जम्बुके नेत्र घातयाम् । शिखण्डिना ॥ १८ ॥ घाम चक्रं
युधामन्यु रुत्तमौजाश्च दक्षिणम् । गोसातौ फाल्गुन द्राप्तौ फाल्गुनोपि शिखण्डिन १९
स रक्ष्यमाणः पाथेन भीमेषुच विदञ्जित । यथा न हन्याद् गागेय दुःशासन तथा
कुरु ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि दुर्योधनदुःशासन-
संवादे पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

सञ्जय उवाच ॥ ततो रजन्यां व्युष्टायां स शब्दः समभवत् महान् । क्रोशतां
भूमिं पालानां युज्यतां युज्यतामिति ॥ १ ॥ शख दुन्दुभि घोषैश्च सिंहनादैश्च
भारत । ह्यहोपतनादैश्च रथनमिस्वैस्तथा ॥ २ ॥ गजानावृहताञ्चैव योधाना
चापि गर्जताम् । क्षथेलितास्फोटितोत्सृष्टस्तुमुल सर्वतोभघत् ॥ ३ ॥ उद तिष्ठन्

महाबली रत्ता रहित सिंह को जैसे शृगाल मारे इसी प्रकार शृगाल के समान शिखं
डी के हाथमे हम लोगोंको योग्य है कि सिंहरूप भीष्मजीको नही मरने दें, रथके
घामभागका रत्तक युधामन्यु और दक्षिण भागका उचमौजा यह दोनों अर्जुनके
रत्तकहें और अर्जुन शिखंडीका रत्तक हुआ है वह अर्जुनसे रक्षित शिखंडी गंगा
के पुत्र भीष्मजीको जिस रीति से मारनेको समर्थ नहो हे दुःशासन वही उपाय
अवश्य करना चाहिये २० ॥

अथाय ॥ १६ ॥

‘संजय बोले कि तदनन्तर रात्रि व्यतीत होनेपर जोडो जोडो ऐसे राजा लोगों
के कहे हुए महान् शब्द होतेहुए और हे भस्तरुभ शंस और दुन्दुभियों के बडे शब्द
और वीर पुरुषों के सिंहनाद और घोडा के हीनने के शब्द और रथके पहियों के
महान् शब्दों से और हाथियों की चिवाडामे वा मल्लों के व्रीडापूर्वक हायकं और
मुखके अनेक प्रकारके शब्दों के कारण चारों ओरसे महातुमुल भयकारी शब्द हुए

unprotected is killed by jacks' Yudhamanyu protects the left
wheel and Uttamauja the right wheel of Arjun who protects
Shikhandi. Let us so manage Dushasan, that Shikhandi, protected
as he is by Arjun may not be able to cause the death of
Bhisma." 20

CHAPTER XVI

"At the close of the night," said Sanjaya, "there was a great
uproar of warriors, calling on their men to prepare chariots, mingled
with the roars of the warriors, the neighing of horses, the rumbling
of chariot wheels, the noise of elephants and the clapping of wrestlers."

महाराज सर्व युक्तमशेषत । सूर्योदये महत्सैन्यं कुरुपाण्डवसेनयो ॥ ४ ॥
 राजेन्द्र तव पुत्राणां पाण्डवानां तथैव च । दुष्प्रभृश्याणि चास्त्राणि सशस्त्रवचानि
 च ॥ ५ ॥ तत प्रकाशे सैन्यात् समदृश्यन्त भारत । त्वदीयानां परेषाञ्च
 शस्त्रधन्ति महान्ति च ॥ ६ ॥ तत्र नाग रथाश्चैव कारवृन्दपरिपृताः । विप्राज
 माना दृश्यन्ते मेघा इव सविद्युत् ॥ ७ ॥ रथानीकान्यदृश्यन्त नगराणीव भूरिशः ।
 अताव शुशुभे तत्र पिताते पूर्णचन्द्रवत् ॥ ८ ॥ घनुभिर्भ्रंशिभिः खड्गैर्गदाभिः
 शाक्तोमरैः । योधा प्रहरणैः शुभ्रैस्तेष्वनीकवचास्थता ॥ ९ ॥ गजा पदाता
 रथिनस्तुरगाश्च विशाम्पते । व्यतिष्ठन् घाशुराकारा शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १० ॥
 ध्वजा षड्विधाकारा न्यदृश्यन्त समुच्छ्रिताः । स्वेषाञ्चैव परेषाञ्च यति मन्त सहस्र

। ३ । हे महाराज सूर्य के उदयहोने पर सब ओरसे तैयार कौरव और पांडवोंकी
 महाभारी सेना आकर खड़ी हुई और तुम्हारे पुत्रोंके और पांडवों के दुःप्रथर्षशस्त्र
 अस्त्र और कवचभी षडी तीव्रता से तैयार हुए इसके पीछे जब षड् प्रकाश
 हुआ उस समयतेरे पुत्रोंकी और पांडवों की सेना के वह मनुष्य दिखाई दिये
 जो बड़े महात्मा आर शस्त्रों को धारण कियेहुये थे । ६ । इसके विशेष वहांपर
 जंजूनद नाम सुवर्ण से अलंकृत हाथी और रथ भी ऐसे दृष्टपडे जैसे कि विजली
 समेत बादल दिखाई देते हैं, रथपर सवार बहुतसी सेना नगरोंके समान दिखाईदीं
 उनसब प्रकारकी सेनाओं में आपके पिता भीष्मजी पूर्ण चन्द्रमासे ॥काशमान दिखाई
 देतेथे । ८। और संपूर्ण सेनाभरमें युद्धकर्ता लोग घनुप यष्टी खड्ग गदा वरछी और
 तोमर आदि श्वेतमालों सहित नियतहुए, और हाथी पैदल रथ घोडे इत्यादि हजारों
 पशु चारोंओरसे जालके समान घेरेहुए दृष्टि पडते थे । १० । और अपने दूसरे
 लोगोंकी हजारों ध्वजा नानाप्रकारके चिहनोंकी दिखाईदीं, वह सब ध्वजा सुनहरी

३ At sunrise the armies of the Kauravas and the Pandavas stood
 in battle array The Kauravas and the Pandavas were armed with
 irresistible weapons, missiles and armour After this, when it was
 broad day light, the faces of the warriors of both the armies were
 clearly discernible ६ The elephants and chariots decked with gold
 orippings looked like clouds and lightning The army of charoteers
 looked like a city and in the midst of all those armies was seen
 Bhishma, your father, glorious like the full moon ८ The warriors
 of the army armed with bows, swords, scimitars, maces, javelins
 and other well polished weapons, took up their positions in ranks.
 Elephants, foot soldiers, chariots, and horses by thousands surrounded
 on all sides, forming a network १० There were to be seen thousands
 of ensigns belonging to both parties The Golden banners shining

श ॥ ११ ॥ काचना मणि चत्रागा ज्वलन्त इव पावका । अर्चिमन्तो व्यराचन्त
 भ्वजागोहा. सहस्रश ॥ १२ ॥ महेन्द्रकेतव शुभ्रा महेन्द्र सद्नेधिष । सन्नद्धास्ते
 प्रवीराश्च दृढशुर्ध्वं वान्तिण ॥ १३ ॥ उद्यतैरायुधैश्चित्रैस्तलवद्धा कलापिन । क्रुप
 भाक्षा मनुष्ये द्राधममुखगता वभुः ॥ १४ ॥ शकुनि सौवल शल्य आव त्योष जयद्रथ
 विन्दानुविदौ कैकेया, काम्बोजश्च सुदाक्षिण, । १५ ॥ श्रुतायुध कालिगो जयत्सेनेय
 पार्थिव । वृहद्रथ कौशल्य कृन्वर्माच सात्वत ॥ १६ ॥ दशैते पुरुष व्याघ्रा शूरा
 परिघ चाहव. । अक्षौहिणीनां पतयो यज्वानो भूरी दक्षिणा, ॥ १७ ॥ एते चान्येच
 वहवो दुर्योधन वशानुगा । राजानो राजपुत्राश्चनीति मतो महारथा, ॥ १८ ॥ सन्नद्ध,
 समदृश्यत स्वेधनकेधवस्थिता । वद्धकृष्णाजिना सर्वे बालनो युद्ध शालिन, १९ ॥
 हृष्टा दुर्योधनस्यार्थे ब्रह्मलोकायदीक्षता । समर्था दशवाहन्य, परिगृह्यवर्षास्थिता
 ॥ २० ॥ एकादशी घर्त्ताराष्ट्री कौरवाणा महाधमू । अग्रत सर्वे सैन्याना यत्र शातन

अग्निके समान देदीप्यमानं मारिण्योसे जटित ऐसी दृष्ट पडतीथी जैसे कि महाइन्द्र के
 भवनों में उसी महेन्द्रकी श्वेत भ्वजा होतीहैं उन युद्धाभिलापी शस्त्रोंसे अलकृत महा
 बलवानोंने परस्पर में एक एकको देखा । १३ । आयुधोंको उठाये हुये शस्त्रोंसे
 शोभित नलको बांधने वाले धनुषधारी शुभ्र नेत्रोंसे प्रकाशमान राजा लोग सेनाके
 मुखपर आकर सुशोभितहुए, सौवलका पुत्र शकुनी, शल्य, अग्रन्तीका राजा जयद्रथ
 विन्द, अनुविन्द, कैकेय देशी राजा काम्बोज सुदाक्षिण । १५ । श्रुतायुध, कालि-
 न्द्र, राजा जयत्सेन यह दशों महा शूरी पुरुषोत्तम परिघसमान भुजाधारी वृहदक्षि
 णा के यज्ञ करनेवाले अक्षौहिणिया के स्वामी, यहमव और अन्य बहुतसे नीतिज्ञ
 महारथी राजा और राजकुमार जो कि दुर्योधनकी स्वाधीनतामें वर्त्तमानथे सब
 अपनी २ सेनामें सावधानी से नियत भूषण शस्त्रादिकों से अलकृत काले मृगचर्म
 धारी महाबली युद्ध म कुशल प्रसन्न और दुर्योधनके निमित्त ब्रह्मलोक के अर्थ

like fire with jewels, looked like the white banners on the palaces
 of India. The great warriors, armed with weapons and desirous of
 battle looked at one another 13 Many glorious kings, armed with
 arms and armour, great archers with bulging eyes, stood at the head
 of their armies. Shakuni the son of Suval, Shalya, Jayadrath of
 Avanti Vind, Anuvind, Kings of Karkya Kamboj and Sudakshin,
 (15) Shrutayudh, Kalind and King Jayatsen all these ten warriors,
 best of men, having arms like clubs, performers of sacrifices with
 large donations, each a leader of an *akshauhini* of army all these and
 many other Politicians, Kings and princes under the banner of
 Duryodhan, stood in the midst of their armies, keeping a careful
 watch, decked with ornaments and weapons, wearing hides of black
 deer, of immense strength, skilful in battle, cheerful, ready to lay
 down their lives for the sake of Duryodhan. They kept their

बोऽग्रणीः ॥ २१ ॥ श्वेतोष्णीयं श्वेतहयं श्वेत चर्मणं मच्युतम् । अपश्वाम महाराज
भीष्म चन्द्र मिथो दितम् ॥ २२ ॥ हेमतालध्वजं भीष्मं राजते भ्यन्दने स्थितम् । श्वेता
भइष तीक्ष्णांशुं दृशः कुरुपाण्डवाः ॥ २३ ॥ सृष्टयाश्च महोवासा धृष्टद्युम्नपुरोगमा ।
जृम्भमाणं हाभिहं दृष्ट्वा अद्रमृगा यथा ॥ २४ ॥ धृष्टद्युम्नमुखाः सर्पे समु
द्विविजिरंभुः । एकादशताः श्रौजुष्टावाहन्यस्तत्र पार्थिव ॥ २५ ॥ पाण्डवानां तथा
सप्त महापुरुषपालताः । उन्मत्तमकरावर्त्तौ महाग्राहसमाकूलौ ॥ २६ ॥ युगन्ते
समघेता द्वौ दृश्येते सागराधिप । नैव नस्तादृशो राजन् दृष्टपूर्वो न च श्रुत । अर्नाकानां
समत नां कौरवाणां तथाधिप ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने

षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

दीक्षित और समर्थ दश संख्याकी सेनाको लेकर स्थिर हुए । २० । और ग्यारहवीं
कौरवी महाभारी दुर्योधनी नाम विख्यात सेना जिसके स्वामी भीष्मजी थे वह सेना
सब सेनाओं के आगे वर्चमानथी हे राजा ऐसी महा तेजस्वी असंख्य सेनामें हमने
श्वेत पगड़ी श्वेतछत्र और कवचको धारण किये दुराधर्ष चन्द्रमा के समान उदय
रूप कौरवेन्द्र भीष्मजी को देखा वड़े धनुर्धारी वारण विद्यामें कुशल छोटे मृगों के
समान वह संजय देश वासी जिनका अधिपति धृष्टद्युम्न था जंभाई लेतेहुए इम
महा सिंहरूपी भीष्मको देखकर महाभयभीत हुए । २४ । हेराजा यह तेरी ग्यारह
अर्द्धाङ्गिणी सेना शोभायमानहुई और इसी प्रकार पाण्डवों की सात अर्द्धाङ्गिणी
महा पुष्टपोंसे रक्षित होकर तयार हुई और दोनों सेना ऐसी दिखलाई देतीथी जैसे
कि युगके अन्त वाली प्रलयमें दोनों ओरसे तरंग उठते हुए महा भयानक मट्टेन्यत्त
मकरग्राहमादि जीवों से भरेहुए दो समुद्र व्याकुल होते हैं हे राजा हमने कारवों
की इकट्ठी हुई सेनाका ऐसा युद्ध प्रथम कभी न देखा था न सुना था २७ ॥

station at the head of the ten divisions of the army 20 The eleventh
division, known as the great army of Durydhan, led by Bhishm,
was in advance of all other divisions. In that countless army of
great glory, I saw Bhishm the leader of the Kauravas, intrepid,
shining like the moon with his white turban, white umbrella and
armour on The residents of Srinjaya, under the leadership of
Dhrishtadyumn, were terrified like a flock of small animals at the
sight of Bhishm the great and skilful archer who seemed to them
to be like a yawning lion 24 Thy eleven *akshauhinis* looked grand
and so were the seven *akshauhinis* of the Pandavas, also protected
by great warriors. Both the armies looked like the waves of two
angry seas with their sharks and crocodiles, coming to meet each
other at the end of the Yuga I had never seen or heard before a
battle of two such great armies." 27.

सञ्जय उवाच ॥ यथा स भगवान् व्यासः कृष्णद्वैपायनोव्रतीत् । तथैव सहिताः
सर्वे समाजगमुर्महीक्षितः ॥ १ ॥ मघाविषयगः सोमस्तादृनं प्रत्यपद्यन । दांप्यमा-
नोश्चे सम्पेनर्दिव सप्त महाग्रहा ॥ २ ॥ द्विधाभूत इवादित्य उदये प्रत्यदृश्यत ।
ज्वलन्त्या शिष्या भूयो भानुनातुदितो रविः ॥ ३ ॥ चवाशिरे च दक्षिणां दिश
गोमायुवायसाः । लिप्समाता शरीराणि मांसशोणतभोजनाः ॥ ४ ॥ अहन्यहनिपाथीनां
वृद्धः कुरुपितामहः । भरद्वाजाश्मज्जैव प्रातरुषाय संयतौ ॥ ५ ॥ जयोस्तु पाण्डुपु-
त्राणांमत्यूचतुरारन्दमौ । युयुधाते तवार्पाय यथा स समयः कृतः ॥ ६ ॥ सर्वधर्म
विशेषज्ञः पिता देवव्रतस्तव । समाधीय महीपालानिर्दं वचनमव्रतीत् ॥ ७ ॥ इदं
यः क्षत्रियाद्धारं स्वर्गायापावृत्तं महत् । गच्छध्वं तेन शकस्य ब्रह्मणः सहलोकताम् ॥ ८ ॥

अध्याय ॥ १७ ॥

संजय बोले कि जिसप्रकार उन भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यासजीने कहाहै उसी
प्रकार सब राजालोग युद्धभूमिमें आपहुंचे । १। उसदिन मघानक्षत्रमें चन्द्रमा प्राप्तहुआ
और आकाश के मध्यमें सातमहाग्रह राहुकेतु आदि महातेजधारी प्राप्तहुए औरसूर्य
देवता उदयहोने के समय दोरूपसे दिखाई दिये फिर वह प्रकाशवान् सूर्य अग्नि
की ज्वाला के समान उदय हुआ और मांस रुधिर भोजन करनेवाले लोथोंके चा-
हनेवाले काक और शृगालों के चारों दिशाओं में शब्दहोनेलगे । ४। शत्रुओं के विज
यकर्षा सावधान चित्त सेनाओं के स्वामी कौरवों के पितामह दृढ़ भीष्मजी और
भारद्वाज के पुत्र द्रोणाचार्य जीने वारंवार यहकहा कि कुन्तीके पुत्र पांडव लोगोंकी
विजय हो और तेरे निमित्त युद्धकरेगे इसप्रकारसे वचनकहकर नियम किया, तब
सब धर्मोंके जाननेवाले देवव्रत नाम आपके पिता सवराजाओंको बुलाकर यह वचन
बोले कि हे क्षत्री लोगो तुम्हारे स्वर्ग के निमित्त यह युद्धरूपी बहुत बड़ा द्वारखुलाहै
उस द्वारके द्वारा तुम सब इन्द्र और ब्रह्माजी की सन्निकटताको पावो । ८ । यह

CHAPTER XVII

"The kings of the land," said Sanjaya, "mustered for the encounter, just as Vyas had said. The day on which the battle commenced, Soma had approached the region of Pitrís. The seven large planets as they appeared in the sky, looked like the blazing fire. The sun looked as if divided into two, and shone like fire. Carnivorous jackals and crows, expecting corpses, began to utter fierce cries from all directions which seemed on fire. Every day Bhishm the grandfather and Kripacharya used to say early in the morning, "Victory to the Pandavas," although they fought according to their promise. Thy father Devabrat, firm on duty, summoned all the kings and said to them, "Ye Kshatryas, the door of heaven is open for you. Go through it to the regions of Indra and Brahma. The rishis of old have showed you this eternal path. Honour yourself by engaging

एवमः शाश्वतं पन्थाः पूर्वं पूर्वतैरे कृतः । सन्भाषयध्वमा मानसव्यग्रमनसो युधि
 ॥ ९ ॥ नाभागोद्य ययातिश्च नाभ्याता नट्यो नृगः । संसिद्धा परमं स्थानं मता
 कर्मभिरादृशैः ॥ १० ॥ अर्भगं क्षत्रियस्यैव यथाधमरणं गृहे । यद्यो निघनंयाति
 सास्य धर्मः सनातन ॥ ११ ॥ एव मुक्ता मर्हापाला भीष्मेण भरतर्षभ । निर्ययु-
 स्थान्यनीकानि शोभयन्तो योचमैः ॥ १२ ॥ स तु वैकृत्तनः कर्णः सामात्य सह
 वन्धुभिः । न्यामत् समरेशब्दं भीष्मेण भरतर्षभ ॥ १३ ॥ अपंतकर्णाः पुत्रास्ते
 राजानश्चैव तावकाः । निर्ययु सिंहनादेन नादयन्तो दिशो दश ॥ १४ ॥ श्वतै-
 स्छत्रैः पताकाभर्ध्वजयारणवाजिभिः । तान्यनीकानि शोभन्ते गर्जरथपदातिभिः
 ॥ १५ ॥ भेरीपणवःशब्दश्च दुन्दुभीनांच नि स्थनैः । रथनेमिनिनादैश्च पभूवा
 पुलितामही ॥ १६ ॥ कावनाङ्गदकेयूरैः कार्मुकैश्च महारथाः । आजगानाव्यराज-त

रानानन मार्ग प्राचीन दृष्टीसे तुम सन्तोषों के निमित्त नियत किया है तुम युद्धमें प्रह-
 ताचित होकर अपनी बड़ीसावधानी से लड़ो, राजा नाभाग, ययाति, मान्धाता आदि
 बहुतसे महात्मा ऐंभेही युद्धरूप कर्मों के द्वारा सिद्धरूपहोकर उत्तम २ स्थानों को
 गये । १० । वरुण रोगादि से जो क्षत्रियों का मरना है वह अयर्म है और जो
 युद्ध में शत्रुके द्वारा मरता है वही क्षत्री का सनातन धर्म है है भरतर्षभ इसीप्रकार
 से भीष्मजी के मनमन्ताये हुए राजालोग अपनी २ सेना उत्तम रथोंसे शोभित और
 दशोंसे अलंकृत करके मस्थित हुए और वह सूर्यका पुत्र कर्ण अपने मन्त्री और
 भाईशत्रुओं समेत युद्धमें भीष्मजीके कारण शस्त्रोंकात्यागकर गया और आप के पुत्र
 और सन राजालोग कर्ण से पृथक्होकर सिंहनाद करतेहुए दशों दिशाओंको
 चले वह सब सेना श्वेत छत्र और ध्वजा पताका हाथी घोड़े रथ और पदातियोंसे
 शोभायमान थी । १५ । उस समय भेरी पणव दुन्दुभियों के शब्द और रथ के
 चक्रों को ध्वनि से, पृथ्वी महाव्याकुल थी और महारथीलोग सुवर्ण के वाजूवंद

in war with attentive minds Nabhag, Yayati, Mandhata, Nshush
 and Nrig obtained success and high regions of bliss by such deeds of
 prowess, 10. To die of a disease at home is derogatory to a kshatrya,
 to die under arms in battle is his eternal duty" Thus addressed
 by Bhishm, the kings occupied their excellent cars and proceeded at
 the head of their respective divisions Only Karan the son of Surya
 went way from the field of battle on account of Bhishm, your sons
 and other kings sepatated themselves from Karan and went on roar-
 ing like lions All that army looked beautiful with white umbrellas,
 banners, elephants, h rses chariots and foot soldiers 15 The earth
 was agitated with the sounds of drums labors, cymbals and the

साग्नय पर्वता इव ॥ १७ ॥ तालेन महता भीष्म. पश्चतारेण केतुना । चिमला
द्वित्यसङ्काशास्तरथौ कुरुचमूपतिः ॥ १८ ॥ ये त्वदीयामहेष्वासा राजानो भरतर्ष
भ । अवर्तन्त यथादेश राजन् शान्तनवस्यते ॥ १९ ॥ स तु गोपासन शैव्य
सहित सर्वराजामिः । ययौ मातङ्गराजेन राजार्हेण पताकिना ॥ २० ॥ पशवर्ण
स्वनीकानां सर्वेषामग्रतःस्थितः । अश्वत्थामा ययां यत्तः सिंहलाङ्गुलकेतुना ॥ २१ ॥
श्रुतायुधचित्रसेन पुरामित्रो विविंशतिः । शल्यो भूरिश्रवाश्चैव विकर्णश्च महारथः
॥ २२ ॥ एते सप्त महेष्वासा द्रोणपुत्रपुरोगमा । स्यन्दनैर्वरचर्माणो भीष्मस्थासन्
पुरोगमाः ॥ २३ ॥ तेषामपि महोत्सेधा शोभयन्तो रथोत्तमाः । आजमानाध्वरो
चन्त जाम्बूनदमयाध्वजा ॥ २४ ॥ जाम्बूनदमया वेदी कामण्डलुविभूषिता । केतु

केयूर और धनुषों से प्रकाशित होकर ऐसे शोभायमान थे मानों ज्वालामुखी पर्वत
ही हैं । १७ । और कौरवों की सेना के रत्नक पचताराधारी ताल वृत्तके समान
ऊंचे बड़ी ध्वजा समेत निर्भल मूर्यके समान नियत हुए हे राजा जो बड़े धनुर्धारी
शस्त्रके वेत्ता राजालोग तेरी सहायता में आये हैं वह सबभी अपने २ योग्य स्थानों
पर भीष्मजी के समीप वर्तमानहुए तदनन्तर गोवाशन शैव्य राजाओंके योग्य
गजेन्द्र आदि चिह्नधारी ध्वजाओं से शोभित सत्र राजाओं समेत चला और राजा
कमलवर्ण सत्र सेनाके आगे चला । २० । और महा सावधान शस्त्रधारी अश्व-
त्वामा सिंह लांगूलवाली ध्वजा से संयुक्त होकर गया और श्रुतायुध, चित्रसेन, पुरु-
मित्र, विविंशति, शल्य, भूरिश्रवा, और महारथी विकर्ण यह सातों महारथी वाण
प्रहारी उत्तम कवच धारी हैं जिनमें मुख्य अश्वत्वामा रथमें सवार होकर भीष्मजी

rumbling of chariot wheels The mighty warriors decked with brace-
lets and armlets of gold and with their bows, shone like hills of fire
With his standered, tall as a palm tree, decked with five stars,
Bhishm the general of the Kaurav army, was glorious like the
sun. Those mighty archers of kingly rank that were on thy side,
took up their positions as Chishm ordered them Shuvya the king
of Govasans, accompanied by other king, went out on his royal
elephants under a banner. 20 Ashwathama of the complexion
of lotus went out, ready for every emergency, putting himself at the
head of all the divisions, with his standered bearing the device of the
lion's tail Shrutayudh, Chitrasen, Purumitra, Vivinshati, Shalya,
Bhurihrava and mighty Vikarn, these seven great archers, seated
on their chariots and protected by armour, followed Drona's son, in
advance of Bhishm The tall standards of these warriors, made of

राचार्यमुख्यस्य द्रोणस्य धनुषा सह ॥ २५ ॥ अनेकशतसाहस्रमनीकमनुकर्मत ।
 महान् दुर्योधनस्यास्तीव गो मणिमयो ध्वजः ॥ २६ ॥ तस्य पौरवकालिङ्ग कांचो-
 जा मत्स्यक्षिणाः । क्षेमधन्वाश्च शल्यश्च तस्थुः प्रमुखतोरणा ॥ २७ ॥ स्यन्दनेन
 महाहोणं केतुना वृषभेणच । प्रकवक्षेव सेनाप्र नागधस्य कृपो ययौ । २८ ॥ तद्गृहपति
 ना गुप्त कृपेणच मनश्चिना । शारदांबुधरप्रख्यं प्राच्यवानां सुमहद्वलम् ॥ २९ ॥ अनीक
 प्रमुखे तिष्ठन् घराहणेन महायशाः । शुशुभे केतुमुख्येन राजतेन जयद्रथ ॥ ३० ॥
 शत रथसहस्राणां तस्यासन् घरावृत्तिन । षष्टौ नागसहस्राणि सादिनामयुता-

के आगे चला उन सबकी भी जाम्बूनद मुवर्ण की प्रकाशित ध्वजाएं शोभायमान
 हुईं और आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य की ध्वजा जांबूनद मुवर्णकी बेड़ी और कम्-
 रडलुके शोभित धनुष समेत प्रकाशित हुई । २५ । और बहुतसी लाखों अनीकों
 समेत दुर्योधनकी बड़ी भारी ध्वजानाग चिह्न युक्त मणियों से जटित भी शोभित
 हुईं और उसके आगे पौरव कालिङ्ग, कांचोज, मुदक्षिण, क्षेमधन्वा, शल्य, यह सब
 महारथी नियतहुए और मगध के राजा बड़े मूल्य के रथ और हृषभ चिह्न वाली
 ध्वजा समेत सेना मुखको खिंचते हुए से चले और पूर्वी राजाओं की बड़ी भारी
 सेना राजा अंग और महा उदार कृपाचार्य से रचित शरद ऋतु के बादलों की
 समान शोभायमानहुई । २६ । और बड़ा यशस्वी वाराहके चिह्न वाली श्रेष्ठ ध्वजा का
 रखनेवाला महा प्रकाशवान सेना के मुखपर शोभित जिस के आज्ञावर्ती एक लाख
 रथीये वह राजा जयद्रथ आठ हजार हाथी और छः अयुत रथों से युक्त होकर सेना

gold, beautifully set up for adorning their excellent cars, looked high-
 ly resplendent. The standard of Drona, the foremost of preceptors
 had the device of golden star with a water pot and the figure of a
 bow. 25 The standard of Duryodhan guiding many hundreds and
 thousands of divisions bore the device of an elephant decked with
 gems. Paurava the ruler of Kalimgas, Sudakshin the ruler of Kamvo-
 nas, Kshemadhanwa and Salya took their position in Duryodhan's
 van. On a costly car with his banner bearing the device of a bull
 and guiding the very van, the ruler of Magadh marched against
 the foe. The large force of the East looking like the fleecy clouds
 of autumn was protected by the chief of the Angas and Kripa of
 great energy. Putting himself in the van of his divisions with his
 beautiful standard of silver bearing the device of the boar, the
 famous Jayadrath looked very glorious. 30 A hundred thousand
 chariots, eight thousand elephants and sixty thousand horses were

निपट् ॥ ३१ ॥ तत्र सिन्धुपतिना राज्ञा पालित इति जितानुगतम् । सनतरपना
गाध्वमशोभत महदवलम् ॥ ३२ ॥ पय्या रथसहस्रस्तु न गान मरुतेन च । पत
सर्वकालज्ञानां ययौ वेतुमतासह ॥ ३३ ॥ तस्य पर्वततलाशा व्यरोचन् महागजा ।
यन्त्रतोमरतूर्णारि पतानगभि सुशोभिता ॥ ३४ ॥ शुशुभ केतुमुत्प्रेय पावकन क-
लिङ्गक । श्वेतच्छत्रण निष्केण चापाव्यजरोत्थ ॥ ३५ ॥ केतमानपि म तङ्गावचि
त्रपरमाशुम् । आस्थित समरे राजन् मेघस्थ इव भानुमन् । ३६ ॥ तजसा
दीप्यमानस्तु चारणोत्तममास्थत । भगदत्तो ययौ राजा यथा यज्ञधरस्तथा ॥ ३७ ॥
गजस्कन्धगतावास्ता भगदत्तेन सम्मिता । विरानुविदासव त्यां केतुमन्तमन्त्रतो
॥ ३८ ॥ सरथानीकवान् व्यूहा हस्त्यद्वौ नृपशर्पिवान् । चाजिपक्ष पतत्युग्र प्रह

को शोभा देता था । ३१ और सब कर्लिंग देशों का ध्वजाधारी राजा साठे हजार
रथ और दशहजार हाथियों समेत चला । ३३ । उस के वटेर रथ पहाड के समान
शोभायमान हुए और वह अपने यन्त्र तोमर तूखीर पताका आदिसेभी महाशोभितथा
और राजा कर्लिंगक अग्निका चिह्न रखनेवाली उत्तम राजा और श्वेत छत्र माला
व्यजन चक्र समेत शोभित था । ३५ । और हे राजेन्द्र युद्ध में राजा केतुमानभी
विधेय और महा उत्तम अकुशानन हाथी पर सवार ऐसा विदित हुआ जमे कि वा-
दल भर चढ़ाहुआ सूर्य दृष्ट पड़ताहै और तेजसे प्रकाशमान उत्तम हाथीपर चढ़ाहुआ
राजा भगदत्त भी ऐसा जाता था जैसे ऐरावत पर इन्द्र जाताहो । ३७ । विन्द,
अनुविन्द अश्वती के राजा लोग भी हाथियों पर सवार होकर उस राजाधारी भग-
दत्त के समीपवर्ती और आज्ञाकारी हुए वह रथाकी अनीक रखने वाला भयानक
वृह जिसके अंग रूप हाथी राजा रूप शिर और घोड़े स्त्री पत्त ह सबओर को

under his command. The huge division of the van, headed by the
king of Sindhu containing numberless cars elephants and cavalry
looked glorious. The ruler of Kalungis with ketumat had in his retinue
sixty thousand chariots and ten thousand elephants looking like hills
and equipped with machines lances quivers and standard, were glori-
ous to behold. The ruler of the Kalunges with his tall standard shining
like fire white umbrella golden sun shade and chariots shone brillian-
ly. Ketumat too, riding an elephant with a good and beautiful hook
was stationed in battle like the sun in the midst of clouds. King Bhag-
datta of great energy rode his elephant and looked like Indra, Yind
and Anuvind the two princes of Avanti equal in rank to Bhagdatta
followed ketumat on their elephants. 18 Arranged by Drona
Bhishma, Ashwathama, Vahlik and arjuna, the phalanx had elephants

सन् सर्वतोमुखः ॥ ३९ ॥ द्रोणेन विहितो राजन् राजा शान्तनवेन च । तथैवाचार्यं
पुत्रेण वाह्लीकेन कृपेण च ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने

सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

सञ्जय उवाच । ततोमुहूर्त्तारुमल शब्दो हृदयकम्पनः । अश्रुपत महाराजयो-
धानां प्रयुत्सताम् ॥ १ ॥ शङ्खदुन्दुभिर्घोषञ्च चरणानां च वृंहितः । नेमिघोषैर-
यानां च दीर्यतीवचसुन्धरा ॥ २ ॥ हयानां ह्येमानानां योधानाञ्चैव गर्जताम् । क्षणे
नैव नभोद्गमः शब्देनापूगित्तदा ॥ ३ ॥ गुत्राणांतव दुर्धर्य पाण्डवानां तथैव च ।
समकम्पन्त सैन्यानि परस्परसमागमे ॥ ४ ॥ तत्र नागाश्चाश्वेषु जाम्बूनदविभूषि-
ताः । आजमाना व्यहृद्यन्त मेघा इव साद्यधुतः ॥ ५ ॥ ध्वजा चहृदिधाकारास्ता

मुल किये हुए हँमताहुआ उग्ररूप होकर गिरता है उसको द्रोणाचार्य, राजा भीष्म
अश्रुपत्यामा, वाह्लीक और कृपाचार्य इन पांचोंने रचा है ॥ ४० ॥

अध्याय ॥ १८ ॥

संजय बोले हे महाराज इसके पीछे युद्धाभिलाषी महा शूरीरों के कठिन भयं-
कर शब्द हृदय के कंपाने वाले सुने गये, शंख दुन्दुभियों के शब्द और हाथियों की
चिंघाड वा रथों पहियों के महा शब्दों से पृथ्वी कंपायमान सी होगई घोड़ोंके हिन्-
हिनाट और गर्जना करते हुए महा मल्ल शर शीरोंके शब्दों से पृथ्वी और आकाश
एक क्षणमात्र में शब्दों से भरगये और वह महा दुर्धर्य आपके पुत्र और पांडवों की
सेना के मनुष्य परस्पर में सम्मुख होकर कंपायमान हुए वहाँ जाम्बूनद सुवर्ण से अलं-
कृत हाथी और रथ ऐसे दिखाई दिये जैसे विजली समेत बादल दिखाई देते हैं । ५ ।

for its body, the Kings for its head and the cavalry for its wings
With face towards all sides, the phalanx seemed to smile and ready
to spring 40.

CHAPTER XVIII

Sanjaya said, " Soon after, a loud uproar, shaking the heart,
made by the warriors who were ready to fight, was heard The
earth seemed to rend with the sounds of conchshells, drums, the
grunts of elephants and the rumbling of chariot wheels. And soon
the earth and sky were filled with the neighing of horses and the
shouts of warriors. The troops of thy sons and those of the Pandavas
trembled at the time of encounter. The elephants and chariots,
decked in gold, looked glorious like clouds decked with lightning. 5.

वक्रानां नगाधिप । काचनाङ्गादिनारेजुर्वलिता इव पावकाः ॥ ६ ॥ स्वेषाञ्चैव पयोञ्च
समदृश्यन्त भारत । महेंद्रकेतव शुभ्रा महेंद्रसदनेधिव ॥७॥ काञ्चनैः कवचैर्वीज्वलनार्क
समप्रभै । सश्रद्धाः समदृश्यन्त ज्वलनार्कसमप्रभाः ॥ ८ ॥ कुरुयोधवरा राजन्
विचित्रायुधकामुक्ताः । उद्यतैरायुधैश्चैस्तलवद्धाः पनाकिनः ॥ ९ ॥ ऋषभाक्षा
महेष्वासाथमूखगनावभु । पृष्ठगोपास्तु भोमस्य पुत्रास्तव नराधिप । दुःशासनो
दुर्विपद्हे दुर्मुखो दुःसहस्तथा ॥ १० ॥ विविंशतिचित्रसेनो विकर्णश्च महागथ ।
सत्यव्रतः पुत्रमित्रो जयो भूरिश्रवाः शलः ॥ ११ ॥ तथा विंशतिसाहस्रास्तथैषाम-
नुयायिन । अर्भीबाहा इशसेनाः शबयोश्चसातयः ॥ १२ ॥ शाब्वा मत्स्यास्तथां

और सुवर्ण के बाजूबंद पहरे हुए आपके पुत्रों की ध्वजाओं में नाना प्रकारके रूप-
वाली अग्नि की ज्वाला अग्नि के समान प्रकाशमान हुई इसी प्रकार मव अपने और
दूसरे लोगों की भी ध्वजा ऐसी दिखाई देती थी जैसी कि महा इन्द्र के भवनों में उस
की तेजस्वी ध्वजा वर्तमान हो, अग्नि और सूर्य के समान प्रकाशमान और सुवर्ण
के कवचों से अलंकृत वीर लोग भी सूर्य और अग्नि के ही समान प्रकाशित दृष्टपडे
हेराजा कौरवों की सेना में श्रेष्ठ विचित्र आयुध वा धनुष धारी आयुधों समेत उठाये
हुए छत्र ताल और पिनाक नाम धनुषों के बांधने वाले सुन्दर नेत्रधारी वाणविद्या
में कुशल सेना के मुख पर वर्तमान होकर शोभायमान हुए और हे राजा आगे कहे
हुए आपके पुत्रभीष्मजी के रक्तक पीठ के पीछे की ओर हुए अर्थात् दुःशासन, दुर्वि-
पद्, दुर्मुख, दु सह, विंशति, चित्रसेन, महारथी, विकर्ण, ११ । सत्यव्रत, पुरु
मित्र, जय, भूरिश्रवा, शल, और इसी प्रकार तीस हजार स्य इन के पीछे चलनेवाले

The banners of different forms belonging to the warriors on thy side, adorned with golden rings, looked resplendent like fire and resembled the banners of Indra on his celestial palaces. The heroic warriors accoutred in golden coats of mail, blazing like the sun were glorious to behold like fire on the sun. The chief Kaurava warriors with their gods bows and weapons upraised and their hands protected with leather guards, leaning lanners, and the mighty archers with eyes as large as those of bulls, placed themselves at the heads of their divisions Those of thy sons who protected Bhishm from behind were [10] Dushasan, Durvishah, Durmukh, Dussah, Vivinshati, Chitrasen and valliant Vikarn. 11. With them were Satyavrat, Purumitra, Jaya, Bhurishrava, Shal and twenty thousand charioteers. The Abhushabas, the Shursenas, the Shivis, the Uasatis, the Shwalyas, the Matsyas, the Amvashtas, the Traigartas, the Kekayas, the Sauvirase,

वष्टास्त्रैगताः केकयास्तथा । सौवीराकैतवाःप्राच्याः प्रतीच्योदीच्यवाःसिनः ॥ १३ ॥
 द्वादशैतं जनपदाः सर्वे शूरास्तनुयजः । महता रथवेशेन ते ररक्षुः पितामहम् १४ ॥
 अनीकं दशसाहस्रं कुञ्जरानां तरन्विनाम् । मागधो यत्र नृपातस्तद्रथानीकमन्वयात्
 ॥ १५ ॥ रथानाञ्जकक्षाश्च पादरक्षाश्च दान्तिनाम् । अमघनं चाहर्निमध्ये शताना-
 मयुनानि षट् ॥ १६ ॥ पादाताश्चाग्रतो गच्छन् धनुश्चर्मासपाणयः । अनेकशतसा-
 हस्रानघ्रासपोधिनः ॥ १७ ॥ अक्षौहिण्यो दशैकाश्च तव पुत्रस्य भारत । अदृश्यं तं
 महाराजं गङ्गेव यमुनान्तरे ॥ १८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने
 अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

हुए, अभीपाह, शूरसेन, शिवय, वसातय, शाल्व, मत्स्य, अंबष्ट, त्रैगर्भ, केकय, सौवीर,
 कैतव, और पूर्वी पश्चिमी और उचरीय राजाओं के समूह इन बारह देशोंके नाम से
 विख्यात सब शूरवीर देहों के त्यागने वाले राजाओं ने बहुत से रथों समेत पितामह
 की रक्षाकी, और शीघ्रगामी हाथियों की एकलाख अनीक थी उस रथों की अनीक
 के साथ मगध का राजा चला और सेना के मध्यवर्ती रथों के पहियों की और हा
 थियों के पैरों की रक्षा करने वाले साठलाख धनुष खड्ग डाल धारण कियेहुए नख
 और प्राप्तनाम आयुधोंसे लड़नेवाले लाखों पदाती आगे को चले, हे महाराज धृतराष्ट्र
 इस प्रकारसे आपके पुत्र की ग्यारह अर्द्ध हिणी सेना ऐसी दृष्टि पडी जैसे कि गंगा
 में यमुना अन्तर्गत होकर दीखती है । १८ ।

the Kitavas and the people of the East, the west and the North; these twelve brave races were resolved to fight reckless of their lives and protected the grandfather with innumerable chariots. With an army consisting of ten thousand swift elephants, the king of Magadh followed them. Those who protected the elephants and the wheels of chariots, were six millions in number. The foot soldiers that marched in advance, armed with bows swords and shield, numbered many millions. They used also their nails and darts in fighting. The eleven akshauhinis of thy son looked like the Yamuna entering the Ganges." 18.



धृतराष्ट्र उवाच ॥ अक्षौहिण्यो दशैकाश्च व्यूहांश्चैव विष्टिरः । कथमल्पेनसैन्ये
न प्रत्यव्यूहत पाण्डव ॥ १ ॥ यो वेद मानुष व्यूहं देवं गांधर्वं मासुरम् । कथं भीष्म
स कौंतेयः प्रत्यव्यूहतसंजय ॥ २ ॥ संजय उवाच ॥ घास्तेषां प्राण्यनीकानि दृष्ट्वा व्यूहा
नि पांडव । अन्य भापत धर्मात्मा धर्मराजो धनंजयम् ॥ ३ ॥ महर्षेर्वचनात्तान वेदप
न्तिवृहस्पते । संहतान् यो धयेदल्पान् कामं विस्तारयेत् वहून् ॥ ४ ॥ सूचीमुख मर्त्तिकं
स्या दल्पानां बहुभि सह । अस्माकञ्च तथासैन्य मर्त्तीय सुतरां परैः ॥ ५ ॥ एत
द्वचन मात्राय महर्षेर्व्यूह पांडव । एतत् श्रुत्वा धर्मराज प्रत्यभापत पांडवः ॥ ६ ॥ एष
व्यूहामिते व्यूहे राजसत्तम दुर्जयम् । अचलं नाम वज्राण्यं विहितं वज्रपाणिना ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ १९ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि पांडव युधिष्ठिर ने व्यूह रची हुई ग्यारह अक्षौहिणी
सेना को देखकर किस प्रकार से अपनी थोड़ी सी सेना से व्यूह की रचना की
हे संजय जो युधिष्ठिर कि मनुष्य देवता गन्धर्व और असुर सम्बन्धी व्यूहों को
जानता है उस कुंती के पुत्र ने किस प्रकार से अपने व्यूह को रचा, संजय ने कहा
कि धर्मात्मा धर्मराज पांडव युधिष्ठिर दुर्योधन की व्यूह रची हुई सेना को देखकर
अर्जुन से कहा कि हे तात अर्जुन वृहस्पति महर्षी के वचनों से हम जानते हैं कि
थोड़ी सेना को मिलाकर लड़ने और बहुनसीतेना को इच्छापूर्वक फटलावे बहुत
से मनुष्यों से लड़ने में थोड़े मनुष्यों की सेना का सूचीमुख होय इनी प्रकार हमारी
सेना थोड़ी है । ५ । और शत्रुओं की अधिक है सो हे अर्जुन महर्षी के इस वचन
को जानकर सेना का व्यूह रच यह मुनकर अर्जुन युधिष्ठिरसे कहा कि हे राजेन्द्र मैं
इस तेरी सेना के व्यूह की वह रचना करता हूं जो इन्द्रकी नियत करी हुई वज्ररूप

CHAPTER XIX

Dhritrashtra said, " Seeing the eleven akshauhinis arrayed in the order of battle, how did Yudhishtir the Pandav array his smaller army ? How did Kunti's son array his army against Bhishm who was acquainted with all kinds of array, human, celestial, Gandharva and Asura ? " Seeing Dhritrashtra's army arrayed in order of battle, the virtuous Pandav, King Yudhishtir the just addressed Arjun, saying, " Vishvaspati tells us that a smaller army when brought against large numbers should be condensed, while a large army may be spread at pleasure. A smaller army arrayed against a large one should be wedge shaped. Our troops compared with that of the enemy is smaller. Bear in mind the words of the great rishi, arrange the army. " " I shall arrange the army into the shape of vajra,

यः सगत इमोद्भूत समरे दुःसह परैः । सतः पुरो योत्स्यते वै भीम प्रहरतां
 पर ॥ ८ ॥ तेजासु रिपुसैन्याना मूढान् पुष्टपसत्तमः । अग्रेऽग्रणीयोत्स्यात् नोमुद्धो
 पायविचक्षण ॥ ९ ॥ य दृष्ट्वा कुरव सर्वे दुःख्योघनपुगेगमाः । निवृत्तिं ध्यन्ति
 संव्रताः सिंहं क्षुद्रमृगा यथा ॥ १० ॥ त सर्वे सश्रयिष्याम प्राकारमकुतोभयाः ।
 भीम प्रहरतां भ्रष्ट देवराजमिवामराः ॥ ११ ॥ न हि सोऽस्ति पुमावलोके
 य सकुड्म वृकादरम् । द्रष्टुमत्युग्ररूपं विपहेत नरपमम् ॥ १२ ॥ पवमुक्त्वा
 महावाहुस्तथा चक्रे घनञ्जय । व्यूहं तानि चला-याशु प्रययौ फाल्गुनस्तथा १३ ॥
 सम्प्रयातान् कुर्वन् दृष्ट्वा पाण्डवानां मद्राचमू । गद्ग्व पूर्णास्तिमिता स्पन्दमाना
 व्यदृश्यत ॥ १४ ॥ भीमसेनोऽग्रगन्तेषा धृष्टद्युम्नश्च वीर्यवान् । नकुल सहदेवश्च
 धृष्टकेतुश्च पार्थिवः ॥ १५ ॥ विराटश्च तत पश्चाद् राजाधाक्षोहिणीवृत । भानृभि सह

अचल नाम है जो वह लडाई में वायु के समान उठा हुआ शत्रुओं से असह्यपहार कर-
 नेवालों में मुख्य और युद्ध के विचारों में कुशल पुरुषोत्तम भीमसेन सम्पूर्ण सेना के
 पञ्जों को विदीर्ण करना हुआ हमारे आगे आगे चलेगा और सब कौरव लोग जिन
 का अग्रवर्ती दुयोधन है वह सब कौरवी सेना भीमसेन को देखकर ऐसे लौटेगी जैसे
 कि सिंह को देखकर छोटे छोटे मृगों के गृथ भागते हैं हम सब निर्भय होकर उस
 नहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ पर कौटारूप भीमसेन के समीपी होकर ऐसे रत्नालगे जिस
 प्रकार से देवता-इन्द्रकी रत्ना में होते हैं । ११ । ऐसा मनुष्य इस लोक में कोई नहीं
 है जो इस कौरुप भयकारी भीमसेन को देखकर ऐसा कहकर उस महाबाहु अर्जुन
 ने इसी प्रकार से क्रिया और बड़ी शीघ्रता से अर्जुन व्यूहकी रचना करके चला
 गया तिस पीछे गंगाजी के समान पूर्ण और अचल पाण्डवों की सेना कौरवों को देख
 कर कुछ चलायमान हुई इस सेना के अग्रिपति भीमसेन, पराक्रमी धृष्टद्युम्न, नकुल,
 सहदेव और राजा धृष्टकेतुयो १५ । उस के पीछे राजा विराट एक अक्षौहिणी सेना और

designed by Indra," replied Arjun Bhim who is like the bursting
 tempest unbearable by the enemy will lead our army 8 Bhim
 who is so skilful in fighting will work in the van and will crush
 the troops of the enemy Bhim the great destroyer of enemies, at
 whose sight the followers of Duryodhan will run away in terror, as
 lower animals do at the sight of a lion, while our men will seek his
 shelter as if he were a wall or as gods seek the refuge of Indra 11
 No living man can cast his eye on Vikadar of fierce deeds when
 he is angry." Having said this, Dhananjay of mighty arms did as
 he had said and quickly arranging his troops in battle array proceed-
 ed against the foe The mighty army of the Pandavas, seeing the
 Kaurava army in motion, moved like the rapid current of the
 Ganges 14 Bhimsen, Dhristadyum of great energy, Nakul,
 Sphadev and Dhristaketu led the armies 15 King Vrat,

युधैश्च सोम्यरक्षतपृष्ठत ॥ १६ ॥ चक्ररक्षौ तु भीमस्य माद्रीपुत्रौ महाबुधौ । द्रौपदे
या ससौमद्रा पृष्ठगोपास्तरस्त्रिन ॥ १७ ॥ धृष्टद्युम्नश्च पाञ्चालस्तथा गोतामहा
रथ । सहित पृथनाशरैरगमुरथै प्रभद्रकै ॥ १८ ॥ शिखण्डीतुतत पथादर्जुनेना
भिरक्षिा । यत्तो भीष्मयिन शाय प्रयथौ भरतर्षभ ॥ १९ ॥ पृष्ठतप्यर्जुनस्यासीद्
युयुधानो महाबल । चक्ररक्षौतु पाचाल्यौ युधामन्युत्तमोज्ज्वा ॥ २० ॥ कैकेयो
धृष्टकेतुश्च चेकितनश्च वीर्यवान् । भीमसेनो गदा धिप्रद्वज्रसारमयी दहाम् ।
चान् वेगेन महता समुद्रमपि शोपयेत् ॥ २१ ॥ पते तिष्ठति समात्प्या प्रेक्षन्तस्ते
जनाधिप । धृतराष्टस्य दायदा इति वीभरत्सुब्रवीत् ॥ २२ ॥ भागवता तदा राजन्
दर्शयस्वमहाबलम् । युवाणन्तु तथा पार्थ सर्पसैन्यानि भारत ॥ २३ ॥ अपृञ्जयस्तदावा
गाभरत्सुपूलाभिरादवे । राजा तु मध्वमानीके कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिर ॥ २४ ॥ वृहद्भि

भाई बन्धु पुत्रों समेत भीमसेन की रक्षा के निमित्त पीछे की ओर हुए और भीमसेन
के रथकी रक्षा करने को नकुल और सहदेव दोनों भाई नियत हुए उनके पीछे द्रौपदी
के पुत्र अभिमन्यु, रक्षा करने को उपस्थित हुए और पाञ्चाल देशी महारथी धृष्टद्युम्न
शरों की सेनाका और प्रभद्रक नाम रथों का रत्नकहूण और हे भरत वंशिया में भेष्ट
धृतराष्ट्र इन सबके पीछे अर्जुन से रक्षित भीष्म जी के मारने में कुशल शिखण्डी चला
आर अर्जुन के पीछे रक्षा के लिये महाबली युयुधान हुआ और रथके पहियों की
रक्षा के लिये पाञ्चाल देशी युधामन्यु और उत्तमौजा यह दोनों हुए, केकयदेशवासी
धृष्टकेतु और पराक्रमी चेकितानभी साथ हुए और भीमसेन वज्रसारमयी दह गदाको
धारण किये बड़े वेग से चलता हुआ समुद्र को भी शोषण करनेवाला था, । २१ ।
हे राजा उसके पीछे अर्जुन भीमसेन से यह वचन बोला कि हे भाई भीमसेन तुम्हारे
देखने को मंत्रियों समेत धृतराष्ट्रके पुत्र वर्त्तमान होकर नियतहैं तुम इनको अपना
अतुल पराक्रम दिखाओ ऐसे वचनाके कहनेवाले अर्जुनको युद्ध भूमि में देखकर सब

surrounded by an akshulani of army and accompanied by his
brothers and sons, brought up the rear The two sons of Madri, of
great glory protected Bhum's wheels while the sons of Draupadi
and the son of Subhadra of great energy protected from behind.
Dhrishadyumn the mighty charioteer prince of Panchal with the
brave warriors and the foremost of charioteers, the Prabhadraks,
protected those princes from behind. Behind him was Shikhandi
protected by Arjun advanced with concentrated attention for the
destruction of Bhishm Behind Arjun was mighty Yuyudhan, and
Yudhamanyu and Uttamoujas protected the wheels of his chariot,
along with them were the princes of karkaya and Dhrishitaketu
with Chelitan Bhimsen, wielding his mace of the hardest metal
and moving with great speed could dry up the very ocean The sons
of Dhritrashtra with their counsellors were also pointed out by

दुर्योधनस्यैव चन्द्रिचलं विच । अद्वादिष्याथ पापादयो यत्नसेनो महामना । विराटमन्व
 यान् पश्चात् पाउयार्थं पराजमी ॥ २५ ॥ तेष मादित्यचन्द्राभा जनेऽत्तमभूवण ।
 नानाचिन्दुघा राजन्द्देध्वासन् महाभयजा ॥ २६ ॥ समुत्सार्प तत पश्चात् घृष्टुन्मो
 महात्थ । ऋतु मे मह पुत्रे स न्यक्ष्ण युधिष्ठिरम् ॥ २७ ॥ द्वादशैव नापरपाच
 रथेषु । अपलन् घञान् । अभिभूयार्जुनस्यैवो रथे तस्थौ महाश्रुपि ॥ २८ ॥
 पदातात्त्वग्रतो गच्छन्नासदशान्युष्णिणय । अनेन्यतम हृष्टा भीमसेनस्य रक्षिण
 ॥ २९ ॥ दारणा दशसाहस्रा प्रभिन्नकरटामया । शूरा हेमनयैर्जलिशीप्यमाना इवा-
 चता ॥ ३० ॥ क्षन्त इव जीमूता महाहा पद्मगन्धिन । राजानमचयु पश्चात्जीमूता

सेनाने अपने अलकूल पवनो मे उसको पूजा और कुन्तीका पुत्र राजा युधिष्ठिर मेना
 के मय मे चलायमान पर्वतके समान मतवाले हाथियो मे संयुक्त था इन सबके पीछे
 पाञ्चवालेगी उड़ा साहसी पराजमी यज्ञसेन राजा एक अन्तर्हिणी मेना ममेत राजा
 विराट के पीछे चला । २५ । जिनके रथो पर सूर्य चन्द्रना के समान प्रकाशित
 उत्तम मुवर्ण के नाभूयणो मे अनन्त अनेक प्रकार की चिह्नानो वडी २ जना
 वर्चमानयो तदन्तर महारथी घृष्टुम्नने सेनाको द्वाकर भाई यैत्रो ममेत युधिष्ठिर
 को रक्षामे किया और हे धृतराष्ट्र तेरेपुत्राके त्रार अन्य राजाओ के रथोपर जो वडी
 वडी उजायो उन सन्को तिरस्कार करके अर्जुन की पूजा पर श्रीहनुमान जी
 अपने अनेक भारोको लिये वर्चमान हुए बरली यष्टी आदि के रखनेवाले लाखो
 पटाती रक्षाकरने के लिये भीमेनके आगे चले । २९ । और गंडस्यलोमे मद्र
 डालनेवाले उली महावली तुनहरी जालो से गोभित प्रकंपी गडल से मद्र बरमानेवाले
 बहुमूल्य वाले वर्षाकालीन मेयो के रूपकमन कीसी गन्धवाने दशहजारमदोन्मराहायी

Vibhatsu who directed Yudhishtir's attention towards Bhim
 While Parth was saying this, the troops congratulated him with res-
 pect King Yudhishtir, the son of Kunti took up his position in
 the centre of the army, surrounded by huge and furious elephants
 resembling moving hills King Drup d of fanchal of great prowess
 followed Virat with an Akshauhini of troops for the sake of the
 Pandavas. On the chariots of these king were tall standards bearing
 various devices, decked with excellent ornaments of gold and shining
 like the sun and the moon Leading those kings and making room
 for Yudhishtir, the mighty charioteer, Dhrisht-dyumna accom-
 panied by his brothers and sons, protected Yudhishtir from behind.
 But higher than all the standards on the chariots of thy army as
 well as on those of the other side was the one of Arjun bearing
 the device of Hanuman Hundreds of foot soldiers, armed with swords
 spears, and scimitars, went forward for the protection of Bhimsen.

इव धार्पिका ३१ भीमसेनो गदाभिमा प्ररुर्वन् प रिघापमाम् । प्रचर्क्य महासैन्य दुराधर्षो
महमना ॥ ३२ ॥ तमर्कमिव दुःप्रेक्ष्य तप तामिव वाहनीम् । न शक्युः स्वधोवास्त प्रति
वीक्षितुमन्तिक ॥ ३३ ॥ वज्रो न मेघ स व्यूहा निर्भय सवतामुख । चाप विद्युत्प्रजा
घोरो गुप्तो गाण्डीववन्धना ॥ ३४ ॥ यः प्रनिव्यूह्य तिष्ठति पाण्डवास्तव वाहिनीम् ।
अजयो मानुषे लोक पाण्डवै रभिराक्षत ॥ ३५ ॥ स भया तिष्ठत्सुनैः यप सूर्यस्यादय
प्रति । प्रावात्सपृषतो वायुर्निरध्रे स्तन यित्तम न् ॥ ३६ ॥ विध्वंसाताथ विधद्युर्नैवै शर्क
रवर्षिण । रजश्चाद्भूयतमहत्तमआच्छाद्यज्जगन् ॥ ३७ ॥ पपात महती चोल्का प्रामर्षी
भरतर्षभ । उद्यन्त सूर्यमाहत्य व्यशीर्यत महास्थना ॥ ३८ ॥ अथ सनह्य मानेषु सैन्येषु

राजाके पीछे चले उसकाल महा साहसी दुराधर्ष परिघ के समान भयानक गदाको
धारण किये हुये वडे प्रबल भीमसेन ने वडी भारी सेनाको खंचा तब उस सूर्य के
समान दुःखसे देखने योग्य सेनाके तपाने वाले भीमसेनके सन्मुख आकर वह सन
सेना समीपसे उसके देखने में असमर्थ हुई और वह वज्र नाम निर्भय सब ओरको
मुख रखनेवाला भयकर ब्यूह वडी भारी भ्रजा रूप विजलीसे सयुक्त गाडीव धनुष
धारी अर्जुनसे रक्षित हुआ हे राजा तेरी सेनाके सन्मुख पाण्डवलोग जिसब्यूह को
रचकर वर्तमानहै वह ब्यूह चारों ओर पाडवासे रक्षित होकर इसलोक में महादुर्धर्ष
है अर्थात् उनका विजय करने वाला कोई नहीं दिखाई देताहै । ३५ । सूर्योदयी
स या के समय सब सेना के नियतहोनेपर बिना बारल आकाशीय जल कण रखने
वाला महा प्रचण्ड वायुका वेग चला ककडा की खचनेवाली पृथ्वी सबधी महावायु
चली उसके कारण वडी भारी धल ऐसी उडी कि जिससे सम्पूर्ण संसार आच्छा
दित होगया उस समय महा शब्दवाले पूर्व को मुखकिये उग्र उल्कापात हुये और

30 Ten thousand elephants, with juice trickling down their cheeks and mouths like run d ops from clouds possessing great courage shining with golden trappings huge as hills costly and emitting the fragrance of lotuses followed the king like moving mountains. 32 The magnanimous and invincible Bhimsen, whirling his fierce mace, resembling large parigh or club seemed to crush the large army Dazzling the eyes of beholders like the sun, and scorching as it were, the hostile army, none of the warriors could look him in the face or approach too near him The intrepid array, with its face towards all sides called vjra having bows for the sign of lightning and very dreadful was protected by the wielder of Gandiv Dispensing their troops in this counter array against thy army, the Pandavas waited for battle and protected by the Pandavas the army was invincible by human beings 36 When both the armies stood at dawn waiting for sunrise a wind began to blow with drops of water and roll of thunder without clouds. The wind brought with it sharp

भरतर्षभ ! निम्नप्रभोऽभ्युद्यथौ सूर्यः सघोषं भूक्ष्णचालच ॥ ३९ ॥ व्यशीर्यत सनादाच
भ्रूस्तदा भरतर्षभ । निर्घाता वहवो राजन् दिक्षुःसर्धासु चाभवन् ॥ ४० ॥ प्रादुरासीद्र
जन्तीमं न प्रज्ञायत किञ्चन । ध्वजानांधूयमानानां सहसा मातरिभ्यना ॥ ४१ ॥ किंकि-
णीजालवद्गानां काञ्चनस्त्रम् वगाभ्यरैः । महतां सपतानामादित्यसम तेजसाम् ॥ ४२ ॥
सर्वं श्लेषश्लणी भूत मासीत्तालयनेध्विव । एवन्ते पुरुषव्याघ्राः पाडया युद्धनन्दिनः ४३ ॥
व्यघ्रास्थताः प्रतिव्यूह्य तव पुत्रस्य चाहिनीम् । मसन्त इवमज्जानो याधानां भरतर्षभ
॥ ४४ ॥ दृष्टवाग्रतो भीमसेनं गदापाणि मवस्थितम् ॥ ४५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि पांडवसैन्यव्यूहे

एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

उदय होनेवाले सूर्यको घातकरके फैल गये इसके पीछे फिर सब सेना के तैयारहोने
के समय सूर्यका उदय प्रकाश से रहित हुआ और शब्दों के कारण पृथ्वी कंपाय
मान हुई और अनेक प्रकार से हिलभुल कर जहाँ तहाँ फटभी गई और सब दिशा-
ओं में हवाओं के परस्पर टक्करखाने से बड़े २ भयानक शब्द हुये ऐसी भारी
कठिन धूल उड़ीकी कुछ भी नहीं जानपड़ता था फिर अकस्मात् वायुसे कम्पायमान
मुनहरी मालां वा उत्तम वस्त्रों समेत क्षुद्रयंत्रिकावाले जालों से मंडित प्रकाशमान
ध्वजाओं का ऐसा भ्रंभ्रणा शब्द हुआ जैसा कि ताल हल्लके वन में होता है हे
भरतर्षभ इस प्रकार से वह युद्धको शोभा देनेवाले पुरुषोत्तम हाथ में गदा लिये
हुए भीमसेनको आगे नियत देखकर आपके पुत्रकी सेना सम्मुखमें व्यूहको रचकर
हमारे धीरोंकी मज्जाको निगल जानेवालोंके समान नियतहुई ४५ ॥

pebbles and a thick dust arose covering the world with darkness
Large meteors shot eastwards against the rising sun and broke into
pieces with a loud noise In the meantime the sun rose without
splendour, the earth shook with loud reports and cracked in many
places The tall standards furnished with bells and decked with
ornaments, flowers and rich drapery, shining like the sun, being shaken
by the wind, gave a loud jingling noise like that of a forest of palm
trees It was thus that the Pandavas who loved battle, arrayed
their army against our own and the very appearance of Bhishma
driving away the life out of our warriors with terror." 45.



धृतराष्ट्र उवाच सूर्योदयसञ्जय केतु पूर्वं युयुत्सवो हृष्यमाणा इवासन् । मामकाश्च
भीष्मनत्रा ममीप पाण्डवाश्च भे मनेत्रास्तदानीम् ॥ १ ॥ केषां जगन्व्यो सोमसूर्यो स
वायु केया सेनाश्चापदाश्चाभयन्त । कया दूना मुखवर्णाः प्रसन्नाः सर्वे मेऽथ ग्रहि मेव
यथावन् ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ उभे सेन तुल्य मिथोपयाते उभे व्यूहे हृष्टरूपेनरेद्र ।
उभ चित्र वनराजप्रकाशे तथैवोभे नागराश्वपूर्ण ॥ ३ ॥ उभे सेने बृहत्सौ भीमरूपे
तथैवोभे भारत दुर्विषह्य । तथैवोभे स्वर्गजयाय सृष्टे तथैवोभे सत्पुरुषोपजुष्टे ॥ ४ ॥
पथन्मुखाः कुरवो घातैर्गङ्गा स्थिता पार्था प्रामुखा यास्व्यमानाः । दैत्यन्द्र सेनेवच
कोरव गा देवेन्द्र सेनेवच पाण्डवानाम् ॥ ५ ॥ चक्रे वायु पृष्ठत पाण्डवाना घातैराष्ट्रान्

अध्याय ॥ २० ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय सूर्योदय होनेपर भीष्मजी के आज्ञावर्ती मेरे पुत्र
अथवा भीमसेनसे रक्षित पाण्डव लोगोंमेंसे युद्धाभिलाषी सेनाके सन्मुख लड़नेको
कौन २ प्रसन्नमन हुए किसके पीछेतो वायुसमेत सूर्य और चन्द्रमा हुये और कि
नकी सेनाको फाड़नेवाले ज्ञान आदि पशुओंने भूसा और कौन से धीरों का प्रस
न्न मुख था यह सब यथातथ्य संपूर्णताके साथ मुझ से कहौ, संजयबोले हेमहाराज
भरतवंशीयराज सन्मुख जाने वाली दोनों बृहद्वि सेना प्रसन्नरूप चित्रित वनकी
पक्षिकों समान प्रकाशित हाथी घोड़े रथों से युक्त महाभयानक और क्षमारहित क्रो
धाग्नि रूप स्वर्गके विजय केलिये उत्पन्न सत्पुरुषों से सेवित अर्थात् सत्पुरुषों के
निवास स्थान थीं उत्तमय धृतराष्ट्र के पुत्र कोरव तो पांडवमाभिमुख और युद्धाभि
लाषी पाण्डवजेलोग पूर्वाभिमुख नियतहुरुरदनोंमें कोरवोंकी सेनाता सेनाकेसमान
थी और पाण्डवों की सेना देवेन्द्रकी सेनाके समानथी । ६ । उत्तमय पाण्डवों

CHAPTER XX

Dhritrashtra said,—"When the sun rose, O Sanjaya, of my army led by Bhishma and the Pandava army led by Bhima, which first cheerfully approached the other, desirous of fight? To which side were the Sun, the Moon, and the wind hostile, and against whom did the beasts of prey utter inauspicious sounds? Who were those young men, the complexions of whose faces were cheerful? Tell me all this truly and duly." Sanjaya said—"Both armies, when arrayed, were equally joyful O king! Both armies, looked equally beautiful, assuming the aspect of blossoming woods, and both armies were full of elephants, cars, and horses. 3. Both armies were vast and terrible in aspect, and so also, O Bharata, none of them could bear the other. Both of them were arrayed for conquering the very heavens, and both of them consisted of excellent persons. The Kauravas belong

स्वापदा व्याहरन्त । राजेन्द्राणां मदगन्धाथत द्वात्र संहिरे तव पुत्रस्य नागा ॥ ६ ॥
 दुर्योधनो हस्तिनं पञ्चार्णं सुवर्णकक्षं जालकन्तं प्रभिन्नम् । समास्थितो मध्यगत कुरुणां
 सन्त्यमानो बन्दिभिर्भागधैव ॥ ७ ॥ चन्द्रपत्रं श्वेतमथातपत्रं सौपर्णं रत्नमभ्राजति चोत्त
 मागे । तं सर्वत शकुनिः पार्ष्णीयै सार्द्धं गान्धारैर्याति गान्धारराजः ॥ ८ ॥ भाष्मो
 प्रत सर्वे सन्वस्य वृद्ध श्वेतच्छत्र श्वेतधनुः सस्यद्वग । श्वेतोष्णीप पाण्डुरेणध्वजत
 श्वेतरथैः श्वेतशालमकाशैः ॥ ९ ॥ तस्य सन्धे घात्तराष्ट्रथ सर्वे बाह्लीकानामेकदेश

के तो पीछेकी अनुकूल वायुचली और धृतराष्ट्रके वीरोंकी सेना को कुचे भोंकते थे और
 हे धृतराष्ट्र तुम्हारे पुत्रोंके हाथीगजेन्द्रोंकी उत्कट मदवाली गंधको न सहतके, और
 कौरवोंके मध्य में बन्दीभागधो से स्तुतिमान कमलवर्ण रूपं सुनहरी श्रवागी और
 जालवाले मदोन्तत हाथीपर दुर्योधन सवार हुआ, जिसके शिरपर चन्द्रमाके समानमका
 गित छत्र और सुवर्णकी माला प्रकाशमानथी और गन्धारकाराजा शकुनी सब
 गन्धारियों और पद्माडियासमेत उसको सबओरसे घेरे हुए जाताया, और श्वेत छत्र
 श्वेत धनुष श्वेतखड्ग और श्वेतही पगडी पहरेहुये श्वेतपर्वत के समान श्वेतही
 घोड़ों समेत पांडु वर्ण की ध्वजायुक्त होकर दृढ़ पितामह भीष्मजी सब सेना के

ing to the Dhritasht a party stood facing the west, while the
 Parthas stood facing the east, ready for fighting. The troops of the
 Kauravas looked like the army of the chief of the Danavas, while
 that of the Pandavas looked like the army of celestials. The wind
 began to blow from behind the Pandavas (against the faces of the
 Dhritarashtras), and the beasts of prey began to yell against the
 Dhritarashtras. The elephants belonging to the Kurus could not
 bear the strong odour of the temporal juice emitted by the huge
 elephants (of the Pandavas) 6. And Duryodhana rode on an elephant
 of the complexion of the lotus, with rent temples, graced with a
 golden *Kusha* [on its back], and cased in an armour of steel net-
 work. And he was in the very centre of the Kurus and was ad-
 dressed by eulogists and bards. 7. And a white umbrella of lunar
 effulgence was held over his head graced with a golden chain. *Jaya* Shakuni
 the ruler of the Gandharas followed with mountaineers of Gandhara
 placed all around 8. And the venerable Bhishma was at the head
 of all the troops, with a white umbrella held over his head, armed
 with a white bow and sword, with a white head gear, with a white
 banner (on his ear), and with white steeds (yoked thereto), and
 altogether looking like a white mountain 9. In Bhishma's division
 were all the sons of Dhritrashtra, and also Cala who was a country

शलश्च । ये चांवष्टाः क्षत्रियायेच सिन्धे स्तथा सौवीरा पञ्चनदाश्च गूरा ॥१०॥ शोणै-
 द्वयैरुक्मरथोमहात्मा द्रोणो धनुष्यागिरद्वीनसन्धः । आस्ते गुरुः प्रायश सर्वे राजां प
 श्वाच भूमीन्द्र इवाभियाति ॥ ११ ॥ बाह्वश्रात्र सर्वे सै यस्य मध्ये भूरिश्रवाः पुरुमित्रा
 जयश्च । श त्वामारस्या केनयाश्चेति सर्वे गजानोकैर्धार्तरौ योत्सवमाना ॥ १२ ॥
 शाक्यद्वन्द्वोत्तरधूर्महात्मा महेश्वासा गौतमश्चित्रयोधी । शकैः किरातैर्यवनैः पबहवैश्च
 सार्धं चमूमत्तरतोभियाति ॥ १३ ॥ *महारथैवृष्णिभोजै सुगुतं सुराशूकैर्विदितै राक्षश-
 र्खैः । वृहद्वल कृत्तवर्माभि गुप्त बलं त्वदीयं दक्षिणे गताम याति ॥ १४ ॥ सशक्तकानाम
 युतं रथानां मृत्युर्जयो बर्जुन स्यात् खष्टा । येनार्जुनस्तेन राजन् कृतास्त्राः प्रयातारस्ते

आगे जाते थे उनकी सेनामें आप के सचनेटे बाहलीकों का एक देश, शल, अन्वष्ट,
 सिन्धु के राजा लोग, सौ वीर और पञ्चनदके सब शूरवीर थे । १०। और महावली
 धनुष हाथ में लिये महात्मा गुरु द्रोणाचार्यजी लाल घोड़े के लालही रथपर सवार
 पर्वतकेसमान अचलकौरव पांडव और अन्य बहुधा राजाओंके गुरु पीछे रजातेथे
 और सब सेनाके मध्यमें वार्धन्त्री, भूरिश्रवा, पुरुमित्र, जय, शाल्व, मत्स्य, और केकयदेश
 वासी सबभाई और युद्धाभिलाषी सेना हाथिया समेत चली, तब महात्मा धनुषारी
 चित्रयोधी गौतम कृपाचार्यजी शकजाति, किरात, यवन अर्थात् यूनानी राजालोगों
 समेत सेनाके उत्तर ओरको रक्षाकरते हुए जातेथे और संसप्तकनाम दृशहजार रथी
 जो कि मृत्युया धिजय करने के लिये उत्पन्न किये थे वह त्रिगर्भ देशी असात्र
 शूरवीर लोग जिधर की ओर अर्जुन था उस दिशा की ओर जाते हुए, हे भरतवंशी

man of the Vallukas, and also all those Ashatriyas called Anvastas,
 and those called Sindhus, and those also that are called Saviras, and
 the heroic dwellers of the country of the five rivers. 10 And on a
 golden car unto which were yoked red steeds, the high souled Drona,
 bow in hand and with never failing heart, the preceptor of almost all
 the kings, remained behind all the troops, protecting them like Indra-
 11. And with the midst of all the forces were Yudhakshatya, and
 Bhurisravas, and Parumitra, and Jaya and the Shalvas, the Matsyas,
 and all the Kekeya brothers fighting with their elephant divisions. 12
 And Caradaw's son, that fighter in the van, that high souled and
 mighty bowman, called also Ghatana, conversant with all modes of
 warfare, accompanied by the Kurus, the Kiratas, the Yavanas, and
 the Pathivas, took up his position at the northern point of the army.
 13 That large force which was well protected by mighty car-warriors
 of the Vrishni and the Bhoyas races, as also by the warriors of Sur-
 ashtra well armed and well-acquainted with the use of weapons, and
 which was led by Kritvarman, proceeded towards the south of thy
 army. 14 Ten thousand cars of the Sauncaptakas, who were erected

त्रिगर्ताथ द्वागः ॥ १५ ॥ स श्र शतसहस्रन्तु नागानांतवभारत । नागे नागे रथशतं शत
मदवा रथे रथे ॥ १६ ॥ अश्चेऽश्चे दशधानुष्का धानुष्के शश चर्मिणः । एवं व्यूढान्यनी
कान भीष्मेण तव भारत । १७ ॥ संव्यूह मानुषं व्यूहं देवं गांधर्वं मासुगम् । दिवसे दिव
से प्राप्ते भीष्मः शान्तनवो व्रगीः ॥ १८ ॥ महारथौघ विपुलः समुद्र इव घोषवान् ।
भीष्मेण चास्त्रराणां बृहदः प्रत्यंमुखोयुधि ॥ १९ ॥ अनगतस्त्वा द्यजिनीनरेन्द्र मनात्स
दीया ननु पाण्डवानाम् । तांच वमन्ये बृहन्नो दुष्प्रघर्षा यस्यानेता केशवश्चारुर्जुनश्च २० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने

विंशोऽध्याय ॥ २० ॥

आपके हाथीभी एकलाखसे ऊपरथे और हरएक हाथी के साथ सौ रथ और प्रत्येक
रथके साथ सौ २ घोड़े और हर घोड़े के पीछे दश दश धनुषधारी और हर एक
धनुष धारी के साथ दश दश मनुष्य थे, हे भरतवंशी इस प्रकार से भीष्म जीने
आपकी सेना को तैयार किया, शन्तनु के बेटे प्रभु भीष्मजी ने प्रतिदिनकी विद्य-
मानता में मानुष, देव, गान्धर्व, आसुर नाम चारों प्रकार के व्यूहोंको अच्छी रीति
से रचकर युद्धके बीच धृतराष्ट्र के पुत्रोंका व्यूह बड़े २ रथों के समूहोंमें समुद्र के
समाग विस्तृत और शब्दायमान पूर्व की ओर को रचा, हे महाराज आपकी सेना
बहुत रूप और ध्वजा संयुक्त होनेसे ऐसी महा भयानकहै जिसको मैं केशवजी
और अर्जुनकी सहायता वाली पांडवों की सेना से भी बड़ी कठिनतासे धर्षणा के
योग्य समझताहूँ ॥ २० ॥

for the death or fame of Arjun, went in the direction where Arjun was. Your elephants amounted to a hundred thousand. Each elephant was followed by a hundred chariots, each chariot by a hundred horses, each horse by ten archers and each archer by ten men. Thus O Bharat, Bhishm arrayed your army. Lord Bhishm the son of Shontanu, did, each day of his career, arrange the army in human celestial, gandharv or Asur way. Your army consisting of many warriors, extended and roaring like the ocean, was arrayed by Bhishm towards the East, Your army containing numberless warriors and banners was too formidable to be easily intimidated by the Pandava army assisted by Arjun and Keshav." 20.



सङ्गय उवाच । वृहतीं धार्तराष्ट्रस्य सेनां दृष्ट्वा समुद्यताम् । विषादमगमद्राजा
कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ १ ॥ व्यूहं भीष्मेण चाभेद्यं कल्पितं प्रेक्ष्य पाण्डवः । अभेद्यं
च संप्रेक्ष्य विचक्षणोऽर्जुनमब्रवीत् ॥ २ ॥ घनङ्गयं कथं शन्यमरमाभिर्योद्धुं माह च ।
प्रक्षरार्थैर्महाबाहो येषां योद्धा । पतामहः ॥ ३ ॥ अज्ञानभ्योयमभद्यश्च भीष्मेणामिभ्रक-
र्षिणा । कल्पितं शास्त्रदृष्टेन विधिना भूरिचर्षसा ॥ ४ ॥ ते वयं सशयं प्राप्ता ससैन्या
शत्रुर्धरणः । कथमस्मान् महाव्यूहादुत्वन नो भविष्यति ॥ ५ ॥ अथ जेतोर्ब्रवीत्पार्थ
युधिष्ठिरमभिप्रहा । विषयगमितं संप्रेक्ष्य तव राजजनोक्तिनीम् ॥ ६ ॥ प्रज्ञयाभ्यधिकान्
शूणान् गुणयुक्तान् बहून्पि ॥ जयन्त्यल्पनरा येन तन्निर्गोघ विशाम्पते ॥ ७ ॥ तत्र तं
कारणं राजन् प्रवक्ष्याम्यनसूयव । नारदस्तस्मिर्विन्दे भीष्मद्रोणौ च पाण्डवः ॥ ८ ॥

अध्यायः ॥ २१ ॥

संजय बोले कि कुन्ती के बड़े बेटे राजा युधिष्ठिर ने दुर्योधन की बड़ी सेना
को अत्यन्त उग्रत जानकर बड़ी व्याकुलताको पाया, और भीष्मजी के रचे हुये
अभेद्य व्यूह को यह जानकर कि यह अभेद्य है महाभयभीत रूपान्तर दशा में
होकर अर्जुन से कटा कि हे महाबाहु अर्जुन युद्धमें धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ हम
लोग युद्ध करने को कैसे समर्थ होसके हैं जिनकी ओर से युद्ध करने वाले भीष्म
पितामह है इन महातेजस्वी शत्रुहन्ता भीष्मजीने शास्त्रोक्त देखीहुई विधिके अनुसार
बड़ी सावधानी से इस अभेद्य व्यूहको रचाहै हे शत्रुहन्ता अर्जुन हम सब सेना समेत
व्याकुल होते हैं इस महाभारी व्यूह से हमारी कैसे विजय होगी हे राजा धृतराष्ट्र
आपकी सेना के देखनेसे व्याकुल हुए युधिष्ठिर की इस बात को सुनकर अर्जुन
वांला कि हे राजा युधिष्ठिरथोड़े से भी बुद्धिमान् शूरीर गुरीरूप दहतभारी सेना
को विजयकरते हैं ऐसा निश्चय जानो हे राजा बहा एक एक के छिद्रों को देखता
है । ७ । इसका भेद मैं तुम्हें कहुंगा इस कारणको नारद ऋषि, भीष्मपितामह,

CHAPTER XXI

Sanjaya continued " Knowing Duryodhan's army ready for
battle, King Yudhishthir the eldest son of Kunti, was much distress-
ed, and being terrified at the sight of the impregnable phalanx
arranged by Bhishm, he said to Arjun, ' How shall we cope in
battle with the sons of Dhritrashtra who have Bhishm the grand
father for their warrior? Glorious Bhishm the destroyer of enemies
has carefully organised according to Shastris this impregnable
phalanx. I and my army are much perplexed. How shall we be able
to conquer this formidable army? ' Having heard the words of
Yudhishthir who was distressed at the sight of your army, Arjun
replied as follows — " A small company of wise and skilful warriors
can surely win a large army, Yudhishthir. Each warrior sees the
weakness of his enemy. 7. I shall tell you all about it which none

एवमेवार्थं माश्रित्य युद्धे देवासुरेऽग्रजोत् । पितानहं किल पुरा महेंद्रादीन् वि-
 यौरुसः ॥ ९ ॥ न तथा चलतीदृश्याभ्यां जयन्ति विजिगीषवः । यथा सत्यानुशं
 स्याभ्यां धर्मैषोद्यमेन च ॥ १० ॥ ब्रत्वा धर्ममधर्मं च लोभबोत्तम मास्यताः ।
 युध्यधर्ममहद्द्वारा यतो मर्मस्ततो जय ॥ ११ ॥ एवं राजन् विजानीहि ध्रुवो
 स्माकं रणे जगः । यथा तु नारद प्राह यत कृष्णस्ततो जयः ॥ १२ ॥ गुणभूतो
 जय कृष्णपुत्रो भ्यात माधवम् । तत्रथा विजयश्चास्य सद्यतिश्चापरो गुणः ॥ १३ ॥
 अनन्तजग मायिन्द शशुशुषु निर्व्यथः । पुष्य सनातनमयो यत कृष्णस्ततो
 जयः ॥ १४ ॥ पुत्रो ह्येव हरिर्देवा इवकुण्डेऽकुण्डे सायकः । सुतासुरानवस्फु-
 ल्जंनप्रजोत् के जयन्विति ॥ १५ ॥ कथं कृष्ण जये मेति वैरक तत्र तैर्जितम् । तत्

द्रोणाचार्य जी यह तीनों जानते हूँ हे निष्पाप युधिष्ठिर पूर्व समय में देवता और
 अशुरोंके युद्ध में ब्रह्माजीने इन प्रयोजन को मानकर महाइन्द्रआदि देवताओं से
 कहा है कि विजय के चाहने वाले पराक्रमी पुरुष वचन पराक्रम से ऐसी विजय नहीं
 करसके जैसी कि सत्यता दया और एक धर्मसे विजय करते हैं । १० । धर्म अधर्म
 और लोभ को जानकर उभय धर्म युक्त अईकार रहित होकर युद्धको करो जहाँ धर्म
 है वहाँही विजयहै हे राजा जैसा कि नारदजीने कहाहै उसीप्रकार चित्तमें सदैव
 जानो कि हमारीही विजयहोगी अर्थात् नारदजीने कहाहै कि जियर श्रीकृष्णजी हैं
 उधरही विजय होगी क्योंकि विजय श्रीकृष्णजीके पाम दास्य रूपहोकर पीठकी
 ओरसे सम्मुख होकर स्तुति करनी है जिसरीति से इनकी विजय है उसी प्रकार नम्रता
 आदि उनके दूसरे गुण हैं श्रीगोविन्दजी अत्यन्त तेजस्वी शत्रुओंके समूहों से अर्घ्य संपूर्ण
 ब्रह्माण्ड में व्यापक सनातन सचिदानन्द रूप हैं इससे जियर श्रीकृष्ण हैं उधरही
 विजय लक्ष्य है पूर्व समय में यह माया से पृथक् अछेयआयुध हरिरूप प्रकट
 होकर देवता और अशुरोंको अपनी वज्रसमान बाणोंसे चेताकर यह वचन बोला

but Narad, Bhishma the grandfather and Droonacharya knows In
 former times when the war between the gods and asurs was raging,
 Brahma who knew the secret, said to Indra and other gods that
 warriors desirous of conquest could not achieve victory so easily by
 mere physical force as by truth, mercy and union 10 Knowing the
 consequences of dharma, adharma and avarice, and being free from
 vanity, let us fight, for where there is dharm, there is victory. You
 must remember, King the words of Narad who said that victory
 would fall on the side where Krishna is Victory follows Krishna
 wherever he goes Victory and humility are the two attributes of
 Krishna He possesses infinite energy. He cannot be intimidated by
 any number of foes He is eternal and victory follows his wake.
 Indestructible and invulnerable by weapons, Hari of old said to
 gods and Asurs "Who amongst you will be victorious?" 15.

प्रसादाद्धि त्रैलोक्यं प्राप्तं शक्रादिभिः सुरैः ॥ १६ ॥ तस्य ते न व्यथां कांचि दिह
पश्यामि भारत । यस्य ते जय माशास्ते विश्वकुक् त्रिदिवेश्वर ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि युधिष्ठिरार्जुन संवादे
एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

सञ्जय उवाच ॥ ततो युधिष्ठरो राजा स्वां सेनां समनो दयत् । प्रति व्यूहन्नीका
नि भीष्मस्यभरतपुत्रम् ॥ १ ॥ यथोद्दिष्टान्यनाकानि प्रत्यव्यूहन्त पाण्डवा । स्वर्गं परम
मिच्छन्तः सुयुद्धेन क्रुद्धदाः ॥ २ ॥ मध्ये शिखण्डिनोऽनीकं रक्षितं सव्यसाचिना । घृष्ट
धुम्नश्चरभ्रे भामसेनेन पालितः ॥ ३ ॥ अनीकं दक्षिण राजन् युयुधानेनपालितम् ।
श्रीमतासात्वताग्रयेण शक्रे षेव धनुश्मता ॥ ४ ॥ महेन्द्रयानप्रतिमं रथन्तु सोपस्कं
था कि कौन विजय करता है । १६ । उसके उत्तरमें जिन्होंने यह कहा कि
श्रीकृष्ण, जी की सहायता से विजय करते हैं वहाँ उन्हीं लोगों ने विजयकी और
इन्द्रादि देवताओंने उसकी कृपा से तीनालोकों को पाया, हे भरतवंशी वैसी
पीड़ामें तुझमें नहीं देखनाहूँ जिसकी विजय को विश्वका भोक्ता और स्वर्ग का
ईश्वर चाहता है । १७ ।

अध्याय ॥ २२ ॥

संजयबोले कि हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ इसके पीछे भीष्मजीके सम्मुख राजा
युधिष्ठिर ने अपनी व्यूहितसेना को उपास्थिन किया, फिर धर्मयुद्ध से उत्तम स्वर्गके
चाहनेवाले कौरवोंके पोषणकरनेवाले पाण्डवोंने गुरुकी आज्ञाके अनुसार सेना को
यथायोग्य स्थान पर नियत किया मध्यमें अर्जुन से रक्षित शिखंडीकी सेनाहुई और
आगे चलताहुआ घृष्टधुम्न भीष्मसे से रक्षितहुआ और इन्द्रके समान धनुषधारी
श्रीमान्त्र युयुधान से दक्षिण की सेना रक्षित हुई और राजायुधिष्ठिर हाथियोंकी

and they conquered who said that the party which had Hari for
its leader was sure to win. By his grace India and other gods won
victory over the three worlds. I see no cause for fear when
the Lord of the world as well as of Swarg, himself desires your
victory." 17.

CHAPTER XXII

Sanjaya continued " When king Yudhishtir had arrayed his
armies against those of Bhishm, the latter said, " The Pandavas
have arrayed their forces against us in the manner laid down in the
shastras fight fairly, ye sinless ones for the sake of entering heaven!"
In the centre of the Pandava army was Shikhandi with his army,
protected by Arjun, Dhishtadyuma, protected by Bhim was in the
van; the southern part was led by Yuyudhan, the mighty archer of
the Satwata race, resembling Indra himself 4. Yudhishtir was
seated on a chariot worthy of carrying Indra himself, adorned with

हाटकरत्न चित्रम् । युधिष्ठिर काचन शाण्डयोक्त्र समास्थितो नागपुत्रस्य मध्ये ॥ ५ ॥
 समुच्छिन्नत दन्तशलाकमस्य सुपाण्डुर छत्र मतीव भाति । प्रदक्षिण चैनमुपाचरन्त मह
 र्पय सस्तुति भिर्महेन्द्रम् ॥ ६ ॥ पुरोहिता दानुप्रथ वदन्तो ब्रह्मर्षि सिद्धाः शुनधन्त
 एनम् । जप्यैश्च मन्त्रैश्च महौपधीभि समन्तत स्थस्य पन मुवन्त ॥ ७ ॥ ततः सध-
 र्त्राणि तथैव गाश्च फलानि पुष्पाणि तथैव निःकृत् कुरुत्तमो ब्राह्मणसान्महात्मा कु-
 र्वन् ययौ शक्र इवामरेश ॥ ८ ॥ सहस्र सूर्य शत किंकिणीक पराद्वयजाम्पादहेम
 चित्र । रथोर्जुनस्याग्निरिवाकिंचिमाती चित्र जते श्वेत ह्य सुचक्र ॥ ९ ॥ तमास्थि
 त केशव सगृहीत कपिध्वजो गाण्डववाणपाणः । धनुर्धरो यस्य सम पृथग्या न
 विद्यते नोभयिता कदाचित् ॥ १० ॥ उद्धर्त्त विश्वस्तव पुत्रसेना मतीवर्षात् स विमर्षि
 सेनामे महेन्द्रकी सवारीके स्वरूप सुन्दर सामग्री वाले सुवर्ण और रत्नोंसे जाटित
 सुनहरी कलशयुक्त रथपर नियतहुआ । इसका श्वेतछत्र हाथीदांतकी यष्टीपरशोभित
 अत्यन्त ऊंचा देदीप्यमान था महर्षीलोग स्तुति करते हुये इसमहाराज के दक्षिण
 चलनेवाले हुये पुरोहित लोग और शास्त्रज्ञ ब्रह्मर्षि अथवा सिद्ध पुरुष मन्त्र जप
 और वडीवडी औपाधियों समेत इसका स्वस्त्ययन पदतेहुये शत्रुके भरण को उच्चा-
 रण करतेहे तदनन्तर वह कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर सुन्दर वस्त्र, गौ, फल, फूल
 और सुवर्ण मुद्राको ब्राह्मणोंके अर्थ दान और भेटोंको करताहुआ देवेश्वर इन्द्रके
 समान चला, अर अर्जुन का रथ मणियों के जाटित होने से हजारों सूर्य के समान
 मकाशमान और सैकड़ों घंटालियोंसे चिह्नित उत्तम जांबूनद नाम सुवर्णसे मद्रा
 अग्निकेसमान किरणोंसे युक्त श्वेत घोड़े और सुन्दर पहियों से शोभित है वह गांडीव
 धनुषधारी हाथ म वाण, रखनेवाला कपिध्वज जिसकी समान धनुषधारी शृङ्गीमें न
 कोई है न होगा वह अर्जुन केरावजी को पकड़ेहुये रथपर विराजमान है । १० ।
 वह तेरेपुत्र की सेनाको मर्दन करताहुआ बड़े भयकारी रूपको धारण करता है,

an excellent standard, decorated with gold and gems, with gold traces, in the midst of his army of elephants 5 His pure white umbrella with white ivory handle, raised over his head, looked very beautiful Many a great rishi walked round the king, chanting hymns in his praise Many priests, Brahmans and Sdhas, singing praises and benedictions, prayed for the destruction of his enemies by means of aphorisms, drugs and ceremonies The magnanimous prince of Kurus gave cows, fruits, flowers, gold pieces and clothes to Brah-
 mans and proceeded like India the chief of gods Arjun's chariot, furnished with many fells, decked with lustrous gold, having good wheels, shining like the sun and drawn by white horses looked brilliant like a thousand suns The chariot whose reins were held by Keshav, was furnished with the standard bearing the figure of Hanuman and was occupied by Arjun the wielder of Gandiv and matchless archer He who assumes the most awful form for the destruction of thy

रूपम् । अनाशुषो य सुभुजो भुजाभ्यां नगाश्च नागान् युधि भस्म कुर्यात् ॥ ११ ॥ स भीमसेन साहसो यमाभ्या वृकोदरो वीर रथस्थ गोप्ता । त तत्र सिंहर्षभमत्तखेल लोके महेन्द्रप्रतिमान कल्पम् ॥ १२ ॥ समीक्ष्य सेनाप्रगत दुरासदं संविद्यथुः पंक गंत। यथा द्विपाः । वृकोदरं वारणराजदर्प योधास्त्वदीया भयविग्नस्त्वा ॥ १३ ॥ अनाक मध्ये निष्ठः त राजपुत्र दुरासदम् । अन्नवीन्द्रः तश्रेष्ठं गुडाकेशं जनार्दनः ॥ १४ ॥ वासदेव उवाच ॥ य एपरोपत् प्रतपन् चलस्थां योन सेना सिंह इवेक्षतेच । स एष भीष्मः कुरुवश केतुर्थेनाहतास्त्रिशत वाजि मेघा ॥ १५ ॥ एतान्यनीकानि महाभाव गहान्तेमेघ इवराक्षिमन्तम् । एतानि हत्वा परुषप्रवीर कान्तस्वयुद्ध भरतर्षभेण ॥ १६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि युधिष्ठिरार्जुनसंवादे

द्वाविंशोऽध्याय ॥ २२ ॥

और जो कि अशस्त्र भी सुन्दर भुजदण्ड युक्त युद्धके मध्य में अपनी महाभुजाओं सेही मनुष्य और हाथियों को मर्दन करता है वह वृकोदर भीमसेन अपने छोटेभाई नकुल सहदेव समेत शूरवीर अर्जुन के रथका रक्षक है, ऐसे महातिहरूप चाल चल नेवाले लोकमें महाइन्द्र के समान दुरार्थर्ष सेना के आगे वर्तमान महाबली भीमसेन को देखकर तुम्हारी सेनाके मनुष्य ऐसे कम्पायमान हुये जैसे कि कीचमें फँसे हुये हाथीभयभीत होते हैं उस गजेन्द्र के समान गर्भ से भरेहुये भीमसेन को देखकर आप के शूरवीर लोग विचक्षे भयभीत होकर मनसे हारगये, और हे राजा तब सेना में वर्तमान दुरार्थर्ष अजेय राजहमार अर्जुन से जनार्दन श्रीकृष्णजी यह वचन बोले, कि हे अर्जुन जिस भीष्म ने अपने क्रोध से सेना को संतप्त किये हुये बलमें नियत सिंहरूपहोकर हमसे वचायाहै वह भीष्म कौरव कुलकी ध्वजाहै जिसने कि तीनसौ अश्वमेध यज्ञ किये, यह सब सेना इस को ऐसे घेरे हुएहै जैसे कि सहस्र किरण वाले सूर्यको वादल घेर लेते हैं हे पुरुषोंमें बड़े वीर अर्जुन तुम इन सेनाओं को मारकर भरतवंशियों में श्रेष्ठ भीष्मजीके साथ युद्ध करने की इच्छा करो । १६ ।

sons and thy armies and brings to dust horses and elephants without weapons, that strong armed Bhimsen, known as Vrikodai, accompanied by the twins, became the protector of the Pandav phantoms. Like a sportive lion or like India himself in lodges form, the sight of the invincible Vrikodai like a leader of a herd of elephants, stationed in the van of the warriors, frightened and weakened thy warriors like elephants sunk in mine 13 To the invincible Gudakesh (Arjun) standing in the midst of his troops, Janardan said, "Yonder is the banner of Bhishm who has performed three hundred sacrifices, who burns us with his wrath and who stands in the midst of his troops ready to attack us like a lion His soldiers surround him on all sides like the clouds round the moon Slay those armies and seek battle with that bull of the Bharat race." 16

सञ्जय उवाच ॥ घातित्वाद्य बल दृष्ट्वा युद्धाश्च सम्पत्स्थितम् । अर्जुनस्य हितार्थाय
 कृष्णो वचन मन्वथे त् ॥ १ ॥ श्रीमद्भगवानुवाच ॥ द्वाचर्भुत्वा महान हो सप्रामाणिसुखे
 स्थित । पराजयाय शत्रूणां दुर्गास्त्रे नमुदास्य ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्तोऽर्जुनः
 सङ्घे वासुदेनेन धीमता । अत्रनीदत्र रथात् पार्थः स्तात्रमाह कृनात्तलिः ॥ ३ ॥ अर्जुन
 उवाच । नमस्ते सिद्धसन्तानि अथ द्यौ मन्दाद्यासिनि । कुमारिकाल कापालि कपिले कृष्ण
 पिङ्गले ॥ ४ ॥ भद्रकालि नमस्तुभ्य महाकालिं नमोऽस्तुते । चाण्ड चण्डे नमस्तुभ्य तारिणि
 वरवारिणि ॥ ५ ॥ कात्यायनि महाभाग करालि त्रिजयेजये । शिखिपिण्डध्वजधुरे नानाभर
 णभूषणे ॥ ६ ॥ अटशूलप्रहरणे खड्गखेटकधारिण । गोपेन्द्रस्वानुजे ज्येष्ठे नन्दगोप-
 कलोद्भवे ॥ ७ ॥ महिषासुरहृष्येनित्यं कौशिकि पीतासिनि । अटहासे कोकमुखे

अध्याय ॥ २३ ॥

संजय बोले कि हेराजा युद्धके निमित्त सम्मुख वर्तमान दुर्योधनकी सेना
 को देखकर श्रीकृष्णाजी अर्जुन के अभीष्ट सिद्ध करनेकेलिये यह वचन बोले कि
 हे महाबाहू अर्जुन तुम युद्ध के सम्मुख वर्तमान होकर बड़ी पवित्रतासे शत्रुओंकी
 पराजय के लिये भीदुर्गाजीके स्तोत्रका पाठकरो, संजय बोले कि इस प्रकार
 वासुदेवजीकी आज्ञाको सुनकर पाण्डव अर्जुनने रथसे उतरकर हाथ जोड़कर युद्ध
 भूमिमें आगेनिखे हुए दुर्गाजीके स्तोत्रको पढ़ा, । ३ । हे निन्द सेनावाणी, आर्ये,
 मन्दार वानिनि, कुमारि, कालि, कापालि, कपिले, कृष्णापिङ्गले तुम्हको नमस्कारहै ।
 हे भद्रकालि, महाकालि, चण्डि, तारिणि, वरवारिणि तुम्हको नमस्कारहै । कात्यायनि,
 महाभाग, करालि, त्रिजये, जये, मोरकेपरी की ध्वजावाणी और नाना प्रकार के आ-
 भूषणों से भूषित तुम्हको नमस्कारहै । शूल, खड्ग और दल धारण करने
 वाली, गोपेन्द्र की बहिन, ज्येष्ठे, नन्दगोप के कुल में उत्पन्न तुम्हको नमस्कार
 है । महिष के हरि को नित्य निय रसन वाली, कौशिकि, पीताम्बर धारण

CHAPTER XXIII

Sanjaya continued " Seeing the army of Du yodhan ready to fight, Shree Krishna spoke these words to the benefit of Arjun
 ' Mighty Arjun ! having cleansed thy self, stand with thy face towards the field of battle and sing hymns in the praises of Durga for the defeat of thy foes " Sanjaya continued that being thus advised by Vasudev, Arjun the Pandav came down from the chariot and with joined hands recited the following hymn in the field of battle.— I bow to thee leader of Sidhas, good goddess living in the forest of Mandar, Kuma ri, Kali, Kapali, Kapila, Krishna pingala, Bhadrakali, I bow to thee, Mahakali, I bow to thee I bow to thee Chandri, Tarni, Baharnini, Katyayini, Mahabhaga, Karali, Vijya, Jaya, bearer of the binnur of peacock's feathers, decked with orna-
 ments, bearer of awail spear, sword and shield, younger sister of

नमस्तेस्तु रणाभये ॥ ८ ॥ उमे शाकम्भारभवेते कृष्णे कैटभनाशिनि । हिरण्याक्षि विरू-
पाक्षसु धूम्राक्षि नमोऽनुने ॥ ९ ॥ वेदधृतिमहापुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदास । जम्बू
कटकुचेत्यपान्त्य सन्निहाहतालये ॥ १० ॥ तूग्रह्याविद्यावद्यानां महानिद्रा च देहिनाम् ।
स्कन्दमातभगवात दुर्गे कान्तारयासिनि ॥ ११ ॥ स्वाहाकार स्वधाचैव कला काष्ठा
सरस्वती । सावित्री वदमाता च तथा वेदान्त उच्यते ॥ १२ ॥ स्तुतास त्वमहादेवि । व
शुद्धेनान्तरात्मना । जयामवतमोगत्य त्वत्प्रसादाद्गणाजिने १३कान्तारभयदुर्गेषु भक्ताना
भालयषु च । नान्य वसास पाताले युद्ध जयास दानघान् ॥ १४ ॥ त्वजम्भनी माहिनी
च मायाही श्रीस्तथैव च । सन्ध्या प्रभावताचैव सावित्री जननी तथा ॥ १५ ॥ ताष्ट-
पुष्टिधृतिर्दीप्तिसिन्द्रादित्यविवर्दिनी । भूतभूतमना सह्ये वीक्ष्यसे । सद्गचारणैः ॥ १६ ॥
सज्जय उवाच । ततः पार्थस्य विज्ञाय भर्कं मानवत्सला । अन्तरिक्षगतोवाच गावि-द

करने वाली, दृरुमुख धारण करके असुरों को मारने वाली रणाभिये तुम्हको
नमस्कार है । वेदधृति, अतिपवित्र, ब्रह्मण्य, जात वेदासि जम्बूखंड के चैत्य में
निवास करनेवाली तूग्रह्याविद्याओं और महानिद्रा की देनेवाली स्कंद की माता,
भगवाति, दुर्गा, कठिन स्थानों की रहने वाली, स्वाहा, स्वधा, कला, काष्ठा,
सरस्वती, सावित्री, वेद और वेदान्त की माता है । हे महादेवि, विधुद्धों की अन्त-
रात्मा में तेरी स्तुति करता हूँ हे रणाभिये तेरे प्रसाद से भेरी सदाजयहो तू सदा भयानक
दुर्गम स्थानों और पाताल में निवास करती है भर्कोंका पालन करती है और युद्ध में
जयदेती है तू जम्भनी, मोहिनी, मायाही, श्री, सन्ध्या, प्रभावती, सावित्री और जननी भी है,
तू पुष्टि, पुष्टि, धृति और चंद्रसूर्यकी भभावदाने वाली है तू धनियोंको धन देनेवाली और
सिद्ध चारणोंको दिखई देनेवाली है । सजयनेकहा कि दुर्गा अर्जुनकी भक्ती को जान

Gopendia, Jyeshtha born in the race of Nand the cowherd, fond of
buffalo's blood, Kaushika, fond of yell w clothes, Attahara, hok
mukha, I bow to thee warrior goddess Uma, Shakambhari of
white or black colour, destroyer of Katabh, Hanyakshi, Viroopik-
shi, Sudhumakshi, I bow to thee. Thou art Vedic hymn of great
holiness, Brahmanya, jatvedasi, always living in the shrines of
Jambu, learned in the knowledge of Bahm, giver of profound
sleep, mother of Chand, Bhagwati, Durga, dweller in inaccessible
places, Swaha, Swadha, Kala, Kashtha Savitri, Vedmata and
Vedant. I praise thee Mahadevi, soul of saints May victory ever
fall to my lot by thy grace on the field of battle In inaccessible
places where there is fear, in difficulties in the abodes of thy worship
pers, in nether regions thou always dwellest Thou art Jambhani,
Fushti, Pushti, Dhriti, Dipti giving light to the moon and the sun,
giver of prosperity and seen by Siddhas and Charans" Sanjaya
continued that knowing the devotion of Arjun, Durga the protector,

स्याग्रतः सिधता ॥ १७ ॥ देव्युवाच । स्वर्गेऽपि तु कालेन शत्रून् जेष्यसि पाण्डव ।
 मत्स्त्वमसि दुर्धरे नारायणसहायवान् ॥ १८ ॥ अजे यस्त्वं रणे ऽगीमा मपि वज्रभृत्तः
 स्वयम् । इत्ये मुक्त्वा वादाः क्षणेनान्तरं धीयत ॥ १९ ॥ लब्ध्वा वरन्तु कौन्तेयों मने
 विजयमात्मनः । आकरोह ततः पार्थो रथ परमसम्मत्तम् ॥ २० ॥ कृष्णार्जुना देकरथं दिव्यौ
 शङ्खौ प्रदध्मतुः । य इदं पठते स्तोत्रं कथ्य मुखाय मानवः ॥ २१ ॥ यश्चाक्षःपिशाचेभ्यो
 न भयं विद्यते सदा । नचापि रिपवस्तेभ्यः सर्गाद्या ये च दर्शयिष्याः ॥ २२ ॥ न भय
 विद्यते तस्य सदा राजकुलादपि । धिवादे जयमाप्नोति वज्रो मुच्यति वन्द्यनात् ॥ २३ ॥
 दुर्गं तरति चावश्यं तथा चौरैर्भिसुच्यते । संग्रामं विजयोनित्यं लक्ष्मीं प्राप्नोति फेचला
 ॥ २४ ॥ आरोग्यवत्सन्पन्नो जीवेद्भयंशतं तथा । एतद् दृष्टं प्रसादात्तु तथा व्यासस्य

कर और मनुष्योंपर कृपालु होकर अन्तरिक्ष से वहाँ आई जहाँ गोविन्द थे देवी ने
 कहा कि थोड़ीदूर में शत्रुओंपर विजय पावेगा हे पाण्डव तू अजय है क्योंकि नारा-
 यण तेरे सहायक हैं तुझको इन्द्रभी जयनहीं करसकता यहकहकर वरदायिनी देवी
 चलीगई अर्जुन ने वरपाकर अपने को युद्ध में विजय पायाहुआ जाना और अपने
 रथपर फिरचढ़ा श्रीकृष्ण और अर्जुन ने रथपर चढ़ेहुए अपने शंख बजाये जो
 कोई इसस्तोत्र को मातःकाञ्च पढ़ेगा उसका यत्नों, राक्षसों और पिशाचों से कदापि
 भय नहोगा न उमको सर्पों अथवा राजकुल से भयहोगा वह विवाद में जय पावेगा
 और वन्दनसे छुटजायगा उसको चौरों और दुर्गम जगहों से कुछभय नहोगा संग्राम
 में उसकी विजय होगी और लक्ष्मी मिलेगी वह सौवर्षतक आरोग्य और बलवान
 रहेगा ॥ २२ ॥ मैंने बुद्धिमान् व्यासजीकी कृपा से यह देखा है लोग अपने मोह से इन
 दोनों नरनारायण ऋषियोंको नहीं जानतेहैं आपके सबपुत्र दुरात्मा औरअभिमानिहैं
 यह बचन समयके अनुसारहै कि वह एककालक फन्देमें फँसेहुएहैं, व्यासजी, नारद,

of mankind, appeared in the air and stood before Govind. The goddess:
 "Sbortly thou shalt conquer thy foes, Pandav. Thou art invin-
 cible, because Narayan helps thee. Thou art invincible even by the
 wielder of thunderbolt." Having said this, the giver of boons
 disappeared. Arjun, having got the boon, regarded himself as already
 successful and remounted his chariot. Krishna and Arjun seated
 on the same chariot, blew their celestial conchs. He who reads the
 above hymn every morning has no fear from yakshes, rakshases and
 pishaches. He has no fear from toothed serpents and kings, gains
 victory in discussions and is freed from the bonds of confinement.
 Difficult places and thieves give him no trouble; he gains victory in
 battles and gains wealth. He lives for a hundred years free from
 diseases and becomes strong. I have known all this through the
 grace of Vyasa. People from ignorance do not know the two rishis
 Nar and Naryan. All your sons are wicked and proud; their time

धर्मत ॥ २५ ॥ मोहादतौ न जानति नर नारायणाद्युवी । तव पुत्रा दुरात्मान सधे
 गन्धशालुगा ॥ २६ ॥ प्राप्तकालमिदं चाप्य कालपाशनं गुण्डता । द्वैपायनो नादक्ष
 कण्वो रामस्तथानघ ॥ २७ ॥ अचार्यस्तव सुत न चासौ तद् गृह्णीतवान् । यत्र धर्मो
 एति, कान्तिर्यत्रही श्रीस्तथा मति । यतो धर्मस्तत कृष्णो यत कृष्णस्ततो जय २८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि दुर्गास्तोत्रे

त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

धृतराष्ट उवाच । केपा प्रहृष्टास्तत्राप्रे योधा युध्वाति सञ्जय । उदग्रमनस के
 पा केघादीना विचेतस ॥ १ ॥ केपूव प्राहरस्तत्र युद्धे हृदयकम्पनम् । मामका
 पाण्डयेयावातममाचक्ष्व सत्रय ॥ २ ॥ कस्य सेनासमुद्भये गन्धमादयसमुद्भय । धाच
 प्रदक्षिणाथैष सोघानामभिगर्जताम् ॥ ३ ॥ सञ्जय उवाच । उभया सेनयोस्तत्र

करन, परशुराम, नभ इनसत्र ऋषियोंने आपके पुत्रको बहुत निषेध किया परन्तु इसने
 उमवातको स्वीकार नहीं किया जहाँ धर्म है वही तेजकी कान्ति है और जहाँ नम्रताहै
 वहाँ लक्ष्मी है इसीप्रकार जिधर मुनिलोग हैं उधरही धर्म है और जिधर भीकृष्णहैं
 उधरही विजय है २८ ॥

अध्याय ॥ २४ ॥

• धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय उस युद्धभूमि में किरके शूरवीर अति मसन्न
 मनहोकर लड़ते हुये स्थिर चित्त और किधरके सुवी मनहोकर उद्विग्न चित्तहैं
 और युद्ध के बीच मेरेपुत्रों में से अथवा पाण्डवा में से प्रथम किसने हृदय का
 कंपनेवाला प्रहार किया हे सत्रय इसको मुझ से बर्णन करो और किसकी सेना
 ओं में सुगन्ध युक्त पुष्प मालाओं के उदय में अत्यन्त गर्जना करने वाले शूरोंके

of death is near and they are already entangled in the meshes of
 death Vyas Narad Kanva Parashuram and Nabh have all
 prevented thy sons but they gave none to their counsels. Glory
 and beauty go hand in hand with dharm and prosperity is attached
 to mdesty Dharm goes with munis and victory falls on the side
 where Krishn is 23

CHAPTER XXIV

'The warriors of which side asked Dhritrashtra of Sanjaya
 'advanced cheerfully in the field of battle? Who were confident and
 who were despondent? Who struck the first blow in that dreadful
 battle mine or those belonging to the Pandavas? Tell me all this
 O Sanjaya. Whose warriors adorned with garlands of sweet scented
 flowers uttered loud shouts indicative of prowess? The warriors,

योधा व
फानां व
शब्दस्तु
सेनयो
राणां च

।: सुगन्धानामुभयत्र समुद्भवः ॥ ४ ॥ संहतानामनी-
र्गात् समुदीर्णानां विमर्हः सुमहानभूत् ॥ ५ ॥ घादित्र
: । शूराणां रणशूराणां गर्जतामितरेतरम् ॥ ६ ॥ उभयोः
वत् । अन्योन्यं दौक्ष्यमाणानां योधानां भरतर्षभ । कुञ्ज
दृश्यताम् ॥ ७ ॥

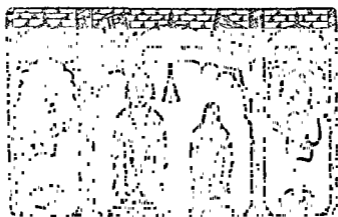
पर्वणि भगवद्गीतापर्वणि धृतराष्ट्र संजय संवादे
विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

वचन
वीर
भरत
ओं व
और
में फे

नेवाले हैं संजय बोले कि वहां दोनों सेनाओंके शूर
ला है और दोनों सेनाओंमें सुगन्धता फैल रही है हे
मिलीहुई मिलाप से बडारूप धारण करने वाली सेना
और शत्रु और भेरियों से मिलेहुये परस्पर के शब्द
पर गर्जने वाले शूरवीर पुष्पों केभी शब्द सबस्थान
सेनाओं के बीच परस्पर देखने वाले शूरवीर और
गर्जने वाले हाथी और प्रसन्न चिह्न सेना के चिह्नों में बड़ा खेद हुआ ॥ ७ ॥

of both the armies," replied Sanjaya, "are cheerful. The flower garlands of both sides give forth equally sweet smell. Both the formidable armies met in a fierce combat and fought bravely, filling the whole place with the sounds of conchshells and drums and the fierce roars of the warriors. Fierce was, O king, the encounter of the warriors, staring at one another, and of the roaring elephants, giving much trouble to the cheerful warriors." 7.





॥ श्री मद्भगवद्गीता ॥

धृतराष्ट्र उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सव । मामका पाण्डवाश्चैव
 किमकुर्वत सञ्जय ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । दृष्ट्वा तु पाण्डवानि बभूवुः दुर्योधनस्तदा ।
 आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं
 भूमम् । व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता । ३ ॥ अत्र दूरा महोत्सा गीमान्जुनसमा
 युधि । युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथ ॥ ४ ॥ धृष्टकेतुश्चेकितान काशिराजश्च
 वीर्यवान् । पुरुजित् कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुंगव ॥ ५ ॥ युधामन्युश्च विक्रान्त उत्त
 मौजाश्च वीर्यवान् । सौमद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथा ॥ ६ ॥ अस्माक-
 तु विशिष्टा ये तान्निवोद्य द्विजोत्तम । नाथका मम सैन्यस्य सन्नार्थं तान् ब्रवीमि ते ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ १ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्र में मिलेहुए युद्धाभिलाषी मेरेपुत्रों
 ने और पाण्डवों ने क्या २ काम किये १। संजय बोले कि हे राजा धृतराष्ट्र उस
 समय राजा दुर्योधन पाण्डवों की व्यूहरची हुई सेनाको देखकर द्रोणाचार्यजी से
 यह वचन बोला २। कि हे आचार्यजी द्रुपद के बेटे अपने शिष्य धृष्टद्युम्न से व्यूह
 रचीहुई पाण्डवोंकी बड़ी सेनाको देखो । ३ । इस सेनामें बड़े धनुषधारी युद्धमें कुशल
 भीमसेन और अर्जुन के समान जो २ वीर हैं उनके नाम यह हैं युयुधान, विराट,
 महारथी द्रुपद । ४ । धृष्टकेतु, चेकितान पराक्रमी काशिराज, पुरुजित, कुन्तिभोज
 नरोत्तम शैब्य । ५ । पराक्रमी युधामन्यु विक्रान्त तथा उत्तमौजा सुभद्राकापुत्र अभि-
 मन्यु द्रौपदी के पांचोपुत्र यह सब महारथीहैं । ६। हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ हमारे जो विशिष्ट

THE BHAGAVAD-GITA

LECTURE I

Dhritrashtra said—“Tell me, O Sanjaya what the people of my own party, and those of the Pandavas, who are assembled at Kurukshetra resolved for war, have been doing” 1 Sanjaya replied—“Duryodhan having seen the army of the Pandavas drawn up for battle, went to his Preceptor, and addressed him thus”—2. “Behold O master,” said he, “the mighty army of the sons of Pandu drawn up by thy clever pupil, the son of Drupada 3 In it are heroes, such as Bhishm or Arjuna; there is Yudhishthira and Virata and Drupada (4) and Dhishhtaketu and Chakitana, and the valiant prince of Kasi, and Purujit, and Kuntibhoja and Shubhya a mighty chief (5) and Yudhamanyu and Vikranta, and the daring Uttamouja, so the son of Subhadra, and the sons of Drupada all of them great in arms. 6 Know also the names of those of our party who

भवान् भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च स मतिप्रय । अश्वत्थामा विकर्णश्च सैमिदात्तज्जयद्रथ
 ॥ ८ ॥ अथे च वहव शूरा मदर्थे त्यक्तजीविता । नानाशस्त्रप्रहरणा सर्वे युद्धविशा
 रदा ॥ ९ ॥ अपत्यात् तद्रक्ष्माक वल भीष्माभिरक्षितम् । पट्यात् त्वदिमेतया वल
 भीष्माभिरक्षितम् ॥ १० ॥ अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवास्थता । भीष्ममेवाभिरक्षन्तु
 भवत सर्वे एव हि ॥ ११ ॥ तस्य सञ्जनयन् हर्षं कुरुवृद्ध पितामह । सिंहनाद विन-
 योच्चै शय दध्मौ प्रतापवान् ॥ १२ ॥ तत शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगामुख । सह
 खैवाभ्यर्ण्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ १३ ॥ तत श्वेतैर्हयैर्युक्त महति स्यन्दने
 स्थिता । माधव पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रध्मन्त ॥ १४ ॥ पाञ्चजन्य हृषीकेशो देव

लोगहैं उनके भी नामों को सुनो । ७ । आप, भीष्म, कर्ण युद्धके विजय करने वाले
 कृपाचार्य, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्तका पुत्र आदि । ८ । अनेक शूरहैं वह सबमेरे
 निमित्त जीवनके त्यागने वाले नानाप्रकार के शस्त्रों के धारण करने वाले सबके
 सब युद्ध में बड़े कुशल हैं । ९ । भीष्मजी भे रक्षित हमारी सेना अधिक होनेके
 कारण दुराधर्ष है और भीमसेन से रक्षित पाण्डवों की सेना न्यून होनेके हेतुसे धर्ष
 णा के योग्यहै । १० । सब लोग अपने २ मोरचों पर यथा विभाग स्थितहोकर
 भीष्मजीकी चारों ओर से रक्षा करें । ११ । और कौरवोंमें वृद्ध प्रतापवान भीष्म
 जीने दुर्योधन को प्रसन्न करने के लिये सिंहनाद के समान शंख बजाने को किया
 । १२ । तदनन्तर शखभेरी डोल, आनन, गोमुख आदि बाजे चारों ओर से बजे
 और महा शब्दहुए । १३ । उसके पीछे श्वेत घोड़ोंसे जुतेहुए बड़े रथ पर सवारहोकर
 माधवजी और पाण्डव अर्जुन ने दिव्यशंखों को बजाया । १४ । अर्थात् हृषीकेश

are the most distinguished. I will ment on (a few of) my generals
 7 Thyself, Bhishma, Karna and Kripa, the conqueror in battle,
 and Aswatthama, and Vikarna, and the son of Soma datta, with
 others (8) in vast numbers who for my service have forsaken the
 love of life. They are all of them practised in the use of arms
 and experienced in every mode of fight. 9 Our innumerable
 forces are commanded by Bhishma, and the inconsiderable army
 of our foes is led by Bhim. 10 Let all the generals, according
 to their respective divisions stand in their posts, and one and all
 resolve to support Bhishma. 11 The ancient chief Bhishma the
 grand-ire of the Kurus then shouting with a voice like a roaring
 lion, blew his shell to raise the spirits of the Kuru chief, (12)
 and instantly innumerable conch shells, and other warlike instru-
 ments, were struck up on all sides, so that the clangour was
 excessive. 13 At this time Krishna and Arjuna seated in a
 splendid chariot drawn by white horses, sounded their conch shells
 which were of celestial form. 14 the name of the one which was

दत्तं धनञ्जयः । पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ १५ ॥ धनन्ताविजय
 राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । नकुल, सहदेवश्च सुघोषमाणपुष्पकौ ॥ १६ ॥ काश्यपश्च
 परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः । धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्याकश्चापराजितः ॥ १७ ॥
 द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः शृण्वीपते । सौमद्रथ महाबाहुः शङ्खं च दध्मुः पृथक् पृथक्
 ॥ १८ ॥ स घोषा धातैराष्टाणां हृदयानि व्यदारयत् । नभश्च पृथिवीञ्चैव तुमुलो-
 प्यनुनादयन् ॥ १९ ॥ अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा धातैराष्टान् कण्ठध्वजः । प्रवृत्ते
 शस्त्रसन्नाते वनरुघ्नस्य पाण्डवः ॥ २० ॥ हृषीकेश तदा वाक्यमदमाह महीपते ।
 अर्जुन उवाच । सेनयोद्धमयोर्मध्ये रथं स्थापय मेच्युत ॥२१॥ यावदेतान् । नरीक्षेहं योद्धु

(श्रीकृष्णाजी) ने पांजजन्य नाम शंख और अर्जुन ने देवदत्त नाम शंखको वजाया
 और भीमने पौंड्र । १५ । कुन्ती पुत्र राजा युधिष्ठिर ने अनन्त विजयनाम शंखको
 और नकुल सहदेव सुघोष और मणिपुष्पक नाम शंखको वजाया । १६ । और
 बड़े धनुषधारी काशिराज, महारथी शिखंडी, और धृष्टद्युम्न, विराट और विजयी
 सात्यकी, । १७ । द्रुपद और द्रौपदी के पांचों पुत्र, महाबाहु अभिमन्यु इन सबोंने
 सब ओरमे पृथक् २ शंखों को वजाया । १८ । इन सब शंखों के महा शब्दों से
 धृतराष्ट्र के पुत्रों के हृदय निदीर्ण मे होगये और पृथ्वी से आकाश पर्यन्त शब्द
 व्याप्त होगया । १९ । तदनंतर वानरध्वज अर्जुन धृतराष्ट्र के पुत्रों को व्याकुल
 और अचंचे प्रकार से नियत देख कर शस्त्रों के महार होनेके समय धनुष को उठा-
 कर । २० । सब जगत् के स्वामी हृषीकेश श्रीकृष्णाजी से यह वचन कहने लगा
 कि हे अग्निाशी कृष्ण मेरेरथको दोनों सेनाओं के मध्य में नियत करो । २१ ।
 प्रथम में इन युद्ध में स्थिरगूरुवीरों को देखूं कि इस युद्ध के आरंभ में शुभकी किस

blown by Kri-hna was Panchajanya, and that of Arjuna was called
 Deva datta. Bhima of dreadful deeds blew his capacious shell
 Powndra and Yudhishtira the royal son of Kunti sounded Ananta-
 Vijaya, Nakula and sahadeva blew their shells also; the one called
 Sughosha, the other Manipushpaka 16 The prince of Kasi of
 the mighty bow, Sikhandi, Dhristadyumna, Vnata, Satyaki the
 invincible, Drupada and the sons of his royal daughter, Krishna,
 with the son of Subhadra, and all the other chiefs and nobles, blew
 also their respective shells; 18 so that their shrill sounding noise
 pierced the hearts of the Kurus and re echoed with a dreadful noise
 from heaven to earth. 19. In the mean time Arjuna, perceiving
 that the sons of Dhritarashtra stood ready to begin the fight, and
 that the weapons began to fly abroad, having taken up his bow,
 [20] addressed Krishna in the following words Arjuna — " I pray
 thee, Krishna, cause my chariot to be driven and placed between the
 two armies, [21] that I may behold who are the men that stand

कामान वस्थितान् । कैर्गया राह् योद्धव्यमभिमन्त्रणसमुद्यमे ॥ २२ ॥ योत्सयमानानवे-
 चेहं य पतेऽन सम गता । धार्तराष्ट्रस्य दुर्धुद्धयुद्धे प्रियाचिकीर्षदः ॥ २३ ॥ सञ्जय
 उवाच । एतमुक्तो हृषीकेशो गडाकेशेन भासत । सेनयोः कथयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथो-
 त्तमम् ॥ २४ ॥ भीष्मद्रोणप्रमूयतः सर्वेषां च महर्षिक्षताम् । उवाच पार्थ पश्यैतान्
 समवेतान् कुरुनिति ॥ २५ ॥ तत्रापश्यत् स्थितान् पार्थ पितृनघ पितामहान् ।
 आचार्यान् मानुलान् भ्रातृन् पत्रान् पौत्रान् सखींस्तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान् सुहृद्वैष
 सेनायोः कथयोः गवि । तान्समीक्ष्य सकौन्तेषुः सर्वान् बन्धून् वस्थितान् २७ कृपया परया विष्टो
 विप्रीदग्निदग्मप्रजान् । अर्जुन उवाच । दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुसमुपस्थितम् ॥ २८ ॥
 सीदान्तममगन्नाणि मुखत्र परिगन्धति । वेपथुश्च शरीरे मे रोमांश्चक्ष्व जायते । २९ ॥
 गाण्डीवं संसते हस्तात् त्वक्चैव परिदह्यते । नच शोकोऽप्यवस्थात् भ्रमतीव च मे मनः

से वा किस को मुझ से लड़ना उचित है । २२ । जो यह राजा लोग इस दुर्धुद्धी
 दुर्योधनकी सहायता करने को यहां आये हैं इन सब युद्धाभिलाषियों को मैं देखूं
 । २३ । संजय बोले कि इस गकार से अर्जुन के वचनों को सुनकर श्रीकृष्णजी
 अर्जुन के रथको दोनों सेनाओंके मध्य में नियतकर । २४ । भीष्म द्रोणाचार्य आदि
 सब राजाओं के सम्मुखकर यह वचन बोले कि हे अर्जुन इन मिले हुए कौरवों को
 देखो। २५। यहां अर्जुनने पिता पितामह आचार्य मामा भाई पुत्र और मित्रोंको और कृतवर्मा
 आदि श्वशुर और सुहृदों को दोनों सेनाओंके मध्यवर्ती इनसब वीथवादिको । २७।
 अपने नेत्रों से देखकर यह बड़ी कष्टणा से वचन बोला कि हे श्रीकृष्णजी इन
 युद्धाभिलाषी सुजन सुहृद पिता पितामह गुरु भाई बन्धु और पुत्र पौत्रादिकों को
 अपने सम्मुख युद्ध करनेके निमित्त नियत देखकर । २८ । मेरे अंग शिथिल होते
 हैं मुख में शुष्कताहोकर शरीर में कंप और रोमांचखड़े होते हैं । २९ । हाथ से
 गांठीव धनुष गिरा पड़ता है और शरीर की त्वचा भस्म हुई जाती है यहां खड़े

ready, anxious to commence the bloody fight; and with whom it is
 that I am to fight in this ready field; [22] and who they are that
 are here assembled to support the vindictive son of Dhritiashtra in
 the battle." [23]. *Sanjay*—" Krishna being thus adressed by
 Arjuna, drove the chariot in the midst of the two armies, [24] and
 bade Arjuna cast his eyes towards the ranks of the Kurus 25 He
 looked at both the armies, and beheld, on either side, none but grand-
 sires, uncles, cousins, tutors, sons, and brothers, near relations or
 bosom friends. 26. And when he had, gazed for a while, and
 beheld such friends as these prepared for the fight, he was seized
 with extreme pity and compunction; and uttered his sorrow in the
 following words: Arjun—"Having beheld O Krishna! my kindred
 thus standing anxious for the fight, (28) my members fail me,
 mouth dries up, the hair stands on end and all my frame trembles,

॥ ३० ॥ निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव । नच श्रेयोनुपदयामि हत्वा
 स्वजन मादये ॥ ३१ ॥ न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च । किन्तो राज्येन
 गोविन्दुं किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ ३२ ॥ येषामर्थे काङ्क्षितं गो राज्यं भोगाः सुखानि च ।
 तद्दमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा घनानि च । तद्दमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा
 घनानि च ॥ ३३ ॥ आचार्य्याः पिताः पुत्रास्तथैव च पितामहाः । मातुलाः
 श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥ ३४ ॥ एताश्च हन्तुं मच्छामि
 प्रतेपि मधुसूदन । धृषि त्रैलोक्य राज्यस्य हेतोः किन्तु महाकृते ॥ ३५ ॥ निहत्य
 धार्तराष्ट्र वः का प्रीतिः स्याज्जनाईन । पापमेवाश्रयेद्दस्मान् हृत्वेतानाततायिनः ॥ ३६ ॥
 तस्मान्मार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान् सवान्धवान् । स्वजनं हि कथं हत्वा सुचितः स्याम

होनेको भी असमर्थ होकर मेरा चित्त चलायमान होता है । ३० । और हे कृष्ण
 मैं विपरीत शकुना कोभी देखता हूँ, युद्ध में अपने मुजन लोगों को मारकर पीछे
 से अपना कल्याण नहीं देखता हूँ । ३१ । हे श्रीकृष्ण मैं विजय करके राज्य
 सम्बन्धी सुखों को नहीं चाहताहूँ, राज्य से हमको क्या लाभ है और जीवनकरके
 भोगों से क्याफल होगा । ३२ । हम जिन लोगों के लिये राज्य सुख और भोगों
 को चाहतेहैं वही सब लोग अपने प्राणवन आदि सुखों को त्याग करके इस युद्ध
 में वर्तमान हैं । ३३ । अर्थात् आचार्य्य, पिता, पितामह, मामा, श्वशुर, पोतेसाल
 वहनोई इत्यादि अनेक नतिदार लोग । ३४ । हे मधुसूदन मैं त्रिलोकी
 के भी राज्य के लिये इन मारने वालोंको भी नहीं मारना चाहताहूँ तो क्या पृथ्वी
 के लिये इनको मारूंगा । ३५ । हे जनार्दन धृतराष्ट्र के भी पुत्रों को मारकर इन्हको
 क्या सुख होगा इन आततायियोंकाभी मारनेसे हमको पापही होगा । ३६ । इसकारण

29. Even Gandiva, my bow, slips from my hand, and my skin is parched and dried up. I am not able to stand; for my head swims.
 30. I behold inauspicious omens on all sides. When I shall have destroyed my kindred shall I longer look for happiness? 31. I wish not for victory, Krishna; I want not pleasure; for what is dominion, and the enjoyments of life, or even life itself, 32. when those, for whom dominion, pleasure, and enjoyment were to be coveted, have abandoned life and fortune, and stand here in the field ready for the battle? 33. Tutors, sons and fathers, grandsires and grandsons: uncles and nephews, cousins, kindred, and friends! 34. Although they would kill me, I wish not to fight them, no, not even for the dominion of the three regions of the universe, much less for this little earth! 35. Having killed the sons of Dhritrashtira, what pleasure, O Krishna, can we enjoy? Should we desecrate them,

माधव ॥ ३७ ॥ यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः । कुलक्षयकृत दोष मित्रद्रोहं च पातकम् ॥ ३८ ॥ कथं न क्षयस्माभिः पापाद्दस्मान्निवर्तितुम् । कुलक्षयकृत दोष प्रपद्याद्भिर्जनैर्न ॥ ३९ ॥ कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्मा सनातन । धर्मो नष्ट कुलं क्लृप्तमधर्माभिभवत्यत ॥ ४० ॥ अवर्माभभवान् दृष्ट्वा प्रदुःखात् कुलक्षय । स्त्रीषु दुष्टेषु घातैषु जायते वर्णसङ्करः । ४१ ॥ सङ्करो नरकस्यैव कुलघ्नानां कुलक्षयश्च । पतन्ति पितरा दैत्या लुप्तपिण्डोदकाक्रया ॥ ४२ ॥ दापैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः । उन्नाद्यन्त जातिधर्मा कुलधर्माश्च शाश्वता ॥ ४३ ॥ उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन । नरके नियतं घासो भवतीत्यनुशुभम् ॥ ४३ ॥ अहो

हम अपने बांश्व धृतराष्ट्र के पुत्रोंके मारने को योग्य नहींह हेमाधवजी हम मुजनोंको मारकर कैसे सुखी होंगे । ३७ । यद्यपि लोभा कर्षित चित्त होकर लोग कुलके नाश रूप दोषको और मित्रों के साथ शत्रुता करने के पातक को नहीं देखते हैं, । ३८ । हे जनार्दन कुल के नाश होनेसे उत्पन्न दोषों को देखने वाले हम लोगों को इस पाप से अलग रहना क्यों नहीं चाहिये । ३९ । कुल के नाश में कुल के परम्परा सम्बन्धी कुल धर्म भी नष्ट होतेहैं और धर्म के नष्ट होनेसे सम्पूर्ण कुल अधर्मी होजाता है । ४० । और अधर्म अधिक होनेसे कुलकी स्त्रियां दोषयुक्त होजाती हैं, हे दृष्टिग वंशी दुष्ट स्त्रियोंमें वर्णसंकर उत्पन्नहोताहै । ४१ । कुल के नाश करनेवालोंके घरानेका वर्णसंकर नरकही के लिये है उनके पितृ लोग पिंड जल आदि क्रिया के गुप्त होजाने से स्वर्ग से गिरते है । ४२ । कुलके नाश करने वाले पुरुषों के इन वर्णसंकर करने वाले दोषों के कारण प्राचीन कुलधर्म जाते रहते हैं । ४३ । हे श्रीकृष्ण जिनके

tyrants as they are sin would take refuge with us 36 It therefore behoves us not to kill such near relations as these. Ho, O Krishna, can we be happy hereafter, when we have been the murderers of our race? 37 What if they whose minds are depraved by the lust of power see no sin in the extirpation of their race, no crime in the murder of their friends (38) is that a reason why we should not resolve to turn away from such a crime we who abhor the sin of extirpating the kindred of our blood? 39 In the destruction of a family, the ancient virtues of the family is lost. Upon the loss of virtue, vice and impiety overwhelm the whole of a race. 40 From the influence of impiety the females of a family grow vicious, and from women that are become vicious are born the spurious brood called Varna Sular 41 The Sanku provides Hell both for those which are slain and those which survive, and therefore of theirs being deprived of the ceremonies of cakes and water offered to their manes, sink into the infernal regions 42 By the crimes of those who murder their own relations, s are cause of condemnation and birth of Varnasinkars,

यत् महापातं कर्तुं व्यवसिता वयम् । यद्राज्यसुखलाभेने दन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥४४॥
 याद् मानप्रतीकारमहास्र्जं राज्ञ पाणयः । धात्तैराद् म्णै द्युस्तन्मे क्षेमतर भवेत् ॥४६॥
 सन्नय उवाच । एवमुक्त्वाञ्जुन साहयो रथोपस्य उपाविशत् । विद्यज्य मशरं चाप शोक
 संविग्नागामः ॥ ४७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि श्रीकृष्णार्जुन विषाद
 योगोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

कुल धर्म लोप होगये हैं उन मनुष्यों को सदैव नरक का निवास होता है यह वड़े
 लोग कहते आये हैं । ४४ । वड़े दुःख और पश्चात्ताप की बातें कि हम उनवड़े
 पप करने के निश्चय करने वाले हुये जो राजसुखके निमित्त अपने मुजनोंको
 लोभसे मारने को उद्यत हुये । ४५ । जो धृतराष्ट्र के पुत्र शस्त्रधारी होकर मुझ
 अशस्त्रधारी सन्मुखता से रहित को मारें तो मेरा बड़ा कल्याण होवे । ४६ । संजय
 बोले कि इसप्रकार शोकग्रस्त चित्त अर्जुन युद्ध में ऐसे करुणापूर्वक वचनोंको
 कहकर धनुषबाणको रखकर रथ में बैठगया ॥ ४७ ॥

the family virtue, and the virtue of a whole tribe is for ever done
 away with. 43. And we have been told, O Krishna, that the
 habitation of those mortals whose generation has lost its virtue,
 shall be in Hell. 44. "Woe is me! what a great crime are we prepar-
 ed to commit! Alas! that for the lust of the enjoyments of
 dominion we stand here ready to murder the kindred of our own
 blood! 45. I would rather patiently suffer that the sons of Dhrita-
 rashtira, with their weapons in their hands, should come upon me,
 and, unopposed, kill me unguarded in the field." 46. *Sanjaya*—
 "When Arjuna had ceased to speak, he sat down in the chariot
 between the two armies; and having put away his bow and arrows,
 his heart was overwhelmed with affliction." 47.



संजय उवाच । तन्तथा कृपयाविष्टमश्रुपर्णा कुलेक्ष्णम् । विपीदि तमिदं पात्रय
 लुवाच मधुसूदन ॥ १ ॥ आभगवानुवाच । कुनस्त्वा कश्मत्तमिदं विपमे समुपरिग
 तम् । अनार्य्येक्षुष्ट मभ्यर्ग्यं यकीर्त्तिकर र्जन ॥ २ ॥ क्लैव्य मात्म गमं पार्थ
 नेतवत्प्रपद्यत । क्षुद्र हृदयदौर्दण्य त्यक्तास्रष्ट पर तप ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच ।
 कथं भाष्ममहं सख्यं द्राणश्चमधुसूदन । इषुभिः प्रातयोत्स्याम पूजाहावरिन्सूदन । ४ ॥
 गुरुनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्षमपोह लोके । हत्वार्थकामास्तु गुरुनिहैव
 भुञ्जीय भोमान् रुधिरप्रादिग्धान् ॥ ५ ॥ न चैतद्विभ्रं कतरन्नो गरीषो यद्वा जयम यदि

अथाय ॥ २ ॥

संजय बोले कि स्नेहयुक्त कृपासे भरेहुये अश्रुपात समेत व्याकुल और दुखी
 अर्जुन को जानकर मधुसूदन श्रीकृष्णजी यह वचन अर्जुन से बोले । १ । कि हे
 अर्जुन इस युद्धमें ऐसा मोह तुझको काहेसे उत्पन्न हुआ यह मोहस्वर्ग रोकनेवाला
 और आपकीर्त्तिका प्रकट करने वाला है ऐसे मोहको नपुंसकलोग करते हैं इससे
 हे अर्जुन तू नपुंसक मतहो यह तुझको उचित नहीं है हे शत्रुहन्ता अर्जुन हृदयकी
 इस क्षुद्र दुर्धलताको त्यागकर सदाहोजा । ३ । यहनुन कर अर्जुन बोले कि हे
 मधुसूदनजी मैं युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्म पितामह के सम्मुख उनसेशस्त्रोंके
 द्वारा कैसे लड़ूँ हे शत्रुघ्न कृष्ण वह दोनोंमेरेपुज्यतम हैं । ४ । वडे प्रभाववाले गुरुओं
 को न मारकर इसलोक में भिक्षाकाही अन्न खाना उगम है और अर्थ के चाहने
 वाले गुरुओंको मारकर इस लोक में रुधिरसे भरे हुए भोगोंको भोगेंगे । ५ । और यह
 भी हम नहीं जानते कि हम गुरुओंको विजय करेंगे वा गुरु हमको विजय करेंगे

LECTURE II

(The nature of the soul)

Sanjaya—" Krishna beholding him thus influenced by compunc-
 tion, his eyes overflowing with a flood of tears, and his heart
 oppressed with deep affliction addressd him in the following words"
 1 Krishna—" Whence O Arjuna comes unto thee, this folly
 and unmanly weakness? It is disgraceful contrary to duty and
 the foundation of dishonour 2 Yield not thus to unmanliness,
 for it ill becomes one like thee. Abandon this despicable weakness
 of thy heart, and stand up" 3 Arjuna—" How, O Krishna, shall
 I resolve to fight with my arrows in the field against such as
 Bhishma and Drona, who of all men are most worthy of my respect.
 I would rather beg my bread about the world, than be the murderer
 of my preceptors to whom such awful reverence is due. Should I
 destroy such friends as these, I should partake of possessions, wealth,
 and pleasures polluted with their blood 5 We know not whether
 it would be better that we should defeat them, or they us for those,

वा नो जययुः । यानेव हत्या न जिजीविष मस्तेवन्विताः प्रमुने धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥
 कार्यण्यदेपोपहतस्वभावः पृच्छा शिवां धर्मसंप्रदक्षेताः । यच्छ्रेयः स्वात्प्रार्थितं श्रु-
 तन्ने शिष्यस्तेऽहं शशि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ ७ ॥ ताह प्रपश्यामि मिमापनुयात् यच्छो-
 कमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् । अवाप्यभूमावसपत्नन्देहं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ८
 सत्रय उवाच । एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परश्रतपः । न योत्स्ये इति गोविन्दमु-
 क्त्वा तर्षणीं बभूव ह ॥ ९ ॥ तमुवाच हृषीकेशः प्रदसाधय भाग्य । सेनयोर्वृ-
 योर्मध्ये विपादन्तमिदं वचः ॥ १० ॥ श्रीभगवानुवाच । अशोच्यामन्वशोचस्त्व-
 प्रज्ञावादांश्च मापसे । गतास्नगतास्सुश्च नानुशोचात् पाण्डताः ॥ ११ ॥ नत्वेवाहं

और हम जिनको मारकर जीवन के इच्छवान् नहीं हैं वह धृतराष्ट्र के बेटे सम्भुस्य
 वर्त्तमान हैं । ६ । हे कृष्ण मैं दीनता युक्त दूषित प्रकृतिवाला धर्म में असावधान
 चित्त होकर आपसे पूछताहूँ कि जो आपने मेरे निमित्त कल्याण निश्चय किया
 है उसको कृपाकरके मुझ से कहिये क्योंकि मैं आपका शिष्यहूँ आपअपनी
 शरणागततामें मुझको उपदेश कीजिये । ७ । पृथ्वीपर वृद्धियुक्त निर्विभाग शत्रु-
 ता रहित अथवा धन आदि से परिपूर्ण राज्यको और देवताओं की प्रभुता को
 भी पाकर इन्द्रियोंका सुखाने वाला जो मेरा शोकहै उसके दूरहोने का मैं कोई
 भी उपाय नहीं देखता हूँ । ८ । शत्रुओं का संतप्त करने वाला अर्जुन श्री कृष्ण
 जी से यह वचन कइकर कि युद्ध नहीं कख्ना मौन होगया । ९ । यहदशश्लोककर
 दोनों सेनायों के मध्य में हँसनेहुए श्रीकृष्णजी अर्जुनको अत्यन्त दुखी जानकर
 यह वचन बोले । १० । कि अर्जुन जो शोक के योग्यही नहीं हैं उनको तू शोचता है
 और पंडितोंके वचनों को कहता है परन्तु पंडित लोग उन पुरुषोंको जिनके कि
 शरीर छूटगये अथवा शरीर में प्राण नियत हैं अर्थात् आत्मा के अविनाशी होने

whom having killed, I should not wish to live, are even the sons and
 people of Dharma'sutra who are here drawn up before us. 6. My
 compassionate nature is overcome by the dread of sin. Tell me truly
 what may be best for me to do. I am thy disciple, wherefore instruct
 me in my duty. 7. For my understanding is confounded by the
 dictates of my duty, and I see nothing that may assuage the grief
 which dries up my faculties, although I were to obtain a kingdom
 without a rival upon earth, or dominion over the hosts of heaven "8.
 Sanjaaya — " Arjuna having thus spoken to Krishna, and declared
 that he would not fight, was silent. 8. Krishna smiling, addressed
 the afflicted prince, standing in the midst of the two armies, in the
 following words. 10. Krishna — " Thou grieveest for those who are
 unworthy to be lamented whilst thy sentiments are those of the
 wise men. The wise neither grieve for the dead nor for the living. 11

जातु नास त्व नेमे जनाधिपा । न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥ १२ ॥
 देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमरं यौवनं जरा । तथा देहान्तरमा सर्धोरस्तत्र न मुह्यति
 ॥ १३ ॥ मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः । जगन्मापायिनो निरवास्तां-
 भित्तिक्ष्व भारत ॥ १४ ॥ यं हि न व्यथयत्येतं पुरुषं पुरुषपते । समदुःखसुख
 धीरं स्यात्सुतस्य कश्यपे ॥ १५ ॥ नासते विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
 उभयोरपि दृष्टोन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ १६ ॥ अविनाशितु तादाह यत्न सर्वमि-
 दंततम् । अनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ १७ ॥ अन्तवन्त इमे देहा
 नित्यस्योक्ताः शरीरिणः । अनाशनोऽप्रमंयस्य तस्माद्बुध्वस्य भारत ॥ १८ ॥ य एनं

से नहीं शोचते हैं १२.१। मैं कभी नहीं हुआ और तुम्हसमेत यह सब राजा लांगभी
 कभी नहीं हुए न इतक पीछ हम सब उत्पन्नहोंगे यहवात नहीं है। १२.२। जैसे कि स्थूल
 शरीर में बाल्यावस्था, तरुणावस्था और वृद्धावस्था यह तीनों दशाहंती हैं इसी
 प्रकार अन्य शरीर की प्राप्ति है, वहाँ ज्ञानी पंडित माहको नहीं पाता १२.३। हेकुन्ती
 पुत्र अर्जुन इन्द्रियों की दृष्टियों के शब्दादि विषय देखना खाना सूंघना और
 शीतोष्णता आदि सुख दुःख के देने वाले उत्पीछ नाशयुक्त सब विनाशवान हैं
 इससे हे भरतर्षभ तू इनको सहनकर । १४। हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ जिस सुख दुःख
 में एकसे रहनेवाले ध्यानी और योगी पुरुषको यह पीड़ा नहीं देते हैं वह मोक्षके
 योग्य समझाजाता है, १२.५। अनावरूपी वास्तुका भावभी नहीं है और सतरूप ब्रह्मका
 अभाव वर्तमान नहीं है । १६ । उस सत अर्थात् सत्यको जिससे कि यह जगत्
 व्याप्तहोरहा है अविनाशीजानो इस न्यूनग रहित आत्माके नाशकरनेको कोई भी
 समर्थ नहीं है । १७ । आते प्राचीन निरवाधि अविनाशी आत्मा के यह सब शरीर

I myself never was not, nor thou, nor all the princes of the earth; nor shall we ever hereafter cease to be. 12. As the soul in this mortal frame finds infancy, youth, and old age; so, in some future frame, will it find the like. One who is confirmed in this belief, is not disturbed by any thing that may come to pass 13. The sensibility of the faculties gives heat and cold, pleasure and pain; which come and go, and are transient and inconstant. Bear them with patience, O son of Bharata. 14. For the wise man, whom these disturb not and to whom pain and pleasure are the same, is formed for immortality. 15. A thing imaginary has no existence whilst that which is true is a stranger to nonentity. 16. By those who look into the principles of things, the design of each is seen. Learn that he by whom all things were formed is incorruptible, and that no one is able to effect the destruction of this thing which is inexhaustible. 17. These bodies, which envelope the souls which inhabit them are eternal incorruptible, and surpassing all conception, are declared to be finite

वेत्ति हन्तार यथैन हन्यते हतम् । उभौ तौ । विजानीतो नाथ हान्त न हन्यते १९ ॥
 न जायते भ्रयते वा कदाचिन्नाथ भूत्वा भावता वा न भूय । अजा अत्य शश्वताथ
 पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥ वेदारिणाशन नित्य य एन्मजमन्वयम् ।
 कथं पुरुष पार्थ क घातयात हान्तवम् ॥ २१ ॥ वासास्त्रि जीर्णानि यथा
 विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽप्यगणि । तथा शरीराण विहाय जाणम्यन्त्रानि स
 याति नवाने देही ॥ २२ ॥ नैन छिन्दन्ति शस्त्राण नैनदहति पावक । न चैन
 क्लृष्यत्यापो न शोषयति मारुत ॥ २३ ॥ अक्षेत्र्योयमद् हायमक्लेत्रोऽशोष्य
 एवञ्च । नित्य सर्गग्न इद्याण् रचलोप सनातन ॥ २४ ॥ अद्यजायमाचिन्त्यो

नाशवान् कहे हैं इसकारणते हे अर्जुन तुम युद्ध में प्रवृत्तहो । १८ । जो पुरुष इस
 आत्माको मारनेवाला समझताहै और जो इसको मराहूया मानताहै वहदोनों अज्ञानी
 है, यह कभी न मरता है न कोई इसका मारनवाला है । १९ । यह आत्मा न कभी
 उत्पन्न होताहै न मरताहै और न पहले उत्पन्नहुआहै न पीछे उत्पन्न होगा यह
 अजन्मा आत्मा नित्य और प्राचीनता के कारण सदैव एक रूपहै यह अनित्य देहों
 के मरनेमें नहीं मरताहै । २० । जो इसआत्माको आविनाशी और नित्य अजन्मा और
 न्यूनतासे रहित जानता है वह सब शरीरोंमें पूर्ण आत्मारूप पुरुष कसे किसीको
 मारेगा और किस को मरवावेगा । २१ । जैसे कि मनुष्य पुराने वस्त्रोंको त्यागकर
 नवीन वस्त्रोंको धारण करताहै इसीप्रकार आत्माभी पुराने देहोंको त्यागकर दूसरे
 नवीन शरीरोंको प्राप्त करलेता है । २२ । इस आत्माको न शस्त्र छेद सकत न अग्नि
 मलामक्ती न जल गलासक्ता न वायु सुखा सक्ती है । २३ । क्योंकि यह आत्मा
 न छंदनेके योग्य न जलाने के योग्य न गलानेके न सुखाने के योग्यहै यह नित्य
 रूप सर्वत्र वर्तमान सदैव एत दशा में अचलरूप प्राचीन सनातन और अखंड

beings wherefore O Arjun, resolve to fight 18 He who believes that it is the soul which kills and he who thinks that the soul may be destroyed, are both alike deceived, for it neither kills nor is killed. 19 It is not a thing of which a man may say, it has been it is about to be, or is to be hereafter, for it is a thing without birth, it is ancient, constant, and eternal and is not to be destroyed like the mortal frame. 20 How can the man who believes that this thing is incorruptible eternal, inexhaustible and without birth think that he can either kill or cause it to be killed? 21 As a man throws away old garments and puts on new even so the soul, having quitted its old mortal frames enters into new ones. 22 The weapon divides it not, the fire burns it not, the water corrupts it not, the wind dries it not away, (23) for it is indivisible unconsumable, incorruptible and is not to be dried away it is eternal universal, permanent immovable (24) it is invisible, inconceivable

यमविकारयोयमुच्यते । तस्म देव वादित्वेन नानुशोचितुमर्हसि ॥ २५ ॥ अप
 चैन नित्यजात नित्य वा मन्यसे मृतम् । तथाप स्व महावाहा नैन शोचितुमर्हसि
 ॥ २६ ॥ जन्तस्य इह भ्रुवो मृत्युर्ध्रुव जन्म मृतस्य च । तस्मादपरिहार्येण नत्व
 शोचितुमर्हसि ॥ २७ ॥ अयत्तादीनि भूतानि व्यतमघ्यानि भारत । अव्यक्त
 निघनान्यच तत्र का परिदेवता ॥ २८ ॥ आश्चर्यवत् पश्यति कथिदेनमाश्चर्यवत्
 वेदति तथैव चान्य । आश्चर्यवच्चैनमन्य शृणोति श्रुत्वाप्येन वेद न चैवकथित्
 ॥ २९ ॥ देही नित्यस्त्वघ्ना य देहे सर्वस्य भारत । तस्मात् सर्वाणि भूतानि
 नत्व शोचितुमर्हसि ॥ ३० ॥ स्वधर्मपथ चावेक्ष्य न विकल्पितुमर्हसि । धर्म्या सि
 युद्धाच्छ्रेयान्वत् क्षत्रियस्य न त्रियते ॥ ३१ ॥ यदृच्छया चोपपन्न स्वर्गद्वारमपावृतम् ।

है । २४ । यह गुप्तरूप ध्यान स अगम्य और रूपान्तर दशासे पृथक कहा जाताहै
 इन हतुओंस इतका ऐसा जानकर तुम शाचकरन के योग्य नहींहा । २५ । तू इसको
 सदैव मरन व ला और जन्मलने वाला मानताहै तौभी, सोचनकर । २६ । ह महा
 वाहु जन्म लेनेवालेकी मृत्यु भी अवश्यहै और मरनमालेका जन्मभी निश्चयहै इस
 कारण अत्र भावी है इत का कोई भी उपाय नहीं है इसमें तेरा शोच काना वृथाहै
 । २७ । हेभरतवंशी जीवोंका प्रादि विदित नहीहोता म यत्रिदितहाताहै और अन्तभी
 विदित नहींहै एसीदशा में विलाप क्यों करना चाहिय । २८ । काई तो उसका
 माश्र्यरूप से मानताहै और काई आश्चर्यके समान देखता और कहता है और
 काई उसका आश्चर्यकेही समान सुनकर नही जानताहै अर्थात् वह आत्मा देखने
 सुनने और कहनेम नही आता है । २९ । हे अर्जुन यह आत्मा सब के शरिरोंमें नित्य
 और अत्र यह इसकारण हेतातनुमसव जीवधारियोंके शोचनके योग्य नहींहा । ३० ।
 अपने धर्म को देखकर कांपना छाडदो क्योंकि धर्मशुद्ध के सिवाय क्षत्रीका दूसरा

and, unalterable, therefore believing it to be thus thou shouldst not
 grieve. 25 But whether thou believest it of eternal birth and dura-
 tion, or that it dies with the body still thou hast no cause to lament
 it. 26 Death is certain to all things which are subject to birth, and
 regeneration to all things which are mortal, wherefore it does not
 behove thee to grieve about that which is inevitable. 27 The former
 state of beings is unknown, the middle state is evident, and their
 future state is not to be discovered. Why then shouldst thou trouble
 thyself about such things as these? 28 Some regard the soul as a
 wonder, whilst some speak, and others hear of it with astonishment,
 but no one knows what it is. 29 This spirit being never to be
 destroyed in the mortal frame which it inhabits, it is unworthy
 for thee to be troubled for all these mortals. 30 Cast but thy eyes
 towards the duties of thy particular tribe, and it will all become thee
 to tremble. A soldier of the Kshatriya tribe has no duty superior

सुखिनः क्षत्रियाः पाथं लभन्ते युद्धं मीढशम् ॥ ३२ ॥ अथ चेत्वमिमं धर्म्यं संग्रामं
न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कीर्तिञ्च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥ अनीतिं वापि
भूतानि कथाविभ्रान्तिं तेऽवयाम् । सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादात्तारच्यते ॥ ३४ ॥
अयाद्रणादुपरतं संस्यन्त त्वां महारथाः । येषाञ्चत्व वदुमतो भूत्वा यास्यसि ताघ-
घम् ॥ ३५ ॥ अवाच्यवारांश्च यद्वृन् घदिष्यन्ति तवाश्रेताः । निन्दन्तस्तथ साम-
र्थ्या ततो दुःखतरन्नु किम् ॥ ३६ ॥ हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जिता वा भोक्ष्य से
महाम् । तस्ताद्वाच्छ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ ३७ ॥ सुखदुःखे समे कृत्वा
लाभालाभौ जयाजयौ । ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥ ३८ ॥ एषा

कल्याणकारी नहीं है । ३१ । हे अर्जुन बिना इच्छा किसे स्वर्गका द्वार खुला हुआ
वर्तमान है स्वर्ग का मुख पानेवाले क्षत्रा ऐसे युद्ध का पाते हैं । ३२ । जो तू इस
धर्मरूप युद्ध का नहीं करेगा तो अपने धर्म और कीर्तिको त्यागकर पाप का भागी
होगा । ३३ । बहुत समय तक सब जीव तेरी अपकीर्ति को कहेंगे और प्रतिष्ठावान
पुरुषकी अपकीर्ति मरण सभी अधिक दुखदायी होती है । ३४ और सब महारथी
लोग तुम्हका भयके कारण युद्धसे हटा हुआ मानेंगे उन सब लोगोंके आगे तू महान
स्तुतिमाननाकर निन्दायुक्त छुदाई और तुच्छताको पावगा ३५ और तेरे शत्रु तेरे पराक्रम
की निन्दा करते हुए कहनेके अयोग्य अनेक अनुचित बातोंको कहेंगे लज्जावानको इस
से अधिक और क्या दुःख होगा । ३६ मरकर तो स्वर्गको और विजय करके पृथ्वी
के भोगोंको भोगगा हे अर्जुन इसकारण तू युद्धके निमित्त निश्चयकरके उठ खड़ा हो
। ३७ । हानि लाभ जय विजय समानकरके युद्धके निमित्त तैयारीकर इसीति के

to fighting. 31. Just to thy wish the door of heaven is found open before thee. Such soldiers only as are the favourites of Heaven join such a glorious fight as this. 32; But, if thou wilt not perform the duty of thy calling, and fight out the field, thou wilt abandon thy duty and thy honor, and be guilty of a crime. 33. Man-kind will speak forever of thy disgrace. Disgrace to a man of honour is worse than death. 34. The generals of the armies will think that thy retirement from field arose from fear, and thou wilt become despicable even amongst those by whom thou wert wont to be respected. 35 Thy enemies will speak of thee in words which are unworthy to be spoken, and depreciate thy courage and abilities; what can be more dreadful than this! 36. If thou art slain thou wilt obtain heaven, if thou art victorious thou wilt enjoy a world for thy reward; therefore son of Kunti, arise and be determined for the battle. 37. Make pleasure and pain, gain and loss, victory and defeat, the same, and then prepare for battle, then thou shalt

तेभिहिता स्वांश्वे बुद्धियोगे त्विमां नृणु । बुद्ध्या युक्तो यथा पार्थ कर्मवन्दं प्रदास्यसि ॥ ३९ ॥ नेहाभिक्रमनाशोऽत प्रत्यवायो न विद्यते । स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रयते महतो भयात् ॥ ४० ॥ व्यवसायात्मिका बुद्धिरंकुह कुरुनन्दन । घटशाखा एनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायेनाम् ॥ ४१ ॥ याममां पुष्पितांवाचं प्रवदन्त्यधिपश्चित । वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिन ॥ ४२ ॥ दामारमानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् । क्रियाविशेषवद्भुलां भोगैश्चैवर्त्यगतिं प्रात ॥ ४३ ॥ भोगैश्चैवर्त्यप्रसक्तानां तथापहतचेतसाम् । व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विद्यते ॥ ४४ ॥ त्रैगुण्य बुद्धि में तू कभीपापका भागी नहीं होगा । ३८ । हे अर्जुन यह धैरे उपनिषद् और सांख्य सम्बन्धी ब्रह्मज्ञान तुझ से कहा अत्र इमी ज्ञान को कर्म योग में वर्णन करता हूँ इस ज्ञान में प्रवृत्त होकर हे अर्जुन तू कर्म बन्धा को त्याग करेगा । ३९ । इस कर्म योग में प्रारम्भ कर्म का नाश नहीं है और पाप भी नहीं है इस फल की इच्छा रहित कर्म रूपी धर्म का थोड़ा भी करना बड़े भारी संसारी भयसे रक्षा करता है । ४० । हे कौरव नन्दन इस कर्म योग में तत्त्व के निश्चय करनेवाली बुद्धि एकही है और जिनको तत्त्व का निश्चय नहीं है उनकी बहुत शास्त्रा रानेवाली अनेक बुद्धियाँ हैं । ४१ । हे अर्जुन वह तत्त्व निश्चयसे रहित वेद वाद में प्रीति रखने वाले इच्छा से जीते हुए चित्त से स्वर्ग को उत्तम जाननेवाले अज्ञानीलोग पुष्पित वचनों के समान चित्तरोचक भोग ऐश्वर्य्य की प्राप्ति में साधन रूप जन्म कर्म और फल के देनेवाले अथवा अग्निहोत्रादि की मूल क्रियाको अधिक रखने वाले वेद के वचनों को कहते हैं और यह भी कहनेवाले हैं कि कर्म से उत्तम दूसरा मोक्ष और ज्ञान नहीं है । ४३ । भोग और ऐश्वर्य्य में प्रवृत्त चित्त और उस वचन से दूरे हुये चित्त उन पुरुषों की समाधि में तत्त्व की निश्चयात्मिका बुद्धि

incur no sin 38 This knowledge is based on Sankhya shastra; hear what it is in the practical, so that thou mayst be free from the bonds of action 39. In this no effort fails, nor is there any harm A very small portion of this duty delivers a man from great fear. 40 In this there is but one judgment, but that is of a definite nature, whilst the judgment of those of indefinite principles are infinite and of many branches 41 The unwise delighting in the rewards praised in the Vedas, tainted with worldly lusts, and preferring a transient enjoyment of heaven to eternal absorption, whilst they declare there is no other reward, pronounce, for the attainment of worldly riches and enjoyments, flowery sentences, ordaining innumerable and manifold ceremonies, and promising rewards for the actions of this life. 43. The determined judgment of such as are attached to riches and enjoyments, and whose reason is led astray by this doctrine, is not founded upon mature consi-

विषया वेदा विश्वैर्गुण्यो मयातुन । गिहंजो नित्यसत्यम्यो नियोगक्षेम या मयान् ॥ ४५ ॥ पावानर्थ उदाने सर्वतः संप्लुतोदके । तावान् सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानत ॥ ४६ ॥ कर्मण्येवाधि कारते मा फलेषु कदाचन । मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सद्गोक्ष्यकर्मणि ॥ ४७ ॥ योगस्य पुत्र कर्माणि सद्ग त्यक्त्वा धनजय । विद्वय-सिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ ४८ ॥ दूरेण ह्यारं कर्म बुद्धियोगाद्द-नञ्जय । दुर्दो शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥ बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुहृत्सुहृते । तस्माद्योगाय युष्यस्य योग कर्मसु कौशलम् ॥ ५० ॥ कर्मजं

नहीं होती है । ४४ । तीनों गुणों को कहनेवाले वेद हैं हे अर्जुन तू तीनों गतियों से विरक्त है । मुक्त दुःख आदि द्वन्द्व गुणों से पृथक् सर्वत्र सम बुद्धिवाला होकर सर्वत्र धैर्यवान् वा शुद्ध सत्वगुण वृत्ती हो और मनोरथों की प्राप्ति आर-रक्षासे पृथक् होकर प्रात्नमान् हो । ४५ । जिनका कि बड़ी नदी वा सरोवर आदि में किसीका मयोजन होता है उतनाही मयोजन विज्ञानी ब्राह्मणका सय यदों में होता है । ४६ । ब्राह्मणानी कर्म में ही तेरा अधिहार है कर्म के फलों में कभी तेरा अधिहार न हो और तू कर्मफल का कारण भी मतहो और कर्म न करने मभी तेरा मन नहो । ४७ । कर्मों की सिद्धी और आसिद्धी में समान बुद्धि होकर तू योग में नियत हो और और अकर्मियों के मंगोंको छोड़कर कर्म को कर ऐसी सगता को योग कहते हैं । ४८ । हे अर्जुन फल की इच्छामें क्रियाहुआ कर्मज्ञान योग में मत्त्यन्त व्यु है, बुद्धि में रक्षा वा शरण को चाहो जिनके जन्म मरण का कारण कर्मों का फल है वह दान अर्थात् दुखी होते हैं । ४९ । इस लोक में बुद्धि में संयुक्त होकर मनुष्य पुण्य और पाप को त्याग करता है इन हेतु से समतारूप बुद्धि योग में उपाय कर

deration and meditation. 44. The object of the Vedas is of a threefold nature. Be thou free from a threefold nature, be free from duplicity, and stand firm in the path of truth, be free from care and trouble, and turn thy mind to things which are spiritual. 45. The knowing divine requires as little out of the whole Vedas collectively, as are from a reservoir flowing with water. 46. Thou hast a right in the deed, and not in the fruit of it. Be not one whose motive for action is the hope of reward. Let not thy life be spent in inaction. 47. Depend upon application, perform thy duty, abandon all thought of the consequences, and make the event equal, whether it terminate in good or evil; for such an equality is called Yoga. 48. Actions are far inferior to the application of wisdom. Seek an asylum in wisdom. Poor are the fruit seeking. 49. Men who are endued with true wisdom cast off good or evil deeds in this world. Study then to obtain this application of thy understanding, for such application

बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा नतीपिण । जन्म बन्धविनिमुक्ता पद्मगच्छन्त्यनामयम् ॥५१॥
 यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्ध्याततरिष्यति । तथा गन्तासि नर्वेद श्रोतव्यस्य श्रुतस्य
 च ॥ ५२ ॥ श्रुतिविप्रतिपत्ता ते यदा स्थास्यति निश्चला । सम धावचला बुद्धिस्तदा
 योगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥ अर्जुन उवाच । स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
 स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत ब्रजेत किम् ॥ ५४ ॥ श्रीभगवानुवाच । प्रजहाति
 यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् । आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥५५॥
 दुःखेष्वनुद्विग्नमना सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मानुरुच्यते ॥५६॥
 यः सर्वत्रानाभक्षेहस्तत्तु प्राप्य शुभाशुभम् । नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रत-

क्योंकि ज्ञान योग ही कर्मों में चातुर्यता है बुद्धि से संयुक्त पुरुष कर्म जन्य फलोंका त्यागकरके जन्म बंधन से छूटता है और निरुपाधि मोक्षपद को पाता है । ५१ । जब तेरी मोहरूपी बुद्धि शुद्ध होगी तब तू सुनेहुए और सुनने के योग्य शास्त्रों से वैराग्य पावेगा । ५२ । और नानामकार के शास्त्रों को सुनकर संदेहों से भरी हुई तेरी बुद्धि असादृश्य ब्रह्म में नियत होकर निर्विकल्प समाधि में अचल वर्तमान होगी तब योग को पावेगा । ५३ । अर्जुन बोले कि हे केशवजी जिसकी बुद्धि शुद्ध ब्रह्म में नियत है और समाधि में वर्तमान है उसको लोग क्या कहते हैं और वह बुद्धि में नियत होकर कैसे बोलता है और कहाँ बैठता है और कैसे विषयों को भोगता है । ५४ । श्री भगवान् बोले हे अर्जुन जब यह योग मन में वर्तमान होता है और सब इच्छाओं को त्याग करता है और आत्मा करके अपनेही में तृप्त होता है तब स्थिर बुद्धि कहा जाता है । ५५ । दुःखों में व्याकुलता रहित मन, और सुखों में अनिच्छावान्, राग भय क्रोध से पृथक् स्थिर बुद्धि, मुनि कहा जाता है । ५६ । जो सर्वत्र में प्रीति न रखने वाला जो शुभ पदार्थ को पाकर उसकी हर्ष से

in business is cleverness 50 Wise men, who have abandoned all thought of the fruit which is produced from their actions, are freed from the chains of birth, and go to the regions of eternal happiness. 51 When thy reason shall get the better of the gloomy weakness of thy heart, then shalt thou have attained all knowledge which has been or is worthy to be taught. 52 When thy understanding, by study brought to maturity, shall be fixed immoveably in contemplation, then shall it obtain true wisdom' 53 Arjuna,— "What O Krishna, is the distinction of a wise and steady man who is fixed in contemplation? Where does he dwell? How does he act?" 54 Krishna,— "A man is said to be confirmed in wisdom, when he forsakes every desire which enters into his mind and is contented in himself. 55. He whose mind is undisturbed in adversity, unclated in prosperity, and who is stranger to anxiety, fear and anger, is called a muni. 56. The wisdom of that man is,

पृष्ठा ॥ ५७ ॥ पदा संहरते चायं कूर्मं ज्ञानैव सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेष्वस्तभ्य
प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥ तत्र यथा चिन्ति संसृजः । निराहारास्य वैदिनः । रसवर्जं रसो
प्यस्य परं दृष्ट्वा निर्वर्त्तते ॥ ५९ ॥ यततो ह्यपि कांतेव पुरुषस्य त्वर्पायत । इन्द्रि-
याणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥ ६० ॥ नान सर्वाणि संयम्य युक्तमासीत्
मत्परः । यशो हि त्रस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रातष्ठिता ॥ ६१ ॥ ध्यायतो विषयान् पुंसः
सङ्कल्पेणैव जायते । सङ्कल्पेणैव जायते कामः कामात् क्रोधो भिजायते ॥ ६२ ॥
क्रोधोद्भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिवध्रमः । स्मृतिवशाद् बुद्धनाशो बुद्धना-
शात् प्रणश्यति ॥ ६३ ॥ रागद्वेषविषुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् । आत्मवदयार्थिध-

प्रशंसा नहीं करता है और अशुभको पाकर दुःखी होकर निन्दा नहीं करता है
उसकी बुद्धि स्थिर अर्थात् निश्चल है । ५७ । जब यह पुरुष सब प्रकार से इन्द्रियों
को विषयों से कछुपके भ्रमों के समान खैचता है तब उसकी बुद्धि स्थिर समझी
जाती है । ५८ । इन्द्रियों से विषयों को न ग्रहण करने वाले देहाभिमानी से सब
विषय होजाते हैं परन्तु उन के विषयों का अनुराग निवृत्त नहीं होता विषय संबंधी
प्रीति भी परब्रह्म को देखकर दूरहोती है । ५९ । हे अर्जुन ज्ञानी मनुष्यकी इन्द्रियां भी
लुटेरोंके समान चिचको अत्यन्त चुराती हैं । ६० । उन सबको अपने वशीभूत कर के
विद्यानमनसे मुक्त जगत् के आत्मा को अत्यन्त प्रियतम माने और इन्द्रियों को आधीन
करे उसकी बुद्धि स्थिरहै । ६१ । विषय वासना वालोंके विषय ध्यान करने का संग
इन्द्रियों पर होताहै उसी संगसे काम उत्पन्न होताहै कामसे क्रोध क्रोध से मोह-मोह
से विभ्रम, स्मृति के भ्रंश से बुद्धि का नाश और बुद्धिके नाश से मरण होजाता
है । ६३ । मनको स्वाधीन रखने वाला योगी उन राग द्वेषों से पृथक् मनके स्वा-

established, who in all things is without affection; and having
recieved good or evil, neither rejoices at the one, nor is cast down
by the other. 57. His wisdom is confirmed, when like the tortoise
he can draw in all his senses, and restrain them from their wonted
purposes. 58. The hungry man loses every other object but the
gratification of his appetite, and when he is become acquainted with
the Supreme, he loses even that. 59. The tumultuous senses
hurry away, by force, the heart even of the wise man who strives
to restrain them. 60. The inspired man, trusting in me may quell
them and be happy. The man who has his passions in subjection
is possessed of true wisdom. 61. The man who attends to the
inclinations of the senses, is united with them; from this union
are created passions, from passions anger, from anger is produced
folly, from folly a depravation of the memo.y, from the loss of
memory the loss of reason, and from the loss of reason the loss of
all? 63. Ho who has control over his senses, who despises delights

यात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥ प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते । प्रसन्न
चेतसो ह्याशु बुद्धिर्पर्ययतिष्ठते ॥ ॥ ६५ ॥ नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य
भावना । न चाभावयत शान्तिरशान्तस्य कुत सुखम् ॥ ६६ ॥ इन्द्रियाणां हि
चरता यन्मनोबुद्धीधीयत । तदस्य हरति प्रज्ञा वायुर्नावमिवाग्भासे ॥ ६७ ॥ तस्मा
द्यस्य महाबाहा निवृत्तीतानि सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता
॥ ६८ ॥ या निशा सर्वभूतानां तस्या ज्ञानसिंहासने सयमि । यस्या जाप्रति भूतानि सा
निशा पश्यतो मुने ॥ ६९ ॥ आपूर्व्यमाणमचलप्रतिष्ठ समुद्रमाप प्रविशा त यद्भव ।
तद्वत् जामाय प्रविचन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामवानी ॥ ७० ॥ अहाय

धीन होने वाली इन्द्रियों से विषयों के समीप घुपता है वह अपने संकल्प निरूप-
रूपी कीचड़ के धोने से चिन्ता की शुद्धी को पाता है । ६४ । उस शुद्धी के होने से
उसके सप्त दुःखोंका नाश होता है और उस शुद्ध चित्तवाली बुद्धि से वह ज्ञानको
पाता है । ६५ । संशय और विचार से रहित पुरुषको ज्ञान नहीं होसकता ज्ञान-
हीन पुरुष ध्यान नहीं करसकता बिना ध्यानके चिन्तावधान नहीं होसकता और
बिना चिन्ताथर हुये उसको सुख कने होसकता है । ६६ । जिसका मन विषयों में
जाने वाली इन्द्रियों के पीछे २ चलताहै उसकी ब्रह्मसंपन्धी बुद्धिको देभेदर लेताहै
जैसे कि जलमें नौका को वायु हरलेता है । ६७ । हे महाबाहू इस कारणसे जिस-
को इन्द्रियां सब प्रकार करके विषयों से पृथक् होती है उसकी बुद्धि स्थिर कहाती
है ६८ । रात्रिमें जितेन्द्री ज्ञानी जागता है और दिनमें जब सप्त अज्ञानी जीव
जागते है ब्रह्मतत्त्व के देखने वाले मुनि लोगों की रात्रि है । ६९ । जैसे कि अचल
रहने वाले समुद्र में जल प्रवेश करते है इसी प्रकार सप्त प्रकारकी इच्छा जिस ब्रह्म-
ज्ञानी में प्रवेश करती है । वह शान्तिको पाता है परन्तु विषयोंका चाहने वाला

and whose mind is in his bidding obtains happiness supreme
64 In his happiness is born to him an exemption from all his
troubles, and his mind being thus at ease, wisdom soon flows to
him from all sides 65 The man who attends not to this is
without wisdom or the power of contemplation The man who
is incapable of thinking, has no rest What happiness can he enjoy
who has no rest? 66 The heart, which follows the dictates of the
moving passions, carries away the reason, as the storm, does the
boat in the raging ocean 67 The man, therefore, who can restrain
all his passions from their inordinate desires, is endued with true
wisdom 68 Such a one wakes but in the night when all things
go to rest The contemplative Manu sleeps but in the day time
when all things wake 69 The man whose passions enter his heart
as waters run into the unswelling passive ocean, obtains happiness

कामान्यः सर्वान् पुमान्धरति निःस्पृहः । निर्ममोऽनरहद्दरः स शान्तिमाधिगच्छति ७१॥
परा ब्रह्मीत्यतिः पार्य नैनां प्राप्य विमुह्यति । स्थित्वा स्वामन्त कालेपि ब्रह्म-निर्वाण
मृच्छति ॥ ७२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सू० सांख्ययोगोनाम
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अर्जुन उवाच । ज्यायसी चेत् कर्मणस्ते मत्तः बुद्धिर्जन ईम । तन् किं कर्मणि
आनयेत्तुद्धिं मोहयतीव मे । तदेकं
माच । लोकस्मिन् द्विविधानद्या पुरा

इच्छाओं को त्यागकर ममता और
पात केवल देहके निर्वाहके निमित्त
को पाता है । ७१ । हे अर्जुन यह
। नहीं भूलता है इनमें नियत होकर

॥

य से बुद्धिकी उन्नता आप मानतेहैं
में क्यों लगातेहो । १ । आपकभी
को त्यागकरके जानी और त्यागीहो
तनेहो सो आप इनदोनोंमें से एकको
। २ । श्रीभगवान् बोले हे निष्पाप

he man who having abandoned
ordinate desires, unassuming
s. 71. This is divine depen-

dance. A man being possessed of confidence in the Supreme goes
not astray: even at the hour of death, should he attain it, he shall
mix with the incorporeal nature of Brahm." 72.

LECTURE 111

Arjuna,—"If according to thy opinion, knowledge be superior
to work, why then dost thou urge me to engage in an undertaking
so dreadful as this? 1. Thou, as it were, confoundest my reason
with a mixture of sentiments; wherefore choose one amongst them
by which I may obtain happiness, and explain it unto me." 2
Krishna—"It has already been observed by me, that there are

प्रोक्तामयानव । ज्ञानयोगे सांख्यानां कर्मयोगेन योगनाम् ॥ ३ ॥ न कर्मणागता
 रम्भाश्रैष्कर्म्यं गुरुपाशुनते । न च सन्धमनादव सिद्धिं समाधिगच्छति ॥ ४ ॥ न हि
 कश्चिन् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मजन् । कार्श्यत ह्यग्रथं कर्म सर्वं प्रकृतिजैर्गुणै ॥ ५ ॥
 कर्मैन्द्रियाणि सयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् । इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः
 स उच्यते ॥ ६ ॥ यास्त्यन्द्रियाणि मनसा नियन्ध्यात्प्रतेजुन । कर्मोन्द्रियैः कर्मयोगम
 सकृत् स धिशाप्यते ॥ ७ ॥ नियतं कुरु कर्म त्व कर्मज्यायाद्यकर्मिण । शरीरयात्राप च
 ते न प्रासध्वेदकर्मण ॥ ८ ॥ यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्रलोकायं कर्मवन्धन । तदर्थं कर्म
 कौन्तेय मुक्तसङ्ग समाचर ॥ ९ ॥ सद्व्यज्ञा प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति । अनेन

भैनेप्रथम अयायमें कही है निष्ठा इनलोकमें दोमकारकी है सांख्य वालोंकी निष्ठा
 ज्ञानयोगहै और योगियोंकी निष्ठा कर्मयोग है । ३। क्योंकि यज्ञादि कर्मोंका प्रारंभ
 करनेसे पुरुष ज्ञान निष्ठाको नहीं पाता है और कर्मयोग से उत्पन्न चित्त शुद्धी के
 बिना केवल त्याग अर्थात् सन्याससेही मोक्षरूप सिद्धीको नहीं पाताहै । ४। कर्मजानेन
 सिद्धी के बिना मनका न जीतने वाला कोई पुरुष समाजमें भी बुरी वासनाको
 करके एक क्षणमात्र भी नियत नहीं रहसक्ता है निश्चयकरके सबलोग योग प्रकृति
 क सर्यादि गुणोंसं कर्म करतेहैं । ५। जो रागादि भरेहुये चित्त स कर्मैन्द्रियोंको स्वारीन
 करके मनमें इन्द्रियोंके चित्रोंका स्मरण करता हुआ ध्यान के ब्रह्मने से एकान्तम
 वैठाहै वह मिथ्या आचारवाला कहाजाता है । ६। हे अर्जुन जो पुरुष मनस ज्ञाने-
 न्द्रियोंको स्वारीन करके निष्काम कर्मोंसे कर्मोन्द्रियोंसे कर्मयोग का प्रारंभ करता
 है वह पूर्वसेभी श्रेष्ठतरहै । ७। तू नियम करके कर्मोंका कर सब कर्मोन्द्रियोंसे रोकने
 और कर्म के बिना चित्त शुद्धी न होनेसे कर्मही श्रेष्ठ है और चित्त शुद्धी न नेपर
 भी तुम्हकर्म न करने वाले क्षत्रीकी शरीर यात्राभी सिद्धनहीं होसक्ती । ८। एक
 मारुतेश्वरके पूजनके लिये जो कर्म किया जाता है उससे स्वर्गादिकी इच्छारूपी

two paths. That of those who follow the Sankhya, is the gyan yog, and the practical, or the karm yog is for the yogis. 3 The man enjoys not freedom from action, from the non commencement of that which he has to do, nor does he obtain happiness from a total inactivity. 4 No one ever rests a moment inactive. Every man is involuntarily urged to act by those principles which are inherent in his nature. 5 The man who restrains his active faculties and sits down with his mind attentive to the objects of his senses, is called one of an astrayed soul and the practiser of death. 6 So the man is praised, who having subdued all his passions, performs with his active faculties all the functions of life, unconcerned about the event. 7. Perform the settled functions action is preferable to inaction. The journey of thy mortal frame may not succeed from inaction. 8 The busy world is engaged from

प्रसविष्यध्वमेपवोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ १० ॥ देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।
परस्परे भावयन्तः श्रेयःपरमवाप्स्यथ ॥ ११ ॥ इष्टान् भोगान् हि यो देवा दास्यन्ते
यज्ञभाविताः । तैर्दत्ता न प्रदायैभ्यो यो भुङ्क्तेऽनपचसः ॥ १२ ॥ यज्ञशिष्टाशिनः
सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । भुङ्क्तेते त्वर्घपापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥ १३ ॥
अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्याद् प्रसन्नमवः । यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मस-
मुद्भवः ॥ १४ ॥ कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् । तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म
नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥ एवं प्रवर्तितं चक्रं नानावर्चयतीहयः । अघायुः-

अन्यकर्मों में प्रवृत्त होकर यह लोक कर्मबंधनमें फँसनेवाला है हे अर्जुन उस ईश्वर
के आराधनके लिये तू निष्काम कर्मोंको करके वर्णाश्रम के योग्य बातोंको अच्छी
रीतिसे कर । ९ । पूर्व समय में ब्रह्माजीने सब सृष्टियों यज्ञों समेत उत्पन्न करके
कहा कि इसयज्ञ कर्मको तृप्तकरो और वह तुम्हारीदृष्टिकरें और तुम परस्परमें दृष्टि
पाते हुए परम कल्याण को पाओगे । ११ । निश्चय करके यज्ञों से पूजित और
तृप्त किये हुए देवता तुम्हको तुम्हारी रुचिके योग्य भोजन वस्त्रादि देंगे, जो पुरुष
उन देवताओं के दियेहुये भोगोंको उन देवताओं के अर्पण न करके भोगताहै वह
निश्चय चोर है । १२ । वैश्वदेव आदि यज्ञोंमें शेषबचेहुये अन्नादिको भोजनकरते
हुए सब इत्यारूपपापोंसे छूटजातेहैं और जो केवल अपनेहीनिमित्त भोजनको बनातेहैं
वहपापी अपनेपापोंको भोजन करतेहैं । १३ । अन्नसे जीव उत्पन्नहोतेहैं, अन्नकी
उत्पत्ति वर्षासेहै और वर्षा यज्ञोंसे होतीहै और यज्ञ कर्मोंसे पैदा होनेवालाहै । १४ ।
कर्मबन्धसे और वेद अविनाशी ईश्वरसे उत्पन्न जानो इसहेतुसे सबदेश काल में
वर्तमानरूप ईश्वर में सब मियमों समेत वेद और यज्ञ नियतहै । १५ । इस प्रकार

other motives than the worship of the Deity. Abandon then, O son of Kunti, all selfish motives, and perform thy duty. 9. When in ancient days Brahma created beings along with yajnas, he said: " With this, multiply; verily it is all desire giver. 10. With this serve the gods, that the gods may serve you. Serve one another, and ye shall obtain supreme happiness. 11. The gods being remembered in worship will grant you the enjoyment of your wishes. He who enjoys what has been given to him by them, and offers not a portion to them, is a thief. 12. Those who eat not but what is left of offerings, shall be purified of all their transgressions. Those who dress their meat but for themselves, eat the bread of sin. 13. All beings come from food; food is produced from rain; rain from yajna, and yajna is the result of actions. 14. Know that works come from body (Brahma,) whose nature is incorruptible; wherefore the omnipresent Brahma is present in the worship. " 15. The sinful mortal, who delights in the

न्द्रियारामो मोघ पार्थ सजीवति ॥ १६ ॥ यस्त्वात्मरतिरेवस्या दात्मतृप्तश्च मान
व । आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ १७ ॥ नैव तस्य कृतेनार्थो नावृत्तेनेह
कथन । नचास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्धव्यपाश्रय ॥ १८ ॥ तस्मात्सक्त सततं कार्यं
कर्मसमाचर । असक्तो ह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पुरुष ॥ १९ ॥ कर्मणैव हि ससिद्धि
मास्थिता जनकादय । लोकसंग्रहमेवापि संपद्यन् कर्तुमर्हसि ॥ २० ॥ यद्यदाचरति
श्रेष्ठस्तच्चद्वैतरो जन । स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ २१ ॥ नमेषा
र्यास्ति कश्चिद्यत्रिषु लोकेषु किञ्चन । नानवाप्तमवाप्तव्यं चर्त्तव्यचकर्मणि ॥ २२ ॥

से सदैव जारी रहनेवाले चक्र में जो नियत नहीं होता अर्थात् यज्ञादि कर्म नहीं करता है हे अर्जुन वह पापरूप जीवनसे इन्द्रियों में क्रीडा करनेवाला निरर्थक जीवता है । १६ । परन्तु जो मनुष्य आत्मा में प्रीति रखनेवाला आत्मा में तृप्त और आत्माही में संतुष्ट है उसको कोई दूसरा कर्म करने के योग्य नहीं है । १७ । उस आत्मामें प्रीति रखनेवाले ज्ञानीको प्रयोजन कियेहुए कर्मों से कुछ भी नहीं है और इसके विपरीत कर्म सेभी उसको कुछ प्रयत्न नहीं है और उसके सुखभोग रूप प्रयोजनका कोई सम्बन्ध किसी जीवमात्र से नहीं है । १८ । इसी हेतुसे तू कर्म फलों से पृथक् होकर सदैव करने के योग्य कर्मोंको कर, फलकी इच्छा रहित कर्म करनेवाला पुरुष अन्तःकरण की शुद्धता से मोक्षपदार्थको पाता है । १९ । कर्मकेही द्वारा जनकादि ने सिद्धी को पाया अर्थात् धर्म में लोककी संग्रहको देखता हुआ कर्म करनेको योग्य है । २० । क्योंकि उत्तम पुरुष जो जो कर्म करतेहैं उसी कर्म को दूसरे मनुष्यभी करतेहैं और वह श्रेष्ठ पुरुष जिस बातको प्रमाण करतेहैं उसी को सत्कार करता है । २१ । हे अर्जुन तीनों लोक में मुझको कोई बात करने के योग्य नहीं है अथवा प्राप्त और अप्राप्त होनेके भी योग्य नहीं है परन्तु तौभी मैं

gratification of his passions, and follows not the wheel, thus revolving in the world, lives but in vain 16 But the man who is self-delighted, self-satisfied, and happy in his own soul, has nothing to do 17 He has no interest either in that which is done, or that which is not done, and there is not in all things what does not bear created, any object on which he may place dependence. 18 Wherefore, perform thou that which thou hast to do, at all times, unmindful of the event, for he who does his duty, without affection, obtains the Supreme. 19 JANAKA and others have attained perfection even by works. Thou shouldst also observe what is the practice of mankind, and act accordingly 20 The man of low degree follows the example of him who is above him, and does that which he does. 21 I myself, Arjuna, have not, in the three regions of the universe, any thing which is necessary for me to perform, nor any thing to obtain which is not obtained, and yet

यादिहाहं नवर्त्तयं जातुकर्मण्यतन्द्रितः । मम वर्त्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याःपार्थसर्वशः
 ॥ २३ ॥ उत्सीदियुत्सिने लोका न कुट्या कर्म चेदहम् । सद्गुरव्य च कर्त्ता स्यात्
 पद्भ्यामिमाः प्रजाः ॥ २४ ॥ सखाः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत । कुट्या
 द्विद्रास्तथासक्तयिकीपुल्लोकसंप्रहम् ॥ २५ ॥ न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गि-
 गाम् । ज्ञेययेत् सर्व कर्माणि विद्वान् युक्तः समाचरन् ॥ २६ ॥ प्रकृतेः क्रियमाणानि
 गुणैः कर्माणि सर्वशः । अहंकार विमूढात्माकर्त्ताहमिति मन्यते ॥ २७ ॥ तत्त्ववि-
 तुमहावाहो गुणकर्मविभागयोः । गुणागुणेषु वर्त्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥ २८ ॥
 कर्महीको करताहं । २२ । जो कदाचित् मैं आलस्यसे कर्मोंको न करूं तो हे अ-
 र्जुन सब मनुष्य सब रीति से मेरेही अनुसार चलनेलगें अर्थात् कर्मकरना छोड़दें
 । २३ । जो मैं कर्मोंको नहीं करूं तो यह सब लोक भ्रष्टहोजायें और मैंभी वर्णसं-
 करोंका ईश्वर कहलाऊं और इनसब प्रजाओंका नाश करदूं । २४ । हे भरतवंशी
 जैसे कि कर्मफल के चाहने वाले अज्ञानी लोग कर्मको करते हैं उसी प्रकार कर्म
 फलके न चाहने वाले ज्ञानीलोग लोक संप्रह अर्थात् संसारको धर्म में नियत कर-
 नेके लिये कर्म को करें । २५ । विद्वान् लोग कर्म में प्रवृत्त पुरुषोंकी बुद्धिको कर्म
 से पृथक् न करें योगीहोकर अच्छी रीतिसे आचरण करता हुआ सब कर्मों को
 करे और दूसरेसे करावे । २६ । सब प्रकार से प्रकृतिके सत्वगुण रजोगुण तमो-
 गुणसे किये हुए कर्म होते हैं जो अहंकारसे अज्ञान बुद्धीहै अपनेकोही कर्त्ता मानता
 है । २७ । हे महाबाहु जो पुरुष गुण और कर्मके विभागकी मुख्यताका जानने वालाहै
 और यह मानकर कि इन्द्रियां विषयों में वर्त्तिनी हैं इससे वह अपनेको कर्मका

I am engaged in work. 22. If I were not vigilantly to attend to these duties, all men would presently follow my example. 23. If I were not to perform actions this world would fail in their duty; I should be the cause of spurious births, and should drive the people from the right way. 24. As the ignorant perform the duties of life from the hope of reward, so the wise man, out of respect to the opinions and prejudices of mankind, should perform the same without motives of interest. 25. He should not create a division in the understandings of the ignorant, who are inclined to outward works. The learned man, by industriously performing all the duties of life; should induce the vulgar to attend to them. 26. The man whose mind is led astray by the pride of self-sufficiency, thinks that he himself is the executor of all those actions which are performed by the principles of his constitution. 27. But the man who is acquainted with the nature of the two distinctions of cause and effect, having considered that principles will act according to their natures, gives up

प्रकृतेर्गुणसमूहाः सञ्जन्ते गुणकर्मसु । तानवृत्तस्त्वविदो मन्दान् कृत्स्नविद्य विचालयन्त् ॥ २९ ॥ मयि सर्वाणि कर्माणि कर्माणि सन्त्यस्याध्यात्मचेतसा । निराशीर्षिर्ममो भूत्वा युध्यस्य विगतज्वर ॥ ३० ॥ येमे मतमिद् नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवा । श्रद्धावन्तो न स्यन्तो मुच्यन्ते तेपि कर्मभिः ॥ ३१ ॥ ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् । सर्वज्ञानविमूढास्तान् विद्धि नष्टानचेतसः ॥ ३२ ॥ सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि । प्रकृतिं याति भूताति निग्रहः । किं कारिष्यति ॥ ३३ ॥ इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यघस्थितौ । तयोर्न घञमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥ ३४ ॥ श्रेयान् स्वधर्मो विगुण परधर्मात् स्वनुष्ठितात् । स्वधर्मे निघनश्रेयः

कर्त्तानही मानता है । २८ । प्रकृति के अहंकारादि गुणोंसे अज्ञानी पुरुष शरीरादिक गुण और कर्मोंमें आसक्त है उन आत्मज्ञानसे रहित अल्पज्ञ पुरुषों को आत्मज्ञानी कर्मनिष्ठा से न हटावे । २९ । मोक्षका चाहनेवाला विवेक बुद्धि से सब कर्मोंको मुझ सब के अन्तर्गामी में अर्पणकरै इस से ह अर्जुन तू कर्मफल में आशा रहित और प्राप्तवस्तुको अपनी न माननेवाला होकर शोकस विगत होकर युद्धकर । ३० । जो मनुष्य मेरेइस मत पर काम करतेहै और श्रद्धावान् होकर उस में दोष दृष्टी नहीं करते वह धर्म अधर्म रूप कर्मों से छूटजाते है । ३१ । जो दोषलगाने वाले इसमेरे मतपर कर्म नहींकरते है उनको ब्रह्मज्ञान में अत्यन्त अज्ञानी विवेक रहित स्वर्ग और मोक्षसे भ्रष्टहुए जानो । ३२ । ज्ञानवान् भी अपने अनुभार चष्टाकरते हैं सब जीवमात्र अपने स्वभाव के अनुसार कर्म कर्षा होते है और मैभी पूर्वकर्म के अनुसार उन स कर्म करताहूँ । ३३ । परन्तु यहवात संभव है कि जो दोनों प्रकार की इन्द्रियों के विषयो में राग द्वेष अधिकता से नियत है तो उन दोनोंके स्थाधीन न होवै निश्चयहै कि वह दोनों राग द्वेष इस मोक्ष चाहने वाले के शत्रु है । ३४ । अपने धर्माश्रम के अनुसार

attachm nr. 28, Men who are led astray by the principles of their nature, are interested in the works of the faculties. The man who is all informed should not disturb the mis-informed ignorant. 29 Throw every deed on me and with a heart, over which the soul presides, be free from hope, be unpresuming be free from trouble, and resolve to fight 30 Those who with a firm belief, and without reproach, shall constantly follow this my doctrine, shall be released from works 31 But those who, holding it in contempt, follow not this my counsel, are astrayed from all wisdom, deprived of reason, and are lost. 32 The wise man acts upon the inclination of his own nature. All things act according to their natures, what can restraint avail? In every purpose of the senses we find affliction and dislike. A wise man should not put himself in their power, for both of them are his opponents. 31 A man's

एवमो भयावहः ॥ ३५ ॥ अर्जुन उवाच । अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापंचरति पूरुष । अनिच्छन्नपि घाष्णेय बलादिव नियोजित ॥ ३६ ॥ भगवन्नुवाच ॥ काम एवक्रोध एव लोभो गुणसमुद्भव । महाशतो महापाप्मा विद्ध्येनमिह हरिणम् ॥ ३७ ॥ धूम्रान्नात्रयतेऽह्नियथा दशो नले न च । यथोल्बेगात्रुणो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥ ३८ ॥ आवृतं ज्ञानमतेन ज्ञानिनो नित्यजेरेण । कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणान लेनच ॥ ३९ ॥ इन्द्रियाणि मनोबुद्धिस्त्वाधिष्ठानमुच्यते । एतेर्धिमोहयत्येव ज्ञानमा वृत्य देहेनम् ॥ ४० ॥ तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्यभक्तर्षभ । पाप्मानं प्रजाह

अपना धर्म और गुण भी अन्टीरीनि से क्रियेहुए दूमरों के धर्मसे श्रेष्ठ है अपने युद्धादि कर्मों में मरना बहुत उत्तम है और दूमरे का धर्म महाभयकारी है । ३५ । अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी फिर किस से संयुक्त कियाहुआ यह पुरुष पापों को करता है और अनिच्छवान् होकर अपने बल से कर्म में प्रवृत्त हुआ मालूम होता है, । ३६ । श्री भगवान् बोले कि यह इच्छा रजोगुणसे उत्पन्न है यही क्रोधरूप होजाती है और यही इच्छारूप काम महाभोक्ता वा उग्ररूप भयकारी है इसको उसदेह में महाशत्रुरूपही जानो । ३७ । जैसे कि अग्नि धुएँ से और दर्पण में से टकजाते हैं और गर्भ जेर से ढका रहता है इसीप्रकार इस इच्छारूप कामसे यह ज्ञान भी ढकाहुआ है । ३८ । हे अर्जुन इस ज्ञानियों के पुराने शत्रु और अग्निके समान पूर्णहोने के अयोग्य इच्छारूप काम में ज्ञान ढकाहुआ है । ३९ । इस इच्छाका निवासस्थान इन्द्री मन बुद्धि है और यह इच्छारूपी काम उन सब के साथ ज्ञानको ढककर देहाभिमानी पुरुषको अत्यन्त मोह और भ्रान्ति में डालता है । ४० । इसकारण हे अर्जुन तुमप्रथम इन्द्रियोंको स्थाधीनकरके इस अत्यन्त भयंकारी

own religion, though contrary to, is better than the faith of an other, let it be ever so well followed. It is good to die one's own faith, for another's faith is dangerous 35 ARJUNA, By what, O Krishna is man propelled to commit offences? It seems as if, contrary to his wishes, he was impelled by some secret force 36 KRISHNA— Know that it is the enemy lust, or passion, offspring of the carnal principle, insatiable and full of sin, by which this world is covered as the flame by the smoke, as the mirror by rust, or as the fetus by its membrane 38 The understanding of the wise man is obscured by this inveterate foe, in the shape of desire, who rages like fire, and is hard to be appeased 39 It is said that the senses, the mind and the understanding are the places where it delights most to rule. By the assistance of these it overwhelms reason, and stupefies the soul 40 Thou shouldst, therefore, first subdue thy passions, and get the better of this sinful

ह्येन ज्ञानावह ननाशनम् ॥ ४१ ॥ इन्द्रियाणि पराण्याद्भुरिन्द्रियेभ्य पर मन । मन
सस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्ध परतस्तुत्त ॥ ४२ ॥ एव बुद्ध परबुद्ध्या सस्त-यात्मान
मात्मना । जाह शत्रु महाबाहो कामरूप दुरासदम् ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुन संवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

श्रीभगवानुवाच । इम विवस्वते योग प्रोक्तवानहमव्ययम् । विवस्वान् मनवे
प्राह मनुरिक्ष्वाकवेववात् ॥ १ ॥ एव परम्पराप्राप्त मिम राजर्षयोऽपिहु । स कालेनेह
महता योगेनष्ट पर-तप ॥ २ ॥ स एनाय मया तेद्य योग प्रोक्त पुरातन ।
भक्तोसि मे सखाचेति रहस्यह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच । अपर भवतो

ज्ञान विज्ञानके नाश करने वाले कामको मूलसे नाशकरो । ४१ । इन्द्रियोंको
उत्तम कहाहै, इन्द्रियोंसे उत्तम मन, मनसे उत्तम बुद्धि और जो बुद्धिसे भी उत्तम
है वह काम कहाजाता है । ४२ । इसप्रकार परमात्माको बुद्धिमें अष्ट्र जानके बुद्धि
के द्वारा मनको नियत करके कठिनतासेभी नाश न होनेवाले कामरूप शत्रुको
मारडाल ॥ ४३ ॥

अध्याय ॥ ४ ॥

श्री भगवान् बोले हे अर्जुन यह दो प्रकारवाला अविनाशी ज्ञान मैंने सूर्यदेवता
से कहाथा और सूर्य ने मनुजी से कहा और मनुने इक्ष्वाकुसे कहा । १। इसप्रकार से
परपरापृर्वक प्राप्तहुए इस योग को राजऋषियों ने जाना है हे शत्रुहन्ता योग इसलोक
में बहुत कालसे गुप्त है । २। उसी प्राचीन योग को अब मैंने तुम्हसे कहा है क्योंकि
तू मेरा भक्त और सखा है निश्चयकरके यह उत्तम योग गुप्तकरनेके योग्य है

destroyer of wisdom and knowledge 41 The organs are es-
teemed great, but the mind is greater than they Resolution
is greater than the mind, and desire is superior to resolution 42
When thou hast recognised what is superior to resolution and kept
thy mind under control, determine to abandon the enemy in
the shape of desire 43.

LECTURE IV

OF THE FORSAKING OF WORKS

Krishna—This never failing discipline I formerly taught to
Vivasvan Vivasvan communicated it to Manu, and Manu made it
known to Ilshavaku Being handed down successively, it was studied
by the Rajarshis, but in the course of time, the yog was lost. 2 It is
the same discipline which I have this day communicated to thee,
because thou art my devotee and my friend It is an ancient and a

जन्म परं जन्म विद्यस्वतः । कथमेतद्विजानीयां त्वगादौ प्रोक्त्वा निति ॥ ४ ॥
 श्रीमगवानुवाच ॥ बहूनि मे व्यतीतान जन्मानि तव अर्जुन । तान्यहं वेदसत्राणि
 नत्वं वेत्थपस्तप ॥ ५ ॥ अज्ञोपि सन्नव्ययात्मा भूतानामिभ्वरोपि सन् । प्रवृत्तिं
 स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥ यदायदाह घर्मेस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
 अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् । ७ ॥ परित्राणाय साधूनां विनाशायच
 दुःकृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ८ ॥ जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं
 यो वेत्तितत्त्वतः । त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामांत सोऽर्जुन ॥ ९ ॥ घांतरागम-
 यज्ञोष्ठा मन्मथा मामुपाश्रिताः । बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥ १० ॥

। ३ । अर्जुन बोले कि हे कृष्णजी आपका जन्म तो पीछेहुआ है और सूर्यका
 जन्म बहुत पहले हुआ है तो मैं यह कैसे जानूँ कि आपने सृष्टीकी उत्पत्ति के भारम्भ
 में कहा । ४ । श्री भगवान् बोले कि हे अर्जुन मेरे और तेरे अनेक जन्म हुए हैं
 उन सब को मैं जानता हूँ तू नहीं जानता है । ५ । मैं अजन्मा अविनाशी सबजीव मात्रों
 का आत्मा और ईश्वर भी होकर अपनी प्रकृतिको स्वाधीन कर के अपनीही माया
 के साथ प्रकटहोता हूँ । ६ । हे भरतवंशी जब जब धर्मकी न्यूनता और अधर्म की
 वृद्धि होती है तब मैं अपनेको प्रकटकरके । ७ । साधुओंकी रक्षा और कुकर्मी पापा-
 त्माओंका नाश और धर्मके नियतकरन को प्रत्येक युग में प्रकट होता हूँ । ८ । मेरा
 जन्म और कर्म दिव्य है अर्थात् वनावट का नहीं है जो इस प्रकारसे मूल समेत जान-
 ता है हे अर्जुन वह पुरुष शरीर को त्यागकर फिर जन्म नहीं लेता है अर्थात् मुझको
 प्राप्त होकर मुझमें लय होता है । ९ । और जिनलोगोंकी विषयोंमें प्रीति वा अपने
 मरणका भय, अपने पराये दुःख के क्रोध इत्यादिवातें दूर होगई हैं और मुझको
 श्रेष्ठमानकर मेरी शरणागत होकर ज्ञानरूप तपसे पवित्र हैं ऐसे अनेक योगी मेरे भाव

supreme mystery. 3. Arjuna.—Seeing thy birth is posterior to that of Vivaswan, how am I to understand that thou hadst been formerly the teacher of this doctrine? 4. Krishna.—Both I and thou have passed many births. Mine are known to me, but thou knowest not of thine 5. Although I am not in my nature subject to birth or decay, and am the lord of all created beings; yet, having command over my own nature, I am made evident by my own power. As often as there is a decline of virtue, and an insurrection of vice and injustice, in the world, I make myself evident. 7. Thus I appear, from age to age, for the preservation of the just, the destruction of the wicked, and the establishment of virtue. 8. He, O Arjuna, who, from conviction, acknowledges my divine birth and actions to be even so, does not upon his quitting his mortal frame enter into another, for he enters into me. 9. Many who were free, from affection, fear, and anger, and, filled with my spirit, depend-

ये यथा मां प्रदधन्ते तस्मिन्धैव भजाम्यहम् । मम यत्कर्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थसर्वशः ॥ ११ ॥ वांक्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवता । क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥ चातुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्मबन्धमाश्रित्वा । तस्य वर्त्तमानसि मां च द्रव्यकर्त्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥ न मां कर्माणि बल्यन्ते न मे कर्मफले स्पृहा । इति मां योभिजानाति कर्माभिरन स उच्यते ॥ १४ ॥ एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैराप मुमुक्षुभिः । कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वं पूर्वतरं कृतम् ॥ १५ ॥ किं कर्म किमकर्म्मतिष्यथोप्यप्र मोहिताः । तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि योजन्ताः वा मोक्षयसेऽनुभात् ॥ १६ ॥ कर्मणोऽपि चोद्भव्यं चोद्भव्यञ्च विकर्मण । अकर्मणश्च चेद्भव्यं महना कर्मणो गति ॥ १७ ॥

को प्राप्त हुए हैं अर्थात् मुझमें लयहोगये हैं । १० । जो पुरुष मुझ सर्वव्यापीको भिजता वा शत्रुताके भावसे प्राप्तहोते हैं मैंभी उनको उसीरीति से सम्मुख होता हूँ । ११ । इस नरलोकरमें कर्मोंसे उत्पन्न लक्ष्मी धन पुत्रादि सिद्धी शीघ्रहोती है इस निमित्त यहां कर्मोंकी सिद्धिजाननेवाले पुरुष जो देवताओंको पूजते हैं वहभी मेरेही भक्त हैं । १२ । मैंने चारोंवर्णों को उनके गुण विभागों समेत उत्पन्न किया मया के योगसे मुझको उनकाभी स्थायी जानो और वास्तरमें अविनाशी और अकर्त्ता जानो । १३ । क्योंकि कर्म मुझको स्पर्श नहीं करते हैं और न मेरी कर्मफल में इच्छा है जो पुरुष मुझको इस प्रकारसे जानता है वह कर्म बंधनको नहीं पाता है । १४ । पूर्व समय क मोक्षचाहने वाले शानियोंने इसीप्रकार से जानकर कर्मोंको किया है इस कारण है अर्जुन तूभी इस प्राचीन वृद्धों के किये हुए कर्मको कर । १५ । कर्म क्या है और अकर्म क्या है इसके जानने में पंडितलोग भी मोठका प्राप्त होते हैं उनदोनों कर्म और अकर्मोंको मैं तुझमें कहता हूँ जिनके जाननेसे तू इस अधुब संसार से छुटजायगा । १६ । शास्त्रोक्त कर्म की गति भी जानने के योग्य है और शास्त्र में विरुद्ध

ed upon me, having been purified by the power of wisdom have entered into me. 10 I assist those men who in all things walk in my path, even as they serve me. 11. Those who wish for success to their works in this life, worship the Devas. That which is achieved in this life, from works, speedily comes to pass. 12. Mankind was created by me of four kinds, distinct in their principles, and in their duties. Know me then to be the creator of mankind, uncreat-

कर्मण्यकर्मयः पश्येदकर्मणिच कर्मयः । सवृद्धिमान् मनुष्येषुसयुक्तः कृतश्चकर्मकृत् १८ ॥
 पश्यसर्वसंगारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जितः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणतमाहुः पण्डितं बुधाः १९ ॥
 त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः । कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित् करोति
 सः ॥ २० ॥ । नरादीर्षेतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः । शरीरं केवलं कर्म कुर्वन्ना-
 प्रोति किल्बिषम् ॥ २१ ॥ यहच्छालाभसन्तुष्टो ब्रह्मादीतो विमात्सरः । सप्रः
 सिद्धावसिद्धी च कृत्यापि न निवध्यते ॥ २२ ॥ गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावास्थित
 चेतसः । यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रायश्चीयते ॥ २३ ॥ प्रह्वार्षणं ब्रह्म हविर्ब्रह्मा

कर्म भी जानने उचित हैं और अकर्म अर्थात् न करने की भी गति जाननी चाहिये क्योंकि कर्म की गति कठिन है । १७। जो पुरुष कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्मको देरता है वह मनुष्योंमें बुद्धिमान् महायोगी और सबकर्मों का करनेवाला है । १८। जिसके सबपारंभ कर्म इच्छा और संकल्पसे रहित हैं और ज्ञानरूप अग्निसे कर्मोंको भस्म कर दिया है उसको ज्ञानीलोग पंडित कहते हैं । १९। कर्मफल को त्यागकरके सदैव आत्मलाभ से संतुष्ट अहंकारादि से रहित है वहकर्म में अत्यन्त प्रयत्नभी कुछ नहीं करता है । २०। जो पाप ऐश्वर्यों को नहीं चाहता देह मन बुद्धि और सबइन्द्रियोंका जीतनेवाला है वह केवल शरीर संवन्धी कर्मोंको करता हुआ पापमें रहितहोता है । २१। जिना याचनाके मिसेहुए से संतुष्ट हर्षशोकसेरहित हृत्तरेकेलाभमें प्रसन्नहोनेवाला और सिद्धी असिद्धी में रूपान्तर दशाके बिना कर्म करके भी धन का नहीं मात्त होता है । २२। असंग अर्थात् अपनेको अकर्षा मानने वाले कर्म फल की इच्छासे रहित यज्ञादिक कर्मों को ईश्वरार्पण करनेवाले ज्ञान निष्ठ लोगों के संपूर्णकर्म नष्ट होजाते हैं । २३। अर्पणके साधनमंत्रादिक

action, improper action and inaction. The path of action is full of darkness.

17. He who may behold, as it were, inaction in action, and action in inaction, is wise amongst mankind. He is a perfect performer of all duty. 18. Wise men call him a Pandit, whose every undertaking is free from desire, and whose actions are consumed by the fire of wisdom. 19. He abandons the desire of a reward of his actions; he is always contented and independent; and although he may be engaged in a work, he, as it were, does nothing. 20. He is unsolicitous, of a subdued mind and spirit, and exempt from every perception; and, as he does only the offices of the body, he commits no offence. 21. He is pleased with whatever he may by chance obtain; he has got better of duplicity, and he is free from envy. He is the same in prosperity and adversity; and although he acts he is not bound. 22. The work of him, who has lost all anxiety for the event, who has renounced all and stands with his mind subdued by spiritual wisdom, and who performs sacrifices has nothing else to do God is the

ग्नो ब्रह्मणा हुतम् । ब्रह्मैव तेन गतव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ २४ ॥ दैवमेवापरे
यज्ञ योगिनो पश्युपासते । ब्रह्माभावपरे यन्न यज्ञेनैवोपलुहति ॥ २५ ॥ श्रेत्रादी
नान्द्रियाण्ये सद्यमानिषु जुहुवात् । श्वादीन् विषयानन्वे इन्द्रियाग्निषु जुहुवति
॥ २६ ॥ सर्वानाद्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे । आत्मसयमयोगान्मौ जुहुवात्
ज्ञानक्षीपिते ॥ २७ ॥ द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथा परे । स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च
यतस्य साशितव्रता ॥ २८ ॥ अपाने जुहुवति प्राण प्राणे पान तथा परे । प्राणा
पानगती रुधा प्राणावामपरयणा ॥ २९ ॥ अपरे नियताहारा, प्राणान् प्राणेषु

ब्रह्मरूपही है और अर्पणके हव्य घृतादीक भी ब्रह्म है जो होम कियागया है वह
ब्रह्म मेही है जो अग्नि में होमा है वह ब्रह्म में है होम करनेवाला और करानेवाला
दोनों ब्रह्म है जो यज्ञमानने हवन किया वह ब्रह्मनही किया है, जो ब्रह्म कर्म रूप
समाधिकेद्वारा उस कर्मका फल मिलनेवाला है वह भी ब्रह्म ही है । २४ । कोई
योगी देव यज्ञकी उपासना करते है कोई जीव यज्ञ को निरुपाधि रूप के द्वारा
ब्रह्मरूप अग्नि में हवन करते है यह उत्तम ज्ञान यज्ञ है कोई योगी श्रोत्रादि इन्द्रियों
को संयम रूप अग्नियोंमें हवन करते हैं कोई शब्दादि विषयों को इन्द्रिरूप अग्नियों
में हवन करते है । २५ । कोई योगी इन्द्रियों के सबकर्मों को वा प्राणों के सब कर्मों
को मन और बुद्धिकी उस संयमरूप अग्निमें जो ब्रह्मज्ञानसे प्रकाशमान है हवन करते
है । २६ । इसीप्रकार द्रव्य यज्ञ तपयज्ञ और योगयज्ञ है और सदैव वेदपाठन पठन में
प्रीति रखना स्वाध्याय यज्ञ है और वेदके अर्थको अच्छी रीति से समझकर ब्रह्म
में तदाकार रहना यह ज्ञान है इन यज्ञों के करने वाले अथवा उपाय करनेवाले
तेजःव्रत है, । २८ । इसीप्रकार कोई योगी अपान में प्राण को हवन करते है
अर्थात् रेचक करते है और प्राण अपानकी गति को रोक कर प्राणायाम में प्रवृत्त
है विषयों को सशधीन करने वाले अर्थात् विषयों के आधीन न होने वाले कोईर

gift of charity, God is the offering God is in the fire of the altar, by
God is the sacrifice performed and God is to be obtained by him who
makes Him alone the object of his worships 24 Some of the devout
attend to the worship of the Devatas others with offering, direct
their worship unto God in the fire others sacrifice their ears, and
other organs, in the fire of constraint, whilst some sacrifice sound
and the like, in the fire of their organs 26 Some again sacrifice
the action of all their organs and faculties in the fire of self con-
straint, lighted up by the spark of inspired wisdom 27 Some sacrifice
wealth some sacrifice asceticism, some sacrifice yoga some sacri-
fice self study, and some yatis of fixed resolve perform sacrifices of
wisdom 28 Some there are who practice pranayam, observing food
restrictions, sacrifice prana in apam and apam in pran, and restraining

जुवति । सर्वंप्येते यज्ञाविदो यज्ञक्षपितस्त्वया ॥ ३० ॥ यज्ञशिष्टामृतमुजो याति
 प्रज्ञ सनातनम् । नाय लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कृतो य कुर्वत्तम ॥ ३१ ॥ एष यदुचि
 धा यज्ञा विनता ब्रह्मणोमुखे । कर्मज्ञान् विद्धि तान् सर्वा नेत्र श्राव्या विमोक्षसे ॥
 ॥ ३२ ॥ श्रेयान् द्रव्यमयाद्यज्ञज्ञानयत्न पर-नप । सर्व कमाचिल पार्थ ज्ञाने
 परिसमाप्यत ॥ ३३ ॥ तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया । उपदेक्ष्याति ते
 ज्ञान ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिन ॥ ३४ ॥ यज्ञज्ञात्वा न पुनर्गोए मेव यास्यासि पाण्डव ।
 येन भूता-वशेषण द्रव्यस्वात्मन्यथो मयि ॥ ३५ ॥ अपि चेदसि पापे-व. सर्वेभ्य

योगी मन इन्दी को मन चित्त अहंकार में अथ पूर्वक हवन करते हैं तब इनकी
 समाधि निद्धी होती है इन सब यज्ञोंके प्राप्त करनेवालेभी अपने यज्ञों के द्वारा
 पापों से निवृत्त होते हैं अर्थात् इन यज्ञोंका फल पापों से पृथक् होना है । ३० ।
 पञ्चमहायज्ञ में शेष वचेद्युये अपृत नाम अन्न के भोजन करने वाले चित्त शुद्धी के
 द्वारा सनातन ब्रह्मणो पाते हैं, हे कोरवों में श्रेष्ठ अर्जुन यज्ञ न करनेवाले पुरुषका
 जबही लोक नहीं है तो परलोक कहाँसे होसके है । ३१ । उस प्रकार करके वेद
 के मुख से फैलेहुए अनेक यज्ञ हैं उनसबको कर्मों से उत्पन्नहुआ जानकर तत्त्व
 ज्ञानके द्वारा तू मुक्तिको पावेगा । ३२ । हे शत्रुतापी जो द्रव्य भय यज्ञ होते हैं
 उनसे ज्ञानयज्ञ बड़ा श्रेष्ठ है क्योंकि सबकर्म अपने फलोंसमेत संपूर्णता पूर्वक ज्ञान
 मेंही समाप्त होजाने हैं । ३३ । उस ब्रह्मज्ञान को जानकर शास्त्र जाननेवाले वा
 अनुभव करनेवाले ज्ञानी तेरी दरइवत वा सेवा और पूरेप्रश्नके द्वारा उपदेश करेंगे
 । ३४ । हे पाण्डव उसे ब्रह्मज्ञानको जानकर फिर इसप्रकार मोहको नहीं-पावेगा
 तदनन्तर उसब्रह्मज्ञान के द्वारा ब्रह्माभे लेकर तृणपर्यंत जीव मात्रको अपने में

both the currents (pran and apan) sacrifice pran in pran All these
 different kinds of worshippers are by their particular modes of wor-
 ship, purified from their sins 30 He who enjoys but the Amrita
 which is left of his offerings, obtains the eternal Bramha. This
 world is not for him who does not worship, and where, O Arjuna, is
 there another? 31 A great variety of modes of worship emanate from
 the mouth of God I learn that they are all the offspring of action
 Being convinced of this, thou shalt obt in an eternal release 32
 The spiritual wisdom is far better than the worship with offer-
 ings of things In wisdom is to be found every work without ex-
 ception 33 Seek then this wisdom with prostrations with ques-
 tions, and with attention that those learned men who know its
 principles may instruct thee in its rules 34 Having learnt it,
 thou shalt not again, O son of pandu fall into folly and shalt

पापकृत्तम । सर्वं ज्ञानप्लवेनैव व्रजिन सन्तरिष्यसि ॥ ३६ ॥ यद्यैधांसि समिद्धोऽग्नि
 भस्मसात् कुरुते जुन । ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा ॥ ३७ ॥ न
 हि ज्ञानेन सदृश पवित्रमिह विद्यते । तत् स्वयं योगसासद्धः कालेनात्मनि विन्दति
 ॥ ३८ ॥ श्रद्धापूर्वकं ज्ञानं तत्परं सयतेन्द्रियं । ज्ञानं लब्ध्वा परा शान्तिमाधि
 रेणाधिगच्छति ॥ ३९ ॥ अज्ञश्चाश्रद्धानश्च सदायातमा धनशयात् । नायं
 लोकोऽस्ति न परो न सुखं सशयात्मानं ॥ ४० ॥ योगसन्त्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्न
 सशयम् । आत्मवन्तं न कर्माणि निवधन्ति घनंजय ॥ ४१ ॥ तस्माद्दानं स्वभूत

और फिर मुझ में देरेगा । ३६ । जो सब पापों से भी अधिक पाप का करनेवा-
 ला है तौ भी ज्ञानरूपी नौका के द्वारा पापरुखी सब समुद्रों को तर जायगा । ३६ ।
 जैसे महामयल अग्नि इंधन को भस्मकरदेती है उसी प्रकार ज्ञानरूपी अग्नि सब
 कर्मोंको भस्म करडालती है । ३७ । इसलोक में ज्ञानके सिवाय कोई पवित्रता वर्तमान
 नहीं है निष्काम यज्ञों से पूरी शुद्धता पाकर योगी उस ज्ञानको बहुत समय में अपने
 में पाता है । ३८ । श्रद्धायान् अच्छा जितेन्द्री उभ ज्ञानको पाता है और ज्ञानको पाकर
 पारव्यादि कर्मों के समाप्त होनेमें कैवल्य मात्ररूप परा शान्ती को पाता है । ३९ ।
 अज्ञानी श्रद्धा से रहित मन में सन्देह रखने वाले नाशको पाते हैं चिच में सन्देह
 रखने वालों को न यह लोक है न परलोक है और न सुख है । ४० । हे अर्जुन
 योग से कर्मफल के त्यागने वाले अथवा कर्मको ही त्यागनेवाले ज्ञान संशय से रहित
 शम दमादि के करने वाले आत्मयान् का कर्म बंधन नहीं करसके है । ४१ । हेभरत

behold all nature in thyself and then in me 35 Although thou
 wert the greatest of all offenders, thou shalt be able to cross the
 gulf of sin with the bark of wisdom 36 As the natural fire, O
Arjuna, reduces the wood to ashes, so may the fire of wisdom re-
 duce all immoral actions to ashes 37 There is not any thing in this
 world to be compared with wisdom for purity He who is per-
 fected by practice, in due time finds it in his own soul 38 He
 who has faith finds wisdom, and, above all, he who has got the
 better of his passions, and having obtained this spiritual wisdom he
 shortly enjoys supreme peace 39 The ignorant, and the man with-
 out faith, whose spirit is full of doubt, is lost. Neither this world
 nor that which is above, nor happiness, can be enjoyed by the man
 of a doubting mind. 40 The human actions have no power to
 confine the spiritual mind, which by study, has forsaken work, and
 which, by wisdom, has cut asunder the bonds of doubt. 41 Where-

हृत्स्थं ज्ञानासि नात्मनः । छिन्नैर्न संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥ ४२ ॥
इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सृपनिपत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुन संवादे यज्ञविभागयोगोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अर्जुन उवाच ॥ संन्यास कर्मणां कृष्ण पुनर्योगश्च संशसि । यच्छ्रेय एतयो रेकं
तन्मे ब्रूहि क्षुनिश्चितम् ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ संन्यासः कर्म योगश्च निःश्रेयसकरा
बुभौ । तयोस्तु कर्म संन्यासात् कर्मयोगो विशिष्यते ॥ २ ॥ ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी
योनद्वेषि न काङ्क्षति । निर्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं वन्धात् प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ सांख्ययोगी
पृथग्वालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः । एकमप्यास्थितः सम्यग्भयोर्विदते फलम् ॥ ४ ॥

वंशी इसीकारण इस अज्ञान से उत्पन्न हृदय में नियत अपने संशयको ज्ञानरूपी
खड्ग से काटकर निष्काम कर्म योग में नियतहो ॥ ४२ ॥

अध्याय ॥ ५ ॥

अर्जुन बोले कि हे श्रीकृष्णजी आप कर्मोंके त्यागको कहकर फिर योगकर्म
करने को कहतेहो इनदोनों में से कौनसा आपने श्रेष्ठतम निश्चय कियाहै उसको
मुझे समझाइये । १ । श्रीभगवान् बोले कि कर्मों का त्याग और कर्मों का करना
यह दोनों ज्ञानकी उत्पत्ति के कारण हैं परन्तु इनदोनों में कर्म करना कर्मके त्याग
से श्रेष्ठ है । २ । हे महाबाहु वह सदैव नियत रहने वाला संन्यासी जानने के
योग्य है जो न इच्छा करता है न अलग होताहै और विभाग वा द्वन्द्वों से पृथक्
है वह सुख पूर्वक मायाके बंधनसे छूटताहै । ३ । अज्ञानी पुरुष ब्रह्मज्ञानरूप
सांख्य और कर्म के अनुष्ठानरूप योगको पृथक् २ कहते हैं पंडित नहीं कहते हैं
क्योंकि एकमेंही नियत दोनोंके फलोंको अच्छी रीतिसे पाताहै । ४ । जो मोक्षरूप

fore, O son of Bharata, resolve to cut asunder this doubt, offspring
of ignorance, which has taken possession of thy mind, with the
sword of wisdom, arise and practise yog. 42.

LECTURE V

Renunciation of Works

Arjuna—Thou now speakest, O Krishna, of the forsaking of
works, and now again of performing them. Tell me positively
which of the two is better. 1. KRISHNA—Both the renun-
ciation and the practice of works are equally the means of extreme
happiness; but of the two the practice of works is to be distin-
guished above the desertion. 2. The perpetual recluse, who neither
longs nor hates, is worthy to be known. Such a one is free from
duplicity, and is happily freed from the bond of action. 3. Children
only, and not the learned, speak of the speculative and the practi-
cal doctrines as two. They are but one, for both obtain the self-

यन् सारथ्यं प्राप्यते स्थानं तद्योगोऽपि गम्यते । एतं सारथ्यञ्च योगञ्च यः पश्यति स पश्यति ॥ ५ ॥ संन्यासस्तु महासाहो दुःखमाप्तुमयोगतः । योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म न चिरेणधि गच्छति ॥ ६ ॥ योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः । सर्वभूतात्मभृतात्मा कुर्वन्नाप नालप्यते ॥ ७ ॥ नैव किञ्चित् करोतीति युक्तो मन्येत नत्सवित् । पश्यन् शूष्यन् स्पृशन् जिघ्रसन् शृण्वन् गच्छन् स्वपन् श्वसन् ॥ ८ ॥ प्रलयन् विशुद्धवृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नाप । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन् इति धारयन् ॥ ९ ॥ ब्रह्मण्याघायकर्मणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः । लिप्यते नस पापेन पद्मपत्रमिदाम्मसा ॥ १० ॥ कायेन मनसा बुद्ध्या कवलेन्द्रियैरपि । योगिनः कर्म कुर्वति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ ११ ॥

स्थान ज्ञानियोंको प्राप्त होताहै वह ज्ञानके द्वारा कर्म योगियोंकोभी प्राप्त होताहै ब्रह्मज्ञान और कर्मयोग यह दोनों एकहीहै जो देवताहै वही अच्छी रीतिसे समझताहै । ५ हे अर्जुन बिना कर्मयोगके संन्यास होना बड़ा कठिनहै और कर्म योगमें मृत्त हुआ मुनि धोड़ेही समयमें ब्रह्मको पाता है । ६ । जो योग में संयुक्त है और जिपकी चैतन्य आत्मा छाने साग्न्य दोर से रहित है और जिमने मनको जीतकर इन्द्रियोंको जीताहै और सब जड़चैतन्य जीव मात्रोंका आत्मारूपहै वह कर्मोंको करना हुआभी उनसे अनंग औरनिर्लेप करताहै । ७ । तत्वज्ञ योगी देखता, सुनता, स्पर्श करता सूंघता खाता चलता सोताश्वासलेता धोलेता त्याग करना ग्रहण करना आसोंको सोचता मचिताभी यही मानता है किमैं कुछनहीं करताहूं। और जो ज्ञानी कर्मों को वहाँमें धारण करके अथवा फलों को त्यागकर कर्मोंको करता है वहभी पापोंसे संयुक्त ऐसे नहीं होताहै जैसे कि कमलका पत्र पानीमें नहीं भीगता । १० । योगी कर्मफलको त्याग कर चित्त शुद्धी के निमित्त मपतामें

same end 4. The place which is gained by the followers of the one, is gained by the followers of the other. That man sees, who sees that the speculative doctrine and the practical are but one. 5. To be a *Sunyasee*, or recluse, without application, is difficult, whilst the *Muni*, who is employed in the practice of his duty, presently obtains *Brahma*, the Almighty. 6. He who, employed in *yog*, is pure minded and has control over his mind and passions, and whose soul is the universal soul, is not troubled though he works. 7. The attentive man, who is acquainted with the connection of senses with their objects, thinks that he does nothing although he is engaged in seeing, hearing, touching, smelling, eating, walking, sleeping, breathing, grasping, talking, opening and closing his eyes. 9. The man who, performing the duties of life, and quitting all interest in them, ascribes them to *Brahma*, is not troubled by sin; but remains like the leaf of the lotus unaffected by the waters. 10. Yogis perform the offices of life with their bodies, minds, understanding, and senses

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तमामोक्त नैष्टिकीम् । अयुक्तं कामकारेण फलसक्तो
 निबध्यते ॥ १२ ॥ सर्वकर्माणि मनसा संशयस्यास्ते सुखं वशी । नवद्वारे पुरे देही
 नैव कर्षन्नकारयन् ॥ १३ ॥ न कर्तृत्व न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभ । न कर्मफल
 संयोग स्वभावस्तु प्रवर्तत ॥ १४ ॥ नादत्ते फस्याचित् पाप न चैव सुदुत चिः ।
 अतनेनामृतं ज्ञानतेनमृह्यन्तिजन्तय ॥ १५ ॥ ज्ञानेनतुतदाज्ञानयया नाशितमात्मनः । तयामा
 दिव्यवज्ज्ञान प्रकाशयतितत्परम् ॥ १६ ॥ तद्बुद्धयस्तदात्मानंताघ्नष्टास्तत् परा
 यया । मच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषा ॥ १७ ॥ विद्याधिनयसम्पन्ने प्रज्ञेण

रहितमनः वाणीदिह और इन्द्रियों के द्वाराभी कर्म को करते हैं । ११ । योगी कर्म
 फलको छोड़कर शान्तीको पाता है और अयोगी चित्तकी इन्द्रियोंके अनुसार, कर्मफल
 में भ्रष्टचिचि हारकर वारंवार बंधन में पड़ता है । १२ । चित्तका जीतनेवाला देहा
 धीश आत्मा नवद्वारवती पुरीमें नकरता न कराना हुआ सर्वकर्मों को मनसे त्यागकर
 सुखपूर्वक बैठा है । १३ । चैतन्यात्मा प्रभु लोक के कर्तृत्व वा कर्मत्व और कर्म फलक
 संगको उत्पन्न नहीं करता है किन्तु जितका जैसास्वभाव है वह उसीप्रकार से कर्मों
 को करता है । १४ । वह व्यापक ईश्वर किसीके पाप पुण्यको नहीं लेता है अज्ञान
 से ज्ञान टका हुआई इसी कारण जीव मोहको पाते हैं । १५ । जिन लोगों के अज्ञान
 का वह अज्ञान ज्ञानके द्वारा दूरहोगयाई उनका ज्ञान सृष्टि के समान प्रकाशमानहोकर
 परम आत्म तत्त्वको प्रकाशित करता है । १६ । उस परम बल में बुद्धि वा आत्माको
 लगानेवाले उसीम निष्ठावान और आश्रय करनेवाले योगी जिनके कि पाप ज्ञानसे
 नाशहुए है वह मोक्ष का पाते हैं । १७ । जो ब्रह्मज्ञानी पंडित हैं वह विद्या और

and forsake the consequences for the purification of their souls* 11. Although employed, they forsake the fruit of actions and obtain infinite happiness, whilst the man who is unemployed, being attached to the fruit by desire, remains bound 12 The man who has his passions in subjection, and with his mind forsakes all works, his soul sits at rest in the nine gated city (body), neither acting, nor causing to act 13. The Almighty creates neither the powers nor the deeds of mankind, nor the application of the fruits to action nature prevails 14. The Almighty receives neither the vices nor the virtues of any one Mankind are led astray by their reasons being obscured by ignorance 15 But when that ignorance of their souls is destroyed by knowledge, their wisdom shines forth again with the glory of the sun, and causes the Deity to appear 16 Those whose understandings are in him, whose souls are in him, whose confidence is in him, and whose asylum is in him, are by wisdom purified from all their offences and go from whence they shall never return 17, The learned behold him alike in the Brahmans, per-

गवि हस्तिनि । शुनि चैवश्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ १८ ॥ इहैव तैर्दिज-
तःसर्गो येषां साम्येस्थितं मनः । नर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्मात् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥१९॥
न प्रहृष्येत् प्रिय प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम् । स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि
स्थितः ॥ २० ॥ चाक्ष्य स्पर्शेष्वसक्तत्मा । चन्द्रत्यात्मानं यत्पुत्रम् । स ब्रह्मयोगयुक्त-
त्मासुखमक्षय्यमश्नुते ॥ २१ ॥ ये हि संस्पृशंजाभोगा दुःखयोनयपवते । आद्यन्तवन्तः
कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥ २२ ॥ शकन्तीहैव यः सोढुं प्राकृशरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रीधोद्भवं चेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥२३ ॥ योऽतःसुखांतरामस्तथाऽन्तर्ज्योतिरे

नम्रता से भरेहुए ब्राह्मण गौ हाथी श्वान और चांडालमें समान ब्रह्मके देखने वाले हैं
। १८ । जिनका मन सब जीवमात्रों में ब्रह्मभाव रूपी समता से नियतहै वह इसी
लोकमें अपने जन्म को सफल करतेहैं, निश्चय ब्रह्म दोष से रहित सम बुद्धी है इस
समता बुद्धि से वह ब्रह्ममेंही नियतहैं । १९ । अभीष्टको पाकरभी प्रसन्न न होय और
दुःखदायी को पाकर व्याकुल न होजाय ब्रह्ममें निपत बुद्धि और ध्यानके द्वारा
उत्पन्न होनेवाले मोहसे रहित ब्रह्मज्ञ और ब्रह्ममें नियत होजाय । २० । बाहर उत्पन्न
होने वाले स्पर्श अर्थात् विषय में चिच न लगानेवाला पुरुष जो मुख आत्मा में पाताहै
वह ब्रह्म योग में प्रवृत्त बुद्धि अर्थात् ब्रह्म ज्ञानी मोक्षरूप अविनाशी मुखको पाता
है, । २१ । वह अर्जुन विषयों के योग से उत्पन्न होनेवाले जो भोगहैं वह दुःखके
उत्पात्ति स्थान हैं क्योंकि आदि अन्त अर्थात् उत्पात्ति नाश रखनेवाले हैं उनमें ज्ञानी
पुरुष नहीं रमताहै । २२ । जो मनुष्य इसलोकमें देह त्याग से गधमही इच्छासे वा
क्रोधसे उत्पन्न होनेवाले वेगको सहताहै वही योगीहै और सुखी है, । २३ । जो
आत्मामें मुख माननेवाला विषयोंसे वैराग्यवानहै अथवा आत्माही में क्रीड़ा करने

ected in knowledge, in the ox, in the elephant, in the dog, and
in him who cats of the flesh of dogs. 18. Those whose minds are
fixed on this equality, gain eternity even in this world. They put their
trust in Bramha, the Eternal, because he is everywhere alike,
free from fault. 19. The man who knows Bramha confines in Bram-
ha, whose mind is steady and free from folly, should neither rejoice
in prosperity, nor complain in adversity. 20. He whose soul is un-
affected by the impressions made upon the outward feelings obtains
pleasure in his own mind. Such a one, whose soul is thus fixed
upon the study of Bramha, enjoys pleasure without end. 21. The
enjoyments which proceed from the feelings are as the wombs of
future pain. The wise man who is acquainted with the beginning
and the end of things, delights not in these. 22. He who can bear
up against the violence which is produced from lust and anger in
this mortal life is eternally peaceful and happy. 23. The
Yogi who is

वय । स योगी ब्रह्मानर्वाणं ब्रह्मभूतोधिगच्छति ॥ २४ ॥ लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणस्युपयः
 क्षीणकल्मषाः । उग्रद्वेषा यतात्मान सर्वभूताहिने रता ॥ २५ ॥ कामक्रोधविदुक्तानां
 यतीनां यतचेतसाम् । अभितो ब्रह्मानर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥ २६ ॥ स्वर्दान्
 कृत्वा वहिर्वाह्यश्रद्धैवान्तरेभुवोः । प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ
 ॥ २७ ॥ यतोन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्भोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधो यः स दामुक्त
 एव सः ॥ २८ ॥ भोक्तारं यत्तपसां सर्वलोकमहेश्वरम् । सुहृदं सर्वभूताना
 म्नात्मानां शान्तवृच्छति ॥ २९ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि संन्यासयोगोनाम
 पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

वाचा स्त्रीआदि से रहितहै और उमकी क्रीड़ाके सामानभी आत्मारूपहै वह जीन्मु-
 क्तयोगी देवयान पित्रयान संबंधी ब्रह्मको पाता है । २४ । जो पापों से और
 संग्रयोंमें रहित सब जीवों के हितकारी है वह ब्रह्मज्ञानी ऋषि ब्रह्मनिर्वाण को पाते
 हैं । २५ । और काम क्रोधमें रहित चित्तके जीतनेवाले ब्रह्मज्ञानी संन्यासी सबद-
 शाओं में मोक्षको बरतते हैं । २६ । आत्मा से बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयोंको
 बाहर करके और नाभिका के भीतर रहनेवाले प्राण और अपानको समान कर के
 अर्थात् प्राणायाम करके, जो मुनि इन्द्रियमन और बुद्धिका जीतनेवाला वा मोक्षको
 उत्तमस्थान जाननेवाला इच्छाभय क्रोधमें रहितहै वह सदाव मुक्तहै इस प्रकार
 सावधान चित्तज्ञानी को जप जानना चाहिये उसको कहते हैं—उपाधि युक्त स्वामी
 देवरूप से यज्ञ और तपोंके भोक्तासबलोकों के पितामह मुष्मन्तर्यामी को जान
 कर अर्थात् मान्नात्कार करके भरेभावको पाकर कैवल्य मोक्षरूप शान्तीको पाताहै । २९ ।

within, attains Brahma-Nirvan. 24 Such Rishes as are purified
 from their sins freed from doubt, of subdued minds, and interested
 in the good of all mankind, obtain the incorporeal Brahma 25. The
 incorporeal Brahma is everywhere for such as are free from lust
 and anger, of humble minds and subdued spirits, and who are ac-
 quainted with their own souls 26 Shutting out all outward con-
 tact, with eyes fixed between his brows, who makes the breath to
 pass through both his nostrils alike in expiration and inspiration,
 who is of subdued faculties, mind and understanding, and has set
 his heart upon salvation, and who is free from lust, fear and anger,
 is for ever blessed in this life, and being convinced that I am the
 cherisher of religious zeal, the lord of all worlds, and the friend of
 all nature, he shall obtain me and be blessed. 29

श्री भगवानुवाच ॥ अनाश्रितः कर्म फल कार्यं कर्म करोति यः । स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चा क्रिय ॥ १ ॥ यः संन्यासमिति प्राहुर्योगन्तं शिद्धिं पाण्डव । न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ॥ २ ॥ आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते । योगारूढस्य तत्सर्वं शमं कारणमुच्यते ॥ ३ ॥ यदाहि नेन्द्रियाद्येषु न कर्मस्वनुपज्जते । सर्वं संकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥ उद्धरेदात्मनः त्मानं नात्मानमवसादयेत् । आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुं रात्मैव विपुरात्मनः ॥ ५ ॥ बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः । अनात्मनश्चतुश्चत्वे यच्छेतात्मैवशत्रुत्वम् ॥ ६ ॥ जितात्मनः प्रश्ना

अथाय ॥ ६ ॥

श्रीभगवान् ने कहा कि जो कर्म फलका आश्रय न करने वाला करने के योग्य कर्मको करता है वही संन्यामी है वही योगी है यद्यपि वह वेद और स्मृति संबंधी अग्निको और मनवाणी देहकी क्रियाओंको त्याग करनेवाला नहीं है । १ । जिमको कि संन्यास कहते हैं हे पांडव उमको योगज्ञान संकल्पको त्यागन करने वाला कोई योगी नहीं होता है । २ । ज्ञान योगपर चढ़नेकी इच्छा रखनेवाले मुनिका साधन कर्म कहा है और उमीज्ञान योगपर चढ़ेहुएका साधन कर्मोंका त्याग रूप संन्यास कहा है । ३ । जब सब संकल्पोंका अच्छी रीतिमें त्याग करनेवाला कर्म योगी इन्द्रियोंके विषय और कर्मोंमें तदाकार नहीं होता है तब ज्ञान योगपर चढ़ाहुआ कहाजाता है । ४ । आत्माके द्वारा आत्माको उद्धारकर कभी आत्माका विनाश न करे क्योंकि आत्माही आत्मा का बन्धु और शत्रु है । ५ । आत्माका बंधुमन है जिमने मन के द्वारा चित्तको जीता है, और जिमने चित्तको नहीं जीता उसका मन शत्रु के समान शत्रुता में नियत होता है । ६ । जीतोप्युता मुख दुःख

LECTURE VI

Of the exercise of soul

Arishna - He is both a *Yogee* and a *Sanyasee*, who performs work as a duty, independent of its fruit, not he who lives without the sacrificial fire and without action 1 I earn, O son of *Pandu* that what they call *Sanyas*, or a forsaking of the world, is the same as *Yoga* He cannot be a *Yogee*, who, in his actions, has not abandoned all intentions. 2 Works are said to be the means for a *yogee*, so rest is called the means for him who has attained devotion. 3 When the all contemplative *Sanyasee* is not engaged in the objects of the senses, nor in words, then he is called one who has attained devotion. 4 He should raise himself by his mind he should not suffer his soul to be depressed. Self is the friend as well as the enemy of self. Self is the friend of him who has subdued it, but a foe to him who has not conquered the mind 6 The soul of the physical

न्तस्य परमात्मा समा हितः । शीतोष्णसुखदुःसेषु तथा माना पमानयोः ॥ ७ ॥ ज्ञान
विज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितोन्द्रियः । युक्तइत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकांचनः ॥ ८ ॥
सुहृन्मित्रार्थुदासीन मध्यस्थ द्वेष्य वन्धुषु । साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ९
योगी युजात् सततमात्मानं रहसि स्थितः । एकाकी यतचित्तात्मा निराशीर परिग्रहः
॥ १० ॥ शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमास नगात्मनः । नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैला जिन
कुशोत्तरम् ॥ ११ ॥ तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रिय क्रियः । उपविश्यासने युञ्ज्या
योगमात्म विशुद्धये ॥ १२ ॥ समं काय शिरोभ्रौचं धारयन्नचलं स्थिरः । सम्प्रेक्ष्य ना-

मानापमानमें निर्विकार चित्त महाशान्त योगी का मन बड़ी समाधिको पाता है
। ७ । वह शास्त्रोपदेश से उत्पन्न बुद्धिरूपज्ञान और विज्ञानसे तृप्तचित्त मोक्ष के
अधिकारसे डिगायमान न होनेवाला अर्थात् निर्विकारहोकर इन्द्रियों का जीतने
वाला सब लोहा सोना पत्थर आदिको समान जाननेवाला योग सिद्ध पुरुष योगी
कहा जाता है । ८ । प्रतीकार बुद्धि विना उपकार करने वाला शत्रु मित्र में सम
भाव प्रिय अप्रिय और साधु असाधु इन सब में समान बुद्धि रखने वाला इन्द्रियों
समेत देह मनका जीतनेवाला निरपेक्ष योगाभ्यासी एकान्तमें बैठा हुआ सदैव
बुद्धीको आत्मामें लगावे । १० । पवित्र स्थान में अपना ऐसा अचल
आसन विछाकर जो न बहुत ऊंचा न नीचा कुशाका बनाहुआ अथवा कुशाके
ऊपर मृगचर्म उसके ऊपर सूत्रवन्न विछाहो । ११ । चित्त की क्रिया और इन्द्रियों
की क्रियाओं को विजय करनेवाला योगी उस आसन पर बैठकर मनको एकाग्र
करके अन्तःकरण की अत्यन्त पावित्रता के लिये योग का अभ्यास करे । १२ ।
और मूलाधारसे मस्तक तक सीधा और निश्चल नियत होकर अपने नासाग्र को
देखना हुआ दिशाओं को न देखतावैठे । १३ । और उस आसन पर बैठकर ब्रह्म-

conquered spirit is uniform in heat and cold, in pain and pleasure, in
honor and disgrace. 7. The man whose mind is replete with divine
wisdom and learning, who is constant and has subdued his
passions, is said to be devout. To the *Yogi*, gold, iron, and stones,
are the same. The man is distinguished who regards impartially
his companions, friends, enemies strangers, neutrals, foreigners, kins-
men, saints or sinners. 9. Let the *Yogee* constantly exercise self-
concentration, alone and in secret, checking the thoughts of the
mind and free from hope and greed. 10. In a pure place, on the firm
ground, neither too high nor too low, let him prepare a seat made
of Kusha grass covered with deer skin and a cloth. There having
made the mind one pointed, restraining all activities of the mind
and the senses, let him practise concentration for the purification
of his soul. 12. Keeping his head, his neck, and body, steady with-
out motion, his eyes fixed on the point of his nose, looking at no

।सकृत् स्व दिशश्चानवलोकयन् ॥ १३ ॥ प्रशांतात्मा ।वगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थित ।
मन सयम्य मचित्तो युक्त आसीत् तत्परः ॥ १४ ॥ युञ्जन्नेव सदात्मानं योगो नियत
मानस । शान्तिं ।नर्वाणपरम् । मत्सस्थामावगच्छति ॥ १५ ॥ नात्यश्नतस्तु योगास्ति न
चैकात्मनश्नत । न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥ १६ ॥ युक्ताहार विहार
स्थ युक्तचेष्टस्य कर्मसु । युक्तस्वप्नावबोधस्य योगा भवति दुःखहा ॥ १७ ॥ यदा
विनियत ।चक्षुःश्रोत्रमन्येवावतिष्ठते । ।नस्पृह सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ १८ ॥
यथा दीपो ।नवातस्थो नेङ्गने सोपमा स्मृता । योगिनो यत् चित्तस्य युञ्जतो योगमा
त्मन । १९ ॥ यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया । यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्ना
त्मनि तुष्यति ॥ २० ॥ सुखमात्यान्तरु यत्तद्व्युद्धिश्राद्धमतीन्द्रियम् । चेत्ति यत् न

चर्यं व्रत में नियत योगी संन्यासी मुझ में चित्त लगानेवाला अपने मनको स्वाधीन
करके मुझको सर्वोत्तम जानने वाला होवे । १४ । वह अत्यन्त शान्त चित्त सदैव
मनको जीतने वाला योगी इस रीतिसे आत्मा को परमात्मामें एकता को करता हुआ
मोक्ष निष्ठावाली शान्ती जोकि मुझ में वर्तमान है उसको पाता है । १५ । हे
अर्जुन बहुत भोजन करने वाले का भी योग नहीं होता और बहुत कम खाने वाले
का भी नहीं होता और अत्यन्त सोने और जागने वाले का भी नहीं
होता । १६ । जिसका कि आहार विहार योग्य रीति से है और कर्मों में भी चेष्टा
योग्यहै सोना जागनाभी योग्यहै उसका योग दुःखो का दूर करनेवाला होताहै
। १७ । जब अच्छी रीतिसे जीता हुआ चित्त आत्मा मेही नियत होता है और सब
कामनाओं से इच्छा रहित होता है वह योगी निर्विकल्प कहाजाता है । १८ । जैसे
कि दीपक निर्वात स्थान मे रखाहुआ नहीं हिलता है वैसेही चित्त जीतनेवाले
और समाधि का अनुष्ठान करनेवाले योगीको जानो । १९ । स्काहुआ एकाग्र चित्त
जिसदशामें लय होताहै अथवा जहां चित्त से आत्माको निर्विकल्प देखताहुआ आत्माही
में लुप्त होताहै बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयोंमे नहीं होता जो बड़ा ब्रह्मानन्द रूप

o her place around 13 The peaceful soul, fearless, firm in the vow
of Bhucharya, he should restrain the mind, and, fixing it on
me, depend on me alone 14 The Yogee, ever uniting his mind in
me, becomes mind disciplined and obtains happiness incorporeal and
supreme in me 15 Meditation cannot be for him arjuna, who eats
much or fasts much, him who is addicted to excessive sleeping or
excessive walking 16 Meditation destroys pain to him who is moder-
ate in eating, and recreation, whose inclinations are moderate in ac-
tion, and who is moderate in sleep and walking 17 A man is called
harmonised when his mind is fixed within himself, and he is exempt
from every lust and desire 18 The Yogee of a subdued mind,
thus employed in the exercise of his devotion, is compared to an
undecaying flame, standing in a place without wind. 19 That
(308) wherein the restrained mind finds delight, that wherein

चेवाय स्थितश्चलति तत्त्वत ॥ २१ ॥ य उद्ध्वा चापर लाभ मन्यते नाधिक तत ।
यस्मिन् स्थितो न दुःखेन मुदणायपि विचिन्त्यते ॥ २२ ॥ त विद्याद्बु पसयागविद्योग
योगसन्नितम् । स निश्चयत योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥ सङ्ग्रहप्रमदान्
कामास्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः । मनसैवेन्द्रियग्रान् विनियम्यमनस्तत ॥ २४ ॥
शनैः शनैश्चरमेद् बुद्ध्या धृतगृहीतया । आत्मसंस्थ मन रत्या न किञ्चिद्दपि चि त
येत् ॥ २५ ॥ यतो यतो भङ्गरात मन्श्चलमस्त्विधम् । ततस्ततो नियमौतदात्मन्येव
वश नयेत् ॥ २६ ॥ प्रशा तमतस ह्यन यागिन सखमुत्तमम् । उषैति शातरजस
ब्रह्मभूतमकल्पम् ॥ २७ ॥ युञ्जन्म सदात्मानं योगा विगतकृमप । सुप्तेन ब्रह्मस

मुख इन्द्रियों से बाहर ब्रह्म ज्ञानरूपी बुद्धि के द्वारा प्राप्त करने के योग्य है और
इस मुख में नियत है वह ब्रह्म के सिवाय दूसरी वस्तु को नहीं जानता है और तत्त्व
से पृथक् नहीं होता है । २१ । इस बड़े लाभ को पाकर उससे अधिक लाभ को
नहीं मानता है और इस में प्रवृत्त चित्त होकर पुरुष बड़े दुःखों के कारण से भी
पृथक् नहीं क्रिया जाता है । २२ । उसको दुःखों के संग से पृथक् करने वाला योग
नाम जाने जिसका चित्त वैराग्य के द्वारा दुःख सुखादिका सहनेवाला है उस से वह
योग निश्चय समेत अनुष्ठान करने के योग्य है । २३ । संकल्प से उत्पन्न हुई सब
इच्छाओं का सब वासनाओं समेत त्याग करके और चित्त के द्वारा इन्द्रियों के
समूह को चारों ओर से रोककर । २४ । अथवा धृति से स्वार्थीन की हुई बुद्धिके
द्वारा धीरे २ निमित्त करे और उस मनको आत्मा में नियत करके कुछ भी चि-
न्तन न करे । २५ । यह चंचल और अस्थिर मन जहां जहां विषयों में जावे वहां उहां
से रोककर उसको आत्मा के स्वार्थीन करे । २६ । इस अत्यन्त शान्तचित्त रजो-
गुण रहित धर्माधर्म से पृथक् ब्रह्मरूप योगी को ही उत्तम सुखकी प्राप्ति होती है

mund perceiving self rests content in self, 20 that, wherein one
feels infinite intelloc ual supreme bliss, wherein once established,
ne one would retire from reality, 21 which having obtained, he
resp ects no other acquisition so great as it, in which depending,
he is not moved by the severest pain 22 This disunion from the
conjunction of pain may be called Yoga spiritual union or devotion
It is to be attained by resolution, by the man who knows his own
mind 23 When he has abandoned every desire that arises from
the will, and subdued with his mind every inclination of the senses,
(24) he may, by degrees, find rest, and having, by a steady resolu-
tion, fixed his mind within himself, he shou'd think of nothing else
25 Wheresoever the unsteady mind roams, he should subdue it,
bring it back, and place it under the control of self 26 Supreme
happiness attends the Yogi whose mind is at peace, whose passions
are subdued, who is Brahma like, and free from sin 27 The Yogi

स्पर्शम यत् स्युत्तमदन्ते ॥ २८ ॥ सर्वभूतस्थमात्मान सर्वभूतानि चात्मनि । इक्षते
योगयुक्त त्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ २९ ॥ योमा पश्यति सर्वत्र सर्वञ्च मयि पश्यति ।
तस्याह न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥ ३० ॥ सर्वभूतस्थित यो मां भजत्येक
त्वम स्थित । सर्वथा वर्त्तमानोपि स योगी मयि वर्त्तते ॥ ३१ ॥ आत्मौपम्येन
सर्वत्र सम पश्यति योर्जुन । सुख वा यदि वा दुःख स योगी पाप्मो मतः ॥ ३२ ॥
अर्जुन उवाच । योय योगस्त्वया प्रोक्त साम्येन मधुसूदन । एतस्याह न पश्यामि
चञ्चलत्वात् स्थितिं स्थिराम् ॥ ३३ ॥ चञ्चलहि मन कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् । तस्याहं
निग्रहमन्ये वायोरेव सुदुष्करम् ॥ ३४ ॥ श्रीभगवानुवाच । असशयं महाबाहो

। २७ । अविद्या आदि क्लेशों से रहित योगी इस रीति से मनको स्वाधीन करता
हुआ सुख पूर्वक ब्रह्मानन्द रूप अनन्त सुखको पाताहै । २८ । योग से सावधान
चित्त सब जीवोंमें ब्रह्मका देखनेवाला योगी सब जीवों में वर्धमान अखण्ड ब्रह्मरूप
आत्माको और सब जीव मात्रों को आत्मा में देखता है । २९ । जो मुझको सब
जीवमात्र में देखता है और सबको मुझमें देखता है मैं उससे कभी परोक्ष नहीं
होताहूँ और वह भी मेरा परोक्ष नहीं है । ३० । जो योगी जीव ब्रह्मकी एकता
में नियतहोकर सब जीवोंमें वर्त्तमान मुझको निर्विकल्प समाधि के द्वारा भजता है
वह योगी सनकार के व्यवहारो को कहता हुआ भी मुझ में वर्त्तमान है । ३१ ।
जो योगी आत्माकी समता के कारण सबजीवों में सुख और दुःखको समान देखता
है वह योगी उत्तम कहाताहै । ३२ । अर्जुन बोले हे मधुसूदनजी आपने जो यह समता
युक्त योग वर्णन किया सो मैं मनकी चंचलता से उसकी बड़ी स्थिरताको नहीं
देखताहूँ । ३३ । हे श्रीकृष्णजी यह चंचल मन बड़ापराक्रमी और दृढ़ है उस
मनका रोकना मैं वायुके समान महाकठिन मानताहूँ । ३४ । श्रीभगवान् बोले कि

who is thus constantly vowed to soul, and free from sin, enjoys eternal
happiness of contact with Brahma. 28 The man whose mind is
absorbed in meditation and who looks on all things alike, sees the
supreme soul in all things in the supreme soul. 29 He who sees me
everywhere, and sees all this in me, I forsake not him, and he forsakes
not me. 30 The Yogee who believes in unity and worships me
present in all things, dwells in me in all respects, even whilst he
lives. 31 The man, O Arjuna, who from what passes in his own
breast, whether it be pain or pleasure, beholds the same in others, is
esteemed a supreme Yogee. 32 Arjuna—From the restlessness of
our natures, I conceive not the permanent duration of this doctrine
of equality which thou hast told me. 33 The mind O Krishna, is
naturally unsteady, turbulent, strong, and stubborn. I esteem it as
difficult to restrain as the wind. 34 Krishna—The unsteady mind.

मनो दुर्निग्रहं चलम् । अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ ३५ ॥ असंयता-
त्मनायागो दुष्प्रापश्चरिभे मतिः । वश्यात्मना तु यतताश्च योवाप्नुमुपायतः ॥ ३६ ॥
अर्जुन उवाच । जयतिः श्रद्धयां पेतो योगाचलतगानसः । अप्राप्य योगसंसाद्धकां
गतिं कृष्ण गच्छति ॥ ३७ ॥ कश्चिन्नोभयविभ्रष्टश्चिन्नाश्रमिव नश्यति । अप्रतिष्ठो
महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥ ३८ ॥ एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः । त्यक्त्यः
संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥ श्रीभगवानुवाच । पार्थ नैवेह नामुत्र
विनाशस्तस्य विद्यते । न हि कस्याणकृत् कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ॥ ४० ॥ प्राप्य
पुण्यकृतां लोकानुदित्वा शाश्वतीसमाः । शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टो भिजायते ४१ ॥

हे महाबाहु अर्जुन निस्तन्देह यहमनवडाचंचल हे इसका स्वार्थीन होना बड़ा कठिन
है हे अर्जुन इस मनको अभ्यास और वैराग्य के द्वारा स्वाधीन करना योग्य है
। ३५ । जिसने चित्तको अच्छी रीति से न जीता उसको योगका मिलना बड़ा
कठिन है यह मेरा मत है और मनको स्वाधीन करनेवाले वा उपाय करनेवाले को
अभ्यास वैराग्यादिक उपायों से उसका प्राप्तकरना सम्भव है । ३६ । अर्जुन बोले
हे श्रीकृष्णजी कर्म योग से मनको हटाकर श्रद्धायुक्त योगमार्ग में पृष्ठत थोड़ा
उपाय करनेवाला योग सिद्धी को न पाकर मृतक होके कौनसी गतिको पाता है
। ३७ । और हे महाबाहु वामुदेवजी वह कमयोग और ज्ञानयोग का
आभय न करनेवाला अज्ञानी ब्रह्मप्राप्ती में नियत कर्मयोग ज्ञानयोग इन दोनोंसे
गिराहुआ टूट्टेहुये बादल के समान नाशदशाको तो नहीं पाता है । ३८ । हे श्री
कृष्णजी अब इन मेरे सम्पूर्ण सन्देहोंको आप दूरकरिये क्योंकि आपके सिवाय
इस संशयका दूर करनेवाला कोई नहीं विदितहोता । ३९ । श्रीभगवान् बोले हे
अर्जुन इसलोक परलोक में उमका किसीप्रकार से नाशनहीं है और हे तात कोई
शुभकर्मो मनुष्य दुर्गती को नहीं पाता है । ४० । योग से भ्रष्टहुये अपने पुण्य

O valiant youth, is undoubtedly difficult to subdue; yet it may be restrained by practice and temperance. 35. In my opinion, Yoga is hard to be attained by him who has not his mind in subjection; but it may be acquired by him who takes pains, and has his mind in his own power. 36. Arjuna—Whither, O Krishna, does the man go after death, who, though ardent has his mind moved away from yog for want of application? Does he who is found not standing in the path of Brahma fall between good and evil, like a broken cloud? Thou, Krishna, canst entirely clear up this my doubts; none except thee can remove this doubt. 39. Krishna—His destruction is neither here nor in the world above. No man who has done good goes the evil way. 40. A man fallen from Yog having enjoyed for long

यद्यथा योगिनामेव कुलेभवात् धीमताम् । एवाङ्घ्रि दुर्लभतर लोकेजन्म यदीदृशम् ४१ ।
 तत्र त बुद्धिसमो लभते पौर्वदहिकम् । यततेचततो भूय साभिद्धौ कुरनन्दन ॥४३॥
 पूवाभ्यासेन तेनैव द्विषते ह्यवशोपिस । जिज्ञासुःपि योगस्य शब्दब्रह्मातयर्त्तते ॥४४॥
 प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी सशुद्धचित्तवप । अनेकजन्मसखिद्धस्ततो याति परागतिम्
 ॥४५॥ तपस्विभ्योधित्री योगी ज्ञानिभ्योप मतोधिक । कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्मा
 योगीभवाजुन ॥ ४६ ॥ योगिनामाप सर्वेषां मद्गतेनान्तराश्रयता । श्रद्धावान् भजतेयो
 मां स मे युक्ततमो मत ॥ ४७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि अध्यात्मयोगोनाम

पष्ठोऽध्याय ॥ ६ ॥ पर्वणितुत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

से उत्पन्न लोकां को पाकर बहुत वर्षतक निवास कर के धनी लोगों के यहां
 उत्पन्न होता है । ४१ । प्रथमा वह पुरुष बुद्धिमान् योगियों के घराने में
 पैदाहोता है परन्तु लोक में ऐसा जन्महाना दुर्लभ है । ४२ । ह कौरवनन्दन
 यहां पूर्ण दह सम्झनी उस बुद्धि संयोगको पाता है उसकें पीछे वह बड़ी शुद्धी के
 निमित्त अनेक उपाय करता है । ४३ फिर वह पिछले अभ्यासके कारण से संचा
 जाता है क्योंकि योग जाननेका इच्छानान् शब्द ब्रह्मको उल्लंघन करके कर्म कर्त्ता
 होता है । ४४ । बड़े-२ प्राणायामादि उपाय करने से पापासे छूटाहुआ योगी बहुत
 से जन्मों में मोक्षके योग्य होकर परम कल्याणरूप मोक्षको पाताहै । ४५ । योगी
 बड़े-२ तपस्वियोंसे भी अधिक है क्योंकि वह शास्त्रज्ञ ज्ञानियो और कर्म करनेवालों
 से भी अधिक मातागया है हे अर्जुन इसकारण से तू योगीहा, । ४६ । सब कर्म
 योगियों में भी जा श्रद्धावान् मुझ वासुदेव में लगेहुये मनके द्वारा मुझको भगता
 है उसको मैं बड़ायोगी मानताहूँ ॥ ४७ ॥

years the rewards of his virtues in the regions above, at length is
 born again in some well-to-do family, or perhaps in the house of some
 learned Yogee. But such a regeneration into this world is the most
 difficult to attain. 42 Here he recovers the memory of his former
 body and begins again to labour for perfection in devotion. 43 By
 the former practice he is attracted involuntarily into Yog, he who
 desires to know it, passes beyond Shabd Brahma. 44 The Yogee
 who labouring with all his might, is purified of his sins, and, after
 many births, made perfect, at length goes to the supreme abode.
 The Yogee is more exalted than Tapaswees, he is superior to the
 Karmies and the wise (Jnauts), wherefore, O Arjuna, resolve thou
 to become a Yogee. 46 Of all Yogees, I respect him as the most
 devout, who has faith in me, and who serves me with a soul possessed
 of my spirit. 47

श्री भगवानुवाच । मय्यासक्तगताः पार्थ योगं युञ्जन् मदाश्रयः । असंशयं स-
मप्रं मां यथा ज्ञास्यासि तच्छृणु ॥ १ ॥ ज्ञानन्तेऽहं नविज्ञानमिदं चक्ष्यान्पश्येपतः ।
यज्ञज्ञात्वा नेह भूयोऽयज्ञं ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ २ ॥ मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति
सिद्धये । यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ ३ ॥ भूमिरारोहलो वायुः
स्वप्नो बुद्धिरेव च । अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥ अपर्यामि
तत्त्वान्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥ ५ ॥
पतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय । अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रमथः प्रलयस्तथा
॥ ६ ॥ मत्तः परतरं नान्यत् किञ्चिदस्ति घनञ्च । मयि सर्वमिदं प्रोक्तं सूत्रे मणिगणा

अध्याय ॥ ७ ॥

श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मुझ में मनलगानेवाला और योगसमाधिका
करनेवाला मेरे आश्रित होकर मुझपर्यन्त ब्रह्मको जैसे जानेगा उसको श्रवण करो
। १ । मैं इसज्ञान विज्ञानको सम्पूर्णतासमेत तुझसे कहताहूँ जिसको जानकर जान
ने क योग्य दूसरा कोई विद्वान शेष नहीं रहता है । २ । हजारों मनुष्यों में कोई
मोक्षरूप सिद्धियोंके लिये उपाय करता है और उनउपाय करनेवाले सिद्धोंमें कोई
पुरुष मुझको मूलसमेत जानता है । ३ । पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, सं-
मन, बुद्धि और अहंकार यह आठ भाग मेरी प्रकृति के हैं । ४ । परन्तु यह
प्रकृति अनुत्तम (अपर) है इससे उत्तम मेरी दूसरी प्रकृति जीवहै जिस्से हे मुहा
वाहु यह जगत् धारण किया जाताहै । ५ । यहप्रकृति सब जीवोंकी उत्पत्तिस्थान
और नाशकरनेवाली है इसीसे मैं संसार की उत्पत्ति स्थान और लय होनेका स्थान
हूँ । ६ । हे कुन्ती पुत्र मुझ से उत्तम दूसरा कोई नहीं है यह सब प्रपंच मुझही में

LECTURE VII

Of Supreme saintly wisdom

Krishna.—Hear, O Arjuna, how having thy mind attached to me, engaged in devotion, and relying on me, thou wilt, without doubt, know me. 1. I will instruct thee in this wisdom and learning without reserve; knowing which there remains nothing more to be known. 2. Few amongst thousands of mortals strive for perfection; and of those who strive and become perfect, scarcely one knows me truly. 3. My nature is divided into eight distinctions: earth, water, fire, air, aether, mind, understanding, and Ahankar, (self-consciousness) 4. But besides this, know that I have another nature superior to this, and by which this world is supported. 5. Learn that these two are the wombs of all beings. I am the origin and the dissolution of the whole universe. 6. There is nothing greater than I; all things

इय ॥ ७ ॥ रसोहमप्यस्य कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः । प्रणवः सर्ववेदेषु शब्द
 खे पौरुष नृपु ॥ ८ ॥ पुण्यो गन्ध पृथिव्या च तेजश्चास्मि विभावसौ । जीवन
 सर्वभूनेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥ ९ ॥ वीज मां लघुभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
 बुद्धिबुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥ १० ॥ बल बलवताश्चाह कामरागचि
 यर्जितम् । धर्माधिक्यज्ञां भूतप कामास्मि भरतर्षभ ॥ ११ ॥ ये चैव सात्त्विका भा
 या राजसास्तामसाश्च ये । मत्त एवेति तान् विद्धि न त्वह तेपु ते मयि ॥ १२ ॥
 त्रिभिर्गुणमयैर्भावैराभि सधामिद जगत् । मोहित नामिज्जानाति मागोभ्यः परमव्ययम्
 ॥ १३ ॥ वैश्वी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया । नामैव ये प्रपद्यन्ते मायामेता
 तरन्ति ते ॥ १४ ॥ न मा दुष्कृतिनो मूढा प्रपद्यन्ते नराधमाः । माययापहतज्ञाना

पसे पहा हुआ है जैसे कि सूत्रमें मणि पृथी होती है । ७ । हे अर्जुन जलमें मैंही
 रस हूं और सूर्य चन्द्रमा दोनों में प्रकाश रूप मैं हूं और सब वेदों में प्रणव
 मैंहूँ आकाश में शब्द मैंहूँ सब पुरुषों में पुरुषार्थ मैं हूँ । ८ । पृथ्वी में पवित्र
 गंध मैं हूँ अग्नि में तेज मैंहूँ सबजीवों में जीवनरूप मैंहूँ तपस्वियों में तप मैंहूँ
 । ९ । हे अर्जुन मुझको सद्य जीवों का प्राचीन बीजरूप जान, बुद्धिमानोंमेंबुद्धि
 मैं हूँ तेजस्वियोंमें तेज । १० । बलजानों में काम राग विद्यर्जित बल मैं हूँ हे
 भरतर्षभ जीवोंमें धर्म से आविरुद्ध काम मैंहूँ, जो सात्त्विक राजस तामस भावहै उन
 सब कोभी मुझसेही हुआ जान वह सब मुझ मे है परन्तु मैं उनमें नहीं हूँ । १२ ।
 सत्त्व रज तम इन तीनों गुणों की तीन रूपान्तर दशाओं के भावोंसे यह सब संसार
 भूलाहुआ मुझको नहीं जानताहै कि मैं अविनाशी रूपान्तर दशासे रहितहूँ । १३ ।
 यह मेरीमाया दुःखसे उल्लंघन करनेके योग्य है, जो मुझ को शच्छी रीतिसे जानते
 है वह पुरुष इसमायाको तरतेहै । १४ । परन्तु जो पापात्मा आत्मा अनात्मा के विवेक

hang on me, as gems on a string I am serenity in water, the
 light in the sun and moon, *pranava* (Om) in the *Vedas*, sound in the
 firmament, and virility in men 8 I am the fragrance of earth,
 glory in fire, in all things I am life, and I am the austerity of the
 ascetic 9 know, O Arjuna, that I am the eternal seed of all nature.
 I am the understanding of the wise, the glory of the proud, the
 strength of the strong, free from lust and passion, and in beings I
 am desire not contrary to dharma 11 But know that I am not in
 those natures which are of the three qualities called *Satwa*, *Raja*
 and *Tama*, although they proceed from me yet they are not in me
 12 The whole of this world being bewildered by the influence of
 these three-fold qualities, knows not that I am above these and
 imperishable 13 Thus my divine and supernatural illusion is hard
 to be overcome except by those who come to me as their refuge.
 14. The wicked, the foolish, and the lowminded, devoid of wisdom

शासुर भावमाश्रता ॥ १५ ॥ चतुर्विधा भजन्ते मां जना सुहृत्सिनोर्जुन । मा
 त्तो जिज्ञासुरर्षीर्धनी धर्मभरतर्षभ ॥ १६ ॥ तेषां धानी नित्ययुक्त परभक्ति
 विशिष्यते । प्रियो हि धानिना त्वर्थं मह स च मम प्रिय ॥ १७ ॥ उदरा सर्प
 एवैते धानी त्वात्मैव मे मतम् । आस्थित स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमा गातम् ॥ १८ ॥
 यद्ना जन्मनामन्ते ज्ञानवान् मा प्रपद्यते । वासुदेव सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभ
 ॥ १९ ॥ कामैस्तैस्तैर्दत्तज्ञान प्रपद्यते न्यदेवता । त त ज्ञानममास्थाय ब्रह्मत्वा
 नियता स्वया ॥ २० ॥ यो या या या तनु भक्त श्रद्धयार्थितुभिच्छति । तस्य
 तस्याचला श्रद्धा तामैव विद्धान्स्वहम् ॥ २१ ॥ स तथा श्रद्धया युक्तस्तस्याराधन
 माहते । लभते च तत कामान् मयैव विहितान् हितान् ॥ २२ ॥ अन्तवत्तु फल

से रहित मनुष्योंमें नीच मायाके कारण ब्रह्मज्ञान से शून्य आसुरी ज्ञान में आश्रित
 है वह मुझको न श्रेष्ठ रीतिसे जानते हैं न प्राप्त होते हैं । १५ । हे भरतवंशी दुखी,
 ब्रह्मज्ञानक आकांक्षी, धनाकांक्षी, ज्ञानाकांक्षी यह चारों प्रकारके शुभकर्मी पुरुष
 मुझको भजते हैं, इनचारोंमें ज्ञानीउत्तमह वह सदैव मुझमें अनुरक्तहोकर एक भक्तिसे
 भजन करनेवाला है क्योंकि मैं ज्ञानी का अत्यन्त प्यारा हूँ और वह मेरा प्यारा है । १७ ।
 यह सबउत्तमहैं परन्तु ज्ञानी मेरा आत्मा है क्योंकि वह शुभजगद्वात्मा में मन को
 लगानेवाला होकर मुझ उत्तमगति रूपमें ही नियत है । १८ । वह पुरुष बहुजन्मोंके पीछे
 सब संसारको वासुदेवरूप जानकर मुझको पाता है । १९ । जो कामनाओं से ज्ञान
 भ्रष्टहोकर अपने स्वभावके द्वारा नियमोंमें विनतहोके अन्यत्र देवताओं को भजते हैं
 । २० । यह भक्त जिसत्र देवता को श्रद्धा पूर्वक पूजते हैं मैं उन अचल श्रद्धाको नियत
 करता हूँ । २१ । फिर वह श्रद्धामें भरे हुये उसका प्रारा मनकरते हैं और उसीसे अभीष्टोंको

by illusion, and men of demoniac nature do not come to me 15 I
 am, O Arjuna worshipped by four classes of men who are good
 the distressed, the inquistive, the wishers after wealth, and, the
 wise 16. Of these the wise man who is constantly united and
 single loving is the best. I am extremely dear to the wise man,
 and he is dear to me. 17 All these are exalted, but I esteem
 the wise man even as myself, because he is my sole devoted and
 depends on me as his ultimate resource 18 The wise man
 proceeds to me after many births for the exalted one who believes
 that, Vesudeva is all, is hard to be found 19 Deprived of wisdom
 by desires and impelled by nature, people worship other gods, impos
 ing on themselves various observances. 20 Whatever image a
 devotee wishes, desirous to worship in faith, that very faith in
 him I render firm 21 Posses ed with that faith, whoever devote
 himself to that worship, obtains his wishes but they are granted

तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् । देवान् देवयजो याति मद्रूपायान्ति सामपि ॥ २३ ॥
 अव्यक्तव्यक्तिमापन्नमभ्यन्तमामबुद्धयः । परभावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्
 ॥ २४ ॥ ग्राहप्रकाशसर्वस्य योगमायासमावृता । मूढोऽपि नाभिजानात लोका
 मामजमध्ययम् । २५ । वेदाहसमतीतानि वर्तमानानि चास्तुन । भविष्याणि च
 भूतानि मातुष्यदवकश्चन ॥ २६ ॥ इच्छाद्वयससुरथ न द्वन्द्वमाहेन भावत । सद्य
 भूतानि सम्मोहसर्गे यान्ति परन्तप ॥ २८ ॥ येषां त्वन्तगतपपजननापुण्यकर्म
 णाम् । ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजते मादृढव्रता ॥ २८ ॥ जरामरणमोक्षाय मामा
 श्रित्य यतन्ति ये । ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्वजमध्यात्मकर्मचारितम् ॥ २९ ॥ साधि

पातेहै जो कि मेरेही उत्पन्न कियेहुयेहै। २३। उन निर्बुद्धियोंका फल विनाशवान् होताहै
 देवताओंके पूजनेवाले देवताओंको पातेहै और मेरेभक्त मुझ अनन्तको पातेहै। २४।
 निर्बुद्धी लोग मुझ अपिनाशी अनूपम अव्यक्त पुरुषको संसारी जीवों के समान
 देहवारी मानते है। २५। कयोके योग माया से ढकाहुआ मै सब को नही देखई
 दताहूँ यह अज्ञानी लोग मुझ अज अपिनाशी को नही जानता है। २६।
 उपाधि रहित होनेसे मै भूत भविष्य वर्तमान इन तीनोंकाल के जीवधारियों को
 जानताहूँ परन्तु कोईभी मुझको नही जानता है। २६। हे शत्रुहन्ता अर्जुन सब
 जीवधारी इच्छा और अनिच्छा आदि मोह द्वन्द्वोंसे इस संसारके विषयमें आविष्टको
 पाते है। २७। जिन पवित्रकर्मी पुरुषोत्तम पापनाश हुआहै वह मोहके द्वन्द्वोंसे छुटे
 हुये ये शम दमादि त्रोंमें दृढहोकर मुझको भजते है। २८। जो मुझमें समाहित
 भिन्न होकर जरा मृत्यु से छूटनेके निमित्त उपाय करते है, वह ब्रह्म अ यात्म और
 संपूर्ण कर्मों के ज्ञाता है। २९। जिन पुरुषों ने अधिभूत अधिदेव अधियज्ञ समेत

by me But the reward of such short sighted men is finite. Those
 who worship the Devatas go to them and those who worship me
 alone join me. The ignorant being unacquainted with my supreme
 infinite and exalted nature believe me who am invisible, to exist in
 the visible form. 24 I am not visible to all because I am conceal
 ed by yogmaya. The ignorant world don't know that I am not
 subject to birth or decay. 25 I know Arjuna, all the beings
 that were are, and will be but there is none amongst them
 who knows me. 26 All beings in birth find their reason fascinated
 and perplext by the vis of contrary sensations arising from love
 and hatred. 27 Those men of regular lives, whose sins are done
 away, being free from the fascination arising from those contend
 ing passions worship me. 28 They who put their trust in me,
 will liberate for a deliverance from decay on death know Brahma,
 the whole Adhyatma and every karma. 29 The devout souls who

मृताधिदैव मा साधियन्न ये विदुः । प्रयाणकालेपि च मा ते विदुर्भुवचेतसः ३० ।
इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापठसूत्रानिपतुब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे

श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अर्जुन उवाच । अितद्ब्रह्म किमध्यात्मं किद्दम पुरुषोत्तम । अधिभूतञ्च किं प्रोक्तं
मधिदैव किमुच्यते ॥ १ ॥ अधियज्ञ कथं चो न ब्रह्मिन् मधुच्छन । प्रयाणकाले च
कथंतेयोसि नियतात्मा ॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच । अक्षरं ब्रह्म परम स्वभावोऽध्यात्म
मुच्यते । भूतभावोद्भवकरो विसर्ग कर्मसंज्ञित ॥ ३ ॥ आभूत क्षरोभाव पुरुषश्चा
धिदैवतम् । अधियज्ञाहमेवात्र ब्रह्म देह भूताम्बर ॥ ४ ॥ अन्तकाले च मामेव स्मरन्
मुक्त्वा कलेवरम् । यः प्रयाति सततं याति मामेव तदाय ॥ ५ ॥ यः यः चाप
स्मरन् भाव त्यजत्य ते कलेवरम् । तः तर्षति कौतय सदा तद्भावभाषित ॥ ६ ॥

मुक्त्वा जाना है अर्थात् उपासनाकी है वह मुझमें चित्त लगाने वाले पुरुष शरीर
त्यागके समय में भी मुक्त्वा ही जानते और देखते हैं ॥ ३० ॥

अथाय ॥ ८ ॥

अर्जुनबोले हे पुरुषोत्तम वह ज्ञान ज्ञानाहे अथाय न्या है कर्म दयाहै और अधि
भूत अधिदैव और अधियज्ञ कौन कहाताहै । १ । और किस रीतिमें इसशरीर में
नियत है और आपनमागानचिच पुरुषोंको शरीर त्यागके समय कैसे जाने जाते
हो । २ । श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन जो परमअक्षरहै वह ब्रह्मदे और जो पदार्थ है
वह अध्यात्म है और जो त्यागरूपमत्र है वह जीवों का उत्पन्न करने वाला कर्म नाम
है । ३ । जो विनाशवान् कर्म है वह अधिभूतहै पुरुष अधिदैव है देहेधारियोंमें श्रेष्ठ
अर्जुन इस शरीर में अधियज्ञ भैह अन्तकालमें मुक्त्वाको स्मरण करना हुआ शरीर
का त्यागकर निस्सन्देह मेरेही भावको पाता है । ४ । हे अर्जुन जिस २ भावको
स्मरण करताहुआ अन्तमें शरीरको त्याग करनाहै वह सदैव उस भाव से भाषित

know me to be the Adhibhuta, the Adhidava and the Adhiyajna,
I now me also in the time of their departure 30

LECTURE VIII

Arjuna—What is that Brahma? What is Adhyatma? What is
Karma? O first of men! What is Adhibhuta called? What Adhi
dava? 1 How and who is Adhiyajna in this body! How art
thou known in the hour of departure by men of subdued
minds? 2 Krishna—Brahma is that which is supreme and indes
tructible. Adhyatma is Svabhava or nature, Karma is that em
anation which causes the birth of being, 3 Adhibhuta is of perish
able nature, Adhidava is Purush and Adhiyajna, O best of men,
is myself in this body. 4 At the time of death he, who having
abandoned his mortal frame departs thinking only of me without
doubt untesmine. Whatever idea is uppermost at the time of death,

तस्मिन् सर्वेषु कालेषु नामनुस्मर सुभ्यश्च । मय्यर्पितमनो बुद्धिर्मां वैश्वस्य सशय ॥ ७ ॥
 अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना । परम पुरुष दिव्यं याति पार्थानु चित्त
 यन् ॥ ८ ॥ षड्विपुर णमनुशासितारमणोरणीयासमनुस्मरेद्य । सर्वभ्य धाताः प्राच-
 न्यरूपमादित्यवर्णं तमस परस्तात् ॥ ९ ॥ प्रयाणकाले मनसा चलेन भक्त्या युक्तो
 योगवलेन चैव । ध्रुवोर्मध्य प्राणमावेश्य सम्पत्क स त पर पुरुषमपैति । दिव्यम् ॥ १० ॥
 यदक्ष वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यनयो वर्तिरागा । यादच्छन्तो ब्रह्मचर्यं
 चागन्ति तत्ते पद सप्रहेण प्रवक्ष्य ॥ ११ ॥ सर्वं ह्य राणि सयस्य मनो ह्यद निरुप

होकर उसीभावको पाता है । ६ । इसकारण सब समय पर मुझी को स्मरण कर
 के तू पुद्गलमें प्रवृत्त हो मुझजगदात्मा में मन और बुद्धिका लगाने वाला अथवा लय
 करने वाला तू मुझीको पावेगा इसमें कुछभी सन्देह नहीं है । ७ । हे अर्जुन अभ्यास
 और अभ्यासजन्य योग समाधि इनदोनोंसे संपूक्त अनन्य वृत्तीचित्तके द्वारा अन्त
 र्यामी परम पुरुषको पाता है । ८ । अर्थात् सबको जानने वाले पूर्णरूप जगत्के
 अन्तर्गामी नृक्षमसेभी सूक्ष्म सबकर्म फलके विभाग करनेवाले ध्यानसे अगम्य मूर्त्य
 के समान प्रकाशमान अर्थात् सब जगत्के प्रकाशक अविद्या से रहित को स्मरण
 करे । ९ । शरीर त्यागने के समय मनकी दृढ़ता पूर्वक योगबल से अथवा रामदेव
 भगवानकी भक्तिमें प्रवृत्तहोके दोनों भ्रुकुष्ठियों में प्राणको चढ़ाकर उस हिरण्य
 गर्भनाम दिव्य परमपुरुषको पाता है । १० । जिसप्रमाण अक्षरको वेदज्ञ लोग कहते
 हैं और जिसमें वैरागी यतीलोग भवेशकरते हैं अर्थात् उसको शरण लेते हैं और
 जिसको इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्यको करते हैं उसपदको तुम्हण व्योरे समेत
 कहता हूँ, सब इन्दी रूपद्वारों को अपने स्नान करके मनको हृदयमें रोक कर अपने
 प्राण को सुषुम्ना नाडी के मार्ग से सरलक में धारण करके योग शास्त्र की निखी

in the mind of a man, he goes to it 6 Wherefore at all times think
 of me alone and fight. Let thy mind and understanding be set on
 me alone, and thou shalt, without doubt, go unto me 7 He who
 longs after the Divine and Supreme Being, with his mind
 intent upon the practice of devotion, goes to him 8 He who in
 the last hour thinks on the ancient, the Omniscient, the Ruler,
 minuter than the atom, the preserver of all, of form unimaginable
 refulgent like the sun, beyond darkness, with a steady mind fix-
 ed in devotion by the power of yoga, and with Pran well drawn
 in between his brows, reaches the Supremo Being 10 I will now
 summarily make thee acquainted with that path which the learned
 in the Vedas, call never-failing, which the men of subdued minds
 and conquered passions enter, and which, desirous of knowing they
 live the lives of Brahmacharis 11 He who, having closed up all
 the doors locked up his mind in his own breast, and fixed his life

व । मूर्ख्यांघायात्मन प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥ १२ ॥ शोभित्येकाक्षरं ब्रह्म
 व्याहरन्मानुस्मरन् । य प्रयात त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ॥ १३ ॥ अनन्य
 चेनाः सततं यो मं स्मरति नित्यशः । तस्याहं सुलभं पार्थ नित्यशुक्तस्ययागिन
 ॥ १४ ॥ मामुपेत्यपुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् । नाप्नोति महात्मान सत्सिद्धिपरमा
 गताः ॥ १५ ॥ आब्रह्मजुपनाहोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन । मामुपेत्यतु कोन्तेऽपुन
 र्जन्म विद्यते ॥ १६ ॥ सहस्रयुगार्धन्तमदृष्ट्वद् महाजोवदुः । रात्रिं युगसदस्मांतां
 तेऽहोरात्रधिदोजना ॥ १७ ॥ अव्यक्ताद् व्यक्तय सर्वा प्रभवन्त्यहरागमे । रात्र्या
 गमे प्रलीयन्त तत्रैवाव्ययसन्नके ॥ १८ ॥ भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वाप्रलीयते । रात्र्या
 गमेऽव्यय पार्थप्रभवत्यहरागमे ॥ १९ ॥ परस्तात्मात्तु भावोन्थो व्यक्तोऽव्यक्तत् सनातन ।

हुई धारणामें अच्छी रीतिमें नियत होकर, जोम इस एक अक्षर ब्रह्मको कहता
 और मुझको स्मरण करता हुआ देहको त्यागकर जो जाता है वह ब्रह्म लोककी
 प्राप्तिके द्वारा मोक्ष रूप परमगतिको पाता है । १३ । जो अनन्य बुद्धि से सदैव
 मेराही स्मरण और कीर्त्तन करता है हे अर्जुन उस योग्य अक्षर विहार और यम
 नियम आदि में प्रवृत्त योगीको मैं बड़ा सुलभ हूँ । १४ । मुझको पाकर दुःखके
 आलय विनाशान् पुनर्जन्मको नहीं पाता है । १५ । हे अर्जुन ब्रह्मात्मके लेकर
 सब संसारीलोक इस पृथ्वीपर फिर लौटकर आने वाले हैं और मुझको प्राप्तहोकर
 पुनर्जन्म नहीं होता है । १६ । जिन लोगोंने सहस्रयुगों का ब्रह्माका एकदिन जाना
 है और इतनीही रात्रिभी मानी है वह दिनरात्रिके जाननेवाले भविष्य हैं । १७ । दिनके
 होतेही सब प्रत्यक्ष पदार्थ स्वप्न दशाक्षर अव्यक्तसे विदित होते हैं और रात्रिआने
 पर उसी अव्यक्त नाम में सब अत्यन्त लयहोजाते हैं । १८ । हे अर्जुन यही यह
 सृष्टि समूह चारंपार प्रकट होकर रात्रिके आने पर अविद्या और कर्म फल के
 स्वाधीन होकर लयहोजाता है और दिनके आने पर प्रकट होजाता है । १९ ।

breath in his head, firm in yoga, and silence thinks of the one-syllabl d
 Om, the Bramha, quits this mortal frame, calling upon me, goes
 to the Supreme State 13 To the yogi who thinks constantly of me
 with his mind undiverted by an other object, I will at all times be
 easily found 14 By attaining me those elevated souls, are no more
 born in the finite mansion of pain and sorrow. 15 Know, O Arjuna
 that all the regions between this and the alode of Bramha afford
 but a transient residence, but he who finds me, returns not again,
 to mortal birth 16 They who are acquainted with day and night
 know that the day of Bramha is a thousand Yugas, and that
 his night extends for a thousand more On the coming of that
 day, all things proceed from invisibility to visibility, so, on
 the approach of night they disappear and become invisible
 18 The universe, is repeatedly dissolved and reproduced

य स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न दिनइयाति ॥ २० ॥ अव्यक्तोक्षर इत्युक्ततरंगोऽहं परमा
 गतिम् । य प्राश्य न निवर्त्तते तद्धाम परम मम ॥२१॥ पुरुष स पर पार्थ भक्त्यालय
 रत्ननयया । यस्यातरथा न भूतानि येन सर्वमिदतमम् ॥२२॥ यत्रकालेऽवनावृत्तिमाशुच
 श्रैययोगिन । प्रयातायान्ति त कारा वक्ष्यामि भरतपथ ॥२३॥ अग्निज्योतिरहं शुक्ल
 पण्मासा उत्तरायणम् । तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जना ॥ २४ ॥ धूमो रात्रि
 स्तथा कृष्ण. पण्मासा दक्षिणायनम् । तत्र चान्द्रमस ज्योतिर्योगिप्राप्य निवर्त्तते ॥२५॥
 शुक्लकृष्णगेत ह्येने जगत शाश्वतेमत् । एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्त्तते पुन ॥ २६ ॥
 नैते खती पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन । तस्मात् सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भया

उस अव्यक्त से अन्य सत्तावान् अरूप उपाधि रहित नित्य एकरूप जो सब संसार
 के नाशहेने पर नाशनी ही होताहै वहगुप्त अविनाशी कहाजाताहै जिसको कि पाकर
 फिर नही लौटकर आतेहै वही मेरी ब्रह्मज्योतिहै । २१ । हे अर्जुन अनन्य भक्तीसे
 जो पानेके योग्यहै वह शुद्ध ब्रह्माहै जिसगे सब जीवमात्र ऐसे नियत है जैसे बीज
 में वृत्तनियतहोताहै और जो जन्म में व्याप्तहै। २२ । हे भरतर्षभ कर्मयोगी जिससमय
 शरीरको त्याग कर चले हुये अनाद्यति और आद्यत्तिको पातेहै उस समयको वर्णन
 करताहूँ । २३ । अग्नि, ज्योति और दिन शुभलपक्ष और उत्तरायण इनके उदय
 प्रताप में ब्रह्मकी उपासना करनेवाले पुरुष शरीरको त्यागकर ब्रह्मलोक को पाते
 है । २४ । धूमरात्रि कृष्णपक्ष छः महीने दक्षिणायन इनचारों के उदय में योगी
 चान्द्रमसि ज्योति को पाकर फिर लौट आता है । २५ । संसारकी यह शुक्ल
 और कृष्ण नामगति प्राचीन मानी गई है एकसे तो अनाद्यत्ति अर्थात् लौटकर न
 आना और दूसरी से आद्यत्ति अर्थात् लौट आता है । २६ । हे अर्जुन इन दोनों

at the approach of night and day, 'y Divine order 19 That which
 upon the dissolution of all things else, is not destroyed, is superior
 and of another nature from that visibility, it is invisible and eternal
 20 That invisible and incorruptible is called the Supreme Abode,
 they who reach it never more return to earth, that is my mansion
 21 That Supreme Being is to be obtained by him who worships
 Him alone in whom all beings live and who pervades all 22 I will
 now speak to thee of that time in which departing the yogis return
 and that when they do not. 23 Those holy men who know Brahma,
 departing in fire, light, day time, the bright fortnight, the six months
 of the sun's northern course, go to him, but those who depart in smoke
 night, the dark fortnight and the six months of the southern path
 of the sun, ascend for a while into the regions of the moon and again
 return to mortal birth 25. Light and darkness are the world's
 everlasting paths, by the one he goes who returns not, by the other
 he who returns again 26 A Yogee, who is acquainted with these

जुन ॥ २७ ॥ वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत् पुण्यफलं प्रदिष्टम् । अत्येतितत् सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥ २८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ पर्वणितुद्रात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

श्री भगवान्वाच ॥ इदं नुते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे । ज्ञानं विज्ञानसाहितं यज्ञज्ञात्या मोक्षयसेऽनुभात् ॥ १ ॥ राजविद्याराजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् । प्रत्यक्षाद्य गमं धर्मं सुसुखकर्तुमद्ययम् ॥ २ ॥ जप्रद्वयानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप । जप्राप्य मां निवर्त्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥ मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।

मार्गों को जानता हुआ कोई ज्ञान योगी नहीं भूलता है। इस कारण है अर्जुन सदैव योग में प्रवृत्त हो। २७। वेदों में यज्ञों में दानों में शास्त्रानुसार जो पुण्य फल कहा गया है उस सब पुण्यफलको योगी उल्लंघन करके इस विषयका ज्ञाता होकर ब्रह्मलोकको जाकर स्वयं सिद्ध श्रेष्ठस्थानका पाता है ॥ २८ ॥

अध्याय ॥ ९ ॥

श्रीभगवान् बोले कि मैं इस अत्यन्त गुप्त रखने के योग्य ज्ञान को अपने विज्ञानके द्वारा तुम्हें अनसूया रहित से वर्णन करता हूँ जिसके जानने से तू इस अशुभ संसारसे मुक्त होगा ! यह विद्याओंका और गुप्त देवताओं का राजा महा उत्तम पवित्र कर्त्ता अपरोक्ष ब्रह्मका प्राप्त करनेवाला धर्म में हितकारी अनुष्ठान करने में सुखरूप और अविनाशी है । २ । हे शत्रुओं के संतप्त करने वाले अर्जुन इस ज्ञानधर्म के श्रद्धा न रखनेवाले पुरुष मुझको अमाप्त होकर जन्म मृत्युरूपी संसार मार्ग में घूमाकरते हैं । ३। मुझबुद्धि से परे साच्चिदानन्दरूप सगुण रूपधारी से

two paths of action, will never be deluded; wherefore, O Arjuna, be thou at all times employed in devotion. 27. The fruit of virtue pointed out in the Vedas to sacrifice, to mortifications and also to charity, the Yogee who knows this, shall surpass all, and shall obtain a supreme and prior place. 28.

LECTURE IX

of the chief of secrets and Prince of sciences:

Krishna.—I will tell thee, who findest no fault, a most mysterious secret, accompanied by profound learning, which having studied thou shalt be delivered from misfortune. 1. It is a sovereign art, a sovereign mystery, sublime and immaculate; clear to the sight, virtuous, inexhaustible, and easy to be performed. 2. Those who are infidels to this faith, not finding me, return again into the mortal world. 3. This whole world is pervaded by me in my

मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थित । ४ ॥ न च मत्स्थानि भूतानि पश्यमे
योगेश्वरम् । भूतभृन्नृष्व भूतस्थो मात्माभूतभावनः ॥ ५ ॥ यथाकाशस्थितोऽन्य
वायु सर्वत्रगो महान् । तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानोऽतुषुपधारय । ६ ॥ सर्व
भूतानि कोऽन्तेय प्रकृतिं यान्त मामिदाम् । कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पाद्वा विस्तृजा
म्यहम् ॥ ७ ॥ प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विस्तृजामि पुनः पुनः । भूतग्रामामिम कृत्स्
मवश प्रकृतोर्वशात् ॥ ८ ॥ न च मा तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय । उदासी
नचदासीनमसक्त तेषु कर्मसु ॥ ९ ॥ मयाऽप्यक्षेण प्रकृतिं सृजते सचराचरम् । हेतुना
नेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्त्तते ॥ १० ॥ अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुम श्रितम् ।

भिन्न परमात्मा से यह सब जगत् व्याप्त है मुझ परमात्मा में यह सब स्थावर जंगम
जीव नियत है परन्तु मैं उनमें नियत नहीं हूँ । ४ । जीवमुझ एकाकी में नियत नहीं
है जीवोंके साथमेरे योगको अथवा ईश्वरता संबन्ध रखनेवाले को देख कि मेरा
परमानन्द रूप आत्मा अपने आनन्द से जीवों की दृष्टि करने वाला और धारण
करनेवाला है परन्तु आप उनजीवों में नियत नहीं है । ५ । महान् वायु सर्वत्र वर्त्त-
मान होकर आकाश में सदैव नियत है इसी प्रकार चैतन्यरूप सवमाणी मुझमें नि-
यत है ऐसा तू समझ । ६ । कल्पके अन्तमें सब जड़ चैतन्य शरीर मुझ मायोपाहित
ईश्वर की प्रकृति में प्रवेश करते हैं मैं कल्प के प्रारंभ में फिर उनको अनेकप्रकारके
रूपों से उत्पन्न करता हूँ । ७ । अपनी प्रकृति के आश्रय में होकर मैं इस सम्पूर्ण देह
समूहों को वारम्बार नानाप्रकारका बनाकर उत्पन्न करता हूँ वह देह समूह स्वभाव
के आधीन होनेसे अशक्य है । ८ । हे अर्जुन वह कर्म मुझ को बंधनमें नहीं डाल
सके हैं । ९ । हे अर्जुन मुझअ-यत्न रूप के कारण से प्रकृति सबजड़ चैतन्यों समेत
जगत्को उत्पन्न करती है इसीकारण से जगत् जन्मादे दशाश्रमों भ्रमता है । १० ।
अज्ञानीलोग मेरेउपम तत्र पदार्थको न जानकर मुझ मनुष्य देहमें नियतहोनेवालेका

invisible form. All things are dependent on me, but I am not dependent on them. 4 Behold my divine connection My creative spirit is the keeper of all things not the dependent. 5 Understand that all things rest in me, as the mighty are suspended in space passes everywhere. 6 At the end of a Kalpa all things, O son of Kuntée, return into my primordial source and at the beginning of another Kalpa, I create them all again. 7 Resorting to my nature, I create, again and again, this assemblage of beings from the power of nature without power. 8 These works confine not me, because I am like one who sits aloof uninterested in those works. 9 By my supervision nature produces both the movable and the immovable. It is from this O Arjuna, that universe revolves. 10 The foolish, being unacquainted with my supreme nature, as lord

यत्तु भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ ११ ॥ सोघाशा मोघनर्माणो मोघज्ञाना
विचेतसः । राक्षसीगासुरीश्वेषु प्रकृतिमोहिनीं श्रिता ॥ १२ ॥ महत्मानस्तुमा
पापं देवो प्रकृतिगण्डिना । मज्जत्यनन्यमेनसा तात्वा भूतादिगन्धयम् ॥ १३ ॥
सततं कीर्तयतोर्मां यत तश्च दृष्टवता । नमस्य-तश्चमात्मन या नित्ययुक्ता उपासते १४ ॥
ज्ञानयत्नेन चाप्यन्य यजन्तोनामुपासते । एकत्वेन पृथक्स्वप्न बहुधा विद्वतो मुखम् १५ ॥
बहू क्रुरह यज्ञ स्वधाहमहमौषधम् । मन्त्राहमहमवाप्य महमग्निरह इतम् ॥ १६ ॥
पिताहमस्यजगतो माताधाता पितामह । वेद्यं पवित्रं मोंकारं मृत्युसाम यजुरेवेद्य १७ ॥
गतिर्भर्ता प्रभु साक्षा निवास शरणं सुहृत् । प्रभव प्रलय स्थान निधान चीजमन्ध

अपमान करते हैं और मे जीवधारियोंका महेश्वरहू ११। मरा अपमान करने से वह
अज्ञानी निरर्थक आशा और निष्फल ज्ञानी विवेकसे रहित राक्षसी आसुरी चित्त
अर्थात् रजोगुण तमोगुण प्रधान स्वभावों में आश्रय लेनेवाले है । १२ । परन्तु जो
बड़े उदारचित्त देव स्वभाव सतोगुण में आश्रय लगानेवाले है वह पुरुष मुझको
सब नमार का आदि अविनाशी जानकर एकाग्र चित्त मेरा भजन करने है
। १३ । वह शान्ताचित्त दृढन्त जितन्त्री शम दम आदि में उपाय करनेवाले सदैव
मुझी में बुद्धिसे तटाकार होकर मेरा कीर्तन करनेवाले नमस्कार पूर्वक बड़ी
भक्ति से मेरी उपासना करते हैं । १४ । और कोई २ निर्विकल्प समाधिरूप ज्ञान
यज्ञ करने से भी मुझको पूजतेहुए उपासना करते है कोई मुझको एकही जानकर
और कोई मुझको अनेक रूपवाला मानकर उपासना करतेहै । १५ । कतुहू मैही
यज्ञहू मैही स्वप्नरूप पितरोंका अन्नहू मैही औषधीहू और जिमके द्वारा दानादिक
दियेजाते है वह मन्त्रभी मैही हू मैही हव्यमैही अग्नि मैही हवनकरनेकी क्रियाहू । १६ ॥
मैही जगत्का पिता माता धाता पितामह ज्ञेय और पवित्र करनेवाला तप इत्यादि
हू मैही ओंकार और चारों वेदहू । १७ । मैही गतिहू, मैही कर्म फल का देनेवाला,

of all things, despise me in this human form 11 Having evil, diabolic and deceitful nature they are of vain hope, of vain endeavours of vain wisdom and void of reason 12 But men of great minds trusting to divine natures discover that I am before all things and incorruptible and serve me with unwavering mind 13 Men of firm resolve come before me humbly bowing down, glorifying my name they are constantly employed in my service 14 Others worship me with the worship of wisdom and meditate on me as One and manifold in various shapes 15 I am the sacrifice, the worship, the spices the invocation, the swadha the butter, the fire and the victim 16 I am the father and the mother of this world the grandsire, and preserver I am the holy one worthy to be known, the mystic Om, the Rig the Sama and Yajur Vedas 17 I am the path, the comforter, the creator the

यम् ॥ १८ ॥ तपाम्यहमह वर्षविग्रहणाम्पुत्सुजामिच । अमृतञ्चैव नृयुथ सदसञ्चाह
मर्जुन ॥ १९ ॥ त्रैविद्या मा सोमपा पूतपापा यज्ञे रिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते । ते पुण्य
मासाद्य सुरेन्द्रलोक मश्नति विद्यान् द्वियि देव भोगात् ॥ २० ॥ ते त भुक्त्वा स्वर्गलो
क विशाल क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोक विशन्ति । एव त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागत कामका
मालभन्ते ॥ २१ ॥ अनन्याश्चित्तयन्तो मा ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां
योगक्षेम बहाम्यहम् ॥ २२ ॥ येष्यन्त्य देवता भक्ता यजन्ते अद्भयान्विता । तेषामामे
व कौन्तेय यजन्य विधि पूर्वकम् ॥ २३ ॥ बह हि सर्वं यज्ञानां भोक्ताच प्रभुरेव च ।

पोषण करनेवाला, अन्तर्ग्रामी साक्षी, निवासस्थानरूप प्रभु यजमान आदि
रक्षक प्रतीकार रहित परोपकारी कर्म फल अर्पण करनेका स्थान संसार का बीज
रूप आविनाशीहूँ । १८ । मैही सूर्य रूप होकर संसारका तपाताहूँ और अपनी
किरणोंसे वर्षाकी ग्रहणकरताहूँ और वर्षाऋतुमें अपनी किरणों सेही जलरमाता
हूँ, हे अर्जुन मैही जीवन मरण और साधु असाधु हूँ । १९ । ऋगृ यजु सामवेद
रूप त्रिपिताले यज्ञों में सोमपान करनेवाले निष्पाप पुरुष यज्ञों से मेरा पूजन
कराहुएँ स्वर्गगतिको चाहते हैं वह पवित्रात्मा इन्द्रलोकमें जाकर स्वर्ग में देवताओं
के दिव्य भोगोंको भोगते हैं । २० । उस दड़ेभारी स्वर्ग के भोगोंको भोगकर
कर्म फल समाप्त होजाने पर वह फिर इसी मर्त्यलोक में आते हैं इस प्रकारसे
वेदोक्त सफल कर्मों के द्वारा त्रिपयों के चाहनेवाले पुरुष आवागमनको पाते हैं
। २१ । जो पुरुष इस रीति से चिंतन करते हैं कि मैही भगवान् वामुदेव उपा-
सना के योग्यहूँ दूसरा नहीं है ऐसी एकत्वताके द्वारा मेरी उपासना करते हैं उन
सदैव योग्यकी उपासना करने वाले भक्तों के स्थान भोजनान्छादन की मैं आप
रक्षा करताहूँ । २२ । और जो अन्य देवताओं के भक्त हैं और उनका पूजन
करते हैं हे अर्जुन वह पुरुष भी बुद्धिके विपरीत मुझीको पूजते हैं । २३ । क्योंकि

witness the abode, the asylum and the friend I am the seat, of
generation and dissolution, repose and the inexhaustible seed. 18
I give heat, I send and hold back rain, I am death and immortality,
I am entity and nonentity. 19 The followers of the three Vedas,
who drink Soma; being purified of their sins address me in sacri-
fices, and petition for heaven. Those obtain the regions of Indra and
feast upon celestial food and divine enjoyments. 20 When they
have partaken of that spacious heaven, they sink again, merit
exhausted in this mortal life. Thus those followers of the three Vedas,
pursuers of desire, obtain a transient reward. 21. To those who
thinking of no other, serve me, alone and are desirous of eternal
union with me, I secure permanent union. 22 They also who
serve other Gods with a firm belief, in an infernal manner, wor-
ship me. 23 I am the partaker of all sacrifices and the sole Lord.

ननु मामभि जानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ॥ २४ ॥ यांति देवव्रता देवान् पितृनृपानि
पितृव्रताः । भूतानि यांति भूतज्यायांतिमद्या जिगोपि नाम् ॥ २५ ॥ पत्रं पुष्पं फलं तोयं
यमे भक्त्याप्रयच्छति । तद्दत्तं भक्त्युपहत मग्न मि प्रयतात्मनः ॥ २६ ॥ यत् करोप यद्
श्रासि यज्जुष्टोपि ददासि यत् । यत्तपस्यासि कौन्तेय तत् कुरुष्व मदर्पणम् ॥ २७ ॥
शुभाशुभ फलै रेवं मोक्ष्य से कर्म बन्धनैः । संन्यासयोगशक्तान् विमुक्तो मामु पेभ्य
सि ॥ २८ ॥ समोहं सर्वं भूतेषु नमे द्वेषोस्ति न प्रियः । ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि
ते तेषु चाप्यहम् ॥ २९ ॥ अपि चेत् सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् । साधुरेव स

मैंहीं सब देवताओं के रूप से सब यज्ञों का भोक्ता फल का देनेवाला प्रभु हूँ परन्तु
मुझको मुख्यता के साथ अच्छी रीति से नहीं जानते हैं इस हेतुसे वह फिर गिरते
हैं । २४ । देवताओं के उपासक देवताओं को और पितरों के उपासक पितरों
को पाते हैं और भूतों के उपासक भूतों को प्राप्त होते हैं और एक अविनाशी के
पूजनेवाले मुझीको पाते हैं । २५ । जो भक्तिपूर्वक पत्र फूल फल और जलभी
मुझको देता है उस शुद्ध अन्तःकरण के दिये हुए को मैं ग्रहण करता हूँ । २६ ।
इस कारण जो कुछ काम करे उसको मेरे अर्पण कर जो कुछ खाता है वा हवन
करता है वा दान करता है वा तप करता है हे अर्जुन उसको मेरेही अर्पण
करे । २७ । इस प्रकार से शुभाशुभ कर्म फलों के बंधनों से छूटेगा उसकर्म
फल के त्यागरूप संन्यास योगसे सावधान चित्त कर्म बंधनों से अत्यन्त दृष्ट्या
हुआ वह पुरुष मुझपरमात्माको पावेगा । २८ । मैं सबजीवों में बराबर हूँ न मेरा
कोई मित्र है न शत्रु है परन्तु जो भक्ती के साथ मुझको भजते हैं वह मुझीमें हैं
और मैं उनमें हूँ जो अत्यन्त दुराचारी भी है और मेरे विवाय दूसरे में मनका नहीं
लगाने वाला है और मुझीको भजता है उसको साथ समझना चाहिये क्योंकि

But because they know not my nature, they fall. 24. Those who worship the Devas go to the Devas, the worshippers of the Spirits go to the Spirits; the servants of the Bhutas go to the Bhutas, but my worshippers come to me. 25. I accept and enjoy the offerings of the humble soul, who in his devotion presents leaves, flowers, fruit, water to me. 26. Whatever thou doest, O Arjuna; whatever thou eatest, whatever thou sacrificest, whatever thou givest, whatever thou doest of tapas, do it as an offering to me. 27. Thou shalt thus be free from good and evil fruits and the bonds of works. Thy mind being joined in the practice of a Sanyasee, thou shalt come unto me. 28. I am the same to all beings: there is none hateful to me nor dear. They who serve me with adoration, I am in them, and they in me. 29. If one whose ways are ever so evil, serves me alone, he is esteemed as virtuous; for he is going on the

मन्तव्यः सभ्यगुण्यवसितो हिस ॥ ३० ॥ भिन्नं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति । कौन्तेय प्रतिजानीहि नमो भक्त. प्रणश्यति ॥ ३१ ॥ मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य योपस्थः पापयोनय । क्षिर्यो वैश्यास्तथाशूद्रस्तेपि यांत परांगतिम् ॥ ३२ ॥ किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा । अनित्यमसुखं लोकं भिमंप्राप्यभजस्व माम् ॥ ३३ ॥ मन्मता भव मद्भक्तो मयाजीमो नमस्कृतः । मामे वैश्वसि युक्त्वैव मास्मानं सत्परायणः इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूंराज विद्यारान गुह्ययोगोनाम नवयोऽध्यायः ॥ ९ ॥ पर्वणितुत्रयस्त्रिशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

श्री भगवानुवाच ॥ भूयएव महाबाहो नृणु मे परम वचः । यत्तेहं प्रीयमाणाय पक्ष्यामि हितकाम्यया ॥ १ ॥ नम विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः । अहमादिर्हि देवा

वह दृढ़ निश्चय करने वाला है । ३० । वह पुरुष शीघ्रही धर्मात्मा होता है और सदैव मोक्ष रूपगति को पाता है हे अर्जुन तू मेरी आज्ञासे प्रण कर के इस बातको दृढज्ञानले कि मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता । ३१ । हे तात यह बात प्रकट है कि जो स्त्री वैश्य शूद्र भी पापात्मा होयं वह भी मेरी शरण को लेकर मोक्ष रूप परमगतिको पाते हैं । ३२ । तो क्या पवित्र ब्राह्मण और राजर्षिलोग मेरेभक्त होकर मोक्षरूप परम गतिको नहीं पायेंगे हे अर्जुन इसनाशवान् सुखसे रहित लोकका पाकर तू मुझ को भज । ३३ । अर्थात् मुझी में मनको लगानेवालाहो मेरा भक्तहो और मरेही निमित्त यज्ञ करनेवाला हो मुझीको नमस्कार इत्यादि रीतिसे योग का करके मुझी उत्पत्ति के स्थानमें भक्ति रखने वाला मुझजगदात्मा परमात्मा मेही लय हागा ॥ ३४ ॥

अध्याय ॥ १० ॥

श्रीभगवान् बोले हे महाबाहु तू फिर मेरे इस उत्तम वचन को सुन जो तेरे भलाईके लिये तुझप्रीति मान से कहताहूँ । १ । कि देवताओंने और महर्षियों ने

right way, he soon becomes of a virtuous spirit, and obtains eternal happiness. Recollect, O son of Kunti, that my devoted never perishes. 31. Those even who may be of the womb of sin, women, Vaisyas, or Sudras, shall go on the supreme journey by trusting me. 32. How much more holy and devoted Brahmans, and Rajarshis. Consider this world as a finite and joyless place, and worship me. 33. Fix thy mind on me, be my beloved, my adorer, and bow down before me. Unite the soul to me, make me thy asylum and thou shalt come to me. 34.

LECTURE X

Of divine nature

Krishna.—Hear again, O valliant youth, my supreme words which, for thy good, I will speak to thee, who art beloved. 1. Nei-

नां महर्षीणां च सर्वशु ॥ २ ॥ यो मामजगता द्विच वेत्ति लोकमहेश्वरम् । अममूढ स
 मर्त्येषु सर्वपापै प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ बुद्धिर्ज्ञानं मममोह क्षमा सत्य दम शम । सुप्त
 दु ख भयो भावो भयञ्जामय मेव च । ४ ॥ आर्द्रसासमता तुष्टिस्तपोदान वशोऽदश ।
 भवन्ति भाषा भूताना मत्त एव पृथग्विधा । ५ ॥ महर्षय सप्त पूर्वं च वारोमनवत्त
 था । मद्भावामानवाजाता येषा लोक इमा प्रजा ॥ ६ ॥ एतां त्रिमूर्तिं योगेश मम यो
 वेत्ति तत्पतः । सोऽधिकत्वेन योगेन ज्य ते नात्र सशयः ॥ ७ ॥ नह सर्वभ्य प्रभवो
 मत्तः सर्वे प्रवर्त्तते । इति मत्वाभजन्ते मां पूषाभाज समन्विता ॥ ८ ॥ मद्यित्तामद्भग
 ताप्राणा बोधयन्त परस्परम् । कथयतश्चर्मा नि य तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ ९ ॥ तेषा ख

भी मेरे ऐश्वर्य्य को नहीं जानाहै इसकारणसे कि मैं मम देवता और महर्षियामे भी
 प्रथम हूँ जो ज्ञानी है बहुमुक्त अनादि रूप अजन्मा और सब लोकों के स्वामी को
 जानता है और वही मरने वालों में सब पापों मे मुक्त होताहै । २ । बुद्धि, ज्ञान,
 असम्मोह, क्षमा, सत्य, दम, शम, सुप्त, दुःख, उत्पत्ति, मृत्यु, भय, निर्भयता, आर्द्र
 सा, समता, सन्तोष, तप, दान, यज्ञ त्रयश यह जीवधारियों के वीसोंभाज नाना
 प्रकारोंके द्वारा मुक्ती से उत्पन्न होतेहै । ३ । सब नृष्टिमे प्रथम भृगु मरीच्यादि
 महर्षि और सनकादिक ऋषि वा चौदह मनु मुक्त हिरण्यगर्भ रूपके मनसे उत्पन्न
 हुए हैं जिनसे कि यहसब प्रजा और लोक उत्पन्नहुए हे । ४ । जो वत्तमाग मेरी
 विभूति और योग को मूल समेत जानते है वह निर्विकल्प योग समाधि के द्वारा
 अचलहोकर निस्संदेह तदाकार होता है । ५ । मैंमम संसार को उत्पात्तिका कतरण
 हूँ बुद्धि आदि के द्वारा जो कुछ कर्म होता है वह मुक्तीसेही संबन्ध रखनेवाला होता
 है ऐसा मानकर ज्ञानीलोग भक्तिसे मुक्तको भजते है । ६ । जिनके मनमें मैही वर्त्त-
 मान हूँ और जिनकी इन्द्रियां भी मुक्ती में मग्न हे वह परस्पर में श्रुतियों और
 शुक्तियों के द्वारा मुक्तको प्रकट करते है और सदैव मुक्ती को रटते हुए नृप्तीको

then the host of Suras, nor the Maharshis, know of my greatness because I am before all the Devas and Maharshis. 2 Whoso free from folly, knows me unborn, beginningless and the mighty ruler of the universe, is delivered from all sins. 3 Reason, knowledge, non illusion, patience, truth humility, meekness, pleasure and pain, birth and death, fear and courage, harmlessness, equanimity, austerity, charity, zeal, renown and infamy, all distinctly come from me. 5 In former days the seven Maharshis and the four Manus were born of my mind, of them are descended all the inhabitants of the earth. 6 He who knows thus my power and my connection, is without doubt endued with an unerring yog. 7 I am the creator of all things, and all things proceed from me. The wise believe thus and worship me. 8 Their thoughts and life are in me, they rejoice amongst themselves, and delight in speaking of

सत पुक्तानां भजता प्रीतत पूर्षकम् । ददामि बुद्धियोग त येन मानुष प्यसि ते ॥ १० ॥
 तेषां मेघानु कम्पार्थं महामहानज तम । नाशयास्यात्सभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ११
 अर्जुन उवाच ॥ पर ब्रह्म पर धाम पवित्र परम भवाम् । पुरुष शाश्वत इदम्यमादयेच
 मज विभुम् ॥ १२ ॥ आहस्त्वामृपय सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा । असितो देवलो
 व्यास स्वयम्बुव प्रचोपिम ॥ १३ ॥ सर्वं मेतद्वत् मन्ये यन्मा वदसि केशव ।
 न हि ते भगवन् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवा ॥ १४ ॥ स्वयमेवात्मनारमानं चेत्यत्वं
 पुरुषोत्तम । भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥ १५ ॥ वन्द्यमहर्ष्यशोषेण दि-
 व्याह्वात्सविभूतय । याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमास्व व्याप्यातेष्टास ॥ १६ ॥ कथं
 विद्यामह योर्गैस्त्वा सदा परिचिन्तयन् । केपु केपुच भावेषु चिन्त्योसि भगवन्

पाकर मुझी में रमण करतेहै । ९ । उन सदैव उस्ताह युक्त प्रीतिसे भजन करनेवाले
 महात्माओंको मैं उस बुद्धि योग को देताहूँ जिसके द्वारा वह मुझको पातेहैं । १० ।
 उनके ऊपर दया दृष्टि करने के लिये मैं अन्तःकरणवर्त्ती होकर प्रकाशरूप ज्ञान
 दीपकके द्वारा उनके अज्ञानसे उत्पन्न हुए मोहरूपी अंधकार को दूर करताहूँ । ११ ।
 अर्जुन बोले हे परब्रह्म परमज्योति पवित्रात्मा शरीररूप पुरियों में वर्त्तमान हृदया
 काश में प्रकट होनेवाले सबके आदिरूप व्यापक अजन्मा श्रीकृष्णजी, ऋषि देव-
 र्षि नारद असित देवल व्यासजी इनसब ऋषियों ने तुमको उत्तम २ गुणों से संयुक्त
 किया और आप अपने श्रीमुख से भी वर्णन करतेहो । १२ । सो हे केशवजी आपके
 ऐश्वर्य्य की देवता और दानवों में से कोई नहीं जानता है इसवातको मैं सत्यही
 मानता हूँ । १३ । हे जीवों के उत्पन्न करनेवाले ईश्वर, देवदेव जगत्पति, पुरुषोत्तम
 तुम अपने को आपही जानतेहो । १४ । हे भगवन् आप अपनी उन दिव्य विभू-
 तियों को मूल समेत वर्णन कीजिये जिनसे कि आप इन लोकों को व्याप्तकरके
 नियत रहते हो । १५ । हे पंडैश्वर्य्य के स्वामी मैं अपने चर्म चक्षु से ध्यान करता

me. They are content and joyful 9 I gladly inspire those who are, constantly thirsty for union, with that use of reason, by which they come to me. 10 In compassion I dissipate the darkness of their ignorance with the light of wisdom 11 Arjuna—All the Rishis, the Devashtis, Narada, Asit, Deval, Vyes (etc) call thee the supreme Bramha, the supreme abode, the most holy, the eternal Purush, the Divine, the First Lord, the birthless, the omnipresent And thou thyself hast told me so 12 I firmly believe, O Keshava, all thou tellest me. Neither the Devas nor the Danavas understand, O Lord, thy manifestation 14 Thou alone knowest thyself, O Purushottam! Source of Leings, God of gods, Lord of Leings, Ruler of the world! 15 Thou alone art able to tell Thine own glories by which thou pervadest and dwellest in this world. 16 How can I, thy votary, by constant meditation know thee? In

मया ॥ १७ ॥ विस्तरैणात्मनो योगं विभूतिव जनाह्वय । भूयः कथय तृतिर्हि
 शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥ १८ ॥ श्रीभगवानुवाच । हन्त ते कथयिष्यामि । दिव्या
 ह्यात्मविभूतयः । प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥ १९ ॥ ब्रह्मात्मा
 गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः । ब्रह्मादिश्च मध्यञ्च भूतानामन्त एवच ॥ २० ॥
 आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविर्भुवाम् । मरीचिर्महातामसि नक्षत्राणामहं
 राशी ॥ २१ ॥ वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामसि वासवः । इन्द्रियाणां मनश्चास्मि
 भूतानामसि चेतना ॥ २२ ॥ रुद्राणां शङ्करश्चास्मि विचेदो यत्नरक्षसाम् । वसूनां
 पापकश्चास्मि मेघः शिखरिणामहम् ॥ २३ ॥ पुरोधसाञ्च सूर्यं मां विद्धि पाथं

सुआ आपको कैसे जानूं आप कौन २ से भावों में मेरे देखने के योग्य हैं । १७ ।
 हे जनार्दन आप अपने विश्वरूप योग और ध्यान के योग्य विभूतियों को फिर
 विस्तार युक्त वर्णन कीजिये क्योंकि इन पौत्र साधन युक्त अमृत रूप वचनोंसे मेरी
 तृप्ति नहीं होती है । १८ । श्रीभगवान् बोलें कि हे अर्जुन बहुत श्रेष्ठ है मैं अपनी
 उत्तम दिव्य विभूतियों को तुम्हसे कहताहूँ मेरी विभूतियों के विस्तार का अन्तनहीं
 है । १९ । हे गुडाकेश मैं व्यापक आत्मा सब जीवों का आश्रय रूप अंचल हूँ मैं
 सबका आदि मध्य अन्तहूँ । २० । मैं अद्विती के पुत्रों में विष्णु हूँ, ज्योतिरूपों
 में सूर्य मैं हूँ, मरुद्गणों में मरीचि मैं हूँ, नक्षत्र और तारागणों में चन्द्रमा मैं हूँ
 । २१ । मनोहर गानयुक्त वेदों में सामवेद मैं हूँ, देवताओं में इन्द्र मैं हूँ, इन्द्रियों
 में मन मैं हूँ, जीवों की बुद्धिकी शक्ति मैं हूँ, । २२ । ग्यारह रुद्रों में शंकर मैं हूँ,
 यत्न रक्षकों में घनाधिप कुंभर मैं हूँ, अष्ट वसुओं में अग्नि मैं हूँ, शिखर और
 रत्न धारी पर्वतों में सुमेरु नाम उत्तम पर्वत मैं हूँ, । २३ । और हे अर्जुन पुरो-

what way art thou to be found ? 17. Tell me in full, Janardan, thy connection, and thy power; for I am never satisfied with drinking of the living water of thy words. 18. Krishna: Blessings be upon thee! I will tell thee my sovereignty, as the extent of my nature is infinite. 19. I am seated in the bodies of all beings. I am the beginning, the middle, and the end of all things. 20. Of the Adityas I am Vishnu, of the luminous orbs, the radiant sun; I am Marichi amongst the Maruts and of the stars I am the moon. 21. Of the Vedas I am the Sam, and I am Vasava amongst the Devas. Amongst the faculties I am the mind, and amongst animals I am life. 22. I am Shankara amongst the Rudras, and Vitesha amongst the Yakshas and the Rakshasas. I am Pavaka amongst the Vasus and Meru amongst the mountains. 23. Amongst teachers know that I am their chief Brihaspati

बृहस्पतिम् । सेनानीनामह स्कन्द सरसामस्मि सागर ॥ २४ ॥ महर्षीणां
भृगुरह गिरामभ्येकमक्षरम् । यज्ञाना जपयज्ञोस्मि स्थावराणा हिमालय ॥ २५ ॥
अश्वरथ सर्ववृक्षाणा देवर्षीणाच नारद । गन्धर्वाणां चित्ररथ सिद्धाना कपि
लामुनिः ॥ २६ ॥ उच ध्रुवसमश्वाना विद्धि माममृतोद्भवम् । ऐरावत गजेन्द्राणां
नराणाञ्च नराधपम् ॥ २७ ॥ आयुधानामह वज्रं धेनून् माम्भि कामधुरुः प्रजन
श्चास्मि कन्दर्प सर्पाणामस्मि वासुकि ॥ २८ ॥ अनन्तश्चास्मि नागाना वरुणो
यादसामहम् । पितृणामभ्यर्गमा चास्मि यम सयमतमहम् ॥ २९ ॥ प्रह्लादश्चा
स्मि दैत्यानाकालः कल्पतामहम् । मृगाणाच मृगेन्द्रोह वैनतेयश्च पाक्षिणाम् ॥३०॥
पवन, पयतामस्मि राम' शङ्खभृतामहम् । शशाणा मरुश्चास्मि स्रोतसामस्मिजा

धसों में बृहस्पति मैं हूँ, सेनापतियों में स्कन्द मैं हूँ, नदी आदि जलाशयों में समुद्र
मैं हूँ, १२४। महर्षियों में भृगु मैं हूँ, वाणियों में ओंकार अक्षर मैं हूँ, यज्ञों में जपयज्ञ मैं
हूँ, नियत स्थानों में हिमालय पर्वत मैं हूँ, १२५। सब वृत्तों में पीपल का वृत्त
मैं हूँ, देवर्षियों में नारद ऋषि मैं हूँ, गन्धर्वों में चित्ररथ गन्धर्व मैं हूँ, सिद्धों में कपिल
मुनि मैं हूँ १२६। घोड़ों में उच्चैश्रवामैं हूँ, गजेन्द्रों में ऐरावत नाम हाथी मैं हूँ, मनुष्यों में
राजा मैं हूँ, १२७। आयुधों में वज्र मैं हूँ, गौओं में कामधेनुमैं हूँ सन्ततिका उत्पन्नकर
ने वाला कामदेवमैं हूँ सर्पों में वासुकी सर्प मैं हूँ, १२८। नागों में अनन्त शेषनाग
मैं हूँ जनजीवों में और जलके स्वामियों में वरुण मैं हूँ, पितृगणों में अर्ग्यमा पितर
मैं हूँ दंड देनेवालों में यम मैं हूँ, १२९। दैत्यों में प्रह्लाद मैं हूँ, संरथा करनेवालों में
काल मैं हूँ, मृगों में मृगेन्द्र अर्थात् सिंह मैं हूँ, पक्षियों में गरुड़ मैं हूँ १३०। पवित्र करने

amongst warriors I am Skanda and amongst floods I am the
ocean. 24 I am Bhrgu amongst the Maharshis and I am the
mono-syllable (Om) amongst words I am amongst worships
the *Jaya* (silent wo ship) and amongst immovables *Himalaya*
25 Of all the trees I am the *Asvattha*, and of all the
Devarshis I am Nirada I am *Chitravata* amongst Gandharvas
and the *Muni Kapila* amongst the saints. 26 Know that amongst
horses I am *Uchaisrava* the nectar born, amongst elephants
I am *Airavata*, and the sovereign amongst men 27 Amongst
weapons I am *Vajra* and amongst cattle, *Kamadhuk* I am the
prolic *Kandarpa* (the God of love), and amongst serpents I
am *Vasuki* 23 I am Ananta amongst the Nagas, and *Vari* a
amongst the inhabitants of the waters. I am *Aryama* amongst the
Pitris, and *Yama* amongst all those who rule. 29 Amongst the
Dutys I am *Prahalada*, and *Kala* (time) amongst computations.
Amongst beasts I am the lion, and *Vamateya* amongst the birds 30

इन्वी ॥ ३१ ॥ सर्गाणामादिरुत्तश्च मध्यञ्चैवाहमञ्जुन । अप्पामाधिद्या विद्यानां
 वदः प्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥ अक्षराणामकारोस्मिद्वन्द्व सागासि करवच । अहमे
 वाक्षयः फाला घाताहं विश्वतोमुखा ॥ ३३ ॥ मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भवि-
 ष्यतम् । कीर्त्तिः श्रीर्वाक् च नारीणां स्मृतिर्मेघा घृतिः क्षमा ॥ ३४ ॥ बृहत्साम
 तथा साक्षां गायत्री छन्दसामहम् । मासानां मार्गशीर्षोहमृतूनां कुबुमाकरः ॥ ३५ ॥
 पूवं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् । जयोस्मिभ्यवसायोस्मि सत्त्वस्त्वयतामहम्
 ॥ ३६ ॥ वृष्णिनां वासुदेवोस्म पाण्डवानां धनत्रयः । सुनीतामप्यह व्यास कवी-
 नामशुता करिः ॥ ३७ ॥ दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि राजगीपताम् । मौनञ्चै

वालोंमें अथवा शीघ्र गतिवालों में वायु मैं हूँ, शस्त्रधारियों में राम मैं हूँ, मत्स्यादिकों
 में मगर मैं हूँ, नदियों में गंगा मैं हूँ, ३१। हे अर्जुन संपूर्ण संसार का आदि मध्य
 अन्त मैं हूँ, विद्याओं में अन्व्यात्म विद्या मैं हूँ, बितंडा इत्यादि में सिद्धान्त रूप मैं हूँ
 । ३२। सव अक्षरों में अकार अक्षर मैं हूँ मिलेहुएशब्दों में द्वन्द्व मैं हूँ, मैं अविनाशी
 काल हूँ, मैं ही कर्म फलका देनेवाला हूँ, मैं विश्वतो मुख हूँ । ३४। मैं ही सवका
 मारनेवाला मृत्यु हूँ, प्राप्त होनेवाले कल्याणों में ऐश्वर्य की महत्त्वता और कीर्त्ति
 मैं हूँ, स्वभाव, श्रुतभाषण, मेधा, धैर्यता, सन्तोष मैं हूँ, मामरंदकी । ३४। ऋचाओंमें
 बृहत् नाम ऋचा मैं हूँ, छन्दोंमें गायत्री मैं हूँ, महीनोंमें मार्गशीर्ष मैं हूँ, ऋतुओंमें वसन्त
 ऋतु मैं हूँ । ३५। छन करने वालोंमें जुवा मैं हूँ, तेजस्त्रियोंमें तेज मैं हूँ, विजय मैं हूँ,
 निश्चय वा उपाय मैं हूँ, सतोगुणी पुरुषों में सतोगुण मैं हूँ । ३६। यादवों में वासु-
 देव मैं हूँ, पांडवों में अर्जुन मैं हूँ, मुनियोंमें व्यासमुनि मैं हूँ, कवियों में शुक कवि
 मैं हूँ । ३७। राजाओं में दण्ड रूप मैं हूँ, विजयाभिलाषी पुरुषों में नीतिरूप-मैं हूँ

Amongst purifiers I am Pavana, and Rama amongst those who
 carry arms Amongst fishes I am the Makar, and amongst rivers I
 am Ganga. 31. Of creation I am the beginning, the middle, and the
 end Of sciences I am the *Athyatma Vidya*, and of speakers I am
 the argument 32. Amongst letters I am the letter a, and of all
 compound words I am the Dvandva. I am also never-fail time; the
 preserver, whose face is turned on all sides. 33 I am all-grasping
 death; and the origin of all to come. Amongst femunces I am fame,
 for tune, eloquence, memory, understanding, fortitude, patience. 34
 Amongst harmonious measures I am the *Gayotree*, and amongst
 Sams I am the *Brihat Sama*. Amongst the months I am the month
 Margashursha, and amongst seasons Kusumakara, (spring) 35.
 Amongst frauds I am gambling; and of all things glorious I am the
 glory. I am victory, I am industry, and I am the essence of all
 qualities. 36. Of the *Trishnis* I am Vasudeva and amongst the
 Pandavas, Dhananjaya I am *Vyasa* amongst the Munis, and
 amongst the sages I am *Ushana* 37 Amongst rulers I am the rod, and

चास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥ ३८ ॥ यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तद्ग्रह-
जुन । न तदस्ति विना यत्स्थानमया भूतवराचरम् ॥ ३९ ॥ नान्तोस्ति मम इद्व्या-
नां विभूतानां परन्तप । एष तद्देहात् प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥ ४० ॥ यद्याह
मृतमत्सत्त्वं श्रीमद्भिन्नमेव यः । तत्तद्देवावगच्छ चं ममतेजोऽसम्भयम् ॥ ४१ ॥
अथवा बहूनैते किं ज्ञातेन तवाजुन । विष्टयाहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितोजगत् ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतामूपानि० विभूतियोगोनाम

दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ पर्वणितुचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

अर्जुन उवाच । मदनप्रहाय पामं गुह्यमभ्यात्मसंक्षितम् । यत्त्वयोरुक्तं वचस्तेन
मोहोऽर्थे विगतो मम ॥ १ ॥ भवाप्ययौह भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।

गुप्त वस्तुओं में मौनता मैं हूँ, ज्ञानियों में ज्ञान मैं हूँ । ३८ । हे अर्जुन जो सब जीव
धारियों का तेज है वह मैं हूँ, अर्थात् सबमेरा ही विभूति है । ३९ । हे शत्रुहन्ता अर्जुन
मेरी दिव्य विभूतियों का अन्त नहीं है यह मैंने अपनी असंख्य विभूतियों का संक्षेप
तुमसे वर्णन किया, । ४० । जो जो प्राणी ऐश्वर्यमान लक्ष्मीवान् शोभावान् और
पराक्रम आदिमें भी अत्यन्त युक्त है उसउसको तुम मेरी चैतन्य शक्तिकी अग्निमें
उत्पन्न हुआ जानो । ४१ । हे अर्जुन इसवहुतसे ज्ञानसे तुमको क्या प्रयोजन है मैं
इस संपूर्ण जगत्को अपने एक अंशमें व्याप्त करके निपत हूँ । ४२ ।

अध्याय ११ ॥

अर्जुनबोले कि जो आपने भेरेऊपर अनुग्रह करनेकी दृष्टि से अत्यन्त गुप्तरूप और
गुप्तरी करने योग्य आत्मज्ञान को अर्थात् आत्मा अनात्मा के विवेकरूप वचनको
वर्णन किया उसके द्वारा यह मेरा अविवेकरूपी मोह अत्यन्त दूरहोगया । १ । इसके
विशेष हे कमलदललोचन मैंने जीवोंकी उत्पत्ति नारा और आपका महा अविनाशी

amongst those who seek for conquest I am policy. Amongst the
secrets I am silence, amongst the wise I am wisdom 38. I am, in
like manner, O Arjuna, that which is the seed of all things; and there
is nothing animate or inanimate that is without me. 39. My divine
distinctions are without end, and the many which I have mentioned
are by way of example. 40 And learn, O Arjuna, that every being
which is worthy of distinction and pre eminence, is the produce of the
portion of my glory 41. But what, O Arjuna hast thou to do with
this manifold wisdom ? I pervade this whole universe with a portion
of myself 42.

LECTURE XI

Vivekarup Samdarshan

Arjuna—This supreme mystery of Adhyatma which, out of
loving kindness, thou hast disclosed to me, has dissipated my delusion-
1. I have heard from thee a full account of the creation and

त्वत्तः कमलपत्राक्ष महात्म्यमणि चाव्ययम् ॥ २ ॥ एवमेतद्यथा त्वमात्मानं परमं
 इवर । द्रष्टुमिच्छामि ते रूप मैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ इत्यले यद्विदुच्छक्यं मया
 द्रष्टुमिति प्रभो । योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयामास गद्ययम् । ४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
 पश्यमेवार्थं रूपाणि शतशोप सहस्रशः । नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनिच
 ॥ ५ ॥ पश्यादित्यान् वसून् रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा । चन्द्र्यदृष्टपूर्वाणि पश्याञ्च-
 र्याण भारत ॥ ६ ॥ इहैकरूपं जगत् कृतं पश्याद्य सचगच्छरम् । ममदेहे
 गुडाकेश पञ्चान्यत् द्रष्टुमिच्छास ॥ ७ ॥ न तु मां शक्यसे द्रष्टमनेनैव स्वचक्षुषा ।
 इदं दद्यामि ते चक्षुःपश्ये योगमैश्वरम् ॥ ८ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा तनोराजन्
 महा योगेश्वरो हरिः । दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥ अनेकरूपकनयन

महात्म्य भी आपक मुखारविन्दसे सुना। हे ईश्वर जैसा आपने अपनेको कहा आप
 पार्थ में बैठेही हैं परन्तु हे भगवन् आप के विराट् रूप देखनेकी मुझको वड़ी
 अभिलाषा है। हे मनु योगेश्वर जो आप ऐसा समझे होय कि उस रूपको मैं देखने
 योग्य हूँ तो आप उस अपने अविनाशी आत्माको मुझे दिखाइये । ४ । श्रीभगवान्
 बोले हे अर्जुन मेरे सैकड़ों हजारों दिव्यरूप जो नानाप्रकारोंसे अनेकरंग रूप के हैं
 उनको देखा। हे भरतवंशी उसीस्वरूपमें सूर्य वसु रुद्र दोनोंअस्विनीकुमार वायु इसी
 प्रकारकी अन्य बहुतसी अद्भुत बातोंको जोतूने प्रथमकभी नहीं देखी है, उसको भी देख,
 हे गुडाकेश अबपहलं मेरे शरीरके एकअंशमें वर्तमान सब स्थावर जंगमसाहित
 जगत्को और जो २ भूत भविष्य स्थूल सूक्ष्म देखनाचाहता है उनको भी देख
 । ७ । परन्तु तू इन नेत्रोंसे मेरे देखनेको समर्थ नहीं है तुझे दिव्यनेत्र देता हूँ इन
 नेत्रों से ईश्वरता संवंधी मेरे योगको देख । ८ । संजय बोले कि हे राजा । धृतराष्ट्र
 बड़े योगेश्वर हरिसे इस प्रकारसे मन्त्र करनेवाले अर्जुनको अपने ऐश्वर्य संवंधी
 उन दिव्य उत्तम रूपोंको दिखाया । ९ । जो अनेक मुख नेत्र और अद्भुत दर्शन

destruction of all things, and also of thy eternal greatness 2. As
 thou hast described thyself, Parmeshwara ! I wish to see thy omni-
 potent form. 3. If, Prabhu ! thou thinkest it may be seen by me,
 show thyself to me, Yogeshwara. 4. Krishna.—Behold, O Arjuna,
 my million forms divine, of various species, shapes and colours. 5.
 Behold the Adityas, and the Vasus, the Rudras, the Aswins and
 Maruts. Behold many wonders never seen before. 6. Behold, in this
 my body, the whole world animate and inanimate, and all things
 else thou hast a mind to see. 7. But as thou art unable to see me
 with these thy eyes, I give thee a heavenly eye; See my sovereign
 yog. 8. Sanjaya—The great Lord of yog, Hari, having, O Rajan,
 thus spoken, showed to Arjuna his supreme sovereign form of many
 a mouth and eye, many a wondrous sight; many a heavenly ornament;

मनेक द्रुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतांयुधम् ॥ १० ॥ दिव्यमा-
 ल्याभ्यरधरं । द्रव्यगन्धानुलंपनम् । सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्त विश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥
 दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेयुगपदुत्थिता । यदि भा' सदृशी सा वयाद् भ'सस्तस्यम-
 हात्मनः ॥ १२ ॥ तत्रैकस्थं जगत् कृतस्नं प्रावभक्तमनेकधा । अपश्यहेव देवस्य
 शरीरे पाण्डवतदां ॥ १३ ॥ तत स विश्वमाविष्टो हृष्टगोमा घनञ्जपः । प्रणम्य
 शि'सा देवं कृतांजलिरेभाषत ॥ १४ ॥ अर्जुन उवाच । पश्यो मे देवांस्तव देव
 देहे सर्वस्तथाभूतविशेषसंघान् । ब्रह्माणमशि कमलासनस्थमूर्त्यांश्च सर्वांनुरगांश्च
 दिव्यान् ॥ १५ ॥ अनेकवाहदृष्टवक्रनेत्र पश्यामि त्वांसर्वतोन्तैरुपम् । नान्तं न
 मध्यं न पुनस्तादि पश्यामिव विश्वेश्वर विश्वरूपम् ॥ १६ ॥ किरीटिनं गदिनञ्च

ममेत बहूतसे दिव्यभरण वस्त्र और उत्तम शस्त्रों से अलंकृत मुगन्धित पुष्पमालाओं
 से शोभित सब औरको हजारों सूर्य के समान देदीप्यमान थे । १२ । तद्
 नन्तर अर्जुनने उस देवदेव वासुदेव श्रीकृष्णजी के उस शरीरके भीतर एक
 अंशमें नियत नानाप्रकारके रूपों समेत संपूर्ण जगत्को देखा । १३ । यह देखकर
 अर्जुन आश्चर्य युक्तहुआ और शरीरमें रोमांच खडे होगये तब उसने हाथ जोड़
 कर उनको प्रणाम करके यह वचन कहा । १४ । कि हे प्रकाशमान आपके
 शरीरमें देवता और चारों प्रकार के सबजीवोंकी और कमलासनपर विराजमान
 ईश्वर ब्रह्मा जिकी और सबभूतपि मुनि यक्ष राक्षस गन्धर्व किन्नर उरगराजों को
 भी देखताहूँ । १५ । हे विश्वरूप अखिलेश्वर आपको सब और अनेकरूप भुजा
 उद्ग मुरनेत्र कान नाकोंम शोभित देखताहूँ फिर आपका आदिमध्य अन्तभी
 नहींदेखताहूँ । १६ और आपको मुहुट गदा चक्र धारण किये तेज समूहोंसे कठिनता

many an upraised weapon; adorned with celestial robes and chaplets;
 anointed with heavenly unguents; all marvellous, brilliant, infinite
 and all faced. 11. The splendour of that mighty being resembled
 that of a thousand suns blazing out together in the sky. 12. The
 Pandava beheld within the body of the Deva of Devas, the whole
 universe divided forth into its vast variety 13. He was overwhelm-
 ed with wonder, and every hair was raised on end. He bowed down
 his head before the Deva, and thus addressed him with joined hands:
 14. Arjuna.—I see, Lord I in thy form all the Devas, and every
 specific tribe of beings. I see *Brahma* sitting on his lotus throne; all
 the *Rishis* and heavenly *Uragas*. 15. I see thyself, on all sides of
 infinite shape, with countless arms, breasts, mouths, and eyes, but I
 can neither discover thy beginning, thy middle, nor again thy end,
 O universal Lord, of form infinite! 16. I see thee with a crown
 and armed with club and Chakra, a mass of glory, dazzling every-

क्रिण्व तेजोराशिं सर्वतोदीप्तिमन्तम् । पश्याम त्वां दुर्निरीक्ष्य समन्ताद्दीप्तानलार्कं
 शुक्तिमप्रमेयम् ॥ १७ ॥ त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वदय परं निधातम् ।
 त्वगव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषोत्तमो ॥ १८ ॥ जनादिमध्यान्त
 मनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् । पश्यामित्वां दीप्तदृताशुवक्रं स्वतेजसा विश्व
 तमदं तपन्तम् ॥ १९ ॥ द्यावापृथिव्योऽग्निदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दशश्रु सर्घाः ।
 हृष्याद्भुतं रूपमुप्रतचेदं लाकत्रय प्रव्यथितं महात्मन् ॥ २० ॥ जगि हित्वाऽसुरसंघा
 विशन्ति कश्चिद् भीताः प्राञ्जलवो गृणन्ति । स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः स्तुयन्ति
 त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥ रुद्रादित्या वसवो यं च साध्या विश्वेऽश्विनौ
 मरुतश्चोष्मणाश्च । गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघा वीक्षन्ते त्वां । वरिभताश्चैव सर्वे ॥ २२ ॥

पूर्वक देखने के योग्य चारों ओरसे प्रकाशित अग्नि सूर्य के समान देदी
 प्यमान अमयेय देखताहूँ । १७ । आप अविनाशी शुद्ध ब्रह्मदेवान्त सेही जानने
 के योग्यहैं आपही इससंसारके कारण ब्रह्महो और माचीनधर्मों के रत्नकहो
 तुम्हीं को सबने सनातन ब्रह्मपुरुष मानाहै । १८ । मैं आपका आदि मध्य अन्त
 रहित महा पराक्रमी बहत भुजाधारी चन्द्र सूर्य रूपनेत्रयुक्त प्रकाश मान अग्निह्वय
 मुख, अपने तेजसे इत विश्वका संतप्त करनेवाला देखताहूँ । १९ । हे महात्मा
 स्वर्ग पृथ्वी और इन दोनों के मध्यवर्ती आकाश दिशा विदिशाओंकोभी मैं तुम्ही
 अकेले से व्याप्त देखताहूँ इस तेरेअद्भुत भयकारी रूपको देखकर तीनों लोक भयभीत
 होते हैं । २० । सुर समूह आपकी रक्षामें आतेहैं आपकी कोई भयभीतहोकर स्तुति
 करते हैं और महर्षि सिद्ध गणयोग कल्याण शब्दकहकर स्तोत्रादिकों से आपकी
 स्तुति करते हैं । २१ । रुद्र, सूर्य, वसु, और साध्यविश्वेदेवा, दोनों अश्विनीकुमार
 मरुत और उष्णभोजी पितरादे यक्षगन्धर्व अमुर सिद्धगण यह सब आश्चर्यित

where and on all sides dazing, the sight; shining with light immea-
 surable like the ardent fire or glorious sun. 17. Thou art the
 Supreme Being, incorruptible, worthy to be known! Thou art prime
 supporter of the universal orb! Thou art the never-failing and
 eternal guardian of religion! Thou art the Primal Puru-ha. 18. I
 see thee, beginningless, middleless, and endless, of valour infinite; of
 arms innumerable; the sun and moon thy eyes; thy mouth a flaming
 fire, and the whole world shining with thy reflected glory! 19. The
 space between the heaven and the earth, in all directions is filled by
 thee alone, the three regions of the universe, O mighty spirit! behold the wonders of thy awful countenance with troubled minds.
 20. Of the celestial bands, some I see fly to thee for refuge; whilst
 some, afraid, with joined hands sing forth thy praise. Maharshis,
 holy bands, hail thee, and glorify thy name with adoring praises.
 21. The Rudras, the Adityas, the Vasus, and those Sadhyas the

रूप महत्से बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहुरुपादम् । बहुदर बहुदंष्ट्राकराल दृष्ट्वालोका
प्रव्यर्षतास्तथाहम् ॥ २३ ॥ नमः स्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम् ।
दृष्ट्वा ह्रित्वा प्रव्यर्षितान्तरात्मा घूर्तं न विदामि शमत्र विष्णो ॥ २४ ॥ दंष्ट्र करालानि
च ते मुपानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि । दिशो न जानेन लभेच शर्म प्रसीद
देवेश जगन्निवास ॥ २५ ॥ जग्मी चत्वा धृतराष्ट्रस्य पुत्रा सर्वे सहैवावनिपाल
संघे भ्रिभो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैराप योधमुख्यैः ॥ २६ ॥ घक्रानि
ते त्वामाणा विशन्ति दष्ट्राकरालानि भयानकानि । केचिद्विलग्ना दशनन्तरेषु
सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥ २७ ॥ यथा नदीना बहुघोरमुवेगा. समुद्रमेवा

होकर आपको देखते हैं । २२ । हे महाबाहु बहुभुज जंघा चरण पीठकराल
दंष्ट्रायुक्त महारूपधारी आपके रूपको देखकर सबलोक पीड़ामान है और मैं भी
पीड़ामान हूँ । २३ । हे सर्वव्यापी आपको आकाश में व्यापक प्रकाशमान अनेक
वर्णों से शोभित, दिशःओंमें विस्तृत, प्रकाशमान नेत्रवाला देखकर अन्तःकरण से
अत्यन्तपीड़ामान होकरमुझे धैर्यता नहीं होती है । २४ । हे देवेश्वर कालाग्निके
समान आपके मुख और कठिन दंष्ट्राओं को देखकर मारे भयके किसी दिशाको
भी नहीं पहिचानता महा दुःखी हूँ, हे विश्वरूप प्रसन्नहोकर सुख दीजिये । २५ ।
यहसब धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि पुत्र सबसाथी राजाओं समेत आप के शरीरमें
प्रवेश करते हैं और इसीप्रकार भीष्म द्रोणाचार्य्य सूतका पुत्र कर्णभी हमारे उचम
योधाओं समेत अनेक शीघ्रता करने वाले आप के मुखों में प्रवेश करते हैं जो मुख
तीक्ष्ण दंष्ट्रा और भयानक रूपके हैं उनमें कोई तो दातों में चिपटे हुये एसे दिखाई
देते हैं जिनके शिर चूर्ण होगये है । २७ । जैसे कि नदियोंके जलोके अनेक समूह

Viswas, the Aswins, the Maruts and the Ooshmapas; the Gandharvas and the Yakshas, asuras and Sidhas, all stand gazing on thee and all alike amazed ! The worlds, alike with me, are terrified to behold thy wondrous form gigantic, with many mouths and eyes, with many arms, and legs and breasts, with many bellies, and with rows of dreadful teeth ! 23 As I see thee, touching the heavens, effulgent, of various hues, with widely-opened mouths, and bright expanded eyes, I am disturbed within me, my resolution fails me, O Vishnu ! and I find no rest ! 24 Having seen thy dreadful teeth, and gazed on thy countenance, emblem of Time's last fire, I know not where I am ! I find no peace ! Have mercy O God of gods ! thou refuge of the universe ! 25 The sons of Dhritaraashtra, with all those rulers of the land, Bhishama, Drona, the son of Suta, and even the fronts of our army, seem to be precipitating themselves hastily into thy mouths having such frightful rows of teeth; whilst some appear to stick between thy teeth with their bodies sorely

भिमूला द्रवन्ति । तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति घक्राप्यभिविज्वलन्ति
 ॥ २८ ॥ यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समुद्भवेगाः । तथैव
 नाशाय विशन्ति लोकाश्वापि चक्राणाम् समुद्भवेगाः ॥ २९ ॥ लोलहृत्से प्रसमानः
 समन्ताल्लोकान् समग्रान् घदनैर्ज्वलद्भिः । तेजो भिरापूर्थं जगत् समग्रं भासस्तघोघ्राः
 प्रतपन्ति विष्णो ॥ ३० ॥ आरवाहि मेको भवानुप्ररूपो नमोस्तुते देववरप्रसीद । विता
 तु मिच्छामि भवन्त माद्यं नहि प्रजानामि तवप्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥ श्री भगवानुवाच ॥
 कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रभृद्धो लोकान् समाहर्तुं मिहप्रवृत्तः । श्रद्धेने पितृवानभविष्यन्ति
 सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥ ३२ ॥ तस्मात्त्वमुत्तिष्ठयशो तमस्व जित्वाशत्रु

वेगसे समुद्रकी ओर दौड़ते हैं इसी प्रकार यह नरलोकके वीर पुरुष सब ओर से
 आप के अग्नि मुखों में प्रवेश करते हैं । २८ । जैसे कि अत्यन्त शीघ्रगामी पतंग
 अपने नाशके लिये बड़ी प्रकाशमान अग्नियों में दौड़कर गिरते हैं इसीप्रकार बड़े
 वेगवाले लोक अपनेनाशके निमित्त आपके मुखोंमें प्रवेश करते हैं । २९ । आप सबलोकों
 को अपने अग्निधुक्त मुखोंमें निगलतेहो हे विष्णु व्यापक आपका भयानक प्रकाश
 अपनेतेजोंसे सबसंसारको चारोंओर पूर्णकरके अत्यन्त संतप्तकरताहै । ३० । ऐसे भयानक
 रूपवाले आपकौन हैं यह मुझे समझाइये हे देव आपको नमस्कार है आप प्रसन्न
 हजिये मैं आपको सयक्रा आदि कर्चा जानता हूं और आपकी चेष्टाओंको नहीं
 जानताहूं । ३१ । श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मैं लोकोंका नाश करने वाला महाकाल
 नाम परमेश्वर हूं इस युद्धमें लोगों के भक्षण करने को प्रवृत्तहूं जो योधा लोग कि
 शत्रु की सेना में नियत हैं वहतरे सिवाय नहीं रहेंगे इसकारण तू युद्धमें खड़ा
 होकर यशका भागी हो और शत्रुओं को मार धन और राज्य से पूर्ण होकर
 वृद्धि युक्त राज्य को भोग हे सव्यसाची अर्जुन यह सब जो तू देख रहा है यह

mangled. 27. As the rapid streams of full flowing rivers roll on to meet the ocean's bed, so do these heroes of the human race rush on into thy flaming mouths. 28. As insects, with increasing speed, seek their own destruction in the flaming fire so do these people, with swelling fury, seek their own destruction. 29. Thou involvest and swallowest all the worlds within thy flaming mouths; whilst the whole world is filled with thy glory, as thy awful beams, O Vishnu, shine forth on all sides ! 30. Reverence be unto thee, thou most exalted ! Deign to make known to me who is this God of awful figure ! I am anxious to learn thy source, and ignorant of thy work. 31. Krishna — I am Time, the destroyer of world, come to destroy the world. Except thyself none of all these warriors in these hostile ranks, shall live. Wherefore, arise ! seek honor and renown ! defeat the foe, and enjoy the full-grown kingdom ! They are already, as it were, destroyed by me. Be thou

न बुद्ध्वा ज्यं समुद्रम् । मयैवैते निहताः पूर्वं मेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ३३
द्रोणञ्च भीष्मश्च जयद्रथञ्च कर्णं तथा न्यायानपि योघवीरान् । मया हतास्त्वं जहि मा
व्यधिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥ ३४ ॥ संजय उवाच ॥ एतच्छ्रुत्वा वचनं
केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपनातः किरीटी । नमस्कृत्वाभूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः
प्रणम्य ॥ ३५ ॥ अर्जुन उवाच ॥ स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत् प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥ ३६ ॥ कस्माच्च ते न
नमेरन् महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्म । जनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सद्
सत् तत्परं यत् ॥ ३७ ॥ त्वमादि देव पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य पर निधानम् ।
वेत्तासि वैद्यञ्च परब्रह्म त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥ ३८ ॥ चायुर्धर्मोऽग्निर्वरुणः शशां

प्रथमही मुझसे मारे गये हैं तू केवल इनके मारने में कारणही रूप होगा । ३३ ।
तू मुझ से मारेहुये द्रोणाचार्य, भीष्म, जयद्रथ, कर्ण को और इसी प्रकार अन्य
उद्यमवीरों को भी मारहाल दुखी मतहो युद्ध कर तू युद्ध में शत्रुओं को विजय
करेगा । ३४ । संजय बोले कि हे धृतराष्ट्र मुकुटधारी अर्जुन केशवजीके इन वचनों
को सुनकर कांपताहुआ हाथजोड़ अत्यन्त भयभीतहुआ और अत्यन्त मुक्तकर
नमस्कारपूर्वक फिर गद्गदकरैठसे श्रीकृष्णजीसे बोला । ३५ । हे हृषीकेश अन्त
र्यामी तुम्हारा नामनेनेसे सबसंसार अत्यन्तपसन्नहोता है और प्रीतिकरताहै और
तुम्हारी कीर्ति होनेसे राक्षसलोग महाभयभीत होकर इधर उधरको भागतेहैं और
सर्वसिद्धलोगोंके समूह नमस्कार करतेहैं । ३६ । हे महात्मा ब्रह्मणोऽप्यादिके भी पितारूप
आपको वह लोग क्यों नहीं नमस्कार करें क्योंकि हे अनन्त देवेश्वर हे जगत् के
उत्पत्ति स्थान अग्निनाशी कार्यकारणरूप आदि देव सर्व शरीरवर्ती पुराण पुरुष
संसारके लय स्थान ज्ञानगम्य ज्योतिस्वरूप अनन्ततुम्हीसे सब जगत् व्याप्तहै । ३८ ।

alone the immediate agent 33 Be not disturbed ! Kill Drona,
Bhishma, Jayadratha, karan, and all the other heroes already killed
by me. Iight and thou shalt defeat thy rivals in the field. 31
Sanjaya —When the trembling Arjuna heard this from Krishna,
he saluted him with joined hands and addressed him in broken ac
cents 35 Arjuna Hrishikesha ! the universe rejoice and revel at thy
glory. The rakshasas are terrified and flee on all sides; whilst the
hosts of siddhas salute thee 36 And wherefore should they not,
O mighty Being ! bow down before thee, who, greater than
Brahma, art the prime Generator ! eternal God of gods the world's
mansion ! Thou art the incorruptible, the effect and the cause,
distinct from all things transient ! Thou art before all gods, the
ancient Purusha, and the supreme supporter of the universe ! Thou
knowest all things, and art worthy to be known, the supreme
mansion, and by thee, O infinite form ! the universe is filled. 38

क प्रजापतिर्यथ प्रपितामहश्च । नमो नमस्तेस्तु सहस्रहृद्व्य पुनश्चभूयोपिनमोगमस्ते ॥ ३९ ॥ नम पुरस्ताद्धर्मं पृथुदस्ते नमोस्तुते सर्वेण पय सर्वे । अनन्तधीर्षी मितविक्रमस्व सर्वे समामोषि ततोसि सर्वे ॥ ४० ॥ सखेति मत्वा प्रसेभ यदुक्त हेहृण्ण हे यादय हे सखेति । अज्ञानतामहिमानं तवेदं मया प्रसादात् प्रणयेनयापि ४१ ॥ यच्च यथासार्धमसन्कृतोसि विहारशय्यासनभोजनेषु । एकोय वाप्यन्युत तत्समन्तत्त्वं ज्ञामयेत्त्वामहमप्रमेयम् ॥ ४२ ॥ इत्यासि लोकास्य चराचरस्य त्वमस्यप्यथ गुह्यगोपान् । नत्वहसमोस्त्यज्यधिकं कुतो-यो लोकत्रयेण्यप्रतिनममाव ॥ ४३ ॥ तस्मात् प्रणम्य प्रणिधाय काय प्रसादय त्वामहमीशमीड्यम् । इतेव पुत्रस्यस

आपही वायु, यम, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, प्रजापति, ब्रह्मादि देवताओं के पिताहो आपके अर्थ वारम्बार नमस्कार है हे सर्वरूप हे महापराक्रमी आप अतुलबलहो और अपनी ऐश्वर्यता से सब को व्याप्तकरते हो इस कारण तुम्हीं सर्वरूप होकर कर्मों के प्रारंभ और अन्त हो आप सब प्रकार से नमस्कार करने के योग्य है । ४० । आप की महिमाको न जानकर अज्ञान से वा प्रीति से मैंने अपना भाई और मित्र मानकर हे कृष्ण हे यादव हे मित्र इत्यादि शब्दों को जो कहाँ और विहार शय्या भोजन के समय अकेले में वा मित्रों के सम्मुख भी हास्य के निमित्त असवकारी जो बचन कहाँ है हे अविनाशी उन अपराधों को मैं आप से क्षमा कराना चाहताहूँ । ४२ । तुमइस स्यावर जंगम लोकके स्वामी पूजनीय और गुरुहो आपके समानअप्रमेय प्रभाववाला कोई नहीं है तो तीनोंलोकोंमें आपमेंअधिक कहाँ से होगा । ४३ । इय हेतुमे मे आपको साष्टांग परामकरके स्तुतिके योग्य आपको प्रसन्न करताहूँ जैसे कि पिता पुत्रकाअपराध और मित्र मित्रका अपराध और पति

Thou art Vayu, Agni, Varuna, the moon, Prajapati, and Prapitamaha. Reverence ! Reverence to thee a thousand times repeated ! Agon and agun Reverence ! Reverence to thee ! Reverence be to thee before and behind ! Reverence to thee on all sides O all in all ! Infinite is thy power and thy glory ! Thou includedst all things, so thou art All things ! 40 Thinking thee friend, I habitually called thee Krishna, Yadava, Friend ! I was ignorant of thy greatness, because I was blinded by my affection and presumption. 41 Thou hast, at times, also in sport been treated ill by me, in thy recreations, in thy bed, on thy chair, and at thy meals, in private and in public for which, O Being in conceivible ! I humbly crave thy forgiveness. 42 Thou art the father of all things animate and inanimate, thou art the sage instructor of the whole, worthy to be adored ! There is none like to thee, nor superior in the three worlds. 43 Wherefore I bow down, and with my body prostrate upon the ground, crave thy mercy, adorable

पेयस्यप्यु म्रियःप्रियायार्हसि देव सोऽदुम् ॥ ४४ ॥ अदृष्टपूर्वं दृपितोरिम दृष्ट्वा
भयेन च प्रव्याधितं मनो मे । तदेव मे दर्शय देव रूपं प्रसन्निवेश जगन्निवास ४५
किरीटिन गादिनं चक्रहस्त मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव । तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन
सहस्रबाहो भवविश्वमूर्ते ॥ ४६ ॥ श्रीभगवानवाच ॥ मया प्रसन्नेन तवार्जुनेनैव रूपं
परं दर्शितमात्मयोगात् । तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मेव द्रव्येन न दृष्टपूर्वम् ॥ ४७ ॥
न चेद्वपुःसाध्ययनैर्नदानैर्न च क्रियाभिर्न तपेभिर्न चैः । एवंरूपं शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं
त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥ मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वाकां घोरमी
दृष्ट्ममेदम् । व्यपेतभीः प्रीतमना पुनस्त्वं तदेव मे रूपं मिदं प्रपश्य ॥ ४९ ॥

अपनी स्त्रीका अपराध क्षमाकरता है इसीप्रकार हे देवदेवेश्वर आप मेरेअपराधों को
क्षमाकरनेके योग्यहैं । ४४। मैं पूर्व में नहीं देखेहूँ इसरूपको देखकर प्रसन्नहूँ परन्तु
मेरा चित्त मारेभयके पीड़ामानहै हेपरमेश्वर आप अपने उसीरूपको मुझे दिखलाइये
हेदेवदेव जगत् के उत्पत्तिस्थान आप बारंबार प्रसन्नहो। ४५। हेसहस्रभुजधारी विश्वरूप
मैं तुमको मुकुटगदा चक्रहायोंमें धारण कियेहुये दर्शनकरना चाहताहूँ इस से आप
अपनेचतुर्भुजी रूपका दर्शन दीजियो। ४६। श्रीभगवान्वाले हेअर्जुन मुझ प्रसन्न रूपने
अपनी सामर्थ्य से यह उत्तम चैतन्य तेजोमय आदि अन्तरहित विश्वरूप दर्शन
तुझको दिखलाया इसस्वरूपको तेरे सिवाय किसी दूसरे ने कभी न देखाथा । ४७।
हे कौरवों में बड़े वीर नरलोक में तेरे सिवाय इस रूपके देखने को वेद यह
जप दान क्रिया तप व्रतादिकों से भी कोई दूसरा पुरुष योग्य नहीं है । ४८ ।
मेरे इस प्रकार इस भयानक रूपको देखकर तुझको नपीड़ाहोगी न कोई प्रकारका
मोह होगा निर्भय और प्रसन्न चित्त होकर फिर उसी पूर्वरूप को देख । ४९ ।

Lord ! for thou shouldst bear with me, as father with the
son as friend with friend, as lover with the beloved. 44.
At the sight of what I never saw before, I am glad and terrified.
Have mercy, then, O heavenly Lord ! O mansion of the universe !
and shew me thine other form 45 I wish to behold thee with
diadem on thy head, and armed with club and Chakra; assume
then, O God of a thousand arms, image of the universe ! thy four
armed form. 16 Krishna,—Well pleased, O Arjuna, I have shewn
thee, by my Divine power, thus my supreme form, the universe,
in all its glory, infinite and eternal which was never seen by any one
except thyself. 47 For no one, O valliant Kuru ! in the three
worlds, except thyself, can obtain such a sight of me; nor by the
Vedas nor sacrifices, nor profound study, nor by charitable gifts,
nor by deeds, nor by the most severe austerities. 48. Having
seen my form, thus awful, be not disturbed, nor let thy faculties
be confounded. Cast away fear and let thy mind rejoice, behold

समय उवाच ॥ इत्यर्जुनं वासुदेवस्तपोऽन्वा स्वकं रूपं दर्शयामासभूयः । आश्वा
सयामास च भीतसेनं नृपया पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥ ५० ॥ अर्जुन उवाच ।
दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्य जनार्दन । इदानीमस्मि संवृत्तः सचेता प्रकृतिगतः
॥ ५१ ॥ श्रीभगवानुवाच । सुदुर्दृशमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम । देवाप्सरस्य
रूपस्य नित्यं दर्शनकाक्षिणः ॥ ५२ ॥ नाहं वेदैरेत तपसा न दानेन न चेज्यया ।
दाक्ष्य पद्मावधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥ ५३ ॥ भक्त्यात्वनन्यया शक्ययद्द
मेवविधोर्जुन । हातुंद्रव्य तन्वेन प्रवेष्टुञ्च परन्तप ॥ ५४ ॥ माकर्मकृन् मत्परमो
मद्भक्तः सद्भवर्जितः । न वैरैः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतामू० विश्वरूपदर्शनेनाम
नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ पर्वणितुपंचविंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

संजय ने कहा है राजा वासुदेवजी ने इस प्रकार अर्जुन को समझाकर फिर अपने
रूपको दिखाया और भयभीत अर्जुन को आश्वासन दिया । ५० । अर्जुन ने
कहा है जनार्दन आपके इस सौम्य नररूपको देखकर अब मैं सचेतहुआ और
प्रकृति में स्वस्थताहुई । ५१ । श्रीभगवान् बोले जो तुमने इममेरे रूपको देखाहै
वह बड़ी कठिनता से दृष्टि आनेवाला है इस रूपके देखने को देवतालोग भी
सदैव इच्छा करते हैं । ५२ । जैसे तुमने मुझको देखा है उस रीति से वेद यज्ञ
तप दान व्रत आदि के द्वाराभी कोई पुरुष मेरेदर्शन करने को ममर्थ नहीं है । ५३ ।
हे शत्रुओं को संताप देनेवाले अर्जुन इस प्रकार के रूपसे मैं अखण्ड भक्तीके द्वारा
दर्शन के योग्यहूँ । ५४ । जो मेरे निमित्त कर्म करनेवाला और मुझी को सर्वोत्तम
माननेवाला मेराभक्त सब संग्रहों से पृथक् शरीरी मात्रों में आत्मभाव माननेवाला है
वह मुझ शुद्ध ब्रह्मको पाता है ॥ ५५ ॥

this my familiar form again. 49. SANJAYA—Vasudeva having thus spoken to Arjuna, shewed him again his wonted form; and having re-assumed his mild shape, he presently assuaged the fears of the affrighted Arjuna. 50. Arjuna Having beheld thy placid, human shape I am again collected, and am restored to my natural state. 51. KRISHNA.— This form of mine which thou hast seen, is difficult to be seen; even Devas are constantly anxious to see it. 52. I am not to be seen as thou hast seen me, by the Vedas, by mortifications, by sacrifices or by gifts. 53. But I am to be seen, known, and obtained by means of bhakti alone. 54. Doing work for me, having me as aim, being my votary, having abandoned all consequences, free from hatred, one comes to me. 55. .

अर्जुन उवाच । एवं सततयुक्ताये भक्ताश्चत्वां पर्युपासते । ये चाप्यक्षरमभ्य-
क्त तेषां के योगवित्तमा ॥ १ ॥ श्री भगवानुवाच । मध्यावर्षेद्य ततो ये मा नित्ययुक्ता
वपासते । अक्षया परयो पैतास्तेमे युक्ततमा मता ॥ २ ॥ ये त्वक्षरमनिर्देयमभ्यक्त
पर्युपासते । सर्वप्रगमचिन्त्यञ्च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥ ३ ॥ सन्नियम्येन्द्रियप्रामं
सर्वत्र समबुद्धयः । ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रता ॥ ४ ॥ क्लेशोधिक
तरस्तेषामभ्यक्तास्त्वचेतसाम् । अव्यक्ता हि गतिर्दुःख देहवद्विरचाप्यते । ५ ॥
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्त्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपा-
सते ॥ ६ ॥ तेषामहं समुद्धर्ता मृत-संसारसागरात् । भवामि न चिरात् पार्थ

अध्याय १२ ॥

अर्जुनवाले इसमकार सदैव सावधान चित्त भक्तलोग सगुणब्रह्मरूप आप को
उपासन करते हैं और अक्षर अर्थात् अपिनाशी अव्यक्त शुद्ध ब्रह्मको उपासना
करते हैं उन दोनों में योगके जाननेवाले कौन है । १ । श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन
जो मुझ में मनको प्रवेशकरके सदैव उपाय करने वाले मेरेभक्त भेरी उपासना करते
हैं और श्रद्धावान् हैं उनको मैं मुक्ततम मानताहूँ, और जो इन्द्रियोंको मनसमेत स्वा-
धीन करके अर्थात् आत्मामें लयकरके अविनाशी मन बुद्धिसे परे सर्वव्यापी निर्विकार
अचलरूपकी उपासना करतेहैं वह दृढ बुद्धि सबजीवो के प्यारे हैं और इच्छावान्
होकर पुष्प निर्गुण ब्रह्मको प्राप्तहोते हैं अर्थात् मुझीमें हैं मुझसे जुड़े नहीं हैं फिर
उनके विषयमें योगवित्त यह शब्द कब नियत होसक्ताहै । ४ । निर्गुण ब्रह्ममें
चित्तलगाने वालों को अधिकतर दुःख है क्योंकि निर्गुण पदकी प्राप्ति अभिमानी
पुरुषों को कठिनतासे मिलती है । ५ । और जो सब कर्मोंको मेरेअर्पण कर के
मुझी को लय स्थान समझके अद्वैत बुद्धिसे मेरेही ध्यानमें प्रवृत्त मन होकर मुझ

LECTURE XII

Of serving the deity in his visible and invisible forms

ARJUNA—Of those of thy servants who are always thus employed, who know their duty best? those who worship thee as thou now art, or those who serve thee in thy invisible and incorruptible nature? 1 KRISHNA Those who, having placed their minds in me, serve me with constant zeal, and are endued with steady faith, are esteemed the best devoted. They, too, who, delighting in the welfare of all, serve me in my incorruptible, ineffable, and invisible form omnipresent, incomprehensible, standing on high, fixed and im-
movable, with subdued passions and understandings, -the same in all things, shall also come unto me. 4 Those whose minds are attached to my invisible nature have the greater labour to encounter, because an invisible path is difficult to be found by corporeal beings. 5 Them whose minds are thus attached to me, who leave

मध्याघोशितचेतसाम् ॥ ७ ॥ मध्येष मन आघत्स्व मधि बुद्धिं निवेशय । निद-
 ासप्यासि मध्येष अत ऊर्ध्वं न सशय ॥ ८ ॥ अथ चिन्त समाघातु न शक्नोषि मधि
 स्थिरम् । अश्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनत्रय ॥ ९ ॥ अभ्यासेत्यसमर्थोसि
 मत्कर्मपरमो भव । मर्दयमसि कर्माणि कुर्वन् सिद्धिमवाप्स्यसि ॥ १० ॥ अथै
 तदप्यशक्नोसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः । सर्वकर्मफलत्याग ततः बुद्ध्यगात्मवान्
 ॥ ११ ॥ श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाध्यानं विशिष्यते । ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्या
 गाच्छान्तिरनन्तरम् ॥ १२ ॥ अद्वष्टासर्वभूतानां मैत्र करुणपद्मच । निर्ममो निरद्विष्टः
 समदुःखसुखः क्षमा ॥ १३ ॥ सद्गुण सतत योगी यतात्मा हृदनिश्चयः । मध्यापितमनो

को ध्यानकरते हुए उपासना करते हैं, हे अर्जुन मैं उनमनमें उपासना करने वालों
 को थोड़ेही काल में जन्मपरणारूपी समुद्रमें उद्धार करता हूँ । ७ । मुझ विश्वरूप
 ईश्वर में संकल्प विकल्पात्मक मनको नियत करके मुझी में बुद्धि को लगायेहुए
 जो पुरुष मेरेही रूपमें निवास करेगा वह निस्तदेह मुझी में ऐन्यता पावेगा । ८ ।
 जो तू मुझ विष्णुरूपमें मन लगानेको समर्थ नहीं है तो हे अर्जुन उपासना मे मनको
 हृदकरके मुझको प्राप्तहो और जो उपासनामें अममर्थ है तो मेरेनिमित्त कर्मोंको करता
 हुआ चित्तशुद्धीको पावेगा । १० । और जो तू मेरी निष्ठाकेभी करने में अममर्थ है तो
 सब कर्मों के फलों को त्याग कर दे । ११ । विचार के अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है
 और ज्ञान में ध्यान उत्तम है और ध्यान से कर्म फलों का त्याग करना शुभ
 है और कर्म फल के त्यागसे पीछे मोक्षरूप शान्ती । १२ । शत्रुता रहित सबजीवों
 का मित्र, दयावान् शरीरादि में निरभिमानी अहंबुद्धिभरहित रागद्वेष में समभाव
 क्षमावान्, यथा लाभ संतोषी, थनखादि में सदैव मन लगानेवाला इन्द्रियों समेत
 देहको स्वाधीन करनेवाला आत्मतत्त्व में हृद निश्चय रखनेवाला और मुझ शुद्ध

all works for me, and, free from the worship of all others, contem-
 plate and serve me alone, I presently raise up from the ocean of
 this region of mortality, 7. Place then thy heart on me, and
 penetrate me with thy understanding, and thou shalt, without
 doubt, hereafter enter unto me 8 But if thou be unable to fix
 firmly thy mind on me, endeavour to find me by means of
 practice 9. If after practice thou art still unable, devote thyself
 to my works, for by performing works for me, thou shalt attain
 perfection 10. But shouldst thou find thyself unequal to this
 task, control thyself and forsake the fruit of actions. 11 Know-
 ledge is better than devotion, meditation is better than know-
 ledge, forsaking the fruit of actions than meditation, for peace is
 derived from such forsaking 12 That bhakt is dear to me who is
 free from enmity, benign, merciful, exempt from pride and selfish-
 ness, the same in pain and pleasure, patient, constantly devout,
 of subdued passions, firm in faith, and whose mind and understanding

बुद्धियों में भक्त समे प्रिय ॥ १४ ॥ यस्माद्भोद्धिजते लोको लोकाद्भोद्धिजते च य ।
 दर्षामर्षभयोद्भेर्द्युक्तो य सच मे प्रिय ॥ १५ ॥ अनपेक्ष शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
 सर्धारभपरित्यागी यो मद्भक्त समे प्रिय ॥ १६ ॥ यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति
 न वाञ्छति । शुभाशुभपारत्यागी भक्तिमान् य समे प्रिय ॥ १७ ॥ सम शत्रौ
 च मित्रे च तथा मानापमानयो । शीतोष्णसुखदुःखेषु रूढदिषर्जितः ॥ १८ ॥
 तुल्यनिन्दास्तुतमौनी स तुष्टो ये केनाचत् । जानकत स्विरमातर्भक्तिमान् मे प्रियो
 नरः ॥ १९ ॥ ये तु घम्माभूतामिदं यथोक्तं पृथुपास्तते । श्रद्धाया मत्परमा भक्ता
 स्ते तीक्ष्णमे प्रिया ॥ २० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीताद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

पर्वणितुपद्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

ब्रह्म में मन बुद्धिको लयकरनेवाला जो मेरा भक्त है वह मेरा प्यारा है । १४ ।
 जिससे लोक नहीं डरता है और जो लोकसे नहीं डरता है जो प्रसन्न मन असन्तोषता,
 भय और व्याकुलता से रहित है वह मेरा प्यारा है । १५ । सुखकी प्राप्ति और
 दुःख के निवृत्त होने में अनिच्छावान् बाहर भीतर से पवित्र भगवत् भजन आदि में
 आलस्यरहित उदासीन अर्थात् प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठा को समान जाननेवाला वलेशरहित
 सब कर्मों के भारम्भों का त्यागनेवाला जो मेरा भक्त है वह मेरा प्यारा है । १६ । जो
 प्रिय प्राप्तिमें प्रसन्न नहीं होता और क्षमियता में दुखी नहीं होता और प्रियवस्तु के
 प्रियोगमें शोच नहीं करता और शुभाशुभ को भी नहीं चाहता हुआ भक्तिमान् है
 वह मेरा प्यारा है । १७ । जो शत्रुमित्र में औरमाना पमान में अथवा शीतोष्ण
 सुख दुःखों में समान होकर संगोंका त्यागनेवाला है और निन्दास्तुतिमें तुल्यभास
 मौनी संतोषी त्यागी स्थान से रहित है और दृढबुद्धि से भक्तिमान् है वह पुरुष
 मेरा प्यारा है । १९ । जो श्रद्धावान् मुझ को अपना लयस्थान जानते हैं और इस
 अविनाशी मोक्षसाधन का अत्यन्त अनुष्ठान करते हैं वह मुझको अतिशय प्यारे हैं २० ॥

are fixed on me alone. 14 He also is dear to me of whom mankind
 are not afraid, and who of mankind is not afraid, and who is
 free from the influence of joy, impatience, and the dread of harm.
 That bhakt of mine is dear to me who is unexpected, pure, pro-
 ficient, unconcerned, unafflicted and who has forsaken every en-
 terprize. 16 He also is worthy of my love, who neither rejoices
 nor finds fault, who neither laments, nor covets, and has for-
 saken both good and evil. 17 That bhakt is dear to me who is
 same in friendship and in hatred, in honor and in dishonor, in cold
 and in heat, in pain and pleasure, who is free from attachment, to
 whom praise and blame are as one, who is of little speech, pleas-
 ed with any thing, is not home tied, and who is of a steady mind.
 18 They who seek this Amrita of religion even as I have said,
 and serve me faithfully before all others, are my dearest bhaktas. 20

अर्जुन उवाच । प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च । एतद्वेदितुमिच्छामि ज्ञान
 क्षेत्रञ्च केशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
 एतद्योर्वाचं तं प्राहुः क्षेत्रज्ञांतं तद्विदः ॥ २ ॥ क्षेत्रज्ञापिमां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।
 क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यच्च ज्ञानं मतं मम ॥ ३ ॥ तत् क्षेत्रं यच्चादृक् च यद्विकारियतश्च
 यत् । सच यो यत्प्रमाद्यश्च तत् समासेन मे शृणु ॥ ४ ॥ भ्रष्टापिभर्तृदुष्पागीतं छन्दो
 भिर्विधैः पृथक् । महासूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चतैः ॥ ५ ॥ महामृतान्यह-
 द्धारो बुद्धिरव्यक्तमेव च । इन्द्रियाणि दशैकञ्च पञ्चचन्द्रियगोचराः ॥ ६ ॥ इच्छा

अध्याय १३ ॥

अर्जुन बोले हे केशवजी प्रकृति और पुरुष और क्षेत्रवा क्षेत्रज्ञ औरज्ञान वा क्षेत्र
 इन सबको मैं जानना चाहता हूँ; श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन यह शरीर क्षेत्र है जो इस क्षेत्रको
 जानता है क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के जानने वालोंने आत्मा रूप क्षेत्रज्ञ कहा है । १ । हे भरत
 पंथ सब क्षेत्रोंमें मुझीको क्षेत्रज्ञ जानो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञका जो ज्ञान है वह मुझसेही
 सम्बन्ध रखनेवाला ज्ञान है इसको ब्रह्मज्ञानियों ने निश्चय किया है । २ । वह क्षेत्र
 जैसेरूपका है और जैसे प्रकारका है और जिन जिन विकारों से युक्त है और जिस
 जिस विकार से जो जो उत्पन्न होता है और जो वह क्षेत्रज्ञ है अथवा जैसे प्रभाव
 वाला है उसको मूलसमेत मैं कहता हूँ । ३ । जिसको ऋषियों ने अनेकरीतों से
 गाया और जो अनेक प्रकार के छन्द वेद और मन्त्रोंसे प्रत्येक शास्त्राओं में सिद्ध
 किया गया बहुत निश्चय युक्त हेतुवान् ब्रह्मके जतलानेवाले वेदके भागरूप ब्राह्मणों
 के वचनों से निश्चय किया हुआ । ४ । पंचमहाभूत अहंकार बुद्धि इन्द्रियां और
 पांचसूत्र विषयाः इच्छाः द्वेषः सुख, दुःख, यह विकारोंसहित क्षेत्रका मिला हुआ वर्णन

LECTURE XIII.

Matter and Spirit

Arjuna—I. desire, to know O Keshava, about matter and spirit, the field and the knower of it, wisdom and that which ought to be known. Krishna.—Learn that by the word field is implied this body, and that he who knows it is called the knower of it by the sages. 10. Know that I am that knower in every field. The knowledge of the field and the knower of it is by me esteemed wisdom. 2. Now hear what that Kshetra or field is, its nature, its origin, its purpose, its knower and his power. 2. Each has been variously sung by the Rishis in various measures, and in verses containing Divine precepts, including arguments and proofs. 4. The elements, Ahankara, Budhi, Avyakta (invisible spirit), the eleven Indriyas (organs), and the five sensibles. 5. Love and hatred, pleasure and pain, constitute Kshetra and its

द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः । एतत् क्षेत्रं समासेन सविकारं मुदाहृतम् ७ ॥
 अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिराज्ज्वलम् । आचार्य्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्म
 विनिग्रहः ॥ ८ ॥ इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहङ्कार एवञ्च । जन्ममृत्युजराव्याधि दुःख
 दोषानुदर्शनम् ॥ ९ ॥ अस्मिन्निर्भयं पुत्रदारगृहादिषु । नित्यञ्च समचित्तत्वं
 मिष्टानिष्टोपपात्तिषु ॥ १० ॥ मयि चानन्ययोगेन भाकरव्यभिचारिणी । विवाकदेश-
 सेवित्वमरतिर्ज्जनसंसदि ॥ ११ ॥ अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् । पतञ्
 ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतो ग्यथा ॥ १२ ॥ ज्ञेयं यत्तत् प्रवक्ष्यामि यजज्ञात्वामृतम-
 दनुते । अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥ १३ ॥ सर्वतः पाणिपादतत् सर्वतो

दुष्प्रा । ६ । अपनी प्रतिष्ठा न चाहना देह मन वाणी से किसी जीव को दुःख न
 देना, अपकार होनेपर चिंचको न बिगाड़ना, सरल प्रकृतिहोना, उपासना, भीतर
 बाहरसे पवित्रता, मोक्ष नियतबुद्धि रहना इन्द्रियों के विषयमें वैराग्यहोना निरहंका
 रता, जरा जन्म रोगके दुख और दोषोंको अच्छे प्रकार देखना । ८ । पुत्र स्त्री और
 घरों में ममता न रखना और उनके सुख दुखों में सुखी और दुखी न होना मिय
 अभियोगेभिलनेमें सदैव एकभाव रहना । ९ । इष्ट अनिष्टकी उपपत्तिमें सदैव सम
 चित्तरहना एकान्त स्थानमें बैठना मनुष्योंकी सभामें प्रीति न करना । १० । अध्यात्म
 शास्त्रजन्य ज्ञानमें सदैवनियत रहना तत्त्वज्ञानके प्रयोजनको देखना यह ज्ञान अर्थात्
 ज्ञानका साधन कहा जो इसके विपरीतहै वही अज्ञानहै । ११ । जो इसज्ञानसे जान
 ने के योग्यहै उसको कहताहूँ जिसको जानकर मोक्ष को पाता है आदि रखने
 वाला जो कार्य्य कारण है उस से श्रेष्ठ जो ब्रह्म है वह न सत् कहाजाता है न
 असत् कहाजाता है । १२ । वह सब दिशाओंमें बाह्याभ्यन्तर हाथ पैर नेत्र मुख
 शिर कान रखनेवाला है और लोकमें सबको व्याप्तकरके नियत है । १३ । विना

changes. Thus have I briefly described this aggregate or basis of the soul. 6. Humility simplicity, harmlessness, forgiveness, rectitude teacher's service, chastity, faith, self control, disaffection for the objects of the senses, freedom from pride, insight into the evils of birth, death, decay, sickness and misery, 8. Unattachment, absence of affection for son, wife and home; a constant evenness of temper in good or bad events, 9. Exclusive devotion to me, resort to sequestered places, and a dislike to the society of man; 10. a constant study of the superior spirit, and the study of the knowledge of truths. This is declared to be the wisdom; all against it is ignorance. 11. I will declare that which ought to be known, knowing which one enjoys immortality, the beginningless Bramha, who can neither be called Sat (ens) nor Asat (non ens). 12. All hands and feet, all faces, heads, and eyes and all ears, dwells in the world encompassing all. 13. Shining with all sense faculties, without

क्षिप्ररोमुखम् । सर्वतः श्रुतिमशोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ १४ ॥ सर्वेन्द्रियगुणा
 भासं सर्वेन्द्रियाविवर्जितम् । असकं सर्वभूतैव निर्गुणं गुणभोकृत् ॥ १५ ॥ बाह्य-
 रन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च । सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थञ्चान्तकेचतत् ॥ १६ ॥
 अविभक्तञ्च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् । भूतभर्तृत्वं तज्ज्ञेयं प्राक्षिण्यप्रभवि-
 ण्युत् ॥ १७ ॥ ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः पद्ममुच्यते । ज्ञानज्ञेयं ज्ञानगम्यं द्वाद सर्गस्य
 चिद्धितम् ॥ १८ ॥ इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयञ्चोक्तं समासत । मद्भक्त पताञ्जलाय मद्भावा
 योपपद्यते ॥ १९ ॥ प्रकृतिं पुरुषश्चैव विद्वद्यनादी उभायपि । विकारांश्च गुणांश्चैव चिद्धि
 प्रकृति सम्भवान् ॥ २० ॥ कार्यकारणकर्तृत्वेहेतुः प्रकृतिरुच्यते । पुरुषःसुखदुःखानां
 भोक्तृत्वेहेतुरुच्यते ॥ २१ ॥ पुरुषः प्रकृतिश्चोऽहं भुंक्तं प्रकृतजान् गुणान् । कारण गुण-

इन्द्रियों के वहसर इन्द्रियों के कार्य करता है सब से पृथक् और सबका धारण कर
 ने वाला, निर्गुण सब गुणों का भोगने वाला । १४ । जीवों के बाहर और भीतर
 चलायमान और अचल, सूक्ष्म, जानने के अयोग्य, दूर और निकट । १५ ।
 विभाग रहित प्राणियों में बहुत रूप वाला भूतोंका धारण करने वाला वह क्षेत्रज्ञ
 जाननेके योग्य है नाश करने वाला और फिरउत्पन्न करने वाला । १६ । वह
 प्रकाशमानोर्मिथी ज्योतिरूप है, और अज्ञान से पृथक् कहाजाता है और सब के
 हृदय में नियत ज्ञानरूप जाननेके योग्य विज्ञान से प्राप्त होने के योग्यहै । १७ ।
 यहक्षेत्रज्ञ और ज्ञान विज्ञान से जानने के योग्य मिला हुआ क्षेत्रज्ञ वर्णन हुआ
 इनको जान कर मेरा भक्त मेरे भाव के योग्य होता है । १८ । प्रकृति और पुरुष
 इन दोनों को अनादि जानो और इच्छा आदि विकार और गुणों को प्रकृति
 से उत्पन्न जानो । १९ । कार्य कारण के कर्तृत्व में प्रकृतिही कारण रूप है,
 और सुख दुःख के भोगने में पुरुष कारण कहा जाताहै । २० । प्रकृति में नियत
 पुरुषही प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले गुणों को भोगता है उत्तम अनुत्तम योनियों

any senses; unattached, supporting all things; and without quality, enjoying every quality. 14. Without and within all beings, moveable and immoveable, subtle and inconceivable, stands far and yet near. 15. Undivided in things, it stands as the supporter of all things, it is to be known; it destroys and produces. 16. It is the light of lights and is declared to be free from darkness. It is wisdom and obtained by wisdom; and it presides in every breast. 17. Thus have been described Kshetra, knowledge and knowable. My bhakta who knows this, is fitted for my state. 18. Learn that both prakriti and Purusha are without beginning. Know also that modifications and qualities are matter-born. 19. Prakriti is the cause of the occurrence of causes and effects. Purusha is the cause of the enjoyments of pain and pleasure. 20. The purusha residing in Prakriti, partakes of the qualities of Prakriti; attach

सद्गोश्य सदसद्योनिजन्मसु ॥ २२ ॥ उपद्रष्टाऽनुमन्ता च भर्ता भोक्तामहेश्वर । पर
मात्मेति चाध्युक्तो देहेस्मिन् पुरुष पर ॥ २३ ॥ य एव चेत्ति पुरुष प्रवृत्तिञ्च
गुणे सह । सर्वथा वर्त्तमानोपि न समूयोर्भिजायते ॥ २४ ॥ ध्यानेतात्मनिपश्य
ग्निकेचिदात्मानमात्मना । अन्यैर्सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥ २५ ॥ अन्यैव
षमज्ञानन्तः श्रुत्वान्येषु उपासते । तेषु चाततरन्येव शृत्युश्रुतिपरायणा ॥ २६ ॥
यावत् सञ्जायते किञ्चित् सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् । क्षेत्रक्षेत्रज्ञसयोगात्ताद्विद्धि भरत
र्षभ ॥ २७ ॥ समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्त परमेश्वरम् । विनश्यत्स्वविनश्यन्त य

के जन्मों में इस के गुणोंका संगही कारण है । २१ । दृष्टा, साक्षी अनुमन्ता और
भोक्ता, महेश्वर और परमात्मा इस शरीर में भी परम पुरुष काहा जाता है । २२ ।
जो इस रीति से पुरुष को और गुणयुक्त प्रकृतिको जानता है वह कर्मों में कैसाही
प्रवृत्त हो तौभी फिर जन्मनही लेताहै । २३ । कोई कोई तो शरीर में बुद्धि और
ध्यानके द्वारा परमात्माको देखते हैं और कोई सांख्य योग अर्थात् ब्रह्मज्ञान से
और कोई कर्मयोगी पुरुष कर्म फलको ईश्वरके अर्पण करनेसे परमेश्वरको देखते
हैं । २४ । और कितनेही पुरुष इस प्रकारको न जानकर दूसरे आचार्यों से
सुनकर उपासना करते हैं वह गुह्यसे सुनेहुये उपदेश में पूर्ण विश्वास रखनेवालेभी
संसारको अवश्यतरते हैं । २५ । जितने जड़ चैतन्यजीव उत्पन्न होते हैं हे
भरतर्षभ उनका पैदाहोना क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के योगसे जानो । २६ । जो सब
सृष्टि में सदैव नियत नाशहोने वालों में नाश न होनेवाले परमेश्वरको देखता
है वही देखने वाला है, । २७ । अपने शरीरके समान सब शरीरोंमें अच्छे प्रकार
से नियत ईश्वरको समानता पूर्वक देखता हुआ शरीरादिक के सम्बंध हेतुसे

ment to the qualities is the cause of birth in a good or evil body 21
In this body the superior soul who is called Maheshwara, is
the observer, the director, the protector, the partaker 22
He who conceives the Purusha and Prakriti, together with
the Guna or qualities, whatever mode of life he may lead, he is
never born again. 23 Some men, by meditation, behold the
spirit within themselves, others by Sankhya yog and others by
karma yoga. 24 Others again who are not acquainted with this
but have heard it from others these also, by adhering to what
they have heard, pass beyond the gulf of death 25 Know, O chief
of Bharatas, that every creature, whether animate or inanimate is
produced from the union of Kshetra and Kshetrajya, matter
and spirit. He who sees the Supreme Being alike in all things,
indestructible within destructible, sees in reality 27 By conceiv-
ing that God in all things is the same, one does not of himself

प्रदयति सपश्यति ॥२८॥ समंपश्यन् ह सर्वत्र समवस्थितमाश्वरम् । नदिनस्त्यात्मनात्मानं
ततो वातिपराद्भूतिम् ॥२९॥ प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः । यः पश्यति तथामान-
सकर्त्तारं स पश्यति ॥ ३० ॥ यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति । तत एव च
विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥ ३१ ॥ अनादित्वान् निर्गुणत्वात् परमात्मापमव्ययः ।
शरीरस्थोपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥ ३२ ॥ यथा सर्वगतं सौहम्यादाकाश
नोपलिप्यते । सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मानोप लिप्यते ॥ ३३ ॥ यथा प्रका-
शयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः । क्षेत्रक्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥३४॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा । भूतप्रकृति मोक्षत्रये विदुर्यान्ति ते परम् ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि सू० क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभाग
योगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥ पर्वणितु सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥३७॥

आत्मारूप ईश्वरको पीडानहीं देताहै वहभीअन्त में मोक्षको पाताहै।२८। जो कर्मोंको
प्रकृति से किया हुआ देखता है और इसी प्रकार आत्माको अकर्ता देखताहै वह
देखताहै।२९। जत्रजीवोंको एकआत्मामें लयहोता हुआ देखताहै औरउसीएकआत्मासे
विस्तारको देखताहै तब ब्रह्मको प्राप्तहोताहै।३०। हे अर्जुन यइ अविनाशी परमात्मा
आदि रहित और गुणोंमें पृथक् होनेसे शरीरमें वर्त्तमान होकरभी कर्म नहीं करताहै
और न लिप्त होताहै।३१। जैसे कि सर्वव्यापी आकाश असंग स्वभावसे लिप्त
नहीं होताहै इसीप्रकार देहके भीतर सर्वत्र नियत आत्माभी लिप्तनहीं होताहै।३२।
हे भरतवंशी जैसे कि सूर्य्य इस संपूर्ण लोकको प्रकाशित करता है उसी प्रकार
क्षेत्रज्ञ आत्मा नानाप्रकारका रूप धारण करने वाले क्षेत्ररूपशरीरको प्रकाशित
करताहै,।३३। जिन्होंने इसप्रकारसे क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके भेदको जानकर ज्ञानरूप
नेत्रकेद्वारा अथवा आकाशादि भूतोंकी मूलरूप जो त्रिगुणात्मिका आविद्या है उसके
विद्यारूपसे मोक्षको जानाहै वह मोक्षको पातेहैं।३५।

injure his own soul, and goes to the supreme goal. 28. He who sees all actions performed by Prakriti (matter), sees that Atma is inactive. 29. When he sees the different species in nature centred in unity, and proceeding from it, he then reaches Brahma. 30. This supreme and incorruptible Spirit, even when it is in the body, neither acts nor is affected, because it is without beginning and without quality. 31. As the all pervading ether, being subtle, is not affected, even so the omnipresent spirit remains in the body unaffected. 32. As a single sun illumines the whole world, even so does the spirit illumine the whole body. 33. They who, with the aid of wisdom, perceive the body and the spirit to be thus distinct, and that there is a final release from the animal nature, go to the Supreme. 34.

श्री भगवानुवाच । परं भूय प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् । यजत्रात्वा
 मुनयः सर्वे परां सिद्धिमिनो गता ॥ १ ॥ इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यं मागता ।
 सर्वेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥ २ ॥ मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन् गर्भं
 दद्याम्यहम् । सम्भव सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥ ३ ॥ सर्वे योनिषु कौन्तेय
 मूर्त्तयः सम्भवन्त याः । तासां ब्रह्म महद्योनिरहं यजिप्रदः पिता ॥ ४ ॥ सर्वरज
 स्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः । नवध्नान्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥ ५ ॥
 तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात् प्रकाशकमनामयम् । सुखसङ्गेन बन्धाति ज्ञानसङ्गेन चानघ
 ॥ ६ ॥ रजो रागात्मकं बद्धिं तृष्णासङ्गसमुद्भवम् । ताश्च बन्धाति कौन्तेय कर्मस

अध्याय १४ ॥

श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन अब मैं महाउत्तम ज्ञानको कहूंगा जिसको
 जानकर सब मुनि लोगों ने इस संसार में पृथक् होकर मोक्षरूपा महासिद्धि को पा-
 या है । १ । जिन्होंने इस ज्ञानको आश्रय करके मेरे भावोंको पाया है वह मृष्टि के
 उत्पत्ति काल में भी उत्पन्न नहीं होते हैं और प्रलय में भी कालाग्नि से पीड़ित
 नहीं होते हैं । २ । मेरी योनि महत्त्व की आदिभूतामाया है उसमें गर्भको मैं
 धारण करता हूँ हे भरतवंशी उसीसे सब भूतों की उत्पत्ति होती है । ३ । हे अर्जुन
 सब योनियों में जो जीव उत्पन्न होते हैं उनकी योनि महत् ब्रह्म है और मैं वीर्य
 का देनेवाला पिता हूँ । ४ । हे महाबाहु यह सत्त्व रज तम त्रिगुण उसमाया से
 उत्पन्न हुए हैं वह गुण रूपान्तर दशा रहित आत्मा को भी देहमें बन्धन करते हैं । ५ ।
 हे निष्पाप अर्जुन उन गुणों में सतोगुण निर्मलता होनेसे तो सबका प्रकाश करने
 वाला होता है और सुख और ज्ञानके संग से बन्धन करता है । ६ । और तृष्णा
 और संगसे उत्पन्न रजोगुण को राग स्वरूप जानो हे अर्जुन यह रजोगुण

LECTURE XIV.

of the three gunas or qualities.

Krishna—I will now reveal to thee the superior wisdom which
 having learnt, all the Munis have passed hence to the supreme per-
 fect on. Those who embrace this wisdom, attain to my state and
 are not born at evolution nor suffer at dissolution. 2 The great
 Brahma is my womb In it I place the germ from which all
 beings are produced. 3 The great Brahma is the womb of all the
 forms which are born of every womb, and I am the father who
 sows the seed. 4 *Satica, Rajas, and Tamas* are matter born qual-
 ities which confine the incorruptible spirit in the body. 5 The
Satwa, because of its purity, is luminous and painless and links
 (souls) to bliss and wisdom. 6. *Rajas* is of a passionate nature

ज्ञेन देहिनम् ॥ ७ ॥ तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहने सचंदोद्गताम् । प्रमादालस्यनि
 प्राप्तिश्चान्निवृत्तानि भारत ॥ ८ ॥ सत्त्वं सुखे सन्नपातरजः कर्मणि भारत । ब्रानमा
 वृत्त्यतु तमः प्रमादे सञ्जयायुत ॥ ९ ॥ रजस्तमश्चामभूमूय सत्त्वं भवति भारत ।
 रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥ १० ॥ सचंद्वारेणुदेहेस्मिन् प्रकाशवप
 जायते । ज्ञानं यदातदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वं मितयुत ॥ ११ ॥ लोभः प्रवृत्तिरारम्भः
 कर्मणामशमः हृष्टा । रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भारतपम ॥ १२ ॥ अप्रकाशो
 ऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एवञ्च । तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥ १३ ॥
 यदासत्त्वे प्रवृद्धेतु प्रलय याति देहभृत् । तदोत्तमविदां लोकानमलान् प्रतिपद्यते
 ॥ १४ ॥ रजास प्रलयगत्वा कर्मसङ्गिषु जायते । तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु

अभिमानि शरीर को कर्मोंके कर्म फलकी इच्छा से बन्धन करता है । ७ । और
 सत्त्व-अभिमानि शरीरोंको मोह करने वाले तमोगुण को अज्ञान रूपमाया की आ-
 वरण शक्ति से उत्पन्न जानो हे भरतवंशी वह तमोगुण प्रमाद, आलस्य, निद्रा,
 इत्यादि से बन्धन करता है । ८ । हे अर्जुन सतोगुण सुख में प्रवृत्त करता है,
 रजोगुण कर्म में और तमोगुण ज्ञानको ढककर प्रमाद में लगाता है । ९ । हे भरत
 वंशी रजोगुण तमोगुण को स्वाधीन करने से सतोगुण की वृद्धि होती है और
 सतोगुण तमोगुण को शांत करने से रजोगुण की वृद्धि होती है और सतोगुण रजो-
 गुण को आधीन करनेसे तमोगुण वृद्धि पाता है । १० । जबइस देह के भीतर
 वाषाभ्यन्तरकी इन्द्रियरूपद्वारों में प्रकाशरूपज्ञान और सुख उत्पन्न होता है तब
 सतोगुण की वृद्धि जानो ११ और हे अर्जुन रजोगुणकी वृद्धि होनेपर लोभ प्रवृत्ति प्रारम्भ
 अशांति इच्छा इत्यादि सबवातें उत्पन्न होती हैं १२ और तमोगुणकी अतिशय वृद्धि
 होनेपर अप्रकाशता, कर्मोंका न करना प्रमाद मोह इत्यादि सब वस्तु उत्पन्न होती
 हैं । १३ । जब सतोगुण की अतिशयवृद्धि होनेपर किसी का मरना होजाता है
 तब देवताओं के निर्मल क्लेशरहित लोकों को पाता है । १४ । रजोगुण में शरीर

arising from desire and attachment; it ties the embodied to work. 7. Tamas begets ignorance and deludes all the embodied beings and by heedlessness it binds one to sloth and sleep. 8. Satwa prevails in felicity, Rajas in action, and Tamas, having clouded wisdom, prevails in intoxication. 9. Overcoming Tamas and Rajas, Satwa prevails; Rajas over Satwa and Tamas; and Tamas over Satwa and Rajas. 10. When wisdom, shines through all the avenues of this body, then shall it be known that Satwa is prevalent. 11. Greed, unrest, undertaking works, disquiet and desire, are produced from the prevalence of the Rajas. 12. The tokens of the Tam are gloominess, idleness, sloth, and distraction of thought. 13. If the body is dissolved whilst Satwa prevails, the soul proceeds to the spotless regions of the blest. 14. When the

जायते ॥ १५ ॥ कर्मण सुवृत्तस्याह सात्विक निर्मल फलम् । रजस्तुफलदु ख
मज्ञान तमसः फलम् ॥ १६ ॥ सत्त्वात् सञ्जायते ज्ञान रजसो लोभपवच ।
प्रमादमोहा तमसो भवतोत्र नमेयच ॥ १७ ॥ ऊर्ध्वं गच्छन्ति सस्त्वस्थामध्येतिष्ठन्ति
राजसा । अधन्यगुणवृत्तस्था अधो गच्छन्ति तापसाः ॥ १८ ॥ नान्य गुणेष्व
कर्तार यदाद्रष्टानुपश्यति । गुणेष्वथ पर वेत्ति मद्भाष सोधिगच्छति ॥ १९ ॥
गुणानेतानतीत्यश्रीन् देहो देहसमद्भवान् । जन्ममृत्युजटादु खौर्विमुक्तोमृतमश्नुते २० ॥
अर्जुन उवाच । कैलिङ्गैस्त्रीन् गुणानेतानतीतो भवति प्रभो । किमाचार कथञ्चै
तास्त्रीन् गुणानतिवर्त्तते ॥ २१ ॥ श्रीभगवानुवाच । प्रकाशञ्चप्रवृत्तिश्च मोहमेवच

त्यागहीने पर कर्मफल चाहने वाले पुरुषों में उत्पन्नहोता है इसीप्रकार तमोगुण में
परनेवाला चांडाल आदि में वा पशु पक्षियों में उत्पन्नहोता है । १५ । अच्छी
रीति से कियेहुये सतोगुणी कर्मका फल दु ख और अज्ञान से रहित निर्मल और
ज्ञान वैराग्य आदि युक्त सात्विक धर्म है रजोगुणी कर्म का फल दुःख है और तमो
गुणी कर्म का फल अज्ञान है । १६ । सतोगुण से ज्ञान उत्पन्नहोता है रजोगुण से
लोभ पैदाहोता है और तमोगुण से प्रमाद मोह और अज्ञान पैदाहोते हैं । १७ ।
सतोगुणी पुरुष ऊपर जाते है अर्थात् देवभावको पाते है रजोगुणी मध्य में नियत
होते है अर्थात् मनुष्य शरीर को पाते है और नीचगुणोंकी दृष्टी में नियत तामसी
पुरुष नरक को जाते है अर्थात् पशु पक्षी आदि में उत्पन्नहोते है । १८ । जब
द्रष्टारूप जीव सिमाय गुणों के किसी दूसरेको नहीं देखता है और जो गुणों से
परे मुक्तको जानता है वह मेरेरक्षभावको पाता है । १९ । जीवात्मा इन तीनगुणों
को जिनसे कि स्थूल शरीर की उत्पत्ति है उल्लंघन करके जराजन्म मरणके दुःखों
से रहितहोकर मोक्ष को पाताहै । २० । अर्जुन बोले कि हे भगु कौनसे चिहनों से
इन तीनों गुणोंको उल्लंघन करनेवालाहोता है उसका कैसा आचार है और किस

body finds dissolution whilst Rajas is predominant, one is born amongst those who are attached to action Likewise dying when Tamas is prevalent, one is born in the wombs of irrational beings. 15 The fruit of good works is called pure and holy, the fruit of the Rajas is pain, and the fruit of Tamas is ignorance 16 From Satwa is produced wisdom, from Rajas covetousness, and from Tamas madness, distraction, and ignorance. 17 Those fixed in Satwa, mount on high, those of the Rajas stay in the middle, whilst those abject followers of Tamas sink below 18 When the seer perceives no other agent than these qualities, and knows what is beyond them, he enters my state. 19 Surpassing these three qualities, co-existent with the body, the soul is delivered from birth and death, old age and pain, and drinks of the water of immortality 20 ARJUNA—By what token is it known that a man has surpassed these three qualities?

च पांडव । नह्येषा सम्प्रवृत्तान नानवृत्तानि कांक्षति ॥ २२ ॥ उदासीनवदा
सांतो गुणैर्षो न विचाल्यते । गुणा धर्चन्तइत्येव योवातघ्रात नैगते ॥ २३ ॥ समदु खं
सुख स्वत्य समलोष्टाश्मकांचन । तुल्यप्रियाप्रियो धीरश्तुल्यनिन्दात्मसंतुति
॥ २४ ॥ मानापमानयोस्तुल्यतुल्यो मित्रारिपक्षयो सर्वाभ्रमपरित्यागी गुणातीत-
स उच्यते ॥ २५ ॥ माच योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते स गुणान् समतीत्यैतान्
ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ २६ ॥ ब्रह्मणा हि प्रतिष्ठाहममृतस्यान्प्यस्य च । शाश्वतस्पच
धर्मस्यसुखस्यैकान्तकस्यच ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि मू० गुणत्रयविभाग
योगोनाम चतुर्दशोऽध्याय ॥ १४ ॥ पर्वणि तु अष्टनिशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

रीति से इन तीनों गुणों को उल्लंघनकरके वर्तव करता है । २१ । श्रीभगवान्
बोले हे पाण्डव प्रकाश, मद्युक्ति, मोह यह तीनों सत्त्वादि गुणों के कार्यरूप है जो
वह अन्तःकरण आदि में वर्तमान होयें तो उन से शत्रुता नहीं करता है । २२ ।
जो उदासीनके समान नियत होकर गुणों से चलायमान नहीं होता है अर्थात् प्रेमा
जानता है कि यह गुणों का वर्तव है उस बुद्धि में नियत होकर जो स्थिरता से
नियत है वह चलायमान नहीं होता है । २३ । सुख दुःखको समान जाननेवाला
वा अपनी इच्छा से नियत लोहे पत्थर मुवर्ण को बराबर समझनेवाला अथवा मिय
आभिय वा निन्दा स्तुति में समबुद्धि धैर्यमान मानापमान रहित शत्रु मित्रमें समभाव
होकर जो प्रारम्भ कर्मों का त्याग करनेवाला है वह गुणातीत कहाजाताहै । २४ ।
जो मुझको भक्तिमे ध्यान करता है वह इन गुणों को उल्लंघन करके ब्रह्मभाव के
योग्य होताहै । २५ । मैं वेदका वा अविनाशी मोक्ष साधन का अथवा प्राचीन
धर्म का और मोक्षरूपी सुखका अन्त स्थान हूँ । २७ ।

What is his practice? How does he overcome them. 21 Krishna—He
O son of Pandu, who despises not lucidity, activity and delusion
when they come upon him, no longer for them when they disap-
pear, 22 who, sitting unconcerned, is unagitated by the qualities, who,
whilst the qualities are present, stands still and moves not, 23
who is self dependent and the same in ease and pain, and to
whom iron, stone, or gold are as one, firm alike in love and dislike,
and the same whether praised or blamed, 24 the same in honor and
disgrace, the same towards the friend and the foe, and who for-
sakes all enterprises, such a one has surmounted the influence of
the qualities. 25 And he, my servant, who serves me alone with
due attention, overcomes the qualities and is fit to be absorbed in
Brahma. 26 I am the emblem of the immortal and of the incorrupt-
ible, of the eternal justice, and of endless bliss. 27

श्री भगवानुवाच ॥ ऊर्ध्वं मूलमथ शाख मश्न्यथ प्रादुरव्ययम् । छन्दांसि यस्य
पर्णानि यस्त वेद स वेदवित् ॥ १ ॥ अघञ्छोर्ध्वं प्रवृत्तास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा
। अघञ्च मूलान्यनुसन्ततानि पर्मानुपधीनि मनुष्यलोके ॥ २ ॥
न रूपमस्येह तपोपुलक्यते नात्तो न चादिर्ध्वं च सम्प्रतिष्ठा । अश्नन्तमेन सुविकृत
मूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छिन्वा ॥ ३ ॥ तत पद तत् परिमार्गितव्य यस्मिन् गता
न निवर्त्तन्ति भूयः । तमेव चाद्य पुरुष प्रपद्ये यत प्रवृत्ति प्रसूतापुराणी ॥ ४ ॥
निर्मानहो जितसङ्गदोषा अभ्यात्मानित्या विनिवृत्तकामा । इन्द्रार्धिसुक्ता सुपुत्र स

अ.याय १५ ॥

श्रीभगवानुवाले कि ऊपरको मूल रखनेवाला और नीचेकी ओर शाखा रखने
वाला वृक्ष अविनाशी वर्णन क्रियागयाहै उसवृक्षके पत्ते वेद और यज्ञहैं उस वृक्षको
जो जानता है वह वेदका जाननेवाला है । १ । उसकी शाखा नीचे और ऊपरको
फैलरही हैं और सतोगुणआदि गुणों से महादृढि युक्त त्रिपयरूपी पत्तों से व्याप्त
हैं और नीचे उस वृक्षकी जड़ें जिनसे कि कर्म बंधेहुये हैं फैलीहुई हैं । २ । उसका
रूप नहीं पायाजाता है इससे यहवृक्ष आदि अन्त में रहित है और उसके लप
होनेका भी स्थान नहीं है ऐसे अत्यन्त दृढ मूलवाले वृक्षको असगरूप दृढशस्त्र मे
काटकर वह ब्रह्मपद निश्चय करने के योग्य है जिस में प्राप्त होनेके पीछे पुरुष
फिर नहीं लौटते हैं उस सपके आदिरूप और घटप्रवृत्तवामिकी शरणा होताह कि
आदिरहित संसारी प्रत्यक्षता रूपी प्रवृत्ति निकले । ४ । मोह मान और कर्मों के
संगों समेत रागादि दोषोंको जीतनेवाले आत्मानिष्ठ सर्वदन्त्रीभित् दर्पशोक रहित

LECTURE XV

Of purushottama

Krishna.—With roots above and branches below, they speak
of Ashwattha indestructible, whose leaves are the Vedas. He
who knows that, is acquainted with the Vedas. 1 Its branches
nourished by the Gunas spread upwards and downwards, its buds
are the objects of senses. The roots which spread below, in the
regions of mankind, are restrained by action. 2 Its form is not un-
derstood here, neither its beginning, nor its end nor its source.
When a man has cut down this Ashwattha with the strong axe
of disinterest, that place is to be sought after from whence there is
no return for those who find it. Let us seek the first Purusha
from whom is produced the ancient progression of all things. 4
Those who are free from pride and ignorance, who have prevail-
ed over the evils of attachment the sensual, freed from

सङ्कीर्णच्छन्त्यमृताः पदमव्ययन्तत् ॥ ५ ॥ न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
 यद्गतावान्ति निधत्तन्ते तद्धीमपरमं गम ॥ ६ ॥ मभैर्वांशो लविलोके लविभूतः
 सनातनः । मनःपट्टानांन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥ शरीरं यद्वाग्मेति
 यथाप्युत्कामर्माश्वरः । गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गंधानिवाशयात् ॥ ८ ॥ शोचं
 चक्षुः स्पर्शनञ्च रक्षते प्राणतेजश्च । अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥ ९ ॥
 उत्क्रामन्तं स्थितं चापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् । विमूढा नानुपदयान्त पश्यन्ति
 ज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥ यतन्तो योगिनश्चेनं पश्यत्यात्मन्यवास्थितम् । यतन्तोऽप्यक-

और विद्या के द्वारा अविद्या दूर करनेवाले पुरुष उसअविनाशी पदको पाते हैं । ५ ।
 उस पदमें न सूर्य प्रकाश करता है न चन्द्रमा प्रकाशित होता है अग्नि प्रकाश
 नहीं करसक्ता है जिसको जानकर नहीं लौटते हैं वही मेरी परमज्योति है । ६ ।
 इम जीव लोकमें जीवरूप मेराही अंश और सनातन है वह अपने विषय रूप स्वभाव
 में नियत होकर छेडेमन समेत पांचों इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षण करता है
 । ७ । और जाग्रत उत्पाति और पालनके समय इन इन्द्रियोंको अपने लय स्थानसे
 विषय के स्थानपर लेजाकर ऐसे प्राप्तहोता है जैसे कि गंधको लेकर वायुप्राप्त होती
 है । ८ । यह श्रोत्र, चक्षुः, स्पर्श, रसना, घ्राण, इनपांचों ज्ञानइन्द्रियोंको और मनको
 व्यापारस्वान् करके विषयोंको प्रकाश करता है । ९ । उनमन संयुक्त इन्द्रियों की
 देहान्तर करने वाली इन्द्रियों के नियत होनेपर आपभी नियतहोकर इन्द्रियों के
 भोक्ताहोने पर भोगनेवाले और गुणोंसे संपृक्त होनेवालेको अज्ञानी लोगनहीं देखते
 हैं परन्तु ज्ञानरूप नेत्ररखने वाले उनको देखते हैं । १० । उपाय करनेवाले योगी इम
 असंग आत्माको बुद्धिमें नियतदेखते हैं और जिन्होंने यज्ञादिकर्मोंके करनेसे मनको
 शुद्ध करके अपने अधीन नहीं किया वहउपाय करते हुएभी इसपरमात्मा को नहीं

lust, and the pairs of pleasure and pain, tread, undeluded, that en-
 during path. 5. Neither the sun nor the moon nor the fire enlight-
 en that place from whence there is no return, and which is the
 supreme mansion of my abode. 6. It is a portion of myself that in
 this animal world is the universal spirit of all things. It draws to-
 wards itself the matter-seated senses and the mind, which
 is the sixth. 7. Whichever body the lord (soul) enters or quits, it
 takes them (senses) and goes, as the breeze (takes) the fragrance
 from the flower. 8. It (soul) presides over hearing, seeing,
 feeling, tasting and smelling, and the mind and the sense
 objects. 9. The foolish see it not, attended by the Guna or
 qualities, in expiring, in being, or in enjoying; but those who are
 endued with the eye of wisdom behold it. 10. The persistent yogis
 perceive it planted in their own breasts, while those of unrefined
 minds and weak judgments, labouring, find it not. 11.

तात्मानो नैन पश्यन्त्यचेतस ॥ ११ ॥ यदादित्यगत तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमासि यच्चामौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ १२ ॥ गामाविश्य च भूतानि
धारयाम्यहमोजसा । पुष्णामि चौपधीः सर्वा सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥ १३ ॥
अह वैश्वानरो भूत्वा प्राणिना देहमाश्रित । प्राणापानसमायुक्त पचाम्यन्नं चतु
र्विधम् ॥ १४ ॥ सर्वस्य चाह हृदिसन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनञ्च ।
घेदैश्च सर्वे रहमेव वेद्यो वेदान्तवृद्धेदिविदेव चाहम् ॥ १५ ॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके
क्षरश्चाक्षर एव च । क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोक्षर उच्यते ॥ १६ ॥ उत्तम
पुरुषस्त्यन्यः परमात्ममेत्युदाहृत । योलोक्त्रयमाविश्य विभर्त्यव्ययईश्वरः ॥ १७ ॥
यस्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादपि चोत्तम । अतोऽस्मिलोके वेदे च प्रथित पुरुषोत्तम

देखते है । ११ । जो तेज सूर्य में वर्धमान होकर संपूर्ण संसारको प्रकाशित करता है और जो तेज चन्द्रमा और अग्नि में है उसको तुम मेराही तेज जानो । १२ । मैं पृथ्वी में प्रवेश करके अपने तेजसे संसार को धारण करता हूं और जल रूप चन्द्रमा होकर सब औषधियों को रससयुक्त करके पुष्टकरता हूं । १३ । मैंही वैश्वानर नाम अग्नि होकर सब जीवोंके शरीर में नियत होकर प्राण अपान से संयुक्त भक्ष्य भोज्य चूष्य लेख इनचारों प्रकारके पदार्थोंको पचाता हूं । १४ । मैं सबके हृदयमें वर्धमान आत्मा हूं मुझ आत्मा रूपसे स्मृतिज्ञान और अज्ञान है और मैंही सब वेद द्वारा जानने के योग्य हूं और वेदान्तका कर्चा और वेदार्थका ज्ञाता हू । १५ । लोकमें यहक्षर अक्षरनाम दोही पुरुष है सब संसार क्षर नाम है और रूपान्तर दशा रहित अक्षर नामसे प्रासिद्ध है । १६ । उपाधि से रहित उत्तम पुरुष परमात्मानाम तीनों लोक वालोंके शरीरों में प्रवेश करके रूपान्तर दशासे रहित सबका पोषण करता है । १७ । जोकि मैं क्षरसे पृथक् और उपाधियुक्त जीवसेभी उत्तम हूं

Know that the light in the sun which illumines the whole world, and the light which is in the moon, and in the fire, is mine 12 Permeating the earth, I support all things by my vigour and becoming the juicy moon I nourish all the plants 13 I am the fire residing in the bodies of all living beings, and joined with Prana and Apana, I digest the four fold food 14 I penetrate into the hearts of all, from me proceed memory, knowledge, and the loss of both I am to be known by all the Vedas and I am he who knows the Vedas. 15 There are two kinds of Purusha in the world, the one corruptible and the other incorruptible The corruptible Purusha is the body of all things, the incorruptible one is constant 16 There is another Purusha most high, the Paramatma or supreme soul, who pervades and sustains the three worlds, the incorruptible Ishwara. 17 Because I am above corruption and superior to incorruption, wherefore in this world, and in

॥ १८ ॥ यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् । ससर्ववित्त भजतिमां सर्वभावेन
भारत ॥ १९ ॥ इति गुह्यतमं शास्त्रं मिदमुद्दिमुक्तं मया नघ । एतद्व्युध्याबुद्धिमान्
त्वात् कृतकृत्यश्च भारत ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतामू० पुरुषोत्तमयोगोनाम

पञ्चदशोऽध्यायः ॥१८॥ पर्वणितु ऊनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥३१॥

श्री भगवानुवाच । अमयं सन्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः । दानं दमश्च
यज्ञश्च स्वाध्यायस्तपश्चार्जुन ॥ १ ॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरैशुनम् ।
दयाभूतेष्वलोलुबं मार्दवंहीरचापलम् ॥ २ ॥ तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो

इसी कारण से लोक और वेदमें पुरुषोत्तम कहा जाता हूँ । १८। जो मुझको संशय
आदि रहित होकर पुरुषोत्तम जानता है वह सर्वज्ञ है और हे अर्जुन वही मुझको सब
भाव और रीति से भजता है । १९। हे निष्पाप भरतवंशी अर्जुन मैंने यह अत्यन्त
गुप्त शास्त्र तेरे आगे वर्णन किया इसको जानकर बुद्धिमान् ब्रह्मज्ञानी कर्मों से
निरत मोक्षको पाता है ॥ २० ॥

अध्याय १६ ॥

श्रीभगवान् बोले कि भय न करना, चिचकी निर्मलता, ज्ञानयोगके निष्ठावान्,
जितेन्द्री, श्रौतस्मार्त्तयज्ञ, वेद पढ़ना, तप, सरलभाव । १। अहिंसा, सत्य, क्रोध न करना,
त्याग, शान्ति, चिचकी शान्ती, पराये दोषों को न कहना, दुखी जीवोंपर दयाकरना,
विपरीत दशासे रहितहोना, मृदुता, लज्जा, नचि कर्मों में किसी अंगको प्रवृत्त न
करना । २। तेजसे प्रगल्भता, क्रोधयुक्त न होना, धैर्यता, पवित्रता, शत्रुतारहित होना,

the Vedas, I am called Purushottama. 18, The man of a sound
judgment, who knows me as the Purushottam, knows all, and
serves me in every principle. 19. Thus, O Arjuna, have I made
known to thee this most mysterious Shastra; he who under-
stands it shall be wise and shall have accomplished all that is fit
to be done. 20.

LECTURE XVI

Of good and evil Destiny

Krishna.—The man who is born with Divine destiny is endowed
with the following qualities: Fearlessness, purity of heart,
settlement in the yug of wisdom, charity, self-restraint, sacrifices,
study, penance, rectitude; (1) harmless-ness veracity, absence of
anger, resignation, temperance, freedom from slander; universal
compassion, uncovetousness, mildness, modesty, ficklelessness, (2)
lustre, patience, fortitude, chastity, unrevengefulness, and free-

नातिमानिता । भवन्ति सम्पद् दैर्घ्यामाभिजातस्य भारत ॥ ३ ॥ दम्भोदर्पोऽभि
मानश्च क्लेश पारुष्यमेवच । अज्ञ नचाभजातस्य पार्थसम्पद्मासुरीम् ॥ ४ ॥
दैवी सम्पद्धिमोक्षाय नियन्धायामसुरीमता । माशुच सम्पद् दैर्घ्यामाभिजातोसि
पण्डय । ५ ॥ ह्यैभूतसर्गो लोथेसिम्न दैव आसुर एवच । दैवो विस्तरश
प्रोक्त आसुर पार्थमे नृणु । ६ ॥ प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च जना न विदुरासुरा । नशौचनापि
चाचागे न सत्य तेषुवद्यते ॥ ७ ॥ असत्यमपतिष्ठन्ते जगदापुरनीश्वरम् । अप
रम्परसभूत किमन्यत्कामहेतुकम् ॥ ८ ॥ एता हाष्टमवष्टभ्य नष्टमानोऽप्युदय ।
प्रभवन्त्युग्रकर्मण जयाय जगतोऽहिता ॥ ९ ॥ कामताश्रय दुष्पू दम्भमान

अभिमान न करना, हे भरतर्षभ दैवी सम्पत्तिके आगे जन्मलेने वालोंको यह गुण
होते है। ३। पाखण्ड, धनका गर्व इत्यादि अपनीमहत्त्वता चाहना, क्रोध, कठोर वचन,
अज्ञ न, यहगुण आसुरी सम्पत्ति के उदय होनेवाले के है। ४। दैवी सम्पत्ति मोक्ष
के निमित्त है और आसुरी सम्पत्ति सदैव बन्धन करनेवाली कही जाती है सो
हे अर्जुन तू दैवी सम्पत्तिके सम्मुख उत्पन्न हुआ है इस्ते शोकमतकर । ५। हे
अर्जुन इस लोकमें जीवों के स्वभाव दो प्रकारके है एक दैव दूसरा आसुर इनदोनों
में देव स्वभावको तो ब्यौरवार कहा अब आसुर स्वभाव को कहता हूँ । ६। आसुर
मनुष्य प्रवृत्ति निवृत्ति को नही जानकर अपवित्रहोते है और आचार सत्यता आदि
से रहित होकर वह पुरुष संसारको भी यथार्थ रहित धर्मार्थ और प्रतिष्ठासे खाली
कहते हैं और यहभी कहते है कि इस का कोई ईश्वर नही है यह पुरुष धी के संग
से उत्पन्न हुआ है इसका हेतु कामदेव है । ८। ऐसे निर्वुद्धी भयानक कर्मों दुष्ट
लोग जिनके धैर्यादि नष्ट होगये है वह ऐसे प्रमाणको आश्रयकरके जगत्के नाशके
लिये उत्पन्न होते है । ९। वह कपटी मानी भ्रष्टरती कठिनता से पूर्ण होने वाली
कामनाओं को आश्रय करके अज्ञानतासे नीच कर्मों को अंगीकार करके संसारके

dom from vain glory, these are his who is born with the divine
properties, O Bharat 3 He who is born with asur properties,
is distinguished by hypocrisy, pride, presumption, anger, harsh-
ness of speech and ignorance, 4 The divine character is for Moksha
and the asur for bondage. I say not, Arjuna for thou art born of the
divine kind. 5 There are two kinds of beings in the world The divine
nature has been fully explained. Hear what the evil nature is. 6
Asuras know neither activity nor abstinence, nor is purity, veracity,
or morality found in them. They say the world is unreal, without
prop and without lord, brought about by mutual union and having
lust for its cause. 8 Holding this view the lost soul, small-
witted, of cruel deeds, vile beings become the ruin of the world. 9.
Surrendering themselves to insatiable desires, seizing unlawfully
by delusion, associated with hypocrisy, pride and passion and prac-

मदान्विताः मोहाग्गृहीतवाः। ससद्ग्राहान् प्रवर्त्तन्ते शुचिप्रताः ॥ १० ॥ चिन्तामपरिमेयां च
प्रलयान्तमुपाश्रिताः । कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥ ११ ॥ आशा
पाशशतैर्वद्धाः कामक्रोधोपरायणाः । ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥ १२ ॥
इदमद्यमया लब्धमिदं प्राप्त्वे मनोरथम् । इदमस्तादमापि मे भावोऽप्यत पुनर्धनम्
॥ १३ ॥ असी मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापराजयि । ईश्वरोऽहमहंभे गी । सखोऽह
बलवान्सुयो ॥ १४ ॥ अज्योभिजनवानस्मि कोऽप्येति सद्योऽभया । यक्ष्येदा-
स्याम मोक्षिष्ये इत्यज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥ अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालस
मावृताः । प्रसक्ता कामभोगेषु वतन्ति नरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥ अत्ममग्नाः पीताः
स्तब्धा धनमानमदान्विताः । यजन्ते नाम यज्ञैस्ते दम्भेनावधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥

नाशके लिये कर्मकर्त्ता होते हैं । १० । वह लोग मृत्युकारी महा चिन्ताओंमें डूबे
हुए हैं और कायादि भोगोंको जीवनका फल मानने वाले हैं । ११ । और जो कुछ दृश्य
माने उसको निश्चयकरके वहीमानते हैं और आशा रूपी हजारों बन्धनों से बँधे हुए
काम क्रोधहीको मुख्य स्थान समझने वाले कामभोग के लिये अनर्थों के द्वारा धन
समूहों को चाहते हैं । १२ । यह प्राप्त हुआ इस मनोरथ को पाऊंगा यह है और
फिर यह सब मेरा धन होगा । १३ । यह शत्रु मैंने मारा और उन शत्रुओंको भी
मारूंगा मैं समर्थ हूँ भोगी हूँ धृद्धात्मा हूँ बली हूँ और मुसी हूँ । १४ । धनी हूँ कुलवान
हूँ मेरे समान कौन है यज्ञादि करूंगा दान करूंगा आनन्द करूंगा ऐसे अज्ञानोंमें
भूला हुआ है । १५ । बहुतसे विषयोंमें प्र त होने से चित्त से व्याकुल मोहरूपी बन्धन
में बँधा हुआ काम और भोगों में प्रवृत्त चित्त पुरुष महाबोर नरकों में गिरने है
। १६ । आनेको बड़ा मानने वाले स्तब्ध अहंकारी धनके मदमें भरे हुए मनुष्य

tising unholy vows, they prevail. 10. Because of their folly they
adopt false doctrines, and continue to live the life of impurity, indulg-
ing in sensual appetites as the supreme good. 11. Fast bound
by the hundred cords of hope, and given up to lust and anger, they
seek by injustice to hoard wealth for the gratification of their
inordinate desires. 12. This, today, has been acquired by me. I
shall obtain this object of my heart. This wealth I have, and
this shall I have also. 13. This foe have I already slain and others
will I forthwith vanquish. I am Ishwara, and I enjoy; I am con-
summate, I am powerful, and I am happy. 14. I am rich, and
well-born; where is there another like unto me? I will make pre-
sents at the feasts and be merry." Thus talk those who are infatua-
ted by ignorance. 15 Confounded with various thoughts, entangled
in the net of folly, and attached to the gratification of their lusts,
they sink at length into the Naraka of iniquity. 16. Being
self-concerned, stubborn and puffed up with wealth and pride, they
perform nominal sacrifices for show and not according to divine

बह्वार बल दर्प काम क्रोधश्च सञ्चिता । ममात्मपरदहेषु प्रद्विप तोषयत्
 पका ॥ १८ ॥ तानह इद्विपित कूरान् ससारेषु नराधमान् । सपाप्यजस्रमगु
 भानासुरोश्चैव योगतपु ॥ १९ ॥ आसुरीं येनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि । ममा
 प्राप्तेव कौन्तेय ततोपात्यघमागतिम् ॥ २० ॥ त्रिविध नरकस्यद् द्वार नाशनमात्मन ।
 काम क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्रय त्यजेत् ॥ २१ ॥ पतैर्धिमुकु कौ तेय तमौद्धारै
 स्त्रि मर्नर । आचरत्यात्मन धेयस्ततो यातिपरागतिम् ॥ २२ ॥ य शास्त्र विधि
 मनुष्येण्य वत्तते कामकारत । न स सिद्धमवाप्नोति न सुख न परा गतिम् ॥ २३ ॥ तस्मा
 च्छ्र प्रमाणते कार्याकार्येभ्यवरिषतौ । ज्ञात्वाशास्त्रविधानांके कर्मकर्तुं मिहार्हसि २४

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीता० देवासुरसम्प्रादिभागयोगोनाम

षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ पर्वणितुच्छत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

पाखण्ड करके बुद्धिके विपरीत नाममात्र यज्ञों से पूजन करते है, १७ । अहंकार
 बल दर्प काम क्रोध इत्यादि को आश्रय करके वा घातादिक कर्मों से अपने शरीर
 से दूसरे शरीरोंमें मुक्त जगदात्मासे शत्रुता करते है । १८ । हे अर्जुन मैं अन्तरात्मा
 उन शत्रुता करनेवाले निर्दयी सप्तसे अत्रम पापात्माओं को सदैव आसुरी योनियों
 में डालताहू । १९ । फिर वह अज्ञानी आसुरी योनियों में पड़े हुए जन्म जन्मान्तर में
 भीमुक्तको न पाकर अत्रम पशु पक्षी वृत्त आदिके शरीरों को पाते है । २० । यह
 काम क्रोध लोभरूपी नरकके तीनों द्वार नाश करने वाले है इसकारणइन तीनोंको
 त्यागकरे । २१ । हे अर्जुन इनतीनों नरकके द्वारोंसे अत्यन्त अलगहोकर भगवत्
 भजन आदि कल्याणों को कर्चाहै तब परमोत्त रूप भाते को पाताहै । २२ ।
 जो मनुष्य शास्त्रबुद्धि को त्यागकर मनके इच्छारूपी कर्मों में प्रवृत्त होता है वह
 मनकी शुद्धी को और सुखपूर्वक मोक्षको नही पाता है । २३ । इसेहेतु से कर्त्तव्य
 अकर्त्तव्य व्यवस्थाओं में तू शास्त्र को प्रमाणकर अर्थात् जिसकी जैसी विधिशास्त्र
 में कही हुई है उसको ठीकही जानकर कर्मों को करना योग्य है । २४ ।

ordination. 17 Placing all their trust in pride, power, ostentation,
 lust, and anger, they maliciously hate me in themselves and others
 18 I cast down upon the earth those furious, abject wretches
 those evil beings, in demoniacal wombs 19 Entering the wombs
 of Asuras from birth to birth, at length not finding me, they go
 to the infernal region 20 There are these three passages to Nara
 ka lust, anger, and avarice, which are the destroyers of the soul
 wherefore a man should avoid them. 21 Being freed from these
 dark gates of sin, he advances his own happiness, and at length
 he goes to the Highest end. 22 He who abandons the dictates of
 his lusts, attains neither perfection happiness, nor the highest goal.
 23 Wherefore, O Arjuna, thy authority is Shastra, in determin
 ing what is fit and unfit to be done, thou shouldst perform those
 works which are declared by the commandments of the Shastra. 24

अर्जुन उवाच । ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः । तं पातिष्ठान्तु
काकृष्ण सन्वमाहो रजस्तमः ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । त्रिविधा भवति श्रद्धा
देहिनां साश्वभावजा । सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ॥ २ ॥
सत्त्वानुपूर्णा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत । श्रद्धागम्योऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स
एव सः ॥ ३ ॥ यजन्ते सात्त्विका देवान् यक्षरक्षांसि राजसाः । प्रेतान् भूत-
गणांश्चाप्ये यजन्ते तामसाजनाः ॥ ४ ॥ अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्तेऽप्ये तपो जनाः ।
दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः कामरागद्वयान्विताः ॥ ५ ॥ कर्मयन्तः शरीरस्य भूतप्राणम-
चेतसः । माञ्छैवान्तःशरीरस्य तान् विद्ध्यात्तुर निश्चयान् ॥ ६ ॥ अहोस्त्वपि सर्वस्य

अध्याय ॥ १७ ॥

अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी जो श्रद्धावान् पुरुष शास्त्रद्विको त्यागकरके
ईश्वरका भजन पूजन करते हैं उनकी कौन निष्ठा है सतो गुणी वा रजोगुणी अथवा
तामोगुणी है । १९ । श्रीभगवान् बोले कि अभिमानी पुरुषों की स्वभावसे उत्पन्न
होने वाली श्रद्धा पूर्व जन्म के धर्मार्थ से उत्पन्न है वह सतो गुणी रजोगुणी और
तामसी इनतीन प्रकारकी है इनतीनों प्रकारकी श्रद्धाको कहता हूँ । २ । हे भरतवंशी
पूर्वकर्म संस्कार के अनुसार जो बुद्धिबल है उसीके अनुरूपसबकी श्रद्धा बनी हुई
रहती है यह श्रद्धा है जो जैसी श्रद्धावाला है वह उसी श्रद्धा के गुणोंसे प्रसिद्ध होता है
सतो गुणों पुरुष देवताओं को पूजते हैं रजोगुणी मनुष्य यज्ञ राक्षसों को और
तामोगुणी लोग भेत भूतादिकों को सेवन करते हैं । ४ । वेदादि शास्त्रोंके विरुद्ध
घोरतपोंको जो मनुष्य करते हैं और पाखंड पूर्वक अहंकारमें भरे हुए विना विचार
किये विषयकी इच्छा से दुरी वासना करके विषय साधन में संयुक्त हैं । ५ । वह
अज्ञानी शरीरकी इन्द्रियों को निबल करने वाले मुक्त शरीरवर्धी को भी अप्रसन्न

Chapter XVII

The threefold division of Faith

Arjuna—How is that sacrifice characterised, Krishna, which is performed in faith, against the precepts of the Shastra? Is it one of Satwa, Rajas, or the Tamas? 1. Krishna.—The faith of mortals is of three kinds, denominated after the three Gunas, Satwik, Rajasce, or Tamasee. Hear what these are. 2. The faith of every one accords with his nature; man is saturated with faith; he is that which his faith is. 3. Satwic man worships the Devas; Rajasic the Yakshas and Rakshasas; the Tamasic worship the Pretas and the tribe of Bhutas. 4. Those who perform severe mortifications not authorized by the Shastra, wedded to hypocrisy, pride, lust, passion, and strength, 5. Those fools torment the elements in the body, and me also planted in it. Know them to be of demon

त्रिविधो भवात् प्रिय । यज्ञस्तपस्तथा दानं तथा भेदं मिमंशुः ॥ ७ ॥
 आयुःसंवचला रोग्यसुखप्रतिविधर्षता । रस्यां स्निग्धा स्थिरा हृद्या आहार
 सात्त्विकप्रिया ८ ॥ कट्वम्ललघणापुष्ण तोक्ष्णरूक्षविदाहिनः । अहारा राज
 सस्येष्टा दुःखशोकानयप्रदा ॥ ९ ॥ घातयाम गतरसं पूति पथ्युपितञ्च यत् ।
 उच्छिष्टमपि चाभेद्यं भोजनं तामसाप्रियम् ॥ १० ॥ अफलाकाक्षाभयैर्ज्ञो विधि
 दृष्टो य इज्यते । यद्यप्यभेदेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥ ११ ॥ अभिसन्धाय
 तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् । इज्यते भरतश्रेष्ठ त यन्नं विद्धि राजसम् ॥ १२ ॥
 विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् । श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिच्छते ॥ १३ ॥
 देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् । ब्रह्मचर्यमहिंसाच शारीरं तप उच्यते ॥ १४ ॥

करनेवाले हैं उनको असुरों में निश्चय करनेवाला जानो । ६। अन्नादि भोजन भी
 सबको तीन प्रकार का प्यारा है इसी प्रकार यज्ञ तप दान भी तीनही प्रकार का
 प्यारा है इनका विभाग सुनो । ७ । जीवन, उत्साह, सामर्थ्य, नरोगता, सुख,
 प्रीतिदायक वस्तु, रसीले कोमल स्थिर अर्थात् शरीर में रसके द्वारा विलम्बतक रहने
 वाले, देखने में सुन्दर हृदयको प्रसन्नकरनेवाले, ऐसे गुणयुक्त भोजन सात्त्विकी
 पुरपोंको प्यारे होते हैं । ८ । कड़ुप, नोनके, खट्टे, अति उष्ण, चर्परे, रूखे, अ-
 त्यन्त जलन करनेवाले, दुःख शोक और रोगोंके उत्पन्नकरनेवाले भोजन रजोगुणी
 को प्यारे हैं । ९ । दुर्गन्ध युक्त, वासी, उच्छिष्ट, अभक्ष्य भोजन तामसी लोगोंको
 प्यारा है । १० । यज्ञही करनेके योग्य है इसप्रकार अपने मनको समाधान करके
 फल के न चाहनेवाले पुरपोंसे जो आवश्यकताके लिये रचाहुआ यज्ञ कियाजाता
 है वह सात्त्विकी कहाजाता है, । ११ । हेभरतर्षभ, फलकी इच्छा मनमें धारण कर
 पास्कण्ड और कपट के निमित्त जो यज्ञ कियाजाता है उस यज्ञको राजसी जानो
 । १२ । शास्त्रकी रीति अन्नदान और मन्त्रदाक्षिणा रहित श्रद्धा से विहीन यज्ञको
 तामसी यज्ञजानो । १३ । देवता ब्राह्मण और माता पिता आचार्य इत्यादि गुरु वा

nature. 6 There are three kinds of food which are dear to all men. So are sacrifice, auster-
 ity and charity. Hear what are their distinctions. 7 The food dear to Sattvik men is such as increases
 life, energy, vigour, health, joy and relish. It is tasteful, nourish-
 ing, substantial and agreeable. 8 The food dear to Rajasic, is bitter,
 sour, saltish, over hot, pungent, dry and burning, producing pain,
 grief and sickness. 9 The food dear to Tamasic men is that which is
 stale, changed, putrid, refuse and impure. 10 That law sanctioned
 sacrifice is Sattvic, which is done without the desire of reward,
 with a firm belief that it is a duty. 11 The sacrifice offered
 with a view to fruit, and with hypocrisy, is of the Rajas. 12
 That sacrifice is Tamasic which is contrary to law, without the
 distribution of food, without mantras, gifts and faith. 13 Holy

अनुद्वेगकरं धान्यं सत्यं त्रिषहितञ्च यत् । स्वाध्यायाम्भ्यसनञ्चैव बालमयं तप उच्यते ॥ १५ ॥ मन प्रसाद सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः । भावसमुद्धारित्वे तत्तपो मानसमुच्यते ॥ १६ ॥ श्रद्धयापरया तप्त तपस्तत्तानघिघ नरे । अफला कांक्षामिथुक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥ १७ ॥ सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेनैव यत् । क्रियते तादृशं प्रोक्तं राजस चलनभ्रुवम् ॥ १८ ॥ मूढग्राह्येणात्मनो यत् पाडया क्रियते तपः । परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥ १९ ॥ दातव्यं मति तद्दानं दीयते तुप कारिणे । देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥ २० ॥ यत्तु प्रयुक्तकारणं फलमुद्दिश्य

ब्रह्मज्ञानियों का पूजन, पवित्रता, सरलता, सत्यता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा यह सब देह क तपकहे जाते हैं । १४ । जो वचन दूसरेका सुखदाई, सत्यता, स्नेहता सहित सबका हितकारी है वह और वेदका अभ्यास यह वाणीकी तपस्या कही जाती है । १५ । प्रमन्नता चित्तशुद्धी सौम्यता वचनको आधीन रखना मनका रोकना व्यवहार में श्रौंरोंके साथ निश्चलता यह मानसीतप कहाता है । १६ । फलकी इच्छा न करनेवाले सावधान चित्तपुरुष देह मनवाणी स जो तीन प्रकारकी तपस्या श्रद्धा पूर्वक करते है वह सात्त्विकी कहाजाता है । १७ । जो तपस्या अपनेमान सत्कार और पूजनके निमित्त कपटसे कीजाती है वह तपस्या इसलोकमें फलसे रहित, नाशवान् रजोगुणी कही जाती है । १८ । आनेके से उत्पन्न दुराग्रहसे अपने शरीर की पीड़ा अथवा दूसरेके नाशके निमित्त जो तप किया जाता है वह तामसी कहाता है । १९ । यह दानके योग्य है इस बुद्धि से फलकी इच्छा रहित जो दान अनुपकारी पात्रको देशकालके विचारसे पुण्य क्षेत्रादिमें दिया जाता है वह सात्त्विकी दान कहा जाता है । २० । जो दान बदले के लिये अथवा फलको ध्यान

austerity consists in the worship to the Devas, the twice born, the teachers and learned men, in chastity, rectitude and freedom from injury. 14 Oral austerity consists in gentleness, justness, kindness, and benignity of speech and attention to the religious studies 15 Mental austerity consists in good temper, benevolence quietude, self-restraint, and purity of purpose 16 This threefold austerity done by men, being warm in fervid faith, regardless of the fruit, and with devotion, is Satwic. 17 The zeal which is shown by hypocrisy, for the sake of the reputation of sanctity, honor, and respect, is said to be of the Rajo Guna, and is inconsistent and uncertain 18 The austerity which is exhibited with self-torture, by the fool, without examination, or for the purpose of injuring another, is of the Tamo Guna. 19 That charity which is bestowed, with the idea of duty, on one who is unable to return it, in due place and season, and to proper objects, is of the Satwic. 20 That which is given in expectation of a return, or for

चा पुन । ददितेच परिकल्पितदान राजसंस्तुतम् ॥ २१ ॥ अदेशकाले यद्दानमपात्रे
 श्यश्च दीयते । असत्कृतमथत्रात तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥ अतस्त्वदिति
 निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविध स्तुत । ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिता पुरा ॥ २३ ॥
 तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतप क्रिया । प्रवर्त्तन्ते विधानोक्ता सतत ब्रह्मणादिनाम्
 ॥ २४ ॥ तदित्यनभिसंघाय फल यज्ञतप क्रिया । दानक्रियाश्च विविधा क्रियते
 मोक्षकाक्षिभि ॥ २५ ॥ सद्भावे साधुभावे च सदित्यतत् प्रयुज्यते । प्रशस्तेकर्म
 णि तथा सच्छब्द पार्थयुज्यते ॥ २६ ॥ यज्ञ तपासि दान च स्थिति सदितिचोच्यते ।
 कर्म चैव तदर्थाय सदित्येवाभिधीयते ॥ २७ ॥ अथश्रयाद्भुतदत्त तपस्ततं दृढञ्च

करके धन व्ययहोनेकाचिन्ता समेत कियाजाता है यह रामसी कहाताहै । २१ । जो दान
 देशकालकेविपरित अपात्रोंकोअपतिष्ठा और अनादरसेदियाजाताहैउसको तामसीकहते
 है । २२ । ओप्ततसत् यह ब्रह्मकानाम तीन प्रकारका हाताहै पूर्वकालमें उसीब्रह्मके
 नामसे ब्राह्मण वा चारोवेद और यज्ञप्रकट किये गये । २३ । इसकारण ओप्तका उ-
 च्चारण करके ब्रह्मवादी अर्थात् वैदिक लोगों के यज्ञदान तपआदि सवाक्रिया जो
 कि वेदविधि में कही है सदैव होती रहती है । २४ । कर्मफल को अंगीकार न कर
 के तब कहकर मोक्षके चाहने वाले नानाप्रकारके यज्ञ तप दान आदिकी क्रिया
 ओको करतेहै । २५ । हेमर्जुन यहसत्नाम श्रेष्ठहै जैसे वेदभाव और साधुओं के भाव में
 संयुक्त कियाजाता है इसी प्रकार उत्तम कर्ममेंभी सत्शब्द संयुक्त कियाजाता है
 । २६ । यज्ञतप और दान में जो निष्ठा है वह सत् नाम कही है और ईश्वरकी
 प्राप्ति के निमित्त जो कर्म है वहभी सत्नाम कहाजाता है । २७ । श्रद्धा रहित जो

fruit and with reluctance, is Rujasic 21 That which is given
 out of place and season, and to un worthy objects, ungraciously
 and scornfully, is pronounced to be of the Tamoguna. 22 ओम् Om
 तत् Tat गत् Sat, are the three mystic characters used to denote
 the Duty By him in the beginning were created the Bramhans,
 the Vedas and sacrifices. 23 Hence the Vedic sacrifices, gifts
 and austerities of the expounders of the word of God, constantly
 begin with the word Om ! 24 With Tat begin the acts of
 sacrifices and of gift, performed by aspirant's of molsh, not wish-
 ing for fruit. 25 The word Sat is used for reality and goodness.
 Sat is also applied to deeds which are praiseworthy 26 Steadfast-
 ness in sacrifices, austerity and gifts is called Sat. Deeds which
 are performed on that account are also named Sat. 27 What
 ever is performed without faith, whether it be sacrifices, deeds of

यत् । असदित्पुत्र्यते पार्थ नच तत् प्रेत्यनो इह ॥ २८ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि सू० श्रद्धात्रयविभाग
योगोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥ पर्वणि एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४१॥

अर्जुन उवाच ॥ संन्यासस्य महाबाहो तवमिच्छामि वेदितुम् । त्यागस्यच
दृषीकेश पृथक् केशिनि,सूदन ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं
कवयो विदुः । सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥ २ ॥ त्याज्यं दोषवदित्येके
कर्म प्राहुर्मनीषिणः । यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्य मिति चापरे ॥ ३ ॥ निश्चयं शृणु मे तत्र
त्यागो भरतसत्तम । त्यागो हि पुरुषभ्यामत्र त्रिविधः सम्प्रकीर्तितः ॥ ४ ॥ यज्ञदानतपः

दान तप यज्ञादिक किये जाते हैं हे अर्जुन वह असत् हैं वह न इसलोक में न परलोक
में गिने जाते हैं । २८ ।

अध्याय १८ ॥

अर्जुनबोले हे महाबाहु दृषीकेश केशी सूदन में त्याग और संन्यास को मूल
समेत जानना चाहता हूँ । १ । श्री भगवान् बोले कि जिनमें किसी प्रकार की
इच्छा है ऐसे कर्मों के त्याग को सूक्ष्म पदार्थदर्शी पुरुषोंने संन्यास कहा है और
पंडित लोगों ने सब कर्म फलों के त्यागको त्याग कहा है । २ । विचके जीतने
वालों ने केवल कर्मोंहीका त्याग दोषयुक्त रागादिके समान त्याज्य कहा है और
परमात्मा के चाहने की इच्छा करने वालों ने यज्ञ दान और तपको नहीं त्यागने
के योग्य कहा है । ३ । हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन उस कर्म के त्यागने में
धैरेभी निश्चयको तू सुन हे पुरुषोत्तम त्यागतीन प्रकारका कहा है । ४ । यज्ञ दान तप

charity or mortifications, is called Asat; it is neither for this world
nor for the next. 28.

LECTURE XVIII

OF SALVATION

Arjuna.—I wish, O strongarmed ! to know the principle of
Sanyasa and of Tyaga, O Keshi-slayer. 1. Krishna.—Sages know
that Sannyasa means the forsaking of all actions; the wise say
that Tyaga is the forsaking of the fruits of every action. 2.
Certain philosophers declare that work should be abandoned as evil,
whilst others say that deeds of sacrifice, mortification and charity
should not be forsaken. 3. Hear from me, O best of Bharats, the
truth about this Tyaga. Tyaga, O tiger of men, is pronounced to
be of three natures. 4. Yajna, Dana and Tapas are not to

कर्म न त्याज्य कार्यं मेवतत् । यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥ ५ ॥
 यत्ना-यपि तु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा फलानि च । कस्तव्यानीति मे पार्थ निवृत
 मतमुत्तमम् ॥ ६ ॥ नियतस्य तु सन्यास कर्मणो नोपपद्यते । मोहात्तस्य परि
 त्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥ ७ ॥ दुःखमित्येव यत् कर्म फलद्वेषात्तपसात्तप
 जेत् । स कृत्वा राजस त्याग नैव त्यागफल लभेत् ॥ ८ ॥ कार्यमित्येव यत्
 कर्म नियतं कुरुतेऽर्जुन । सङ्गं त्यक्त्वाफलञ्चैव सत्याग सात्त्विको मतः ॥ ९ ॥
 न द्रष्टव्यं कुशलं कर्म कुशले नानुपज्जते । त्यागी सत्त्वसद्भावियो मेधावी ह्यथस
 शयः ॥ १० ॥ न हि ददभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः । यस्तु कर्मफलत्यागी
 त्यागीत्यभिधीयते ॥ ११ ॥ अनिष्टमिष्ट मिश्रञ्च निवृत्तं कर्मणः फलम् । भवत्य

और कर्म यह चारों त्यागके योग्य नहीं है वह अवश्य करनेकेही योग्य है क्योंकि
 यज्ञ दान तप बुद्धिमानों के मनको पवित्र करनेवाले है । ५ । संगको और कर्म
 फलों को त्याग करके यज्ञ दान तपादिक कर्म करने के योग्य हैं यह मेरा संमत
 अत्यन्त निश्चय किया हुआ उत्तम है । ६ । करने के योग्य कर्मोंका त्याग उचित
 नहीं है मोह से उसका त्याग करना तामसी कहागया है । ७ । यह कर्म दुःख रूप
 है ऐसा मानकर शरीरके क्लेशके भयसे जो त्याग करता है वह इस राजसी त्याग
 के चिह्न शुद्धी रूपफलको नहीं पाता है । ८ । हे अर्जुन कर्मको करने केही योग्य
 मानकर संगफलको त्यागके जो कर्म किये जाते हैं उसको सात्त्विकी त्यागमाना है
 । ९ । दुःखदाई कर्म को बुरानही कहता और सुखदायी कर्ममें प्रीति नहीं करता राग
 द्वेष से रहित सतोयुष्ण से भरा हुआ त्यागी अर्थात् संन्यासी है बुद्धिका स्वामी
 होकर छिन्न संशय कहाजाता है । १० । देहाभिमानी से सर्व कर्म त्यागकरने महा
 कठिन और असंभव है जो कर्मोंके फलोंका त्यागी है वही त्यागी कहाजाता है । ११ ।
 जो त्यागी नहीं है उनके कर्मों का फल मरने के पीछे तीनप्रकारका होता है अर्थात्

for sale on they should be performed, for Sacrifices, charity, and mortifi-
 cation are purifiers of the philosopher 5 It is my ultimate
 opinion and decree that such works as those ought to be done
 forsaking attachment and fruit: Renunciation of works which are
 prescribed, is improper. The forsaking of them through delusion
 is considered as Tamasa. 7 The forsaking of a work because it is
 painful, and from the dread of bodily affliction is Rajas and he
 who thus leaves it undone, derives no benefit from it. 8 The
 work which is performed as a duty, forsaking attachment and
 fruit, that forsaking is deemed Satwic 9 The conqueror imbued
 with Satwa wise and free from doubt, is neither vexed at adver-
 sity nor exults in success. 10 No corporeal being is able totally to
 restrain from works. He is denominated a Tyger, who forsakes
 the fruit of action. 11 The fruit of action is threefold good, evil

त्यागिनोऽप्येत्य न तु सन्न्यासिनां वाचत् ॥ १२ ॥ पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि
निबोधमे । सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥ अधिष्ठानं तथा
कर्त्ताकरणञ्च पृथक्त्वधम् । विविधाश्च पृथक् चेष्टा देवं चैवात्र पञ्चमम् ॥ १४ ॥ शरीर
वाङ्मनोभिर्यत् कर्म प्रारभते नरः । न्यार्यं वा विपरीत वा पञ्चैते तस्यहेतवः
॥ १५ ॥ तत्रैवं सति कर्त्तारत्मात्मानं केवलन्तुयः । पश्यत्यकृतबुद्धित्वात्प्र स पश्यसि
दुर्मतिः ॥ १६ ॥ यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न तल्पते । हृत्पाप स
इमोल्लोकात्प्र हान्ति न निवध्यते ॥ १७ ॥ ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचो
दना । करणं कर्म कर्त्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥ ज्ञानं कर्मच कर्त्ता च
त्रिविधैव गुणभेदतः । प्रोच्यते गुणसंन्याने यथावच्छृणुशान्यपि ॥ १९ ॥ सर्वभूतेषु
अच्छा दुरा और मध्यम परन्तु संन्यासियों का कुछ नहीं होता है । १२ । हे महा-
बाहु सबकर्मों के सिद्धी के लिये यह पांचकारण सांख्य शास्त्रों में कहे हैं । १३ ।
स्थूल शरीर, कर्त्ता और दशोइन्द्री और नानाप्रकारकी पृथक् २ चेष्टा और इन में
पांचवें देव हैं । १४ । मनुष्य जो कर्म धर्मरूप वा अधर्मरूप मनवाणी और देहके
द्वारा प्रारंभ करता है उसी के यह पांचों हेतु हैं । १५ । ऐसी दशाहोने पर जो
बुद्धिकी म्लानता से केवल आत्माको कर्त्ता देखता है वह पाप रूप बुद्धिरखने
वाला नहीं देखता है । १६ । मैं कर्म का कर्त्ता हूँ जिसको कि यह अहंकार नहीं है
और जिसकी बुद्धि उस में लिप्तनहीं होती है इनलोकों कोभी जितकर नहीं मारता
है और न बन्धनमें होता है । १७ । ज्ञान ज्ञेय और परिज्ञाता यहतीन प्रकारवाले
कर्मों की चेष्टा होती हैं इन्द्रियां कर्म और कर्त्ता यह तीन प्रकार के कर्मों के निवास
स्थान हैं । १८ । ज्ञान कर्म कर्त्ता गुणों के विभागसे सांख्यशास्त्र में तीन प्रकार
के कहे जाते हैं इनकी भी व्यवस्थाको सुन । १९ । जिस ज्ञान से पृथक् रूपवाली

and mixed, which befalls, after death to the non relinquisher, but never to the relinquisher. 12. Learn, O Arjuna, these five causes for the accomplishment of all actions, declared in the Sankhya system. 13. The body, the actor, the implements of various sorts, several contrivances, and fifthly Providence. 14. The work which a man does, either with his body, speech or mind, whether lawful or unlawful, has these five causes. 15. He then who after this because of the imperfection of his judgment, beholds no other agent, than himself, is of unsound mind and sees not. 16. He who is free from pride, and whose judgment is not affected, although he should destroy those people, neither kills nor is bound. 17. Knowledge, knowable and knower are the three motives to action; the means, the action and the agent are the factors of action. 18. Knowledge, action, and agent are each distinguished in the category of qualities by the influence of the three Gunas. Hear their true nature.

येनैक भावमव्ययमाक्षते । अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धिसात्विकम् ॥ २० ॥
 पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नागाभाषान् पृथग्विधान् । वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं
 विद्धि राजसम् ॥ २१ ॥ यत्तु कृत्स्नवदेकभिन्नं कार्थ्यं सकलहेतुकम् । अतत्कार्यं
 षट्स्वप्न तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥ निपतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् । अफलमे
 एतुना कर्म यत्तत् सात्विकमुच्यते ॥ २३ ॥ यत्तु कामप्सुनाकर्म साहङ्कारेणवापुन ।
 क्रियते बहुलापास तद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥ अनुबन्धं क्षयं हिंसामनप्रेक्ष्य च
 पौरुषम् । मोहादारभ्यतके गर्भत्तत्तामसमुच्यते ॥ २५ ॥ मुक्तसंगो नहं वादी
 घृत्युत्साहसमान्वतः । सिद्ध्यासद्वयोर्निर्विकारः कर्त्तासात्विकउच्यते ॥ २६ ॥
 रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसाभक्तोऽशुचिः । हर्षशोकान्वतः कर्त्ता राजसः

छाष्टि में न्यूनाधिकता रहित विना भेद एक चिन्मात्र रूपको देसता है उस ज्ञानको सात्विकी जानो । २० । जिसज्ञान से सब छाष्टि में अनेक भाव भिन्न प्रकार के जानता है वह ज्ञानराजसी है । २१ । और जो ज्ञान एक कार्य में परिपूर्ण के समान प्रष्टच है वह हेतु से रहित परमार्थ सिद्धान्त नहीं है वह ज्ञानतामसी है । २२ । कर्म फल न चाहने वाले पुरुषसे जो शास्त्रोक्त कर्म सदैव संग और राग द्वेषसे रहित किया जाता है वह सात्विकी कहाजाता है । २३ । फिर फलकी इच्छा रखने वाले जो अत्यन्त परिश्रम का कर्म अहंकार युक्त होकर करते हैं वह राजसी कहाता है । २४ । जो परिणाम फल और धनका स्वर्च वा दूसरेका कष्ट वा अपनी सामर्थ्यके बल का विचार न करके मोहसे कर्म किया जाता है वह तामसी है । २५ । संग रहित अपने को कर्त्ता न मानने वाला धैर्य्य और उत्साहसे पूर्ण कर्मों की सिद्धी वा असिद्धी में विपरीत दशासे रहित है ऐसा कर्त्ता सात्विकी कहाता है । २६ । विषयों में मीति रखनेवाला दूसरेके धनका लोलुप पर पीड़ा

19 That knowledge is satwik by which one indestructible being is seen in all beings, indivisible in the divisible 20. That knowlego is Rajas, which regards among all beings, plurality in substance, and variety in quality, as distinct 21 That knowledge is Tamas, which clings to a single object as if it were the whole, without reason, without grasping the reality and narrow 22. That action is Satwik which is done as duty by one who does not desire for fruit, without attachment, love or hate 23 That action is Rajas which is performed to gratify desire by selfishness with great effort 24 The action is Tamas, which is undertaken through ignorance and folly, and without any fore sight of its fatal and injurious consequences. 25 The actor is Satwik, who is free from attachment, pride and arrogance, is endowed with fortitude and resolution, and is unaffected by success or failure 26 That actor is Rajas, who is ambitious,

परिकीर्तित ॥ २७ ॥ अयुक्त प्राट्टत त्वय्य दाढो नैकृति कोऽलस । विपादीर्दीर्घ
 सूत्रीच्च कर्त्ता तामस उच्यते ॥ २८ ॥ बुद्धेर्भेदं घृतेधैव गुणतत्त्वविधौ शृणु । प्रोच्य
 मानमशपेण पृथक्त्वेन घनंजय ॥ २९ ॥ प्रवृत्तिच निवृत्तिच कार्या कार्ये भयामये ।
 बन्ध मोक्षञ्च या वेत्ति बुद्धि सा पार्थ सात्विकी ॥ ३० ॥ यथा धर्ममधर्मञ्च कार्येणा
 कार्ये मेव च । अयथाघत् प्रजानाति बुद्धि सा पार्थ तामसी ॥ ३१ ॥ अधर्मं धर्मं मितिया
 मन्यते तमसावृता । सर्वाणान् विपरीतान्श्च बुद्धि सा पार्थ तामसी ॥ ३२ ॥ धृत्यापया
 धारयते मनप्राणेंद्रिय तक्रया । योगेनाव्यभिचारिण्या धृति सा पार्थ सात्विकी ॥ ३३ ॥
 यथाधुधर्मं कामार्थान् धृत्याधारयतेऽनुन । प्रसङ्गेन फलाकांक्षी धृति सा पार्थ राक्षसी

देनेवाला अपवित्र प्रिय अप्रिय मिलने में प्रसन्न और सुख दुःख से संयुक्त कर्त्ता
 राजसी कहा जाता है । २७ । असावधान, प्राकृत, किसी का आदर न करनेवाला,
 शठ, छली, दूसरे का अपमान करनेवाला, कार्यासक्त, आलसी, विपादी, दीर्घसूत्री
 ऐसा कर्त्ता तामसी कहा जाता है । २८ । हे अर्जुन गुणों से बुद्धि और धैर्य के
 तीन प्रकारके भेद मैं तुमसे पृथक् २ करके कहता हूँ उन सबों को सुनो । २९ ।
 जो बुद्धिमान प्रवृत्ति निवृत्ति कार्य अकार्य भय निर्भयता कर्म संबंध बंधन और
 मोक्षको जानते है वह सात्विकी होते हैं । ३० । जिस बुद्धिसे धर्माधर्म और का-
 र्याकार्य को खदित और संदिग्ध जानता है उसकी राजसी बुद्धि कहाती है । ३१ ।
 हे अर्जुन जो अज्ञानसे ढकीहुई बुद्धिसे अधर्म को और मय अर्थों को उल्टा मानते
 है उनकी बुद्धि तामसी कहाती है । ३२ । जो चित्तवृत्ति के रोकने के द्वारा जिस
 समाधि में प्रवृत्तहोकर धैर्यता से मनप्राण और इन्द्रियों की क्रियाओं को दूरतक
 नियत करताहै वह धैर्य सात्विकी है । ३३ । हे अर्जुन जिस धैर्य से धर्म अर्थ
 कामों को करता है, अथवा धर्मादि के संबंध से फल का आकांक्षी है वह राजसी

who longs for the fruit, who is avaricious, cruel, impure, and a
 slave to joy and grief 27 The agent is Tamas who is inattentive,
 vulgar, stubborn, dissembling, mischievous, indolent, melancholy,
 and dilatory 28 Hear Dhananjaya! the threefold divisions of
 understanding and firmness, according to the Gunas, which are
 about to be explained to thee distinctly and without reserve 29
 The understanding which can determine action and inaction
 duty and non-duty, fear and non fear, liberty and bondage, is
 Satwic 30 That understanding is Rajas, O Partha! which does not
 conceive justice and injustice, duty and non-duty 31 That understand-
 ing is Tamas which, overwhelmed in darkness, mistakes injustice
 for justice, and sees all things subverted. 32. That is Satvik
 firmness of unerring yog by which one restrains the activity of the
 mind and organs. 33. That interested firmness is Rajas by which
 a man, from views of profit, persists in Dharm, pleasure and

॥ ३४ ॥ यथा स्वप्न भयं शोकं विषादं मदमेव च । न विमुञ्चति दुर्मैघा हृतिः सा पार्थ
 तामसी ॥ ३५ ॥ सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ । अभ्यासाद्भ्रमते यत्र दुःखा
 न्तञ्च निगच्छति ॥ ३६ ॥ यत्तदग्र विषमिव पारणामेऽमृतोपमम् । तत् सुखं सात्त्विकं
 प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ ३७ ॥ विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् । परिणामे
 विषमिव तत् सुखं राजसंभूतम् ॥ ३८ ॥ यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहममात्मनः ।
 निद्रालस्यप्रमादोत्थं तच्चामसमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥ न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु
 चापुनः । सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात् त्रिभिर्गुणैः ॥ ४० ॥ ब्राह्मणज्ञान
 यविदां शूद्राणाञ्चपरन्तप । कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ ४१ ॥

धैर्यं है । ३४ । जिसकी बुद्धि विगड़ी हुई है वह जिस धीरज से स्वप्न, भय, दुःख
 व्याकुलता और चिन्तकी अस्वाधीनता को धारण करता है वह धैर्यता तामसी
 कही जाती है। ३५ । हे भरतवंशी अर्जुन अब उन तीन प्रकारके सुखोंको कहता हूँ जिन
 सुख समाधिओं में अभ्यास करके रमता है और दुःखके अन्त होनेपर मोक्षको पाता
 है । ३६ । जोकि वहसुख प्रथम विष के समान अन्तमें अमृत के समान होता है वह
 बुद्धि की निर्मलता से उत्पन्न हुआ सात्त्विकी सुख कहलाता है । ३७ । जो विषय
 इन्द्रियों के योगसे आदि में अमृत के समान है और अन्त में विष के तुल्य है उस
 सुखको राजसी कहते है । ३८ । जो स्वप्न आलस्य और भूल से उत्पन्न हुआ
 सुख है वह आदि में और अन्त में बुद्धिको भूलानेवाला है वह तामसी है । ३९ ।
 वह पृथ्वी के जड़ चैतन्य जीवों में और स्वर्ग के देवताओं में भी नहीं है जोकि
 तीनों गुणों से रहित प्रकृतिवाले श्रेय । ४० । हे शत्रुहन्ता अर्जुन स्वभाव जन्य
 गुणों के कारण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रों के पृथक् २ कर्म होते है । ४१ ।

wealth 34 That firmness is Tamas by which a fool departs not from
 sloth, fear, grief, melancholy, and folly 35 Now hear from me,
 Bharatarshabh, the three kinds of pleasure That pleasure which
 a man habitually enjoys, wherein he finds the end of his pains, that
 which in the beginning is as poison, and in the end as nectar
 and which springs from the blissful knowledge of self, is called
 Sattvik 37 That pleasure is Rajas which arises from the conjunction
 of the organs with the objects, which in the beginning is as nectar
 and in the end as a poison. 38 That pleasure is Tamas which in
 the beginning and the end stupefies the soul, and which arises
 from drowsiness, idleness, and heedlessness 39 There is no
 thing on earth or amongst the hosts of heaven, which is free from
 the three Gunas born of matter 40 The respective duties of Brah-
 manas, Kshatriyas, Vaishyas, and Shudras, are also dete
 15 the qualities which are in their constitutions. 41

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च । ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं प्रज्ञाकर्मस्वभा
 वजम् ॥ ४२ ॥ शौर्यं तेजो धृतिर्हास्यं युद्धे चाप्यपलायनम् । दानमीश्वरभावश्च
 क्षान्तिकर्म स्वभावजम् ॥ ४३ ॥ द्वापिगौरद्वयवागिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।
 परिश्रयार्थकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥ ४४ ॥ स्ये स्ये कर्मण्यभिरतः
 संसिद्धिं लभते नरः । स्वकर्मानिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥ ४५ ॥
 यतः प्रवृत्तभूतानां येन सर्वमिदं ततम् । स्वकर्मणा तमश्चर्यं सिद्धिं विन्दति
 मानवः ॥ ४६ ॥ श्रेयान् स्वधर्मा विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् । स्वभावनि-
 यतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किञ्चिदपम् ॥ ४७ ॥ सहजं कर्म कौन्तेय सद्योपमपिन
 त्यजेत् । सर्वारम्भाभि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥ ४८ ॥ असक्तबुद्धेः सर्वथ

शम, दम, तप, शौच, क्षान्ति, आर्जव, ज्ञान, विज्ञान, अद्धा यह पूर्व जन्मके संस्कार
 से उत्पन्न हुये ब्राह्मण के कर्म हैं । ४२ । पराक्रम, तेज, धैर्य, चातुर्यता, युद्धके
 सम्मुख होकर न भागना, ईश्वरभाव अर्थात् अपराधियों को दण्डदेना यह
 क्षत्रियों के पूर्वजन्म संस्कार और स्वभावज कर्म हैं । ४३ । खेती गौकी रत्ना
 पोषण वनज यह वैश्यके स्वाभाविक कर्म हैं और सेवा करना आदिक शूद्रके
 स्वाभाविक कर्म कहेजाते हैं । ४४ । अपने अपने कर्ममें प्रीति करनेवाला मनुष्य सिद्धि
 को पाता है और जैसे अपने कर्म में प्रीति रखनेवाला मुख्य सिद्धि को पाता
 है उसको भी मैं कहता हूँ । ४५ । जिस अन्तर्पामी से जीवों की प्रवृत्ति है और
 जिससे यह सब जगत् भी व्याप्त है उसको मनुष्य अपने कर्मों से पूजन करके
 मोक्षरूपी सिद्धि को पाता है । ४६ । दूसरे के उत्तम धर्म से अपना धर्महीन
 भी श्रेष्ठतम है स्वभाव जन्य कर्मों के करने से पापका भागी नहीं होता है । ४७ ।
 हे अर्जुन स्वाभाविक दोषोंसे युक्त कर्मकाभी त्यागनकरे क्योंकि सब कर्मों के मारंभ

duties of the Brahmans are peace, self-restraint, austerity, purity, patience, rectitude, wisdom, learning, and theology. 42. The natural duties of the Kshatriya are bravery, glory, fortitude, rectitude, not to flee from the field, generosity, and princely conduct. 43. The natural duties of the Vaishya are agriculture, cattle-farming, and commerce. The natural duty of a Shudra is service. 44. Each man devoted to his own duty obtains perfection. Hear, how that perfection is to be accomplished. 45. One who makes an offering of his own works to that Being from whom all beings proceed, and by whom the whole universe is pervaded, obtains perfection. 46. One's own duties, destitute of merit, are preferable to the duty of another however well pursued. One following the duties which are appointed by his birth, incurs no sin. 47. One's own calling, with all its faults, ought not to be forsaken. Every

द्वितात्मा विगतस्पृहः । नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ॥ ४९ ॥
 सिद्धिं प्राप्नोति यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे । समासेनैव कौन्तेय निष्ठाज्ञानस्य
 चापरा ॥ ५० ॥ पुद्गवा विशुद्धया युक्तो घृत्वात्मानं नियम्य च । शब्दादीन् वि-
 पय्यास्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥ ५१ ॥ विविक्तसेवी लज्जवाशी यतवाक्काय
 भागवतः । ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥ ५२ ॥ अहङ्कारं बल वपं
 कामं क्रोधं परिग्रहम् । विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ ५३ ॥
 ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति । समः सर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिं लभते
 पराम् ॥ ५४ ॥ भक्त्या मामभिजानाति यावान् यश्चास्मि तत्त्वतः । ततोमां

दोषों से ऐसे आच्छादित हैं जैसे कि अग्नि धुँसे । ४८ । सब पदार्थों में बुद्धि न
 लगाने वाला शान्त चित्त अत्यन्त लोभ और इच्छा से रहित संन्यास के द्वारा उस
 परम सिद्धिको पाता है जो कर्म के त्याग और ब्रह्मज्ञान से सम्बन्ध रखने वाली है
 । ४९ । हे अर्जुन जैसे कि वैराग्य सिद्धि को पाने वाला ब्रह्मको पाता है उसका
 वृत्तान्त मुझसे सुनो वह वृत्तान्त ज्ञानकी परानिष्ठा है । ५० । अत्यन्त शुद्ध बुद्धिके
 द्वारा धैर्यतासे शरीर और इन्द्रियोंके समूहको भाणों समेत स्वाधीन कर के अर्थात्
 दृढ़ आसन से शब्दादि विषयोंको त्यागकर रागद्वेष रहित हो और अहंभावको दूर
 करके सदैव एकान्त वासी अल्पाहारी मनको जीतनेवाला वैराग्य युक्त सदैव ध्यान
 योग में प्रवृत्त, अहंकार बलक्रोध इच्छा और आत्म भावरूपी परिग्रहको छोड़कर
 शान्तरूप होकर ब्रह्मभाव के योग्य होता है । ५३ । ब्रह्मरूप योगी प्रसन्नचित्त
 होकर न शोच करता है न इच्छा करता है और सबजीवमात्रोंमें समदर्शी होता है
 वह मेरी पराभक्तिको पाता है । ५४ । उस भक्ति के द्वारा ज्ञानी पुरुष जैसा मैं

तस्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥ ५५ ॥ सर्वकर्मण्यपि सदा कर्वाणो भद्रयथा
 भयः । मत्प्रसादाद्वाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥ ५६ ॥ चेतसासर्वकर्मोप
 मयि संन्यस्य मत्परः । बुद्धियोगमवाश्रित्य मच्चित्तः सततं मय ॥ ५७ ॥
 मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्परिष्यसि । अथ चेत्प्रमद्वृत्ताराप्रशोष्यसि विनेह्यसि
 ॥ ५८ ॥ यद्ग्रहंकारमाश्रित्य नयोत्स्यसि मन्वसे । मय्यैव व्यवसायस्ते प्रकृति
 स्त्वानिपोहयति ॥ ५९ ॥ स्वभावेन कौन्तेय नियतः स्वेन कर्मणा । कर्तुनेच्छसि
 यन्मोहात्कारिष्यस्यशोपि तत् ॥ ६० ॥ ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
 भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥ ६१ ॥ तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन

वास्तव में हूँ वैसाही ठीक जानता है तदनन्तर मुझको मूल समेत जानकर मुझ में
 ही समाता है । ५५ । उसप्रकारका ज्ञानी मुझ में निवास करने वाला सदैव सब
 कर्मों को भी करता हुआ मेरी कृपासे आविनाशी सनातन मोक्षपदको पाताहै । ५६ ।
 विवेकबुद्धि से सब कर्मोंको मुझ में अर्पणकरके मुझको उत्तमलय स्थान जाननेवाला
 बुद्धि-योगमें प्रवृत्त होकर सदैव मुझी में चित्तका लगानेवालाहो । ५७ । मुझ में
 चित्त लगाकर तू सब कठिनताओं से तरेगा और जो तू अहंकार से मेरे वचनको
 नहीं मुनेगा तो नाश पावेगा । ५८ । जो अहंकार में प्रवृत्त होकर तू मानता है कि
 मैं नहीं लडूंगा यह तेरा निश्चय करना मिथ्याहै तेरा क्षत्री स्वभाव तुझको युद्ध में
 प्रवृत्त करेगा । ५९ । हे अर्जुन स्वभाव से उत्पन्न होने वाले अपने कर्मों से बँधा
 हुआ तू जो अज्ञान से युद्ध नहीं करना चाहता है तो तू पराधीन के समान अवश्य
 उसको करेगा । ६० । हे अर्जुन ईश्वर सब सृष्टि के हृदयस्थानमें निगदेहनाम यन्त्र
 पर आरूढ़ होनेवाला अपनी मायासे सबजीवों को ऐसे घुमाताहै जैसे कुम्हार चाक
 को । ६१ । हे भरतवंशी सब भाव से उसी ईश्वरकी शरणमें जाओ उसकी कृपा से तू

knows well who and what I am; having thus discovered who I am
 he at length is absorbed in my nature. 55. Doing all works, with
 trust in me alone, he shall by my grace, obtain the eternal and infi
 nite state; 56. With thy heart dedicate all thy works to me;
 and resorting to Buddhi-yog, think constantly of me. 57. Think
 ing of me, thou shalt, by my grace, surmount every difficulty. But if
 from egoism thou wilt not listen, thou shalt perish 58. If from self-
 sufficiency thou resolvest that thou wilt not fight, vain will be thy
 determination, for nature will impel thee. 59. Being bound, Kaun-
 teya! to action by the duties of thy natural calling, thou wilt in-
 voluntarily do that which thou wantest, through ignorance, to avoid.
 60. Ishwara resides in the breasts of all beings, revolving with his
 maya all beings, as if mounted on a potter's wheel. 61. Take sanctuary

अविता मयने तन्मादप्य-प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥ अध्येष्यते चय इमं धर्मसंवाद
 कृष्याः । ज्ञानयत्नेन तन्माह मिष्टः स्यात्प्रगति मे गतिः ॥ ७० ॥ अथावागनस्यश्च
 कृषुपादपिबो वरः । सोऽपि मुक्तः शुभाँहोकात् प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥
 कश्चिदेतच्छुतुं पार्थ त्वयैकाग्रोचचेतसा । कश्चिद्भ्रान्तमोहः प्रनष्टस्ते घगञ्जय ७२ ॥
 अर्जुन उवाच । नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत । स्थितोऽस्मि मत्त
 सन्देशः करिष्ये वचनं तव ॥ ७३ ॥ संजय उवाच । इत्यहं ब्राह्मदेवस्य पार्थस्य
 व महत्प्रमनः । संवादिमिममश्रीपद्भुतम् लोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥ व्यासप्रसादाच्छ्रुत
 धानेतरगुह्यमहं परम् । योगं योगेश्वरात् कृष्णात् साक्षात् कथयतः स्वयम् ॥ ७५ ॥

अधिक सुमको प्यारा पृथ्वीपर कोई नहीं होगा (६९) जो हमदोनोंके इस धर्मरूप
 उपारख्यान को पढ़ेगा मैं उस ज्ञानयज्ञ निर्विकल्प समाधि के द्वारा उससे पूजित
 हूँगा (७०) अथावा न अन्य के गुणों में दोष न लगानेवालाजी यतुप्य इस गीता
 के श्लोकों को सुनेगा वहभी मुक्तहोकर पवित्रात्मा पुरुषों के शुभ लोकोंको पावेगा
 (७१) हे अर्जुन तुने प्रकृत्य चित्त होकर इस गीता शास्त्रको सुना और हे धर्म-
 जय तेरा मोह जनिता तव अज्ञान अब नष्ट होगया- (७२) अर्जुन बोले हे भवि
 नाशी आपकी कृपासे मेरा मोह दूर हुआ और स्थिति प्राप्त हुई अब मैं सन्देह से
 रहितहूँ इससे आपके वचनोंको कर्तंगा (७३) संजय बोले कि मैंने महात्मा वासु
 देवजी और अर्जुन के इस अपूर्व लोमहर्षण संवाद को सुना (७४) मैंने व्यासजी
 की कृपासे यह अत्यन्त गुप्त योग निज योगेश्वर श्रीकृष्णजी के मुख से सुना
 (७५) हे राजन् ! केदावजी के और अर्जुन के इस अपूर्व पुरायकारी

service than he, nor shall there be in all the earth one dearer to me
 69. He also who shall read these our religious dialogues, by him I
 shall be worshipped with the sacrifice of wisdom. This is my resolve.
 70. That man too who hears it without doubt, and with due faith, is
 released and shall obtain the blessed abodes of the righteous. 71
 Hast thou heard this O Arjuna! with thy mind fixed to one point?
 Is the distraction of thought, which arose from thy ignorance, removed?
 72. Arjun.—By thy grace, Achyuta! my delusion is destroyed
 and I have gained wisdom. I am now settled and freed from all
 doubts; I will do thy bidding." 73. Sanjaya.—In this manner
 I heard the astonishing and miraculous conversation between
 Vasudeva, and the magnanimous son of Pandu, 74. I heard
 this supreme and-miraculous doctrine even as revealed from the mouth
 of Krishna himself, the lord of Yog, by the favor of Vyasa. 75. As,
 O mighty Prince! I recollect again and again this holy and wonder-

भारत । तत्प्रसादान्पराशान्तिं इषानं प्राप्यासि शाश्वतम् ॥ ६२ ॥ इति ते ज्ञान
 मात्प्राप्तं गुह्याद्गुह्यतरमया । विमृश्यैतद्दशोपेण तथेच्छति तथा कुरु ॥ ६३ ॥ सर्वगुह्यतमं
 भूयः शृणु मे परमं वचः । इष्टोऽस मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ॥ ६४ ॥
 मन्मनाभवमद्भक्तो मद्याज्ञी मां नमस्कुरु । मामेवैष्यासि स्वत्यन्ते प्रतिजानेप्रियोसिमे
 ॥ ६५ ॥ सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहंवा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि
 मा शुच ॥ ६६ ॥ इदन्तेनात्रपस्काय नाशकाय कदाचन । नचाशुभ्रपवेवाच्यं
 नचमां योज्यसूयति ॥ ६७ ॥ यद्दं परमं गुह्यं मद्भक्तैर्वाभिधास्यति । भक्तिं प्रापि
 पराङ्कृत्या मामेवैष्यत्यसशयः ॥ ६८ ॥ नच तस्मान्मनुष्येषु काश्चनमेवियुक्तमः ।

अविनाशी पराशान्ती मोक्ष को पावेगा । ६२ । मैंने यह गुह्य से गुह्य ज्ञान तुम से
 कहा इस सबको अच्छी रीतिसे विचारकर जैसा चाहो वैसा करो । ६३ । फिर सब
 से गुह्यतम मेरे उत्तम वचनोंको सुनो तू मेरा बड़ाप्यारा है इसकारण मैं तेरेपरमहित
 को कहूंगा । ६४ । मुझ मेंही चित्तसे लगाहुआ तू मेराभक्तहोकर मेरेहीनिमित्त कर्मका
 करने वालाहोकर मुझको नमस्कारकर मुझमेंही लयहोगा यह मैं सत्यही प्रतिज्ञा
 करताहूँ क्योंकि तू मेरा बड़ाप्यारा है । ६५ । सब धर्म और कर्म और सुख दुःखादि
 को अत्यन्त त्यागकर मुझ अकेले की शरण को प्राप्तकर मैं तुम्हको सब पापों से
 मोक्ष करूंगा किसी बातका शोक मतकर । ६६ । जो तपसे रहित और भक्तिसे
 शून्य हैं अथवा मुझकी सेवासे बहिर्मुख होकर मेरी निन्दा करतेहैं उनसे कभी यह
 मेरा गुप्त ज्ञान कहनेके योग्य नहीं है । ६७ । जो इस मेरे गुप्तज्ञान को मेरेभक्तों
 में प्रचार करेगा वह मुझमें पराभक्ति को प्राप्तहोकर निश्चय मुक्ति को पावेगा
 । ६८ । मनुष्यों में इसगीता पढ़ानेवालेसे अधिक मेराकोई प्यारा नहीं है और उससे

with Him alone, O Bharata, for, by His divine pleasure thou shalt obtain supreme happiness and eternal abode. 62. Thus have I taught thee wisdom which is a superior mystery. Ponder it well in thy mind and act as thou wilt. 63. Attend now to my supreme and most mysterious words, which I will for thy good reveal to thee, because thou art dearly beloved of me. 64. Be of my mind, be my devotee, my worshipper, and prostrate before me, and thou shalt come to me; in troth I pledge thee; thou art dear to me. 65. Forsake all duties, and fly to me alone. Grieve not for I will deliver thee from all transgressions. 66. This is never to be revealed by thee to any one who is non-austere and loveless; nor to the undutiful, nor to him who despises me. 67. He who shall teach this supreme mystery to my devotees, will love me deeply and shall undoubtedly come to me. 68. There is not one amongst mankind who does me a greater

सविता मत्तमे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥ इत्येव्यते च य इम धर्म्यसंवाद
 ज्ञानयोः । ज्ञानयज्ञेन तेनाह मिष्टः स्वामिति मे मतिः ॥ ७० ॥ अज्ञानान्नस्यश्च
 शृणुयादपि यो नरः । सोऽपि मुक्तः शुभाश्लोकान् प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥
 कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेणचेतसा । कच्चिदज्ञानसम्मोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय ७२ ॥
 अर्जुन उवाच । नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत । स्थितोऽस्मि गत
 सन्देहः करिष्ये वचने तव ॥ ७३ ॥ सञ्जय उवाच । इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य
 च महात्मनः । संवादिमिममश्रौणद्भुतम् लोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥ व्यासप्रसादाच्छ्रुत
 वातेतद्गुह्यमहं परम् । योगं योगेश्वरात् कृष्णात् साक्षात् कथयतः स्वयम् ॥ ७५ ॥

अधिक मुक्तको प्यारा पृथ्वीपर कोई नहीं होगा । ६९। जो हमदोनोंके इस धर्मरूप
 व्याख्यान को पढ़ेगा मैं उस ज्ञानयज्ञ निर्विकल्प समाधि के द्वारा उससे पूजित
 होगा । ७०। अज्ञानान्न अन्य के गुणों में दोष न लगानेवालाजो मनुष्य इस गीता
 के श्लोकों को सुनेगा वहभी मुक्तहोकर पवित्रात्मा पुरुषों के शुभ लोकोंको पावेगा
 । ७१ । हे अर्जुन तूने एकाग्र चित्त होकर इस गीता शास्त्रको सुना और हे धन-
 जय तेरा मोह जानित सब अज्ञान अब नष्ट होगया । ७२ । अर्जुन बोले हे अवि-
 नाशी आपकी कृपासे मेरा मोह दूर हुआ और स्मृति प्राप्त हुई अब मैं सन्देह से
 रहितहूँ इससे आपके वचनोंको करूंगा । ७३ । सञ्जय बोले कि मैंने महात्मा वासु
 देवजी और अर्जुन के इस अपूर्व लोमहर्षण संवाद को सुना । ७४ । मैंने व्यासजी
 की कृपासे यह अत्यन्त गुप्त योग निज योगेश्वर श्रीकृष्णजी के मुख से सुना
 । ७५ । हे राजन् ! केशवजी के और अर्जुन के इस अपूर्व पुण्यकारी

service than he, nor shall there be in all the earth one dearer to me
 69.—He also who shall read these our religious dialogues, by him I
 shall be worshipped with the sacrifice of wisdom. This is my resolve.
 70. That man too who hears it without doubt, and with due faith, is
 released and shall obtain the blessed abodes of the righteous. 71
 Hast thou heard this O Arjuna! with thy mind fixed to one point?
 Is the distraction of thought, which arose from thy ignorance, removed?
 72. Arjun.—By thy grace, Achyuta! my delusion is destroyed
 and I have gained wisdom. I am now settled and freed from all
 doubts; I will do thy bidding.” 73. Sanjaya.—In this manner
 I heard the astonishing and miraculous conversation between
 Vasudeva, and the magnanimous son of Pandu, 74. I heard
 this supreme and-miraculous doctrine even as revealed from the mouth
 of Krishna himself, the lord of Yog, by the favor of Vyasa. 75. As,
 O mighty Prince! I recollect again and again this holy and wonder-

राजन् संस्मृत्यसंस्मृत्य संवादिमिमद्भुतम् । केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामिच मुहु-
मुहुः ॥ ७६ ॥ तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः । विस्मयो मे महान्
राजन् हृष्यामिच पुनः पुनः ॥ ७७ ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्धरः । तत्र
श्रीविजयो भूतिर्ध्रुवा नातिर्मातिर्मम ॥ ७८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि सू० ब्र० श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
संन्यासयोगोनाम अष्टदशोऽध्यायः ॥ १८ ॥
पर्वणितु द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

॥ समाप्तं भगवद्गीतापर्वं ॥

संवाद को बारम्बार प्रसन्नता पूर्वक स्मरणकर आनन्द में मग्न होता हूँ । ७६ ।
हे राजन् हरि के उस अपूर्व रूपको बारम्बार स्मरण करके मुझको बड़ा
आश्चर्य है और बारम्बार प्रसन्न होता हूँ । ७७ । जिधर योगेश्वर श्रीकृष्णजी
और जिधर धनुषधारी अर्जुन हैं उधरही लक्ष्मी जय ऐश्वर्य और नीतिहै यहमेरा
निश्चय मत है ॥ ७८ ॥

ful dialogue of Krishna and Arjuna, I continue more and more to
rejoice. 76. And as I recall the miraculous form of Hari, my astonish-
ment is great and I marvel and rejoice again and again! 77. Wherever
Krishna the lord of yog may be, wherever Arjuna the mighty bow-
man may be there shall eternally dwell fortune, power, victory, and
virtue. This is my firm belief. 78.



॥ अथ भीष्मवधपर्व ॥

सञ्जय उवाच । ततो घतत्रयं दृष्ट्वा घाणगांडीवघोरारणम् । पुनरेव महानादं
 ध्वस्तजन्त महारथाः ॥ १ ॥ पाण्डवाः सोमकाश्चैव येचैवामतुर्पायिनः । दध्मुश्च
 मुदिताः संखान् धीराः सागरसम्भवान् ॥ २ ॥ ततो भैर्यश्च पश्यश्चक्रकचा गोवि-
 पाणिकाः । सहसैवाभ्यहन्यंत ततःशब्दोमहान् भून् ॥ ३ ॥ तदा देवाः समन्धर्वाः
 पितरश्च जनाधिपः । बिद्धचारणसंश्च समीयुस्तेदिदृक्षया ॥ ४ ॥ ऋषयश्चमहा
 आगाः पुरस्सृत्य शतक्रतुम् । समीयुस्तत्र सहिता द्रष्टुं तद्वैशसं महत् ॥ ५ ॥
 ततो युधिष्ठिरो दृष्ट्वा युद्धाय समवादिषते । तं सेने सागरप्रस्ये मुहुः प्रचालते
 नृप ॥ ६ ॥ विमुन्य कचवं धीरो निक्षिप्य च घरायुधम् । अघट्टारथात्क्षिप्रं
 पद्भ्यामेव कृताञ्जलिः ॥ ७ ॥ पितामहमाभिप्रेक्ष्य धर्मराजो युधिष्ठिरः । वाग्यतः

अध्याय ४३ ॥

संजयवाले कि तदनन्तर महारथियों ने बाणों सपेत गांडीव धनुषधारी
 अर्जुन को देखकर महाशब्द करना प्रारम्भ किया । १। पांडव वा संजय अथवा जो
 इनके पीछे चलनेवाले महायुधी वीर लोग थे उनसबों नेभी बड़े प्रसन्न चिह्नहोकर
 समुद्रोत्पन्न उत्तम २ शंखोंको ध्वनिकी । २। और इसीप्रकार भेरी कृकच गोविपाणक
 नाम सब-वाजे एकसाथही बजनेलगे और महातुमुल शब्द हुआ, तदनन्तर हे राजा
 घृतराष्ट्र देवता पितर, सिद्ध चारण आदि गन्धर्वों सपेत सब देवता युद्ध देखनेकी
 इच्छासे आपहुँचे, और महाभाग ऋषिनोगभी इन्द्रको अग्रभागमेंकरकेउस महाभारी
 नाशकेदेखने को वर्त्तमान हुये। ३। तदनन्तर हेराजन् वीर राजा धर्मराज युधिष्ठिर इन
 युद्धोंके लिये अच्छे प्रकार सन्नद्ध होकर सागरके समान वारम्भार चलायमान दोनों
 सेनाओं को देखकर, कचको उतार धनुष को त्याग शीघ्रही रथसे उतरकर पैदल
 ही हाथजोड़ेहुए पितामहकी ओर देखकर मौनता साधेहुये पूर्वार्धभिमुखहोकर

CHAPTER XLIII

Sanjaya continued:- Having seen Arjun, the great archer, once again with his Gandiv bow and arrows, the warriors raised a tremendous cry. The Pandavas, the Srinjayas and the other warriors who followed them, sounded their sea-born conch shells in great glee. Other musical instruments followed suit and the noise was great. Thereupon all the gods accompanied by Pitars, Sidhas, Charans and Gandharvas, came there to see the battle. The fortunate rishis, too, preceded by Indra, were present to witness that great destruction. Then the brave warrior prince, Yudhishtir the just, seeing those two armies like the waves of the ocean, put off his coat of mail and leaving the good bow on his chariot, he stood on foot looking towards the grandfather with joined Palms and then turning his face eastward,

[4458]

प्रपथी येन प्राङ्मुखो विपुवाहिनीम् ॥८॥ तं प्रयान्तमभिप्रेक्ष्य कुन्तीपुत्रो धनञ्जय । अथ
 तीर्थे रथा वर्णं भ्रातृभिः सहितोऽवयात् ॥९॥ वासुदेवधर्मगजात् पृथ्वीऽनुजगामनम्
 तथा मुखात् राजानस्तथिष्ठा जम्बूद्वीपम् ॥ १० ॥ अर्जुन उवाच । किंते उपवास
 संयजनं यदभ्यानपथायवे । पद्मवासेव प्रयातोसि प्राङ्मुखो विपुवाहिनीम् ॥११॥
 भीमसेन उवाच । इदमभिप्रास राजेऽहं निश्चितकवचायुष । दशितेष्वरिसैन्वेषु
 भ्रातृनुत्सुज्य पाथिय ॥ १२ ॥ नकुल उवाच । एव गते स्वयि ज्येष्ठे ममज्ञातार
 भारत । भीमे हुनोति हृदयं हृदि गन्ता भवान्कवचु ॥ १३ ॥ सहदेव उवाच ।
 अस्मिन् रणसमूहे वै चतैराने महाभये । उत्सुज्यस्वन्तु गन्तासि शत्रूनाममुखो
 ज्य ॥ १४ ॥ संजय उवाच । एवमाभाष्यमाणोपि भ्रातृभिः कुन्तनन्दन । गोवाच

शत्रुकी सेना में घुसाहुआ चला । ८ । उन धर्मराज को जाते हुए देखकर कुन्ती
 का पुत्र अर्जुन शीघ्रही रथसे उतरकर भाइयों सपत उसके पीछे चला और हे
 राजा वासुदेव जी उसके पीछे चले, तिस पीछे सब पृथ्वी के राजा अपने २ मनो-
 रथ सिद्ध करने की इच्छा से उसके पीछे चले । १० । अर्जुन बोले हे युधिष्ठिर
 आपका क्या निश्चय है जो हम लोगों को त्याग करके पैदल होकर पूर्वार्धमुख
 शत्रुओं की सेना में जाते हो, भीमसेन बोले हे राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर आप कवच
 और शस्त्रों को त्यागकर भाइयों को छोड़ कर शस्त्रोंसे सन्नद्ध शत्रुओं की सेना के
 मुखों में कहां को जाओगे, नकुल बोले हे भरतवंशी आप सरीके मेरे बड़ेभाई
 को इसप्रकार से जानेपर बड़ा भारी भय मेरे हृदय को पीड़ित करता है चाहिये
 आप अब कहां जाओगे सहदेव बोले हे राजा इस महा भयकारी युद्ध करने के
 योग्य शत्रुकी सेनाके समूह के सम्मुख होकर कहां जातेहो । १४ । संजय बोले कि हे
 कौरव नन्दन धृतराष्ट्र भाइयों के इस प्रकार से कहने परभी मौन हुए अवाक् होकर

he walked to enter the forces of the enemy. 8. Seeing him thus pro-
 ceeding onward, Arjun the son of Kunti at once leaped from his
 chariot and with the other brothers followed him. Vasudev too follow-
 ed Arjun's example and was followed by other kings who were intent
 on doing their duty 10 "What do you intend to do, that you
 are so leaving us and going eastward on foot amongst the enemy?"
 said Arjun to Yudhishtir. "Where will you go, prince Yudhishtir,
 the prince of princes! leaving your armour, weapons and brothers and

पागृतः किञ्चिद् गच्छत्येव युधिष्ठिरः ॥ १५ ॥ तानुवाच महाप्राज्ञो वासुदेवो महामनाः ।
 आभिप्रायोऽस्य विज्ञातो मयेति प्रहसन्निव ॥ १६ ॥ एषभीमं तथाद्रोणं गीतमशय
 मेवच । अनुमान्य गुरुन् सर्वान् योत्स्यते पार्थिवारिभिः ॥ १७ ॥ श्रूयते हि पुरा
 कल्मेशुगुरुननुमान्ययः । युष्पते सभवेद्व्यक्त मपध्यातोमहत्तरैः ॥ १८ ॥ अनुमान्य
 रथाशास्त्रं यस्तु युधेनेमहत्तरैः । ध्रुवस्तस्य जयो युजे भवेदिति मतिर्मम ॥ १९ ॥
 एवं भवति कृष्णेन धार्तराष्ट्र्यमुं प्रति । हाहाकारोऽहानासीन् निःशब्दास्त्यपरे-
 भयन् ॥ २० ॥ दृष्ट्वायुधिष्ठिरं दूराद्धारतराष्ट्रस्य सैनिकाः । मिथःसंकथयाम्बुजुरेपो
 हि कुलपांसनः ॥ २१ ॥ व्यक्तं भीतइवान्वेति राजासौ भीष्ममान्तकम् । युधि
 ष्ठिरः ससोदर्यः शरणार्थं प्रयाचकः ॥ २२ ॥ धनञ्जये कथं नाथे पांडवेच वृको

चला जाता था, तथतो वड़े साहसी वासुदेवजी ने वड़े मसन होकर कहा कि मैंने इस के चित्तकी इच्छा को जाना, यह युधिष्ठिर भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य और शल्य आदि सब गुरुओं की प्रतिष्ठा पूर्वक परिक्रमा करके उनसे आज्ञाको मांग कर युद्धमें शत्रुओं से लड़ेंगे। १७। प्राचीन शास्त्र में सुनाजाताहै कि जो बांधवोंसमेत गुरु वृद्धों को शास्त्रके अनुसार प्रतिष्ठा देकर अपने से बड़ों के साथ युद्ध करे निश्चय करके युद्धमें उनकी विजय होती है यह मेरामत है, श्रीकृष्ण जी के इस प्रकार कहनेपर शत्रुओं की सेना में बड़ा हाहाकार शब्द हुआ और पाण्डव लोगों के पत्नी राजा लोग चुप होगये दुर्योधन की सेना के वीरों ने युधिष्ठिर को देखकर परस्पर में वार्त्तालाप की कि यह कुलकाकलंक है, प्रकट है कि यह राजा युधिष्ठिर भाइयों समेत भयभीत के समान भीष्मजी की शरण लेनेके निमित्त आता है । २१ । पांडव युधिष्ठिर अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव चारों भाइयों समेत किस प्रकार से भयभीतता होकर सम्मुख आना है निश्चय है कि यह पृथ्वीपर मसिद्ध

without giving any reply. Thereupon Vasudev of great energy said in excess of cheer, "I know what passes in his mind. Yudhishtir, will pay his respects to and take the permission of his elders, Bhishm Kripa and Shalya, before the fight begins. 17. We see in old books that he who fights against his elders after paying his respect to them according to the shastras, will surely win victory, and I am of the same opinion." At these words of Shree Krishn, the warriors of the enemy raised cries of grief and the followers of the Pandavas were silenced. At the sight of Yudhishtir, the warriors of Duryodhan's army began to talk with one another, saying, "Yudhishtir is a discredit to the family! He is surely coming with his brothers, like a terrified man to throw himself on the mercy of Bhishm. 21. How does the Pandav Yudhishtir come like a terrified man, followed by his brothers Arjun, Blim, Nakul and Sahadev? Surely

दरे । नकुले सहदेवेच भतिः श्येति पाण्डवम् ॥ २३ ॥ ननु न क्षत्रियकुले जातः
संप्रथितेभुवि । यथास्य हृदयं भीतमल्पसत्वस्य संपुगे ॥ २४ ॥ ततस्ते सैनिकाः
सर्वे प्रशंसादिभ्यः कौरवान् । हृष्टाः सुमनसो भूत्वा चैलानि दुःसुवुः ॥ २५ ॥
व्यतिन्द्वं ततः सर्वे योधास्तव विशम्भते । युधिष्ठिरं समोदर्थं सहितं केशधेनादि
॥ २६ ॥ ततस्तत् कौरवैः सैव्यं चिककृत्वा तु युधिष्ठिरम् । निःशब्दगभवत् तूर्णः
पुनरेव विशम्भते ॥ २७ ॥ किं नु वक्ष्यति राजसौ किं भीमः प्रतियक्ष्यति । किं
भीमः समरच्छाधी किं नुरुष्णार्जुनविराट् ॥ २८ ॥ विचक्षितं किमभ्योत संशयः सुमहात्तभूत् ।
उगयोः सेनयो राजन् युधिष्ठिरकृते तदा ॥ २९ ॥ सोवगाह्यचमू शनोः शर-
क्तिसमाकुलाम् । भीममेवाश्रययात् तूर्णं आतृभिः परिवारितः ॥ ३० ॥ तमुवाच

क्षत्रियों के कुल में उत्पन्न नहीं हुआ काहेसे कि इस अल्प बलरखने वाले का
हृदय युद्ध से मयाकुल है, तदनन्तर उन प्रतिपक्षी मनुष्यों ने बड़े प्रसन्न हृदय से
कौरवों की प्रशंसा की । २४ । और पृथक् चैलों को अर्थात् कुमालों को घुमाया,
हे राजा तिसके पीछे वहाँ सब के धीर उनके शत्रुजी और समे भाइयों समेत
युधिष्ठिर की ओरको गये हे राजा फिर वह कौरवों की सेना युधिष्ठिर को तुच्छ
करके शीघ्र ही अवाक होगई और सब विचारने लगे कि यह राजा क्या कहैगा
और भीमसेन क्या कहैगा और युद्ध में प्रशंसनीय भीष्मजी क्या कहेंगे और
भीकृष्ण वा अर्जुन क्या कहेंगे । २८ । हे धृतराष्ट्र इन विचारों के कारण युधिष्ठिर के
जानेसे दोनों ओरकी सेनामें बड़ा भारी संशय उत्पन्न हुआ कि राजा युधिष्ठिरको
क्या करने की इच्छा है, वह राजा युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रुकी सेना के बाण
बरछियों से व्याकुल सेना के पारहोकर भीष्म जीके सम्मुख आया, तदनन्तर
शतनु के पुत्र युद्धोत्सुकोपतामह भीष्मजी के दोनों चरणों को युधिष्ठिर ने हाथों
से दाबकर कहा । ३० । हे दुर्जय पितामह मैं आपसे पूछता हूँ कि इस युद्ध में हम

he is not born of kshatryas of world wide renown as he seems to be
afraid of war." With such remarks the warriors of the enemy praised
the Kauravas 24 They waved their hands,berchicks and roared at Keshav
the bravest of warriors and at Yudhishtir and his brothers, and say-
ing "FIE on Yudhishtir," kept quiet. They began to think within
themselves what Yudhishtir and Bhim will say and what Bhishm
the best of warriors will say in reply. They wondered as to what
Krishn and Arjun would say. 28. Thus there was a great suspense in
both the armies on account of Yudhishtir as they did not know what
he was going to say. In the meantime Yudhishtir with his brothers
crossed the enemy's army, amidst spears and arrows, and coming
before Bhishm, he touched with his hands both the feet of Bhishm the
grandfather the son of Shantana, and said, 30. "Invincible grandfather!

ततः पादौ कराभ्यां पट्ट्य पांडवः । भीष्मं शान्तनवं राजा युद्धायसमुपास्थितम् ॥ ३१ ॥ युधिष्ठिर उवाच । आमन्त्रये त्वां दुर्धर्षत्वया योत्स्यामहे सह । वनजानीहि मां तात आशिपश्च प्रयोक्ष्ये । भीष्म उवाच । यद्येवं नाधिगच्छेथा युधिर्मां पृथिवीपते । शपेयंत्वां महाराज पराभावाय भारत ॥ ३३ ॥ प्रीतोहंपुत्रगृह्यस्य जय प्राप्नुहि पांडव । पचेभिलापतं चाभ्यत् तदवाप्नुहि संयुगे ॥ ३४ ॥ प्रियतांच वरः पार्थ किमस्मत्तोऽभिकांक्षसि । एवं गते महाराज न तवास्ति पराजयः ॥ ३५ ॥ अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्य चित् । इति सत्यं महाराज वदोऽस्म्यर्थेन कौरवैः ॥ ३६ ॥ अतस्त्वांक्लीबद्वाक्यं मधीमि कुरुनन्दन । मृतोऽभ्यर्थेन कौरव्य युद्धादन्यत् किमिच्छसि ॥ ३७ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ मन्त्रयस्य महाबाहो हितैर्पी मम

आपके साथ लड़ेंगे सो आज्ञा दो और आशीर्वाद भी दो, भीष्मजी बोले हे भरत वंशी महाराज राजा युधिष्ठिर जो तुम इसयुद्धमें इसरीति से मेरेपासन आते तो मैं तुमको पराजयहोने का शाप देता, हे पुत्र मैं प्रसन्न हूँ हे पाण्डव युद्ध कर विजय को प्राप्तकरो और युद्ध में जो तेरी दूसरी इच्छा है उसको भी तुम पाओगे; हे राजा युधिष्ठिर वरमांग तू मुझसे क्या चाहता है हे राजा इस प्रकारके तेरे आचरणों से तेरी पराजय नहीं है, पुरुष धन रूपादि अर्थोंका दास है परन्तु अर्थ किसीका दास नहीं है हे महाराज यह सत्य है मैं कौरवों की ओर से अर्थद्वारावशीभूत कियागया हूँ, हे कौरवनन्दन मैं इस कारण से कायर के समान तुम से वचन कहताहूँ कि मुझको कौरवों ने धनके द्वारा पोषण किया है सो इनके लिये युद्ध सो अवश्य करूंगा तू युद्ध के सिवाय क्या चाहता है । ३६ । युधिष्ठिर बोले हे महाहानी मेरा हित चाहनेवाले तुम सदैवमेरे अन्तको विचारो और दुर्योधनादि कौरवों के निमित्त युद्धकरो और आपका दियाहुआ वर सदैव नियत रहै, भीष्म जी बोले हे कौरव

I beg your permission to fight with you in the ensuing battle and invoke your blessing. "To this Bhishma replied," I should have wished your defeat, if you had not come to me at this time, king Yudhishtir, the descendant of Bharat! I am pleased with you, go. Gain victory in the battle, Pandav. You will also gain your second desire in battle. You may ask of me any boon you desire, king Yudhishtir: with such a conduct you cannot suffer defeat. Man is a slave to wealth, while wealth is nobody's slave. It is true, king, that I am under the influence of the wealth of the Kauravas. It is therefore like a coward that I say to you that I am maintained by the wealth of the Kauravas and must fight for them; but you may ask of me any other boon except this." "May you always think well of me, wise man!" said Yudhishtir, "Fight for Duryodhan and others, but always bear in mind the boon you have just given me," "What help can I render

नित्यशः । युध्यस्वकौत्सस्यार्थे ममैव सततं वरः । ३८ ॥ भीष्म उवाच ॥ राजन् किमत्र साह्यान्ते करोमि कुरुनन्दन । कामं योत्स्ये परस्यार्थे ब्रूहि यत्ते विवक्षितम् ॥ ३९ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कथं जयेयं संग्रामे भवन्त मपराजितम् । पतन्मे मन्त्रयहितं यदि श्रेयः प्रपश्यसि ॥ ४० ॥ भीष्म उवाच ॥ नैनं पश्यामि कौन्तेय योमां युध्यन्तमाहवे । विजयेत पुमान् कश्चित् शास्त्रादपि शतक्रतुः ॥ ४१ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ हन्त पृच्छामि तस्मात्त्वां । पितामह नमोस्तुते । यद्योपायं प्रवीहित्व मात्मनः समरेपरैः ॥ ४२ ॥ भीष्म उवाच ॥ नह्मन्तं तात पश्यामि समरे ये जयेतमां । नतावन्मृत्यु कालोपि पुनराग मनं कुरु ॥ ४३ ॥ संजय उवाच ॥ ततो युधिष्ठिरो वान्यं भीष्मस्य कुरुनन्दन ।

नन्दन युधिष्ठिर इस स्थान पर मैं तेरी कौनसी सहायता करूं दूसरे के लिये अपनी इच्छा के समान लड़ूंगा और जो तेरी इच्छा है उसको भी कह, युधिष्ठिर बोले हे तात पितामह आपको नमस्कार है मैं आपसे पृच्छताहूं हे अजेय मैं युद्ध में आप को कैसे विजय करसकताहूं इस विषय में मेरे लिये श्रेष्ठ हितकारी शिद्धा दो, भीष्म जी बोले कि हे कुन्ती के पुत्र मैं ऐसा किसी को नहीं देखताहूं जो कोई पुरुष वा साक्षात् देवता इन्द्रभी मुझ युद्ध में लड़ते हुए को विजयकरे । ४० । युधिष्ठिर बोले हे पितामह तुम्हारे अर्थ नमस्कार है मैं आपसे यह हेतु पृच्छता हूं कि आप युद्ध में अपने विजय करने के उपाय को कहो भीष्मजी बोले हे तात जबतक मेरी मृत्युका समय न होय तबतक कोई मुझको युद्ध में जीतनेवाला नहीं दिखाई देता है, संजय बोले इसके पीछे कौरवन्दन युधिष्ठिर ने भीष्मजी के वचन को शिरसे अंगीकार किया और फिरभी नमस्कार करके वह महाबाहु युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रुकी सेना के सब मनुष्यों के देखते हुए सेना के मध्य में से निकलकर गुरु आचार्य द्रोणाचार्य जीके रथके पासगया, वहां कठिनतासे विजयहोनेवाले द्रोणाचार्यजीको परिक्रमापूर्वक नमस्कारकरके बाणी से अपने कल्याणकारी वचन को बोला, हे

you, son Yudhishtir? I shall fight with all my heart for Duryodhan, but you must speak out plainly what you desire." said Bhishm. "I bow to you, grandfather," said Yudhishtir, "may I ask you how I can conquer you in battle? Give me proper advice in this matter." "I donot see," replied Bhishm, "any man or even Indra the prince of gods that can overpower me in fight." 40. "I bow to you, grandfather and ask you the manner of your being overcome in battle" said Yudhishtir. "I cannot be overcome in battle," said Bhishm, "but when the time of my death approaches." Sanjaya said that Yudhishtir having heard these words, bowed down to Bhishm and having departed from the middle of the army he went on looking at the warriors of the enemy to the place where Dronacharya the preceptor's chariot was. And having paid his respects to the invincible Dronacharya,

शिरसाप्रति जग्राह भूयस्तमाभिवाद्य च ॥ ४४ ॥ प्रायान् पुनर्महाबाहुराचार्यभ्य
 रथं प्रति । पश्यतां सर्वं सैन्यानां मध्येन धातृभिः सह ॥ ४५ ॥ स द्रोणमभि
 वाद्याथ कृत्वाचामि प्रदक्षिणम् । उवाचं राजा दुर्धने मात्मनिः श्रेय संवचः ॥ ४६ ॥
 आमन्त्रयेत्वां भगवन् योत्स्ये विगतकल्मष- । कथं जये िपून्सर्वाननुत्नातरत्वया । ह्यज
 ॥ ४७ ॥ द्रोण उवाच ॥ यदि मां नामि गच्छेया युद्धाय कृतनिश्चयः । शपेयं त्वां महा
 राज पराभावाय सर्वशः ॥ ४८ ॥ तद्यधिष्ठिरः तुष्टोभिर्न पूजितश्च त्वयानघ । अनुजाना
 मि दुष्यस्य विजयं स्वम वाप्तुहि ॥ ४९ ॥ करवाणि च ते कामं महित्वमसि कांक्षितम् ।
 पथं गते महाराज युद्धादन्यत् किमिच्छसि ॥ ५० ॥ अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो
 न कस्य चित् । इति सायं महाराज यज्ञोत्सर्पधेन कौरवैः ॥ ५१ ॥ प्रवीन्येतत् क्लीब

भगवन् गुरुदेव मैं आपका पूजनकरता हूँ और पूछता हूँ कि मैं पापसे युद्धकरूंगा
 या पापसे रहित युद्धकरूंगा इसको आप कहिये हे विभेन्द्र आपकी आज्ञासे मैं किस
 प्रकारसे सर्वशत्रुओंको विजयकरूंगा । ४५ द्रोणाचार्य बोले कि जो युद्धके निश्चय
 करने के लिये तू मुझको नहीं मिलता तो हे महाराज सब प्रकार से पराजयहानेके
 लिये तुमको शाप देदेता हे निष्पाप युधिष्ठिर मैं तुम से पूजित होकर मतान्नहूँ
 मैं आज्ञादेताहूँ कि युद्धकरो और विजय को पाओ, तेरे मनोरथको सिद्ध करूंगा जो
 तेरी इच्छाहोय सो कहो हे महाराज तुम ऐसी दशामें युद्ध के विशेष अन्य कौनसी
 बात चाहतेहो, पुरुषअर्थका दास है परन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है हे युधिष्ठिर
 यह सत्यही बात है कि मैं कौरवों की ओर से अर्थ से वशीभूत कियागया हूँ, इस
 हेतुसे असमर्थों की समान मैं तुम्ह से कहताहूँ कि युद्धतो इनके अर्थ हम करेंगे इस
 के सिवाय दूसरी बात क्या चाहता है मैं कौरवों के निमित्त लड़ूंगा परन्तु तुम्हारी
 विजय होनेका आशीर्वाद देताहूँ । ५२ युधिष्ठिर बोले हे गुरुदेव मेरी विजय होने

he said, "I salute you, Bhagwan! and ask you whether my fighting will be in good cause or not. I beg to ask of you, best of Brahmans, how I shall be able to conquer all the enemies by your grace." 44 "I should have caused your defeat by all the means in my power and had cursed you, if you had not come to me to ascertain about the propriety of war. I am pleased, Yudhishtir, by your respectful behaviour. I allow you to make war and gain victory. What more do you want besides this war? Man is a slave to wealth, but the wealth is nobody's slave. I tell you truly that I have been influenced by the wealth of Kauravas and it is therefore that I tell you like a weakling that fight I must, but is there aught that I can do for you? I shall fight for the Kanravas, but shall pray for your victory."

यत्वां युद्धादन्यत् किमिच्छसि । योऽस्येह कौरवस्यार्धे तवाशास्यो जयोमया ॥ ५२ ॥
 युधिष्ठिर उवाच ॥ जयमाशास्तमे ब्रह्मन् मन्त्रयस्व च मान्दतम् । युध्वस्वकौरवस्यार्धे
 घर पप वृतो मया ॥ ५३ ॥ द्रोण उवाच । ध्रुवस्तेविजयो राजन् यस्य मन्त्री हरिस्तव ।
 महत्त्वानभिजानामि रणे शत्रून् । धर्मोक्षयसे ॥ ५४ ॥ धर्मो धर्मस्तत कृष्णो यत कृष्णस्ततो
 जय । युध्वस्व गच्छ कौन्तेय पृच्छमार्कं प्रवामिते ॥ ५५ ॥ युधिष्ठिर उवाच ।
 पृच्छामित्वा द्विजश्रेष्ठ शृणुयन्मऽभि कान्ततम् । ऋथं जयेयं सप्रामे भवन्तमपरा
 जितम् ॥ ५६ ॥ द्रोण उवाच । न तेऽस्त विजयस्तावचावयुद्धघाम्बह रणे । ममाशु
 निघने राजन्यतस्वसह सोदरै ॥ ५७ ॥ युधिष्ठिर उवाच । हन्त तस्मान् महाबाहाव्यो
 पाय घदात्मनः । आचार्यं प्रणिपत्यैपृच्छामित्वा नमोस्तुते ॥ ५८ ॥ द्रोण उवाच ।

का आशीर्वाद दो और मेरे हितकारी सलाह दो और आप कौरवों के निमित्त
 युद्ध करिये मुझे वरदो द्रोणाचार्य्य बोले हे राजा तेरी अवश्य विजय है क्योंकि
 तेरेमन्त्री हरि हैं मैं तुम्हको अच्छी रीति से जानताहूँ कि तू युद्ध में शत्रुओं को
 जीवनसे मुक्त करेगा जहाँ धर्म है वही श्रीकृष्णजी है जहाँ धर्म है वहीं विजय है
 इससे हे कुन्तीनन्दन जाओ युद्धकरो तुम्हारी विजयहोगी अब मुझ से तू क्या
 पूछना है । ५५ । युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मणवर्य्य मैं अपनी इच्छा के अनुसार आपसे
 पूछताहूँ हे अजेय मैं युद्ध में आपको कैसे विजय करूंगा, द्रोणाचार्य्य बोले कि
 हे राजा जबतक मैं युद्धभूमिमें लडूंगा तबतक तेरी विजय नहीं होगी मेरे मरने
 के पीछे तुम अपने भाइयों समेत शीघ्र उपायकरो, युधिष्ठिर बोले हे महाबाहू
 बड़े कष्टकी बात है कि मैं आपको नमस्कार करके प्रार्थना करताहूँ कि आपअपने
 मरने के उपायकोन्ताइये, द्रोणाचार्य्यबोले हे तात मैं उस अपने शत्रु को संसार में
 नहीं देखताहूँ जो मुझ क्रोधाग्निमें भरेहुए बाणोंकी वर्षा करतेहुएको युद्धमें मारे,
 हे राजा इसके विशेष मरनेके निमित्त निश्चय करनेवाले योग बलसे देह त्याग

52 " Pray for my victory and give me salutary advice. Give me this boon and fight on the side of the Kaurava," said Yudhishtir
 " Your victory is certain, for you have Hari for your adviser," said
 Drona " I know well that you will destroy the enemies. Where there
 is Dharm there Krishna and victory are Go, son of Kunti, fight and
 you will win What more do you ask of me ?" 55 " Best of
 Brahmans !" said Yudhishtir, " I wish to ask of you, unconquer-
 able one how I shall be able to conquer you " To this Dronacharya
 replied that Yudhishtir could not gain victory as long he was alive
 and that after his death the Pandavas were sure of it. At this Yudhis-
 thir respectfully asked of Drona the manner of his death, and Drona

न शत्रुं तात पश्यामि योमां हन्वाद्रणे स्थितम् । युष्यमानं सुसंरब्धं शरवर्षैर्घघर्षिणम् ॥ ५९ ॥ ऋते प्रायगतं राजन् न्यस्तशस्त्रमचेतनम् । हन्यान्मां युधि योयानां सत्य मे तद्ब्रवीमि ॥ ६० ॥ अस्त्रञ्चाहं रणे जह्यां श्रुत्वा सुमहदप्रियम् । अक्षयवाक्यात्पुपा देतत्सत्यं ब्रवीमि ॥ ६१ ॥ सञ्जय उवाच ॥ एतच्छ्रुत्वा महाराज भारद्वाजस्यधीमतः । अनुमान्य तमाचार्यं प्रायाञ्छारद्वतं प्रति ॥ ६२ ॥ सोऽभिवाच कृपं राजा कृत्वाच्चापि प्रदक्षिणम् । उवाच दुर्घर्षं तमं वाक्यं वान्यं विदांवरः ॥ ६३ ॥ अनुमान येत्वां योत्स्ये हं शूरो विगत कल्मषः । जयेयन् रिपून् सर्वां नुज्ञातस्त्वयानघ ॥ ६४ ॥ हृपउवाच ॥ यदि मां नाभिगच्छेथा युद्धाय हत निश्चयः । शपेयंत्वां महाराज पञ्चावायसर्वशः ६५

करनेवाले मुझको युद्ध में कोई वीर मारने वाला नहीं देखता है यह मैं निश्चय करके कहता हूँ, मैं युद्धमें विश्वासित पुरुष से बहुत बड़े अभिय और असत्य वचन को सुनकर शत्रुओंका त्याग करूंगा यह तुमसे मैं सत्यर कहता हूँ । ६० । संजयबोले हे धृतराष्ट्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के इस वचनको सुनकर उन

चत्वां युद्धादन्यन् किमिच्छसि । योत्स्येह कौरवस्यार्थे तवाशास्यो जयोमया ॥ ५२ ॥
 युधिष्ठिर उवाच ॥ जयमाशास्तमे ब्रह्मन् मन्त्रयस्व च माद्धतम् । युध्वस्वकौरवस्यार्थे
 घर एव वृत्तो मया ॥ ५३ ॥ द्रोण उवाच । ध्रुवस्तेविजयो राजन् यस्य मन्त्री हरिस्तव ।
 बह्वृषामभिजानामि रणे शत्रून् । धर्मोक्षयसे । ५४ ॥ यतोधर्मस्तत कृष्णो यत कृष्णस्ततो
 जय । युध्वस्व गच्छ कौन्तेय पृच्छमांकिं ब्रवीमि ते ॥ ५५ ॥ युधिष्ठिर उवाच ।
 पृच्छामित्वां द्विजश्रेष्ठ शृणुयन्मोऽभि काक्षतम् । कथं जयेयं सत्रामे भवन्तमपरा
 जितम् ॥ ५६ ॥ द्रोण उवाच । न तेऽस्त विजयस्तावद्यावद्युद्धयाम्यहं रणे । ममाशु
 निघने राजन् यतस्वसह सोदरे ॥ ५७ ॥ युधिष्ठिर उवाच । हन्त तस्मान् महाबाहाउषो
 पाय घदात्मनः । आचार्यं प्रणिपत्यैवपृच्छामित्वां नमोस्तुते ॥ ५८ ॥ द्रोण उवाच ।

का आशीर्वाद दो और मेरे हितकारी सलाह दो और आप कौरवों के निमित्त
 युद्ध करिये मुझे वरदो द्रोणाचार्य बोले हे राजा तेरी अवश्य विजय है क्योंकि
 तेरेमन्त्री हरि है मैं तुम्हको अच्छी रीति से जानताहूँ कि तू युद्ध में शत्रुओं को
 जीवनसे मुक्त करेगा जहाँ धर्म है वही श्रीकृष्णजी है जहाँ धर्म है वही विजय है
 इससे हे कुन्तीनन्दन जाओ युद्धकरो तुम्हारी विजयहोगी अब मुझ से तू क्या
 पूछना है । ५५ । युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मणवर्य मैं अपनी इच्छा के अनुसार आपसे
 पूछताहूँ हे अजेय मैं युद्ध में आपको कैसे विजय करूँगा, द्रोणाचार्य बोले कि
 हे राजा जबतक मैं युद्धभूमिमें लडूँगा तबतक तेरी विजय नहीं होगी मेरे मरने
 के पीछे तुम अपने भाइयों समेत शीघ्र उपायकरो, युधिष्ठिर बोले हे महाबाहु
 बड़े कष्टकी बात है कि मैं आपको नमस्कार करके प्रार्थना करताहूँ कि आपअपने
 मरने के उपायकोबताइये, द्रोणाचार्यबोले हे तात मैं उस अपने शत्रु को संसार में
 नहीं देखताहूँ जो मुझ क्रोधाग्निमें भरेहुए बाणोंकी वर्षा करतेहुएको युद्धमें मारे,
 हे राजा इसके विशेष मरनेके निमित्त निश्चय करनेवाले योग वलसे देह त्याग

52 " Pray for my victory and give me salutary advice. Give me this boon and fight on the side of the Kauravas " said Yudhishtir " Your victory is certain, for you have Hari for your adviser," said Drona " I know well that you will destroy the enemies. Where there is Dharm there Krishn and victory are Go, son of Kunti, fight and you will win What more do you ask of me ?" 55 " Best of Brahmans ! " said Yudhishtir, " I wish to ask of you, unconquerable one, how I shall be able to conquer you " To this Dronacharya replied that Yudhishtir could not gain victory as long he was alive and that after his death the Pandavas were sure of it. At this Yudhishtir respectfully asked of Drona the manner of his death, and Drona

न शत्रुं तात पश्यामि योमां हन्याद्भजे स्थितम् । गुंध्यमानं सुसंख्यं शरययौघवर्षिणम् ॥ ५९ ॥ ऋते प्रायगतं राजन् न्यस्तशस्त्रमचेतनम् । हन्यान्मां युधि योधानां सत्य मे तद्ब्रवीमि ॥ ६० ॥ अस्त्रचाहं रणे जह्यां श्रुत्वा सुमहदप्रियम् । श्रेयवाक्यात्पुत्रा वैतत्सत्यं ब्रवीमि ॥ ६१ ॥ सञ्जय उवाच ॥ पतच्छ्रुत्वा महाराज भारद्वाजस्यधीमत । अनुमाय तमाचार्यं प्रायाच्छास्त्रतं प्रति ॥ ६२ ॥ सोऽभिवाच कृपं राजा कृत्वाचापि प्रदक्षिणम् । उवाच दुर्धरं तमं वान्यं वाक्यं विदांबरः ॥ ६३ ॥ अनुमान येत्वां योत्स्ये हं गुरो विगत कल्मषः । जयैष्व रिपून् सर्वां नृणातस्त्वयानघ ॥ ६४ ॥ कृपउवाच ॥ यदि मां नाभिगच्छेद्य युद्धाय कृत निश्चयः । शपेयंत्वां महाराज परभावायसर्वशः ६५

करनेवाले मुक्तको युद्ध में कोई वीर मारने वाला नहीं दीखता है यह मैं निश्चय करके कहता हूँ, मैं युद्धमें विश्वासित पुरुष से बहुत बड़े अभिय और असत्य वचन को सुनकर शत्रुओंका त्याग करूंगा यह तुमसे मैं सत्य कहता हूँ । ६० । संजयबोले हे धृतराष्ट्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के इस वचनको सुनकर उन आचार्यजी की मतिष्ठाकरके नमस्कार कर कृपाचार्य जीके पास आया और वह वक्ताओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर उस बड़े दुर्जय कृपाचार्यजी को प्रणाम और प्रदक्षिणा करके यह वचन बोला कि मैं गुरुजी को प्रणामादिक करके पापसे पृथक् हुआ लड़ूंगा या पापसे हे निष्पाप मैं आपसे आज्ञा पाकर सब शत्रुओंको विजयकरके कृपाचार्य बोले हे महाराज जो युद्धके निमित्त निश्चय करने वाला तू मुझसे नहीं मिलतातो मैं तेरेपराजयके निमित्त कठिन शाप देता, पुरुषही अर्थ का दास है परन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है हे महाराज यह सत्यही है कि मैं कौरवों की ओरसे अर्थके द्वारा आधीन किया गया हूँ उनके निमित्त युद्ध करना योग्य है हे

replied that he would give up arms on hearing an untruth which was very disagreeable, from one in whom he had a trust." 60. Sanjay continued that having heard the words of Dronacharya, Yudhishtir bowed down to the preceptor and then came to Kripacharya. Yudhishtir the best of speakers saluted the unconquerable Kripacharya and said, "Having bowed down to you shall I fight in a good cause or not? Having got your permission, sinless one, may I conquer my foes?" "Had you not come to me, king, to ascertain about war," said Kripacharya, "I would have cursed you and caused your defeat. Man is a slave to wealth, but wealth is a slave to nobody. It is true that I am bound to the Kauravas for their supply of wealth and shall have to fight for them. This is my opinion and therefore

अर्धस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित् । इति सत्यं महाराज वदोस्म्यर्धेनको
 रवैः ॥ ६६ ॥ तेषामर्धे महाराज योज्यव्य मिति मे मतिः । अतस्त्वांक्लीवघट्ट्यां युद्धा
 दन्यत् किमिच्छसि ॥ ६७ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ हन्त पृच्छाम ते तस्मा दाचार्य नृणु
 मे वचः । इत्युक्त्वा व्यधितो राजा नोवाच गतचेतन ॥ ६८ ॥ संजय उवाच ॥ त
 गौतम प्रत्युवाच विज्ञायास्य विवक्षितम् । अवध्योह महीपाल युध्यस्वजयमानुहि ६९
 प्रातस्तेऽभि गमेनाहं जयन्तवनराधिप । आशासिभ्ये सदोऽथाय सत्य मेतद् प्रधीमि ते
 ॥ ७० ॥ एतच्छ्रुत्वा महाराज गौतमस्य विशाम्पते । अनुमान्य कृपं राजा प्रययौ येन
 मद्राट् ॥ ७१ ॥ स शल्य मभिवाधाय कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् । उवाच राजा दुर्धर्षे

महाराज मेरा यह मत है इसी हेतुसे मैं असमर्थ के समान तुम्हसे कहताहूँ कि युद्ध
 के विशेष दूसरी जो बात चाहै वह मुझ से कह । ६६ । युधिष्ठिर बोले हे आचार्य
 जी बड़े कष्टकी बात है मैमी इसी हेतुसे आपसे पूछताहूँ आपमेरे वचन को सुनो
 यह कहकर पीड़ावान् और व्याकुल चिन्तितकर कुछ न बोला, संजयबोले कि
 गौतम कृपाचार्य जी उसके अभिप्राय को अच्छी तरह जानकर यह वचन बोले हे
 महाराज मैं तो अबध्यही हूँ आपशुद्ध करो और विजयको पाओ मैं तेरेआनेसे
 प्रसन्न हूँ हे राजा मैं सदैव प्रात काल उठकर तेरे विजयहोनेका आशीर्वाद दूंगा
 यह तुम्हसे सत्य २ कहताहूँ, यह गौतम कृपाचार्य जीके वचनोंको सुनकर उनको
 प्रदक्षिण पूर्वक नमस्कार करके वहाँको चले जहाँ मद्रदेशके राजाशल्य वर्तमानथे
 । ७० । उस दुर्जय राजा शल्यकी नमस्कार पूर्वक परिक्रमा करके अपने कल्याण
 कारी वचन को बोला, हे कठिनता से विजय होनेवाले राजा शल्य मैं आपकी
 प्रतिष्ठा करता हुआ प्रणाम करता हूँ कि मैं निष्पाप होकर युद्ध करूंगा हे राजा

like a weak man I say that you may ask of me anything except what
 pertains to war" 66 "It is a painful subject to me," said Yudhisht-
 thir, "that I am constrained to speak about Hear me." Having
 said this, Yudhishtthir in the excess of grief could speak no more and
 remained silent Sanjaya continued that Kripacharya, knowing the
 purpose of Yudhishtthir full well, said to him, "None can kill me.
 You may fight and gain victory I am much pleased with your
 coming here I shall pray every morning for your victory and what
 I say is true" Having heard the words of Kripacharya and having
 respectfully saluted him, Yudhishtthir moved on to the place where
 Shalya the king of Madra was 70 Having paid respect to the
 invincible king Shalya, Yudhishtthir said, "Invincible Shalya! I res-
 pectfully salute you that I may fight a sinless battle. I shall conquer

मात्मनिः श्रेयसं वचः ॥ ७२ ॥ अनुमानये त्वां दुर्घर्षं योरस्ये विगतकल्पयः । जये यन्तु
 परान् राजन् ननुज्ञातस्तवया रिपून् ॥ ७३ ॥ शक्य उवाच ॥ यदि मां नाधि गच्छेया
 युद्धाय कृतनिश्चयः । शपेयं त्वामिहाराज पराभावापद्यै रणे ॥ ७४ ॥ तुष्टोस्मि पूजितश्चामि
 यत् काक्षसि तदस्तुते । अनुजानामि चैवत्वां युध्यस्वजयमान्निहि ॥ ७५ ॥ ब्रह्मिचैवपरं
 धीर केनार्थः किं ददामिते । एवं गते महाराज युद्धादन्यत् किमिच्छसि ॥ ७६ ॥ अर्थ
 स्व पुरुषोदासो दासस्तवर्षो न कस्य चित् । इति सत्यं महाराज यज्ञोस्म्यर्थेन कौरवैः
 ॥ ७७ ॥ कारिण्यामिहि ते कामं भार्गनेय यथेष्टितम् ॥ प्रवीम्यतः क्लीपवत्त्वां युद्धा
 दन्यत् किमिच्छसि ॥ ७८ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ मन्वयस्य महाराज नित्यं मद्रितमुच

आपकी आज्ञासे मैं बड़े बलवान् शत्रुओं को विजय करूंगा शक्य बोले हे महाराज
 युधिष्ठिर जो युद्धके निश्चय करने को आप मेरे पास नहीं आते तो मैं तुम्हारे
 पराजय के निमित्त महाबाप देता, मैं तुमसे पूजित होकर बड़ा प्रसन्न हुआ हूँ जो
 इच्छा में होय वह मुझसे मांगो और जो तू चाहता है वही तेरा मनोरथ सिद्ध होगा
 और मैं तुमको आज्ञा देता हूँ कि युद्ध करो और विजय प्राप्त करो हे वीर इसके सिवाय
 अपने अभीष्ट को कहो जिसको मैं दूँ हे युधिष्ठिर ऐसी दशा में युद्ध के बिना दूसरी
 बात क्या चाहता है, पुरुष अर्थ का दास है और अर्थ किसी का दास नहीं है यह
 वचन सत्य २ कहता हूँ कि मैं कौरवों की ओरसे अर्थ के आधीन किया गया हूँ,
 हे इच्छवान् मैं तेरी अभीष्ट इच्छा को पूर्ण करूंगा इस हेतुसे मैं असमर्थों के समान
 कहता हूँ कि तुम युद्धके विशेष कौनसी बात चाहते हो । ७७। युधिष्ठिर बोले हे महा-
 राज सदैव सुखदायी मेरे अभीष्ट के विषय में सनाहदो और कौरवों के निमित्त आप
 युद्ध करो यही मैं वरमांगता हूँ । ७८ । शक्य बोले हे राजेन्द्र यहाँ मैं तेरी कौनसी

the enemies by your permission." "I should have prayed for your
 defeat, had you not come to me," said Shalya, "I am much pleased
 by your respectful behaviour. Ask of me what you desire and it
 shall be fulfilled. I give you permission to fight and to conquer.
 Tell me if you want anything else besides battle. Man is a slave to
 wealth, but wealth is slave to none. I tell you truly that I have
 been overpowered by the wealth of the Kauravas. I would fulfil
 your desire and therefore like a weakling I say that except my joining
 in battle you may ask me anything you desire." 77. "Give me good
 advice king," said Yudhishtir, "and fight on the side of the Kauravas.
 This is all I want." 78. "What help can I render you here, prince."
 said Shalya, "I have promised the Kauravas to fight against you
 and shall, therefore, fight for them." "It is sufficient for me," said

मम् । काम युद्धपरस्यार्थे वरमेत वृणोम्यहम् ॥ ७९ ॥ शल्य उवाच ॥ किमत्र ब्रूहि साहजन्ते करोमि नृपसत्तम । काम योत्स्य परस्यार्थे वदो रम्यर्थेन कौरवै ॥ ८० ॥ युधिष्ठिर उवाच । स एष मे चर शल्य उद्योगे यस्तवपाकृत । सूतपुत्रस्य सप्राप्ते कार्यस्तेजोवधस्तवया ॥ ८१ ॥ शल्य उवाच । सम्पत्स्यार्थेय ते काम कुन्तीपुत्र पथे प्सितम् । गच्छ युध्यस्व विश्रद्य प्रतिजानेष्वस्तव ॥ ८२ ॥ संजय उवाच । अनुमान्याप कौन्तेयो मातुल मद्रकेश्वरम् । निर्जंगाम महासैन्याव धातुभि परिचारित ॥ ८३ ॥ धातुदेवस्तु राधेयमाहवोभिजंगामवै । तत एनमुवाचेद् पण्डवार्थे गदाप्रज ॥ ८४ ॥ धृत मे कर्ण भीष्मस्य द्वेषात् किल न योत्स्यस । वस्मान् वरप राधेय यावद् भीष्मो न हन्यते ॥ ८५ ॥ हतेतु भीष्मे राधेय पुनरप्यासि संयुगम् ।

सहायताकरुं मैं तेरे प्रतिपत्नी कौरवलोंकी ओरसे युद्धके लिये वचन बद्धहोगयाहूँ इस्से उनकेही निमित्तलड़ंगा, युधिष्ठिरबोले कि हेशल्य सुभे वहीवर आपका दियाहुआ बचितहै जो आपने युद्धके उपाय में मुझसे प्रणयकिया है आपको युद्धमें कर्ण के तेजका नाश करना चाहिये । ८० । शल्य वाले हे कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर यह तेरा मनोरथ सिद्धहोगा तुम इच्छा पूर्वक युद्धकरो तुम्हारी विजयहोगी । ८१ । संजयबोले कि इसप्रकार महावीरों से ऐसे २ वरदान लेकर भाइयों समेत युधिष्ठिर अपने मामाशल्यको नमस्कार करके वड़ी सेना मेंस बाहर को निकले इसके पीछे गदके बड़े भाई वामुद्रवजा युद्धभूमि में कर्ण के पासगये और पांडवोंके निमित्त उससे यह वचन बोले, हंकर्य मैंने सुना है कि तुम निश्चय करके भीष्मकी विरुद्धता से युद्ध नहीं करोगे हे कर्ण हमारेसाथचलो और जबतक भीष्मजी नहीं मारेजायँ तबतक आपयुद्ध न करोगे भीष्मजीके मरनेपर युद्धके निमित्त संग्राम भूमिमें आकर जो तुमचाहातो दुर्योधनकीसहायताकरो । ८५ । कर्णबोले हे केशवजी मैंदुर्योधन

Yudhishtira, "if you will keep your promise about your share in the war, namely, that you will have to destroy the vigour of Karan" 80 'This desire of thine shall be fulfilled,' said Shalya, "fight with a light heart for thou shalt win, son of Kunti." Sanjaya continued that having got the above mentioned boons from the warriors named above, and having respectfully taken leave of his maternal uncle, Yudhishtira came out of the army. Then, Vasudeva, the elder brother of Gada, went to Karan in the field of battle and for the good of the Pandavas, spoke to him as follows "I hear, Karan," said he, "that you will not take up arms on account of your quarrel with Bhishma. Come and stay with us as long as he is not killed. After Bhishma's death you may again come into the field of battle to fight in Duryo-

घात्तैराष्टस्य साहाय्यं यदि पश्यासि चेत्समम् ॥ ८६ ॥ कर्ण उवाच । न विप्रियं
 कारिष्यामि घात्तैराष्टस्य केशव । त्यक्तप्राणां ह मां विदि दुष्ट्यं घन हितैपिलम् ॥ ८७ ॥
 तच्छ्रुत्वा वचनं कृष्णः सन्यवर्त्तत भारत । युधिष्ठिरपुरोगैश्च पाण्डवैः सह सद्गतः
 संजय उवाच ॥ ८८ ॥ अथ सैन्यस्य मध्यतु प्राक्रोशत् पाण्डवाग्रज । योस्मान्बुध्नातितमहं
 वच्ये साह्यकारणात् ॥ ८९ ॥ अथ तान् समाभोग्येय युयुत्सु रिदमब्रवीत् । प्रीता
 त्माद्यमेराजान् कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ ९० ॥ अहं योत्स्यामि मवतः संयुगे धृत
 राष्ट्रजान् । युष्मदर्थं महाराज यदमां वृणुषेऽनघ ॥ ९१ ॥ युधिष्ठिर उवाच ।
 परोहि सर्वे योत्स्यामस्तव शत्रून्पाण्डवान् । युयुत्सो वासुदेवश्च यपञ्च प्रम सर्षशः
 ॥ ९२ ॥ वृषामित्वां महाबाहो पुत्थ्यस्वममकारणात् । त्वयि पिण्डश्च तन्तुश्च

का अनिष्ट नहीं करूँगा मुझको आपदुर्योधनका अभीष्ट चाहनेवाला और उसके
 विमित्त अपने प्राणोंका भी त्यागनेवाला जानो, हे भरतवंशी धृतराष्ट्र श्रीकृष्णजी
 उसके वचनको सुनकर युधिष्ठिरादि पांडवोंसमेत वहाँसेलौटे, तदनन्तर राजा युधिष्ठिर
 सेना में आकर बड़े उच्चस्वर से पुकारे कि जो हमको वरताहै मैं उसको सहायताके
 कारण वरताहूँ तदनन्तर धृतराष्ट्रके पुत्र युयुत्सुने इनको अच्छे प्रकार से सच्चादेखकर
 बड़े मसन्नचित्त होकर कुन्ती के पुत्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर से यह वचन कहा कि
 हे महाराज मैं आपके विमित्त युद्धभूमि में धृतराष्ट्रके पुत्रों से लड़ूँगा हेनिष्पाप जो
 तुम मुझको वरतेहो । ९० । युधिष्ठिर बोले हे युयुत्सु आओ हम सब तेरेअज्ञानी
 भइयों से लड़ेंगे वासुदेवजी समेत हमसबप्रकार से कहते हैं, हे महाबाहु मैं तुझको
 वरताहूँ मेरेकारण से युद्धकर तूही धृतराष्ट्र के पुत्रों के पिण्डों का सूत्र दिखाई देता
 है हे बड़े तेजस्वी राजकुमार तुमहम सब चाहने वालोंको चाहो तू निश्चय करके

dhan's cause." 85. "I shall do nothing, said Karan that may be injurious to Duryodhan as I am his staunch well-wisher and can lay down my life for him." On hearing these words, Krishna and the Pandvas returned from that place. Then king Yudhishtir called out in a loud tone, "I accept him for my ally who accepts me." At this Yuyutsu the son of Dhritrashtra, finding the Pandavas true men, spoke cheerfully the following words to Yudhishtir:- "I shall, said he, "fight for you with the sons of Dhritrashtra, if you take me with you." 90. "Come, come, Yuyutsu!" said Yudhishtir in reply, "we shall all fight against thy unwise brothers. Vasudev and I say this. I accept you, brave man, fight for me. Methinks thou art the thread of the cakes that shall be offered to the manes of the sons of Dhritrashtra. Come, glorious prince, to us who accept thee. Know

धृतराष्ट्रस्य दृश्यते ॥ ९३ ॥ भजध्वास्मान् राजपुत्र भजमानान् महाद्यते । न
भाविष्यति दुर्बुद्धिर्धृतरष्ट्रस्त्यमर्षेण ॥ ९४ ॥ संजय उवाच ॥ ततो युयुत्सुः कौरव्यान्
परित्यज्य सुतांस्तन । जगाम पाण्डुपुत्राणां सेनां चध्राव्य दुन्दुभाम् ॥ ९५ ॥
ततो युधिष्ठिरा राजा संप्रहृष्टः सहानुज । जग्राह कवचं भूयो दीप्तिमत् कनको
ज्ज्वलम् ॥ ९६ ॥ प्रत्यपद्यन्त ते सर्वे स्वस्थान् पुरुपर्यभाः । ततो व्यूढं यथापूर्वं
प्रत्यव्यूहन्तते पुनः ॥ ९७ ॥ अवाद्यन् दुन्दुर्भ्रातृ शतशश्चैव पुष्करान् । सिंह
नादांश्च विविधान् वनेह । पुरुपर्यभाः ॥ ९८ ॥ रथस्थान् पुरुपथ्याघ्नान् पाण्डु-
वान् प्रेक्ष्य पार्थिवाः । घृष्टद्युम्नादयः सर्वे पुनर्जहृदयिरे तदा ॥ ९९ ॥ गौरवं
पाण्डुपुत्राणां मान्यान् मानयताञ्जतान् दृष्ट्वा महीक्षितस्तत्र पूजयार्थाकरे भृशम्
॥ १०० ॥ खौहृदञ्च कृपावैव प्राप्तकालं महारमनाम् । दयावन्नानिपु परांकथया
चक्रिरे नृपाः ॥ १०१ ॥ साधुसाधिविति सर्वत्र निश्चरुः स्तुतिसांहताः वाचः पुण्याः

जान कि निर्बुद्धि दुर्योधन माराजायगा । ९३ । संजय बोले तवतो युयुत्सु कौरवों
और तेरेपुत्रोंको त्यागकरके नगाड़ा बजाकर पांडवोंकी सेनामें गया तदनन्तर बड़े
प्रसन्न चित्त उत्साह युक्त राजा युधिष्ठिर ने अपने स्वर्णमय प्रकाशमान महातेजस्वी
कवच को धारण किया । ९४ । और वह सब उसके साथी पुरुपोत्तमभी अपने २ रथोंपर
सवार होकर उसके रथके पीछे हुये और सर्वोंने पूर्वके समान अपनेव्यूहको सन्नद्ध किया,
और सैकड़ों दुन्दुभी वा पुष्करनाम अनेक वाजोंको बजाया और नानाप्रकारके सिंह
नादभी उन पुरुपोत्तमोंने किये, तब घृष्टद्युम्न आदि सब राजालोग पुरुपोत्तम पांडवोंको
रथोंपर सवार देखकर फिर प्रसन्न हुये, और उन प्रतिष्ठा के योग्य पुरुषोंको
प्रतिष्ठा देनेवाले पांडवों के समूह को देखकर राजालोगों ने बड़ी प्रशंसा की, और
समय के अनुसार उन महात्माओंकी जात वालोंपर बड़ी मुहूर्दता और कृपालुता
को वर्णन किया, उन कीर्त्तिमानों की प्रशंसासे युक्त पवित्र चित्तों के हृदय आकर्षण
करनेवाले बहुत अच्छा बहुत अच्छा कह श्रेष्ठ वचन चारोंओर को फैल गये, जिन

for certain that Duryodhan shall die." Sanjaya said that at this
Yuyutsu left the army of the Kauravas and joined the Pandavas
amidst beat of drums Yudhishtir with a cheerful heart put on
his bright armour. 95 All the followers of Yudhishtir got on
their chariots again and arrayed themselves as before. Hundreds of
musical instruments sounded and the warriors roared like lions.
Dhrishtadyumn and other princes, best of men, seeing the Pandavas
mounted on their chariots, were glad and praised the respectable
Pandavas in songs expressive of their merciful deeds of charity. At
the praises of the famous Pandavas the cry of "Well and good"

कीर्तिमतामनोहृदयहृषणाः ॥ १०२ ॥ म्लेच्छाश्चार्याश्च ये तत्र ददृशुः शुभ्रवुस्तथा ।
वृत्तं तत् पाण्डुपुत्राणां रुद्रुस्ते समद्गदाः ॥ १०३ ॥ ततो जघ्नुर्महाभेरीः शतशश्वस-
हस्रशः । शंखांध गोक्षीगनिमान दध्मर्हृषा मनास्वनः ॥ १०४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मादिसंमानने
त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ एवं व्यूहेष्वनीकेषु मामकेष्वितरेषुच । के पूर्वं प्राहरंस्तत्र कुण्डः
पाण्डवानुकिम् ॥ १ ॥ संजय उवाच ॥ आर्तुभिः सहिता राजन् पुत्रो दुःश सनातन ।
भीष्मं प्रमुखातः कृत्वा प्रययौ सहसेनया ॥ २ ॥ तथैव पाण्डवाः सर्वे भीमसेनपुरोगमाः
भीष्मेण युद्धमिच्छन्तः प्रवृष्टुर्हृष्टमानसाः ॥ ३ ॥ क्ष्वेडा किलकिलाशब्दाः कृकचा गो

म्लेच्छ और आर्य पुरुषों ने पांडवों के उस चलनको देखा और मुना वह गद्गद
कण्ठों से रुदन करनेलगे तदनन्तर प्रसन्न चित्त साहसी सेना के मनुष्यों ने सैकड़ों
भेरी और पुष्करादि अनेक वाजे और दुग्ध समान महाश्वेत उत्तम उत्तम शंखों
को बजाया १०४ ॥

अध्याय ॥ ४४ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि भेरे पुत्रोंकी और पाण्डवों की सेना के इस रीति पर
तैयार होनेपर पहले किन लोगों ने आर्याव कौरव पाण्डवों में से पहले किस ने
प्रहार किया । १ । संजय बोले कि आपका पुत्र दुश्शासन भाई के उम. वचन
को सुनकर भीष्मजी को आगे करके सेनाके साथ चला, इसीप्रकार भीमसेन
आदि सब प्रसन्न चित्त पाण्डव लोगभी भीष्म जीसे युद्ध करने की इच्छा करके
चले । ३ । शंखध्वनि और कलकला शब्द पूर्वक कृकच, गोविपाक, भेरी, रुद्रंग, मुरज,
इत्यादि वाजों के और घोड़े हाथियों के अनेक प्रकारके शब्द हाने लगे, हे राजा

spread all round. All the mlechas and Aryans who heard of the
conduct of the Pandavas, wept for excess of joy. The cheerful and
ambitious warriors of the army sounded hundreds of musical instru-
ments and milk-white conch-shells. 104.

CHAPTER XLIV

* "Which side was the first to strike a blow, when the two armies
were thus prepared for battle?" asked Dhritrashtra. "Your son,
Dushasan," replied Sanjaya, "went forward, led by Bhishm, at the
order of Duryodhan; Bhim and other Pandavas, cheerful at heart,
proceeded to meet Bhishm in combat. Conch shells were sounded,
warriors roared, various musical instruments were beaten and blown

विषाणिका । भेरीमृदङ्गमुरजा ह्यकुत्रानि स्वना ॥ ४ ॥ उभयो सेनयोर्ह्यास स्ततश्चे
 ५ ॥ महान्त्यनीकानि
 महासमच्छ्रये समागते पण्डवघात्तैराष्ट्रयो । चक्रामिरे शङ्खमृदङ्गनि स्वनैः प्रकम्पिता-
 नांस वनानि वायुना ॥ ६ ॥ नरेन्द्रनागाश्वरघातुलानाम्भागतानामशिवे सुहृत् ।
 वभूव घोषस्तुमुलश्मना वातोद्भुतानामिव सागराणाम् ॥ ७ ॥ तामन् समुत्थिते शब्दे
 तुमुले लोमहर्षणे । भीमसेनोमहाव हु प्राणदग्गोवृषो यथा ॥ ८ ॥ शखदुन्दुभि निर्घो
 प वारणानाञ्च वृद्धितम् । सिंहनादश्चसैन्यानां भीमसेन रघोभ्यभूत् ॥ ९ ॥ हयानाहप
 माणानामनीकेषुसहस्रश । सर्वानभ्यभवच्छब्दान् भीमस्यनदत् स्वन ॥ १० ॥ तश्रुत्वा
 नितद तस्य सैन्यास्तव वतत्रसु । जीभूतस्येव नदत् शक्राशनि समस्वनम् ॥ ११ ॥

तदनन्तर वह दोनों सेनाओंके वीर लोग परस्पर में एक दूसरे पर महार करने को
 महा गर्जनाओं को करके ऐसे दौड़े कि जिनके शब्दों से महातुमुलशब्द होगया
 । ५ । पांडवों और दुर्योधनादि कौरवों की महायुद्ध करने वाली सेना समागम
 के समय शंख और मृदंगोंके शब्दों से ऐसी महा कम्पायमान हुई जैसे कि वायु से
 सब वन कम्पायमान होते हैं, फिर राजा लोगों से और हाथियों से समाकुल और
 अशुभ मुहूर्त्त में आनेवाली सेनाओं क ऐसे कठोरशब्द हुए जैसे कि वायुसे
 चलायमान समुद्रों के शब्द होते हैं । ७ । शरीर के रोमहर्षण करनेवाले उस
 तुमुल शब्दके उठने पर महाबाहु भीमसेन ऐसा गर्जा कि जिसकी गर्जना के
 कारण शंख दुन्दुभियों के शब्द और हाथियोंकी चिंघाड़ वा सेनाके मनुष्यों
 से सिंहनादभी तिरस्कार होगये, इस भीमसेनके शब्द ने सेना के मन्ववर्त्ती
 हजारों घोड़ों के दिनहिनाहट आदि अनेक शब्दों को दवादिया । १० । उसके
 उस महावज्र के समान शब्द को सुनकर तेरी सेना के मनुष्य अत्यन्त भयभीत हुए
 उस वीर के शब्द से सब सरारियों के बाहनों ने ऐसे मूत्र विष्टा को डाला जैसे

and the noise of all these, mixed with the neighing of horses and the
 grunting of elephants, was excessive. The warriors on either side
 rushed on to fight with tremendous roars. 5 The armies of the
 Pandavas and Kauravas shook with the noise of conch shells and
 drums as forests shaken by the wind. The uproar from the warriors
 and elephants of the army was like that of the ocean in a storm of
 wind. 7 Above that fearful din rose Bhim's war cry which was
 heard above the sounds of conch shells, trumpets, elephants and
 warriors and subdued the neighing of thousands of horses. 10 The
 people of thy army were afraid to hear the thunder like sound of

घाहनानिच सर्वाणि शङ्कन्मूर्धं प्रसृष्टुवुः । शब्देन तस्म वीरस्य सिंहस्येवेतरेभ्याः ॥ १२ ॥ दर्शयन् घोरमात्मान महाभ्रमिष नाडयन् । विभीषयन्स्तवसुतान् भीमसेनः समभ्ययात् ॥ १३ ॥ तमायान्तं महेश्वासं सोदर्याः पश्यन्वारयन् । छाद्यन्तःशर व्रातैर्मघा इव दिवाकरम् ॥ १४ ॥ दुर्योधनश्च पुत्रस्ते दुर्मुखो दुःसहःशूलः । दुःशासनश्चातिरथस्तथा दुर्मर्षिणो नृपः ॥ १५ ॥ विविशतिश्चित्रसेनो विकर्णश्चमहारथः । पुरमित्रो जयो भोजः सौमदत्तिश्च वीरवान् ॥ १६ ॥ महाचापानि ध्रुवन्तो मेघा इव स विद्युतः । वाददानाश्च नाराचादिमुक्ताशीविषोपमान् ॥ १७ ॥ अथते द्रौपदीपुत्राः सौमद्रश्च महारथः । नकुलः सहदेवश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षदः ॥ १८ ॥ चात्तराष्ट्रान्प्रति यपुरदंयन्तः शितैःशरैः । वज्रैरिष महावेगैः शिखराणि घराभृताम् ॥ १९ ॥ तस्मिन्

कि सिंह के शब्द को सुनकर अन्य जंगल के पशु विष्टा मूत्रको डालते हैं । १२ । वहाँ भीमसेन अपने शरीर को महा भयानक दिखाता और बड़े धनके समान गर्जता तेरेपुत्रों को डराता हुआ फिर उनके सम्मुख आया, तबतो उस आते हुए बड़े धनुषधारी भीमसेनको दुर्योधन के सहोदर भाइयों ने चारों ओर से वाणों की वर्षा से ऐसा ढक दिया जैसे कि सूर्य को बादल ढकदेता है, हे राजा आपके पुत्र दुर्योधन, दुर्मुख, अतिरथी दुःशासन, दुसह, दुर्मर्षण, विविशति, चित्रसेन, महारथी विकर्ण, पुरभिन्न, जय, भोज, पराक्रमी सौमदत्त यह सब वीर जैसे बादल विजली को धारण किये हुए होते हैं उसी प्रकार धनुषों को चढ़ाये हुए कांचली रहित सर्पों के समान नाराच नाम वाणों को हाथों में लिये हुए सम्मुख आये । १७ । तदनन्तर द्रौपदी के पुत्र और सुभद्राका पुत्र महारथी अभिमन्यु नकुल सहदेव पार्षदका पुत्र धृष्टद्युम्न यह सब बड़े तीक्ष्णशरों से ऐसे पीड़ित करते हुए शत्रुओंके सम्मुख गये जैसे बड़े वेगवान् वज्रों से शिखरों को पीड़ित करते हुए इन्द्र पर्वतों के सम्मुख जाय, उस पहले युद्धमें तेरेपुत्रोंके और पांडवों के धनुषों की

Bhim, and the animals were so terrified as if they had heard the roar of a lion. 12. Bhimsen, with his formidable appearance, roaring like thunder and terrifying thy sons, came again in front, and the great archer, Bhimson was covered on all sides by the arrows of Duryodhan's brothers as the sun by the clouds. Your sons Duryodhan, Durmukh, valiant Dushasan, Dussah, Durmarshan, Vijinshati, Chitrasen, valiant Vikarn, Purumitra, Jaya, Bhoj and warlike Somdatta, with their bows bright like lightning and arrows deadly like the serpents who have cast their skins, came to the front. The sons of Draupadi, Abhimanyu the son of Subhadra, Nakul, Sahadev and Dhrishtadyumna the son of Parshad came in front of the enemy, shooting their sharp arrows as Indra strikes his

प्रथमसंग्रामे भीमज्यातलनि स्वने । ताववानापरोपाच नासीत्कश्चित् पराङ्मुख २०
 लाघव द्रोणाशिष्याणामपश्य भरतर्षभ । निमित्तवेदिना चैव शरानुत्सृजतां भृशम्
 ॥ २१ ॥ नोपशाम्यति निर्घोषो धनुपाकूजता तथा । पिनिध्वेष शरादीप्ता ज्योतीषीव
 नभस्नलात् ॥ २२ ॥ सर्वे त्वग्ये महीपाला प्रेक्षता इवभागत । दृढशुर्दर्शनीय त माम्
 ज्ञातिसमागमम् ॥ २३ ॥ ततस्ते जातसरम्भा परस्परकृतागत । अन्योन्यस्पर्धया
 राजन् व्यायच्छन्तमहाराथा ॥ २४ ॥ दुरपाण्डवसेने ते दृश्यन्ध्वरयसकुले । शुशुभाते
 रणेऽतीवपटे चित्रार्पितेइव ॥ २५ ॥ ततस्त पार्थिवाःसर्वे प्रगृहीतशरासना । सह
 सैन्या समापेतु पुत्रस्यतव शासनात् ॥ २६ ॥ युधिष्ठिरेण चादिष्टा पार्थिवास्ते

ज्या प्रत्यंचाओं के भयानक शब्दों से दोनों पक्षवालों मेंसे कोईभी परांगुल नहीं
 हुआ अर्थात् किसीने मुख न फेरा । २० । हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र
 मैंने वाणोंको बराबर छोड़ते और लक्षों को वेधते हुए द्रोणाचार्य के शिष्यों की
 हस्तलाघवता को देखा, उस समय शब्दायमान धनुषों के शब्द बन्द नहीं होते थे
 और प्रकाशित वाणभी बराबर ऐसे चले जैसे कि आकाश से नक्षत्रों के पतन
 बराबर होते हैं । २२ । हे भरतवशी अन्य सब राजाओं न कुतूहल देखनेवालों
 के समान उस दर्शनीय और भय उत्पन्न करने वाले जात भाइयों के युद्धको देखा,
 तदनन्तर हे राजा उन क्रोधों में भरेहुए परस्पर में अपराधी महा रथियों ने अन्यो-
 न्यकी ईर्ष्यासे परस्पर वीरताकी, कौरव और पांडवों की वह दोनों सेना हाथी घोड़े
 और रथों से व्याप्तहोकर युद्धमें ऐसी शोभायमान हुई जैसे चित्र पत्रों से विचित्र
 दो वस्त्रहोते हैं । २५ । तदनन्तर धनुषवाण हाथमें लिये सब राजा लोग आपके
 पुत्रकी आज्ञासे सेनाके मनुष्यों समेत चारों ओरसे आट्टे उनचारों ओरसे दौड़ने
 वालों के व्याकुल शब्द उस समुद्रकी गर्जना से मुनाई दिये जिस समुद्र में हाथी

bolts at a mountain None of the warriors turned back from the
 arrows of the Pandavas or those of thy sons in that first encounter
 20 I saw, O king Dhritrashtra ' the dexterity of the pupils of Dro-
 naoharya in discharging arrows and hitting the mark The twang
 from their bows was continuous and the bright arrows looked like the
 fall of meteors from the sky 22 Other kings only looked on at the
 awe inspiring encounter of those brothers and kinsmen Then, O king
 those angry warriors eager to destroy one another, made use of their
 skill in fighting The armies of the Kuravas and the Pandavas,
 with their elephants, horses and chariots looked as beautiful as the
 pictures on a canvass 25 Then all the kings with bows and arrows
 in their hands rushed on all sides by the order of your son The
 hubbub caused by the assailants was like the roar of the ocean having

सहस्रश । विनद्धत. समापेत्तु पुत्रस्य तत्र वा द्विगोम् ॥ २७ ॥ उनयो. सेनयोत्तीव्रः
सैन्यानां ससमागम. । अतर्धायनचादित्य सैन्येन राजसावृत् ॥ २८ ॥ प्रयुद्धानां प्रमत्तानां
पुनरावसिनामपि । नाशस्येषा परेषावा विशेष समदृश्यत ॥ २९ ॥ तस्मिन्नुत्तुमुळे युद्धे
घर्षमाने महाभये । धातिसर्वाण्यनीकानि पितातेऽभिच्यरोचत ॥ ३० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवपर्वणि युद्धारम्भे
चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

सभ्य उवाच । पूर्वाहणे तस्य रौद्रस्य युद्धमहानोविशाम्पते । प्रावर्त्तत महाघोर
राज्ञां देहावकर्त्तनम् ॥ १ ॥ क्रूरुणा सञ्जयानां च जिमोष्णापरस्परम् । सिंहा

घोड़ों के शब्द सिंहाद से मिश्रित होत थे। से व्याकुल शब्दायमान बाण-प
ग्राहवाला धनुष हाथी और सड़गरूप कदुए रत्नने वाला और चारों ओरसे घोड़ों
की चाल रूपवायु का आगे रत्नगेवाला धा, और युधिष्ठिर की आज्ञा पायेहुए
हजारों राजानोग अपनी सेना के मनुष्यों समेत आपके पुत्रकी सेनापर पड़े उस
समय दोनों ओर के शीरों में पासपा ऐसा कठिन युद्धहुआ जिमकी धूलिमें सूर्य
भी आन्डाहित होगया, धूमसे दोनोंओर के वीरोंका अत्यन्त लड़ना वा मुरफेरना
अथवा लौटना वा किसी की मुख्यता दिखाई नही दी इस बड़े भयकारी तुमुल
युद्ध के वर्त्तमान होने पर आपके पिताभीष्म जी सब सेना को उल्लंघनकर के
अत्यन्त शोभायमानहुए ॥ ३० ॥

अध्याय ४० ॥

संजयते कि हेराजा उनभयकारियों के प्रथमभाग में राजाओं के शरीरोंको
काटनेवाला महाभारी घोर युद्ध प्रारंभहुआ, युद्धमें विजया कांती कौरवों के और
श्रीजिषों के सिंहाद रूपी शब्दों ने पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान कर दिया,

the noises of elephants and horses mixed with the roars of warriors and
swords for crocodiles and tortoises and the tramp of horse, hoots for
wind storm At the order of Yudhishtur, thousands of lings with
their attendant warriors fell on the army of thy son. The battle on
both sides was severe and the sun was lidden by the dust storm
raised by them, the feats of warriors, their turning back, the supre-
macy of one warrior over the other were not distinguishable in that
great battle and your father Bhishma was glorious above all 32

CHAPTER XLV

Sanjaya continued "Thus commenced the greatest war, destructive
of kings The war cries of the Kauravas and Sanjayas, desirous of

नामैव संहारो दिवमुर्वीक्षनादयन् ॥ २ ॥ आसति किलकिलाशब्दस्तलशह्वरचै
सह । जङ्घिरे सिंहनादाश्च शूराणां प्रतिगर्जताम् । तलत्राभिहृताश्चैव ज्याशब्दाभरत
पंभ । पत्नीनां पादशब्दश्च घाजिनांच महास्वनः ॥ ४ ॥ तोत्राङ्कुशनिपतश्चया-
युधानांच निस्वन । घण्टाशब्दश्च नागानामन्योन्यमभिघायताम् ॥ ५ ॥ तस्मिन्
समुदिते शब्दे तुमुले लोमहर्षणे । घभूव रथनिर्षोप पर्जन्यनिनदोपमः ॥ ६ ॥
ते मनः क्रमाघाय समभित्यक्तजीविताः । पांडवानभ्यवर्त्तन्त सर्वपवोच्छ्रितध्वजाः ७
अथ शान्तनवो राजश्रभ्यघावन्नवज्ययम् । प्रयुद्ध कामुकं घोरं कालदण्डोपमंरणे ॥८॥
अर्जुनोपि घनुर्गृह्य गाण्डीवं लोकविश्रुतम् । अभ्यघायत तेजस्वी गाण्डीवं रणमूर्धनि
॥ ९ ॥ ताडुमो कुरुशाईलौ परस्परवधैषिणौ । गांगेयस्तु रथे पार्थं विध्वानाकम्प

और धनुषधारियों के धनुषों की टंकारों समेत शस्त्रों की महा ध्वनियों से अत्यन्त
कलकला शब्द उत्पन्न हुआ और परस्पर में सम्मुख गर्जनेवाले मनुष्यों के सिंहनाद
उत्पन्न हुये, हे भरतरपम हस्तत्राण से टक्करखाई हुई भयंकराओं के शब्द और
पदातियों आदि घोड़ों के चरणोंके शब्दों से और गिरेहुये अंजुश वा अस्त्रों के
शब्दों से अथवा परस्पर में सम्मुख दौड़ने वाले हाथियों के घंटोंके शब्दों से, इस
युद्धमें शरीर के रोमहर्षण करने व ले तुमुल शब्द उत्पन्न हुये और रथों के शब्द
वादलों की गर्जना के समान हुये । ६ । वह सबलोग जिनकी ध्वजा उन्नतथीं
और जो जीवनकी आशाको अत्यन्त त्यागकरके कठोर चित्त निर्दय और दूसरों
से शत्रुता करनेवाले बनकर पांडवों के सम्मुख लड़ने को उपस्थितहुये हे राजा
आप भीष्मपितामहजी कालदण्ड के समान भयानक रूप धारण किये अपूर्व
भयकारी धनुष को हाथ में लेकर अर्जुनके सम्मुख दौड़े और संसारमें विदित
धनुषपारी महाहस्त लाघव जानने वाला तेजस्वी अर्जुनभी अपने गांडीव धनुषको
लेकर भीष्मजी के सम्मुख दौड़ा, कौरवों मे महा श्रेष्ठ वह दोनों परस्पर में मारने
की इच्छा में मत्त हुये परन्तु महाबली भीष्मजी ने अर्जुनको बाणों से भेदकर

victory echoed through the earth and sky, and the noise was great from
the twangs of bows, the blasts of the conch-shells and the roar of war-
riors. From the twangs of bows, the tramp of the soldiers and horses,
the fall of goods and other weapons and the ringing of the bells of the
moving elephants, the noise was tremendous, and the rumbling of
the chariot wheels was like thunder. 6. I shall mention those who
with banners upraised, fought desperately and fearless of life, encoun-
tered the Pandavas. Bhishm the grandfather, dreadful as the rod
of Death, armed with the most dreadful bow, rushed upon Arjun.
That world-renowned archer too, of very great dexterity of hand,
Arjun, armed with the Gandiv bow rushed upon Bhishm and the two
best of Kauravas, met each other in combat, wishing to strike each
other. But Bhishm of great prowess could not quell Arjun with his

यद्दली ॥ १० ॥ तथैव पांडवो राजन् भीष्म नाकम्पयद्युधि । सात्वकिस्तु महेश्वरा
 वृत्तवर्माणभ्ययात् ॥११॥ तयो सम भवद्युद्ध तुमुललोमहर्षणम् । सात्वकि वृत्तवर्मा
 णंवृत्तवर्मा च सात्वकिम् ॥ १२ ॥ आनन्दे तु शीघोरस्तक्षमाणौ परस्परम् । तीक्ष्ण
 चित्तसर्वाङ्गौ शत्रुभाते महादली ॥ १३ ॥ वसन्तेपुष्पशरलौ पुणितगिचि किशुका ।
 अभिमन्युर्महेश्वरास बृहद्बलमयोधयत् ॥ १४ ॥ तत कासलराजासावाभिमन्यो
 विशाम्पते । ध्वज चिच्छेद समरे खाद्यिष्यपातयत् ॥ १५ ॥ सांभद्रस्तत
 क्रुद्ध पातिते रथसारथी । बृहद्बल महाराज विव्याध नवाभि शरैः ॥ १६ ॥ अथा
 परान्यामश्लान्या शिताभ्यामरिमन्वन । ध्वजमेकेनचिच्छेदपाणिमेकेन सारथिम् ॥१७॥
 अन्योन्यञ्च शरैःकुडौ ततक्षतेपरस्परम् । मानिन समरे हतःकृतवैरं महारथम् ॥१८॥
 भीमसेनश्त्वसत् दुर्योधनभ्योद्ययत् । तावुभौ नरदादौ कुरुमुख्यौ महारथौ ॥ १९ ॥

कंपायमान नहीं किया । १० । इसी प्रकार अर्जुनने भी भीष्मनी को बाणों से
 भेदकर कंपायमान नहीं किया और धनुषधारी सात्विकी कृतवर्माके सम्मुख गया,
 इनदोनों काभी रोमहर्षण महातुमुल युद्धहुआ सात्विकाने कृतवर्माको और कृतवर्माने
 सात्विकीको घायल किया, दोनों ने बड़े-शब्दोंको कहकर परस्परमें घायल किया,
 तदनन्तर वहदोनों यादववाणों से भरेहुये अंगोंसमेत ऐसे शोभायमान विदित हुये
 जैसे कि वसन्तऋतु में फूलों से आच्छादित विचित्र किशुक होते हैं उससमय
 बड़ाधनुषधारी अभिमन्यु बृहद्बल से युद्धकरने लगा । १४ । हेराजा तिसपीठे युद्ध
 में राजा कोसलने अभिमन्यु की ध्वजा को गिराकर उसके सारथी को गिराया
 ध्वजाकेकाटने और रथसारथीके गिरानेसे अभिमन्युने महाक्रोधाम्भिरूप होकर
 बृहद्बलको नौबाणों से घायल किया, अर्थात् एक बाणसे तो ध्वजाको और एक
 बाणसे पीछे के रक्षक और सारथी को मारा, शत्रुमेंके विजय करने वाले, दोनों
 ने परस्पर में तीक्ष्ण बाणों से घायल किया और महामानी युद्ध में प्रकाशित
 शत्रुता करनेवाले महारथी आप के पुत्र दुर्योधनसे भीमसेन युद्ध करने लगा, उन

arrows 10 Nor could Arjun shake Bhishm by his arrows. Sat
 wika the great archer encountered Kritvarma, and the two warriors
 fought furiously and wounded each other while they spoke high-
 sounding words The two Yadavas, with their bodies wounded by
 arrows looked like Kinshuks (a tree with red flowers) in bloom in
 spring season. Abhimanyu the great archer fought with Vrihadval
 14 The king of Kosal felled the banner of Abhimanyu and killed
 the driver Being infuriated by the fall of his banner and chariot
 driver, Abhimanyu wounded Vrihadval with nine arrows. With
 one arrow he cut down his banner, with another he killed the archer
 and the rear guard The two conquerers of enemies wounded each
 other Your proud son Duryodhan of great glory in battle, valiant
 and resentful, met with Bhimsen in combat Both these Kauravas

अन्योन्यं शरवर्षाभ्यां ववृषाते रणाजिरे । तौ वीक्ष्यहुमहात्मानौ कृतिनौ चित्रयो-
 चिनी ॥ २० ॥ विस्मय सर्वभूतानां समपद्यतभारत । दुःशासनस्तु नकुलंप्रत्यु-
 घाय महाबलम् ॥ २१ ॥ अविध्यान्निशितैर्वाणैर्वह्निर्मर्मभेदिभिः । तस्य माद्रीसुत
 केतुः सशरञ्च शरासनम् ॥ २२ ॥ चिच्छेद् निशितैर्वाणैः प्रहसन्निघ भारत । अथैनं पंच
 विंशत्या क्षुद्रकाणां समार्षयत् ॥ २३ ॥ पुत्रस्तुतयदुर्धर्षां नकुलस्यमहाहवे ।
 तुरङ्गाश्चिच्छिदेवागैर्ध्वजञ्चैवाभ्यपातयत् ॥ २४ ॥ दुर्मुखं सहदेवंच प्रत्युघायमहाबलम्
 विध्याद्य शरवर्षेण यतमानं महाहवे ॥ २५ ॥ सहदेवस्ततो धीरो दुर्मुखस्य
 महारणे । शरेण भृशतीक्ष्णेन पातयामाससाराधिम् ॥ २६ ॥ तावन्न्योन्यं समा-
 साद्य समरे युद्धदुर्मदौ । त्रासयेतां शरैर्घोरैः कृतपतिकृतैरिणौ ॥ २७ ॥ युधिष्ठिरः
 स्वयराजा मदराजानमभ्ययात् । तस्य मदराजिघ्र्यापं द्विधा चिच्छेद् मारिप ॥ २८ ॥

दोनों नरोत्तम और कौरवोत्तम महारथियोंने । १९ । युद्धभूमिमें अपने २ बाणों की
 वर्षासे परस्पर में एकने दूसरेको ढक दिया, हे भरतवंशी उन युद्धमें कुशल दोनों
 महात्मा चित्रयोधियोंको देखकर सब जीवोंको आश्चर्य उत्पन्न हुआ । २० । और
 दुःशासन ने महारथी नकुल के सम्मुख जाकर बड़ी प्रसन्नतासे तीक्ष्णबाणों से नकुल
 को घायल किया और इसीप्रकार हे राजा हैंसतेही हुये नकुल नेभी अपने तीत्र
 बाणों से दुःशासन की ध्वजा और धनुषबाणको काट डाला और पच्चीस क्षुद्रक
 नाम बाण उमपर छोड़े । २३ । फिर तोपुत्र दुःशासन ने नकुल के घोड़ों को
 मारकर उसकी ध्वजा को गिराया, और दुर्मुख ने महाबली सहदेव के सम्मुख
 जाकर उपाय करने वाले सहदेवको अपने बाणोंकी वर्षासे पीड़ामान किया । २५ ।
 तिसपीछे बड़ेवीर सहदेव ने उसी युद्ध के बीच बड़े तीक्ष्ण तीरों से दुर्मुख के
 सारथीको गिराया उनदोनों दुर्मद घात के बदले घातकरने के इच्छावान् वीरों
 ने अपने भयकारी बाणों से युद्धमें भय उत्पन्न कर दिया, और आप राजा युधिष्ठिर
 मद्रदेश के राजा के सम्मुख गये उसको देखते ही मद्रदेश के राजाने युधिष्ठिर के

are the best of men 19 With the shower of their arrows they
 covered each other and the lookers on wondered to see the fighting
 of those two warriors 20 Dushasan met Nakuland, with a cheer-
 ful heart, wounded him by his arrows Likewise, Karan two, with
 a smiling face, cut down with his arrows Dushasan's banner, bow and
 arrows, and shot twentyfive arrows of small heads at him 23 Then
 thy son Dushasan killed the horses of Nakul and cut down his
 banner. Durmukh encountered Sahadev of great valour and wounded
 him with his arroows 30 The great warrior, Sahadev struck
 Durmukh's chariot driver down by his sharp arrows. The two
 dreadful warriors, with their plots and counterplots, caused a great
 alarm in the field of battle King Yudhishtur himself encountered

तदपास्य धनुर्द्विजं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । अभ्यर्त्तुकार्मुकमादाय वेगवद्बलवत्त-
 रम् ॥ २९ ॥ ततो मद्रेश्वरं राजा शरैः सन्नतपर्वभिः । छाद्यामास संकुद्धस्ति-
 ष्ठितिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ३० ॥ घृष्टद्युस्ततो द्रोणमभ्यद्रवत् भारत । तस्य द्रोणः
 सुसंरुद्धः परासुकरणं दृढम् ॥ ३१ ॥ त्रिघाचिच्छेत् समरे पांचालवत्युत्कार्मुकम् ।
 शरैश्चैव महाघोरं कालदण्डमिवापम् ॥ ३२ ॥ प्रेषयामास समरे सोम्यकायेभ्य
 मञ्जत । अघायद्नुरादाय सायकाथ चतुर्दश ॥ ३३ ॥ द्रोणं द्रुपदपुत्रस्तप्रतिविष्याथ
 सयुगे । तावन््यान्यं संसंकुशौ चक्रत् सुभृशं रणम् ॥ ३४ ॥ सोमदत्तिं रणशङ्को
 रमसं रमसोयुधि । प्रवृथयौ महाराज तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ३५ ॥ तस्य वै दक्षिणं
 वारिं निर्विभेद रणे भुजम् । सोमदत्तिस्ततः शङ्खं जनुदेशे समाहणत् ॥ ३६ ॥
 तयोस्तदभवद्युज घोररूपं विशाम्पते । तस्यो संमरे पूर्वं वृत्रवासवगोरिव ॥ ३७ ॥

धनुष को काट डाला । २८ । तब कुन्ती के पुत्र वेगवान् युधिष्ठिर ने उस कटेहुए
 धनुष को डालकर दूसरे दृढ़धनुषको धारण किया, तिसपीछे अत्यन्तक्रोधपुक्त होकर
 राजा युधिष्ठिर ने तद्विषय वागों से मद्रदेशाधिपति को आन्च्छादित किया और
 तिष्ठतिष्ठ करके अनेक वचनोंको कहा । ३० । हे भरतवंशी इसके पीछे घृष्टद्युम्न
 द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़ा उससमय महा क्रोध में भरे हुए द्रोणाचार्य ने युद्ध में
 उस महात्मा पांचाल के दृढ़ धनुष को जोकि मारनेका साधन था काटडाला और
 महा भयानक काल दण्ड के समान अपने वारणको युद्धमें फेंका वह उसके शरीर
 में घुसगया तिसपीछे द्रुपदके पुत्र घृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष में शायक नाम चौदह
 वागों को धारण करके युद्धमें द्रोणाचार्य को घायल किया और दोनों क्रोधरूपों
 ने परस्पर में बड़ा युद्ध किया । ३४ । हे महाराज युद्ध में शीघ्रता करने ज्ञाला
 शर अपने समान गुणवाले सोमदत्त के सम्मुख गया और निष्ठतिष्ठ शब्दको बोला
 तब बड़े वीर सोमदत्तने युद्धमें उसके दक्षिण भुजा को घायल करके अत्यन्तही
 व्याकुल किया, हे राजा उन दोनों अहंकारियों काभी युद्ध ऐसा महा भयकारा

the king of Madra, who cut down Yudhishtir's bow as soon as he saw
 him. 28. Then Yudhishtir the son of Kunti dexterously threw
 away that bow and took up another, a hard one, and in great anger
 covered the king of Madra with his arrows, saying "Stay, stay" 30.
 Dhrishtadyumna rushed upon Dronacharya who cut down the hard
 bow of the Panchal prince with which the latter had come to fight.
 Dronacharya discharged his arrows like the staff of death which
 pierced the body of the Panchal prince Dhrishtadyumna the son of
 Drupad thereupon discharged fourteen arrows from another bow and
 wounded Drona. Both these enraged warriors fought valiantly. 34.
 Shakuni the dexterous in battle, faced Somadatta who was his equal,
 and said, "Stay, stay." Somadatta wounded his right arm which
 smarted and upset his mind. The encounter between those two

घाहलीकन्तुरणे क्रुद्धं क्रुद्धरूपो विशाम्पते । अश्वद्रवदमेयात्मा धृष्टकेतुमहारथ ॥ ३८ ॥ वाहलीकन्तु रणेराजन् धृष्टकेतुमर्मण । शरैर्वहुभिरानच्छत् सिंहनाद मघानदत् ॥ ३९ ॥ चेदिराजत् सक्रुद्धो वाहलीक नवभिः शरैः । विव्याघ समरे तूर्णं मत्तो मत्तमव द्विपम् ॥ ४० ॥ तौतत्र समरे क्रुद्धौ नर्दन्तौच पुन पुन । समीपतु सुसक्रुद्धावङ्गारव्जुवाविच ॥ ४१ ॥ राक्षस रौद्रकर्माणं क्रूरकर्माघटोत् कच । अलम्बुप प्ररुदियाद्वल शक्रदयाहवे ॥ ४२ ॥ घटोत्कचस्ततः क्रुद्धो राक्षसं तं महाबलम् । नवत्या सायकैस्तीक्ष्णैर्दारयामास भारत ॥ ४३ ॥ अलम्बुपस्तु समरे भैमसेनि महाबलम् । बहुधा दारयामास शरैः सन्नतार्वाभिः ॥ ४४ ॥ व्यभ्राजेतां ततस्तौ तु संयुगे शरविभ्रतौ । यथा देवासुरे युद्धे बलशक्रौमह बलौ ॥ ४५ ॥ शिखण्डी समरे राजन् द्रौगिमशुचयां चली । अश्वत्यामा ततः क्रुद्ध

हुआ जैसा देव दानवों का युद्ध होता है । ३७ । तिस पीछे वड़ा साहसी महारथी युद्ध में क्रोध रूप धृष्टकेतु वाहलीक राजा के सम्मुख गया, तब वाहलीक ने उमत्तमा से रहित धृष्टकेतु को बहुत से बाणों से आच्छादित करके महा सिंहनाद किया फिर उस महाक्रोधरूप चेदिराज धृष्टकेतु ने भी युद्ध में बड़ी शीघ्रता से नौ बाणों से वाहलीक को घायल किया और ऐसा युद्ध किया जैसे मत्त और उनमत्त हाथी लड़ते हैं । ४० । और युद्धमें महा क्रोधाग्निरूप दोनों वारंवार शब्दों का करते हुये मंगल और बुधके समान बड़े पराक्रम से लड़े, महा कठिन कर्मी घटोत्कच उसी के समान कठिनकर्मी अलंबुपनाम राक्षसके सम्मुख ऐस गया जैसे कि युद्ध में बलिके सम्मुख इन्द्र जाता है, हेभरतवंशी फिर घटोत्कच ने उस महाक्रोध रूप महावली राक्षस को तीक्ष्ण नौ तीरों से घायल किया । ४३ । और अलंबुप ने भी युद्ध में भीममेन के पुत्र घटोत्कच को गुप्त ग्रन्थि वाले बाणों से अनेक रीतिसे घायल किया तदनन्तर वह दोनों बाणों से भिदेहुए युद्ध में अत्यन्त शोभायमान हुए । ४५ । हे राजा महा पराक्रमी शिखण्डी उस युद्ध में अश्वत्यामा से

proud warriors was like that between the gods and the danavas 37. Next, the great warrior Dhrishtaketu of immense prowess, the very Rage in person, faced King Vahlik. The latter covered the former with a shower of arrows and roared like a lion. Dhrishtaketu the king of Chedi, in his turn, wounded Vahlik with nine swift going arrows. The two heroes fought like mad elephants 40. The two warriors spoke loudly in a rage and fought like Mangal and Budh. Valiant Ghatotkach faced the rakshas Alamvush of equal prowess with him, as Indra faced Bali, and wounded him with nine sharp arrows. Alamvush too, wounded Ghatotkach the son of Bhimsen with his arrows having hidden knots, and the two, wounded by arrows, looked glorious. 45 Shikhandi of great prowess faced Ash-

शिखण्डिनमुपस्थितम् ॥ ४६ ॥ नाराचेन सुतीक्ष्णेन मृशं विध्वाह्यकं पयत् । शिखण्ड
 पि ततो राजन् द्रोणपुत्रमताडयत् ॥ ४७ ॥ सायकेन सुपीतेन तीक्ष्णेन निशिते नच ।
 तीक्ष्णस्तनदाभ्योन्यं शरैर्वहुावचैर्मुघे ॥ ४८ ॥ भगदत्तं रणे शरं विराटोवाहिनीपतिः ।
 अभ्ययाध्वरितोराजंस्ततोयुद्धमवर्षत ॥ ४९ ॥ विराटो भगदत्तन्तु शरवर्षणमारत ।
 अभ्यवर्षःसुसंकुद्धो मेघोवृष्ट्याद्वचाचलम् ॥ ५० ॥ भगदत्तस्ततस्पूर्णं विराटं पृथिवीप-
 तिम् । छादयामास समरे मेघः सूर्यं मिवादितम् ॥ ५१ ॥ बृहत्क्षत्रंतुकैकेयं कृपःशार
 हृतोययौ । तं कृपः शरवर्षेण छादयामास मारत ॥ ५२ ॥ गौतमं कैकयः क्रुद्धः शरवृ-
 ष्ट्याश्रयपूरयत् । तावन्वोन्यं हयान् हत्वा धनुश्छिन्वा च मारत ॥ ५३ ॥ विरथावासि

युद्ध करने के लिये उनके सम्मुख गया तब तो क्रोधाग्निरूप अश्वत्थामा ने सम्मुख
 वर्तमान होनेवाले शिखण्डों को बड़े तीक्ष्ण नाराच नाम बाणों से अत्यन्त घायल
 करके महा कंपायमान किया, तिस पीछे हे राजा शिखण्डी ने भी बड़े तीक्ष्ण
 पुंखवाले पीतंगके शायकों से अश्वत्थामा को घायल किया । ४७ । और युद्ध
 भूमि में परस्पर बहुत प्रकार के बाणोंसे संग्राम किया और सेनापति राजा विराट
 संग्रामभूमि में राजा भगदत्त के सम्मुख गया तिसपीछे युद्ध होना मारम्भहुआ
 और राजा विराटने महा क्रोधित होकर भगदत्त के ऊपर बाणों की ऐसी वर्षाकी
 जैसे बादल अपने जल से पर्वतपर वर्षा करता है फिर भगदत्त ने भी बड़ी शी-
 घ्रता से उस राजा विराट को संग्रामभूमि में बाणों के मारे ऐसा आच्छादित कर-
 दिया जैसे बादल सूर्य को आच्छादित करते हैं । ५० । और शारद्वत कृपाचार्य
 जी केकय देशीय दृहच्छत्र के सम्मुखगये, हे भरतवंशी कृपाचार्य जीने बाणों की
 दृष्टि से उसको दक दिया और दृहच्छत्र ने भी महा क्रोध युक्त होकर गौतम
 कृपाचार्य जी को बाणों की वर्षासे व्याप्तकरादिया तदनन्तर हे राजा वह दोनों
 परस्पर में धनुष को काट घोड़ों को मारके विरथ होकर महाक्रोधों में भरेहुए खड्ग
 युद्ध करनेलगे । ५३ । उन दोनों का वह युद्ध भयानक रूप देखनेवालों को भी

wathama in battle. He was wounded and shaken by the sharp arrows of furious Ashwathama and wounded him with his own. 47. Both heroes fought bravely with various weapons. King Virat the commander of the army, faced king Bhagdatta in battle. The battle between them was furious. King Virat, in anger, showered his arrows on Bhagdatta as the clouds drop rain over a mountain. King Bhagdatta too covered king Virat with a shower of arrows and hid him like the sun under clouds. 50. Shardwat Kripacharya faced king Vrihachal of Kaikaya and covered him with arrows. King Vrihachal too, in great anger, covered Kripacharya with his own arrows. Both cut down each other's bows, killed the horses, and being deprived of chariots, fought furiously with swords 53. Their furious battle

युद्धाय समीपतुरमर्षणौ । तयोस्तदभवद्युद्धं घोररूपं सुशरुणम् ॥५४॥ द्रुपदस्तु ततो
 राजन् सैन्धव वै जयद्रथम् । अभ्युद्ययौ हृष्टरूपो हृष्टरूप परन्तप ॥ ५५ ॥ तत सैन्धव
 को राजा द्रुपद विशिखैस्त्रिभिः । ताडयामास समरे सच तं प्रत्य विभ्यत ॥ ५६ ॥
 तयोस्तदभवद्युद्धं घाररूपं सुदारुणम् । ईक्षणप्रति जननं पुत्रांगारकयोरेव ॥ ५७ ॥
 धिकर्णस्तुस्तस्तुभ्यं सुतसोमं महाबलम् । अभ्ययाज्जयनैर्भ्यैस्ततो युद्धमवर्षत ॥ ५८ ॥
 विकर्णं श्रुतसोमन्तु विख्या नाकस्वयच्छरैः । श्रुतसोमा विकर्णं तदद्भुतमिवाभवत्
 ॥ ५९ ॥ सुशर्माणं नरव्याघ्रश्चेकितानो महारथः । अभ्यद्रवत् सुसंभुद्धं पाण्डुवार्धं परा
 क्रमी ॥ ६० ॥ सुशर्मा तु महाराज चेकितानं महारथम् । महता शरवर्षेण वारयामास
 सयुगे ॥ ६१ ॥ चेकितानोपि संरब्धः सुशर्माणं महाहवे । प्राच्छादयत्त मिषुमिर्महामेघ

भयकारी विदित होताथा, तिसपीछे शत्रु संतापी महा क्रोधान्गि रूप राजाद्रुपद
 सिंधु के राजा जयद्रथ के सम्मुखगया तत्र जयद्रथ ने द्रुपद को तीन विशिषों से
 युद्ध भूमि में घायल किया और इसी प्रकार द्रुपद ने भी जयद्रथ को फिर उन
 दोनोंका युद्ध भयानक ५६ दुःख से प्राप्त होने के योग्य देखने लों को प्रसन्नता देने
 वाला ऐसा हुआ जैसे कि मंगल और शुक्र का युद्ध होताथा तिसपीछे आपका
 पुत्र विकर्ण वडेशीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा भीमसेन के पुत्र महा पराक्रमी सुतसोमके
 सम्मुख गया और युद्ध होने लगा विकर्ण ने सुतसोम को और सुतसोम ने विकर्ण
 को बाणों से वेधित करके कंपायमान नहीं किया इसमें बड़ा आश्चर्य सा हुआ,
 नरोत्तम महारथी पराक्रमी पाण्डवों पर अत्यन्त क्रोधरूप चेकितानसुशर्मा के
 सम्मुख गया, हे महाराज युद्ध होने लगा और सुशर्मा ने युद्ध में चेकितान को
 बाणों की बड़ी वर्षा करके रोका तब तो चेकितान ने भी महाक्रोधरूप होकर
 बाणों की वर्षा से सुशर्मा को ऐसा आच्छादित कर दिया जैसे कि बड़ा बादल
 पहाड़को आच्छादित कर लेता है । ६१ । हे राजा इसके पीछे पराक्रमी शकुनि

frightened the lookers on. Furious King Drupad the destroyer of
 enemies, faced Jayadrath the king of Sindhu. The two heroes
 wounded each other with their arrows and the battle between them
 was dreadful. 56. Difficult to be seen, pleasing the hearts of the
 lookers on, the encounter was like that between Mangal and Shukra.
 Your son, Vikarn rode his swift horses to meet Sutsoma the son of
 Bhimsen and began fighting. The two wounded each other with
 their arrows but none could shake the other. It was a wonderful
 sight. Chekitan the best of men valiant and infuriated against the
 Pandavas, faced Susharma. The two began to fight. Susharma
 checked the volley of chekitan's arrows, but the latter in great anger
 covered him with the shower of his arrows as a great cloud covers a
 mountain. 61. Valiant Shakuni proceeded against powerful Prati.

इवाचलम् ॥ ६२ ॥ शकुनिः प्रति विन्ध्यन्तु पराक्रान्तं पराक्रमी । अभ्यद्रवत राजेन्द्र
 मत्तः सिंह इव द्विपम् ॥ ६३ ॥ यौधिष्ठिरस्तुसंकुद्धः सौवर्कं निशितैःशरैः । व्यदारयत
 संग्रामे मघया निव दानवम् ॥ ६४ ॥ शकुनिः प्रतिविन्ध्यन्तु प्राति विन्ध्यं तमाहवे । व्य-
 दारयन् महाप्रातः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ६५ ॥ सुदक्षिणस्तु राजेन्द्र काम्योजानामहारा-
 यम् । श्रुतकर्मा पराक्रान्त मभ्यद्रवतसंयुगे ॥ ६६ ॥ सुदक्षिणस्तु समरे साहदेवं गहा-
 रयम् । विन्ध्या नाकमयान वै मैनाक मिव पर्वतम् ॥ ६७ ॥ श्रुतकर्मा ततः क्रुद्धः काम्यो
 जानामहारायम् । शरैर्वहुभिर्गानच्छदारयान्निव सर्वशः ॥ ६८ ॥ इरावानय संकुद्धः श्रुता-
 युपमस्दिमम् । प्रतुद्ययौ रणे यत्तो यत्तरुपं परन्तपः ॥ ६९ ॥ आर्जुनिस्तस्य समरे
 हयान् हत्वा महारथः । ननाद् बलवान् नादं तत् सैन्यं प्रथय पूरयत् ॥ ७० ॥ श्रुतायुस्तु
 ततः क्रुद्धः फाल्गुनिः समरे हयान् । निजघान गदाश्रेण ततो युद्ध मघर्तत ॥ ७१ ॥

महावली प्रतिविन्ध्य के सम्मुख इम तीव्रता से गया जैसे कि सिंह मतवाले हाथी के
 सम्मुख जाता है, यौधिष्ठिर के पुत्र प्रतिविन्ध्य ने महा क्रोधित होकर सुबल के पुत्र
 शकुनि को तीव्र बाणों से ऐसा अत्यन्त घायल किया जैसे कि इन्द्र दैत्यों को
 करता है और शकुनि ने भी बड़े ज्ञानी महावली प्रतिविन्ध्य को अत्यन्त सपत्तबाणों
 से विदीर्ण कर दिया । ६४ । और श्रुतकर्मा कांबोज के महारथीपराक्रमी राजा
 सुदक्षिण के सम्मुख गया, हे राजा सुदक्षिण ने साहदेव के पुत्र को घायल करके
 मैनाक पर्वत के समान कंपायमान नहीं किया, इसके पीछे श्रुतकर्मा ने भी कां
 बोजके महारथी सुदक्षिण को बाणोंसे अनेक रीति करके आच्छादित कर दिया
 तदनन्तर शत्रुसंतापी युद्ध में कुशल अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुनका पुत्र इरावान
 श्रुतायुष के सम्मुख गया, और महारथी बलवान् इरावान ने युद्ध में उसके घोड़ों
 को मारकर बड़े वेगसे दौड़ किया जिससे कि संपूर्ण सेना में शब्द भगया,
 और अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायुष ने भी अर्जुनके पुत्र इरावान के घोड़ों को गदाओं
 से मार डाला फिर युद्धहोने लगा । ७० । फिर आर्वत्य देशके राजाविन्द अनुविन्द

vindh like an infuriated lion against a mad elephant. Prativindh the
 son of Yudhisbthir wounded Shakuni with his sharp arrows as Indra
 does the daityas, and was wounded by the arrows of Shakuni. 64.
 Shrutkarma faced the valiant Sudakshin the king of Camboj.
 Sudakshin wounded the son of Sahadev, but could not shake him
 like the Menak mountains. Shrutkarma too covered the valiant
 Sudakshin of camboj on all sides. Then Arjun's son Irawan, the
 destroyer of enemies and dexterous in battle, angrily faced Shruta-
 yush. Irawan roared loud after killing his horses and the noise of it
 filled all the armies. The enraged Shrutayush too, killed the horses
 of Irawan with his mace and the battle continued. 70. Vind and
 Anuvind the two princes of Avanti, faced valiant Kuntibhoj. I saw

विद्वानुविन्दाघायन्वौ कुन्तिभोज महारथम् । ससेनं ससुतवीरं सससज्जनुराहवे ७२
 तत्राद्भुत मपश्याम तयोर्घोर पराक्रमम् । अयुष्येतां स्थिरो भूत्वा महत्या सनयासह
 ॥७३॥ अनुविन्दस्तु गदया कुन्तिभोज मताहवत् । कुन्तिभोजश्च त तूर्णं शरघ्रातैरवा
 किरत् ॥ ७४ ॥ कुन्तिभोजस्तथापि विदं विव्याध सायकै । सचत प्रति विव्याध
 तद्भुतमिधामभवत् ॥७५॥ केकयाघ्रातर पञ्च गांधारान् पञ्चमारिप । ससैन्यास्तं स
 सैन्याश्च बोधयामासुराहवे ॥ ७६ ॥ वीरबाहुश्चते पुत्रो वैराटि रथ सत्तमम् । उत्तरं
 बोधयामास विव्याध निशितै शरैः ॥ ७७ ॥ उत्तरश्चापितं वीरं विव्याधनिशितैः शरैः ।
 चेदिराट् समरे राजन् नुलूक सम भिद्रवत् ॥ ७८ ॥ तथैव शरचपेण उलूक सम वि
 द्धयत् । उलूकश्चापि तं वाणेनिशितैर्लोमवाहिभिः ॥ ७९ ॥ तयोर्दुद्ध समभवद् घोर
 रूप विशाम्पते । दारयेतासुसकुन्दा घन्यान्यमपराजितौ ॥ ८० ॥ एष द्वन्द्व सद्यमाणि

दोनों महावीर कुन्तिभोजके सम्मुख युद्ध में उपस्थित हुये, हे राजा वहाँ हमने उन
 दोनों के अपूर्व भयानक पराक्रमों को देखा अर्थात् वह दोनों बड़ी सेना समेत युद्ध
 करने में प्रवृत्त हुये ७२ अनुविन्दने गदा से कुन्तिभोज को घायल किया और कुन्तिभोज
 ने शीघ्र ही अपने बाण समूहोंसे उसको ढका दिया, फिर कुन्तिभोजके पुत्रने भी शाय-
 कोंसे विन्दको पीड़ा मान किया और उसने उसको पीड़ित किया यह भी आश्चर्य सा
 हुआ, हे धृतराष्ट्र केकयदेशी पाँचों भाइयों ने सेनाओं समेत संग्रामभूमि में नियत होकर
 गांधारियों के सम्मुख होकर महायुद्ध किया । ७५ । फिर आपका पुत्र वीरबाहु राधि-
 यों में श्रेष्ठ विराट के पुत्र उत्तरसे युद्ध करने लगा और नौ बाणों से उसको घायल
 किया, उत्तरने भी अपने तीन बाणों से उस वीरको घायल किया और उलूक ने
 भी बड़ी त्वरिता से शीघ्र गति वाले बाणों से उसको विदीर्ण किया । ७८ । हे
 राजा उन दोनों का युद्ध भी महाघोर भयकारी हुआ और क्रोधित होकर दोनों
 ने परस्पर एकने दूसरे को घायल किया, इस प्रकार तेरे पुत्र और पाँचों के रथ
 राज अश्वों से संकुलित युद्ध में हजारों योधा लोगों के द्वन्द्व युद्ध हुए । ८० । हे

the prowess of the two dreadful warriors in the midst of the armies
 72 Anuvind wounded Kuntibhoj with his mace and was himself
 covered by the shower of his arrows. Kuntibhoj wounded Vind with
 his arrows and the encounter of those warriors was wonderful The
 princes of Karkaya, with their armies, faced the Gandhars and fought
 bravely 75 Your son Birvahan faced the best of charioteers, Uttar
 the son of Virat and wounded him with nine arrows Uttar too
 wounded him with his arrows The king of Chedi encountered Uluk
 and wounded him with his sharp arrows Uluk also wounded him with
 his sharp arrows 78. The encounter between those two warriors was
 dreadful, as they wounded each other Thus thousands of warriors
 who rode on charots, elephants and horses in the armies of your son
 and those of the Pandavas, fought duels. 80 For a short time their

रथवारणवाजिनाम् । पदातीनांच समरे तव तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ मुहूर्त्तं मिव तद्यत्
मासीन् मधुर् दर्शनम् । तत उन्मत्तवद्राजन् नम ज्ञायत किंचन ॥ ८२ ॥ गजोगजेन
समरे रथिनश्चरथी ययौ । अम्बोध्वं समभिप्रायात् पदातिश्चपदातिनम् ॥ ८३ ॥ ततो
युद्धं सुदुर्धर्षं व्याकुलं समपद्यत । शूराणां समरे तत्र समासाद्ये तरेतम् ॥ ८४ ॥ तत्र
वेचर्यपः सिद्धाश्चारणाथसमागतः । प्रैक्षन्त तद्रणं घोरं देवासुर समभुवि ॥ ८५ ॥
ततो दन्ति सहस्राणि रथानांचापि मारिष । अम्बोध्याः पुरुषौघाश्च विपरीतं समाययुः
॥ ८६ ॥ तत्र तत्र प्रहृद्यन्ते रथवारण पत्तयः । सादि नक्ष नरव्याघ्र युध्यमाना मुहु-
सुहुः ॥ ८७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वंद्वयुद्धे

पञ्चवत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

राजा एकं मुहूर्त्तक तो उनका युद्ध अच्छा देखने के योग्यहुआ फिर उन्मत्तोंके समान हुआ उस समय वहां कुछभी नहीं जाना गया अर्थात् ध्यानकरके देखा तो युद्धभूमि में गजारूढ़ गजारूढ़ के साथ रथी रथी के साथ अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ों के और पदाती पदातियों के सम्मुख हुए तिसपीछे परस्पर युद्ध में सम्मुख होकर शूरावीरों का महा कठिन युद्ध हुआ और सब महा व्याकुल होगये । ८३ । वहां युद्ध देखने को आयेहुये देव ऋषियोंने और सिद्धचारणों ने देवता और असुरोंके युद्ध के समान महा भयकारी युद्ध को देखा, हे धृतराष्ट्र तिसपीछे हजारों हाथी रथ और घोड़ों के सवारों के समूह और पुरुषों के समूह मर्यादा रहित होकर परस्पर में युद्ध करनेलगे और जहां तहां रथ हाथी और घोड़ों के सवार चारम्बार लड़ते हुए दृष्टि पड़े ॥ ८७ ॥

fighting was worthy to be seen, but after that they fought like mad men, so that there was no order kept. The elephant riders faced the elephant riders, the charioteers faced the charioteers, the horsemen rode against horsemen and the foot soldiers fought the footsoldiers. The warriors on either side fought bravely and were much distressed. 84. The rishis, Sidhas, charans and gods that had come to see the fighting, found it to be like the encounter of gods of asurs. Then there was no order maintained in the battle and the soldiers of various denominations mixed together and fought in confusion." 87.



सत्रय उवाच । राजन्शत सहस्राणितत्र तत्र पद्वातिनाम् । निर्मथ्यार्द्धं प्रयुद्धानि
 तत्ते वक्ष्यामि भारत ॥ १ ॥ न पुत्र पितरं जज्ञे न पिता पुत्रमौरसम् । न धाता
 श्रातरं तत्र स्वस्त्रीयं न च मातुलम् ॥ २ ॥ न मातुलश्च स्वस्त्रीयो न सखायं सखा तथा ।
 थाविष्टा इव युध्यन्ते पांडवाः क्रुधाभिः सह ॥ ३ ॥ रथानीकं नरव्याघ्राः केचिद्भ्य
 पतन् रथैः । अनज्यन्त युगेरव युगानि भरतर्षभ ॥ ४ ॥ रथेषाश्च रथेषामिः कूर्वर
 रथकूरैः । सङ्गतैः सद्भिना केचित् परस्पर जिवांसवः ॥ ५ ॥ नरोक्षुश्चलितु केचित्
 सन्निपत्य रथारथैः । प्रभिन्नास्तु महाकायाः सन्निपत्य गजागजैः ॥ ६ ॥ बहुघादारयन्
 क्रुद्धा विपाणैरितरेतरम् । सत्तोरपताकैश्च घारणावरंवारणैः ॥ ७ ॥ अभिसृत्यमहा-
 राज वेगवद्भिर्महागजैः । दन्तैरभिहृतास्तत्र चुकुशुः परमातुराः ॥ ८ ॥ अभिनीताश्च

अध्याय । ४६ ।

संजय बोले हे राजा जहाँ तहाँ लाखों पदाती मर्यादा से विरुद्ध लड़ने में
 मर चुके उसका दृष्टान्त मैं तुमसे कहता हूँ, उस युद्ध में पुत्र ने अपनेपिता को
 न जाना और पितानेपुत्र स्त्रीको नहींजाना और भाईने भाईको न जाना और भानजे
 ने मामाको और मामा ने भानजेको और मित्र ने मित्रको नहीं जाना भूतादि के
 अवेश युक्त पुरुषों के समान वह सबलोग कौरव और पांडवों के पक्ष में एक एकसे
 लड़ते थे । ३ । हे भरतर्षभ कोई २ नरोत्तम शूरावीर रथों में सवारहो होकर सेना
 के और भागोंपर जा दूटे और रथोंहींसे रथों के जुझाँको तोड़डाला, रथाधीश रथा
 धीशोंसे औरकूररथकूरों से खंडित हुए और कोई २ परस्पर में मारनेकी इच्छासे
 सम्मुख आने वालों से युद्ध करनेलगे । ५ । कोई रथतो रथोंसंहीटकरें खाकर चल
 नके याग्य नहींरहे और बड़े डीलडौल के रथ आदि बड़े २ हाथियों से मिल कर
 टुकड़े २ होगये, हे महाराज वहाँ बहुत से क्रोधभरे हाथी दांतोंसे घायल करतेहुए
 भ्रवारी और पताकावाले युद्धक महागजेन्द्र हाथियोंसे मिलकर अत्यन्त पीड़ा से

CHAPTER XLVI

Sanjaya continued, "Here and there, foot soldiers fought against
 rule I shall tell you how:—The father, in that battle, did not know
 the son; the son did not spare the father; the brother did not know
 the brother; the maternal uncle did not know his sister's son and
 friends fought with one another in confusion. All the Kauravas and
 Pandavas fought like those possessed of spirits. 3. Some brave
 charioteers fell on portions of the armies and broke the shafts of
 chariots with their own. All parts of their chariots were thus
 crushed and broken. Others fought with those who opposed them.
 5. Some of the chariots were disabled by dashing against others,
 while others of large size, were broken into pieces by coming in
 contact with large elephants. Many elephants shrieked there,
 wounding with their teeth huge war elephants bearing howdahs and

शिक्षामिस्तात्राकुशसमाहता । अनभिप्रा प्रभिप्राणा सम्मुखाभिमुखायु ॥९॥ प्रभि
 श्रैरपि समत्ता केचित्तत्र महागजा । क्रौञ्चवशिनदरत्वा दुदुनु सर्वतो दशम् ॥१०॥
 सम्यक् प्रणीतानागाश्च प्रभिभ्रकरटामुखा । ऋष्टितामरनाराचैर्निरुद्धावरवारणा ११
 प्रणेदुर्भिभ्रमर्माणो निपेतुश्चगतास्रव । प्राडवतादश वेचन् नदन्तामेरवान्प्रचान् १२॥
 गजाणा पादरक्षास्तु व्यूहोरस्ता प्रहारेण । ऋष्टिमाश्च यनुर्भिश्च विमलैश्चपर
 श्वधै ॥ १३ ॥ गदामर्षुसलैवैव मिन्दिपालै सतोमरे । आयस पारवश्चापनिष्ठि
 शैर्भिमलै क्षितै ॥ १४ ॥ प्रगृहीतै सुसर्षवा द्रवमाणारतनस्तत । व्यष्टदयन्तमहाराज
 परस्परजिघासव ॥ १५ ॥ राजमानाश्च निस्त्रिंशा ससिका नष्टाणतै । प्रत्यद्वय त
 शूराणामन्योन्यमाभिघावताम् ॥ १६ ॥ अवक्षितायधूता मसीना वीरवाहुभि । सवत्रे

पुकारते थ । ८ । शिक्षाओं से सीखे हुए चापुक और अशुओं से वायल विना
 मदवाले हाथी मदों के चूनेवाले उन्मत्त हाथियों के सम्मुख हुए, और कोई २ म
 चूने वाले बड़े २ हाथी हाथियों से भिडे हुए क्रौंचक समान शब्दोंका करत हुए
 जहां तहां भागे । १० । इस प्रकार अच्छे हमना करने वाले गंडमन्था
 से मद्भारनेवाले उत्तम हाथी लाठी तोमर और नाराचों से रकगये, मर्मस्थलों
 मद्भारनेवाले उत्तम हाथी लाठी तोमर और नाराचों म रकगय मर्मस्थलों से
 विंचे हुए चिश्कारें मारतेहुए पृथ्वीपर गिरकर मृत्यु वशहुए और कोई २ हाथी
 महाभयानक शब्दोंको करत हुए चारोंओर को टाडे हेमहाराज हाथियों के चरण
 रत्नक शरीर भोग जो कि बड़े २ वस्तुस्यल युक्त भिने हुए और महार करने
 वाले थे वह हाथकी यष्टी धनुष और निर्मल परसे गदाभूमल गोफन तोमर परिघ
 और स्वच्छतीक्ष्ण खड्ग, इनसय शस्त्रोंको अच्छे प्रकार से धारण किये हुए अत्यन्त
 क्रोधमें भरे परस्परमें एक दूसरे के मारने की इच्छा करते हुए जहा तहा दोड़ते
 दृष्टपडे । १० । परस्परमें एक एक क सम्भव दोड़ते हुए शरीरों के रङ्ग
 मनुष्योंके रागों से भरेहुए शोभायमान दृष्टि में आयें, वीरोंकी भुजाओंसे अंगो

banners 8 The trained ones wounded by whip, and goads, though
 not themselves musty, were mad to encounter others mad ones,
 while others in rut, huge ones, ran hither and thither shrieking like
 cranes 10 Thus many good fighting elephants from whose temples
 dropped juice, were checked by clubs and javelins and being wounded
 in vital parts shrieked loudly and fell down dead on earth Some
 elephants, making a dreadful noise ran in all directions The men
 who guarded the feet of the elephants and who with broad chests,
 dexterous in the use of great warlike weapons armed with bows,
 shining battle axes maces catapults, clubs and sharp swords angrily
 wishing to kill one another, were seen running hither and thither 15
 The swords of the encountering combatants reeking in human blood,
 looked glorious to behold. Falling flat or prone the enemies were

तुमुल. शब्द पततां परममस्तु ॥ १७ ॥ गदासुसलरुणानां भिन्नानांचवरांसामि ।
 दन्तिदन्तायभिन्नानां सृदितानांचदन्तिभिः ॥ १८ ॥ तत्रतत्रनरौघाणां क्रोशतामितरे
 तरम् । शुश्रुवुर्दारुणावाचः प्रेतानामिवभारत ॥ १९ ॥ ह्यैरपि ह्ययारोहाश्वामरापीड-
 धारिम । इंसैचित्तमहावेगैरन्योन्यमभिविदुताः ॥ २० ॥ तैर्विमुक्तमहाप्रास्ताजम्बु
 नदावभूषणा । आनुगावमलास्ताक्षणा. सरोतुर्जगोपमा. ॥ २१ ॥ अभ्यैरप्रयजवैः
 केविदाप्लु य महतीरधान् । शिरांस्वादिरे घोरारपिनामभ्यस्तादनः ॥ २२ ॥ बहूनापि
 ह्यारोहान् मह्यै सन्नतपरंभिः । रथी जघानसम्प्राप्यवाणगोचरमागतान् ॥ २३ ॥
 नवमेघप्रतीकाशाश्च क्षिप्य तुरगान्गजाः । पारैरेवविमृदन्ति मता फनकभूषणाः
 ॥ २४ ॥ पाठ्यमानेषु कुम्भेषु पाशैश्चापचवाराणा । प्रासेर्विनहताः कोचद्विनेदु-
 परमानुराः ॥ २५ ॥ साश्वारोहान्हरयान् कादिचदु-मध्यवरवाराणाः । सहसाचक्षि-

मृत और ऊर्ध्वमुख गिरायेहुए शत्रुओंके मगोंपर पड़ेहुए खड्गोंका तुमुलशब्द उत्पन्न
 हुआ । १७ । गदा और मूसलोंसे दृष्टेहुए अंग और उत्तम खड्गों से कटेहुए
 हाथियों के दांतों से घायल हाथियोंसेही खुदेहुए मनुष्योंके जहां तहां परस्पर प्रकारे
 हुए भयकारी ऐसे बचन सुनेगये जैसे कि प्रेतों के शब्द सुनने में आते हैं, अश्व
 रूढ़ मनुष्योंसे और अन्य तीव्रगामी अश्वोंकी सवारीसे परस्पर में सम्मुखताहुई२०
 उन के छोड़हुए शशिगामी निर्मलसर्पों के समान जांवूनद सुवर्ण से अलंकृत भाले
 उन अंगोंपर परस्पर में पड़े कितनेही वीरोंने उत्तम गतिवाले घोड़ोंसे बड़े रथोंको
 संयुक्त करके घोड़ों समेत रथोंको और सवारों के शिरोंको काटा, और रथके
 सवारने धड़त से अश्वरूढ़ों को पाकर बड़े झुके हुए पर्ववाले भालों से उन
 बाणों से भिदेहुओं को मारा, मदनोन्मत्त सुनहरी भूषण वाले हाथियों ने नवीन
 वादल के समान रंगीनघोड़ों को तिरस्कार करके अपने पैरोंसे मर्दन किया । २४।
 बड़े भयानक कितनही हाथी मस्तक और देह में कवच आदि सभी अलंकृत भालों
 से मारेहुए बड़े पीड़ामान शब्दों को करते थे फिर वहां महा युद्ध होनेपर कितनही

wounded in vital parts by the warrior's swords which made a great
 noise. 17 Soldiers with broken limbs by the maces and clubs of
 warriors, wounded by swords and elephant's tusks and trampled under
 the feet of elephants, raised, here and there, hideous cries like
 those of the sprites. Horsemen encountered horsemen or others who
 rode on swift beasts. 20 They slew one another with their swift
 arrows shining like serpents and their darts decked with pure gold.
 Many warriors, mounted on large chariots drawn by swift horses
 cut down the chariots, the horses and the heads of soldiers. Charioteers
 killed horsemen with their numerous darts having hooked points. Mad
 elephants decked with gold ornaments trampled down the horses
 under their feet. 24. Many formidable elephants whose foreheads
 and bodies were protected by mail, pierced by darts, shrieked with

पुत्रसंकुले भैरवेसति ॥ २६ ॥ साश्वारोहान् विषाणाग्निदक्षिण्य तुरगान्मजाः ।
 रथौघानमिन्दन्तः सद्यजानमिचक्रतुः २७ ॥ एतत्त्वादतिप्रत्याव्य कौचत्तत्रमहागजाः ।
 साश्वारोहान् हयान् जघ्नुः करैः सचरणैस्तथा ॥ २८ ॥ दम्भरोहैश्च समरे हास्त-
 सादिभिरेव च । प्रतिमानेषु गात्रेषु पाश्वैर्धामि च चारणान् । आश्रुगा विमलास्तीक्ष्णः
 सम्पेतुर्जगोपमाः ॥ २९ ॥ नराश्वकायाग्निमिच्छ लोहानि कथचानि च । निपेतुर्वि-
 मलाः शक्तयोधीरवाहुभिर्पिपात्राः ॥ ३० ॥ महोल्काप्रतिमा घोरास्तत्र तत्रविशा-
 म्यते । द्वीपिचर्मामनदंश्च व्याघ्रचर्मच्छदैरपि ॥ ३१ ॥ विक्रोशैर्धिमलैः धृगैरभि-
 जघ्नुः परान् रणे । अमिच्छुनमभिरुद्धमेकपाश्वैर्द्वारतम् ॥ ३२ ॥ विदर्शयन्तः
 सम्पेतुः सङ्घाचर्मपटभ्यधैः । केचिदाक्षिण्य करिणः शाश्वन्तपि रथान् करैः ॥ ३३ ॥
 विकरन्तोदिशः सर्वाः संपेतुः सर्वशस्त्रगाः । शंखमिद्वारिताः केचित् खंभिन्नाश्च परश्वधैः

उत्तम हाथियों ने सवारों समेत घोड़ों को मथकर वा टटाकर फेंक दिया हाथी
 अपने दातों की नोक से सवारों समेत घोड़ों को ऊंचको टटाये ध्वजाधारी रथ
 समूहोंको मर्दनकरने हुए चारोंओर घूमनेलगे और कितनेही बड़ेहाथियोंने बड़ीवीरता
 और मद्दोन्मत्तासे अपनी मूंड और चरणोंके द्वारा सवारोंसमेत घोड़ों को मारा,
 चारों ओर से हाथियों के मस्तक वा अंग वा पसन्नी और जवाओं पर बड़े शीघ्र
 गामी सर्पोंके समान तीक्ष्ण वाण गिरे, और हे राजा जहां तहां धीरोंकी भुजाओं
 मेमारीहुई बरछियां लोहे के कवचोंको काटकर मनुष्य और घोड़ों के शरीरों पर
 पड़ीं वह बरछियां महाभयानक उल्काओं के रूपधीं । ३० । और इसी संग्राम में
 चित्र व्याघ्र चर्मसे बँधेहुए और व्याघ्रकेही चर्म में रहनेवाले पियान से बाहर स्व-
 च्छ खड्गों से शत्रुओंको मारा, निर्भय मनुष्य के सम्मुख जाना और काटना
 आदिक सब कर्मों को करना और घाई और की सवारी करना इत्यादि चेष्टाओं
 को दिखलाते खड्ग हाथ और परशु नाम शस्त्रों समेत गिरे, कितनेही हाथी मूंडों

pain. During the battle many elephants trampled or hurled the horses and their riders. Lifting up the horses and riders on the points of their tusks, trampling the bannered chariots, the elephants roamed; and bravely and madly crushed the horses and their riders under feet. Sharp and swift arrows fell serpent like from all sides on the heads, bodies, sides and legs of the elephants. Here and there, sharp darts hurled by the warriors, pierced through the steel armour and entered the bodies of men and horses like sparks of fire. 30. Swords were drawn out of the scabbards made of tiger's hide to kill the enemies. Going fearlessly before the enemy, killing and doing deeds of horsemanship, the warriors fell in spite of their swords, shields and battle axes. Some elephants dragged the chariots and horses with their trunks and all those who heard their cries dispersed in different directions. Many men were killed by the wheels and axes, while

॥ ३४ ॥ हस्तिभिर्मृदिताः केकित्तुशुण्णाभ्यान्वे तुरङ्गैः । रथनेमिनिवृत्ताश्च निकृताश्च परश्वधै ॥ ३५ ॥ व्याक्रोशन्त नरराज स्तत्रतत्रस्मवान्धवान् । पुत्रान्ग्येपितृनन्ये भ्रातृश्चसहयन्धुभिः ॥ ३६ ॥ मातुलान्भागनेयांश्च परानापचसयुगे । विकीर्णात्रा सुबहवो भग्नसकथायभारत ॥ ३७ ॥ बाहुभिश्चापरे छिद्यै पाभ्यंयुच विदारिता । क्रन्दन्त सम दृश्यन्त तृपिताजीवितेऽस्य ॥ ३८ ॥ तृपपरिगता केचिदल्पसत्त्वाविशाम्पये । भूमौ निपतिता सख्ये मृगयाञ्चाकरे जलम् ॥ ३९ ॥ रुधिरैघपरिक्लिप्ताः । क्लिश्यमानाश्च भारत । व्यनिन्दन्भृशमात्मान तव पुत्राश्च सङ्गतान् ॥ ४० ॥ अपरे क्षत्रिया शूराः कृतघैराः परस्परम् । नैवशुश्रु विमुञ्चन्ति नैव क्रन्दन्ति मारिप ॥ ४१ ॥ तर्ल्यगन्ति च सहस्रास्तत्रतत्रपरस्परम् । आदृश्यदृशतैश्चापिक्रोघात् स्वरवन्च्छदम् ॥ ४२ ॥ प्रकुटी

से घोड़ों समेत रथोंको खिंचते थे और खिंचनेवाले हाथियों के शब्दों को सुनकर सबके सब चारों ओर को गये, कितनेही मनुष्य डंडोंकी कीलों से कटे हुए और परशुओं से मारे हुए थे और बहुतसे हाथियों से मर्दित हुए और कितनेही घोड़ों से अत्यन्त घायल हुए हे महाराज जहां तहां कितनेही मनुष्य बांधवों को पुकारते हुए रथों के पहियों से दबकर परशुओं से कटगये । ३५ । और कहीं संग्राममें अपने पुत्रों को कोई भाइयों को और मामा वा भानजो को अथवा अन्य लोगों को पुकारते हुए घायल होकर मारेगये, हे भरतवंशी जिनकी आँतें फैल गई और जंघा टूट गई ऐसे सब मनुष्य हांगये और बहुतसे कटाहुई भुजाओं समेत अंगों से रहित हुए, और अनेक मनुष्य जीवनकी इच्छा करते हुए अत्यन्त रोदन करते दृष्टपड़े बहुतेरे प्यासे और धैर्य को छोड़कर जल को खोजते थे, हे राजा उन रुधिरों से भरे हुए दुखियों ने आप समेत आपके पुत्रों की निन्दाकी, हे धृतराष्ट्र अच्छे शूरवीर क्षत्रिय न तो शत्रुको छोड़ते हैं न रोते और पुकारते हैं । ४० । हे राजा जहां तहां अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरलोग क्रोधसे अपने दांतों के द्वारा ओठोंको काटकर निन्दा युक्त वचनों का कहते हैं, कोई २ धैर्यवान् महाबली बाणों से

others were crushed by elephants Some were wounded by the horses and others calling on their kinsmen were crushed under the wheels
35 Some calling upon their sons and others calling upon their brothers, maternal uncles, nephews and others, were wounded and slain Their entrails came out of their bodies, their thighs were broken and their arms and other limbs were cut off Many men, wishing to live longer were seen weeping, others, thirsty and forlorn, searched for water . The blood stained wretches cursed you and your sons, O king! But good soldiers did not let the weapons go out of their grasp, and neither wept nor cried 40 Here and there cheerful warriors, biting their lips in anger, uttered words of blame- Some tenacious warriors, though mortally wounded, bore the pain in

कुटिलैर्धनुः प्रेच्छन्ति च परस्परम् । अपरे क्लिद्यमानास्तु शरार्त्ता घणपीडिताः ॥४३॥
 निष्कृजाः समपद्यन्त दृढसां वामहावलाः । नग्येच विरथा शूरा रथमग्न्यस्वसंयुगे
 ॥ ४४ ॥ पार्थयानानिपतिताः संक्षुण्णाश्चरवारणैः । अशोभन्त महाराज सपुत्राह्व
 किंशुक्ताः ॥ ४५ ॥ सम्भवभुवुर्नाकेषु घटवो भैरवस्थिताः । वर्त्तमाने महाभीमं तस्मिन्
 चीरश्चरन्त्ये ॥ ४६ ॥ निजवानपितापुत्रं पुत्रश्चपितरं रणे । स्थस्त्रायो मातुलश्चापि
 स्वस्त्रियञ्चापि मातुलः ॥ ४७ ॥ सत्तासरायचतथा सम्बन्धीवान्यवतथा । एवं
 युयुधिरे तत्र कुरवः पाण्डवैः सह ॥ ४८ ॥ वर्त्तमाने तथा तस्मिन् निर्मेर्यादिभया
 नके । भाष्ममासाद्य पाषाणां चाहिनी समकम्पत ॥ ४९ ॥ केतुनापञ्चतारेण
 तालेन भरतर्षभ । राजतेन महाबाहुदक्षिणेन महारथे । धमैर्भीष्मस्तदा शरं
 क्ष्वद्रमा इवमेरुणा ॥ ५० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वणि संकुलपुद्धे
 पद्मचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

महा व्याकुल और घावों से पीड़ित होकर महाकष्टसे मौन होगये, कितनेही शूरवीर
 युद्ध में रथमें विहीन और उत्तम हाथियों से अत्यन्त घायल दूमरे के रथों की
 इच्छा करते हुए मार्ग में गिरपड़े, हे महाराज वह फूलेहुए किंशुक वृक्ष के समान
 शोभायमान हुए । ४४। और इसके विशेष सेनामें भयकारी अनक शब्द मकटकरते
 हुए, इस बड़े भयानक और उत्तम वीरों के नाश करने वाले युद्धके होनेपर संग्राम
 भूमि में पिता ने पुत्रको और पुत्र ने पिताको मारा, मामाने भानजेको और भानजे
 ने मामा को मित्रने मित्रको इसी प्रकार चांधवों ने चांधव आदि संबंधियों को भी
 मारा, इस रीतिसे पांडवों में और कौरवों से उस भयानक रूप मर्यादासे रहित
 बड़े भयकारी युद्ध के होनेपर यह सर्व संहार हुआ । ४७ । हे भरतर्षभ पांच
 नक्षत्रवाले तालध्वजा ममेत भीष्मजी के सम्मुख होकर पांडवों की सेना अत्यन्त
 कंपायमान हुई उससमय वह महाबाहु भीष्मजी सुवर्ण निर्मित उत्तम ध्वजा सयेत
 विस्तृत रथ में घंटेहुए ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि मेरु पर्वत पर चन्द्रमा
 शोभित होता है ॥ ५० ॥

silence. Many warriors, deprived of their chariots in the field of
 battle and wounded by elephants, fell down dead in the way, de-iring
 to get other chariots They looked glorious like Kinshuk plants in
 bloom. 44. Besides these there were other dreadful noises in the
 armies. During this dreadful war destructive of warriors, fathers
 and sons, maternal uncles and nephews, friends and kinsmen killed
 one another. All such atrocities occurred in that dreadful war of the
 Kauravas and Pandavas which was without rule. 47. Bhisma,
 with his ensigu of the palm tree and five stars, shook the armies of
 the Pandavas with his golden ensign, and mounted on a large chaiot,
 looked glorious like the moon on mount Meru. 49.

सत्रय उवाच । गतपूर्वाहणमृषिष्टे तस्मिन्नहनि दारुणे । रक्षमाने तथा राट्टे
महावीर वरदाये ॥ १ ॥ दुर्मुखः कृतवर्मा च कृपः शल्यो विविंशतिः । भीष्मं जुगु
परासाद्य तव पुत्रेण चोदितः ॥ २ ॥ एतैरतिरघैर्युतः पञ्चभिर्भरतर्षभः । पाण्डवा
नामनीकानि विजगाद्रे महारथः ॥ ३ ॥ चेदिकाशिरूपेषु पञ्चालेषु च भारत । भीष्म-
स्य च दृष्ट्वा तालश्चलत्केतुरदृश्यत ॥ ४ ॥ स शिरांसिरणेऽरीणां रथांश्चसयुगध्वजान् ।
निचकत्समहाधैर्मल्लैः सन्नतपर्धाभिः ॥ ५ ॥ नृत्यतो रथमार्गेषु भीष्मस्य भरतर्षभ ।
भृशमात्तंस्वरं चक्रुर्नागा मर्मणि ताडिताः ॥ ६ ॥ अभिमन्युः सुसंकुदः । पशु-
स्तुरागोत्तमैः संयुक्तं रथमास्थाय प्रायात्भीष्मरथं प्रति ॥ ७ ॥ जाम्बूनदविचित्रेण
कर्णिकारेण केतुना । अभ्यवचत् भीष्मञ्च तांश्चैव रथसचमान् ॥ ८ ॥ सतालके

अध्याय ॥ ४७ ॥

संजयश्लोके हे राजा उस महा भयानक दिनके मध्याह्न व्यतीतहोने और इस
रीति से उत्तम लोगों के नाश वर्चमान होनेपर, आपके पुत्रकी आज्ञालेकर दुर्मुख
कृतवर्मा कृपाचार्य शल्य और विविंशति ने भीष्मजी के पास आकर उनकी रक्षा
की, हे भरतर्षभ इनपांच अतिरथी वीरों से रक्षित महारथी भीष्मजी ने पाण्डवों
की सेना में प्रवेश किया, और हे धृतराष्ट्र चेदि काशि कुरूप और पांचाल देशकी
सेना के मध्य में भीष्मजी की तालरूप ध्वजा बहुत सुन्दर दृष्ट पड़ी, उस वैरिणी
युद्धमें बड़े वेमजान अतिशय ऊकेहुए भल्लनाम बाणों से भीष्मजी ने शिरों और
ध्वजायुक्त रथों को रथ के जुए आदि अंगों समेत काटा । ५। हे भरतर्षभ, नक्षत्र के
समान भीष्मजी के घूमने पर मर्मस्थलों से घायल कितनेही हाथियों ने पीड़ा के
शब्द किये, उस समय अभिमन्यु अत्यन्त क्रोधमें भराहुआ पिंगल वर्ण उत्तम घोड़ों
के रथ में बैठकर भीष्मजी के रथ के सम्मुख आया, और जाम्बूनद सुवर्णसे रचित
कर्णिकार दृक्के चित्रवाली ध्वजा समेत भीष्मआदि उन उत्तम पांचों रथियों के

CHAPTER XLVII

In the afternoon of that dreadful day," said Sanjaya, "when those good men were thus being destroyed, Durmukh, Kritvarma, Kripa, Shalya and Vivinshati went to Bhishm by the order of your son and protected him. Protected by those five great warriors, Bhishm entered the army of the Pandavas. Bhishm's ensign of the palm tree looked very glorious in the midst of the armies of Chedi, Kashi, Kurush and Panchal. In that destructive war Bhishm cut down the heads and the yokes of harnessed chariots by his hooked arrows. 5. When Bhishm was thus circling like a meteor, mad elephants wounded in the vital parts shrieked with pain. Then Abhimanyu in a rage drove his good steeds of yellow colour and brought his chariot face to face with that of Bhishm. He encoun-

तोरेतीक्षणेन केतुमाहत्य पत्रिणा । भीष्मेण युयुधे पीरस्तस्य चानुरधैःसह ॥ ९ ॥
 कृतवर्माणमेकेन शल्यं पञ्चाभराशुगैः । विध्वानवभिरानच्छ्लिखिताग्नेः प्रपितामहम्
 ॥ १० ॥ पूर्णापतविद्युष्टेन सम्यक् प्रणिहितेनच । ध्वजमेकेन विध्वाप जान्मूनवप-
 रिष्कृतम् ॥ ११ ॥ दुर्मुखस्य तु भलेन सर्वावरणभेदिना । जहारसारथेःकायाच्छिरः
 सभ्रतपर्वणा ॥ १२ ॥ धनुश्चिच्छेद भलेन कात्तस्वरविभूपितम् । कृपस्य निशि
 ताग्नेण तांश्च तांश्चमुसैः शरैः ॥ १३ ॥ जघान परमदुष्टो नृपप्रियव्रतहारथः ।
 तस्य लाघवमुद्धीक्ष्यतुनुपुर्वैवता अपि ॥ १४ ॥ लब्धलक्ष्म्या कार्णैः सर्वे भीष्म
 मुखारथाः । मन्वघन्तममन्यन्त साक्षादिव धनञ्जयम् ॥ १५ ॥ तस्य लाघवमार्गस्थ
 मलातसदृशप्रभम् । दिशः पर्यपतचापं गाण्डीवमिव घोषवत् ॥ १६ ॥ तमासाद्य महा

सम्मुख हुआ, फिर वह धीरे धीरे भीष्मजी की ताल ध्वजा को तीक्ष्ण बाणों से छेदकर
 उनके पीछे चलनेवाले पाँचों रथियों से युद्ध करने लगा, एक बाणसे कृतवर्मा को
 और पाँच बाणों से शल्य को और नौ उत्तम बाणों से पितामह को घायल
 किया । १० । और जान्मूनद सुवर्ण से शोभित एक उत्तम शायक से उनकी ध्वजा
 को काटा, और सब पदों के भेदन करनेवाले झुकेहुए पर्ववाले एक भल्ल नाम
 बाण से दुर्मुख के सारथी का शिर देह से पृथक् करा दिया, सुवर्ण से बनेहुए महा
 शोभायमान कृपाचार्य जी के उत्तम धनुष को तीक्ष्ण नोकवाले भल्ल से काटा
 और महा क्रोधरूप होकर उस महारथीने अपने तीव्र बाणों से उनसब को भी
 घायल किया देवता लोग भी आकाश से उस शीघ्र हस्तलाघवता को देखकर
 प्रसन्नहुए, और भीष्मआदि सब रथियों ने उस अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के लक्ष
 भेदनेसे उसको साक्षात् अर्जुन के समान पराक्रमी माना । १५ । और घुमाये
 हुएउल्लसक के समान प्रकाशित निर्विघ्न मार्ग में निरत उसका मण्डल दिशाओं
 में गिरा और गाण्डीव धनुषके समान उसको शब्दायमान किया, तब शत्रुओं के

tered the five great warriors beginning with Bhishm of the ensign of
 golden palm. Having pierced the palmyra ensign of Bhishm with
 his sharp arrows, he began to fight with the five warriors who rode
 behind him and wounded Kritvarma with one of his arrows, Shalya
 with five and the grand father with nine.10. And with one of his gold-
 bedecked arrows he cut his bannerstaff. He cut down the head of
 Durmukh's chariot driver with one of his piecing, hooked arrows. He
 cut the good gold bow of Kripacharya with one of his sharp pointed
 darts and wounded all these warriors. The gods in the sky were
 pleased to see the dexterity of his hand and Bhishm and other war-
 riors judged him to be as good in hitting marks as Arjun himself. 15
 shining like a circle of fire, of unceasing motion, his bow sent round
 its shower of arrows and its twang was heard like that of the Gandiv.

धैर्मोभीमो नवभिराशुगे । विध्वाघसमरे तूर्णमाज्जुर्नि परधीरहा ॥ १७ ॥ ध्वजञ्जास्य
 त्रभिभ्रुञ्चच्छद् परमौजस । साराधिञ्च त्रिभिवाणेराजघान यतघ्नत ॥ १८ ॥ तथैव
 कृतवर्माञ्चकृप शल्यश्च मारिष । विध्वानाकम्पयत् कार्णिण मैनाकमिव पर्वतम् ॥ १९ ॥
 सतं परिघृणुत शूरा घातैरद्वैर्महारथै । वचस्य शरघर्षणि कार्णिणि पञ्चरथानुप्रति ॥ २० ॥
 ततस्तेषा सहस्राणि निवार्य्यशरवृष्टिभ । ननाटवलवान् कार्णिर्भीष्माय विजृञ्जन्
 शरान् ॥ २१ ॥ तत्रास्यसुमहद्राजन् वाह्वार्यल दृश्यत । यतमानस्यसमरे भीष्ममर्हयत-
 शरै ॥ २२ ॥ पराक्रान्तस्य तस्यैव भीष्मोपिप्राहिणाच्छरान् । सताक्षिच्छेदसमरे
 भीष्मचापच्युतानशरान् ॥ २३ ॥ ततो ध्वजममोघेपुर्भीष्मस्य नवभि शरै । चिच्छेदसमरे
 धीरस्तत उच्छुकुशुर्जुना ॥ २४ ॥ स राजतो महास्काघस्ताला हेमविभूषिता ।

मारनेवाले भीष्मजी ने शीघ्रता पूर्वक उससे आगे होकर युद्धभूमि में शीघ्र गति
 वाले नौशर्यों से तत्कालही उस अर्जुन के पुत्रको घायल किया, और बड़े पराक्रमी
 दृढरत सावधान भीष्मजीने उसकी ध्वजा को तीन भल्लों से काटा और उसके
 सारथी को तीन वाणों से मारा, हे राजा इसीप्रकार कृतवर्मा कृपाचार्य्य और
 शल्यनेभी अर्जुनके पुत्र को घायलकरके ऐसे कंपायमानही किया जैसे मैनाक
 पर्वतका कंपायमाननही करसके । १९ । फिर उन महाराथियोंसे घिराहुआ अर्जुन
 कापुत्र अभिमन्युपाचों रथियों के ऊपर वाणों की वर्षा करके पांचोंके अश्वोंको अप-
 ने वाणों से रोककर भीष्मजीके ऊपर वाणों को छोडताहुआ बड़े वेग से गर्जा
 । २० । उससमय हे राजा वहां उस युद्ध में उपाय करने वाले और वाणों से
 भीष्मको मारने वाले अभिमन्युका बडाभारी भुजबल विदित हुआ, तब भीष्मजी
 ने भी उस पराक्रमी के ऊपर वाणों को छोडा फिर उसने युद्ध में भीष्मजी के
 घनुप से छुटेहुए वाणोंको काटा, तिसपीछे उस सफल वाणवाले धीरने भीष्मजी
 की ध्वजाको फिर नौशर्यों से काटा इस कारण सप्तलोग बड़े शब्द से पुकारे

Then Bhishm the destroyer of enemies faced the son of Arjun in great
 haste and wounded him at once with nine swift arrows. And wise
 Bhishm of great prowess and firm vow, cut his banner with three
 darts and killed his driver with three others. Kritvarma, Kripacharya
 and Shalya too wounded the son of Arjun, but could shake him no
 more than they could mount Menak. 19. Then surrounded by
 those warriors, Arjun's son Abhimanyu showered his arrows over the
 five warriors, and checking their weapons with his own, he wounded
 Bhishm with a tremendous roar. 20. Trying hard in that battle
 and hitting Bhishm with his arrows, Abhimanyu displayed his
 great prowess. Bhishm too discharged arrows at the warrior and
 Abhimanyu cut them down with his own. Then the marksman cut
 the banner of Bhishm with nine arrows and at this there was a great

सौमद्रविशयै इडभ्र पपातभुविम रत ॥२५॥ ततु सोमद्र विगियै पातितभरतर्षभ ।
 दृष्ट्वाभोमोननादोच्चं सौमद्रमभिहर्षयन् ॥ २६ ॥ अथ भीष्मो महास्त्राणि दिव्यानि सु-
 घहान च । प्रादुश्चक्रे महारौद्र रणे तास्मन्महायत्नः ॥ २७ ॥ तत शरसहस्रघ्न
 सौमद्र प्रपितामह । अवाकिरदमेयात्मा तदद्भुतमिवाभवत् ॥ २८ ॥ ततो दश
 महेश्वासा पाण्डवानां महारथा । रक्षार्थमभ्यघाचन्त सौमद्र त्वारता रथे ॥ २९ ॥
 विराट सह पुत्रेण धृष्टद्युम्नश्चपार्षत । भीमश्च केकयाश्चैव सात्यकिश्च विदाम्पते
 ॥३०॥ तेषाञ्जवनपतता भीष्म शान्तनवोरणे । पाञ्चात्य त्रिमिरानच्छत् सात्यकिं नवाम
 शरैः ॥३१॥ पूर्णायत्तविसृष्टेन चुरगनिशितनच । ध्वजमकेन चिच्छद्भीमसेनस्य पत्रिणा
 ॥ ३२ ॥ जाम्युद्दमय भीमान् केसरी सनरोत्तम । पपात मामसेनस्य भीष्मेण

। २४ ३ हे भरतवशी वह बड़ी शाखा युक्त सुवर्ण से शोभित सुवर्णित ताल टल
 अभिमन्यु के विशिखनाम वाणों से काटा हुआ पृथ्वीपर गिरा, हे भरतर्षभ अभि-
 मन्यु के विशिखों से घिरीहुई भ्रजाको देखकर भीमसेन ने महा प्रसन्न होकर उस
 अभिमन्यु को प्रसन्न करके बड़ी गर्जनाकी । २६ । इसके पीछे महावली भीष्मजी
 ने उस महाभयकारी युद्ध में बहुत से दिव्यमहा अस्त्रों को प्रकट करके सुभद्रा के
 पुत्र अभिमन्यु को सहस्र वाणों से ढकादिया यह आश्चर्यसाहो गया । २८ । यह
 देखकर हे राजा पाण्डवों के दस महारथी बड़े धनुषगारी रथों में सवार होकर
 शीतरी भीष्मज्युकी रक्षा के लिये दौड़े उनके नाम यह है । अपने पुत्र उत्तरभमेत
 राजा विराट, पृपतका पुत्र धृष्टद्युम्न, भीमसेन, केकय और सात्यकी, शतनु के पुत्र
 भीष्मजी ने युद्धमें उनतीत्र आनेवालों के मध्य में धृष्टद्युम्न को तीन वाणों से
 और सात्यकी को नौवाणों में घायल किया, और कर्ण पर्यन्त खचकर छोड़ेहुये
 तीक्ष्णधार वाले एक वाणसे भीमसेन की भ्रजाको काटा । ३० । हे नरोत्तम भीम
 सेन की भ्रजा सिंह के चित्रकी स्वर्णमयी भीष्म से गिराईहुई पृथ्वीपर गिरी

shout of the people 24 The golden palm, discovered by Abhimanyu's arrows fell to the ground and at the sight of it Bhim uttered a great war cry to cheer Abhimanyu Then Bhishm of immense prowess made use of his celestial weapons and covered Abhimanyu at once with a thousand arrows, making it appear as a wonder 28 Upon this, ten warriors of the Pandavas at once drove in their chariots to help Abhimanyu King Virat with his son Uttar, Dhrushadyumn the son of Irishat, Bhim, Karkaya and Satyaki were among those who came to help him In the midst of those warriors, Bhishm the son of Shantanu, wounded Abhimanyu with three arrows and Satyaki with nine He cut Bhim's banner with one arrow, shot from the bow which was drawn to the ear 30 Bhim's banner, having the figure of a lion wrought in gold, cut down by

मघितोरथात् ॥ ३३ ॥ ततो भीमस्त्रिभिर्विधा भीमं शान्तनयं रणे । कृपमेकेन
 विव्याध कृतवर्माणमष्टभिः ॥ ३४ ॥ प्रगृहीताग्रहस्तेन चैराटिरपि दन्तिना ।
 अथद्वघत् राजानं मद्राधिपानमुत्तरः ॥ ३५ ॥ तस्य धारणराजस्य जवेनापततो
 रथे । शल्यो निधारयामास वेगमप्रतिमं शरैः ॥ ३६ ॥ तस्य क्रुद्धः स नागेन्द्रो
 बृहत् साधुवादिन । पदा युगमाघृष्टाय जघानचतुरो हयान् ॥ ३७ ॥ सहताश्वे
 रणे तिष्ठन् मद्राधिपतिरायसाम् । उत्तरान्तकरं शक्तिं चक्षेप सुजगोपमाम् ॥ ३८ ॥
 तथाभिन्नतनुराणं प्रविश्यविपुलंतमः । सपपातगजस्कन्धात् प्रमुकांशुकतोमरः ॥ ३९ ॥
 अस्ति तादाय शल्योपि अवप्लुय रथोत्तमात् । तस्य धारणराजस्य चिच्छेदायमहा
 करम् ॥ ४० ॥ भिन्नमर्मा शरशतैश्छन्नहस्तः स धारणः । भीममार्यस्वरंकृत्वा

तदनन्तर भीमसेनने शंतनु के पुत्र भीष्मजी को वाणों से घायल करके एक वाण
 से कृपाचार्य को और आठवाणों से कृतवर्मा को घायल किया । ३४ । और
 उत्तरनाम विराट्का पुत्र अग्रभाग में मूंडकी कुंडली बनाने वाले हाथी पर सवार
 होकर मद्रदेश के राजा शल्य के सम्मुख दौड़ा, शल्य ने बड़ी तीव्रता से रथपर
 गिरने वाले उसगजेद्र के महाविगको रोकता, फिर उस क्रोधित गजेन्द्र ने चरणों से
 रथके जुपेको दबाकर उसके चारों उत्तम सवारी के घोड़ों को मारा, । ३७ ।
 मृतक घोड़े वाले रथपर नियत राजा मद्रने सर्प के समान और उत्तर के नाश करने
 वाली लोहेकी बरछी को फेंका, उसबरछीसे जिसका कवच कटगया ऐसा वह
 उत्तर विस्मरणाता में आकर हाथी के ऊपरसे नीचे गिरपड़ा और गिरतेही उस
 के हाथ से अंकुश और तोमर छूटपड़े, फिर शल्य ने अपने रथसे उतर खड्ग हाथ
 में लेकर बड़े पराक्रम से उसके गजेन्द्र की बड़ीभारी मूंडको काटडाला, वह हाथी
 वाण समूहों से भिदाहुआ कवचट्टा कटीहुई मूंड से भयानक शब्द करता हुआ

Bhishm, fell on earth Thereupon, Bhim wounded Bhishm with
 his arrows and pierced Kripacharya with one arrow and Kritvarma
 with eight. 34 Uttar, the son of king Virat, rode the elephant
 which had formed a circle of its trunk and encountered Shalya the
 king of Madra. Shalya speedily checked the elephant which was
 advancing towards his chariot, but the elephant trampled the yoke
 of his chariot under foot and killed the four horses which drew it 37.
 Seated on the chariot of which the horses were slain, the king of
 Madra hurled his serpent like iron spear to kill Uttar. Uttar with
 his armour cut by the spear, fell down in a swoon from the elephant
 and all the weapons fell down from his grasp. Shalya then leaped
 from his chariot and with great bravery cut down the trunk of the
 huge elephant, which already pierced by the arrow through the

पपात च ममार च ॥ ४१ ॥ एतदीदृशके कृत्वा मद्राजो नराधिप । आहरोह रथं
 तूर्णं भास्वरं कृतवर्मणः ॥ ४२ ॥ उत्तरवै हतं दृष्ट्वा वैराधिभ्रातरं तदा । कृतवर्मणाच्च
 सहितं दृष्ट्वा शल्यमवस्थितम् ॥ ४३ ॥ श्वेत क्रोधात्प्रज्ज्वालहविषाहृष्यचाडिच ।
 सविस्कार्यमहृचापंशक्रचापोपमं वली ॥ ४४ ॥ अन्यथावाञ्छिघांसन्वै शल्यं मद्राधिपं वली ।
 महत्तारथवेशेन सममंतात्परिचारितः ॥ ४५ ॥ सुधन्वाणमयं चर्यं प्रायाच्छल्यरथं प्रति ।
 तमापतंतं संप्रेक्ष्य मत्तवारणविक्रमम् ॥ ४६ ॥ तावकांतरथाः सप्तसमंतात्पर्यचारयन् ।
 मद्राजमभीक्ष्णतो मृत्योर्दृष्ट्वांतरगतम् ॥ ४७ ॥ बृहद्बलश्चकौ सल्यो जयत्सेनश्चमागम्यः ।
 तथा रुक्मरथो राजन् शल्यपुत्र प्रतापवान् ॥ ४८ ॥ विद्वान्निर्विदाघा वंत्यौ कांघोजश्च
 सुदक्षिणः । बृहत्क्षत्रस्य दायादः सैघवश्च जयद्रथः ॥ ४९ ॥ नानावर्णविचित्राणि

महादुःखों से पृथ्वीपूर गिरकर मरगया । ४१ । हे राजा ! शल्य ऐसाकर्म करके
 शीघ्रही कृतवर्मा के प्रकाशवान् रथ पर चढ़गया, तब विराट्का पुत्र श्वेत भाई
 उत्तरको धृत्क देखकर और साथ में बड़े वीरलोगों को जानकर क्रोधकी आग्नि में
 ऐसा प्रज्वलित हुआ जैसे आग्नि घृतडालने से प्रज्वलित हो वह वीर इन्द्रके धनुष
 की समान अपने धनुषको कानतक खिंचकर मद्रपति शल्य के मारने को दौड़ा और
 बाणोंकी वर्षा करता हुआ वह बहुत से रथियों सहित शल्य के रथकी ओर चला
 पुरुषार्थ में वेगवान् हाथीकीनाई उसको रण के लिये दौड़ता देख सातमहारथियोंने उसे
 सब ओरसे घेर लिया और काल के मुखमें आये हुए मद्रपतिकी सहायताकी । ४७ ।
 उन सातमहारथियोंके नाम ये हैं कोशलराज, बृहद्बल, मगधका राजा जयत्सेन,
 शल्यका पुत्र रुक्मरथ भ्रवन्तिके विद और अनुविद काम्बोजराज, सुदक्षिण और
 सिंधुराज जयद्रथ और बृहच्छत्र का सम्बन्धी इन वीरों के धनुष विचित्र रंगों से

armour fell down shrieking on earth with the wounds. Having done
 this brave deed, Shalya soon mounted the chariot of Kritvarma.
 Then Shwet the son of Vnat, seeing that Uttar his brother was
 elain and that his destroyer was surrounded by brave warriors, burnt
 with anger like a flame of fire fed with clarified butter. And drawing
 his bow, like the bow of Indra, to his ear, he ran to kill Shalya the
 king of Madra. Accompanied with many charioteers, he advanced
 towards the chariot of Shalya, showering his arrows upon him.
 Seeing him advancing like a furious elephant, the warriors surrounded
 Shalya on all sides, desiring to protect him who was then like one
 about to fall in the jaws of death. The warriors who helped Shalya
 were Vrihadbal the king of Kosal, Jayatsen of Magadh, Shalya's
 son Rukmarath, Vind and Anuvind of Avanti, the king of Camboj,
 Sudakshin, Jayadrath the king of Sindhu and Vrihadbal's kinsmen.

धनुषिचमहारमनाम् । विस्फारितानिहृदयतेतोयदेविवाप्रेद्युत ॥५०॥ तेषुवाणमयवर्ष
 श्वेतमूर्धन्यपातयन् । निदाघातेऽनिलोद्धृतामेघाद्भवतगेज्जलम् ॥५१॥ तत कृद्धोमहेष्वास,
 सप्तमल्लु सुतेजते । धनुषितेपामाच्छिद्यममर्द्धपुतनापति ॥ ५२ ॥ निहृत्सन्धेयतानि
 स्मसमदृश्यन्तमारत । ततस्ते तु निमेषार्घात् प्रत्यपचन् धनुषिच ॥ ५३ ॥ सप्त
 खेय, पृषत्कांश्च श्वेतस्योपदर्यपातयन् । तत पुनरमेघात्माश्रुहै, सप्तभिराशुगै । निच
 कत्त महायाहुस्तेषां चापानि घञ्चिनाम् ॥ ५४ ॥ ते निहृत्समहाचापास्त्वरमाणामहा
 रथा । रथ शक्ती, परासृद्य विनेदुर्भरवान् रथान् ॥ ५५ ॥ अन्ययुर्भरतथेष्ट सप्तश्वेत
 रथ प्राति । ततस्ताज्वलिता सप्त महैद्वा शुनि नि स्वना ॥ ५६ ॥ अघोस्ता सप्तभिर्भल्लै
 धिच्छेद् परमास्त्र चित् । तत समादाय शर सर्वकाय विदारणम् ॥ ५७ ॥ प्राहणोद्भ
 रतथेष्ट श्वेतो रुक्म रथ प्रात । तस्य देह निपातितो वाणो वज्राति गामहान् ॥ ५८ ॥

विद्युत की समान चमकतेथे । ५० । उन सप्त ने श्वेतके शिरपर वाणोंकी वर्षा की
 मानो बादल गर्मी के अन्त में पहाड़पर जलकी वर्षा करतेहैं उससेनापति धनुषधारी
 ने क्रोधयुक्तहोके गुप्तग्रन्थी वाले वाणों से उनके धनुषोंको काटा, हे भरतवंशी वह
 धनुष कटेहुये दीखपड़े तदनन्तर उन्होंने अर्द्ध निमेषों मेही अपने सवधनुषों को
 तैयार करके सातवाण श्वेत को मारे तदनन्तर अपारखुद्धि श्वेत ने सप्त भल्लों से
 उन धनुषधारियों के धनुषों को काटा । ५४ । वह धनुष कटेहुये महारथी दिव्यपर
 ङोंको हाथ में लेकर भयकारी शब्दोंको करनेलगे और सातोंवरणोंको उन्होंने श्वेत
 के रथपर छोड़ा तिसपीछे परम अस्त्रों के जाननेवाले श्वेत ने उन ज्वालारूपप्रका-
 शित उल्का और वज्रके समान शब्दायमान सातों वरणोंको अपने सातभल्लों से
 पीचहीमें काटडाला, तदनन्तर हेभरतवंशियों में श्रेष्ठ श्वेतने सव शरीर के छेदनेवाने
 वाणको रुक्मके रथपर चनाया, वहवाण उसके दुस्रको उल्लंघन करके बड़ीशीघ्रता

The bows of these warriors, of many colours, shone like lightning 50
 All these showered arrows over Shwet like rain falling on a moun-
 tain aft : the hot weather That great archer and leader of armies
 was filled in a rage and cut down their bows with his arrows. We
 saw their bows cut down, but all the warriors soon refitted their
 bows and shot seven arrows at Shwet. The wise archer, Shwet
 again cut down their bows 51 When the bows of those warriors
 were cut, they took up bright spears and with dreadful noises hurled
 the seven spears at Shwet, but the latter, adept in the use of arrows,
 cut down with his darts, in the mid air, the seven spears shining like
 sparks and hissing like vajra. Then, O Lord of Bharats ! Shwet shot
 at Rukmarath an arrow which could pierce all the parts of the body.

ततो रुक्म रथो राजन् सायकेन दृढाहतः । निपसाद् रथोपस्थे कदमलञ्चाविशामहत ॥ ५९ ॥ तं विसंतं विमनसं स्वमाणस्तु सारथिः । धपोवाहनसंघ्रान्तः सर्वलोकाभ्य पश्यतः ॥ ६० ॥ ततोऽप्यानुपट्टं समादाय श्वेतो ऐमविभूषितान् । तेषांपुष्पां महाबाहुर्ध्वज शीर्षोप्यपातयत् ॥ ६१ ॥ ह्यांश्च तेषांनिर्मिथ सारथीश्च परगतप । शरंश्चैतान् समा क्रीर्य प्रायाच्छश्वरथं प्रति ॥ ६२ ॥ ततो हलहलाशब्दगत्य सैभ्येपुमारत । दृष्ट्वासेनाप त्तिं तूर्णं यान्तं शश्वरथं प्रति ॥ ६३ ॥ ततो भीष्मं पुप्लुक्षत्प तप पुत्रो महाबलः । वृत्तस्तु सर्वं सैन्येन प्रायाच्छ्वेतं रथं प्रति ॥ ६४ ॥ मृत्योरास्यमनुप्रातं मद्रराजमर्माचयत् । ततो युद्धं समभवत् तुमुलं लामहर्षणम् ॥ ६५ ॥ तावन्तानां परेषां च ध्यतिपकारथ द्विप म् । सोमद्रे भीमसेने च सात्यकी च महारथे ॥ ६६ ॥ कैकेये च विरोटे च घृष्टयुग्मे च ।

से उसके शरीर में भवेदकरगया । ५८ । इस के पीछे हे राजा रुक्म रथी शायक नाम वाणसे घायनहोकर रथ के बैठने के स्थान में बैठगया और बड़ी अचेतता में प्रवृत्तहुआ परन्तु शीघ्रता करनेवाला उसका सावधान सारथी उसको अचेत जानकर सबको देखतेहुये बहुत दूर लेगया । ६० । तदनन्तर महाबाहु श्वेनने सुवर्ण से शोभित दूसरे घोड़ोंको-लेकर, उनछत्रोंकी ध्वजाओंकी नोकोंको गिराया फिर हेराजा घहश्येत् शेषवचेहुये घोड़ोंको वाणों से आच्छादित करके शल्य के रथपर गया, हे भरतवंशी इस के अनन्तर शल्य के रथपर जातेहुये सेनापति श्वेतको देखकर आप की सेनाके मनुष्यों में घड़ा हलचलका शब्दहुआ । ६३ । फिर आपका पुत्र महा बली भीष्मजीको आगेकर के सब सेनाके मनुष्यों समेत श्वेत के रथपर गया और मृत्यु के मुखमें फँसेहुये मद्र के राजा शल्यको बचाया, इस के पीछे आपकेपुत्र और प्रीतिपत्नियों में महारामहर्षण करनेवाला तुमुल युद्ध हुआ जिस में रथ और हाथी संयुक्त थे, कौरवोंके पितामह दृढ भीष्म ने अभिमन्यु भीमसेन महारथी सात्वकी केकय

and it entered his mouth and passed into his body. 58. Wounded by that arrow, Rukmarath swooned in his chariot and succumbed in his seat. But his wise chariot driver, knowing this, took him farther away from the sight of all. 60. Then the warrior Shwet took other horses decked with gold and cut the lanber leads of those six warriors; and covering their horses with his arrows, came forward against Shalya. Seeing Shwet falling on Shalya, there was a great commotion in your army. 63. Then, your son, preceded by valant Bhishm and followed by his soldiers, encountered Shwet and thus rescued the king of Madra from the jaws of death. Then there was a severe fighting between your sons and the other side. The chariots and elephants got mixed together. The old grand-ire of the Kurus showered his arrows on Abhimanyu, Bhumsen, Valant catwiki,

पार्षते । एतेषु नरसिंहेषु चेदि मत्स्येषु चैवह । वचसं शर वर्षाणि कुरु वृद्धः पिता
मह ॥६७॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि श्वेतयुद्धे

सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ एष श्वेते महेश्वासे प्राप्ते शल्यस्य प्रति । कुरव पाण्डवेयाश्च
किमकुर्वत सञ्जय ॥ १ ॥ भीष्म. शांतनव किंवा तन्ममाचहव पृच्छत ॥ सञ्जय
उवाच ॥ राजन् शत सहस्राणि तत क्षत्रियपुंगवा ॥ २ ॥ श्वेत सेनापतिं शूर पुरस्कृ-
त्य महारथा । राक्षो बल वर्यायन्तस्तवपुत्रस्य भारत ॥ ३ ॥ शिखण्डिनं पुरस्कृत्य भ्रातृ
मैच्छन् महारथाः । अभ्यवर्तन्त भीष्मस्य रथ हेम परिष्कृतम् ॥ ४ ॥ जिघासन्त युधा
श्रेष्ठं तदासात् तुमुल महत् । तत्तेहं सम्प्रवक्ष्यामि महाकैवासमन्वृत ॥ ५ ॥ तावकाना

विराट् धृष्टद्युम्न पर्यतकापौत्र इननरोत्तमो पर और राजाचंदेली की सेनाके पुरुषों
पर वारणोंकी शष्टिकी ॥ ६७ ॥

अध्याय ॥ ४८ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसप्रकार शल्य के रथ के पास बड़े धनुषधारी श्वेत
के वर्त्तमानहोनेपर कौरव और पाण्डवों ने क्या क्या कर्म किये और शांतनु भीष्म
जीने क्या किया उसको मेरेआगे वर्णन करो, संजयबोले हे राजा इस के पीछे
लाखों उत्तम शूरवीर और महारथी क्षत्री उससेनापति श्वेतको आगे करके आपके
पुत्र राजा दुर्योधनको अपना पराक्रम दिखलाते हुये शिखण्डी को आगे कररत्ना
करनेकी इच्छा करके, युद्धकर्त्ताओं में उत्तम भीष्मजीको मारने की अभिलाषा
करते हुये उन के मुखर्ण जटित रथ के समीप उनकी सम्मुखता में आकर वर्त्तमान
हुये उससमय बड़ाभारी युद्धहुआ । ४ । अब मैं उसयुद्ध को कहताहूँ जिसरीति से
तुम्हारे पुत्र और दूसरे लोगोंका युद्ध भचलितहुआ उसयुद्धमें भीष्मजीने रथीलों

Kakaya, Virat, Dhrishtadyumna the grandson of Parshat and on
the armies of the king of Chandel 67.

CHAPTER XLVIII

Dhrishashtra asked of Sanjaya — "When Shalya and the great
archer Shwet were thus facing each other, what did the Kauravas
and the Pandavas do? What did Bhishm the son of Shantanu do?
Let me know all this." Sanjaya replied, "Then hundreds of thousands
of warriors and charioteers, led by their general Shwet, showed their
prowess to Duryodhan. They made Shikhandi to face Bhishma the best
of warriors and protected the former from all sides in order to bring
about the destruction of Bhishm. On their approaching the gold
lede-ked chariot of Bhishm, a severe fight ensued. 4. I shall now
describe to you how they fought. Bhishm killed numbers of chariot

परंपांच यथायुद्ध मवर्तत । तत्राकरोद्रयोपस्थान् शूयान्नाशातनधो यद्गन् ॥ ६ ॥ तत्राद्
 मुतं महश्चक्रे शरीरार्द्धद्रथोत्तमान् । समानृणोच्छरैरकं मर्कतुल्य प्रतपधान् ॥ ७ ॥ तुन्द
 समन्तात् समरे रवि रुधन् यथा तमः । तेनाजौ प्रेषिता राजन् शराःशतसहस्रशः ८ ॥
 क्षत्रियांतकराः संख्ये महावेगा महाबलाः । शिरांसि पातयामासुर्धोराणांशतशोरणे ९ ॥
 गजान् कण्टकसन्नाहान्वज्रेणैव शिलोच्चयान् । रथा रथेषु संसक्ता ब्यदश्यन्त
 विशाम्पते ॥ १० ॥ एकेरथंपर्यवहंस्तुरगाः स तुरङ्गमम् । युधानुं । नाहंत वीरं लम्बमानं
 सकर्मुकम् ॥ ११ ॥ उर्वाणांश्च ह्यारालन् बहंतस्तत्रतत्रह । वद्धखड्गनिपद्गाश्च विध्व
 स्तशिरसोहताः १२ शंतशःपतिताभूमौ वीरशय्यासुशेरते । परस्परेण घावन्तः पतिताः
 पुन रुतघताः ॥ १३ ॥ इत्याप्येव प्रघावन्तो द्रन्दयुद्धमवाप्तुषन् । पीडिताःपुनरन्यान्व

के स्थानोंको खाली करके उनके शिरों को काटा, सूर्यके समान प्रतापी युद्धमें चारों
 ओर से पीड़ित करतेहुये भीष्मजीने बाणों से सूर्यको ऐसेढकदिया जैसे उदयहोकर
 सूर्य अंधेरेकोढक देता है । ७ । हे राजा उन्होंने युद्धके बीच क्षत्रियों के नाश
 करने वाले बड़े शीघ्रगामी लाखों तीव्र बाणोंकी वर्षा की, युद्ध में अनेक शूरोंके
 शिरोंको गिराया हे राजा भल्ल और बाणों से युक्त शिरसे रहित बहुतसे रथी रथ
 में बैठेहुये दिखाई दिये रथी रथीके ऊपर अश्वपति अश्वपति के ऊपर वर्त्तमानहुये
 । १० । और सेनाके साथ मरे हुये धनुषोंसमेत रथमें पड़ेहुये वीरोंको उनके रथों
 के घोड़े इधर उधर लेजाते हुए टपटपड़े, खड्ग और तृणीर के बांधनेवाले कटेहुए
 शिरोंसे वर्त्तमान हुए और सैकड़ों पृथ्वीपर पड़ेहुए वीरोंकी शय्याओंपर सोते हैं,
 और परस्पर में दौड़ते गिरते हुए और उठकर अत्यन्त दौड़नेवालों ने द्रन्दयुद्ध को
 मचाया, फिर परस्पर में पीड़ित होकर युद्धभूमि में फिरन लगे मतवाले हाथी चारों

eers and cut down their heads. Glorious like the sun, spreading
 destruction on all sides, Bhishm covered the sun with his arrows as
 the sun covers the darkness by his appearance. 7. He showered
 millions of kshatrya killing arrows and cut down the heads of many
 brave warriors. Many charioteers with their bodies pierced through
 with darts and their heads chopped off, were to be seen in their
 chariots. Charioteers fell upon charioteers and horsemen upon horse-
 men. 10. Killed in the midst of the army, pierced by arrows in
 their chariots and lying on their seats, the warriors were seen
 carried hither and thither by the horses. The wielders of swords
 and quivers were deprived of their heads and hundreds of warriors
 lay dead on the field of battle. Running against one another, falling
 and rising again, the warriors fought duels. Wounded by one
 another, the mad elephants in the field of battle fell down dead in all
 directions. Other elephants and horses were killed because they had
 no riders to guide them. 14. The charioteers met the charioteers all

दुष्टोत्तराणामूधान ॥ १३ ॥ स्वप्नाया सनिपमाश्च जीतरूपपरिप्लुताः । विश्वध्वहतवी-
राश्च शशापारपीडिता ॥ १५ ॥ तेननेनाभ्यघातं विस्तृतंश्चभारत । मत्सोगजःपर्य
घतं द्रवाश्चहतसादिन ॥ १६ ॥ सरथारथिनश्चापि विमृद्गत समंतत । रथेदनादपतत्क
श्चिन्निहलान्भ्येनसायकै ॥ १७ ॥ हतसारथिरप्युच्चैःपपातकाष्टपद्मयः । युध्यमानभ्यसे
ग्रामेव्यूहेजम्बिचास्थिते ॥ १८ ॥ घनु क्वाजतघ्नानंतत्रास्तिपतिपुद्धघत । गात्रापशेन
योघानाभ्यज्ञास्तपरिपथिनम् ॥ १९ ॥ युद्धयमानंशरीराजन् स्तौजनीध्वजिनीरवात् ।
धन्योन्ध्वोरसंशब्देनाश्रयगमटं हत ॥ २० ॥ शब्दायमानेसंग्रामेपटंहेकण्ठदारणि ।
युध्यमानस्यसंग्रामे कुर्वतःपौरुषं स्वकम् ॥ २१ ॥ नाश्रौयंनामगोत्राणिकीर्तनंचपरस्परम् ।

और से गिरे और जिनके सारथी मारगये वह भी हाथी घोड़े गिरपड़े । १४ । रथों
के साथ रथीलाग चारों ओर से मर्दन करनेलगे और कोई किसी के बाखसे मरा
हुआ रथसे गिरा, और जिनका सारथी मारा गया वह बड़ा रथभी काष्ठ के सभान
गिरा और द्रुप युद्ध में धूलके उठने पर, लड़नेवालों का विज्ञान और सम्मुख युद्ध
करने वालों के शब्द ध्वंसहुये युद्ध करनेवालों का शरीर छूने से शत्रुका ज्ञानहोता
था । १७ । हे राजा धनुषकी ज्या के शब्दों पर वाणों से लड़नेवालों ने वाण मारे
और वीरों के कहे हुये वीर शब्द परस्पर में सुनाई नहीं दिये, युद्धके शब्दायमान
होने और कर्ण फाड़नेवाले पट्टशब्द होने पर युद्ध करने हुये अपनी शूर वीरता
काने का परस्पर में पिछला शूरताओं का वर्णन करना भी नहीं सुना गया
भीष्मकी के धनुष से निकले हुये वाणों से पीड़ामान और युद्धमें लड़नेवालों का
भी वर्णन नहीं सुन ई दिया, एकने दूसरे वीरोंके मनोको कंपित किया उस बराबर
व्याकुल करनवाले रोमहर्षण तुमुन युद्धमें, कोई पिता अपने निज पुत्र को
नहीं जानताथा । २० । रथके पहिये और जुए दूटगये और एक भारवाहक घोड़ा
मारगया, जुए के और पहिये के टूटने और रथ को रथाधीन रहित होनेपर

round and destroyed one another. Some fell down on earth from their
chariots pierced through by arrows The huge chariots, whose drivers
were killed, fell down on earth like logs of woods. In the fury of
the battle the dust storm rose so thick that the fighters could not
distinguish the faces and voices of their adversaries and the only
source of knowledge to them was the contact of their bodies 17.
The archers, O king! shot arrows at the sound of bowstring; the
heroic words of the warriors were not heard In the midst of this
tremendous uproar of battle and the account of the former exploits of
the warriors could not be heard Wounded by the arrows shot from the
bow of Bhisim, the warriors uttered inaudible sounds. The warriors
shook the minds of one another. During that terrible battle the
father, could not distinguish the son 20. The wheels and the yokes
of the chariots were broken and the horses were slain. On the chariots

भीष्मचापव्युत्तैर्वाणैरार्तानां युध्यतां मृधे ॥ २२ ॥ परस्परैर्वांधीरानामनांसिसमकंपयन् ।
 तस्मिन्नत्याकुलेयुद्धे दारुणलोमहर्षणे ॥ २३ ॥ पितापुत्रचसमरेण्यभिजांतीतिवश्चन ।
 चक्रेभमेयुर्गच्छन्नेकं युयैहयेहतः ॥ २४ ॥ आक्षितः स्व्येदनाह्वीरः सस रथिर्जिह्वर्ग ।
 पर्वचसमरेसर्वैरीराश्चाविरथीकृताः ॥ २५ ॥ तेनेनभ्यदृश्यते घावमाना समतत ।
 गजोहतः शरदिष्ठभ्रमर्मभिन्नहयोहतः ॥ २६ ॥ अहतः शोपितैवासीद्भीष्मोऽप्रतिशाप्रवान् ।
 श्वेतः कुरुणामकरोत्क्षयंतस्मिन्महाह्वये ॥ २७ ॥ राजपुत्रानुरयोदात्तवर्धाच्छतसघश ।
 चिच्छेदरथिर्नावाणै शिरांसिमरत्पयम् ॥ २८ ॥ सांगदावाहवश्चैवधनुःपचसमतत ।
 रथेपारंश्चक्राणितूणीराणयुगानिच ॥ २९ ॥ छत्राणचमहाह्वीरणपताकाश्चावशांपते ।
 ह्यौघाश्चरथौघाश्चनरीघाश्चैवभारत ॥ ३० ॥ धारणाः शतशश्चैवहताः श्वेतनभामत ।

सारथी समेत वीर लोग मूत्रे चलनेवाले बाणों के द्वारा रथों से गिराये गये, और परस्पर में लड़ने लगे दृष्टपट्टे जो मारागया वह गिरने रहित हुआ कोई मर्मस्थलों में घायल होकर मरा, भीष्मजी के हाथ से शत्रुओं के मनुष्यों को मारते हुये के ईभी बिना घायल के नहीं बचा कौरवों के उसबड़े युद्ध में आप श्वेतने, राजकुमारों को और सैकड़ों समूहवाले बड़े २ पुरुषों को मारा और हजारों समूह युक्त रथियों के शिरोंको काटा । २४ । हे भरतवंशी उस युद्ध भूमि में चारों ओर से वाजुवन्दों समेत भुजा वा धनुष और रथी पदाती रथवारियों में सवार छोटी बड़ी पताका अथवा घोड़ों के और रथों के समूह वा मनुष्यों के समूह सैकड़ों हाथियों समेत श्वेत गुरवारिके हाथों से मारेगये उसके पीछे हमभी श्वेत के भयसे भयभीत होकर अपने उत्तम रथ को छोड़कर दूर चलेगये और यहां आपकी विन्ताको देखते हैं सो हे कौरववन्दन हमसब कौरव लोग बाणोंकी झड़ीको बचाकर वहां पर नियत, शान्तनु भीष्मजी को देखनेजगे वह नरोत्तम बड़े उदार प्रतापी हमारे युद्ध पितावह भीष्मजी भयके समय बड़े भारी युद्धमें निश्चल मेरु पर्वतके समान अकेलेही नियत

being thus disabled, the warriors and the chariot drivers were slain by the arrows which came in straight lines. The heads of some warriors were cut off and others died of receiving wounds in vital parts. No individual of the enemy's army escaped unhurt while Bhishma was fighting. In that war of the Kauravas, Shwet killed hundreds of princes and warriors of renown and behewed thousands of charioteers. 21. In that battle, O descendant of Bharat! numerous jewelled arms, bows, charioteers, foot soldiers, banners and bannerets, horses and chariots with men and elephants were cut down by the great warrior Shwet. I myself, being afraid of Shwet, left my good chariot and went farther off and thus was able to see you once more plunged in grief. So all the Kauravas stood removed from the shower of arrows and looked on Bhishma. That best of men, of great prowess, our grandfather Bhishma, firm like mount Meru at the time of danger, in the thick of battle, stood alone. 30. And as in

धयेभ्वेतमपाद्भिताविहायरथसस्तमम् ॥ ३१ ॥ अपयातास्तथापञ्चाद्विभुषश्यामधृष्णव ।
 शरपातमातिक्रम्यकुरवः कुरुनन्दन ॥ ३२ ॥ भीष्मंशांतनयंयुद्धोस्थिताःपश्यामसर्वशः ।
 अर्दानोर्दीनसमयेभोभोस्माकंमहाह्वये ॥ ३३ ॥ एकस्तस्थौनरव्यात्रोगिरिमैसारवाचलः ।
 आददानइवप्राणान्सविताशशिरात्यये ॥ ३४ ॥ गमस्तिभारवादिशस्तस्थौशरमरी-
 चिमान् । समुच्चमहेष्वास शरसंधानेनेकशः ॥ ३५ ॥ निग्नमिभ्रान्समरेवअपा-
 निरिवाहुरान् । तेवस्पमानामीष्णेनप्रजहुस्तमहाबलम् ॥ ३६ ॥ स्वयूयादिवतेयूथाःमुकं
 भूमिपुदारुणम् । तमेवमुपलक्ष्यैकोहृष्टःपुष्टः परतप ॥ ३७ ॥ दुस्वोघनीप्रियेयुक्तःपांडवान्परि-

हुए । ३० । और जैसे चैत्र वैशाख में सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी के रसादिकों को आकर्षण करता हुआ नियत होता है उसी प्रकार वह शीतल किरणों वाला भीष्मभी शत्रुओंके प्राणोंको खिंचताहुआ नियतहुआ युद्धमें शत्रुओंको मारतेहुए उस धनुष धारी ने बहुत प्रकार से वाणों के समूहोंको ऐसे छोड़ा जैसे कि चक्रधारी त्रिंशु असुरों पर छोड़ते हैं तब भीष्मजी से घायल हुए वीर लोगों ने भीष्म को त्याग किया और अपने सब समूहों कोभी काष्ठ से छुटीहुई अग्नि के समान शत्रुओंके समूहों से पृथक् किया प्रसन्न चित्त देखते प्रफुल्लित शत्रु संतापी दुर्योधन के प्रयोजनकरनेमें प्रवृत्त चित्त अकेले भीष्मजी ने उस अकेले श्वेतको अपने सम्मुख देखकर पांडवोंको बहुत शोषण किया । ३४ । हे राजा जीवनको और उससे उत्पन्न हुए भयको त्यागकर उस महा युद्ध में पांडवों की सेना के मनुष्यों को मारकर गर्दमर्द किया फिर आपके पितादेवव्रत भीष्मजी उस सेनाओं के मारनेवाले सेनापति को देखकर बड़ी शीघ्रगति से सम्मुख हुए उस समय उसश्वेतने वाणों के महाजालों से भीष्मजी को आच्छादित कर दिया, इसीप्रकार भीष्मजी नेभी वाणोंके समूहों से श्वेतको ढक दिया । ३७ । और फिर वह दोनों वैलोंके समान गर्जते हुए

summer, the sun stands drawing humidity from out of the earth, so did Bhishm of cool rays stand attracting the life out of the enemies. Killing the enemies in the field of battle, that archer let go his shower of arrows—as does Vishnu the wielder of discus discharge his arrows at asuras. Wounded by Bhishma's arrows, the warriors removed themselves away from Bhishm and went away with their men out of the field of battle as fire does when it is separated from wood. Cheerful of body and mind, the destroyer of enemies, Bhishm stood alone for the sake of Duryodhan and seeing Shwet before him he killed many warriors of the Pandavas. 34. Leaving all care for his life and body, O king! your father Devabrat Bhishm destroyed the Pandva army; and seeing their leader of the army coming towards him, he at once faced him. Shwet covered Bhishm with the network of his arrows and Bhishm did the same. And then

शोचन् । जीवितदुःखजलद्वयवामयचगुणहाद्ये ॥ ३८ ॥ पातयामासैसैन्यानि
पांडवानाविशापते । प्रहरतमनीमानिपितायैवत्रततव ॥ ३९ ॥ दृष्ट्वासेनापतिमाम्
स्त्वरित भेतगम्ययात् । स्वभाषमशरखालेनमहतासमवाकिरत् ॥ ४० ॥ श्वेतचापि
तथामीषा शर्षपै समवाकिरत् । तौनृपाविवनर्दतीमचाविवमहाक्षिपौ ॥ ४१ ॥ व्याघ्रा
विवसुसंरघ्वापन्योऽयमभिलघ्नतु । अस्त्ररत्नाणिसदायततस्तौपुरुषपंथौ ॥ ४२ ॥
भीष्म भवेतश्चयुयुचेपरस्परचघं पणौ । एकदृनोनिर्देहैःश्रीया पांडवानामनीकिर्ना ॥ ४३ ॥
शरै परमसद्बुद्धोयादिभेनोनपाठयेत् । पितामहततोऽष्ट्या भ्वेतेनविमुग्धीकृत ॥ ४४ ॥
प्रहृषपाडवाजमु पुत्रस्तेविगनामवत् । ततोदुर्योधन दुष्ट पार्थिवे परिचारित ॥ ४५ ॥
ससैन्य पाडवानिकमभ्यप्रव्रतस्युगे । दुर्मुख हतवर्माचक्रप. शल्योविशापति ॥ ४६ ॥

वहे मतलालेहाथी और व्याघ्रके समान अत्यन्त द्रौघ में भरे परस्परमें आघातकरने
लगे, तदनन्तर वहदोनों पुरुषोत्तमअर्जुनसे अर्जुनको रोककर, परस्परमारनेके इच्छा
वान युद्धमें मद्दतहुए अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजी पांडवों की सेनाकोएवाही दिग्भ्रम
भस्मकर डालते जो श्वेत रत्ना न करता । ४० । तिस पीछे श्वेतसे मुख फेरहुए
पितामह की देखकर पांडवोंने बडाहर्ष मनाया, और आपका पुन उदास हुआ
तदनन्तर क्रोधमें भराहुआदुर्योधन अपनेसाथी राजार्थी समेत सेनाके धनुष्योंको
साथ नियो युद्धमें आकर पांडवों की सेनाके सम्मुख दौडातत्र श्वेतने गंगाके पुत्र
भीष्मजीको छोड़कर बड़ी तीव्रतासे आपके पुत्रकी सेना का ऐसे नाशकिया
जैसेचायु अपने वनसे वृक्षों का नाशकरताहै, वह क्रोध से भराहुआ विराट् का
श्वेतनाम बड़ा पुत्र दुर्योधनकी सेनाका नाशकरके वहां से लौट कर फिड़ वही
आपहुँचा जहां भीष्मजी नियतथे । ४४ । देराजन् वह दोनों प्रकाशमान महाबली
महात्मा परस्पर में फिर ऐसे युद्ध करने लगे जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्र लड़तेथे
और परस्पर मारनेकी इच्छाकरतेथे श्वेतने अपने धनुषको हाथ में लेकर भीष्मजी को

both roaring like bulls they fought with each other like two angry
elephants or lions And each checking the weapons of the other and
desiring to kill each other, they engaged in combat The enraged
Bhishm would have extirpated the army of the Pandavas in one
day, were there no Shwet to protect it 40 Then seeing the
grandfather turn back on Shwet, the Pandavas raised a great cry of
joy. Your son was grieved at this and accompanied by kins and
armies, rushed upon the army of the Pandavas Shwet then left
Bhishm the son of Ganga and began swiftly to destroy your army
as the wind destroys trees by its force The enraged son of Vrat,
Shwet, having routed Duryodhan's army returned to the place where
Bhishm was 41 Both glorious warriors of great renown fought
with each other like Vritrasur and Indra and desired to kill each

भीष्मजुगुपुरासाद्यतवपुत्रेणनोदिता । दृष्ट्वातुपार्थिवै सर्वैर्दुर्योधनपुरोगमै ॥ ४७ ॥
 पांडवानामनीकानि घड्यमानानसधुगे । श्वेतोर्गांगेयमुत्सृज्यतवपुनस्यवाहिनीं ॥ ४८ ॥
 नाशयामासवेगेनययुर्वृक्षानिबौजसा । द्रावयित्वाचमराजन्वैराटि क्रोधमूर्च्छित ४९ ॥
 आपत्सहसाभूयोवज्रभीष्मोव्यघरिषत् । तौतत्रोपगतौराजन् शरद् सौमहायली ॥ ५० ॥
 अयुष्येतामहात्मानौपयोभौवृत्रवासवौ । अन्वोन्वंतुमहाराजपरस्परवधैपिणौ ॥ ५१ ॥
 निगृह्यकामुंक्रथेतोभाष्मविश्याघसप्तभि ॥ पराक्रमेततस्तस्यपराक्रम्यपराक्रमी ॥ ५२ ॥
 तरसाधारयामासमत्तौमत्तमिवद्विपम् । श्वेत शतनवभूय शरै सन्नतपर्वाम ॥ ५३ ॥
 विन्ध्याधपचर्विशत्यादद्भुतमिवाभनत् । तंप्रत्यविश्याइशभिर्भीष्म शतनवस्तदा ५४ ॥

साल बाणों से विदीर्ण किया इसके पीछे इस पराक्रमी ने उसपराक्रमी को बड़े पराक्रम से ऐसेहटा दिया जैसे कि मतवालालाहाथी मतवाले हाथी को हटादेता है । ४७ । फिर क्षत्रियों के प्रसन्न करने वाले विराटके पुत्र श्वेतने क्रोध करके युद्धमें धनुषको खेंच कर भीष्मजीको घायल किया, इसी प्रकार शंतनु भीष्मजी ने भी उसको दश बाणों से निहवल करदिया, वह पराक्रमी भीष्मजीसे घायल होकर भी पर्वत के सामान कम्पापमान नहीं हुआ तदनन्तर फिर श्वेतने गुप्त ग्रन्थि वाले पच्छीम बाणों से भीष्मजी को घायल किया, यह आश्चर्यसा हुआ और युद्धमें होठ को चानने वाले श्वेतने अत्यन्त हँसकर, दश बाणों से भीष्मके धनुषको दश खण्ड कर दिये तिसपीछे बाणोंकेभी छेदनेवाले विशिखों को चढ़ाकर, उन महात्मा भीष्मजी की तालज्जका के शिर को मथन किया फिर आपके पुत्रोंने भीष्मजी की ध्वजाको गिरा हुआ देखकर भीष्मजी को श्वेत के आधीन वर्त्तमान मृतक रूप माना और प्रसन्न चित्त पाण्डवोंने भी चारों ओर शंखोंको बजाया । ५३ । महात्मा भीष्मजी की तालज्जका को गिरा हुआ देखकर दुर्योधन ने बड़े क्रोध से

other. Shwet pierced Bhishm with seven arrows and was himself repulsed with equal force by Bhishm, as one mad elephant repulses another 47. Then Virat's son Shwet, the joy of kshatryas, drawing his bow in great anger, wounded Bhishm. In the same manner Bhishm also wounded him with ten arrows. The brave man, wounded by Bhishma's arrows, remained unshaken like a mountain and again wounded Bhishm with swift sharp arrows. His deed was a wonder. And biting his lips in the field of battle, with a smile on his face, Shwet cut the bow of Bhishm into ten pieces with ten arrows. Then he discharged more arrows and cut down the banner of Bhishm with the figure of palm tree on it. Your sons, seeing the banner of Bhishm down, thought that he was vanquished and slain by Shwet and the Pandavas cheerfully blew their conch shells. 53. Seeing the Palm ensign of great Bhishm struck down, Duryodhan

सविद्धस्तेनवलघाशाकंपतयंशंऽचलः । धैराटि समरेकुड्रोभुशामायम्यकार्युक्म ॥५५॥
 आजघानततामीभंश्वेत क्षत्रियनेदनः । संप्रहस्यततःश्वेतःखुकिणीपरिसंलिहन् ॥५६॥
 यनुश्चिच्छेदमीभमस्यनवभिर्दशघाशरैः । संघायतिशिशंश्चैवशरलामप्रवाहिनम् ॥५७॥
 उन्ममाधततस्तलंघ्यजशीर्षमहात्मनः । केतुंनपतितंदृष्ट्याभीमस्यतनघास्तथ ॥५८॥
 हतंभीमममन्यंतश्वेतस्यवशमागतम् । पांडवाश्चापिहंष्टुष्टुदंशुःशंघांमुवायुनाः ॥५९॥
 भीमस्यपतितंकेतुंदृष्ट्वातालंमहात्मनः । ततोद्युर्योधनःक्रोधातस्यमनीकमनोदयन् ॥६०॥
 यत्तामीभंपरीप्लव्यंरत्नमाणाःसमंततः । गतःप्रवश्यमानानांश्वेतान्मृत्युमवाप्स्यति ॥६१॥
 मीमःशांतनवःशूरस्तथास्तथंघ्नघोमिधः । राहस्तुवचनंश्रुत्वात्वरमाणामहारथाः ॥६२॥
 बलेनचतुरंगेणगंगेयनंघपालयन् । वाह्लिकःकृतधर्माचशल शल्पश्चमारत ॥६३॥

अपनी सेनाको जताया कि उन देखनेवालोंको भी श्वेत मारेगा तब शान्तनु भीष्मजी भी मारे जायेंगे इसलिये मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि बड़े उपाय से भीष्मजी के जीवनकी इच्छा से तुम चारोंओर से उनकी रक्षा करो यहवात मैं सत्य सत्यही कहताहूँ राजा दुर्योधनके वचनको सुनतेही शीघ्रता करनेवाले महारथियोंने चार ओंग वाली सेनासमेत गंगा के पुत्र भीष्मकी रक्षाकी, वाह्लिक कृतवर्मा कृपाचार्य शल्य जरासन्धकापुत्र विकर्ण चित्रसेन विविशानि हे भरतवंशी उन सब शीघ्रता करने वालों ने चारों ओर से भीष्मजी को मध्य में करके श्वेत के ऊपर अश्वों की वर्षाकी, हस्त लापत्रताके दिखानेवाले और शीघ्रता करनेवाले महाबली बड़े बुद्धिमान श्वेतने उन क्रोध भरेहुओं को अपने तीव्रबाणोंसे रोक़ा, जैसेकि सिंह हाथियोंको रोक़ता है उसीप्रकार श्वेतने उन सर्वोंको रोक़कर बाणों की बड़ी वर्षासे भीष्मजीके धनुषको काटा, तदनन्तर हे राजन् युद्ध भूमिमें शांतनु भीष्मजी ने दूसरे धनुषको लेकर कंकपक्ष युक्त शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणों से श्वेतको घायल किया, तिस पीछे हे राजन् लड़ाई में सबलोगों के देखते बड़े क्रोधयुक्त श्वेतने भीष्मजी को बड़े २ लोहेके बाणों से विदीर्ण किया, इसके अनन्तर राजा

in anger ordered his warriors not to let Shwet destroy Bhishm as long as they lived. He directed them to guard Bhishm on all sides with great care as he said that Shwet was sure to kill all the warriors if he got victory over Bhishm. At his command the warriors guarded Bhishm the son of Ganga on all sides. Vahlik, Kritvarma Kripacharya, Shalya, Vikarn the son of Jarasandh, Chitrasen and Vivanshati at once stationed themselves round Bhishm and showered their weapons on Shwet. Dexterous in the use of arms, the wise Shwet checked those angry ones with sharp arrows, as a lion checks elephants. Having checked those warriors with a shower of his arrows, he cut down Bhishma's bow. But Bhishm at once took up another bow and wounded Shwet by his arrows sharpened by grinding on stone and fitted with quills. Then, within sight of all,

जलसघोषिधर्षश्च चित्रसनोविदिशति । त्वरमाणास्त्वंरांकाले परिवार्धसमतत ॥६४॥
 दारवृष्टिसुमुत्ताश्वेतस्योपर्यपातयन् । तान्कुङ्क्षोनिशितैर्वाणैस्त्वरमाणोमहारथ ॥६५॥
 अघारयद्भेयात्मादर्शयन्पाणिलाघवम् । सनिवार्यनुतान्सर्वान्केसरीकुजरानिव ॥६६॥
 महताशरवर्षेणभीष्मस्यधनुराच्छिनत् । ततो-यद्धनुरादायभीष्म शान्तनवोयुधि ॥ ६७ ॥
 श्वेतवि-याघराजेंद्रककपत्रै शितै शरै । तत सेनापति कुङ्क्षोभीष्मवहुरिरायसे ॥ ६८ ॥
 वि याघसमरराज सर्वलोकस्यपश्यत । तत प्र-यधितोराजाभीष्मदृष्टवानिवारित ॥६९॥
 प्रपीरसर्वलोकस्यश्वेतेनयुधवैतदा । निष्ठानकधसुमहास्तवसै-यस्यचामभवत् ॥ ७० ॥
 तंवीरवारितदृष्टवाश्वेतेनशराचक्षतम् । इतश्वेतनम-यतश्वेतस्यवशमागतम् ॥ ७१ ॥
 तत प्राधवशप्राप्त ।पतात्रेचव्रतस्तव । ध्वजमु-मायनदृष्टवाताञ्छेनानिवारिताम् ॥७२॥

दुर्योधन उन सब लोगों के आगे बड़े वीर भीष्मजी का युद्ध में श्वेत से रुका हुआ देखकर बड़ा दुःखी हुआ, आपकी सेनाका बहुत देर तक निवासरहा । ६४ । और श्वेतके बाणोंसे विदीर्ण उस वीर भीष्मको देखकर श्वेतके आधीन वर्तमान होकर उसके हाथसे मृतकरूप माना इसपीछे आप के पिता देवव्रत भीष्मजी क्रोधके वशीभूत हुए, हेमहाराज ध्वजाको मथितकरके उस सेनाको रोके हुए देखकर श्वेतके ऊपर अनेक शायकों की वर्षा की, फिर राथियोंमें श्रेष्ठ श्वेतने बाणों को रोकर फिरभी आपके पिता भीष्मके धनुषको भल्लोंसे काण्डाला, हे राजन् क्रोधमें भरे हुए भीष्मजी ने धनुष को त्यागकर दूसरे अत्यन्त दृढ़ धनुषको लेकर शिलको तीक्ष्ण किये हुए सात भल्लों को चढाकर चार बाणोंसे तो श्वेतके चारों घोंडोंपर मारा और दोबाणों से ध्वजाको काटा और सातवें भल्ल से सारथीके शिरकोकाटा । ७० । फिर वह महारथी श्वेत जिसके सारथी और घोड़े मरगयेथे रथसे कूदकर क्रोधसे व्याकुलहुआ पितामह ने राथियों में श्रेष्ठश्वेतको रथसे विहीन देखकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से उसको चारों ओरसे घायल किया, युद्धमें भीष्मजीके बाणों से

Shwet pierced Bhishm with long non arrows Seeing Bhishm thus checked in battle by Shwet Duryodhan was much grieved Your army stood there long 64 And seeing Bhishm wounded by Shwet's arrows and checked they took him already for dead Then your father Devalrat was beset with anger and seeing his banner broken and his army checked he showered many arrows at Shwet Then Shwet the best of charioteers again checked his arrows and cut his bow in twain Then filled with anger Bhishm left that bow and taking another and stronger one shot seven arrows at him With four arrows he killed the four horses of Shwet with two he cut down his standard and with the seventh he beheaded the driver 70 The great warrior Shwet being thus deprived of the driver and horses leaped from his chariot and was much agitated with anger The King's father seeing Shwet the best of warriors deprived of the use

श्वेतप्रतिमहाराजस्यसुजतस्यैकान्वहन् । तानाचार्येणश्वेतोमी'सुस्यरथिनाधरः ॥ ७३ ॥
घनुश्चिच्छेदमलेनपुनरेषापेनुस्तप । उत्सृज्यकामुंकराजन्गामेयःक्रोधशूच्छितः ॥ ७४ ॥
अन्यत्कामुंकरमादायदिपुलंवल्लवचरम् । तत्रसंघाययिपुलान्गहान्ससाशिलाशितान् ७५ ॥
प्रतुभिश्चजघानाश्वान्श्वेतस्यपृतनापतेः । ध्वजंद्वाभ्यांताचच्छेत्सप्तमेनचसारथेः ॥ ७६ ॥
शिराश्चच्छेदमल्लेनसंकुद्धोऽलघुविक्रमः । इतादयस्तत्सत्सर्थादवच्छृत्यमहादलः ॥ ७७ ॥
अमर्षवशमापन्नोव्याकुलःसमपद्यत । विरथरथिनांश्रेष्ठद्वेन्दुदम्बापतामहः ॥ ७८ ॥
ताडयामासनिशितैःशरसंधैःसमततः । सताड्यमानःसमोभीष्मचापच्युतैःशरैः ॥ ७९ ॥
स्वरथेघनुंरसृज्यशार्किजग्राहकांचनी । ततःशक्तिरणेश्वेतोजग्राहोप्रांमहामया ॥ ८० ॥
कालदंडोपमांघोरांमृत्योर्जिह्वामिवश्वसन् । अन्नवीचतदाश्वेतोभीष्मंशान्तनवरणे ॥ ८१ ॥
तिष्ठेदानींसुसंरब्धःपश्यन्पुरुषोमय । एवमुक्त्वामहेष्वासोभीष्मंयुधिराकमी ॥ ८२ ॥

घायल हुए श्वेतने अपने रथपर घनुपको छोड़कर दिव्य मुन्नखित बग्गीको धारण किया, तदनन्तर युद्धमें घोर भयानक उग्र कालदण्ड के समान नाश करने में महा समर्थ अपनी बरछी को लेकर, महा क्रोधरूप बुद्धिमान श्वेत ने भीष्म भीष्म ऐसा कहकर सर्प के समान बरछी को फेंका, हे राजन उससमय आपके पुत्रों ने बड़ा हाहाकार किया कि पांडवों के निमित्त पराक्रम करने वाला श्वेत आपका अनर्थ करना चाहताहै । ७७ । ऐसी सर्पाकार रूप वाली नाश घातक श्वेत की छोड़ी हुई बरछी को देखकर आपके पुत्रों में बड़ा हाहाकार हुआ । ७८ । हेराजन् उसकी फेंकीहुई बरछी एकाएकी उल्कापात के समान आकाशसे गिरी तब भ्रांती से युक्त आपके पिता देवव्रतने उस पृथ्वी और आकाशके बीच, प्रकाशवान् किरणों से युक्त बरछी को आठ घाणोंसे काटकर नौटुकड़े किये वह उत्तम सुवर्णवाली बरछी तीक्ष्णवाणों से कटगई इस के पीछे हे भरतर्षभ आपके सवपुत्र बड़े शब्दों को कर के पुकारे, तब क्रोधसे भरे काल से विदग्धि चिच श्वेतने उसबरछीको खींच

of his chariot, pierced him with sharp arrows on all sides. His wounded in battle by the arrows of Bhishm, left his baking his chariot and took up his celestial golden spear. The staff of spear, dreadful in battle and capable of destroying and hurled it. Death; wise Shwet said in anger "Bhishm, Bhicry of ah and alas like a serpent. Your sons then raised a gan injury to your cause. at the probable consequences of Shwet's, your sons expressed signs of Seeing that destructive spear of Shwet, O king, fell down suddenly-like grief. 78. The spear hurled by his father Devabrat, cut that spear of a meteor from the sky; but ye father Devabrat, cut that spear of luminous rays with eight rows in the midst of the earth and sky and divided it into ni parts. That god golden spear was cut down by sharp arrows and at this, O best of Bharats! all your sons cried for joy. Shwet, agitated by anger and broken hearted at the

तत्र शक्तिमयेयात्माचिक्षेपभुजगोपमां । पांडवाद्यैपगक्रांतस्तथानयैचिकीर्षुकः ॥ ८३ ॥
 हृद्वाकारोमहानासात्पुत्राणांतेविशांपते । दृष्ट्वाशार्किमहघोरांमृत्योर्दंडसमप्रभाम् ८४ ॥
 श्वेतस्यकरनिर्मुक्तानिमुक्तोरगसाप्रभाम् । अपतत्सहसाराजनमहादकचनभस्तलात् ८५ ॥
 उज्वलीभतरक्षताज्वालाभिरवसंबुताम् । असंप्रांतस्तदाराजनपितादेवव्रतस्तत्र ॥ ८६ ॥
 अष्ट भनवभिर्भ्रमशक्तिचिच्छेदपात्रिभिः । उत्कृष्टहेमाविकृतांनकृतांनशितै शरैः ॥ ८७ ॥
 उच्चुकुश्रुमग्नःसर्वेतायकाभरतपथ । शक्तिविनिहतांदृष्ट्वावैराटि क्रोधमूर्च्छितः ॥ ८८ ॥
 * लोपदतचेतास्तकर्तव्यनाभ्यजानत । क्रोधसमूर्च्छिताराजनवैराटि प्रहसन्निव ॥ ८९ ॥
 गदांजत्र हसदष्टोभीप्रस्यनिघनप्रति । क्रोधेनरक्तनयनोदंडपाणिोरयांरुः ॥ ९० ॥
 भीष्मसमभिदुद्रावजलैघद्वपर्वतम् । तस्यचेगमसवार्थमत्वाभीष्मःप्रताद्यान् ॥ ९१ ॥
 प्रहाराविप्रमोक्षार्थसहस्राधरणांगतः । इधेत क्रोधसमावष्टोभ्रामथिरवातुतांगदां ॥ ९२ ॥

हुई जानकर करने के योग्य कर्म को नहीं जाना, फिर क्रोधयुक्त और प्रसन्नपुर्ति श्वेतने भीष्मजी के मारनेके लिये गदाको हाथ में लिया, और क्रोधसे अत्यन्त रक्त नेत्र दूमेरे कालके समान भीष्मजी के ऊपर ऐसा दौड़ा जैसे कि बादल पर्वतपर दौड़ता है, प्रभाव के जानने वाले भीष्मजी उसके वेगको नरोकने के योग्य मान कर अपने वचाव के लिये शीघ्रही पृथ्वीपर उतरपड़े, क्रोधके आधीनहोकर श्वेत ने अपनी उसगदा को घुमाकर भीष्मजी के रथ पर ऐसा फेंका जैसे कि धनेश कुवेर अपनी गदाको फेंकताहै, उसथयानक घात करनेवाली गदाने घोड़ोंसमेत रथसारथी और ध्वजाको भक्षकर दिया फिर महारथी भीष्मजी को रथसे विहीनदेखकर रथियोंमें श्रेष्ठ शल्य आदिक महारथी एकसाथ दौड़े तदनन्तर महादुःखी भीष्मजी दूमेररथमें बैठकर धनुषको टंकारकर हँसतेहुए धीरेसे श्वेतके निकटआये । ९० । इसी अन्तरमें भीष्मजी ने आकाश से उत्पन्न वा अपना भला करनेवाली इस दिव्य वाणी को सुना, कि हे भीष्म हेमशावाहु इसके विजयकरने में शीघ्र उपाय कर यह समय ईश्वर

w. of his spear, did not know what to do. Then the enraged Shwet eyes cheerful face, took up his mace to destroy Bhishm and with a cloud of anger rushed upon him like a second Death or like knowing his over a hill. Knowing the fury of the onset and ed from his charigability to bear the attack, Bhishm at once alight- of Bhishm as Kuver & Shwet in anger hurled his mace at the chariot ful destructive mace destr'd of wealth hurls his own. That dread horses and banner. Seeing th the chariot together with the driver his chariot, Shalya and other great treat warrior Bhishm deprived of with a heavy heart, mounted upon anc rriors rushed at once. Bhishm, low approvel Shwet with a smiling face or chariot and twangirg his Bhishm heard from the sky these celestial wor. 90. In the meantime, him:— "Bhishm of great arms! make haste to conqu him. This is

स्येभीष्मस्यचिक्षेपयवादेवोधनेश्वरः । तयामीष्मनिपातिन्यासास्त्रोभस्मसात्कृतः ॥ ९३ ॥
 सध्वजःसहसूनेनसाध्व-सयुगवधुरः । अरधराधनांश्रुं भीष्मदृष्टवारयोस्तगाः ॥ ९४ ॥
 अभ्यघ्रावंतसांहिताःशह्यप्रभृतयोरथाः । ततोऽन्यैरथमास्यायधनुर्धिसफार्धदुर्भताः ॥ ९५ ॥
 शनकैरभ्यपाश्वेतांगैर्यःप्रहसाध्व । एतास्त्रिनैतरेभीष्मःशुभावाविपुलांगम् ॥ ९६ ॥
 आकाशादीरतांद्वाभामानोहतसंभयाम्भीष्मभीष्ममहाबाहोशीघ्रयत्नंकरुष्वध्वे १७ ॥
 एषह्यस्यजयेकालोर्निर्दिष्टोविशयोनिता । एतच्छ्रुत्वातुयचनंदेचदुतेनभापतम् ॥ ९८ ॥
 संप्रहृष्टमनाभूत्वाश्वेतस्यमनोदधे । विरथरथिनांश्रुं श्वेतदृष्ट्वापदातिनम् ॥ ९९ ॥
 सहितास्वध्वचर्चतरीन्सतोमहारथाः । सात्विकीभीमसेनश्चधृष्ट्युम्नश्चपार्षतः ॥ १०० ॥

से कहाहुआ है, देवदूत के कहेंहुए आकाशसे उस वचन को सुनकर अत्यन्त भसन्नचित्त
 हो भीष्म जी ने उसके मारने में मनको लगाया, सात्विकी भीमसेन पार्षतकापोता
 धृष्टद्युम्न केकय धृष्टकेतु पराक्रमी अभिमन्यु यहसब महारथी उत्तरथियोंमें श्रेष्ठ श्वेतको
 रथसे विहीन देख कर एकसाथ ही चारोंओरको देखतेहुए लौटे उनको चारों ओर
 से आत हुये देखकर बड़े बुद्धिमान् भीष्मजी ने द्रोणाचार्य शल्य और कृपा
 चार्यको साथ लेकर उनको ऐसे रोका जैसे कि वायु के वेगोंको पर्वतरोके,
 महात्मा पाण्डव और सबकेरुक्जानेपर श्वेतने खड्गको खेंचकर भीष्मके धनुषको
 काटा, फिर शीघ्रता करने वाले पितामहने उस दृष्टेहुए धनुषको छोडकर और
 देव दूत के वचनको याद करके उसके मारने में मनको प्रवृत्त किया, इसके पीछे
 आप के पिता महारथी शीघ्रता करनेवाले देवव्रत भीष्मने दूसरे धनुषको लेकर उस
 इन्द्रायुध के समान प्रकाशित धनुष को क्षणमात्र मेंही तैयारकिया । ९९ । फिर हे
 भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ फिर आपके पिता भीष्मजी उन भीमसेन आदि पुरुषोत्तमों से
 चाहाहुआ उस महारथी श्वेतको देखकर उसके मारने में प्रवृत्तहुए, इसके पीछे

the time fixed by God." Having heard the word of the divine mes-
 senger from the sky, Bhishm, with a mind full of cheer, set his heart
 on killing Shwet. In the meantime, seeing Shwet destitute of cha-
 rriot, Satwika, Bhimsen, Dhrishtadyumna the grandson of Parshat,
 Kakaya, Dhrishtaketu and valiant Abhimanyu ran at once to his
 help. But wise Bhishm, when he saw them coming, checked their
 advance with the help of Dronacharya, Shalya and Kripacharya, as
 a mountain resists the fury of the winds. When the Pandavas were
 thus checked in their advance, Shwet drew forth his sword and cut
 into pieces the bow of Bhishm. The grandfather left the broken bow
 and remembering the words of the celestial messenger, set his heart
 on killing him. After this, your valiant father, Devebrat Bhishm,
 took up another bow and prepared it in an instant like the weapon of
 Indra. 99. Then, O best of Bharats seeing that Shwet was protected
 by Bhim and other warriors, your father prepared to kill him. Seeing,

कैकेयोऽधृष्टकेतुश्च अभिमन्युश्च वीर्यवान् । एतान्नापतत सर्वान्द्रोणशल्प्यरूपैः सह ॥ १०१ ॥
 अवारयद्भ्रमेपात्मावारिचेगानिवाचलः । सनिरुद्धेषुसर्पेषुपांडिचेपुमहात्मसु ॥ २ ॥
 श्वेतःसद्गमपाण्डुश्चभीष्मस्वघनुराच्छिनत् । तदपास्यघनुच्छिन्नंत्वरमाणुःपितामहः ॥ ३ ॥
 देवदूतचच-श्रुत्वाचपेतस्यमनोदधे । ततःप्रचरमाणस्तुपितादेवव्रतस्तथ ॥ ४ ॥ अन्यत्
 कामुंक्रमादायथावरमाणमेहारथः । क्षणेनसज्यमकरोच्छक्रचापसमप्रभम् ॥ ५ ॥
 पितातेभरतश्रेष्ठश्वेतंष्टवामहारथैः । धृतंतंमनुजव्याघ्रंभीमसेनपुरोगमैः ॥ ६ ॥ अश्वघर्त
 तर्गांगय-धेतसेनापतिदृष्टम् । आपतंतततोभीष्मोभीमसेनप्रतापवन् ॥ ७ ॥ आजघ्नेधि-
 शितैःपश्यासेनान्यैसमहारथः । अभिमन्युंचसगरेपितादेवव्रतस्तथ ॥ ८ ॥ आजघ्नेभरत
 श्रेष्ठस्त्रिभिःसव्रतपर्वभिः । सारथिकंचशतेनाजौभरतानांपितामहः ॥ ९ ॥ घृष्टसुग्नेच

मतापवान् महारथी भीमसेनने उस बढ़ते हुए सेनापति भीष्मको देखकर साठवाणों से घायल किया फिर तो आपके पिता देवव्रत नेभी युद्धके बीचमें अपने घोरवाणों से अभिमन्यु आदि सवमहारथियोंको रोककर, उसी युद्धमें गुप्तग्रन्थीवाले तीन वाणों से श्वेतको घायल किया । १०१ । और एकसौ वाणों से सात्विकी को और बीसवाणों से घृष्टसुग्नेको और पांचवाणों से कैकेय को और बहुतसे वाण समूहोंसे शेष सवराजाओं को घायल करके रोकदिया जब सवरुकगये तब श्वेत के सम्मुखदांडे तिसपीछे भीष्मजीने मृत्युके समान काठिनता से आर्ध्र होनेवाले वाण को तरकससे खेचकर चढ़ाया, उसब्रह्मअस्त्रसे युक्त चक्रकोभी काटनेवाले वाणको देवता गन्धर्व विशाच सर्प और राक्षसों ने देखा वहवाण अग्निके समान प्रकाशित और महावज्रके समान ज्वलित श्वेतके कवचको काटकर उसकी नाभि में ऐसे समागया जैसे अस्तगतहोता हुआ सूर्य शीघ्रही अपनेप्रकाश को लेकर चलाजाताहै इस रीतिसे वह वाण श्वेत के जीवन को लेकरगया हमने इस प्रकारसे युद्ध में उस नरोत्तम को भीष्मजी के हाथ से मराहुआ पृथ्वीपर गिरताहुआ ऐसादेखा जैसे

the advance of general Bhishm, Blum wounded him with sixty arrows. But your father Devabrat checked the advances of Abhimanyu and others with his arrows and wounded Shwet with three of his dreadful darts having hidden joints. 103. He checked and wounded Satwika with a hundred arrows, Dhrishtadyumna with twenty, Kalaya with five and all the other kings with numerous arrows. When he had thus checked them all, he rushed upon Shwet and out of his quiver he put on his bow an unerring and fatal arrow. The gods, gandharvas, pisachas, serpents and rakshases saw that arrow united with Brahmastra, fit to pierce vajra itself. That arrow, luminous like fire and burning like the great vajra, pierced the armour of Shwet and entered his navel, and as the setting sun takes with him his own light, it took away the life out of Shwet. We saw that best of men killed in the field of battle by Bhishm and fallen

विशत्या कैकेयचापिपंचभिः । तांश्चमर्वांन्महेष्वासान् पितावेचग्रतस्तव ॥ १० ॥ चारयित्वा
 शरैर्घोरैः श्वेतमेवाभद्रुदुवे । ततः शंरंमृत्युसमे भारसाधनमुत्तमम् ॥ ११ ॥ विकृष्यवल
 वान्भीष्मं समघचकुरासदम् । प्रह्लाखेणसु संयुक्तं तं शरंलोमयाहितम् ॥ १२ ॥ दृश्यु
 र्दिवंगंधर्षाः पिशाचो रगराक्षसाः । सतस्य कवचंभित्वा हृदयचामिताजसः ॥ १३ ॥
 जगाम घर्णावाणो महाशंनिरिवज्वलन् । अस्तं गच्छन्ध्यादित्यः प्रभामादायसत्वरः
 ॥ १४ ॥ एवंजीवित मादाय श्वेतदेहाज्जगामह । तंभीष्मेणनरव्याघ्रं तथा विनिहतंयुधि
 ॥ १५ ॥ प्रतंततपदयामागरे गुंगमिच्छयुतम् । अशोचन्पीडवास्तत्र क्षत्रियाश्च
 महारथाः ॥ १६ ॥ प्रहृष्टाश्च सुतास्तुभ्यं कुर्येश्चापि सर्वशः । ततो दुःशासनोराजन्
 श्वेतंदृष्टवानिपातितम् ॥ १७ ॥ वादत्र निनर्दयैरेतुत्यतिस्मसमंततः । तस्मिन् हते
 महेष्वासे भीष्मेणाह्वयशोभिना ॥ १८ ॥ प्रावेपंतमहेष्वासाः शिखाण्ड प्रमुपारथाः ।
 ततो घर्जजयो राजन् चाप्येयश्चगपि सर्वशः ॥ १९ ॥ अयह्यारं शनैश्चकुनिदृतेपाहिनीपता ।
 ततोचहारः सैन्यानां तवतेषां च भारत ॥ २० ॥ तावकानां परेषां च नर्दतांच मुहुर्मुहुः ।
 पार्था विमनसोभूत्वा श्ववर्तेनमहारथाः । क्षितयंतोवधं घोरं द्वैरयेन परंतपाः ॥ २१ ॥
 इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवर्षणि श्वेतवधे
 अष्टाचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

पर्वतसे गिरता हुआ शिखरहोता है उस स्थान में पाण्डव आदि जो महारथी
 थे वह सब उसे देखकर युद्ध करने से थकहुए और आपके पुत्रों समेत सब कौरव
 प्रसन्न हुए, तदनन्तर हे राजा दुश्शासन स्वतःको गिराहुआ देखकर, बड़े बड़े
 वार्जोसे घोर शब्दों को करके चारों ओरको घूमने लगा युद्धमें शोभा पाने वाले
 भीष्मजी के हाथसे उस बड़े धनुषवारी के मरनेपर शिखरहटी आदि रथी अत्यन्त
 कम्पायमान हुए हे राजा इस सेनापतिके मरनेपर अर्जुन और श्रीकृष्णजी नेभी
 सब रीतियों से धीरे धीरे युद्धका विश्राम किया, तदनन्तर आपके पुत्रों के और
 पांडवों के गर्जने और प्रसन्न होनेपर दोनों सेनाओंको विश्राम हुआ, हे शत्रु
 सन्तापी धृतराष्ट्र महारथी पाण्डव कौरवों के घोर मरणको शोचते उदास मन
 होकर स्थित हुए ॥ २१ ॥

like a mountain peak. 116. The Pandavas and other warriors present
 there stopped fighting at the horrible sight to the joy of the Kaurav-
 as and your sons. Seeing the fall of Shwet, Dushasan caused a
 tremendous noise to be made from the musical instruments and
 turned round and round Shikhandi and other warriors shook with
 fear when that great archer was killed by glorious Bhishm and at
 the death of that commander of the army Shree Krishna and Arjun
 gradually caused the fighting to cease and the two armies retired.
 mid roars of your sons and those of the Pandavas. {The Pandava
 warriors returned with heavy hearts, devising the destruction of the
 Kauravas.' 121.

धृतराष्ट्र उवाच । श्वेतेसेना पतौतात सग्रामे निहतपरै । किमकुर्व महेश्चासा
 पञ्चाला पाडवै सह ॥ १ ॥ सेनापतिं सम वर्ण्यं श्वेत युधि निपातितम् । तदर्थं यतता
 चापि परेषां प्रपलायनाम् ॥ २ ॥ मा प्रीणाति मेवाक्यं जयं सजयं नृपवत ।
 प्रत्युपायं चिंतयत सज्जना प्रभवतिमे ॥ ३ ॥ सहिषीरौ नुरक्तश्च वृद्धं कुरुपतिस्तदा ।
 हृतवै सदातेन पितु पुत्रेणधीमता ॥ ४ ॥ तस्योद्देगं भयाच्चापि सश्रित पाडवान्
 पुरा । सर्वे बलपरित्यज्य दुर्गं सश्रियं ताष्टात ॥ ५ ॥ पाडवानां प्रतापेन दुर्गदेश
 निवेश्य च । सपत्नान् सततवाचघातार्थं ह्यति मनुष्ठित ॥ ६ ॥ आश्चर्यैवै सदा तेषां
 पुराराज्ञा सुदुर्मति । ततो युधिष्ठिरेभक्त कथं सजयस्व दित ॥ ७ ॥ प्रक्षिप्त समत
 क्षुद्रं पुत्रोमपृष्टपाघम । तयुद्धं रोच्ययेद्भीष्मो नचाचाप कथंचन ॥ ८ ॥ नक्षुपो
 नच गाधारी नाह सजयरोच्य । न वासुदेवा वाष्णैर्यो धर्मराजश्च पाडव ॥ ९ ॥

अध्याय ॥ ४१ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे तात युद्धमें दूसरों के हाथ से श्वेत सेनापति के मरनेपर
 पांचालों ने पाडवों के साथ क्या किया, हे सजय युद्धमें गिराये हुए सेनापति श्वेत
 को और उसके लिये उपाय करनेवाले वा अहंकार करनेवाले दूसरों कोभी विजय
 करनेके बचनों को सुनकर मेरा चित्त मसन्न होता है और मानसी पापों कोभी
 विचारता हुआ मेरामन लज्जा युक्त नहीं होता है । ३ । हे सजय पाण्डव लोग
 विराट के घरमें जाके बड़े सुख पूर्वक रहये उस विराट के दोनों पुत्रों को युद्धमें
 मरवाडाला इससे उनको कुछ लज्जाभी आई या नहीं आई अब हमारे विचार को
 तुमसत्य सत्यसुनो कि अब महा अनर्थकामूल उत्पन्न हुआ कि इसी श्वेतकेमरने के
 हेतु पार्थ और भीमसेन महा क्रोधमें होकर अनेक वीरों को मारकर इस पृथ्वी को
 रुधिर से भरदेंगे देखो इस दुर्योधनको हमने गाधारी ने श्रीकृष्णजी ने और कृपा
 चार्ज्य भीष्मजी द्रोण, राम, विदुर, व्यास इत्यादि अनेक गुरुदृष्टमित्रों ने समझाया

CHAPTER XIX

' What did the Panchals and the Pandavas do ' asked Dhritrashtra of Sanjaya ' when Shwet the commander of the armies was slain ? I like to hear of the fall of Shwet of his allies and his proud conquerors. I am not ashamed of my own mental sins. 3 How were the Pandavas, who had once taken refuge in the house of King Virat, affected by the death of his two sons within their very sight. Methinks truly we have exposed ourselves to greater danger, for enraged at the death of Shwet Arjun and Bhishm will fill the earth with blood. I myself, as well as Gandhari, Shri Krishna, Kripacharya, Bhishm,

नमोमोताजुनश्चैव नयमौपुष्यपमौ । धार्यमाणो मयानित्यं गांधार्याविदुरेणच ॥१०॥
 जामदग्नयेन रामेण व्यासेनच महात्मना । दुर्योधनोयुध्यमानो नित्यमवाहसंजय
 ॥ ११ ॥ कर्णस्य मतमास्थाय सौवलयस्यच पापकृत् । दुःशासनस्यच तथा पांडवाभ्रान्य
 चिंतयत् ॥ १२ ॥ तद्व्याहं व्यसन धोरं मन्येप्राप्तंतु सजय । श्वेतस्य च धिना
 शेन भीष्मस्य विजयेनच ॥ १३ ॥ संकुडः कृष्णसहितः पार्थः किमकरोत्पाप ।
 अर्जुनाच्च भयंभूयस्तन्मे तातनशम्यति ॥ १४ ॥ सहि शूरश्च कौंतेयः क्षिप्रकारीच
 नंजयः । मन्येशरैः शरीराणि शत्रूणांप्रमथिष्यति ॥ १५ ॥ ऐन्द्रिमिद्रानुज समं-
 हेंद्र शक्यं बले । अमोघ क्रोध सकल्पं दृष्ट्वावः किमभून्मनः ॥ १६ ॥ तथैव चेद्
 विच्छूरो ज्वलनाकंसमद्यतिः । इन्द्रस्त्वावदमेयात्मा प्रपतन्सामितिंजयः ॥ १७ ॥ यत्र

पान्तु इस निर्बुद्धिने किसीकाभीकहना नहींमाना औरसंशर्पांडवों केभी मनमें परस्पर
 स्नेह रखने कीही इच्छाथी तौभी दुर्योधन ने हठकरके इससंश्रामको रचा देखिये
 अब ईश्वर क्या करता है हे संजय वह पापकर्मी दुर्योधन कर्ण और शकुनि के मन
 में नियत होकर दुःशासन का साथी बनके पांडवों की निन्दा करने लगा । १२ ।
 मैं उसका फल उसके घोर दुःखका होना अवश्य वर्चमान देखताहूं श्वेत के नाश
 होने से महा क्रोध रूप होकर अर्जुनने भीष्मजी के विजय करनेके हेतु श्रीकृष्णजी
 से क्या विचार किया अर्जुनही से पुष्पको बड़ा भयहै हे तात वह मेराभय दूरनहीं
 होताहै; वह संसारके सवपदार्थोंका विजय करने वाला कुन्ती का पुत्र अर्जुन अत्यन्त
 हस्तलाघव करनेवाला प्रतापी शूर है मैं निश्चय जानता हूं कि वह बाणों से शत्रुओं
 के शरीरों को मर्दन करेगा । १५ । उस इन्द्रके पुत्र और इन्द्रके छोटे भाईके बरा
 बर युद्धमें बिष्णु के समान क्रोध और संकल्प में सफल वाले अर्जुनको देखकर
 तुमसब लोगोंका कैसा चित्त होता है, वह शूरवीर वेदज्ञ और प्रतापमें सूर्य और
 अग्निके समान इन्द्रके अर्जुनों का ज्ञाता बड़ा बुद्धिमान् युद्धमें कुशल महा विजयी

ably, but Duryodhan would not consent to anything but war. Let us see how God disposes. This sinful Duryodhan, O Sanjaya, acted upon the advice of Karan, Shakuni and Dushasan and made enemies of the Pandavas. 12. I fore see that as a result of this he will come to grief. Arjun and Shree Krishna will put their heads together to devise some plan for killing Bhishm because he has killed Shwet. I am very much afraid of Arjun and cannot shake off this feeling. Kunti's son, Arjun the world conquerer is a warrior of great prowess and dexterity of hand. I believe he will pierce the bodies of his enemies with his sharp arrows. 15. How do all of you feel at the sight of Arjun the son of Indra and of equal prowess to Vishnu the younger brother of Indra. That brave man, scholar of the Vedas, glorious like the sun or Agni, skilful in using the weapons of Indra, very

संस्पर्शरूपाणामस्त्राणांच प्रयोजकः । सखद्गाक्षेप इहस्तसु घोषं चक्रेमहारथाः ॥१८॥
 ससंजय महाप्राज्ञो द्वापदस्यात्मजोवली । धृष्टद्युम्नः किनकरोच्छ्रये ते युधि तिपातिते
 ॥ १९ ॥ पुराचैवापराधेन यथेनचचमूर्धतेः । मन्व्यमनः प्रजञ्चाल पांडवानां ह्यात्मनाम्
 ॥ २० ॥ तेषां क्रोधं चिंतमंस्तु शङ्खसुचानिशासुच । नशांति मधिगच्छामिदुयो
 घनकृतेनहि । कथंवाभून्महायुद्धं सर्वमाचक्ष्व संजय ॥ २१ ॥ संजय उवाच ।
 गृणुराजन् स्थिरोभूत्वा तवापनयनो महान् । नखदुर्योधने दोषं निममाधातुमर्हसि
 ॥ २२ ॥ गतोदकेसेतुघ्नो या दत्तादृङ्मतिस्तव । संदंसेमघनेयद्भूकूपस्यजननं
 तथा ॥ २३ ॥ गतपूर्वाङ्घ्रण भूयिष्ठे तस्मिन्नहनि दारुणेः । तावकानां परेषांच पुनर्बुद्ध
 मवर्तत ॥ २४ ॥ श्वेतैस्तु निहतैर्दृष्ट्वा विराटस्यचमूर्धति । कृतवर्मानांच सहितैर्दृष्ट्वा

बुद्ध करने को उपास्थित, जो वह कुन्तीका पुत्र महारथी वज्रके समान स्पर्श वाला
 अनेकरूप वा अस्त्रोंको शत्रुओं के ऊपर चलाने वाला है, हे संजय उसदुपद के
 पुत्र बड़े ज्ञानी बलवान्, धृष्टद्युम्न ने युद्धमें श्वेतके मरनेपर क्या किया, पूर्व समय
 के अपराधों से और श्वेतके मारेजाने से मैं मानताहूँ कि महात्मा पांडवों का
 हृदयक्रोध से अग्निरूप होगया । २० । मैं रात्रिदिन उनके क्रोधों को शोचता
 हुआ दुर्योधनके कारण शान्ती को नहीं पाताहूँ, इसके सिवाय यह बड़ाभारी युद्ध
 कैसे हुआ हे संजय उस सबको मुझ से कहो । २१ । संजय वाले हेराजा स्थिर चित्त
 होकर मुनो कि इसमें आपकाही बड़ा भारी अन्याय है-यहदोष आप को दुर्योधन
 में लगाना योग्य नहीं है जैसे विना जलके नदी में पुल और अग्निसे जलते हुए
 घरमें पानी के निमित्त कुएंका खोदना निरर्थक है, उसी प्रकारकी आपकी बुद्धि
 है, हे भरतवंशी दिन के तीसरे भाग में भीष्मजी के हाथ से श्वेत सेनापति
 के मरजाने पर, कृतवर्मा के साथ शल्य को नियत देखकर शत्रुकी सेनाको
 मारने वाला युद्ध में विजयरूपी कीर्ति वाला विराटका पुत्र शंखनाम शीघ्रही ऐसा

wise in battle, conquerer of wars, ready to fight, hard to touch like vajra, uses different sorts of weapons. What did brave and wise Dhrishtadyumna, the son of Drupad, do at the death of Shwet! With the former wrongs and the death of Shwet, I believe that the Pandavas must be enraged like fire. I donot find peace of mind and constantly fear for Duryodhan. Tell me how this great war is going on, San-Jaya!" 21 "Hear me, king, attentively," said Sanjaya, "the main fault lies in you. It is useless to attribute it to Duryodhan, for your wisdom is as vain as a bridge over a waterless place or digging a well when a house is on fire. In the third quarter of the day, when Shwet the commander had been slain by Bhishm, seeing Shalya stationed with Kaitvarma, Shinkh the son of Virat, destroyer of foes and conquerer in battle, was enraged like blazing fire when libation is poured

शल्यमवस्थितम् ॥ २५ ॥ शंख क्रोधात्प्रजज्वाल हविषाहव्यघाटिव । रुचिरा
 यमहचार्यं शक्रचापोपमत्वा ॥ २६ ॥ अभ्यघावस्त्रिघासर्गं शल्यमद्राधिपयुधि ।
 महतारवसेधेन समंतात् परिपुञ्जित ॥ २७ ॥ वृजन्वाण मय वर्षं प्रायाच्छ-
 वरथ प्राति । तन्मापततसंरिह्य मत्तवारण विक्रमम् ॥ २८ ॥ तावकानारथा सप्तसम
 तात्पर्यवारयन् । मद्राज परीक्षितो मृत्योर्दंष्ट्रांतरगतम् ॥ २९ ॥ वृहद्वलश्चकांस
 व्योजयत्सेनश्च मागध । तथावधमरधोर जन्पुत्र शल्यस्यमानित ॥ ३० ॥ विद्वान्
 विदाघावर्था कांवाोजश्च सुदाहण । वृहत्क्षत्रस्यदाय द सैवयश्च जयद्रथ ॥ ३१ ॥

क्रोधरूप होगया जैसे कि हव्य से अग्निकी प्रचण्डता होती है वह वसवान् शंख
 इन्द्रधनुष के समान बड़े धनुष को टंकारकर मद्रदेश के राजा के मारने की इच्छा
 से चारों ओरको बड़े रथों से रक्षित होकर सम्मुख दौड़ा । २७ । आरं बड़े वाणों
 की वर्षा करता हुआ शल्य के रथके समीप आया उस मनवाले शयी के समान
 पराक्रमी शखको आताहुआ टेसकर मृत्युके मुख में फंसे हुए राजा मद्रकी रक्षाकरने
 के लिये तुम्हारे पुत्रों के साथ इन रथियों ने उमको चारों ओर से रोका कौशल
 वृहद्वल जयत्सेन मागध उसी प्रकार शल्यका पुत्र स्वमरथ वि द अनुविन्द और
 आवन्तिका के राजालोग सुदाहण कांवाज वृहद्वलका पुत्र जयद्रथ सिंधुका राजा
 इन सब लोगों के धनुष नानाप्रकारकी धातुओं से जटित ऐसे दृष्टि पडे जैसे कि
 बादलों में बिजली दिखाई देती है, उन वीरों ने वाणरूप वर्षा शंख के मस्तक पर
 ऐसी की जैसे कि वर्षामृतु में वायु से प्रकट बादल आकाशी जलको बरसाते है,
 इसके पीछे बडा धनुषधारी सेनापति शंख महाक्रोधित होकर उन लोगों के धनुषों
 को अपने सातभन्नों से काटकर महा ज्वनि से गर्जा, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी
 वादल के समान गर्जते तालटल के समान धनुष को लेकर उसयुद्ध में शख के
 सम्मुख दौड़े, उस बड़े धनुषधारी महावली को उदयरूप देखकर पांडवों की सेना

over it, and twanging his bow which was like that of Indra, he
 rushed upon Shalya, accompanied with many charioteers, in order
 to kill him 21 He approached the chariot of Shalya, showering
 arrows Seeing Shankh coming like a mad elephant and desiring to
 rescue Shalya from the jaws of death, your sons checked his advance
 with the assistance of Kosal, Vrihadval, Jayatsen, Magadh, Rukm
 rath the son of Shalya, Vinu, Anuvind, the princes of Avanti,
 Sudakshin, Camboj, Jayadrath the son of Vrihadrastra and the king
 of Sindh The bows of all these warriors, decked with various
 metals, looked like lightning in the midst of clouds They showered
 their arrows over the head of Shankh Then the archer Shankh, the
 commander of armies, cutting the bows of all those warriors with
 seven of his darts, roared a loud roar Then Bhishm of great arms,

रथासूर्णं सुत्पतंतिपतत्रिणः । यैंतरिक्षं भूमिश्च सर्वतः समचस्तृता ॥ ४१ ॥
 पञ्चालानथ महस्यांश्च केकयांश्चप्रभद्रकान् । भीष्मः प्रहरतांश्रेष्ठः पानयानासपत्रिभिः
 ॥ ४२ ॥ उत्सृज्यसमरे राजन् पांडवंसस्य सपुत्रनम् । अश्रयद्रथतर्पाचाल्यं द्रुपदमेत
 यावृत्तम् ॥ ४३ ॥ प्रियंसंबंविन राजन् शरानयाकरन्बहुन । अग्निनेचप्रदग्धानियना
 निशि शरात्सये ॥ ४४ ॥ शरदग्धान्यदृश्यत सैन्यात्तद्रुपदस्यह । अयत्तिष्ठद्रुणेभीमांवि
 धुमइवपाचकः ॥ ४५ ॥ मध्यांश्चने यथा दित्यं तपतमिवतेजसा । नशोकपाण्डवेपस्य
 योधाभीभानरीक्षितुम् ॥ ४६ ॥ वीक्षांचक्रुः समंतात्तेपांडवाभयपीडिताः । आतारंता
 ध्यगच्छंतगावःशतादितांश्च ॥ ४७ ॥ सातुयौधेष्ठरोसेना गांगेयशरपीडिता ।
 सिंहेनेवविनिर्मिन्नानुक्लागपूरिचगोपतेः ॥ ४८ ॥ हतोचप्रदुतेसैन्ये निरुत्साहेविमर्दिता ।
 हाहाकारोमहानासीत् पांडुसैन्येषुभारत ॥ ४९ ॥ ततोभीष्मःशांतनवो नित्यमंडल
 कामुकः । सुमोचयाणान् दीप्ताप्रानहीनाशीचपानिव ॥ ५० ॥ शरैरेकायनीकुर्वन् दिशः
 सर्वायतप्रतः । जघानपांडवरथानादिदयाददयभारत ॥ ५१ ॥ ततःसैन्येषु मग्नेषु

की सेना बाणों से भरमहुई दृष्टपड़ी और भीष्मजी अंगिनके समान दिखाई दिये,
 जैसेकि मध्याह्नके समय संतप्त करनेवाले महापंचरद सूर्य के देखने को लोग अस
 मर्थ होते हैं उसी प्रकार पांडवों के युद्ध में भीष्मजी के देखने को कोई समर्थ नहीं
 हुआ । ४६ । पांडव लोगों की सेना भयसे पीड़ित होकर चारों ओर को अपना
 कोई रत्नक ऐसे नहीं देखती थी जैसेकि जाड़े से दुःखी गौएं अपना कहीं रत्नक
 नहीं देखती, हे राजा फिर वह युधिष्ठिरकी सेना भीष्मजी के बाणों से ऐसी पीड़ा
 मान हुई जैसेकि सिंहसे भयभीत हुई श्वेत गौएं, हे भरतवंशी सेना के मरने भागजाने
 सहस्र छोड़ने और मर्दन होनेपर पांडवों की सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, फिर
 सदैव मण्डलरूपी धनुषधारी भीष्मजी ने विषमें बुझेहुये सर्प के समान तीक्ष्णबाणों
 को छोड़कर अपने बाणों से सब ओरकी सफाई करके राथियों को तिष्ठतिष्ठ शब्द
 करके मारा, जब सेनाके इधर उधर भागने और मर्दन होने वा सूर्यके अस्त होनेपर

dearly loved brother-in-law Drupad as fire does in a dry wood in summer. Drupad's army seemed consumed by the arrows of Bhishma who looked like fire. No warrior of the Pandavas could look Bhishma in the face like the nooday sun. 46. The army of the Pandavas, shaking with fear, could find no one to protect them on all sides and was distressed like cows in winter. The army of Yudhis'hir was so distressed by Bhishma's arrows as cows are by a lion. With the death, flight, terror and destruction in the Pandav army there arose a terrible cry of distress. Bhishma, circling his bow and discharging his arrows like poisonous serpents, destroyed many warriors, saying 'stay, stay!' At the set of sun nothing was discernible except des-

नानाधातु विचित्राणि कामुपाणि महात्मनाम् । विष्कारिनाभ्य हृदयततोयदेविषावि-
 पुत ॥ ३२ ॥ तेतुषाणमरं चरं शंखम् निःशपातयन् । निदाघातं जलोद्गतामघा-
 ह्यनगेजलम् ॥ ३३ ॥ ततःकुड्रोमहेःबासः सप्तमैः सुनेजनैः । धनुर्पितेयं माच्छि-
 चननर्पूगनापातः ॥ ३४ ॥ ततोभीमोमह बाहुर्विनयजलदेयया । तालैःमात्रधनुर्गु-
 ष्यशप्यमभ्यद्रवद्रणे ॥ ३५ ॥ तनुद्यंत मुदीक्ष्याधमहेःघातं मह पलम् । सत्रस्तापां-
 ङवीसेनाघातधेगहतेवनौ ॥ ३६ ॥ ततार्जुन सखात्तः शंखक्षणासातपुरःसरः ।
 भीष्माद्रक्ष्योऽयमघेति ततोयुद्धमवर्तत ॥ ३७ ॥ हाहाकारोमहानासीद्योधानांयुधिषु-
 ष्यताम् । तेजस्तेज सिस्रपृक्तं मरयेवं । यस्मयययु ॥ ३८ ॥ अघशःयोगदापाण-
 रथतीर्यमहारथात् । शंखस्य चतुरावाहानहनद्भरतपम ॥ ३९ ॥ सहताभ्याद्रथात्पूर्-
 णरह्मगादाय विदुतः । योभरसोश्चरथं प्राप्यपुनः शांतिमविदत ॥ ४० ॥ ततोभीष्म

ऐसी भयभीत हुई जैसेकि वायु के वेग से टक्कर खाई हुई नौका डामा डोल होती है,
 उस युद्ध में अर्जुन भी यह शोचकर शंख के आगे चलने वाला हुआ कि अब यह
 भीष्मजी से रक्षा करने के योग्य है युद्ध में लड़ने वाले युद्धकर्त्ताओं का बड़ा
 हाहाकार हुआ । ३८ । तदनन्तर गदाधारी शल्य ने बड़े रथसे उतरकर शंखके
 चारों घोड़ोंको मारा वह भृत्क घोड़ों के रथ से शीघ्रही उतरकर खड्ग लेकर दौड़ा
 और अर्जुन के रथको पाकर फिर शान्त होगया इसके अनन्तर भीष्मजी के रथसे
 शीघ्रही बाण ऐसे उछलनेलगे जिनसे पृथ्वी और आकाश व्याप्त होगये । ४१ ।
 प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने बाणों से पांचाल, मत्स्य, केरल और मभद्रक
 नाम अनेक वीरों को गिराया । ४२ । हे राजा भीष्मजी युद्ध में अर्जुन को छोड़कर
 सेना समेत बहुत बाणों को फेंकतेहुए अपने प्यारे-समधी द्रुपद के सम्मुख ऐसे
 दौड़े जैसेकि चैत्र वैशाख के महीने में वनका जलाने वाला अग्नि दौड़ता है द्रुपद

thundering like clouds, rushed upon Shangk with his bow like the
 palm tree Seeing the great archer come forth, the Pandava army
 shook with fear like a boat in a storm of wind. Arjun came between
 Shankh and Bhishm to protect the former from the latter, and the
 warriors shouted loudly 38. Then Shalya the Learner of mace,
 coming down from his huge chariot, killed the four horses of Shankh's
 chariot Shankh jumped, sword in hand, from his horseless chariot
 and found shelter in Arjun's chariot. Then there came out a shower
 of arrows from the chariot of Bhishm, covering the heaven and earth
 41. Bhishm the best of warriors killed with his arrows many a
 warlike man of Panchal, Matsya, Keral and Prabhadrak armies. 42.
 Bhishm, accompanied by his army, left Arjun and rushed upon his

रथात्तूर्णं सुत्पतंतिगतत्रिणः । यैरंतरिक्षं भूमिश्च सर्वतः समवस्तुना ॥ ४१ ॥
 पंचालानथ मरुत्पांश्च केकयांश्चप्रभद्रकान् । भीष्मः प्रहरतांश्रेष्ठः पानयामासपत्रिभिः
 ॥ ४२ ॥ उत्सृज्यसमरे राजन् पांडवंसस्य सगुचनम् । अत्रयद्रवतपांचाल्यं द्रुपदसेन
 पावृतम् ॥ ४३ ॥ प्रियसंबंविनं राजन् शरानयाकरन्वहूत । अग्निनेचप्रदग्धानिवना
 निशि शरात्सये ॥ ४४ ॥ शरदग्धान्यदृश्यंत सैन्याानद्रुपदस्यह । अत्यतिद्रुपणेभीमांवि
 घ्नमइयपाचकः ॥ ४५ ॥ मध्याह्ने यथा दित्यं तपतमिवतेजसा । नशेकु पाण्डवेषस्य
 योधाभीमानरिक्षितुम् ॥ ४६ ॥ यीक्षांचक्रुः समंतात्तेपांडवाभयपीडिताः । आतारंता
 ध्वगच्छंतगायःशतादिताइव ॥ ४७ ॥ सातुयौघेष्टरीसेना गांगेयशरपीडिता ।
 सिंहेनेचविनिभिन्नाशुपलागारिचगोपतेः ॥ ४८ ॥ हतोचप्रदुतेसैन्ये निरुत्साहेचिमर्दिते ।
 हाहाकारोमहानासीत् पांडुसैन्येषुभारत ॥ ४९ ॥ ततोभीष्मःशान्तनवो नित्यमंडल
 कामुकः । सुमोचयाणान् दीप्ताग्रानहीनाशीविषानिव ॥ ५० ॥ शरैरकायनीकुर्वन् दिशः
 सर्वायतमतः । जघानपांडवस्थानादिदशाददयभारत ॥ ५१ ॥ ततःसैन्येषु मग्नेषु

की सेना बाणों से भरमहुई दृष्टपड़ी और भीष्मजी अग्निके समान दिखाई दिये,
 जैसेकि मध्याह्नके समय संतप्त करनेवाले महाभचराद सूर्य के देखने को लोग अस
 मर्थ होते हैं उसी प्रकार पांडवों के युद्ध में भीष्मजी के देखने को कोई समर्थ नहीं
 हुआ । ४६ । पांडव लोगों की सेना भयसे पीड़ित होकर चारों ओर को अपना
 कोई रक्षक ऐसे नहीं देखती थी जैसेकि जाड़े से दुःखी गौएं अपना कहीं रक्षक
 नहीं देखती, हे राजा फिर वह युधिष्ठिरकी सेना भीष्मजी के बाणों से ऐसी पीड़ा
 मान हुई जैसेकि सिंहसे भयभीत हुई झवेत गौएं, हे भरतवंशी सेना के मरने भागजाने
 सहस्र जोड़ने और मर्दन होनेपर पांडवों की सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, फिर
 सदैव मण्डलरूपी धनुषधारी भीष्मजी ने विषमें बुझेहुये सर्प के समान तक्षिणवाणों
 को छोड़कर अपने बाणों से सब ओरकी सफाई करके राथियों को तिष्ठतिष्ठ शब्द
 करके मारा, जब सेनाके इधर उधर भागने और मर्दन होने वा मूर्यके अस्त होनेपर

dearly loved brother-in-law Drupad as fire does in a dry wood in
 summer. Drupad's army seemed consumed by the arrows of Bhishma
 who looked like fire. No warrior of the Pandavas could look Bhishma
 in the face like the noonday sun. 46. The army of the Pandavas,
 shaking with fear, could find no one to protect them on all sides and
 was distressed like cows in winter. The army of Yudhis'hira was
 so distressed by Bhishma's arrows as cows are by a lion. With the
 death, flight, terror and destruction in the Pandav army there arose
 a terrible cry of distress. Bhishma, circling his bow and discharging
 his arrows like poisonous serpents, destroyed many warriors, saying
 'stay, stay!' At the set of sun nothing was discernible except des-

मघितेपुत्र सर्वशः । प्राप्तेचास्त दिनकरेतेप्राहायताकिंचन ॥ ५२ ॥ भीष्मचसमुदीर्य
त दृष्ट्वा पार्थाहाह्वे । अवहारममुर्धत सैन्यानांभरतर्षभ ॥ ५३ ॥ ॐ ॐ ॐ

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवपर्वणि शङ्खयुद्धे प्रथमदिवसःबहारे

एकौनचत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४२ ॥

सजय उवाच । कृतेऽवहारेसैन्यानां प्रथमभरतर्षभ । भीष्मेचपुद्गसंरब्धेदृष्टुया
पेनेतथा ॥ १ ॥ धर्मराजस्ततस्तूर्णमाभिगम्य जनार्दनम् : प्रातृभिःसाहृत सर्वं सर्वं
क्षेत्रं जनेश्वरैः ॥ २ ॥ श्रुत्वापरमयायुर्काक्षितयानः पराजयम् । वाष्णोयमग्रचन्द्राजनुदृष्ट्वा
भीष्मस्य विक्रमम् ॥ ३ ॥ कृष्ण पश्य महेष्वासं भीष्मं भीमपराक्रमम् । शङ्खे
हंतसैन्यं मे भीष्मेकक्षमिवानलम् ॥ ४ ॥ कथमेन महीत्मानं शश्यामः प्रतिधील
सुम् । ले ललमानं सैन्यं मे हायमन्ते मिचानलम् ॥ ५ ॥ एतं हि पुरुषध्याग्र धनुमन्तं
मह यलम् । दृष्ट्वा विपद्रुतं सैन्यं समरे मर्गणाहतम् ॥ ६ ॥ शत्रयो जेतंयमः
कुल नहीं जाना गया तवतो पांडवों ने उस महायुद्ध में भीष्मजीको आग्नि वरसाता
हुआ देखकर सेनाका विश्राम किया ५३ ॥

अध्याय ॥ ५० ॥

• सजय बोले हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ उस प्रथम दिन में सेना के यनुष्यों के
विश्राम करने और युद्ध में भीष्मजी के क्रोध रूप होने अथवा दुर्योधन के मसन्न
होने पर, धर्मराज ने सब भाइयों और राजाओं सभेत जनार्दनजी के पास जाकर
बड़े शोक युक्त होकर अपनी परजय को शीघ्र भीष्मजी के पराक्रमको देख कर
श्रीकृष्णजी से कहा । ३ । कि हे श्रीकृष्णजी इमबड़े धनुषधारी भयानक पराक्रमी
भीष्मजी को देखिये कि यह वाष्णों के मारे मेरी सेना को ऐसे भस्म किये डालते हैं
जैसे कि ऊष्मऋतु में अग्नि वन और वन की मूखी घास को, हव्य भोजन करने
वाले अग्नि के समान मेरी सेना को चाटने वाले इम महात्मा की ओर देखने को
भी हम कैसे समर्थ होसके हैं, इसी धनुषधारी महाबली पुरुषोत्तम को देखकर
वाष्णों से महाव्याकुल हमारी सब सेना इधर उधर को भाग गई, युद्धमें क्रोधाग्नि

struction all round the Pandavas still seeing Bhishma showering
his fiery arrows, ordered their armies to retire. 49.

CHAPTER L

Sujaya continued, "After the retreat of his army from before
the enraged Bhishma and cheerful Duryodhan, Yudhishtira the just
went with his brothers and kings to Janardan, and fearing defeat
by the prowess of Bhishma, he said to Krishna, "Look at that dreadful
archer Bhishma. With his arrows he continues my army as fire does
a dry forest in summer. How can we face that great man who con-
sumes our armies as fire does the libations. Our soldiers run away
at the sight of that great warrior. We may conquer angry Yamraj.

कृदोवज्रपाणिश्चसंयुगे । वरुणःपाशभृद्वापि कुबेरोवागदाघरः ॥ ७ ॥ ननुभीष्मो
 महातेजाः शक्योजेतुमहाबलः । सोहमेधंगतेमग्नो भीष्मागाधजलेऽसुखे ॥ ८ ॥ आत्मनो
 बुद्धिर्दौर्बल्याद्भीष्मासाद्यकेशव । वनयास्यामि घाष्ण्यश्रेयोमे तत्रजीवितुम् ॥ ९ ॥
 नवतान्पृथिवीं पालान् दातुंभीष्मायमृत्यवे । क्षपायिष्यतिसेनांमे कृष्णभीष्मोमहास्त्र
 वित् ॥ १० ॥ यथाऽनलंप्रज्वलितंपतंगा समभिदुताः । विनाशायोपगच्छन्ति तेषामे
 सैनिकोजनः ॥ ११ ॥ ह्यनंतोश्मिघाष्ण्य राज्यहेतो पराक्रमी । आतरश्चैवमेधोराः
 कश्चिता शरपीडिताः ॥ १२ ॥ मत्कृतेभ्रातृहार्दिनराज्याद्भ्रष्टास्तथा सुखात् । जीवितं
 बहुमग्येहर्जिवितं ह्यद्यदुर्लभम् ॥ १३ ॥ जीवितस्यच शेषेण तपस्तपस्यामि दुष्करम् ।
 नघातयिष्यामि रमे मितानीमतिकेशव ॥ १४ ॥ रघान् मे बहुसाहस्रान् दिव्यैरक्षै

रूप यमराज वा वज्रधारी इन्द्र वा पाशधारी वरुण वा गदाधारी कुबेरको भी चाहें
 विजय करना संभव है परन्तु महाबाहु अति पराक्रमी भीष्मजी को विजय करना
 असंभव है । ७ । सो मैं ऐसी दशा में भीष्मरूपी अयाह जलमें विना नौका के
 डूबा जाता हूं, हे श्रीकृष्णजी मैं अपनी बुद्धिकी निर्बलतासे भीष्मजी के सम्मुख
 होकर वनको चला जाऊंगा अथवा हे वृष्णिवंशी मेरे जीवन में कल्याण नहीं है,
 परन्तु इन राजाओं को भीष्मरूपी मृत्यु के वश करने को मैं योग्य नहीं हूं, हे श्री
 कृष्णजी महाबली भीष्मजी मेरी सेनाको नाश करडालेंगे जैसे कि पतंग ज्वलित
 अग्निकी ओर दौड़ते हुए अपने नाशके निमित्त जाते हैं इसी प्रकार मेरी सेनाके
 मनुष्य भीष्मजी की ओर को जाने वाले हैं । ११ । राज के निमित्त मैं पराक्रम
 करने वाला नाश होता हूं और मेरे वीरभाई लोगभी घाणों से पीड़ित होकर महा
 दुर्वन्तंग हैं, वह मेरे कारण अथवा भाई विरादरी की शुभचिन्तकता के कारण अपने
 राज्य सुखों को त्यागने वालेहुए मैं जीवनको बहुत मानता हूं अब जीवनहोना कठिन
 मानूम होता है, शेष जीवन से तपस्या करूंगा हे केशवजी मैं युद्ध में इन मित्रों को

Indra the wielder of Vajra, Varun the beater of noose or Kuber the wielder of mace; but to conquer braver Bhishm is impossible. I am about to be drowned in the bottomless ocean of Bhishm for want of a boat. Being unable to withstand Bhishm, I shall go away to live in forest; for I see no good in living here, Krishna! I donot like to give up these kings to be slaughtered by Bhishm. The great warrior, Bhishm will destroy my army. My men run into the jaws of death by going before Bhishm, like insects falling into fire 11. I shall die fighting for the sake of kingdom and my brave brothers are getting weaker in body with the wounds of the arrows. They have forsaken all pleasure for my sake and for the good of the kinsmen. It appears that I shall lose the life which I hold so dear. I intend practising penance during the rest of my life and shall no long-

महाबलः । घातयत्यनिशं भूमिः प्रघराणांप्रहारेणाम् ॥ १५ ॥ किंनुरुवाहितमे-
 श्याद्ब्रूहि माघव माचिरम् । मध्यस्थ मिवपश्यामि समरे सभ्य सााचनम् ॥ १६ ॥
 एकोभीमः परंशक्त्या युध्यत्येव महाभुजः । केवलं वाहुशीर्षेण क्षत्रधर्ममनुष्मरन्
 ॥ १७ ॥ गदयावीर घातिन्याययोत्साहं महामनाः । करोत्यसुकर्म कर्म रथाश्वनरदं-
 तिषु ॥ १८ ॥ नालमेप क्षयंकर्तुं परसैन्यस्यमारिष । आर्जवेनैव युद्धेन वारवर्ष-
 शतैरपि ॥ १९ ॥ एकोऽस्त्रावत्सखातेऽयं सोप्यस्मान् समपेक्षते । निर्दह्यमानान्
 भीष्मेण द्रोणेनच महात्मना ॥ २० ॥ दिव्यान्यस्त्राणि भीष्मस्य द्रोणस्य च
 महात्मनः । घक्षयन्ति क्षत्रियान् सर्वान् प्रयुक्तानि पुनःपुनः ॥ २१ ॥ कृष्णभीष्मः
 सुस्तरुधः सहितः सर्वे पार्थिवैः । क्षपयिष्यातनोतुं यादृशोत्पपराक्रमः ॥ २२ ॥
 सत्वं पश्य महाभाग योगेश्वरमहारथम् । भीष्मयः शमयेत्संबधे दावामि जलदो

नहीं मरवाऊंगा, महाबली भीष्मजी अपने दिव्य अस्त्रों से मेरेहजारों उत्तम शूरवीर
 रथियों को बराबर मारते हैं । १५ । सो आप शीघ्रता से कृपाकरके बतलाइये कि
 कैसे मेरा कल्याणहो मैं इस युद्ध में अर्जुनकोभी उदासीनके समान देखता हूँ, यह
 महाबाहु अकेला भीमसेन क्षत्री धर्म को स्मरण करता केवल भुजा द्वारा बड़ी सा-
 मर्थ्य से लड़ता है, यह बड़ा साहसी अपने साहस के अनुसार वीरोंकी मारने वाली
 गदासे रथबोड़े हाथी और मनुष्यों के मध्य में कठिन कर्मको करता है, हे श्रेष्ठ वह
 वीर सत्ययुद्ध के द्वारा वर्षों भी शत्रुकी सेना के नाशकरने को समर्थ नहीं है, यह
 आपका एक मित्र (अर्जुन) अस्त्रों का जाननेवाला है वहभी महात्मा द्रोणाचार्य और
 भीष्मजी के हाथ से बराबर भस्मीभूतहोताहुआ देखकर हमलोगोंको कुछनहीं समझ-
 ता है । २० । महात्माभीष्मजी और द्रोणाचार्य के वारम्बार चलायेहुये दिव्यअस्त्र
 सब क्षत्रियोंको जलाते हैं, हे कृष्णजी निश्चयकर के क्रोधरूप भीष्मजी सब
 राजाओं समेत हमको मारेंगे ऐसा इनका पराक्रम है, हे योगेश्वर तुम उसमहाभाग
 महारथीकोदेखो और विचारो जो युद्धमें भीष्मजीको ऐसे शान्त करे जैसे बादल

or cause the destruction of my friend in battle. Brave Bhishm is
 killing thousands of my warriors with his celestial weapons. 15. Pray
 let me know without delay in what lies my welfare. This brave
 Bhimsen alone is firm on his duty and fights very diligently. He
 performs very hard task with his warrior destroying mace in the
 midst of chariots, elephants, horses and men; but by his own bravery
 alone he cannot, even in course of years, destroy all the armies of the
 enemy. Your friend Arjun alone knows how to use weapons, but
 he does not care in the least to save us from being destroyed by
 great Dronacharya and Bhishm. 20. The celestial weapons of Dro-
 nacharya and Bhishm burn all the warriors again and again; the
 enraged Bhishm will surely destroy us along with all the kings by
 his matchless prowess. You Lord of yeg! know the warrior who can

यथा ॥ २३ ॥ तवप्रसादाद्गोविन्द पांडवा निहतद्विषः । स्वराज्य मनुसंप्राप्तमो-
दिष्यन्ते सर्वांधवाः ॥ २४ ॥ एवमुक्त्वा ततः पार्थो ध्यायन्नास्ते भहामनाः । चिरमंतर्म
नाभूत्वा शांकोपहतचेतनः । शोकात्ततमपोष्णात्वा दुःखोपहतचेतसम् ॥ २५ ॥ अत्र
वीस्रवगोविन्दो हर्षयन् सर्व पांडवान् । माशुचोभरत श्रेष्ठ नत्वं शोचितुमर्हसि ॥२६॥
अस्यते आतरःशूराः सर्वलोकेषु घन्विनः । अहंचप्रियकृद्राजन् सात्यकिश्च महायशाः
॥ २७ ॥ विराटद्रुपदौचेमौ घृष्टद्युम्नश्च पार्यतः । तथैव सबलाश्रमे राजानो राज
सत्तम ॥ २८ ॥ त्वत्प्रसादं प्रतीक्षन्ते त्वद्भकाश्च विशांपते । एषते पार्यतो नित्यं हित
कामप्रियैरतः ॥ २९ ॥ सेनापत्य मनुपासो घृष्टद्युम्नो महाबलः । शिखंडीश्च
महादाहो भीष्मस्य निधनं किल ॥ ३० ॥ एतच्छ्रुत्वा ततो धर्मो घृष्टद्युम्नमहारयम् ।
अत्रवीत्सामितांतस्यां वासुदेवस्यशृण्वतः ॥ ३१ ॥ घृष्टद्युम्ननिवापेदेवत्वांचक्ष्यामि

दावानल अग्नि को, हे गोविन्दजी आपकी कृपासे पांडव शत्रुओंको नाशकर के
अपने राज्य से मिलेहुए बांधवों समेत आनन्द करेंगे, तदनन्तर बड़ा साहसी युधि-
ष्ठिर इस प्रकारकी बातें कहकर शोक से पीड़ित विच देरतक मनको हृदय में
नियत करके ध्यान करता हुआ बैठा । २५ । फिर गोविन्दजी पांडवों को दुःख
शोक से पीड़ित और उदास रूप देखकर सब पांडवों को मसन्न करते हुये यह
वचन बोले, हे भरतवंशियों में उत्तम तू शोच मतकर और तू शोच करनेके योग्य
नहीं है क्योंकि तेरेभाई तो महा शूवीर हैं और वह सब संसार में विख्यात हैं, हे
राजा धर्म में और महाधी सात्विकी विराट् रुपद और घृष्टद्युम्न आपके पनोरय
पूर्ण करनेवाले हैं, हे राजेन्द्र युधिष्ठिर इसी प्रकार सब राजा लोगभी अपनी २
सेना समेत तेरी मसन्नता कीही वाटदेखते हैं और आपके परमभक्त हैं । २९ ।
सदैव भल ई चाहनेवाले आपके प्यारे प्रीतिमान महाशयी घृष्टद्युम्न ने सेनाध्यक्षी के
अधिकारको पाया, निश्चयकरके यह महाबाहु शिखण्डी भीष्मका नाशकरनेवाला
हे राजा युधिष्ठिर यह कृष्णके वचन को सुनकर उसी सभा में वासुदेवजी के

subdue Bhishma in little as rain does the flames of a forest. By your
grace, Govind, the Pandavas can destroy their enemies and enjoy
their kingdom with their kinsmen." Having said this, Yudhishtir
of great prowess, distressed with grief, meditated a long while in
silence. 25. Seeing the Pandavas full of distress and sorrow, Govind
said, "Donot be grieved, best of the descendants of Bharat! Having
such brave brothers of world wide renown you need not be anxious
for your victory. You have, king, on your side Dharm, myself,
brave Satwiki, Virat, Drupad and Dhrishtadyumna. The other
kings, likewise, are solitous to please you, Prince Yudhishtir! 29.
Your ever well wisher and dear friend Dhrishtadyumna is the com-
mander of your armies! Surely, brave Shikhandi is the destroyer
of Bhishma!" Having heard these words of Shree Krishna, Yudhishtir

मारिष । नातिक्रम्यं भवेत्तच्च वचनं ममभाषितम् ॥ ३२ ॥ भवान्सेनापतिर्महं
वासुदेवेन संमितः । कार्तिकेयो यथा नित्यं देवानाम भवत्पुरा ॥ ३३ ॥ तथात्वम
पिपाद्वानां सेनानीः पुरुषर्षभ । सत्यंपुरुषशार्दूल विक्रम्य जाहे कौरवान् ॥ ३४ ॥
अहंच तेनुयास्यामि भीमः कृष्णश्चमारिष । माद्रांपुत्रौच साहती द्रौपदेयाश्चदंशिताः
॥ ३५ ॥ येचान्येपृथिवीपालाः प्रधानाः पुरुषर्षभ । ततउद्धर्षयन् सर्वान् धृष्टद्युम्नोभ्य
भाषत ॥ ३६ ॥ अहद्रोणांतकःपार्थं विहितः शंभुनापुरा । रणे भीष्मंरूप द्रोणं तथा
शल्यं जयद्रथम् ॥ ३७ ॥ सर्वानघरणे ह्यतान् प्रतियोत्स्यामि पार्थिव । अघोत्कुटं
महेन्नासैः पांडवैर्युद्धदुर्मदैः ॥ ३८ ॥ समुद्यनेपार्थिवेद्रे पापंतेशत्रुसूत्रने । तमग्रवी
त्ततःपार्थः पार्यत पृतनापतिम् ॥ ३९ ॥ व्यूहःक्रौंचारुणोनाम सर्वशत्रु निवर्हण ।

आगे धृष्टद्युम्न से बोला कि हे धृष्टद्युम्न जो मैं आपसे कहताहूँ उसको अच्छी रीति से समझो वह मेरा वचन उल्लंघन करने के योग्य नहीं है आप वासुदेवजी के विचार से मेरी सेना के सेनापतिहो, पूर्वसमय में जैसे कार्तिकेय देवताओं की सेना के सेनापति हुये इसी प्रकार से आप पांडवों के सेनापतिहो हे पुरुषोत्तम तुम अपने पराक्रमको करके कौरवों को पारो और बडभागी मैं व भीमसेन और श्रीकृष्णजी तैरेपीछे चलेंगे एक साथ दोनों नकुल और सहदेव और द्रौपदी के शत्रुघारी पुत्र और अन्य सब राजा लोगभी तुम्हारे साथ पीछे चलेंगे । ३६ । यह सुनकर धृष्टद्युम्न सबको प्रसन्नकरके बोला कि हे राजा पहले समय में शिवजीकी ओर से मैं द्रोणाचार्य के नाश करनेवाला नियत हुआ था इसी हेतु से हे राजा अब मैं इस युद्ध में भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, शल्य और जयद्रथ आदि सब अहंकारियों से अवश्य लड़ूंगा तदनन्तर शत्रुसंतानी धृष्टद्युम्न के अच्छी रीतिते सन्नद्ध होनेपर युद्ध में आकर महादुर्मद और धनुषधारी पांडवों ने उच्चस्वर से शब्द किया, फिर युधिष्ठिर ने सेनापति धृष्टद्युम्न से कहा कि सब शत्रुओं का नाश करनेवाला

thir said to Dhrishtadyumna in the midst of that assembly and in the presence of Vasudev — "Hear Dhrishtadyumna what I say to you and attend to it carefully without fail You are the commander-in-chief of my armies as Vasudev says:—You are the commander of the Pandavas, armies as Karlikeya was of those of gods. Kill the Kauravas with your prowess and I as well as Bhimsen and Krishna will follow you along with Nakul and Sahadev, the brave sons of Draupadi and other kings" 36 On hearing this, Dhrishtadyumna pleased the audience by the following reply — "I am born, O king," said he, "to destroy Drona by the order of Shiva, and therefore, I shall face Bhishma, Drona, Kripa, Shalya, Jagadrath and other proud warriors in the field of battle." When Dhrishtadyumna had made his preparations, he stood in the field of battle and the brave Pandavas raised a loud war cry. And Yudhishtir thus addressed

यद्वृहस्पतिरिन्द्रायतदा देवासुरेभ्योत् ॥ ४० ॥ तयवावत्प्रतिव्यूहं परानीकविनाशनम् ।
 अदृष्टपूर्वराजानः पद्भ्यस्तुकरुभिः सह ॥ ४१ ॥ यथोक्तः सन्देहेन विष्णुवज्रभृता
 यथा । प्रभाते सर्वे सैन्यानामग्रे चक्रे घनंजयम् ॥ ४२ ॥ आदित्यपथगःकेतुस्तस्या
 द्युत्तमनोरमः । शासनात्पुरुहूतस्यानर्मितो विश्वकर्मेणा ॥ ४३ ॥ इंद्रायुधसवर्णाभिः
 पताकामिरलंकृतः । आकाशगद्वाकाशे गंधर्व नगरोपम ॥ ४४ ॥ नृत्यमानद्वाभा
 तिरपचर्यासुमारिष । तेनरत्न वतापार्थः सचर्मांडीव घन्वना ॥ ४५ ॥ वभूधपरमो
 पेतः सुमेरु रिष भानुजा । शिरोभृदुद्रुपदो राजा महत्या सैनया वृतः ॥ ४६ ॥ कुति
 मोजध वैद्यश्च चक्षुभ्यर्ताजनेश्वरौ । दाशार्णकः प्रभद्राश्च दाशरकगणैः सह ॥ ४७ ॥
 अनूपकाः किराताश्च ग्रीवायां भरतर्षभ । पृथ्वीश्च पौंड्रैश्च राजन् पौरवर्कस्तथा ॥ ४८ ॥

क्रौंचारुण नाम व्यूह जिसको देव दानवों के युद्धमें दृष्टरपाति जीने देवेन्द्र से कहा
 था उसी शत्रुहन्ता व्यूहको आप विधि के अनुसार रचो । ४१ । उस अपूर्व व्यूहको
 राजाओं समेत कौरव लोग देखें धृष्टद्युम्न से राजा धर्मराज ने इस प्रकार से यह
 वचन कहा जैसे कि वज्रधारी इन्द्रने विष्णुजी से कहाया, प्रातःकाल के होतेही
 सब सेना के आगे अर्जुनको किया उससमय प्रकाशित और मनको प्रसन्न करने
 वाली अपूर्व ध्वजा सूर्य के मार्ग में वर्तमान थी उस ध्वजा को इन्द्रकी आज्ञा
 से विश्वकर्मा ने बनाया इन्द्र वजूके समान पताकाओं से अलंकृत, आकाश
 में गन्धर्व नगर के समान नियत थी हे राजा वह ध्वजा रथके भ्रमण करने
 में नाचती हुई प्रकाशमान थी । ४५ । और वह युधिष्ठिर उस रत्नवान गांडीव
 धनुषधारी श्रेष्ठ पुरुषके कारण ऐसा शोभित हुआ जैसे कि सुमेरु पर्वत
 सूर्य से सुशोभित होता है हे राजा बड़ी सेना संभूक्त राजा द्रुपद तो क्षिर
 हुआ और कुन्तिभोज और चन्देल राजा आँखें हुये हे भरतर्षभ प्रभद्रक शार्नक
 और अशीरक नाम समूहों के साथ अनूपक किरात ग्रीवा में वर्तमान हुआ । ४८ ।

Dhrishtadyumna the commander in chief:—"Array the armies in the Krauncharun array, explained to Indra by Vriharpati in the war of the gods and danavas. 41. Let the Kaurava princes see the matchless array." These words were addressed to Dhrishtadyumna by Yudhishtir as they were done by Indra to Vishnu. Early in the morning Arjun led the army. The bright banner, cheering the heart, shone like the sun. It was made by Vishwakarma by Indra's order. It was decked with banners like Indra's vajra and stood in air like the city of Gaudharvas. It danced with the advance of chariots 45. Yudhishtir, in company with the best of men the bearer of Gandiv bow decked with jewels, looked glorious like Sumera with the sun shining upon. Of that array king Drupad with his army became the head; kings Kuntibhaj and Chandel were the eyes; Anupad the Kirat with the Parbhadraks, the Sharnaks and the Ashiraks stood

निपादं सहितथापि पृष्ठमासीद्युधिष्ठिर । पत्नीतुर्ममसेनश्च धृष्टद्युम्नश्चपर्यत ॥४९॥
 द्रौपदेयामभम-युञ्ज सात्यकिश्च महारथ । पिशाचद् रदाश्चैव पुत्रा कुडीविपै सह ॥५०॥
 मारुता घेनक्राश्चैव तगणा परतगणा । वालिकास्तत्तिराश्चैव चोला पाड्याश्च
 म रत ॥ ५१ ॥ पतजनपदारोजन् दक्षिण पक्षमाश्रिता । आभिवश्यास्तु हुडाश्चमाल
 घादानमारय ॥ ५२ ॥ दारराजभसाश्चैव घासाश्च सहनाकुलै । नकुल सहदेवय
 वामपक्षसमाश्रिता ॥ ५३ ॥ स्थानामयुत पत्नी शिरस्तु नियुततथा । पृष्ठमबुदमेवासीत्
 सहस्राणिच विशति ॥ ५४ ॥ ग्रीवाया नियुतचाप सहस्राणि च सप्तति । पक्ष
 कटिप्रपक्षेषु पक्षातपुत्र घाटना ॥ ५५ ॥ जग्मु पावृता राजश्चलत इवपर्वता ।
 जघन पालयामास चिराट सहक्रेकयै ॥ ५६ ॥ काशिराजश्च शैभ्यव स्थानामयुतै

और राजा युधिष्ठिर पटश्चर पौंडर और निपादों के साथ उसकीपीठ हुआ
 और भीमसेन, पर्यत का पौत्र धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र व अभिमन्यु औरमहारथी
 सातिवही पत्तवने, और कुडी व ऋषियों समेत पिशाच दारद पौंड्र यवन, धेनुक
 तगण परतगण वाल्हीक तिचिर चोल पाण्ड्य इन देशोंके निवासी दक्षिणपक्ष में
 नियत हुए, अग्निवेश्य गजनुण्ड मलद आशकारव शवर कुम्भस मालुकोंसमेत वस्त
 नकुल सहदेव यह सवयार्ये पक्ष में नियत हुए एक अर्बुद रथ पक्षमें रह और इसी
 प्रकार रथोंका एक नियुत शिर हुआ और एक अर्बुद और वीसहजारकी पृष्ठहुई
 और सत्तरहजार ग्रीवामें हुये । ५४ । हे राजा ऐसे पत्नी रूपी व्यहके आगे वा
 पक्ष और पूंछके स्थानों पर चलनेशाले पर्वतोंके समान चारों ओरसे रक्षाकरते हुए
 हाथी चले, राजा विराट न केकय लोगोंके साथ और काशिराज शैवीने तीनअयुत
 रथोंके साथ जघन स्थानकी रक्षा करी हे राजा वह सब पाडव इसप्रकार से इस

in the place of neck 48 King Yudhishtir with the Poudras and
 the Nishadas represented the back Bhimsen with the grandson of
 Marshal (Dhrishtadyumna) the sons of Draupadi, and Abhmanyu
 and brave Satwili represented the wings. And Kundi with the
 Ishaches, the Nishes, the Daridas, the Laundras, the Yavanas, the
 Dhenuks the Tangans the Partaugans, the Vabliks, the Tittirs, the
 Cholans and the Landyas stood on the right wing, and the Agnivesh
 yas the Gajatanudus the Muladis, the Ashkaravas, the Shabars,
 the Kumhases and Nakul and Sihadev with the Malukas and the
 Vatsas stood on the left. A thousand millions of chariot occupied
 the wings, ten thousand occupied the head, a thousand millions and
 twenty thousand occupied the back and seventy thousand stood on
 the neck 51 Elephants moved all round, before, on the wings
 and on the tail of that array to ming a bird King Virat with the
 Kakayas and the Shriv king of Karhu with thirty, thousand chariots
 protect the hip and the loins Thus, O King, did the Pandavas

स्त्रिभिः । पचमेन महाव्यूहेषु भारत पांडवाः ॥ ५७ ॥ सूर्योदयतश्छतः श्वितायुद्धा
यदशिताः । तेषामादत्यवर्णानि विमलानि महोत्तच । श्वेतच्छत्राण्य शोभन्
चारणेषु रथेषु च ॥ ५८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवपर्वणि कौंचव्यूहनिर्माणे

पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

संजय उवाच । कौंचदृष्ट्वाततोव्यूह भयेद्यं तनयस्तव । रक्ष्यमाणं महाघोरं
पार्थनामिततेजसा ॥ १ ॥ आचार्यमुपसंगम्य कृपंशल्यंच पार्थिव । सोमदक्षि-
कणंच सोश्वत्थानानमेवच ॥ २ ॥ दुःशासनादीन् श्रान्तंश्च सर्वानेवच भारत ।
अन्यांश्च सुबहून् शूरान् युद्धाय समुपागतान् ॥ ३ ॥ प्राहेदं वचनं काले हृष्यंतन-
यस्तव । नानाशस्त्र प्रहणा सर्वे युद्धावशारदाः ॥ ४ ॥ एकैकशःसमर्थाहिययंसर्वे
महार्थाः । पांडुपुत्रान् रणेहंतुं ससैन्यान् किमुसंहताः ॥ ५ ॥ अथर्घांतं तदस्माकं यत्

वहे उत्तमव्यूह को रचकर वड़ी सज धनके साथ शस्त्रों को धारण किये सूर्योदय
को चाहते हुए युद्धके निमित्त नियत हुए, उन लोगोंके छत्रजो मूर्ख्य वर्ण निर्मल
और अत्यन्त श्वेतरूप थे वह हाथी और रथोंके ऊपर दिखाईदिये ॥ ५८ ॥

अध्याय ॥ ५१ ॥

संजयबोले हे श्रेष्ठभरतवंशी राजा धृतराष्ट्र इस के अनन्तर आपका बड़ा बेटा
वहे तेजस्वी पाण्डवोंके रथेहुए घोर और अभेद्यमहाव्यूहको देखकर आचार्य द्रोणा
चार्यजी के पास जाकर कृपाचार्य राजाशल्य सोमदत्त विकर्ण अश्वत्थामा, दुःशा-
सनआदि सबभाइयों और युद्धके निमित्त समीप आयेहुए अन्य बहुत से राजाओं
को, समयपर प्रसन्नकरताहुआ यह वचनबोला कि तुम सबनानाप्रकारके शस्त्रधारी
और अस्त्रों के अर्थ में पींडितहो, आप सबमहारथी एकाही युद्ध में पांडवों के मारने
में समर्थहोतो साथियोंके मिले हुये होनेसे क्यों नहीं समर्थहोगे, हमारी सब सेना
भूमिआदि की रक्षासे अज्ञेय है और यह उनकी सेना भीमआदि से रक्षितपराजय

array their army and stood in great glory, armed with weapons, waiting for the sunrise. Their shining sunshades, pure white in colour, were seen above elephants and chariots." 59.

CHAPTER LI

Sanjaya continued thus, addressing Dhritrashtra:— Seeing the dreadful and impregnable phalanx the glorious Pandavas, your eldest son went to Dronacharya and thus spoke out, cheering Kripacharya, King Salya, Somdatta, Vikarna, Ashwathama, Dushasan and other brothers and kings assembled there for fighting with his words:— All you warriors! wielders of different weapons adept in the art of fighting and capable of destroying singly all the Pandavas, are surely able to defeat them when put together. Our army is incon-

भीष्माभिराक्षतम् । पर्यातामिदमेतेषां वलंभीभाभिरक्षितम् ॥ ६ ॥ संस्थानाःशूसे
 नाश्च वेत्रिका ककुरास्तथा । आरोचकास्त्रिगर्ताश्चमद्रकाय यनास्तथा ॥ ७ ॥
 दानुजयेन सहितास्तथा दु शासनेनच । विकर्णेनच घोरैण तथा नदीपनदकैः ॥ ८ ॥
 चित्रसेनेन सहिता सहिता पारिमद्रकै । भीष्ममेवाभि रक्षतु सहसैन्य पुरस्कृता
 ॥ ९ ॥ तना भीष्मथ द्रोणथ तवपुत्राथमारिय । अद्भुत महाव्यूह पांडूनां प्रतिवाचकम्
 ॥ १० ॥ भीष्म सैन्येन महता समतात्पारवारितः । ययौप्रकर्णमहतीं वाहिनींसुग्राहिव
 ॥ ११ ॥ तमन्वयान्महोष्वासां भारद्वाजः प्रतापवान् । कुतलैश्चदशार्णवमागधेश्चावशांपते
 ॥ १२ ॥ विदर्भैर्मैकलैश्च कर्णप्रावरणै रपि । सहिता सर्वसैन्येनभीष्ममाह्वय शोभितम्
 ॥ १३ ॥ गांधारा सिंधु सौवीरा इश्वपेथवसातय । शकुनिश्चस्वसैग्येन भारद्वाज
 मपालयत् ॥ १४ ॥ ततो दुर्योधनो राजा सहितः सर्वसोदरैः । अश्वातकैर्विकर्णैश्च
 तथाचांवष्टकोसलै ॥ १५ ॥ दग्दैशकथैश्च तथाशुद्रकमालवै । अग्न्यरक्षतसंहृष्ट

होनेके योग्य है, संस्थान विकर्ण शूरसेन कुट्ट रेचक त्रिगर्त मद्रक यवन शत्रुजय
 दुश्शासन वड़े धीर विकर्ण नन्द उपनन्द मणिभद्रको समेत चित्रसेन सेना के मनु-
 प्योसमेत सम्पुत्रहोकर भीष्मकी रक्षाकरो, हे श्रेष्ठ इस के पीछे आप के पुत्रों ने
 पांडवों के रोकने क लिये वड़ेभारी व्यूहको रचा, भीष्मजी तो चारों ओर सेना
 से रक्षित देवराज के समान वड़ीसेना समेतचले, और वड़े धनुषधारी प्रतापी भार-
 द्वाज द्रोणाचार्यजी कुन्तल मागध और दशार्ण के साथ भीष्मजी के साथ चले
 और विदर्भ मैकलकर्ण प्रावरकभी सब सेनासमेत भीष्मजी केही साथचले, गांधार
 भिंधु सौवीर शैव्य विशातय और शकुनीने सेनासमेत भारद्वाज द्रोणाचार्यजीको
 रक्षितकिया, तदनन्तर राजादुर्योधन और सब सगेभाई अश्वातक विकर्ण यामन

querable, well protected as it is by Bhishma Let Samasthanas, the
 Sarasens, the Kukkers, the Rechaks, the Trigartas the Madrikas,
 the Yavanas, with Satruujaya, Dussahasans, that excellent
 hero Vikarna, Nanda, Upandaka, (8) and Shilasena, along
 with the Vambhadrakas, protect Bhishma with their troops ?
 O sire, Then Bhishma and Drona and thy sons formed a mighty
 array for resisting that of Parthas. 10 And Bhushma surrounded
 by a large body of troops advanced leading a mighty army, like chief
 of the celestrals himself 11 And that mighty Low man, the son of
 Bharadwaja, endued with great energy, followed him, with the
 Kuntalas, the Dashrnas, and the Magadhas, O king, and with the
 Vidarbhas, the Melakras, the karnas and the Pravaranas also And
 the Gandharas, the Sindhusaviras, the Shivas, and the Vasatis, with
 all their combatants also (followed) Bhishma that ornament of
 latth. And Shakuni, with all his troops, protected the son of
 Bharadwaja 14 And that king Duryodhan, united with all his

सौवलेयस्य वाहिनीम् ॥ १६ ॥ भूरिश्रवाः शलः शल्यो भगदन्तश्च मारिष । विद्वान्
 विंदा वाचन्यौ घामंपार्श्वं मपालयन् ॥ १७ ॥ सौमदत्तिः सुशर्मा च कांबोजसुद
 क्षिणः । श्रुतायुधा श्रुतायुध दक्षिण पक्षमास्थिताः ॥ १८ ॥ अश्वत्थामा कृपाश्च कृत
 वर्मा च सारवतः । महत्या संनया सार्यं सेनापृष्टे व्यचस्थिताः ॥ १९ ॥ पृष्टगोपास्तु त
 स्यासन् वानादेशपाजनेश्वराः । केतुमान् वसुदानथ पुत्रः काश्यपस्यचा मिभूः ॥ २० ॥
 ततस्ते तावकाः सर्वे हृष्टा युद्धाय भारत । दम्भुः शंखान् मुदाघुकाः सिंहनादास्तयो
 रुदन् ॥ २१ ॥ तेषां श्रुत्वात् हृष्टानां वृद्धः कुरु पितामहः । सिंदनादं धिनद्योच्चैः शंसं
 दम्भो प्रतापवान् ॥ २२ ॥ ततः शंखाथ भैरवश्च पेदयथविविधाः परैः । ज्ञानदाधाम्य
 ह्यन्यन्त स शब्दस्तुमुद्योभवत् ॥ २३ ॥ ततः श्वेतैर्द्वैयुक्तं महति स्पन्दने स्थिता । प्रवृ

कोसल दरद वृक और वाञ्छवलों के साथ लुद्रक पांडवलों की सेना के सम्मुख
 दौड़ा हे राजा भूरिश्रवा शैल शल्य भगदन्त और विन्द अनुविन्द अर्वान्त देश
 के राजानों ने बायें भागको रक्षित किया, 17. सोमदत्ति सुशर्मा कांबोज सुदक्षिण
 श्रुतायुध श्रुतायुध महव दक्षिण और नियत हुए, अश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्मा
 यादव यह सब बड़ीसेना समेत पीछेकी ओर को नियत हुए उसके पीछे से रत्नक
 अनेक देशों के राजा केतुमान वसुदान और काशीके राजाका पुत्र इत्यादि हुए 18.0
 हे भरतवंशी इसके अनन्तर आपके उन सब पुत्रों ने जोकि युद्धके लिये बहुत प्रसन्न
 चित्त थे शंखोंको बजाकर सिंहनादोंको किया, कौरवों के हृद्धपितामह प्रतापवान्
 भीष्मजीने उन प्रसन्नचित्तोंके सिंहनादोंको सुनकर बड़े शब्दमे सिंहनाद करके
 अपने शंखको बजाया तदनन्तर दूसरी ओर के शंख भेरी आदि अनेकवाजे चारों
 ओरसे बजे और तुमुलशब्द हुआ तिसपीछे श्वेत घोड़ों से युक्त बड़े रथपर वर्षमान

brothers and with Ashwatak, Vikarn, Kosal, Darad, Vrik and Balav
 warriors, advanced against the Pandav armies. Bhurishrava, Shal,
 Shalya, Bhagdant with Vind and Anuvind the princes of Avanti,
 guarded the left flank. 17. Sondatti, Susharma, Kamtoj, Sudak-
 shin Shatayush and Shrutayu stood on the right; and Ashwathama,
 Kripacharya, Kritarma and the Yadavas with a large army stood on
 the rear and were themselves guarded by Ketuman, Vasudev, the
 son of the king of Kasi and others. 20. Then, O descendant of Bhar-
 at; your sons cheerfully blew their conch shells in the field of battle.
 At this the other side too, blew their conch shells, trumpets and
 other musical instruments and the noise was tremendous. Then riding
 their huge chariot drawn by white horses, Krishna and Arjun blew
 their conch shells decked with gold and jewels. Krishna the lord of

धनुः शंखवरो हेमरत्नपरिष्कृतौ ॥ २४ ॥ पांचजन्यं हृषी केशो देवदत्तं धनुजयः ।
 पौंड्रं धूम्रौ महाशखं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ २५ ॥ अनन्त विजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधि
 ष्ठिरः । नकुल- सहदेवश्च सुधोपमाणि पुष्पको ॥ २६ ॥ काशिराजश्च शैव्यश्च शिशुगंडो
 च महारथः । धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्च महारथः ॥ २७ ॥ पांचाक्ष्याश्च महोवासा
 द्रौपद्याः पञ्चचात्मजाः । सर्वे दध्नुर्महाशखान् सिंहनादांश्च नेदिरे ॥ २८ ॥ स घोष-
 समहांस्तत्र वीरैस्तैः समुदारितः । नभश्च पृथिवींचैव तुमुलो ध्यनुनादयत् ॥ २९ ॥ एव
 मेते महाराज प्रहृष्टः कुरुपाण्डवाः । पुनर्युद्धाय संजग्मुस्तापयानाः परस्परम् ॥ ३० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मयथपर्वणि कौरवव्यूहरचनायां
 एकविंशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

श्रीकृष्णजी और अर्जुनने, सुवर्ण और रत्नों से जटित उत्तम शंखों को बजाया
 फिर इन्द्रियोंके स्वामी जगदात्मा श्रीकृष्णजी ने तो पांचजन्य नाम शंखको और
 अर्जुनने देवदत्त नाम अपने शंख को बजाया, और भयकारी भीमसेन ने पौण्ड्रनाम
 महाशंखको बजाया औरकुन्तीकेपुत्र राजायुधिष्ठिरने अनन्त विजयनाम शंखको बजाया
 और नकुल सहदेवने सुधोप और मणिपुष्पकनाम शंखको बजाया और शैव्यकाशि
 राज और महारथी शिखंडी धृष्टद्युम्न विराट महारथी सात्विकी वड़ाधनुर्धर पांचाल
 द्रुपद और द्रौपदीके पांचोपुत्रोंने सिंहनादकोकरके अपने महाशंखोंको बजाया सब
 वीरों ने अन्धेप्रकार उत्तम शब्दकिये, तुमुलशब्द से आकाश और पृथ्वी शब्दा-
 यमान होगई हे महाराज इमरीति से यह कौरव और पांडव परस्पर में संतप्त करते
 हुए फिर युद्ध के निमित्त गये ॥ ३० ॥

the senses and soul of the world, blew his Panchjanya conch and
 Arjun blew his Devadatta. Bhim'sen the dreadful, blew Paundra,
 and Prince Yudhishtir the son of Kunti blew Anantvijaya Nakul
 and Sahadev blew Sughosh and Manpu-hpak. Shaivya the prince
 of Kashi, Shikhandi the great warrior, Dhristadyuman, Virat,
 brave Satyaki, Drupad the great archer of Panchal and the five sons
 of Draupadi roared like lions and blew their conchshells. The loud
 sounds of the warriors rang through the earth and sky. Thus, O
 Prince, did the Kauravas and the Pandavas advance against each
 other with dreadful noises." 30.



धृतराष्ट्र उवाच । एवं द्यूतध्वनीकेषु मामकेष्वितरेषु च । कथं प्रहरतां श्रेष्ठाः
सम्प्रहारं प्रचक्रिरे ॥ १ ॥ मञ्जय उवाच ॥ समं द्यूतध्वनीकेषु सप्रहारावरध्वजम् ।
अपारमिव संहृद्य सागं प्रतिमं बलम् ॥ २ ॥ तेषांमध्ये स्थितो राजन् पुत्रो दुष्यो
धमस्तव । श्रेष्ठो वा तावकान् सर्वान् युद्धयध्वमिति दांशताः ॥ ३ ॥ तेमनः दूरमाघाय
सममित्यकजोचिताः । पाण्डवानम्यवर्त्तन्त सर्व एवोच्छ्रितध्वजाः ॥ ४ ॥ ततो युद्धं
समभवत्तुमुलं लोमहर्षणम् । तावकानां परेषाञ्च व्यातिपकरवह्निपम् ॥ ५ ॥ मुक्तास्तु
रविभिर्वीणांश्चाह्वयुवाः सुनेजसः । सन्निपेनुरङ्गाण्ठया नामोदुच हयोदुच ॥ ६ ॥ तथा
श्रुत्वा संग्रामे घनुरुधम्यदंशित । अमित्य महापाह्मीभ्यो भीमपराक्रमः ॥ ७ ॥
सामग्रे भीमगेने च सात्यकौच महारथे । कैकेये च विराटे च धृष्टशुम्भे च पापते ॥ ८ ॥

अथाय ६७ ॥

धृतराष्ट्रवाले है मंजय इम रीति से मेरेपुत्र और पांडवोंकी मेना के द्यूह रच-
नेपर प्रहार करनेवालोंमें उत्तम गूरोंने परस्परमें कैसे कैसे प्रहार किये । ? । संजय
वाले कि इम रीति से मेनाके द्यूहित होनेपर मनुष्य रूप मेना को अपार देखते हुए
उनवीरों के कवच तैयार हुए जिनकी ध्वजा महासुन्दर और मनोहर थी, है राजा
उन मंत्र में नियत होकर आपका पुत्र दुर्योधन आप के सबपुत्रों को बुलाके कहने
लगा कि तुम सब अस्त्रधारण करके युद्ध करो वह जीवनको त्यागे हुए ध्वजाको ऊंची
करनेवाले सब मन में निर्दयरूपहोकर पांडवों के सम्मुख लड़नेको उपस्थित हुए तद्-
नन्तर आपके पुत्र और दूमरोंका युद्ध जिस में रथ और हाथी संयुक्त थे गेमटर्पण
और तुमुलं शब्दों से व्याप्त हुआ । ६ । सुवर्ण पंख और अत्यन्त प्रकाशित और
तीक्ष्णबाण रथीलोंको के हाथोंमें झूटेहुये हाथी और घोड़ों पर गिरे इमीप्रकार युद्ध
प्रारम्भ होनेपर भयकारी पराक्रमी अस्त्रधारी पितामह भीष्मजी ने धनुष को उठाये

CHAPTER LII.

“ Having thus formed an array of their armies, how did the warriors of my sons and those of the Pandavas fight with one another? asked Dhritrashtra of Sanjaya 1. “ Having arrayed their armies in the manner mentioned above,” replied Sanjaya, “ that boundless ocean of the r armies, shining with panoply and excellent banners, looked glorious to behold. In the midst of those armies your son Duryodhan collected his brothers and said to them, “ Take up your arms for fighting.” And regardless of their lives all your sons, with cruel hearts, faced the Pandavas in battle. The battle between your sons and the other party, with chariots and elephants mixed together raged furiously with tremendous noise. 5 The sharp arrows, with bright golden feathers, discharged by charioteers, fell upon the elephants and horses. At the commencement of the battle, Bhishma the great archer of dreadful prowess faced with his bow, brave Abhi-

पतेषु नरवीरेषु चेद्दिमत्स्येषुचाभिभूः । धवर्षं शरवर्षाणि वृद्धः कुरुपितामहः ॥ ९ ॥
 जमिधत ततो ब्यूहस्तास्मिन् चरिसमागमे । सर्वेषामेव सैन्यानामासद्भिषतिकरोमहान् ॥ १० ॥
 सादिनो ध्वजिनश्चैव हत प्रवरवाजिनः । विप्रदुतरधानांकाः समपघन्त
 पांडवाः ॥ ११ ॥ अर्जुनस्तु नरव्याघ्रो दृष्ट्वाभीष्मं महारथम् । वाष्णोयमग्रधीत् कुद्धो
 याहि यत्र पितामहः ॥ १२ ॥ एषभीष्म. सुसंकुद्धो वाष्णोय. मम वाहिनीम् । नाशयि
 ष्यति सुव्यक्तं दुर्योधनहिते रतः ॥ १३ ॥ एष द्रोण रूप. शरयो विकर्णश्च जना
 हन । धार्तराष्ट्रश्च साहिता दुर्योधनपुरोगमाः ॥ १४ ॥ पंचालान्निहानिष्याति रक्षिता
 दृढधग्विना । सोढं भीष्मं वधिष्यामि सैन्यहेतोर्जनाह्न ॥ १५ ॥ तमग्रवीद् वासु
 देवो यत्तो भवघनञ्जय । एषत्वां प्रापयिष्यामि पितामहरथं प्रति ॥ १६ ॥ एवमुक्त्वा

हुए सम्मुख आकर, महारथी अभिमन्यु भीमसेन अर्जुन, केकय, विराट, धृष्टद्युम्न,
 चेदि, मत्स्य, विभु इन नौवीरों पर वाणोंकी वर्षा करी । ९ । उस बड़े वीर के
 सम्मुख बढ़ी सेना अत्यन्त कम्पायमान हुई और सब सेना के लोगोंको बड़ा खेद
 उत्पन्न हुआ, और वह अत्यन्त उत्तम घोड़ों के रथोंके सवार मारे गये जिनकी सेना
 हट गई थी ऐसे अकेले पांडव वर्तमान हुए नरों में उत्तम क्रोधरूप अर्जुन महारथी
 भीष्मको देखकर श्रीकृष्णजी से बोले कि वहां चलो जहां पितामह हैं । १२ । हे
 दृष्टिगंशी यह निश्चय है कि यह अत्यन्त क्रोधरूप भीष्म दुर्योधन के अभीष्ट
 में प्रयत्न मेरी सेनाको अवश्य मारेंगे, हे जनार्दनजी यह द्रोणाचार्य कृपाचार्य शल्य
 विकर्ण और सब धृतराष्ट्रके पुत्र जिनमें अग्रगामी दुर्योधन है, वह सब धनुषधारियों
 से रक्षित होकर पांचाल देशियों को मारेंगे सो हे जनार्दनजी मैं भी सेना समेत
 भीष्मजीको मारुंगा । १५ । वामुदेवजी बोले कि हे अर्जुन सावधान हो मैं तुम्हको
 अभी पितामह के रथके पास पहुंचाता हूं, हे राजा ऐसा कहकर वामुदेवजी ने उसको
 शीघ्र ही भीष्मजी के रथके पास पहुंचाया, वह पाण्डव अर्जुन वगले के समान श्वेत

manyu, Bhimsen, Arjun, Kakaya, Virat, Dhrishtadyumna, Chedi,
 Matsya and Vibhu, and showered his arrows on them. 9. The great
 army trembled before that great warrior and was much distressed.
 The riders of very excellent horses were slain and the armies of the
 Pandavas were dispersed. When the Pandavas were left alone, brave
 Arjun enraged at the sight of Bhishm asked Krishna to lead him in
 the vicinity of the grandfather. "Surely," said he to Krishna, "Bhishm
 in his rage will destroy my armies for the good of Duryodhan.
 Dronacharya, Kripacharya, Shalya, Vikarna and all the sons of Dhriti-
 rashtira having Duryodhan at their head and protected by all the
 good archers, will destroy the Pandavas. I wish therefore, O Janar-
 dan, to destroy Bhishm and his army" 15. "Be wide awake, Ar-
 jun," said Vasudev, "I shall forthwith take you to the vicinity of
 Bhishm's chariot," and drove the chariot close to that of Bhishm.

ततः शौरि रथं तं लोकविश्रुतम् । प्रापयामास भीष्मस्य रथं प्रति जनेश्वर ॥ १७ ॥
 बलद्वहृपताकेन बलाकायर्षवाजिना । समुत्थितमहाभीम नद्वानरकेतुना ॥ १८ ॥
 महतःमेघनादेन रथेनामततेजसा । विनिघ्नन् कौरवानां कं शूरसेनांश्च पाण्डवः
 ॥ १९ ॥ आयाच्छरणदः शीघ्रं सुहृदांश्चैवर्षेणः । तमापतन्त वेगेन प्रभिममिव
 धारणम् ॥ २० ॥ शस्यन्तं रणे शूण्णं मर्दयन्तश्च सायकैः । सन्धवप्रमुखं गुप्त प्रा-
 च्यसौवीरकेकयैः ॥ २१ ॥ सहसा प्रत्युदीपाय भीष्मः शन्तनवोऽर्जुनम् । कोहि
 गाण्डीवघन्वानमग्यः कुरुपितामहान् ॥ २२ ॥ द्रोणवैकृत्तनाभ्यां चारथी संयातु
 नर्हति । ततो भाष्मा महाराज सर्थलोकमहारथः ॥ २३ ॥ अर्जुनं सतसत्तया नारा-
 चानांसमाचनोत् । द्रोणश्च पञ्चविंशत्या कृपणञ्चाशताशरैः ॥ २४ ॥ दुर्योधनश्चतुः
 पट्या शन्यथ नवभिः शरैः । सन्धवो नवामश्चैव शकुनिश्चापि पञ्चभिः ॥ २५ ॥

घोड़ों के रथपर सवार बड़ी ऊंची प्रकाशमान ध्वजाको फहराता बड़े वादल के
 समान गरजता हुआ सूर्य के समान प्रकाशित रथके द्वारा कौरवों की सेना और
 शूरसेनों को संहार करता हुआ, मित्रोंके उत्साहोंका बढ़ाने वाला शीघ्रही युद्ध भूमि में
 आया उस मद्गोन्यच दायी के समान महा वेग युक्त आतेहुए युद्धमें शूरोंको कंपाते और
 अपने बाणों से प्रहार करके गिराते हुए अर्जुनको देखकर पूर्वी सौवैर केकय जय-
 द्रथ और सिन्धु आदि के राजाओं से रक्षित, भीष्मजीएकाएकी सम्मुख वर्तमान
 हुए कौरवों के पितामह भीष्म द्रोणाचार्य और कर्ण के सिवाय दूसरा कौनरथीहै
 जो गांडीवधनुषधारी अर्जुन के सम्मुख जासके तदनन्तर हे महाराज कौरवों के
 पितामह भीष्मजी ने तो सतत्तर बाणोंसे अर्जुनको खूबपीड़ामान किया और द्रोणा-
 चार्य व कृपाचार्य ने पच्चीस २ बाणों से । २४ । दुर्योधनने चौंसठ बाणोंसे
 शल्यने नौबाणोंसे और नरोत्तम अश्वत्थामाने साठ बाणोंसे विकर्ण ने तीनबाणों
 से और आर्चायनिने तीनभल्लबाणों से पांडव अर्जुन को खूब घायल किया वह

Arjun the Pandava rode on the chariot drawn by horses white as heron, over which fluttered gloriously the high banner, and roaring like thunder and destroying the Kauravas and Shursenas from his chariot, he entered the army to the great joy of his friends. Seeing him coming like a mad elephant and shaking and killing the warriors with the shower of his arrows, Bhisma, protected by the Sauvirs of the East, the Kaikeyas, jayadrath and the princes of Sindhu and other places, turned upon him. Who else except Bhisma the grandfather of the Kauravas, Dronacharya or Karan could face Arjun the bearer of Gandiv! Then, O king! Bhisma the grandfather wounded Arjun with seventy seven arrows and Dronacharya and Kripacharya each of them wounded him with twenty five. 24. Duryodhan shot sixty four arrows; Shalya nine; Ashwathama, the best of men, sixty; Vikarn three and Artayani too, hit and wounded Arjun the Pandava

विकर्णोद्देशनिर्भले राजन् विद्यापपाण्डवम् । स तैर्विक्रो महेष्यासः समन्ताभिशितैः
 शरैः ॥ २६ ॥ न विष्यथे महाबाहुर्मिथमान इवाचलः । स भीष्मं पञ्चविंशत्यां
 कृपय नयामिः शरैः ॥ २७ ॥ द्राप्यं पृथ्वा नरदयाघ्रो विकर्णव श्राभः शरैः । शक्यं
 चैव अभिर्वाण राजानञ्चैव पञ्चभिः ॥ २८ ॥ प्रयविध्यदमेयात्मा किराटीभर्त-
 र्पम । तं सात्यकिर्विराटप घृष्टयुञ्जश्च पार्पत ॥ २९ ॥ द्रौपदेवामिमम्युध्ध परिजग्ध
 नञ्जयम् । ततो द्रोण महेश्वस गङ्गेयस्य प्रिये रतम् ॥ ३० ॥ अभ्यवचत्त पाशाह्यः
 संयुक्तः सह सोमकैः । भोमस्तु रथिनां श्रेष्ठो राजन् विद्याप पाण्डवम् ॥ ३१ ॥
 अशोतया नशितौर्गणैस्ततः ऽक्रुपेत् तावकाः । तेष तु निन्दं श्रुत्वा स हितानां प्रहृष्ट
 वत् ॥ ३२ ॥ प्रविशेश ततो मध्यं नरसिंहः प्रतापवान् । तेषां महारथानां मध्यं
 प्राप्स्यथनक्षयः ॥ ३३ ॥ चिक्रीड धनुरा राजेन्द्रज्ञं कृत्वामहारथान् । ततो दुष्टयो

महाबाहु अर्जुन उनके चारोंओर की वाणग्रीष्ट से पर्वत के समान आच्छादित और
 घायल भी होकर पीड़ामान नहीं हुआ फिर उस नरोत्तम अर्जुनने भीष्मजी को
 पच्चीस वाणों से कृपाचार्य्य को नौवाणों से द्रोणाचार्य्य को साठ वाणों से
 विकर्ण को तीन वाणों से आर्तायानि को भी तीनवाणों से और राजादुर्योधन
 कां भी पांच वाणों से घायल किया, जो कि अर्जुनबड़ा साहसी और मुकुटधारी
 था तो भी हे भरतर्पम सात्विकी विगट घृष्टयुन्न, द्रौपदी के पांचो पुत्र और अभि-
 मन्यु इन सबने आकर अर्जुन को चारोंओर से रक्षितकिया तदनन्तर राजाद्रुपद
 भीष्म के अनभीष्ट में श्रुत्त द्रोणाचार्य के सम्मुख उास्थित हुआ फिर रथियों में
 श्रेष्ठ भीष्मजी ने शीघ्रही पांडव अर्जुन को । ३१ । तद्विण्ण अस्मी. वाणों से घायल
 किया उसने आपके पुत्र प्रसन्न हुए तदनन्तर रथियों में उत्तम प्रतापी अर्जुन उन
 प्रपन्न चित्तों की गर्जनाको सुनकर बड़े पमन्न चित्त के समान सेनामें घुसा हे
 राजा. वह अर्जुन उन उत्तम रथियों के मध्यको पाकर महारथियों को चिह्नितकर

with three of his broad pointed arrows. But though Arjun was covered with arrows like a mountain with clouds, he did not shake in spite of the wounds he had received. Arjun the best of men pierced Bhishm with twenty five arrows, Krpacharya with nine, Dronacharya with sixty, Vikarn with three, Artayam with three and prince Duryodhan with five. Arjun the learner of dardem, of great prowess, was assisted by Sitwik, Vrat, Dhrishtadyumna, the five sons of Draupadi and Alhumanyu who guarded him on all sides. Then Drupad, intent on doing harm to Bhishm, faced Dronacharya and Bhishm the best of charioteers faced Arjun the Pandva (31) and wounded him with eighty arrows to the great joy of your sons. Then Arjun of great prowess hearing their cheerful cries, entered the army with a cheerful mind and roared in the midst of the charioteers.

घनो राजा भीष्ममाह जरेभ्यः ॥ ३४ ॥ पण्डितान् स्वकं सैन्यं दृष्ट्वापार्थेन सद्युगे ।
 एव पाण्डुपुत्रस्तात कृष्णेनसहितोचली ॥ ३५ ॥ यतार्त्सर्वं सैन्यानां मूलं नः परि
 कृन्तति । स्वयिर्जीव त गाङ्गपद्मोणं च रथिनां वरे ॥ ३६ ॥ स्वत्कृते चैवक्रणोप न्यस्त
 शस्त्रो विशाम्गते । न युध्यात् रणे पार्थ द्विजकामः सदा मम ॥ ३७ ॥ सतथा
 कुव गाङ्गेय यथा हृष्येत फाल्गुनः । पथमुक्तस्ततो राजन् पिता देवव्रततप ॥ ३८ ॥
 धिक् क्षात्रधर्मगिर्युक्त्वा प्रायात् पार्थरथप्राति । उभौ श्वेतहथौ राजन् संसक्तौ प्रेक्ष्य
 पार्थिवाः ॥ ३९ ॥ सिंहनादान्भृशं च कुः शंखं नृदध्मुक्ष मारिष । द्रौणिदुर्योधनश्च
 विकर्णश्च तवधमजः ॥ ४० ॥ परिवार्य रणे भीष्मं स्थिता युद्धाय मारिष । तथैव
 पाण्डवाः सर्वे पारदार्यं घनत्रयम् ॥ ४१ ॥ स्थिता युद्धाय महते ततो युद्धमवसन्त ।

के धनुषलिये हुए घूमने लगा तदनन्तर राजा दुर्योधन युद्ध में अपनी सेनाको अर्जुन
 के हाथ से पीड़ामान देखकर भीष्मसे बोला हेतात यह बनवान् पाण्डव श्रीकृष्णजी
 के साथ । ३५ । सब सेनाओंको मारता गिराताहुआ रथियों में श्रेष्ठ गांगेय और
 द्रोणाचार्य के जीवते होनेपर हमारेमूलको काटे डालता है हे राजा आपहीके कारण
 सदैव मेरा हित चाहने वाला यह कर्ण भी वेसलाह होकर युद्धमें पाण्डवों से नहीं
 लड़ता है । ३७ । हे भीष्मजी सो तुम ऐसाही करो जिससे अर्जुन नाशको पाये
 तदनन्तर हे राजा इसप्रकार कहे हुए आपके पिता देवव्रत भीष्मजी क्षत्री धर्मको
 धिक्कार है ऐसा शब्द कहकर अर्जुन के रथके समीप आये हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र
 राजाओं ने उनदोनों महाबली श्वेत घोड़े वालों को मिलाहुआ देखकर अत्यन्त
 सिंहनादक शंखों को बजाया अश्वस्थामा और आपका पुत्र दुर्योधन और विकर्ण
 । ४० । यहसब युद्ध में भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित करके युद्धके निमित्त
 नियत हुए और हे राजा इसी प्रकार से सब पाण्डव लोग अर्जुनको चारों ओर
 से घेरकर बड़े युद्ध करने के निमित्त नियतहुए इसके पीछे युद्ध प्रारंभ हुआ फिर

hitting the loat of them. Seeing his army thus destroyed by Arjun, Duryodhan said to Bhishm, "Father, this brave Pandav, assisted by Shree Krishn, (35) is destroying my armies in the presence of you and Dronacharya the best of charioteers and will thus uproot us. Having quarrelled with you, Karan will not fight against the Pandavas. 37. Cause the destruction of Arjun in some way or other." Hearing this, Devabrat Bhishm cursed the kshatrya duties and came near Arjun's chariot. Seeing those two great warriors face to face, the kings roared like lions and blew their conch shells Ashwathama and your sons Duryodhan and Vikarn (40) guarded Bhishm on all sides and prepared for fighting. In the same manner all the Pandavas surrounded Arjun and stood ready to fight. Then

गाङ्गेयस्तु रणेपार्थ मानच्छत्रवाभिःशरैः ॥४२॥ तमर्जुनःप्रत्याघिघ्यत् दशभिर्मर्मभेदिभिः ।
 ततः शरसहस्रेण सुप्रयुक्तं पाण्डव ॥ ४३ ॥ अर्जुनः समरस्त्रार्था भीष्मस्यावार
 यद्दिशः । शरजालं ततस्तच्च शरजालेन मारिष ॥ ४४ ॥ वारयामास पार्थस्य
 भीष्मः शान्तवस्तदा । उभौ परमसहस्राबुभौ युद्धाभिनन्दिनौ ॥ ४५ ॥ निर्विशेष
 मयुध्येतां कृतप्रतिकृतैपिणौ । भीष्मचापविमुक्तान शरजालानि संघशः ॥ ४६ ॥ शीर्य
 माणान्यदृश्यन्त । मध्यान् अर्जुनसायकैः । तथैवार्जुनमुक्तानि शरजालानि सर्वशः ॥ ४७ ॥
 गाङ्गेयशरनुशानि प्रापतन्तमहर्तले । अर्जुन पञ्चाविंशत्याभीष्ममाच्छच्छितैःशरैः ४८॥
 भीष्मोपि समरे पार्थ विव्याघ निशितैः शरैः । अन्यान्यस्यहयान् । वध्वाध्वजौ च
 सुमहाबलौ ॥ ४९ ॥ रथेषां रथचक्रेच चिक्रीडतुरगिन्दमौ । ततः कृद्धो महापज
 भीष्मः प्रहरतांवरः ॥ ५० ॥ वासुदेवं । वभिर्वापि राजघान स्तनान्तरे । भीष्मचाप
 व्युतैस्तैस्तु निर्विद्धो मधुसूदनः ॥ ५१ ॥ विरराज रणे राजन् सपुष्प इव किंशुकः ।

गंगापुत्र भीष्मजी ने युद्धमें नववाणों से अर्जुनको घायल किया । ४२ । फिर
 अर्जुनने मर्मभेदी दशवाणों से उनको घायल किया तदनन्तर युद्ध में प्रशंसनीय
 पाण्डव अर्जुनने अच्छे प्रकार से चलाये हुए हजार वाणों से भीष्मजी की दिशाओं
 को रोका, तदनन्तर भीष्मजी ने अपने वाणों से अर्जुनके उनवाणों के जालोंको
 रोका, दोनों युद्ध में प्रसन्न चित्त और उत्साह मानने वाले प्रहार के बदले प्रहार
 करने की इच्छावाले युद्ध में अतिशयता पूर्वक प्रवृत्त हुए, भीष्मजी के धनुष से
 छूटेहुए वाणजालों के समूह अर्जुन के वाणों से कटे हुए टूटपड़े, इसीप्रकार अर्जुन
 के छोड़े हुए वाणजाल भीष्मजीके वाणों से टूटकर पृथ्वीपर गिरपड़े फिर अर्जुन
 ने पच्चीस तीक्ष्ण शरोंसे भीष्मजीको व्यथित किया । ४८ । भीष्मजी नेभी नव
 वाणों से अर्जुन को घायल किया वह दोनों महाबली शत्रुओं के जीतनेवाले युद्ध
 में घोड़ों को और रथोंको परस्पर घायल करके, क्रीड़ा करने वाले होगये तदनन्तर
 हे राजा महाक्रोध रूप महाप्रहारी भीष्मजी ने, तिन वाणों से वासुदेवजी को
 स्तनान्तर में घायल किया, उन भीष्मजी के धनुष से निकले हुये वाणों से घायल

the fighting began. Bhishm wounded Arjun with nine arrows and recieved ten from him. Then Arjun ths best of warriors, spread a thousand well aimed arrows round Bhishm and both the warriors returned each other's blows with great skill. The network of arrows was cut down by those of Bhishm. Arjun then wounded Bhishm with twenty five arrows. 48. Bhishm too wounded Arjun with nine arrows. The two great warriors, conquerers of enemies, wounded the horses of each other's chariot and delighted in their work. Then Bhishm the great warrior struck Vasudev in the middle of the breast with three arrows. Wounded by the arrows of Bhishm, Madhusudan looked like a Kinshuk tree, in bloom. Seeing Madhav wounded by

ततोर्जुनोभृशंक्रुद्धो निर्विद्धं प्रेक्ष्यमाधवम् ॥ ५२ ॥ सारथिं कुनवृद्धस्य र्ण्विभेदाश्लैः
शरैः । धतन्तानौततौ वीरा वन्योन्यस्य घघप्रति ॥ ५३ ॥ नशक्नुतां तदान्योन्य
मभिसंघातु माहवे । तौमंडलान चित्राणि गतप्रत्यागतानिच ॥ ५४ ॥ अदशैयतां
बहुधा सूतसामर्थ्यं छाघवात् । अंतरंच प्रहारेपुतकंधती परस्परम् ॥ ५५ ॥ राजत्रं
तरमार्गस्थौस्थितावास्तांसुदुर्मुहः । उभो सिंहरोणिमथं शंखशब्दं च चक्रतुः ॥ ५६ ॥
तथैव चापनिर्घोषं चक्रतुस्तौ महारथौ । तयोः शंखाननादेन रथनेमिस्थानेनच ५७ ॥
दारिता सहसा भूमिश्चकंपच ननादच । नाभयोरंतरं कश्चिद्दृशे भरतर्षभ ॥ ५८ ॥
बालनौ युद्ध दुर्घपां घन्योन्यसदृशायुधौ । चिह्नमात्रेण भीष्मंतु प्रजनुस्तत्र कौरवाः
॥ ५९ ॥ तथा पाण्डुसुताः पार्थ चिह्न मात्रेण जज्ञिरे । तयोर्द्विवरयोर्दृष्ट्वा तादृशंतं
पराक्रमम् ॥ ६० ॥ विस्मयं सर्वं भूतानि जग्मुर्मारुतसंपुगे । नतयोर्विचरं कश्चिद्रणे पदयं

मधुसूदनजी, युद्धमें फूले हुये किंठुक, वृत्तके समान शोभायमान हुए तदनन्तर
माधवजीको घायल देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अर्जुन नेभी भीष्म के सारथी
को तीन चारोंसे घायल किया तब युद्धमें एक दूसरे के रथपर उपाय करने वाले
दोनों वीर, परस्पर में गिरानेको समर्थ नहीं हुए फिर उन्होंने ने सूतके बलकी तीव्रता
से बारंबार विचित्र मंडलोंको दिखलाकर, अवकाश के मार्ग देखने में नियत दोनों
वीरों ने बारंबार प्रहारों के बीचमें अवकाश को तकने हुए सिहनाद पूर्वक शंखों
के शब्दों को किया । ५६ । और इसीप्रकार दोनों महारथियों ने धनुषों के भी
शब्दों को किया, उन दोनों के शब्दोंसे और रथोंके शब्दोंसे अकस्मात् पृथ्वी
फटगई और कंपायमान होकर अद्भ्यमानभी हुई हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उनदोनों
के अन्तरको किमीनेभी नहीं देख। दोनों युद्धमें बलवान् शूरवीर परस्पर में समान
ये वहां कौरव लोग केवल चिह्नों को देखकर भीष्म जीके पासगये, इसीप्रकार
पाण्डवों ने भी केवल चिह्नही मात्र से अर्जुनकोपाया हेराजाधृतराष्ट्र उन दोनों

those arrows Arjun too, in great anger, wounded the chariot driver of Bhishm with three arrows. Thus wounding each other, the two warriors could not defeat each other and with the skill of their chariotéers described circles of their arrows again and again. Watching an opportunity to gain advantage over each other, they blew their conchshells and roared like lions. 56- Both the warriors twanged their bows. The earth cracked and shook with a noise at the sound of those warriors and rumbling of their chariot wheels. None could see any distinction between the two warriors; both were strong, brave and of equal prowess. The Kauravas could approach Bhishm by seeing his banner and the Pandavas came near Arjun by the same means. All beings were amazed to see the great prowess of those

तिभारत ॥६१॥ धर्मोस्थितस्यहि यथानकश्चिद्वृजिनं कंचचित् । उभौच शरजा
 लेन तावदृश्यौ बभूवतुः ॥ ६२ ॥ प्रकाशौच पुनस्तूर्णं बभूवतुहमौरणे । तत्रदेवाः
 स गंधर्वाश्चारणाश्चर्षिभिः सह ॥ ६३ ॥ अन्योन्यं प्रत्यभाषंत तयोर्दृष्ट्वा पराक्रमम् ।
 गशक्यौ युधि खंरन्व्यौ जेतुमेतौ कथंचन ॥ ६४ ॥ स देवासुर गंधर्वैर्लोकैरापमहा
 र्षी । आश्चर्यमूतं लोकेषु युद्धमेतन्महाद्भुतम् ॥ ६५ ॥ नैत दृशानि युद्धानि भवि
 ष्यति कथंचन । नहि शक्यो रणे जेतुं भीष्म. पार्थेन धर्मिता ॥ ६६ ॥ सधनुःसरयः
 साश्वः प्रवपन् सायकान्रणे । तथैव पांडवं युद्धे देवैरपि दुरासदम् ॥ ६७ ॥ नवि
 जेतुरणे भीष्म वरसहेत धनुर्धाम् । आलोकादाप युद्धोह सममेतद्भाविष्यति ॥ ६८ ॥
 इतिस्मवाचोऽध्वर्युः प्रोचरत्पशतस्ततः । गांगपांडुनयोः संख्ये इतव युक्ता विशांपते
 ॥ ६९ ॥ त्वदीयास्तुतदायोधाः पांडवेयाश्च भारत । अन्योन्यं समरे जघ्नस्तयोस्तत्र

नरोत्तमों के उस महापराक्रम को देखकर युद्धमें सब जीवमात्रों ने आश्चर्य किया
 और कोई भी उनदोनों के अन्तरको ऐसे नहीं देखसक्ताथा जैसे कि धर्मवान् पुरुष
 का कोई पाप कहीं दिखाई नहीं देता वह दोनों वाणजालों में गुप्तहोगये । ६१ ।
 इस के पीछे दोनों शीघ्रही प्रकटहोगये वहां गंधर्वों समेत देवताओं ने और महर्षियों
 समेत चारण लोगों ने इनदोनों के पराक्रमको देखकर परस्पर में वार्त्तालाप की
 कि यह युद्धमें क्रोध रूप दोनों महाबली देवता असुर औरगंधर्वों से भी किसी दशा
 में लोकमें जीतने के योग्य नहीं है यह बड़ाभारी अपूर्व युद्ध इसलोक में होरहा है
 ऐसा युद्धकभी नहीं होगा । ६२ । धनुपरय औरस्योडोंसमेत युद्ध भूमि में शायकों
 को छोड़ते हुए भीष्मजी युद्धमें युद्धिमान् अर्जुन को विजय करने के योग्य नहीं
 हैं इसीप्रकार युद्ध में देवताओं से भी अजेय धनुपधारी पांडवोंकी विजय करने को
 भीष्मजीभी उत्साह नहीं करते देखने सेभी यह युद्ध वरावर का होगा, हे राजा
 भीष्म और अर्जुनकी प्रशंसा के यह वचन जहाँतहाँ फैलेहुए सुनेगये । ६३ । तदनन्तर
 उनदोनों के पराक्रमहोने पर आपके शूरवीर और पांडवों ने परस्पर में युद्ध किया

two best of men and could find no distinction in either as one does not find a sin in a virtuous man. Both were hid within the network of arrows. 62. They appeared again in a short time. The Gandharvas, the gods and the maharshis with the Charans, present there, saw their prowess and talked with one another as follows:—“These enraged warriors are not to be conquered in battle by gods, asurs and gandharvas. The world has not seen such a fight nor is likely to see it again. 65. Discharging arrows with the help of his bow, chariot and horses, Bhishm cannot conquer Arjun nor does he aspire to conquer the Pandava archers who are unconquerable even by gods. Both the warriors are equal in prowess.” Such words of the

पराक्रमे ॥ ७० ॥ शितवीरस्तथा स्रग्भौर्धिमलैश्च परश्वधैः । शरैरग्यैश्च बहुभिःशस्त्रै
नानाविधैरापि ॥ ७१ ॥ उभयोःसेनयोः शूरान्यकृतंत परस्परम् । वर्तमाने तथाघोरत-
स्मिन्युद्धे सुदाहणे । द्रोणपांचद्वय योराजन् महानासीत् समागतः ॥ ७२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मार्जुनयुद्धे
द्विपचाशत्तमोऽध्यायः । ५२ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं द्रोणो महेशासिः पांचान्यथापि पार्षतः । उभौ समीपतुर्य
सौतन्यमाचक्ष्व संजय । १ ॥ द्रिष्टमेव परमग्ये पौरुषादिति मेमतिः । बभ्रुशोत
नयो भीष्मो नातरद्युधि पांडवम् ॥ २ ॥ भीष्मोहि समरे क्रुद्धो हन्याल्लोकांश्चरा
वसान् । सकथ पांडवे युद्धेनातर संजयौजसा ॥ ३ ॥ संजय उवाच । धृतराजन्
स्वरोभूषा युद्धमेतत्सुदाहणम् । नशक्याः पांडवाजंतु वैवैरि सयासवैः ॥ ४ ॥

इभीषकार तीव्रधार स्रग्भ और निर्मल परशे वाण और अन्य २ प्रकार के अनेक
शस्त्रों से दोनों ओरके शूरीरों ने परस्पर में एकने दूसरेको मार किया हे राजा
इभी रीति से उत्तोर और महा भयानक युद्धहोनेपर द्रोणाचार्य और द्रुपदकी
बड़ी भारी लड़ाई हुई ॥ ७२ ॥

अध्याय ॥ ५३ ॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्नदोनों बुद्धिमान
कैसे युद्धमें परस्पर सम्मुख हुए उमका वृत्तान्त मुझ से कहो; हे संजय मैं उद्योग से
प्रारब्धकों बड़ा मानताहूँ जहां युद्ध में शान्तनु भीष्मजी ने पांडव अर्जुनको विजय
नहीं किया जो भीष्म रण में क्रुद्धहोकर स्वस्थावर जंगमजीवों कोभी मारसक्ता है
उस महावीरने किस हेतु से युद्धमें पराक्रमकरके पांडव अर्जुनको नहीं मारा । ३ ।
संजय बोले कि हे राजा तुम स्थिरचित्त होकर इस बड़े भारी भयानक युद्धको सुनो
कि पांडव अर्जुन इत्यादि देवताओं सेभी विजय करने के योग्य नहीं है द्रोणाचार्य

praises of Bhishm and Arjun were heard on all sides. 69. Your sons and the Pandavas then fought with bright axes and other weapons. The fighting between Dronacharya and Drupad was very furious." 72

CHAPTER LIII

"Describe the encounter between Dronacharya and Dhrishtadyumna, Sanjaya. I believe fate to be superior to prowess; for Bhushm did not conquer Arjun the Pandav in battle, though he could destroy all the moveables and immoveables. How it was that he did not kill the Pandav Arjun in spite of all his prowess," asked Dhritrashtra of Sanjaya 3. "Hear attentively, king" replied Sanjaya "about the dreadful war. Arjun the Pandav is unconquerable even by gods. Dronacharya wounded Dhrishtadyumna with many arrows

द्रोणस्तु निशतैर्वाणैर्धृष्टद्युम्नमविध्यत । सारथिं चास्य भलेन रथी डाद पातयत् ॥ ५ ॥ तथास्य चतुरो वाहाश्चतुर्भिः सायकोत्तमैः । पीडयामास सकुद्धो घृष्टद्युम्नस्य मारिष ॥ ६ ॥ घृष्टद्युम्नस्तता द्राण नवत्यानिशतैः शरैः । अथ प्रहसन्धीरस्तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ७ ॥ ततः पुनरमयात्मा भारद्वाजः प्रतापवान् । शरैः प्रच्छादयामास घृष्टद्युम्नमर्षणम् ॥ ८ ॥ आददन् शरघारं पार्यताताचकीर्षया । शक्राशनि समस्पर्शं कालदडमिवापरम् ॥ ९ ॥ हाहाकारो महान् सीत् सर्वे सैन्ययु भारत । तमिपुसोधितदृष्ट्वा भारद्वाजं सयुगे ॥ १० ॥ तत्रादभुतमपदयाम घृष्टद्युम्नस्यपौरुषम् । पदकं समरेवीरस्तस्मै गिरिरिवाचल ॥ ११ ॥ तच्चदीप्तं शरघारं मायात मृगुमानन । चिच्छदशरवृष्टिं च भारद्वाजमुमोच ह ॥ १२ ॥ तत उच्चकुशु सर्वे पचाला पाद्वै सह । घृष्टद्युम्नो तत्कर्म कृतं दृष्ट्वा सुदुष्करम् ॥ १३ ॥ ततः शक्तिं महाघुगं

ने नाना प्रकार के वाणों से घृष्टद्युम्नको घायल किया और भल्लों से उसके सारथीको रथके नीचे से नीचे गिरा के महाक्रोधित होकर उस घृष्टद्युम्न के घोड़ोंको भी चार शायकों से महापीडित किया, ताभी बड़े वीर घृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्यको नब्बे तीक्ष्ण शरों से घायल किया और तिष्ठतिष्ठ शब्दों का भी किया तदनन्तर बड़े प्रतापी द्रोणाचार्य जीने उस घृष्टद्युम्नको मारे वाणों के आच्छादित कर दिया । ८ । और उसके मारने के लिये इन्द्रजन् के समान स्पर्श वाले मृत्युदण्डके समान घोर वाणको हाथ में लिया, हे राजा उस युद्ध में द्रोणाचार्य के चढ़ाये हुए उसपाराको देखकर सब मेना में हाहाकार हुआ, उसस्थान में हमने घृष्टद्युम्न के अपूर्व पराक्रमको देखा कि अकेला ही शूरवीर युद्धमें पर्वतके समान अचल होकर नियत खड़ा रहा । ११ । और उस प्रकाशित घोर मृत्युरूप आये हुए वाणको अपने वाणोंसे कट डाला और द्रोणाचार्य के ऊपर वाणोंको बरसाया तदनन्तर घृष्टद्युम्नके किये हुए उस कठिन कर्मको देखकर पारदवों समेत पांचाल

and killed his chariot driver who fell down from his seat. Then in great anger he wounded Dhrishtadyumna's horses with four broad pointed arrows. Dhrishtadyumna pierced Dronacharya with ninety sharp arrows and challenged him with the cry of 'stay, stay'. Then Dronacharya of great prowess covered Dhrishtadyumna with a shower of arrows. He took up a hard arrow like vajra or the staff of Death to destroy Dhrishtadyumna. All the warriors of the army who saw that arrow in the bow of Dronacharya expressed signs of grief. We saw there the matchless prowess of Dhrishtadyumna who stood in battle immovable like a mountain. And seeing that dreadful arrow coming towards him like Death himself, cut it with his own arrows and showered his arrows over Dronacharya. The Pandavas with the Panchals cried loudly at the sight of Dhrishta-

स्वर्णवैद्युर्भूषिताम् । द्रोणस्यनिधनाकांक्षी चित्तोपसपराक्रमी ॥ १४ ॥ तामापहतंती
सहसा शक्तिं कनकभूषिताम् । त्रिधाचच्छेद् समरे भरद्वाजोहसशिव ॥ १५ ॥
शक्तिं विनिहतां दृष्ट्वा धृष्टद्युम्नः प्रतापवान् । दयर्ष्य शरवर्षाणि द्रोणं प्रति जनेश्वर १६ ॥
शरवर्षं ततस्तत्तु सन्निवार्य महायशाः । द्रोणो द्रुपद पुत्रश्च मध्ये चिच्छेद् कार्मुकम्
॥ १७ ॥ सच्छिन्नं घन्वा समरं गदांशुर्वा महायशाः । द्रुणाय प्रेषयामास गिरिहार
मयीं बली ॥ १८ ॥ सा गदावेगवन्मुक्ता प्रायाद्द्रोण जिघांसया । तत्राद्भुतमपदयाम
मारद्वाजस्यपादियम् ॥ १९ ॥ लाघवाद् व्यसयामास गदांशुं विभूषिताम् । व्यसयित्वा
गदांतां च प्रेषयामास पार्यतम् ॥ २० ॥ भद्रान् सुनिशितान् पीतान् वनम सुवान् मुदा
वृणात् । ते तस्य कवचं भित्वा पपुः शोणित माहवे ॥ २१ ॥ अयान्यद्गुरादाय धृष्टद्यु
म्नो महारथाः । द्रोणं युधिपराक्रम्य शरैर्विभ्याधपञ्चाशः ॥ २२ ॥ रुधिराक्तौ ततस्तौतु

देशी लोग उच्चशब्द को पुकारे । ११ । तदनन्तर द्रोणाचार्य के मारने की इच्छा
करनेवाले उस पराक्रमी ने बड़ी वेगवान् सुवर्ण वैद्युर्जटित महाघोर बरछी को
मारा इस बरछी को आता देखकर मसन्नचित्त द्रोणाचार्य ने शीघ्रही अपने बाणों
से मार्ग में काटकर गिरा दिया । १५ । हे राजा तब उस धृष्टद्युम्न प्रतापी ने अप
नी उग्रबरछीको कटा हुआ जान के द्रोणाचार्य के ऊपर अनेक बाणोंको बरसाया
फिर महायशस्वी द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्नकी बाणोंकी बरसाको रोककर उसके
धनुष को मध्य मेंसे काटडाला, फिर उस कटे हुए धनुष वाले महामतापी ने अपनी
एक भारीलोहे की गदाको फिराकर द्रोणाचार्य के ऊपर फेंका, उसके हाथकी
छूटी गदा द्रोणाचार्यके मारनेको शीघ्रही आई तो वहांहमने द्रोणाचार्यके अपूर्व
पराक्रमको देखा । १९ । कि उससुवर्णित घोरगदाको खण्ड २ करके अत्यन्त
तीक्ष्ण पीतांग सुनहरी शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणको धृष्टद्युम्नके ऊपर फेंका
उसबाण ने उसके कवचका काटकर उसके रुधिर को पिया, तदनन्तर बड़ेवीर
धृष्टद्युम्नने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें महा पराक्रमकरके पांचबाणों से द्रोणाचार्य

Dyumnas's deed & prowess 18. Then wishing to kill Dronacharya,
he hurled at him his swift spear, adorned with gold and gems.
Seeing the dreadful dart coming towards him, Dronacharya,
with a cheerful mind, cut it down with his arrows 15. Seeing his
good spear thus cut down by Drona, Dhrishtadyumna showered his
arrows on him. Dronacharya checked the shower of Dhrishtadyu-
mna's arrows and cut his bow from the middle. The brave warrior,
with his bow cut asunder, hurled his iron mace at Dronacharya. We
saw the matchless prowess of Dronacharya when the mace was
coming on to kill him. 19. He cut down the golden dreadful mace
into pieces and discharged a sharp arrow of golden colour at him. The
arrow pierced through the armour and drank his blood. Brave
Dhrishtadyumna then took up another bow and with great prowess

शुशुभते नारपंभौ । वसन्तसमये राजन् पुष्पिताविध किंशुकी ॥ २३ ॥ अमपितस्ततो
 राजन् पराक्रम्य चमूमुखे । द्रोणोद्दिपय पुत्रस्य पुनश्चिच्छदकमुकम् ॥ २४ ॥ अथैन
 छिन्नघन्वानं शरैः सन्नतपर्वाभः अभ्यवर्षदमे यात्रा वृष्ट्यामेघ इवाचलम् ॥ २५ ॥
 सारथिं चास्य भलेन रथनीडां पातयत् । अथास्य चतुरो वाहांश्चतुर्भिर्निशितैः शरैः
 ॥ २६ ॥ पातयामास समरे सिहनादं ननादच । ततो परेण भलेन हस्ताञ्चाप
 मथाच्छिनत् ॥ २७ ॥ सच्छिन्न घन्वा विरधो हस्ताभ्यो हतसारथिः । गदापाणि
 रवारोहत् ख्यापयन् पौरुषं गतम् ॥ २८ ॥ तामस्य विशिखैस्तूर्णं पातयामास
 भागत । रथादनयकूटस्य तदद्भुत मिवाभवत् ॥ २९ ॥ ततः स विपुलं चर्मं शत
 चंद्रैश्च भानुमत् । खड्गचक्रवपुल दिव्य प्रशुल्ल सुमुजो वली ॥ ३० ॥ आमहु
 द्राघ वेगेन द्रोणस्य वधकांक्षया । आमिपार्थी यथा सिंहो वनेमत्तमवद्विपम् ॥ ३१ ॥

को घायल किया, तदनन्तर वहदोनो रुधिरसं भरेहुएवीर ऐसेशोभायमानहुये जैसे
 किं वसंतऋतुमें लालफूलवाले किशुक वृक्षशोभादेते हैं । २३ । हेराजा तदनन्तर
 युद्धभूमि में महाक्रोधरूप द्रोणाचार्य ने बड़े पराक्रम से धृष्टद्युम्नके धनुषं की काट
 कर उसको मारे वाणों के ऐसे ढक दिया जैसे बादल वरसाकरके पर्वत को ढक
 देता है, फिर भलों से इसके सारथी को रथ के नाड से गिरादिया और चारों
 घोड़ोंकोभी चार तीक्ष्ण वाणों से पृथ्वीपर गिरा दिया, और सिंहनाद कर के दूसरे
 वाणसे उसके दूसरे धनुषको भी गिराया । २७ । वह धनुष रथ और घोड़े सारथी
 मृतकवाला धृष्टद्युम्न गदाको हाथ में लेकर अपनी वीरताको मकटकरता हुआ रथसे
 उतरा उससमय द्रोणाचार्य ने बड़ी शीघ्रता से रथ से उतरनेभी नहीं पाया या कि
 उसकी गदाको एक विशिख वाणसे काटकर गिरादिया यह बड़ा अश्चर्यसा हुआ
 तदनन्तर वह सुन्दर भुजाधारी महाबली सुवर्णकी सूर्य चन्द्रमावाली बड़ी डाल और
 दिव्य खड्गको लेकर द्रोणाचार्य के मारनेकी इच्छासे बड़े वेग युक्तशेकर सम्मुख
 पेंते दौड़ा जैसे कि मांसका चाहनेवाला सिंह वन में मत्तवाले हाथीके ऊपर दौड़ता है।

wounded Dronacharya with five arrows. Then the two bleeding
 warriors looked like Kinshuk trees in bloom in the season of spring.
 23 Then Dronacharyn, in the excess of rage, cut down Dhrishtadyumna's bow and covered him with arrows like a hill with clouds.
 Then he killed his chariot driver who dropped down from his seat,
 killed all the four horses with sharp darts and with a lion's roar cut
 down his second bow. 27. Destitute of bow, chariot, horses and
 driver, Dhrishtadyumna leapt down from his chariot, mace in hand,
 showing his prowess; but as soon as he had come down from his chariot,
 Dronacharya cut the mace down from his hand with a sharp arrow.
 All this was a work of wonder. Then that brave warrior of hand-
 some arms, took up his huge golden shield bearing the sun and the

तत्राद्भुतमपह्याम भारद्वाजस्य पौरुषम् । लाघवंचास्त्र योमंच बलवाद्भोश्च भारत
 ॥ ३२ ॥ यदेतं शरवर्षेण वारयामास पार्यतम् । न शशाकततो गतुं बलवानाग सयुगे
 ॥ ३३ ॥ निवारितस्तु द्रोणेन धृष्टद्युम्नो महारथः । न्यवारयच्छरैषां रत्नांघमेणा
 कृतहस्तधत् ॥ ३४ ॥ ततो भीमोमहायुधुः सहस्राभ्यपतद्वली । साहाय्यकारांस
 मरे पार्यतस्य महारमनः ॥ ३५ ॥ सद्रोणनिशितिर्वाणे राजन् विष्वघ सतभिः ।
 पार्यतच्च रथे तूर्ण स्वकमारो ह्यतदा ॥ ३६ ॥ ततो दुर्योधनो राजन् मानुमंतमचो
 वयव । सैन्येन महतायुक्तं भारद्वाजस्य रक्षणे ॥ ३७ ॥ ततः सामहतीसेनाक
 लिंगानाजनेश्वर । भीममत्रयुधयौ तूर्णं तव पुत्रस्य शासनात् ॥ ३८ ॥ पांचाय
 मयसंत्यज्यद्रोणोपि रथिर्नारः । विराट्दुपदी वृद्धी वारयामास संयुगे ॥ ३९ ॥
 धृष्टद्युम्नोपि समरे धर्मराजानमभ्यात् । ततः प्रवृत्ते युद्धं तुमुललोमहर्षणम् ॥ ४० ॥

। ३१ । हे राजा वहाँ हमने द्रोणाचार्य की वीरता और अस्त्रयोग से हस्तलाघवता
 अपूर्व प्रकारकी देखी कि अकेलेनेही बाणोंकी बरसा कर के धृष्टद्युम्न को रोक
 दिया तदनन्तर उस महायुद्ध में कोई महाबली भी जाननेको समर्थ नहीं हुआ, वहाँ
 हमने वड़े रथके समीप नियत और बाण विद्यामें कुशलके समान बाणसमूहों को
 ढाकसे रोकते हुये धृष्टद्युम्न को देखा । ३४ । तदनन्तर महाबाहु पराक्रमी भीमसेन
 युद्धमें महात्मा धृष्टद्युम्न की सहायता करने वाला अकस्मात् आकूटा, हे राजा उस
 ने आतेही अकस्मात् सात बाणों से द्रोणाचार्य को घायल किया और शीघ्रही
 धृष्टद्युम्न को दूसरे रथपर सवार किया इस के पीछे राजा दुर्योधन ने बड़ी सेना
 समेत राजा कलिंगको द्रोणाचार्यजी की रक्षा के निमित्त भेजा । ३७ । तदनन्तर
 हे राजा आपके पुत्रकी आज्ञासे कलिंग देशियों की बड़ी भारी भयानक सेना
 भीमसेन के सम्मुख आई, रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य भी धृष्टद्युम्न को छोड़कर
 मिले हुए वृद्ध विराट् और राजा द्रुपद से युद्ध करने लगे और धृष्टद्युम्नभी युद्धमें
 धर्मराज युधिष्ठिरके पास गया तिस पीछे उस युद्धभूमि में कलिंग देशियों से और

moon, and with his celestial sword ran upon Dronacharya like a raven-
 ous lion upon a mad elephant. 31. Then we saw the matchless prowess
 and dexterity of Dronacharya's hand. He alone checked the advance
 of Dhrishtadyumna with his arrows. No warrior could enter the
 field of battle at that time. We saw Dhrishtadyumna stationed like
 a skilful warrior near his chariot, receiving the shower of arrows on
 his shield. 34. Then Bhimsen of great prowess came suddenly in the
 field of battle to help Dhrishtadyumna and wounded Dronacharya
 with seven arrows. He made Dhrishtadyumna ride another chariot.
 Duryodhan sent the king of Kaling to the help of Drona and the
 dreadful army of Kaling faced Bhim. Droncharya too left Dhrishta-
 dyumna and faced the old kings Virat and Drupad. Dhrishtadyumna

कलिगानां च समरे भीमस्य च महात्मन । जगतः प्रक्षयकर घोररूपभयावहम् ॥४१॥
इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि धृष्टद्युम्नद्रोणयुद्धे
त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ तथाप्रति समादिष्टः कालिंगो घाहनीपतिः । कथमद्भुत
कर्माण भीमसेन महाबलम् ॥ १ ॥ चरंत गदयावीर दंडद्वस्तमिवांतकम् । योधया
मास समरे कालिंगः सहसेनया ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । पुत्रेण तवराजेंद्र सतपे
कोमहाबलः । महत्या सेनया युत प्रायाद्भूमिरथ प्रति ॥ ३ ॥ तामापततीं महतीक-
लिगाना महाचमू । रथाश्वनाग कलितां प्रवृहीतमहायुधाम् ॥ ४ ॥ भीमसेनः
कलिगानाम च्छेद्भारतवाहिनीं । केतुमंतच नैपादि मायात सहचेदिभि ॥ ५ ॥
तत श्रुतापु सतुद्धो राक्षकेतुमतासह । आसत्त्वादरणे भीम व्यूढ नीकेषुचेदिषु ॥ ६ ॥
रथैरनक साहसै कलिगानानराधप । अयुतेन गज नाच निपादैः सह केतुमान् ॥ ७ ॥

महात्मा भीमसेन से महावीर रोमहर्षण संसारका मृत्युकारी घोररूप भयानक
युद्ध हुआ ॥ ४१ ॥

अध्यय ॥ ५४ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि उस आज्ञा पाने वाले कलिगके राजा ने अपनी सेना समेत
युद्धभूमि में आकर उस अपूर्वकर्मी महा बलिष्ठ मृत्यु दण्ड समान गदा हाथ में लिये
वीर भीमसेन से युद्ध करने को मन किया, संजय बोले हे राजेन्द्र इस रीति से
आपके पुत्र से आज्ञा पाकर वह कलिग देशका राजा भीमसेन के रथ के पास
गया, हे भरतवंशी भीमसेन ने घोड़े हाथी और रथों से युक्त उत्तम शस्त्रधारी
कलिगों की बड़ी सेनाको चेदिदेशीय लोगों के साथ आते हुए देखकर केतुमान
निपादों के राजा को घायल किया । ५ । तदनन्तर व्यूहित सेना समेत शस्त्रों
को धारण किये अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायु केतुमान नाम निपादों के राजा के साथ
उस युद्धमें भीमसेन के सम्मुख आया, हे महाराज कलिग देशों के राजा केतुमान ने

went to Yudhishtira and the battle between Bhim and the Kaling
warriors was dreadful to the extreme" 41

CHAPTER LIV

"How did the king of Kaling, ordered by your son, come into the
field of battle, followed by the army? How did he fight with
Bhim the mighty warrior of matchless strength and bearer of mace?"
said Dhritrashtra to Sanjaya, "Having got the permission of your
son, replied Sanjaya, 'the king of Kaling approached the chariot of
Bhim, who, seeing him approach with horses, elephants, chariots
and the soldiers of Chedi, wounded Ketuman the king of Nishadas. 5
Then with his army of armed soldiers, Shrutayu, accompanied with
Ketuman the king of Nishadas, faced Bhimsen in battle. Ketuman
the king of Kalingas surrounded Bhimsen with his army consisting

भीमसेनं रणे राजन् समंतात्पर्यवारयन् । चेदिगस्य करुपाश्च भीमसेनपदानुगाः
 ॥ ८ ॥ अभ्यघावन् समरे निपादान् सहराजभिः । ततः प्रघृतेयुद्धं घोरं रूपंभया
 बहम् ॥ ९ ॥ न प्राजान्तयोधाः स्वान्परस्परजिघांसया । घोरमासीत्ततो युद्धं
 भीमस्यसहस्रापरैः ॥ १० ॥ यथेन्द्रस्य महाराज महत्यादैत्य सेनया । तस्य सैन्य
 स्यसंप्रामे युध्य मानस्यभारत ॥ ११ ॥ वभूय सुमहान्शब्दः सागरस्येव गर्जतः । अन्यो
 न्यरमतदायोधा विकर्षतोविशांपते ॥ १२ ॥ महींचकुश्रितां सर्वां शय लोहित सन्नि-
 भाम् । योधाश्च स्वान् परान्वापि नाभ्यजानन् जिघांसया ॥ १३ ॥ स्वान्प्या ददत
 स्वाशशूराः परमुज्जयाः । विमर्दःसुमहान्सादिपानां बहुभिः सह ॥ १४ ॥ कलिंगैः
 सहचेदीनां निपादैश्च विशांपते । कृत्वा पुरुषकारेण यथाशाक्त महाबलाः ॥ १५ ॥
 भीमसेनं परित्यज्य संन्यवर्ततचेदयः । सर्वैः कलिंगैरासन्नः सन्निवृत्तेषु चेदिषु १६ ॥

बहुत हजार रथ और दश हजार हाथियों और निपादों को साथ में लेकर चारों
 ओर से भीमसेन को घेर लिया, और भीमसेन के आगे चलने वाले चेदिमत्स्य
 और करुष देशोंकी वासी वीर राजाओं समेत एकाएकी निपादों के सम्मुख आकर
 वर्त्तमान हुए तिस पीछे घोर रूप भयानक युद्ध जारी हुआ, फिर एकाएकी परस्पर
 में एक दूसरे को मारने की इच्छासे दौड़ते हुए वीरों का और शत्रुओं के साथ
 भीमसेन का घोर युद्ध जारी हुआ, हे राजा जैसे कि इन्द्रका युद्धदैत्यों की सेनाके
 साथ होता है इसी प्रकार हे भरतवंशी युद्ध में लड़ने वाले बहुत बड़े शब्दों से
 गर्जना करते हुए सागरके समान हुए, हे राजा इसके पीछे परस्परमें महार और घात
 करने वाले युद्ध कर्त्ताओं ने सब पृथ्वीको मांस और रुधिर से पूरित करके शोभित
 किया और मारने की इच्छासे अपने और पराये युद्ध कर्त्ताओं को नहीं पहिचाना
 । १३ । फिर युद्ध में दुर्जय शूरवीरों ने अपनी सेनाके लोगोंको भी शत्रुओं से मारा
 घोड़ों का बहुतों के साथ बड़ाभारी युद्ध हुआ, हे राजा चेदि देशवाले शूरवीरोंका
 युद्ध कलिंग और निपादों के संग हुआ तब चेदिदेशी अपनी सामर्थ्य के अनुसार
 वीरता को करके । १५ । उस भीमसेन को त्यागकर अलग होगये चेदिदेशियों

of thousands of chariots, myriad of elephants and Nishadas. The
 soldiers of Chedi, Matsya and Krosch countries with brave princes, faced
 the Nishadas all of a sudden and a dreadful fight ensued. Bhimsen
 fought bravely with the warriors who ran to fight and kill one an-
 other. The descendants of Bharat roared like the ocean and the
 fighting was as dreadful as that between the gods and asurs. The
 brave fighters filled the land with flesh and blood and did not dis-
 tinguish friends from foes in the heat of encounter. 13. The uncon-
 querable warriors killed with their weapons the people of their own
 army and the battle was furious. The soldiers of Chedi fought against
 those of Kaling and Nishad, and having done their best the people

स्ववाहुवलमास्थायसैन्यवर्ततपांडवः । नचञ्चाल रथोपस्थाङ्गीमसेनोमहाबलः ॥ १७ ॥
 शितैरवाकिरद्वाणैः कलिगानांवरुधिनीं । कालिगस्तु महेश्वासःपुत्रवास्यमहारथः ॥ १८ ॥
 शक्रदेववति श्यातो जघ्नतु.पांडवं शरैः । ततोभीमो महाबाहुर्विधुन्वन्नरुचिरघ्नमुः ॥ १९ ॥
 योषयामास कालिगं स्ववाहुवलमाश्रितः । शक्रदेवस्तुसमरे विस्त्रजन्सायकान्वहन् २० ॥
 बभ्रान जघान समरे भीमसेनस्य सायकैः । तं दृष्ट्वा विरथ तत्र भीमसेन मरिदमम्
 ॥ २१ ॥ चक्रदेवोभि दुद्राव शरैरवाकिरन् शिवैः । भीमस्यो परि राजेंद्र शक्र दशो महा
 बलः ॥ २२ ॥ घवर्ष शरधर्षाणि तपन्ते जलदो यथा । इताभ्येतु रथे तिष्ठन् भीमसेनो
 महाबलः ॥ २३ ॥ शक्र देवाय चिह्नोप सर्व शैक्यायथो गदाम् । स तयानिहतोराजन्
 कालिगं तनयो रथात् ॥ २४ ॥ विरथः सहस्तेन जगाम धरणीतलम् । इतंमारमसुतं
 दृष्ट्वा कलिगानां जमाधिपः ॥ २५ ॥ रथैरनेकसाहस्रैर्भीमस्याधारयद्दिशः । ततो भीमो

के अलग होजानेपर सब कलिग देशियों के सम्मुख होकर पांडव भीमसेन अपने
 भुजाबल में स्थिर होकर खड़ा रहा अर्थात् वह महाबली भीमसेन अपने रथ से नहीं
 हटा । १७ । और कलिग देशवासियों को भी अपने तीव्रबाणों से ढक दिया तब
 बड़े धनुषधारी कलिग के राजा और उसके पुत्र महारथी शक्रदेवने बाणों से भीम-
 सेन को घायल किया तदनन्तर अपने भुजबल से रक्षित सुन्दर धनुष को हिसाते
 हुए महाबाहु भीमसेन ने राजा कलिगको लड़ाया और युद्ध में अनेकबाण छोड़ते
 हुए शक्रदेवने भीमसेन के चारों घोड़ों को मारा फिर शक्रदेव उस शत्रुहन्ता भीम-
 सेनको विरथ देखकर अपने तीक्ष्ण बाणों से ढकता हुआ उसके सम्मुख दौड़ा
 फिर महाबली शक्रदेवने भीमसेन के ऊपर बाणों की ऐसी बरसाकरी जैसे वर्षा
 ऋतु में घेव जल को बरसाता है मृतक घोड़ों के रथपर चढ़े हुए महाबली भीमसेन ने
 । २३ । अपनी लोहेकी गदाको शक्रदेव के ऊपर फेंका हे राजा कलिग के राजा
 का पुत्र उस गदासे मरकर ध्वजा और सारथी समेत रथसे पृथ्वी पर गिरा कलिग
 देशके महारथी ने अपने पुत्रको मरा हुआ देखकर । २५ । हजारों रथों समेत

of Chedi left Bhimsen to fight alone. At this, Bhimsen the Pandav
 faced the armies of Kaling and stood firmly fighting in his own cha-
 rriot. 17. He covered the Kalingas with his arrows. Then the great
 archer king of Kaling and his brave son Shakra dev wounded Bhimsen
 with their arrows. Bhim, protected by the strength of his own arms
 alone, fought with the king of Kaling. Shakra dev killed all the four
 horses of Bhimsen with his arrows and seeing him destitute of the
 use of his chariot covered him with his arrows like a shower of rain.
 Bhimsen, mounted on his chariot with the horses dead, hurled his
 mace at Shakra dev. The son of the king of Kaling, struck by that
 mace, fell down dead upon earth together with the banner and driver.
 Then the warrior king of Kaling, seeing his son dead, 25, checked

महावेगां त्वरुः प्रायुगीं महागदम् ॥ २६ ॥ निखियु माददे घोर चिकीर्षुः कर्म
 वारुणम् । चर्म व्याप्रतिमं राजन् न र्पमं पुरुषर्षभ ॥ २७ ॥ नक्षत्रैर्द्ध्वजैश्च दातकुम्भ
 भयेभितम् । कालिगस्तु ततः कुद्धो धनुर्ध्यामघमृज्यच ॥ २८ ॥ प्रगृह्य च शरघोर मेकं
 सर्पं विषोपमम् । प्राहिणोद्भ्रामसेनाय यथाकांक्षी जनेश्वरः ॥ २९ ॥ तमापतन्तं धेगेन
 प्रेरितं निशितं शरम् । भ्रामस्तनो द्विधाराजं विच्छेद विपुलासिना ॥ ३० ॥ उदकोदाच्च
 सेहृष्टासयानोवर्धनीम् । कालिगोपततः कुद्धो भीमसेनाय संयुगे ॥ ३१ ॥ तोमरान्
 प्राहणोच्छ्रंघं चतुर्दश शिला शितान् । तानप्राप्तान महायाहुः खगतानेवपाण्डवः ३२ ॥
 विच्छेदसहसाराजन् नसंघ्रांतो वरासिना । निहृत्य तु रणे भीमस्तोमराग्नौ चतुर्दश ३३
 भानुमन्तं ततो भीमः प्राद्वत् पुरुषर्षभः । भानुमास्तुततो भीमं शरवर्षेणच्छादयन्
 ॥ ३४ ॥ ननाद बलवद्वादं मादयन् नो नभस्तलम् । नचतं ममृपे भीमः सिंहनादं महाह
 वे ॥ ३५ ॥ ततः शब्देन महता धिनन द महास्थनः । तेन नादेन विव्रता कालिगानां

भीमसेनकी दिशाओं को रोका तदनन्तर हे राजा पुरुषोत्तम भीमसेन ने गदाको
 छोड़कर अनुपम खड्ग और दालको हाथमें लिया वह दाल सुनहरी नक्षत्र और शरबर्ध्वजों
 से जटित थी तदनन्तर क्रोधमें आकर राजा कालिंग ने धनुषकी ज्याकी चढ़ाकर सर्पके
 विषके समान एक महाघोर बाणको लेकर मारनेकी इच्छाकरके भीमसेनके ऊपर फेंका
 । २९ ॥ हे राजा उस गिरतेहुए विष संयुक्त बाणको भीमसेनने अपने खड्गसे दो खण्ड
 कर दिये । ३० ॥ और आपकी सेनाको भयभीत करता हुआ बड़ा मसन्नचित्त बड़े
 शब्द से पुकारा तदनन्तर राजा कालिंग ने महाक्रोधित होकर शीघ्रही भीमसेनके
 ऊपर शिलासे तीक्ष्ण कियेहुए चौदह तोमरोंको फेंका तब भीमसेन ने अपने उत्तम
 खड्ग से समीप में न पहुँचने वाले उन तोमरों को बीचही में काटा हे पुरुषोत्तम वह
 भीमसेन उस युद्धमें चौदह तोमरों को काटकर समीप आये हुए भानुमन्तके सम्मुख
 दौड़ा तदनन्तर भानुमन्त तीरों की वर्षासे भीमसेन को ढककर आकाश
 और पृथ्वी को शब्दायमान करके महाशब्द का करनेवाला हुआ तब भीमसेन उस
 सिंहनादको न सहकर अपनी महागर्जना करके गर्जा कालिंग देशों की सेना उस

Bhimsen, on all sides with thousands of chariots. Then Bhim the
 best of men left his mare and took up the matchless sword and the
 shield decked with gold stars and half moons. The king of Kaling,
 in great anger, shot from his bow an arrow dreadful like a venomous
 serpent, but Bhimson cut it down with his sword. 30. And causing
 fear in your army he uttered a loud roar with a cheerful heart. Then
 the king of Kaling, in the excess of anger, shot Bhim with fourteen
 sharp arrows, but Bhimsen cut them all with his sword before they
 had touched him. Having cut those fourteen arrows, Bhim attacked
 Bhanumant who was near. The latter covered Bhim with arrows and
 filled the earth and firmament with his roar. Unable to bear that roar,

पुरुधिनी ॥ ३६ ॥ नभिमं समरे मेने मानुष भरतर्षभ । ततो भौमो महाबाहुर्नर्दित्वापि
 पुल ह्वनम् ॥ ३७ ॥ सागर्व्येणवदाच्छ्रुत्य दन्ताभ्यामरारणोत्तमम् । आदरोह ततोमन्य
 नागराजस्य मारिष ॥ ३८ ॥ ततो मुमोच कालिंग शक्तिमरुरोश्चक्रवा । खड्गेन
 पृथुनामध्ये मानुमन्त मधाच्छिनत् ॥ ३९ ॥ सौतरायुधि न हत्वा राजपुत्रमारिदम् । गुरु
 भारसह स्कन्धे नागस्यासि मपातयत् ॥ ४० ॥ छिन्नस्कन्ध सधिनदन् पपातगजयूष
 प । आरुण सिंधु धेगेन सानुमानिव पर्वत ॥ ४१ ॥ ततस्तस्मादवच्छ्रुय गजाङ्गारतं
 भारत । खड्गपाणरदानात्मा तस्थौ भूमौ सुदशित ॥ ४२ ॥ सचञ्चारवह्नन्मार्गानभि
 त पातयन्गजान् । अग्नि चक्र मियाविद्ध सर्वत प्रत्यदृश्यत ॥ ४३ ॥ अथ वृद्धेपुनामै
 पुरधानीकेषु चा भिम् । पदातीनाच्च सधेषु त्वनिघ्नन्शोणितो हित ॥ ४४ ॥ श्येनवद्

शब्द से भयभीत हुई । ३६ । हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र युद्ध में सर्वोंने भीमसेन को
 मनुष्य नहीं माना इसके पीछे भीमसेन बड़े उच्चशब्द को करके, खड्ग समेत
 महावेगसे दौड़कर हाथी के दांतों के द्वारा उत्तम हाथीपर चढ़गया और शीघ्रही,
 हाथीकी पीठपरहोगया, फिर बड़ेखड्गसे भानुमन्तकी कमरको काटकर उस
 शत्रुहन्ताने युद्धभूमि में उस राजकुमार को मारकरबड़ेभारी खड्ग को हाथीके कंधेपर
 गिराया उसके प्रहारसे वह गजराज हाथीपृथ्वीपर ऐसे गिरपडा । ४० । जैसे कि रत्नों
 से प्रकाशित पहाड समुद्र के वेग से टूटकर गिरपडता है हे भरतवंशी वह महाबनी
 भीमसेन गिरते हुए हाथी से कूदकर हाथ में खड्ग लिये महा अलंकृत शस्त्रयुक्त
 प्रसन्न मन होकर पृथ्वी पर नियत हुआ और निर्भय होकर अनेक हाथियों को
 गिराताहुआ बहुतसे मार्गों में घूमा । ४२ । फिर वह समर्थ घोड़ों के हाथियों के
 और रथोंके समूहों में सत्र ओर से गोल अग्नि के समान दिखाई दिया, महाबली
 भीमसेन उस युद्धभूमि में पत्नीरूप पदातियों के समूहों में बाज पत्नी के समान सब
 को मारता और घूमता दृष्ट पडा, फिर वह बड़ा वेगवान् भीमसेन तीक्ष्ण धार वाले

Bhim roared a louder roar and terrified the Kalingas 36. From the
 prowess of Bhim in battle people regarded him as superhuman.
 Having uttered the dreadful roar, Bhim ran sword in hand, and
 mounting the elephant by the tusks cut asunder the body of
 Bhanumant at the waist. And having killed the prince in the field
 of battle Bhim set his sword fall over the elephant's shoulder.
 With that blow the elephant fell to the ground (10) like a gem
 bedecked mountain by the action of the sea. Bhim of great prowess
 leapt down from the shoulder of the falling elephant and sword in
 hand stood on earth with a cheerful mind. He fearlessly cut down
 several elephants and roamed through many paths. That capable
 warrior, roaming through horses, elephants and chariots seemed like
 a circle of fire. Brave Bhim looked like a hawk entering and

व्यचरन्भीमो रणेऽरिपुवलोत्कटः । छिदस्तेपांशरांराणि शिरांसिच महाबलः ॥ ४५ ॥
 खड्गेन शितघारेण संयुगे गजयोधिनाम् । पदातिरेकः संरुद्धः शत्रुर्भीमवर्द्धनः ४६ ॥
 संमोहया मास खतान् कालांतक यमोपमः । सूढाश्चते तमे वाजौ विनदन्तः समाद्र
 वन् ॥ ४७ ॥ सास मत्तम वेगेन वचरन्तं महारणे । निकुर्य रथिनांचाजौ रथेषाथयुगा
 निच ॥ ४८ ॥ जघान रथिनश्चापि बलवान् रिपु मर्दनः । भीमसेनश्चरन्मार्गान् सुग्रहन्
 प्रायदृश्यत ॥ ४९ ॥ अतिमाविद्ध मुद्ग्रांतं माप्लुतं प्रयत्प्लुतम् । संपातं समुदीर्घच
 दर्शयामास पाण्डवः ॥ ५० ॥ हेचिदप्रासिनाच्छिन्नाः पांडवेन महात्मना । विनेदुर्भिन्न
 मर्माणो निपेतुष्यतासवः ॥ ५१ ॥ छिन्नदन्ताग्रहस्ताश्च भिन्नकुम्भास्तथा पर । वियोधाः
 स्वान्यनाकानि जघ्नुर्भारतवारणाः ॥ ५२ ॥ तपेतुर्गुर्यां च तथा वनदन्तो महारवान् ।

खड्ग से उन युद्धकर्त्ता हाथियों के सवारों के शिर और देहोंको काटता हुआ
 देखने में आया । ४५ । शत्रुओंके भय उत्पन्न करनेवाले अत्यन्त क्रोधरूप मृत्युके
 समान पदाती अकेले भीमसेनने उन सब शूरवीरोंको मोहितकिया, उसमहाभारी युद्ध
 में हाथमें तीक्ष्ण खड्ग को लिये बड़े वेगवान् भीमसेनको घूमता हुआ देखकर सब
 लोग अत्यन्त व्याकुल और अचेत होकर पुकारते हुए भागे, फिर शत्रुहन्ता पराक्रमी
 भीमसेन ने युद्ध में रथियों के रथ जुए आदि को काटकर रथियों को भी मारा
 । ४८ । ओह बहुत मार्गों में घूमताहुआ दिखाई दिया हे भरतवंशी फिर भ्रांत उद्
 भ्रांत आविद्ध आप्लुत प्रम तेस्त्य संपात समुद्ररण अर्थात् घुमाना ऊंचाघुमाना टेढ़ा
 घुमाना शरीर में लयकरना झुकेपर झुकाना सब खड्ग का प्रहार बड़े बलसे मारना
 क्रमसे इन सब दशाओं को दिखाया हे राजा कितनेही शूरवीर भीमसेन के खड्ग
 के अग्रभाग से कटगये और टूटे कचवाले गर्ज २ कर मरगये इसीप्रकार से हे
 राजा दांत और मूडोंकी नोक टूटे मस्तक फटे चोट खायेहुए शूरवीरोंसे रहित हाथियों
 नेभी अपनी ही सेनाको मारा और बड़े भारी शब्दोंको कांके वह सब पृथ्वीपर गिरपड़े
 । ५२ ॥ और हे राजा कटेहुए तोमर वा बड़े भारी शिं वा सुवर्णसे जटित परशे वा सुवर्ण से

killing the foot soldiers like a flight of birds. Then he was seen
 cutting asunder the heads and bodies of the elephant riders. 45.
 Terrifying the enemy, that angry figure like Death, Bhimsen alone
 made all the warriors insensible. With the sharp sword in his hand,
 in the field of battle, Bhimsen was the terror of all the warriors.
 They ran away from him crying for fear. Bhimsen of immense
 prowess cut asunder the yokes of chariots and killed the charioteers.
 48. Roaring through many paths and performing various feats with
 his sword, Bhimsen cut down numerous warriors who fell dead
 crying, pierced through their armour. The elephants with their tusks,
 trunks and heads cut and broken and destitute of their riders fell
 upon their own army and fell down on earth with hideous cries. 52.
 We saw the weapons, heads, golden axes, the gem bedecked trappings

छिन्नाश्रुतोमरान् राजन् महामात्रशिरांसि च ॥ ५३ ॥ परिस्तोमोन्विचिन्नाश्रु कक्ष्या
 श्वकनकोज्ज्वलाः । प्रैवेथाण्यथं शक्तीश्च पताकाः कणपांस्तथा ॥ ५४ ॥ तूणीरानुप
 यंत्राणि विचित्राणि धनुंपिच । मिदिपालानि शुभ्राणतोत्राणि चांकुशैः सह ॥ ५५ ॥
 घटाश्च विचिर्घा राजन् ह्यगभर्तृसकूनपि । पततः पातताथैव पश्यामः सहसादिभिः
 ॥ ५६ ॥ छिन्नगात्राश्च करैर्निहतैथापि चारणैः । आसीद्भूमः समास्तीर्णापतितैर्धुधै
 रव ॥ ५७ ॥ विमृद्यैव महान गान् ममर्दान्याग्महाबल । अश्वारोहवरांश्चैव पातथा
 मास संपुगे ॥ ५८ ॥ तद्घोरमभवयुद्धं तस्य तेषां च भारत । खलूनाम्यथ योक्ताण
 कक्ष्याश्वकनकोज्ज्वलाः ॥ ५९ ॥ परिस्तोमाश्च प्रासाद्य ऋष्टयथमहाघनाः । कवचा
 न्यथचर्माण चित्राण्यास्तरणानच ॥ ६० ॥ तत्र तत्रापविद्धानि व्यददयंतमहाद्द्वेषे ।
 प्रासैर्यत्रैर्विचित्रैश्च शस्त्रैश्च विमलैस्तथा ॥ ६१ ॥ सचक्रेवसुधांकीर्णा शवलैः कुसुमैरिव ।
 आप्लु-यरापनः कांश्चत्पराभृश्व महाबल ॥ ६२ ॥ पातयामास गङ्गेन सध्वजानपि

जटित स्वच्छभूलें वा ग्रीवाके भूपण हाथियों की भूपणों समेत पताका वा तूणीर यन्त्र
 विचित्र धनुष वा इवेत वर्ण के अग्निदण्ड वा अंकुशों से युक्त चावकोंको वा
 नानामरुतके घंटे और सुनहरी खड्गों की मूठोंको भी, सवारों समेत गिरेहुए और
 जहां तहां पड़ेहुओं को देखताहूं जिनके अंग और आगे की मूठ के भाग कटगये
 और जो मरभी गये उन हाथियों से वह पृथ्वी ऐसी होगई जैसी किगिरेहुए पहाड़ोंसे
 होजाती है, उस नरोत्तम ने इसप्रकार बड़े २ हाथियों को मारकर घोड़ोंको भी
 मर्दन किया । ५७ । और घोड़ों के उत्तम २ सवारों को भी मारकर गिराया हे
 भरतर्षभ तेरे पुत्रों का और पारण्डव लोगों का वह महा घोर युद्ध हुआ, विचित्र
 लगाम और उत्तम सुवर्ण से मीढत भूलें परसे तोमर प्रास दुधारेखड्ग कवच दालें
 और अनेक रत्नवाले विस्तर यह सच उस महायुद्ध में जहां तहां कटेहुए बहुमूल्यके
 दिखाई दिये । ६० । इसके विशेष उसने विचित्र पोथयन्त्र और स्वच्छ खड्गोंसे
 भी पृथ्वी को ऐसा व्याप्त करदिया कि जैसे कमलोंसे शवल व्याप्त होताहै, महाबली
 पांडव भीमसेनने सेनामें जाके कितनेही रथियोंको मर्दनकरके खड्ग से ध्वजाधारियों

and neck ornaments of elephants, banners, quivers, machinery bows
 of sorts, fire weapons, goads, whips, bells, swords with gold
 handles and riders fallen down on earth here and there. With the
 carcasses of elephants the ground looked as if it was strewn over with
 hills That best of men cut and killed the elephants and horses. 57.
 He killed the best riders as well. Thus the battle was dreadful bet-
 ween your sons and the Pandavas. Various sorts of bridles, golden trap-
 pings, battle axes, tomars, prases, double edged swords, arrows, shields
 and gem bedecked beds of great value were seen lying cut and mangled
 here and there. 60. Besides these the ground was strewn with
 other weapons and bright swords like lilies on a tank. The Pandav
 Bhimsen of great prowess entered the lists and cut down the chariot-

पांडवः । मुहुकपतनो दिशुघावतथ यशास्त्रिनः ॥ ६३ ॥ मार्गोद्यचरतधिप्रंध्यस्मयंत-
 रणेजनाः । ससघानपदाकांषिद्व्याक्षिप्यान्यानपोद्यत् ॥ ६४ ॥ सद्गे माग्वांयच्छिच्छे
 दनादेनाग्वांथ भीमयन् । ऊरुवेगेन व्याप्यन्याग्वातयामास भूतले ॥ ६५ ॥ अपरचेनमा
 लोक्य भयात्पञ्चस्य मागताः । पंचसा बहुला सेना कलिगानां तरास्त्रयनाम् ॥ ६६ ॥
 परिषार्य रणे भीम भीमसेन मुपाद्रवत् । ततः कालिंग सैन्यागां प्रमुखे भरतर्षभ ६७ ॥
 श्रुतायुष मभिम्रेह्य भीमसेनः समभ्ययात् । तमायांत मभिम्रेह्य कालिगोनवभिःशरैः
 ॥ ६८ ॥ भीमसेन ममेयात्सा प्रत्यविभ्यस्तनांतरे । कालिगयाणाभि हतस्तोत्रार्दित
 इषाद्वयः ॥ ६९ ॥ भीमसेनः प्रजज्वाल क्रोधेनामिरीधैधितः । अभासोकः सगादाय
 रयंहेम परिष्कृतम् ॥ ७० ॥ भीमसंपादयामास रथेनरथसारथिः । तमारुह्यरथं तूर्ण
 कौतियः शत्रुसदनः ॥ ७१ ॥ कालिंगमामं दुद्राव तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् । ततःश्रुतायु
 कोभी गिराया, युद्ध में उस उग्र रूपके वारम्बार इधर उधर दिशाओं में गिरते
 दौड़ते और चित्रमार्गोंमें घूमतेहुये जो देखके मनुष्य वड़े आश्चर्य में हुये, कितनोंको
 तोचरणोंहीसे मारा किलीको खँचकर मारा । ६३ । किसीको खड्गसे मारा किसी
 को शब्दसे भयभीत किया, किसीको जंघाओंके वेगसे पृथ्वीपर गिरायाइनसबवार्ताको
 देखतेहुये अन्यलोग वड़ेभयातुर होकर भागगये, इसरीतिसे मरीकुट्टेवेगवन् कलिगदेशी
 योंकी वड़ीसेना युद्धमें भीमजीको मध्यवर्ची करके भीमसेन के सम्मुख दौड़ी, तदन्तर
 भीमसेन कलिगकी सेनाके आगे श्रुतायुषको देखकर उसके सम्मुख गया उस वड़े
 बुद्धिमान् कलिगदेशीने भीमसेनकी आताहुआ देखकर नवतीरोंसे हृदयके मध्य में
 घायल किया, अंकुशसे पीड़ित हाथीके समान वाणोंसे घायल भीमसेन क्रोधसे
 ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि इंधनसे अग्नि प्रज्वलित होती है, तदनन्तर रथियों
 में श्रेष्ठ अशोकने सुनहरी अंगवाले रथको साथलेकर भीमसेनको सवार करवाया
 शत्रुहन्ता भीमसेन वही शीघ्रता से उसरथ पर चढ़कर । ७० । श्रुतायुषके सम्मुख
 दौड़ा और तिष्ठतिष्ठ शब्दको कहा, वदनन्तर अपनी इस्तलाघवताको दिखातेहुये

ears and banners with his sword. Seeing that dreadful form again and again falling, running and roaming in various paths, the people were much amazed. Some he killed with his feet, others he dragged down to death. 63. Some he killed with his sword, others he frightened with his roar. Some he hurled down with the velocity of his legs, others fled in terror at the sight of these atrocities. Thus destroyed and cut down, the large army of the Kalingas, with Bhishma at their head, rushed upon Bhim. Seeing Shrutayush in front of the Kaling army, Bhim came upon him. That wise Kalinga, seeing Bhimsen coming towards him, wounded him in the middle of the breast. Like an elephant wounded by goad, Bhimsen wounded by the arrows, flew into a rage, as fire burns with dry wood. Then Ashok the best of warriors caused Bhimsen to mount a golden chariot.

धैर्यवान्भीमपनिशितान् शरान् ॥ ७२ ॥ प्रेषया मास संकुद्धो दर्शयन् पाणिनाघवम् ।
सकार्मुकवरोत् सृष्टेऽवभिर्निशिनैः शरैः ॥ ७३ ॥ समाहतो महाराज कालिंगेन महा-
त्मना । संचुकुशेभृशभीमो देहाहतइवांग ॥ ७४ ॥ क्रुद्धश्चापमायम्यः पलवद्बलिनां
घरः । कालिंगमघधीत् पायो भीमः सप्तभि रायसैः ॥ ७५ ॥ क्षुराश्यां चक्ररक्षोच
कालिंगस्यमहावली । सत्यदेव च सत्यंचग्राहणोद्यमसादनम् ॥ ७६ ॥ ततः पुनरमे-
यात्मा नाराचैर्निशितैस्त्रिभिः । केतुमंतरणे भीमोऽगमयद्यमसादनम् ॥ ७७ ॥ ततः कलिं-
गाः संक्रुद्धा भीमसनममर्षणम् । धनकैर्वहसाहस्रैः क्षत्रियाः समवारयन् । ७८ ॥
ततः शक्तिगदा खड्गतोमरष्टिं परश्वधैः । कालिगाथ ततो राजन् भीमसेनमवाकिरन्
॥ ७९ ॥ संनिचार्य सतां घोरंशरवृष्टिं समुत्थिताम् । गदामादायतस्सासनिपत्यमहा-
वलः ॥ ८० ॥ भीमः सप्तशतान् वीराननयद्यमसादनम् । पुनश्चैवद्विसाहस्रान् कालिगान्

महाक्रोध रूप बलवान् श्रुतायुषने वडं तीक्ष्णवाणोंको भीमसेनके ऊपर फेंका, हेराजा
श्रुतायुषके उत्तमधनुषसे छुटेहुये तीव्रनववाणोंसे घायल महावली भीमसेन ऐसामहाक्रो-
धितहुआ जैसे कि लकड़ीसे घायल सर्प क्रोधित होता है, पराक्रमियोंमें श्रेष्ठ क्रोधित
भीमसेन ने वड़े भारी धनुषको चढ़ाकर, सातलोहेके वाणोंसे श्रुतायुषको मारा ७४ और
वाणों सेही श्रुतायुषके दोनों महावलीपायोंके रक्षकसत्यदेव और सत्यको यमलोक
भेजा । ७५ । इसके पीछे महा साहसी भीमसेन ने तीव्रनाराचोंसे केतुमन्तको यम
लोकमें पहुंचाया फिर कालिंग देशी क्षत्रियों ने अत्यन्त क्रोधित होकर हजारों
सेनाओं से उस क्रोधित भीमसेन को लड़ाया तदनन्तर हे राजा सैकड़ों कालिंग
देशियोंने वरछी गदा खड्ग तोमर दुधाराखड्ग और परशों के डारों भीमसेन को
रोका, तब भीमसेन ने उनको और उनके वाण समूहों को बहुत अच्छी रीति से
रोककर, गदाहाथ में धिये बड़ी तीव्रतासे दौड़कर सातसौ वीरोंको यमलोक में
पहुंचाया । ८० । फिर उसी शत्रुहन्ताने कालिंग देशियों के दोहजार वीरों को

Bhim attacked Shrutayush with a cry of 'stand stand' Then showing
his skill of hand Shrutayush in great anger wounded Bhimsen of great
prowess with his arrows. This made Bhimsen angry like a serpent
hit by a stick. Bhimsen of great prowess in the excess of anger, pi-
erced Shrutayush with seven steel arrows shot from his huge bow. 74.
With two arrows he killed Satyadev and Satya the two powerful
guards of Shrutayu. 74. Then with three sharp arrows Bhimsen
of great prowess killed Ketumant. The kshatriyas of Kaling attacked
Bhimsen in great numbers and hurled at him hundreds of spears,
maces, swords, tomars, double edged swords and axes. Bhimsen checked
the shower of their weapons and arrows very bravely and rushing
upon them, mace in hand, killed seven hundred of the Kaling warriors
in a short time. 80. Then the destroyer of enemies killed two

रिमर्दनः ॥ ८१ ॥ प्राहिणेन्मृत्यु लोकायतद्भुत मिराभयत् । एधं सतान्यनीकानि
 कालिगानां पुनः पुनः ॥ ८२ ॥ विभेदसमरे तूर्णं प्रेक्ष्यभीम महारथम् । हतारोहा-
 क्षमातंगा पाडवेन कृतारणे ॥ ८३ ॥ विप्रजगमुरनीकेषु मेघाघात इताइव । सुदन्तः
 स्थान्यनीकानि विनन्दत शरातुरा ॥ ८४ ॥ ततो भीमो महागडुः खड्गहस्तोमहाभुजः ।
 संग्रह्यो महाघोषे शङ्खप्राभापयद्वली ॥ ८५ ॥ सर्वं कालिंग सैन्यानां मनांसि समर्पय
 यत् । मोहश्चापि कालिगानामा विवेशपरंतप ॥ ८६ ॥ प्राकपतच्च सैन्यानि चाहता
 निचसर्वश ॥ भीमेन समरे राजन् गर्जेद्रेणयसर्वश ॥ ८७ ॥ मार्गान् वहन् विचरता
 वाघताञ्च ततस्ततः । मुहुर्भवतगचैव संमोहः समपद्यत ॥ ८८ ॥ भीमसेन भयव्रस्तं

कालवश किया यह बड़ा आश्चर्यसा हुआ, इसप्रकार उसभयानक पराक्रमी महावीर
 भीमसेन ने कालिंग देशियों की उन सेनाओंको युद्धमें वारंवार भगाया, और
 अतंख्य हाथियों की सवारों से रहित किया फिर वह हाथीभी वागों से पीडित
 होकर अपनी सेना को मारते छंदते अत्यन्त गर्जते हुए सेनाके मध्य में से ऐसे भाग
 गये जैसे कि वायु से टक्कर खाये हुए बादल इधर उधर होजाते है । ८३ ।
 तदनन्तर खड्गहाथ में लिये महाबली, अत्यन्त प्रसन्न चित्त भीमसेन ने बड़े धोर
 शङ्खको बजाकर सब कालिंग देशी सेना के हृदयको कंपाया, हे परन्तप धृतराष्ट्र
 कालिंग देशियों में मोह पैदाहुआ और सवारियों समेत सब सेना के लोग अत्यन्त
 भयभीतहुए, युद्धमें सब ओर से गर्जेद्रे के समान मार्गोंमें द्रमते और जहाँ तहाँ सब
 दौड़ते अथवा वारम्बार उछलते भीमसेन के देखने से बड़ामोह अर्थात् विह्वलता
 प्राप्तहुई । ८७ । वह सेना भीमसेन के भयसे ऐसी अत्यन्त कम्पायमान हुई जैसे
 बड़े ग्राहसे पीडित सरोवरहोताहै, भीमसेन से कौरवोंके भयभीत होनेसे और चारों
 ओरमे उनकालिंग देशियों के लौटने और भागजाने पर पाण्डवों के मेना पति ने

thousand warriors of the Kalingas, causing wonder to all Thus, Bhimsen of dreadful deeds, again and again, routed the Kaling army and made numerous elephants riderless. The elephants, wounded by arrows, fled through the midst of the army trampling down the soldiers and shrieking, and vanished like clouds propelled by the wind 87. Then, sword in hand, that great warrior blew his conch in the excess of cheer and shook the hearts of the Kalingas. They became faint hearted and all the peop's of the army with their beasts were much frightened Roaring like the pounce of elephants in the way and running hither and thither, with occasional jumps and bounds, Bhimsen was the cause of uneasiness to all The army trembled with the fear of Bhimsen like a lake agitated by a large crocodile. When the Kauravas were so awe struck by Bhim and the Kalingas were running away or turning back, the leader of the Pandav army

सैन्यं च समकंपत १- क्षोभ्यमाणमसंवाद्यं ग्राहेणैव महत्सरः ॥ ८९ ॥ प्राक्षितेषु च
सर्वेषु भीमनाद्भुत कर्मणा । पुनरावर्तमानेषु विद्रवत्सु च सद्यः ॥ ९० ॥ सर्वकालिग
योधेषु पांडुनां च जनीपतिः । अत्रवीत् स्वान्यनीकानि युध्यध्वमिति पार्षतः ॥ ९१ ॥
सेनापति वचः श्रुत्वा शिखण्डि प्रमुखागगाः । भीममेवाभ्यवर्तेत रथानीकैः प्रहारिभिः
॥ ९२ ॥ धर्मराजधत्तान् सर्वां नृपजग्राह पांडवः । महतामेघ धर्षेण नागानीकेन पृष्ठतः
॥ ९३ ॥ एवं सेनायसर्वाणि स्वान्यनीकानि पार्षतः भीमसेनश्च जग्राह पार्षितं सत्यु
रुपेयुतः ॥ ९४ ॥ नाह पंचालराजश्च लोके कश्चन धिचते । भीम सात्यकयोस्त्यः
प्राणेष्यः प्रियकृत्तमः ॥ ९५ ॥ सोपश्यच्चकालिगेषु च रतमारसूदनः । भीमसेनं महाबाहू
पार्षतः परवीरहा ॥ ९६ ॥ नगर्दं बहुधा राजन् दृष्ट्वा सात्परंतपः । शङ्खध्मौ च समरे
सिंहनादं ननाद च ॥ ९७ ॥ सचपारावर्ताभ्यस्यरथे हेम परिपृष्ठते । कोविदारभ्यजे दृष्ट्वा
भीमसेनः समाभ्यसत् ॥ ९८ ॥ घृष्टयुग्मस्तुतदृष्ट्वा कालिगैः समभिदुतम् । भीमसेनम्

आज्ञादी किं तुमभी लड़ो । ९० । हे भरतवंशी शिखण्डी जिनमें उत्तमहैं वह भीमना
सेनापतिके वचनको सुनकर, प्रहारकर्त्ता रथियों समेत भीमसेनके पास वर्त्तमान
हुई, और धर्मराज युधिष्ठिर ने मेघवर्ण हाथियों की बनी सेना समेत पीछे की
ओर से उन सबको रक्षित किया इस रीतिसे घृष्टयुग्म सेनापतिने अपनी सव सेना
को चलाकर अच्छे पुरुषों समेत भीमसेनके पृष्ठभाग को रक्षित किया, इस लोक
में भीमसेन और सात्यकी के सिवाय पंचालेश राजा घृष्टयुग्मको कोई अन्य प्राणी
से प्यारा नहीं है वह शत्रुहन्ता घृष्टयुग्म कालिगोंके मध्यमें घुमतेहुए महाबाहु भीमको
देखकर सबओर को गर्ज कर महा प्रसन्न हुआ । ९६ । फिर उनसे युद्धमें शत्रुको
बर्जाकर महा सिंहनाद को किया तब वह भीमसेन उस कपोत के समान घोड़ों से
युक्त सुवर्णसे मंडित रथपर कचनार वृक्षकी ध्वजा धारी को बैठा हुआ देखकर विस्वास
युक्त हुआ और बहसाहसी घृष्टयुग्म उन कालिग देशियोंको भीमसेनकी ओर दौड़ते
देखकर उसकी रत्ताके लिये युद्धमें घुनकर उसके पास आया तब उन महासाहसी घृष्टयुग्म
और भीमसेन दोनों वीरी को कालिग देशकी सेना दूरमे युद्धमें वर्त्तमान देखकर

ordered his men to make an assault. 90 The army led by Shikhandi
the best of leaders approached Bhimsen and his fighting charioteers
Yudhishtir the just, with a large army of elephants, protected the
rear. Thus Dhrishtadyumna moved his whole army and protected
Bhim from the back. The prince of Panchal Dhrishtadyumna loved
none so dearly as he did Bhimsen and Satyaki. Seeing Bhim the
great warrior, roaming in the mid-st of the Kalingas, Dhrishtadyumna
the destroyer of enemies roared loudly with a cheerful heart. 96 He
blew his conch in the field of battle and roared a loud roar. Bhimsen
took courage at the sight of that warrior seated on his golden chariot
drawn by horses of the colour of pigeons with his banner lifted high
on a sacrificial tree. Seeing the Kalingas with Bhimsen running in

मेवात्मा ज्ञानायाजो समन्वयात् ॥ ९९ ॥ तौ दूरात् सायार्किं दृष्ट्वा धृष्टद्युम्न वृकोदरो ।
 कलिगान् स्वमेवैवौ योधयेतामनस्थितौ ॥ १०० ॥ स तत्र गत्वा शैनेया जघेनजयतां
 चर । पार्थपार्यतयोः पार्थिणं जग्राहपुरुषपर्वभः ॥ १०१ ॥ स कृत्वा दानुर्णं कर्म प्रगृहीत
 शशासन आरिघतो रौद्र मात्मान कलिगानन्ववैत्तत ॥ २ ॥ कलिगं प्रमवांचैव मांसशो
 णितकर्दमां- । रुधिरस्येदिनीं तत्र भीमं प्राप्रतयजर्दी ॥ ३ ॥ अन्तरेण कलिगानां पाद
 षामांज्ञं वाहिनीं । तासम्तारदुस्तारां भीमसेनोः महाबल ॥ ४ ॥ भीमसेन तयादृष्ट्वा
 माक्रोदास्तापकानृप । कालोय भीमरूपेण कलिगैः सहयुद्धयते ॥ ५ ॥ तत शीतनवो
 भीष्मः सुवात निनदरणे । अभ्ययात्वारितो भीमव्यूढानीक समततः ॥ ६ ॥ तंसात्य
 किर्भीमसेनो धृष्टद्युम्नश्च पार्यत । अभ्य द्रवत भीष्मस्य रथ हेमपरिच्छृतम् ॥ ७ ॥

महा-अभ्यर्जित हुई फिर उस शीघ्रगामियों में श्रेष्ठ सात्यकि ने वहां जाकर भीमसेन
 और धृष्टद्युम्नकी पृष्ठकोराक्षित किया और वड़ी धनुषधारी सेना को मारकर भयानक
 रूपमें नियतहुआ और भीमसेन ने कलिग देशियों से उत्पन्न रुधिर रूपाकीचसे भरी
 हुई, रुधिर के बहने वाली नदीको जारी किया इसी अन्तर में महाबली भीमसेन
 कलिगदेशीय और पांडवोंकी महादुर्गम सेनाको अच्छे प्रकारसे तरगया ॥ १०१ ॥ हेराजा
 तत्र तुम्हारी सेना के लोग भीमसेनको देखकर पुकारे कि यह काल पुरुष भीमरूप
 से कलिग देशियों के साथ लड़ता है तदनन्तर शान्तनु भीष्मजी पूछमें उस शब्दको
 सुनकर सेनाको चारों ओरसे तयार करके वड़ी शीघ्रता से सेना के सम्मुख आये
 उनको आते हुये देखकर सात्यकी व भीमसेन और धृष्टद्युम्न भीष्मजी के रथके
 सम्मुख दौड़े और सबो ने वड़ी शीघ्रता से गंगा पुत्र भीष्मजी को चारों ओरसे
 घेरकर तीन-शीघ्रगामी वाणोंसे घायल किया ॥ १०६ ॥ फिर आपके पिता देवव्रतभीष्मजी
 ने उन सब उपाय करनेवाले बड़े धनुष धारियों को सीधे चलने वाले तीन- वाणों

their midst, brave Dhrishadyumna entered the list of warriors and came to the help of Bhim. The Kaling army was exceedingly terrified at the sight of those two great warriors, Bhim-en and Dhrishadyumna. Satyaki, the foremost of agile warriors, protected the two warriors on the back and stood there killing the enemies from behind. Bhim produced a stream of blood from the bodies of the Kalinga warriors and crossed over the impregnable armies of the Pardavas and Kalingas, 102. Then the people of your army cried out, "This dreadful warrior Bhim brings death to the Kaling warriors." Hearing these words in the field of battle, Bhishma rallied his forces from all sides and led them there. Satyaki, Bhim-en and Dhrishadyumna ran on to meet the chariot of Bhishma as soon as they saw him. With great rapidity they surrounded the son of Ganga on all sides and each of them pierced him with three shafts, 106. Then your father

परिवायंतु ते सर्वे गांगेय तरसारणे । त्रिभास्त्रभिः शरैर्घोरैर्भीष्ममानर्तुरोजसा ॥ ८ ॥
 प्रत्यधिभ्यत तान् सर्वान् पितादेव व्रतस्तव । यतमानान्मधेष्वासांस्त्रिभिर्त्रिभिरिजहस्यैः
 ॥ ९ ॥ ततः शरसहस्रेण सञ्जिवार्यं महारथान् । हयान् कांचनसन्नाहान् भीमस्य
 न्यहनच्छरैः ॥ १० ॥ हताश्वे सरथे तिष्ठन् भीमसेनः प्रतापवान् । शक्तिविशेष
 तरसागांगेयस्य रथप्रति ॥ ११ ॥ अत्रात्माभयतां शक्तिं पितादेवं व्रतस्तव । त्रिघाचि
 च्छेदसमरे सापृथिव्यामशीर्यत ॥ १२ ॥ तत शैक्यायसीगुर्धोः प्रगृह्यलवान्गदाम् ।
 भीमसेनस्ततस्तूर्णं पुच्छ्वे गनजर्षभ ॥ १३ ॥ सात्यकोपि ततस्तूर्णं भीमस्य प्रियका-
 म्यया । गांगेय सारथि तूर्णं पातयामास सायकैः ॥ १४ ॥ भीष्मस्तु निहतैस्त्रिभ्यं
 सारथी रथिनांवरः । वाताय मनैस्तैर श्वैरपनीतो रणाजिरात् ॥ १५ ॥ भीमसेन
 स्ततो राजन्नपयाते महाव्रते । प्रज्ज्वाल यथा वह्निर्देहन्कक्षामघोषितः ॥ १६ ॥

से घायल किया तिसके पीछे हजार वाणों से उन महारथियों को रोककर मुनहरी कवचरूप वस्त्रों से अलंकृत भीमसेन के घोड़ों को वाणों से मारा फिर मृतक घोड़े वाले रथपर नियत प्रतापवान् भीमसेन ने बड़ी तीव्रतासे भीष्मजी के रथपर उग्रवरछी को फेंका ॥ १० ॥ फिर आपके पिता देवव्रतने उस न पहुंची हुई वरछीको बीचही में दो खंड करके पृथ्वी में गिरा दिया तदनन्तर पुरुषोत्तम भीमसेन बड़ी शीघ्रता से शक्या यशी बड़ागदाको लेकररथसे कूदा ॥ ११ ॥ और महारथी धृष्टद्युम्न उसको अपने रथपर सवार करके सब सेनाके देखते हुए दूर ले गया तदनन्तर सात्यकी ने भी भीमसेन के अभीष्ट के लिये शीघ्रही शायकों से कोरवों के पितामह भीष्मजी के सारथीको रथमें गिराया उस सारथी के मरने पर रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजीभी उन वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्धभूमि से दूर चले गये तदनन्तर हे राजा उस महारथी भीष्मके दूरचले जाने पर भीमसेन को ऐसा महाक्रोध उत्पन्न हुआ जैसे कि वनको जलाने वाली अग्नि प्रचंडहोती है और सब कर्त्तव्य देशियों को

Devabrāt Bhishm wounded each of the n with three sharp arrows and checking them all with a thousand arrows he killed Bhim's horses decked with gold armour and trappings. And from his horseless chariot Bhim hurled a dreadful spear at Bhishm 109, 'Your father Devabrāt cut the spear in two pieces before it had reached him. Thereupon Bhim jumped down from the chariot with the mace in his hand. Dhrishtadyumna took Bhim on his own chariot and went away with him farther away. To please Bhim Satyaki killed the driver of Bhishma's chariot and Bhishm drove his horses, swift as the wind, far from the field of battle. After the departure of that great warrior, Bhim flew into a rage like fire in a burning forest and entered the Kaling army intending to destroy all. None of your warriors could face Bhim at that time. 116, 'Then Bhim the best of the descend

सहत्वा सर्वं कालिगान् सेनामध्ये व्यतिष्ठत । नैनमभ्युत् सहन् केचित्तायका भरतर्षभ ॥ १७ ॥ घृष्टद्युम्नस्तमारोऽप्य स्वस्थे रावर्णावरः । पश्यतां सर्वं सैन्यानामपोवाहयत् स्थितम् ॥ १८ ॥ संप्रुष्यमानः पांचाल्यैर्मतस्यैश्च भरतर्षभ । घृष्टद्युम्नपीरभ्यञ्ज समे यादव सात्यकिं ॥ १९ ॥ अथाश्वीन्द्रोऽसौ सेनं सात्यकिः सत्यांश्रमः । प्रहर्षयन् यदुभयाभौ घृष्टद्युम्नस्य पश्यतः ॥ २० ॥ दिष्ट्या कालिगं राजघ्न राजपुत्रघ्नं केतुमान् । शक्रदेवश्च कालिगः कलिगाश्च मृगेहताः ॥ २१ ॥ रथयाद्गु वलघायिणं नागाश्वरथं संकुलः । महापुरुषं मृषिष्ठो घोरयोधं निषेवितः ॥ २२ ॥ महाव्यूहः कलिगना मेकेनमृदितस्त्वया । एवमुक्त्याशितेनैतादीर्घबाहुः शरिदम् ॥ २३ ॥ रथाश्रयमाभिद्रव्य पर्येष्वजत पांडवम् । ततः स्वरथमास्थाय पुनर्यमहाहारथः । तायकानं घर्षात्कुदो भीमस्य धत्तमादधत् ॥ २४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधप० द्वितीययुद्ध दिवसे कलिगं राजवधे चतुर्ष्वंशे शतमोऽध्यायः ॥ १२४ ॥

भारकर सेना में आगया, हे भरतवंशी आपका कोई वीर इसके सम्मुख होनेको समर्थ नहीं हुआ। १२६। फिर भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ भीमसेन पांचाल और मत्स्यदेशियोंसे अच्छी रीति प्रशंसित घृष्टद्युम्न को छोड़कर सात्यकी से मिला तदनन्तर यादवों में श्रेष्ठ सत्य पराक्रमी सात्यकि घृष्टद्युम्न के देखते हुए भीमसेनकी प्रशंसा करके यह वचन बोला कि प्रारब्धसे राजा कलिग और राजकुमार केतुमान् और कलिगदेशी शक्रदेव और अन्य सब कलिगदेशी लोग युद्धमें मारेगये तो तुम अकेलेनेही अपने भुजबलके पराक्रम से कलिग देशियों के घोड़े हाथी और रथोंसे संकुल महाबली शरवीरोंसे सेवित महाव्यूहको मरदन १२०। किया, शत्रुओंका जीतनेवाला और सम्वी भुजावाला सात्यकी इस प्रकार कहकर उस रथपर नियत पांडवों के पास जाकर मिला, तदनन्तर उस क्रोधसे भरे सात्यकि ने भी आपकी सेना के मनुष्योंको मारा और भीमसेनकी सेना को रक्षित किया ॥ १२४ ।

ants of Bharat, praised by the people of Matsya and Panchal, left Dhrishtadyumna and came to Satyaki. Satyaki of true prowess, the best of the Yadavas, praised Bhim in the presence of Dhrishtadyumna and said, "It was by fate that the king of Kaling, prince Ketuman and Shakradev and other Kalingas were killed in the field of battle. You alone have by the prowess of your arms killed all the Kalings together with the chariots, horses and elephants." 120. Hearing this, Satyaki of long arms drove in his chariot to the Pandavas and he too, destroyed the people of your army in a great rage and protected the army of Bhimsen. 124.

संजय उवाच । गतपूर्वाह्ण भूयष्टे तस्मिन्नहनि भारत । रथनागोश्च पसे नान्सा
दिनां च महाक्षये ॥ १ ॥ द्रोण पुत्रेण शल्येन कृपेण च महात्मना । समसज्जतपां
चास्य स्त्रिभरतैर्महारथैः ॥ २ ॥ संलोक विदितानश्वाभिजघान महाबलः । द्रौणि
पांचालदायादः शितैर्दशभिरनुगैः ॥ ३ ॥ ततः शल्य रथतूणे मास्थाय हतवाहनः ।
द्रौणिपांचालदायाद मथ्यधर्ष दधेपुभिः ॥ ४ ॥ घृष्टघुम्नस्तु सयुक्त द्रौणिनार्षास्य
भारत । सौभद्रेभ्यपतच्छूण विकिरन्निशितान् शरान् ॥ ५ ॥ सशल्यं पंचविंश-
त्याह्वयं च नवभिः शरैः । अश्वत्थामान मष्टाभिविध्याद्यप्युरुपपन्न ॥ ६ ॥ जालीनिवृ-
त्ततस्तूर्णं द्रौणिविध्याद्य पत्रिणां । शल्योप दशभिश्चैव कृपश्चानशितैस्त्रिभिः ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ ५५ ॥

संजयबोले हे भरतवंशी उस मध्याह्न के अन्तहोनेपर रथघोड़े हाथी और
सवार पैदलों के बड़े नाशहोने पर घृष्टघुम्न अकेला ही अश्वत्थामा शल्य और
महात्मा कृपाचार्य इन तीनों महाबलिपोंके सम्मुख हुआ, और बड़ी शीघ्रतासे तीव्र
और शीघ्रगामी वाणों से अश्वत्थामा के मसिद्ध घोड़ोंको मारा तदनन्तर मृतक
घोड़ेवाला अश्वत्थामा बहुतशीघ्र शल्यके रथपर चढ़कर उसी रीतिसे बाणसंयुक्त
होकर घृष्टघुम्न के सम्मुखहुआ, हे भरतवंशी सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु अश्वत्थामा
से भिड़ेहुए घृष्टघुम्न को देखकर बड़े तीव्र वाणोंको फेंकताहुआ शीघ्रही सम्मुख
दोड़ा, और वहाँ जाकर उस अभिमन्युने शल्यको पच्चीसवाणोंसे कृपाचार्यको नौ
वाणों से और अश्वत्थामा को आठवाणोंसे घायल किया, ६। इसके पीछे अर्जुनके
पुत्र अभिमन्युको अश्वत्थामा ने एकवाण से शल्यने, बारह वाणों से और कृपाचार्य

CHAPTER I.V

"In the afternoon," said Sanjaya, "after the great destruction of cha-
riots, horses, elephants and soldiers Dhrishtadyumna alone faced Ash-
wathama, Shalya and great Kripacharya and with great dexterity
destroyed the famous horses of Ashwathama. Ashwathama, when
his horses were killed, mounted the chariot of Shalya and faced Dhris-
htadyumna. Abhimanyu the son of Subhadra saw Dhrishtadyumna
fighting with Ashwathama and at once came there shooting sharp
arrows. He wounded Shalya with twenty five arrows, Kripacharya
with nine and Ashwathama with eight. Then, Abhimanyu, the

लक्ष्मणस्तवपात्रस्तु, सौमद्रसमवस्थितम् । अभ्यवर्तत सह एस्ततो युद्धमवर्तत ॥८॥
 दुर्योधनि, सुसहस्र सौमद्र परवीरहा । चिन्त्याघ समरे राजंस्तदद्भुग भिवाभवत् ॥९॥
 अभिमन्युःससंकुद्रो भ्रातरं भरतपंथ । शरं पंचाशते राजन् क्षिप्रहस्तोऽभ्यवि-
 ध्यत ॥ १० ॥ लक्ष्मणोपि पनस्तस्य घनं शस्त्रेदपात्रेणा । सुप्रवेशे महाराजततस्तं
 चुक्रुमुज्जना ॥ ११ ॥ तद्विहाय घनुच्छन्नं सौमद्रं परवीरहा । नभ्यदादत्तैर्वाधिपत्रं
 कामकवेगवत्तरम् ॥ १२ ॥ तौ तत्र समरे युक्तौ कृतप्रात कृतौपिनौ । अग्न्यान्वधिदि-
 खैस्तीक्ष्णैर्जप्तुं पुरुषपथौ ॥ १३ ॥ ततो दुर्योधनो राजा दृष्ट्वा पुत्रमद्वारपथम् ।
 पीडितं तत्र योत्रेण प्रायात्तत्र प्रजेश्वरः ॥ १४ ॥ सन्निवृत्तेतवसुते सर्वे पवजना
 धवा । आर्जुनि रथंधंशेन समन्तारथंधारयन् ॥ १५ ॥ सतीःपरिवृतःशरैः शरैर्यु-

ने तीन, तीक्ष्णबाणों से घायल किया, फिर आपका पोता लक्ष्मण उम सम्मुख
 आये हुये अभिमन्यु को देखकर महाकोपित होकर उसके आगे वर्त्तमान हुआ और
 उनदोनोंका बड़ा युद्ध हुआ; हे राजा इसके पीछे महाक्रोधी दुर्योधन के पुत्र ने
 युद्ध में उस सुभद्रा के पुत्रको त्रिबाणों से घायल किया; यह आश्चर्यसा हुआ
 हे भरतवंशिपों, मैं श्रेष्ठ फिर-उस क्रोधरूप अभिमन्यु ने अपनी हस्तलाचवता से
 क्षिप्रहीपांचसौ बाणोंसे भाई-लक्ष्मणको घायल किया १३। फिरलक्ष्मणनेभी एकबाण
 से उसके धनुषको सुष्ट्र देश से काटा इसकारण से मनुष्यों ने बड़ा शब्द किया;
 फिर वीर शत्रुहन्ता अभिमन्युने उस दृष्टे हुए धनुषको छोड़कर वहे वेगवान जड़ाऊ
 धनुषको हाथमें लिया; फिर युद्धकर्म में मत्त दन्द्रशुद्ध करने वाले दोनों पुरुषोत्तमों
 ने तीक्ष्णधार वाले बाणों से परस्पर एकको एकने घायल किया; इसके पीछे महा
 राजा दुर्योधन अपने महाबली पुत्रको आपके-पोतेसे पीड़ामान-देखकर वहाँ आया
 फिर-आपके पुत्र के अलग होजाने-पर-सब राजालोगों ने रथोंके समूहों समेत
 अर्जुनके पुत्र अभिमन्युको रोका १५। हे राजा युद्ध में-अजेय श्रीकृष्णजी के समान

son of Arjuni was hit by one arrow of Ashwathama's, twelve of Sha-
 lya's and three sharp ones of Kripacharya. Your grandson Laksh-
 man, seeing the advance of Abhimanyu attacked him in great anger.
 Both the warriors fought bravely. The enraged son of Duryodhan
 wounded the son of Subhadra with sharp arrows and did wonders.
 Abhimanyu was thereupon much enraged and wounded his cousin
 Lakshman by dexterously shooting five hundred arrows at him. 10
 Lakshman cut down the bow of Abhimanyu by an arrow to the
 acclamation of the people. Brave Abhimanyu dropped that bow
 and took up another, decked with gems. Both the warriors wound-
 ed each other in battle. Prince Duryodhan, seeing his son in trouble
 at the hands of Abhimanyu, came there and with innumerable
 chariots the kings checked Abhimanyu the son of Arjuni. 15.

धितुदुर्जयै । नरमप्रव्ययते राजन् कृष्णतुल्य पराक्रमः ॥ १६ ॥ सौमद्रमथसंकटदृवा
 तत्र घनंजयः । अभिदुद्राववेगेन प्रातुकामः स्वमात्मजम् ॥ १७ ॥ ततः संरथनागा
 श्वाभीष्मद्रोणपुगेगता । अभ्यवर्तत राजानः सहिताः सव्यसाचिनम् ॥ १८ ॥
 उद्धृत सहसा भीमं नागाभ्यरथपत्तिभिः । दिवाकररथं प्राप्य रजस्तोममदृश्यत् ॥ १९ ॥
 तानिनाग छहस्त्राण भूमपाल शतानिच । तस्य वाणपथं प्राप्य नाभ्यवर्ततसवेशः
 ॥ २० ॥ प्रणेदुः सर्वभूतान वभूवुस्तिमिरादिशः । कुरुणांचानपस्तीत्रः समदृश्यत
 वारुणः ॥ २१ ॥ नाप्यं तरिक्षं नदिशो नभूमिनचभास्करः । प्रजनेभरतश्रेष्ठ शस्त्रसंघैः
 किरीटिनः ॥ २२ ॥ सादिता रथनागाश्च हताभ्यारथिनोरणे । विप्रदुतरथाः क्वचि
 दृश्यते रथयूथपाः ॥ २३ ॥ विरवा रथिनश्चान्ये घावमानाः समंततः । तत्रतत्रैव
 दृश्यते सापुधाः सांगदैर्भुजैः ॥ २४ ॥ हयारोहाहय्यास्त्वक्त्वा गजागोहाश्चदितिनः ।

पराक्रमी शूरवीर अभिमन्यु उनंशूरों से धिरा हुआ भी व्याकुल नहीं हुआ, तदन
 न्तर अर्जुन वहाँ अभिमन्युको भिड़ाहुआ देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अपने पुत्रकी
 रक्षा करनेको सम्मुख दौड़ा तदनन्तर रथ घोड़े और हाथियों समेत वह राजा लोग
 जिनमें अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य थे अकस्मात् आकर अर्जुन के सम्मुख
 वर्त्तमान हुए । १८ । मनुष्य घोड़े और रथोंके चलनेसे एका एकी पृथ्वी से धूल उड़ी
 और सूर्य के मार्गको पाकर तेज दिखाईदी वह हजारों हाथी और राजा लोग उस
 अर्जुनके वाणों के मार्गको पाकर सवरीतों से सम्मुख वर्त्तमान नहीं रहे । २० । सब
 जीवजन्तु प्रकारे और दिशाओंमें अन्धकारहुआ और कौरवोंका अन्यायरूप भयानक
 फल उत्पन्न हुआ हे नरोत्तम मुकट धारी अर्जुनके वाणों से अन्तरिक्ष अर्थात् पृथ्वी
 और आकाश के मध्य में दिशा पृथ्वी और सूर्य नहीं दिखाई दिये हाथी ध्वजाओं
 से रहित हुए और असंख्यों रथी मृतक घोड़े वाले हुए और कोई महारथी ऐसे
 दृष्ट पड़े कि जिनके रथी भाग गये कहीं रथी लोग अपने रथों से रहित शस्त्र और
 वाजुवन्दों समेत इधर उधर दौड़ते हुए जहाँ तहाँ दिखाई देते थे हे राजा अर्जुनके

querable in battle, like shree Krishn in prowess brave Abhimanyu,
 surrounded by those warriors, did not lose heart. Seeing his son so
 surrounded, Arjun hastened to protect him. With chariots, horses
 and elephants the kings led by Bhishm and Dronacharya, opposed
 Arjun. 18. Men, horses and chariots, moving together, caused a
 storm of dust which rose to the sun. The kings with all their array
 of elephants could not withstand Arjun's arrows. 20. All the crea-
 tures cried out with fear and there was darkness in all directions,
 showing the fruit of the injustice of the Kauravas. The earth and
 firmament was covered with Arijun's arrows; the elephants became
 destitute of banners and numerous chariots lost their horses. Some
 warriors lost their chariot drivers others lost chariots and were seen
 roaming this way or that, with weapons and armour on. The riders of

अर्जुनस्य भया राजन् समंताद्विप्रदुदुः ॥ २५ ॥ रथेऽयश्च गजेभ्यश्च ह्येभ्यश्च
 नराधिपाः । पतिताः पाल्यमानाश्च दृश्यंतेऽर्जुनसायकैः ॥ २६ ॥ स गदानुधतान्
 यादृन् स खड्गाश्च विशांपते । स प्रासांश्च स नृणीरान् स शरान् स शरासनान्
 ॥ २७ ॥ सांकुशान् स पताकांश्च तत्र तत्राहुंगोचुरां । निचकर्वेशरैश्चै रौद्रेयपुरधार
 यत् ॥ २८ ॥ परिघाणां प्रद्वीप्तानां मुद्गराणांच मारिष । प्रासानां मिदिपालानां
 निस्त्रिशानांच संयुगे ॥ २९ ॥ परश्वघानां तीक्ष्णानां तोमराणांच भारत । घर्मेणां
 चापविद्धानां कांचनानांचभूमिष ॥ ३० ॥ ध्वजानांचर्मणांचैव व्यजनानांच सर्वशः ।
 छत्राणांह्रैम दंडानां तोमराणांच भारत ॥ ३१ ॥ प्रतोदानांच योक्राणांकशानांचैव
 मारिष । राशयःश्मात्रदृश्यंते विनिकीर्णारणक्षितौ ॥ ३२ ॥ नासीत्तत्र पुमान्क-
 वित्तव सैन्यस्यभारत । योऽर्जुनं समरे शूरं प्रत्युद्यायात्करुण्यचन ॥ ३३ ॥ योषोहि
 समरेपार्थ प्रत्युद्यातिविशांपते । ससंख्येविशिष्यैस्तीक्ष्णैः परलोकायनीयते ॥ ३४ ॥

भयसे घोड़े के सवार घोड़ों को और हाथी के सवार हाथियों को त्याग करके
 चारों ओरसे भागे । २५। और बहुतसे राजासौग अर्जुनके बाणोंमें रथहाथी और घोड़ों
 से गिराये वा गिरते हुए दृष्ट पड़ते थे हे राजा अर्जुन ने जहां तहां गदा समेत उठाये
 हुए और खड्ग पराश, तूणीर वाण घनुष इत्यादि को उठाये हुए अथवा अंकुश
 और पताकाओं समेत उठाये हुए मनुष्यों की भुजाओं को अपने कराल बाणों से
 काटकर स्वरूप धारण किया । हे भरतपति धृतराष्ट्र युद्ध में कटे हुए परिघ, मुद्गर
 प्राश, मिदिपाल खड्ग तीक्ष्ण परसे तोमर और धनुषसे काटे हुए मुनहरी कवचभी हजारों
 पृथ्वीपर पड़े हुए दृष्ट आये और सवप्रकारकी ध्वजा ढाल पंखे और मुनहरी दंडवाले
 छत्र तोमर चाबुक कोड़े और रस्सियों के ढेरोंके ढेर युद्ध भूमि में फैले हुए दिखाई दिये
 ३२. हे श्रेष्ठ आपकी सेनाका कोई मनुष्यभी ऐसा न हुआ जो युद्धमें उसगूरवीर अर्जुन
 के सम्मुख जाय हे राजा युद्ध में जो २ अर्जुनके सम्मुख जाता है वह बाणों के द्वारा
 यमपुर को भेजा जाता है सब रीति से आपके शूरों के भागजाने पर अर्जुन और बासु

elephants and horses lost their beasts and fled in different directions. 25. And many kings, hit by Arjun's arrows, were seen falling from their chariots, horses or elephants. Arjun assumed dreadful form as he cut down the hands which were in the act of raising maces, swords, quivers, arrows, bows, goads or lanners. There were seen on the field of battle thousands of clubs, maces, swords, sharp arrows and golden armour pierced through by Arjun's arrows. All sorts of banners, shields, fans and umbrellas with gold handles, whips and ropes were seen in heapson the field of battle. 32. Not a single warrior of your army could face Arjun in the field of battle. Whoever came in Arjun's way, was sent to the region of Yam by Arjun's arrows. When your army was thus routed, both Shree Krishna and Arjun sounded their good Conch shells. Your father Devabrat, seeing

तेषुविद्रवमाणेषु तवयोषेषुसर्वशः । अर्जुनो वासुदेवथ दध्मनुर्वारिजोत्तमौ ॥ ३५ ॥
 तत्रप्रभ्रवत्तं दृष्ट्वा पिनादेवव्रतस्तव । अग्रवीरसमरे शूर भारद्वाजस्मयत्रिय ॥ ३६ ॥
 एषपांडु सुतोवीर कृष्णसहितोवली । तथा करोति सैन्यानि यथाकुर्याद्धनजय ।
 ॥ ३७ ॥ गहोप समरे शत्रयो विजेतुदि कथंचन । यथास्थदृश्यतेरुण कालातकयमोपम
 ॥ ३८ ॥ ननिवर्तयितुं चापि शत्रयेय महतीचमू । अन्योन्य प्रेक्षयापश्य द्रवतीर्यं
 वरुधिनी ॥ ३९ ॥ एष चास्तं गिरिधेष्ट भानुमान् प्रतिपद्यते । चक्षूषि सर्वलोफस्य
 संहरशिव सर्वथा ॥ ४० ॥ तत्रावहार सप्राप्त मन्यह पुरपरमभ । आताभिताञ्च
 नोयोधानयोत्स्यतिकथंचन ॥ ४१ ॥ एवमुक्त्वा ततो भीष्मो द्रोणमाचार्यसत्तमम् ।
 अवहारमधोचक्रे तवकानां महारथः ॥ ४२ ॥ ततोवहारः सैन्यानां तवतेपाचमा
 रत । अस्तगच्छतिसूर्वेऽभूत्संध्याकालेच घर्तति ॥ ४३ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वितीययुद्ध दिवसा बहारे
 पंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

देवजी ने उत्तम शंखोंको बजाया फिर आपके पिता देवव्रत उस सेनाको भागाहुआ
 देखकर बड़ा आश्चर्य करके युद्ध में महा शूरवीर द्रोणाचार्यजी से बोले कि यह पांडु
 का बेटा वीर बनवान् श्री कृष्णजी के साथ में होकर उसी प्रकार सेनाओंको मारकर
 काटे डालताहै जैसे कि संसारी धनका विजय करने वाला करताहै अत्र यह किसी
 प्रकारसे भी युद्ध में जीतने के योग्य नहीं है, इसका रूपकालवा अन्तक वा यमनाप
 मृत्युके समान दृष्ट आता है और यह बड़ी सेनाभी नाश करवाने के योग्य नहीं है
 देखो, यह सेना परस्परकी सहायता से निर्मल है यह नूर्य सव रीति से सबलकों
 की दृष्टि को इरता हुआ पर्वतों में श्रेष्ठ अस्तचल को प्राप्त होता है हे पुरोचम
 ऐसी दशामें मैं सेनाके विश्रामको चाहताहूँ, जो युद्धकर्त्ता भयभीत हुए थकगये
 हैं वह कभी नहीं लड़ेंगे महारथी भीष्मजी ने आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य से इम
 रीति से कहकर आपकी सेनाओं का विश्राम किया हे श्रेष्ठ मूर्यके अस्तगत होनेपर
 आपसी और पांडवोंकी सेनाका विश्राम हुआ और सन्ध्यावर्त्तमान हुई ॥ ४३ ॥

the defeat of your armies made in great amazement the following
 remark with a hearing of brave Dronacharya — "This son of Pandu,
 accompanied by Shree Krishna, kills and destroys the armies like
 a winner fwo ldtly vclth He is in no way conquerable in battle.
 He looks l c Yam or death in bodily form. We should not leave
 this large army to be thus destroyed by him. The soldiers are tired
 and the sun is setting down, depriving people of the use of their
 sight. Under these circumstances I desire the retreat of the army.
 The warriors who are tired or afraid will fight no longer." Having
 said this to Dronacharya, Bhishm sounded the retreat of the army,
 and as it was nearly dark, the two armies retired for the night "43.

संजय उवाच । प्रभातार्यां च शर्वर्यां भीष्मः शांतनवस्तदा । अनीकान्यनुसंधाने
 व्यादिदेशाथभारत ॥ १ ॥ गरुडं च महाव्यूहं चक्रेशांतनवस्तदा । पुत्राणांतेजया
 कांक्षी भीष्मः कुरुपितामहः ॥ २ ॥ गरुडस्थस्ययं तुंडे पितादेव ध्रतस्तव । चक्षु
 पीच भरद्वाजः कृतवर्मा च सात्वतः ॥ ३ ॥ अश्वत्थामा कृपश्चैव शीर्षमास्तां वश
 स्थिनौ । भृगुर्भृश्रवाःशल शल्योमगदत्तश्चमारिप ।
 मद्रकाःसिंधु सौवीरास्तपापंचनदाश्चये ॥ ५ ॥ जयद्रथेन सहिताग्नीवायां सन्निवेशिताः ।
 पृष्ठे दुर्योधनो राजा सांदर्यैः सानुगैर्वृतः ॥ ६ ॥ विन्द्यानुविंदावाचन्त्यौ काभ्योजयशकैः
 सह । पुच्छ मासन्महाराज शूरसेनाथ सर्वशः ॥ ७ ॥ मागधाथ कलिंमाश्च दासेरकम
 पैः सह । दक्षिणं पक्षमास्ताय स्थिताव्यूहस्य दंशिताः ॥ ८ ॥ कारुपाथ विकुञ्जाथ

अध्याय ॥ ५६ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे शत्रु संतापी भीष्मजी ने प्रातःकाल के समय
 चढ़ाई करने के निमित्त सेनाओं को आज्ञाकरी तब आपके पुत्रों की विजय चाहने
 वाले कौरवोंके पितामहवृद्ध भीष्मजी ने गरुडनाममहाव्यूहकी रचा, उसमें आपके
 पिता देवव्रत-तो गरुडकी चोंच पर हुए और भरद्वाज द्रोणाचार्य व कृतवर्मा
 यादव यहदोनो नेत्रों के स्थानमें हुए और यशस्वी अश्वत्थामा और कृपाचार्य
 शिरके स्थान में हुए और जो त्रिगर्भमत्स्य वा केकय यह सब वारधानों से युक्त
 थे और भृश्रवा शल शल्य भगदत्त मद्रक सिंधु सौवीर और पंचनदवासी लोग
 यह सब जयद्रथके साथ ग्रीवामें नियत हुए और राजा दुर्योधन अपने सगे भाइयों
 नभेत अपने पीछे चलने वाले शूरवीरों से युक्त पीछेकी ओर नियतहुए-विंद और
 अनुविन्द अवन्तिके राजा लोग और कांबोज यहसब शकलोगों वा शूरसेन, देशी
 वीर लोगोंके युक्त गरुड की पूँछकी ओर नियतहुए । ७ और मगध देशी व कलिंम
 देशी व अश्रु लोमोंके समूह यह सब गरुड के दक्षिण पक्षपर नियत हुए और

CHAPTER LVI

Sanjaya continued. "Bhisma the destroyer of enemies, led his
 armies at the break of day and desirous of the conquest over your sons
 he arrayed the forces in the form of a bird. Your father devabrat
 stationed himself in the place of the beak; Bharadwaj, Dronacharya
 and Kripvarma the Yadav represented the eyes; glorious Ashwathama
 and Kripacharya with the Trigarts, the Matsyas, the Kaikayas and
 the Vaidhans stationed themselves at the head; Bhurishrava, Shal,
 Shalya, Bhagdatta, and the people of Madrak, Sindhu, Sauvira and,
 Panchnad led by Jayadrath, stood at the neck. Prince Duryodhan
 and his brothers with their attendant warriors stood on the back.
 Vind, Annvind the princes of Avanti and Kamboj with the Shakas
 and Shursenas stood at the tail. The armies of Magadh and Kaling

सुण्डाः कुण्डी वृषास्तथा । बृहद्वलेन सहिता धामपार्श्वं मयस्थिता ॥ ९ ॥ व्यूह
 दृष्ट्वा तु तत् सैन्यं सव्यसाची परन्तप । धृष्टद्युम्नेन सहितं प्रय्यूहत्तस्युगे ॥ १० ॥
 अर्द्धचन्द्रेण व्यूहेन व्यूहं तमतिदारुणम् । दक्षिणं शूङ्गमास्थाय भीमसेनो व्यरोचत ॥ ११ ॥
 नानाशस्त्रैश्च सम्पन्नैर्नादैश्चैर्नृपैर्वृत । तदन्धेषु विराटश्च दुपदश्च महारथ १२ ॥
 तदनन्तरं मेघासीधीलोनीलाशुधै सह । नीलादनन्तरं चैव धृष्टकेतुर्मेहावल ॥ १३ ॥
 चेरि काशिकरूपैश्च पौरवैरपि सवृत । धृष्टद्युम्नं शिखण्डीञ्च पञ्चालाञ्च प्रभद्रका ॥ १४ ॥
 मध्ये सैन्यस्य महत् स्थिता युद्धाय भारत । तत्रैव धर्मराजोऽपि गजानीकेन सवृत ॥ १५ ॥
 ततस्तु सात्वकी राजन् द्रौपद्या पञ्चात्माज्जा । अभिमन्युस्ततश्च शूर इराधा ॥ १६ ॥
 भैमसेनिस्ततो राजन् केकयाश्च महारथा । ततोभूद् द्विपदां श्रेष्ठो वामपार्श्वं सुपाश्रितः ॥ १७ ॥ सर्वस्य जगतो गोप्ता गोप्ता यस्य जनार्दनः । एव

कारुण्यं विकुञ्जं मुंडं कौडीं वृषं यहं सव्यद्वलसमेतं वार्ये पक्षपरं उपस्थितहुए ॥९॥ उस
 युद्धभूमि में शत्रुहन्ता परन्तप अर्जुनने उस व्यूहित सेना को देखकर धृष्टद्युम्नकी
 सलाह से उसकी समानताका अपनी सेनाकाभी व्यूहरचा अर्थात् सब पाण्डवों ने
 आपके उसव्यूह को देखकर अर्द्धचन्द्राकार व्यूहसे अपनी भयानक सेनाको सुशो-
 भित किया ॥ ११ ॥ और नानाप्रकार के शस्त्रोंके समूह और अनेक देशी राजा लोगों
 से युक्त भीमसेन दाहिने गंगपर नियतहोकर शोभायमानहुआ, उसीके पीछे महारथी
 विराट और दुपद नियतहुए फिर उनके पीछे अपने नीले आयुधों समेत राजानीन
 और नील के पीछे चंदेरी व काशी व करुणदेशी व पौरवदेशी इन सबको साथ
 लिये राजा धृष्टकेतु वर्तमानहुए और हेभरतर्षभ धृष्टद्युम्न शिखण्डी पांचालदेशी और
 प्रभद्रक यह सब अत्यन्त सेना समेत युद्धकरने के लिये बीचमें नियतहुए ॥१५॥ और
 उसीस्थानमें हाथियोंकी सेना समेत राजा धर्मराज युधिष्ठिरभी वर्तमानहुये और उस
 के पीछे सात्वकी व द्रौपदीके पांचों पुत्र ये उन से पीछे अभिमन्यु अभिमन्यु के

stood at the right wing, and Karush, Vikunj, Mund, Kaundi, Vrish and Vrihadval were on the left wing 9 In that field of battle, glorious Arjun the destroyer of enemies, seeing that array of the Kaurava army, arrayed his own army with the advice of Dhrishtadyumna. The Pandava army was arrayed in the form of a crescent moon. 11 Bhimsen with a collection of weapons and princes of different places, stood at the right horn in great glory. Kings Virat and Dupad stationed themselves behind Bhimsen. Behind them, with blue arms and armour, stood king Nil, and on his back stood the warriors of Chanderi, Kashi, Karush and Paurava countries led by Dhrishtaketu, Dhrishtadyumna and Shukhandi of Panchal and the Prabhadraks with a large army stood in the middle. 15 Near them was king Yudhishtira with a large number of elephants, and on his back were

मैतं महाव्यूहं प्रत्यव्यूहन्त पाण्डवाः ॥ १८ ॥ च घोर्यतवपुत्राणां तत्पक्षं ये च संगताः । ततः
 प्रवृत्तेयुद्धं व्यतिपकरथद्विगम् ॥ १९ ॥ ताघकानां परेषाञ्च निघ्नतामितरेतरम् ।
 हाथीघाथ रथौघाश्च तत्र तत्र विशाम्पते ॥ २० ॥ सम्गतन्तो व्यदश्यन्त निघ्नन्तस्ते
 परस्परम् । घावतांच रथौघानां निघ्नताञ्चपृथक् पृथक् ॥ २१ ॥ घभूय तुमुलः
 शब्दो विमिश्रो दुन्दुभिस्थनैः । दिवस्पृञ् नरवीराणां निघ्नतामितरेतरम् । सम्प्रहा
 रेसु तुमुले तव तोपांच भारत ॥ २२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीयेयुद्ध दिवसे परस्पर
 व्यूहरचनायां पट्पंचा शतमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

पीछे इरावान और उसके पीछे भीमसेनका पुत्र घटोत्कच और महारथी केकयदेशी
 उसके पीछे नरोत्तम सब जगत का रक्षक जिसके रत्नक जनार्दन थे वह अर्जुन
 हुआ १९। इसरीतिसे पांडवोंने आपके पुत्रों के और उन के सहायकों के मारनेके
 निमित्त इस बड़ेभारी व्यूह को रचा, तदनन्तर आपके पुत्र और पांडवों में परस्पर
 बह युद्ध जिसमें हाथी घोड़े और रथ संयुक्त थे जारीहुआ, हे राजा जहां तहां वह
 हाथी और रथोंके समूह परस्परमें मारते और गिरते हुये दृष्ट पड़ते थे, और दौड़ते
 वा पृथक् २। लहनेवाले रथ के समूहों के महाकठिन शब्द दुन्दुभियों के शब्दों से
 मिलेहुये सुने जाते थे, हे भरतवंशी उसतुमुलयुद्ध में परस्पर में मारतेहुये आपके
 और दूसरों के शूस्वीरोंके शब्द आकाशतक व्याप्तहुये २३ ॥

Satyaki, the five sons of Draupadi and Abhimanyu. Behind Abhi-
 manyu was Iravan and Ghatotlach the son of Bhimsen was on the back
 of Iravan. Behind them were the warriors of Kailaya with the best
 of men, Arjun who was himself protected by Janardan the protector
 of all. 19. Thus the Pandavas arrayed, that formidable army to
 destroy your sons and their allies. Then the two armies consisting
 of elephants, horses and chariots, mixed together, met in combat.
 The groups of elephants and chariots were seen destroying one another,
 and the rumbling of chariot wheels, which were constantly
 rolling in the field of battle, was dreadful. The noise made by the
 chariot wheels; mixed with that from the horns was tremendous;
 and the cries of the warriors on both sides rang through the
 firmament. 23.



सञ्जय उवाच ॥ ततो ब्यूढेष्वनीकेषु तावकेषु पौषुच । धनञ्जयो रथातीरु
मघघन्तिवभारत ॥ १ ॥ शरैरतिरघो युद्धे दारयन् रथयूथपान् । ते वध्यमाना पापेन
कालेनेन युगक्षये ॥ २ ॥ घातैर्गथा रणे यत्न त्पाण्डवान् प्रत्ययोवन् । प्रायेयाना
यशोदीप्त मृत्युहृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ३ ॥ एकाग्रमनसो भूत्वा पाण्डवाना वरुधिनीम् ।
वमञ्जुर्दृशो राजस्ते चासञ्जन्त सयुगे ॥ ४ ॥ द्रुपद्विद्ये भवैश्च परिवर्त्तं द्वैर्वच ।
पाण्डवै कौरवेयैश्च न प्राप्तायत किञ्चन ॥ ५ ॥ उदतिष्ठद्रजो भौमन् छ दयान दिवा
करम् । न दिश प्रदिशोवाति तत्र ह्यनु कानरा ॥ ६ ॥ अनुमानेन सत्तामिर्भ्रामगे त्रैध
सयुगे । वर्त्तते च तथा युद्ध तत्र तत्र विशाम्पते ॥ ७ ॥ न व्यूहो मिद्यते तत्र कौर
वाणा कथञ्चन । रक्षितः स यस्येन भारद्देजेन सयुगे ॥ ८ ॥ तथैवपाण्डवानाञ्च रक्षित
सन्वसाचिना । नाभिद्यत महाव्यूहो भिभेन च सुरक्षित ॥ ९ ॥ सेनाप्रादपिनिष्पत्य

अध्याय ॥ ५७ ॥

संजय बोले हे भरतवंशी इमके अनन्तर आपके पुत्रों की और पाण्डवोंकी सेना के
व्यहितहोनेपर बाणों से महारथियों को गिराते हुए आति रथी अर्जुनने रथके यूथों
को इस रीतिसे मारा जैसे कि युग के अन्तमें काल सवका नाश करता है, इस रीति
से अर्जुन से घायल और पीड़ित उन धृतराष्ट्र के पुत्रों ने युद्ध में महा कुशल पाण्डव
लोगों से युद्ध किया हे राजा अपनी कीर्त्ति के चाहने वाले उन कौरवों ने मृत्युको
न लौटने वाली मानकर चित्तको स्थिर करके पाण्डवों की सेनाको, अनेक रीतों से
छिन्न भिन्न करके आपभी युद्धसे छिन्न भिन्न होगये, फिर भागते और छिन्न
भिन्नहोते अथवा लौटते समय में कौरव पाण्डवों की धूमधाम में कुछ नही जाना
गया और घूल ऐसी उदी कि जिससे पृथ्वी और सूर्य ढकभये और अन्धकार ऐसा
मचगया जिसमें दिशा विदिशाका कुछ भी ज्ञान न रहा, हे राजा उस समय वहाँ
संग्राम भूमि में ध्यान और नाम गोरोंके द्वारा युद्धजारी रहा, हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र

CHAPTER LVII

Sanjaya continued, "When the armies of your sons and those of the Pandavas were thus arrayed Arjun began to destroy the great warriors and charioteers as Kal destroys all the living beings at the end of the yug. Wounded and distressed by the arrows of Arjun, the sons of Dhritrashtra fought against the Pandav warriors. The Kauravas desirous of fame, knew that death was inevitable and fought steadily, killing others and being killed themselves. Nothing was discernible in the fury of the battle and the dust arising from the two armies covered the whole firmament, so that neither the sun nor the earth could be distinguished. The warriors fought with their adversaries by distinguishing their voices and asking their names. Protected by Dronacharya the Kaurava armies could not be

प्रायुर्ध्वस्तत्रमानवाः । उभयोः सेनयो राजन् व्यतिपत्करथद्विषः ॥ १० ॥ हयरो
 ह्ययारोहाः पात्यन्नेस्म महाहवे । ऋष्टिर्मिर्विमलामिश्च प्रासैरपि च संयुगे ॥११॥
 रथी रथिनमासाद्य-शरैः कनकभूषणैः । पातयामास समरे तस्मिन्प्रतिभयङ्करे १२॥
 गजारोहा गजगोहान् नाराच शरतोमरैः । संसक्तान् पातयामासुस्तथ तेषांचसर्वशः
 ॥ १३ ॥ पत्तिसंधारणेः पत्तीन् भिदिपालपरश्वधैः । न्यपातयत् संहृष्टाः परस्पर
 कृतागसः ॥ १४ ॥ रथीच समरे राजन्नासाद्य गजयूथपम् । स गजं पातयामास गजं
 चरथिनःवरम् ॥ १५ ॥ रथिनंच हयारोहः प्रासेन भरतर्षभ । पातयामास समरे
 रथीच हयसादिनम् ॥ १६ ॥ पदातीरथिनंसंख्ये रथीचापिपदातिनम् । न्यपातय-
 च्छित्तैःशस्त्रैः सेनयोस्मयोरपि ॥ १७ ॥ गजारोहाहयारोहान् पातयांचक्रिरेतदाः ।
 हयारोहागजस्थाश्च तद्द्भुतमिवाभवत् ॥१८॥ गजारोहवैश्यापि तत्र तत्र पदानयः ।

वहाँ भारद्वाज द्रोणाचार्य से रक्षित वह कारवों का व्यवह-
 रण नहीं होता था और इसी प्रकार अर्जुन से रक्षित पांडवों का
 बड़ा व्यवहारी भीमसेन से आश्रित होकर पराजय
 नहीं होता था फिर वहाँ रथ हाथियों से संयुक्त दोनों सेनाओं के
 मनुष्य सेना के आगे से निकल कर युद्धकरने लगे तब उस महा-
 युद्धके बीच तक्षिण पार वाले दुधारा खड्ग और परशों के द्वारा घोड़ों के
 सवारों के हाथसे घोड़ों के सवार गिराये गये, फिर उस अत्यन्त
 भयकारी सेना में मुनहरी बाणों से रथीने रथीको सम्मुख
 होकर गिराया, फिर आपके और उनके हाथियों के सवारों के
 समूहों ने नाराच शर और तोमरों के द्वारा सम्मुख होकर
 हाथियों के सवारों को गिराया और उस रण में पत्तिसिद्ध नाम
 सेना के भागने भिरिडपाल और परशों के द्वारा पत्तियों को
 गिराया और रथी ने हाथी के सवार को सम्मुख होकर मारा
 और हाथी के सवारने इसी प्रकार से रथी को जागिराया हे
 भरतर्षभ घोड़ों के सवारों ने परशों के द्वारा रथी को और रथी ने
 घोड़ों के सवारको और दोनों

routed and the armies of the Pandavas remained firm under the
 protection of Arjun and Bhimsen 9. Then the warriors of the two
 armies broke the lines and advanced to fight. Then in that great
 battle horsemen were killed by the double-edged sharp swords and
 battle axes of horsemen. Amid those dreadful armies charioteers
 slew charioteers with their golden arrows. The elephant riders of the
 two armies fought with arrows and slew one another. The foot sol-
 diers fought with battle axes and other weapons. Charioteers faced
 elephant riders and slew one another. The horsemen and charioteers
 slew one another with sharp arrows. Some horsemen and elephant
 riders met in combat and destroyed one another in a wonderful way.
 18. The foot soldiers were seen destroyed by elephant riders who
 were sometimes killed by the foot soldiers. Horsemen and foot

पातितः समदृश्यंत तैश्चापिगजयोधिनः ॥ १९ ॥ पत्सिंघाह्यारोहे. स दिंसाश्चप-
त्तिभि' । पात्यमानाव्यदृश्यंत शतशोथसहस्रश' ॥ २० ॥ ध्वजैस्तत्रापविद्धैथ कामुके
स्तोमरैस्तथा । प्रासैस्तथा गदाभिश्च परिघैःकंपनैस्तथा ॥ २१ ॥ शक्तिभि कवचै-
थित्रै कणपैरंकुशैरपि । निखिंशौर्विमलैथापि स्वर्णपुंखै. शरैस्तथा ॥ २२ ॥ परिस्तो
मैःकुषाभिश्च कथलैधमहाघनैः । भूमोतिभरतश्रेष्ठ स्नादमैरिवचित्रिता ॥ २३ ॥ नरा
श्वकायैः पतितैर्द्वैतिभिश्च महाहवे । अगम्य रूपापृथिवी मांसशोणितकर्दमा ॥ २४ ॥
प्रशशामरजभौमं व्युत्तिंतरणशोणितैः । दिशश्च विमलाः सर्वाः संवभुवुर्जनेश्वर ॥ २५ ॥
उत्थितान्य गणेषानि कंधघानि समंततः । चिह्नभूतानि जगतो विनाशार्थंभारत
॥ २६ ॥ तस्मिन् युद्धे महारौद्रे वर्तमानेसुदारुणे । प्रत्यदृश्यंतरथिनो घावमानाःसमंतत.
॥ २७ ॥ ततो भीमश्च द्रोणश्च सेंघवथ जयद्रथ । पुरुमित्रोजयोभोजः शल्यथापि स

सेनाओं के हाथी के सवारों ने तीक्ष्ण शस्त्रों से घोड़ों के सवारों को और घोड़ों के सवारों ने हाथी के सवारोंको विध्वंस किया यहभी आश्चर्य सा हुआ औरजहां तहां अच्छे २ हाथी के सवारों के हाथ से पदाती भी मारे हुए दृष्ट पड़े और उन पदातियों के हाथ से हाथियों के सवार मरेहुए देखने में आये घोड़ों के सवारों से पतियों के समूह और पतियों से सवारों के समूह गिराये हुए दिखाई दिये हजारों गिरते हुए हजारों ध्वजा और धनुषों समेत और हजारों तोमर परिस्तोम और कुयों समेत और बहुतेरे बहु मूल्य कंबलों को ओढ़े हुए प्रास गदा परिघ कंपन शक्ति और विचित्र कवचों को धारण किये भूमि में गतप्राण दीखे हे भरतर्षभ हजारों कुणप अंकुश और सुवर्ण पुंखवाले दारुणों से भूमि ऐसी शोभायमानयी जैसे कि मालाओं से पूरित होकर शोभित होती है और उस महायुद्ध में मनुष्य घोड़े और हाथियों के गिरे हुए शरीरों से ढकी हुई पृथ्वी मांस रुधिर रूपी कीच से महा दुर्गम और देखने के अयोग्य थी और मनुष्यों के रुधिरों से छिड़की हुई पृथ्वी

soldiers fought and slew one another. Thousands were seen falling, with their banners and bows cut down Other weapons by thousands, precious wrappers, maces, spears and armour of sorts were seen on those who had fallen in battle. Thousands of goads and arrows with golden feathers beautified the field as if strewn with flower chaplets 22. In that great battle men, horses and elephants covered the field with their flesh, blood and corpses, and the scene was dreadful to behold The dust, sprinkled over with human blood, subsided; the directions cleared up and innumerable headless bodies sprang up all round indicating destruction of the world. 26. And in that dreadful battle charioteers were seen running away in all directions Then Bhishm, Drona, Jayadrath the ruler of Sindhu. Purumitra, Vikarn and Shakuni the son of Suval, all those warriors invincible in battle and

स सौवलः ॥ २८ ॥ पतेसमरदुर्धर्षाः सिंहदुष्यपराक्रमाः । पांडवातामनीकानि
 वभुंस्तुःस्मपुनःपुनः ॥ २९ ॥ तथैव भीमसेनोपि राक्षसश्च घटोत्कचः । सात्यकिश्चेकितान-
 नश्च द्रौपदेयाथ भारत ॥ ३० ॥ तावकांस्तवपुत्रांश्च सहितान् सर्वं राजभिः । द्वाप
 पामासुराजौते त्रिदशादानयानिय ॥ ३१ ॥ तथाते समरेण्योर्ग्यं निघ्नंतःक्षत्रियर्षभाः ।
 रक्तोक्षिता घोररूपा विरेजुर्दानवाइव ॥ ३२ ॥ विनिर्जित्य रिपून्वीराः सेनयोद्धमयोरपि ।
 व्यदृश्यंतमहामात्रा प्रहाइवनभस्तले ॥ ३३ ॥ ततो रथसद्वक्षेण पुत्रोदुर्योधनस्तप ।
 अभ्ययात् पांडवं युधे राक्षसं च घटोत्कचम् ॥ ३४ ॥ तथैव पांडवाः सर्वे महत्पा
 सेनयासह । द्रोणभीष्मौ रणे यत्तौ प्रयुधयुरारंभौ ॥ ३५ ॥ किराटीच धर्मोद्भूतः

की घूल अत्यन्त शान्त होगई हे राजा सब दिशा शुद्ध हुई और कवन्ध अर्थात् विना
 शिरके रूढ़ चारों ओर से असंख्य उत्पन्न होकर सब संसारके नाशकारक हुए
 फिर उस बड़े भारी भयानक युद्ध जारी होनेपर चारों ओरसे दौड़ते हुए अनेक
 रथी दृष्ट पड़े इसके पीछे भीष्म द्रोणाचार्य जयद्रथ राजा सिंधु पुरमित्र विकर्ण
 शकुनि सौवल यह सब युद्धमें दुर्धर्ष सिंहके समान पराक्रमी पांडवोंकी सेना के मारने
 को उपस्थितहुए, ॥ २९ ॥ इसी प्रकारहे भरतवंशी भीमसेन घटोत्कच राक्षस सात्यकी
 चेकितान द्रौपदी के पांचों पुत्र इन वीरों ने भी सब राजाओं समेत युद्धभूमि में
 नियत होकर आपके शूरवीरों समेत सब पुत्रों को ऐसे छिन्न भिन्न कर दिया जैसे
 कि देवता लोग दानवों को करदेते हैं इसीप्रकार से वह सब क्षत्री परस्पर में युद्ध
 प्रहार करते हुए रुधिर भरे हुए शरीरोंसे घोररूप किशुक वृक्षोंके समान शोभाय-
 मान दिखाई देनेलगे ॥ ३० ॥ हे राजा दोनों ओर की सेनाके शूरवीर अपने २ शत्रुओं
 को विजय करके ऐसे देखने में आते थे जैसे कि आकाश मंडल में सूर्यादि बड़े
 ग्रह दिखाई देते हैं इसके उपरान्त आपका पुत्र दुर्योधन हजार रथों के साथ उस
 युद्ध में पांडव और घटोत्कच राक्षस के सम्मुख आया बैसैही सब पांडवभी अपनी
 बड़ी सेना समेत भीष्मजी और द्रोणाचार्य के सम्मुख गये यह सब पांडव आदि
 युद्ध में शूरवीर शत्रुओं के विजय करने वाले हैं इसके पीछे दिव्य मुकुटपारी क्रोध

Possessing the strength of lions, broke the ranks of the Pandavas. 29. In the same manner Bhimsen, Ghatotkach, Satyski, Chekitan, the five sons of Draupadi and other warrior princes beat your sons and warriors, as gods did the danavas. Thus all those warriors fighting against one other looked glorious like Kinshuk trees in bloom with their blood stained bodies. 32. The warriors on both sides, conquering their enemies, looked as if they were suns on high. Then your son Duryodhan, accompanied with a thousand chariots, faced the Pandav Ghatotkach of rakshas blood, and the Pandavas, with their armies, faced Bhisma and Dronacharya. All these Pandavas are brave warriors and conquerers of foes. Then Arjun, with his celestial dia-

समंतात्पार्थिवोत्तमान् । अर्जुनि सात्याकिश्चैव ययतुःसौवर्लवल्म ॥ ३६ ॥ ततः
प्रवृत्तेभ्यः संग्रामोलोमहर्षणः । तावकानांपरेषांच समरेविजयैषिणाम् ॥ ३७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीययुद्ध दिवसे संकुल्युद्धे
सप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

सञ्जय उवाच । ततस्तोपार्थिषाः क्रुद्धा फाल्गुनर्वाक्ष्य संयुगे । रथैरनेकसाहसैः
समंतात्पर्यं धारयन् ॥ १ ॥ अथैनं रथवृत्तेन कोष्ठकीकृत्यभारत । शरैःसुवद्भुसाहसैः
समंतादङ्गवारयन् ॥ २ ॥ शकीश्च विमलास्तीक्ष्णा गदाश्च परिषै सह । प्रास्तान्पर
भ्रवांथैव मुद्गरान् मुसलानपि ॥ ३ ॥ चित्तिः समरेक्रुद्धाः फाल्गुनस्वरथप्रति ।
शस्त्राणामथतां वृष्टिं शलभानामिवावर्ति ॥ ४ ॥ हरोध सर्थनः पार्थः शरैः कनकभृणपैः ।
तत्र तल्लाघवे दृष्ट्वा वीभत्सोरपि मानुषम् ॥ ५ ॥ देव दानव गंधर्वाः पिशाचो रगर

में भरा अर्जुन सब ओरके राजाओं के सम्मुख गया और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु
व सात्यकी यह दोनों शकुनी की सेना के सम्मुख गये तिसके पीछे परस्पर में
विजय की इच्छा रखने वाले आपके पुत्रों का और दूसरों का रोमहर्षण करने
वाला महायुद्ध फिर जारी हुआ ॥ १७ ॥

आध्याय ॥ ५८ ॥

संजय बोले कि फिर उन क्रोधरूप राजाओं ने अर्जुन को युद्ध में देखकर
हजारों रथ समेत उसको आनकर घेर लिया तदनन्तर हे भरतवंशी उसको रथ
समूहों से घेरकर चारों ओर से हजारों बाणों से भी रोका फिर युद्ध में
क्रोधरूप उन लोगों ने स्वच्छ बरछी तीक्ष्ण गदा प्राश परस्वध मुद्गर और मूशनों
को परिधों समेत अर्जुन के रथपर छोड़ा और अर्जुनने भी अपने मुनहरी बाणों
से उस टीड़ी के समूहके समान राजाओं की शस्त्र और बाणोंकी वर्षा चारोंको ओर
से रोका हे राजा इस युद्ध में अर्जुन की हस्तलाघवता जो कि दृष्टि से वाहरथीः
उसको देव दानव गन्धर्व पिशाच उरग और राक्षसों ने देखकर अर्जुनकी बड़ी

dem on, encountered all the princes, while hisson, Abhimanyu
together with Satyaki, faced Shakuni's army. Then a dreadful fight
ensued between your sons and the Pandavas." 37.

CHAPTER LVIII

Sanjaya continued. "The enraged princes, seeing Arjun in the
field of battle, surrounded him on all sides with thousands of chariots,
and while he was thus surrounded they checked him from all direc-
tions with thousands of arrows. And the enraged warriors in that
battle hurled at Arjun bright spears, maces, clubs and other weapons.
Arjun too, with his golden arrows, checked the locust like flight of
the weapons and darts of those princes. The gods, danavas, gandhar-

क्षसाः । सायु साधिवति राजेंद्र फाल्गुनं प्रत्यपूजयन् ॥ ६ ॥ सात्यकिश्चाभि मनुयुध
महरया सेनयावृत्तौ । गांधारात् समेत दूरात् जग्मतुः सहसौयलान् ॥ ७ ॥ तत्र
सौवलकाः क्रुद्धा वाष्पोंवस्य रथोत्तमम् । तिलशथिच्छिद्रुः क्रोधाच्छस्त्रैर्नानाविधै-
र्युधि ॥ ८ ॥ सात्यकिस्तुरयं त्यक्त्वावर्तमाने भवावहे । अभिमन्योरधं नूनं मारुहो
परंतपः ॥ ९ ॥ सात्यकरथ संयुक्तौ सौवले यस्य वाहिनी । ध्यधमेतां शितैश्चूर्ण
शरैः सन्नतगर्वाभिः ॥ १० ॥ द्रोणभीष्मीरणे यत्तौ धर्मराजस्यवाहिनीम् । नाशयेतां
शरैस्तीक्ष्णैः कंकपत्रपरिच्छदैः ॥ ११ ॥ ततो धर्म सुतो राजा माद्री पुत्रौ च पांडवौ ।
मिपतां सर्वं सैन्यानां द्रोणानीकमुपाद्रवन् ॥ १२ ॥ तत्रास्ति सुमहद्युद्धं तुमुललोमह-
र्षणम् । यथा देवासुरं युद्धं पूर्वं मासीत्सुदानुगम् ॥ १३ ॥ कुर्वाणौ सुमहत्कर्ममा-
मसेनघटोत्कचौ । दुर्योधनस्ततोभ्येत्यतावुभावप्यवारयत् ॥ १४ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम

मशंमा धन्य धन्य शब्दोंसे की । ६। और सात्यकी और अभिमन्युने बड़ी सेना वाले
युद्ध में शूरीर गांधारियों को सौवल के पुत्रों समेत युद्ध में रोका दिया, इसके पीछे
क्रोध में भरे हुए सौवलके पुत्रों ने छापिणवंधी सात्यकी के उत्तम रथको नाना
प्रकार के शस्त्रों से तिलके समान टुकड़े २ कर डाला, हे शत्रु सन्तापी धृतराष्ट्र फिर
तो सात्यकी उस महाभारी युद्ध के होनेपर उस रथको त्याग शीघ्र ही अभिमन्यु
के रथपर चढा फिर एक ही रथपर सवार । १०। उन दोनोंने बड़ी शीघ्रता से गुप्त ग्रन्थी
वाले वाणों से शकुनी की सेनाको मारा, और युद्ध में कुशल द्रोणाचार्य और
भीष्मजी ने कंकपक्ष वाले तीक्ष्ण वाणों से धर्मराज युधिष्ठिर की सेना का विध्वंस
किया इसके अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर माद्रीनन्दन नकुल सहदेव आदि पांडवों की
सब सेनाके देखते हुए द्रोणाचार्य की सेनाके सम्मुख दौड़े फिर वहां रोमहर्षण करने
वाला बहुत भारी ऐसा तुमुल युद्ध हुआ जैसे कि पूर्व समय में देवता और असुरों
का महा भयानक युद्ध हुआ । १३। फिर भीमसेन और घटोत्कच ने बड़ा कर्म किया

vas, pishaches, Uragas and rakshases who saw the unseen dexterity
of Arjun's hand, praised his skill in loud words. 6. Satyaki and
Abhimanyu checked the gandhars together with the sons of Shakuni
in that great battle, and thereupon they broke into very minute pieces
the chariot of Satyaki. At this dreadful mutilation of his chariot,
O invincible Dhritrashtra, Satyaki shared the chariot of Abhimanyu.
Then both those warriors, seated on the same chariot, began to destroy
the army of Shakuni with a swift discharge of their arrows. 10. Drona-
charya and Bhishm. adept in the art of war, destroyed the army of
Yudhishtir with their feathered arrows. Thereupon, Yudhishtir
with Nakul and Sahadev the sons of Madri and the Pandav army,
rushed upon the army of Dronacharya, and the fight was so furious
as that between the gods and danavas of old. 13. Bhimisen and Ghatot-

हैर्दियस्यपराक्रमम् । अतीत्यपितरयुद्धे यद्युध्यतभारत ॥ १५ ॥ भीमसेनस्तु संकुडो
 दुर्योधनममर्षणम् । हृद्यविध्यत्पृष्केन प्रहसन्नविषपाडय ॥ १६ ॥ ततो दुर्योधनो राजा
 प्रहारधरपीडित । निपसादरयोपस्थे कश्मलचजगामह ॥ १७ ॥ तं विसन्नं विदित्वा तु
 त्वरमाणोऽस्यसाधधि । अपोवाहुरणाद्राजस्ततः सैन्यमभज्यत ॥ १८ ॥ ततस्ताकौ
 रवीसेना द्रवमाणामसमतत । निघ्नन्भीमं शरैस्तीक्ष्णै रनुवद्राजपृष्ठत ॥ १९ ॥ पार्यत
 श्ररथश्रेष्ठो धर्मपुत्रश्चपाडय । द्रोणस्यपश्य सैन्यं गागेवस्य च पश्यत ॥ २० ॥ जघ्नतु
 चिंशितैस्तीक्ष्णै परानीकविनाशनै । द्रवमाणस्तु तत्सैन्यं तव पुत्रस्यसयुगे ॥ २१ ॥
 नाशयन्तु चारयितु भीष्मद्रोणौ महारथौ । चार्यमाणञ्च भीष्मेण द्रोणे नच महात्मना
 ॥ २२ ॥ विद्रवत्येव तत् सैन्यं पश्यतो द्रोणभीष्मयो । ततो रथ सहस्रेषु विद्रवत्सुतत
 स्तत ॥ २३ ॥ तावास्थितावेकरथ सौभद्र शिनि पुङ्गवौ । सौवर्लो समरे सेना शत

तवतो दुर्योधन ने सम्मुख आकर उनदोनों को भी रोका, हे भरतवशी वहां हमने
 हिर्दिया के पुत्र घटोत्कचका अपूर्व पराक्रम देखा कि युद्ध में पिता कोभी उल्लयन
 करगया। १५। फिर अत्यन्त क्रोध भरे अशातरूप भीमसेन ने हँसकर प्रशस्तनाम वाण
 से दुर्योधन के हृदय में प्रहार किया तब उस महारथी के वज्ररूप प्रहार से
 पीडामान राजा दुर्योधन रथके बैठने के स्थान में बैठगया, हे राजा फिर उस का
 सारथी उसको अचेत जानकर बड़ी शीघ्रता पूर्वक युद्ध भूमि से दूर लेगया इस
 के पीछे सेना इधर उधर विखर गई, फिर भीमसेन जहां तहां से भागने वाली उस
 कोरवी सेनाको तक्षिण वाणोंसे मारता हुआ पीछे की ओरसे चला। १९ हे भरतवशी
 युद्ध में कुशल धृष्टद्युम्न और धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य और भीष्मजी के देखते
 हुये शत्रुहन्ते वाले विशिखों से उस सब सेनाको मारा और सेना ऐसी भागी कि
 जिसके रोकने को भीष्म और द्रोणाचार्यभी समर्थ नहीं हुये और हे परतप जहा
 तहां हजारों रथके दूनपर उन एक रथपर बैठने वाले अभिमन्यु और सात्यकी नेभी

each did prodigies of valour and Duryodhan himself came round to
 check them. There we saw the extraordinary prowess of Ghatotkach
 the son of Hidimba who surpassed his father in deeds of valour 15 Then
 Bhimsen enraged and dissatisfied hit Duryodhan's breast with an
 arrow which he shot smiling. Wounded by that dreadful weapon hard
 like a vjra, prince Duryodhan became motionless in his seat. His coach
 man, seeing him senseless carried him farther away from the army.
 At this the army broke up. Bhimsen chased the army of the Kaurava
 and shot many a sharp arrow from behind 19 Dhrishtadyumn the
 skilful warrior and Yudhishtir the son of Dharm killed the Kaurav
 warriors within sight of Dronacharya and Bhishm. There was a
 total defeat of your armies and even Dronacharya and Bhishm could
 not check the soldiers from flight. Thousands of chariots were seen
 broken here and there by Abhimanyu and Satyaki seated in the

येतां समन्ततः ॥ २४ ॥ शुश्रुमाते तदातौ तु सैन्ययुद्धपङ्क्तौ । अमावास्यांगतौ यद्गन्
सोमसूर्यौ नभस्तले ॥ २५ ॥ अर्जुनस्तु ततः क्रुद्धस्तत्र सैन्यं विशाम्पते । घर्षं शर
घर्षेण धारामिद्वि तोयद्दः ॥ २६ ॥ वद्यमानं ततस्तत्र शरैः पार्थस्य संयुगे । दुद्राच
कार्त्तव्यं सैन्यं विषाद् भय कम्पितम् ॥ २७ ॥ द्रवतरतान् समालक्ष्य भीष्मद्रोणौ महा
रथौ । न्यचार येतां संरघ्वी दुर्योधन द्वितैपिणौ ॥ २८ ॥ ततो दुर्योधनो राजा समा
श्वस्य विशाम्पते । न्यवर्तयत तत् सैन्यं द्रवमाणं समन्ततः ॥ २९ ॥ यत्र यत्र सुतः सु
भ्यं यं यं पश्यति भारत । तत्र तत्र न्यवर्त्तन्त क्षत्रियानां महारथाः ॥ ३० ॥ तान्निवृत्ता
समीक्ष्यैव ततोऽप्येतरे जनाः । अन्योन्यं स्पर्धयाराजन् तज्जयाचावतस्थिरे ॥ ३१ ॥
पुनरावर्त्ततां तेषां वेग आसीत् विशाम्पते । पूर्वतः सागरस्येव चन्द्रस्यो दयनं प्रतिशर
सन्निवृत्तास्ततस्तांस्तु दृष्ट्वा राजासुर्योधनः । अमवीत् स्वरितो गत्या भीष्मं शांतनवं

शकुनि की सेना का नाश कर दिया । २४ । इसके पीछे वह दोनों अभिमन्यु और सात्यकी
ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि अमावास्याके दिन आकाश मंडलमें वर्त्तमान सूर्य और
चन्द्रमा शोभित होते हैं, हे राजा इसके अनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुनने आपकी सेना पर
ऐसी बाणों की वर्षा की जिसके धारों से बादल जलको बरसाता है, फिर इसके
पीछे युद्धके बीच अर्जुनके बाणोंसे घायल और भयसे विह्वल और कंपायमान होकर
वह कौरवी सेना युद्धसे भाग गई, फिर दुर्योधनके अर्पीष्ट चम्हनेवाले महाबली भीष्म और
द्रोणाचार्यने उस भागीहुई कौरवी सेनाको बड़े क्रोधसेरोका हेराजा इसके पीछे राजादुर्यो-
धनभीने अच्छी रीतिसे विश्वास देकर उस भागीहुई अपनी सेनाको चारों ओरसे लौटाया
हेभरतवंशी जहां जहां जिस जिसने आपके पुत्रको देखा वहां २ से वह क्षत्रिय
महारथी लौटे । ३० । इसके पीछे हेराजा उनलौटेहुओंको देखकर अन्य मनुष्यभी परस्पर
की ईर्ष्यासे बलज्जा से लौटकर नियत हुए फिर उन लौटनेवालों का ऐसा वेग
हुआ जैसे कि चन्द्रमाके उदय में पूर्ण होते हुए समुद्र का वेग होता है इस के पीछे
राजा दुर्योधन उन लौटेहुओंको देखकर बहुत शीघ्रही शांतनु भीष्मजीके पास

same chariot, who brought about the destruction of Shakuni's army.
24. The two warriors looked glorious like the sun and the moon in the
sky on the day of *Amarasya*. Then the enraged Arjun showered his
arrows like rain from clouds on your army. Wounded by Arjun's arrows
in the field of battle, terrified and shaking, the Kaurav army fled from
the field. The well wishers of Duryodhan, valliant Bhishm and
Dronacharya checked the Kaurav army in great anger. Prince
Duryodhan too, encouraged the army by his presence and brought
them back from all sides. Whatever soldiers saw your son, returned
to the field of battle. 30. Seeing the brave warriors returning to their
duty, others too, by example or shame, returned and stationed them-
selves on their posts. The returners rallied with a force like the
ocean tide at the full moon. Seeing his soldiers return, prince Duryo-

यच्च ॥ ३३ ॥ पितामह निरोधेन यत्वा वक्ष्यामि भारत । नानुरूपमह मन्ये त्वयि जीव
ति कौरव ॥ ३४ ॥ द्रोणे चास्त्र विनाश्रेष्ठे सपुत्रे समुहजने । कृपे चैव महेश्वासे द्रवते
यद् वरुधिनी ॥ ३५ ॥ न पांडवान्प्रतिबलास्तचमन्ये कथञ्चन । तथा द्रोणस्य सप्रामे
द्रोणेश्चैव कृपस्यच ॥ ३६ ॥ अनुग्राह्या पाण्डसुनास्तच नून पितामह । धर्ममाक्षमलेकीर
वध्यमाना वरुधिनीम् ॥ ३७ ॥ सोस्मि वाच्यस्त्वया गजन् पूर्व मेव समागमे । न शो
स्ये पांडवान् सख्ये नापि पार्ष्ण सात्यकी ॥ ३८ ॥ धृत्वा तु वचन तुभ्य माचापस्यरूप
स्यच । कर्णेन सहित कृत्य चिन्तयानस्तदैवहि ॥ ३९ ॥ यदिनाह परित्याज्यो युवाभ्या
मिह सपुगे । विक्रमेणान् रूपेण युधेता पुरपपमौ ॥ ४० ॥ एतच्छ्रुत्वा बचो भीष्म
प्रहसन् सर्वं मुहुर्मुहुः । अग्रनीत् तनय तुभ्य क्रोधादुद्वृत्य चक्षुषी ॥ ४१ ॥ बहुशोसिमया

जाकर यह वचन बोला । ३३ हे भरतवंशी पितामह आप मेरे इस वचनको समझिये हे
कौरवों में श्रेष्ठ मैं यह उचित नहीं समझता हू कि आपके और सकल शस्त्र विद्याके
ज्ञाता द्रोणाचार्य जी और उन के पुत्र अश्वत्थामा और महायनुर्धर कृपाचार्य व
उनके मित्रों के विद्यमान रहते हुए सेना भागती है, मैं किसी दशा में भी किसी को
आपके समान पराक्रमी नहीं जानता हू इसी प्रकार द्रोणाचार्य कृपाचार्य और
अश्वत्थामा के भी समान युद्ध में पांडव लोग नहीं है । ३६ हे पितामह निश्चयकरके
पांडव लोग आपकी कृपा के योग्य है हे धीर इसीसे इस घायल और मारी कृपी
हुई सेनापर आप क्षमा करतेहो सो हे राजा आपको प्रथमही सम्मुखता में कहना
योग्य था कि मैं इस युद्ध में पांडव लोगों से व सात्यकी और धृष्टद्युम्न से
नहीं लड़ूंगा हे भरतवंशी जो मैं आपके और आचार्यजी के वचनों को सुनता तो
उसी समय कर्णसे कर्म करवाने के विचार को करता आप दोनों को इस युद्ध में
मेरा ज्वागता योग्य नहीं है, आप दोनों पुरुषोत्तम अपने योग्य पराक्रम के द्वारा
युद्ध करो । ४० भीष्मजी उस की बातोंको सुनकर बारम्बार हँसते हुए क्रोध से दोनों

dhan came to Bhishm and said 33 "Descendant of Bharat! grandfather,
give ear to my words. I donot understand why soldiers should run
away from battle when you, Dronacharya the master of the science
of arms, his son Ashwathama valliant Kripacharya and your friends
are present here I never think anyone else to be stronger than you
nor are the Pandavas a fit match for Dronacharya, Kripacharya and
Ashwathama 36 There is no doubt, grandfather, that the Pandavas
are worthy of your love and this is the reason why you donot punish
them for the mutilation of your army, but you should have told me
before, that you would not fight against the Pandavas, Satyaki or
Dhrishtadyumna. Had you and Dronacharya told this to me before,
I could have asked Karan to do battle for me. You two should not
leave me in the lurch now Fight therefore and show a prowess worthy
of you" 40 Bhishm laughed at these words, and opening wide his eyes

राजस्तथ्यमुक्तो हिनं वचः । अजेयाः पांडवा युद्धे देवै रपि सवासवैः ॥ ४२ ॥ यत्तु
शक्यं मया कर्तुं बुद्धे वाद्य नृपोत्तम । करिष्यामि यथा दाकि प्रेक्षेदानीं सथांघयः ४३ ॥
अद्य पाण्डु सुता नेकः ससैन्यान् सह वन्धुभिः । सोह निवार विष्यामि सार्थलोकस्य
पश्यतः ॥ ४४ ॥ एवमुक्तेन भीष्मेण पुत्रास्तघजनेश्वर । दध्मुः शंप्तान् मुदा युक्ता भेरीः
संजपिनरेभृशम् ॥ ४५ ॥ पांडवाहि ततो राजन् श्रुत्वातं निन्दं महत् । दध्मु शंप्तांश्च
भेरीश्च सुरजांश्चाप्यनादयन् ॥ ४६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीययुद्ध दिवसे भीष्मदुर्योधन
सम्वादे अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

नेत्रों को अच्छी रीति से खोलकर आपके पुत्र से बोले कि हे राजा मैंने बहुत वार
तुम से तुम्हारा हितकारी वचन कहा है, कि पांडव लोग युद्ध में इन्द्र समेत देवताओं
से भी अजेय हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ जो गुप्त हृद् से करने के योग्य हैं उसको मैं
अपनी सामर्थ्य के अनुसार करूंगा तू अब बांधवों समेत देख कि मैं सेना समेत पांडवों
को तेरे और सब लोकों के देखते हुए हटाऊंगा हे राजा भीष्म से कहे हुए ऐसे
वचनों को सुनकर आपके आनन्द भरे पुत्र ने शंख और भेरीको बजाया इसके पीछे
पांडवों ने भी इस बड़े शब्दको सुनकर शंखों को बजाकर भेरी सुरजादिकों को
अच्छी रीति से बजाया ॥ ४६ ॥

in anger, spoke these words to your son:—"I have often given you
good advice, king," said he, "and told you that the Pandavas were
invincible even by the gods including Indra. I do my duty to the
best of my ability and age. You and your kinsmen will now
see how I make the Pandavas and their army give way." 44. Hearing
these words from Bhishm, your son sounded his conch and bugle in
glee. The Pandavas heard the loud sound and blew their conchs and
bugles in reply. 46.



धृतराष्ट्र उवाच । प्रतिज्ञाते ततश्चस्मिन् युद्धे भीष्मेण दारुणे । क्रोधितो मम पुत्रेण दुःखितेन विशेषतः ॥ १ ॥ भीष्मः किमकरोत्तत्र पाण्डवेषु भारत । पितामहे वा पशालास्तम्भमाचक्ष्व सञ्जय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ गतपूर्वाह्न भूयिष्ठे तस्मिन्नह्नि भारत । पश्चिमां दिशमास्थाय स्थितेचापि दिवाकरे ॥ ३ ॥ जयं प्रसेषु दृष्टेः पाण्डवेषु महात्मसु । सर्वधर्म विशेषज्ञ पिता देवव्रतस्तव ॥ ४ ॥ अभ्ययाज्जवनैरश्वैः पाण्डवानामनीकिनीम् । महत्या सेनया गुप्तस्तव पुत्रैश्च सर्वशः ॥ ५ ॥ प्रावर्षत ततो युद्धं तुमुल लोमहर्षणम् । अस्माकं पाण्डवैः सार्धं मनयात्तव भारत ॥ ६ ॥ धनुषां कृजतां तत्र तलानां चाभि हन्यताम् । महान् समभवच्छब्दो गिरीणामिव दीर्यताम् ॥ ७ ॥ तिष्ठ स्थितोऽभि विरुध्वेनं निवसंस्व स्थिरो मय । स्थिरोऽस्मिप्रहरस्वैति शब्दो भूयति सर्वशः ॥ ८ ॥ कांचनेषु तनुत्रेषु किरीटेषु ध्वजेषु च ।

अध्याय ॥ ५९ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसके अनन्तर उस भयानक युद्ध में मेरे पुत्र के कहने से भीष्मजी के कांप युक्त होकर प्रण करने पर, भीष्म जीने पांडवों के ऊपर और पांचाल देशियों के पितामह के ऊपर क्या २ काम किये वह मुझ से आप बर्षन कीजिये, संजय बोले कि हे भरतवंशी उस दिन के मध्याह्न समय के व्यतीत होनेपर सूर्य के पश्चिम और होने के काल में और महात्मा पांडवोंके विजयी होकर प्रसन्न होनेपर सब धर्मों के ज्ञाता आपके पिता देवव्रत भीष्मजी सब रीति से आपके पुत्र और सेनाओं से रक्षित होकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा पांडवों की सेनाके सम्मुख गये, हे भरतवंशी इसके पीछे आपके अन्याय के कारण पांडवों से हमारा रोम हर्षण करने वाला महातुमुल युद्ध हुआ, अर्थात् धनुषों के शब्दों से और तालों के बजने से ऐसा तुमुल शब्द हुआ जैसे कि पर्वतों के फटनेका हुआ करता है, तिष्ठ तिष्ठ खड़ाहूं खड़ाहूं इसको देख, लौट लौट नियतहो, नियतहूं, महार कर

CHAPTER LIX

“ Being asked by my son in the field of battle, what did Bhishm, who had made the promise in his rage, do to the Pandavas and the Pandavas to Bhishm? Pray tell me all, Sanjaya,” said Dhritrashtra. “ In the afternoon of that day,” replied Sanjaya, “ when it was nearly evening time and the Pandavas were making merry at their conquest, your father Devabrat Bhishm, acquainted with all dharmas, being protected by your son's armies from every side, faced the army of the Pandavas on very swift horses. Then, on account of your injustice, we fought a dreadful fight with the Pandavas. 6. The sounds made by bows and beating of palms caused a noise like that of the rending of mountains. ‘Stand, Stand; I stand; look here; return, return; keep standing; begin etc.’ were the words heard

शिलानामिष शैलपु पतितानाममृतपानिः ॥ ९ ॥ पतिताभ्युत्तमाङ्गानि चाहवश्चवि
मूर्ध्पताः । व्यचेष्टत मर्हो प्राप्य शतशोष सहस्रशः ॥१०॥ दृष्टोत्तमाङ्गाः केचित्तु तथैवो
घतकार्मुकाः । प्रगृहीतायुधाश्चापि तस्युः पुरुषसत्तमा ॥ ११ ॥ प्रावर्त्ततमहाचेगो
नदी रुधिरवाहिनी । मातङ्गाङ्गशिलारौद्रा मांस शोणितकर्दमा ॥ १२ ॥ वराश्वतर
नागानां शरीरप्रमदातदा । परलोकार्णवमुखी गृध्रगोमायु मोदनी ॥ १३ ॥ न दृष्टं नश्रुतं
घापि युद्धमेतादृशं नृप । यथा तव सुतानाञ्च पांडवानाञ्च भारत ॥ १४ ॥ नासी
द्रव्यपथस्तत्र योधैर्धुचि निपातितैः । गजैश्चपतितैर्नालैर्गिरिगृहैरियावृतः ॥ १५ ॥
विश्रुणोः कवचैश्चित्रैः शिरस्त्राणैश्च मारिय । शुश्रुमे तद्गणस्थानं शरदीवमस्तलम्
॥ १६ ॥ विनिर्मिता शरैः केचिदन्नापीडप्रकर्षिणः । अर्भीताः समरे नूनन्वयवाचन्त

इत्यादि अनेक प्रकार के शब्द सुनाई दिये, सुनहरी कवच कमठ और ध्वजाओं पर
ऐसे महा शब्द हुए जैसे कि पर्वतों पर शिलाओं के गिरने से शब्द होते हैं, हजारों
भूषणों से असंक्रुत शिर और भुजा पृथ्वीपर गिरकर नानाचेष्टा करने लगे, कितनेही
शिर कटेहुए पुरुषोत्तम धनुष उठायेहुए वा शस्त्रों को धारण कियेहुए उसी दशा में
नियतहुए तब रुधिरमे जारीहोनेवाली घोर नदी हाथियोंके अंगरूप शिला और मांस
रुधिररूप कीचड़ से भरीहुई बड़े वेगवान् उत्तम घोड़े हाथी और मनुष्योंके शरीरसे
प्रकट गिद्ध सृमालोंकी प्रसन्नता देनेवाली परलोक सप्तरूपा घोरनदी बड़े प्रवाहसे
बही १३। हे राजा जैमा कि आपके पुत्रोंका और पांडवोंका युद्ध हुआ वैसा आज
तक देखागया न सुनागया, उस युद्धमें गिरायेहुए शूर वीरों के कारण कहींभी स्यों
के जानेका मार्ग नहींरहा और हाथियों के गिरने से वह पृथ्वी नीले पहाड़ों के
धिसरों के समान दिखाईदी, हे श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मित कवचों के और शिर त्राणों के
फंले हुए होने से वह युद्धभूमि ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि शरद ऋतु में आकाश
मयडन शोभित होता है। १६। कोई मनुष्य अत्यंत घायल आत वा पैरोसिभी

from different sides. 8. The din of the fall of golden coats of mail and helmets was tremendous like that of stones on mountains. Thousands of heads and arms decked with jewels, falling on earth, trembled and shook in various ways. Many warriors remained in the posture they were before—raising up their bows or other weapons when their heads were cut off their bodies. Then the river of blood, having the bodies of elephants for its stones and flesh and blood for its mire, sprang from the bodies of warrior horses, elephants and men, pleasing the vultures and jackals, flowed with great velocity like the ocean of the other world. 13. The world has not yet seen or heard a battle like that between the Pandavas and your sons. On account of the carcasses of warriors there was no way left for the chariots to pass over. From the bodies of the elephants fallen over the plain the ground looked as if strewn over with blue eggs. From the

द्वितीया ॥ १७ ॥ सात धात सखे बन्धो वयस्य मम मानुल । मामा परिव्रजे
 त्यन्धे चुक्रुशु पतिता रणे ॥ १८ ॥ अधाभ्येहित्यमागच्छ किं भीतोसि वयसावसि ।
 स्थितोह समरे मामै गिति चान्ये विचुकुशु ॥ १९ ॥ तत्र भीष्म शान्तनवो नित्य
 गण्डलकामुक । सुमोच चाणान् दीप्ताग्रान्हीनाशीविपानिव ॥ २० ॥ शौर्यकायनी
 कुर्वन् विश सर्षा पतन्नव । जघान पाण्डवरधानादिश्य भरतर्षभ ॥ २१ ॥
 स नृत्यन्वैरधोपस्थे दर्शयन् पाणिनाघायम् । अलातचक्रघट्टाजस्तत्र तत्र स्मदृश्यते
 ॥ २२ ॥ तमेक समरे शूर पाण्डवा खुञ्जयै सह । अनेकशतसाहस्र समपश्यन्तलाघ
 वात् ॥ २३ ॥ मायावृत्तात्मातमिव भीष्म तत्र स्म मेनिरे । पूर्वस्था दिशित दृष्टवा प्रती
 च्याददृशुर्जना ॥ २४ ॥ उदीच्यान्वेव गालोक्य दक्षिणस्या पुन प्रभो । पच समरेश्वर

कटेडूण मन से अर्दीन और अर्दकारी होकर उस युद्धमें शत्रुओं के सम्मुख टाटे,
 कोई हे पिता हे भाई हे मित्र हे वांश्र हे समान अवस्थावाले हे मामा हे काका
 मुझको मतसताओ मतसताओ ऐसा कहकर पुकारे, और कोई सम्मुख वर्तमानहो
 तुम आओ क्या भयभीत है कहा जायगा मैं युद्ध में नियतहू भय न कर इत्यादि
 सते कहकह कर पुकारते थे, उस युद्ध में शान्तनव भीष्मजी न जिनका धनुष
 गण्डल के समान था विषके बुकेडूण वीरनोक के सर्पाकार वाणों को छोड़ा, हे
 भरतवशी वाणों से सब दिशाओं को बराबर करने वाले सावधान व्रत भीष्मजी
 रथ के मार्गों में नृत्य करने और हस्तलाघवता धो दिखाते हुए श्लका के समान
 जहा तहां फिरते और चमकते हुए दृष्टि पड़े, पाड्यों ने सृज्यों समेत युद्ध भूमि में
 उस अकेले शूरवीरकी हस्तलाघवता के कारण लाखों के समान जानकर भीष्मजी
 को महा मायावी के सदृश माना, क्योंकि उसको अभी पूर्व में देखकर फिर पश्चिम
 दिशा में देखा, इसी प्रकार उत्तर में देखकर दक्षिण दिशा में भी देखा, इस गीति

filled with mail and turbans fallen here and there the field of battle
 looked like the sky in cold water 16 Some men, mortally wounded
 with their entrails and legs cut down, cheerfully and proudly rushed
 on the enemy. O the son of Father, brother, friend, kinsman, com-
 panion, maternal uncle, do not abandon me, do not kill me! Some
 cried out, 'Come and face me! Come! Art afraid? Where goest? Don't
 be afraid I am here!' etc. Bhishm the son of Shantanu whose bow
 moved like a circle shot sharp pointed arrows like venomous serpents.
 20 Discharging an equal number of arrows in all directions. Bhishm
 of old vows, slew the Kaurava warriors a few calling out their names.
 Bhishm was so endued with his elixir in all directions, and exhibiting
 the dexterity of his hand and foot like sparks of fire in all direc-
 tions. The Pandavas with the Shmyavas regarded him as though
 he was a myriad of warriors in one by magical power. He was seen
 now in the Eastward in the west, now in the south and then in the

गाङ्गेयः प्रद्वष्टश्चत । २५ ॥ नक्षत्रं पाण्डवेयानां कश्चित् शक्योति वीक्षितुम् । विशि
 खानेव पश्यन्ति भीष्म चाण्डव्युतान्बहून् ॥ २६ ॥ कुर्वाणं समरे कर्तुं सूदयान्च
 वाहिनीम् । व्याक्रोशन्त रणे तत्र नराधरु विषाधरु ॥ २७ ॥ भवानुपेण रूपेण चरन्तं
 पितरं तव । शूलभा इव राजानः पतन्ति विधिवोदिताः ॥ २८ ॥ भीष्माग्निमभिसेनुदं
 धिनाशाय सहस्रशः । न हि मोघः गरः कश्चिदासीत् भीष्मस्यसमुगे ॥ २९ ॥ नरनागाध
 कायेषु बहून्चाह्युयोधिनः । भिनत्येकेन बाणेन सुमुञ्जेन पतत्रिणा ॥ ३० ॥ गजकण्ठक
 सप्तदं वज्रेणैव शिलोच्चयम् । द्वा व्रीनपि गजागोहान् पिण्डिताम् वर्मितानपि ३१ ॥
 नाराचैन सुमुक्तेन निजघ्नान् पितातव । यो यो भीष्मं नरव्याघ्रमभ्येति युधि कथन
 ॥ ३२ ॥ मुहूर्त्तदृष्टः समया पतितो भुवि दृश्यते । एवंसा धर्मराजस्य दध्यमानामहा

से वह गांगेय भीष्मजी युद्ध में महायुद्ध करते हुए दौट्वाये । २५ । पांडवों का
 कोई शूरवीर उनके युद्धके देखनेको समर्थ नहीं हुआ इन भीष्मजी के धनुष भेगिरे
 हुए अनेक विशिख नाम बाणही दिलाई पड़ते थे, उस संग्राह में उस धर्म करनेवाले
 सेनाको मारते देवरूप धर्मते हुए आपके देवव्रत पिताको देखकर युद्धमें लोग अनेक
 रीतों से पुकारते थे, और अत्यन्त मोहित हजारों राजा लोग उसभीष्मरूप अग्नि
 में सबभाओं के समान गिरकर काल बगहुए, युद्धभूमि में उसहस्तनाव्यतामें लड़ने
 वाले भीष्मजी का कोईभी बाण मनुष्य हाथी घोड़े आदि के शरीर में लगकर
 निष्कृत नहीं गया, वह भीष्म युद्धमें मुकेहुए पर्वनाले एकही बाण से दन्तमण्डल
 धारी हाथी को ऐसे मारडालने थे जैसे कि वज्र से पर्वतको इन्द्रमारता है आपके
 पिताने अत्यन्त तीव्र नाराच नाम बाणमे मिले हुए पर्वतों के सयान दो वातीन
 हाथियों के सवारों कोभी धारा । ३१ । जो कोई युद्धमें इस नरोत्तम भीष्मके सम्मुख
 आता था वह भयमे एक मुहूर्त्तनक पृथ्वीपर गिराहुआ दृष्टपड़ता था, इस रीति से
 अतुल बल भीष्मजी से घबल हुई युधिष्ठिरकी सेना हजारों प्रकार से दुखी और

North. The son of Ganga was thus seen fighting in battle. 25. None of the Pandav warriors could face Bhishm in battle. The sharp arrows shot from Bhishm's bow were seen here and there. Seeing your father Devabrat doing that difficult work killing the warriors and routing like a god, the people uttered various cries. Thousands of kings lost their senses and fell into the Bhishmic fire like so many insects. None of the arrows shot by dexterous Bhishm was ineffectual on man elephant or horse. With single hooked arrows Bhishm killed elephants having large tusks as Indra brea's down mountains with his vajra. Your father killed with his sharp pointed arrows many an elephant rider by twos and threes at a time. 31. Whoever faced Bhishm the best of men fell on earth with fear and remained insensible for a while. Thus wounded by Bhishm of immense prowess Yudhishtira's army was distressed and frightened. That last

चमूः ॥ ३३ ॥ भीष्मेणातुलवीर्येण व्यशीर्यंतसहस्रधा । प्राकृतमहासेना शरवर्षेण
 तापिता ॥ ३४ ॥ पश्यतोवासुदेवस्य पार्थस्याथ शिखण्डिन । यतमानापिनेधोराद्रथ
 माणान्महारथान् ॥ ३५ ॥ नाशस्तुधनुवारयितु भीष्मवाणप्रपीडितान् । महेंद्रसमवीर्येण
 वध्यमानामहाचमू ॥ ३६ ॥ अमत्यतमहाराज न च ह्यौसहघावत । आधिद्वन्द्वनगाश्व
 पतितध्वजकूचम् ॥ ३७ ॥ अनीक पाण्डुपुत्राणा हाहाभूतमचेतनम् । जघानापिपितापुत्र
 पुनश्चपितरतथा ॥ ३८ ॥ प्रियसखायचाक्रदे सखादैवदलाकृत । विमुच्यकवचा
 न्यन्ये पाण्डुपुत्रस्य सैनिका ॥ ३९ ॥ विमुक्त केशाघायत प्रत्यहृदयतभारत । तद्गो
 कुलमिधोदृभातमुद्रातरथयूथपम् ॥ ४० ॥ ददृशे पाण्डुपत्रस्य सैन्यमार्तस्वरतदा । प्रम
 ज्यमान सैन्यंतुदृष्ट्वा यादवनन्दन ॥ ४१ ॥ उवाचपार्थ वीभत्सु निगृह्यरथमुत्तमम् ।

भय भीतहुई, वह पांडवों की बड़ी सेना भीष्मजी के बाण मगूहों से पीड़ित होकर
 वासुदेवजी और महात्मा अर्जुनके देसते हुए बड़ी कम्पायमान हुई, उपाय करनेवाले
 धीरलोगभी भीष्मजी के बाणों से अत्यन्त पीड़ामान भागतेहुए महाराथियों के लौटने
 को समर्थ नहीं हुए हे महाराज महाइन्द्र के समान पराक्रमी भीष्मसे उच्छिन्न पांडवों
 की बड़ीभारी सेना पराजय को प्राप्त हाहाकार रूप होकर अचेत होगई और रथमें
 हाथी घोड़े भी घायल होकर ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर पड़ेहुए थे । ३७ । उस
 युद्धमें पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको वा मित्रने प्रियमित्रको मारा हे भरतवंशी
 पाण्डवोंकी सेनाके मनुष्य कवचोंको त्याग गिर के वालोंको फैलाकर दौड़ते हुए
 दृष्टपड़े, तब पाण्डवों की वह सेना जिसके महारथी भ्रान्ति सेयुक्त थे व्याकुल दुखी
 और भयकारी शब्दों को करते हुये दिखाई दिये फिर यादवों के प्रसन्न करनेवाले
 श्रीकृष्ण जी सेनाको पराजय में प्राप्त देखकर अपने उत्तम रथको रोककर अर्जुनसे
 बोले कि हे अर्जुन अब यह समय आगया है जो तेरा अभीष्ट है हे नरोत्तम जो तू

army of the Pandavas, hit by the arrows of Bhishm, was much shaken
 within sight of Krishna and Arjun. Even the bravest of men could
 not keep the soldiers from running away. Routed by Bhishm of
 Indra like prowess the Pandav army suffered defeat and became in
 sensible with cries of ah and alas. Chariots, elephants and horses too,
 fell down on ground. 37 The father struck son the son struck
 father, and the friend struck friend in that great battle. The people
 of the Pandav army, leaving their armour were seen running away
 with dishevelled hair. Then the army of the Pandavas, whose war
 riors had lost their wits, distressed and frightened were seen uttering
 frightful sounds. Shree Krishna the joy of the Yadavas seeing the
 army of the Pandavas in the act of suffering defeat, checked his
 chariot and thus spoke to Arjun — 'The time has now come, Arjun
 which you were so long wishing for. Attack Bhishm, if you have

अथसकालः संप्राप्त. पार्थयस्तेऽभिकाङ्क्षितः ॥ ४२ ॥ प्रहरश्चनरध्याग्र नचेन्मोहा
 द्विमहासे । यत्त्वयारुथितं वीर पुगात्तासमागमे ॥ ४३ ॥ भीष्माद्रेण मुखात्सर्वानुधानं
 गृह्य सैनिकान् । सानुबंधान् हनिष्यामि येमांयोऽस्थानि संयुगे ॥ ४४ ॥ इतिनरकुरु
 कांतैय सवंधात्रयनरिदम् । धीमत्सोपश्य सैन्यंस्वभज्यमान तत्स्नतः ॥ ४५ ॥ द्रवतथ
 महीपालान्पश्ययौधिष्ठिरचले । दृष्ट्वाहि भीष्मं समरे व्यात्ताननमिवांतकम् ॥ ४६ ॥
 मयार्ता प्रपलायंते सिंहातुक्षुद्रमृगादय । एवमुक्तः प्रत्युवाचवाल्मेके धनंजय ॥ ४७ ॥
 नोदयाभ्वान्यतो भीष्मो विगार्हंतडलार्णवम् । पातयिष्यामि दुर्धर्षं वृद्धकुरुपितामहम्
 ॥ ४८ ॥ सञ्जय उवाच । ततोभ्वान् रजतप्रव्याप्तो द्यामासमाघव । घतोभीष्म
 रथो राजन् दुष्प्रेक्ष्योरश्मिवानिव ॥ ४९ ॥ तनस्तत्पुनरावृत्तं युधिष्ठिरचलंमहत् । दृष्ट्वा
 पार्थ महाबाहु भीष्माद्योचनमाहवे ॥ ५० ॥ ततो भीष्मः कुरुश्रेष्ठ सिंहवद्विनदन्मुहुः ।

मोहमे अज्ञान नहीं है तो इनके ऊपर प्रहार कर । ४२ । हे महावीर पूर्व समयमें राजा
 अर्जुन के मिलाप में जो तुमने कहा है, कि दुर्योधनकी सेना के भीष्म द्रोणाचार्य आदि
 लोगों को उन के सहायकों सपेन माहंगा जो कि मुझ से युद्धको करेंगे, हे
 शत्रुंजय अर्जुन तू अपने उस वचनको सत्यकर तू इधर उधर छिन्न भिन्न हुई अपनी
 सेनाको देख, युधिष्ठिर की सेनामें युद्ध कुशल मृत्यु के समान भीष्मको देखकर इन
 भागते हुये राजाओं को देखो । ४६ । यह सब भयसे पीड़ित होकर ऐसे नाश हुए
 जाते हैं जैसे कि छोटे मृगसिंहको देखकर भयसे मरजाते हैं यह कृष्ण के वचन
 सुनकर अर्जुन ने वासुदेव जीको उत्तर दिया, कि आप घोड़ोंको उधर चलाओ
 जहां भीष्मजी हैं मैं अब इस सेना रूपी समुद्रको उतरकर इस अजेय और वृद्ध
 कौरवों के पितामहको गिराजंगा हे राजा तबतो मावजजी ने चांदी के समान अथ
 रंगके घोड़ोंको उधरहीको चलाया जिधर सूर्य के समान कठिनता से देखने के
 योग्य भीष्मजी थे, इस के अनन्तर भीष्मके निमित्त युद्ध में प्रवृत्त महाबाहु अर्जुन
 को देखके युधिष्ठिरकी वह बड़ी भारी सेना फिर लौटआई, । ५० । तदनन्तर

not lost your senses 42. You said in the presence of kings that you would destroy Bhishma Drona, and other warriors of the Kauravas with their allies in battle Fulfil your promise, destroyer of foes! Look at your army scattered here and there and look at brave Bhishma roaming like Death and causing the ksatriyas, flight. 46 They die with fear like lower animals in the presence of a lion." To these words of Vasudev Arjun gave the following reply:—"Lead the horses to the place where Bhishma is I shall cross the ocean of the army and shall destroy the old grandfather of the Kauravas. At this, Madhava drove the silvery horses towards Bhishma who stood in great glory and could not be gazed at like the sun Seeing Arjun ready to fight with Bhishma, the army of Yudhishtira came back. 50. Then

धनं जयाधं शीघ्रं शरैर्वरवाकिरत् ॥ ५१ ॥ क्षणेन सरयस्तस्य सहायः सहसाराधिः ।
 शरवर्षेण महतासंख्येन प्रकाशते ॥ ५२ ॥ वासुदेवस्त्य सप्रांतो धैर्यमास्थाय सत्त्व
 धन् । चोदयामास तानश्वान् विचिंतान् भीष्मसायके ॥ ५३ ॥ ततः पायाँश्च नुगृह्य
 दिव्यजलदग्निं स्वतम् । पातयामास भीष्मस्य धनस्थित्वाग्निभिः शोः । ५४ ॥ सच्छिन्न
 धन्वाकौट्यः पुनरप्यमहद्वनु । निमिषांतरमात्रेण सज्जं चक्रे पितृवत् ॥ ५५ ॥
 पिचकपितृतो दोर्ध्वी धनुर्जलदग्निं स्वतम् । धय स्यतदपि कुङ्क्षिच्छेदधनुर्जुनम् ॥ ५६ ॥
 तस्य तत्पुत्रयामास लाघवशान्तना सुत । साधुपार्थमहाबाहो साधुभोपाण्डुनन्दन ५७
 त्वय्येवैतद्युक्तं महत्कर्म धनेजय । प्रीतोऽस्मि सुभृशं पुत्रं कुक्षुयुद्धं मया सह ॥ ५८ ॥
 इति पार्थ प्रशस्याय प्रयुष्याम्यमहद्वनुः । ममोच समरे शीरः शरान् पार्षथं प्रति
 ॥ ५९ ॥ अदर्शयद् वासुदेवो ह्ययानि परं चलन् । मोघान् कुर्वन् शरांस्तस्य मण्डलाः ।

सिंहसमान गर्जने कौरवों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने शीघ्रही बाणोंकी वर्षा से अर्जुनको
 ऐसा ढकदिया कि उसकारथ ध्वजा सारथी समेत क्षणभर में बाणों से आच्छादित
 होकर दिखाई नहीं दिया, फिरतो भ्रान्त से रहित बुद्धिमान वासुदेवजी ने धैर्यतामें
 नियत होकर भीष्मही के शायकों से उन्हीं के धनुषको काटकर पृथ्वीपर गिरा
 दिया, फिर उसटूटे हुए धनुष वाले पितामह भीष्मने शीघ्रही दूसरे बड़ेभारी धनुषको
 लेकर एक निमिषमें ही तैयार कर लिया १५५। तदनन्तर उसवादलके सामान गर्जने
 वाले धनुषको भीष्मने दोनों हाथों से खेंचा फिर क्रोधयुक्त अर्जुनने उनके उसधनुष
 कोभी काटा, अर्जुनकी इस हस्तलाघवताको देखकर भीष्मजीने प्रशंसाकी कि हे महा
 बाहु अर्जुन धन्यहै हे पांडवनन्दन तुमको धन्यहै, हे संसारके धनोंके विजय करनेवाले
 यह बड़ाकर्म तुम्हींमें है योग्य है योग्य है हे पुत्र मैं तेरे इतकर्मसे अत्यन्त प्रसन्नहूँ तू
 मेरेसंग युद्धकर इसरीतिसे इसरीरने अर्जुनकी प्रशंसाकरके फिर दूसरे बड़े धनुषको
 लेकर अर्जुनके रथपर बाणोंकी वर्षाकरी, फिर वासुदेवजीने भीष्मके बाणोंको

roaring like a lion, Bhishm the test of the Kauravas soon covered
 Arjun with the shower of arrows so that neither the chariot nor the
 coach man or standard was discernible. Then wise Vasudev with
 great skill caused the bow of Bhishm to be cut down by his own
 arrows. Bhishm the grandfather then took up another large bow
 and prepared it for action in a trice. 55 Bhishma drew with both
 hands the bow which roared like thunder, but Arjun cut this second
 bow too. At this dexterity of Arjun's hand Bhishm praised him, say-
 ing. "Well done, brave Arjun! Well done son of Pandu. It was
 worthy of you Dhanunjoy! I am much pleased with this work of
 thine, my son! Fight with me! Having thus given praise to Arjun,
 Bhishm took up another large bow and showered his arrows on him.
 Vasudev turned the horses of chariot, now this way now that way,

न्याचरल्लुप्तु ॥ ६० ॥ ततस्तु भीष्मः सुदृढं वासुदेय धनञ्जया । विद्याथ मिश्रितैवाणैः
सर्वगात्रेषु भारत ॥ ६१ ॥ शुश्रुभते नरव्याघ्रौ तौ भीष्मशरविक्षतौ । गोवृषाविव सं-
र्षौ विषाणैर्द्विल्लितांक्षिनौ ॥ ६२ ॥ पुनश्चापि सुसंमुखः शरैः शन सहस्र । कृष्णयो
रुधि संरब्धो भीष्म आवार यहिदशः ॥ ६३ ॥ वाष्णैश्च शरैस्तीक्ष्णैः कम्पयामास रो-
पितः । मुहुःस्युत्समयन् भीष्मः प्रहृष्य स्वगवत्सदा ॥ ६४ ॥ ततः कृष्णस्तु समरं दृष्ट्वा
भीष्मपराक्रमम् । सम्प्रेक्ष्य च महाबाहु पार्थस्य मृदुयुद्धताम् ॥ ६५ ॥ तं भीष्मं शर-
पाणिं सृजन्त मनिशं युधि । प्रपन्नमिवादिन्य मन्थमानाम्पत्नेनयोः ॥ ६६ ॥ यान्
वरान् विनिघ्नन्त पाण्डुपुत्रस्य सैनिकान् । यगांतमिष कुर्वाणं भीष्मं पांशुषिरे बले ६७ ॥
अमृष्यमाणो भगवान् केशवः परवीरहा । अर्चितदशमेवामा नास्तियौधिष्ठिरैर्दलम् ६८

निष्कल करके तेजमंडलों में घुमने हुये घोड़ोंके चलाने में बड़ा पराक्रम दिखाया ६०
इसके पीछे भीष्मजीने अपने तीक्ष्ण बाणों से वासुदेवजी को और अर्जुन को बहुत
घायल किया। उनबाणों से अत्यन्त घायल वह दोनों पुरुषोत्तम ऐसे शोभायमान
हुए जैसे कि गर्जते और शाखाओं के घातसे चिह्नित दो उत्तम बैलहोते हैं, इसके
पीछे अत्यन्त क्रोध में भरे हुए भीष्मजीने लाखों बाणों से इनदोनों कृष्ण अर्जुन की
दिशाओं को रोक दिया, फिर बारम्बार अत्यन्त अहंकार और क्रोधयुक्त भीष्मजी
ने बड़े ऊंचे शब्द से हँसकर तीव्र बाणों से दृष्टिगंभीरी श्री कृष्णजी को कंपाय-
मान कर दिया । ६४ । इस के अनन्तर महाबाहु श्रीकृष्णजी युद्ध में भीष्मजी के
महा पराक्रम को देखकर और अर्जुन के मृदु युद्ध को अच्छी रीति से विचार
और युद्धमें बारम्बार बाणोंको छोड़ते हुए दोनों सेनाओंके बीचको पाकर पांडवोंकी
उत्तम सेनाको और सेनाके उत्तम शूरीर पुरुषों को सूर्यके समान संतप्त करते
वा मारने, युधिष्ठिर की सेनामें प्रलय मचातेहुए भीष्मको देखकर उस बड़े ब्रानी
शत्रुओं के मारनेवाले त्पामील भगवान् केशवजीने, यह निन्ताकी कि युधिष्ठिरकी
सेनानहीं रहेगी क्योंकि भीष्मजी एकही दिन में युद्धके बीच दैत्य दामवों कोभी

and made the downpour of Bhishma's arrows futile. Then Bhishma wounded much Vasudev and Arjun with his sharp arrows. Wounded with those arrows the two best of men looked glorious like two bellowing bull wounded with the horns of each other. Then Bhishma in great rage checked Krishna and Arjun with thousands of his arrows, and they could not move in any direction. Bhishma, full of pride and anger, with loud laughs shook Krishna of the Vishnu family by his arrows. 64 Then brave Krishna, seeing the great prowess of Bhishma and seeing also the mildness of Arjun's fighting and seeing the continuous downpour of Bhishma's arrows over the Pandav army and the consequent destruction, the wisest of men, destroyer of enemies Bhagwan Keshav of forgiving nature thought that Yudhishtira's army would be extirpated as Bhishma could destroy all the gods and

एकाहनाहिरणे भीष्मो नाशयेद्देव दानवान् । किंनृपाण्डुस्तान् युद्धे सबलान् सपदा
 नुगान् ॥ ६९ ॥ द्रवतेच महासैन्यं पांडवस्य महात्मनः । एतेच कौरवास्तूर्णं प्रभगन्वी
 ह्यसोमकान् ॥ ७० ॥ प्राद्रवन्ति रणे-दृष्ट्वा हर्षयन्त पितामहम् । सोहं भीष्मं निहन्म्य
 च पांडवाण्यं देशितः ॥ ७१ ॥ भारमेत विनेष्यामि पांडवानां महात्मनाम् । अर्जुनोहि
 अर्जुनोहि शरैस्तीक्ष्णैर्धृष्यमानोपि संयुगे ॥ ७२ ॥ कर्तव्यं नामि जानाति रणेभीष्मस्य
 गौरवान् । तथा चित्तपतस्तस्य भूयप्यघितामहः । प्रेषयामासर्षकुन्दः शरान्पार्थ
 रथं प्रति ॥ ७३ ॥ तेषां बहुवाचु भृशशरानां दिशश्च सर्वाः पिहिताय भूयः । न चांत
 रिक्ष न दिशो न भूर्मिनभास्करो दृश्यतरश्चिमात्मी ॥ ७४ ॥ घबुक्षवातास्तमुलाः
 सधूमादिशश्च सर्वाः क्षुभिताय भूयः । द्रोणोत्तिकर्णोपजयद्रथथ भूश्रिथाः कृतवर्माकृपथ
 ॥ ७५ ॥ श्रुतायुरचष्टपतिश्च राजा विदा विदौ च सद्दक्षिणथ । प्राच्याश्च सौधैरगणाय

नाश करनेवाले हैं तो सेना और सहायकों समेत पांडवों का मार डालना उनको
 कितनी बड़ी बात है । ६९ । और इन महात्मापांडवोंकी सेना भागीभी जाती है, और
 यह कौरव लोग सोमकों को युद्धसे भागे हुए देखकर बड़े प्रसन्न चित्त पितामहको
 आनन्द देते हुए चारों ओर से दौड़ेचले आते हैं सो अब भी-शस्त्र धारण करके पां
 डवों के निमित्त भीष्मको मारके महात्मा पांडवों के इस महाभारको दूर करूंगा,
 और अर्जुनभी युद्ध में तब वाणों से पीड़ा मान है वह इस युद्धमें भीष्मजीकी महत्ता
 से करनेके योग्य कर्मको नहीं जानता है, इसप्रकार उन श्रीकृष्णजी के विचार कर
 तेहीमें फिर अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजीने अर्जुन के रथपर वाणोंको फेंका । ७३ ।
 उनवाणोंकी अत्यन्त आधिक्यतासे सब दिशाढक गई उस समय आकाश औरदिशा
 कुछभी दिखाई नहीं देतेथे और न किरणसमूह धारी सूर्य दिखाई देताथा वायुमहा
 तुमुल हुआसब दिशाओं में धुआंसाव्याप्त होकरमहाव्याकुलतामच गई द्रोणाचार्य
 त्रिभुवनोपजयद्रथभूरिश्रवाकृतवर्माकृपाचार्य श्रुतायु अचष्टपति विन्द अनुविन्द मुदक्षिण
 पश्चिमी राजा सौवारांकेगण सर्वविशानगण तुद्रकमालव यह सवराजालोग शीघ्रही

danavas in a day and therefore the destruction of the Pandavas and
 their allies was no great work for him. 69. The army of the great
 Pandavas is running away, and the Kauravas, seeing the flight of the
 Samaks, are swarming from all sides to the joy of the grandfather.
 So I shall take up arms for the good of the Pandavas and shall re-
 lieve them from this danger by killing Bhishm. Arjun too is wound-
 ed by sharp arrows and does not know what to do out of respect for
 Bhishm. When Shro Krishn was thus thinking, Bhishm again show-
 ered his arrows over the chariot of Arjun. 73. The thick shower of
 arrows covered all the directions of space, and neither the sky nor
 earth was visible. The rays of the sun were hidden with those arrows;
 the wind blew a gale. There was an uneasiness on all sides and there
 was something like smoke spread all over. Dronacharya, Vikarn,

सधे वशातयः सुद्रकमालवाश्च ॥ ७३ ॥ किरीटिनं त्वरमाणा विसृष्टिदेशगा दान्त
 नवस्यराज्ञः । तवाजिपादातरथौघजालैरनेकसाहस्रशतैर्दृशं ॥ ७७ ॥ किरीटिनं संप-
 रिवार्यमाणं शिनेनेता घारणनयूपश्च । ततस्तुष्टयैर्धुनवास्तुनेधौ पदाति नामाश्वरथैः
 समतात् ॥ ७८ ॥ अभिद्रुतो शूरा भृतापरिष्टौ शिनिप्रवीरोभि ससारन्मृ ।
 सताम्यवीकानि महाघनुमान् शिनिप्रवीरः सहसाभित्तय ॥ ७९ ॥ स्वकारसाहाय्यम-
 यजुतस्य विष्णुर्षया वृत्रनिपुद्नस्य । विशीर्णनागाश्व स्पश्रजौघं भीष्मेणविभ्रासित
 सर्वपोघम् ॥ ८० ॥ युधिष्ठिरानीकमभिद्रुवंतं प्रोवाच सहदयशानि प्रवीरः । पश्व-
 त्रियापास्ययनेपध्वनः सतांपुरस्तात्कथितः पुराणैः ॥ ८१ ॥ मास्वःप्रतिज्ञांत्य जतप्र-
 धीराः स्वधीरघर्मे परिपालयध्वम् । ताभ्यां स वानं तरजो निशाम्य सर्वेद्रुमुत्पान्
 द्रवतःसमंतात् ॥ ८२ ॥ पार्थस्य दृष्ट्वा मृदुयुद्धतांच भीष्मंच संखे समर्प्यमाणम् ।
 अशुभमाणः-सततोमहात्मा यशश्चिन्तं सर्वं दशाहंमर्त्ता ॥ ८३ ॥ उवाचशैनेयमसि

भीष्मजी के आज्ञावर्ती होकर अर्जुन की ओरको दौड़े जब सात्यकि ने उसअर्जुन
 को छोड़े हाथी रथ और पदातियों के लाखों जालों से और हाथियों के स्वाभियों
 से घिराहुआ देखा वहांजाकर उसशूरवीर धनुषधारी मात्यकिने उन मेनाओंके
 सम्मुख पहुँचकर ॥ ७८ ॥ अर्जुनकी ऐसीसहयता की नैसी कि विष्णु भगवान्
 इन्द्रकी सहयता करते हैं फिर वह महाबली सात्याकी युधिष्ठिर की रथहाथी छोड़े
 और पदातियों सेवेत उत भागनेवली सनाका भित्तकी सवध्वजों गिरी हुई और
 शूरवीर भीष्मजी से भयभीत हुए देखकर यह वचन बोला कि हे क्षत्रिया कहां
 भागेहो पुराणों ने यहधर्म श्रेष्ठपुरुषोंका नहीं कहा है ॥ ८१ ॥ हे श्रेष्ठवीर लोगो
 अने प्रणों को मनस्योगी अने वीरधर्मों से पुरुपार्थ करो तुमअर्जुन को मृदुं युद्ध
 कर्त्ता और भीष्म को भयंकर युद्ध कर्त्ता और चारों ओरसे गिरते हुए कौरवोंको

Jayadrath, Bhurishrava, Kritvayma, Kripacharya, Shrutayu, the ruler
 of Amvashtra, Vind, Anuvind, Sudakshin; the princes of the West, the
 armies of Sauvirs, the Vishats and the Kshudraks attacked Arjun by
 Bhishma's order. When Satyaki saw Arjun surrounded by thousands
 of horses, elephants, chariots, foot soldiers and elephant riders, he came
 at once to the rescue. When there the brave warrior helped Arjun
 as Vishnu helped Indra. The brave warrior Satyaki, seeing the cha-
 riots, elephants, horses and foot soldiers of Yudhishtir in a state of
 disorder, their banners fallen and the whole army terrified by the
 brave deeds of Bhishma, he cried out:—"Where are you going Ksha-
 tryas? This has never been the practice of good men in ancient times. 81.
 Do not lose your lives, good warriors. Do your duty manfully. You
 think Arjan to be mild in fight and Bhishma to be a dreadful fighter,
 and therefore you are running away at the sight of the Kauravas

प्रशंसन्द्दृष्ट्वा क्रूरनापततः समग्रान् । थेयांतितेयांतुशिनः प्रधीरथेपिस्थिता साध
 ततेपियांतु ॥ ८४ ॥ भीष्मंरथात्पदयानिपात्यमानं द्रोणं च संशये स गणंमथाप ।
 नमेरधीसारवतकौरवाणां क्रुद्धस्यमुत्थेतरणेद्य कश्चिन् ॥ ८५ ॥ तस्माद्दहं
 गृह्यारथंगमुप्र प्राणंहरिष्यामि महान्व्रतस्य । निहत्य भीष्मं स गणं तथाजौ द्रोणंचशैनेय
 रथप्रवीरौ ॥ ८६ ॥ प्रीतिकरिष्यामि घनंजयस्य राक्षसभूमिस्य तथाभिनोश्च । निह
 त्यसर्वानधृतगणपुत्रांस्तत्पक्षिणो येचनोद्रमुष्याः ॥ ८७ ॥ राज्ये न राजानमजातशत्रुं
 संपादयिष्याम्यहमद्यहृद्य । ततःसुनाभं वसुदेवपुत्र । सूर्यप्रभं वज्रसमप्रसाधम् ॥ ८८ ॥
 क्षुरांतमुद्यम्य भुजेन चक्र रथादवप्लुत्य विसृज्यवाहान् । संकपयन्ग्रांश्चरौर्महात्मा

देखकरभागे जातेहो यह वचन सुनकर सब यादवों के भर्त्ता महात्मा श्रीकृष्णजी
 वड़ी प्रशंसा करके उस यशस्वी सात्यकि से बोले कि हे सेनापतियों में बड़े वीरजो
 जातेहैं वह चले जायँ और जो नियत हैं वहभी चाहे चले जायँ । ८४ । अब युद्ध
 के बीच रथ हाथी घोड़े और सब सेना समेत भीष्म को और द्रोणाचार्य को
 मेरेहाथ से गिरे हुए देखो हे यादव सात्यकि कौरवों की सेनामें कोई ऐसा नहीं
 है जो अब युद्धमें मुझ क्रोधयुक्त हस्तांय युद्धकरने को समर्थहो, इस कारण अब मैं
 महाव्रतभीष्म के प्राणों को हूँ ही हे सात्यकि रथियों में बडेवीर भीष्म और द्रोण
 चार्य को सेना के समूहों समेत इस युद्धभूमि में मारकर, राजा युधिष्ठिर अर्जुन
 भीमसेन नकुल और सहदेवकी प्रसन्नता को कहेगा अब मैं प्रसन्न मनहोकर धृतराष्ट्र
 के सब पुत्रोंको और जो उनके सहायक राजाहैं उनको मारकर । ८७ । अजात
 शत्रु राजा युधिष्ठिर को राज्यसे युक्त कहेगा, यह कहकर वासुदेव श्रीकृष्णजी
 सुन्दर रूपमूर्त्यके समान प्रकाशित हजरत्न के सदृश कठोर छुरेके समान
 तीक्ष्ण घेरारखने वाले चक्रको ऊंचा घुमाकर और घोड़ोंको छोड़ रथसे उतर चरणों

advancing on all sides!" At this, Krishna the lord of the Yadavas praised
 Satyaki and said, "Bravest of commanders, let them go who are
 unwilling to stay. I care not if the remaining ones also leave us. 84
 You will now see the fall of Bhishm and Dronacharya with the
 chariots, elephants, horses and soldiers by my hands in the field of
 battle. There is none, O Satyaki, in the midst of the Kauravas that
 can withstand me in my rage. I shall therefore deprive Bhishm of
 his life. Having killed brave Bhishm and Dronacharya with all the
 hosts in the field of battle, I shall please king Yudhishtir. Arjun,
 Bhishm, Nakul and Sahadev. I shall, with great pleasure destroy
 all the sons of Dhritrashtra and their allies 87. I shall install prince
 Yudhishtir on the throne." Having said this, Vasudev Shree Krishna
 turned on high his discus of beautiful form, glorious like the sun,
 a thousand times as hard as the vajra and having a sharp edge all

वेगेन दृष्ट्वा प्रससारभीष्मम् ॥ ८९ ॥ मदांघमाज्ञौ संमुदीर्णद्वौ सिंहौ जिघांसत्रिय
 धारणेन्द्रम् । सोमिन्द्रवन्भीष्ममनीकमध्ये हुद्रो महेंद्रावरज प्रमाथी ॥ ९० ॥ ध्यात्संवि-
 गितात् पृथक्काशे घनोपघयेतद्वितायनम् । सुदर्शनचाक्षुरराजशरैस्तच्चक्रपद्म
 सुभुजोरुनालम् ॥ ९१ ॥ यथादिग्गततृणाकैवर्णरगजनारायणनाभिजातम् । तत्पृष्णको
 पोदयसूर्यबुद्ध श्रुतात्तीक्ष्णाग्रसुजातधनुम् । ९२ ॥ तस्यैव वैद्योऽसं प्रकहरराजना
 रायणवाहुनालम् । तमात्तच्चक्रमणदतमच्चै हुद्रमहेंद्रावरजसमीक्ष्य ॥ ९३ ॥ सर्वाणि
 भूतानि भूरीघनेद्दु क्षयं कुरुणामिवचितयित्वा । स चासद्यैव प्रगृह्णीतचक्रं संपतंयिष्य
 त्रियसर्वलोकम् ॥ ९४ ॥ अयुष्पतनूलोकं गुरुर्भासे भूतानिघक्ष्यान्नियधुमकेतु ।

से पृथ्वी को अत्यन्त कंपायमान करने हुए महात्मा भीष्मकी औरको ऐसे चले
 जैसे कि युद्धभूमि में महामदेन्यच अहकारी गजेन्द्र के मारनेको सिंह दौड़े । ९० ।
 उत्तममयशरीर में वर्तमान उत्तम पीताम्बर ऐमा प्रकाशमान हुआ जैसे कि आकाश
 में सुन्दर अलंकारों से युक्त बादल विजलीसहित हो, और इन श्रीकृष्णजी का वह
 सुदर्शनचक्र रूप कमल जिनकी घड़ी नालही सुन्दर भुजा थी ऐमा शोभायमान
 विदित हुआ जैसे कि नारायण की नाभि से उत्पन्न तरुणसूर्यके समान वर्णवाला
 नवीन कपल शोभायमान हुआ था यह कपल श्रीकृष्णजी के क्रोधरूप सूर्य के
 उदय से खिलाहुआ और झुराओं से युक्ततीव्रनोंकरूपपत्तेवाला उनके शरीररूपी
 बड़े तड़ागमें नियत शोभायमान हुआ ऐसे चक्रगारी उच्चस्वर से गर्जना करने
 वाले महाइन्द्रके छोटे भाई श्रीकृष्णजीको देखकर सबनीव यह चिन्ता करके
 अत्यन्त प्रकारे कि यह कौरवों की मलय वर्तमानहुई फिर यह चक्रगारी लोकों के
 स्वमी जीवलोक के नाश करनेको सम्मुख गिरते हुए ऐसे प्रकाशमान हुए
 जैसे कि सबजीवमात्रों का भस्म करनेवाला अग्नि देदीप्यहोता है ऐसे पुरुषोत्तम

round like that of a razor. He left the reins of the horses and jump-
 ing down from his chariot, ran towards Bhishma, shaking the earth
 under his feet, like a lion assaulting an elephant. 90 At that time
 the yellow cloth which he had on his body, shone like lightning in the
 midst of clouds. The Sudarshan chakra (discus) of Shree Krishna,
 having his arm for its stem, looked like a new lotus arising out of the
 navel of Narayan, like the stem in all its vigour. That lotus flower
 opening at the rise of the sun of Shree Krishna's anger and provided
 with sharp edges for its petals, looked very handsome over the lake of
 Shree Krishna's body. Seeing Krishna the Learner of discus and
 younger brother of Indra, roaring loudly, all creatures cried in terror
 and thought that the end of the Kuravas was nigh. Then that
 wielder of the discus, the lord of the world, ready to destroy the
 world, looked glorious like fire the destroyer of all things. Seeing

तमाद्रथंतेप्रगृहीतचक्रं दृष्ट्वादेवशांतनयस्तदानी ॥ ९५ ॥ असंप्रमंतद्विचक्रपदोद्योषी
महाधनुर्गांडिवतल्यघोषम् । उवाचभीष्मस्तमनंतपौरुषं गोविंदमाजाघविमूढचेतः
॥ ९६ ॥ पश्वोहिदेवेगजगन्निवासनमोस्तुने माधवचक्रपाणे । प्रसह्यमांपातयलोक
नापरथोत्तमात्सर्वशरण्यसथ्ये ॥ ९७ ॥ त्वयाइतम्यापि ममाश्रुणश्रेयः पारिमिनि
हचैवलोके । संभाषितोस्म्यघकृष्णिनाथलोकैस्त्रिभिर्धोगतवाभियानात् ॥ ९८ ॥
रथादवप्लुत्यतस्त्वराघान् पार्थोप्यनुदुत्य यदुप्रवीरम् । जग्राहपीनोत्तमलयवाहुंवाहो
हृत्स्वियायतपीनवाहुः ॥ ९९ ॥ निगृह्यमाणश्च तदादिदेवो मृशंसरोपः श्लिषास
योगी । आशयवेगेन जगामविष्णुर्जिष्णुंमहावातश्वैकवृत्तम् ॥ १०० ॥ पार्थस्तुनि-

देव देव चक्रधारी को आता देखकर, धनुष बाण हाथ में रखनेवाले रथारूढ़
भीष्मजी निर्भयता से बोले कि हे देवेश्वर हे जगन्निवास हे शार्ङ्गधन्वा गदा खड्ग
धारी आत्रो मैं तुमको नमस्कार करताहूँ हे लोकनाथ हे जीवों के आश्रय और
रक्षा के स्थान तुम युद्ध में हठकरके मुझको इसउत्तम रथसे गिराओ हे श्रीकृष्णजी
अब तुम्हारे हाथसे मुझमरे हुएका इसलोक और परलोकमें कल्याण है । ९७ ।
हे अन्यकृष्णो क्षत्रियों के नाथ मैं तीनों लोकों में प्रतिद्ध मभाववाला होकर
अंगीकार हुआहूँ वड़े वेगसे दौड़ते हुए श्रीकृष्णजी भष्मके इस वचन को सुन
कर उन से बोले कि अब तुम्हीं इत संसारके नाश के मूलहो सो तुम अबदुर्योधन
का नाश देखोगे क्योंकि दुष्टदृष्टका खेलने वाला राजा धर्ममार्ग में नियत मन्त्री से
निवारण करने के योग्य है अथवा जो काल से विपरीत बुद्धी होकर धर्मको
उल्लंघन करके चले वह कुलका कलंकी है वह त्यागही करने के योग्य है इस बात
को सुनकर वह राजा देवव्रत भीष्मजी यादवों में बड़ेवीर परम देवदेव श्रीकृष्णजी
से यह वचनवाले कि देव भवस है यादवों ने अपने प्रयोजन के सिद्धकरने

that best of men, the god of gods and wielder of mace, Bhishm, armed
with bow and arrows, said fearlessly from his seat in the chariot:-
" Lord of gods! asylum of the world! Wielder of Sharang bow, mace
and sword! welcome. I bow to you Lord of the world! refuge of
being; you may well make me fall from this good chariot. It will
be good for me in this world and the next, if I fall by your hand. 97.
Lord of the Andhaks and the Vrishnis! I shall deem myself fortunate
above the three worlds, if I am accepted by you." Hearing the words
of Bhishm, Shree Krishna who was coming towards him in great
haste, replied, "You are at the root of all this bloodshed and will see
the destruction of Duryodhan; for honest ministers should check a
king from the wickedness of gambling, and he who acts unjustly
without regard for time and place, is a curse to the family and worthy
of being abandoned." Having heard this, Devabrata Bhishm gave the
following reply to the greatest warrior of the Yadavas, Shree Krishna

दृश्यते न पादौ भीष्मानिकर्तृमभिद्रवन्तम् ॥ यत्प्रतिजग्राह हर्षिणीपदेवः जन्द्शमे
 कञ्चित् ॥ १ ॥ यद्यस्मिन्धर्मिण्यप्यकृष्णं प्रतीक्षुनाकाञ्चनचित्रमाली ॥ ब्याचको
 पप्रतिसंहरति गतिर्मगान्केशवपांडवानां ॥ २ ॥ नहास्यते रुमयमाश्रित्तपुत्रे शपेकेनाय
 सोद्वरेभ ॥ अंतकरिष्यामियगात्कृष्णाययाहर्षिद्रानुजसंप्रयुक्तः ॥ ३ ॥ तत प्रतिष्ठां
 समयंचतस्य जनार्दनः प्रीतमनानिदाम्य । स्थित त्रिदेवैर्यसत्तमशरयचक्रपनराहरंह
 ॥ ४ ॥ सतानमिपुत्रुमराददानैः मगृह्यशंखं त्रिपतां निहन्ता । विन द्य मास ततोदिशद्य
 स पांचजन्यस्यारवेण शौभिः ॥ ५ ॥ व्याधिद्धनिकां गृह्णु उल्लसंतरजिविकीर्णाचितपध
 नेत्रम् । विशुद्धं दृष्टं गृहतिदां जं विचक्रुः श्रेयकुरुषपीरा ॥ ६ ॥ मृदेगमेरी पणव

के लिये कंसको मारा वह राजा भी मममाने से नहीं समझा मारव्य मे दुख के
 लिये जिमकी विपरीत बुद्धि है उसको अभीष्ट सुनाने वाला कोई नहीं है, इसके पीछे
 लम्बे और मोटे भुजावाले शीघ्रता करने वाले अर्जुन ने रथसे कूदकर पैदल चलकर
 मोटे ऊँचे और लम्बे भुजा वाले यादवों में बड़े वीर हरिको दोनों भुजाओं में
 पकड़ लिया, तब आदिदेव आत्मयोगी और अत्यन्त क्रोध रूप पकड़े हुए
 विष्णुजी अर्जुन को लेकर ऐसी शीघ्रतासे चले जैसे कि बड़ा वायु अक्ले
 वृक्षको लेकर चलना है । १०० । हेराजा फिर महात्मा अर्जुन ने वल्लभे दोनों चरणों से
 पकड़कर बड़ी शीघ्रतासे भीष्मजी की ओर दौड़ते हुए दो दशवैपाद चिह्नपर बड़ी
 सुगमता पूर्वक चलते पकड़ लिया, सुनहरी जड़ाऊ मालाधारी मममन चित्त अर्जुन
 उन ठहरे हुए श्रीकृष्णजीको दृग्दृष्ट करके बोले कि आप क्रोधको दूर करिये हे
 कृष्ण आपही पांडवोंकी गतिहो । १०२ । आप अपने प्रणके अनुसार कर्मको मन
 छोड़ो, हे केशवजी मैं पुत्र और भाइयोंकी शपथ खाता हूँ हे इन्द्रके छोटे भाई मैं
 अवश्य आप के साथ में हाँकर कौरवों का नाग कलंगा तदनन्तर उसके प्रण और

the god of gods:—"Fate is very powerful. The Yadavas, for their own good, destroyed Kams who was deaf to all good advice. No one can bring him to right path whose understanding is weak because he is fated to fall in misery." In the meantime, Arjun of long and thick arms jumped down from his chariot and caught the bravest of the Yadavas in both his arms. But the ancient god, atma-yogi, Vishnu, in the excess of rage, rushed on along with Arjun as a storm of wind carries away with it a lonely tree. 100. Arjun thereupon held both his feet fast before he had gone ten paces towards Bhisma. And bowing before Krishna, Arjun decked with gold necklace, thus addressed him:—"Subdue your wrath, Krishna. You alone are the refuge of the Pandavas. 102 Remember your promise and act accordingly. I swear by my brothers and sons, O younger brother of Indra, that in company with you I shall destroy all the Kauravas." Hearing his pro-

प्रणाशनेमिस्वनाहुं दुभिनिः स्वनाश । स सिंहनादाश्च यभ्युत्प्राः सर्वेष्वनीकेषु
 ततः कुरुणां ॥ ७ ॥ गांडीवघोषस्तनविरनुकरो जगत्प्राथम्य गभोदिशश्च ।
 जग्मुश्चवाणा विमला प्रसन्नाः सर्घादिशः पांडवचापमुक्ताः ॥ ८ ॥ तं कौरवाणामधिपोऽ
 येन भीष्मेण भूश्रवसाचसार्द्धम् । अश्रुद्ययाद्यद्यतवाणपाणिः कक्षविघ्नं क्षिप्रं धूमके
 तुः ॥ ९ ॥ अघोर्जुनाय प्रजिघास्यमानं भूरिश्रवाः सतस्रध्वजं पुंजान् । दुर्योधनस्तोम
 सुप्रवेगं शस्त्रयोगदाशांत नधथशक्तिं ॥ १० ॥ स सर्वोभिः संतर्शात्प्रवेकान् संवार्य भू
 श्रवसाधिपुष्टान् । शितेन दुर्योधनयाहुमुक्तं वृतेण ततो मम मुन्ममाप ॥ ११ ॥ ततः
 शुभामापतती स शक्तिं विद्युत्प्रभांशांतनयेन मुक्ताम् । गदां च मद्राधिपय हमुक्तां ग्राह्यां
 शराभ्या निचकर्तधीरः ॥ १२ ॥ ततो मुजाभ्याधलयद्विक्रयं क्षिप्रं धनुर्गांडिवमप्रसेयम् ।

नियमको मुनकर अनार्दनगी महा प्रसन्न होकर उस कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुनके अभीष्ट
 सिद्धकारने में प्रवृत्त हुए और चक्र समेत रथपर सवार हुए फिर उन लगातारको हाथ
 में लेनेवाले शत्रुओं के मरने वाले उन श्रीकृष्णजी ने हाथमें पांचजन्य शंखको
 लेकर ऐसी ध्वनिकी कि जिसके कारणसब दिशाओं समेत आकाश शब्दायमान
 होगया उस निष्कवाजुंबद और कुंडलों से अलंकृत रजसे भरे पद्मोत्तम विभूद
 दंप्रायुक्त शंख को धारण कियेश्री केशवमूर्तिको देखकर महाधर्मी कौरवस्योग पुकारे
 तदनन्तर मृदंग भेरी पटहाओंके व रथकेचक्रों के और दुन्दुभियों के भयकारी शब्द
 शंखध्वनियों समेत कौरवोंकी सेनामेंभी होनेलगे । १०७ । और अर्जुनके गांडीव
 धनुषका शब्द बादलकी गर्जना के समान आकाश और दिशाओं में व्याप्त हुआ
 तदनन्तर पांडव अर्जुनके धनुषसे निकले हुए बहुत निर्मल और प्रकाशित वाण सब
 दिशाओं में चले तब कौरवों का राजादुर्योधन जिसनेवाण हाथ में ऊंचाकररक्ता
 था वह अपनी सेना व भीष्म भूरिश्रवाको साथ में लेकर अर्जुनके सम्मुख गेरे गया
 जैसे कि वनको जलाताहुआ अग्निजाताहै इसकेपीछे भूरिश्रवाने सुवर्ण पुंखवाले सात

mise and condition, Janradan was much pleased and engaged himself
 in doing what Arjun desired. He mounted the chariot together with
 his discus. And taking the reigns in his hand, Krishna the destroyer
 of enemies blew his conch, known as Panchjanya, so loudly that the
 sky with all the directions rang with the echo. The Kauravas cried
 in dismay at the sight of Krishna decked with bracelets and earrings
 and having eyes like lotus. Then the sounds of drums, trumpets,
 horns, chariot wheels and bugles rose loud from the army of the
 Kauravas. 107. But the sound of Arjun's Gandiv bow rose like a
 peal of thunder above all the din. The arrows shot from Arjun's
 bow were to be seen in all directions. Duryodhan the prince of the
 Kauravas with his arms raised up, accompanied by Bhishm and
 Bhurishrava and followed by a large army, faced Arjun like fire, burn-

माहेद्रमस्त्रविधिवत्सुघोरं प्रादुशकाराद्दुर्मतं तरिक्षे ॥ १३ ॥ ततोऽप्यग्रेण ततो
महात्मा सर्वाण्यनिकानि महाधनुष्मान् । शरौघजालैर्धिमलाप्रिर्वर्गिनिवारयामास
किरीटमाली ॥ १४ ॥ शिलीमुखान्पार्थधनुः प्रमृकारयान्ध्वजाप्रागि घ्नन्धियाह्वन् ।
निकृष्य देहान् विविशुः पशेषां नरेन्द्रनागैर्द्रुतुरगमाणाम् ॥ १५ ॥ ततो दिशः सोऽनु दिश
ध्वपार्थः शरैः सुधरैः समरे वितस्य । गांडीव शस्त्रेण मतांसि तेषां किरीटमाली ध्वपश्यां
चकार ॥ १६ ॥ तस्मिंस्तथाघोरतमे प्रवृत्ते शंसत्स्वनादुंदुभि नि स्वनाम् । अंतर्हितागां

मल्ल अर्जुनके ऊपरफेंके, और दुर्योधनने बड़े शीघ्रगामी भयकारी तोमरको और
शल्यने गदा को और भीष्मजी ने बरछीको मारा फिर अर्जुनने अपनेसात बाणोंसे
भूरिश्रवाके चलाये तीव्र सातों बाणोंको काटकर क्षुरमनाम बाणसे दुर्योधनके छोड़े
हुए तोमरको काटा तिस पीछे भीष्मजी की विजय के समान तीव्र बरछी को, और
शल्यकी फेंकी हुई गदा को अपने दोबाणों से काट कर ११२ । महा कठिन
और अतुल प्रभाववाले अपने गांडीव धनुष का दोनों भुजाओंसे खेंचकर बुद्धि
के अनुसार महाघोर अर्ध माहेन्द्र अस्त्रको अन्तरिक्षमें प्रकट किया इसके पीछे
बड़े धनुषधारी महात्मा मुकुटमालाधारी ने उस उत्तम धनुष के द्वारा निकले हुए
बड़े स्वच्छ और तीव्र बाणों के समूहों से सब सेना को हटाया फिर उसके गांडीव
से निकले हुए शिलीमुख बाण रथ हाथी घोड़े और ध्वजाओं के शिरोंको वा
धनुषोंको और भुजाओं को काटकर शत्रुपक्ष के गजगजेन्द्र और राजाओं के शरीर
में प्रवेश करगये फिर उस मुकुट मालाधारी अर्जुन ने उत्तमधारवाले तीव्रबाणों से
दिशा और विदिशाओं को पूर्णकरके गांडीव धनुषके शब्दों से उन सबके हृदयों
को महापीडित किया इस प्रकार उस बड़े भयानक अस्त्रों के युद्ध में शंख दुन्दुभि-

ing a forest. Bhurishrava shot at Arjun seven golden darts with feathers; Duryodhan hurled his *Tomar*, Shalya his mace and Bhishm his spear. Arjun cut down the seven rows of Bhurishrava with his own. With one arrow he cut down the weapon of Duryodhan and with two more he cut down the spear of Bhishm and the mace of Shalya 112. Drawing his Gandiv bow of immense strength with both his arms, he carefully shot in the air the weapon given him by Indra. And then that great archer, decked with diadem and garlands, with his numerous bright arrows shot from the bow made all the warriors turn their faces. The sharp edged arrows shot from his bow, cut asunder the chariots, elephants, horses, banner heads, bows and arms and pierced through the bodies of the elephants and the princes of the enemy. Then Arjun decked with diadem and garlands filled all the directions with his sharp arrows and shook the hearts of the enemies with the 'twang' of the Gandiv bow. Thus in that war of dreadful weapons the peals from conchs and trumpets were subdued by the 'twang of

डिव निःस्वनेन यमुवुहमाश्वप्रणदाः ॥ १७ ॥ गांडीव शब्दंत मथे विदिरथा विराट
 राजप्रमुखः वधीगः । पांचालराजो द्रुपदश्च विररतदेशमाजगमुदीनसत्वाः । १८ ॥ स
 र्वाणि सैन्यानि तु तावकानि यतोयतो गांडिवजः प्रणादः । ततस्ततः सन्नति मेवजगमुर्नंतं
 प्रतीपोभिससारकधित् ॥ १९ ॥ तग्मिनसुघोरेनुपसप्रहारे हताः श्वीरा सरथाश्वसूताः ।
 गजाश्वनाराच निपातता महापताकाः शुभरुक्मकक्ष्वाः ॥ २० ॥ परीतसत्वाः सहस्रा
 निपेतुः किरिदिनाभिघ्नतनुत्रकायाः । दृढहताः पत्रिमिरुप वेगैः पाथेनमद्वलैर्विमलै शिता
 प्रैः ॥ २१ ॥ निकृत्तयन्त्रानि हतेद्रु कीला ध्वजामहांतो ध्वजिनी मुखेषु । पदातिसभाप
 रथाधसंबुधे हवाथ नागाथ घनजयेन ॥ २२ ॥ वाणाहतास्तूर्णं गपेतसत्वा विष्टभ्यमाश्रानि

यों के शब्द, गांडीव धनुष के शब्दों से छुपगए और रथों के भी महाभयानक शब्द
 मन्दहोगये । ११.७। इसके पीछे उस गांडीव के शब्दों को जानकर नरोंमें वीर राजा
 विराट आदि और पांचाल और द्रुपद यह महापराक्रमी उसस्थानपर आये और आपके
 पुत्रोंकी भी सब सेना वहां आई जहां कि गांडीवके बड़े शब्द हो रहे थे और सबों ने
 अपने को न्यूनही समझा कोई प्रतिपत्नी उसके सम्मुख नहीं गया हे राजा उसबड़े
 भयानक युद्ध में रथ वासूतों समेत बड़े २ शूस्वीर मारे गये और सुनहरी जड़ाऊ
 झूठों से अलंकृत बड़ी पताका रखने वाले हाथी भी नाराचोंके आघात से झुलझुप
 से होकर अर्जुनके हाथ से कटे हुए शरीर से निर्जीव होकर अकस्मात् गिरपड़े,
 सेनाओं के मुखों पर राजा लोगों की ध्वजायें अर्जुन के भयानक वेग तीक्ष्ण धार
 युक्त निशित फलवाले बाणों से अत्यन्त विध्वंश होगई और यन्त्र कटेहुये हजारों
 इन्द्रजाल भी बारंबार नाशको प्राप्तहुए और युद्धमें रथ हाथी घोड़े और पदातियों
 के समूहभी उस अर्जुन के बाणों से घायल और असामर्थ भ्रंगोंको बिना साधे शीघ्र
 ही पृथ्वीपर गिरपड़े, हे राजा ऐसे बड़े युद्धमें उस ऐन्द्रनाम उत्तम अस्त्र से क्वच बड़े
 और शरीर अर्जरी भूतहोगये । १२.३। तदनन्तर अर्जुन के तीव्रबाण समूहों से

the Gandiv and the rumbling of chariot wheels was heard no more.

117. Then hearing the sound of the Gandiv, the best of warriors,

king Virat and others, with the Panchals and Drupad, came there.

The whole army of your sons came there where the twang of the

Gandiv proceeded from. None of the enemies dared approach Arjun.

In that great battle, the warriors with their chariots and coachmen

were destroyed and the large elephants bearing large lances

and decked with gold trappings fell down wounded by the hand of

Arjun. The banners of the princes at the heads of the armies, cut

down by the arrows of Arjun, fell down on earth and thousands of

machines were destroyed. The elephants horses and foot soldiers

wounded in large numbers by Arjun's arrows fell down on earth.

Coats of mail as well as the bodies of the warriors were pierced through

and through by the weapon of Indra. 123. Then by Arjun's sharp

निपेतुं कथं । पेंद्रेणतेनास्त्र वरेणराजन् महाइवेभिन्नतनुभेदाः ॥ २३ ॥ तत्र शरीरैर्भि-
 शितैः किरिटिनः नृदेहस्रज्जललोहितोदा । नदी लघोऽगरमेदफेनाप्रवर्तित तत्ररणाजिरे
 वै ॥ २४ ॥ वेगेनसातीव पृथुः स्यादापेत नागाभ्यशरिरेषाः । नरेन्द्रः ॥ लोचिन्वितमांसपेदा
 प्रभूत रक्षो गणभूत संविता ॥ २५ ॥ शिः कपाल कृत् केशशाङ्गता शरीर संघात
 सहस्र पाहिनी । त्रिशीर्षनावा कवचोर्मि स कुला नराभ्यनागास्थि निरुत्तशर्करा
 ॥ २६ ॥ श्वकंकशास्त्रा वृकगुप्रकाकैः क्रव्यादसंघैश्च तरक्षुभिश्च । उतकुलादृष्टशु-
 र्भनुष्याः क्रामहायेतरणी प्रकाशाम् ॥ २७ ॥ प्रवर्तितामर्जुन बाण संघमेदोवसा
 सुकप्रवहांसुभिनाम् । हतप्रधीराच तपैव दृष्ट्वा सेनाकुणामभफाल्गुनेन ॥ २८ ॥
 तेर्चेद्रिपांचाल कम्पमत्स्थाः पार्यान् सर्वे सहसाः प्रगेदुः । जयप्रगल्भाः पुदपप्रदीराः
 संघ्रासयंतः कुरुवीरधोधान् ॥ २९ ॥ हतप्रधीराणि दलानि दृष्ट्वा किपीदिनाशत्रुभ-

मनुष्यों के देहमें शरों से निकले हुए रुधिररूपी जलवाली नदी वहाँ बह निकली
 उस नदीमें मनुष्योंकी वसा तो जलका फेनया वह नदी तीव्रतासे बड़ी मवाद्वाली और
 मृतक हाथी और घोड़ोंके शरीरों के किनारेवाली मनुष्यों के आंत भेजेने उत्पन्न मान
 रूप कीचको धारण कियेहुएथी और बहुत से राजसों के अवताररूप राजाही उस के
 दृश्ये । १२५ । और शिरों के कपालों से व्याकुल मृतक वलरूप घाससे शोभित
 देशों से युक्त शरीरों के सन्तुओं से हजारों माला रसनवाली हजारों प्रकारकी कवच
 रूपी लहरों से व्याकुल और मरेहुए मनुष्य हाथी घोड़े और मनुष्यों के हाड़रूप
 उत्तम कंकड़ और रत्नवर्तमान थे । १२६ । मनुष्यों ने उस शृगालकंक गिद्ध और
 कच्चेमांस खनिवाले राक्षस पशुपत्नी आदिके समूह वा छोटे व्याघ्रों से संयुक्त
 किनारेवाली कठिन वैतरणीरूपीनदी को देखकर अर्जुन के बाण समूहों के द्वारा
 कटेहुए कपालवसा रुधिर से बहनेवाली उत्पन्न भयानक नदीको देखकर अथवा
 इतीनकार अर्जुन के हाथसे मृतक शरीर वाली धोरणी सेनाको देखकर वह चदेरी

arrowsthe e flowed from the bodies of warriors a river of blood, having
 fit for its foam, the carcasses of elephants and horses for its banks, the
 flesh and entrails of men for its mire and the rakshases in the guise
 of princes for its t.e.s. 1-5. Full of human skulls, with the hair
 of the dead for its weeds, garlanded with human bodies of various
 countries, having the dead bodies of men and elephants and their
 bones for its pebbles and sand, that river was difficult to be crossed
 like the Baitarni and its banks were seen to be full of jackals, herons,
 vultures, carnivorous rakshases and tigers At the sight of those
 heads cut down by Arjun's arrows, the dreadful river of blood and
 the Kaurava army whose warriors were destroyed by Arjun, the
 warriors of Chanderi, Panchal and Matsya as well as all the Pandavas
 desirous of victory, raised a dreadful war cry terrifying the Kauravas.

यावहेन । धिवाश्य सेनांघञ्जिनी पतीनां सिन्धो मृगाणामिव यूथसंघान् ॥ ३० ॥
 विनेदतुस्तावति हयंपुत्रो गण्डीय धन्याश्च जनार्दनश्च । ततो रथिसंवृत्तमिन्द्रजालं
 दृष्ट्वा भृशशस्त्रपरिक्षतांगाः ॥ ३१ ॥ तदैन्द्रमस्र विततं च घोरमस्रं मुद्गीक्ष्ययुगां
 तदल्पम् । अथापयान् क्रावः सन्धीभ्यः स द्रोणयुयोधन वाहिकृष्णम् ॥ ३२ ॥
 चकनिशांसंधि गतां समीक्ष्य विभावसोर्लक्षितगणयुक्ताम् । अवाप्यकीर्त्तिञ्च यशश्च
 लोके विजित्यशशृंश्च धनंजयीणि ॥ ३३ ॥ ययौनरेंद्रैः सहस्रोदरैश्च समाप्तकर्माणि
 विरनिशायाम् । ततः प्रजज्ञेतुमुलः कुरुणां निशागुले घोरतम प्रणादः ॥ ३४ ॥ रणे
 रथानामयुतं निहत्य हतागजा क्षतशताहुनेन । प्राच्याश्च सौवीरगणाश्च सर्वे निपा-
 तिताः क्षुद्रकमालवाश्च ॥ ३५ ॥ मद्भ्रूतं कर्म धर्मजयेन कर्तुं यथा कार्त्तिक
 क्षिप्रम् । श्रुतापुत्रं वृषपतिश्च राजा तथैव दुर्मर्षेण चित्रसेनो ॥ ३६ ॥ द्रोणकृपाः

पांचाल और मत्स्यादिक देशीवीर और सब शूरवीरपगडब विजय में बुद्धि
 रत्ने और पुरुषों में वडेवीर उनकौरवी सेनाके बडेशूवीरोंको डराते हुए सब एक
 साथही मशगर्जना करते हुए, शत्रुओं को भय उत्पन्न करने वाले मुकुटधारी
 अर्जुन के हाथसे मृतक वीरोंवाली सेनाको देखकर और जैसे कि मृगोंके यूथों को
 सिंह भयभीत करे वसी प्रकार सेनापतियों की सेनाको भयभीत करके वह अति
 प्रसन्नमन गांडीवधनुधारी और जनार्दनजी अत्यन्तता से गर्जे तदनन्तर शस्त्रोंसे
 अत्यन्त घायल भ्रंग भीष्म व द्रोणाचार्य व दुर्योधन दाह्लीक आदि कौरवों ने
 निशाकी सन्धिको देखकर और उस मलय के समान अस्र और घोर फैले हुए
 पेन्द्रास्त्रको देखकर अथवा सूर्य की अक्षणा से युक्त संधिगतरात्रिको देखकर युद्ध
 से निवृत्ती की और नरेंद्रा इन्द्र अर्जुनभी लोक में यशी और कीर्त्तिमान होकर
 शत्रुओं का मर्दन करके युद्ध कर्मको समाप्त करनेवाला अपने निज भाइयों समेत
 रात्रिके समय अपने डेरेको गया इसके पीछे रात्रिके मारंभमें कौरवोंके बडे घोर
 शब्द उत्पन्न हुए । १३४ । अर्जुन ने दश हजार रथियों को मारकर सातसौ

So-ving the warriors of the army destroyed by Arjun, who wore
 diadem on his head and who was the terror of the enemies they
 terrified the leaders of your army with their roars as a lion does a herd
 of deer. The cheerful welder of Gandiv bow and Janardan too,
 roared very loud roars. Then Bhishm, Dronacharya, Duryodhan,
 Vahlik and other Kauravas, much wounded, seeing the approach
 of night and the dreadful havoc done by the weapon of Indra prepared
 to retire. Arjun the best of men having won the honour and fame
 of that day's victory and having destroyed many enemies, retired to
 his camp along with his brothers. During that night a dreadful howl-
 ing was heard from the camp of the Kauravas, 134. Arjun des-
 troyed on that day ten thousand charioteers and seven hundred

सैधववाहिकीं च भूरिश्रवा शल्यशलीचराजर्ज । अयंसेवोधाः शतश समेता कुन्देन
पाथेन ह्यनस्यमथ्ये ॥ ३७ ॥ स्वधादुयोधेण जिताःसमीप्याः किराटिनालोपमहा
रथेन । इतिश्रुत्वा शिबिगायिजम्बुः सैन्यगणामोरतयेवदीयाः ॥ ३८ ॥ बहकासहस्रैश्च
सुसम्पत्तिर्विभ्राजे मानेऽन्तघाप्रदीपे । किराटिवश्रंसितं सर्वं योधांचक्रे निषेदांश्वजि
मीकुङ्कणम् ॥ ३९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीयादिवसावहारे

एकौनपठितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

संजय उवाच । इषुधां निशाभारत मारताना मनी किराटां प्रमुञ्जेमहाराता । यद्यो
स परान् प्रतिजातकापो हुन समभ्रेन वतेमभिम् ॥ १ ॥ तद्रोग दुर्योधनपादिह
काश्च तथैव दुर्मर्षण चित्रसेन । जयद्रथवाति बलियलैर्घृणास्तथान्ये प्रययुःसमतात्

हाथी बोर और सब पूर्वदेवी शूरीर सौवीरगणों समेत कुद्रक मालवों को मारा
यह अर्जुन ने ऐसा बड़ाभारी कर्म किया जैसा कि दूमरा कोई भी नहीं करसला
हे राजा श्रुतायु और अंशुपति दुर्मर्षण चित्रभेन द्रोणाचार्य कृपाचार्य सैधव वाहलीक
भूरिश्रवा शल्य शल और भीष्मजी समेत सैकड़ों योद्धाओंको युद्ध में वत हस्त
बाघवी महावली लोक महाथी कोपित अर्जुन ने विजय किया हे भरतवंशी रामा
घृतराष्ट्रआपके सब शूरीर हजारों मसाने दमनाके उस बातको कहते हुए कि
किरीटी अर्जुन से सब शूरीर भयभीत हुए हैं कौरवों की सेना के डेरों में गये १:३९।

अध्याय ॥ ६० ॥

संजय बोले हे भरतवंशी इस के अनन्तर प्रातःकाल के समय महात्मा भीष्मजी
जिनका क्रोध शत्रुओं के ऊपर उत्पन्न हुआ वह सब सेना समेत भरतवंशियों की
सेनाके आगे गये द्रोणाचार्य दुर्योधन वाहलीक दुर्मर्षण चित्रसेन महावली जयद्रथ
और अन्य रामा लोग मनाओं के समूहों समेत चारों ओरसे भीष्मजी के पास

elephants including the Sauvirs, the malavas and the Kshudraks of the east. Arjun's deed of prowess was matchless. Shrutayu and Durmarshan the ruler of Amvasht, Chitrasen, Dronacharya Kripacharya, Samdhav, Vahlik, Bhurishrava, Shalya Shal, and Bhishma with hundreds of other warriors suffered defeat at the hands of Arjun the bravest and most dexterous warrior of the world. Thousand of your warriors with burning torches returned to their camps, saying, "The bravest of the warriors are afraid of Arjun the wearer of the diadem." 139.

CHAPTER LX

"Early the next morning," said Sanjaya to Dhritrashtra, "Bhishma, the great, whose anger upon the enemies was intense, led all the army of the descendants of Bharat. 'Dronacharya, Duryodhan, Vahlik, Durmarshan, Chitrasen, valiant Jayadrath and others' 139."

यद्भानुमृगभेगलप्ये । सपिभ्रजं प्रेक्ष्य विप्रेदुराजो सर्वद पुत्रैस्तत्रवाच्येय ॥ ९ ॥
 प्रकर्षतागुन सदापुधेन किरीटिनारोकमहागणेन । तद्व्यूह राज दृष्टुं त्वदीयाश्चतु
 र्यालसहस्रकर्णम् ॥ १० ॥ यथादिपूर्वे हनि धर्मं राजा व्यूह इव कौरवसत्तमेन । तथा
 नभूतो भुविमानपेव नदृष्टुर्गो नचसंश्रुतश्च ॥ ११ ॥ ततो यथा दशमुत्पेव ताम्बु
 पाचालमुच्यते सहचेदिमुच्ये । ततः समा देश समाहतागि भेरी सहस्रागिदितेदुराजो
 ॥ १२ ॥ शंखैवनास्त्य रथस्वनाथ सर्वेष्वनीकेषु स सिद्धवादा । ततः सगणानि
 महास्वगानि । धस्फार्यमाणानि धनुषिवीरै ॥ १३ ॥ क्षणेनभेरीगणप्रणादा नतदंष्टु
 शयमहास्वनाथ । तच्छब्दराब्दाद्युनमतस्त्रिभुजुतश्रामदुतरेणुजालम् ॥ १४ ॥ महा
 वितानावततप्रकाश मालोक्यवीरा सहस्राभिपेतु । रथी रथेनाभिहत ससूत पपात

शोभित कपि-रज अर्जुनको और यादवपति श्रीकृष्णमारथी से ऊचेकीओर बांधेहुए
 पनवाल रथको युद्धभूमि में डेरकर महा व्याकुल हुए आपके पुत्र और सवशूरवीरों
 ने लोक महारथी शङ्खगारी भेनाको विज्यंत करने वाले मुकुटगारी अर्जुन से रक्षित
 चार सहस्रनक्त हाथियों से संयुक्त जंत व्यूहराजको देखा । १० । जैसे कि प्रथम
 दिन में कौरवोंमें श्रेष्ठ धर्मताग ने व्यूहको बनाया था उनप्रकार का व्यूह इनलोकमें
 मनुष्योंने प्रथम कभी न देखाया नमुना था, इसके पीछे सत्रसैनाके बीच युद्धभूमिमें बड़े
 बठने वजाडहुई हजारोंभेरी शब्दायमानहुई औरशंखोंके व हजारों तूर्योंके शब्दभी बड़ेवेग
 से हुए, इससे पीछे धीरो के छोडे हुए वाणों के शब्दों से संयुक्त चलाये हुए धनु-
 षों के और शंखों के बड़े शब्दों ने क्षणमात्र मेंही भेरी और ढोलों के कठिन शब्दों
 को गुप्त कर दिया, शंखों के उन शब्दों से सब अन्नरक्ष व्याप्त होगया और शी-
 प्रही पृथ्वी से धूलोंके समूह आकाशकी ओर उडे तदनन्तर बड़े वितानों से प्रकाश
 को देखकर वीरलोग अकस्मात् दौड़उठे, रथीरथसे भिड़कर घोड़े समेत रथी भवना

great array 8 Then all the kauravas, accompanied by your sons, seeing Arjun with his banner or the ensign of monkey and Shree Krishna the prince of Yadavas as driver, were much perplexed. Your sons and their warriors, saw that brave-t of charoteers, Arjun the destroyer of foes, protected by four thousand elephants. None of the people of this world had seen or heard an array of armies like the one formed on the previous day by that best of men, Yudhishtir the just. Then from the midst of all that army, rang through all the battle-field thousands of trumpets and conchs with loud peals, but the sounds made by the discharge of arrows and the conchs of warriors surpassed the noise made by trumpets and drums. All the air was filled with the blasts of conchs and soon the sky was overcast with dust. The warriors rushed to battle as soon as the light was strong. Charioteers met charioteers in combat and fell down together.

॥ २ ॥ सतैर्भद्रिश्च महारथैश्च तेजस्विभिर्वीर्यं घट्टिधराजम् । रराजैरजा सपुरा-
जमुख्यैर्धृतः सदैरिवचक्रपाणिः ॥ ३ ॥ तस्मिन्प्रतीकरमुद्ये विपकादोध्यमानाद्य
महापताका । सुग्रीवात्तासित पांडुराभा महागजस्कंध गताविरेजुः ॥ ४ ॥ भावा
हिनीशातनवेन युता महारथैर्वारणाजि भिश्च । यमै स विद्युत्स्तनयिनुरत्पांजलाग
मेद्यौरिवजातमेघा ॥ ५ ॥ ततोरणायामि मूर्खीयानां प्रत्यर्जुने शान्तवामिगुता ।
सेनामहोत्रा सहसा कुरुणा वेगोयथा श्रीम इवापगाया ॥ ६ ॥ तथ्याल नानापि
घग्दुषां गजाश्वपादात् रथै घगत्तम् । द्यूद् महा मेव समे महात्मा वदशं दुराक्ता
राजकेतुः ॥ ७ ॥ विनिर्ययी केतुमता रथेन नार्यम् श्वेद्वयेनपीर । कथिता
सैन्यमुद्येमहात्मा वधेधृतं राधं स पत्नयुताम् ॥ ८ ॥ सुगस्कं सोत्तरबंधुरेपयत्त

आये । २ । हे राजेन्द्र धृतराष्ट्र वह भीष्मजी उन महापुरुष महारथी तेजस्वी पराक्रमी
राजाओं के बीच में ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि देवताओं के मध्य में देव जे
इन्द्रशोभित होता है, उस सेना के आगिलगी हुई बड़े २ हाथियों के कंधों पर वर्त्त-
मान लाल पीली काली श्वेत कम्पायमान पताकाभी शोभित हुई और वह सेना
राजा भीष्म व महारथी वा हाथी घोड़े से विद्युद्गारी बादलके समान ऐसी शोभाय-
मान हुई जैसे कि जलके आगमनमे बादलों मे भर हुआ आकाश होता है । ५ । इसके
पीछे भीष्मजी मे रक्षित राजा लोग युद्ध के निमित्त अर्जुन के सम्मुख गये और
कौरवी सेनाभी अक्रस्मात् ऐसे चली जैसे कि गंगाजी का भयानक वेग चलता है,
किर कपि-वज महात्मा अर्जुन ने दूरही से उन हाथीघोड़े रथ रथी और पदातियों
समेत बड़ वेग मे भरे हुए बादल के समान नानाप्रकार के पत्तों समेत बृहको
देखा, और सेनाओं के आगे खड़ा हुआ दोनों सेनाओं से संयुक्त महात्मा वीर
अर्जुन श्वेत घोड़े और ध्वजाधारी रथकी सब रंग में सुशोभित होकर सब शत्रुओंकी
सेना के ओर चला । ८ । तब आपके पुत्रों समेत सब कारयलोग उस सब सामान से

at the head of armies came round Bhishm 2 Surrounded by these
great warriors and the glorious kings of great prowess, Bhishm looked
like Indra the prince of gods in the midst of the gods In the front
of that army, on the shoulders of elephants, fluttered red, yellow,
black and white banners That army of princes, warriors, elephants
and horses, led by Bhishm, looked like the sky overcast with clouds
with flashes of light 5 Then the kings protected by Bhishm,
came face to face with Arjun, ready for fighting, and the Kaurav
armies followed them like the waves of the Ganges with dreadful
velocity Arjun with his banner bearing the figure of Hanuman
saw from a great distance that large army consisting of elephants,
horses, chariots, charioteers and foot soldiers, coming on in great force
like clouds Brave Arjun, mounted on his bannered chariot, drawn
by white horses and advanced at the head of his army towards that

यद्गामृदभेजसस्ये । यपिभज प्रेक्ष्य विप्रेदुराजा सर्वेय प्रैरात्रकाद्येय ॥ ९ ॥
 प्रकर्मतागुन मदायुधेन किरीटिनाटोकमहारणेन । त्वयूह ना ददशुत्पदीगान्त्वयुधत
 र्थालसहस्रकर्मम् ॥ १० ॥ यथादिपूर्वे हनि धर्म राना व्यूह त्र नौरथसत्तमेन । तथा
 नमूयो भुविमानयेव नहृत्पूर्वो नत्रसंश्रुतध्व ॥ ११ ॥ ततो यथा दशमोत्प ताम्रु
 पाचालमुत्पा सहस्रेडिमुर्ये । तत समा देश लमाहताभि भी सट्ट्याभिस्त्रिनेदुराजो
 ॥ १२ ॥ शयन्वनास्त्रैव यथम्यनाथ सवपनकेषु स सिद्धभादा । तत सप्तपानि
 महास्व गनि षड्कार्यमाणानि घन्पिपारै ॥ १३ ॥ क्षणेनमेरीगणचप्रणादा नतर्देषु
 शस्त्रमहास्वभाथ । तच्छयनाब्दाद्युनमतस्त्रिभुजसुतमामुत्तरेणुजालम् ॥ १४ ॥ ग्हा
 वितानायततप्रकाश मालोक्यधीरा सहस्राभिरेवु । रथी स्थेनाभिहत ससून पपात

शोभिन कपिभज अर्जुन को और यादवपति श्रीकृष्ण मारपी मे ऊचेकीओर बाधेहुए
 पत्रवाल रथको युद्धभूमि में देखकर महा व्याकुल हुए आपके पुत्र और सवशरवीरों
 ने लोक महारथी शस्त्रगारी भेनाको वि प्रंत करने वाले मुकुटगारी अर्जुन से रात
 चार सहस्रनत्त हाथियों मे संयुक्त उत व्यहराजरो देखा । १० । जैसे कि प्रथम
 दिन में औरवोंमें श्रेष्ठ धर्मगान ने व्यहको बनाया था उन प्रकार का व्यूह इनलोकमें
 मनुष्योंने प्रथम कभी न देखाया नमुना था, इसके पीछे मरुसिनाके बीच युद्धभूमिमें बड़े
 पत्रे बजाडहुई हजारोंमेरी शब्दायमानहुई औरशस्त्रोंके व हजारों तूयोंके शब्दभी बडेवेग
 मे हुए, इससे पीछे वीरों के छोडे हुए गणों के शब्दों से संशक्त चलाये हुए धनु-
 र्शों के और शश्यों के बडे शश्यों ने क्षणान्त मेंही मेरी ओर दलों के काठिन शब्दों
 को गुण कर दिया, शश्यों के उन शब्दों से मत्र अनरिथ व्याप्त होगया और शी-
 व्रती पृथ्वी से धनोंके समूह आकाशकी ओर उडे तदनन्तर बडे वितानों से प्रकाश
 को देखकर वीरलोग अकस्मात् दौडउडे, रथीरथ से भिडकर घोडे समेत रथी ध्वजा

great array 8 Then all the kauravas, accompanied by four sons
 seeing Arjun with his banner or the ensign of monkey and Shree
 Krishna the prince of Yadavas as driver, were much perplexed. Your
 sons and their warriors say that bravest of charioteers, Arjun,
 the destroyer of foes protected by four thousand elephants. None of
 the people of this world had seen or heard an array of armies like the
 one formed on the previous day by that best of men, Yudhishtir the
 just. Then from the midst of all that army, rang through all the
 battle-field thousands of trumpets and conchs with loud peals but the
 sounds made by the discharge of arrows and the conchs of warriors
 surpassed the noise made by trumpets and drums. All the air
 was filled with the blasts of conchs and soon the sky was overcast
 with dust. The warriors rushed to battle as soon as the light was
 strong—Charioteers met charioteers in combat and fell down together

साथ स रथ सकेतः ॥ १५ ॥ गजो गजेनाभिहतः पपात पदाति जाच्याभिहत पदातिः ।
 आवर्त्तमानान्यभिवर्तमानघोरी कृताय्यदृशुतदर्शनानि ॥ १६ ॥ प्रसिद्धखड्गैश्चसमा
 हतानि सद्यश्चकृदनि सद्यश्चकृदः । सुवर्ण तांगण भूमिनामि सूर्यप्रभाभिशा
 घराणि ॥ १७ ॥ विदार्य मानानि परश्वधैश्च प्रासेश्च खड्गैश्च निभित्तुं कथाम् । गजेविषाणे
 चरद्दन्तकणा केचिन्मसूतारपिन प्रपेतु ॥ १८ ॥ गजैर्धमाश्चोपि स्वर्णभेजनि
 पातितांगणहता पृथिव्याम् । गजावचेगाज्जितसादितानी मुखाविषेदुः संहसीमनुष्या-
 ॥ १९ ॥ जार्त्तस्त्रयं सादिपदातियूनां विषाणगाशायरताडितानाम् । संप्रांतनागाश्च
 रथेमुद्धतं महाक्षये सादिपदातियूनाम् ॥ २० ॥ महारथैः सपरिवार्यमाणो ददर्शभी-
 म् कपिराजकेतुम् । तंपंचतालोच्छ्रित तालेनेतु सद्यश्चवेगादृभुतधीयमाणः ॥ २१ ॥

को भी लेकर गिरा और हाथी से मारा हुआ हाथी गिरा इसी प्रकार पदातीसे मारा
 हुआ पदाती गिरा । १५ । और घोड़े के सवार परस्परमें परशे और खड्गों से
 लड़कर पृथ्वी पर मारे गये, और सुनहरी ताराओं के समूहों से शोभायमान सूर्य
 की समान प्रकाशित ढालें परश्वध प्राप्त और खड्गोंसे खरद २ होकर पृथ्वी पर
 गिरी, और कितनेही रथी हाथियों के दांतों से चबाये हुए पृथ्वीपर गिरे और
 रथी के बाण से रथी पदाती के बाण से पदाती पृथ्वीपर गिरे, हाथियों के समूहों
 के वेग से कंपायमान व सवारों और हाथियों के दांत व अंग व जंघाओं से प्रा-
 यल सवार और पदातियों के आक्रंदित शब्दों को सुनकर मनुष्य अनेक प्रकार
 से व्याकुल हुए जिस में हाथी घोड़े और रथों की व्याकुलता और सवार पदाती
 धारोंकी विध्वंसताथी ऐसे घृहर्त्त में महारथियोंसे घिरे हुए भीष्मजीने हनुमानजीकी
 ध्वजा धारण करने वाले अर्जुन को देखा । २० । पंचनाल की उन्नत ध्वजा
 धारण करने वाले भीष्मजी उन उत्तमयोद्धांकी तीव्रतासे बड़े भारी अक्षकोलिये

with their horses, the chariots and the banners Elephants were killed
 by elephants and foot soldiers Ly foot soldiers 15. The horsemen
 fighting against horsemen, were cut down by axes and swords. The
 shields, decked with gold stars and shining like the sun, were cut
 down into pieces by the blows of swords and clubs. Many a chariot-
 eers mangled by the tusks of elephants, fell down on earth Chariots
 fell down by the arrows of charioteers and foot soldiers by the arrows
 of foot soldiers. Shaking with the velocity of elephants, the horsemen
 were wounded by horsemen and Ly the tusks of elephants, in their
 limbs and thighs, were perplexed with the cries of horsemen and foot-
 soldiers. Elephants, horses, chariots, horsemen and foot soldiers were des-
 troyed in large numbers. At that time, Bhishm surrounded by warriors
 saw Arjun with his banner of the figure of Hanuman. 20. Bhishm
 the bearer of the high standard over which blazoned the five palm

महात्मा बाणाशनिर्विषमते किरिष्टिते शांतनयोऽभ्यधावत् । तद्यथाशक्यति ममभाष
मिद्रातमजं द्रोणमुखाविसृजुः ॥ २२ ॥ कृपयशस्यथ विधिंशनिथ दुर्योधनः सोमवतिथ
राजन् । ततो रथानां प्रमुखादुपरय सर्वास्त्रविदकांचन चित्रधर्मा ॥ २३ ॥ ज्वेन
शरोभि स सास्त्रैर्वैस्तानर्जुन श्यारमस्तोभिर्मग्न्युः । तेषां महात्मानि महापात्रामस
ह्यकर्माविनिहरय कार्ष्णिः ॥ २४ ॥ बभौ महामंश्रुतायै माली सशेगतः सन्मग-
वानिधामि । ततःसतूर्णं वधिरौ दूकेनां कृत्वानदीमाशुरणेरिष्याम् ॥ २५ ॥ जगामसौ
भद्रमतीत्यनीभो महारथेपार्थ मदीनसत्वः । ततः प्रहृत्पाद्भुत विक्रमेणगांडीव
मुक्तेन शिलाशिनेन ॥ २६ ॥ विषठजालेन महास्त्रजालं विनाशयामास किरिट
माली । तमुत्तमं सर्वं धनुर्धाराणा मसक्तकर्माकिराजकेतुः ॥ २७ ॥ भीष्ममहात्मा

विजली से चमकपर अर्जुन के सम्मुख दौड़े और इत्थिमिकार कृपाचार्य शल्य विवि-
शति दुर्योधन सोमदत्त यह सबभी द्रोणाचार्यजी को प्रागे करके इन्द्रके समान
महाबली इन्द्र पुत्र अर्जुन के सम्मुख गये, इसके पीछे सर्व अस्त्रोंका ज्ञाता सुवर्ण
का जड़ाक कवच पहरेने वाला महाशूर अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु रथके सेनामुखसे
निकल कर बड़े वेगसे उन सबके सम्मुख चला, फिर वह असहिष्णु शील कभी
अभिमन्यु उनमहाबलवानों के बड़े अस्त्रोंको काटकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे
कि महामन्त्रभ्राह्मि से संयुक्त महाज्वाजामान सभा में वर्तमान अग्नि देवता होता
है तदनन्तर वह महापराक्रमी भीष्मजीग्रही युद्धमें शत्रुओं के राधिर रूपी जलसे
उसनदी को पूर्णकरके महारथी अर्जुन और अभिमन्यु कोभी उल्लंघन कर गया
। २५ । फिरमुकुट मालाधारी अर्जुनने बड़े हठकोकरके गांडीवधनुषकेशब्दसे महा
शब्दायमान विषठनाम बाणोंके जालसे उन सब शत्रुओं के जालोंको नाशकिया,
फिर कर्म-फलके चाहनेवासे इनुमान्त्री की ध्वजारसने वाले महात्मा अर्जुनने बड़े
तीव्रचारवाले स्त्रच्छ भल्लोंसे उस सर्व धनुर्धारियों में श्रेष्ठभीष्म जीके ऊपर वर्षा

trees, rode on his swift horses, with weapons upraised, to meet Arjun with the speed of lightning. In the same manner Kripacharya, Shalya Vivinshati, Duryodhan and Somdatta led by Dronacharya, faced Arjun the son of Indra. Then the adept in the use of all sorts of weapons, clad in gold bedecked armour, Arjun's son Abhimanyu the bravest of warriors, came out of the lists and encountered all those warriors, And cutting their weapons with his own, he stood in glory like Agni fed with libations in the midst of a court. Then Bhishma of great prowess, making a river to flow with the blood of the enemy surpassed Arjun and Abhimanyu in bravery. 25. Then Arjun the wearer of diadem and garland with his hissing arrows shot from the Gandiv bow, dispersed the net work of his adversary's arrow. Wishing to gain success, the bearer of the standard with the monkey's brand, showered his sharp and bright

भियवर्षन्तूर्म शशैघजालेर्विमलैधमहृडे । तथैव भीष्माहतमगच्छिते महास्रजालकृ
राजकृतेः ॥ २८ ॥ विशीर्षमाण दृष्टगुस्तथदीया दिवाकरेणैव तमोभिभूतम् । एव
विष कामुक भीमताद मदीगवत्सत्पदपोक्षमाश्याम् । ददर्शलोकं कुदसृजयाथ
तद्द्वैरथ भीष्म धनजयाश्याम् ॥ २९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वणि भीष्मार्जुनद्वैरथे

पट्टिनयोऽध्यायः ६० ॥

सञ्जय उवाच । द्रौणिर्भूरिश्रवा शल्यश्चित्रसेनश्च भगिपि । पुत्रं सांयमनेश्चैव
सौभद्रपथवारयन् ॥ १ ॥ संसकप्रति तेजाभितमेकं दृष्टगुर्जना । पञ्चभिर्मनुज
व्याघ्रैर्गजैः सिंह शिशुपथा ॥ २ ॥ नातिलक्ष्य तथा कविभशौर्येण पराक्रमे । यभूव
सदृश कार्णोर्तास्त्रे नापिचलाघवे ॥ ३ ॥ तथा तमात्मज युद्धे विक्रमं तमर्दिशम् ।

की इसी प्रकार आपके पुत्रों ने भी अन्तरिक्ष में अर्जुनके बड़े अस्त्र जालों का
भीष्मजोके हथमे ऐसे टटे और व्यर्थहुए देखा जैसे कि सूर्य से तिरस्कार किया
हुआ अंशकार होता है, इस रीतिसे प्रसन्नचित्त कौरव संजय आदि सबलोगोंने
उन सत्पुरुषों में श्रेष्ठ भीष्म और अर्जुन दोनोंके इस प्रकार द्वैरभ्युद्धका जो कि
भयकारी घनुषों के शब्दोंसेसंयुक्तया देखा ॥ २९ ॥

अध्याय ॥ ६१ ॥

संजय बोले हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र उन अश्वत्थामा व भूरिश्रवा शल्य चित्रसेन
और सांयमन के पुत्र इन सब ने अभिमन्यु से युद्ध किया, मनुष्यों ने उस
अकेले अभिमन्यु को इन पांचों व्याघ्ररूपों से लड़ता हुआ ऐसा देखा जैसे
हाथियों से लड़ता हुआ एकसिंह का बच्चा होता है, बड़ी लक्ष भेदन पूर्वक
शरता और अस्त्रों के कारण पराक्रम और हस्तलाघवता में अभिमन्यु के
समान कोई भी नहीं हुआ, इसके पीछे युद्धमें सावधान अर्जुन ने अभिमन्युको परा

arrows over Bhishm the best of archers In the same manner your
sons saw the network of Arjun's weapons, broken and dispersed by
Bhishm like darkness at sunrise Thus the cheerful Brinjayas and
other Kuravas saw those best of men, Bhishm and Arjun, fighting
with one another and making dreadful noise with their bows" 29

CHAPTER XI

Sanjaya continued "Ashwathama Bhurishrava, Shalya, Chitra
sen and the son of Samyaman attacked Abhimanyu People saw
brave Abhimanyu fighting alone against those five warriors like a
lion fighting against elephants Hitting the marks with great
precision, Abhimanyu surpassed them in deeds of prowess and dex
terity of hand The skilful warrior, Arjun seeing the deeds of
prowess done against the enemies by Abhimanyu roared like a lion

हृत्पापार्थं. सुसं यत्तं सिंहादमयानदत् ॥ ४ ॥ पीडयानतु तत्सैन्यं पौत्रं तथविशा
 पते । हृत्पावदीशाराजेंद्र समसात्पय वारयन् ॥ ५ ॥ स्वजिर्नोघातैराष्ट्रां दीन
 शत्रुदीनवत् । प्रत्युपयो स सै भद्रतेजसा च यत्नेन च ॥ ६ ॥ तस्य लाघवभागस्य
 मादित्य सहशप्रमम् । व्यवहृतमहृत्चापं समरे युष्यत. परै. ॥ ७ ॥ सद्राणि
 निघुणं केन विघ्नाशुर्थं च पञ्चभिः । ध्वजं सायमनेधैव सोष्टमिधिच्छिद्येत्तत ॥ ८ ॥
 कर्मदंडाद्वा शक्तिं प्रेषितां सोमदत्तिना । शितनोरगसंकाशा पत्रिणापञ्चहाताम्
 ॥ ९ ॥ शल्यस्य च महाभेगा नश्यत. समरेशरान् । निवायार्जुनद्रायाद्वा जघ नचतुरो
 हयान् ॥ १० ॥ मूर्ध्निश्च वाय शल्यश्च द्रौणि सायमनि. शल । नाशयतेत सार्व्या का-
 षोबाधुपलोदयम् ॥ ११ ॥ ततस्त्रिगतां राजेंद्र मद्राथ सहकेकपै. । पञ्चविंशति
 साहस्रास्तत्र पुत्रेण चोदिता. ॥ १२ ॥ धनुर्बद्धं विद्रामुप्या अजेयाः शत्रुभिर्दुग्धि ।

क्रम करने वाले शत्रुओंका ऐसा मर्दन करनेवाला देखकर बड़े बेगसे सिंहाद
 किया, हे राजेंद्र आपके पुत्रोंने इसरीति से सेनाको पीड़ामान करता आपके पोते
 अभिमन्युको देखकर चारों आरने आकर रोकलिया । ५ । फिर शत्रुभंतापी अर्जुन
 बहुत हार्षित मन के समान अभिमन्यु सपेत वज्रपराक्रम युक्त आपके पुत्रोंकी सेना
 के सम्मुख गया, युद्धमें शत्रुओंसे संग्राम करनेवाले उस अर्जुन का बड़ा धनुषहस्त
 लाघवता के मार्ग में नियत होकर शूल्य के समान प्रकाशमान दिखताई दिया, उस ने
 एकवाण से अश्वत्थामाको और पाचवाणों से शल्यको घायल करके आठवाणों
 से सायपन के पुत्रकी ध्वजाको गिराया, और सोमदत्तकी फेंकी हुई सुनहरी दंड वाली
 सर्पाकृति शक्तिकी तीव्रवाणों ने काटा, फिर अर्जुन के पुत्रनेवाण के फेंकनेवाले
 शल्यके महाभेग लेकड़ों वाणों को रोककर उसके चारों घोंड़ों को मारा । १० । फिरता
 अत्यन्त क्रोधमें भरे हुए मूर्ध्निश्च शल्य अश्वत्थामा सायमनका पुत्र और शल उस अभि-
 मन्युके महाप्रबलपराक्रमके अगेतहर न सके, इनके पीछे हेराजा आपके पुत्रके कहनेसे

Seeing you grandson Abhimanyu thus destroying your armies,
 your sons checked him on all sides. Then Arjun the destroyer of
 enemies, with a cheerful heart, accompanied Abhimanyu to try his
 strength on your armies. Arjun's bow looked like the sun on account
 of the dexterity of his hand in shooting arrows. He wounded
 Ashwathama with one arrow and Shalya with five, and cut down
 the banner of Damayana's son with eight. He cut down the ser-
 pent like spear of Dandata with his arrows. Arjun's son checked
 the shower of Shalya's thousands of arrows and lured all the four
 horses of his chariot. Then Baurishrava, Saalya, Ashwathama,
 Damayana's son and Dandata could not stand against that great war-
 rior Abhimanyu. Then at the request of your son, the skillful
 archer unconquerable in battle with twenty five thousand Trigaitas,

सहपुत्रं जिघांसतं परिवद्र.किरीटिनम् ॥ १३ ॥ तैःतुत्र रितापुत्रो परिक्षितो महा
 रथौ । ददर्श राजद्र पांचाल्य. सेनापतिररिदम ॥ १४ ॥ सचारणरथीघानां सहस्रं
 द्रुभिर्धृतः । घाजिभिपत्तिभिश्चैव धृतः शतसद्व्रजशः ॥ १५ ॥ धनुर्विस्फार्यसंकुञ्चो
 दधिरवाच घाहिनीम् । ययौत मद्रफानिकं कंकयांश्च परंतप ॥ १६ ॥ तेनकीर्त्तिम
 ताशुप्त मनीकंदहधम्बना । संस्पर्धयनागार्ध्वं योत्स्यमानमशोभत ॥ १७ ॥ सोऽर्जुन
 प्रमुञ्चेपातं पांचाल कुलवधनः । त्रिभि शारद्वतयाणजमुद्देशे समापयत् ॥ १८ ॥
 ततःसमद्रकान्हावा दर्शवदशभिःशुरैः । पृष्टरत्नजघानाशुमह्लेन कृतवर्षणः ॥ १९ ॥ दमनं
 चापि द्वायाद् पौरवस्यमहात्मन । जघानधिमलाश्रेण नाराचैनपरंतप ॥ २० ॥
 ततः सायमनेः पुत्र. पांचाल्यं युद्धं दुर्मदम् । अधिष्यात् त्रिजिता यागैर्दशभिश्चास्य

धनुर्वेदके ज्ञाता युद्धमेंअजेय पच्चीसहजार त्रिगर्तदेशी और मद्रदेशियोंनेकेकयदेशियों
 समेत उस पुत्र समेत अर्जुन के मारनेकी इच्छा से चारोंओरसे उनको घेरासिया । १५।
 हे राजा वहाँ सत्रुंजयो सेनापति धृष्टद्युम्न ने उनापिता पुत्रोकोरथोंसे चारों ओरको
 घिराहुआ देखातदनन्तर वह शत्रुसंतापी सेनापति महा क्रोभित होकर हजारों
 घोड़े रथ हाथियोंके पतियों से युक्त अपने धनुषको चढ़ाकर सेनाको आगा देकर
 और मद्र केकय देशियों के सम्मुख गया, उस कीर्त्तिमान दृढधनुषधारी से रक्षित
 रथहाथी घोड़े से युक्त बहुयुद्ध करनेवाली सेना शोभायमान हुई पांचालकुलवर्तसे
 उस धृष्टद्युम्न ने तीन वाण से अर्जुन के सम्मुख जानेवाले कृपाचार्य्य को घायल
 किया, फिर दश तीक्ष्ण वाणोंसे मद्रकोंको घायल करके शीघ्रही एक भ्रूलसे
 कृपाचार्य्य के सारथी को मारा, फिर उस शत्रु संतापी ने बड़े तीक्ष्ण नाराचोंसे
 पौरवके पुत्र दमन को मारा । २० । इसके पीछे चित्रसेतनेने दुर्मद धृष्टद्युम्न को दश
 वाणों से और उसके सारथीको भी दश वाणों से घायल किया फिर उस महा

Madras, and Karkayas, surrounded Arjun and his son on all sides in
 order to kill them. Dhrishtadyumna, the commander of armies and des-
 troyer of enemies, saw Arjun and his son surrounded by the enemies,
 and with thousands of horses, chariots and elephants he advanced
 against the armies of Madra and Karkaya, shooting his arrows against
 them. Protected by that glorious archer, the chariots, elephants and
 horses of the army looked glorious. Dhrishtadyumna the descendant
 of the Panchals wounded with three arrows Kripacharya who was
 advancing to attack Arjun, and having shot ten arrows at Shalya,
 killed the chariot driver of Kripacharya with one arrow. Then with
 sharp arrows, that destroyer of enemies killed Daman the son of
 Paurav. 20. Clutrasen wounded brave Dhrishtadyumna with ten
 arrows and his chariot driver with ten more. -Wounded with those

सारथिम् ॥ २१ ॥ सोति विद्वो महेश्वासः युष्किणी परिं संलिहन् । भलेनपृथतीक्ष्णेन
 निष्कर्त्ताद्यकार्षुक्म् ॥ २२ ॥ अथैतं पञ्चविंशत्या क्षिप्रमेव समाधिपत् । अम्बाकास्या
 भीमिद्राजन् नभौतौपाणिंसारथी ॥ २३ ॥ सहताभ्ये रथे निष्ठन् ददर्श भरतर्वज्र । पुत्र-
 सौवमनेः पुत्र पाञ्चान्यस्यमहात्मनः ॥ २४ ॥ अप्रपृष्ट महाघोर निस्त्रिंशत्वारमायसम् ।
 पदातिस्त्पूर्ण मानुर्ध्वं द्रुपस्थं पुरुषर्षभः ॥ २५ ॥ तं महोद्य मिवायांत आत्पतन्त मिघोरग-
 म् । प्रतापरण निस्त्रिंशं कालोत्सृष्ट मिवांतकम् ॥ २६ ॥ दीप्यमान मिवा वित्तं मत्तवा-
 रण विक्रमम् । अपश्यन्पांडवास्तत्र घृष्टघुम्नश्च पार्षतः ॥ २७ ॥ तस्य पांचाल द्वायावः
 प्रतीप ममि वासतः । शित निस्त्रिंश इक्ष्वायु शङ्खचरणधारिणः ॥ २८ ॥ बाण वेग मर्त्त-
 तस्य तथा भ्यास सुपेदुवः । श्वरन्वेनापतिः कुङ्को विभेद् गदया शिरः ॥ २९ ॥ तस्य
 राजन् स निस्त्रिंशं सुप्रमञ्च शशा वरम् । हनस्यपततोइक्ष्वातद्देगेन न्यपतद्भुवि ॥ ३० ॥
 तं भिक्षाय गदापेण सलेभेपरमांमुक्त्वा । पुत्रः पांचाल राजस्य महात्मा भीम विक्रमः

घायन घृष्टघुम्न ने होठोंको चबाकर बड़े तीक्ष्ण फलसे इसके घनुषको काटा,
 हे राजा इसी प्रकार इसको भी पच्चीस बाणों से पीड़ामान करके उसके घोड़ों
 को दोनों सारथियों समेत मारडाला, हे भरतर्षभियों में भ्रेष्ठ फिर उस मृतक घो-
 डेवाले रथमें बैठे हुए चित्रसेन ने उस द्रुपद के पदास्त्री पुत्रको देखा, और देखतेही
 रथसे उतर पैदल होकर शीघ्रही महाघोर खड्गको धारण करके रथपर बैठे हुए
 घृष्टघुम्न की ओरको चला । २५ । उस महा भयानक खड्गधारी को आता
 हुआ देखकर पाण्डव और घृष्टघुम्न ने उसको सूर्यके सगान मकाशित और
 पतवाले हाथीके समान महाबली रूप देखा, फिर शीघ्रता करने वाले सेनापति
 घृष्टघुम्न ने उस महा कालरूप सम्मुख आनेवाले घोर खड्गधारी के शिरको गदा
 से तोड़ा, हे राजा वह अपने खड्ग और दाल समेत मरकर पृथ्वी पर गिरा । ३० ।
 राजा घृष्टघुम्न ने उसको गदा की नोकसे मारकर बड़े यज्ञ को पाया, हे भ्रेष्ठ

arrows, Dhrishtadyumna bit his lips, and with a sharp arrow cut his
 bow from the middle. He then wounded Chitrasen with twenty five
 arrows and killed his horses with the drivers. Then, O best of the
 descendants of Bharat, Chitrasen seated in the chariot with dead
 horses, saw the glorious son of Drupad and leaping down from his
 chariot, sword in hand advanced towards him, 25. Seeing the
 dreadful sword bearer coming towards him like the sun in glory and
 like a mad elephant in the pride of power, the skillful commander of
 armies Dhrishtadyumna broke with his mace the head of that advan-
 cing warrior of dreadful sword, and caused him to fall down with his
 shield and sword. 30. King Dhrishtadyumna gained great fame
 by killing that warrior with the point of his mace. At the death

॥ ३१ ॥ तस्मिन् दृते मद्भवासे राजपुत्रे महागधे । हाहाकारो महानासीत्तवसैन्यस्य
मारिष ॥ ३२ ॥ ततः सांघमनि कुड्रो दृष्ट्वा निहत मारमजम् । अग्नि दुद्राघ वेगेन पां
घालयं युद्धदुर्मदम् ॥ ३३ ॥ तौ तत्र समरे शूरो समेतौ युद्ध दुर्मदौ । ददृशुः सर्वं रा
जान करच पांडवान्तथा ॥ ३४ ॥ ततः सांघमनि कुड्रो पापनं परधीरहा । आजघान
त्रिभिषांशोत्रै र्त्विं महाद्विगम् ॥ ३५ ॥ तथैव पापतं शू शल्यः सगिति शोभन ।
अजघानो रसिकुड्रस्तथो युद्ध मवर्तत ॥ ३६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि चतुर्थयुद्धदिवसे सांघमनिपुत्रवधे
एकपट्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

धृतराष्ट्र उवाच दैघवेजपर मन्ये पौरुपादापिसंजय । यत्सैन्यं ममपुत्रस्य पाण्डुसै-
न्येनचाभ्यते ॥ १ ॥ निर्यदिनामकांस्ततहृतानेष द्विशसति । अग्यप्राञ्च प्रहृष्टांघ नि-

धृतराष्ट्र उस वड़े धनुषमारी महारथी राजकुमार के मरने पर आपकी सेना में
बड़ा हाहाकार हुआ, इसके अनन्तर क्रोध में भरा हुआ सांघमनी अपने पुत्रको
मृतक देखकर वड़े वेगते धृष्टद्युम्न के सम्मुख दौड़ा तब सब राजा व कौरव और
पाण्डवोंने युद्धमें जुटेहुए उत्तम रथों समेत दोनों शूरवीरों को देखा, इसके पीछे
शत्रु विजयी सांघमनी ने महा क्रोधित होकर तीन बाणों से धृष्टद्युम्न को ऐसा
घायल किया जैसे कि अंकुश आदि से वड़े हाथीको काते हैं इसी प्रकार युद्ध-
भूमिमें शोभित करने वाले क्रोधरूप शल्य ने उस शूरवीर धृष्टद्युम्नको छातीमें
घायल किया इस पीछे युद्ध होना जारा हुआ ३६ ॥

अध्याय ६२ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं प्रारब्ध को उपायसे भी बड़ा मानताहूँ जो मेरे
पुत्रकी सेना पाण्डवों की सेनासे मारी जाती है हे मृत तू सदैव हमारे शूरवीरों को
मृतक कहता है और पाण्डवोंको सदैव अत्यन्त भसन्न और अक्षत कहा करता है

of that great warrior prince there was a great cry of distress raised
in your army. Samayamani, enraged at the death of his son, rushed
against Dhrishtadyumna. Then all the warriors of the Kauravas
and Pandavas saw those brave charioteers engaged in combat.
Samayamani the destroyer of foes wounded Dhrishtadyumna with
three arrows like a large elephant with goads. In the same manner,
Shalya the pride of the field of battle, wounded Dhrishtadyumna in
the breast and the battle continued." 36

CHAPTER LXII,

"Saying that my son's armies are destroyed by those of the Pan-
davas, I hold fate to be superior to expellents" said, Dhrishashtra
to Sanjaya, "You always say that such and such warriors of my army

१५ शसिपांडवान्-२ ॥ नैन नृपुण्य कार्णव-मागकानमजय । पतितावृण-
 रयम नांश्च इतानेवचशसि ॥ ३ ॥ युध्यमानान् यवाशकि घटमानान्जयप्रति ।
 पाण्डव द्वि जयत्येव जीयते चैरमागका ॥ ४ ॥ सोदृतीमािदु खानि दुर्योध कृता
 निच । आभ्यामि सतततात दु सहानि बह्वनिच ५ ५ ॥ तमुपाय न पश्यामि जे ये
 रन्येनपाण्डवान् । मागक विजय युजे प्राप्नु युर्धनसजय ॥ ६ ॥ सञ्जय उवाच ।
 क्षपमनुष्य देह नां गजवाजि रयक्षयम् । शृणुर जन् विधोभूवा तत्रैवापनयामहान्
 ॥ ७ ॥ घृष्टघृष्मन्तु शल्येन पीडितोनवमि शि । पीडपाससकृद्धो मद्राधिपति
 मायले ॥ ८ ॥ तत्राद्मुतमपश्याम पापंतस्य पराक्रमम् । स्ववारयतयन्तु शल्य
 समिति शोभनम् ॥ ९ ॥ नातर हृदयते गत्र तयोधरयिनोस्तदा । महुर्तमिवतलुद्ध
 तयो समभिवामघत् ॥ १० ॥ तत शल्यो महाराज घृष्टघृष्मस्य सयुये । घतुदिष्टे

हे संजय अब हमारे शूरवीरों को गिरते गिरते दोनों प्रकारसे पराक्रम से रहित
 कहता है इसी से पाण्डव लोग सामर्थ्य के अनुसार लड़ते विजय में उपय करते
 हुए जयको पाते है और मेरे बेटेपर जय को पाते है, हे तात सो मैंने दुर्योधन से
 उत्पन्न हुए दुःखके सहनेके योग्य अनेक दु खों को बरम्बार सुना, हे संजय मैं
 उस उपाय को नहीं देखता हूँ जिसके द्वारा पाण्डवों की हार होय और मेरपुत्रों
 की विजय होय । ६ । संजय बोले कि हेराजा तुम सावधानी से सुनो कि यह
 मनुष्यों का और रय घोडे हाथी आदि का नाश होना तुम्हारेही अ-पायका फल
 है, शल्य के नौ बाणों से पीडित अत्यन्त क्रोधयुक्त घृष्टघृष्म ने लोहेके तीरमे मद्र
 देश के राजाको पीड मान किया, वहाँ हम ने घृष्टघृष्म के अपूर्वपराक्रम को देखा
 जो युद्ध में शोभा पानेवाले शल्य को शीघ्रही हटादिता, किसीने इसयुद्ध में इनदो-
 नों क्रोध युक्तों के अन्तर को नहीं देखा दोनों का युद्ध एक मुहूर्त तक अच्छा
 हुआ । १० । इसके पीछे हे महाराज शल्यने युद्धभूमिमें पीले तीरधार वाले

are dead, while you represent the Pandav warriors to be indestruc-
 ble and cheerful. You say that killing or falling, our warriors are
 destitute of prowess and consequently the Pandavas are again and
 again victorious, while our side is the loser. I am tired of hearing
 the troubles of Duryodhan. I see no expedient Sanjaya how to cause
 the defeat of the Pandavas and the victory of my sons.' 6 'Hear
 O king patiently," said Sanjaya in reply. "The destruction of men,
 chariots, horses, elephants and others is the result of your own injus-
 tice." Wounded by the nine arrows of Shalya, Dhrishtadyumna, much
 enraged, wounded the king of Madra with iron arrows. There we
 witnessed the great prowess of Dhrishtadyumna who soon made
 Shalya turn back. Both the warriors fought for a time without
 any distinction. 10 Then Shalya with one sharp arrow cut asunder

धमलेन पीतेन निशितेन च ॥ ११ ॥ अथैन शरघर्षेण छडादणमास संपुये । गिरिजला
गनेयद्वजलदाजल वृष्टिभि ॥ १२ ॥ अभिमन्युस्तत कुडो घृष्टघुम्नेवपीडिते ।
पीडिते । अभिदुद्राव वेगेन मद्रराजरथं प्रति १३ । ततो मद्राधिपस्ये कार्णि
प्राप्याति कोपत । धार्तापनिममे यामा विव्याघनिशिते शरे ॥ १४ ॥ तत
स्तुतायका राजन् परीप्सतोऽर्जुनिरणे । मद्रराजरथर्णे परिघार्थावतस्थिरे ॥ १५ ॥
दुर्योधने विकर्णश्च दु शासनविविंशती । दुर्मर्षणो दु सहस्र चित्रसेनोऽपदुर्मुख
॥ १६ ॥ सत्यव्रतश्च भद्रते पुरुमित्रश्चभारत । एतेमद्राधिपस्ये पालयते स्थित
रणे ॥ १७ ॥ तान्भीमसेन सकुडो घृष्टघुम्नश्च पार्यत । द्रौपदेयाभि मनुष्यमा
द्रीपुत्रौ च पांडवौ ॥ १८ ॥ धार्तराष्ट्रान् दशरथान् इदोव प्रत्यवाग्यत् । नाना
रुपाणि शस्त्राणि विवृजतो विशापते ॥ १९ ॥ अम्यवर्तत सहस्रा परस्परवधे

भल्ल से घृष्टघुम्न के धनुषको काटकर इनको बाणों की वर्षा से ऐसे दक दिया जैसे
कि वर्षा ऋतु में जब भरेहुए बादल पर्वत को दक देते है, फिर घृष्टघुम्न के पीड़ामान
होने पर अत्यन्त क्रोधरूप अभिमन्यु बड़े वेगसे राजामद्र के रथकी ओर दौ-
ड़ा, तदनन्तर महासाहसी क्रोधमें भरेहुए अभिमन्युने राजा मद्रके रथको पाकर
आर्त्तायानि को तीन पने तीरों से घायल किया हे राजा फिर तो अभि-
मन्यु दवानेकी इच्छासे आपके पुत्र शीघ्रही राजामद्रके रथके चारों ओर आकर
नियत हुए । १५ । दुर्योधन विकर्ण दुशशासन विविंशति दुर्मर्षण दुस्सह चित्रसेन
सुदुर्मुख सत्यव्रत पुरोमित्र महारथी विकर्ण यह सब राजामद्र के रथकी रक्षा करते
हुए युद्धमें नियत हुए, इनको देखकर हेराजा महाक्रोधित भीमसेन घृष्टघुम्न द्रौपदी
के पांचोपुत्र अभिमन्यु और माद्रीके पुत्र नकुल औरसहदेव इननाना प्रकारके
शस्त्रोंके महार करनेवाले दशो शूरवीर धृतराष्ट्रके महारथी दशोपुत्रोंको रोककर
परस्परमें मारनेके इच्छावान् अत्यन्त क्रोधरूप सम्मुख वर्त्तमानहुए हेराजा निश्चय

the bow of Dhrishtadyumna and covered him with the shower of his
arrows like a hill with the clouds of rains. When Dhrishtadyumna was
thus wounded, Abhimanyu in great rage rushed against the chariot
of Shalya. The brave warrior Abhimanyu, full of prowess, wounded
Artayani with the sharp arrows. Your sons soon came round the
chariot of the king of Madra to punish Abhimanyu. Duryodhana,
Vikarna, Dushasana, Vivinshati, Durmarshana, Dussaha, Chitrakarna,
Sudarmukha, Satyabrata, Puromitra and the great warrior Vikarna
protected the chariot of the king of Madra. Seeing them thus
stationed, Bhishma, Dhrishtadyumna the five sons of Draupadi,
Abhimanyu and the sons of Madri—Nakul and Sahadeva discharging
various sorts of weapons, checked the ten warriors of the Kauravas
and the two sides fought for life and death. All this was the result

विणः । तेषामेवुः संप्रतिराजन् दुर्मित्रितय ॥ २० ॥ तस्मिन्देशरथे कुक्षेवर्तमाने
महाभये । तावकानां परेषांवा प्रेक्षकायिनो भवन् ॥ २१ ॥ शस्त्राण्येककण्ठाणि
विखृजंतो महारथाः । अन्योन्यन्यमभिनर्दतः संप्रहार प्रचक्रि ॥ २२ ॥ ते तदाजात
संरंभाः सर्वेभ्योऽप्यं जिघांसवः । अन्योन्यमभिनर्दतः स्वर्षमानाः परस्परम् ॥ २३ ॥
अन्योन्यस्पर्षया राजन् शतयः सगताभिधः । मह श्त्राणि विमुञ्चतः समोपेतुरभयिणः
॥ २४ ॥ दुर्योधनस्तु संकुटो घृष्टघ्नं महारथे । विव्याध निशितैर्वाणिश्चतुर्भिः
समरेद्रुतम् ॥ २५ ॥ दुर्मर्षेणश्च विशत्या चित्रसेनश्च पञ्चभिः । दुर्मुखो नवभिर्वाणे
कुःसहस्राणि सत्तभिः ॥ २६ ॥ विविशतिः पञ्चभिश्च त्रिभिर्दुःशासनस्तथा । तान्प्रत्य
विष्यद्वाजेंद्र पर्यतः शत्रुतापतः ॥ २७ ॥ एकैकंपर्यविशत्यादर्शयन् पाणिलाघवम् ।
सत्यव्रतं च समरे पुंश्चित्रकारत ॥ २८ ॥ अभिमन्युरविशत्युदशभिर्दशभिः शैः ।

करके आपकी कुरीतलाह करनेपर वह लोग युद्ध करने में अत्यन्त प्रवृत्त हुए । २०।
उन दशोरथियों के और बड़े भयके वर्तमान होनेपर आपके पुत्र और पाण्डवों के
रथीयुद्ध क्रीड़ा देखनेवाले हुए वह सब नाना प्रकारके शस्त्रोंको चलाते हुए परस्परमें
एक-एकके सम्मुख गर्जते हुए महारथी लोगोंने अच्छे प्रकारसे युद्ध किया तबतो वह
सब अत्यन्त क्रोधमें भरे हुए परस्पर मारनेके इच्छावान् सम्मुख होकर गर्जना करते
हुए एक-एकसे ईर्ष्या करने लगे हेराजा ज्ञातिके लोग अपने ज्ञातिवालोंसे परस्परकी ईर्ष्या
के द्वारा युद्ध करते हुए क्रोध से पूर्ण बड़े अस्त्रोंको त्यागते हुए सम्मुख दौड़े, फिर
अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधनने चार तीक्ष्ण बाणों से घृष्टघ्नको घायल किया । २५।
दुर्मर्षगने पीसवाणसे चित्रसेनने पांच बाणसे दुर्मुखने नौ बाणसे दुस्सहने सात
बाणोंसे विविशतिने पांच बाणोंसे दुःशासनने तीन बाणोंसे घायल किया हेराजा
उस शत्रुतासंतोषी हस्तलाघव दिखानेवाले घृष्टघ्नने उन प्रत्येकको पच्चीस २
बाणोंसे घायल किया हेभरतवंशी फिर अभिमन्युने सत्यव्रत और पुरोभिन्नको
दश २ बाणों से घायल किया फिर माताको प्रसन्न करनेवाले माद्रीनंदन नकुल

of your evil policy. 20. When the ten warriors were thus fighting
bravely, your sons and the Paudav warriors looked on the scene of
battle. Discharging various sorts of weapons and roaring at one
another, the great warriors fought bravely. They tried to kill one
another and roared fearfully. The kinsmen, envious of one another
fought in great anger and leaving their missiles aside, rushed upon
one another. „Duryodhan in great rage wounded Dhrishtadyumna with
four arrows. 25. Durmarshan shot twenty arrows, Chitrasen five,
Durmukh nine, Dussah seven, Vivinshata five and Dushasan three.
Dhrishtadyumna the destroyer of enemies wounded each of them with
twentyfive arrows shot dexterously. Abhimanyu wounded Satya-
brat and Furumitra with ten arrows each. Then Nakul and Sahadev,

माद्रिपुत्रौ तु समरे मातुर्जमातुर्नन्दनौ ॥२९॥ अधिष्ठेतांशौ स्त्रीक्षौस्तदद्भुतमिवाभवत् ।
 ततः शल्यो महागज स्वस्त्रीयो रथिनांघरी ॥ ३० ॥ शैब्यहुभिरानुत्कृतप्रति हितैपिणो
 छाद्यन् नौ ततस्तौ माद्रिपुत्रौ नचेलत् ॥ ३१ ॥ अथ दुर्योधनं दृष्ट्वा भीमसेनो महा
 बलः । विषित्तु कलहस्यां त गदां जग्राह पांडवाः ॥ ३२ ॥ तम्यतगद् दृष्ट्वा कैलास
 भिवशृंगिणम् । भीमसेनं महाबाहुं पुत्र स्त प्रादघ्नन्भयात् ॥ ३३ ॥ दुर्योधनस्तुसकुद्धा
 मागधं समचारयन् । अनीक दश साहस्र कुंजराणांतरस्विनाम् ॥ ३४ ॥ गजानीकस
 हितस्तेन राजासयाधनः । मागध पुत्रं कृत्वा भीमसेन समभ्ययात् ॥ ३५ ॥ आपतंत
 तं दृष्ट्वा गजानीक वृकोदरः । गदापाणि रथागोह द्रथात् सिंह इधोन्नदन् ॥ ३६ ॥ अद्रि
 सा(मर्थी) गुनी प्रहृष्टमहर्ता गदम् । अभ्यध वदगजानीक व्यादितास्यइवांतकः ॥ ३७ ॥
 स गजान् गदय नि निघ्नन् व्यचरत्समवेली । भीमसेनो महाबहू सगजसह

और सहदेवने युद्धमें अपने मामा शल्यको तीव्र बाणोंसे ढक दिया यह आश्चर्य
 सा हुआ इसके पीछे हेराजा शल्यनेभी उन रथियोंमें श्रेष्ठ प्रहारकोंपर प्रहार कर्म
 करनेके इच्छावान् दानोंभानजों को बहुत से बाणोंसे ढकादिया इसके पीछेबाणों
 से आच्छादित होकरभी वह दोनों निकल सहदेव व्याकुल नहीं हुए । ३१ - फिर
 महाबली भीमसेनने दुर्योधनको देखकर युद्धके अतकरनेकी इच्छासे अपनी
 गदाको हाथमें लिया कैलाश पर्वत की समान उस गदाके उठानेवाले भीमसेन
 को देखकरअपके पुत्र भयभीत होकर भागे फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने
 राजा मगधको चेताया और वेगमान हाथियों की दश हजार सेनाको आज्ञाकी
 राजा दुर्योधन उस हाथियोंकी सेना समेत राजा मगधको आगेकरके भीमसेन
 के सम्मुख गया । ३५ । भीमसेन उसहाथियोंकी सेनाको चारोंओरसे गिराता
 हुआ देख कर सिंहके समान उच्चस्वरसे गजताहुआ हाथमें गदा लिये रथसे उतरा
 और उस मह भारी लोहेकी गदाको पकड़कर उस सेनाको अपना भक्षपदाथे समझकर
 हाथियोंकी सेनाक सम्मुख दौड़ा आर वहां जाकर अपनी गदासे हाथियों को

the joy of their mother Madri, covered their maternal uncle Shalya
 with the shower of their arrows. The whole was a wonder. Shalya
 too covered his sister's sons with his arrow, but being overwhelmed
 with the shower of his arrows they did not lose heart. 31. The great
 warrior, Bhimsen, seeing Duryodhan and wishing to end the wa
 r, took up his mace. With that mace like the Kanashi mountain, Bhim
 sen was the terror of your sons. Then Duryodhan in great anger
 ordered the king of Magadh with an army of ten thousand of
 elephants to advance against Bhimsen and himself followed that
 army. 35. Seeing that array of elephants coming from all sides
 Bhimsen roared like a lion, and dismounting from his chariot with
 mace in his hand he ran against them, thinking them to be his prey.
 Killing the elephants with his mace he roared amidst the army like

वासवः ॥ ३८ ॥ तस्य नादेन महताननोद्दयकंपिता । शयवेष्टन संद्वयगजा
 मीनस्य गर्भतः ॥ ३९ ॥ ततस्तु द्रौपदी पुत्राः सौमद्रश्च महारथः ॥ नकुल सहदेव
 धृष्टद्युम्नश्च पार्वत ॥ ४० ॥ पृष्ठभीमस्य रक्षणः शरवर्षे ॥ धारणात् त्रिभुवनेषु
 प्रावन्तो मेधाइव गिरीन्पथा ॥ ४१ ॥ क्षुरैः क्षुरैर्मैत्रेय पीतैश्चाजालिकैः शितैः ।
 स्यदन्नुत्त मागानि पादघवा गजघोषिनाम् ॥ ४२ ॥ शिरोसि- प्रपतद्भिद्यथाऽभिद्य
 विभ्रुवितैः । अश्मवृष्टिरियामाति पाणिभिश्चसहस्रैः ॥ ४३ ॥ हतोत्तमागाःस्क
 भेव गजानांगजघोषितैः । जहदन्ताचलाप्रेषु इमामान् शिखाइव ॥ ४४ ॥ प्रष्ट
 पुनहृतानन्यानापस्याममहागजान् । पततःपतथमानाश्च पार्षतेनमहारथना ॥ ४५ ॥ माग
 धीव महीपलो गजमेतावणोपमम् । प्रेषव-मास समरे सौमद्रस्यरथप्रति ॥ ४६ ॥
 तमापर्वतस्रमेव मागधस्यमहागजम् । जघाननेपुणाधीर- सौमद्र-प्रधीरहा ॥ ४७ ॥

मारता हुआ ऐसा युवा जैसे दानवोंके बीच यज्ञधारी इन्द्र गर्जताहुमा दौड़ते-है
 हृदयके कमरेवाले भीमतेन के बड़े शब्दसे सब भिल्ले हुए हाथी अतन्त चलायमान
 हुए फिर द्रौपदीके पांचोंपुत्र और महारथी भ-भि-न्यु, नकुल सहदेव धृष्टद्युम्न यह
 सब भीमतेन के पृष्ठभाग की रक्षा करतेहुये बाणोंकी वर्षाकी करकर हाथियों के
 सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि पर्वतों पर ब-दल दाहते हैं । ४१ । तीव्र विजली
 के सम न भूतों से पाण्डवोंने युद्धमें हाथीवानोंके और हाथीके सवारोंके निरोंको
 काश्र फिर तो हाथियों से गि-नेवाले मृतकों की शोभापापाय्य दृष्टीसे मान्द्रु-हो गी
 थी और हाथियों के कन्धों पर बिना शिकके सवार ऐसे द-ष्टिपड़े जैसे कि चलने
 हुए पर्वतोंपा-चोटी कटे हुए दृ-सहोते हैं इनके अतिरिक्त धृष्टद्युम्न के मारिहुए वा
 गि-येहुये पड़ेहुए दूसरे बड़े हाथियों को देखा । ४२ । इसके पीछे मगधक राजा
 ने ऐरावतके समान हाथीनोयुद्ध में अभिमन्यु के रथपर भेजा उसहाथी को जाता
 हुआ देसके राजमा के भिजयी अभिमन्युने उत्तरो बाणों से ना-कर सवर्ण के पुत्र

Indra the wielder of Vajra in the midst of the Danavas. The elephants
 were much terrified by the roar of Bhishma. Then the five sons of
 Draupadi with Abhimanyu, Nakul, Sahadev and Dhritadyumna
 protected Bhishma from behind and rushed upon the elephants, showering
 their arrows on them like clouds showering rain over hills. 44. The
 Pandavas cut down the heads of the drivers and riders of elephants
 with sharp arrows bright as lightning and then they dropped his stones
 from their backs. The headless riders on the backs of elephants looked
 like trees on mountains with their tops chopped off. We saw
 elephants also cut and killed by Dhritadyumna's arrows. 45. Then
 the king of Magadh sent his elephant, huge as Airavat, on the
 chariot of Abhimanyu, who as soon as he saw it coming towards him
 killed it with his arrows of golden feathers and beheaded the king

तस्यापि खितनागस्य वार्ष्णि परपुरञ्जय । राजोरजतपुत्रेण महेनापाहरच्छिष्टः ॥ ४८ ॥
 विगाह्यतप्तजानीकं भीमसेनोपि पादस्य । इयश्चरत्समरे मूढनन् गजानिद्रोगिरिनिष
 ॥ ४९ ॥ एकमहार निहता भीमसेनेनर्दतिन । अपश्यामरणे तस्मिन् गिरिः प्रहता
 निष ॥ ५० ॥ ममदन्तान् भग्नकटान् भग्नसफर्याश्च पारणान् । भग्नपृष्ठाक्रिकान्त्याग्नि
 हतान् पर्वतोपमान् ॥ ५१ ॥ नदत सोदतश्चान्यान् विमुखान् समरेगतान् । विदु
 तान् भयस्य विग्नास्तथा विदकृतोपरान् ॥ ५२ ॥ भीमसेनस्य मार्गेषु पतिताः पर्व
 तोपमान् । अपश्यनिहताभागान् राजशिष्टीवतोपमान् ॥ ५३ ॥ समन्तो रुधिरचान्मे
 भिन्नकृन्नामहागजा । विह्वसन्तो गताभूमिं शैलाहवचरात्तले ॥ ५४ ॥ मेदो रुधिरि
 ष्वागोवसामजा समुचित । इयश्चरत्समरे नीमो दृषपाणि रियातक ॥ ५५ ॥ गजा
 नांश्विरनिलभा गदा विभ्रदवृकोदर । घोर पतिभयश्चासंतिपाकीय पिताकघृक् ॥ ५६ ॥

वाजे भङ्गते उर हाथी के न रोकने वाले राजा के शिरका भी काटा, फिर भीमसेन भी उसहाथियों की सेना को ब्यथित करता हुआ ऐसा घमा जैसे कि इन्द्र पर्वतों को मगन करता घूमता है, हमन उर युद्ध में भीमसेन के एकही महार मे मरे हुए हाथियोंको ऐसा देखा जैसे कि यत्र से महारित पर्वतदीखते हैं । ५० । प्रास दांत गंडस्थन जघा पीठ और कमर टूटकर मरेहुए पर्वतान्कार हाथियों को और कितनेही भागडालकर मरहुए हाथियों को भी हमने देखा, कितनेही बड़े हाथी कुंभ दृष्टे रुधिरको वमन करते भयसे विक्रम पृथ्वीपरएसे गिरे जैसे कि पर्वतपृथ्वी पर गिरते हैं, रुधिर मज्जासे मिलेहुए अंग और कपालोंकी मज्जासे छिड़का हुआ भीमसेन दंडधारी मृत्यु के समान युद्धमें घमा हाथियों के रुधिर से भीजा हुआ गदाको धारण किये हुए भीमसेन पिताक धरि शिवजी के समान घोर और भयानक रूपहुआ । ५४ । क्रोधयुक्त भीमसेन के हाथ से मरेहुए कृष्टित हाथी अकस्मात् आपकी सेना को दवातेहुए भागे । ५५ । अभिमन्यु आदि बड़े २ धनुषधारी राथियों ने उम युद्ध करनेवाले धीर भीमसेन की चारों ओर से ऐसी रज्जाकी जैसे इन्की

who was seated on its back Bhimsen too, was seen roaming hither and thither, destroying the elephants as Indra destroys hills. 50 We saw elephants destroyed by the single blow of Bhima, falling down like mountains destroyed by lightning. We also saw, elephants huge as mountains dying of wounds received in their eyes, tusks, cheeks, thighs and backs, and dropping foam from their mouths. Many elephants fell down on earth wounded, vomiting blood and falling like mountains. Bhimsen with his bloodstained body roamed there like Death the bearer of staff. Bathed in the blood of elephants Bhim the bearer of mace looked as dreadful in appearance as Shiva the bearer of Pinak. Wounded by the blows of Bhimsen, the elephants ran away crushing your arrows. 55. Abhimanyu and other great archers and warriors protected Bhim on all sides as the gods

संमप्यमानाः क्रुद्धे भीमसेनेन दूतिनः । सहस्रापान्द्रवन् विलसामुद्गततपस्याहिनीम् ॥ ५७ ॥ तद्विचारे महेष्वासं सौमद्रप्रमुखार्याः । पर्यरन्ते युध्यन्ते यज्ञायुधमियामराः ॥ ५८ ॥ शीणिताकांग्वां विप्रदुक्षितांगजशोणितैः । कृतांतइयरीद्रात्मा भीमसेनो ब्यहृश्यत ॥ ५९ ॥ व्यापच्छमानं गंद्या दिक्षुसर्षोषु भारत । अपदयामरणेभीमं नृत्यन्त मिवशंकरम् ॥ ६० ॥ यमद्रडोपमां सुर्वेभिद्राशनिसमस्यनाम् । अपदयाम महाराज गौद्रविशसर्गोदाम् ॥ ६१ ॥ विमिथां केशमज्जामिः प्रदिग्धांरुधिरेणच । पिनाक मिवरुद्रस्य क्रुद्धस्यामिप्रत.पशून् ॥ ६२ ॥ यथापशूनां संघाते यद्यापालःप्रका ल्येत । तथाभीमो गजानिकं गदयासमेकाद्रयत् ॥ ६३ ॥ गंद्यावध्यमानांस्ते भागजैश्चक्ष्मनसः । स्थान्यनीकामि मृहन्तः प्राद्रधन्कुंजरास्तय ॥ ६४ ॥ महा धांतइवाध्राणिचिमिवासाधारणान् । अतिष्ठत्सुलेभीमः दमशानइचशूलमृत् ॥ ६५ ॥ इति भी महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि चतुर्थदिवसे भीमयुद्धे द्विपरिहितमोऽध्यायः ६२ ॥

रत्नादेवता करते हैं, रक्तसे भरे हुए और हाथियों के रुधिर से छिड़की हुई गदाको धारण किये भीमसेन मृत्यु के समान स्ट्रात्माही द्वा द्विपडा, हे भरतवंशी हमने गदा युक्त भीमसेम को सब दिशाओंमें गाचताहुआ शंकरजी के समान देखा, फिर हम ने यमराज के दण्डकी समान और इन्द्रके यज्ञ की समान शब्दापमान नाशकीकर ने वाली रौद्रीरूप महाभारी गदाकां देखा वह गदा केशोसे युक्त कपाल और रुधिरसे ऐसी भरी हुईथी जैसेकि क्रोध युक्त शिवजी के हाथमें पशुओं का मारने वाला पिनाक धनुष होताहै, और जैसे गाय चराने वाला अपनी यष्टी से पशुओं के समूहों को हंटातहै इसीप्रकार भीमसेन ने भी अपनी गदासे हाथियोंको हटाया, इसके पीछे गदा औरचाणोंमें घायल बहूहाथी अपनेरथोंको दबाते तोहैंतेहुए इधरउधर को भागे, जैसे कि वायु वादलों को इधर उधर तिर्रिर्विरकरदेता है उसीप्रकार युद्ध से भिन्न २ हाथियोंको करके भीमसेन युद्ध भूमि में ऐसं निश्चत हुआ जैसे कि अग्नि शान भूमि में रुद्रजी नियतहोते हैं ६६ ॥

protect Indra. Reeking in blood with the blood-stained mace, Bhim looked as ferocious as the god of Death. We saw Bhimsen the bearer of mace dancing in all directions like Shankar. Then like the staff of Death or the vajra of Indra, we saw his mace dealing hard sounding blows with blood and hair of heads on it like the bow of Shiva the destroyer of beasts. Bhimsen beat back the elephants with his club, as a herdsman drives cattle with his staff. Then wounded by the mace and arrows, the elephants rushed hither and thither, crushing the chariots on their own side. Dispensing the elephants as the wind disperses the clouds, Bhimsen stood in great glory like Rudra standing on the cremation ground "63.

सिञ्चय उवाच । हतेतस्मिन् गजानीके पुत्रोदुर्ध्वघ्नस्तथा । भीमसेनपत्नेत्येवं
 सर्वं सैन्यान्पञ्चोदयत् ॥ १ ॥ ततः सर्वाण्यनीकानि तत्रपुत्रस्य शं सनात् । भव्यद्रव
 भीमसेननदत्तं भैरवान् रवान् ॥ २ ॥ संवलीषमप्येतं देवैरपि सुदुःसहम् । मापतं
 सुदुःपातं समुद्रमिव पर्वणि ॥ ३ ॥ रथनागाश्वफलिलं शंखदुन्दुभिनादितम् ।
 अन्तरथपादाते नैर्द्रातिमितहृदम् ॥ ४ ॥ तं भीमसेनः समरे महोदधिं मिवापत्तम् ।
 सेनासागरं मक्षोर्भ्यं वेलेव समचारयत् ॥ ५ ॥ तदाश्चर्यं मपद्याम पांडवस्य महामनः ।
 भीमसेनस्य समरे राजन् कर्मातिं गान्पम् ॥ ६ ॥ उदीर्णान्पादिधान् मघोन स भ्रा-
 तृस्य कुत्रान् । लसन्नं भीमसेनो मद्यालमथ रयत् ॥ ७ ॥ ससंघायं वलीषारतान्
 नदद्या रथिनान् । अतिष्ठत्समुने भीमो गिर्मिथं विवाचलः ॥ ८ ॥ तस्मिन्सुमुले घो-
 काले परमं दारणे । प्रातरश्चैव पुत्राश्च धृष्टद्युम्नश्च पापिनः ॥ ९ ॥ द्रौपदेः शर्मिष्ठीसुभ

अध्याय ६३ ॥

संजय बोले कि उम हाथियों की सेना के मारे जाने पर आपके पुत्र
 दुर्योधन ने सब सेनाको चैतन्यकिया और आज्ञा दी कि भीमसेन को भारो-
 तदन तर आपके पुत्रकी आज्ञा से सब सेना महाभयकारी शब्दोंको करती हुई
 भीमसेन के सम्मुख दौड़ी, फिर उम अत्यन्त देवताओं सेभी कठिनता से सारे
 योग्य समुद्रके समान अत्यन्त दुस्तर रथ हाथी घोड़ों समेत कवचधारी शंखभोरियों से
 शब्दायमान असंख्य रथ हाथी पद ती जगों से भी हुई सब ओरसे धूल उड़ाती हुई
 भारी समुद्र के समान अव्य कुल सेनाको भीमसेन ने रोकदिया । ५ । हे राजा हम
 ने उक्त महाशत्रु भीमसेन के उस अद्भुत कर्मको देखा, अर्थात् भीमसेन ने बड़ी
 निर्भयता से घोड़े हाथी और रथों समेत उन सब राजाओं को अपनी गदा सेही
 हटादिया, वह पराक्रमियों में श्रेष्ठ भीमसेन तुमुल युद्धमें उन सेनाओं के समूहोंको
 गदा से हट कर मरुपर्वतके समान निश्चलहोकर नियत हुआ, उसघोर और महा
 भयानक युद्धमें भय के उत्पन्न होनेपर भाई बेटे धृष्टद्युम्न द्रौपदीके पाँचपुत्र और

CHAPTER LXIII

"When that army of elephants was destroyed," continued San-
 jaya, "your son, Duryodhan, addressing all the army, ordered them
 to kill Bhima. And all the army with a tremendous noise rushed
 against Bhimsen. Then that warrior, unlearned even by gods,
 checked that army roaring like the ocean, consisting of numerous
 chariots, elephants and foot soldiers and raising a storm of dust. 5. We
 saw then the wonderful prowess of Bhimsen who fearlessly defeated
 all those princes with their armies of horses, elephants and chariots,
 with his mace, and himself remained immovable like mount Meru.
 During that dreadful fighting, in spite of the presence of great danger
 Bhimsen was not deserted by his brothers, sons, Dhishhtadyumna

शिवं चैव चापगजितः । मंत्राजहन भीमसेनं मये जते महाबलम् ॥ १० ॥ ततः शूक्या
 धूम्रां शूबीं प्रगृह्य महतीं गदाम् । अथावत्ताव कान् घोघान् दण्डयामि रियातकः ॥ ११ ॥
 कोथयन् रथवृन्दानि घाजिवृन्दानि क्षामिभूः । कथंयन् रथवृन्दानि घाहृष्येतेनगंडवः ॥ १२ ॥
 विनिघ्नन् हयचरस्त्रैस्त्वये युगानि काल घट्टिभूः । केशवेतेतसंवर्यन् यथात्वं नि पाण्डवः
 ॥ १३ ॥ बलैः नि सममदांशु महयस्य नीय कुञ्जरः । मृद्मन् रथेषु यो धिनो गजेषु यो गज
 यो धिनः ॥ १४ ॥ सादिनश्चाथ पृष्ट्यो भूमौ क्षाति पदातिनः । गर्दयाद्यघमासधान्
 घातौ च्छा निघाजसं ॥ १५ ॥ भीमसेने महापद्भुस्तथपुत्रस्य धै पले । साभिगज्जाप
 सामांसेः प्रक्षिप्याह धिरेण च ॥ १६ ॥ अहदयत महारोद्रः । गदानागाश्च पावनी । तत्र तत्र
 हतैश्चापि मनुष्याणां वः क्षिपिः ॥ १७ ॥ रणांगं समभवन् मृतपोरावाप्त संक्षिप्तम् ।

मृत्यु और महा विजयी शिखण्डी ने उस महाबली भीमसेन को त्याग नहीं किया
 ॥ १० ॥ इसके पीछे दंडधारी मृत्यु के समान उस लोहेकी गदाको लेकर महादली
 भीमसेन भीष्मके शूबीरों पर दौड़ा, और रथ घोड़े हाथियों के समूहोंको मारता
 हुआ ऐसा घुमा जैसे युगके अन्त में अर्थात् प्रलय काल में अग्नि दौड़ती है, जैसे
 कि प्रलय के समय में काल सबको मारता है उसी प्रकार युद्धभूमि में कालरूप
 भीमसेन शूबीरोंको मारता हुआ अपनी जंघाओं के वेग से रथके जालोंको खिंचता
 शीघ्रही सेनाको ऐसे मर्दन करने लगा जैसेकि हथी नलों के जंगलोंको मर्दन करता
 है रथोंको रथोंसे वा युद्ध करनेवाले हाथियों के सवारोंको हाथियोंसे मर्दन करता
 हुआ सवारों को घोड़ों की पीठसे पदातियों को पृथ्वीपर मर्दन करता हुआ घूमने
 लगा, फिर उस महाबाहु भीमसेनने अपने पुत्रकी सेनामें जाकर गदा से सबको
 ऐसा मारा जैसे किवायु देवता अपने बलसे वृत्तों को गिराता है ॥ १५ ॥ फिर वह
 भीमसेनी कराल भयंकर गदा मांस रुधिर से भरी हुई हाथीघेड़ोंकी मारनेवाली
 रौंद्री रूप से दृष्टि पड़ी और स्थानर में मरे हुए हाथी घोड़े और सवारोंसे वा युद्ध
 भूमि संसारभूमि के समान होगई, चारों ओर से वर्णाश्रम रहित पशुओं के समान

the five sons of Draupadi, Abhimanyu and Shikhandi the last of
 conquerers. 10. Then Bhimsen, with his mace like the staff of Death
 rushed upon your army, and destroying the horses, chariots and ele-
 phants, he ran like Agni at the end of a yug. As Kal destroys every-
 thing at the end of the yug, so did Bhim destroy your armies, killing
 the warriors and dragging the nets of chariots along with his thighs. He
 roamed crushing chariots with chariots, killing elephant riders, horse-
 men and foot soldiers as an elephant crushes the forest of reeds. Then
 Bhimsen of long arms, entering the lists of your sons destroyed the
 warriors with his mace as the wind destroys the trees of the forest. 15.
 Bhimsen's mace of dreadful form, filled in flesh and blood of elephants
 and horses, looked like the weapon of Rudra. The field of battle
 was strewn with the dead bodies of elephants, horses and the riders.

पिनाकमिवर्द्धस्य कुक्षस्याभिघ्नतः पशून् ॥ १८ ॥ यमवेडोपमांशुं प्रां भिदाशानिसर्प
 स्वनाम् । दृढशुभ्राम् सेनस्य रौद्रीं विशसर्नो गदाम् ॥ १९ ॥ आधिप्यतागदा
 तस्य कौंतेयस्य महात्मनः । यमौरूपं महाघोरे कौलपिष युगलये ॥ २० ॥ तन्मर्षा
 महतीसेनां प्रापयंत पुनः पुनः । दृष्ट्वा मृत्युमिवापान्तं सर्वं विमनसो भवन् ॥ २१ ॥
 यतो यतः प्रेक्षते मगदा मुद्यम्य पाण्डव । तेन तेन स्मर्योपैते सर्वं सन्धानिमागत ॥ २२ ॥
 प्रदारयंत स्वभ्यानि घलेनामित विक्रमम् । प्रसमानमनीकानि ध्याद्विंताभ्यामिवांतकम्
 ॥ २३ ॥ तन्तथा ममिकर्माणं प्रगृहीतमहागदम् । दृष्ट्वा वृकोदर भीमः सहस्रेषु
 समभ्यधात् ॥ २४ ॥ महतारथघोषेण रथेनादित्यवर्चसा । छाद्वन् शरवर्षेणपञ्च
 न्यद्वदृष्टिमान् ॥ २५ ॥ तमापान्त तथा दृष्ट्वा ध्यास्तान्ममिंवांतैर्कम् । भीमभ्रामो

मनुष्यों को मारने वाले क्रोधरूप रुद्रजी के पिनाक धनुष के समान यमदण्ड के
 सदृश भयानक और इंद्र वज्र के समान प्रकाशित नाश करने वाली रौद्री भीम-
 सेन की गदा को हमने देखा, गदाको मारते हुए उस महात्मा भीमसेन का रूप
 महा प्रकाशित और घोररूप ऐसा होगया जैसे कि संसार के नाश में महाकालका
 रूप होता है । २० । इसरीति से उस बड़ी सेना को बारम्बार भगाते हुए मृत्युके
 समान भीमसेन को आता हुआ देखकर सबलोग चित्त से महा व्याकुल हुए हे
 भरतवंशी उस भीमसेनने गदा को उठाकर जिधर २ को देखा उधर उधरकी सेना
 व्याकुल होकर छिन्न भिन्न होगई जैसे कि सेनाओंको छिन्न भिन्न करते हुए
 सेना समूहोंसे भ्रजेण अत्यन्त भक्षण करनेवाली मृत्यु के समान सेनाओंको निगु-
 ते भयकारी कर्म करते बड़ी गदा के उठाने वाले उस भीमसेन को देखकर सूर्य के
 समान प्रकाशमान बादल से शब्दायमान रथपर सवार होकर भीष्मजी बाणोंकी
 वर्षा करते हुए अरुस्मात् उसके सम्मुख आये । २५ । इस रीति से उस मृत्युरूप
 भीष्मजीको आता देखकर महाबाहु भीमसेन बड़ा क्रोधरूप अग्नि के समान होकर

Killing the people of all orders like beasts, the destroyer of men, like
 the bow of Shiva, the staff of Yama or the vajra of Indra, Bhimsen's
 mace was seen shining dreadfully. Bhim's form, when he was using
 his mace, looked bright and dreadful like Death himself at the time
 of the destruction of the world. 20. Thus setting that large army
 again and again to flight, Bhimsen was seen there frightening the look-
 ers on. The warriors were scattered in disorder, in whatever direction
 he looked with his mace raised on high. Dispersing the armies, indefa-
 tigable by large numbers, like Death devouring all, doing dreadful
 deeds of valour, wielder of the huge mace, Bhimsen was seen and
 encountered by Bhishma, showering arrows from his chariot bright like
 the sun and rolling like thunder, 25. At the sight of Bhishma
 coming like Death, Bhim was enraged like fire and rushed at once to

महाबाहुः प्रभुर्दीपादमर्षितः ॥ २६ ॥ तस्मिन् क्षणेसात्यकिः सत्यसंघः त्रिनिशयी
 रोम्यपतत्पितागहम् । निघ्नप्रगिघ्नान् घनुयाद्वेदेन संकम्पयंस्तव पुत्रस्यसैन्यम् ॥ २७ ॥
 तेषां तं मञ्जैः जतवक्राशैः शरान् क्षिपन्तं निशितान् सुपुंघान् । नाशकनुवनं घातितुं
 तत्रानां सर्वे गणाभारत येत्वर्दीयाः ॥ २८ ॥ आधिपत्यदेनं दशभिः पृथक् रत्नपुत्रो
 राज्ञोः सौतदानीम् । शर्मन्नुर्मिं प्रतिविद्धघतञ्च नताशितेरम्यपतद्घनेन ॥ २९ ॥
 अन्वागतम् वृष्णिवरम् निश्रम्यतम् शत्रुमध्ये परिचर्तमानम् । प्रहावयन्तं कुरुपुंगवांश्च
 पुनः पुनश्चमणवन्तमाजौ ॥ ३० ॥ योवास्त्वर्दीयाः शरवर्षैस्त्वर्षेन् तेद्यायथाभूयसं बुधैः ।
 तव पितृमृषारथितुम् नरोकुर्मध्यम् दिनेसूर्यमिवातपंतम् ॥ ३१ ॥ न तत्र कथिन्न धिपश्य
 आसीदते राजन्मोदत्तस्य पुत्रात् । सर्वैसमादाय घनुर्महात्मा भूथिवामातसामैरक्षिः

उनके सम्मुख गया, उस समय महावीर सत्यसंकल्प सात्यकी बड़े दृढ़ धनुषसे शत्रुओं
 को मारता हुआ। आपके पुत्रकी सेनाको कंपाता पितामह के सम्मुख जाभिड़ा, हे
 भरतवंशी आपके सब मनुष्य उस चाँदी के समान श्वेतगोड़ों के रथपर चढ़े हुए
 सुन्दर पंखवाले बाणों के प्रहार करने वाले सात्यकी के रोकने को समर्थ नहीं हुए,
 तब अलंजुष नाम राक्षस ने प्रपक्त नाम दश बाणों से उसको घायल किया फिर
 सात्यकी भी उसको चार बाणों से घायल करके रथके द्वारा सम्मुख दौड़ा, फिर
 दृष्टी वीर सात्यकी को समीप आया हुआ और शत्रुओं में घूमने वाला उत्तम
 कौरवों का नाशकर्ता युद्ध में बारम्बार गर्जता हुआ देखकर, आपके शूरीर लोग
 उस पर ऐसी बाणों की वर्षा करने लगे जैसे कि बादल जलों के वेगसे पहाड़
 पर वर्षा करते हैं, मध्याह्न समय के सूर्य के समान तपाने वाले पितामह भी
 उस सात्यकी के रोकने को समर्थ नहीं हुए, हे राजा वहाँ सोमदत्त के लड़के
 के सिवाय कोईभी स्थिर चित्त नहीं हुआ, हे भरतर्षभ वह सोमदत्त का पुत्र

meet him. Then that bravest of warriors of true vons, Satyaki
 came on destroying and shaking the armies of your sons by his hard
 bow and encountered Bhishm the grandfather. All your people, O
 descendant of Bharat, were unable to withstand Satyaki who rode on
 his chariot drawn by silver white horses, discharging arrows of
 beautiful plumage. Then the rakshas named Alamvush wounded
 him with ten arrows. Satyaki replied him with four arrow wounds
 and rushed on to meet him. Seeing Satyaki the warrior of the
 Vrishni race, roaming among the enemies and destroying the Kaura-
 vas with continuous roars, your warriors covered him with showers
 of arrows as clouds do a mountain. Even the grandfather, glorious
 like the mid-day sun could not withstand Satyaki. None except the
 son of Somdatta could remain firm there. Bhurishrava the son of

॥ ३२ ॥ दृष्ट्वाएवान् स्वान्मघपनीयमानान् । प्रत्युद्ययौ सात्यकिं योद्धन्निच्छन् ॥ ३३ ॥
इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सात्यकि भूरिश्रवाःसमागमे
त्रिपष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

सन्प्रय उधाच । ततो भूरिश्रवा राजन् सात्यकिं नवाभिः शरैः । प्राविश्यद्भृश
संक्रुद्धस्तोत्रै रियमहाद्विषम् ॥ १ ॥ शीघ्रं सात्यकिवैव शरैः सन्नतपवर्षाभिः ।
अघात्यदमे धात्मा सर्वं लोकस्यपश्यतः ॥ २ ॥ ततो दुर्योधनो राजासोदर्यैः परिवारितः ।
सोमदार्ढ्ये णेषत् । समंतात्सुमहौजसः ॥ ३ ॥ तत्रैवपाण्डवाः सर्वे सात्यकिं रभंसरणे ।
परिवार्यस्थिताः । सख्ये समंतात्सुमहौजसः ॥ भीमसेनस्तु संक्रुद्धो गदा मुद्यम्यभारत ।
दुर्योधनमुखान् सर्वान् पुत्रान्तेयव्याचयत् ॥ ५ ॥ रघरनेकसाहसै क्रोधा मयलम्बितः ।
नन्दकस्तपुत्रस्तु भीमसेनं महाबलम् ॥ ६ ॥ विद्याधविशिखः पद्भिः कंकणै रशिलाशितैः ।
दुर्योधनथ समरे भीमसेनं महारथम् ॥ ७ ॥ आजघानो

भूरिश्रवा अपने रथी लोगों को दूरहटा हुआ देखकर महा भयानक वेग युक्त धनुष को हाथ में लिये युद्ध की इच्छासे सात्यकी के सम्मुख गया ३३ ॥

अध्याय ६४ ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे अत्यन्त कोपयुक्त भूरिश्रवाने नौ बाणों से सात्यकी को इस रीतिसे घायल किया जैसेकी अंकुश से बड़े हाथी को घायल करते हैं, फिर उस महा साहसी सात्यकी नेभा सत्रके देखते हुए गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से भूरिश्रवाको रोका, फिर अपने निज भाइयों समेत दुर्योधन ने युद्धमें उपाय करने वाले भूरिश्रवाकी चारों ओरसे रक्षाकी इसी प्रकारसे महा पराक्रमी सब पाण्डवसंग भी युद्धभूमि में चारोंओर से सात्यका को रक्षितकर के नियत हुए हे भरतवंशि भीमसेन को गदाचठाये कोप में देखकर आपके सब क्रोधी और अस्तनोपी दुर्योधनादिक पुत्रोंने बहुत से अतस्ख्य रथों को साथ लेकर उत्तकी चारों ओरसे रोका फिर आपके पुत्रनन्दकने उत्तमहावली भीमसेनको शिलापर तीक्ष्ण क्रिये हुए तीव्र और तेजनोक वाले बाणोंसे घायल किया इसके पीछे क्रोध

Somdatta, seeing his charioteers give way advanced to meet Satyaki with his bow of dreadful velocity.

CHAPTER LXIV

Sanjaya continued: "Then, O king, Bhurishrava in great rage, wounded Satyaki with nine arrows like an elephant with goods. Satyaki too, of great prowess, checked Bhurishrava with his arrows of hidden knots. Du yodhan and his brothers protected Bhurishrava. Seeing Bhim-en with his mace upraised in anger, your enraged and dissatisfied sons, Duryodhan and others, with numerous chariots, checked him from all sides. Then your son Nundak wounded Bhim-

रसिकुक्षो मार्गैर्नचमिः शितः । ततो भीमो महाबाहुः स्वर्धे समहायलः । ८ । बाह
 रोह रथश्रेष्ठं विशोकं श्रेदमब्रवीत् । एते महारथाः शूरा धार्तराजः समागताः ॥ ९ ॥
 मामेवभूशसंकुदा हंतुमशुचतापुधि । मनोरथ हुमोस्मार्क चितितो यदुषोर्षिकः ॥ १० ॥
 सफलः स्त चाधेह योह पश्यामि सोदरान् । यथाशोकसमुच्छ्रिता रेणवोरथनेमिभिः
 ॥ ११ ॥ प्रयाङ्गवत्यन्तरिक्षं हि शरशुद्धिर्दिगन्तरे । तत्र तिष्ठति सन्नद्धः श्वघ्न राजासुयो
 धनः ॥ १२ ॥ भ्रातरथास्यसन्नद्धः कृत्पुनामशोक्तदाः । एतानघदनिष्यामि पश्यतस्तेन
 संशय ॥ १३ ॥ तस्मान्ममाश्वान् संप्रामे यत्त संयच्छतारेषु । यद्यनुवत्वा ततः पार्थ
 स्रगपुत्रं विशास्यते ॥ १४ ॥ विव्याघ निशितेतीक्ष्णैः शरैः वनकभूषणैः । नन्दकश्च
 त्रिभिर्बाणै रभ्यविध्यत्तनातरे ॥ १५ ॥ तंतु दुर्योधत पृथया विध्वाभीमं महाघटम् ।
 त्रिभिरन्यैः सुनिशिनैर्विशोकं प्रत्य विध्यत ॥ १६ ॥ भीमस्यन्न रणे राजन् घनुश्चिच्छेद

युक्त दुर्योधनने उस बड़ेयुद्धमें बड़ेतीक्ष्ण बाणोंसे छातीपर घायल किया इसकेपीछे
 महाबली महाबाहु भीमसेन बड़े उत्तम रथपर सवार होकर विशोकसे बोला कि
 यह धृतराष्ट्र के पुत्र बड़े शूर और महाबली अत्यन्त क्रोधित युद्धमें मेरे मारने को
 तैयार हुए हैं इनको निस्सन्देह मैं तेरेदेखतेही में मारूंगा । १० । इस हेतु से हे
 सारथी तू इसयुद्धमें बड़ी सावधानी से मेरेघोड़ों को सम्हाल ऐसा कहकर हे राजा
 भीमसेन ने तेरे पुत्रको बड़े तीक्ष्ण सुनहरी भूपित दश बाणों से अत्यन्त घायल
 किया और नन्दकको तीन बाणों से स्तनों के मध्य में विदीर्ण किया फिर दुर्योधन
 ने सातबाणों से उस महाबली भीमसेन को घायल किया और अत्यन्त तीक्ष्ण
 तीन बाणों से विशोक सारथी को घायल किया फिर युद्धभूमि में हँसतेहुए दुर्यो-
 धन ने तीन महा पने बाणोंसे भीमसेन के उस धनुषको मूठ के स्थानपर से काट
 डाला । १४ । हे महाराज तब भीमसेन ने आपके धनुषधारी पुत्र के विशिखों से
 महापीड़ामान अपने विशोक सारथी को देखकर, असहनशील और महा क्रोधित
 होकर आपके पुत्रके मारने के लिये दिव्य धनुषको धारणाकिया और क्रोधमें भर

sen with sharp and piercing arrows. Duryodhan in his rage wound
 ed Bhimsen on the breast. Bhim, mounted on his goodly chariot,
 said to Bishok: "These have sons of Dhritrashtta are ready to
 kill me in battle, but you will see how I make their death secure.
 10 You should therefore keep my horses steady." Having said
 this Bhimsen wounded your son with ten golden arrows. He wound-
 ed Nandak with three arrows in the middle of the breast. Du-
 ryodhan wounded that brave warrior, with seven and Bishok the
 driver with three arrows, and with a smile, he cut down the bow of
 Bhim from the place where he was grasping it 14 Bhimsen severely
 wounded by the arrows of your son and seeing the condition his
 coachman was in, took up his divine bow to kill Duryodhan. He put

भासुरम् । मुष्टि देवे मृशं तीक्ष्णै र्त्रिभिर्महैर्हसन्निय ॥ १७ ॥ समरे प्रेक्ष्ययतार विशो
कन्तु वृकोदर । पीडित विशिखैस्तीक्ष्णैस्तथ पुत्रेण धन्यिना ॥ १८ ॥ अमृत्यमाग सर
थो धनुर्विष्य परा मशत् । पुत्रस्य ते महाराज वधार्थं भरतयेभ ॥ १९ ॥ समाक्षयसुस
कुक्ष क्षुप्र लोमवाहिनम् । तेन चिच्छेद् नृपतेर्भीमः । कार्मुक मुत्तमम् ॥ २० ॥ सोपधि
प्यधनुश्छिन्न एव पुत्रस्ते क्रोधमूर्छित । अन्यस्कार्मुक मादत्त सत्वर वेगवत्तरम् ॥ २१ ॥
सदधे विशिखघोर कालमृत्युसमप्रभम् । तेनाजघानसकुक्षो भीमसेनस्तनातरे ॥ २२ ॥
सगाढ विद्धो व्यथित स्य दनोरस्थ विशत् । सनियण्णोरथो पश्ये मूर्च्छामभिजगा
मह ॥ २३ ॥ त इष्ट्वाव्यथिन भीम मा मन्वु पुरोगमा । नामृष्यन्तमहेष्वाला पाडवा
ना महारथा ॥ २४ ॥ ततस्तत्तमुलावृ शस्त्राणा तिमतेजसाम् । पातवामासुरस्यत्राः
पुत्रस्य तथ मूर्धनि ॥ २५ ॥ प्रतिलम्ब्य तं सत्त्वा भीमसेनो महाबल । दुर्योधन त्रिभि
र्विधा एनर्विध्यापचनि ॥ २६ ॥ शल्यश्च पञ्चविंशत्या शरैर्विष्याथ पाडव । शक्य
पुत्रैर्महेष्वासः सविद्धो व्यपपाद्गणात् ॥ २७ ॥ प्रत्यद्युस्ततो भीम तवपुत्राश्चतुर्दश ।

कर बाणोंके काटनेवाले क्षुरप बाणको धनुषमें चढ़ाकर उसमें दुर्योधनके उत्तम
धनुषको पीछेकी ओर को काटा, फिर महाक्रोध में भरे हुए तुम्हारे पुत्रने उस कटे हुए
धनुषको डाल कर शीघ्रही वड़े वेगवान् दूसरे धनुषको लेके काल मृत्युके समान प्र-
काशित वड़े भयानक विशिख बाणको चढ़ाकर वड़े क्रोध से भीमसेन के स्तनों के
मध्यस्थान को घायल किया, फिर वह महा घायल और पीड़मान् रथके बैठने के
स्थान में बैठकर महा अचेत होगया, । २० । फिर पांडवों के उन महाराथि-
योंने जिनका अग्रगामी अभिमन्यु था उस पीड़ामान भीमसेनको देखकर महा क्रोधित
होकर आप के बेटेके मस्तकपर महाउग्र तीक्ष्ण बाणोंकी तुमल वर्षा की इसके पीछे
महाबली भीमसेन ने सचेत होकर दुर्योधन को तीन बाणों से घायल कर के
फिर पांच बाणों से व्यथित किया और पन्चीम बाणों से शल्यको घायल किया
इन बाणों से घायल होकर वह महाधनुषधारी शल्य युद्ध से हटगया । २४ इसके पीछे
आपके यह चौदह १४ पुत्र इस धीरके सम्मुख गये सेनापानि, सुपेण, जलसन्ध, मुलो-

very sharp arrows to his bow and cut down his bow from the back. Then your son in great rage threw down the bow which was cut asunder and taking up another strong one, he put up a dreadful arrow like Death's stroke and wounded Bhimsen in the breast which caused him to fall back in his place 20 The great warriors of the Pandavas, headed by Abhimanyu, finding Bhimsen in a swoon, showered a heavy shower of arrows on the head of your son. Then the great warrior Bhim came to himself and wounded Duryodhan with eight arrows. He wounded Shalya with twentyfive arrows and made him turn his back much wounded 24 Then fourteen of your sons, namely Senapati, Sushen, Jalsandh, Sulochan, Ugra, Bhmrath, Bhim,

सेनापतिः सुपेणव जलसन्धः सुलोचनः ॥ २८ ॥ उग्रो भीमरथो भीमो वीरवाहु रथो
 लुपः । दुर्मुखो दुष्प्रधर्षश्च विषित्सुर्धिकटः समः ॥ २९ ॥ दिशुजगत्तो बहून् वाणान् क्रोध
 संरक्त लोचनाः । भीमसेन मभिद्रुष्य विष्यद्युः सहिता भृशम् ॥ ३० ॥ पुत्रोत्तुतवसप्र
 द्य भीमसेनो महाबलः । रुद्रिकणी विलिहन्वीरः पशुमध्ये यथा वृकः ॥ ३१ ॥ अग्नि
 पत्थमहाबाहुर्गुरुमानिव धेगितः । सेनापतेः पुत्रेण शिरधिच्छेद् पांडवः ॥ ३२ ॥ सं
 प्रक्ष्यच्छद्व्यात्मा त्रिमूर्धाणैर्महाभुजः । जलसन्ध विनिर्मिय सौनयद्य मसादनम् ॥ ३३ ॥
 सुरेणवततो हत्वा प्रेषयामास मृतये । उग्रस्य सशिरःश्यागं शिरधन्द्रोपमंभुवि ॥ ३४ ॥
 प तयामास भलेन कृण्वल्लाश्यां विभूतिनम् । वीरवाहुवसतत्या साश्वकेभुं ससारथिम्
 ॥ ३५ ॥ निनाय समरेवीरः परलोकाय पांडवः । भीमभीमरथौ चोगौ भीमसेनो हस
 त्रिव ॥ ३६ ॥ पुत्रौ ते दुर्मदौ गजन् ननयद्यमसादनम् । ततः सुलोचन भीमः पुत्रेणम
 हामृधे ॥ ३७ ॥ मिषतां सर्वं सेन्याना मनयद्यमसादनम् । पुत्रोत्तुतवतं दृष्ट्वा भीमसेन

वन, उग्र, भीमरथ, भीम, वीरवाहु, अलोलुप, दुर्मुख, दुष्प्रधर्ष, विषित्सु, विकट,
 सम, इन सब क्रोधमें भरेहुए वाणोंके वरमाने वालोंने, एक साथही भीमसेन के
 सम्मुख जाकर अत्यन्त घायल किया फिर महाबली महाबाहु भीमसेन ने आपके
 पुत्रों को अच्छी रीतिसे देखकर भेड़िये के समान हाँठोंको चाटकर गरुड़ के समान
 वेग से सम्मुख दौड़कर अपने जुरम वाणसे सेनापतिके शिर को काटा फिर उस
 महाबाहु मसन्न विच ने अत्यन्त आनन्दित होकर तीन वाणोंसे जलसन्ध को
 विदीर्ण करके यमलोकको पठाया । ३० । फिर सुपेणको मार कर मृत्यु के पास
 पहुँचाया, फिर एक भल्लसे उग्रके मुकुट समेत चन्द्रमा के समान कुंडलों से शोभित
 शिर को पृथ्वीपर गिराया, फिर सत्तर वाणोंसे घोड़े ध्वजा और सारथी समेत
 वीरवाहु को मारा, फिर हँसते हुए भीमसेनने भीम और भीमरथ दोनों वेगवान्
 भाइयोंको भी यमपुरको पठाया, इससे अनन्तर सब सेनाके देखते हुए सुलोचन

Birvahu, Alolup, Durmukh, Dushpradhatsh, Vivitsu, Vikat and Sam
 faced Bhimsen and all those enraged warriors showered their arrows
 at once on him with effective aim. Then Bhimsen of long arms and
 great strength, looking attentively at your sons and licking his lips
 like a wolf, rushed upon them in great force. He beheaded Senapati
 with his sharp arrow and then with a cheerful mind wounded jal-
 sandh with three sharp arrows and sent him to the region of Yam. 30.
 Having killed Sushen he cut down with a single dart the head of
 Ugra decked with diadem and earrings. With seventy arrows he
 killed Birvahu and cut down his tanner with the horses and the
 driver. Then with a smile Bhimsen sent the two brothers Bhim and
 Bhimrath to the region of Yam. Then within sight of the whole
 army, he killed Sulochan with one sharp arrow. Then the rest of

पराक्रमम् ॥ ३८ ॥ शेषा येन्ये भवेत्तत्र हे भीमस्य भयार्दिताः । विप्रद्रुतादिशोराजन्
 वध्यमानो महात्मना ॥ ३९ ॥ ततोऽनघीच्छान्तनय सर्वा नेय महारथान् । एवभीमी
 र्णो वृद्धो धार्तराष्ट्रमहारथान् ॥ ४० ॥ यथाप्राप्तवान् यथा ज्येष्ठान् यय दूरांश्चसगतान्
 निपात यत्पुत्र धन्वा त प्रमृष्टणीत माचिरम् ॥ ४१ ॥ एवमुक्त्वा तत सर्वे धार्तराष्ट्रस्य
 सैनिका । अभ्यद्रवन्त संकुब्धा भीमसेन महाबलम् ॥ ४२ ॥ भगदत्त प्रभिन्नेन कुम्भ
 रेण विशाम्पते । अभ्ययात्सप्तसा तत्र यंत्रभीमो व्यथस्थितः ॥ ४३ ॥ आपतभेष चरणे
 भीमसेन शिखीमुखे । अट्टदय समरे चके जीमूतद्वयभास्करम् ॥ ४४ ॥ अभिमनुमुखा
 स्तत्तु नामृष्यस्तमहारथा । भीमस्यच्छान्दान सख्ये स्ववाहुयलमाधिता ॥ ४५ ॥ तपनं
 शरघर्षेण समं तात्पर्यं चात्पन् । गज च शर वृष्ट्यातु विभिदुस्ते संमै रत ॥ ४६ ॥ स

को क्षुरप्रपाण मे मारा, हे राजा तत्र यहाँ जो आपके शेषत्रचे हुए पुत्र थे वह
 भीमसेन के बलको देखकर उसमे घायल और भयभीत होकर युद्ध से भागे । ३९ ।
 इसके पीछे भीमजी सब महारथियों से बोले, कि यह युद्धमें क्रोधरूप भयानक
 धनुषधारी भीमसेन जो धृतराष्ट्र के महा शूरवीर बुद्धिमान पुत्रोंको गिराता और
 मारता है उसको पकड़ो, इसके पीछे दुर्योधन की सेनाके सप्लोग इस आज्ञाको
 पाकर अत्यन्त क्रोध में भरकर उस महाबली भीमसेन के सम्मुख दौड़े, हे राजा
 राजाभगदत्त मन्वाले हाथी की सवारी पर अकस्मात् वहाँ आट्टा जहाँ भीमसेन
 नियतथा । ४० । और युद्धभूमि में गिरतेही शिपाके घिमेहुए घाणों से भीमसेनको
 हाँसे ऐसा गुप्त करादिया जैसे कि घादल मूर्खको करना है यहाँ अपने मुजबद्धमें
 नियत और रक्षित अभिमनु आदि महारथी भीमसेनके - को न सारके।

शस्त्रवृष्ट्याभिहतः सेमसेनैस्तेर्महारथैः । प्रस्योतिव गजो राजन् नाना रिग्मि सुतेजनैः ॥ ४७ ॥ संजात रुधिरोपीडैः प्रेक्षणीयो भवद्गणे । गीमस्तिनिरिवाकंथ सम्प्लुतो जल
वो मंहान् ॥ ४८ ॥ सचोदितो मदवाही भगदत्तेन वारणः । अभ्यधावन तान् सर्वान्
कालोत्सृष्ट इवांतकः ॥ ४९ ॥ द्विगुणं जय मास्थाय कम्प्यंधरवैर्महीम् । तद्यतसुमह
द्रूप दृष्ट्वा सर्वे महारथाः ॥ ५० ॥ असह्यं मन्यमानाश्च वीतिर्प्रमनसो भवत् । ततस्तु नृप
निः क्रुद्धो भीमसेनस्तनोतरे ॥ ५१ ॥ आजघीर्षत महाराज शरैः गतं पर्वजा । सोति धि-
खो महेश्वासंस्तेनरात्तामहारथः ॥ ५२ ॥ मूर्च्छयामि परितारमा ध्वजवाष्ट्रं समाधयत् ।
तांस्तुभीतींस्समालक्ष्य भीमसेनश्च मूर्च्छितम् ॥ ५३ ॥ ननाद बलवक्राद् भगदत्त प्रता
पवान् । मतोघटोत्कचो राजर्षे प्रेक्ष्यभीमं तथा गतम् ॥ ५४ ॥ सहृद्धो राजसो घोररत
त्रैवांतरेधीयते । सक्त्यादाकृणां मायीं भौकृणां भय घर्षिनीम् ॥ ५५ ॥ अदृश्यत निभे

सौत्र क्रौणो से घायल रुधिर के धोतों से युद्धमें ऐसा देखने के योग्यहुआ जैसे
कि सूर्यकी किरणों से व्याप्त बड़ावादल होताहै । ४४। फिर वह मद्गन्धत्त कालरूप
मृत्यु के समान राजा भगदत्तका पैला हुआ हाथी अत्यन्ततीव्र होकर पृथ्वी को
अपने चरणों से कँपाता हुआ उन सब वीरों के सम्मुख दौड़ा उसके उस बड़े रूपको
देखकर वह सब महारथी, उसको सहनेके योग्य न समझकर भयभीत हुए हेनरोचम
फिर उसके अनन्तर राजा भगदत्तेन महा क्रोधित होकर गुप्तग्रन्थी के बाणों से भी-
मसेनके वक्षस्थलको व्यथित किया उस राजा से अत्यन्त घायल किया हुआ वह
बड़ा घनुपधारी, महारथी मूर्च्छा युक्तहोकर ध्वजकी यष्टी के सहारेसे नियत हुआ फिर
उनको भयभीत और भीमसेनको मूर्च्छा युक्त देखकर, वह प्रतापी भगदत्त बड़े
शब्दको करता हुआ गर्जा । ५० । हे राजा इसके पीछे घटोत्कच उस
मूर्च्छवान् भीमसेन को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसीस्थान में गुप्त होगया
और फिर घोररूप महाभयकारी मायाकी रचके घोरहीरूप में नियत होकर के

wounded by the sharp and bright arrows of the various warriors, dropped streams of blood and looked like a cloud over which the sun's rays fall 44 Then the mad elephant, urged by Bhagdatta and assuming the form of Death in his fury, rushed upon those warriors, shaking the earth with his feet All the warriors seeing his great size and thinking themselves unable to withstand his fury were much frightened. Then King Bhagdatta in great anger, with his sharp arrows, wounded Bhimsen who fainted with the loss of blood and held fast the staff of his banner to keep himself from falling down off his seat. Seeing those warriors terrified and Bhimsen in a swoon, Bhagdatta roared a loud roar. 50. Seeing Bhimsen in this state, Ghatotkach was much enraged and disappeared in the very place where he was standing. He reappeared in a short time on his own

पराक्रमम् ॥ ३८ ॥ शेषा येन्ये भवंतत्र दे भीमस्य अपादिता । विमद्रुतादिशोराजन्
 वधर्मार्ता महात्मना ॥ ३९ ॥ ततोऽमयीच्छान्तनव सर्वा मेव महारथान् । एवभीमी
 रणे कुङ्को घातैराशान्महारथान् ॥ ४० ॥ यथाप्राप्रयान् यथा ज्वेष्टान् यथ शूरांश्चसगतान्
 निपान यत्युग्र धन्वा त प्रगृह्णीत माविरम् ॥ ४१ ॥ एवमुक्त्वा तत सर्वे घातैराशु
 सैनिका । अभ्यद्रवन्त संकुङ्का भीमसेन महाबलम् ॥ ४२ ॥ भगदत्त प्रभिन्नैर कुञ्ज
 रेण विशाम्पने । अभ्ययात्सहसा तत्र यंत्रभीमो व्यवस्थितः ॥ ४३ ॥ आपतन्नेव चरणे
 भीमसेन शिलीगुप्तैः । अदृश्य समरे चक्रे जीमूतद्वयभास्करम् ॥ ४४ ॥ अभिमन्युमुखा
 स्तजु नानृष्यन्तमहारथा । भीमस्याच्छादन स्वथे स्वबाहुबलमाधिता ॥ ४५ ॥ तपनं
 शरवर्षेण सम तात्पर्यं धारयन् । गर्जन् शर वृष्ट्यात्तु विभिदुस्ते संश्रं तत ॥ ४६ ॥ स

को क्षुरप्रवाण मे मारा, हे राजा तब वहाँ जो आपके शेषवचे हुए पुत्र थे वह भीमसेन के बलको देखकर उससे घायल और भयभीत होकर युद्ध से भागे । ३६ । इसके पीछे भीष्मजी सब महारथियों में बोले, कि यह युद्धमें क्रोधरूप भयानक धनुषधारी भीमसेन गो धृतराष्ट्र के महा शूरवीर बुद्धिमान पुत्रोंको गिराता और मारता है उसको पकड़ो, इसके पीछे दुर्योधन की सेनाके सबलोग इस आज्ञाको पाकर अत्यन्त क्रोध में भरकर उस महाबली भीमसेन के सम्मुख दौड़े, हे राजा राजाभगदत्त मतवाले हाथी की सवारी पर अकस्मात् वहाँ आट्टा जहाँ भीमसेन नियतथा । ४० । और युद्धभूमि में गिरतेही शिलाके विसेहूए षाणोंसे भीमसेनको दृष्टि से ऐसा गुप्त करदिया जैसे कि बादल सूर्यको करता है वहाँ अपने भुजबलमें नियत और रक्षित अभिमन्यु आदि महारथी भीमसेनके टकजानेको न सहसके और क्रोधित होकर उन्होंने चारों ओरसे उसको अपने बाणोंकी वर्षासे रोककर चारों दिशाओंसे मारे बाणों के उसकेहाथीको घायल किया, हे धृतराष्ट्र वह राजा प्रागज्योतिषका हाथी उन सब महारथियों के नाना प्रकार के चिह्नधारी प्रकाशित

your sons seeing the great strength of Bhishma fled from the battle field wounded and frightened 36 Thereupon Bhishma, addressing all the warriors, said, "This enraged and dreadful archer, Bhim who is killing and felling the brave and wise sons of Dhritarashtra, must be checked" All the warriors of Duryodhan's army, having received these orders rushed upon Bhim in a great rage, and King Bhagdatta, mounted upon a mad elephant, pounced upon him 40 And as soon as he came there he hid Bhim with the shower of his arrows as clouds do the sun Then, Abhimanyu, firm and protected by the strength of his own arms, could not bear the killing of Bhim and in a great rage, Abhimanyu and his companions wounded Bhagdatta's elephant with the shower of their arrows and checked him The elephant of the king of Pragjyotish,

शक्रवृष्ट्याभिहतः सिमस्रैस्तेर्महारथैः । प्रभ्योत्थि गजो राजन् नाना तिमं सुतेजनेः ॥ ४७ ॥ संजात रुद्धिगोपीर्द्धे प्रेक्षणीयो भवद्गणे । रीमस्तिनिरिवाकंथ सम्पूतो जल
 कीं महान् ॥ ४८ ॥ सचेदितो मद्वायी भगदत्तेन वारणः । अभ्यधावत तान् सर्वान्
 काले त्स्वष्ट इवांतकः ॥ ४९ ॥ द्विगुणं जय मास्थाय कम्पयंधरजैर्महीम् । तद्यनरसुमह
 द्रुपं दृष्ट्वा सर्वं महारथान् ॥ ५० ॥ असह्यं मन्यमानाश्च र्भैतिर्प्रमनसो भवत् । ततस्तु नृप
 निः कुञ्चो भीमसेनस्तनोतरे ॥ ५१ ॥ आजघीतं महाराज शरैर्गानतं पथेण । सोत्ति धि-
 खो महेश्वासंस्तेनराज्ञामहारथः ॥ ५२ ॥ मूर्च्छयामि परितारमा ध्वजयष्टिं समाधयत् ।
 तांस्तुभीतीन्सिमालक्ष्य भीमसेनञ्च मूर्च्छितम् ॥ ५३ ॥ ननाद घलयन्नादं भगदत्तः प्रता
 पवान् । मतोघटोरकचो राजर्षे प्रेक्ष्यभीमं तथा गतम् ॥ ५४ ॥ सजुञ्चो राजसो घोररत
 त्रैवातं रंधीयते । सक्तवादाकृणां मयीं अकृणां भय परिधीनीम् ॥ ५५ ॥ अदृश्यत तिमै

तीव्र क्रोधों से घायल रुधिर के थोतों से युद्धमें ऐसा देखने के योग्यहुआ जैसे
 कि सूर्यकी किरणों से व्याप्त बड़ावादल होताहै । ४४। फिर वह महोग्मत्त कालरूप
 मृत्यु के समान राजा भगदत्तका पैला हुआ हाथी अत्यन्ततीव्र होकर पृथ्वी को
 अपने चरणों से कँपाता हुआ उन सब वीरों के सम्मुख दौड़ा उसके उस बड़े रूपको
 देखकर वह सब महारथी, उसको सहनेके योग्य न समझकर भयभीत हुए हेनरोत्तम
 फिर उसके अनन्तर राजा भगदत्तने महा क्रोधित होकर गुप्तग्रन्थी के बाणों से भी-
 मसेनके बद्धस्थलको व्यथित किया उस राजा से अत्यन्त घायल किया हुआ वह
 बड़ा घनुपथारी, महारथी मूर्च्छा युक्तहोकर ध्वजकी यष्टी के सहारेसे नियत हुआ फिर
 उनको भयभीत और भीमसेनको मूर्च्छा युक्त देखकर, वह प्रतापी भगदत्त बड़े
 शब्दको करता हुआ गर्जा । ५० । हे राजा इसके पीछे घटोरकच उस
 मूर्च्छावान् भीमसेन को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसीस्थान में गुप्त होगया
 और फिर घोररूप महाभयकारी मायाको रचके घोरहीरूप में नियत होकर के

wounded by the sharp and bright arrows of the various warriors, dropped streams of blood and looked like a cloud over which the sun's rays fall. 44. Then the mad elephant, urged by Bhagdatta and assuming the form of Death in his fury, rushed upon those warriors, shaking the earth with his feet. All the warriors seeing his great size and thinking themselves unable to withstand his fury were much frightened. Then King Bhagdatta in great anger, with his sharp arrows, wounded Bhimsen who fainted with the loss of blood and held fast the staff of his banner to keep himself from falling down off his seat. Seeing those warriors terrified and Bhimsen in a swoon, Bhagdatta roared a loud roar. 50. Seeing Bhimsen in this state, Ghatotkach was much enraged and disappeared in the very place where he was standing. He reappeared in a short time on his own

पार्श्वद्वयोरुप समाहितः । ऐरावतं समारूढः सवै गापाकृतं स्वयम् ॥ ५६ ॥ तैश्च
 चान्येपि दिनागा यभूद्वेत्नुयायिनः । अजनो यामनधैव महापद्मसुप्रभः ॥ ५७ ॥ त्रयं
 एते महानागा राक्षसै सम विष्टिताः । महाकायास्त्रिधाराजन् प्रख्यन्तो मर्द्दं वद् ॥ ५८ ॥
 तेजोवीर्यं बलोपेता महाबल पराक्रमा । घटात्कचस्तुस्त्वं नाग चादयामास तैतवा ५९
 सगजं भगदत्तं हतक्रामः परंतपः । ते चान्ये चोदितानागा राक्षसैस्त्वैर्माहाबलै ६०
 परिपेतु सुसंख्यास्यत्तुर्दृष्टाश्चैर्दिशम् । भगदत्तस्यत नाग विषाणैरभ्यपीडयन् ॥ ६१ ॥
 सपीड्यमानस्तैर्नागैर्वदनार्तः शराहतः । अतस्तुमहानाग मिद्राशनिस्त्वस्वन्म ॥ ६२ ॥
 हस्यतं नदतो मादं सुघोर भीमनि स्वगम् । श्रुत्वाभीष्मप्रधीर्द्रोण राजानंचसुर्वाधनम्
 ॥ ६३ ॥ परपुष्यति संप्रामे हैडिभ्येन दुरात्मना । भगदत्तो महेष्वासः कुरुक्षेत्रे परि

अपने रचे हुए माय रूपी ऐरावत पर चढ़कर आये ही निमेष में दृष्टिगोचर हुआ,
 और महा सुन्दर प्रभावी अंजन, वामन, महा पद्मनाभ दूसरे दिग्गज उत्तकै पीछे
 चलने वाले हुए । ५४ । हे राजा वह बड़े शरीर वाले सब अंगों से मढ़ चुने वाले
 तीनों महा गजराज राक्षसों समेत नियत हुए, जोकि तेजी से पराक्रम युक्त बड़े
 धेगवाले थे फिर घटात्कच ने अपने हाथीको युद्ध में भेजा, है शत्रुसन्तापी घृतराष्ट्र
 वह हाथी भगदत्त के मारनेको उपस्थित हुआ और वह दूसरे महाबली हाथीभी
 राक्षसों के घेरित अत्यन्त क्रोधित चार २ दांतों से महा भयानकरूप दिशाओं में
 पहुँचे और भगदत्त के हाथीको अपने दांतों से महापीड़ामान किया तबतो इन
 हाथियों से महापीडित दुःखों से व्याकुल और वाणों से घायल उस हाथी ने इन्द्रके
 चक्र के समान महाघोर शब्द किया उसके महाघोर शब्दको सुनकर, भीष्मजी
 द्रोणाचार्य और राजा दुर्योधन से बोले ; ६० । कि यह बड़ा धनुषधारी भगदत्त
 युद्धमें दुरात्मा घटात्कचके साथ लड़ताहै और आपत्तिमें फँसा है । ६१ । यदरात्म
 यडे शरीरशाला है और राजाभी बड़ाक्रोधकरनेवाला है निश्चय करके कालमृत्यु

elephant followed by Anjan, Baman, Mahapadma and other elephants
 of great beauty and prowess. The e huge princes of elephants with
 juices dropping down from their limbs were ridden over by rakshases
 of great velocity and strength. Ghatokach then urged forward
 his own elephant which was soon ready to kill Bhagdatta. The other
 powerful elephants too, urged by the rakshases rushed in a great
 rage in different directions and with their sets of four tusks wounded
 the elephant of Bhagdatta. Wounded and harrassed by those ele
 phants, the elephant of Bhagdatta made a tremendous noise hke that
 of thunder. Hearing that noise Bhishm said to Dronacharys and
 Duryodhan. 60 "This great orcher Bhagdatta fighting with ill
 natured Ghatokach is fallen in great trouble. The rakshas is very
 buze of body and the king is much enraged, surely these two warriors

वर्तते ॥ ६५ ॥ राक्षसश्च महाहायः सचराज्जाति कोपनः । एनी समेतौ समरे कालमृत्यु
 समाशुभौ ॥ ६५ ॥ द्यूतेचैवं दृष्टानां पांडवानां महाभ्वनः । इस्तिनश्चैव सुमहान् भीत
 स्य रुदितश्चनिः ॥ ६६ ॥ तत्र गच्छामभद्रंशो राजानं परिरक्षिणुम् । अल्पमागः समरे
 क्षिप्रं प्राणान् विभोक्ष्यति ॥ ६७ ॥ तेत्वारण्यं महावीर्यां किंचिरेण प्रयामहे । महान् हि
 वर्तते रौद्रः संग्रामो लोमहर्षणः ॥ ६८ ॥ भक्तश्चकुलपुत्रश्च शूराश्च पूतनापतिः । युक्तं
 तस्य परित्राणं कर्तुमस्माभि रच्युत ॥ ६९ ॥ भीष्मस्य तद्वचः श्रुत्वा सर्वे एव महाराथाः ।
 द्रोमभीष्मौ पुरस्कृत्यभगदत्तप्रीप्सया ॥ ७० ॥ उत्तमं जव मास्थाय प्रययुर्व्रजसोऽभ
 वत् । तान्प्रयातान् समालोक्य युधिष्ठिर पुरोगमाः ॥ ७१ ॥ पंचालाः पांडवैः सार्धं पृष्ट
 तौतु ययुः परान् । तान्यनीकान् यथा लोक्य राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् ॥ ७२ ॥ ननादसुम

के समान दोनों युद्ध में जुटे हुए हैं और पांडवों के प्रसन्नता के बड़े शब्द सुने जाते हैं, और उसभयभीत हाथी के व्याकुलता के भी बहुतसे शब्दसुने जाते हैं आप लोगों की भलाई के लिये हम राजा की रक्षा के लिये वहां पर चले, नहीं तो युद्ध में अरक्षितहोकर वह शीघ्रही माणोंको त्यागेगा हे बड़े पराक्रमियो इस हेतुसे शीघ्रता करो विलम्ब मतिकरो, यह रोमहर्षण करनेवाला महारुद्र रूप युद्ध वर्तमान है यह सेनापति भगदत्त भक्तकुल पुत्रहोकर बड़ाशूरहै हेविजयीलोगो हमलोगों को उसकी रक्षाकरनी योग्यहै ॥६६॥ भीष्मजीके इसवचनको सुनकर सब राजा लोग द्रोणाचार्य को आगे करके भगदत्त पर भीति करके बड़ी तत्रितासे उसके समीपगये उन जाते हुए शत्रुओं को देखकर पांडवों समेत पांचाल देशी अपने आगे राजा युधिष्ठिर को करके पीछेकी ओरसे चले, फिर राक्षसोंका राजा प्रतापी घटोत्कच उन सेनाओं को देखकर आक्राशको शब्दायमान करता हुआ बड़े शब्दसे गर्जा, उसके शब्दको सुनकर और लड़ते हुए हाथियों को देखकर भीष्मजी द्रोणाचार्य से बोले, कि मुझको इस महासाहसी घटोत्कच के साथ में युद्ध करना अच्छा नहीं

are engaged in mortal combat and it is therefore that we hear the cheerful cries of the Pandavas at the terrified noise of that elephant. Let us go to the help of the king, for in so doing lies our welfare. Unprotected in battle the king will soon lose his life. Hasten thither, warriors! The fight is very thick and dreadful. Bhagadatta the commander of our armies is a very brave man of a noble family. It is our duty to protect him 66. At these words of Bhishm all the princes led by Dronacharya, hastened to the battle field out of compassion for Bhagadatta, and seeing them advance the Pandavas with the Panchalas led by Prince Yudhishtir followed in their wake, Brave Ghatotkach the prince of rakshases, filled the firmament with his roars at the sight of those warriors. On hearing his war cry and at the sight of those fighting elephants, Bhishm said to Dronacharya

हानाद् विस्फोटमशने रिय । तस्य त निनद ध्रुत्वा दृष्टवानागांश्च युध्यत ॥ ७३ ॥ श्री
 भम शातनघो भूयो भारद्वाज मभायत । गरोच तेमे सप्रामो हैडिचिन दुरात्मना । ७४ ।
 यलवीर्य समा चिट ससहायश्च साम्प्रतम् । नैवशक्यो युधाजेतु मपिचञ्चभृतास्वपम्
 ॥ ७५ ॥ लघ्व लक्ष प्रहारीच घथच श्रान्त दाहना । पचालै पाडवेयैश्च दिवस क्षत
 विलता ॥ ७६ ॥ तन्नमेरोचते युद्ध पाडवैर्जित काशिमि । युष्यतामवहारोद्य भोयो
 त्स्याम परै सह ॥ ७७ ॥ पितामह वच. श्रगवा तथा चक्रु स्मकौरवाः । उपायोग
 यानते घटात्कच गयार्दिता ॥ ७८ ॥ कौरवेषु निवृत्तेषु पाडवाजित काशिन । सिंह
 नाद नभृश चक्रु शखान् दध्मश्च भारत ॥ ७९ ॥ एव तद् भवयुद्ध दिवस मरतपम् ।
 पाडवाना करुणाच पुरस्हत्यघटोत्कचम् ॥ ८० ॥ कौरवास्तुततो राजन् प्रययु शिविर
 स्थपम् । प्रौढमाना निशाकाले पाडवेयै पराजिता ॥ ८१ ॥ शरविक्षत गाशास्तु पाडु

विदित होता है क्योंकि वह इस समय बल पराक्रम से भरा हुआ महामद वाला है, यह इन्द्रमे भी विजय करने के योग्य नहीं है, और लक्ष्मण ही होकर प्रहार करने वाला है और हम यलकी सवारी वाले हैं, पांचाल और पांडवों से सब दिन घायन हुए इसी हेतु से विजय से शोभा पानेवाले पांडवों के साथ युद्ध करना अच्छा नहीं ज्ञात होता है, अब विभ्राम करो प्रातःकाल शत्रुओं से लड़ेंगे । ७४ । अत्यन्त प्रसन्न चित्त शरवीरों ने इस पितामह के वचनको सुनकर बैसाही किया, फिर वह घटोत्कच के भयसे महापीडित युक्ति के द्वारा युद्ध से हटगये कौरवों के हटजाने पर विजय से शोभापाने वाले पांडवों ने, शंख और धंशियों के शब्दों समेत सिंहनाद क्रिये दे राजा इस रीति से कौरव और पांडवोंका यह युद्ध घटोत्कच को आगे कर के दिन भर हुआ तदनन्तर शीघ्र ही कौरव लोग पांडवों से पराजित-वाणों से घायन लज्जा में भरे रात्रि के समय अपने २ डेरों को गये हे महाराज धृतराष्ट्र फिर महारथी पांडवभी युद्ध में प्रसन्न चित्त भीमसेन और घटोत्कच को आगे कर

We donot like to fight against Gha'otkach for he is at this time full of prowess and strength and unconquerable by Indra himself. He has the marks precisely, while we are mounted on earthly cars. Being wounded at the hands of the Panchals and the Pandavas throughout the day it is not well to fight against the conquering Pandavas. Let us retire to rest now. We shall fight the enemies in the morning" 74. The warriors with a cheerful mind acted upon the advice of the grandfather and being much afraid of fighting against Ghatotkach, they retired from battle. At the retreat of the Kauravas the conquering Pandavas mixed their roars with blasts from the conchs and trumpets. Thus the Kauravas and the Pandavas fought the whole day under the leadership of Ghatotkach, and the Kauravas were squashed and wounded by arrows slunk away in shame to their

पुत्रामहारथाः । युद्धे सुमनसो भूत्वा जग्मु स्व शिविरं प्रति ॥ ८२ ॥ पुरस्कृत्य महा
 राज भीमसेन घटोत्कचौ । पूजयतस्तदान्योन्यं मुदापरमया युताः ॥ ८३ ॥ नद-तो
 विविधानादांस्तूर्यस्वनाद्योर्भीक्ष्रितान् । सिंहनादांश्च कुर्वतो विनिश्चान् शंखानि स्वतः
 ॥ ८४ ॥ विनदतो महात्मानः कल्पयन्तश्च मेदिनीम् । घट्टयन्तश्च मर्माणि तत्रपुत्रस्य
 मारिष्य ॥ ८५ ॥ प्रयाताः शिविरापैव निशाकाले पान्तप । दुर्योधनस्तु नृपतिर्दानो
 भ्रातृवधेनच ॥ ८६ ॥ महूर्त्तं चिनयामास वाप्यशोक समाकुलः । ततः कृत्वा विधि
 सर्वं शिविरस्य यथाविधि । प्रदृष्यां शोकसन्तप्तो भ्रातृव्यसनकर्षितः ॥ ८७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि चतुर्थं दिवमावहारे
 चतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

के अपने डेरों में गये, और वहाँ जाकर वह शत्रुमंतापी महात्मा वही प्रमन्नतासे
 युक्त प्रशंसा करते हुए तुरीय वाजे वजाते शोभा युक्त होकर नांनामकार के शब्दों
 से गर्ज और सिंहनाद युक्त शंखों को वजाते गर्जनाओं से पृथ्वी को कंपायमान
 करते, और आपके पुत्रों के मर्मों को घलायमान करते हुए सायंकाल के समय
 डेरों में गये, फिर अश्रुपात युक्त चिन्ता और शोकसे व्याकुल भाई विरादरिचों के
 मरणसे दुःखित राजा दुर्योधन एक महूर्त्त पर्यन्त चिन्ता में मग्न हुआ, तदनन्तर
 बुद्धि के अनुसार डेरों के सब भवन्धको फाँके शोकसे खिन्न भाइयों के शब्दसे
 निर्वल होकर बड़े विचार में मट्ट हुआ ॥ ८७ ॥

camps for the night. The Pandavas, preceded by Bhimsen and Ghatotkach went cheerfully to their tents and there they blew their horns and roared in glee, giving praises to their warriors. With the sounds of musical instruments and roars they shook the hearts of your sons as they entered their tents for the night. Prince Duryodhan, careworn, shedding tears for the loss of his kinsmen, remained plunged in grief for some time, and having made arrangements about the comforts of his army he was again plunged in grief for the death of his brothers." 83.



धृतराष्ट्र उवाच । अयंमे सुमहज्जातं विस्मयश्चैवसञ्जय । ध्रुवा पांडुकुमाराणां
 कर्मदेवैः सुदुष्करम् ॥ १ ॥ पुत्राणां च पराभायं । श्रुत्वा सञ्जय सर्वदाः । चिन्ता
 मेमहती सूतमविष्यति कथयति ॥ २ ॥ ध्रुव विदुरवाक्यानि घक्षति हृदयमम ।
 यथाहि दृश्यते सर्वं दैवयोगेनसञ्जय ॥ ३ ॥ यत्र भीष्म मुलान् सर्वान् शस्त्रज्ञ
 योयसत्तमान् । पांडवानामनीकेषु योधयति प्रहारिण ॥ ४ ॥ केनावधामहात्मान-
 पांडुपुत्रमहाबलाः । केनदत्तवास्नात किंवाहान विदितिते ॥ ५ ॥ येनक्षयनगच्छति
 दिवितारागणादिव ॥ पुनःपुनर्नृभ्यनिहतसैन्यनुपांडवै ॥ ६ ॥ मध्येघदंडपतनिर्दे-
 घात्तरमदारणः ॥ यथाऽवध्या पांडुनुतायथावध्याश्चमेसुताः ॥ ७ ॥ एतन्मेसर्व-
 मान्दक्षयाथात्थ्येनसञ्जय ॥ नक्षिपारप्रपद्यामिदुःखस्याशयकथंचन ॥ ८ ॥ समद्र

अध्याय ॥ ६५ ॥

धृतराष्ट्र बोलें हे संजय देवताओंसे भी कठिनता से करने के योग्य पांडवों के
 कर्मको सुनकर मुझको बड़ाभय और आश्चर्य उत्पन्न होता है हे संजय सब
 प्रकार से अपने पुत्रोंकीही पराजयको सुनकर मुझको यही चिन्ता है कि परिणाम
 कैसा होगा, निश्चय विदुरजीके वचन मेरेहृदय को जलाते हैं हे संजय दैवयोग से
 उन्हीं का कहना सत्यहोता दिखाई देता है जहां कि पांडवों की सेना के वह दूर-
 वीर उन युद्ध कर्त्ताओं से जिन में शस्त्रवेत्ता महामतापी भीष्म जी मुख्यहैं युद्ध
 करतेहैं, उन महाबली महात्मा पांडवों ने कौनसी तपस्या की है वा किसमे कौनसा
 वरदान पाया है अथवा वह किस ज्ञान को जानते हैं, जिस कारण से कि वह
 नाशको नहीं पाते हैं हे संजय पांडवोंसे धारम्बार मारे हुए सेना के मनुष्यों को मैं
 नहीं सह सकताहूं, देवमुझ को ऐसा कठिन दंड देता है कि पांडव निर्विघ्न हैं और
 मेरे पुत्र घायल हैं, हे संजय इसका हेतुमुझसे मल समेत वर्णन करो मैं किसी दशमंभी
 इस दुःखका अन्त ऐसे नहीं देखताहूं जैसे कि भुजाओं से तिरता हुआ मनुष्य म-

CHAPTER LXV

I am awed and amazed," said Dhrit ashtra to Sanjaya," to hear
 the brave hard deeds of the Pandavas. Hearing the defeat of my sons
 on all occasions, I am afraid of the result. Surely the words of Vidur
 burn my breast. It appears that the words of Sanjaya are fated to
 be realised. The Pandav warriors fight against those warriors who
 have for their leader Bhishm the master of the use of weapons and
 of immense prowess. I donot know what penances the great Pandava
 has performed, what boon they have received or what knowledge
 they are master of that they donot die. I cannot bear the continuous
 destruction of my armies by the Pandavas. Gods gives me a severe
 punishment in as much as the Pandavas are safe and sound and my
 sons are wounded. Tell me the reason of all this in detail, Sanjaya.
 I donot see the end of my miseries like one swimming in the midst

स्वेवमहर्तोऽनुजांश्यांप्रतरश्नतः ॥ पुत्राणांन्यसनेनन्ये ध्रुवंश्रातसुदाहणम् ॥ ९ ॥ घात
विपतिने सर्वान् पुत्रान्भीमो नसशयः ॥ नहि पश्यामितवीरयोमेरुर्लुतानरणे ॥ १० ॥
ध्रुव विनादाः सर्वप्रात पुत्राणां मर्म संजय । तस्मान्मेकारणं मृत शक्तिं चैव विशो
पतः ॥ ११ ॥ पृच्छतोर्वै यथा तत्त्वं सर्वं भाष्यातु मर्हसि । दुर्व्योधनश्च यच्चक्र दृष्टयास्वा
न् विमुक्त न रणे ॥ १२ ॥ भीष्मद्रोणौ कृपाश्चैव सौवल्लभ जयद्रथः । द्रोणिर्चापि महि
वान्मो विकर्णोवा महारतः ॥ १३ ॥ निद्रयोदापि कस्तेषां तदाहासीन् महात्मनाम् ।
विमुद्येय महाप्रात्र तमपुत्रेषु सजय ॥ १४ ॥ सजय उवाच ॥ दृष्टुराजन्तवहितः श्रुत्वा
ध्रुवावधारय । नैव मन्त्र कृत किञ्चिन् नैव श्रियांतथा विधाम् ॥ १५ ॥ नवै विभीषिर्का
काञ्चि प्राजन् कुर्वति पांडवाः । युष्मन्ति ते यथाभ्याव शक्तिमतव संयुगे ॥ १६ ॥ धर्मेण
सर्वं कार्याणि जीयितादीति भारत । आत्मने सदा पार्थाः प्रार्थयान्तंस्म हृद्यशः ॥ १७ ॥

मुद्रका अन्तर्नहीं पाता है मैं निश्चय करके मानताहूँ कि मेरेपुत्रों को महाभयानक
दुःख वर्त्तमान हुआ मैं निस्मन्देह जानताहूँ कि भीमने मेरे सब पुत्रोंको मारेगा,
मैं ऐमावीर किमीको नहीं देखताहूँ जो युद्धमे मेरे पुत्रोंको बचावे । १० । हे संजय
युद्ध में मेरेपुत्रों का नाश निश्चय होता आसता है हे मृत इम हेतुमे तुमसब हेतु
पूर्वक दृष्टान्त मुझ से वर्णन करो और दुर्व्योधन ने युद्ध में अपने युद्धकर्त्ताओं
को विमुक्त देखकर जो जो किया अथवा भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य शकुनि
जयद्रथ महायनुपारी अश्वत्थामा और महापराक्रमी विकर्ण ने जो २ किया, उस
को और हे महाज्ञानी मेरेपुत्रोंके उदासीन होनेपर इन महात्माओं ने जो निश्चय
किया उन सब बातोंको व्योरे समेत यथार्थ मुझ से वर्णन करो । १४ । संजय
बोला कि हेराजा सावधान होकर मुनो और मुनकर विश्वास करो कि पाण्डवों
का न तो कुछ अनुष्ठानहै न किसी प्रकारकी मायाहै, न वह किमी प्रकारकी भया-
नकता करते हैं वह केवल युद्ध में समर्थ होकर न्याय के अनुसार लड़ते हैं, हे भरत
वंशी बड़े यशको चाहने वाले पाण्डव जीवन आदिमव कर्मोंको मर्दव धर्मयुक्त हो-

of the ocean with the help of his arms alone. -Surely I believe that my sons are in great trouble. I know for certain that Bhishma will destroy all my sons. I see no warrior that can save the life of my sons. 10. I am sure of the destruction of my sons in battle. Tell me the reason of all this, Sut! Tell me all that Duryodhan did on finding his warriors turn lack. Tell me of the deeds done by Bhishma, Dronacharya, Kripacharya, Shakuni, Jayadrath the great archer, Ashwathama and Vitarn of immense prowess. Tell me all that these warriors resolved to do when my sons were in distress" 14 "Hear attentively and believe me king I said Sanjaya "that the Pandavas have nei ther recourse to aphorism nor to deception or cruelty; but they are endowed with strength and fight according to law. The Pandavas

नते युद्धा निवर्त्तते घर्मोपेता महाबला । श्रियापरमया युक्ता यतो घर्मस्ततो जय ॥ १८ ॥ तेनावधारणे पार्था जययुक्ताश्च पार्थिव । तद्युवा दुरात्मान पापेष्वभिरता सदा ॥ १९ ॥ निःशुभाहीन कर्माणस्तेनहीयन्तिसयुगे । स्वहृदि नृशंसानि पुत्रैस्तव ज गेश्वर ॥ २० ॥ निहृतानीद पांडूनां नीचै रिव यथा नरै । सर्वेच तदनाहत्य पुत्राणातव किलिवपम् ॥ २१ ॥ सापह्नवा सदैवासन् पाडवा पाहपूर्वज । नचैतान् बहु मन्येत पुत्रास्तव विशाग्मते ॥ २२ ॥ तस्य पापस्य सतत क्रियमाणस्य कर्मण । सांप्रतं सुम हृद्योर फल प्राप्त जनेश्वर ॥ २३ ॥ सत्त्व मुख महाराज सपुत्र ससुहृज्जन । नायु ध्वसि यद्राजन् वार्यमाणा सुहृज्जनै ॥ २४ ॥ विदुरेणाथ भीष्मेण द्रोणेनच महात्मना । तयामयाचाप्यसहचार्यमाणो नयुष्यसे ॥ २५ ॥ वाक्यं हितञ्च पथ्यथ मर्त्ये पथ्य मित्रौ

कर मारंभ करते है वह धर्मवान् महाबली बड़ी शोभा पूर्णक युद्ध से मुख नहीं मोड़ते । जियरधर्म है उधरही विजय होती है, इस हेतुसे पाण्डव लोग युद्ध में निर्भिन्न होकर विजयको पाते है और आपके निर्बुद्धी पुत्र सदैव पापों में मीतिकरनेवाले, कठोरवक्ता और दुष्कर्मी है इसी हेतुसे युद्ध में पराजयको पाते हैं हे राजन् आपके पुत्रों ने पाण्डुको ऊपर हिसा युक्त ऐसे अनेक दुष्कर्म किये जैसे कि नीच मनुष्य करते है हे पाण्डुके बड़ेभ्राता धृतराष्ट्र पाण्डव आपके पुत्रों के उनसब आप अपराधोंको क्षमा करके बैसेही निश्चल बने रहे आपके पुत्र इनको अच्छे प्रकारसे नहीं मानते है । २५। उसवारंवार किये हुये पाप कर्मों का बड़ाघोर फल किपाक वृक्षफलके समान वर्त्तमान हुआ है, हे महाराज आपने अपने सुहृदों के निषेध करने से भी नहीं माना इस हेतुसे आप अपनपुत्र सहायकों समेत उसफल को भांगेंगे, विदुरजी भीष्मजी द्रोणाचार्यजी और अन्य श्रेष्ठ लोगों समेत भैने भी वारंवार आपको समझाया परंतु आपनमाने नही अस्तावधान हारंहे, और परिणाम में आनन्द देदेवाले वचनोंकेभी ऐसे नहीं सुनते हो जैसे कि निर्बुद्धी मनुष्य पथ्य और गुणटायी औपधी को नहीं

desirous of fame begin all their work in life with honesty. These brave warriors do not turn back from fighting in a just cause and victory is sure to fall on the side of justice. For these reasons the Pandavas gain victory without any mishap, while your sons, foolish lovers of sin, are cruel in words and deeds and suffer defeat. Your sons were cruel and harsh to the Pandavas like low born men but the Pandavas forgive all the faults of your sons and remained free from deep sorrow, yet they are not respected by your sons. The dire fruit of all the sinful deeds, committed again and again, is about to become ripe. You did not heed long, the advice of your friends, and therefore you will reap the fruit of your ego doing together with your sons and friends. Vidur, Bhishm, Dronacharya and other good men, as well as myself remonstrated with you again and again, but you neither heeded to us before nor you would wake even in

पथम् । पुत्राणां मतमाज्ञाय जितान् सन्यसि पांडवान् ॥ २६ ॥ द्रुपुमुद्योयपातरवं यन्म
 र्व परिपृच्छसि । कारण भरतश्रेष्ठ पांडवानां जय प्रति ॥ २७ ॥ तत्तेहं कथं विध्यामि
 यथाश्रुतं मरिदम् । दुर्योधनेन संपृष्ट एतमर्थं पितामहः ॥ २८ ॥ दृष्ट्वा धातृनुराणे संधान्
 निर्जितास्तु महारथान् । शोकसंमूढं हृदयो निशाकाले स्म कौरवम् ॥ २९ ॥ पितामहं
 महाप्राज्ञं चिन्थे नोपगम्य ह । यद्वृधधीः सुतस्तेस्रौ तेऽस्मि द्रुपुं जनेश्वर ॥ ३० ॥ दुर्योधन
 उवाच ॥ द्रोणश्च शल्यश्च कृपो द्रौणिस्तथैव च । कृतवर्मा च हार्दिक्यः कांभोजश्च
 सुदक्षिणः ॥ ३१ ॥ भूरिश्रवा विकर्णश्च भगदत्तश्च धीर्यवान् । महारथा समाख्याताः
 कुलपुत्रास्तनुयजः ॥ ३२ ॥ त्रयः नामपि लोकानां पर्यासा इति मे मतिः । पांडवानां सम
 स्ताश्च नतिघ्नन्त पराक्रमे ॥ ३३ ॥ तत्र मे सशयो जातस्तनुमाचक्ष्व पृच्छत । यं समा
 श्रित्य कौंतिया जयं त्यमान् क्षणे क्षणे ॥ ३४ ॥ भीष्म उवाच ॥ द्रुपुं राजन् वचोमल

पाता तुम अपने पुत्रों के मतमें नियत होकर पाण्डवोंको विजयी देखतेहो । २६ ।
 और हे भरतर्षभ जो पाण्डवोंकी विजयका हेतु तुम पूछतेहो, उसकोभी मैं कहताहूँ
 हे राजन् जैसा कि मैंने सुना है और उसी को दुर्योधनने भीष्मजी से पूछा है,
 अर्थात् युद्धमें पराजित सब महारथी भाइयोंको देखकर शोक से व्याकुल मन आ-
 पका पुत्र दुर्योधन रात्रि के समय बड़ी नम्रता से महाज्ञानी भीष्म पितामह के पास
 जाकर जो वचन बोला वह सब मैं तुमसे कहताहूँ । ३० । तात्पर्य यह है कि दुर्यो-
 धन ने कहा कि द्रोणाचार्य और तुम व शल्य व कृपाचार्य अवस्थाया व कृतवर्मा
 व हार्दिक्य व कम्बोज सुदक्षिण व भूरिश्रवा व विकर्ण व पराक्रमी भगदत्त यह सब
 महारथी और सब कौरव लोग शरीर के त्यागने वाले, तीनों लोकों में सामर्थ्यवान्
 प्रसिद्ध हैं मेरी बुद्धि से यह सब लोग पाण्डवों के पराक्रम में नियत नहीं होतेहैं यह
 मुझको बड़ा सन्देह है कि ऐसा हमारे महायुद्धोंके होनेपरभी पाण्डव लोग हमको पद

You do not give ear to advice which may bring you good in the end. Your case is like that of a foolish patient who takes neither wholesome food nor good medicine. Acting upon the opinion of your sons you see the Pandavas again and again victorious 26. I shall tell you the cause of the Pandavas' victory if you are inclined to hear it. I quote the words which Bhishma said in reply to Duryodhan's question to the same effect. Finding all his brothers defeated in battle, Duryodhan, uneasy of mind and much humiliated, went to wise Bhishma the grandfather. I shall tell you the import of what he said 30. "You and Dronacharya, Shalya, Kripacharya, Ashwathama, Kritvarma, Hardikya, Camboj, Sudakshin, Bhurishrava, Vikain and valliant Bhagdatia, all these warriors and Kauravas," said Duryodhan, are ready to die for me. They are famous throughout the three worlds for their great strength and yet they do not equal in prowess to the Pandavas I have a grave doubt in my mind, for having such celebrated

यथा वक्ष्यामि कौरव । बहुशश्वमयोक्तोऽसि नच मे तत्त्वयारुतम् ॥ ३५ ॥ क्रियतां पांडवैः सार्धं शमो भरत उत्तमं । एतद्वान महं मये पृथिव्यार्द्धैव वा विभो ॥ ३६ ॥ भुक्त्वे मां पृथिवी गजन् भ्रातृ भि सहित सुखी । दुर्हृदस्तापयन् सर्वान् नदयध्वापिवांचवान् ॥ ३७ ॥ नच मे क्रोशतस्तात श्रुतवानसि वै पुरां । तदिदं समनुप्राप्तं यत्प्राहूनचमन्यसे ॥ ३८ ॥ वक्ष्य हेतुवधपरि तेषामखिलाष्टकर्मणाम् । तं शृणुष्वमीहोवाहो तम कीर्तयत प्रभो ॥ ३९ ॥ नास्ति लोकेऽपु तद्भूत भवितानो भविष्यति । योजयेतां पांडवान् सर्वान् पालिताञ्छार्ङ्ग घन्वना ॥ ४० ॥ यत्तु मे कथितं तां मुनिभिर्भावितात्मभि । पुराणगी त धर्मज्ञ नक्षत्रगुण्य च यथा तथम् ॥ ४१ ॥ पुराकिल सुरा सर्वे ऋषयश्च समागता । पितामह मुप सेदु पर्वते गन्धमादने ॥ ४२ ॥ तेषामध्ये समासीनः प्रजापतिर पश्यत । विमान प्रज्वलद्भासास्थित प्रधरसंचरे ॥ ४३ ॥ ध्यानेना वेद्यतद्ब्रह्मादृत्या

पदपर विजय करते है । ३४ । भीष्मजी बोले हे कौरवों के राजा मेरे कहनेको सुन भैने तुम्हको बहुतभार समझाया परन्तु तैने न माना भरतवंशीमोमे श्रेष्ठ पाण्डवों से तुमसन्धि करलो हे दुर्व्याधिन इसी में तेरी और सबसंभारकी कुशल है, हेतात भांडवों सभेन सबमित्रों को प्रसन्न करके अपने बांधवों समेत आनन्दपूर्वक इस पृथ्वी को भोगो और पहलेभी हमने वारंवार कहा उसको तुमने नहीं सुना सुनो जो कोई पांडवोंका अपमान करता है उसका यहीफल वर्त्तमान होना है वही अब तुमकोभी वर्त्तमान है, हे समर्थ महाराजजन सुगमकर्मों पांडवों के अव्यय होनेका जो हेतु है उसको मुझमे सुन, लोकोंमें ऐसाकोई वलीनही है नकभीकोईहोगा जो शार्ङ्गधनुष धारी के शरणमें राक्षित सबपांडवोंको विजयकरे । ४० । हेधर्मज्ञ जो शुद्धअन्त करण वाले मुनियों ने पुराणों में कहा है उसको तुम ठीकठीक पूर्णता से सुनो, निश्चय है कि प्राचीन समयमे सब देवता और ऋषियों ने इकट्ठेहोकर गन्धमादन पर्वत पर पितामहजी की उपासना की फिर उन सबोंमें बैठेहुए प्रजापति ब्रह्माजीने तेज

men for my allies, the Pandavas gain victory over us at each step" 34 "Hear my words, Prince of the Kuravas," said Bhishma in reply. "I have often remonstrated with you, but to no purpose. Make peace with the Pandavas best of the descendants of Bharat, for the safety of you and of all the world lies in this. Make your brothers, friends and kinsmen happy, and rule over the earth. I have often said this to you in vain. Whoever will make war on the Pandavas will get the same result as you are about to do. Hear the reason why the Pandavas are indstructible. There is no warrior in the world, nor there will ever be, who can conquer the Pandavas as long as they are under the protection of the wielder of Shrang. 40 Hear in detail what the pure minded muns of old have said. In the days of yore, all the gods and rishis together were worshipping Brahma who, seated in the midst, saw a glorious celestial in the firmament above.

च नियतोज्जिम् । नमश्चकार दृष्टत्मा एकुं परमेश्वरम् ॥ ४३ ॥ ऋदयस्वय
 देवाय दृष्ट्वाग्रहाण मुत्थितम् । स्थिताः प्राञ्जलयः सर्वे पश्यतो महद्दृष्टुम्
 ॥ ४५ ॥ यथावच्चतमभ्यर्च्य ब्रह्माग्रहविदांबरः । जगद्जगतः सदापरमधर्म
 पित् ॥ ४६ ॥ विश्वावसुर्विश्वमूर्तिर्विश्वेशो विश्वक्सेनोविश्वकर्मावशीच । विश्वे
 श्वरो वासुदेवो सितस्माद्योगात्मानं देवतं चामुपैसि ॥ ४७ ॥ जयविश्वमहादेव जय
 लोकहितेश्च । जययोगीश्वर विभो जय योगपरावर ॥ ४८ ॥ पद्मगर्भ विशालाक्ष
 जयलोकेश्वरेश्वर । भूतभव्य भवप्रापजयसौभ्यात्मजात्मज ॥ ४९ ॥ असंख्येय
 गुणाधार जय सर्वपरायण । नारायणसुदुष्पारजय शार्ङ्गधनुर्वर ॥ ५० ॥ जयसर्व

से प्रकाशित अत्यन्त सुन्दर आकाशमें वर्तमान उत्तमविमान को देखा, ब्रह्माजीने
 ध्यानकेद्वारा जानकर हाथजोड़के उस घटघटवासी को नमस्कार किया, फिरसब
 देवता और ऋषिलोगभी वहाँसे उठे हुए ब्रह्माजीको और उसप्रपूर्व ब्रह्मरूपको
 देखकर हाथजोड़कर नियतहुए, फिर ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठ धर्मज्ञ संसारकेस्वामी ब्रह्मा
 जीने बुद्धि के अनुसार उसका पूजन करके इस परम उत्तम और पवित्र स्तोत्रको
 पढ़ा ॥ स्तोत्र । विश्वावसुर्विश्व मूर्ति विश्वेशो विश्वक्सेनो विश्वकर्मा वशीच ॥
 विश्वेश्वरो वासुदेवो सितस्माद्योगात्मानं देवतं चामुपैसि । ४७ ॥ जयविश्वमहादेव
 जय लोकहितेश्च ॥ जय योगीश्वर विभो जय योगपरावर । ४८ ॥ पद्म नाम
 विशालाक्ष जय लोकेश्वरेश्वर ॥ भूतभव्यभवन्नाथजयसौभ्यात्मजात्मज । ४९ ॥
 असंख्येयगुणाधार जय सर्वपरायण । जय कृष्णसुदुष्पारजय शार्ङ्गधनुर्वर । ५० ॥

Brahma knew him by meditation and with joined palms bowed down to
 the Dweller-within-all. The gods and the rishis stood up and casting
 their eyes on Brahma as well as on the wonderful being joined their
 palms in token of respect. Brahma the best of those who know Brahm
 and dharm, worshipped Him according to his wisdom and recited
 the following hymn of praise:—Protector of the Universe, having
 the Universe for thy form, Lord of the Universe, Refuze of the world
 Maker of the world, controller and Supreme Lord of the Universe,
 Vasudev, I seek refuge in thee the soul of Yoya and the highest
 Divinity. 47. Victory to thee, Supreme God of the universe. Victo-
 ry to thee, benefactor of the world. Victory to thee Lord of yog
 and All-powerful. Victory to thee, thou before and after the yog. 48.
 Thee from whose navel the lotus grew, possessor of large eyes, Victory
 to thee Lord of lords. Lord of the Past, Present and Future, Victory
 to thee embodiment of gentleness, son of sons 49. Victory to thee, seat
 of untold attributes and refuge of all. Victory to thee, Narayan,
 unknowable and wielder of Sharang bow. Victory to thee seat of
 all attributes of the form of universe and ever healthy. Victory to

गुणोपेत विश्वमूर्ते निगमय । विश्वेश्वरमहाबाहो जयलोकार्थतत्पर ॥ ५१ ॥ महो
रगवराहाद्य हरिकेश विभोजय । हरिवास दिशामीश विश्ववासा मित्वाव्यय ५२ ॥
व्यक्ताव्यक्तामितस्थान नियतेन्द्रियसत्क्रिय । असंख्ये यात्मभावज्ञजयगभीरकामद
॥ ५३ ॥ अनन्त विदितग्रहान् नित्यभूत विभावन । कृतकार्यं कृतप्रज्ञ धर्मज्ञविजया
वह ॥ ५४ ॥ गुह्यात्मन् सर्वं योगात्मन् स्फुटं संभूत संभव । भूताद्यलोक तन्मेश
जयस्व विभावन ॥ ५५ ॥ आत्मियोने महाभाग कल्पसंक्षेपतत्परम् । उद्गाचनमनो
भावजयग्रहजनप्रिय ॥ ५६ ॥ निसर्गसर्गं निरत कामेशपरमेश्वर । अमृतोद्भवसद्भाव
मुक्तात्मन् विजयप्रद ॥ ५७ ॥ प्रजापतिपतेदेव पद्मनाभमहाबल । आत्मभूतमहा
भूत सत्वात्मन् जयसर्वदा ॥ ५८ ॥ पादौतथरादेवी दिशोवाहू दिशंशिरः । मूर्तिस्तेह

जयसर्वं गुणोपेत विश्व मूर्ते निरामत ॥ विश्वेश्वर महाबाहो जयलोकार्थ तत्पर ॥ ५१ ॥
महोरगवराहाद्य हरिकेश विभोजय ॥ हरि वास दिशा मीश विश्ववासा मित्वाव्यय
। ५२ ॥ व्यक्ता व्यक्त पितस्थान नियतेन्द्रियसत्क्रिय ॥ असंख्ये यात्म भावज्ञ जयगं
भीरकामद । ५३ ॥ अनन्त विदित ग्रहान् नित्यं भूत विभावन । कृत कार्यं कृतप्रज्ञ
धर्मज्ञ विजया वह । ५४ ॥ गुह्यात्मन्सर्वं योगात्मन्स्फुटं संभूत संभव ॥ भूताद्य तत्त्वलो
केश जयै स्त विभावन । ५५ ॥ आत्मयोने महाभाग कल्प संक्षेप तत्परम् ॥ उद्गा
चनमनो भाव जय ग्रह जन प्रिय । ५६ ॥ निसर्गं सर्गं निरत कामेशपरमेश्वर ॥
अमृतोद्भवसद्भाव मुक्तात्मन् विजयप्रद । ५७ ॥ प्रजापतिपतेदेव पद्मनाभ महाबल ॥
आत्मभूत महाभूत कर्मात्मन् जय सर्वदा । ५८ ॥ पादौतथरादेवी दिशोवाहु
र्दिवः शिरः । मूर्तिं स्तेहं सुराकायश्चन्द्रा दिस्वौच चाक्षुषी । ५९ ॥ बलं तपश्च सत्यं

thee, Lord of the worlds, of mighty arms, benefactor of the world
51. Victory to thee, great Urag, Boar, first cause, of tawny locks,
Almighty, of yellow robes Lord of the directions, Omnipresent,
Infinite and free from decay, 52. Manifest and Unmanifest, Immeas-
urable space, controller of senses and achiever of what is good, im-
measurable, self-knowing, Deep and giver of boons, victory to thee
53. Endless, Brahm, Eternal creator, Victorious, wise, just, giver
of victory, mysterious soul of yog, the great cause of all beings,
Knowledge of self, Lord of the world and creator of all beings, Victory
to thee. 55. Self create, highly blessed, Destroyer of all, inspirer
of thoughts and dear to those who know Brahm, Victory to thee.
Victory to thee whose works are creation and destruction, who has all
wishes under control, the Supreme Lord, the fountain of Amrit, All exist-
ent, Agent of the last conflagration and giver of victory. 57. Divine
lord of all created beings whose navel is the seat of the lotus, Almighty,
Self create, the great Element and the soul of all rites, victory to thee
that givest all 58. The Earth represents thy feet, the directions
thy arms and the heavens thy head. I am thy form the gods are

सुराः कायधेन्द्रादित्यौ च चक्षुषी ॥ ५९ ॥ यत्तपश्च सत्यं च कर्मघर्मात्मजतव ।
 तेजोऽपि पवन आसः श्रापस्ते श्वेदसंभवाः ॥ ६० ॥ अश्विनी श्रवणौ नित्यौ देवीजिह्वा
 सरस्वती । वेदाः संस्कारनिष्ठाहित्दीयं जगदाश्रितम् ॥ ६१ ॥ नसत्यानं परिमाण
 न तेजा न पराक्रमम् । न बल योगयोगीश जानीमस्ते न सम्भवम् ॥ ६२ ॥ त्वद्
 क्तिनिरता देव, नियमैश्चां समाश्रिताः । अर्चयामः सदा विष्णो परमेशं महि
 श्वरम् ॥ ६३ ॥ ऋषयो देवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः । पिशाचा मानुषाश्चैव
 मृगपक्षिसरीसृपाः ॥ ६४ ॥ एवमादि मया सृष्ट पृथिव्यां त्वत्प्रसादजम् । पशु
 नाम विशालाक्ष कृष्ण दुःस्रणाशन ॥ ६५ ॥ त्वं गतिः सर्वभूतानां त्वंनेतात्वं
 जगद्गुरुः । त्वत्प्रसादेन देवेश सुखिनो विबुधाः सदा ॥ ६६ ॥ पृथिवी निर्भया
 देव त्वत्प्रसादात् सदाभवत् । तस्माद्भव विशालाक्ष यदुवंशविवर्द्धनः ॥ ६७ ॥
 धर्मसंस्थापनार्थाय दैत्यानां च दधाय च । जगतो धारणार्थाय विज्ञाप्य कुरुमेविभो

च धर्म कर्मात्मजं तव ॥ तेजोऽपि पवनश्चासः श्रापस्ते श्वेद संभवाः । ६० । अश्वि
 नौ श्रवणौ नित्यौ देवी जिह्वासरस्वती ॥ वेदाः संस्कार निष्ठाहित्दीयं जगद श्रितं
 ६१ । नसंख्यानं परिमाणं न तो जनपराक्रमं । नवलं योगयोगीशजानीमस्तेन संभवं ६२ ।
 त्वद्क्तिनिरता देवानि यमैः स्त्रांममाश्रिताः ॥ अर्चयामां सदा विष्णो परमेशं महेश्वरं । ६३ ।
 ऋषयो देवगंधर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ पिशाचामानुषाश्चैव मृगपक्षिसरीसृपा । ६४ ।
 एवमादि मया मृष्टं पृथिव्यां त्वत्प्रसादजं ॥ पशुनाम विशालाक्ष कृष्ण दुःस्वप्ननाशनं । ६५ ।
 त्वं गतिः सर्वभूतानां त्वंनेतात्वं च गन्मुखं ॥ त्वत्प्रसादेन देवेश सुखिनो विबुधा सदा । ६६ ।
 पृथिवी निर्भया देव त्वत्प्रसादात् सदाभवत् ॥ तस्माद्भव विशालाक्ष यदुवंशविवर्द्धनः । ६७ ।
 धर्मसंस्थापनार्थाय दैत्यानां च दधाय च ॥ जगतो धारणार्थाय विज्ञाप्य कुरुमेविभो । ६८ ।

thy limbs, and the sun and the moon are thy eyes. Perances and
 truth, Lorn of morals and religious rites, constitute thy strength: Fire
 is thy energy, the wind is thy breath and the waters are thy sweat.
 60. The twin Aswins are thy ears and Saraswati is thy tongue. The
 Vedas are thy knowledge and the universe rests upon thee. Lord of
 yog and yogis, we donot know thy extent, measure, energy, prowess,
 might and origin. O God, Vishnu, filled with thy devotion and
 depending on thee with vows and observances we ever worship thee
 as the highest Lord and the God of gods The fishes, the gods, the
 gandharvas, the yakshases, the rakshes the pannags, the pishaches,
 men, beasts, birds and reptiles were created by me by Thy grace. From
 thy navel springs the lotus, and thy eyes are large, O Krishna, dispeller
 of woes 65. Refuge and guide of all creatures thou hast, the Uni-
 verse for thy mouth Through thy grace, O lord of the gods, the
 gods are ever happy. Through thy grace the Earth remains free
 from danger; be born among the Yadas, large eyed one, Grant my
 request for the sake of consolidating dharu, for the destruction of

॥ ६८ ॥ यत्तत् परमं गुह्यं त्वत्प्रसादादिदं विभो । वासुदेव तदेतत्ते मयोद्गीतं
 यथातथम् ॥ ६९ ॥ सृष्ट्वा सङ्कर्षणं देवं स्वयमोत्तमानमात्मना । कृष्णं त्वंमात्मनो
 साक्षीं प्रद्युम्नं चात्मसम्भयम् ॥ ७० ॥ प्रद्युम्नादनिरुद्धं देवं विदुषिःशुभमव्ययम् ।
 अनिरुद्धोऽसृजन्मायै प्रह्लाणं लोकधारिणम् ॥ ७१ ॥ वासुदेवमयः सोऽहं त्वयैवास्मि
 विनिर्मितः । विभोऽयं भागशोत्तमानं व्रजमानुपतां विभो ॥ ७२ ॥ तत्रास्तिवधं
 कृत्वा सर्वं लोकसुखायै । धर्मं प्राप्य यशः प्राप्य योगं प्राप्स्यसि तत्त्वतः ॥ ७३ ॥
 त्वां हि ब्रह्मर्षयो लोके देवाश्चाभित विक्रमः । तैस्तैर्हर्नामभिर्गुक्ता गायन्ति परमात्म
 कम् ॥ ७४ ॥ स्थिताश्च सर्वे त्वयि भूतसेवाः कृत्वाश्रयं त्वां वरदं सुवाहो ।
 अनादिमध्यान्तमपारयोगं लोकस्य सेतुं प्रवदन्ति विभोः ॥ ७५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विश्वोपाख्याने
 पंचपटितमोऽध्यायः ६५ ॥

यत्तत्परमं गुह्यं त्वत्प्रसादादिदं विभो ॥ वासुदेव तदेतत्ते मयोद्गीतं यथातथम् । ६९ ।
 सृष्ट्वा सङ्कर्षणं देवं स्वयमोत्तमानमात्मना । कृष्णं त्वंमात्मनो साक्षीं प्रद्युम्नोत्तमानं ७०
 प्रद्युम्नोच्चा निरुद्धं देवं विदुषिःशुभमव्ययं । अनिरुद्धो मृजन्मायै प्रह्लाणं लोकधारिणं ७१
 वासुदेवमयः सोऽहं त्वयैवास्मि विनिर्मितः ॥ विमृज्य भागशो ज्ञानं व्रजमानुपतां विभो ७२ ।
 तत्राश्रयं कृत्वा सर्वं लोकहितायै ॥ धर्मं स्थाप्य यशः प्राप्य योगं प्राप्स्यसि तत्त्वतः ७३ ।
 त्वां हि ब्रह्मर्षयो लोके देवाश्चाभित विक्रमः ॥ तैस्तैर्हर्नामभिर्गुक्ता गायन्ति परमात्म ७४ ।
 स्थिताश्च सर्वे त्वयि भूतसेवाः कृत्वाश्रयं त्वां वरदं सुवाहो । अनादिमध्यान्तमपारयोगं लोक-
 स्य सेतुं प्रवदन्ति विभोः ॥ ७५ ॥

Daityas and for the protection of the world. Thy mystery has been
 sung by me through thy grace, Vasudev. Having created the di-
 vine Sankarshan through thy grace, thou art born as Pradyumna,
 O Krishn. 70. From Pradyumna thou hast created Anirudh who is
 known as everlasting Vishnu. I was created by Anirudh to protect
 the world. Being created by Vasudev, I have in reality been created
 by thee. Divide thyself into parts and take birth, O lord, among
 men. Destroy the Asuras for the good of all creatures, win renown
 and yog to establish righteousness. The twice born rishis on the face
 of the earth and the gods devoted to thee, sing songs in thy praise,
 mighty one. Possessor of good aims, all creatures rest on thee and
 have their refuge in thee, giver of boons. The twice born speak of
 thee as the world's bridge, without beginning, middle and end, and
 possessed of boundless yog. 75.

श्रीभूम उवाच । ततः स भगवान् देवो लोकानामिष्वरेष्वरः । प्रोक्तं प्रियुवाचोदं
स्तिभगम्भीरपागिरं ॥ १ ॥ विदितं तातयोगान्भे सर्वमेतत्तवस्ति तमे । तथातद्
वितस्युक्तं तत्रैवान्तर्धीयत ॥ २ ॥ ततो देवर्षिगन्धर्वा विश्वमयपरमंगताः । कौतूहल
पराः सर्वे पितामहमपानुवन् ॥ ३ ॥ कोन्वयं यो भगवता प्रणम्य वितपात्रिभो ।
पाग्निः स्तुतो वरिष्ठाभिः श्रोतुमिच्छामंतवयम् ॥ ४ ॥ एवमुक्तस्तु भगवान् प्रोक्तु
याच पितामहः । देव ब्रह्मर्षिगन्धर्वां सर्वान् मधुरया गिरा ॥ ५ ॥ यत्तत्पर
मधिष्यञ्च भवितव्यंच यत्परम् । भूतारमाच्य प्रमुञ्चैव ब्रह्म यच्च परं पदम् ॥ ६ ॥
तेनास्मि कृतसंघादः प्रणमेन सूर्यमाः । जगतोनुप्रहाषाय याचितो मे जगत्पतिः
॥ ७ ॥ मानुषं लोकमातिष्ठ वासुदेव इति द्रुतः ब्रह्मगणां वघार्णय सम्भवस्व मही
तले ॥ ८ ॥ संप्राप्ते निहता ये ते दैत्यदानव राज्ञसाः । त इमे नृप सम्भूता घोरा

अध्याय ६६ ॥

श्रीभूमजी बोले कि इसके पीछे वहयोगेश्वरोंके ईश्वर भगवान् स्निग्ध गंभीर
बाणीकेद्वारा ब्रह्माजी से बोले, हे तात यहतरे मनकी इच्छा मुझको योगसे विदित
है वह उसी प्रकार से होगा यहकह कर वह उसी स्थानमें गुप्त होगये, इसके अन
न्तर देवर्षि और गन्धर्वोंने बड़ा आश्चर्य किया और सबने मिलकर ब्रह्माजी से
कहा कि हे समर्थ यह कौनया जिसको आपने बड़ी नम्रतासे नमस्कार पूर्वक
उत्तर बाणियों में स्तुति किया हम उसको जानना चाहतेहैं । ४ । इसीति से देव
र्षिगन्धर्वों के पूछनेपर बड़ी मधुर बाणी से ब्रह्मा जी बोले, जो सर्वोत्तमरूप आगे
प्रकट होनेवालाहै वही श्रेष्ठ सबजीवमात्रोंका आत्मारूप प्रभु है उसीको ब्रह्म और
ज्योति स्वरूपकहतेहैं, हे श्रेष्ठ पुरुषो मैंने उसी प्रसन्न मूर्ति परमेश्वर से वार्त्तालाप
की है और जगत् के अनुग्रह के लिये वह जगत्पति मेरी प्रार्थना से वासुदेवनाम से
प्रसिद्ध होगा तुमसब लोग मर्त्यलोक में नियत होकर असुरोंसे मारनेके लिये पृथ्वी
पर प्रकट होजाओ । ८ । जो दैत्य दानव और राजस युद्ध में मारेगये हैं वही

CHAPTER LXVI

Bhishma continued: "Then the Lord of yogis gave the following
reply to Brahma in a sweet and solemn tone of voice:—"I know by the
power of yog what passes in your mind. It will be as you desire."
Having said this he disappeared at that very place. At this the gods
and grandharrvas were much astonished and unanimously asked of
Brahma to tell them all about him whom he had bowed down and
praised in such high terms 5. Being thus asked by them, Brahma
replied in a very sweet voice that the good form appearing before them
was the soul and lord of all beings, known as Brahma and light. "I have
talked, said he with that cheerful form, the Lord of all. At my request
and for the good of the world that lord of the Universe will appear
in this world as Vasudeva. You too must go to the world of mortals

कामहावलाः ॥ ९ ॥ तेषां चधार्थं भगवान् नरेण सहितो वशी । मानुषी योनि
 मास्थाय चरिष्यति मदीतले ॥ १० ॥ नरनारायणी यौतौ पुराणावृषिसत्तमौ । सहितौमानु
 पेलोके सम्भूताव भितद्युती ॥ ११ ॥ अजेयौसमरे यधौ सहितै रमरैरपि । मूढाश्चेतौ
 न जानन्ति नरनारायणावृषी ॥ १२ ॥ तस्याहमप्रवृः पुत्रः सर्वस्य जगतः प्रभुः ।
 धानुदेवोर्ध्वनीयो यः सर्वं लोकमहेश्वरः ॥ १३ ॥ तथा मनुष्योयमिति कदाचिद्वि
 सुसत्तमा । नावज्ञेयो महावीर्यः शंखचक्रगदाधरः ॥ १४ ॥ एतत् परमकं गुह्यं
 मेतत्परमकं पद्मम् । एतत् परमकं ब्रह्म एतत्परमकं यशः ॥ १५ ॥ एतदक्षरमव्यक्त
 मेतद्वैशाश्वतंसदः । यत्तत् पुरुषसंज्ञै गीयते ज्ञायतेनच ॥ १६ ॥ एतत् परमकं तेज
 एतत् परमकं सुखम् । एतत् परमकं स यं कीर्तितं विश्वकर्मेण ॥ १७ ॥ तस्मात्
 सेन्द्रैःसुरैः सर्वै लोकेषामित विक्रमः । नाव ज्ञेयो वामुदेयो मानुषोयमिति प्रभु ॥ १८ ॥
 यच्च मानुषमाज्ञेय मिति ज्ञ्यात् स मन्वीः । हृषीकेशमवज्ञःनात्तमाहः पुरुषाधमम्

आकर इनद्वोरूपमहावली मनुष्यों में उत्पन्न हुये हैं, इन्हीं के मारने के निमित्त
 अतुल पराक्रमी भगवान् नर संयुक्त मनुष्य योनि में नियत होकर पृथ्वीपर विचरेंगे,
 वही दोनों पुराण पुरुष ऋषियों में श्रेष्ठनरनारायण रूप मिलेहुए सावधान युद्ध में
 देवताओं से भी विजय करने के योग्य नहीं हैं वही महा तेजस्वी एकसाथ नर
 लोक में प्रगटहुए इनदोनों नरनारायण ऋषियों को अज्ञानी लोग नहीं जानते हैं ?
 मैं जिसके आत्मा से उत्पन्न होनेवाला पुत्र सब जगत्का पति हूँ वह सब लोकोंका
 महेश्वर वामुदेव तुम्हारा पूज्य है, हे उत्तम देवताओ इसी प्रकार का वह महापरा
 क्रमी शंखचक्र गदाधारी ऐसा जानकर कि यह मनुष्य है कभी अपमान करने के
 योग्य नहीं है, यह अत्यन्त गुप्तरूप और परमज्योतिहै यही परब्रह्म है यहीशश है
 यही अविनाशी सनातन और यज्ञ पुरुष है यही दृश्यअदृश्य नाम से गायाजाता है
 और जानाजाता है सब गद्दीहै, यह परमतेज मुख और सतविश्वकर्ता कहाजाता है
 इस कारणसे बड़ा पराक्रमी प्रभुवामुदेव इन्द्रादिक देवता और सब असुरोंसे भी
 मनुष्य जानकर अपमानके योग्य नहीं है, जो इस वामुदेवको केवल मनुष्य समझे

and be born there to destroy the asurs The Daitys, Danavas and
 rakshases, killed in battle are born as brave warriors among men. To
 destroy them, Bhagwan of matchless prowess, together with Nar,
 will be born among men and will move on earth. Both those an-
 cient purushes, the best of rishis, known as Nar and Narayan, are
 unconquerable even by gods. Both glorious ones are born among
 men. Ignorant people donot know Nar and Narayan. 12. The
 mighty Lord, Vasudev whose son I am the lord of creation, is worthy
 of respect by you. That wielder of conch, mace and discus, of great
 prowess, is not to be despised in human form, good
 most mysterious, the best light
 Love Brahm. He is the
 fam: ia-

॥ १९ ॥ योगिनं तं महात्मानं प्रविष्टं मानुषीं तनुम् । अवमन्येद्वासुदेवं तमाहुः स्ता
 मसेजनाः ॥ २० ॥ देवं चराचरं तमातं श्रीवत्सांकं सुवर्चसम् । पशुनाभेन
 जानाति तमाहुस्तामसं बुधाः ॥ २१ ॥ किरिटकौस्तुभचरं मिश्राणामभयङ्करम् ।
 अवजानन् महात्मानं घोरे तमसि मञ्जति ॥ २२ ॥ एव विदित्वा तत्त्वार्थं लोका
 नाभीश्वरेश्वरः । वासुदेवो नमस्कार्यः सर्वलोकैः सुरोत्तमाः ॥ २३ ॥ भीष्म उवाच ।
 एवमुक्त्वा लभगवान् देवास्सर्विणान्परा । विस्मृत्य सर्वभूतात्म जगाम भवनं स्वकम्
 ॥ २४ ॥ ततो देवाः सगन्धर्वा मुनयोऽप्यसौपि च । कथां तां ब्रह्मणा गीतां ध्रुत्वा
 प्रीतादिवययुः ॥ २५ ॥ पतच्छ्रुतं मया तात ऋषीणां भावितः स्मृतम् । वासुदेवं
 कथयतां समवाधे पुरातनम् ॥ २६ ॥ रामस्य जामदग्न्यभ्य मार्कण्डेयस्य धीमतः । व्यास
 नारदयोश्चापि शकाशाद् भरतपते ॥ २७ ॥ एतमर्घ्यं विहाय ध्रुत्वा च प्रभुमन्ययम् ।

वह इन्हीं हृषीकेशजी के अपमान से निर्वृद्धी नीचपुरुष है जो इसयोगी महात्मा
 मानुषी शरीरवर्ती वासुदेवजी को अपमान करता है उसको महापुरुष लोग तामसी
 कहते हैं । २० । जो इस जड़ चैनन्य के आत्मा श्रीवत्सनिह्न धारी तैत्रस्वी पद्म
 नाभजी को नहीं जानता है वहभी तामसीबोला जाना है, जोमुकुटकुंडल और कौ-
 स्तुभधारी शत्रु भयवर्द्धन महात्मापुरुषको अपमानकरताहै वहघोर तामिभ्र नामनरक
 में गिरताहै हे धेष्टदेवर्षियो इसरीति से तत्त्वार्थको जानकर लोकेश्वरों का ईश्वर
 वासुदेव सबलोकों से नमस्कार करने के योग्य है । २३ । भीष्म जी बोले कि पूर्व
 समय में भगवान् ब्रह्माजी देवता और ऋषियों के समूहों से इस प्रकार कहकर
 सब प्राणियों को विदा करके अपने भवन को गये । २४ । इस के पीछे
 देवता गन्धर्व ऋषियाने और अप्सरादिकभी ब्रह्माजी की कही हुई इसकथा
 को प्रीति संयुक्त सुनकर स्वर्ग को गये, हेतात इसरीति से मैंने शुद्ध श्रुतःकरण
 वाले देवता ऋषिआदि की सभा में यह प्राचीन वृत्तान्त सुनाहै हे शास्त्रमें कुशल

destructible, eternal and subject of sacrifices. He is sung and known
 as Visible and Invisible. He is All in all, best Light, Happiness and
 Creator of the world. Vasudev the lord of great prowess is not to be
 despised in human form by India and other gods. 20. He who
 regards Vasudev as an ordinary man, is a despicable fool. He who
 looks down upon Vasudev the great yogi in the human form, is re-
 garded by great men as fallen in darkness. He who does not know
 this soul of the moveables and immovables having the spark of Shree-
 vats, the glorious lotus navelled, is fallen in darkness. He who des-
 pises this great being adorned with diadem, earrings and Kaustubh
 jewel, is in terror of toes, falls into the dire hell known as Tamisra.
 Knowing these facts, good rishis divine, Vasudev the lord of lords is
 worthy of worship." 23. "Having said this, to the gods and rishis,"
 continued Bhishm, "lord Brahma bade farewell to all beings and went

वासुदेव मह त्वागं लोकानामीश्वरैश्वरम् ॥ २८ ॥ यस्य वैवात्मजो प्रह्ला सोर्वर्ष्य
जगत पिता । कथं न वासुदेवो यमर्ष्यश्चेत्यश्च मानवै ॥ २९ ॥ वारितोसि
मया तात मुनिभिर्देव पाण्डे । मा गच्छ संयुग तेन वासुदेवेन घन्विता ॥ ३० ॥
मा पाण्डवै सार्द्धमिति तदेव मोहार्थं बुध्यसे । मय्ये त्वा राक्षस हूं तथा चासि
तमोवृत् ॥ ३१ ॥ यस्मात् द्विपसि गोविन्द पाण्डयेन्त घनञ्जयम् । नरनागयणौ
देवौ कान्यो द्विधाद्वि मानव ॥ ३२ ॥ तस्माद्प्रवीमि ते राजश्रेयसे शाश्वतोऽप्य ।
संबलोकमयो नित्यं शास्ता घात्री घोष्ठुव ॥ ३३ ॥ यो धारयति लोकास्त्रीश्रुत
चंगुरु मभु । योद्धा जयश्च जता च सर्वप्रकृतिशिवर ॥ ३४ ॥ राजन् सर्वमयो

दुर्गोधन जमदग्न्यजी के पुत्र परशुरामजी और बुद्धिमान् मार्कण्डेय व्यास और
भारद्वाजी सेभी मुना है, इस अर्थ को अच्छी रीति से सुन और जानकर न्यूनता
रहित लोकेश्वर मभु वासुदेवजी को ध्यान करो, जिसकी आत्मा से उत्पन्न होने
वाला ब्रह्मा स्रजगत्का पिता है वह वासुदेव मग्मात्मा रूप किस प्रकार से
मनुष्यों से पूजनही है अर्थात् सबका पूजनम है, हेतात प्राचीन समय में तो गुद्ध
अन्त करण वाले मुनियों ने सदैव निषेध किया है कि उम धनुषधारी वासुदेवजी
से कभी युद्ध मत करो । ३० । और न कभी पांडवोंसे लड़ो परन्तु तू अपने मोह से
सावधान नहीं होना है इसकारण मैं तुम्हको राक्षस और निर्हय जानता हू जो कि
तू अज्ञान में दूबाहुआ है इसी कारण से तू गोविन्दजी समेत पांडव अर्जुन से श
धुता करता है कौनसा ऐसामनुष्य है जो इनदोनों नर नारायण देवताओंसे शत्रु-
ताकरे, हेराजन् इस हेतुसे मैं तुम्ह से कहता हू कि यह मनातन अविनाशी विश्वरूप
पृथ्वी का धारण करने वाला अचल है, और जो चराचर कारूप मभुतीनोंको
को धारण करता है वह युद्धरुर्चा विजयरूप विजयी रथकी प्रकृति और ईश्वर है,

to his abode. When the gods grandharvas, ishys, munis, apsaras and
others, having cheerfully heard the words of Brahma went to heaven
I heard this ancient account in the meeting of gods and rishis of pure
mind I have heard the same from Parashuram the son of Jamadagni
from wise Markandeya Vyasa and Narad Having thoroughly heard
and known this, think of lord Vasudev the creator of the world. Is not
lord Vasudev whose son Brahma is the father of the world worthy
of respect? The pure-minded Munis of old have forbidden all to fight
against the great archer Vasudev 30 They have forbidden to fight
against the Pandavas too but thou dost not awaken from thy stupe-
fication and therefore I hold you to be a cruel rakshas. Thou bearest
enmity with Vasudev and Arjun because thou art plunged in igno-
rance. What man will be an enemy to Nar and Nirmyan I therefore
say to you king that this ancient immortal and universal form is the
immovable supporter of earth That lord of the immovables and

ह्येव तमो राग विवर्द्धितः । यतः कृष्णस्ततो धर्मो यतो धर्मस्ततो जयः ॥ ३५ ॥
 तस्य माहात्म्ययोगेन योगेतात्मनयेन च । घृता पाण्डुसुता राज्ञन् जयैषां मविष्य
 ति ॥ ३६ ॥ श्रेयोयुक्तां सदा बुद्धिं पाण्डवानां दद्याति यः । बलैश्चैव रणे नित्यं
 भयोभ्यैश्च रक्षति ॥ ३७ ॥ स एव शाश्वतो देवः सर्वगुह्यमयः शिवः । वासुदेव
 इति बधातो यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ ३८ ॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्द्वैतैः शूद्रैश्च कृतलक्ष-
 णैः । सेव्यतेऽप्यर्च्यते चैव नियुक्तैः स्वकर्माभिः ॥ ३९ ॥ द्वापरस्य युगवाप्ते
 आसी कलियुगस्य च । सात्वतं विधिमास्थाय गीतः सङ्कर्षणेन वै ॥ ४० ॥ सद्य
 सर्वं सुरमर्त्यलोकं समुद्रं कश्चान्तरितां पुरां च । युगे युगे मनुष्यैश्च वासं पुनः पुनः
 सृजते वासुदेवः ॥ ४१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विद्वाणोपख्याने

पद् पाठितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

हेराजन् यह सतोगुण रजोगुण तमोगुणसे जुदाहै जिपर श्रीकृष्ण हैं उधर धर्म है
 जिपरधर्म है उधरही विजय है । ३५ । हेराजन् पांडवलोग उन श्रीकृष्णजी के
 माहात्म्य योग वा उत्तररूप योगमे धारण किये हुए हैं, इन्होंकीही विजयदोगी वही
 श्रीकृष्ण पांडवोंकी कल्याण मिश्रित बुद्धिकी और युद्धमें पराक्रम कोभी सदैव
 धारण करता है और भयों से रक्षाकरताहै वही सनातन ब्राह्मणरूप शिव और
 वासुदेव कहा जाता है हे भरतवंशी लक्षण युक्त स्वकर्मासे नित्यमुक्तब्राह्मण क्षत्री
 वैश्यशूद्रों करके वह सदैव सेवा किया जाता है उसी को द्वापर के अन्त पर
 कलियुग के प्रारंभमें सतोगुणी बुद्धि में नियत होकर संकर्षणजी ने गाया है, वही
 युग युगमें देवलोक मृत्यु लोक और समुद्रान्तर वर्चोपुरी और मनुष्यों के विश्राम
 स्थानों को बारांवार उत्पन्न करता है । ४१ ॥

moveables is the supporter of the three worlds. That conquering warrior is the lord of all He is separate from the qualities of Sat, Raj and Tam. Dharm is on the side of Shree Krishn and conquest is on the side of Dharm. 35. The Pandavas O King are supported by the greatness and yog of Shree Krishn and they will conquer. Shree Krishn helps the Pandavas by his good advice and prowess and protects them from danger. The same ancient Brahman is called Shiv and Vasudev. By good deeds that always free Brahman is served by Brahmans, kshatryas, Vaishyas and Shudras, Sankarsban sang of him at the end of Dwapar and the beginning of Kali. He creates again and again in every yug the regions of gods and mortals, the country beyond the sea and the habitations of human beings." 41.



दुष्योषन उवाच । वसुदेवो महद्भूत सर्वलोकेषु कथ्यते । तस्यागमं प्रति
 प्रायश्चात्प्रसिद्धे तितामह ॥ १ ॥ भीष्म उवाच । वासुदेवो महद्भूतं सर्वदैवत
 दैवतम् । न परं पुण्डरीकाक्षाद् दृश्यते भक्तपंथ ॥२॥ मार्कण्डेयश्च गोविन्दे कथयत्य
 द्भुतमदत् । सर्वभूतानि भूतात्मा महात्मा पुरुषोत्तमः ॥ ३ ॥ आपो वायुश्च तेजश्च
 धरमेतद्भवत्यन् । स सृष्ट्वा पृथिवीं देवीं सर्वं लोकेश्वरः प्रभुः ॥ ४ ॥ अप्सुवैशयनं
 चक्र महात्मा पुरुषोत्तमः । सर्वं तेजोमयो देवो योगात् सृष्ट्वापतत्रह ॥ ५ ॥ मुखेन
 नं गिनत्सृजत् प्राणाद्वायुमथापि च । सरस्वतीं च वेदांश्च मनसः सृष्ट्जेऽद्युतः ॥६॥ एष
 लोकां ससृजर्जादी देवांश्च ऋषीमि सह । निधनं चैव सृष्ट्युच्च प्रजातां प्रमथाप्यपौ
 ॥७॥ एषवर्मश्च धर्मतौ वरुदः संवकामद । एषकर्त्ता च कार्प्यं च पूर्वदेवस्यपंप्रभुः ॥ ८ ॥
 भूतं मध्य भविष्यत् पूर्वमेतदकथयत् । उभेसंध्येदेशः खलु नियमांश्च जनार्दनः ॥९॥

अध्याय ६७ ॥

दुष्योषन बोले कि सवलोकों के मध्य में वासुदेव जीही महद्भूत कहे जाते हैं हे
 पितामह जी मैं उनके आगम और प्रतिष्ठाको जाना चाहता हूँ, भीष्मजी: बोले हैं भर
 तवंशिषों में श्रेष्ठ वासुदेव जी ही महद्भूत और सब देवताओं के देवता हैं इन पुण्डरी
 काक्ष श्रीकृष्णजीसे परे कोई नहीं दिखाई देता है, मार्कण्डेय ऋषि भी गोविन्द
 जी को अत्यन्त अपूर्व और बड़ा कहते हैं इसी पुरुषोत्तम महात्मा जीवात्मा
 ने पृथिवी आदि पाँचों तत्वोंको उत्पन्न किया है इसी परमेश्वरने पृथ्वीको न
 देखकर जलमें शयन किया फिर उस बड़े साहसी वासुदेवजी ने मुखसे अग्निको
 प्राणते वायुको उत्पन्न करके वेदों को प्रकट किया इसनेही प्रारंभ में लोकों
 समेत देवता और ऋषियों के समूहको उत्पन्न किया और जन्म मरण नश सहित
 मृत्युको भी इसीने उत्पन्न किया, यहधर्म और धर्मात्मा धरका देनेवाला यही आदि
 देव प्रभुकर्त्ता और कर्मरूप है इसीने भूतवर्तमान भविष्य इनतीनोंकालों को उत्पन्न
 किया यही प्रभु आविनाशी जगत्का कर्त्ता और वरदाता है इसीने सबके आदि

CHAPEL LXVII

"Vasudev" said Duryodhan, "is called the great being throughout the world. I wish to hear of his incarnation and greatness." 1. "Best of Bharats," said Bhishm, "Vasudev is the greatest of beings and lord of lords. There is none superior to Shree Krishn. Ma. Landey calls Govind matchless and great. This supreme being the greatest soul has created the five elements earth and others. This Parmeshwar took rest on the waters which covered the face of the earth. 5 Vasudev of great prowess having created Agni from his mouth and Vayu from his breath gave out the Vedas. In the begining he created the gods and rishis. He created Birth and Death. He is Dharm Dharma-tma, giver of Loons, Primo God, Lord, Maker and deed. He created the Past, Present and Futura. He is the indestructible creator of the

शुभोर्ध्वदि गोविन्दस्तपश्चैवाभ्यकल्पयत् । ज्ञ धारं जगत्तथापि महात्मा प्रभुरव्ययः ॥१०॥
 अग्रजं सर्वं भूतानां सकर्षणरकलायत् । तस्माद्भारायणो जज्ञे देवदेवः जनातनः ॥११॥
 नाभौपन्नं वभूवाभ्य सर्वं लोकस्य सभवात् । तस्मात्पितामहो ज्ञः सारमाज्जातात्स्वियमाः
 प्रजाः ॥ १२ ॥ शेषचाकल्पयद्देव मनसं विश्वरूपिणम् । यो धारत्यति भूतानि धरांचमांस
 पर्वताम् ॥ १३ ॥ ध्यान योगेन विप्राश्च तं विदति महोजसम् । कर्णस्रोतो भयचापि
 मधुनाम महासुरम् ॥ १४ ॥ तमुग्रमुग्रकर्माणं सुप्रबुद्धिं समास्थितम् । प्रह्वणोपचितिं
 यानुं जघानपुरुषोत्तमः ॥ १५ ॥ तस्य तात वषादेव देवदानव मानवाः । मधुसूदन
 मित्वा हृष्टे प्रवक्ष्य जनार्दनम् ॥ १६ ॥ धराहक्षेत्रं सिंहाय त्रिविक्रमगतिः प्रभुः । एव
 मान्वा पिता चैव सर्वेषां प्राणिनां हरिः ॥ १७ ॥ परंहि पुंडरीकाक्षान् मूल न भविष्यति ।
 सुप्रतः सोऽज्जद्विभन् बभूव्यांस्तत्रियांस्तथा ॥ १८ ॥ वैश्याश्चाप्युक्तो राजन्शूद्रा
 न्वैषादतस्तथा । तपसा नियतो देवो निधानं सर्वदेहिनाम् ॥ १९ ॥ ब्रह्म भूतमावाचार्यं

भूत संकर्षणजीको उत्पन्न किया उसीको शेषकल्पना करके अनन्त नामसे प्रसिद्ध किया । १०। यही शेषजी पर्वत और समुद्रों समेत इस पृथ्वीको धारण करते हैं उसको महातेजस्वी कहते हैं, पुरुषोत्तमजीने ब्रह्माजी के उपकारके लिये दक्ष से उत्पन्न महा तेजस्वी पराक्रमी दैत्य मधुको मारा, हे तात इसी के मारनेसे इनको सब संसार मधुसूदन कहते हैं यही वराह वृत्तिह अवतार धारण करने वाला तीन चरणों से सब जगत् को मारने वाला है, यही हरि सत्यजीवोंका पिता और माता है इनसे यह कर न कोई है न था न होगा । १५ । हे राजन् इसने ब्राह्मणों को मुक्तसे त्रिवियों को भुजाओं से वैश्योंको चरणों से उत्पन्न किया है, इन सातधानने तपके द्वारा जीवोंकी हव्य कव्यादिक विधियों को ब्रह्मक्षी अनावास्या वा पूर्णमासी में उत्पन्न किया, जो इन योगरूप केशव जीकी सेवा करता है वह महा ऐश्वर्य्य को पावादे, हे राजा इन केशवजी को मुनियोंने ऐसा कहा है इसीको आचार्य्य पिता और सुद

world and giver of boons. He created Sankarshen the first of Lingas. He is known by the appellations of Shesh and Anant. 10. The same Shesh supports the Earth with her mountains and seas. He is the most glorious. For the good of B.ahm; he destroyed Madhu a Daitya of great glory and prowess, produced from the ear, and gained the name of Mandusudan. He is Barah, Nrisinha and he who measured the universe with three paces. Thus Hari is the father and mother of all beings, there never was any one greater than him nor ever shall be. He produced the Brahmans from his mouth, the Kshatryas from his arms, the Vaishyans from his thighs and the Shudras from his feet. With his great power he ordained the sacrifices on the days of no moon and full moon. He who serves this yogi, Keshav, gets great wealth. The munis call this Keshav, preceptor, father and superior. He to

पीपमास्यां तथैव च । योगेभूतं परिचरन् केशवे महदाप्नुयात् ॥२०॥ केशव परमतेजः
सर्वं लोकपितामहः । एवमाहुर्हृषीकेशं मुनयो वैनराधिप ॥ २१ ॥ एवमेतं विजानीहि
आचार्य पितरं शुभम् । कृष्णो यस्य प्रसीदेत् लोकास्तेनाक्षयाजिताः ॥ २२ ॥ यद्येन
भयं स्थाने केशवं शरणं ब्रजेत् । सदा नर पठन्नेदं स्वस्तिमान् स सुखी भवेत् ॥ २३ ॥
ये च कृष्णं प्रपद्यन्ते तेन मुह्यन्ति न वा । भयमहाति मन्त्राश्च पाति नित्यं जनार्दनः ॥२४॥
सतं युधिष्ठिरो ज्ञात्वा याथातथ्येन भारत सर्वात् मनामहात्मानं केशवं जगदीश्वरम् ।
प्रपन्नः शरणं राजन् योगानां प्रभुमीश्वरम् ॥ २५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विश्वोपाख्याने

सप्तपठितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥

भीष्म उवाच । शृणु चेदं महाराज ब्रह्मभूतं स्तवं मम । ब्रह्मर्षिभिश्च देवैश्च य-
पुरा कथितं भुवि ॥ १ ॥ साध्यानामपि देवानां देवदेवेश्वर प्रभुः । लोकभावनभावज्ञ
इतित्वां नारदाब्रवीत् ॥ २ ॥ भूतभव्यं भविष्यञ्च मार्कण्डेयोऽभ्युवाच ॥ यज्ञंत्वां

जानना योग्य है जिसके ऊपर श्रीकृष्णजी ममन्न होयें वह अविनाशी लोकोंका
विजय करने वाला है, जो प्राणों के भयके स्थान में इनकी शरण में जाता है वह
मनुष्य उसको स्मरण करता हुआ आनन्द पूर्वक निर्विघ्न होता है और जो इनको
प्राप्त होते हैं वह मनुष्य मोहमें नहीं फँसते हैं, यह जगद्गुरुजी बड़े भारी भय में
दूबे हुये अपने भक्तोंकी सदैव रक्षा करते हैं हे महाभाग राजा दुःश्यांघन बह्युधिष्ठिर
इस प्रकारसे ठीक २ जानकर सर्वात्मारूपसे उस योगेश्वर जगदीश केशव मूर्तिकी
शरणमें आश्रित है ॥ २५ ॥

अध्याय ६८ ॥

भीष्मजी बोले हे महाराज इसमेरे कहेहुये ब्रह्मरूप स्तोत्र को सुनो जोकि पूर्व
समय में पृथ्वीपर देव ऋषि और देवताओं से वर्णन किया है ११। भीष्मउवाच ॥
साध्यानामपि देवानां देवदेवेश्वर प्रभुः । लोक भावन भावज्ञ इतित्वां नारदो
ऽब्रवीत् ॥२॥ भूत भव्यं भविष्यञ्च मार्कण्डे योऽभ्यु वाचह ॥ यज्ञंत्वां चैव देवानां

whom shree Krishna is kind, indestructible and conqueror of the
world. He who seeks his protect on from danger, gains happiness
without interruption as he remembers him. Ho who attains
to him, is freed from foolshness. Janardau always protects his
devotees from danger. Yudhishtir knows these facts well and is
devoted, life and soul, to Keshav the lord of yogis as well as of the
world." 24.

CHAPTER LXVIII

"Hear from me, king," said Bhishm, "the song of praise, sung by
Brahma, which was repeated by divine rishis and gods: "Narad des-
cribed thee as the Lord of the Sadhajas, and of the gods, god of gods
as well as loved by the world and knower of essence. 2. Markandeya

चैव देवानां तपश्च तपसामपि ॥ ३ ॥ देवानामपि देवज्ञं त्वो माह भगवान्भृगुः । पुराणं चैव परमं विष्णो रुं तवेति च ॥ ४ ॥ वासुदेवो यस्नात्वं शक्रस्यापयिनां तथा ॥ देव देवोऽसि देवाना मिति द्वैपायनो ब्रवीत् ॥ ५ ॥ पूर्वं प्रजापतेः समं दक्षमाहुः प्रजापतिम् । अष्टारं सर्वलोकाना मङ्गिरास्त्वांतयाऽब्रवीत् ॥ ६ ॥ अव्यक्तं शरीरोत्थं व्यक्तं मनसि स्थितम् । देवास्त्वत्संभवाश्चैव देवलस्त्व सितोऽब्रवीत् ॥ ७ ॥ शिरसा ते दिवं व्याप्तं बाहुभ्यां पृथिवी तथा । जठरं ते त्रयो लोकाः पुरुषोऽसि सनातनः ॥ ८ ॥ एवं त्वामभिजानन्ति तपसा भवितानराः । आत्मदर्शनं नृमाना मृषीणां चापि सत्तमः ॥ ९ ॥ राजर्षीणामुदाराणा माह्वेष्टा निवर्त्तिनाम् ॥ सर्वं धर्मं प्रधानानां त्वङ्गतिर्मधुमन ॥ १० ॥ इति नित्यं योगविद्धिर्भगवान् पुरुषोत्तमः । सनत्कुमारप्रमुखैः स्तूयतेभ्यर्च्यते हरिः ॥ ११ ॥ एष ते विस्तरस्तात संक्षेपश्च प्रकीर्त्तितः । केशवस्य यथातत्त्वं सुप्रीतो भव केशवम् ॥ १२ ॥ संक्षेप उवाच । एष्यं श्रुत्वा तदाह्वानं महाराजसुत

तपश्च तपसामपि ॥ ३ ॥ देवानामपि देवं च त्वा माह भगवान्भृगुः ॥ पुराणं चैव परमं विष्णो रुं तवेति च ॥ ४ ॥ वासुदेवो यस्नात्वं शक्रस्याप यनां तथा ॥ देव देवोऽसि देवाना ना मिति द्वैपायनो ब्रवीत् ॥ ५ ॥ पूर्वं प्रजापतेः समं दक्षमाहुः प्रजापतिम् ॥ अष्टारं सर्वलोकाना मङ्गिरास्त्वांतयाऽब्रवीत् ॥ ६ ॥ अव्यक्तं शरीरोत्थं व्यक्तं ते मनसि स्थितम् । देवास्त्वत् संभवाश्चैव देवलस्त्व सितोऽब्रवीत् ॥ ७ ॥ शिरसा ते दिवं व्याप्तं बाहुभ्यां पृथिवी तथा ॥ जठरं ते त्रयो लोकाः पुरुषोऽसि सनातनः । ८ । एवं त्वामभिजानन्ति तपसा भवितानराः । आत्मदर्शनं नृमाना मृषीणां चापि सत्तमः ९ राजर्षीणामुदाराणा माह्वेष्टा निवर्त्तिनाम् ॥ सर्वं धर्मं प्रधानानां त्वं गतिर्मधुमन ॥ १० ॥ इति नित्यं योगविद्धिर्भगवान् पुरुषोत्तमः ॥ सनत्कुमारप्रमुखैः स्तूयतेभ्यर्च्यते हरिः ॥ ११ ॥ एष ते विस्तरस्तात संक्षेपश्च प्रकीर्त्तितः । केशवस्य यथातत्त्वं सुप्रीतो भव केशवम् ॥ १२ ॥

speaks of thee as the Past, the Present and the Future, the sacrifices of the gods and the austerity of the ascetics. Bhagwan Bhrgu speaks of thee as the god of gods, the most ancient Vishnu. Dwaipayana speaks of thee as Va-udev, Indra among Vastus and the god of gods, 5. Ang ra says that thou art the Prajapati of old, Daksh the father of all. 6. Deval spoke of thee as unmanifest of body and manifest in mind and the creator of gods. 7. Thy head pervades the heavens, thy arms surround the earth, thy stomach contains the three worlds and thou art the eternal being 8. Thus the ascetics know thee and the best of rishis that have an insight into self. Magnanimous rajarshis who never turn back from battle and who are of good morals seek thy refuge, slayer of Madhu ! 10. Hari the illustrious and supreme being is adored and worshipped by Sanatkumar and other ascetics and yogis This has been told thee in detail and in brief, turn thy heart in love to Keshav. Sanjaya continued: You have heard

स्तव । केशवं बहुमेने स पाण्डवांश्च महारथाञ् ॥ १३ ॥ तमप्रवीणमहाराज भीष्मः
 शान्तनवः पुनः । माहात्म्येन श्रुतं राजन् केशवस्य महात्मनः ॥ १४ ॥ नरस्य च
 यथातथं यन्मां त्व पशुपत्संनृप । यदर्थं नृपुस्तन्मृतौ नरनारायणावृषी ॥ १५ ॥
 अवध्यौ च यथा वरिरी स्युगेव्यपगाजितौ । यथा च पाण्डवा राजन्नवध्या युधिकरय
 चित् ॥ १६ ॥ प्रीतिमान् द्वि दद कृष्णः पाण्डवेषु यथास्विवु । तस्माद्प्रवीमि राजेन्द्र
 शमो भवतु पाण्डवैः ॥ १७ ॥ दूधिर्वो मुहूर्त्वं सदितो प्रातृभिर्बलिभिर्वेशी । नरनार
 यणौ देवाश्चज्ञायन शिष्यासि ॥ १८ ॥ एवमुक्त्वा तव पिता नृष्णीमासीद्विशान्तते ।
 स्वसहजैश्च राजान शयनञ्च विवेशह । १९ ॥ राजा च शिविरं प्रायात् प्रणिपत्य
 महात्मने । शिष्ये च शयने शुभ्रे रात्रिर्तां भरतर्षभ ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विश्वोपाख्याने
 अष्टपष्ठितमोऽध्यायः ६८ ॥

संजयने कहा है महाराज तुमने यहस्तव पवित्र आख्यान केशव तथा पांडवों का
 मुनागत्र शान्तनुके पुत्र भीष्मजीने कहा तुमने केशवका महात्म्य सुना और नरकाभी
 उक्तान्त जैसा तुमने पूछाथा मैंने सुनाया यहभी सुना कि नरनारायण ने क्यों अन-
 तार लिया है दोनों वीर पिलकर अपराजित हैं और पांडव भी अवध्य हैं कृष्ण
 को पांडवों से अधिक प्रीति है इस लिये हे राजन् मैं तुम से मेलकरने को कहताई
 अपने दली भाइयों के साथ राज्य भोगो नर और नारायणका अपमान करने से
 तुन्नामको शास होगा यहकह कर बुद्धिमान् पितामह चुपहोगये और राजाको
 भेजवर अपने शिविर में चले गये राजाभी नमस्कार पूर्वक अपने शिविर को गया
 और रात्रि को शयन किया २० ॥

this holy description of the magnanimous Keshav and of the Pandava
 warriors. Bhishm the son of Dhantanu further said, "Thou hast
 heard of the greatness of Keshav and of Nar as thou askedst of me,
 as well as the cause of the incarnation of Nar and Narayan. You know
 why those two warriors joined together are unconquerable and why
 no one can kill the Pandavas. Krishn bears great love to the sons
 of Pandu and it is therefore that I advise you to make peace with
 them. 17. Enjoy the kingdom together with your brothers, Prince.
 By desregarding Nar and Narayan thou shalt court thine own ruin.
 Having said this wise Bhishm became silent and having bidden good
 night to the king, entered his own tent. The prince too, having paid
 his respects to Bhishm went away to his tent and laid himself down
 to repose for the night. 20.

सञ्जय उवाच ॥ व्युपितायांतु शर्वर्था मुदिते च दिवाकरे । उभे सेने महाराज युद्धायैव समीयतुः ॥ १ ॥ अत्र्यचावन्तसंकुद्धाः परस्पर जिगीषवः । ते सर्वे सहिता युद्धे समालोक्य परस्परम् ॥ २ ॥ पांडवाचार्यराष्ट्राश्च राजन् दुर्मन्त्रितं तथ । व्यूहो च व्यूह संरब्धाः सम्प्रहीष्टाः प्रहारिणः ॥ ३ ॥ अरक्षन् मकरव्यूहं भीष्मो राजन् समन्ततः । तथैव पांडवा राजन् तरुणं व्यूहं मात्मनः ॥ ४ ॥ स निययौ महाराज विना द्वेय प्रत स्तथ । महता रथबंधेन सम्बृते रथिनावरः ॥ ५ ॥ इतरंतर मन्वीयुर्धयाभाग मवस्थिताः । रथिनः पक्षयश्चैव श्रितिनः सादिनस्तथा ॥ ६ ॥ तान् दृष्ट्वा भ्युद्यमानं संख्ये पांडवाहि यशस्विनः । इधेनेन व्यूहराजेन तनाजद्येन संयुगे ॥ ७ ॥ अशोभत मुखे तस्य भीमसेनो महाबलः । नेत्रे शिखण्डी दुर्धर्यो घृष्टघुम्नश्च पार्षित ॥ ८ ॥ शीर्वैतस्यामय

अध्याय २१ ।

संजयबोले हे महाराज रात्रिव्यतीत होने और सूर्य के उदय होने पर फिर दोनों सेना सम्मुख वर्तमान हुई, वह सब एकसाथ युद्ध में परस्पर देखकर अत्यन्त क्रोधित होके परस्पर में विजय की इच्छा से सम्मुख दौड़े, हे राजा आपकी बुरी सलाहों के होने से आपके पुत्र और पांडव व्यूहों को रचकर अत्यन्त प्रसन्न और अलंकृत होके महारों को करने लगे, फिर भीष्मजीने चारों ओर से अपने मकर नाम व्यूहकी रक्षाकी इसी प्रकार पांडवोंने अपने व्यूहकी रक्षाकी हे महाराज बड़े रथसमूहों समेत रथियोंमें श्रेष्ठ आपके पिता भीष्मजी चले । ५ । और दूसरी ओरके भी रथी हथीपति और घोड़ों के सवार इत्यादि सब अपने २ स्थान और अधिकार में नियत होकर पीछे २ चले, यशस्वी पाण्डव कौरवोंको युद्धमें सन्नद्ध देखकर उस युद्धमें अजेय राजस्येन नामव्यूह से युद्ध होकर सम्मुखता में वर्तमान हुए उसव्यूह के मुखपर महाबली भीमसेन शोभायमान हुआ और नेत्रों पर दुर्जय शिखण्डी और घृष्टघुम्न नियतहुए, सत्य पराक्रमी महाबली सात्यकी उसके शिर

CHAPTER LXIX.

Sanjaya to Dhritrashtra:—"At the close of the night, at surprise, both the armies faced one another, and rushed against one another in anger to gain victory. On account of your ill advice, King, your sons and the Pandavas, having arrayed their armies and decked themselves with a cheerful mind, discharged their weapons against one another. Bhishma protected from all sides his array which he had formed of the shape of a crocodile. The Pandavas too, protected their array. Your father the best of charioteers rode on followed by numberless chariots. 5. The charioteers, elephant riders, horsemen and others of the opposite party, stationed in their proper places, followed them. The glorious Pandavas, seeing the Kauravas ready for action, faced them with their invincible array of the form of a royal hawk. At the mouth of this array was Bhim the bravest of warriors; at the eyes

द्वीरः सात्याकि सत्य विक्रमः । विद्युन्वन गाण्डिवं यार्थो श्रीवायांमभवत्तदा ॥ ९ ॥
 अक्षौहिण्या समं तत्र वामपक्षो भवत्तदा । महाम्ना द्रुपदः श्रीमान् सह पुत्रेण संयुगे
 ॥ १० ॥ दक्षिणथाभवत् पक्षः कैकेयोऽक्षौहिणी पतिः । पृष्ठतो द्रौपदेयाश्च सौभद्रश्चापि
 वीर्यवान् ॥ ११ ॥ पृष्ठे समभवच्छ्रीमान् स्वयं राजा युधिष्ठिरः । स्रातुभ्यां सद्दिनोधीरो
 यम इयां चारु विक्रमः ॥ १२ ॥ प्रविश्यतु रणे भीमो मकरं मुखतस्तथा । भीष्ममासा
 घ संप्राप्ते छादयामास स्यापकैः ॥ १३ ॥ ततो भीष्मो महास्त्राणि, छादयामास भारत ।
 मोहयन् पाण्डुप्राणां व्यूह सैन्यं मह हृषे । समुहति तदा सैन्ये त्वरमाणो घनजयः ।
 भीष्मं शरसहस्रेण विद्यवाघरणमूर्धनि ॥ १५ ॥ प्रति सर्वार्थं चास्त्राणि भीष्ममुक्तानि
 संयुगे । स्वनामी केन हृष्टेय युद्धाय समास्थितः ॥ १६ ॥ ततो दुर्योधनोराजा माग्धा-

पर विराजम न हुआ और अर्जुन आने गांडीव धनुषको चलायमान करता हुआ
 प्रीवामें वर्तमान हुआ, और श्रीमान् महात्मा द्रुपद अपने पुत्रों समेत एक अर्ध
 हिणी सेना समेत व्यूह के बायें पक्ष में हुआ । १० । और दाहिने पक्षमें एक
 अक्षौहिणी को लिये कैकेय नियत हुआ और द्रौपदी के पांचो पुत्र और
 महाबली अभिमन्यु पीछेकी ओर हुए और उत्तम पराक्रमी श्रीमान् राजा युधिष्ठिर
 नकुल सहदेव भाइयों समेत व्यूह के पृष्ठभाग में शोभितहुए, तबभीमसेन ने मुसके
 मार्ग से उम कौरवों के मकर व्यूह में प्रवेश करके भीष्मजी को पाकर उसयुद्ध
 में शायकों से ढक दिया, फिर पराक्रमी भीष्मजी ने भी बड़े अर्धों को फेंका
 और बढ़ायुद्ध करके पांडवों के व्यूहको मोहित कर दिया फिर सेना के मोहित
 होजाने पर बड़ी शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने उस युद्ध भूमि में आकर हजार
 वाणों से भीष्मजी को घायल किया । १५ । युद्ध में भीष्मजी के छोड़े हुए वाणों
 के प्रहारको सहकर अपनी प्रसन्न सेना के साथ युद्धकरने को उपस्थित हुआ

were brave Shikhandi and Dhrishtadyumna Brave Satyaki of true
 prowess stood at the head and Arjun, with his Gandiv bow moving
 hither and thither, stationed himself at its neck. Great Drupad of
 good fortune together with his akshauhini of army stood on the left
 wing. 10. And on the right wing, with an akshauhini of army, stood
 King Kalkaya. The five sons of Draupadi and brave Abhimanyu
 were on the rear, and Prince Yudhishtir of great prowess, together
 with his brothers Nakul and Sahadev, brought up the rear. Bhishm
 entered the mouth of the crocodile array of the Kauravas, and seeing
 Bhishm there, covered him with arrows. Then Bhishm, full of
 prowess discharged his powerful weapons and stupefied the armies of
 the Pandavas. When the army was thus stupefied the dexterous
 Arjun came into the field of battle and covered Bhishm with
 thousands of arrows. 15. Receiving the shower of Bhishma's arrows
 he fought at the head of his cheerful warriors. Then brave Prince

जमभाषत । एवं दृष्ट्वा घघं घोरं वलस्य यल्लिनांवरः ॥ १७ ॥ भ्रातृणां च घघं युद्धे
 स्मरमाणो महारथः । आचार्यं सततं हितं हितकामो ममानघ ॥ १८ ॥ यद्यहित्वा
 समाश्रित्य भीष्मं चैव पितामहम् । देवानपि रणे जेतुं प्रार्थयामो न सशय ॥ १९ ॥
 किमुपाण्डुसुतान् युद्धे हीनशौर्यं पराक्रमान् । स तथा कुत भद्रन्ते यथा वध्यन्ति
 पांडवाः ॥ २० ॥ एवमुक्तस्ततो द्रोणस्तव पुत्रेण मारिषि । अभिनन् पाण्डवानीकं
 प्रेक्षमाणस्य सात्यकेः ॥ २१ ॥ सात्यकिस्तु ततो द्रोणं वार्यामासभारत । तयोः प्रथवृते
 युद्धं घोकरूप भयावहम् ॥ २२ ॥ शैलेयन्तुरणे कुद्धो भारद्वाजः प्रतापवान् । अविध्य
 त्रिशितैर्वाणैर्जनुदेशेह रुभिव ॥ २३ ॥ भीमसेनस्ततः बुद्धो भारद्वाजमविध्यत ।
 संरक्षन् सात्यकिं राजन् द्रोणाच्छत्रभृताम्बरात् ॥ २४ ॥ ततो द्रोणश्च भीमश्चतथा
 शल्यश्च मारिषि । भीमसेन रणे कुद्वाश्त्राद्याश्चक्रिरे शरैः ॥ २५ ॥ तत्राभिमन्युः
 सकुद्धो द्रौपदेवाश्च मारिषि । विध्यघ्नां त्रिशितैर्वाणैः सर्थास्तानुघतायुधान् ॥ २६ ॥ द्रोण

इस के पीछे पराक्रमी राजादुर्योधन पूर्व दिनमें सेना समेत भाइयोंके मरणको
 देखकर द्रोणाचार्यजी से बोला कि हे पापोंसे रहित आचार्यजी आप सदैव मेरा
 हित चाहनेवाले हो हमसब आपकी और भीष्मजी की रक्षामें होकर देवताओंकोभी
 निरसन्देह युद्धमें विजय करसक्ते हैं, युद्धमें बल पराक्रम रहित पांडवों को विजय
 करना कितनी बात है आपका कल्याण हो आपवही कामकरो जिसमें पांडव मारे
 जायें । २० । तदनन्तर आपके पुत्र के इसरीतिपर कहनेसे द्रोणाचार्य जीने सात्यकी
 के देखते हुए पांडवों की सेनाको वाणोंसे भेदा, इसके पीछे हे भरतवंशी सात्यकीने
 द्रोणाचार्य को रोका फिरतो महायोद्धेय युद्धहोनेलगा, फिर महाप्रतापी द्रोणा
 चार्य ने अत्यन्त कोपयुक्त होकर सात्यकी को दश वणों से शत्रुस्थान में घायल
 किया इसके पीछे सात्यकी की रक्षा के निमित्त उसक्रोधरूप भीमसेन ने द्रोणा
 चार्य जी को वाणों से वेधा फिर द्रोणाचार्य भीष्म और शल्य ने बड़े वाणों से
 भीमसेन को दक दिया । २५ । इसके पीछे महाक्रोध भरे अभिमन्यु और द्रुपद के

Duryodhan, remembering the destruction of his brothers and warriors, said to Dronacharya — "Sinless acharya, you are always my well wisher. Protected by you and Bhishma we aspire to win even the gods in battle, how easy it is to conquer the weak Pandavas! Be careful to destroy the Pandavas" 20. Hearing the words of your son, Dronacharya pierced the armies of the Pandavas within sight of Satyaki. Then, O descendant of Bharat, Satyaki checked Dronacharya and the battle was dreadful in the extreme. Valiant Dronacharya in great anger, wounded Satyaki with ten arrows in the field of battle, and for the protection of Satyaki, Bhimsen wounded Dronacharya. Then Dronacharya, Bhishma and Shalya covered Bhim with their long arrows. 25. Then the enraged Abhimanyu and the sons of Drupad wounded those warriors with sharp arrows. Then the

भीष्मो तु संकृद्वावातन्तौ महाबलौ । प्रत्युद्ययौ शिखण्डीतु महेश्वासो महाहवे ॥२७॥
 प्रगृह्य बलवद्भीरो धनुर्जलदनि घनम् । अय्यवर्षकञ्जोस्त्वं छादयानो दिवाकरम् २८॥
 शिखण्डिन तमासाद्य भरतानां पितामह । अवर्ज्यन सग्राम खीर्य तस्थानुत्समन् ॥ २९ ॥ ततो द्रोणो महाराज अभ्यद्रवत तरणे । रक्षमाणस्तदाभीष्म तव पुत्रेणचो
 दितः ॥ ३० ॥ शिखण्डीतु समासाद्य द्रोणशस्त्रवृतापरम् । अवर्ज्यपतसम्प्रस्तो यगा
 न्ताग्निमिभोद्वयम् ॥ ३१ ॥ ततो बलेन मदता पुनस्तव विशाम्भते । जुगोप भीष्ममा
 साद्य प्रार्ययानोमहद्यशः ॥ ३२ ॥ तथैव पाण्ड्यराजन् पुरस्कृत्यघनजयम् । भीष्ममेवा
 श्यवर्त्तन जपे कृत्वा दृढामतिम् ॥ ३३ ॥ तद्युद्धमभवद् धोर देवाना दानवैरिव । जप
 माकांक्षतां सख्ये यशश्च सुमहाद्भुतम् ॥ ३४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि पञ्चमदिवसयुद्धारम्भे

ऊन समुत्तमोऽध्यायः । ६९ ॥

पुत्रों ने उन सब शस्त्रधारियों को बड़े तीक्ष्ण बाणों से वेधा फिर महाधनुषधारी शिखण्डी उनमहा क्रोधरूप अतुल्यराक्षसी भीष्म और द्रोणाचार्य के सम्मुखगया, वहींर श्रीधरी बादलके समान गर्जना करतावड़े भारी धनुषको लिये बाणों से सूर्य को ढककर तीव्रबाणों की वर्षाकरनेलागा, फिरभरतबंधिशयोके पितामह भीष्मजी ने इसरीति से शिखण्डीको सम्मुख पाकर उसके स्त्रीभावको स्मरणकरके उससे युद्ध करना त्याग किया, हे महाराज इसके पीछे आपके पुत्रके कइनेसे भीष्मजी की रक्षाकरते हुए द्रोणाचार्यजी संग्रामभूमिमें उसके सम्मुख दौड़े ॥३०॥ फिर भयभीत शिखण्डी ने उनमहाशस्त्रोत्ता प्रलयकी अग्निके समान प्रकशमान द्रोणाचार्य को अच्छीरीतिते सम्मुखहोकर रोका, हे राजा इसके पीछे युद्धाभिलाषी आपके पुत्र ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी की रक्षाकी, और इती रीति से पांडव अर्जुन को अगे कारके और विजयमें दृढ़ बुद्धि होकर भीष्मजी के सम्मुख हुए, वह ऐसा महावीर युद्ध हुआ जैसा कि देव और दानवोंका संग्राम होता है उस युद्ध में बिजयाभिलाषी शूरवीरों कीबड़ीअपूर्व कीर्ति विख्यात हुई ३४ ॥

great archer Shikhandi faced the great warriors Bhishm and Drona charya. That great warrior rolling like thunder, showered arrows from his bow and covered the sun with them. Then Bhishm the grandsire of the Kauravas, seeing Shikhandi before him and remembering his womanhood, ceased fighting. Then, at the request of your son, Dronacharya rushed to face Shikhandi to protect Bhishm so Shikhandi, though terrified, resisted well the attack of Dronacharya the great master of the use of weapons and glorious like the fire of pralaya. Then, O king, your son desirous of fighting, protected Bhishm with his great army. In a like manner, the Pandavas, headed by Arjun and resolved on conquering, encountered Bhishm. The battle raged as fierce as that between the gods and the Danavas to the great fame of the warriors desirous of conquest. 340.

सजय उवाच ॥ अक्रोत्तुमुलं युद्धं भीष्मः शान्तवदस्तदा । भीमसेन भया दिव्यं
 न पुत्रांस्तारयितुं तव ॥ १ ॥ पृथाङ्गणे तन् महावीर्यं रात्रां युद्धं मघर्तन । क्रूरुणां पांडवा
 नां च मुख्यशर विनाशनम् ॥ २ ॥ तस्मिन्नाकुल संग्रामे घत्तमाने महाभये । अमयत्तुमु
 लः शब्दः संस्पृशन् गगनं महत् ॥ ३ ॥ नदद्भिश्च महानागैर्हृषमाणैश्चवाजिभिः । भेरी
 शंख निनादैश्च तुमुल समपद्यत ॥ ४ ॥ युयुत्सवस्ते विष्काग्ता विजयापा महाबलाः ।
 अन्योन्यमभिर्गर्जन्तो गोष्ठेष्विव महर्षभाः ॥ ५ ॥ शिरसां गत्यमानानां समरे निश्चितैः
 शरैः । अदम्युष्टि रिधाकाशे यमूय भरतर्षभ ॥ ६ ॥ क्रुद्धलोष्णीपघारिणि ज्वारूपोज्ज्व
 लानि च । पतितानि ह्यम दृश्यन्ते शिरसि भरतर्षभ ॥ ७ ॥ विशिखोन्मदिनैर्गात्रैर्वाहृभि
 श्च सकांमुकैः । सहस्ताभरणैश्चाप्यै रमवच्छादिता मही ॥ ८ ॥ कवचोपहितैर्गात्रैर्हस्तै
 श्च समलंकृतैः । सुलेख चन्द्रसंकाशै रक्तान्तनयनैः शुभैः ॥ ९ ॥ गजवाजि मनुष्याणां

अध्याय ७० ॥

संजय बोले कि आप के पुत्रों की रक्षा चाहने वाले शांतनु भीष्मजी ने बड़ा
 कठिन युद्ध किया, वह बड़ा भारी युद्ध दिनके पूर्व भाग में पांडव और कौरवों
 के रानाओं का नाश करने वाला हुआ, उस बड़े भयानक सब को व्याकुल कर
 ने वाले महा घोर युद्ध के होनेपर आकाश को व्याप्त करने वाला महाघोर शब्द
 हुआ, और हाथियों की चिंहाड़ और घोड़ों के हिनहिनाटों से वह शब्द अत्यन्त
 कठोर होगा, फिर वह पराक्रमी शूवीर विजयाभिलाषी होकर पृथ्वी पर में युद्ध
 करतेहुए ऐसे गर्जे जैसे कि गौओं की शालाओं में बछी बर्द गर्जना करते हैं
 । ५ । हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उस युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से कटे हुए शिरों की
 ऐसी दृष्टिहुई जैसी कि आकाश से पापाणों की वर्षा होती है और बड़े सुन्दर
 मुनहरी कुण्डल और मंडीलें पहरे हुए शिर पृथ्वी पर गिरे हुए दृष्टि गोचर हुए,
 विशिखों से भिदे हुए अंग और कुण्डलधारी शिर और अनेक हाथों के भूषणों

CHAPTER LXX

Sanjay: "Shantanu's son, Bhishma the wellwisher of your sons, fought a hard fight. The severe fighting in the early part of the day was destructive of the allies of the Kauravas and the Pandavas. At the commencement of that dreadful war, there was a great uproar which filled the firmament. The shrieking of elephants and the neighing of horses made the uproar yet more tremendous. The brave warriors, desirous of victory, roared so loud during the battle as bulls bellow in the midst of cows. 5. O best of the descendants of Bharat! the heads struck by sharp arrows fell thick like a shower of stones from the sky. Heads decked with beautiful gold earrings and turbans, were seen here and there on the ground. The bodies pierced through with darts, the heads adorned with earrings and various ornaments of hands covered the ground. The bodies decked with armour

सर्व गात्रैश्च भूपते । आसीन् सर्वा समास्तीर्णा महत्सैन दसुन्धरा ॥ १० ॥ रजो मेघैश्च
 तुमुलैः शस्त्र विद्युत्प्रकाशिमि । आयुधानांच निर्धायः स्तन धित्नु समो भवत् ॥ १० ॥
 ससंमहारस्तमुलः क्रुद्रकः शोणितोदकः । प्रावर्तत कुरुणांच पांडवानांच भात ॥ ११ ॥
 तस्मिन्महाभये घोरं तुमुले लोमहर्षणे । ववृयुः शरवर्षाणि क्षत्रिया युद्ध दुमंदाः ॥ १३ ॥
 आश्वोदान् कुञ्जरस्तत्र शरवर्षं प्रतापिताः । तावकानांपरोषांच संयुगे भरतर्षभ ॥ १४ ॥
 संस्वधानांचवीराणां घोरानाम मितौ जसाम् । धनुर्ध्यां तल शब्देन न प्रावायत किंचन
 ॥ १५ ॥ उद्वितेषु कवन्धेषु सद्यतः शोणितोदके । समरे पर्य घावन्त नृपा रिपुबधोद्यता
 ॥ १६ ॥ शरशक्तिगदाभिस्ते खड्गैश्चानित तेजसः । निजघ्नुः समरे न्योन्यं शूरा परिघ
 बाहवः ॥ १७ ॥ वधमः कुञ्जराद्यात्र शरैर्विद्धा गिरिकुशाः । अश्व्याश्च पर्यघावन्त हतारो

से पृथ्वी व्याप्तहोकर गुप्तसी होगई, हे राजा अंगों में कवच विभूषित भुजाचन्द्रमा के
 समान मुख और लाल नेत्रों से और हाथी घोड़े और मनुष्यों के सब अंगों से सब
 युद्धभूमि एक महूर्त में ही भरकर पूर्ण होगई । १०। धूलके कठिन बादलों में शस्त्ररूप
 भिजली प्रकाशितथी और उन्हीं शस्त्रों के शब्दोंसे बादलकी गर्जनासी होतीथी, हे राजा
 कौरव और पांडवों के वह शस्त्रोंका परस्पर प्रहार महा कठिन सहने के अपोप
 हुआ जिसमें रुधिर की नदी वह निकली उस महा भयानक घोर तुमुलवाले रोम
 हर्षण युद्धमें दुर्मद क्षत्रियों ने बाणों के जालों को बरसाया, यहां बाणोंकी वर्षा से
 अत्यन्त पीड़ामान् हाथी पुरकारे और पाण्डवों के शूरवीर शस्त्रों से शोभित होकर
 चारों ओर से दौड़े, अत्यन्त कोपयुक्त पराक्रमी शूरवीरों के धनुषों के टंकार
 शब्दों से कुछभी नहीं जान पड़नाया । १५ । सब ओरसे जलरूप रुधिर के मध्य
 में दिन क्षिर घोड़ों के उड़ने पर शत्रुओं के मारने को उपस्थित दूसरे राजालोग
 चारोंओरको दौड़े, बड़ेतेजस्वी परिघ के समान भुजाधारी वीरोंने युद्ध में बाणबरछी
 गदा और खड्गों से परस्पर में एक को एक ने मारा, और बाणों से घायल हाथी
 अंकुश के बिनाही इधर उधर घूमने लगे और जिनके सवार मारेगये ऐसे घोड़ेभी

the faces like the moon, the red eyes and the limbs of elephants, horses
 and men, filled the whole field of battle. 10. Weapons shone like
 lightning through the clouds of dust and clashed like thunder. The
 mutual strokes of the Kauravas and the Pandavas, O king, were hard
 to bear and a river of blood flowed down. In that hard contest the
 brave warriors showered networks of arrows. With the shower of
 arrows elephants snuck and the Pandav warriors armed with weapons
 rushed from all sides. The twang of the bows of the enraged
 warriors deafened the ears. 15. Into that river of blood, the war-
 riors rushed upon those who were mounted on headless horses. The
 brave warriors with their arms like clubs, discharged at one another
 their arrows, spears, maces and swords. The elephants wounded by
 arrows rushed hither and thither without the agency of the goad.

द्वा दिशोऽर्शु ॥ १८ ॥ उत्पत्य निपतन्त्यग्रे शरघात प्रपीडिताः । तावकानां परेषां च
घोषा भरत सत्तम ॥ १९ ॥ बाह्यानामुत्तमांगानां क्रामुकाणां च भारत । गदानां परिघा
णां च हस्तानां चोर्ध्वं सह ॥ २० ॥ पादानां भूषणानां च केशूणां च संघशः । राशयस्तत्र
दृश्यन्ते भारत भीष्मं भीमसमागमे ॥ २१ ॥ अश्वानां कुञ्जराणां च रथानां च निर्वतिनाम् ।
सघातास्मप्रदृश्यन्ते तत्र तत्र विश्वास्पते ॥ २२ ॥ गदामिरसिभिः प्रासेर्षाणेष्वनत
पर्वभिः । जघ्नुः परस्परं तत्र क्षत्रिया-कालका गते ॥ २३ ॥ अपरे बाहुभिर्वीरा निशुद्ध-
कुशलायुधि । बहुधा समसज्जन्त आयसैः परिधैरिव ॥ २४ ॥ मुष्टिर्मज्जानुभिर्वैव तले
श्वैव विशां गते । अन्योन्यं जग्मिरे घीरास्तांबिकाः पाण्डवैः सह ॥ २५ ॥ पतितैः पात्य
मानैश्च विचेष्टद्भिश्च भूतले । घोरमायोधन जज्ञे तत्र तत्र जरेश्वर ॥ २६ ॥ धिरधारथि
नश्चात्र निस्त्रिंशत्परारिणः । अन्योन्यमभिघावन्त परस्परवधैरिणः ॥ २७ ॥ ततो दुर्षो

दशो दिशाभो मे दौडते फिरतेथे, और कोई बाणों से पीड़ितहोकर लठकर गिरते
थे और आपके व पांडवों के शूरीर भ्रमण करनेलगे १९२। पृथ्वीपर गिरेहुए बाण
बरली गेदा खड्ग और परिघ जांव और हाथों से युक्त चरण भूषण समेत कपड़ों
के तोड़े भीमसेन और भीष्मजी के सम्मुख पड़ेहुए दृष्टिपड़ते हैं, हेराजा जहां तहां
दौडते हुए घोड़े और लौटतेहुए हाथियोंके समूह दृष्टिगोचरहुए, वहां कालके मेरित
क्षत्रियों ने गदा खड्ग प्रास और झुकेहुए पर्ववाले बाणों से एकने एकको परस्पर
में मांडालां युद्ध में भुज बलकरने में कुशल शूरीर लोहेके परिघ समान अपनी
भुजाओं के द्वारा बहुत प्रकार से वदे, हे राजा पांडवोंके साथ आपके शूरीरों ने
मुष्टिका जानुतल और कीलोंसे भी परस्पर में घात किया । २५। और जहां तहां
गिरे और गिराये हुए पृथ्वीपर चैष्टाकरने वाले शूरीरोंसे युद्धभूमि महा भयकारी
दीखने लगी, और रथी रथमें पृथक् अथवा उत्तम खड्गके चारण करनेवाले परस्पर
घातके आकांक्षी एकएकके सम्मुख दौड़े, तदनन्तर बहुत से कलिङ्ग दैवियों से
युक्त राजा दुर्षोधन युद्ध में भीष्मजी को आगे करके पाण्डवोंके सम्मुख वर्तमान

The riderless horses were seen running on all sides. Some wounded by
arrows rose and fell again, and the warriors of your sons and those of
the Pandavas roamed all through 19. The arrows, spears, maces, swords,
clubs, legs and arms with ornaments and heaps of clothes were seen
before Bhisim and Blim. Numbers of running horses and returning
elephants were to be seen all round. The warriors, urged on by Death
killed one another with their maces, swords and arrows. The brave
warriors, dexterous in the art of fighting, with their arms hard like
steel, rushed upon one another. Your warriors and those of the Pan-
davas too hit hard blows with their fists and legs 25. The warriors,
fallen on the ground made the scene hideous with their bodies mov-
ing in various manners. The charioteers deprived of chariots and the
swordsmen wishing to use their swords, rushed upon one another

घनो राजा कलिहैवदुर्मिर्चत । पुरस्कृत्य रणे भीष्म पाण्डवानभ्यवर्त्तत ॥ २८ ॥ तथैव
पाण्डवाः सर्वे परिवार्य वृकोदरम् । भीष्मभ्यद्रवन् कुन्दास्ततो युद्धमवर्त्तत ॥ २९ ॥
इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलपुद्गे

सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥

सञ्जय उवाच । दृष्ट्वाभीष्मेण ससकान् भ्रातृनन्याश्च पार्थिवान् । समभ्यवावहृगा
ह्येयमुद्यतास्त्रोघनञ्जयः ॥१॥ पाञ्चजन्यस्य निर्घोष धनुषो ग्राहिडवस्त्वच । ध्वजञ्चदृष्ट्वा
पार्थस्यसवाशोभयमाविशत् ॥२॥ सिंहलांगूलमाकाशे ज्वलन्तमिवपर्वतम् । असज्जमान
वृत्तेषु घमकेत मिवोत्थितम् ॥३॥ बहुवर्णं विचित्रञ्च दिव्यं बानसैक्षणम् । अपर्याप्त
महाराज ध्वज गाण्डीव धन्वनः ॥४॥ विद्युत् मेघमभ्यस्थां आजमाना मिवाभ्यरे । ददृशु

हुआ, और इसी प्रकार युद्ध में क्रोधयुद्ध शीघ्रगामी सवारियों वाले सब पाण्डव
भीमसेन को मध्य में करके भीष्मजी के सम्मुख दौड़े । २९ ॥

अध्याय ७१ ॥

संजय बोले कि भीष्मजी से युक्त भाइयों और अन्य बांधवों को देखकर
अस्वधारी अर्जुन गांगेय भीष्म के सम्मुख दौड़ा फिर पांच जन्यशत्रु और
गांडीव धनुषका शब्द सुनकर और अर्जुनकी ध्वजा को देखकर हमसब लोगों में
भय उत्पन्न हुआ, हे महाराज हमने गांडीव धनुषधारी की उसध्वजा को आकाश
में देखा जो सिंहलांगूलनाम आकाशमें प्रकाशित पर्वत समान दृत्तों में न हकने
वाली ऊंची उठी हुई अनेक रंगों से युक्त श्रीहनुमान् जीके चिह्न से अलंकृत थी,
जैसे कि आकाशके बादलों में नियत शोभायमान विजनी दिखाई देती है उसी
प्रकार शूवीरों ने भारी युद्ध में सुनहरी पृष्ठवाले गांडीवधनुष को देखा, फिर
हमने इन्द्र के समान सम्मुख गर्जना करते और आपकी सेनाको मारते हुए अर्जुन
के नलके महाघोर शब्दों को बारम्बारसुना, जैसे कठिन वायुयुक्त बादल विजनी
और अत्रके साथ होताहै उसी प्रकार अर्जुन ने चारों ओरसे बाणों की वर्षा से

Duryodhan accompanied with a large number of Kalingas led by
Bhishm encountered the Pandavas. In a like manner the enraged
Pandavas headed by Bhim, rushed upon Bhishm." 29.

CHAPTER LXXI

Sanjaya : ' Seeing the brothers and their kinsmen in company with
Bhishm, Arjun armed with his weapons, encountered Bhishm the son
of Ganga. Hearing of the sounds of the Gandiv bow and of the
conch known as Panchjanya, and the sight of Arjun's banner, terr-
fied us. We saw, O king, the banner of the wielder of the gandiv
which like a lion's tail shone against the sky, which though lifted
on high could not be created by trees and which was decorated with
the figure of dauman in different colours. The warriors saw in the
he'l of battle that wielder of the golden Gandiv like lightning

गाण्डिवं द्योधा रुक्मपुत्रं महामृधे ॥ ५ ॥ अनुशुभं भृशं चास्य शक्रस्यैवामि गर्जतः ।
 सुघोरं तलयोः शब्दं निद्रितस्तथ वाहिनीम् ॥ ६ ॥ चण्डपातो यथा मेघः सवियुत् स्त
 न यित्नुमान् । दिशः संप्लावयन्सर्वाः शपथैः समन्ततः ॥ ७ ॥ असत्रयघावद्गाम्भ
 भैरवाह्यो घनंजयः । दिवं प्राचीं प्रतीचीं च न जानामीह भोहिताः ॥ ८ ॥ कान्दिगुप्राः
 शान्तपत्रा हताश्वहृतचोतसः । अन्योन्यमभि संक्षिप्य द्योधाति भरतर्षभ ॥ ९ ॥ भीष्म
 मेवाभ्य लीयन्त सह सर्वैस्तवात्मजैः । तेषामासीयन्ममभूद्भीष्म शान्तनवो रणे ॥ १० ॥
 समुत्पतन्ति विप्रस्ता रथेभ्यो रथिनस्तथा । सादिनश्चाश्व पृष्ठेभ्यो भूमौ चापि पदातयः
 ॥ ११ ॥ शुष्का गाण्डिव निघोषं विस्फूर्जित मिचाशनेः । सर्वं सैवामि भीतानि व्यवा
 लीयन्त भावत ॥ १२ ॥ अथ काश्ये जजेरश्वैर्नहद्भिः शुभ्रिगामिभिः । गोपानां बहुसाह
 स्त्रैर्वल्लगोपायनैर्वृतः ॥ १३ ॥ मद्रसौवीरगान्धारैर्लग्गर्तैश्च विशान्पते । सर्वकालिङ्गमुख्यैश्च
 कलिङ्गाधिपतिवृतः ॥ १४ ॥ नानानरगणैश्च दुःशासनपुरःसरः । जयद्रथय नृपतिः

दिशाओं को चलायमान कर दिया । ५ । भयानक अस्त्रवाला अर्जुन भीष्मजीके
 सम्मुख दौड़ा उससमय हमने अस्त्रोंसे व्याकुल होकर पूर्वदिशि दिशाओं कोभीनहीं
 पहचाना, हे भरतर्षभ आपके अचेत होने वाले शूरवीर जिनकी सवारी थकी और
 घोड़े मरे वा किसी दशा में नियत थे, वहसब परस्पर में मिलकर आपके पुत्रों
 समेत भीष्मजी केही आश्रय में होते थे और भीष्मजी उनकी रक्षा करते थे । १० ।
 भयभीत रथी अपने रथों से और सवार घोड़े की पीठसे और पदाती पृथ्वीसे अत्य
 न्त उछलते थे, हे भरतवंशी गाण्डीव धनुष के बन् के समान शब्दों को सुनकर सेना
 के सब मनुष्यमारे भयके भागे, इसके पीछे राजा कर्लिंग बड़े शीघ्र गामी कांबोज
 देशीय उत्तमघोड़ों के द्वारा गोपायन नाम गोपों की असंख्य सेना युक्त मद्र सौवीर
 गान्धार त्रिगर्तदेशी और कर्लिंगों की उत्तमसेनाके शूरवीरों समेत नानाप्रकार की
 सेनाओंके समूहों को साथ लिये जिनमें मुख्य दुःशासन या और सवराजाओं

in the clouds. 5. We heard again and again the dreadful sounds of
 Arjun's claps thundering like Indra and killing your armies. He
 filled with the shower of his arrows all the directions like a thunder-
 storm of mixed clouds and lightning. Arjun the wielder of dreadful
 weapons rushed against Bhishm and, distressed by his weapons we
 could not distinguish the east from west. Your fainting warriors,
 O king, with their animals tired and horses killed, rallied round Bhishm
 for protection and he saved them from slaughter. 10. The terrified
 charioteers jumped down from their chariots, the horsemen from their
 horses and foot soldiers from the ground. Hearing the vajra like
 sounds of the Gandiv bow the people of the army fled with terror.
 Then the king of Kaling together with swift Cambojes and the num-
 berless horsemen of the Gopayans, Bhadras, Sauvirs, Gandhars,
 Trigarts and Kalingas with armies of different sorts, headed by Du-

सहित सर्वराजानि ॥ १५ ॥ इयारोहचरायैव तत्र पुषेण चोदिताः । चतुर्दशसहस्राणि
 संग्रहे पथ्यवारयन् ॥ १६ ॥ ततस्ते संहिताः सर्वे विभक्तगवाहनाः । अर्जुन समरे
 जघनस्त्वावका भरतयम ॥ १७ ॥ रथिभिर्घोरैरश्वैः पार्श्वैश्च संमीरितम् । घोर
 मायोषधं चक्रे महाप्रसहश रजः ॥ १८ ॥ तोमरप्रासनाराच गजाश्वरथयोधिनान् ।
 वलेन महता भीष्मः समसज्जन् किराटिना ॥ १९ ॥ आचरन्त्यः काशिराजेन भीमसेनेन
 सैन्धवः । अज्ञानशत्रुद्राणामृपभेण वशीभियना ॥ २० ॥ सहपुत्र सहामात्यः शल्येन
 सममज्जत । विकर्णः सहदेवेन चित्रसेनः शिखण्डिना ॥ २१ ॥ मत्स्या दुष्योधनं जग्मु
 शकुनिश्च विशाम्भते । द्रुपदचेकितानथ सात्यकिश्चमहाश्वः ॥ २२ ॥ द्रोणेन सममज्जत

समेत राजा जयद्रथ और आपके पुत्रके भेजे हुए चौदह हजार उत्तम अश्व सवार
 इन सर्वोंने चारोंओर से सौवलके पुत्रको मध्य में करलिया । १६ । इसके पीछे उन
 सब पांडवोंने जिनके रथ और सवारियां बुद्धिके अनुसार विभाग युक्तर्था एकसाथ
 ही आकर आपके शूरवीरों को मारा, रथी हाथी घोड़े और पदातियोंसे अच्छेप्रकार
 से चलायमान युद्ध भूमि बड़े वादलों के समान धूलि से महा भयकारी विदित हुई
 भीष्मजी तोमर प्रास नाराच और हाथी घोड़े रथों से युद्ध करनेवाली गूर वीरोंकी
 सेना समेत अर्जुन से अत्यन्त लड़े राजा अवन्ती काशी के राजा के साथ और
 भीमसेन जयद्रथ के साथ और राजा युधिष्ठिर पुत्र और कृपाने समेत मद्रदेश के
 राजा शल्यके साथ अत्यन्त शूरतासे लड़े और विकर्ण सहदेवसे चित्रसेन शिखंडीमे
 लड़ने लगा । २१ । हे राजा मत्स्यदेशी शूरवीर दुष्योधन और शकुनी के साथबड़े
 पराक्रम करने वाले हुए और महाश्वी द्रुपद चेकितान और सात्यकी महात्मा द्रोणा
 चार्य और उनके पुत्र से युद्ध करनेवाले हुए कृपाचार्य और कृतवर्मा दोनों पृष्ट

shasan and all the kings with Jaydrath and the fourteen thousands
 of horse sent by your son, surrounded the son of Suval on all sides.
 16. Then the Pandavas whose chariots and ranks were divided in a
 regular manner, at once rushed upon your warriors. With the cha-
 riots, elephants, horses and foot soldiers the field of battle seemed
 moving like clouds of dust dreadful to behold. Bhishm, accompanied
 by an army of warriors, armed with Tombs, Pruses and arrows, and
 mounted over elephants, horse and charots, fought a severe fight
 with Arjun. The king of Avanti fought with the king of Kashi,
 Bhimsen joined in combat with Jayadrath, and prince Yudhishtir,
 accompanied by sons and chiefs, fought bravely with the
 king of Madra. Vikarn fought against Sahadev and Chitrassen
 against Shikhardi. 21. The warriors of Matsya, O king, fought
 bravely against Daryodhan and Shakuni. The great warriors,
 Drupad, Chekitan and Satyaki fought against Dronacharya and his
 son. Both Kripacharya and Kritvarma rushed upon Dhrista-

सपुत्रेण महारथना । कृपञ्च कृतपर्मा च घृष्टघ्नमभिद्रुतौ ॥ २३ ॥ पथं प्रयाजिताभ्यानि
 आन्तनागरथानिच । सैन्यानि समसज्जन्त प्रयुद्धानि समन्ततः ॥ २४ ॥ निरभ्रं विद्युत्
 स्तीव्रा दिशथ रजसा वृता । प्रादुरासम्होवकाथ सनिर्घाताविशाग्पते ॥ २५ ॥
 प्रादुर्भूतो महावातः पांशुवर्षेण पथतच । नभस्वन्तर्धे सूर्यः सैन्यं रजसावृत ॥ २६ ॥
 प्रमोहः सर्वसत्वानामतीव समपद्यत । रजसा चाभिभूतानामस्त्रजालैश्च तुद्यताम् ॥ २७ ॥
 वीरवाह्विष्टृष्टानां सर्वावरणभेदिनाम् । सघातः शरजालानां तुमुलः समपद्यत ॥ २८ ॥
 प्रकाशं बहुकाशमुद्यतानि भुजोत्तमैः । नक्षत्रधिमलामानि शस्त्राणि भरतर्षभ ॥ २९ ॥
 कार्पमाणि विचित्राणि दक्षमजालावृतानि च । सम्पेतुर्दिशु सर्वाणि चर्माणि भरतर्षभ
 ॥ ३० ॥ सूर्यवर्षेण निस्त्रयोः पात्यमानानि सर्वशः । दिशु सर्वाश्चदृश्यन्त शरीराणि
 शिरांसि च ॥ ३१ ॥ मग्नचक्रान्निहास्य निपातितमहाध्वजाः । हताभ्याः पृथिवीजामु
 क्षत्र तत्र महारथाः ॥ ३२ ॥ परिपेतुर्हयाश्चात्र केचिच्छस्त्रकृतप्रणाः । रथान्धिपरिकर्षितौ

घुम्नके सम्मुख दौड़े इतरीति से स्थान २ पर चारों ओर से ऐसे युद्ध होने लगे कि जिन
 के घोड़े प्राणगत और हाथी रथ भ्रान्ति से युक्त हो गये हे राजा उस समय आकाश
 में बिनाही बादलों के महातीव्र विद्युत्पात होने लगा और दिशा धूल से आच्छादित
 होगई और महा उल्कापात होकर परस्पर में बड़े घोर शब्द प्रगट हुए । २५ । महा
 वायु चलने लगा और धूलकी ऐसी अत्यन्त वर्षा हुई जिसके कारण सूर्य ढककर
 आकाश में गुप्त हो गया, धूलसे छुपे हुए और अस्त्रों के जालों से लड़नेवाले सब
 जीवों को बड़ी अचेतता प्राप्त हुई, धारों की भुजाओंसे छुटे सब पदोंके भेदन करने
 वाले वाणों के जालोंसे महाकठोर शब्द गतन्व हुए हे भरतर्षभ उत्तम भुजाओं से
 उठाये हुए निर्मल नक्षत्रों के समान प्रकाशमान शस्त्रों ने आकाश को प्रकाशित
 करा दिया, और सब दिशाओं में उत्तम बड़ाज सुनहरी दालें पृथ्वी पर गिरिं । ३० ।
 सब रीतों से सूर्य रूप खड्गों से गिराये हुए शरीर और शिरसव और को पड़े हुए
 दिखाई दिये, जिनके पहिये भक्त और नीड़े दृग्गये थे और बड़ी २ ध्वजायें गिर

dyumn. Thus in several places the warriors fought all round. Their horses were killed and the elephants became mad. At that time lightning flashed in the sky without clouds, the directions were filled with dust and the cinders fell down with a hissing sound. 25. The wind blew a gale and the storm of dust overp ead the sun in the sky. Covered with dust and fighting with arrows, the warriors became insensible. Discharged from the arms of the warriors, the network of arrows fell down with a crash. The weapons raised by powerful arms hit the firmament like shining stars. The good shields, decked with gems and gold, fell down on earth. 30 Killed by the swords, shining like the sun, the bodies and heads of the warriors were seen lying in all directions. The huge chariots

वभौ । सटःसुनखिनीजालं विपक्वमिव कर्पताम् ॥ ४२ ॥ एषं संछादितं तत्र चम्पावोपमं
महत् । सादिभिश्चपदातैश्च सच्चञ्चमहारथैः ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे
एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

सत्रय उवाच ॥ शिखण्डी सह मत्स्येन विराटेन विदांपते । भीष्मगाशु गह्वेषास
नाससाद् सुदुर्जयम् ॥ १ ॥ द्रोणे कृतं विकर्णं च महेश्वासं महावज्रम् । राक्षसाभ्यान्
रथे दूरान् बहुगार्च्छदन्तयः ॥ २ ॥ सैश्वयश्च महेश्वासं सामात्यं सह चन्द्रुभिः ।
प्राच्यांश्च दक्षिणात्यांश्च भूमिपान् भूमिपदंभ ॥ ३ ॥ पुत्रश्च ते गह्वेषासं दुर्योधनम्
मर्षणम् । दुःसहसैव समरे भीमसेनोऽथ वर्तत ॥ ४ ॥ सहदेवस्तु शकुनि मुलूकश्च महा
रथम् । पितापुत्री महेश्वासावथ्यवर्तत दुर्जयौ ॥ ५ ॥ युधिष्ठिरो महाराज गजानीकं

हुए सब दिशाओं को दौड़े, उन खिंचनेवाले हाथियों का रूप ऐसा शोभित हुआ
जैसे कि तड़ागों में लगे हुए सुन्दर कमलों के खिंचने वाले हाथियों का रूप
शोभायमान होता है, वह युद्ध भूमि तदार पदाती और बड़े ध्वजावाले रथों से
पूरित होगई ॥ ४३ ॥

अध्याय ७२ ॥

सत्रय बोले हे राजा शिखंडी ने मद्रके राजा विराट समेत बड़ी शीघ्रतासे महारथी
दुःप्रथर्ष भीष्मजी से सम्मुखताकी और अर्जुन ने द्रोणाचार्य कृपाचार्य और राजा
दुर्योधन के बहुत से बड़े धनुषधारी महाबली शूरवीरोंको मोहित किया, हेराज्जेन्द्र
प्रधान और भाइयोंके साथ बड़े धनुषधारी राजासिंध और पूर्वी पश्चिमीय व आपके
क्रोधीपुत्र बड़े धनुषधारी दुर्योधन आदि अन्य अनेक राजाओं के सम्मुख उस
युद्धमें भीमसेन वर्तमान हुए और महारथी सहदेव शकुनी और उलूक के सम्मुख
हुए और वह बड़े धनुषधारी दुःप्रथर्ष-पितापुत्र भी सम्मुख वर्तमान हुए १५ । और

dragged them along with themselves rushing on in all directions. The
elephants dragging the chariots looked beautiful like those dragging
out lotus plants from a lake, and the field was strewn over with
horsemen and the chariots with high banners" 43.

CHAPTER LXXII

Sanjaya said to the king:—"Shikhandi and Prince Virat of Madra
hastened to face invincible Bhishm, and Arjun made Dronacharya,
Kripacharya and Prince Duryodhan with many other warriors insen-
sible. And O King, Bhimsen, faced the great archers, the Kings of
Sindhu—Eastern and Western, your enraged son Duryadhan the great
archer and other princes. Brave Sahdev faced Shakuni, Uluk and
the great Dushpradhmarsh archers, father and son 5. Brave Yudhisht-

दत्तेषु रथेषु चिपु ॥ ३३ ॥ शरगहताभिन्न देहा वद्धयोक्ताहयोत्तमाः । युगानिपर्वकर्वन्त
 तत्र तत्र स्मभारत ॥ ३४ ॥ बद्धदन्त सख्नाश्च साध्वाः सरथयोधिनः । एकेन चलित्वा
 गजन् धारणेन विमर्दिताः ॥ ३५ ॥ गन्धहस्तिमदसूचमाघ्राय बहवो रणे । सन्निपाते
 बलाघानां घीतमादद्विरेगजाः ॥ ३६ ॥ सतोमरैर्महामात्रैर्निपतद्भिर्गतासुभिः । वधुघायो
 धनंछन्नं नाराचभिर्दत्तैर्मजैः ॥ ३७ ॥ सन्निपातेबलौघानां प्रेषितैर्धरवारणैः । निपेनुर्धुचि
 सभग्नाः सयोधा सध्वजागजाः ॥ ३८ ॥ नागराजोपमैर्हस्तैर्नागैराक्षिप्यसंयुगे । व्यददयं
 तमहाराजसंभग्नारथक्षराः ॥ ३९ ॥ विशीर्णरथसंघाश्च केशेष्वक्षिप्यदंतिभिः ।
 द्रुमशाखाइवाविध्यनिष्पिष्टारथिनोरणे ॥४०॥ रथेषु च रथान् युद्धे संसक्तान् बरवारणाः ।
 विकर्षतोदिशः सर्वाः संपेतु सर्वशब्दगाः ॥ ४१ ॥ तेषां तथा कर्षतांतु गजानां कपमा-

पड़ी थीं वा घोड़े भी मरगये थे ऐसे बड़े २ रथ स्थान २ पर गिरे पड़े थे और कित
 ने ही घोड़े शस्त्रों से घायल हुए पृथ्वी में चारों ओर घूमते थे हे भरतवंशी बाणों
 से घायल देहवाले उत्तम घोड़े जिन के अंगोंपर ईषा दण्ड बंधाया उन्होंने जुओंको
 स्थान स्थान पर खेंचा । ३५ । उस युद्ध में कोई २ एकही बाण से सारथी घोड़े
 और रथ समेत मारे हुए शूरवीर दिखाई पड़े, सेना के समूहों के चढ़ाई होने पर
 बहुत से हाथियों ने हाथी के मद से निकली हुई गन्ध को सूंघकर वायु को भक्षण
 किया, और नाराचों से मारे हुए बड़े डील डौल वाले तोरनों समेत गिरे हुए मृतक
 हाथियों से युद्ध भूमि गुप्त होगई, फिर सेना के चलायमान होनेपर भागे हुए हाथि-
 यों में घायल हुए दूसरे हाथी अपने शूरवीर सवारों समेत अवजोरसे पृथ्वीपर गिरे
 हे महाराज उमयुद्ध में गजराज के समान हाथियों की झुंडोंसे खिचकर रथोंकेकुवर
 अत्यन्तदूरे हुए दिखाईपड़े, जिनके रथों के जान दूरे ऐसे रथी युद्ध में वृक्षकी
 समान शिरके बालोंमें हाथियों से खिचकर और घायलहोके फँसगये और युद्ध में
 उत्तम हाथी रथों में चिपटे हुए रथोंको खेंचते सब हाथियों के शब्दों पर चलते

with broken yokes, wheels and banners and the horses killed fell here and there, and the horses wounded by weapons ran all round. The good horses wounded in their bodies decked with *Isha Dand*, dragged the yokes this way and that. 35 Some warriors were killed there—horses, driver and chariot all—with single arrows. With the advance of the army, numbers of elephants sniffed in the air the stench coming out of the juice of elephants, and the ground was covered with the huge bodies of elephants fallen in battle. In the bustle of the battle, many elephants were wounded and fell down with their brave riders, by the rush of other elephants running away from the field. The chariots, dragged by the trunks of powerful elephants, were broken into pieces. The warriors, with their chariots broken down, were dragged by the hair and dashed on the ground by the elephants. In the field of battle the elephants clung to chariots and

धर्मौ । सटःसुनलिनीजालं विपकमिव कर्पताम् ॥ ४२ ॥ एषं संडादितं तत्र पम्यापोघनं
महत् । सादिगिश्चपदातैश्च सध्वजैश्चमहारथैः ॥ ४३ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे
एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

सद्य उवाच ॥ शिवण्डी सह मध्येन विराटेन विशांते । भीष्मताशु महेश्वास
नाससाद् सुदुर्लभम् ॥ १ ॥ द्रोणे कुरं विकर्णं च महेश्वासंमहावजम् । रात्रध्वान्वात्र
रजे शूरान् बहुगान्छन्दनञ्जयः ॥ २ ॥ सैध्रवश्च महेश्वासं सामार्यं सह यन्धुभिः ।
प्राच्यांश्च दक्षिणात्यांश्च भूमिपान् भूमिपर्वभ ॥ ३ ॥ पुत्रश्च ते महेश्वासं दुर्पोघनम
मर्षणम् । दुःसहसैव समरे भीमसेनोऽयवर्तत ॥ ४ ॥ सहदेवस्तु शकुनि मुलूकश्चमहा
रथम् । पितापुत्री महेश्वासावश्यवर्तत दुर्जयौ ॥ ५ ॥ शुधिष्ठिरो महाराज गजानीकं

हुए सब दिशाओं को दौड़े, उन खिंचनेवाले हाथियों का रूप ऐसा शोभित हुआ
जैसे कि तड़ागों में लगे हुए सुन्दर कपलों के खिंचने वाले हाथियों का रूप
शोभायमान होता है, वह युद्ध भूमि सवार पदाती आरं वड़े ध्वजावाले रथों से
पूरित होगई ॥ ४३ ॥

अध्याय ७२ ॥

संजय बोले हे राजा शिवण्डी ने मद्रके राजा विराट समेत बड़ी शीघ्रतासे महारथी
दुःप्रधर्ष भीष्मजी से सम्मुखताकी और अर्जुन ने द्रोणाचार्य कृपाचार्य और राजा
दुर्योधन के बहुत से बड़े धनुषधारी महाबली शूरवीरोंको मोहित किया, हेराजेन्द्र
प्रधान और भाइयोंके साथ बड़े धनुषधारी राजासिंध और पूर्वी पश्चिमीय व आपके
क्रोधीपुत्र बड़े धनुषधारी दुर्योधन आदि अन्य अनेक राजाओं के सम्मुख उस
युद्धमें भीमसेन वर्तमान हुए और महारथी सहदेव शकुनी और उलूक के सम्मुख
हुए और वह बड़े धनुषधारी दुःप्रधर्षपितापुत्र भी सम्मुख वर्तमान हुए । ५ । और

dragged them along with themselves rushing on in all directions. The
elephants dragging the chariots looked beautiful like those dragging
out lotus plants from a lake, and the field was strewn over with
horsemen and the chariots with high banners" 43.

CHAPTER LXXII

Sanjaya said to the king:—"Shikhandi and Prince Virat of Madra
hastened to face invincible Bhishm, and Arjun made Dronacharya,
Kripacharya and Prince Duryodhan with many other warriors insen-
sible. And O king, Bhimsen, faced the great archers, the Kings of
Sindhu—Eastern and Western, your enraged son Duryadhan the great
archer and other princes. Brave Sahdev faced Shakuni, Uluk and
the great Dushpradharsh archers, father and son 5. Brave Yudhish-

महारथ । समवर्तत सग्रामे पुत्रेण निकृतरतव । ६ ॥ माद्रीपुत्रस्तु नकुल शूरसङ्घ
 दनोयुधि । त्रिगतांनावले स्वाध समसज्जत पण्डव ॥ ७ ॥ अश्ववर्तन्तसकुन्दा समरे
 शावकेकयान् । सात्यकिश्चेकितानथ सौमद्रथमहारथ । ८ ॥ धृष्टकेतुश्च समरे राक्षस
 थघटोत्कच । पुत्राणा ते स्थानिक प्रयुधाता सुदुर्नया ॥ ९ ॥ सेनापतिरमेयात्माघृष्ट
 युम्न महाबल । द्रोणेन समरे राजन् समीपायोमकर्मणः ॥ १० ॥ एवमेते महेश्वासास्ता
 चका पाडयै सह । समेत्य समरे शूरा सम्प्रहात् प्रचक्रिरे ॥ ११ ॥ मध्यन्दिनगतं सूर्यं
 नभस्याकुलताङ्गते । कुरप पाण्डयेयाश्च निजधनुगितरेतरम् ॥ १२ ॥ ध्वजिनोहेम
 ध्विनाङ्गा विचरन्तो रणाजिरे । सपन वा रथा रेजुर्धैव प्रपरिवारणा ॥ १३ ॥ समेता
 नाच समरे जिगीषूणा परस्परम् । बभूव तुमन्व शब्द सिंहातामिवनर्षताम् ॥ १४ ॥
 तत्राद्भुत मपश्याम सम्प्रहात् सुदारुणम् । यदकुर्वन् रणे शूरा सृजया कुह भि स्रह

आपके पुत्र से उगाहुआ महारथी युधिष्ठिर युद्धमें हाथियोंकी सेनाके सम्मुख वर्त्त
 मानहुआ, और युद्धमें गर्जनेवाला माद्रीनन्दन वीरनकुल त्रिगर्त्त देशियोंके वडे रथोंसे
 युद्धकरनेवालाहुआ, और अजेय महाबली सात्यकी व चेकितान और अभिमन्यु यह
 तीनों शाल्य और केकय लोगोंसे युद्ध करने के लिये उपस्थित हुए और धृष्टकेतु
 व घटोत्कच रात्रस युद्धमें आपके पुत्रों की रथवाली सेनाके सम्मुख गये, हे राजा
 महारथी सेनापति धृष्टयुम्न महाभयकारी कर्मकरता द्रोणाचार्यके सम्मुख नाभिडा
 । १० । इस प्रकार से आपके इतने धनुषधारी पराक्रमी शूरोंने पाडवों के सम्मुख
 होकर महारों को किया, दिवस में सूर्य के वर्त्तमान होने और आकाश में व्याकु
 लता होनेपर कौरव और पाडवों ने परस्पर भे मारना प्रारम्भ किया, और सुवर्ण
 जटित ध्वजा उस युद्धमें घूमने लगी और व्याघ्रचर्म से मढेहुए रथ और पताकाओं
 समेत महा शोभायुक्त हुए, युद्धमें भिडे हुए परस्पर विजयाभिलाषी सिंह के समान
 गर्जना करनेवाले शूरवीरों के महाक्रुठोर शब्द होनेलगे, वहां हमने वडे भयानक उस
 अपूर्व प्रहार को देखा जिमको वडे शूर वीर सृजय लोगों ने कौरवों के साथ किया

thir, he who was deceived by your son faced the line of elephants
 in the field of battle The joy of Madri, Nal ul stood ready to fight
 against the great archers of Tugart And invincible Sa'yaki of great
 strength Chekitan and Abumanyu all these three were ready to fight
 against the Salyas and Kuryas Dhrishtaketu and Ghatotkach
 the rakshas encountered the charoteers of your sons. Brave
 Dhrishtadyumna the great commander of armies fought bravely
 against Dronacharya 10 Your brave archers attacked the Pandavas
 with their weapons The fighting began when the sun had risen high
 on the sky The golden bedecked banners fluttered in the sky and the
 bannered chariots covered with the lions hide looked very glorious
 Brave warriors aspiring for victory roared like lions We saw the
 brave deeds of Srinjayas in fighting agust the Kauravas 10 The

॥१५॥ मैव त्रै न दिशाराजप्रसूयं शत्रुनापन । विदिशो घायिपश्यामः शरैर्भूक्तैः समन्ततः
 ॥१६॥ शक्तीनां विमलाघ्राणां तीमराणां तपाश्वयताम् । निदिश्यानांच पीतानां नीलोत्पल
 निभाः प्रभाः ॥ १७ ॥ कवचानां धिचिनाणां भूषणानां प्रभास्तथा । सं दिशः प्रदिशयेव
 मासयामासुरोजसा ॥ १८ ॥ चतुर्भिश्च नरेन्द्राणां चन्द्रसूर्यसमप्रभैः । विराजत तदा राजं
 स्तत्र तत्र रणाङ्गनम् ॥ १९ ॥ रथसंघा नरेव्याघ्राः समायंतथ संद्युगे । विरेजुः समरे
 राजन् प्रदा ह्य नभस्तले ॥ २० ॥ भीष्मस्तु रथिनां श्रेष्ठो भीमसेनं महायत्नम् ।
 अघारयत सकुब्धः सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ २१ ॥ ततो भीष्म विनिर्मुक्ता यन्मपुंसाः
 शिखाशिताः । अन्धप्रन् समरे भीमं तैलघौनाः सुतेजनाः ॥ २२ ॥ तस्य शक्ति महा
 घेगां भीमसेनो महायत्नः । कुद्वाशीविपसंकाशां प्रेषयामास भारत ॥ २३ ॥ तामा
 पेतन्तीं सहस्रा रुक्मरुण्डां दुरासदाम् । चिच्छेद समरे भीष्मः शरैः सप्रतपयन्भिः
 ॥ २४ ॥ ततोपरैण भलेन पीतेन निश्चितेन च । कार्मुकं भीमसेनस्य द्विघाचिच्छेदमात्

। १५ । हे शत्रुद्वन्ता हमने च रों ओरसे छोड़े हुए बाणों के कारण आकाश सूर्य
 दिशा विदिशा आदि किसीको नहीं देखा, तीक्ष्णधार वरछी और छोड़े हुए तोपर
 और विपयुक्त नीले कमल के समान खड्गोंके और गदाऊ कवचोंके वा आभूषणों
 के प्रकाश ने आकाश दिशा विदिशाओं को प्रकाशित करा दिया हे राजा उस समय
 वह रणभूमि चंद्रमा सूर्य से प्रकाशमान मुखवाले राजाओं के शरीरों से शोभा
 यमान हुई, हे राजा रथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम युद्ध में जुड़े हुए उस युद्धमें ऐसे शोभाय
 मान विदित होते थे जैसे कि आकाश में ग्रहों समेत सूर्य चंद्रमा शोभा देने हैं २०
 फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त महारथी भीष्मजी ने सब सेनाके देखते उस महावनी भीम
 सेन को रोका और अपने तीक्ष्ण शिखापर धिमे हुए सुंदर प्रकाशित मुवर्ण पुंखवाले
 बाणों से उसके शरीरको घायलकिया हेमन्तवंशी फिर उस महावनी भीमसेनसे शीघ्र
 गामी सूर्य के समान तीव्र वरछी को वड़े क्रोध कर के भीष्म के ऊपर फेंका, फिर
 भीष्म ने उस सुनहरी दण्डवाली महा अस्रय अक्रमात् गिरनेवाली वरछी को अपने

sun in the sky was hid from our view by the shower of arrows in all directions. The sharp edged spears, javelins, poisoned swords of the colour of blue lotus, the jewelled armours and ornaments shone in all directions. The battle field was glorious to behold on account of the sun and moon like faces of the kings. The best of warriors, O king, engaged in battle, looked lustrous like the luminaries in the sky. 20. Brave Bhishm, in great rage, checked brave Blim within sight of all, and with his beautifully shining and sharpened arrows furnished with golden feathers, wounded his body. Then O descendant of Bharat, Blim threw his swift spear, brighter than the sun, against Bhishm; but the latter cut down with his arrows containing hidden knots that unbearable spear of golden staff coming suddenly upon him,

॥ २५ ॥ सात्यकिस्तु ततस्त्पूर्णं भीष्ममासाद्यसयुगे । आकर्णमहितैस्तीक्ष्णैर्मिशितैस्त्रि-
 ग्मतजनैः ॥ २६ ॥ शरैर्वहुभिरानच्छेत् पितरं ते जनेश्वर । ततः सन्धाय चै तीक्ष्ण शर-
 परमदारुणम् ॥ २७ ॥ वाष्पेयस्य रथाङ्गीम पातयामास साधिमाम् तस्याभा-
 प्रदुताराजन् निहतै रथसारथी ॥ २८ ॥ तेन तेनैव धावन्ति मनोमारतरहस । तत-
 सर्वस्य सैन्यस्य नि स्वनस्तुमुलोभवत् ॥ २९ ॥ हाहाकारश्च सज्जते पाण्डवानामहात्-
 मनाम् । अभिद्रवत् घृष्टाणितहयान् यच्छतधावत ॥ ३० ॥ इत्यासीत्तुमुल शब्दो युयुधानं
 रथमति । एतस्मिन्नेव काले तु भीष्म शान्तनवस्तदा ॥ ३१ ॥ न्यहनत् पाण्डवसैन-
 मासुरी निव वृत्रहा । ते घधयमानाभीष्मेण पाञ्चाला सोमकै सह ॥ ३२ ॥ विधरायुद्धे
 मर्ति कृत्वा भीष्ममेवामिदुद्वुः । घृष्ट्यन्मुखाश्चापि पार्था शान्तनव रणे ॥ ३३ ॥

युगग्रन्थीवाले वाणों से काटा, तदनन्तर अपने तीक्ष्ण पतिरंगवाले भल्ल से भीमसेन
 के धनुष को काटा, २५। इसके पीछे सात्यकी ने भीष्मजी के सम्मुख आकर बड़े वेग से
 कानोंतक लैचे हुए तीक्ष्ण प्रकाशित वाणों से आप के पिता को मोहित कर दिया फिर
 भीष्मजी ने बड़े भयानक तीक्ष्ण वाणको चढाकर सात्यकी के सारथी को रथ से गिराया
 हे राजा सारथी के मरनेपर उसके घोड़े मन और वायुकी गतीके समान इधर उधर
 दौड़ने लगे, इस के पीछे सम्पूर्ण सेना में कठिन शब्द प्रकटहुआ और महात्मा
 पाण्डवोंका हाहाकार उत्पन्न हुआ । ३० । चलो दौड़ो घोड़ों को धामो यह कठोर
 शब्द केवल सात्यकी के रथ के विषय में हुआ फिर उसीमय संतनुके पुत्र भीष्म
 जी ने पाण्डवों की सेनाको ऐसे मारा जैसे कि असुरों की सेनाको इंद्र मारता है,
 वह पांचाल देशी सोमकों समेत भीष्म के हाथ से घातल युद्ध में उचम बुद्धिको
 करके भीष्म के सम्मुख दौड़े और अग्रगामी घृष्ट्यन् समेत पाण्डव भी आपके
 पुत्रकी सेना के मारने की इच्छा से उस भीष्म के संमुख दौड़े, हे राजा इसी प्रकार

and with his dart of yellow colour he cut down Blam's bow 25 Then
 Satyaki coming suddenly upon Blushm, your father made him
 insensible with his sharp bright arrows discharged from his bow drawn
 to the ear Blushm put up his dreadful sharp arrow to his bow
 and with it he caused the chariot driver of Satyaki to fall down
 from his seat on the chariot At the death of the driver the horses
 ran lither and thither with the speed of the mind or the wind and
 the noise was tremendous throughout the army of the Pandavas. 30
 "Come, run, check the horses." were the cries on all sides regarding
 the chariot of Satyaki In the meantime Blushm destroyed the army
 of the Pandavas as Indra does the asuras The Panchals with the
 Somals, wounded by Blushm, thought it wise to run away from the
 presence of Blushm like Pandav armies, headed by Dhrishadyunn-

अभ्यधावन् जिगीषतस्तवपुत्रस्य चाहिनीम् । तथैव कौरवा राजन् भीष्मद्रेणपुरोगताः ॥ ३४ ॥ अभ्यधावन्त वेगेन ततो युद्धमयसत ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्रुपदयुद्धे
सप्तमोऽध्यायः ७२ ॥

सञ्जय उवाच । विराटोश्च त्रिभिर्बाणैर्भीष्ममाच्छेत् महाशयम् । विद्योन्तुरगांवात्प
त्रिभिर्बाणैर्महारथः ॥ १ ॥ त प्रत्यविध्वज्जामिर्भीष्मः शान्तनवः शरैः । रुक्मपुत्रैर्महे
वासः शतहस्तो महाबलः ॥ २ ॥ द्रुपिर्गण्डोपधन्वान् भीमधन्वामहारथः । अविध्यदियु
भिः पद्भिरहहस्तः स्तनान्तरे ॥ ३ ॥ कार्मुकंतस्य चिच्छेद फाल्गुनः परवीरहा । अविध्यध
भृशं तीक्ष्णैः पत्रिभिः शत्रुकरीनः ॥ ४ ॥ सोन्यत् कार्मुकगदाय वेगवान् क्रोधमूर्च्छितः ।
अमृष्यमाणः पार्थेन कार्मुकच्छेदमाहवे ॥ ५ ॥ अविध्यत् फाल्गुन राजन् नवत्यानिशितः

आपके भीष्म आदिक वीर भी पाण्डवों के संमुख बड़े वेगसे दौड़े और युद्ध
होने लगा ॥ ३४ ॥

अध्याय ॥ ७१ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे राजा विराट ने तीन बाणों से महारथी भीष्म
को मोहित किया और भीष्म ने अपने तीनबाणों से उसके घोड़ों को घायल करके
अपने तीक्ष्ण दश बाणों से उसको घायल किया और बड़े धनुषधारी महारथी हृद
हरत अश्वत्यामा ने छः बाणों से अर्जुन की छाती को घायल किया फिर शत्रुओं
के मारनेवाले और बलसे हीन करनेवाले अर्जुनने उसके धनुष को काटकर बड़ेतीव्र
बाणों से उसको घायल किया । ३ । हे राजा उस वेगवान् क्रोध से मूर्च्छित युद्धमें
अर्जुनके हाथ से दृष्टेहृये धनुषको असह्य मानकर अश्वत्यामा ने दूसरे धनुष को
लेकर, नौ तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को घायल किया और रुक्म तेजव.णों से वासु

encountered Bhisma to destroy the armies of your sons. Your warriors too, joined in fighting and the battle was furious." 34.

CHAPTER LXVI

Sanjaya continued:—"King Virat made Bhisma insensible with three arrows and the latter having wounded his horses with three arrows, shot at him ten more. Hard Landed Ashwathama wounded Arjun in the breast with six arrows, and the latter, destroyer of enemies cut down his bow and wounded him with his sharp arrows. 3. Incensed with anger, Ashwathama could not bear the high badness of Arjun in cutting down his bow and having taken up another, wounded him with nine sharp arrows and Vasudev with seventy. With his eyes red in anger and with deep sighs and care worn face on account of Vasudev, Arjun passed land the Garuda

शरैः । धासुदंशश्च सतत्या विद्याध परमेपुत्रि ॥ ६ ॥ ततः क्रोधाभि ताप्राज्ञः कृष्णेन
 मह फाल्गुन । दीर्घमणश्च निःश्वस्य चिन्तयित्वागुन पुनः ॥ ७ ॥ धनुः प्रपीड्यवामेन
 करेणामित्रकशनः । गाण्डीवधन्वासंकुद्धः शितान् सन्नतपर्वणः ॥ ८ ॥ जीविता-तकरान्
 घोरान् मगादत्त शिलीमुखान् । तैस्त्वं समरोविध्यद्द्रौणिं चलवताम्बरः ॥ ९ ॥ तस्य
 ते कवचं भित्वापयुः शोणितमाहवे । न त्रिष्यधेच निमिश्रो द्रौणिगाण्डीवधन्वना ॥ १० ॥
 तथैव च शगान् द्रौणि । प्रविमुञ्चन्नविह्वलः । तस्यै स समरे राजंस्त्रातुमिच्छन्
 महाव्रतम् ॥ ११ ॥ तस्य तत् सुमहत्कर्म शशसुः कुरुसत्तमाः । यत् कृष्णाश्यां समेताश्या
 मभ्यापततसंयुगे ॥ १२ ॥ स हि निःश्वसनीकेषु युध्यतेऽभयमास्थितः । अस्त्रप्रामं
 ससंहारं द्रोणात् प्राप्य सुदुर्लभम् ॥ १३ ॥ ममैष आचार्यं सुतो द्रोणस्यापि प्रियः
 सुतः । ब्राह्मणश्च विशेषेण माननीयो ममेति च ॥ १४ ॥ समास्थाय मतिं धीरो
 वामिस्तुः शशुतापनः । कृपांचक्र रथश्रेष्ठो भारद्वाजसुत प्रति ॥ १५ ॥ द्रौणिं त्यक्त्वा
 ततो युद्धे कौन्तेयः श्वेतवाहनः । युयुधे तावकाभिर्घसत्वरमाणः पराक्रमी ॥ १६ ॥

देवजी को घायल किया, इसके पीछे श्रीकृष्णजी समेत क्रोध से लाल नेत्र अर्जुन
 ने बड़ी लम्बी उष्ण श्वासों लेकर बारम्बार बड़ी चिन्ता युक्त होकर वाम हाथ
 से गांडीव धनुष को बहुतसा दवाकर गुप्तग्रन्थी युक्त जीवनके नाश करने वाले
 भयानक शिलीमुख नाम बाणों को धनुष पर चढ़ाया और बड़ी शीघ्रता से उन
 बाणों के द्वारा अश्वत्यामा को घायल किया, उन बाणों ने युद्ध में उसके कवच
 को काटकर उसके रुधिर को पान किया फिर अर्जुनसे घायल किया हुआ पीढ़ामान
 अश्वत्यामाभी उसी रीति के अर्जुन को बाण मारताहुआ और महाव्रत भीष्म-
 जीकी रक्षाकरता हुआ बड़े धैर्य से युद्धमें नियतरहा । १० । उसके उस महाकर्म
 को देखकर कौरवों ने बड़ी मशंशा की जो युद्ध में श्रीकृष्ण के संमुख दौड़ा, और
 द्रौणाचार्य से अतिदुःप्राप्य संहार समेत अस्त्र समूहों को पाकर भयभीत सेना में
 युद्ध करने वाले शत्रु संपाती वीर अर्जुन ने इस बात को विचार करके कि यहमेरे
 गुरुका पुत्र गुरुको अत्यन्त प्यारा और मुख्यकर ब्राह्मण होकर मेरापूजनीय है उस
 को अवश्य जानकर नहीं मारा । १५ । इसके पीछे श्वेत अश्ववाला शीघ्रकर्मी अर्जुन

bow with his left hand, put on his low dreadful arrows having hid-
 den knots destructive of life, and with them he wounded Ashwathama
 in great haste. The arrows thus shot pierced through his armour
 and drank his blood. Wounded by Arjun's arrows, Ashwathama
 shot his arrows in turn and stood firmly for the protection of Bhishma.
 10. The Kauravas highly praised his brave deed as he had assailed
 Shree Krishna. Arjun spared his life because he was worthy of res-
 pect as a Brahman and was the dearly loved son of Dronacharya
 from whom he (Arjun) had acquired the knowledge of arms so difficult
 of achieving. 15. Then dexterous Arjun, the possessor of white
 horses, left Ashwathama and engaged in fighting against and killing

दुर्योधनस्तु दशभिर्गोत्रं पत्रं शिलाशितैः । भीमसेनं महेष्वासं रुद्रमप्युदैः नमरोपयत् ॥ १७ ॥ भीमसेनःसुसंक्रुद्धः परासुकरणं दृढम् । चित्रं कामुकभादत्त शशंश्र निशितान्द्रश ॥ १८ ॥ बाकर्णप्रहितैस्तीक्ष्णैर्वैगवद्भिरजिलागैः । अविध्यत्पूर्णमधम्रः कुराजं महोरसि ॥ १९ ॥ तस्य काञ्चनसूत्रस्थः शरैः छद्वादितोमणिः । रराजोरसि स्य सूर्यो प्रहैरिव समावृतः ॥ २० ॥ पुत्रन्तु नव तेजस्वी भीमसेनेन ताडितः । नामृष्यत यथा नागस्तलशब्दमदोत्कटः ॥ २१ ॥ ततः शरैर्महाजक्रुद्धमपुंखैः शिलाशितैः । भामं विव्याघसंकुञ्जत्प्रासयान्ते चक्रुधितोम् ॥ २२ ॥ तौ युध्यमानौ समरे मृशमन्योन्यविज्ञतौ । पुत्रौ ते देवसङ्घाशौ व्यरोचनामहावली ॥ २३ ॥ चित्रसेने नरव्याघ्रं सौमद्रः पत्वीरहा । अविध्यद्दशभिर्वाणैः पुरुभिन्नञ्च सतामिः ॥ २४ ॥ सत्यव्रतञ्च सतत्या विध्वाशक्रतनो युधि । नृत्यन्निघ रणे धीर अर्चितं न समजीजनत् ॥ २५ ॥

युद्धमें अश्वत्थामा को छोड़कर आपके शूरवीरों को मारता हुआ युद्ध में प्रवृत्त हुआ फिर दुर्योधन ने शृष्ट्रपक्ष युक्त सुनहरी पुंखशिलापर तीक्ष्ण किये हुए दश बाणों से बड़ेबली धनुषधारी भीमसेन को घायल किया, तब अन्यन्त कोपित भीमसेनने मृत्यु कारक रत्नोंसे जटित बड़े दृढ़ धनुष को हाथ में लिया और दश तीक्ष्णबाणों को चढ़ाकर बड़ी शीघ्रतासे अधिक खैच कर राजा दुर्योधनको छाती में घायल किया, उसकी सुवर्णित सूत्र से बँधी हुई छाती की मणिबाणों से संयुक्त होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि आकाशमें ब्रह्मोंसे व्याप्त सूर्य्य होनाहै, २० फिर भीमसेन से घायल आपके तेजस्वी पुत्रने ऐमे नहीं सहा जैसे कि हाथ की हथेली के शब्द से जागाहुआ सर्प शान्तनहीं होता है, हे महाराज सेनाकी रक्षा करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने सुनहरी पुंखके पैनेकिये हुए बाणों से भीमसेन को घायल किया, फिर आप के वह दोनों महाबली पुत्र युद्ध में लड़ते और परस्परघायल करते देवताओं के समान शोभायमान हुए, और नरोत्तम शत्रुहन्ता अभिमन्युने सात तीक्ष्णबाणों से चित्रसेन और पुरुभिन्नको घायल किया फिर युद्ध में नृत्यकरते इन्द्रके समान पराक्रमी अभिमन्युने सत्तरबाणों से सत्यव्रतको घायल करके हम लोगोंको पीड़ित किया । २५ । चित्रसेनने शिलीमुख नाम दशबाणोंसे और

your other warriors. Then Duryodhan wounded Bhim the great warrior and archer with his ten arrows sharpened on stone having gold feathers and vulture quills stuck in them. The latter, in a rage took up his fatal bow decked with gems, and drawing it swiftly and more closely he wounded the former with ten sharp arrows in the breast. The gold thread of his breast jewel, pierced with arrows looked beautiful like the sun surrounded by stars. 20. Your glorious son could not bear being wounded by Bhim like a serpent awakened by the clap of hand. Duryodhan the protector of armies, in a great rage, wounded Bhimsen with his sharpened arrows having gold feathers. Both your sons, fighting with and wounding each other look-

त प्र यिन्द्रादशमिश्चित्रसेनः शिल्कामुञ्जे । सत्यव्रतश्च तपामिः पुरुमित्रश्च सतभिः ॥ २६ ॥ स विद्धो विश्वरत्नकं शशुसवारभमहसुः चिच्छेत् चित्रसेनेभ्यश्चित्रकार्मुकमाजुभिः ॥ २७ ॥ निन्वा चाभ्यस्तनुत्राणशरैर्णो रस्यताडयत् । ततस्ते तावकादीरा राजपुत्रामहात्था ॥ २८ ॥ समेत्ययुधि सरग्घा विन्ध्यधुर्निशितै र्शरैः । ताश्च ध्वान् शरस्तक्षिणैर्ज्वन परमस्त्रवित ॥ २९ ॥ तस्य दृष्ट्वा तु तत्वर्षम परिचब्रुन्तुतास्तथ । द्रुन्त समरे सैन्य वनेकञ्च यद्योत्पणम् ॥ ३० ॥ अपेतशिशिरे कालं समिद्धमिषपायकम् । अत्रोचत सौभद्रस्तव सैन्यानि नाशयन् ॥ ३१ ॥ तत्तस्य चरितं दृष्ट्वा पौत्रस्त विशाम्पते । लक्ष्मणोऽप्यपतन्तूर्णं सात्वतीपुत्रमाहवे ॥ ३२ ॥ अभिमन्यु

सत्यव्रतने नत्र वाणोंसे पुरुमित्रने सातवाणों से उसको घायल किया, उस घायल ओर रुधिर को डालने वाले अभिमन्युने चित्रसेनके उस जड़ाऊ शशुओंके इयाने वाले बड़े धनुषको काटा, और वाणही से उसके कवचको काटकर छातीमें घायल किया फिर आपके उन महावर्ष राजकुमारों ने और महारथियों ने भी उमको अपने तीक्ष्ण वाणोंसे घायल किया फिर उस महा अस्त्रजने उन सबकोभी अपने तीक्ष्ण वाणोंसे घायल किया, फिर युद्धमें महाकुदके समान आपके वीरोंके जलाने वाले उस अभिमन्यु के उस कर्मको आपके पुत्रों ने देखकर उसको चारों ओर से घेरा लिया, । ३० । चैत्र वैशाखकी तीव्र अग्नि के समान अभिमन्यु आपकी सेना को नाश करता बढ़ा शोभित हुआ, हे राजा आपका पौत्र लक्ष्मण उस चरित्र को देखकर शीघ्रही अभिमन्यु के सम्मुख आभिड़ा, फिर अत्यन्त कोपित अभिमन्युने शुभ लक्षण वाले लक्ष्मणको छः विद्युत्खोंसे और सारथी को तीनवाणों से पीड़ा मान किया । ३१ । हे महाराज धृतराष्ट्र उसी प्रकार से लक्ष्मण ने भी अपने

ed glorious like gods And Abhimanyu the best of men and destroyer of foes wounded Chitransen and Purumitra with seven sharp arrows Then dancing in the battle field full of prowess like Indra, Abhimanyu wounded Satyabrat with seventy arrows and gave us much trouble 35 Chitransen wounded him with ten arrows sharpened on stone, Satyabrat with nine and Purumitra with seven Abhimanyu, wounded and bleeding, cut down Chitransen's bow, jem bedecked and destroyer of enemies, and with the same arrow, piercing through his armour, wounded him in the breast. Then your brave sons and warriors too, wounded him with their sharp arrows and that great warrior wounded them with their sharp arrows. Then seeing the great bravery of enraged Abhimanyu the destroyer of foes, your sons surrounded him on all sides 30 Lal o the fierce fire of the Spring, Abhimanyu looked very glorious when he destroyed your armies Seeing his brave deeds, O king, your grandson Lakshman came at once before Abhimanyu and fought with him Abhimanyu thereupon,

रतुसंकुद्धो लक्ष्मणं शुभलक्षणम् । विध्याद्य निशितैः पशुभिः सारथिञ्चत्रिभिः शरैः ॥३३॥
 तथैव लक्ष्मणो राजन् सोमद्रं निशितैः शरैः । अविध्यत महापाज तद्द्रुमुत्त मियाभ
 धत् ॥ ३४ ॥ तस्याभ्यांश्चतुरो हत्वा सारथिञ्च महाबलः । अभ्यद्रवत् सोमद्रो लक्ष्मणं
 निशितैः शरैः ॥ ३५ ॥ हताश्वेतु रथे तिष्ठन् लक्ष्मणः परवीरहा । शक्तिं चित्तेप संकुर्यः
 सोमद्रस्य रथं प्रति ॥ ३६ ॥ तामापतन्तो सदसाघोररुपांदुरासदाम् । अभिमन्युः शरै
 स्तीक्ष्णैश्चिच्छेद् भुजगोपमाम् ॥ ३७ ॥ ततः स्वरथमारोप्य लक्ष्मणं गौतमस्तदा । अपो
 याद् रथेनाश्री सर्वैस्सैन्यस्य पश्यनः ॥ ३८ ॥ ततः समाकुले तस्मिन् यत्तमानि महाभये ।
 अश्वद्रवन् जिघांसन्तः परस्परचपैविणः ॥ ३९ ॥ तावकाव गच्छेज्जान्ताः पाण्डवाश्च
 महात्माः । जुह्वन्तं समरे प्राणान् निजघ्नुरितरेतरम् ॥ ४० ॥ मुक्तकेशा विक्रवचा
 विरघाशिञ्जकामुक्ताः । याशुभिः समयुध्यन्त सृज्याः कुशभिः सह ॥ ४१ ॥ ततो भीष्मो
 महाबाहुः पाण्डवानां महात्मनाम् । सेनां जघान संकुद्धो दिव्यैस्त्रैर्विहायलः

वाणों से अभिमन्यु को ऐसा घायल किया जिसके देखने से आश्चर्यसा होना है
 फिर महारथी अभिमन्यु उसके चारों घोड़ों को सारथी समेत मारकर लक्ष्मण के
 समुल दौड़ा, फिर मृतक घोड़ों के रथपर नियत शत्रु के वीरों के मारनेवाले
 अत्यन्त क्रोधित लक्ष्मण ने अभिमन्यु के रथपर वरछीको फेंका, अभिमन्यु ने उस
 भयानक रूप असहसर्पाकृति आनेवाली वरछी को अपने तीव्र वाणों से काटा,
 फिर कृपाचार्य जी लक्ष्मण को अपने रथपर बैठाकर सयसेना के देखते हुए
 उसको रथके द्वारा दूर लेगये, फिर बड़े भयकारी तुल युद्धके वर्तमान होनेपर
 परस्पर विजयाभिलाषी शूरीर एक एकको मारतेहुए सम्मुल दौड़े, आपके बड़े
 धनुषधारी और महारथी पांडव युद्धमें प्राणोंको होमने हुए परस्पर में मारने लगे
 फिर छुड़ेवालकवचरहित दूटे धनुष धृजय लोग अपनी भुजाओं से सौर्यों से अत्यन्त
 युद्ध करने वाले हुए, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी ने बड़े क्रोध युक्त होकर अपने

in great rage, wounded Lakshman with six darts and his chariot
 driver with three. Lakshman too, in the same manner, O Ling
 Dhritrashttra, wounded Abhimanyu in a wonderful way. Thereupon
 Abhimanyu killed all his four horses and the driver and rushed upon
 him. Seated on the chariot of which the horses were dead, enraged
 Lakshman the destroyer of foes, hurled a spear at the chariot of Abhi-
 manyu. The latter cut down with his arrows the unbearable spear
 coming towards him like a serpent. Kripacharya then seated Laksh-
 man on his own chariot and carried him far away from the sight of
 the enemy. Then there was a severe fighting and the warriors desirous
 of victory rushed against one another killing and destroying. Your
 great archers and the Pandav warriors, careless of their lives fought
 bravely, and with dishevelled hair and destitute of armour and with
 broken bows the Srinjayas and Kauravas fought a hard contested

॥ ४२ ॥ हतेश्वरैर्गजैस्तत्र नरेरश्वैश्च पातितै । राधिभि सादिभिश्चैव समास्ती
र्यत मेदिनी ॥ ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपधपर्वणि द्वंद्वयुद्धे
त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७३ ॥

संजय उवाच । अपूर्वाजन् महाबाहु सात्यकिर्युद्धदुर्मद । विह्वलय चापं समरे
भारसाहमनुत्तमम् ॥ १ ॥ प्रामुख्यत्पुनसयुक्तान् शरानाग्नीविषोपमान् । प्रगाढ ऋषुचित्रञ्च
दर्शयन् हस्तलाघवम् ॥ २ ॥ तस्य क्षिप्रतश्चाप शरानन्धाश्च मुञ्चत । आदद् नस्य
भूयश्च सन्दधानस्य चापरान् ॥ ३ ॥ क्षिप्रतश्चपरास्तस्य रणे शत्रून्नाविनिघ्नत । ददशे
रूपमत्यर्थं मेघस्यैव प्रवर्षत ॥ ४ ॥ तमुदीर्यन्तमालोक्य राजा दृश्योघनस्ततः । रथाना
मयुत तस्य प्रेषयामास भारत ॥ ५ ॥ तास्तु सर्वान्महेष्वासान् सात्यकिः सायधिक्रमः ।
जघान परमेष्वालो दिष्टेनास्त्रेण चरियवान् ॥ ६ ॥ स कृत्वा दाहण कर्म प्रगृहीतशर
सन । आससाद् ततो वीरो भूरिश्रवणमाहवे ॥ ७ ॥ स हि स दृश्य सेनाते युयुधानेन

दिव्यअस्त्रों से महात्मा पांडवोंकी सेनाको मारा, उस समय विनास्र भी के हाथी
मनुष्य घोड़ों के वा रथी और अश्वारूढ़ों के गिरने से युद्धभूमि अत्यन्त व्याप्त हो गई ॥

अध्याय ७४ ॥

संजय बोले हे राजा फिर युद्धमें दुर्मद महाबाहु सात्यकी ने अपने उग्र धनुषको
खेंचकर, अपनी हस्तलाघवता को दिखाते सपुन सर्पाकृति वीक्षण वाणों को छोड़ते
और बड़ी शीघ्रता से अनेक वाणों को फेंकते शत्रुओं को मारते हुए सात्यकी
का ऐसा रूप दिखाई दिया जैसे कि अत्यन्त बरसते हुए बादलका रूप दिखाई
देता है, फिर राजा दुर्योधन ने उस गर्जने वाले सात्यकीको देखकर उसके उपर
दशहजार रथियोंको भेजा ॥५॥ फिरसत्य विक्रम महाबली उग्रधनुषधारी सात्यकी ने
अपने दिव्यास्त्रों से उन बडे २ धनुषधारियोंको मारा, फिर इसवीर धनुषधारी ने
महा कठिन कर्मको कर के भूरिश्रवा को सम्मुख पाया, वह कौरवों की कीर्तिक्र

battle Then brave Bhisma, in great anger, discharged his celestial
weapons at the Pandav army At this the field was strewn over with
the bodies of the riderless elephants, men, horses and char oteers" 43

CHAPTER LXXIV

Sanjaya to Dhritrashtra — 'Satyaki the best of warriors, Drawing
his bow and showing the dexterity of his hand, discharged feathered
arrows of the form of snakes, and with great rapidity discharging
many arrows and destroying the enemies, Satyaki's form appeared like
that of a raining cloud. Prince Duryodhan, seeing that roaring Sat
yaki, sent ten thousands of charioteers against him 5 But Satyaki
the great archer of true prowess killed those great archers with his
arrows And the brave archer in doing that deed of valour, found

प नितान् । अभ्यधावत संकुद्रः कृष्णां कीर्त्तिवर्द्धनः ॥ ८ ॥ इन्द्रायुधसवर्णं तु वि-
स्फार्य सुमहद्वनुः । सुप्रधानवज्रसङ्गं शान् शरानाशीघ्रिपीपमान् ॥ ९ ॥ सहस्रशो महाराज
दर्शयन् पाण्डिनाघवम् । शरान्स्तान्मृत्युसंस्पर्शान् सोऽत्यक्रोधपदानुगा ॥ १० ॥ न विपेदुस्तदा
राजन् दुद्वुस्ते समन्ततः । विहाय सत्यकीं राजन् संमरे युद्धदुर्मदम् ॥ ११ ॥
तं दृष्ट्वा युयुधानस्य सुता देश महाबला । महारथा समापयतास्त्रिध्रुवर्मा युधध्वजाः
॥ १२ ॥ समासाद्य महेश्वासं भूरिश्रवसमाहवे । ऊचुः सर्वे सुसंरुधा यूपकैतुं महारणे
॥ १३ ॥ भो भो कौत्सदायाद् सदास्माभिमहाबल । पाहि युधस्य संग्रामे समस्तैः पृथगे
त्वेवा ॥ १४ ॥ अस्मान् वा त्वम्पराजित्य यशः प्राप्स्यसि सयुगे । यय वा त्वां पराजित्य
धीर्त्तिं धास्यामेदे पितुः ॥ १५ ॥ एवमुक्तस्तदा शूरेस्तानुवाच महाबलः । धीर्य्यस्त्राघी
नर्ध्रेष्ठस्तान् दृष्ट्वासमवस्थितान् ॥ १६ ॥ साध्विदं कथ्य ते वीरा वधेयं मति रचयः ।

बढ़ाने वाला भूरिश्रवा उस सेनाको सात्यकी के हाथ से पीड़ित देखकर बड़ा
क्रोध युक्त हो के सम्मुख दौड़ा हे राजा उसनेभी अपनी इस्तलाघवता को दिखाकर
इन्द्र वज्रके ममान धनुष को टंकारकर सर्पों के ममान वज्रके सदृश हजारों बाणों
को छोड़ा, और सात्यकी के साथी शूर वीर उनगुत्यु के समान स्पर्श वाले बाणों
को नहीं सहसके और सब उसदुर्मद सात्यकी को युद्धमें अकेलाही छोड़कर चारों
ओर को भागे । ११ । फिर सात्यकी के बड़े धनुषधारी महारथी कवचों से
शोभित देश पुत्रों ने उस सेना को भागता देखकर बड़ाक्रोधित होके उम यूपध्वज
बड़े धनुषधारी भूरिश्रवाके सम्मुखहोकर बोले, हे कौरवों के प्यारे पुत्र महाबली
आओ और युद्धमें हमसबों के साथ अथवा जुटे २ के साथ युद्ध को करो, तुमसं-
ग्राममें हमको विजय करके कीर्त्तितवानहोगे अथवा हम तुमको विजय करके पिताको
श्रानन्ददेंगे, तबउन शूरवीरों से ऐसा कहा हुआ अपने बलसे प्रशंसा पाने वाला
नरोत्तम महाबली भूरिश्रवा उनको सम्मुख नियत देख कर बोला । १६ । हे वीरलो

Bhurishrava before him. Bhurishrava the perpetuator of the fame of the Kauravas, seeing the destruction of the Kauravas, rushed upon him in a rage. And showing the dexterity of his hand and twanging his bow like the vajra of India, discharged thousands of arrows like vajra or snakes. The warriors who accompanied Satyaki, could not bear the wounds of those fatal arrows and ran away in all directions, leaving Satyaki alone 11. Then the ten brave sons of Satyaki, great archers sheathed in armour, seeing the flight of the army, faced the great archer Bhurishrava and said,—“Darling of the Kauravas! Come and fight with us jointly or separately. Either you will gain fame by conquering us or we shall please father by conquering you.” Thus challenged by these warriors, the famous warrior Bhurishrava the best of men, seeing them in his presence, said, 16 “Well, warriors!

युधध्वं साहिता यत्ता निह निध्यामि घो रणे ॥ १७ ॥ एयसुं कामहेष्यास्ते वीराः क्षिप्र
कारिणः । महता शश्वपेण ध्वघावन्नन्दिगम् ॥ १८ ॥ खोपराहणे महाराज सप्राम
स्तुमुलो भवत् । एकस्यच वदनां च समेतानां रणाजिरे ॥ १९ ॥ तमेकं रथिनां श्रेष्ठं शरै
स्ते समदा किरन् । प्रावृषीव यथामेकं सिपिचञ्जलदानृष ॥ २० ॥ तैस्तु मुक्तान् शरान्
घोरान् यमदण्डा शनिप्रभान् । असम्प्राप्ता नस प्रांतबिच्छेदाशुमहारथः ॥ २१ ॥ परि
घार्य महाबाहुं निहन्तुमुपचक्रमु । सौमदत्तिस्ततः दृष्टस्तेषां चापाणि भागत ॥ २२ ॥
चिच्छेत् समरे राजन् युध्व मानो महारथैः । ते हता न्यपतन् राजन् घञ्जभगना इध
द्रुमा ॥ २३ ॥ तान् दृष्ट्वा निहतान् वीरां रणे पुत्रान्महाबलान् । धार्ष्ण्यो धिनदन् राजन्

गो यह बहुत उत्तम है जो अबतुम्हारी ऐसीही इच्छा है तो हमसे सब इकट्ठे होकर
लड़ो मैं युद्ध में तुमसब उपाय करने वालों को मारूंगा, ऐसे परस्पर कहकर बड़े
धनुषधारी शीघ्रता करने वाले शत्रुओंके पराजय करनेवाले उन वीरों ने बाणों की
वर्षाचारों ओरसे की हे महाराज तीसरे पहर तक एक का बहुतों के साथ महा युद्ध
हुआ फिर इन सबोंने उस रथियों में श्रेष्ठ अकेले को बाणों से ढक कर ऐसा
सींचा जैसा कि वर्षा ऋतु में सुमेरु पर्वत को बादल सींचते हैं । २० । उस
भ्रान्ति रहित महारथी ने उन सबों के छोड़े हुए यमदण्ड वा इन्द्र वज्र के समान
प्रकाशित बाणसमूहों को बड़ी शीघ्रता पूर्वक मार्ग में ही काटा, हे राजा हमने
वहां पर सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवाके अद्भुत पराक्रम को देखा कि जो अकेलाही
निर्भयके समान अनेकों से लड़ा, दश महारथियों ने बाणोंकी वर्षाको छोडकर
उस महाबाहुको चारोंओरसे घेरकर मारनेका विचारकिया, हे भरतर्षभ तब तो महा
रथी भूरिश्रवा ने अत्यन्त कोपयुक्त होकर एक निमिषही में अपने दश बाणों से
उनके दशों धनुषों को काटा, तदनन्तर इन दूटे धनुषवाले वीरोंके शिरों को अपने
गुप्तग्रन्थी वाले भल्लोंसे काटडाला, वह माकर पृथ्वीपर ऐसे गिरे जैसे कि वज्रसे

I shall gratify your desire by fighting with you all at once." Thus bandying words with one another, those great and dexterous warriors, destroyers of foes, showered their arrows from all sides. The one O king, fought against many till afternoon and they all covered him with the shower of their arrows as the clouds do Sumeru mountains. 20 That warrior with a calm and collected mind, cut down all their arrows like the vajra of Indra or the staff of Yam, in the way. There we saw, O king, the matchless prowess of Somdatta's son Bhuishrava who alone, like an intrepid warrior, fought against many. Then the ten warriors, stopping their shower of arrows, surrounded him from all sides in order to kill him. Thereupon, Bhuishrava in great rage cut down in a trice the ten bows of those warriors with ten of his arrows and then cut down their heads with his arrows having hidden

भूरिश्रव संमथ्ययात् ॥ २४ ॥ रथं रथेन समरे गिडपित्वा महावली । तत्सन्धोर्गंधि
समरे निहृत्य रथवाजिनः ॥ २५ ॥ विरथा घञ्जिवर्णस्तौ समैयातां महारथौ । मञ्जुद्वान्महा
खड्गौ तौ चर्म वरधारिणौ ॥ २६ ॥ शुशुमाते नगव्याघ्रौ युद्धाय समवस्थितौ । ततः
सात्यकि मथ्येत्य भिक्षिशयधारिणम् ॥ २७ ॥ भीमसेनश्शतान् राजन् रथ मारोपयत्
तदा । तद्यपि तनयो राजन् भूरिश्रव समाह्वये ॥ २८ ॥ आर्णवयद्रथं तूर्णं पश्यतां सर्व
घञ्जिनाम् । तक्षिमस्तथा वस्त्रमाने रणे भीष्मे महाभयम् ॥ २९ ॥ अयेऽघवन्त संरन्धाः
पाण्डवा भरतर्षभ । लोहितापति चादित्ये त्वरमाणो घनशयः ॥ ३० ॥ पञ्चदशति
साहस्राग्निजवान् महारथन् । ते हि दुर्धौघनादिष्टाभ्यन्तद्रा पाण्डिवर्णे ॥ ३१ ॥ सम्प्रा-
प्येय गतां नाश शलमाहवपावकम् । ततो मत्स्याः केकयाश्च घनुर्वेद्विशाखाः ॥ ३२ ॥

दूटे हुए वृक्ष पृथ्वी पर गिरते हैं, हे राजा युद्धमें मरेहुए महावली वीर पुत्रों को
देखकर, बड़ी गर्जना करता हुआ सात्यकी भूरिश्रवा के सम्मुख गया और दोनों
महावली युद्ध में रथ से रथको टक्कर देकर रथोंके घोड़ोंको परस्पर मार विरथ
होके सम्मुख गर्जेते हुए द्रुपद युद्ध करने लगे, फिर वह बड़े खड्ग और दालोंको
धारण किये हुए युद्धमें प्रवृत्त महा शोभायमान हुए । २६ । हे राजाइस के पीछे
भीमसेन ने उत्तम खड्ग धारी सात्यकी के पास आकर उनको रथपर सवारकिया
फिर आपके पुत्र ने भी सब घनुष धारियों के देखने हुए शीघ्रही भूरिश्रवा को रथ
पर सवारकिया, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ इम प्रकार से उस युद्ध के प्रवृत्त होनेपर
महा क्रोधित पांडव और भीष्मजी भी युद्ध में प्रवृत्तहुए. सूर्य के अदृश्य होने
पर बड़ी शीघ्रता करने वाले अर्जुन ने पच्चीस हजार महारथियों को मारा । ३०।
फिर वह दुर्धौघन की आज्ञा से अर्जुन के मारनेकी इच्छा में अर्जुन को नपाकरही
ऐसे नष्ट होगये जैसे कि आग्नि में दींडीभस्म होजाती हैं, इस पीछे घनुर्वेदमें पांडव
मत्स्य और केकयो ने आकर पुत्रसमेत अर्जुनकी चारों ओर के रक्षाकी फिर

knots. They fell dead on the ground like trees struck down by light-
ning. Seeing his brave sons dead in the field of battle, O king,
Satyaki faced Bhurishrava with a tremendous roar. The two war-
riors then dashed their chariots against each other, and having killed
each other's horses, they dismounted from their chariots and continued
their duel. Both looked very glorious with their shields and swords.
26. Then O king, Bhimsen came to Satyaki the wielder of good sword
and mounted him on his own chariot. Your son too, within sight of
all the warriors, took Bhurishrava on his own chariot. When the
battle was thus raging, O best of the descendants of Bharat, the en-
raged Pandavas and Bhishm joined in combat. Before sunset Arjun
had destroyed twentyfive thousands of warriors.30. They had come by
Duryodhan's order to destroy Arjun but unable to have their hands on
him they were themselves destroyed in the attempt as the locusts in

परिवहुस्तदा पार्थ सहपुत्रं महारथम् । एतस्मिन्नेव कालेन सूर्यस्तमुपगच्छति ॥ ३१ ॥
 सर्वेषां चैव सैन्यानां प्रमोहः समजायत । अघहार्त्ततथक्ते पितादेवमनस्तथ ॥ ३४ ॥
 सन्ध्याकाले महाराज सैन्यानां श्रांतवाहनः । पाण्डवानां कुरूणाञ्च परस्परसमागमे
 ॥ ३५ ॥ ते सेने भृशसंविभ्रे ययन्तु स्वभिधेशनम् । ततः स्वशिविरकृत्वा न्यविशंस्तेत्रंभारत ।
 पाण्डवा-सुत्रै-सार्धं कुरुवथ यथाविधि ॥ ३६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि पंचमदिवसावहारे
 चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

अच्छे प्रकारसें उठी हुई धूल के बादलों से सूर्यास्तसा होगया उस समय सूर्यास्त के कारण सेना में बड़ा मोह उत्पन्न हुआ, इस के पीछे हे महाराज, आपके पिता देवव्रतजिनके घोड़े धके हुए थे उन भीष्मजी ने सायंकालके समय सेनाको विभ्राम दिया, पाण्डव और कौरवों के परस्पर युद्धसे अत्यंत व्याकुल वह दोनों ओर की सेना अपने निवास्थान को गई, इसके पीछे मंजयों समेत पाण्डव और कौरव बुद्धि के अनुसार अपने २ डेरोंमें जाकर स्थित हुए ॥ ३६ ॥

fic. Then the great niches of Matsya of Kaikaya, protected Arjun and his son from all sides. The sun at that time was so covered with the rising dust that it appeared as if he was about to set and the armies became insensible on account of the darkness. Then, O king, your father Devabrat whose horses were tired, issued orders to them to rest for the night. Both the armies depressed much on account of the excessive fighting between the Kauravas and the Pandavas, retired as well as the Kauravas and entered their tents." 36.



सञ्जय उवाच । तेष्विध्रम्य ततो राजन् सहिता सुरवाण्डवाः । व्यतीतायातुश्चरं न
 पुनर्युद्धायीनिर्घयुः ॥ १ ॥ तत्रशत्रो महानासीत्तत्र तेषाञ्च भरत । युज्यतारथमुपयाना
 कल्पता चैव दतिनाम् ॥ २ ॥ सनह्यनापदानिना हयानाचैव भरत । शरदुद्रुभि तादश्च
 तुमल सर्वतोभवत् ॥ ३ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा घृष्टयुग्मभापत् । व्यूहव्यूहमहागहो
 मकरशत्रुनाशगम् ॥ ४ ॥ पथमुक्कस्तु पाथेन घृष्टयुग्मोमहारथ व्याधिदेशमहागज
 रथिनोरथिनांवर ॥ ५ ॥ शिरोमूढद्रुपदस्तस्य पांडवश्चरनजय । क्षत्रुषी सहदेवश्च
 नकुलश्चमहारथ ॥ ६ ॥ तुंडमासीन् महाराज भीमसेनोमहारथ । भीमद्रोष्ट्रीपदेयाथ
 राक्षसश्चघटोत्कच ॥ ७ ॥ सात्यकि धर्मराश्च व्यूहग्रीवासमास्थिता । घृष्टमासीन्महा
 राज विराटोवाहिनीपति ॥ ८ ॥ घृष्टयुग्मेन सहितो महायासेनवाचुत् । केकयाप्रातर
 पचवामपार्श्वे समाश्रिता ॥ ९ ॥ घृष्टकतुर्नज्याप्रश्नोक्त्वितामश्चवीर्यवान् । दक्षिणपक्षमा

आन्याय । ७५ ॥

संजय बोलै हे राजा फिर वह कौरव पांडव रात्रि को व्यतीत करके प्रातः
 कालही युद्ध करने को चले, इसके पीछे उन पांडवों के और आप के पुत्रों के
 उत्तम रथों के जुड़ते हुए घोड़ों के महा शब्द होने लगे और सब ओरमें शंख वा
 दुन्दुभियों के कठिन शब्द भी सुनाई दिये तब राजा युधिष्ठिरने घृष्टयुग्म में कहा
 कि हेमहाबाहु तुम मकरव्यूहको तैयार करो वह व्यूह शत्रुओं का संतप्त करनेवाला
 है, युधिष्ठिर की आज्ञा पातेही उन महारथी घृष्टयुग्म ने रथी शूरीरोंको आज्ञा की
 उस व्यूहका शिर तो राजा द्रुपद और अर्जुन हुआ और नेत्रमें महारथी नकुल
 और सहदेवहुए । ६ । और मुखमें महा बली भीमसेन हुआ और व्यूहकी ग्रीवा में
 अभिमन्यु द्रौपदी के पांचो पुत्र घटोत्कच राक्षस, सात्यकी, और धर्मराज हुए और
 पीठ पर बड़ी सेना युक्त सेनापति घृष्टयुग्म और विराट उपस्थित हुए और
 वाम भागमें पांचों भाई केकय वर्त्तमान हुए, और नरोत्तम घृष्टकेतु और पराक्रमी

CHAPTER LXXV

"At the close of the night," continued Sanjaya, "early in the morn-
 ing, the Kauravas and the Pandavas started for fighting. The horses
 which drew the chariots of the Pandavas and those of your sons, made
 a tremendous noise with their neighing. The peals from the conchs
 and trumpets were yet more prominent. Then Prince Yudhishtir
 thus addressed Dhrishtadyumna—"Arrange your armies in the form
 of a crocodile great warrior, thy army will destroy the enemies." At
 Yudhishtir's command, Dhrishtadyumna arranged the warriors. King
 Drupad and Arjun were stationed at the head, and Nakul and Saha-
 dev formed the eyes. 6 At the mouth stood brave Bhim and at
 the neck were Abhimanyu, the five sons of Draupadi, Gha'otkach the
 rakshas, Satyaki and Yudhishtir. On the back were stationed Dhrish-
 tadyumna the commander and Virat with a large army. On the left

शिरस्य स्थितोऽयुहस्यरक्षणे । १० ॥ पादयोस्तु महाराज स्थित श्रीमान्महाराज । कुन्ति भोज शतानीको महत्स्य सेनयावृत ॥ ११ ॥ शिखण्डोऽयुहस्यस्य सोमकैः सवृतोऽवली । इरावाश्चतत पञ्चमेकास्य व्यस्यस्थितौ ॥ १२ ॥ एवमेव महाऽयुहं व्यूहभारतपाटवाः । सूर्योऽयुहं महाराज पुनर्युद्धायदशितः ॥ १३ ॥ कौरवाणामयुस्तूर्णं हस्त्यश्वरथपत्तिभिः । सन्निवृत्तैर्ध्वजैश्चैव । शस्त्रविमलैः शितैः ॥ १४ ॥ व्यूहदृष्टवान्तत्सैन्यं पितादिव प्रतस्तथ । क्रौंचेनमहत्ताराजान् प्रत्यव्यूहतपाहिनीम् ॥ १५ ॥ तस्यतुडेमहेऽवासो भारद्वाजो व्यरोचत । अश्वत्थामाकृपश्चैव चक्षुगसीश्वरेश्वर ॥ १६ ॥ कृतवर्मान्तु सहित कावोजचर पाण्डिकैः । शिरसासीनश्चेष्ट श्रेष्ठ सर्वेषुऽपताम् ॥ १७ ॥ श्रीवायाशूरसेनश्च तच्च पुत्रश्चमारिष । दुर्योधनोऽप्यजगज्जिह्वंभुभिर्वृतः ॥ १८ ॥ प्राज्योतिषपंतु सहितोऽमद्रसौ वीरकेऋषे । उरस्यभूश्रश्चेष्ट महत्यासेनयावृत ॥ १९ ॥ स्वसेनयाच सहित सुशर्मा

चेकितान दक्षिण पक्षमे नियत होकर व्यूहके दक्षिण ओर नियत हुए । १० । और हे राजा बड़ी सेना समेत श्री मान् महारथी कुन्तभोज और शतानीक व्यूहके चरणों पर स्थिर हुए, फिर बड़ा धनुषधारी बलवान् शिखंडीसोमकों समेत और राजा इरावान् उम मकरव्यूहकी पूंछपर नियत हुए, इस रीति से मकरव्यूहको रचकर सूर्य के उदय होनेपर सब पांडव फिर युद्ध करने को शस्त्रधारी होकर उपस्थित हुए और स्य हाथी घोड़े और बड़ी ऊंची ध्वजा वाले क्षत्रियों से युक्त सब प्रकार के स्वच्छ अस्त्रों समेत कौरवों के सम्मुख गये, हे धृतराष्ट्र आपके पिता भीष्मजी ने उस अलंकृत सेनाको देखकर अपनी सेनाको भी क्रौंच नामकव्यूह में बड़ी रचना से बनाया । १५ । उसके मुखपर बड़े धनुर्धर द्रोणाचार्य और नेत्रोंपर अश्वत्थामा और कृपाचार्य हुए और शिरकी ओर कृतवर्मा बाल्हीक और काम्बोज वाले हुए, और भीवा में सब राजाओं समेत आपका पुत्र दुर्योधन और शूरसेन नियत हुए, और बड़ी सेनासमेत राजा प्राज्योतिष भद्र और केकयोंसमेत सौवीर

wing were the five Kurukaya brothers, and Dhrishtaketu the best of men with brave Chekitan was stationed on the right wing 10 And brave kuntibhoj and Shatanik stood, O king, at the feet of that array Then the great archer Shukhandi together with the Somak and King Iravan stood at the tail Thus having arrayed the army in the form of a crocodile the Pandavas armed with weapons stood ready to fight at sunrise and with chariots, elephants, horses and warriors having high banners and well polished weapons they faced the Kauravas And seeing O king, that well arranged army, your father Bhishm formed his armies into an array named Kraunch 15 At its mouth was the great archer Dronacharya and Ashwathama and Kripacharya were at the eyes At its head were Kritvarma, Bahlik and the Cambojes and at the neck was Duryodhan your son together with all the princes and Shursen King Pragjyotish with a

प्रस्थलाधिप । याम पक्ष समाश्रित्य दक्षिण समवास्थित ॥ २० ॥ तुषारा यवगाश्चैव
 शकाश्चसह च्युचुपे । दक्षिण पक्षमाश्रित्य स्थिताव्यूहस्य भारत ॥ २१ ॥ भुनायुश्च
 शतायुश्च सोमदत्तिश्च मारिष । व्यूहस्य जघनेतश्च्युत्तमाणा परस्परम् ॥ २२ ॥
 ततो युद्धाय सजग्मु पाण्डवाः कौरवै सह । सूर्योदये महाराज युद्धमभून्नाहत् ॥ २३ ॥
 प्रतीपू रथिनो नामा नामांश्च रथिनोययुः । हयारोहान् रथारोहा रथिनश्चापि सादिन
 ॥ २४ ॥ सादिनश्च हयान् राजान् रथिनश्च महारणे । हस्त्यारोहान् हयारोहा रथिन
 सादिनस्तथा ॥ २५ ॥ रथिनः पश्चिभिः साद्धं सादिनथापि पश्चिभिः । अन्योग्य समरे
 राजान् प्रस्थयावभ्रमार्पिता ॥ २६ ॥ भीमसेनार्जुनयमैर्गुता च्च वैर्महाश्वैः । युयुभेपाडधी
 सेना नक्षत्रैर्विशशर्वरी ॥ २७ ॥ तथा भीष्मरुपद्रोगशल्यदुर्योधनादीभिः । तत्रापि

छातीपर नियतहुआ और प्रस्थल, देशका राजा सुशर्मा अपनी सेना समेत बायें भाग
 में शकों को घारण करके नियत हुआ । २० । और तुषारयवन और शक चोल्कों
 समेत व्यूहके दाहिने भाग में बड़ी मावधानी से बर्तनान हुए, और श्रुतायु
 शतायु सोमदत्त मारिष यह सब . व्यूहकी जंघापर रक्षा करनेवाले हुए
 इनके पीछे हे राजा सूर्यके उदय होने पर पाण्डव कौरवोंके समूह युद्ध के निमित्त
 चने फिर युद्धहोना प्रारम्भ हुआ, हाथी रथियों के सम्मुख गये और रथी हाथियों
 के सम्मुख हुए अश्वारूढ अश्वारूढ़ों के और रथी अश्वारूढ़ों के और अश्व-
 रूढ़ घोड़ों के सम्मुख पहुँचे और हाथी हाथीके सवारों से और रथी रथियोंके सम्मुख
 उपस्थित हुए हे राजा रथि और अश्वारूढ़ पत्तियों से युद्ध करने लगे और युद्धमें
 महाक्रोधित होकर परस्पर सम्मुख टाँड़े २६ । और भीमसेन अर्जुन और नकुल व सहदेव
 पहमव अन्य महारथियोंमेरक्षित होकर ऐसी बड़ी शोभा को प्राप्तहुए जैसी कि
 नक्षत्रों से रात्रिकी शोभा होती है, इसी प्रकार आपकी सेना भी भीष्म कृपाचार्य

large army, Bhadras and the Kauryas with the Sauvns stood at the
 the left side 20 Tushru javan and Shak
 with the Cholkas, stood on the right wing, and Shrutayu, Shrtayu,
 Somdatta and Marish guarded the thigh port on of the array Then
 O king, when the sun had risen, the armies of the Kaurvas and the
 Pandavas advanced to battle and the fighting commenced The ele
 phants faced the chariots, the horsemen encountered the horsemen
 and charioteers faced the horsemen Elephant riders encountered the
 elephant riders and charioteers attacked charioteers. The charioteers
 and horsemen attacked those on foot and ran against one another in
 anger 26 Bhimsen, Arjun, Nakul and Sabadev, protected by
 other charioteers, embellished the battle field as the stars do the night.
 In the same manner, your army was glorious by the presence of Bhishma,

युधयन्त भावः ॥ ३५ ॥ प्रतिसवार्यं चास्त्राणि तैर्घान्यस्य विशाम्पते । युयुधु पाण्डवा
 धैव कीरवाय महावला ॥ ३७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वण्युत्तरे पट्ट दिवसयुद्धारम्भे
 पंच सप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

धृतराज उवाच । एव बहूगुणं सैन्यं मेव बहूविधंपुरा । धृष्टमेव यथाशास्त्रममोघञ्चैव
 सञ्जय ॥ १ ॥ हृष्टमस्माकमत्यन्तमभिकामञ्चनं सदा । प्रहृतमन्यसनोपेतं पुरस्ताद्
 दृष्टविक्रमम् ॥ २ ॥ नातिवृद्धमवालञ्च न दृष्टं न च पीरम् । लघुवृत्तापतप्रायं सार
 योघमनामयम् ॥ ३ ॥ आत्तसन्नाहशस्त्रञ्च बहूनाम्नरिप्रहम् । असियुद्धे नियुद्धे च
 गदायुद्धे च कौशिकम् ॥ ४ ॥ प्रासष्टितोमरेष्याजौ परिघेष्यायसेयुच । भिन्दिपालेषु
 शस्त्रीषु मुसलेषु च सर्वथा ॥ ५ ॥ कपनेषु च चापेषु कणपेषुचसर्वथा । क्षेपणीयेषु

एक म्यान पर वर्त्तमान होकर सब युद्ध में प्रवृत्त हुए वह कौरव पाण्डव उभ महायुद्ध
 में परस्पर शत्रुओंको प्रहार करके युद्ध करते हुए ३७ ॥

अध्याय ७८ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय यह मेनावहूगुण संपन्न अनेक प्रकार के शास्त्रके अ-
 नुसार अलंकृत और युद्धमें मफूट है, और हमारी सेना भी सदैव प्रसन्न सकल रूप
 और उदार है जिसका कि पराक्रम भारभेदी देवराजाना है, न बहुत वृद्धा न
 बालक न दुर्बल न पुष्ट है किन्तु हस्तलापरता आदि उपायोंमें कुशल अत्यन्त दृढश्रमवाली
 और नीरोग है, क्रम और शत्रुओंकी धारणा करने वाली अनेक शस्त्र समूहों से पूर्ण
 भुजा गडग गदा इत्यादि में युक्त लड़ाई में उड़ी तीव्र है, प्रास दुवारालयग तोपर
 परिघ लोहके भिन्दिपाल वरछी मूलन रूपनभनुप वनप इत्यादि शस्त्रों में और
 उनके चलाने आदिकी अनेक अद्वैततामें उ मर्यान्वयता के युद्धोंमें समग्रभूमिपर
 नियतहोकर सबकार में योग्य, विश्वाओंमें पूर्ण शयशामल्य युद्धमें मगल शस्त्र

your sons and the opposite side engaged there. Both the Kuravas
 and the Pandavas discharged their weapons at one another' 37

CHAPTER LXVI

'These virtues,' said Dhritrashtra addressing Satyajit "possess
 various qualities, as decreed according to the Shastras and are skilful
 in fighting. Our armies too, are always cheerful, successful and
 invulnerable and their prowess is well proved from the beginning.
 They are neither too old nor too young, neither lean nor fat. They
 possess a dexterity of hand, a strength of body and healthy. They
 possess arms and armour as well as different sorts of weapons like
 swords, maces and others and are skilful in fighting. They possess and
 are capable of using pikes, double edged swords, tomars, clubs, hand-
 axes, spears, maces, bows, kamsas etc. and are good fighters.

च यशो सेना ग्रहेर्द्यौर्गिव स्रुता ॥ २८ ॥ अभिसेनस्तु कौन्तेयो द्रोणं दृष्ट्वा पराक्रमी ।
 धृष्ट्यायाज्जवनैरश्वैर्भारद्वाजस्य घातिनीम् ॥ २९ ॥ द्रोणस्तु समरे कुडौ भीम नघामि
 रायसै । विष्याच्च समरश्लाघी समार्षुद्दिश्य वीर्यवान् ॥ ३० ॥ दृढाहतस्ततो
 भीमो सारद्वाजस्य सयुगे । सार्थिं प्रेषयामास यमस्य सदनं प्रति ॥ ३१ ॥ ससंगृह्य
 स्वय चाहान् भारद्वाजं प्रयापवान् । व्यधमत् पाण्डवो सेनां तलराशिभिर्वानलः ३२ ॥
 ते व्यथमानाद्रोणेन भीष्मेण, च नरोत्तमाः । सृज्या- केकयै सार्द्धं पलायतपरासवन्
 ॥ ३३ ॥ तथैव तावत् सैन्य भीमार्जुनपरिक्षरम् । मुञ्चते तत्र तत्रैव समदेव वराङ्गना
 ॥ ३४ ॥ अभिचंता तत्रो व्यूहो तस्मिन् वीरवरक्षये- । आसीद्व्यतिकरो घोरस्तत्र
 तेषांच भारत ॥ ३५ ॥ तद्दुःश्रुतमपद्याम तावक्त्वां परै सह । एकायनगताः सर्वे यद्

द्रोणाचार्य्य शल्य और दुर्योधन से ऐसी शोभापमान हुई जैसे कि ग्रहों से
 भराहुआ आकाश शोभित होता है, फिर कुन्ती का पुत्र पराक्रमी भीमसेन द्रोणा-
 चार्य्य को देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों की सवारी से उनकी सेना के सम्मुख
 गया, फिर युद्ध में क्रोधित पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने मर्मस्थानों को ताककर नौ
 लोहे के बाणों से भीमसेन को घायल किया । ३० । तदनन्तर उस युद्ध में द्रोणा-
 चार्य्य से बहुत घायल हुए भीष्मेण ने उनके सार्थी को मारा, फिर उस प्रतापी
 द्रोणाचार्य्यजी ने आप घोड़ों को पकड़कर पांडवों की सेना को ऐसा विध्वंस किया
 जैसे कि अग्नि रुई को भस्म करता है, हे नरोत्तम द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी से
 घायल होकर वह संजय केकयों समेत भाग गये, इभी प्रकार भीमसेन और अर्जुन
 से भयभीत आपकी भी घायल सेना जहां तहां ऐसे भागी जैसे कि मतवाली श्रेष्ठ
 स्त्री जहां तहां भागती है, हे भरतवंशी इसके पीछे उस उत्तम वीरों के नाश में
 दोनों व्यूह भिन्न भिन्न होगये और आपके पुत्रों को और पांडवों को महाघोर
 दुःख हुआ हेराजा हमने आपके पुत्रों का शत्रुओं के साथ वह आश्चर्य्य देखा जो

Kupacha ya, D onacharya Sbalya and Duryodhan like the sky full
 of stars. Brave Bhimsen the son of Kunti sped on swift horses to
 wards Dronacharya Dronacha ya full of prowess and anger, wound-
 ed Bhim with nine non arrows well aimed at the vital parts 30
 Excessively wounded by Dronacharya, Bhimsen killed his chariot
 driver and Dronacharya taking up the reins of his steeds himself
 destroyed the Pandu army as he does cotton Wounded by Dro-
 nsenarya and Bhishm, the Srinjayas and the karkayas fled from the
 field In the same manner, terrified by the attack of Bhim and Arjun,
 your wounded a my dispersed in all directions like a mad woman Then
 O descendant of Bharat, both the arrays were broken on account of
 the destruction of the warriors, leaving your sons as well as the Pan-
 davas plunged in grief. We saw, O king, the wonderful fight of

युधयन्त भारत ॥ ३१ ॥ प्रतिसंवार्य चास्त्राणि तैर्घान्त्यस्य विशाम्पते । युयुधु पाण्डवा
श्च कौरवाश्च महाबलाः ॥ ३७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि षष्ठ दिवमयुद्धारम्भे
पंच.सप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । एव बहुगुणं सैन्य मेघं बहुविधपुरा । द्यूदमेव यथाशास्त्रममोघञ्चैव
सञ्जय ॥ १ ॥ हृष्टमस्माकमत्यन्तमभिकामश्चनः स्वदा । प्रह्वमज्यसनोपेतं पुरस्ताद्
दृष्टविक्रमम् ॥ २ ॥ नातिवृद्धमवालम्ब्य न ह्यत्र ग च पीरारम् । लघुवृत्तापतप्राय सा
योधमनामयम् ॥ ३ ॥ आत्तसन्नाहशस्त्रञ्च बहुशस्त्रारिग्रहम् । असियुद्धे नियुद्धे च
गदायुद्धे च कौषिद्यम् ॥ ४ ॥ प्रासष्टितोमरेष्वाजं परिघेष्वावसेषुच । भिन्द्रपालेषु
शचीषु मुसलेषु च सर्वशः ॥ ५ ॥ कपनेषु च चापेषु कणपेषुचसर्वशः । क्षेपणीयेषु

एक स्थान पर वर्तमान होकर सब युद्ध में प्रवृत्त हुए वह कौरव पांडव उभ महायुद्ध
में परस्पर अस्त्रोंको प्रहार करके युद्ध करते हुए ३७ ॥

अध्याय ७६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय यह मेनावहुगुण संपन्न अनेक प्रकार के शास्त्रके अ-
नुसार अलंकृत और युद्धमें मफल है, और हमारी सेना भी सदैवमसन्न सकल रूप
और उदार है जिसका कि पराक्रम भारंभेही देनाजाना है, न बहुत हृद्धा न
बालक न दुर्बल न पुष्ट है किन्तु हस्तनाघरता आदि उपायोंमें कुशल अत्यन्त हृदयंगवाली
और नीरोगहं, कवच और शत्रोंकी धारण करने वाली अनेक शस्त्र समूहों से पूर्ण
भुजा सङ्ग गदा इत्यादि से युक्त लडाई में बड़ी तीरहै, प्रास कुनाराखड्ग तोमर
परिघ लोहेके भिन्द्रपाल बरछी मृगल कपनधनुष कनप इत्यादि शस्त्रों में और
उनके चलाने आदिही अनेक अद्भुततामें वं मदान्मत्तता के युद्धोंमें संग्रामभूमिपर
नियतहोकर सजमकार से योग्य, विद्याओंमें पूर्ण शयवामल्ल युद्धमें प्रबल शस्त्र

your sons and the opposite side engaged the e. Both the Kauravas
and the Pandvas discharged their weapons at one another" 37.

CHAPTER LXVI

"These armies," said Dhritashtya, addressing Sanjaya, "possess
various qualities, as depicted according to the Shastras and are skilful
in fighting. Our armies too, are always cheerful, successful and
forgivacious and their prowess is well proved from the lightning.
They are neither too old nor too young, neither lean nor fat. They
possess dexterity of hand and strength of body and healthy. They
possess arms and armour as well as different sorts of weapons like
swords, maces and others and are sharp in fighting. They possess and
are capable of using paces, double edged swords, tomars, clubs, the d-
pils, spears, - minals bows, kempis etc and are good fighters,

चिनेषुमुष्टिमुद्धेषुचभ्रमम् ॥ ६ ॥ अपोक्ष च विद्यासु व्यायामसकृतश्रमम् । शस्त्रप्रहण
विद्यासु सर्वासुपरिनिष्ठितम् ॥ ७ ॥ आगेहेपर्यवस्कदेशरणेसातरण्युते । सम्यग्रूपहरणे
यानेवपयानेचकोविदम् ॥ ८ ॥ नागश्व रथयानेषु बहुश सुपरीक्षितम् । परीक्ष्यन्
यथान्याय वेत्तनेनोपपादितम् । ९ ॥ नगोष्ठयानोप कारणेनच बंधुनिमित्ततः । नसौ
हृदयलेगीपि नाकुलीन परिग्रहे । १० ॥ समृद्धजन मार्यं च तृप्तसवधिवाध्रवम् । कृतो
पकार भूयिष्ठ यशस्विच मनस्विच ॥ ११ ॥ स्वजनैस्तु नरैर्मुह्यैर्बहुशो हृष्टकर्मभिः ।
लोकपालोपमेस्तात पालितं लोकविश्रुतम् ॥ १२ ॥ बहुभिः क्षत्रियैर्गुप्त पृथिव्यालोक
समेत । अस्मानभि गतैः कामात्सवलैः सपदानुगे ॥ १३ ॥ महोदधि मिवापूर्णा सागमा
भि समतत । अपक्षे पक्षिसकाशे रथैर्नागैश्च सवृतम् ॥ १४ ॥ नानाथोद्य जल भीम
बाहू नोर्मितरगिणम् । क्षेपण्यासि गदाशक्ति शरप्राससमाकुलम् ॥ १५ ॥ ध्वजभूषण
संवाध रत्नपट्टसुसचितम् । परिधावद्विरश्वैश्च वायुवेग विर्षितम् ॥ १६ ॥ अपार

विद्याके ज्ञाता सब विद्याओंपि पंडित, सवारहोने वा डेरें रहने वा चलने वा दोनों
के अन्तरसे चलने वा अस्त्र चलाने वा चढ़ाई करने वा समय देखकर हटजानेमें
कुशल बुद्धि, हाथी घोड़े और रथोंकी सवारियों में बहुधा परीक्षा कियेहुए और
परीक्षालेकर न्यायके अनुसार मासिक आठि वेतन के योग्य है । ७ । और सभा
उपकार नातेदारी और मित्रों के और कुटुम्बियों के बल और सामानों के कारण
अधिकार नहीं पाने वाले हैं, हृदियुक्त वा उत्तम मनुष्य जिन में बांधव प्रसन्न
और प्रतिष्ठावान है और बहुत उपकारी यशस्वी साहसी वेगवान उत्तम कर्मी
लोकपालों के समान सत्तर में प्रसिद्ध मनुष्यों से योषित अपनी इच्छा से सेना
समेत पीछे चलनेवाले बहुत से क्षत्रियों को लेकर हमारे समीप आनेवाले चारों ओर से
समुद्रके समान उमगते हाथी रथघोड़ों समेत अनेकशूरवीरोंसे शोभित बड़े भयानक क्षेप
खड्ग गदा बरछी बाणपरशु इत्यादि अनेक शस्त्रोंसे अलंकृत रत्नजडित रेशमी वस्त्रों
से भाँडित अनेक ध्वजाओं समेत चारों ओरकी दौड़नेवाली सवारियों में बैठे समुद्र

having a complete knowledge of all sorts of warlike and wrestling
exercises They are learned in all sorts of sciences and are good at
horsemanship camp management, marches, use of weapons, making
assaults or timely retreat. They have often been tested in riding and
driving the elephants horses and chariots and are worthy of receiving
the pay 7 They are not taken into service by social influence, kinsman
ship friendship and recommendations of friends They are of good
and respectable families and are kind hearted, glorious, courageous,
nimble, good, brought up by those who are famous like lokpals will
long to follow the armies, having many friends among warriors, brave
like the rising ocean, possessed of elephants, chariots and horses, deck
ed with swords, maces, spears, arrows and other warlike weapons, clad

मिथ गज्जने सांगरे प्रनिर्म महत् । द्रोण भीष्माभि संगुप्त गुप्तञ्च कृतवर्मणा ॥ १७ ॥
 कृपदुःशामनाभ्यां च जयद्रथ मुलेस्त्रया । भगदत्त विकर्णभ्यां द्रौणिशौचलयादिहृषीः
 ॥ १८ ॥ गुतं प्रथिरेल्लोकैश्च सारथिर्महात्मभिः । यद्दृश्यतसंग्रामे दधमन्पुरातनम्
 ॥ १९ ॥ नैतादृशं समुद्योग दृष्टवन्तो हि मानुषा । ऋषयोवा महाभागाः पुराणामुवि
 स्रजय ॥ २० ॥ ईदृशोपि बलीवस्तु संयुक्तः शस्त्रसपदा । वयन्ते यत्र संग्रामे किमप्यद्रा
 गवेयतः ॥ २१ ॥ विपरीत भिद्द सर्वं प्रतिमाति द्वि सञ्जय । यत्रेदं यत्त घोरे पांडवा
 प्रांतद्रणे ॥ २२ ॥ पाण्डवार्थाय नियतं देवास्तत्र समागताः । युष्यते मामकं सैन्य
 यथा वध्व संजय ॥ २३ ॥ उक्तो हि विदुरेणाह हितं पश्य च नित्यदा । नचजग्राहतन्
 मद पुत्रो दुर्योधनो मम ॥ २४ ॥ तस्य मन्येमति पूर्वं सर्वत्राद्य महात्मनः । आसीद्यथागत

के समान गर्जनेवाले द्रोणाचार्य्य और भीष्म मे रक्षित कृतवर्मा, कृपाचार्य्य, दुःशा-
 मन जयद्रथ भगदत्त विकर्ण अत्रत्यामा शकुनि वाह्लीक इनवड़े २ वीरों से और
 महात्माओं से रक्षित जो मेना युद्ध में मारी गई इसमें होनहारही प्रबलहै, हे संजय
 पृथ्वीपर ऐसे युद्धको वड़े २ ऋषि मुनि और महात्मा मनुष्यों ने भी कभी नहीं
 देखा । २० । शस्त्रधन लक्ष्मी से युक्त ऐसा सेनाका समूहभी जिस युद्धमें मारा
 जाता है वहां प्राण्य के निवाय क्या सम्भना चाहिये, हे संजय यहमव विपरीत
 दृष्टपट्टता है कि जहां ऐसी भयानक सेनाने युद्ध में पांडवों को नहीं भीता, हे संजय
 पांडवों के निमित्त देवतातो आनकर हमारी सेना से नहीं लड़ते हैं कि इतनी प्रबल
 सेना घायलहो जातीहै, इसस्थान पर सदैव हितकारी फल दायक वचन विदुरजीने
 कहा है परन्तु मेरा अभागा बेटा दुर्योधन उस वचन को नहीं मानताहै मैं मानता
 हूं क्योंकि उस सर्वज्ञ महात्मा विदुरका परला कहा हुआ अवसत्यहूआ है तात उस

in jom bedecked silk clothes, running hither and thither with high
 banners, riding good carriages, roaring like the ocean and protected by
 Dronacharya, Bhishm, Kritvarma, Kripacharya, Dushasan, Jayadrath,
 Bhagdatta, Vikaru, Ashwathama, Shakuni, Vablik and such other
 warriors and great men. The destruction of such an army may be
 ascribed to fate alone. Rishis munis and great men of the world
 have never seen such a war. 20. Such a large destruction of weapons
 and wealth as is being done in this war, may be ascribed to fate
 alone. All this is preposterous, Sanjaya, in as much as such a tre-
 mendous army could not win the Pandavas. Is it the gods that
 fight for the Pandavas and disable our strong armies! Vidur always
 gave good advice regarding this matter, but my unfortunate son Dur-
 yodhan never gave any attention to it. I own that the saying of

तात येनदृष्ट मिदंयुत ॥ २५ ॥ अथवा भाव्यमेधं हि संजयै तेन संवेधा । पुत्राचार्यायथा
सुष्टु सत्तर्था नैतदयथा ॥ २६ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि घृतांगप्रचितायां

१ १ ॥ १ ॥ पट्टसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७६ ॥

संजय उवाच ॥ आत्मदोषान्वया राजन् प्राप्तं व्यसनमीदृशम् । नहि दुर्योधनमर्ता
नि पश्ये मे भ तर्पण ॥ १ ॥ यानि त्व दृष्टवान् राजन् धर्मसङ्करकारिणि । तव दोषान्तु
पुत्र दृष्टमेव विशंसिपते ॥ २ ॥ तव दोषेण युद्धं प्रवृत्तं सह पाण्डवै । त्वमेवाद्यफलं
क्षुब्ध कृत्वाकिञ्चिप म तमना । ३ ॥ आत्मनैव कृतं कर्म ह्य त्मने वोपभुज्यते । इह च
मेव वा राजस्त्वयाप्राप्तं यथा तथम् ॥ ४ ॥ तस्माद्राजन् स्थिरी भूत्वा प्राप्येद व्यसन
गहत् । शृणुयुद्धं यथावृत्तं शसतो मे तर्गाधिप ॥ ५ ॥ भीमसेनं सुनिशितैवापैभित्वा
महाचक्षुम् । शससाद् ततो वीर सर्वान् दुर्योधना नृजान् ॥ ६ ॥ दुःशिक्षेनं दुर्निपह

नेपुर्वही ऐसा देखाया, हे संजय इस प्रकार की शोहरार को उस ने पूर्वही देख
लिया कि ईश्वर को अब ऐसा करना है इसके विपरित कभी नहीं होसकता २६ ॥

१ १ ॥ १ ॥ अध्याय ॥ ७७ ॥

संजय बोले, हे राजा तुम ने अपने दोष से ऐसे दुःखों को पाया है भरतर्षभ
इसको दुर्योधन नहीं देखता है, हे राजा जिनको तुम ने देखा है वह सब धर्म को
अधर्म से मिलावेवाले है हे राजा पूर्व समय में आपही के दोष से यह जुवा जारी
हुआ, आपके ही दोष से पांडवों से युद्ध प्रारंभ हुआ, और अब तुमही अपने पाप
को करके उसके फलको भोगो, आपने ही कर्म किया है इसका फल इसलोक में वा
पड़लोक में आपही को भोगना पड़ेगा हे राजा जैसा तुमने कियाथा वैसाही फलभी
ठीकपाया, इससे हे घृतराष्ट्र तुम चित्त को समाधान करके इसमहादुःख को
पाकर इसयुद्ध हानेका दृष्टान्त मुझसे सुनो १० । तदनन्तर वीर भीमसेनने बड़े तीक्ष्ण
बाणों से आपकी बड़ी सेनाको चलायमान करके दुर्योधन के इनसव भाइयों को

Vidur the wise and great has proved true. He foresaw long ago what
was coming to pass and it will never happen otherwise" 26

CHAPTER LXXVII

"You miseries, said Sanjaya, "are the results of your own sins,
king Duryodhan does not see this, O best of Bharats Those whom
you have seen O king, are mixing adharma with dharm It was through
your fault, king, that the gambling took place and the war with
the Pandavas commenced. You yourself will reap the fruit of your
sins You will suffer the punishment of your own wickedness either
in this or the next world You have reaped O king, what you had
sown Compose your mind, O king and hear from me the account of
this war which has brought you so much trouble 5 With sharp
arrows brave Bhishma, while destroying your armies, found himself

दुःसह दुर्मद जयम् । जयरसेनं विकर्णं च चित्रसेनं सुदर्शनम् ॥ ७ ॥ चक्रं चित्रं सुवर्माणं दुष्कर्णं कर्णं मेघचक्रं । पताञ्चान्याश्च सुवहून् समीपस्थान् महारथान् ॥ ८ ॥ चाक्षराष्ट्रान् सुलक्षुद्धान् दृष्ट्वा भीमी महारथः । भीष्मेण समरे शुभा प्रथितशः महाचमम् ॥ ९ ॥ अयालोक्य प्रविष्टन्त मूध्रुस्ते सर्व एषतु । क्षीयग्राहं निगृह्य भीमो वयमेन नराधिपः ॥ १० ॥ सतैः परिवृतः पार्थो भ्रातृभिः वृत्तनिश्चये । प्रजासहस्रजे नर्यः प्ररिचि महाशरैः ॥ ११ ॥ सम्प्राप्य मथ्य सैन्येण नभीं पाण्डवमादिशत् । यथा देवासु युद्धे महेन्द्र प्राप्य दानवान् ॥ १२ ॥ ततः दात सहस्रं विरथिना सर्वशः प्रभो । वधतानि शरैस्तीर्थस्तमेकं परि यत्रिरे ॥ १३ ॥ स तेषां प्रचरान् योधान् हस्त्यध्वरथस्तादिन् । जघान समरे शयो चाक्षराष्ट्रान् चित्रयन् ॥ १४ ॥ तेषां व्यवसितं ज्ञात्वा भीमसेनो जिघृक्षताम् ।

सम्पुत्र पाया, दुःशासन, दुर्विपह, दुःसह दुर्मद, जयमेन, विकर्ण, चित्रमेन सुदर्शन, चाक्रमित्र, सुवर्माण दुष्कर्ण कर्ण इनके सिवाय और बहुत से रथ में चढ़े समीपी महारथी इनसबको माराकोष रूप महाशरी भीष्मसेन देवकर युद्धमें भीष्मजी मे रक्षित बड़ीउग्र सेनामें युगगया । ९ । इमसेनामें घुमेहुए भीमसेनका देवकर बहसत्र बोले कि हेराजाओ हममत्र इमको जीताही पकडे । १० । जैसे कि संमारके नाश करने में सूर्य उडे २ मूर ग्रहो से विराहुआ होता है उमी प्रकार यह भीमसेन इन निश्चय करनेवाले भाइयों से विराहुआ वचमान हुआ, सेना के मध्यमें भी जाकर इसको ऐसे भय नहीं हुआ जैसे कि महाइन्द्र देवता असुरोंके युद्ध में दानवोंको पाकर भयभीत नहीं होता है, तदनन्तर घोर वाणोंके समूहोंको फेंकतेहुए एकलाख शस्त्रधारी रथियोंने इस अकेलेको घेरलिया, धृतराष्ट्रके पुत्रोंको ध्याननकारके उममहावलीने उमसेना के बड़े जंगी हाथी घोड़े रथऔरसवा रोंको मारा, हेराजा पकडनेके इच्छावान उनलोगों को जानकर उस पराक्रमीभीमसेन ने सबके मारनेको मनोरथ किया, और रथ को त्यागकर गदाहाथ में लैके उन

fice to fice with Dushasan, Durvishah Dussah, Durmad, Jayasen, Vikarn, Chitrawan, Sudarshan, Chakramitra Suvarman, Dushkarn and Karn the brothers of Duryodhan. Besides these there were many warriors. Bhimsen in great anger, seeing all the e, entered that large army protected by Bhishm. Seeing Bhimsen there in the midst of the army they all cried out with one voice, 'Let us catch him alive' 10 Just as the sun is surrounded by fierce constellations, Bhimsen was surrounded by the brothers resolved to capture him. But he was not afraid of the enemies as Indra, during the war of the gods and asurs is not afraid of the Danavas. Then discharging thick showers of arrows a hundred thousand of the warriors wounded him but Bhimsen not caring for the sons of Dhritrashtra in the least, destroyed the huge elephants, horses, chariots and horsemen of that large army. And knowing them to be desirous of capturing him, he resolv-

समस्तानां वधे राजन् म तं चक्रे महामता ॥ १५ ॥ ततो रथ समुत्सृज्य गदामादाय
पाण्डव । जघान घात्तराष्ट्राग तं बलोघमहारणवम् ॥ १६ ॥ भीमसेने प्रविष्टे धृष्टद्युम्नो
पि पापत । द्रोणमुत्सृज्य तरसा प्रययौ यव सौबल ॥ १७ ॥ निवार्य महर्तो सेना ताम्
काना नरपतम् । आससाद् रथ शून्य भीमसेनस्य सयुगे ॥ १८ ॥ दृष्ट्वा विशोक समरे
भीमसेनस्य सारथिम् । धृष्टद्युम्नो महाराज दुर्भना गतचेतन ॥ १९ ॥ अपृच्छद्वापस
रक्षो निःस्वसन् वाचमीरयन् । ममप्राणै प्रियतम क्व भीम इति दुःखित ॥ २० ॥ वि
शोकस्तमुवाचेद् धृष्टद्युम्न कृताजलि । सस्थाप्यमामिह बली पाण्डवेयः पराक्रमी २१ ॥
प्रविष्टो घात्तराष्ट्राग भेतद्वल महारणवम् । मामुक्त्वा पुरुषव्याघ्र प्रीतियुक्त भिदंबच
॥ २२ ॥ प्रति पालय मां सुत नियम्याश्वान्महूर्त्तकम् । याव देताग्निहर्म्यद्य य इमे
ऽद्भोधना ॥ २३ ॥ ततो दृष्ट्वा प्रधावन्त गदाहस्त महाबलम् । सर्वेषामेव सैन्यानां
सहप सम जायत ॥ २४ ॥ तस्मिन् सुतुमुले युद्धे वर्त्तमाने भयागके । भित्वा राजन्

आपके पुत्रों समेत सेनाके महा समूहको मारा । १५ । फिरसेना में भीमसेन के
प्रवेश करनेपर पृपतका पुत्र धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य को छोड़कर वड़ीशीघ्रता से वहां
गया जहां शकुनी वर्त्तमान था, उसनरोत्तम ने युद्ध में आपके पुत्रकी वड़ी सेनाको
हटाकर भीमसेनके रथको पाया, हे महाराज वहा भीमसेन के विशोकनाम सारथी
को देखकर बड़ाखिन्न निच अचेतहो अश्रुपात युक्त गदगद कण्ठ से महादुःखित
श्वामालेकर धृष्टद्युम्न बोला और पूछा कि मेरे प्राणों से भी प्रियतम भीमसेन कहाँ
है । २० । यह सुनकर हाथजोड़कर विशोक, धृष्टद्युम्न से बोला कि महाबली भीम-
सेन मुझको यहाँ नियत करके, अकेलाही धृतराष्ट्र के पुत्रों की असंख्य समुद्र रूपी
सेना में घुसा है और मुझसे ऐसे प्रीति पूर्वक वचन कहकर गया है कि हे सुत तुम
घोड़ों को एक मूहूँ तक थाँप के मेरी वाट देखो मैं इन के मारने को जाता हूँ जो
कि मेरे मारने की इच्छा करते हैं, सो गदाहाय में लिये उस महाबली को दौड़ता
देखकरसमय सेना में वड़ी प्रमगता हुई, हे राजा उमवड़े भयकारी तुमुल युद्धके

ed to kill them all He Jumped down from his chariot, mace in
hand and destroyd your sons along with other warriors 15 - While
Bhimisen was in the midst of the army, Dhrishtadyumn the son of
Prashat left Dronacharya and went there where Shakuni was That
best of men pushed through the army of your son and found Bhim's
chariot there and seeng Vishok the chariot driver, he with a troubled
mind, faint voice, tearful eyes, choked throat and deep sighs, asked of
the whereabouts of Bhim, saying "Where is Bhim who is dearer to me
than life" 20. At this, Vishok with joined palms, said, "Brave Bhim,
having stationed me here has alone entered the innumerable armies
of the sons of Dhritrashtra. He told me in affectionate tone to keep
the horses here for sometime as he was going to kill those who intend-
ed to destroy him All the warriorre were pleased to see him

महाव्यूहं प्रविशन्नुकोदरः ॥ २५ ॥ विशोकस्य वचः श्रुत्वा धृष्टद्युम्नोऽपि पार्थिवः । प्रशु-
 धाव ततः सुतः ३१मध्ये महाबलः ॥ २६ ॥ नहि मे जीवितेनापि विद्यतेऽद्य प्रयोजनम् ।
 भीमसेनं रणे हित्वा स्नेहमस्त्वज्य पाण्डवैः ॥ २७ ॥ यदि व्याभिचिनामिमं किमात्मनै
 घदिष्यति । एकायनं गतं भीमे मधिचावस्थिते पथि ॥ २८ ॥ अस्वस्थित तस्य कर्षति
 देवाः शक्रपुण्ड्रगमाः । यः सदायानं परित्यज्य स्वस्तिमानात्रे हृद्यम् ॥ २९ ॥ मम भीमः
 सखा चैव सवंधी च महाबलः । भक्तोऽस्माकं किमाश्चिद् तमपरिनिपुदनम् ॥ ३० ॥
 खोह तत्र ममिष्यामि यत्र यातो वृकोदरः । निष्पतं मारिष्यद्दवद नवानिनः वासवम्
 ॥ ३१ ॥ एवमस्त्वया ततो धीरो यवौ मध्येन भारत । भीमसेनस्य मार्गो मदाप्रमथिते
 नृजः ॥ ३२ ॥ स ददर्श तदा भीमं दहतं विवाहिनीम् । यातो वृक्षानिवद्यलात् प्रभञ्जते

वत्तमान होनेपर आपका भित्र बड़ी भेनाके व्यहको हटाकर प्रवेश करगया है ३०
 यह विशोक के वचन सुनकर वह महावली धृष्टद्युम्न जी उमसूत भे यह वचन बोला
 कि पाण्डवों के साथ प्रीति करके और भीमसेन को युद्धमें छोड़कर प्रदीवने न
 मुझको कुछ प्रयोजन नहीं है मैंभी बिना भीमसेन के कभी न जाऊंगा क्योंकि
 भीमसेन के बिना जाऊंगा तो मुझको सबत्तबी क्या कहेंगे युद्ध में भीमसेनके एक
 और जाने औरमेरे नियत होनेपर इंद्रसेन सबदेवता उनके अकल्याणको करतेहैं जो महा
 यज्ञको त्यागकर जीतेवरको जातेहैं हेनत्रहन्ता वह महाबली भीमसेन मेरा मित्र नातेदार
 और परमभक्तहैं और मैंभी उसमभक्ति रखनेवालाहूँ । ३० । सो हे सूत मैंभीबिही
 जाऊंगा जहाँ भीमसेन गया है मुझको भी तू देख कि मैं शत्रुओंको कैसा मारताहूँ जैसे
 कि इंद्रदानवोंको मारताहै हे राजा ऐसा कहकर वह महावलीभीमसेन की गुदा में
 मारे हुए हाथियों में उत्पन्न भीमसेन के मार्गों में होकर चला वहाँ उस न शत्रुओंको
 भूम करके और जैसे कि वायु घट्टोंको काटताहै उमी प्रकार युद्धमें राजाओं को

rushing into his hand and that friend of his had fought his way through that large array. 25. Having received this information from Vishok, brave Dhrishtadyumna said, "Loving the Pandavas as I do I shall live no longer without Bhim. All the Kshatriyas will despise me, if I shall leave him here alone India and other gods will give me the reward of those who leave their friends in the lurch, if I shall desert him now. Brave Bhim is my friend, kinsman and devotee, and I too, am devoted to him. 30. I, too, O Sut, will follow the footsteps of Bhim; you will see how I kill the enemies as Indra destroys the Danavas." Having said this, O King, he went over the path made by Bhim by killing the elephants with his mace and saw him there destroying the enemies and princes as the wind fells down trees. Wounded by Bhim the terrified charioteers, horsemen, foot soldiers and

रणेरिपुत् ॥ ३३ ॥ तेवध्यमानः समरे रथिनः सादिनस्तथा । पादाता दूतिनदीध
चक्रुरातंस्वमं हत् ॥ ३४ ॥ हाहाकारश्च सजग्मे तव सैवय्य मारिष । वध्यतो भीमसेनेन
कृतिनाचित्रयोधिना ॥ ३५ ॥ तत कृतास्मास्ते सधे परिवार्यचुकोदरम् । अमोताः सम
धर्तत शस्त्रवृष्ट्यापरतप ॥ ३६ ॥ अभिदुत शस्त्रभृतांवारिष्ठं समंततः पाण्डवलोकधीरः ।
सैभ्येन घोरेण सुसाहितेन दृष्ट्या धर्तापार्यतो भीमसेनम् ॥ ३७ ॥ अघोरगच्छच्छेरधि
धर्तांग पदातिनं क्रोधधिपं वमंतम् । आश्वसायन् पार्यतो भीमसेनं गदाहस्त
कालमिवांतकाले ॥ ३८ ॥ विशश्य भेनचचकारतूर्णं मारोपयच्छात्परपेमाहात्मा । भृश
परिष्वज्यच भीमसेन आश्वसाया माससशश्रुमध्ये ॥ ३९ ॥ भ्रातृनघोरेभ्य तवाविपुश्रस्त
दिम्न धिमर्दे महति प्रवृत्ते । अय दुरात्मा दुपदस्यपुत्रः समागतो भीमसेनेन सौधेम्
॥ ४० ॥ संयाम सधे गहता धलेन माघोरिपुः प्रार्थयतामनीकम् । श्रुत्वातुव फ्यंतममृष्य

छिन्न भिन्न करते हुए भीमसेन को देखा, युद्ध में भीमसेनने घायल और पीड़ितरथी
सवार पदाती और हाथियोंने महा भयभीत और पीड़ामान होकर घोर शब्द किया,
हे राजा आपही सेनामें वड़ा हाहाकार उत्पन्नहुआ और यह शब्द पुकारते लगे
कि सावधानहो अपूर्व युद्धकरनेवाले भीमसेनके हाथसे सेना नाशहुईजाती है । ३५ ।
इसके पीछे वड़े निभेय अर्छों के ज्ञाता उनवीरों से भीमसेन को चारों-ओरसे घेर
कर राय ओर से अस्त्रों की वर्षाकरी, फिर चलवान धुष्टुग्म वड़ी मिलाहुई घोर
सेना से सम्मुख हुए महाबली लोक में प्रसिद्ध भीमसेन को देखकर, उसके पास
गया और घाणों से छिदे हुए क्रोधरूप धिपको उगलते प्रलयके काल पुरपकी
समानगदा लियेहुए भीमसेनको विश्वास कराया, फिर उस महात्मा ने बहुत शीघ्रही
उसको घाणों से छुटाया और अपने रथपर सवार किया और शत्रुओं के मध्यमेंही
अच्छे प्रकार मिलकर विश्वास कराया, इस के पीछे आपका वेटाभी उम युद्ध में
अकस्मात् भाइयों से मिलकर बोला कि यह दुपद का वेटा निर्बुद्धी भीमसेन के
साथमें आया है । ४० । इस के मारने को हममव एक साथही चलें क्योंकि हमारा

elephant riders were raising terrible cries of distress. There was a cry
of "Ab! and alas" in your army and the people said, "Be careful.
The army is being destroyed by Bhimsen of matchless prowess." 35.
Then the intrepid warriors, well knowing the science of arms, sur-
rounded him on all sides and poured on him a volley of weapons. Then
brave Dhrishtadyumna, seeing the famous warrior Blim surrounded
by those terrible foes, went to him and by his presence cheered Blim-
sen who being pierced with the arrows was vomiting forth the
poison of his rage, standing mace in hand like Death. He soon dis-
entangled his body from the net of arrows and further cheered him in
the midst of the enemies by making him mount his chariot. Then your
son collected his bowmen in haste and addressed them thus,—"This
son of Drupad," said he, "has joined foolish Blim. Let us all go to

माणा ज्येष्ठाज्ञयानोदिताघातंराष्ट्राः ॥ ४१ ॥ दधाय निष्पेतु र्दद्यायुघाते युगक्षये केत
वो वददुष्प्राः । प्रयुञ्ज्यात्स्वानि धनुष्विषीग ज्यानेमि घोषैः प्रविकं पयन्तः ॥ ४२ ॥
शरैस्त्वय्यद्रुपदाय पुत्रं यथाबुद्धामुधरे चारि जालैः । निहत्यतांश्चापि शरैः सुतीक्ष्णैर्न वि
न्यथे सारो चित्रयोषि ॥ ४३ ॥ समंभुदीर्णाथतवात्मजांस्तथा निशम्यवीरा नमितः
रिपितान् रणे । जिघांसुरुद्र हृषदात्मजो युवा प्रमोहनास्त्र युयुजे महारथः ॥ ४४ ॥ कुक्षो
भृशं तवपुत्रेषु राजन् क्षैत्येषु युद्धत्समरे महद्द्रु । ततो व्यमृह्यन्तरणे तृवीराः प्रमोहना
स्त्रोहेतवुद्धिसावाः ॥ ४५ ॥ प्रदुष्टुवुः कुत्सक्षैप स्वधै सथाजिनागाः सरपाः समंतात् ।
परीतं कालानि वनष्टसंज्ञान् मोहो पतांस्तवपुत्राग्निशम्य ॥ ४६ ॥ एतस्मिन्नेव काले तु
द्रोणः शस्त्र यथावरः । हुपदं त्रिभिरासाय शरैर्विव्यंघ दाक्यैः ॥ ४७ ॥ सोति विद्वस्त

शत्रु शोके हमारी सेनामें न भिने इस के पीछे वह क्रोधी पुत्र अपने भाई दुर्योधन
के इतने वचन का सुनकर और आज्ञामान कर शस्त्रों को लेकर उसके मारने को
ऐसे दौड़े जैसे कि प्रलयकाल में पृथ्वीतारे वह वीर रत्नजटित धनुषधारी कवच
पहरे रथके पहियों की ध्वनि से सधको कम्पायमान करते हुए, चारों से द्रुपद के
पुत्रपर ऐसी वर्षा करने लगे जैसे कि वादल पानी की झड़ियों से पर्वतपर वर्षा
करते हैं उस समय वह अपूर्व युद्ध करने वाला धृष्टद्युम्न अपने तीक्ष्ण चाणों से
उनको पीड़ामान करने परधी आप पीड़ा युक्त नहीं हुआ, और बड़े साहसी आपके शूर
वीर पुत्रोंको देखकर युद्ध में नियत हुआ फिर उस द्रुपदपुत्र महारथी मारनेकी इच्छा
करनेवालेने प्रमोहननाम बड़े मयानक अस्त्रको प्रयोग किया और आपके पुत्रों पर
ऐसा अत्यन्त क्रोधित हुआ, जैसे कि इन्द्रयुद्ध में दैत्योंपर क्रोधित होताहै । ४५ : ।
फिर वह सब आप के वीर युद्धमें परशुओं और अस्त्रों से घायल होकर बड़े अचेत
होगये फिर आपके पुत्रों को कालपांस में फेंसेहुए अचेतरूप देखकर सब कौरव
घोड़े और रथों के साथ घोर शब्द करते हुए चारों ओर से भागे उस समय शस्त्र

kill him, so that, being an enemy, he may not mix with our soldiers." The enraged princes, hearing the words of their brother, obeyed his orders, and armed with weapons to destroy him, they rushed upon him like meteors of pialaja. The brave warriors having bows decked with jewels, shook in armour and shaking all with the rumbling of their chariot wheels. They showered their arrows on the son of Drupad as clouds pour rain over a mountain. That wonderful warrior Dhushtadyumn, while wounding them with their sharp arrows, was not wounded by them and seeing your brave sons before him, stood ready to fight. Drupad's son, desiring to destroy them, discharged his dreadful weapon known as Pramohan (causing insensibility) and was enraged at your sons as Indra does at Dasyas 45 All your warriors, wounded by axes and other weapons, became unconscious. Seeing your sons in the meshes of Death and unconcious, all the

तो राजन् रणे द्रोणेन पारिविद्य । जपापास्तुपदो राजन्, पूर्णैरमनुसमरन् ॥ ४८ ॥ जित्वा
 युद्धं द्रोण शस्त्र इधो प्रतापवान् । तस्य शस्त्रं स्वर्णं भूत्वा - विद्रेष्टुं, सर्वं सोमका
 ॥ ४९ ॥ अथ युष्माकं तेजस्वी द्रोण शस्त्रं भूतापर । प्रमोहं नास्त्रशरणं, माहितानाम
 जित्वा ॥ ५० ॥ एतौ द्रोणो महाराज, स्वरितोभ्या ययां रणात् । तत्रापश्यन्महेष्वाशो
 भारद्वाजं प्रतापवान् ॥ ५१ ॥ धृष्टद्युम्नश्च भीमश्च विचरन्तौ महारणे, मोहा विप्रांश्चते,
 पुत्रो न प्रदयत्समहारण ॥ ५२ ॥ ततः प्रजास्त्राणां द्वाय मोहनस्त्रं व्यनाशयत् । अथ प्रत्या
 गतप्राणास्तत्र पुत्रमहारण ॥ ५३ ॥ पुनर्दृष्ट्वा वसमरे प्रयुग्भौमं, पापतौ । ततो, युधिष्ठिर
 प्राह समाह्वयं स्वर्सेनिकान् ॥ ५४ ॥ गच्छन्तु पदवीं शक्याः भूमिपापतयोर्धुधि । सौभद्र
 प्रमुखाधीरा रथाद्वादश दृशिताः ॥ ५५ ॥ प्रवृत्तिं नपि गच्छन्तु नहि ह्युद्धर्षितं मे मनः ।

धारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्यजी ने धृष्टद्युम्न को पाकर, तीन उग्रवाणों से पीड़ित
 किया, हे राजा तब वह राजा द्रुपदका पुत्र द्रोणाचार्य से अत्यन्त घायल, पूर्ण वी
 शत्रुता को, रमण करके हट गया । ४७ प्रतापवान् द्रोणाचार्य ने द्रुपद को जीतकर
 उसके स्वजाया उनके शस्त्रको धुनकर सब भयभीत हुए, इसके पीछे महा
 शस्त्रोंचा द्रोणाचार्यने युद्धमें आपके पुत्रोंको भ्रमोहन अस्त्रसे अचेतहीना सुना । ५०
 और, बड़ी शीघ्रतासे संग्रामभूमिमें उनके पास आये वहाँ प्रवल युद्धमें संग्राम करते
 हुए धृष्टद्युम्न और भीष्मजी को देखा और आपके पुत्रोंकोभी मोहसे महा अचेत
 देखा फिर उन्होंने प्रजा अस्त्रको लेकर मोहन अस्त्रको काटा, इस के पीछे आप के
 महारथी पुत्रों के प्राण फिर लौट आये फिर युद्धमें लड़ने के लिये भीमसेन और
 धृष्टद्युम्नके संग्राम गये इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनी सेनाके यनुष्योंसे बोले
 कि तुम अपनी सामर्थ्य से संग्राम भूमि में भीमसेन और धृष्टद्युम्नके मार्गमें जाओ तुम
 अभिमन्युको मुख्य करके, वाह धीर वहाँ जाकर निज वृत्तान्तको देखो । ५५ मेरा
 चित्त मन्देहसे निवृत्त नहीं होता है वह सब शूरवीर सिंहके समान युद्ध करनेवाले

Kemava's rushed with their chariots and horses from all sides
 Dronacharya the best of warriors wounded Dhrishtadyumna with
 three terrible arrows. Drupad's son seriously wounded by Drona-
 charya and remembering the former enmity, gave way 47 "Glorious
 Dronacharya, having conquered Drupad's son, sounded his conch,
 terrifying all with the peal. Dronacharya who knew the use of all
 weapons, heard of unconsciousness of your sons by swoon-bringing
 weapon 53 He soon came there from the field and saw Bhishm and
 Dhrishtadyumna engaged in fighting, while your sons were unconscious.
 He then removed the effect of that weapon by his Pragma weapon
 and they were all restored. He then went on to fight against Dhrishta-
 dyama and Bhim. The coupon Prince Yudhishtira ordered his twelve
 warriors to force their way through the ranks of the enemy with
 Bhishm as the leader to bring news of Dhrishtadyumna and

तत्र समनत्राथ शूराधिकृतयोधि ॥ ५६ ॥ दाह मित्येव सुखत्वात् सद्ये पुरुष मानि
नः । मत्थे दिभं गते सूर्ये प्रययुः सद्य एवहिं ॥ ५७ ॥ केशया द्रापदेयाथ घृष्टकेतुर्गं धीर्य
यान् । अभिमन्यु पुरस्सृत्य महत्यामेतयावृतः ॥ ५८ ॥ तं श्रुत्वा समर-युद्धं सूचीमुख
मैरिद्रमं । विभिदुर्घातैर्गच्छाणां तत्र वाकीक माहवे ॥ ५९ ॥ ता-प्रयाता महं च सागमि
मन्यु पुरोगमान् । भीमसेन भया विष्टा घृष्टं युष्मि विमाहिता । ६० ॥ ससवायितु-क्त
तवसेनाजनाधिगं । मदम्-आग्निनासामये प्रमद्वेषा घनि-मिथता ॥ ६१ ॥ तेऽभिजाता
महे-ध्यासा सुवर्ण विरुतध्रजा । परिपसन्तोऽयथाव त घृष्टयुष्मपृकोदगं ॥ ६२ ॥ तौ
चि-द्वेष्या महेश्वाम्ना यमिमन्युपुरोगमान् । वभुधनुर्मुदायकौ निघ्नन्तौ तवयाहि
नीमं ॥ ६३ ॥ द्रुत्वा तु न हसो गत पाचाद्यो गुरुमा मत् । नाद्रसत् पथं धीर पुत्रांणोत्तर
भारत ॥ ६४ ॥ ततो रथ समारोप्य कैकेयस्य वृकोदाम् । अभ्यव वत्सुसंक्रुदो द्रोण

युधिष्ठिर की आज्ञा पातेही म याहनके समय युद्धकी ओर गये; पांचो कैकय और
पाचो द्रौपदी के पुत्र घृष्टकेतु-यह सब अपनी भारी सना समेत अभिमन्यु को
आगे करके, स्थित हुए और वहां युद्ध में घृष्टको शूर्वी मुख बना के
घृष्टाश्रु के पुत्रों की रथवाली सेना को डिन्नःभिन्न कर दिया, भीमसेन के भय-
से भरे हुए और घृष्टयुष्म के हाथ से जति अचेत आपकी सेना उन अभिमन्यु
आदि बड़े धनुषधारियों के सम्मुख होने का समर्थ नहीं हुई, और मूर्छा में भरेहुये
श्री के समान मार्ग में नियत हुए । ६१ । वह महा धनुर्धर सुवर्णित ध्वजा युक्त
घृष्टयुष्म और भीमसेन के देखने को सम्मुख दौड़े उन अभिम-यु आदि वीरों को
देखकर वह दोनों भीमसेन और घृष्टयुष्म बड़े आनन्दित हुए, फिर शूर वीर, घृष्ट-
युष्म ने अक्रमात् आये हुए अपने गुरुको देखकर आपके पुत्रों को, नहीं मारा
तदनन्तर भीमसेन की कैकय के रथपर सवार करके अत्यन्त काप में मराहुआ घृष्टयुष्म

Bhim 50 "My mind," said he "is much disturbed on their account."
All those warriors having obtained Yudhishtira's orders entered
the battle field at midday. The five Karkaya brothers, the five
sons of Draupadi and Dhrishtideva with a large army were led by
Abhimanyu, and having formed themselves into a wedge like shape,
they dispersed the armies of the sons of Dhrishashtra. Already
terrified by Bhim and wounded by Dhrishtadyumn, your armies
could not withstand the great archers, Abhimanyu and others, and
stood like an unconscious woman in the way 61. The great archers
with golden banners rushed on to see Dhrishtadyunus and Bhimseen.
Seeing those brave warriors, Abhimanyu and others, Bhim and
Dhrishtadyumn were much pleased. Then brave Dhrishtadyumn,
seeing his preceptor before him did not destroy your sons and mount-
ing Bhim on the chariot of Karkaya, Dhrishtadyumn in a great rage,
rushed against Proracharya - perfect in archery and oth 1

मिथ्वस्त्रपाणम् ॥ ६५ ॥ तस्याभि पततस्तूर्णं भारद्वाज प्रतापवान् । कुदाक्षिच्छे
 दव जेन धन शत्रुनिर्दहनः ॥ ६६ ॥ अयोध शतशोषाणान् प्रेषयामासपार्थतः ।
 दुर्योधन हितार्थाय भर्तुं पिंडमनस्मरन् ॥ ६७ ॥ अधान्य ऊनुरादाय पार्थतः पर
 चीन्सा । द्रोणं विद्याय विशत्यात्ममपुत्रैः शिलाशिरैः ॥ ६८ ॥ तस्य द्रोणः
 पुनश्चाप चिच्छेदाभिप्रकृशेनः ॥ हयाधचतुस्तूर्णं चतुर्भिः सापकोत्तमैः ॥ ६९ ॥
 पंचस्रत क्षय घोरं प्रेषयामासभारत । सा विद्यास्य भङ्गेनप्रेषयामास मृत्यवे ॥ ७० ॥
 हताश्वात्सरथा तूर्णं मयच्छुभ्यमहारथः । आरुरोह महाबाहुभिमन्योमहारथम्
 ॥ ७१ ॥ ततः सरथ नामा श्वासम कपतवाहिनी । पश्यतो भीम सेनस्यपार्थ
 तस्य चपदयतः ॥ ७२ ॥ तस्यभग्नं बलं दृष्ट्वा द्रोणेनामिततेजसा । नाशयन्वन्वारयितुं
 समस्तारते महारथाः ॥ ७३ ॥ चभ्यमानंतु तत्सैन्यं द्रोणेन निशितैः शरैः । व्यश्रगत्तत्र

वाण और अस्त्रों के परांगत द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़ा । ६५ । शत्रुहन्ता प्रतापी
 द्रोणाचार्य ने बहुत क्रोधित होकर तड़ी शीघ्रता से उस सम्मुख आनेवाले धनुष को
 भल्ल से काटा, और स्वामी के हित के निमित्त अन्य सैकड़ों वाणों से धृष्टद्युम्न
 को घायल किया, फिर शत्रु के मारनेवाले धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर शिला
 पर घिसे सुनहरी पुंखवाले, वाणों से द्रोणाचार्य को घायल किया, फिर शत्रुहन्ता
 द्रोण ने उसके दूसरे धनुष को भी काटा और बड़े तीव्र चारशायकों से चारों
 घोड़ों को यमके लोक को भेजा फिर इस के सारथी को भी एकही भल्ल से
 मार डाला ७० । फिर वह महाबाहु महारथी शीघ्रही मृतक घोड़ों के रथ में उतरकर
 अभिमन्यु के महारथ पर सवार हुआ, इसके अनन्तर भिमसेन और धृष्टद्युम्न के देखते
 हुए रथ हाथी घोड़े आदि समेत सेना भयसे कम्पित हुई, फिर द्रोणाचार्य जी से
 व्याकुल सेना को देखकर वह सब महारथी उसके रोकने को समर्थ नहीं हुए,
 द्रोणाचार्य के तीक्ष्ण वाणों से घायल वह सेना समुद्र के समान महा व्याकुल

weapons 65. Brave Dronacharya the destroyer of enemies, cut down the bow of his adversary with his dart, and with hundreds of arrows wounded him for the good of his employer. Then Dhrishtadyumna the destroyer of foes, taking up another bow, wounded Dronacharya with his arrows sharpened on stone and having gold feathers. Drona the destroyer of foes cut down his second bow too and killed the four horses of his chariot with four arrows and the driver with one 70. That warrior soon jumped down from his chariot of which the horses were dead, and mounted on Abhimanyu's chariot. Then within sight of Bhimsen and Dhrishtadyumna your armies full of chariots, elephants and horses, trembled with fear and could not withstand the fury of Dronacharya's attack. Wounded by the sharp arrows of Drona, the army was agitated like the ocean and

तत्रैव क्षीण्यमाणइषार्णव ॥ ७५ ॥ तथा दृष्ट्वा च तस्मैर्धं जहृपेतावर्कधत्तम् । दृष्ट्वा
चार्येषुसकुट्टं पतंतारिपुषाहिनीम् । चुक्युःसर्वतोयोषाः साधुसाधितिमास्त ॥ ७५ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे श्रेणपराक्रमे

सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

सञ्जय उवाच । ततो दुर्योधनो राजा मोहात्प्रत्यागतस्तदा । शरवर्षं पनर्भे मं
प्रत्यचारयदक्षयुतम् ॥ १ ॥ पर्याभूतास्ततश्चैव तत्र पुत्रा महारथाः । जमेय समरे भीम
योधयामाबुख्यताः ॥ २ ॥ भीमसेनो वि समरे सम्प्राप्य स्वधनुनः । महाबल्य महाबाहु
यर्षो धेन तवारमनः ॥ ३ ॥ प्रगृह्य च महावेगं पशुस्करणं दृढम् । सञ्ज शरान्न सङ्घपे
शरविभ्याघ ते सुतम् ॥ ४ ॥ ततो दुर्योधनो राजा भीमसेन महाबलम् । नाराचेन सुती
हमेन भूशं मर्मण्यताडयत् ॥ ५ ॥ सो तिपिद्धो महेष्ट्यासत्तवपुत्रेणघन्विना । क्रोधधरक
नयनो घेगेनो क्षिप्य कामुकम् ॥ ६ ॥ दुर्योधनतृभिवांशैर्दरसिचार्ययत् । सतत्र युयुमे

होकर जहाँ तहाँ भागने लगी, फिर आपकी सेना उस सेना को भागती देखकर
बड़ी प्रसन्न हुई, हे भरतर्षभ इस रीतिमें शत्रुकी सेना को मारताहुआ क्रोधयुक्त
श्रेणाचार्य को देखकर शूरवीर लोग चारों ओरसे घन्य २ करके पुकारने लगे ७५ ॥

अध्याय ७८ ॥

इसके पीछे राजा दुर्योधन ने ब्यूह से पृथक् होकर अपने बाणों की वर्षा से
दुर्जय भीमसेन को रोका, फिर आपके महारथी पुत्रभी इकट्ठे होगये और सब
मिलकर भीमसेन से लड़ने लगे फिर महाबाहु भीमसेन भी युद्ध में अपने रथ को
पाकर उसपर चढ़के वहाँ को गया जहाँ आपका पुत्र था, वहाँ उस वेगवान ने
जीव निकालनेवाले दृढ़ और जड़ाऊ घनुप को चढ़ाकर बाणों से आपके पुत्रको
पीड़ित किया, इसके पीछे हे राजा दुर्योधन ने भी अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचों से
महाबली भीमसेन को मर्मस्थलों में घायल किया, फिर उसे महाक्रोध रूप घनुप
धारी भीमसेन ने आपके पुत्र से घायल होकर बड़े लाल नेत्र करके उत्तम मयन

began to run away this way and that. Your army was much pleased
at the flight of the opposite party. Thus destroying the army of the
enemy, Dronacharya was much praised by all the warriors. 75.

CHAPTER LXXVIII

Prince Duryodhan then separated him self from the rest of the
army and checked invincible Bhimsen with a shower of arrows, Your
other sons too came together and began to fight against Bhim
Bhimsen mounted on his chariot and went to the place where your
son was and wounded him with the arrows shot from his jewelled
bow. Prince Duryodhan, too, wounded him in vital places with his
exceedingly sharp arrows Wounded by your son, Bhim with eyes
red in anger, drew up his bow and with three arrows wounded Dur-

राजा शिवरैमिरे पाडि ॥ ७ ॥ तौदृष्टरा समरेकुदौ विनिघ्नतौ परस्परम् । दुष्योधना
 तुजा सर्वे शूरा सन्त्यजजी वित् ॥ ८ ॥ सम्मृत्य मन्त्रित पूर्वं निग्रह भीमकर्मण
 निरमरन कृत्वा दिगृहीनु प्रवक्रमु ॥ ९ ॥ तानापतत एवाजी भीमसेना महाबली ।
 प्रत्युद्ययी महाराज गज प्रतिगज निव ॥ १० ॥ भृशकुक्षधनेजस्वी नागात्सेन समा
 र्ययत् । चित्रसेन महाराज तव एव महापशा ॥ ११ ॥ तथेतरास्वच सुतास्वाड
 याम स भारत । शरिवह्विधै सह्यै स्वमपहं सतेजने ॥ १२ ॥ तत स्वस्थप्य
 समरे ता-वनीकाभि सर्पश । अभिमन्युप्रभृतयस्ते छादश महारथा ॥ १३ ॥ अथि
 ता धूम राजे । भीमसेनपदानुगा । प्रतिजगममहाराज तरपुत्रान् मह वनान् ॥ १४ ॥
 इदृशा स्थथास्तानश्रान् सूर्योग्निसमतेजस । सजानव महेश्वासान् भ्राजमानान्
 श्रियावृत्तान् ॥ १५ ॥ महादधे दी-रमान् सुवर्णचक्रतोड-वलान् । तत्यजु सगरे

धनुषको खैबकर अपने तीन बाणों से दुष्योधन की भुजा और छाती को घायल
 किया, हे राजा इस रीति से घायल होकर भी वह दुष्योधन पूर्ववत्, के समान
 चलायमान नहीं हुआ फिर दुष्योधन के शूर वीर युद्ध में देह के त्यागने वाले
 भयों ने दोनों वीरों को परस्पर मारने में प्रवृत्त देखकर भयकारी भीमसेन के
 पकड़ने का पूर्व कर्म स्मरण करके बड़े निश्चय पूर्वक उस के पकड़नेका उपाय
 किया, हे महाराज महाबली भीमसेनभी उन युद्ध में प्रवृत्त वीरों के सम्मुख ऐसा
 चला जैसे कि हाथी हाथियों के सम्मुख जाता है हे महाराज बड़े यशस्वी तेजवान्
 अत्यन्त क्राधित भीमसेन ने आप के पुत्र चित्रसेनको नाराचसे घायल किया,
 और इसी प्रकारसे अनेक उत्तम बाणों से आपके अन्य पुत्रों को भी घायल
 किया, तदनन्तर धर्मराजके भेजे हुए भीमसेन के पीछे चलनेवाले वह अभिमन्यु आदि
 बारह महारथी युद्ध में अपनी सेना को सब ओर से नियत करके उन महारथी राज
 पुत्रों के सम्मुख गये, उनशूर रथोंपरमवारसूर्य्य अग्निके समान प्रकाशितशोभाय-
 मान लक्ष्मी से युक्त भूमि से तेजस्वी सुवर्ण भूषणा से अलंकृत सब बड़े धनुषधारियों

jodhan in the aim and burst Duryodhan remained immovable
 like a mountain even after receiving the wounds. The brave brothers
 of Duryodhan ready to die for him seeing those two warrior engaged
 in combat and remembering their former resolution tried hard to
 capture Blum. The latter freed those brave warriors by an elephant
 faces other elephants. Glorious Bhishma of great prowess in great
 anger wounded Chitrang with an arrow and with others he wounded
 the others. Then the twelve warriors, Abhimanyu and others, sent
 by Yudhishtir to help Blum having stationed their forces all round,
 faced those brave pieces. Seeing those brave men mounted on
 chariots glorious like the sun or fire, decked with ornaments of great
 value and armed with bows, your brave sons left Blum but the latter

भूमिं तत्र पुत्रा महाबलाः । तान्नामृष्यत कौन्तेयो जीवमाना गता इति ॥ १६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीमपराक्रमे

अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

सञ्जय उवाच । अर्धाय च पुनः सर्वास्तव पुत्रानपीडयत् । शयाभिमन्युं समरे भीममेतेन संगतम् ॥१॥ पार्यतेन च सम्प्रेक्ष्य तत्र सैन्ये महारथाः । दुर्योधनप्रभृतयः प्रगृहीतशरसनाः ॥ २ ॥ मृगमद्वयैः प्रजवितैः प्रययुर्यत्रते रथाः । अपराङ्गण महा राज प्रायत्तत महारणः ॥ ३ ॥ तावकानाञ्च वलिनां परेषाञ्चैव भारत । अभिमन्यु विकर्णस्य हयान् हत्वा महाह्वे ॥ ४ ॥ अर्धेन पञ्चविंशत्या क्षुद्रकाणां समार्षयत् । हताश्वं रथमुत्सृज्य विकर्णस्तु महारथः ॥ ५ ॥ आक्रोह रथे राजंश्चित्रसेनस्य भारत । स्थितावेकरथे तौ तु भ्रातरौ कुलवर्धनौ ॥६॥ आर्जुनिः शरजालेनञ्छादयामास

को देखकर आपके महाबली पुत्रों ने युद्धमें भीमसेन को त्याग दिया परन्तु भीमसेन उन जीवते जानेवालों को देखकर सह न सका १६ ॥

अध्याय ७९ ॥

संजय बोले कि इस के पीछे भीमसेन समेत अभिमन्यु ने पीछा करके आपके सब बेटों को घायल किया, फिर धनुषधारी महारथी दुर्योधनादिक आपकी सेना को घृष्टयुग्म के हाथने महा व्याकुल देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा वहाँ पहुँचे जहाँ कि वह रथी वर्त्तमानये तदनन्तर मध्याह्नके पीछे आपके और दूसरों के शूर वीरोंका महायुद्ध प्रारम्भ हुआ हे भारतवंशी अभिमन्युने विकर्णके घोड़ों को मारकर २५ क्षुद्रकाणों से उनको आच्छादित कर दिया फिर महारथी विकर्ण मृतक घोड़ों के रथको त्यागकर चित्रसेन के प्रकाशमान रथपर चढ़े हुए दोनों भाइयों को अभिमन्यु ने वाणों से दक दिया तत्र दुर्जय और विकर्ण ने पांचसौहैके वाणों से अभिमन्यु को पीडित किया परन्तु मेरु पर्वतके समान दृढ़ अभिमन्यु उस

could not bear their going away alive 16.

CHAPTER LXXIX

Sanjaya continued.—“Abhimanyu and Bhimsen then chased your sons and wounded them all. Then the great charioteers of your army Duryodhan and others seeing their armies, much distressed by Dhrishtadyumn, rode on their swift horses to the place where those warriors were, and in the afternoon there was a severe fight between the soldiers of the two parties. Having killed the horses of Vikarn, Abhimanyu covered him with twenty five sharp arrows. Brave Vikarn, thereupon, left his chariot with the dead horses and mounted the shining chariot of Chitransen. Abhimanyu covered with his arrows, both the brothers mounted on the same chariot. Durjaya and Vikarn wounded Abhimanyu with five iron arrows, but the latter remained firm like a mountain and could not be shaken with the wounds. Dushasan fought a won-

भारत । चित्रसेनो विकर्णश्च कार्णिण पञ्चभिरायसे ॥ ७ ॥ विव्यधा तेन चाकम्पत्
 कार्णिमेंरुवस्थित । दुशासनस्तु समरे केकयात् पञ्च मारिष ॥ ८ ॥ शोधयामास
 राजेन्द्रतद्दृमुतामिवाभवत् । द्रौपदेया रणे क्रुद्धा दुर्योधनमचारयन् ॥ ९ ॥ शरैरानी
 विधाकारै पुन तव विशाम्पते । पुत्रोपि तव दुर्जयो द्रौपद्यास्तनयानुरणे ॥ १० ॥ साय
 कैर्निशितैराजन्नाजघान पृथक्पृथक् । तैश्चापि विद्ध शुशुभे रुधिरण समुक्षित ॥ ११ ॥
 गिरि प्रसूवर्णैर्दृग्गैरिकादि विमिश्रितै । भीष्मोपि समरराजन् पाण्डवानाम नीकिनीम
 ॥ १२ ॥ कालयामास बलवान् पाल पशुगणानि । ततो गाण्डीवनिर्घोष प्रादुरासी
 द्विशाम्पते ॥ १३ ॥ दक्षिणेन वरुथिन्या पार्थिव्यारीर्न विनिघ्नत । उत्तस्थु समरे
 तत्र कवन्धानि समन्तत ॥ १४ ॥ हुरुणाश्चैव सैन्येषु पाण्डवानाश्च भारत ।
 शोणितोदशरावर्त्तं गजद्वीप हयोर्मिणम ॥ १५ ॥ रथनीभिर्नरव्याघ्रा प्रतेरु सैन्यसा

चोटसे कंपित नहीं हुआ फिर हे राजेन्द्र दुःशासन ने पाँचों केकयों को लड़ाया
 यह एक आश्चर्यसा हुआ और युद्धमें कोपित द्रौपदी के पुत्रोंने दुर्योधन को
 रोका फिर प्रत्येकने तीन २ बाणों से आपके घेरेको पीढामान किया और उसने
 भी दुर्जय द्रौपदी के सब पुत्रों को बड़े तीक्ष्ण शायकों से जुदा २ घायल किया
 और फिरवह दुर्योधन उन पाँचोंसे घायल रुधिर च्त्ता हुआ ऐसाशोभा युक्त हुआ
 जैसे कि पहाड़ी धातु मिश्रित क्षिणोंसे पर्वत शोभायमान होता है और हे राजा
 महावली भीष्मजीने भी पाण्डवों की सेनाको ऐसाघायलकिया जैसे कि ग्वाल
 अपने पशुओं के समूहों को ताडित करताहै । १२ । इसके पीछे सेनाके दक्षिण
 और अर्जुन के शत्रु हन्ता गांडीव धनुषया शब्द सुनाई दिया, वहाँभी कौरव और
 पांडवों की सेनाओंमें हजारों रुंडलड़े होहोकर युद्धकरनेवाले हुए, उसयुद्धमें भी
 नरोत्तमों ने रुधिररूप जल और वाणरूप भँवर हाथी रूप टापू घोड़े रूप लहरें
 ऐसे सेना रूपी सागर को रथरूप अपनी नौकाओंके द्वारा तरणकिया उस संग्राम

derful fight with the five Kuru brothers, and the five sons of Draupadi checked in battle the enraged Duryodhan. Each of them wounded your son with three arrows and the latter wounded them separately with his own sharp arrows. Duryodhan wounded and bleeding by those five warriors looked glorious like a mountain with its fountains of mineral waters. The army of the Pandavas was beaten down by Bhishma like a herd of cattle by the herdsman. 12. In the south of the army was heard the twang of Arjun's Gandiv bow the destroyer of foes and thousands of headless bodies were to be seen there in the armies of the Kuravas and the Pandavas. In that battle, too, the best of warriors crossed with the canoes of their chariots the ocean having blood for its waters, the arrows for its eddies, the elephants for its islands and the horses for its billows. Thousands of warriors

गरम । छिन्नहस्ता विफलयुक्ता विदेहाश्च नरोत्तमा ॥ १६ ॥ हृद्यन्ते पतितास्तत्र शत
शोधसहस्रशः । निहतर्मत्तमातङ्गः शोणितो घपरिप्लुतः ॥ १७ ॥ भूर्भोति भरतश्रेष्ठ
पर्यैतैरचितायथा । तत्राद्भुतमपदयामस्तत्र तेषाञ्च भारत ॥ १८ ॥ न तत्रासीत्पुमान्
फदिचद्यो युद्धं नामिकाक्षति । एवं युयुधिरे वीरा प्रार्थयाना महद्यशः । तावकाः
पाण्डवैः सार्द्धं माकाक्षितौ जयंयुधि ॥ १९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे

ऊनाशीतितमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

सञ्जय उवाच । ततो दुष्यंधनो राजा लोहितायति मास्करे । नंग्रामरभसो भीम
हन्तुकामोभ्यधावत ॥ १ ॥ तमायान्तमामिप्रेक्ष्य नृधीरे हृदयैरिणम् । भीमसेन । सुसंयुद्ध
इदम्यचनमवधीत् ॥ २ ॥ अयं सकालः सम्प्राप्तो चर्षपगाभिधाक्षितः । अद्यत्यां निह
निष्यामि यदि नोत्सृजसे रणम् ॥ ३ ॥ अद्यकुन्त्या परिजलेशं चनवासञ्च कृत्वस्नशः ।

मैं हाथ कवच टूटे देहके अहंकार से रहित हजारों नरोत्तम पृथ्वी पर गिरे हुए दृष्टि
गोचरहुए, हे भरतर्षभ मृतक हुए रुधिरोंमें भरे मतवाले हाथियों में पृथ्वी ऐसी दिग्गई
दी मानो पर्वतों से भरा है, वहां हमने आपके पुत्रोंका और पांडवों का अपूर्व
वृत्तान्त देखा अर्थात् कोई ऐसा वहां एवम नहीं था जो युद्धकरना न चाहता हो,
इस रीतिसे बड़े यशके चाहनेवाले युद्धमें विजयाभिलाषी आपके धीरपुत्र पाण्डवों
के साथयुद्धकरनेवालेहुए १९ ॥

अध्याय ८० ॥

संजय बोले फिर सूर्यके अरुण होनेपर युद्धमें वेगवान् राजा दुष्यंधन भीमसेनके
मारनेको इच्छावान् सम्मुख दौड़ा, तब अत्यन्त कोपयुक्त भीमसेन उस आतेहुए नर
धीर बड़ी शत्रुताररनेवाले को अपने सम्मुख देखकर यह वचन बोला, कि बहुत
वर्षों से चाहाहुआ यह समय आया है अब मैं अवश्य तुम्हको मारुंगा जो तू युद्धमें
न भागेगा, अब तेरे मारनेमें मैं कुन्ती के और द्रौपदी के वनवासके दुस्खोंको दूर

we were seen there falling down deprived of their hands, armour and
pride of power. The ground looked full of hills with the bleeding
bodies of mad elephants. Then we saw the wonderful prowess of your
sons and that of the Pandavas. There was no person there who did
not desire for fighting. Thus the great seekers after fame and victory,
your sons as well as the Pandavas fought bravely" 19.

CHAPTER LXXX

* Sanjaya continued — "When the sun was red, Prince Duryodhan
of great energy rushed to destroy Bhishma in fight, and the latter, in a
rage seeing his brave enemy coming towards him, said, "The long-
wished for time has come! I shall surely kill you, if you do not run
away from the field. I shall wash away with your blood the sorrows
of Kunti and Draupadi at once. You will now reap the fruit of

द्रौपद्याश्च परिक्लेशं प्रणेप्यामि हते त्वयि ॥ ४ ॥ यत्पुरा भस्सरी भूत्वा पाण्डवानश्च
मन्यसे । तस्य पापस्य गान्धारे पश्य व्यरानमागतम् ॥ ५ ॥ कर्णस्य मतमास्थाय
सौवलस्य च यत्पुरा । अचिन्त्य पाण्डवान् फामाद्यथेष्टं कृतवानसि ॥ ६ ॥ याच
मानश्च यन्मोहादाशाहंमवमन्यसे । उलूकस्य समादेशं यहदासि च हृष्टवत् ॥ ७ ॥
तेन त्वा निहनिष्यामिःसानुबंधं सवान्धवम् । शमीकरिष्ये तत्पाप यत्पुराकृतवानसि
॥ ८ ॥ पवमुक्त्वा धनुर्घोरं विकृष्योऽन्नाम्य चासकृत् । समाधत्त शरान् घोरान् महा
शानिसमप्रभान् ॥ ९ ॥ पद्द्विंशतिमसं क्रुद्धो मुमोचाशु सुयोधने । ज्वलितान्नि शिखा
कारान् वज्रकल्पानजिह्वगान् ॥ १० ॥ ततोऽस्यकार्मुकं द्वाभ्यां सूतं द्वाभ्याश्च विव्यधे ।
चतुर्भिरश्वान्जघनान नयद्यमसादनम् ॥ ११ ॥ द्वाभ्याश्च सुविकृष्टाभ्यां शरोभ्यामरि
मर्देन । छत्रं चिच्छेद् समरे राक्षस्तस्य नरोत्तम ॥ १२ ॥ पद्भिश्चतस्य चिच्छेद
ज्यलन्तं ध्वजमुत्तमम् । छित्वा तच्च ननादोऽन्वैस्तव पुत्रस्य पश्यत ॥ १३ ॥ रथान्च
करुंगा, जिस हेतुसे कि पूर्वसमय में तैने ईर्ष्या करके पाण्डवों को अपमान किया था
हे गांधारी के पुत्र तू उस पापके फल को देख और जिसकारण से कि तैने कर्ण
और शकुनी के मत में नियत होकर पांडवों को साधारण समझकर अपनी इच्छा
से वह कर्म किया है, और जिस दशामें कि भूलसे तैने श्रीकृष्णजी का अपमान
किया है इनसब हेतुओंसे मैं बांधवोंसमेत तुम्हको मारुंगा और उस पापको शांतकरुंगा
जो पूर्व समयमें किया है, उस क्रोधरूप भीमसेन ने इस प्रकार से कहकर अपने
घोर धनुष को खिंचकर बारम्बार ऊंचा घुमाकर घोर महावज्र के समान प्रकाशमान
अग्नि शिखा के समान ज्वलित वज्रके समान नीधे चलने वाले छब्बीस बाणों को
बड़े वेग से शीघ्रता पूर्वक दुर्योधनपर फेंका ॥ १० ॥ और दो बाणों से उसके धनुष
को काटा और दोही बाणों से उसके सूत को घायल करके चार तीक्ष्ण बाणों से
उसके घोड़ों को मारडाला, फिर उस शत्रुहन्ता ने अच्छे प्रकार खिंचे हुए दो बाणों
से उस राजा के छत्रको भी उत्तम रथ से काट गिराया, फिर तीन बाणों से
उसकी उत्तम ध्वजा को पृथ्वी पर षाटकर दुर्योधनके देखते हुए बड़े शब्द

your envy and contempt of the Pandavas, son of Gandhari 5. And because you have acted on the evil counsel of Karan and Shakuni have fought against the Pandavas and thought them to be ordinary men, and have by your stupidity looked down upon Shree Krishna, I shall therefore destroy you and your kinsmen to avenge the wrongs done by you in some days " Having said these words Bhim in his rage, drew his bow and swinging it high several times, discharged ceaselessly at Duryudhan, twenty six arrows straight and shining like vajra and burning like a flame. 10 With two of his arrows he cut down his bow and having killed his chariot driver with two more, he killed his horses with four. Then that destroyer of foes with two fine well aimed arrows cut down the shade from the chariot. And

स ध्वजः धीमान् नानारत्नविभूषितात् । पपात सहस्रा मूर्ध्नि विगुञ्जलधरादिव ॥१४॥
 ज्वलन्तं सूर्यसङ्घातं, नागं मणिमयं शुभम् । ध्वजे कुरुपतोदित्स्नने दृग्नु सत्रपाथिवाः
 ॥ १५ ॥ अथैतं द्रुपदमिष्यन्तिस्तोत्रैरिव महात्रिपदम् । आजवान् रणे घोरं स्मयन्निवमहा
 रथ ॥ १६ ॥ ततः स राजा सिन्धुनां रथश्रेष्ठो महारथः । दुर्योधनस्य जग्राह पाणि
 सत्रपुटपैतुतः ॥ १७ ॥ कृपदच रथिनां श्रेष्ठः कौरव्यममितोजसम् । आरोपयद्रथं राजन्
 दुर्योधनममर्षणम् ॥ १८ ॥ स गाढविद्धो व्यथितो भीमसेनेन संयुगं । निपसाद् रथो
 पस्थे राजन् दुर्योधनस्तदा ॥ १९ ॥ परिवार्य ततो भीमं जेतुकामो जयद्रथः । रथैरनेक
 साक्षैर्भीमस्पावारयद्दिशं ॥ २० ॥ धृष्टकेतुस्ततो राजन्नभिमन्युश्च वीर्यवान् । केकया
 द्रौपदेयादच तव पुत्रानयोधयन् ॥ २१ ॥ चित्रसेनः सुचित्रश्च चित्रांगदिचप्रदर्शनः ।

से गर्जा वह नानारत्नकार के रथों से शोभित उत्तम ध्वजा अकस्मात् रथ से
 ऐसी गिरी जैसे कि बादल में बिजली गिरती है, सब राजाओं ने कुरुपति
 दुर्योधन की प्रकाशमान अग्नि के समान ज्वलित मणियों से जटित ध्वजा को
 कटाहुआ देखा । १५ । तब अहंकार युक्त महारथी भीमसेन ने उस को दश बाणों से
 ऐसे घायन किया जैसे कि दग्ध से महागजेन्द्र को घायल करते हैं, इसके अनन्तर
 सिंधुदेशियों के राजा रथियों में श्रेष्ठ महाबली ने हाथ में परशों को धारण
 करके दुर्योधन की पीठ को पकड़ा, रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य ने बड़े
 तेजस्वी क्रोध युक्त कौरवी दुर्योधन को रथपर सवार किया, फिर वह राजा
 दुर्योधन भीमसेन के हाथ से अत्यन्त घायल और पीड़ामान् रथ में बैठ गया, तब
 मारने की इच्छा करनेवाले जयद्रथने भीमसेन को चारों ओरसे घेरकर हजारों रथियों
 से उसकी सब दिशाओं को रोका । २० । इसके पीछे हे राजा धृष्टकेतु व पराक्रमी अभिमन्यु
 व पाँचों केकय व पाँचों द्रौपदी के पुत्र आपके पुत्रों से युद्ध करने लगे चित्रसेन

having severed his banner with three arrows he roared within sight
 of Duryodhan. Decked with jewels the banner fell suddenly from
 the chariot as lightning does from clouds 14. All the princes saw
 the fall of the jewelled and shining banner of Duryodhan the Prince of
 the Kurus. Bhim then wounded Duryodhan with ten arrows as a
 driver wounds an elephant. At this the king of Sindhu a great war-
 rior armed with axe, protected Duryodhan on the back. Kripacharya
 the best of charioteers mounted the glorious prince of the Kauravas
 on his own chariot. Prince Duryodhan, much wounded and distressed
 at the hands of Bhim, sat on the chariot. And desiring to kill
 Bhim, Jayadrath surrounded him on all sides with thousands
 of chariots. 20. Dhristketu, valliant Abhimanya, the five
 Kailayas and the five sons of Draupadi fought against your
 sons. Chitrasen, Suchitra, Chitrang, Chitradarshan, Sucharu, Charu-
 mitra, Nand and Uppandak, these eight warriors of great prowess

चारु चित्र सुचारुश्च तथा नैवोपनन्दको ॥ २२ ॥ अष्टध्वेते महेश्यासा सुकुमारयश
स्विन । अभिमन्युरथ, राजन् समतात् पर्यवारयन् ॥ २३ ॥ आजघ्न ततस्तूर्णं मभि
मन्युर्महामना । एकैकं पञ्चभिर्वाणै शितै सन्नतपर्वभिः ॥ २४ ॥ वर्ज्जसृत्यु प्रतीकाशै
र्विचित्रायुध नि सृते । अमृष्यमाणास्ते सर्वे सौमद्रं रथसत्तमम् ॥ २५ ॥ वधुमुर्मंगणै
स्तीक्ष्णैर्गैरैर्मरिवाबुदा । सपीड्यमान समरे कृताश्रोयुद्धवुर्मव ॥ २६ ॥ अभिमन्यु
महाराज तावकान् समकपयत् । यथा देवासुरे युद्धे वज्रपाणिर्महासुरान् ॥ २७ ॥
विकर्णस्य ततो भल्लान् प्रेषयामास भारत । चतुर्दश रथध्रेष्टो घोरानाशीविपोपमान्
॥ २८ ॥ स सैर्विकर्णस्य रथात् पातयामास वीर्यवान् । ध्वज सूतं हयाश्चैव नृत्यमान
इवाहवे ॥ २९ ॥ पुनश्चान्यान् शरान् पीतानकुण्ठाप्रान् शिला शितान् । प्रेषयामास
सकुटो विकर्णायमहाबलः ॥ ३० ॥ ते विकर्णं समासाद्य कङ्कवर्हिणवांससः । मित्वा

सुचित्र त्रित्रांग चित्रदर्शन सुचारु, चारुचित्र इती प्रकार नन्द उपनन्दक, इन वड़े २
धनुषारी सुकुमार यशस्वी आठों ने अभिम यु के रथको चारों ओर से घेरा,
फिर वड़े साहसी अभिमन्यु ने शीघ्रही गुणग्रन्थिवाले पांच ५ वाणों से प्रत्येक को
घायल किया, वही वाण जड़ाऊ धनुष से निकले हुए वज्ररूप मृत्युकुं समान थे वह
मव भी क्रोधयुक्त होकर, रथियों में श्रेष्ठ अभिमन्युपर । २५ । अपने तीक्ष्ण वाणों की
ऐसे वर्षा करने लगे जैसे कि मेरु पर्वत पर बादल वर्षा करते हैं । महाराज उस
असन्न युद्ध में बुर्मद, पीड़ामान अभिमन्यु ने आप के पुत्रों को ऐसा अत्यन्त कंपित
किया जैसा कि देवता और असुरों के युद्ध में वज्रधारी इन्द्र वड़े २ असुरों को
कपायमान करता है । २७ । राजा इती प्रकार उस अभिमन्यु ने विष भरे हुए घोर चाँदह
भल्लों को विकर्ण के निमित्त भेजा, फिर उस पराक्रमी ने युद्ध में नृत्य करने वाले के
समान उन वाणों से विकर्ण की ध्वजा घड़े रथ सूत और धनुष को भी रथ से
गिराया, और पीतंग के प्रकाशित नोक और सीधे चलने वाले और वाणोंको
विकर्णपर पेका । ३० । वह कंक और गोरके परोसे संयुक्तवाण विकर्णको पाकर

surrounded Abhimanyu's chariot, but the latter wounded each of
them with five arrows containing hidden knots. Those arrows shot
from the gem-decked bow were fatal in effect like vajra and those
best of warriors, in a rage, showered their arrows on Abhimanyu as
clouds pour forth rain on Sumera. That great archer Abhimanyu,
being much wounded by their arrows, shook your sons with his arrows
as Indra the wielder of vana shakes the asurs in the war between the
gods and the asurs. 27 With fourteen poisonous darts, he wounded
Vikarna. Like a dancer in the field of battle he felled Vikarna's lance,
horses, chariot, darts and bow from the chariot, and discharged more
yellow coloured arrows at him. 30 These arrows furnished with
the feathers of vultures and peacocks, pierced through the body of

देह गता भूमिं ज्वलन्त इव पन्नगा ॥ ३१ ॥ ते शरा हेमपुद्गाप्रा व्यहृद्यन्त महीतले ।
विकर्णरथिरकिलन्ना वमन्त इव शोणितम् ॥ ३२ ॥ विकर्णं धीक्ष्य निर्भिन्न तस्यैवान्धे
सहोदरा । अभ्यद्रवन्त समरे सौमद्रप्रमुखात् रथान् । ३३ ॥ अभियात्वा तथैवान्यान्
रथास्तान्सूर्यवर्चसः । अविध्यन् समरेन्योन्यं संरंभायुद्धदुर्मदा ॥ ३४ ॥ दुर्मुखं ध्रुत
कर्माणं विभ्रा सप्तभिराशुनैः । ध्वजमंकेन चिच्छेद सारथिञ्चास्य सप्तमि ॥ ३५ ॥
अश्वान्जाम्बूनदैर्जालैः प्रच्छन्नान् वातरहसः । जघान पङ्क्तिभिरासाद्य सारथिञ्चाभ्य
पातयत् ॥ ३६ ॥ स हताश्वे रथे तिष्ठन् ध्रुतकर्मा महारथः । शक्तिं चिक्षेप सकुद्धो
महोत्का ज्वलितामिव ॥ ३७ ॥ सा दुर्मुखस्य विमलं वर्म भित्वायशस्त्रिनः । विदार्यप्रा-
विशद्भूमिं दीप्यमाना स्वतेजसा ॥ ३८ ॥ तं दृष्ट्वा विरथ तत्र सुतसोमो महारथः ।

उसके शरीर को घायल कर सपोंके समान श्वासलेते हुए पृथ्वी पर गिरे, फिर वह सुनहरी पुंख नोकवाले बाण विकर्णके रथिसे भरेरथिर को उगलते हुए पृथ्वी पर पड़े दृष्ट्वाये, विकर्ण को घायल देखकर उसके दूसरे सगे माई युद्धमें अभिमन्यु आदि रथियों के सम्मुख दौड़े, और इसी प्रकार उन क्रोधयुक्त युद्ध दुर्मद रथियों ने उनके सम्मुख जाकर उन सूर्य के समान तेजस्वी रथियों को परस्पर में रायल किया, फिर दुर्मुखने शीघ्रगामी सात बाणों से श्रुतकर्मा को घायल करके एक बाण से उसकी ध्वजाको काटा और सात बाणों से उसके सारथीको घायल किया ॥ ३५ ॥ फिर सुनहरी जालोंसे ढके हुए बाणके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको छः बाणों से मारकर उसके सारथीको भी गिराया उसपूतक घोड़ों के रथपर नियत उस महा बली श्रुतकर्मा ने बड़े क्रोधयुक्त होकर महाज्वलित उत्काके समान बरछी को उस के ऊपर फेंका, वह बरछी उस यशस्वी दुर्मुख के बड़े कर्षको काटकर अपने तेज से उसको फाड़के बड़ी प्रकाशमान होके पृथ्वी में प्रविष्टहंगई वहां महाशली सुतसोमने उसको विरथ देखकर सब सेनाके देखने हुए अपने रथ पर

Vikarn and fell down on the ground like hissing serpents. Those pointed arrows with gold feathers, vomiting forth the blood of Vikarn, were to be seen on the ground. Seeing Vikarn wounded, his other brothers rushed against Alhimanyu and others, and those brave warriors, proud of their power, wounded those glorious charioters in battle. Durmukh wounded Shrutkarma with seven swift arrows and having cut down his banner with an arrow he wounded the driver with seven more. And with six more arrows having killed the horses covered with gold nets and swift as the wind, he killed the driver also. Seated on the chariot with the horses dead, brave Shrutkarma in great anger, hurled at him a javelin bright as fire. The javelin cut through the armour of brave Durmukh with

पश्यतां सर्वे सैन्यानां रथमारोपयत्स्वकम् ॥ ३९ ॥ श्रुतकीर्तिस्तथा वीरो जयत्सेनं
 सुतं तव । अश्रययात् समरे राजन् हन्तुकामो यशस्विनम् ॥ ४० ॥ तस्य विक्षिपतश्चापं
 श्रुतकीर्तिर्महास्त्रनम् । चिच्छेद समरे तूर्णं जयत्सेनः सुतस्तथ ॥ ४१ ॥ क्षुरपेण सुती
 क्षणेन प्रहसन्निवभारत । तं दृष्ट्वाच्छिन्नधन्वानं शतानीकः सहोदरम् ॥ ४२ ॥
 अश्रयपद्यततेजस्वी सिंहयन्निनदन् मुहुः । शतानीकस्तु समरे दृढं विस्फार्यकामुकम्
 ॥ ४३ ॥ विव्याध दशभिस्तूर्णं जयत्सेनं शिलीमुखैः । ननाद् सुमहानादं प्रभिन्नश्च
 चारणः ॥ ४४ ॥ अथान्येन सुताक्षणेन सर्वावरणभेदिना । शतानीको जयत्सेनं विव्याध
 हृदये भृशम् ॥ ४५ ॥ तथा तस्मिन् वर्त्तमाने दुष्कर्णो भ्रातुरन्तिके । चिच्छेद समरे
 चापं नाकुलेः क्रोधमूर्च्छित ॥ ४६ ॥ अथान्यद्गुरुरादाय भारसाहमनुत्तमम् । समादत्त
 शरान् घोरान् शतानीको महाबलः ॥ ४७ ॥ तिष्ठ तिष्ठेति धामन्व्यदुष्कर्णं भ्रातुरप्रतः ।

सवार किया इस के पीछे हे राजा महाबली श्रुतकीर्ति आपके यशस्वी जयसेन पुत्र
 के मारने की इच्छा से उसके सम्मुख गया, तब आपके पुत्र जयसेन ने उस धनुष
 खिंचने वाले श्रुतकीर्ति के धनुषको अपने चुरप्रवाणोंसे बड़े हास्यपूर्वक काटा फिर
 तेजस्वी शतानीक उस धनुषदृष्टेद्दृष्ट अपने निज भाई को देखकर सिंहके समान बारंबार
 गर्जता हुआ सम्मुख आया और युद्धमें अपने दृढ धनुषको खिंचकर बड़ी शीघ्रता
 से दश शिली मुख वाणों से जयसेनको घायल किया और मदनमत्त बाधी के
 समान महाशब्द करके गर्जा, तदनन्तर इसने बड़े २ तीक्ष्ण दाल खड्गों के काटने
 वाले अन्य वाणोंसे जयसेनको अत्यन्त घायल किया । ४५। इसी प्रकार युद्धके वर्त्तमान
 होनेपर भाई के समीप नियतक्रोधमें व्याकुल दुष्कर्ण ने शतानीकके वाण समेत
 धनुषको काटा, फिर महाबली शतानीकने बड़े बोक के साथने वाले अन्य दृढ
 धनुषको लेकर बड़े घोरवाणों को हाथमें लिया । ४७ । और भाई के सम्मुखहोकर
 दुष्कर्ण से तिष्ठ तिष्ठ शब्द कइके उसके ऊपर बड़े तीक्ष्ण और ज्वलित सर्प के

its sharp edge and then glancing out entered the ground below. Sut-
 som of great prowess seeing him destitute of chariot took him up on
 his own chariot within sight of the armies. Then brave Shrutanti
 faced your valiant son Jayasen in order to kill him; but the latter
 with a smiling face, cut down the bow of Shrutanti with his sharp
 arrows. Shatanik seeing his brother's bow cut down, roared again
 and again like a lion and drawing up his bow for the purpose of
 fighting, soon wounded Jayasen with ten arrows sharpened on stone,
 and like a mad elephant roared a loud roar. Then with very large arrows
 which could cut shields, swords and bows, he wounded Jayasen more
 and more. When the battle was thus raging, Dushkarn stationed near
 his brothers, in great anger, cut down the bow and arrow of Satanik,
 who took up another bow capable of bearing great weight and put
 to it his dreadful arrows. 47. In the presence of his brother, he

मुमोचास्मै शितान् वाणान् ज्वलितान् पन्नगानि ॥ ४८ ॥ ततोस्य धनुरेकेन द्वाभ्यां
 सृतञ्च मारिच । विच्छेत् समरे तूर्णं तञ्च विव्याध मत्तमिः ॥ ४९ ॥ बध्वात् मनो,
 जवांस्तम्य कर्पुरान्वातरंहसः । जवान् निशिनस्तूर्णं सर्वान् द्वादशभि शरैः ॥ ५० ॥
 अथापरेण मञ्जेन संयुक्तेनाशु पातिना । दुष्कर्णं सुदृढं कुडो विव्याध हृदये भृशम्
 ॥ ५१ ॥ स परात ततो भूमौ बज्राहत इव दुमः । दुष्कर्णं व्यथितं हृत्वा पञ्च राजन्
 महारथाः ॥ ५२ ॥ जिशमन्तः शतानीकं सर्वतः पर्यवारयन् । छाद्यमानं शरघातैः
 शतानीकं यशस्विनम् ॥ ५३ ॥ अथवाचन्त संकुद्राः केकया पञ्चमोदराः । तानभ्या
 पतनः प्रेक्ष्य तपसुत्रामहारथाः ॥ ५४ ॥ प्रत्युद्युर्मुर्महारज गजा निज महागजाः । दुर्मुखो
 दुर्जयश्चैव तथा दुर्मरिगो युवा ॥ ५५ ॥ शत्रुजय शत्रुसह सर्वे कुड्यायशस्वितः । प्रत्यु
 द्यानामहारजकेरुयान् शत्रवः समम् ॥ ५६ ॥ रथैर्नगरस्य शैर्हृदयेयुर्कर्मनोजयैः । नाना

समान वाणों को छोड़कर एक वाणने उनके धनुषको और दो वाणों में उनके
 मारथी को काट मारकर बड़ी शीघ्रतासे मात वाणों से उनको घायल किया, फिर
 प्रसन्नमूर्ति मारथी ने बड़ी शीघ्रतासे बारह तीक्ष्ण वाणों से उसके सब घोंड़ोंको
 जो कि चलते अनुमार शीघ्रतामी और कल्पापी रंगधे मारडाला ॥५०॥ फिर हेराजा
 उन क्रोधरूपने शत्रुहन्ता और महा भयकारी भल्लनाम वाणने दुष्कर्ण को व्यथित
 किया और वा उन के आघात से बज्रने दृष्टे हुए वृत्तकी समान पृथ्वीपर गिरा हे
 राजा पांचनहारथियों ने दुष्कर्ण को मराहुआ देखकर, मारने की इच्छाकरके
 शतानीक को चारों ओर घेर लिया, फिर वाणों में ढके हुए यशस्वी शतानीक
 को देखकर, अत्यन्त क्रोध में भरे पांचों निजभाई केकय उनके सम्मुख दौड़े, हे
 राजा उन पांचों महारथियों को आता देखकर आपके पुत्र ऐसे सम्मुख गये जैसे
 कि हाथी महागजोंके सम्मुख जाय दुर्मुख दुर्जय दुर्दरिण ॥५५॥ शत्रुजय शत्रुसह
 यह सब यशस्वी महा क्रोध युक्तशेकर केरुय लोगों क सम्मुख गये, मन के अनुसार

challenged Duryodhan with a cry of 'stay, stay' and discharged sharp and bright arrows like serpents at him. With one arrow he cut down his bow; with two more he cut and killed the driver and very soon he pierced his body with seven sharp arrows. Then Satyaki with a cheerful face, killed all his swift horses of variegated colour with twelve sharp arrows 50 And with dreadful darts, destroyers of foes, he wounded Dushkarin, O King Wounded by those darts he fell down like a tree struck down by lightning. The five warriors seeing Dashkain dead surrounded Shatanik on all sides in order to kill him. And seeing Shatanik covered with their arrows, the five Kalkaya brothers, rushed on to the front Seeing those five warriors rushing on towards him, your sons faced them as elephants face elephants. Durmukh, Durjaya, Durdharshan 55 Shatranjaya, Shatru-ah, all these in great anger, faced the Kalkayas. Mounted on

वर्णविचित्राणि पताकाभिरञ्जितै ॥ ५७ ॥ यत्वापधरावीरा विचित्रकनकध्वजा ।
 विविशुस्ते पर सैन्य सिंहा इव चगाहनम् ॥ ५८ ॥ तेषामु तुमुल् युद्धव्यतिपत्तरथ
 द्विपम् । अचक्षत महावीर निघातामितरेतरम् ॥ ५९ ॥ अन्योन्यान्वस्वता राजन् यम
 राष्ट्रविचक्षणम् । युद्धार्तास्तमिते सूर्ये चद्रयुद्ध सुदाहणम् ॥ ६० ॥ रथिन स्तादिनइचाय
 व्यकीर्यन्त सहस्रश । तत शान्तनत्र युद्ध शरी सन्नतपर्वणि ॥ ६१ ॥ नाशयामास
 सेनाता भीष्मस्तेषा महात्मनाम् । पञ्चालानाञ्च सैन्यानि शरैर्निन्येयमक्षयम् ॥ ६२ ॥
 एव मित्वामहेष्यास पाण्डयानामनीकिनीम् । कृत्याऽवहार सैन्याना ययोस्वादिधिर
 नृप ॥ ६३ ॥ धर्मराजोपि सम्येक्ष्य धृष्टदुम्नवृकादरो । मूर्ध्नि चैतापुपात्राय प्रहृष्ट
 शिचिर ययौ ॥ ६४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणु भीष्मप्रथमोऽध्यायः ८० ॥

शीघ्रगामी घे हों से मयुक्त नाना प्रकारके विचित्ररथों और पताकाओं समेत रथों में बैठे उत्तम धनुषधारी चित्र विचित्र कनक पहिरे वह धीरशत्रुओंकी सेनामें आकर ऐसे वर्तमानहुये जैसे कि सिंह एक वन से दूसरे वनमें वर्त्तमान होतेहैं । ५८। हे राजा परस्पर मारते और एक एकका अपराध करने वाले लोगों का वह युद्ध शयी पोंदों समेत महातुमुल और धीर जारी हुआ वह सब यमलोक की वृद्धि करने वाले सूर्यास्त के समय बड़े घोरयुद्धकरने वाले हुए, हजारों रथों और घुडचढ़े व्य कुल हुए इस के पीछे शतनु के बेटे क्रोध युक्त भीष्मजी ने गुप्तप्रन्थी वाले बाणों से, उन महात्माओं की उस सेनाको नष्ट करदिया और पांचनों की सेना को भी यम लोक में पहुँचाया, इसरीति से वह बड़े धनुषधारी पांडवों की सेनाको घायन कर के सब सेनाओं का विश्राम करके अपने डेरे को गये, धर्मराजभी धृष्टदुम्न और भीमसेन को देखकर दोनों के मस्तरुको मूँघकर अपने डेरों को गये ६४।

various, chariots drawn by horses swift like the wind and furnished with banners those best of archers, sheathed in armour, came into the field of battle like lions coming from one forest to another 58 Killing one another and wounding those warriors, he fought hard with the help of elephants and horses and filled the region of Yam till sunset. Thousands of charioteers and horsemen were dabled Then Bhishm the son of Shrantana, in great anger, with arrows having hidden ke ys, destroyed the armies of the great Panda as and the Panchals sending many to the region of Yam Thus the great archer having wounded the army of the Pandvas dismissed the armies for the night and himself went to his tent Dhanraj too, smelt the foreheads of Bhimsen and Dhrishtadyum and then went to camp ' 64

सञ्जय उवाच । अथ शूरा महाराज परस्परकृतागसः । जग्मुः स्वशिविराण्येव
 रुधिरेण समुक्षिताः ॥ १ ॥ विश्राम्य च यथान्यायं पूजयित्वा परस्परम् । सन्नदाः
 समदृश्यन्त भूयो युद्धद्विकोर्यया ॥ २ ॥ ततस्तत्र सुतो राजंश्चिन्तयामिपरिप्लुतः ।
 विश्रवच्छोपिताक्ताङ्गः पप्रच्छेदं पितामहम् ॥ ३ ॥ सैन्यानि रात्रौपि भयानकानि
 ध्यूहानि सम्यग्बहुसंघजानि । विदार्यं हत्वाच निषोड्य शूरास्ते पाण्डवानां त्वारिता
 महारथाः ॥ ४ ॥ सम्मोह्य सर्वान् युधि कीर्तिमन्तो व्यूहञ्च तं मपरं वञ्चकल्पम् ।
 भविष्य भीमं रणेहतोस्मि घोरैः शरैर्मृत्युदण्डप्रकारैः ॥ ५ ॥ कुदन्तमुद्गीक्ष्य
 भयेन राजन् सम्मूर्च्छितो नलभे शान्तिमथ । इच्छे प्रसादात्तव सत्यसन्ध प्राप्तुं
 जयं पाण्डवेयांश्च हन्तुम् ॥ ६ ॥ तन्नैवमुक्तः प्रहसन् महात्मा दुष्योधनं मन्युगतं
 विदित्वा । तंप्रत्युवाचा विमना मनस्वी गङ्गासुत शस्त्रधृताभ्यरिष्ठः ॥ ७ ॥ परेण

अध्याय ८१ ॥

संजय बोले हे महाराज इसके पीछे परस्पर अपराध करने वाले शूररुधिर से
 भरे देह अपने २ ढेरोंको गये, फिर न्याय के अनुमार विश्राम कर परस्पर पूजन
 को करके युद्ध करने की इच्छा से कवच और अस्र शस्त्रों से, अलंकृत दृष्टपडे
 हे राजा इसके अनन्तर चिन्तायुक्त आपके पुत्रने: गिरतेहुये रुधिरसे भरेहुये शरीर
 वाले भीष्मपितामहसे पूछा कि पांडवों के वहशूर महारथी घोर भयानक और
 शस्त्रोंसे अलंकृत बहुत ध्वजायुक्त सेनाओंको मार और पीड़ित करके कीर्तिवानहो
 युद्धमें प्रवृत्तहुये और उसवज्रके समान मकरव्यूहमेंप्रवेश कर के मृत्युदण्ड के समान
 प्रकाशित और घोर भीमसेनके दाणों से मैं महाव्याकुल और घायल होगयाहूँ ।
 हे राजा उस क्रोधरूप भीम को देखके भय से मूर्च्छावान् होकर अबतक मैं शान्ती
 को नहीं पाता हूँ हे सत्यसंकल्प मैं आपहीकी कृपा से पाण्डवोंको मारकर विजय
 पाना चाहताहूँ इतनी बातें के सुनतेही, दुष्योधन को व्याकुल और क्रोधयुक्त देख

CHAPTER LXXXI

Sanjaya continued, " Then, O king, wounding one another, the warriors with blood stained bodies went to their respective camps. And having rested during the night, they saluted one another and were seen again well decked with arms and armour. Then your son, plunged in grief said to Bhishma the grandfather whose body dropped blood—"The brave warriors of the Pandavas, armed with dreadful weapons, have in battle killed and cut our soldiers and banners and gained great fame, and having entered the impregnable crocodile array of our army, Bhishma wounded me with his dreadful arrows shining like the staff of death. 5 Having seen the angry form of Bhishma, I fainted with terror and my mind is not yet composed. Observer of true vow I by your grace I hope to destroy the Pandavas and gain victory." Having heard these words and seeing Duryodhan

यत्नेन विगाह्य सेना सर्वात्मनाह तथ राजपुत्र । इच्छामि दातु विजय सुखच न
 चात्मान छादये ह त्वदर्थे ॥ ८ ॥ एते तु गद्गा बहवो महारथा यशस्विन शूर
 तमा हतास्त्रा । ये पाण्डवानां समरे सहाया जितफलमारोपयिष्यमान्ति ॥ ९ ॥
 ते नैव राक्षसा सहसा विजेतु धीर्योद्धता कृतवैरास्त्वया च । अहसेनां प्रतियोत्स्या
 मि राजन् सर्वात्मना जीवित त्यज्य धीर ॥ १० ॥ रणे तवार्थाय महानुभाव न जी
 वित रक्षयतम ममाग्र । सर्वास्तवार्थाय सदेवैत्यान् धोरान् दह्य किमु शत्रुसेनाम्
 ॥११॥ तान् पाण्डवान् योधयिष्यामिराजन् प्रियवते सर्वमह करिष्ये । भुवैव वैतद्वचन
 तरानीं दुर्योधन प्रीतमना प्रभव ॥ १२ ॥ सर्वाणि सैन्यानि तत प्रहृष्टो निर्गच्छतेत्याह
 नृपादश्च सर्वान् । तदाज्ञयातानि विनिर्ययुद्गतगजाश्वपादातरथायुतामि ॥१३॥ प्रहर्षयुक्ता
 नितुस्तानि राजन् महान्ति नानायुधशस्त्रघ्नान्ति रियतानि भागाश्वपदातिमन्ति विरेज्ज

कर भीष्मजी इसकर बोले, हे राजपुत्र मे सर्वांग पूर्वक बड़े उपायों से सेना को
 मझार विजय और सुखको देना चाहताहू और मैं अपने शरीर को तेरेप्रयोजन
 के लिये किसी प्रकार से बचाता हूँ, बहुतेरे महारथी शूर और स्वरूप अस्त्रज्ञ परि
 श्रम से अस्त्रिन्न होषरूप विष के उगलने वाले जो पांडवों के युद्ध में सहायक है
 वह पल में बड़े है उन्ही के साथ तुमने शत्रुताकरी है वह युद्ध में एकाएकी विजय
 करने के योग्य नहीं है हे वीर राजादुर्योधन मैं इस जीवनको त्याग करके सब प्रकारसे
 उनके साथ लड़ना ॥१०॥ हे महानुभाव अब युद्धमें तेरेप्रयोजनके लिये मैं अपने प्राणों की
 रक्षा करना योग्यनहीं समझताहूँ अर्थात् अपनेप्राणोंकी रक्षानहीकरसक्ताहूँ मैंतेरे निमित्त
 देवता और दैत्यों समेत सबलोकोंकोभी जीत सकताहूँ तो इस स्थानपर तेरे शत्रुओं का
 जीतना कितनी बड़ी बात है हे दुर्योधन मैं पांडवों से लड़कर तेरे सब अभीष्टों को
 करूंगा इस बातको सुनकर दुर्योधन भीष्मजी मे बहुत प्रसन्न हुआ, इसके अनन्तर
 उस प्रसन्न चित्तने सब सेनाओं समेत राजाओं से कहा कि चलो चलो-हे धृतराष्ट्र

much enraged and disturbed in mind, Bhishm replied with a smile,
 " With all my heart, O Prince, I desire to destroy all the warriors
 and to gain victory and happiness For this purpose and for your
 sake I cared to live any how Many a brave warrior of dreadful
 form, adept in the science of weapons, vomiting forth the poison of
 anger, help the Pandavas in this war You have made enemies of
 very strong men who can not easily be conquered Careless of life,
 I shall fight against them Prince Duryodhan ' 10 I shall no
 longer spare my life in battle for your sake I can, for your sake,
 win all the worlds with the gods and the devas, it is not so difficult
 to conquer your enemies here I shall fulfil all your desires by
 fighting against the Pandavas" Duryodhan was much pleased to
 hear this from Bhishm and the latter with a cheerful mind ordered
 the soldiers and the princes to march At his command, O Dhrit-

राजा तत्र राजन् बलानि ॥ १४ ॥ द्यूद्धः स्थिताद्यापि सुसंग्रयुतः । रथाशिर इतिगणा-
समन्तात् । शरशस्त्रविज्जिनंरथीरयोधराधिष्ठिता सैन्यगणास्तदीया ॥ १५ ॥ रथोप
पादातगजाश्चसर्षः प्रयाद्विराजा विधिवत् प्रणुने । ममुद्धते धैतरणापेवर्ण राज्ञो
वभीच्छाद्यत् सूर्यरदमीम् ॥ १६ ॥ रेजु पताका रथदन्तिमस्था वातेरिता ब्राह्म्यमाणा-
समन्तात् । नानारथाः समरे तत्र राजन् मेघयुता विद्यत ये यथैध ॥ १७ ॥ धनुषि वि-
स्फारयतां नृपाणां वज्रव शब्दस्तुमुलोऽतिघोरः । विमथ्यतो देवमहाभूरुधियेषाणवस्था
द्वियुगे तदानीम् ॥ १८ ॥ तदुग्रनामं बहुरूपवर्णं तथात्मजानां ममुदीर्णमेघम् । वज्र-
सैन्यं विपुसैन्यहन्तुं युगान्तमेघोष निमन्तदानीम् ॥ १९ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सप्तमपट्टादिवसे

एकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

उसकी आज्ञा पातेही रथ घोड़े हाथी और पैदलों की सब सेना शीघ्रही चलदी, हे
तात फिर आपही बड़ी सेना आति मसन्न होकर नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र धारण
करके हाथी घोड़े पैदलों समेत संग्राम भूमि में नियत होकर गोभायमान हुई और
हाथियों के समूह अच्छे प्रकार उचित स्थानोंमें नियत होकर चारों ओरसे प्रकाशित
हुए और अपने अस्त्र शस्त्र वेत्ताओंके समूह नरदेव शूरवीरों में संयुक्त होकर
अपने २ फर्मेको करने लगे, फिर उन रथ घोड़े हाथी और पैदलों से उठी हुई धूल
भी बड़ी उठी कि सूर्यभी ढकगये, हे राजा युद्ध में चारों ओरसे घूमते नाना रंग-
धारी रथ हाथी घोड़े और पैदली और इनके चढ़ने वाले अपनी २ सवारियों
समेत ऐसे गोभायमान हुए जैसे कि बादलों में संयुक्त और वायु से घृयक हुई विज-
लियां आकाश में प्रकाशित होती हैं, फिर धनुष चढ़ाने वाले राजाओं के शब्द
ऐसे बड़े कठोर और घोर हुए जैसे कि युगकी आदि में देवासुरों के हाथ से मये
हुए ममुट्ट के शब्दहुए थे, तब वह आप के पुत्रों की सेना भयकारी शब्दों से और
शत्रुओं के मारने वाले अनेक रूपों से प्रलयकाल के बादलों के समानहोगई ॥१२॥

rashtra, all the armies of chariots, horses, elephants and foot soldiers
marched for battle. Your large army armed with all sorts of weapons,
marched cheerfully with the elephants, horses and foot soldiers into the
field of battle. The elephants were arrayed in proper places all round
and the parties of warriors and valliant soldiers engaged in doing their
duties. 15. The dust raised by chariots, horses, elephants and foot-
men covered the sun. On all sides, roaming in the field of battle, the
chariots, elephants and horses of various colour and their riders and the
footmen looked glorious like lightning flashes detached from clouds.
The sound of the bowstrings of the warriors was tremendous like that
of the churning of the ocean by the gods and the asurs in the begining
of creation. Then the armies of your sons with their dreadful noises
and the slaughter of enemies looked like the clouds of pralaya." 19.

संजय उवाच । अधात्मजं तव पुनर्गाङ्गेयो ध्यानमास्थितम् । अप्रवर्णितश्रेष्ठः सन्म
 हर्षकर घञः ॥ १ ॥ अहं द्रोणश्च शल्यश्च कृतवर्मा च सात्वतः । अश्वत्थामा विकर्णश्च
 भगवत्तोषसावल ॥ २ ॥ विन्दात्तुविन्दावावन्यौ वाल्हिक सह वाहिकैः । त्रिगर्त
 राजोवल्गवात् प्रागधश्च सुदुर्जय ॥ ३ ॥ बृहद्रथश्च कौशल्यश्चित्रसेनो विविशति ।
 रथाश्च बहुसाहस्रा शोभनाश्च महाध्वजा ॥ ४ ॥ देशजाश्च हया राजन् श्वाकृदा ह्य
 सादिभिः । गजेन्द्राश्च मदोद्भृता प्रभिन्नकरदामुखा ॥ ५ ॥ पादात्ताश्च तथा शूरा नाना
 रः णः प्रजाः । नानादेशसमुत्पन्नास्त्रदर्शै योद्घु सुघताः ॥ ६ ॥ एते चान्ये च षड्
 वस्त्वदर्शै त्य कर्जाविताः । देवानपि रणे जेतुं समर्था इति मे मातेः ॥ ७ ॥ अवश्यं
 हिमया राजेस्त्वव वाच्य हितं सदा । अशक्या पाण्डवा जेतुं देवैरपि सचासवैः ॥ ८ ॥
 वासुदेवमशोषाथ महेंद्रसम विक्रमा । सर्वथाहन्तु राजेन्द्र करिष्ये वचनन्तव

अध्यायः ॥ ८२ ॥

मंजय बोले कि हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ इसके पीछे भीष्मभी ध्यानमें नियत हो-
 कर फिर आपके पुत्रकी प्रसन्नता के बचन बोले कि मैं द्रोणाचार्य शल्य कृतवर्मा
 अश्वत्थामा सोमदत्त और सिन्धु देशियों समेत विन्द अनुवन्द अवन्ति देश के राजा
 चाहलीकदेशी और वलवान राजा त्रिगर्त और महादुर्जय राजा भगध, बृहद्रथ
 कौशल्य चित्रसेन विविशति और बड़ी ध्वजा वाले शोभायमान हजारों रथ, और
 गुड़चढे समेत देशी घोड़े और मद से लाल नेत्र वाले मदोन्मत्त गजेन्द्र पदाती और
 नाना प्रकारके शस्त्रधारी शूभलोग भी नाना प्रकार के देशों में उत्पन्न होने वाले
 सब लोग तेरेही निमित्त युद्ध करने को तैयार हैं । ६ । इन के सिवाय और बहुत
 से लोग तेरे लिये जीवन के त्यागने वाले हैं बहुत से इन में देवताओं को भी
 युद्ध में विजय करने वाचे हैं यह मेरा मत है परन्तु हे राजा मुझ को तेरे प्रियकरों
 बचन अरश्य कहने के योग्य हैं उनको भी सुनो कि इन्द्र समेत देवताओं से
 भी पांडवों का विजय करना अतंभव है । ८ । क्योंकि वह वासुदेवजी को

CHAPTER LXXXII

Sanjaya continued — "Then, O best of the descendants of Bharat !
 Bhishm thought for a while and spoke these words to cheer up your
 son:—"I, Dronacharya, Shalya Kritvarma, Ashwathama, Somdatta,
 Vind and Anuvind with the Somas, the princes of Avanti, Vahlis,
 valliant king Trigart, the invincib'e king of Magadh, Vrbhadval, Kosal
 Chitrasen, Vivinshati, thousands of banncred chariots of beautiful
 form, horsemen, mad elephants with red eyes, footmen and armed sol-
 diers of different countries are ready to fight for you 6 Besides
 these there are others ready to lay down their lives for you and many
 of them can win even the gods in battle. This is my opinion, but I
 must give you some salutary advice. Hear it attentively:—Even
 the gods led by Indra cannot conquer the Pandavas, because they

॥ ९ ॥ पाण्डवांश्च रणे जेष्ये मां वा जेष्यन्ति पाण्डवाः । एवमुक्त्वा दशवर्षं
 विशाल्यकर्णो शुभाम् ॥ १० ॥ ओषधीं वीर्यसम्पन्नां विशाल्यश्चाभवत्तदा । ततः
 प्रभाते विमले स्वेन सैन्येन वीर्यवान् ॥ ११ ॥ अन्यूहन स्वयं व्यूहं भीष्मो व्यूह
 विशारदः । मण्डलं मनुजधेष्टो नानाशस्त्रसमाकुलम् ॥ १२ ॥ सम्पूर्णं घोषमूर्त्यैश्च
 तथा दन्तिपदातिभिः । रथरत्नेकसाहसैः समन्तात् परिव्यासितम् ॥ १३ ॥ अदवह-
 न्दर्महृद्भिश्च ऋषितोमरवारिभिः । नागे नागे रथाः सप्त सप्त चाश्वा रथे रथे ॥ १४ ॥
 अन्यदशं दश धानुष्का धानुष्के दशचर्मिणः । एवं व्यूहं महाराज तव सैन्यं महार-
 थैः ॥ १५ ॥ स्थितं रणाय महते भीष्मेण युधि पालितम् । दशदशानां सहस्राणि
 दन्तिनाञ्च तथैव च ॥ १६ ॥ रथतामयुतञ्चापि पुत्राश्च तव दक्षिताः । चित्रसेना

सहायक रत्नेनवले होकर महाइन्द्र के समान पराक्रमी हैं हे राजेन्द्र मैं सयप्रकार
 में तेरेवचनको करूंगा । ९ । पांडवों को युद्ध में विजय करूंगा अथवा पांडव
 मुझको विजय करेंगे इन प्रकार की बातें काके उसके निमित्त वह औपधियां जो
 घावको भानन्द करनेवाली और सामर्थ्य की बढ़ाने वाली थीं दीं उनके लगातेही
 वह घावों से रहित हुआ तदनन्तर बड़े प्रातःकाल उठकर शुद्धहो व्यूहकी रचना में
 बड़े कुशल भीष्मजी ने अपनी सेनाके व्यूहको आप तैयार किया फिर उसनरोत्तम
 ने अपनी सेनाके मंडलको शस्त्रों से अलंकृत किया, और उत्तम शूरवीर हाथी
 और पैदलों ते भराहुआ हजारों रथों से चारों ओरको घिराहुआ दुधारे खड्ग
 तोपर धारण करने वाले सवारों से व्याप्त एक २ हाथी के साथ सात २ रथी और
 मत्येक रथके साथ सात २ घोड़े और घोड़े २ के पीछे दश २ धनुषधारी और
 हरएक धनुष धारी के पीछे सात २ पदाती हुए हे महाराज आपकी सेना इस रीति
 से महारथियों से शोभायमान हुई युद्धमें भीष्मजी ने रचित बड़े संग्राम के लिये
 नियत किये हुए दशहजार घोड़े और दशहजार हाथियों के समूहों के साथ आपके

have Vasudev for their ally and are themselves full of prowess like
 Indra. I shall do thy bidding, Prince, with all the means in my po-
 wer. Either I shall win the Pandavas or they shall conquer me." Having
 said these words he gave him medicines for the cure of wounds
 and for restoration of strength. His wounds were healed as soon as
 the medicines were applied to them. Then having performed his
 morning ablutions, Bhishm, very clever in forming phalanxes, arrayed
 the armies and decorated the circle with weapons. 12. Full of brave
 warriors, elephants and foot men, surrounded by thousands of chariots
 and abounding in numerous horsemen armed with double-edged swords
 and tomars, that array had seven chariots for each elephant, seven
 horse for each chariot, ten archers following each horse and each archer
 followed by seven footmen. Thus, O king, your army became glori-
 ous with the warriors. Protected by Bhishm, ready for action with

द्वयः शूरा अभ्यरक्षन् पितामहम् ॥ १७ ॥ रक्ष्यमाण सत्ते शूरैर्गोप्यमानाश्च तेनते ।
 सन्तद्वा समदृश्यन्त राजनश्च महाबलाः ॥ १८ ॥ दुर्योधनस्तु समरे वंशितो रथ
 मास्थतः । व्यराजत ध्रिया जुष्टो यथा शक्रस्त्रिविष्टपे ॥ १९ ॥ तत शब्दो महा
 नासीत् पुत्राणां तव भारत । रथघोषश्च विपुलो चादिप्राणञ्च नि स्वनः ॥ २० ॥
 भीष्मेण धार्तराज्ञाणां व्यूढः प्रत्यं मूलो युधि । मण्डलः स महाव्यूहो दुर्भेद्योऽपि
 प्रघातनः ॥ २१ ॥ सर्वतः शुशुभ राजन् रणेऽरीणां दुरासदः । मण्डलन्तु समा
 लोक्य व्यूहं परमदुर्जयम् ॥ २२ ॥ स्वयं युधिष्ठिरा राजा धृजं व्यूहं मथाकरोत् ।
 तथा व्यूढेप्सनीकेषु यथास्थानमवास्थताः ॥ २३ ॥ रथिनः सादिनःसर्वे सिंहाद
 मयानदन् । विभत्सचलता व्यूहं निर्धयुद्धकाक्षिणः ॥ २४ ॥ इतरेतरत शूराः सह
 सैन्याः प्रहारिण । भारद्वाजो ययौ मत्स्यं द्रोणिथापि शखण्डिनम् ॥ २५ ॥ स्वयं

चित्रसेन आदि शूरवीरोंने पितामहको चारों ओर से रक्षित किया वह, भीष्मजी उन
 उन शूरोंसे रक्षित और शूर उनसे रक्षित हुए और महाबली राजालोगभी शस्त्र
 धारण किये युद्धको तैयार दृष्ट पड़े, फिरशस्त्रों से अलंकृत रथपर बैठेहुआ दुर्योधन
 भी शोभा से युक्त ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसा कि स्वर्ग में इन्द्र प्रकाशमानहोता
 है इस के पीछे हे भरतर्षभ आपके पुत्रों के महाशब्द हुए और रथ और रथांगों के
 भी घोर शब्दहुए । २० फिर वह घृतराष्ट्र के पुत्रों का व्यूह भीष्मजी का रचा हुआ
 अतिदुर्जय मंडलरूपवना हुआ पश्चिमकी ओरको चला, हे राजा शत्रुओं में दुर्जय
 होनवाला वह व्यूह सबओरसे शोभित हुआ फिर उस मंडलवाले भयानक व्यूह
 को देखकर राजा युधिष्ठिरने अपने हाथों से अपनी सेना के वजूव्यूहको तैयार
 किया इस रीतिसे सेनाओंके तैयार होनेपर सबरथी पदाती आदि अपने २ स्थानों
 पर नियत होकर सिंहाद करने लगे इसके पीछे व्यूहके तोड़ने को युद्धाभिलाषी
 पराक्रमी शूरवीर लोग एक दूसरे के सम्मुख गये, द्रोणाचार्य जी राजा मत्स्यके

a myriad of horses and elephants, your brave sons, Chitrasen and others, protected the grandathe on all sides. 17. And protected by those warriors was Bhishm who himself protected him. The brave princes, armed with weapons were ready to fight. Duryodhan mounted on his chariot and armed with weapons looked glorious like Indra in heaven. Then, O best of Bharats, there was a tremendous noise made by your sons. 20 The chariots and their puts too, made a loud noise. The array of the sons of Dhritrashtra, formed by Bhishm, made invincible in a circular form, moved towards the west. Indefatigable by enemies, that array was beautiful to look at from all sides. Seeing that array of formidable appearance, Yudhishtir himself arrayed the army in the form of vajra. When the armies were thus prepared, all the charioteers, footmen and others, stationed on their seats, uttered war cries. Intent on breaking the arrays and desirous of fighting, valliant men

दुर्योधनो राजा पार्षत समुपाद्रवत् । नकुल सहदेवश्च मद्राजानमीयत् ॥ २६ ॥
 विन्दानुचिन्दावावन्त्या विरावन्तमभिद्रुतो । सर्वे नृपास्तु समरधनञ्जयमयोधयत्
 ॥ २७ ॥ भीमसेनो रणे पातु हार्दिकं समवारयत् । चित्रसेन विकर्णञ्च तथा
 दुर्मर्षणं विभु ॥ २८ ॥ अर्जुनं समरे राजस्तथ पुत्रानयोधयत् । प्राग्ज्योतिषो
 महेश्वासोऽर्द्धिव राक्षसोत्तमम् ॥ २९ ॥ अभिद्रुद्राव वेगेन मत्तो मत्तमिषं द्विपम् ।
 अलम्बुपस्तदा राजन् सात्याकिं युद्धं दुर्मदम् ॥ ३० ॥ ससैन्यं समरे कुड्रो राक्षसं समु
 पाद्रवत् । भूरिश्रया रणे यत्तो धृष्टकेतुमयोधयत् ॥ ३१ ॥ श्रुतायुषं च राजानं धर्मपुत्रं
 युधिष्ठिरं । चोक्तितानश्च समरे कृपामेवान्ययोधयत् ॥ ३२ ॥ शेषा प्रति ययुर्यत्ता गी
 ष्ममेव मदारथम् । ततो राजं समुह्रास्ते परिव्रुधेनञ्जयम् ॥ ३३ ॥ शक्तितोमरनाराच

सम्मुखगये भद्रथ मा शिखण्डीके सम्मुखद्रुभा २९ राजादुर्योधन आप धृष्टसेनके
 सम्मुख दौडा और नकुल सहदेव राजा मद्रके सम्मुख गये, विन्द अनुरिन्द अवन्ति
 के राजा लोगोंके और युधाम युके सम्मुख दौडे और सब राजानोग इकट्ठे, होकर
 अर्जुन मे लड़नेको उपस्थितहुए फिर, सावधान और समर्थ सात्यकी ने युद्ध में
 भीमसेन को रोका, हे राजा अर्जुन, का मर्षण पुत्र अभिमन्यु, चित्रसेन
 विकर्ण और दुर्मर्षण नाम आपके तीनों पुत्रों से युद्ध करनेलगा फिर हिडम्बा
 का पुत्र राक्षसोत्तम घरोत्कच वडे वेगसे राजा प्राग्ज्योतिष के सम्मुख ऐसे दौडा
 जैसे कि मदनमत्त हाथी, मदनमत्त हाथीपर दौडता है हे राजा युद्ध में महा क्रोधरूप
 अलम्बुप, राजा सेना समरे युद्ध में महादुर्मद सात्यकी के सम्मुख दौडा और युद्ध
 में कुशर भूरिश्रया धृष्टकेतुमे लड़नेलगा ३१ फिर धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने राजा पुता-
 युष से और चोक्तितान न कृपाचार्य से युद्धकरना माराध किया, शेष वचेहुए राजा
 लोग मदारथी भीमसेन के सम्मुख हुए, इसके पीछे हजारों राजाओं ने अर्जुनको
 घेरलिया उन सब राजाओं के हाथोंमे बरछी तोमर नाराचमदा और परिव्रुधेन्यादि

faced one upon another in battle. Dronacharya attacked the king of Matsya and Ashwathama faced Shikhandi. The Prince Duryodhan himself faced Bhishmalayama and Nakul and Sahadev faced the king of Matsya. Vind and Anurind the princes of Avanti attacked Udhmanyu. All the kings in a body prepared to fight against Arjun. Valiant Satyaki with a collected mind checked Bhishma. Abhmanyu the valiant son of Arjun fought against Chitrissen, Vikarin and Durmasan your three sons. Hidimya's son, Ghatotkakh the best of rakshases rushed against the king of Pragyo like a mad elephant. Alamvush the rakshas of dreadful visage followed by a large army, faced valiant Satyaki and Bhushraya clover in battle, fought with Dhristiketu. Yudhishtir the son of Dharm fought with Sirutayush and Chokitan with Kripacharya. The rest of the kings faced Bhishma. Then thousands of kings surrounded Arjun. All those warriors were armed with spears, tomars,

नदापरिव पाणय । अर्जुनोऽथ भृशं युद्धो वाष्पेयमिदं मन्वेदीर ॥ ३४ ॥ पश्य माधव
 सैन्यानि धार्तराष्ट्रस्य संयुगे । व्यूहानि व्यूहं विदुःशं गाढेयेन महात्मना ॥ ३५ ॥ यु
 द्धाभिरामान् शूराश्च पश्य माधव दशितात् । त्रिगर्तराजं सहितं भ्रौवृभिः पश्य के
 शव ॥ ३६ ॥ अर्धेनान् नाशं विष्यामि पश्यतस्ते जनार्दन । य इमे मा यदुश्रेष्ठ योद्धु
 कामारणा जिते ॥ ३७ ॥ पतदुक्त्वातुकौन्तेयो धनुर्ज्या भवमृज्यच । ध्रुवैशरव्योषिण
 नराधिप गणान् प्रति ॥ ३८ ॥ ते पित परमेव्यासा शरवर्षेण पूरयन् । तडागं धारिधारा
 भियंथाप्रावृषि तो यदा ॥ ३९ ॥ हाहाकारो महातासीत्तथ सैन्ये विशास्पते । ह्यंय
 मानो रणे वृष्णो शरैर्दृष्ट्यामहारणे ॥ ४० ॥ देवादेवर्षयश्चैव गन्धर्वाश्चसहोरगै ।
 विस्मय परम जग्मुर्दृष्ट्वा वृष्णो तथा गतौ ॥ ४१ ॥ तत कुञ्जोऽर्जुनोराजन् नैन्द्रमस्त्र
 मुवैर्यत् । तत्रादमुत मपद्याम विजयस्य पराक्रमम् ॥ ४२ ॥ शस्त्रवृष्टिः परैर्मुक्ता श

अनेक अस्त्र शस्त्र शोभायमान, थे उससमय अर्जुन अतपन्त कोपित होकर श्री
 कृष्णजी से बोला कि, हे माधवजी व्यूहविद्या में कुशल महात्मा भीष्मजी से व्यूहित
 करी हुई दुर्योधन की सेनाको सग्राम भूमि में देखो ३५ और युद्धाभिरापी शूरांको
 कवच और शस्त्र धारण कियेहुए देखो और भाइयों समेत राजात्रिगर्तकोभी देखो
 हे जनार्दनजी अब आपके देखने हुए इन सबको मैं मारूंगा हे यादवेन्द्र जो यह
 सग्राम भूमि में मेरे मारने के लिये इच्छा कर रहेहै, इतना कहकर अर्जुन ने अपने
 धनुषकी प्रत्यंघा की ठीकरकरके राजाओं के समूहों पर बाणोंकी वर्षाको बरसाया
 फिर उन बड़े २ धनुष शौरियों नेभी उस अर्जुनको बाणोंकी वर्षा से ऐसा भेरादिया
 जैसे कि वर्षाऋतु में बादल तडागों को जलसे भरदेते है, हे राजा उस बड़े सग्राम
 में दोनों कृष्ण अर्जुनको अतपन्त बाणोंसे दकाहुआ । ४० । देखकर आपकी सेनामें
 बड़ा हाहाकारहुआ देवता ऋषि गंधर्वा और महावरगों ने इस प्रकार बाणों से
 दकेहुए दोनों कृष्ण अर्जुन को देखकर बड़ा आश्चर्य किया, इसके पीछे हे
 राजा महाकोप युक्त अर्जुन ने इन्द्रास्त्रको प्रकट किया उस समय हमने अर्जुन के

arrows maces clubs and other weapons of sorts Arjun in great
 anger then said to Shree Krishn — Look at the array of Duryodhan
 formed by Bhishm the skilful in war, O Madhav ! 35 Look at the
 warriors armed with weapons and armour Look at the king of
 Trigart too I shall within sight of you, destroy all of those who
 are dangerous of killing me. Having said this, Arjun twanged his
 bow and showered arrows at the kings. Those warrior princes too
 fill'd Arjun's chariot with arrows as clouds fill tanks with rain water.
 40 S e n g both Krishn and Arjun covered with the shower of arrows,
 there was a great cry raised from your mines. The gods, the rishis
 the gandharvas and the urnas wondered at the sight of Krishn and
 Arjun so covered with arrows. Then, O king Arjun in great anger

महापर्वः ॥ ४६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सप्तमदिवसयुद्धारम्भे
द्व्यंशतितमोऽध्यायः ८२ ॥

सञ्जय उवाच । तथा मत्स्ये संग्रामे निवृत्ते च सुशर्मणि । मन्नेषु चापि वीरेषु
पाण्डवेन महात्मना ॥ १ ॥ क्षुध्यमाणे घले तूर्णं सागरप्रतिमे तव । प्रत्युघाते च
गाङ्गेय त्वरितं विजयं प्रति ॥ २ ॥ इत्या दुर्व्याधिनो राजा रणे पार्थस्य विक्रमम् । त्वरं
अपर्व पराक्रम को देखा, कि अपने बाणों के समूहों से शत्रुओं के छोड़े हुए अस्त्र
समूहों को रोकदिया कोई मनुष्यभी शास्त्रों से घायल हुए बिना नहीं रहा और हे
धृतराष्ट्र हजारों राजा घड़े हाथी और शूरीय लोगोंको अर्जुन ने दो २ तीन २
बाणों से पीड़ामान किया इसके पीछे वह अर्जुन से घायल हुए शन्तनु के पुत्र भीष्म
जी के पास आये तब भीष्मजी इन अथाह जलमें डूबे हुआके रक्तकहण, हे महाराज
वहाँपर उन आनेवालों से आपकी सेना तिर तिर होकर ऐसे महा व्याकुल हुई जैसे
कि वायु से महासमुद्र उथल पुथल होता है ४६ ॥

अध्याय ॥ ८३ ॥

संजय बोले कि इस रीति से युद्ध जारी होने व राजा सुशर्मा के लौटने व
महात्मा अर्जुन के हाथ से वीरों के अस्तव्यस्त होतेपर, और बड़ी शीघ्रता से समुद्र
के समान आपकी सेना के व्याकुल होने व शीघ्र ही अर्जुन के ऊपर भीष्मजी के
खदाई करने पर राजा दुर्व्याधिन युद्धमें अर्जुन के पराक्रम को देखकर बड़ी शीघ्रता

discharged the weapon of Indra and we saw at that time, the immense
prowess of Arjun who checked the shower of enemy's arrows
with his own. There was not a single man present who did not
receive a wound. He wounded thousands of warriors, horses, elephants
and princes with two or three arrows each. Those warriors wounded
by Arjun's arrows, came to Bhishm, the son of Shantannu, who pro-
tected them from being drowned in that bottomless ocean. Then O
king, your armies were dispersed by those comers as the ocean is
agitated by the wind storm" 46.

CHAPTER LXXXIII

Sanjaya continued:— "When the battle was thus going on, Prince
Susharma gave way; the army was being destroyed by Arjun and
was dispersing like ocean waves; Bhishm attacked Arjun and on
seeing the prowess of Arjun, Prince Duryodhan thus addressed the

माण समभ्येत्य सर्वास्तानश्चर्वाङ्गान् ॥ ३ ॥ तेषां तु प्रमुखे शूर सुशर्माणे महा
 बलः । मध्ये सर्वस्य सैन्यस्य भृश सहयेयन् निध ॥ ४ ॥ एतं भीष्म शान्तनवो योद्ध
 वामो धनञ्जयम् । सर्वात्मना कुदधेष्टस्त्यक्त्वा जीवितमात्मन ॥ ५ ॥ त प्रयान्त
 रणेवीर सर्वं सैन्यन भारतम् । सयथा समर सर्वे पालयध्व पितामहम् ॥ ६ ॥ वाढ
 मित्येवमुक्त्वा तु तान्यनीकानि सर्वश । नरद्राणामहाराज समाजम्पु पितामहम् ॥ ७ ॥
 तत प्रपात सहसा भीष्म शान्तनवोर्जुनम् । रणे भारतमाप्यान्तमाससाद् महाबल
 ॥ ८ ॥ महाश्वेताश्वमुक्तेन भीमवानरकेतुना । महता मेघनादेन रथेनातिविराजता
 ॥ ९ ॥ समरे सर्वसैन्यानामुपयान्त धनञ्जयम् । अभवत्सुमुलोनादो भयाद्दृष्ट्वा किरीटि
 नम् ॥ १० ॥ अभीपुहस्त कृष्णञ्च दृष्ट्वा दित्यमिवापरम् । मध्यन्दिनगत सरये नशेकु
 प्रतिवीक्षितुम् ॥ ११ ॥ तथा शान्तनव भीष्म श्वेताश्व श्वेतकार्मुकम् । नशेकुः पाण्डवा

से सवराजाओं से मिलकर और इन्दी लोगों के सम्मुख सब सेनाके मध्यमें महाबली
 सुशर्मा को अत्यन्त प्रसन्न करता हुआ यह बचन बोला, कि यह कोरवों में श्रेष्ठ शत-
 नु के पुत्र भीष्मजी अपने जीवनको त्यागकरके सर्वभावसे अर्जुन से युद्ध करना
 चाहते हैं । तुम सब सावधान होकर सेनासमेत उन शत्रुओं पर चढ़ाई करनेवाले भरतवर्मा
 पितामहकी रक्षा करो, फिर राजाओं की वह सब सेना उस के बचनको अगोकार
 करके पितामहके पीछे चली, इसके पीछे शन्तनुके पुत्र भीष्मजी अकस्मात् अर्जुन की
 ओरको चले और बड़े बड़े घोड़ों के कपि-बन्धवाले घनके समान शब्दायमान महा
 ब्रतम रथपर चढ़े सब सेनाके सम्मुख जाते हुए महाबली अर्जुनको पाया और अर्जुन
 को देखते ही भयसे कठोर शब्द हुए । १० दिवस हीमें सूर्य के वर्तमान होने पर, द्वितीय
 सूर्य के समान आगडोर हाथमें रखनेवाले श्रीकृष्णजी को देखकर उनके सम्मुख
 देखने को भी समर्थ नहीं हुए, इसी प्रकार पाण्डव भी श्वेत घोड़े और श्वेत धनुषपारी

assembly of princes and warriors, cheering bravo Susharma with his
 words— ' This best of the Kauravas, Bhishm the son of Shantanu
 is desirous of fighting against Arjun without caring for his life 5
 You must carefully protect with your armies the grandfather of
 Bharat family who is fighting against the enemies ' The assembly
 of kings and warriors in obedience to his commands, followed the
 grandfather. Then Bhishm the son of Shantantu rushed at once
 towards Arjun and found him mounted on the monkey bantered cha-
 riot, drawn by large white horses the rumbling of whose wheels was
 like thunder and which was followed by the whole army The cries
 of fear were heard at the sight of Arjun 10 In the light of the
 sun, seeing Shre Krishna holding the reins like the second sun, no
 one could look him in the face. The Pandavas too, could not face
 Bhishm the son of Shantantu coming like a rising sun. Thus the

द्रुष्टुं श्वेतप्रहमिबोदितम् ॥१२॥ स सर्वतः परिहृतस्त्रिगर्तं सुमहात्मामि । भ्रातृभिः सह
 पुत्रैश्च तथा न्यैः समहारथैः ॥१३॥ भारद्वाजस्तु समरे मत्स्य विव्याध पश्चिणा । श्वजम्बु
 स्य शरेणाजौ धनुश्चैव न चिच्छिद्धे ॥ १४ ॥ तदपास्य धनुदिछन्न विराटो बाहिनीपति ।
 अन्यदा दत्त वेगेन धनुर्मारुतहृद्दम ॥१५॥ शराश्चाशीमिपाकायान् ज्वलितान् पत्रगा
 निव । द्रोणं त्रिमिदच विव्याध चतुर्मिदचास्य चाजिन ॥ १६ ॥ श्वजमेकेन विव्याध
 सारथिमास्य पञ्चामि । धनुरेकेषुणाविध्यत्तत्राकुष्यद्भ्रिजर्वम ॥ १७ ॥ तस्य द्रोणो
 बधीदश्वान् शरैः सन्नतपर्यभिः । यथाभिर्भग्तश्रेष्ठ सूतमेकेन पश्चिणा ॥ १८ ॥ स
 वृताश्चाद्दृष्टुं स्यन्दनाद्धतसारथि । आरुरोह रथं तूर्णं पुत्रस्य रथिनाम्बर ॥ १९ ॥
 तनस्तुनां पितापुत्रौ भारद्वाज रथे स्थितौ । महता शरवर्षेण चारयामास्तनुर्बलात्

श्वेतप्रहृके उदय समान शन्तनु के पुत्रभीष्मजी के देखने को समर्थ नहीं हुए इसरीति
 से वह महात्मा भीष्म त्रिगर्त देशी भाइयों व आपके पुत्रों अथवा अन्य बड़े २ महा
 रथियों से सन्नतहुष फिर द्रोणाचार्य ने युद्ध में बाणों से राजामत्स्यको पीड़ित
 किया और एक २ बाणने उसके श्वजाको और धनुष को काटा फिर बाहिनीपति
 विराटेने उसदृष्टे धनुष को ढालकर भारमहनेवाले दूसरे दृढ धनुष को बड़ी तीव्रता से
 हाथमें लिया १५ और सर्पाकृति पत्रगनाम सर्पोंके समान ज्वलित बाणों को लेकर
 तीनज्ञानने द्रोणाचार्य को और चारबाणों से उनके घोड़ों को घायलकिया, एकसे
 श्वजाको काटा और पांच से उनके सारथीको व्यथित करके एक बाणसे धनुषको
 तोड़ा उसस्थान पर ब्राह्मणों में गुरु द्रोणाचार्य जीने बड़े क्रोधयुक्त होकर गुप्तग्रन्थी
 के भाठबाणों से उसके घोड़ों को और बाणने उसके सारथी को मारा, वह रथियों
 में श्रेष्ठ सारथी को मरा देस, मृतक घोड़ों के रथ से कूदकर शीघ्रही पुत्रके रथपर
 सवारहुआ फिर उसके पीछे रथपर नियत उनदोनों पितापुत्रों ने बलसे मारे ज्ञानों
 के द्रोणाचार्य को रोकता । २० । हे राजा इसके पीछे क्रोधरूप द्रोणाचार्य ने सर्प

great Blushma was protected by the warriors of Tugut and other
 great archers together with your sons. Dronacharya wounded the
 king of Matsya with his arrows. With one arrow he cut down his
 banner and with another his bow. What the leader of armies put
 down the broken bow and speedily took up another capable of bearing
 great strain. 15. And taking serpent like arrows, known as pinnags,
 he wounded Dronacharya with three arrows and his horses with four.
 With one arrow he cut down his banner and having wounded the
 driver with five more, he cut down his bow with one. Then Drona
 charya the best of Brahmans in great anger, killed his horses and
 driver with eight arrows. Seeing the driver killed, he jumped down
 from the chariot of which the horses were slain and soon mounted his
 son's chariot. Then seated on the same chariot the father and son
 checked Dronacharya with their strength. 20. Then, O King, Dro

॥२०॥ भारद्वाजस्ततः कुक्षुः शरमाशीविषोपमम् । चिक्षेप समरेःतूर्णं शङ्खं प्रति
 जनेश्वरः ॥ २१ ॥ सतस्य हृदयं भित्त्वा पीत्वा शोणितमाहवे । जगाम धरणीं घाणो
 लोहिताद्रैवच्छदः ॥ २२ ॥ सपपात रणेनूर्णं भारद्वाजशराहतः । धनुस्त्वक्वाशारांश्चैव
 पितुरेव समीपतः ॥ २३ ॥ हतं तमात्मजं दृष्ट्वा विराटः प्राद्वद्भयात् । उत्सृज्य
 समरे द्रोण व्याचानतमिवान्तकम् ॥ २४ ॥ भारद्वाजस्ततस्तूर्णं पाण्डवानीं महाचमूम् ।
 दारयामास समरे शतशोथ सहस्रशः ॥ २५ ॥ शिखंडीतु महाराज द्रोणिमासाद्य
 संयुगे । आजघान भ्रुवोर्मध्ये नाराचैस्त्रिभिराशुगैः ॥ २६ ॥ स वभौ रथशब्दो ललाटे
 संस्थितैस्त्रिभिः । शिखरैः काञ्चनमयैर्मरुस्त्रिभिरिवोच्छ्रितैः ॥ २७ ॥ अश्वत्थामा ततः
 कुक्षो निमेषार्धात्शिखण्डिनः । ध्वजं सूतमथो राजंस्तुरगानायुधानिच ॥ २८ ॥ शरै
 र्बहुभिराच्छिद्य पातयामास संयुगे । स हताश्वान्द्रवस्तुत्य रथाद्दे रथिताम्बरः ॥ २९ ॥

के समान बाणको बड़ी शीघ्रतासे शंख के ऊपर छोड़ा, वह बाण उसके हृदय में
 घुस उसके रुधिरको पानकर लालरंग लोहमें भराहुआ पृथ्वी में गिरा, वह शंख
 द्रोणाचार्य के बाण से घायल पितृकेही सम्मुख धनुषबाणको त्याग कर गिरपड़ा
 फिर राजा विराट अपने पुत्रको मृतक देखकर और द्रोणाचार्य को मृत्युके समान
 समझकर बड़े भयमें उनको छोड़कर भागा, इसके पीछे द्रोणाचार्यने शीघ्रही
 पाण्डवोंकी हजारों बड़ी २ सेनाओं को हटाया । २५ । हे महाराज शिखण्डी ने
 भी बड़ी शीघ्रतासे अश्वत्थामा को पाकर तीव्रगामी तीन नाराचों से दोनो भ्रुकुटी
 के मध्यभाग मस्तक को घायल किया, फिर वह नरोत्तम ललाटेपर नियत हुए
 तीनों बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे ऊंचे सुवर्ण के तीनों शिखरों से मेरु
 पर्वत शोभाित होताहै, फिर क्रोध भरे अश्वत्थामा ने आधेही निमेष में शिखण्डी
 के सारथीरथ घोड़े शङ्ख और ध्वजा को अनेक बाणों से काटकर गिराया, फिर

nacharya in anger, discharged his serpent like arrows at Shankh. The
 arrow pierced through his breast and having come out on the other
 side and drunk his blood, fell down on the ground. Wounded by the
 arrow of Dronacharya, Shankh fell down dead within sight of his
 father and his bow and arrows fell from his hand. King Virat finding
 his son dead and Dranacharya ready like Death to pounce upon, fled
 away in terror. Then Dronacharya soon dispersed thousands of the
 Pandav warriors. 25. Shikhandi too, in great haste, finding Ash-
 wathama before him, wounded him with three arrows in the middle
 of the forehead. That best of men, with the three arrows standing on
 his forehead, looked glorious like mount Meiu with its three golden
 peaks. Ashwathama in the excess of anger, cut down with his
 arrows the chariot driver, the chariot, horses, weapons and banner of
 Shikhandi. Then that best of charioteers, jumping down from his

खड्गमादाय सुशिरं विमलच शरा वरम् । इयेनैवैव्यचरत् भुङ्क्ते शिखण्डी शत्रुता
 पत्न ॥ ३० ॥ सखड्गस्य महाराज चरतस्तस्य सयुगे । नान्तरं दृश्ये द्रौणिस्तदद्
 तमिवामवत् ॥ ३१ ॥ तत शरसहस्राणि धृष्टनि भरतर्षभ । प्रेषयामास समरे द्रौणि
 परमकोपतं ॥ ३२ ॥ तामापतन्तीं समरे शरवृष्टिं सुदारुणाम् । असिना तीक्ष्णदारेण
 चिच्छेद् घलिनोन्म्वरे ॥ ३३ ॥ ततोस्यविमल द्रौणि शतचन्द्र मनोरमम् । चर्मोच्छि
 न्दसिञ्चास्य खण्डयामास सयुगे ॥ ३४ ॥ शिरस्तुवहुशो राजन् तञ्च विव्याध
 पत्रिभिः । शिखण्डी तु तत खड्ग खण्डित तेन सायकै ॥ ३५ ॥ आविध्य व्यसृजत्
 तूर्णं ज्वलन्तमिध पन्नगम् । तामापतन्त सहसा कालानलसमप्रभम् ॥ ३६ ॥ चिच्छेद्
 समरे द्रौणिर्दशैयन् पाणिलाघवम् । शिखण्डिनञ्च विव्याध शरैर्वहुभिरायसे ॥ ३७ ॥
 शिखण्डी तु मृश राजस्ताड्यमान शितैः शरैः । आरुह्य रथतूर्णं माधवस्य

रथियों में श्रेष्ठ मृतक घोड़ों के रथसे कूदकर अपने तीक्ष्ण खड्ग और ढालको लेकर
 बड़ा क्रोध में भरा हुआ सब सेना में बाजपत्नी के समान घुमा । ३० । हेराजा
 युद्ध में खड्ग लिये हुये उसशिखण्डी को अश्वत्यामाने कोई अवकाश नहीं देखा
 यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ इसके पीछे महाक्रोध युक्त अश्वत्यामाने हजारों बाणों
 की वर्षाकरा परन्तु उसमहापराक्रमी ने अपने खड्गसेही उन सब बाणों को काट
 डाला । फिर अश्वत्यामा ने इसकी सूर्य चन्द्रमावाली स्वच्छ ढालको काटकर
 खड्ग के भी खण्ड कर डाले और बहुत से बाणों से उसको घायल किया फिर
 शिखण्डी ने उसके बाणों से कटेहुए खड्गको देखकर शीघ्रही सर्प के समान महा
 ज्वलित खड्गको छोड़ा तब हस्तलाघवता दिखतेहुए अश्वत्यामाने उस वज्र और
 पिजली के समान शब्दायमान अकस्मात् गिरतेहुए खड्गको युद्धमेंही काट डाला
 और बहुतसे लोहे के बाणों से शिखण्डी को घायल किया । ३७ । फिर तीव्र
 बाणों से अत्यन्त घायल शिखण्डी शीघ्रही महात्मा सात्यकी के रथपर सवार हुआ

chariot of which the horses were dead ran with his sword and shield
 throughout the army in great anger like a hawk 30 Ashwathama
 could not see Shikhandi staying at any place in the field of battle and
 this was a great wonder Then Ashwathama in great anger showered
 thousands of arrows, but that great warrior cut them all down with
 his sword alone Ashwathama then cut into pieces his shining shield
 bearing the sun and the moon, his sword too was broken and he him-
 self was wounded by the arrows. Finding his sword cut down by the
 arrows Shikhandi flung away the sword venomous like a serpent
 Then showing the dexterity of his hand Ashwathama cut into pieces
 the sword falling with a noise like that of vapour or thunder, and with
 many other arrows he wounded Shikhandi 37 Much wounded by
 sharp arrows, Shikhandi mounted the chariot of Satyaki Brave

महात्मन ॥ ३८ ॥ सात्यकिश्चापिसकृद्वा राक्षस क्रममाहवे । अलम्बुष शरस्ती
 स्वैर्विन्याध घलिनावर ॥ ३९ ॥ राक्षसेन्द्रस्ततस्तस्य धनुश्चिच्छेदभारत । अधचन्द्रेण
 समरे तच्च विन्याध सायकै ॥ ४० ॥ मायाञ्च राक्षसीं कृत्वा शरवर्षैर्वाकिरत्
 तत्राद्भुतमपश्याम शैनेयस्य पराक्रमम् ॥ ४१ ॥ असन्नमस्तु समरे बध्यमानां शरित्
 शरै । ऐन्द्रमस्त्रञ्च घाण्ण्यो योजयामास भारत ॥ ४२ ॥ विजयाद्यदनुप्राप्त माधवेन
 यशस्विना । तदस्त्रम्भस्मसात् कृत्वा मायान्ता राक्षसीं तदा ॥ ४३ ॥ अलम्बुष शरै
 रन्यैरभ्याकिरत सर्वत । पर्वत वारिधारामि प्रावृषीव बलाहक ॥ ४४ ॥ तत्रथा
 पीडितं तेन माधवेन यशस्विना । प्रवुद्राव भयाद्रक्षस्त्यक्त्वा सात्यकिमाहवे ॥ ४५ ॥
 ततजेय राक्षसेन्द्र सत्ये मधवताओपि । शैनेय प्राणदञ्जित्वा योधानातवपश्यताम् ४६
 न्यहनत्तावकाश्चापि सात्यकि सत्य विक्रम । निशितैर्बहुभिर्घाणैस्ते द्रवन्त भया

किर महावली सात्यकी ने भी बड़ा क्रोध करके अपने घोर बाणों से उस पराक्रमी
 अलम्बुष राक्षस को घायल किया, फिर राक्षसाधिप अलम्बुष ने अपने अर्द्धचन्द्र
 नम बाणों से उसके धनुषको काटकर बहुत से शायकों से उसको घायल किया
 । ४० । और राक्षसी मायाको करके बाणों की वर्षा से ढकदिया वहाँ हमने सा
 त्यकी के अपूर्व पराक्रम को देखा, कि वह युद्ध में बड़े तीक्ष्ण बाणों से घायल
 होकर भी व्याकुल नहीं हुआ हे भरतवशी सात्यकी ने उस ऐन्द्र अस्त्र का प्रयोग
 किया, जो कि महात्मा माधवजी और अर्जुन से मिलाया उस अस्त्रसे सब राक्षसी
 माया को अत्यन्त नाश करके अपने घोर बाणों से अलम्बुष को इसरीति से ढक
 दिया जैसे कि वर्षाऋतु में बलाहकनाम बादल अपने जलों के पर्वत को ढकते हैं,
 उस यशस्वी सात्यकी से पीडित होकर वह रक्षित महाभयभीत होकर सात्यकी
 को त्यागकर भाग गया । ४५ । सात्यकी आपके शूरवीरों के देखतेहुए उस
 राक्षसाधिपको जो कि इन्द्रने भी विनयहोना कठिनथा जीतकर सिंहके समान

Satyaki too in great anger wounded valiant Alambush the rakshas
 with his dreadful arrows Alambush the prince of rakshases cut
 down with his half moon shaped arrowshis bow and wounded him
 with his darts 40 He then covered him with arrows discharged
 by the demonic art There we saw the prowess of Satyaki who
 though wounded with many sharp arrows was not disheartened and
 discharged his Andra weapon which he had got from the great
 Madhav and Arjun and having destroyed all the artfulness of the
 rakshas covered him with his arrows as clouds cover a mountain with
 their waters Wounded by the arrows of Satyaki the rakshas in great
 terror fled away leaving him there 45 Having conquered the rak
 shas chief who could not easily be conquered even by Indra, Satyaki
 roared like a lion Then Satyaki wounded his sons too with sharp
 arrows and they too ran away in terror -In the meantime, Dhritish

हिताः ॥ ५७ ॥ अतस्मिन्नेवकोलेन द्रुपदस्यात्मजो बली । वृष्टद्युम्नो महाराज पुत्र-
 त्वं जनेश्वरम् ॥ ५८ ॥ छादयामास समरे शरैः सन्ततपर्वभिः । सच्छाद्यमानो विशि-
 क्षेष्टेष्टद्युम्नेन मारुत ॥ ५९ ॥ विव्यथे न च राजेन्द्र तव पुत्रो जनेश्वर । वृष्टद्युम्नश्च
 समरे तूष्णे विव्याथ प्रविभिः ॥ ६० ॥ पृथ्वा च त्रिशुला धेध तद्द्रुतमिवामभवत् ।
 तस्य सेनापतिः कुडो धनुश्छिद्येद् मारुत ॥ ६१ ॥ ह्यांश्च चतुरः शीघ्रं निजघान
 महाबलः । शरैश्चैव सुनिराते क्षिप्रं विव्याथ सतमिः ॥ ६२ ॥ स ह्यदादधाम्महाबाहुस्य
 प्लुत्यप्राद्वली । पद्मतिरसिमुद्यम्य प्राद्रवत् पार्यतप्रति ॥ ६३ ॥ शकुनिस्तं समभ्येत्यराज
 मुद्धीमहाबलः । राजाने सर्वलोकस्य स्थमारोपयत् स्वकम् ॥ ६४ ॥ ततो वृष परजित्य
 पार्यतः परवीरहा । न्यहनत्तावकं सैन्यं ध्वजपाणिर्विष्यसुरात् ॥ ६५ ॥ कृतस्मां रणे
 भीमि शौरराजैर्द्रुमहावर्यः । सच्छाद्यामाम्भत महामेवो रविं युष्मत् ॥ ६६ ॥ तत-

गर्जा, फिर सैन्य पराक्रमी, सारथी ने आपके पुत्रों को भी बड़े तीक्ष्ण बाणों से
 घायल किया वृद्ध भी भयंकर पीड़ित होकर भागे है महाराज उसी समय द्रुपद के पुत्र
 वृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र दुर्व्योधन को, वहाँ गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से आच्छादित
 करा दिया, हे राजेन्द्र वृष्टद्युम्न के बाणों से ढकलहुआभी दुर्व्योधन पीड़ामान नहीं
 हुआ और बड़ी शीघ्रतासे अपने बाणों से वृष्टद्युम्न को घायल किया यह एक
 आश्चर्यसाहस्य है राजा फिर उस क्रोधयुक्त सेनापति ने उसके धनुषको काटकर
 शीघ्र ही चारों घोड़ों को मारा और मात तीक्ष्ण बाणों से उस को, तत्क्षण घायल
 किया, बहुशहासाह्, मृतक घोड़ों के रथमें कूदकर पैदल हो स्वयं को उठाकर
 वृष्टद्युम्न के ऊपर दड़ा ॥ ५७ ॥ राज्य के लोभी महाबली शकुनिने समीप आकर
 राजा दुर्व्योधन को अपने रथपर सवार किया, इस के पीछे शत्रुहन्ता वृष्टद्युम्न ने
 राजा को विजय करके उसकी सेना को ऐसा मारा जैसे कि वज्रधारी इंद्र असुरों
 के समूहों को मारता है, कृतवर्मा ने महारथी भीमको युद्ध में मोहित करके बाणों से
 ऐसा ढकल दिया जैसे कि बड़ा बादल सूर्य को ढक देता है, इसके पीछे शत्रु सन्तापी

Dyumn the son of Dripid hid you son Duryodhan with his arrows
 having hidden knots, but the latter, being hidden by the arrows of
 Dhrishtadyumn, was not terrified and soon wounded him with his
 own. This was a wonderful deed. Then the enraged commander of
 armies cut down his bow and having killed his horses, wounded him
 with seven sharp arrows. The brave warrior jumped down from the
 chariot of which the horses were dead and rushed sword in hand
 towards Dhrishtadyumn 53 Brave Shakuni, desirous of kingdom
 advanced towards Duryodhan and mounted him on his own chariot.
 Then Dhrishtadyumn the destroyer of enemies, having defeated the
 king, killed and destroyed his armies, as Indra the wielder of vajra
 destroys the asuras. Krishna, having made Bhishma insensible in
 battle covered him with his arrows as clouds hide the sun. Then

प्रहस्य समरे भीमसेन परन्तप । प्रेषयामास संकुद्ध, सायकान् कृतवर्मणे ॥ ५० ॥
 तैरर्धमानोति रथ सात्वत सत्यकोविद । नाकम्पत महाराज भीमं चाच्छिच्छते
 शरैः ॥ ५१ ॥ तस्याश्वोश्चतुरो हत्वा भीमसेनो महारथ । सारथि पातयामास
 सुध्वजं सुपरिष्कृतम् ॥ ५२ ॥ शरैर्वहुविधैश्चैनमाचिनोत् परथीरहा । शकलीकृतसर्वा
 ज्ञोहनाश्व प्रत्य हृदयत ॥ ६० ॥ हताश्वश्चततस्पूर्णं वृषकस्य रथं ययौ । स्वालस्य
 ते महाराज तव पुत्रस्य पश्यतः ॥ ६१ ॥ भीमसेनोपि संकुशस्तप सैन्यमुपाद्रवत् ।
 निजघानं च संकुञ्जो दण्डपाणिरिवान्तक ॥ ६२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वैत्ये

त्रयशीतोऽध्याय ॥ ८३ ॥

भीमसेन ने महाक्रोधित होकर, अच्छे प्रकार हँसकर कृतवर्मा के ऊपर शायकों की
 वर्षा करी हे महाराज अति रथी कृतवर्मा उन भीमसेन के बाणों से घायल होकर
 कम्पायमान नहीं हुआ और फिर भीमसेन को तीक्ष्ण बाणों से घायल किया
 । ५० । इसके पीछे महाबली भीमसेनने उसके चारों घोड़ों को मारकर सारथी और
 ध्वजायुक्त उसके उत्तम रथको भी गिराया, शत्रुहन्ताने फिर उस कृतवर्मा को भी
 अनेक बाणों से ढक दिया फिर वह महाघायल सब अंगों से शिथिल हट पड़ा,
 हे महाराज फिर वह शीघ्रही आपके पुत्रको देखकर मुतक, घोड़ों के रथ से कूदकर
 आपके वृषकनाम सारथी के रथपर गया, फिर महाक्रोधरूप होकर भीमसेन भी आप
 की सेना के ऊपर दौड़ा और मृत्यु के समान हाथ में, दण्ड लेकर बड़े क्रोध में
 उसको मारा ६२ ॥

Bhimsen the terror of enemies in great anger, laughed loudly and showered his arrows upon Kritvarma. Valiant Kritvarma, wounded by the arrows of Bhimsen was not shaken and again wounded him with his arrows 58 Then brave Bhim killed the four horses of his chariot and cut down the banner and the chariot That destroyer of enemies again hit him with more arrows and he was seen much wounded and tired. Then seeing your son, he jumped down from his chariot and mounted the chariot of Vrishak your brother in-law Then Bhimsen in great anger rushed upon your army and with the staff of Death in his hand destroyed it in great anger" 62



धृतराज उवाच । धृनि हि विचित्रापि द्वैरयानि ; स्मसञ्जय । पाण्डूनां मामके
 साथे मधौषं तव जल्पत ॥ १ ॥ न चैन मामके किञ्चित् दृष्टं शसति सञ्जय । नित्यं
 पाण्डुसुतान् हृष्टानभग्नान्संप्रशसति ॥ २ ॥ जीयमानान् विमनसो मानकान् विगतौ-
 जसः । चद से सयुगे सूत दिष्टमेतन्न सशयः ॥ ३ ॥ सञ्जय उवाच । यथाशक्ति
 यथोत्साह-युद्धे चेष्टन्ति तावकाः । दर्शयानाः पर शक्त्या पौरव्यं पुरुतर्पणम् ॥ ४ ॥
 गङ्गाया सुततया वै स्वाद्रुम्त्वा यथोदकम् । महादधेर्गुणाभ्यासाल्लवणत्वं निगच्छति ।
 ॥ ५ ॥ तथा तत् पौरव्यं राजस्तावकानां परतपः । प्राप्य पाण्डुसुतान् वीरान् व्यर्थं
 भवति संयुगे ॥ ६ ॥ घटमातान् यथाशक्ति कुर्वाणान् कर्म बुष्करम् । न दोषेण कुच्येष्ट
 कौरवान् गन्तुमर्हसि ॥ ७ ॥ तथापराधात् सुमहान् सपुत्रस्य विशाम्पते । पृथिव्याः
 प्रक्षयो घोरो यमराष्ट्रविधर्धन ॥ ८ ॥ आत्मदोषात् समुत्पन्नं शोचितुं नार्हसे नृप ।

अध्याय ८४ ॥

हे संजय भैने-तेरे कहने से अपने पुत्रोंके साथ पांडवों के विचित्र २ युद्ध-
 मुने, हे सूतपुत्र, मेरी सेनाको कुछ प्रसन्न नहीं कहता है सदैव पांडवों को
 प्रसन्न चित्त और अजेय कहा करता है, और मेरे पुत्रों को युद्ध में पराजित
 व अनुरताह-युक्त और घायल कहता है, निश्चय करके यही होनहार है,
 संजय बोले आपके पुरुषोत्तम बेटे युद्ध में वही पराक्रम से वीरता और पुरुषार्थ
 को दिखलाते बल साहस के अनुसार ऐसे युद्ध करते हैं जैसे कि देवन्दी गंगाजीका
 जल महास्वादिष्ट महा समुद्रके मिलजाने के प्रभाव से लवणताको प्राप्त होता है ।
 हे-राजा इसी प्रकारसे आप के पुत्र भी महात्मा और वीरु पांडवों के पुरुषार्थको
 पाकर निष्फल होते हैं, हे कौरवोत्तम सामर्थ्य के अनुसार उपाय कर्त्ता और कठिन
 साध्यकर्मों के करनेवाले आप अपने शूरवीरों को दोषके भागी करने को योग्य
 नहीं हो, हे राजा बेटेभमेन आपके अपराध से पृथ्वीभर का नाश अत्यन्ततासे यमराज
 के देशका वृद्धि कारक है, आप अपने दोषजन्य फल के शोचने के योग्य नहीं हो,

CHAPTER LXXXIV

"I have heard from thee, Sanjaya," said Dhritrashtra, "the wonderful account of the war of the Pandavas. Thou sayst, Sut, that my army is not cheerful. While the Pandavas are represented as unconquerable and cheerful, my sons are spoiled as destitute of prowess, conquered and wounded. Surely, it is sure to happen." Your sons, the best of men," replied Sanjaya, "fight bravely in battle and show their prowess to the best of their strength but the attempts of your sons become futile like the Pandavas as the sweet waters of the divine Ganges become salt in contact with the Ocean." You should not blame your sons who do hard work and try their best in doing their duty. Through your fault and your son's the destruction of the world is sure to augment the region of Yamraj, and you should

न हि रक्षन्ति राजानं सर्वथात्रापि जीवितम् ॥ १९ ॥ युद्धे हुङ्कृतिर्नि लोका निच्छन्तो
 वसुधाधिपा । चर्म विगाह्य युध्यन्ते नित्यं स्वर्गपरायणा ॥ १० ॥ पूर्वोद्वेगो नु महा-
 राज प्रविस्तत जतस्य । तन्त्वमेकमगाभूत्वा शृणु देवासुरोपमम् ॥ ११ ॥ आवन्त्यो
 नु महेध्यासी महासेनो महाबली । इरावन्तमभिप्रेक्ष्य समयेतां रथैर्यत्नौ ॥ १२ ॥
 तेषां प्रवहते युद्धं सुमहल्लोम हर्षणम् ॥ इरावांस्तुसुसं कुबो क्रुत्तौ देवकृपणौ
 ॥ १३ ॥ विध्याद्य निशितैस्तूर्ण शरैः सन्नतपर्वाभिः । तावेन प्रत्यविष्येतां समरं चित्र-
 याधिनी ॥ १४ ॥ युध्यतां हि तथा राजन् विशेषो न व्यदश्यत ॥ यतलीं शशुनाशाय ॥
 कृतप्रतिहृतैपिणाम ॥ १५ ॥ इरावांस्तु ततो राजन्नुविन्दस्य शायकः ॥ अस्तिभिश्चतुस्रैः
 घाहाननयद्यमसादनम् ॥ १६ ॥ भल्लाभ्यां च सुतीक्ष्णाभ्यां धनु केतुं च मारिष ।
 चिच्छेत् समरे राजन्तद्भ्रुतमिवाभवत् ॥ १७ ॥ त्यक्तवानुविन्दो यं रथं किन्दस्य रथमा

यहां सब राजालोग अपने जीवन ही रक्षा नहीं करते हैं, राजालोग युद्ध के द्वारा
 उत्तम और पवित्र लोकों को चाहते हैं और संदेव स्वर्गको ही उत्तम स्थान समझनेवाली
 सेनामें घुसकर युद्धको करते हैं ॥ १० ॥ हे राजा मातृकालके समय मनुष्योंका नशेहोना
 मारुभंडुआ, उस देवता और असुरों के युद्ध समान महा संग्रामको आप एकाचित्त
 होकर मुझ से सुनें, बड़े धनुषधारी महात्मा और तेजस्वी लाल नेत्रवाले अवन्ति
 देश के राजा लोग इरावानको सम्मुख देखकर युद्धभिलाषी हुए, और उनका
 रोमहर्षण महातुमल युद्ध जारी हुआ फिर अत्यन्त क्रोधित होकर इरावानने देवतारूप
 दोनों भण्डियों को, बड़ी शीघ्रता से गुप्त ग्रंथी वाले धाणों से घायल किया और
 उन दोनों ने भी अपूर्व युद्धकर के उसको घायल किया, इस के पीछे शत्रुके नाश
 के करने में उपाय करने वाले महारथ महारथ बरनेकी इच्छा से युद्ध करनेवालोंकी
 मुख्यता देखने में नहीं आई ॥ १५ ॥ फिर इरावानने अपने चारशायकोस राजा अनु-
 विन्दके चारों घोड़ों को मारकर अत्यन्त तीक्ष्ण भल्लों से धनुष और ध्वजाको काटा

not lament at the fruit of your own folly ' All the princes do not hold
 their lives dear for your sake. They desire pure and holy regions
 through war and always regarding paradise as the most desirable
 place, they fight in the thickest of the battle. 10 The destruction of the
 warriors began in the morning, O king. Hear attentively the account of
 that great war which was like that between the gods and asurs—
 The great archers, the princes of Avanti, with red eyes, seeing Iravan
 before them, desired to fight and the battle between them, was very
 severe. Then, in great anger, Iravan soon wounded the two brothers
 with his arrows having hidden knots and was himself wounded by them.
 Then those destroyers of enemies, wishing to discharge weapons at one
 another, could not show their skill in the hurry of the moment. 15.
 Iravan killed the four horses of Anuvind with four arrows and with
 very sharp darts cut down his banner and bow. All this was wonderful.

स्थितः । धनुर्गृहीत्वा परम भारसाधनमुत्तमम् ॥ १८ ॥ तावेकन्यौ रणे धीरावाचन्त्यौ
 रथिनाम्बरो । शरान् सुमुच्यतुस्तूर्णं मिरावतिमहात्मनि ॥ १९ ॥ ताभ्या मुकामहावेगा
 शरा-काञ्चनभूषणा (द्विवीकरपर्ये प्राप्य ज्जादयामासुरभरम् ॥ २० ॥ इरावास्तु
 रणे क्रुद्धो भ्रातरा तौ महारथौ । वयसं शरवर्षणं सारथि चाप्यपातयत् ॥ २१ ॥ तस्मि
 स्तुपतिते क्ष्मी गतस्तत्वेतु सारथौ । रथं प्रदुद्राय दिशं समुद्रभ्रान्तहयस्ततः ॥ २२ ॥
 तीसजित्वा महाराजं नागराजमुतासुत । पौत्रेण व्यापयस्तूर्णव्यधमत्तववाहिनेम् ॥ २३ ॥
 सा प्रथ्यमाना समरे धार्तराष्ट्री महाचमू । वेगान् बहुविधाधके त्रिव र्थात्थेवं मानय
 ॥ २४ ॥ हैडिन्वो राक्षसेन्द्रस्तु भगदत्त समाद्रचत् । रथेनादित्यवर्णेन सध्वजेन मेहा
 यत् ॥ २५ ॥ ततः प्राग्ज्योतिषो राजा नागराज समास्थितः । पथाद्यज्ञधरं पृथे सप्रा

यह भी आश्चर्यसा हुआ, फिर अनुविन्द वड़े बूढ़ और उत्तम धनुष को लेकर अपने
 रथको छोड़कर विन्द के रथपर नियत हुआ, वे दोनों महारथी एक रथपर बैठे हुए
 विन्द अनुविन्द ने बड़ी शीघ्रता से इरावान के ऊपर बाणों की वर्षा करी, इन दोनों के
 सुवर्ण से शोभित छोड़े हुए तक्षिण बाणोंने सूर्य के रथको पाकर आकाशको
 ओन्गीदिते कर दिया ॥ १० ॥ फिर महारथी इरावान ने भी क्रोधयुक्त होकर उन दोनों
 भाई महारथियोंपर बाणों की वर्षाकरके उन के सारथी को गिराया, हे राजा उस
 सारथी के गिरने और भरनेपर बड़े रथ जिस के घोड़े भ्रान्ति में संयुक्त थे इधर
 उधरको भागा, हे महाराज उस नागराज के पौत्र ने उन दोनों को विजय करके
 पुरुषार्थ को प्रसिद्ध करते हुए आपकी सेना को भी बड़ी शीघ्रतासे भस्मीभूत कर दिया,
 दुर्गोधनकी युद्ध में प्रवृत्त उस बड़ी सेनाने बहुतर्षकारके ऐसे २ वेगों को किया,
 जैसे कि विपपान करके मनुष्य किया करते हैं, फिर राजाओं का राजा महाबली
 घटोत्कच सूर्यवर्ण ध्वजाधारी रथमें चढ़कर भगदत्तके सम्मुख दाड़ा ॥ २५ ॥ इसके पीछे
 राजा प्राग्ज्योतिष गजेन्द्र पर ऐसे सवार हुआ जैसे कि पूर्वसमयमें दानवों के युद्ध में

Anavind thereupon took up a large and hard bow, and leaving his own chariot seated himself on the chariot of Vind. Both those warriors, Vind and Anavind, seated on the same chariot poured a sharp shower of arrows over Iravan. The gold-decked arrows of those two warriors covered the sun on high. The valiant Iravan too in great anger, showered his arrows over those charioteers and killed the driver. At the fall and death of the driver, the horses wandered hither and thither dragging the chariot, after them. That grandson of the prince of Nagas having conquered the two warriors, showed his prowess by destroying your armies as well. The fighting warriors of Duryodhan made dreadful attacks like those who have drunk poison. Then the prince of Rakshases brave Ghatotkach, mounted on his banner'd chariot bright like the sun, rushed upon Bhagatta. The king of Pragjyotish mounted on his huge elephant looked like

मे तारकामये ॥ २६ ॥ तत्र देवाः सगन्धर्वा ऋषयश्च समागताः । विशेषं नस्यं विवि-
 बुद्धेऽङ्घ्रिभगदत्तयोः ॥ २७ ॥ यथा सुरपतिः शंक्रस्त्रासयामास दानवान् । तथैव समरे
 राजा द्रानपामास पाण्डवान् ॥ २८ ॥ तेन विद्राव्य माणास्ते पाण्डवाः सर्वतोदिशो
 आतार नाश्रयच्छन्न स्वेष्वतीकेषु भारत ॥ २९ ॥ भैमसेनि रथस्थेऽनु सत्रापदेशाम
 भारतः । शो ग विमनसो भूरा प्राद्वन्त महारथाः ॥ ३० ॥ निवृत्तेषु पाण्डूना पुनः सै-
 म्येऽनु भारतः अस्त्रिष्ठानको घोरस्तत्र सैन्यस्य सयुगे ॥ ३१ ॥ घटोत्कचस्ततो राजन्
 भगदत्त महारणे । शरैः प्रच्छादयामास मेरु गिरि मिथाम्बुद् ॥ ३२ ॥ निहत्य तान्
 शरान् राजा राक्षसस्य धनुश्च्युतान् । भैमसेनि रणे तूर्णं सर्वं मर्मं स्वताडयत् ॥ ३३ ॥
 स ताज्यमानो बहुभिः शरैः सन्नत पर्वभिः । न विव्यथे राक्षसेन्द्रो विद्यमान इवाचल
 ॥ ३४ ॥ तस्य प्राग्ज्योतिषः कुक्षस्तोमराश्च चतुर्दश । प्रेषयामास समरे तान्दिचच्छेदं स

वज्र गरी इन्द्र, पेरान्वत हाथी पर सवार होता था, उस स्थान में गंधर्वों समेत देवता और
 ऋषिभोग आदि घटोत्कच ने भगदत्त की मुख्यता को नहीं जाना, जैसे कि देवेन्द्र
 ने दानवों का भयभीत किया उसी प्रकार युद्ध में उस राजा ने पाण्डवोंको भगाया,
 हे भरतवंशी उम से भग येहुए, उनपाण्डवों ने अपनी सेनामें जाकर सब दिशा में कोई
 अपना रक्षक नहीं पाया, हे भरतवंशी वहां मैंने भक्ते भूमिमेन के, पुत्र घटोत्कच
 कोही, रथपर नियत देखा और शेष महारथी अपने मनसे हार, कर इधर उधरको
 भागे-॥३०॥ फिर पाण्डवोंकी सेनाके लौटनेपर युद्धमें आपकी सेनाका बड़ा घोर निष्ठानक
 हुआ, इस-के पीछे घटोत्कचने बाणोंसे भगदत्तको ऐसा टका दिया जैसेकि बादल मेरु
 पर्वतको ढकंदेने है राजा भगदत्तनेभी घटोत्कचके फेंके हुए बाणोंको काटकर अपने
 बाणोंसे उसके मर्मस्थलों को घायल किया, वह घटोत्कच उन गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे
 एम प्रिडामान नही हुआ जैसे कि घायल पर्वतपीडित नही होता, फिर उसक्रोध
 भरे राजा प्राग्ज्योतिष ने युद्धमें चौदह तोमर उसके ऊपर फेंके उनको घटोत्कचने

Indra riding on Anavat in the war of danavas. There the gods with
 the gandharvas and rishis came there. Ghatotkach did not know the
 greatness of Bhagdatta who dispersed the Pandav armies as Indra
 had done the danavas. The Pandavas terrified by the attacks of
 that king could not find a protector among their friends. There I
 saw Bhim's son Ghatotkach alone seated on his chariot; the rest of the
 warriors ran away in terror in different directions. 30. Again on the
 return of the Pandava army there was a great slaughter of your
 armies, Ghatotkach covered Bhagdatta with his arrows as clouds
 do Meru. Bhagdatta too, cut down the arrows of Ghatotkach and
 wounded him in vital parts, but the latter was not disturbed by
 those wounds and stood firm like a hill. Then the enraged king of
 Pragjyotish discharged fourteen tomars at Ghatotkach who cut them
 all down. 35. And having cut them down the brave prince of rakshases

राक्षस-॥३२॥ स्वर्गादिभ्यः मद्राणां दुस्त्रोमदांतिश्री शरैः । अनरत्नञ्च दिग्धाय सत
 : स्यात्कंपत्रिभिः ॥ ३६ ॥ तत प्राग्योतिषो राजा महस्रिषभारत । तस्यादर्षांश्चतुरः
 : संस्ये प्रेययामास सायकैः ॥ ३७ ॥ स इतांश्वे रथे तिष्ठन् राक्षसेन्द्रः प्रतापघोश । श
 : किं चिक्षेप श्वेतेन प्राग्योतिषगर्ज-प्रति-॥ ३८ ॥ तामापतन्तीं सहसा हेमदण्डां श्रुयं
 : निनीम् ॥ त्रिधा चिच्छेद नृपतिः सायकैर्यत, मेदिनीम् । ३९ ॥ दारि विनिहतौ दृष्ट्या
 : हेडिभः प्राद्ववद्वापात् । यथेन्द्रस्य रणात् पूर्व नमुचिद्वैत्यसत्तमः ॥ ४० ॥ तं विजित्य
 : रणे दारं विक्रान्तं ख्यातपथिमम् । अजेयं समरे धीरैः दमेन घरणे तथ ॥ ४१ ॥
 : पाण्डवौ समरे सेनां सम्ममदं सकुञ्जरः । यथा घनगजो राजन् मृदन्करति पथिनीम्
 : ॥ ४२ ॥ मन्त्रे दवरस्तु समरे यमाभ्यां समसञ्जत । स्वस्त्रां यौ ह्यदयाचक्रं नारीधैः
 : पाण्डुनन्दनौ ॥ ४३ ॥ सहदेवस्तु समरे मातुलं हृदय सङ्गतम् । श्वारयच्छरीषेण

काया । ३६। फिर तोमरों को काटकर उस महाबाहु राक्षसाधिप ने कंकपत्वाल सत्रह
 बाणों से भगदत्त को घायल किया फिर हे मरुतपम राजा भगदत्त ने भी शायकों
 से उसके चारों घोड़ोंको गिराया, तदनन्तर उस प्लुतक घोड़ोंके रथपर नियत प्रतापी
 यथोक्तचने बड़ बगसे भगदत्त के हाथी पर बरछी को छोड़ा, राजा ने भी उससुनहरी
 अरुध्मात् गिती हुई ताँड़ण बरछीके तीन टुकड़े करदिये, यथोक्तचअपनी बरछीको
 दृष्टाहुआ देखकर भयसे ऐसा भागा जैसे कि पूर्वकाल में युद्ध भूमि से द्रुत्येन्द्र
 नमुचि इन्द्रके भयसे भागाया । ४०। हे राजा उसने युद्धमें उत्तमसिद्ध पराक्रमी यमराज
 के समान अजेय शत्रुको विनय करके हाथीसमेत उसी युद्धके भीतर पांडवोंकी सेना
 को भी ऐसे मर्दन किया जैसे कि जंगली हाथी कुमुदिनियों को मर्दन करता हुआ
 चलता है, और युद्ध में नकुल और सहदेवके साथ भिड़ते हुए मद्रदेशके राजाने बाणों
 के समूहों से दोनों पांडुनन्दन आने भानजों को आच्छादित कर दिया फिर सह

wounded his adversary with seventeen arrows fitted with vulture quills. Then O best of Bharats, Bhagdatta too, killed his four horses with his sharp arrows. Seated on the chariot of which the horses were dead, brave Ghatotkach swiftly discharged a spear at the elephant of Bhagdatta. The latter cut it down in three parts with his arrows. Seeing his spear cut down, Ghatotkach ran away in terror as Namuchi the prince of rakshases had run away from before Indra. 40 Having conquered the famous warrior and invincible enemy, he entered with his elephant in the midst of the Pandava army and destroyed it like an elephant crushing the lotus plants. Fighting with Nakul and Sahadev the king of Madra wounded the two sons of Pandu, his nephews. Sahadev seeing his maternal uncle before him hid him with his arrows as clouds hide the sun. Hidden by those arrows, he was much pleased and loved them the more for the sake of their

भयो यद्ददिवारम् ॥ ४४ ॥ छाद्यमानं शरैश्चेण हृष्टरूपतरो भवत् । तयोश्चाप्यभवत्
 प्रीतिरनुलाभात् कारणात् ॥ ४५ ॥ ततः प्रहस्य समरे नकुलस्य महारथः ।
 अश्वाश्च चतुरो राजश्चतुर्भिः सायकोत्तमैः ॥ ४६ ॥ प्रेषयामास समरे
 यमस्य सदनप्रातः । हताश्वात्तुर्यात्पूर्वमवप्लुत्य महारथः ॥ ४७ ॥ अक्रिरोह ततो
 यानं भ्रातुरेव यशस्विनः । एकस्थौ तु रणे शरीरं ददौ विक्षिप्य कामुकः ॥ ४८ ॥
 मद्रराजस्य तूर्णं छाद्यमानो यद्दुर्भित्तः शरीरं सन्ततपर्वभिः
 ॥ ४९ ॥ स्वस्त्रियोऽप्या नरव्याघ्रो नाकम्पत यथाचलः । प्रहसन्निव तोच्चोपि शरशुष्टे
 जघान ह ॥ ५० ॥ सहदेवस्ततः कुञ्जः शरमुत्सृज्य वीर्यवान् । मद्रराजमभिप्रेष्य
 प्रेषयामास भारत ॥ ५१ ॥ स शरं प्रेषितस्तेन गरुडानिलं वेगवान् । मद्रराजं
 विनिर्मिद्य निपपात महीतले ॥ ५२ ॥ स गाढविद्धोऽप्यधितो रथोपस्थं महारथः ॥

देव ने युद्ध में सम्मुख हुए अपने मामा की देखकर बाणों से ऐसे दकदिया जैसे कि
 वादस सूर्य की दकदिते हैं, वह बाणों से देका हुआ अत्यन्त भूतभूत रूप हुआ और
 माता के कारण से उन दोनों की अत्यन्त प्रीति हुई, हेराज इसके पीछे उस महारथी
 ने बहुत इसकर युद्ध में चार उत्तम शायकों से नकुल के चारों घोड़ों को मारा ४५-४६ फिर
 वह महारथी भी शीघ्र ही मृतक घोड़े वाले रथ से कूदकर अपने यशस्वी भाई के रथ पर सवार
 हुआ फिर एकरथ पर सवार दोनों क्रोधयुक्त शरमाइयों ने हृदयनुषों को खिंचकर
 लगमात्रमें ही राजामद्र के रथको बाणों से दकदिया वह बाणों से आच्छादित होकर
 भी पर्वत के समान कपायमान नहीं हुआ और इसते ही उसने उन बाणों की वर्षा
 को नाश किया, तदनन्तर पराक्रमी सहदेवने बड़े क्रोध से बाणों को खिंचकर राजा
 मद्रके ऊपर फेंका ५० उसका फेंक हुआ बहुरहसमान बाण राजा मद्र को घायल
 करके पृथ्वी पर गिरा, फिर वह महा वीर्यवान् पीढीमान महारथी बड़ी दृढ़ता से रथ
 में बैठकर अचेत होगया उसका मूत उसको अचेत हुआ देखकर उस संग्राम भूमि
 से रथ के द्वारा दूर लेगया, धृतराष्ट्र के सबपुत्रोंने राजा मद्रके रथको फिरा हुआ

mother Then that warrior with a smile, killed the four horses of
 Nakul with four arrows. The latter jumped down from the chariot
 of which the horses were dead and mounted on the chariot of his
 brother. Mounted on the same chariot, the two brave brothers
 drawing their hard bows, hid the chariot of the king of Madra with
 a shower of arrows, but in spite of that the king was not discomfited
 and with a smiling face he destroyed those arrows. Then valiant
 Sahadev, drawing his bow, cast a shower of arrows on the king
 which flew like the rain on the ground. The
 driver had to take him far away from the field of battle. The sons of
 Dhritrashtra seeing the chariot of the king of Madra turn back

निपसाद् महाराज कदमलञ्च जगामह ॥ ५३ ॥ तं विसहं निपतितं भूतः सम्प्रेक्ष्य
संयुगे । अपवाह रथेनाजो यमाभ्यामभिपीडितम् ॥ ५४ ॥ दृष्ट्वा मद्रद्वररथं धातं
राष्ट्रः परांमुखम् । सर्वविमनसो भूत्वा नेद्रमस्तीत्यचिन्तयत् ॥ ५५ ॥ निर्दिश्य मातुलं
संख्ये माद्रीपुत्रीं महारथीं । दध्मतुमुदितोशंखौ सिंहनादञ्च नेदतुः ॥ ५६ ॥ अभिदुद्रुव-
तुहृष्टौ तथः संख्यं विशास्यते । यथा दैत्यचमं राजन्निन्द्रोपिन्द्राधिपामरौ ॥ ५७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि इन्द्रयुद्धे

चतुरशीतोऽध्यायः ८४ ॥

सञ्जय उवाच । ततो युधिष्ठिरो राजा मध्येप्रातःदिवाकरे । श्रुतायुषमभिप्रेक्ष्य प्रेषया
मासवाजिनः ॥ १ ॥ अभ्यधांच ततो राजा श्रुतायुषमरिन्दमम् । विनिघ्नन् सायकान्निघ्णो
नैधमिर्नतपर्याभिः ॥ २ ॥ स सम्भार्य्य रणे राजा प्रेषितान् धर्मस्नुता । शरान् सप्तमहे

देवकर बड़ी व्याकुलता से चिन्ताकरी और जाना कि वह नहीं है, माद्रीके दोना
महारथी पुत्री ने युद्ध में अपने मामाको नीतकर शंखों को बजाके बड़े
सिंह नाद से गुनगाओं को किया और हेराजा वह दोनों बड़े मसन्न होकर
आपकी सेना पर ऐसे दौड़े जैसे कि इन्द्र और विष्णु दोनों देवता दैत्यों की
सेनापर दौड़े ५७ ॥

अध्याय ८५ ॥

समय बोले कि इसके पीछे आकाश के मध्यगत सूर्य के आजाने पर राजा
युधिष्ठिर ने श्रुतायुषको सम्मुख देखकर घोड़ों को चेतन्य किया और गुप्तग्रन्थी बाले
नौशायकों से शत्रुनित श्रुतायुषको घायल करके उसके सम्मुख दौड़ा धनुषधारीने
कोपित होकर युद्ध में बाणों को रोककर सात बाण युधिष्ठिर पर चलाये, वह बाण
उस महात्मा के प्राणों को खोजकरते हुए उसके कवच को काटकर रुधिर को पीने

thought that he was no more. The sons of Madri blew loud blasts
from their conchs at their conquest of the king and roared loud roars.
And with cheerful minds they rushed upon your armies like Indra
and Vishnu rushing upon the daityas in the war between the
gods and the danavas. 57.

CHAPTER LXXXV

"When the sun had risen on the middle of the sky," said
Sanjaya, "Prince Yudhishtir, seeing Shrutayush before him, moved
his horses and with nine arrows having hidden knots wounded
Shrutayush the destroyer of enemies and then rushed upon him.
The great archer checked the arrows in a rage and discharged seven
arrows at Yudhishtir. The arrows cutting through his armour

प्राप्त. कौन्तेयाय समर्पयत् ॥३॥ ते तस्य कञ्च भित्वा पशु शोणितमर्हये । अमूर्तिव
 विचिन्वन्तो देहे तस्य महात्मन ॥ ४ ॥ पाण्डवस्तु भृश क्रुद्धो विद्धस्तेन महात्मना ।
 रणे वराहकर्णो राजान हृद्यविध्यत ॥ ५ ॥ अथा परेण भल्लेन केतुं तस्य महात्मन ।
 रथश्रेष्ठो रथाचूर्ण भूमौ पार्थो न्यपातयत् ॥ ६ ॥ केतु निपतित इष्ट्या श्रुतायु सतु
 पार्थिव । पाण्डव विशिखैस्त्रीशूणै राजन् विव्याध सप्तभि ॥७॥ तत श्रोधात् प्रजग्वा
 ल धर्मपुत्रो युधिष्ठिर । यथा युगान्ते भूतानि दिवक्षु रिव पावक ॥ ८ ॥ हुद्धन्तु
 पाण्डव इष्ट्या देवगन्धर्वराक्षस । प्रविध्यथुर्महाराज व्याकुल चाप्यभज्जगत् ॥ ९ ॥
 सर्वपात्रैव भूताना मिदमासी-मनोगतम् । त्रैलोक्यानय सकुद्धो नृपोऽय धक्ष्यतीति
 वै ॥ १० ॥ ऋषयश्चैव देवाश्च चक्रु स्वस्त्ययन महत् । लोकानां नृप शान्त्यर्थ
 क्रोधिते पाण्डवे तदा ॥११॥ स च क्रोधनमाविष्ट सुक्विकणीपरिसलिहन् । दधारात्मयु

लोमो फिर उससे अत्यन्त घायलहुए युधिष्ठिर ने वराहकर्ण नाम बाणसे राजा के
 हृदय को घायल किया । ५। फिर रथियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिरने दूसरे भल्लसे उस महात्मा
 की ध्वजाको शीघ्रही काटकर रथ से नीचे गिराया, उसके पीछे उसराजा श्रुतायुपने
 अपनी ध्वजाको गिराहुआ देखकर सातविंशियों से धर्मराजको घायल किया,
 इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ऐसा अत्यन्त क्रोधमें ज्वलित हुआ जैसे कि प्रलयकालकी
 अग्निदेदीप्त होती है, हेराजा देवतागंधर्व राक्षस युधिष्ठिर को क्रोधयुक्त देखकर
 पीड़ामान हुए और सब संसार कोभी व्याकुलता हुई और सब जीवों के चित्त में
 यह बात घर्षमान हुई कि अत्र यह राजा अत्यन्त क्रोध युक्तहोकर तीनों लोकों को
 भस्म करदेगा । १०। हे राजा तवतो युधिष्ठिरके अत्यन्त क्रोधितहोनेपर ऋषियों और
 देवताओंने लोकों की शान्ती के निमित्त बड़ी ईश्वरसे प्रार्थनाकरी, उस क्रोधमें भरोहोगे
 को चावतेहुए युधिष्ठिरने प्रलयकालके सूर्य के समान अपने भयानकरूपको धारण
 किया, तदनन्तर हे राजा वहा आपकी सब सेनाजीवनके विषय में निराश हुई,

pierced his body and drank his blood seeking for his life Wounded
 with the arrows, Yudhishtir pierced the breast of the king with a
 sort of arrows known as hog's ear 5 and with another dart he cut
 down the banner from his chariot. Seeing his banner fallen down,
 Shrutayush wounded Dharmraj with seven sharp arrows The latter
 thereupon burnt with anger like the fire of pralaya. Seeing Yudhishtir
 subject to anger, the gods gandharvas and rakshases were much
 disturbed in their minds and the world shook with fear as if the
 king would burn the three worlds 10 The gods and rishis prayed God
 to appease the wrath of Yudhishtir, Biting his lips in anger, Prince
 Yudhishtir looked glorious like the sun and all your warriors be
 came hopeless of their lives But the prince carefully checked his
 anger and cut asunder the large bow of Shrutayush near the

घोरं युगान्तादित्यसन्निभम् ॥ १२ ॥ ततः सैन्यानि सर्वाणि नाथकानि विशाम्पते ।
 निराशान्यमवस्तत्र जीवितं प्रति भारत ॥ १३ ॥ स तु धैर्येण तं कोपं सन्निवाच्यं
 महायशः । श्रुतायुवः प्रचिच्छेद मुष्टिदेशे महाघनु ॥ १४ ॥ अर्धेन छिन्नघन्वानं
 ताराचेनं स्नानान्तरे । निर्विभेदं रणे राजा सर्वसैन्यस्य पश्यत ॥ १५ ॥ सत्वरं च रणे
 राजन् तस्यं बाहान्महात्मनः । निजघान शरं क्षिप्रं सूतञ्च सुमहायुतः ॥ १६ ॥ हताश्वेतु
 रयं त्यक्त्वा दृष्ट्वा राक्षोऽस्य पीरपम् । विप्रदुद्राव वेगेन श्रुतायुः समरे तदा ॥ १७ ॥
 तोस्मन्नृजिते महेष्यामे धर्मपुत्रेण संयुगे । दुर्योधनवले राजन् सर्वमासीत् परां-
 पम् ॥ १८ ॥ एतत् कृत्वा महाराज धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः । व्यात्ताननो यथा कालस्तव
 सैन्यं जघानह ॥ १९ ॥ चेकितानस्तु वाष्पेयो गौतमं रथिनाम्बरम् । प्रेक्षतां सर्वसैन्या-
 नां छादयामास सायकैः ॥ २० ॥ सन्निवाच्यं शरालांस्तु कृपः शरच्छतो युधिः । चेकि-

तव उस राजाने धैर्यता से उसक्रोधको अच्छी रीति से रोककर श्रुतायुपके बड़े
 धनुषको मूठपर से काटा, फिर राजा ने भी सब सेना के देखनेहुए इस दूटे धनुष
 वालेको अपने नाराच बाणों से छानीपर घायल किया । १५। और इसी महात्मा ने
 शीघ्रता से उस महात्मा के घोड़ों को बाणों से मार कर मारथी को तत्क्षणही मार
 डाला, तब श्रुतायुप मृतकघोड़ों के रथ को त्यागकर राजा के पराक्रम को देखके
 घड़ी तीव्रता से संग्रामभूमि से भागा हे राजा उम युद्ध में धर्मपुत्र युधिष्ठिर से उम
 धनुषधारी के विजयहोने पर दुर्योधनकी सब सेना गुप्त मोड़गई, फिर धर्मराज
 ने यह कर्म करके अत्यन्त काल मृत्यु के समानहोकर आपकी सब सेना को मारा
 फिर दृष्टिगोचरी चेकितान ने सब सेना के देखते रथियों में श्रेष्ठगौतम कृपाचार्य्य
 को शायकों से दूक दिया । २०। और कृपाचार्य्यने उन बाणों को रोककर युद्ध में
 कुशलचेकितानको बाणों से घायल किया फिर उसशीघ्रताकरने वाले कृपाचार्य्यने
 दूसरे भल्लसे उसके धनुष को काट कर उसके सारथी को भी गिराया, इसके पीछे

handle, and within sight of all the armies the prince wounded him
 in the breast 15. and killed his horses and the driver with his arrows
 Leaving the chariot of which the horses were dead, Shrutayush fled
 from the field of battle at the sight of the king's prowess. In that
 battle, O king, on Yudhushthir the Jus's conquering thrt archer,
 Duryodhan's army turned back and Dharmraj having done this
 deed of prowess, assumed a dreadful form like that of Death to
 des troy your armies. Then Chckitan of the Vrshni family within
 sight of all the warriors, hid KupaLaya the bst Goutams with
 his arrows. 20. and the latter, having checked those arrows wounded
 Chckitan, skilful in battle, with his arrows. The dexterous Krija-
 charya having cut his bow wjh another arrow, killed his driver too,
 and having killed the horses and the driver, he also killed the rear

तान रणे यत्त राजन् विव्याध पश्चिम् ॥ २१ ॥ अधापरैण भल्ले न धनुश्चिच्छेद
मारिय । स्रग्धन्वास्व समरे क्षिप्रहस्तो न्यपातयत् ॥ २२ ॥ हृद्यवाध्यास्यायधोद्राजन्तु
मौ तौ पापिण सारथी । सोवप्लुत्य रथात्पूर्णं गदाजग्राह सात्वत ॥ २३ ॥ स्रुतया
वीरपातिन्या गत्या गदिनाम्बर । गौतमस्य हयान् हत्वा सारथिश्च न्यपातयत्
॥ २४ ॥ भूमिष्ठो गौतमस्तस्य शराश्चिक्षेप षोडश । शरास्ते सात्वत भित्वा प्राविशन्
धरणीतलम् २५ ॥ चैकितानस्तत कुड्ग पुनश्चिक्षेप ता गदा । गौतमस्य वधाकाक्षी
स्रुतस्त्रेव परन्द्वर ॥ २६ ॥ तामापतन्तो विपुला मदमगर्भा महागदाम् । शरैरेकसाह
स्रैर्वारयामास गौतम ॥ २७ ॥ चैकितानस्तत खड्ग प्रोधाद्द्रुघृत्य भारत । हाय
परमास्थाय गौतम समुपाद्रवत् ॥ २८ ॥ गौतमोपि धनुस्त्यक्त्या प्रगृह्णासि सुसयत
वेगेन महता राजश्रेकितानमुपाद्रवत् ॥ २९ ॥ तावुर्भा वलसम्पन्ना निस्त्रिशवरधारिणौ
निस्त्रिशशय्या सुतोक्ष्णाभ्यामन्योन्य सततक्षतु ॥ ३० ॥ निस्त्रशवेगामिहतौ ततस्तौ

घोड़ोंको मार कर सारथी और पीछे के रत्नक को मारा फिर उसगदा में कुशज
यादव ने शीघ्रही रथसे कूदकर गदाको हाथमें लिया, और उस वीरोंकी मारनेवालों
गदासे कृपाचार्य के घोड़ों को और सारथी को मारा, फिर पृथ्वी पर, वर्तमान
कृपाचार्य ने सोलह बाणों को उसके ऊपर फेंका वह सब बाण, उम यादव को
घायलकरके पृथ्वीपर गिरे । २५ । फिर कृपाचार्य को मारनेकी इच्छा से महाक्रोधित
चैकितान ने उस गदाको ऐसे फेंका जैसेकि इन्द्रने वृत्रासुर के ऊपर फेंकाथा फिर
कृपाचार्य ने उस लोहेकी महा रथूल गिरती हुई गदाको हजारों बाणों से रोका
इसके पीछे चैकितान खड्ग को भिपान से निकालकर बड़ी तीव्रतासे कृपाचार्य
के समीप गया, फिरबड़े सावधान कृपाचार्य भी धनुषको छोड़कर बड़ी तीव्रतासे
चैकितानके पासगये, वहाँ उन दोनों महा पराक्रमी खड्ग धारियोंने तीक्ष्ण धारवाले
खड्गों से परस्पर में घायल किया । ३० । फिर वह दोनों पुरुषोत्तम खड्गों
के आघात से घायल सबजीवों के निवासस्थान पृथ्वीपर गिरपड़े, और मूर्च्छा से

guard Then that Yadav, skilful in mace exercise jumped down
from his chariot mace in hand and with that mace, the destroyer of
enemies, he killed the horses and the driver of Kripacharya who
discharged at him sixteen arrows and having wounded the Yadav,
those arrows fell on the ground 25 D snung to kill Kripacharya
Chelitan mace hurled his mace at him as Indra had hurled
his at Namichu Kripacharya checked with thousands of arrows that
iron mace falling with great velocity Then Chelitan drew out his
sword from the scabbard and rushed upon Kripacharya Kripacharya
carefully left his sword and went in haste to Chelitan and then the two
warriors wounded each other with swords 30 Wounded with sword
cuts the two warriors fall on earth the habitation of all living beings

पुरुषपर्मो । धरणीसमनुप्राप्ती सर्वभूतनिर्पेचिताम् ॥ ३१ ॥ भूच्छंयांभिपरीताङ्गा व्याया
 मन् तु मोहितौ । ततोऽप्यधायद्वेगेन करिकर्षः सुहृत्तया ॥ ३२ ॥ चेकितानं तथाभूतं
 दृष्ट्वा समरदुर्मदः । रथमारोपयञ्चैनं सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ ३३ ॥ तथैव
 शकुनिः शूरः स्याल्लसन्न विशाम्पते । आरोपयद्रथं तूर्णं गौतमं रथिनाम्बरम् ॥ ३४ ॥
 सौमदत्तिं तथा धृष्टकेतुर्महापलं । नवत्यां सारथकः क्षिप्रं राजन् विव्याध वक्षसि
 ॥ ३५ ॥ सौमदत्तिं हरस्थैस्तैर्मृगं चाणैरशोभत । मध्यन्दिने महाराज रश्मि भिस्तप
 नो यथा ॥ ३६ ॥ भूरिश्रवास्तु समरे धृष्टकेतुं महारथम् । हतस्तहये चक्र विरथं सा
 यकात्तमः ॥ ३७ ॥ विरथं समालोच्य हताश्वं हतसारथिम् । महता शस्त्रपेणच्छाद्
 यामास संयुग् ॥ ३८ ॥ संतु तं रथमुख्यं धृष्टकेतुर्महामनाः । आरुह्य ततोऽयानं
 शतानीकस्यमारिष ॥ ३९ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च राजन् दुर्मर्षणस्तथा । रथिनो ह्ये
 सन्नाहाः सौमद्रमभिदुद्रुवुः ॥ ४० ॥ अभिमन्योस्ततस्तैस्तु घोरं युद्धं मवर्त्तत । शरी

महा व्याकुल देह होकर बड़े परिश्रमसे अर्चेत हांगये इसके पीछे करिकर्ष उस दशा
 में युक्त युद्ध में दुर्मद चेकितान को देखकर भीति के कारण बड़ी तीव्रता से सम्मुख
 दौड़ा और सेनाके देखनेहुए उसको रथपर सवार किया, इसी प्रकार हे राजा आप
 के साले शूरशकुनी ने उस रथियों में श्रेष्ठकृपाचार्य को भी शीघ्ररथपर सवारा किया
 इसी प्रकार से महाबली क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने नव्वे तीक्ष्ण बाणों से भूरिश्रवा को
 हृदयमें घायल किया । ३५ । हे राजा भूरिश्रवा उन हृदयपर नियत बाणोंसे ऐसा अत्यन्त
 शोभित हुआ जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य अपनी किरणों से शोभित होता
 है, फिर भूरिश्रवा ने उत्तम शायकों से महारथी धृष्टकेतुके सारथी रथ घोड़ों को
 मार रथमें विरथकर दिया, फिर इसको युद्ध में रथहीन देखकर व शों से दक दिया
 हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर यह बड़ा साहसी धृष्टकेतु उस रथको छोड़कर शतानीक के
 रथपर सवार हुआ, इस के पीछे सुनहरी कवच धारण करने वाले चित्रसेन विकर्ण

and having swooned with great exertion they became insensible. Then Karikarsh, seeing Chelitan in that condition rushed to the spot out of affection for him and within sight of all the armies bore him on his chariot. In the same manner, O king, your brother-in-law brave Shakuni put brave Kripacharya soon on the chariot. In the same manner brave and enraged Dhrishtadyumna wounded Bhurishrava in the breast with ninety sharp arrows. 35. With the arrow standing on his breast, Bhurishrava looked as glorious as the midday sun with his rays. Bhurishrava then with his good arrows, having killed the chariot driver and horses of Dhrishtaketu, deprived him of the use of his chariot and finding him out of his chariot, he covered him with arrows. Then brave Dhrishtketu left his own chariot and mounted that of Shatanik. Sheathed in golden armour, Chitrassen, Vikarn

रस्य यथा राजन् वात पित्त कफेऽग्नि ॥ ४१ ॥ विरथांस्तवपुत्रांस्तु कृत्वा राजन्
महाहये, न जघान नरव्याघ्र. स्मरन् भीम ध्वजस्तदा ॥ ४२ ॥ ततो रात्रां बहुशतैर्गजा
श्वरथयायिभिः । मंत्रुते समरे भीष्मं देवैरपि दुरासदम् ॥ ४३ ॥ प्रयातं शीघ्रमुद्गीक्ष्य
परिश्रान्तुं सुतास्तव । अमिमन्युं समुद्दिश्य घालमेकं महारथम् ॥ ४४ ॥ वासुदेवमुवा
चेदं कौन्तेयः श्वेतवाहन. । चोदयाश्वान् हृषीकेश यत्रैते बहुला रथाः ॥ ४५ ॥ पते
हि बहव शूरा कृतास्त्रा युद्धदुर्मदा । यथा हन्युर्नन. सेनां तथा माधव चीदय ॥ ४६ ॥
एवमुक्तः स वाष्पेय. कौन्तेयेन। भितो जसा । रथे श्वेतहयैयुक्तं प्रेषयामास संयुगे ४७ ॥
निष्ठानको महानासीत् तवसैन्यस्य मारिप । यदङ्गुनो रणे क्रुद्ध संयातस्तावकान्प्रति
॥ ४८ ॥ समासाद्यतु कौन्तेयो रात्रस्तान्भीष्मरक्षिण. । सुशर्माणमथो राजन् निदं
वचन मग्नवीत् ॥ ४९ ॥ जाना मित्वा युधा श्रेष्ठ मत्यन्ते पूर्वे वैरिणम् । अनयस्याद्य

दुर्मर्षण नाम तीनों रथी अभिमन्युके सम्मुख दौड़े । ४०। इसके पीछे अभिमन्युसे और
उन रथियों से ऐसा घोर युद्ध मचा जैसे कि देह से और वात पित्त कफ इन तीनों
से युद्ध होता है, हे राजा फिर भीमसेन के वचन को स्मरण करते हुए उस नरोत्तम
ने आपके पुत्रों को विरथ करके पारा नहीं तदनन्तर देवताओं से भी अजेय भी-
ष्मजी बहुत से हाथी घोड़े और रथोंपर सवार हजारों राजाओं से आकर संयुक्त
हुए इस प्रकार आपके पुत्रों की रक्षा के लिये वड़ी शीघ्रता से आते हुए भीष्मजी को
देसके और महारथी अभिमन्यु को अकेला देखकर श्वेत घोड़े के रथपर सवार
अर्जुन वासुदेव जी से यह वचन बोला कि हे हृषीकेश घोड़ोंको तेज करिये
और जहां यह बहुतमे रथ है वहां चलिये । ४५। यह अस्त्रोंके जाननेवाले युद्धमें दुर्मद
घड़े शूरीर जैसे कि हमारी सेनाको नहीं मारें हे माधवजी उसी प्रकारमे आप
घोड़ों को चलाइये, वड़े तेजस्वी अर्जुनके कहे हुए ऐसे वचनों को सुनकर श्रीकृष्ण
जी ने उन्हीं श्वेत घोड़ों के द्वाग रथको संग्राम भूमि में पहुँचाया, हे राजा यह

and Durmarshan, the three great warriors rushed upon Abhimanyu, 40 and the battle amongst them was as dreadful at that of wind, bile and phlegm the, three humours of the body. And remembering the words of Bhishm, that best of warriors made the chariots of your sons useless, but spared their life. Then Bhishm, unconquerable even by gods, joined them together with thousands of elephants, horse and charioteer princes. Thus seeing Bhishm in haste coming for the protection of your sons and finding Abhimanyu alone, Arjun, mounted on the chariot drawn by white horses, said to Vasudev. "Make the horses run swiftly and go to the place where these chariots are, 45 so that these great warriors skillful in the use of arms, may not destroy our armies. Make haste to reach there." Having heard the words of glorious Arjun, Shree Krishna drove the chariot into

सम्प्राप्तं फलं पश्य सुदारुणम् ॥ ५० ॥ अद्य ते दशयिष्यामि पूर्वं प्रेतान् पितामहान् ।
 एवं संजल्पतस्तस्य धीमत्सोः शत्रु घातिनः ॥ ५१ ॥ श्रुत्वापि पश्यं वाक्यं सुशर्मा रथ
 यूथपः । न चैनमग्रवीत् किञ्चिच्छुभं वा यदिवाशुभम् ॥ ५२ ॥ अमिगम्भाजुने वीरं
 राजभिर्बहुभिर्वृतः । पुरस्तात् पृष्ठतश्चैव पार्श्वतश्चैव स्वतः ॥ ५३ ॥ परिवार्याजुनं
 संख्ये तव पुत्रैर्महारथः । शरैः संघादयामास मेघरिव दिवाकारम् ॥ ५४ ॥ ततः
 प्रवृत्तः सुमहान् संग्रामः शोणितोदकः । तापकानां च समरपाण्डवानाञ्च भारत ॥ ५५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सुशर्माजुनसमागमे

पञ्चाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥

आपकी सेना का बड़ा निपटानक हुआ। णी युद्ध में क्रुद्ध अर्जुन आपके पुत्रों पर
 चढ़ाई करनेवाला हुआ। हे राजेन्द्र अर्जुन चतुर्भीष्मजी के रक्तक राजाओं को
 प्राप्तहोकर राजा सुशर्मा से यह वचन बोला, कि मैं तुम्हें को शरवीरों में अत्यन्त
 श्रेष्ठ और पहला शत्रु जानताहूँ। अब इस अन्याय से प्राप्तहुए भयानक फलको
 देखो ॥५०॥ अब मैं तेरेसे हुए पूर्वजोंसे तुम्हें पिलांकगा यह अर्जुन के वचन सुनकर
 महारथी सुशर्मा ने उसको अच्छा बुरा कोई उत्तर नहीं दिया, फिर बहुत राजाओं
 समित आपके महारथी पुत्रों ने महा पराक्रमी अर्जुन के सम्मुख जाकर अर्जुन को
 चारोंओर से घेरकर बाणोंकी वर्षासे ऐसा आच्छादित करादिया जैसे कि बादल
 सूर्य को ढकलेतेहैं हे भरतर्षभ इसकी पीछे आप के पुत्रों से और अर्जुनसे ऐसा महा
 भयानक युद्ध प्रारंभ हुआ कि जिसे में रुधिरों की नदी बह निकली ॥ ५५ ॥

the field of battle. That enraged Arjun's attack upon your armies was very injurious to your cause. Having met the princes that guarded Bhishm, Arjun said to Susharma, "I know you to be the best of warriors and first among my enemies. See the result of this unjust war. 50. I shall now send you to your deceased predecessors." Having heard these words of Arjun, Susharma returned him no reply, either good or bad. Then your brave sons with many princes surrounded Arjun on all sides and hid him with the shower of his arrows as the clouds hide the sun. The battle between your sons and Arjun was so fierce that a river of blood flowed on the field of battle." 55.



सञ्जय उवाच । सताड्यमातस्तु शरैर्धनञ्जयः पदाहतो नागद्वयभस्त्रवली ।
चाणेन चाणेन महारथानां चिच्छेद्वापानि रणेप्रसह्य ॥१॥ सच्छिद्यचापानिचतानिराहं
तेपारणे वीर्यवतांशणेन । विव्याध चाणैर्युगपन्महात्मानि शेषतां तेष्वयमभ्यमानः ॥ २ ॥
निपेतुराजौ रुधिरप्रसिन्ध्वास्ते ताडिताः शक्रमुतेनराजन् । विभिश्रंगानाःपतितीतोत्तमाङ्गा
गतासवश्छिद्यतनप्रकाशाः ॥३॥मर्हीगताःपार्थप्रलाभिभूताविचित्ररूपायुगपद्धितेभ्युः । दृष्ट्वा
हतांस्तान्पुथि राजपुत्रांल्लिगर्भराजःप्रपयौरथेन ॥ ४ ॥ तेषांरथानामयपृष्ठगोपा द्राक्त्रि-
शदन्वेष्यपतन्त पार्थम् । तथैव ते तं परिवार्य्य पार्थं प्रहृष्य चापानि महारथापि
॥ ५ ॥ अर्धवृषन् चाणमहौघवृष्ट्या यथा गिरिं तोयधरां जलौघैः । सर्पाड्यमानस्तु
दौरोघवृष्ट्या धनञ्जयस्तान् पुथि जातरोषः ॥ ६ ॥ पश्यां शरैः संयति तैलघौतैर्जघान

अध्याय ८६ ॥

संजय वाले कि बाणों से घायल सर्पके समान ड्रास लेने वाले महा पीड़ित
वलवान अर्जुनने युद्धमें महा हठकरके एक २ बाणसे सब महाराथियों के बाणों को
और धनुषों को एक क्षणमें काटकर उस नाशकर्त्ता महात्मा अर्जुनने बाणों से सब
को एकही समय में घायल किया हे राजा इन्द्रके पुत्र अर्जुन के हाथ से घायल
वह राजालोग रुधिर में भरे अत्यन्त टूटे अंग शिर कटे मृतकहोके कवच पहरेहुए
संग्राम भूमि में गिरपड़े, अर्जुन के पराक्रम से विचित्ररूप होकर सब महारथी एक
सायही नाशको प्राप्तहुए, युद्ध में उन राजकुमारों को मृतक देखकर राजा त्रिगर्त्त
रथकी सवारी में चला, फिर उन रथियों के पति भी पीछे की रक्षाकरने वाले
वीर अर्जुन के सम्मुख आये और अर्जुन को चारों ओर से घेरकर बड़े शब्दायमान
धनुषों को चढ़ाके, हजारों बाणों को ऐसी वर्षा करने लगे जैसे कि जन समूह से
बादल पहाड़पर वर्षाकरते हैं फिर बाणोंकी वर्षासे पीड़ित अर्जुन ने बड़े क्रोधयुक्त
होकर उन घृष्ट रक्षकों को भी युद्धके भीतर तैलसे सफा किये हुए बाणों से
मारा फिर उत यशस्वी प्रमत्त चित्त अर्जुनने युद्ध में उन साठ रथियों को विजय

CHAPTER LXXXVI

Sanjaya continued — "Wounded by arrows, hissing like a serpent and exceedingly oppressed, brave Arjun, with great exertion in battle cut down the bows and arrows of all the warriors in an instant and wounded them all at the same time with his arrows. Wounded by Arjun the son of Indra, the princes fell down in the field of battle, bleeding out of their broken limbs, heads cut and armours pierced. With the wonderful prowess of Arjun, the warriors were annihilated in a moment. Seeing those princes slain in battle the king of Trigart proceeded in his chariot, and the rear guards too of those charioteers advanced to meet Arjun. They surrounded him on all sides and drawing their loud sounding bows showered over him thousands of arrows as clouds pour forth rain over mountains. Much

तानप्यथे पृष्ठगोपात्रं । रथे द्वाचतास्तानजित्यसख्ये धनञ्जय प्रीतमना वशास्वी ॥७॥
 अथात्पुंस्त्रीभ्यवधाय जिष्णुर्बलानि राजन् समरे निहत्य त्रिगच्छराजो निहतात्ममीक्ष्य
 महात्मनातो नय चन्द्रवर्गान् ॥८॥ रणे पुरस्कृत्य नराधिपोस्तात् जगाम पाप्यं त्वरितो
 वधाय । अभिदुत चास्त्रं प्रना घण्टि वनञ्जय वीक्ष्य शिषिण्डिमुष्या ॥ ९ ॥ द्रश्यायु
 युस्ने शितशस्त्रहस्ता रिरेक्षिपन्तो रथमर्जुनस्य । पाप्योपि तानापततः समीक्ष्य त्रिगच्छं
 राक्ष सहितान् जूनीरान् ॥ १० ॥ त्रिदश पितृनासतरे धनुष्मान् गाण्डीयमुक्तेनाक्षतः
 पृषत्के । भीष्म धियासुभ्रुधि सन्नुदरं दुर्योधन सन्ध्यादोश्चरत् ॥११॥ सगराधिपान
 भिवारयित्वा मुहूर्त्तमायोध्य वलेन वीर । उत्खज्य राजानमनन्तरीष्यो जयद्रथादीन्
 नृयान्महोत्तम ॥ १२ ॥ यथा ततो भीमबलो मनस्वी गाण्डीयमाजौ शरचापपाणि ।
 युधिष्ठिरश्च प्रवला महोत्तम समार्ययो त्वरितो जातकोप ॥ १३ ॥ मद्राधिप सममित्य-

कर, युद्ध में राजाओं की सेनाओं को मार भीष्मजी के मारने के लिये शीघ्रता
 करी, फिर राजा विर्षिके हाथ में मरे हुए बाणों के उन समूहों को देखकर
 राजाओं को आगे करके अर्जुन के मारने के लिये बहुत शीघ्रगया, फिर शिसयदी
 आदि उत अर्जुन को सम्मुख गया हुआ जानकर बड़े तीव्र अश्वों को
 हाथ में लिये बड़ी-शीघ्रता से अर्जुनकी रक्षा के निमित्त उसके पास गये फिर उन
 बड़े धनुष मारी अर्जुनने भी राजा त्रिगच्छके साथ आते हुए उन नरोत्तप वीरोंको देखकर
 गाण्डीव धनुषसे छेड़े हुए तीक्ष्ण पृषक्त बाणों से मारकर भीमजी की ओर जाते
 हुए मार्ग में दुर्योधन और जयद्रथ आदि राजाओं को देखा ॥ ११॥ फिर वह वीर उन
 रोकने के इच्छावालों के सम्मुख होकर और एक मुहूर्त्त युद्ध करके बड़े पराक्रमी
 राजा जयद्रथ आदि को छोड़ कर हाथ में भयकारी धनुष लेकर भीष्मजीके
 सम्मुखगया फिर भयकारी पराक्रम वाला युधिष्ठिर भी बड़े क्रोध में भरके उन के
 सम्मुखगया, फिर वह अत्यन्त कीर्त्तमान आने भाग में मिले हुए उस राजा मद्रको

afflicted and chagrined with the shower of their arrows, Arjun killed those rear guards too, with his well oiled arrows. Then glorious Arjun with a cheerful mind, having conquered the sixty charoteers and destroyed the armies of princes hastened to slay Bhishma. Seeing the parties of his relations, slain in battle by Arjun, the king of Trigart, preceled by kshatryas hastened to slay him. Shikhandi and others seeing Arjun engaged in combat, hastened to help him with their weapons. The great archer Arjun too seeing those warriors coming on with the king of Trigart, destroyed them with his sharp arrows shot from the Gandiv bow, and advancing again towards Bhishma, he saw Daryadhan, Jayadrath and other princes. He fired the warriors desirous of checking his advance and, fought for a while against them. Then leaving the great warriors, Jayadrath and

ज्य संख्ये स्वभागमासन्तमनन्तकीर्ति । सार्धं समाद्रिसुतभीमसेनैर्भीष्म ययौ
 शान्तनव्य रणाय ॥ १४ ॥ तै सम्प्रयुक्तै समहारयाप्रयुक्तैर्गङ्गासुत समर चित्रयोधै ।
 न विव्यथे शान्तनवो महात्मा समागतं पाण्डुसुतं समस्तै ॥ १५ ॥ अथैतय राजा
 युधि सत्यसन्धो जयद्रथोत्युग्रबलो मनस्वी । चिच्छेद् चापानि महारथानां प्रसह्य
 तेषा धनुषा घरेण ॥ १६ ॥ युधिष्ठिर भीमसेन यमौ च पार्थ कृष्ण युधि सञ्जातकोप ।
 दुर्योधन श्रोत्रविधो महात्मा जघान वाणेरनलप्रकाशै ॥ १७ ॥ कृपेण शल्येन शलेन
 वैष तथा विभो चित्रसेनेन चार्जो । विद्रा शरैस्तेतिविवृक्षकोर्षैर्वैषा यथा दैत्यगणै
 समेतै ॥ १८ ॥ छिन्नायुधे शान्तनवेन राजा शिखण्डिनं प्रेषय च जातकोप । अजात
 शत्रु समरे महात्मा शिखण्डिन इव उवाच वाक्यम् ॥ १९ ॥ उक्त्वा तथा त्व पितुर
 प्रतोमा मह हनिष्यामि महाव्रतन्तम् । भीष्म शरार्धैर्विमलार्कवर्णै सत्य धदामीति

त्यागकरके नकुल सहदेव और भीमसेन को साथलिये भीष्मजी के सम्मुखगया युद्धमें
 अपूर्व पराक्रम दिखाने वाले गंगापुत्र शतनु के पुत्र भीष्मजी उनउत्तम महारथियों
 से सयुक्तहोकर सत्र पांडवों से, भिडे हुए भी पीडामान नहीं हुए । १५। इस के पीछे
 भयानक बल साहमी मत्य संकल्प राजा जयद्रथने युद्धमें आकर उत्तम धनुष
 से उन महारथियों के धनुषों को काटा, और क्रोध युक्त शत्रुता रखनेवाले दुर्योधन
 ने अग्नि के समान प्रकाशमान वाणों से युधिष्ठिर भीमसेन नकुल और सहदेव
 समेत श्रीकृष्ण और अर्जुनको घायल किया हे समर्थ वह पांडव युद्धभूमि में उन
 महाक्रोध में भरेहुए कृपाचार्य शल और शल्य व चित्रसेन के वाणों से ऐसे घायल
 किये गये जैसे कि दैत्यों के समूह से मिलेहुए देवता घायल होते हैं, फिर क्रोधयुक्त
 महात्मा युधिष्ठिर भीष्मजी के हाथसे दृष्टे अस्रवाले शिखण्डीको देखकर महाक्रोध
 युक्त शिखण्डीसे यह वचन बोला, कि तुमने अपने पिता के सम्मुख प्रतिज्ञा करके
 यद्गुप्त से कहाथा कि मैं निर्मल सूर्य रूपी वाणोंके समूहसे महाव्रत भीष्मजी को

others, he faced Bhim with the dreadful bow in his hand. Yudhishtir too, of dreadful prowess, faced them in great anger. Then leaving the king of Madra allotted to him he faced Bhishm in company with Nakul Sahdev and Bhim. The son of Ganga and Shantanu, of great prowess in war was not afflicted by his encounter with the Pandavas assisted as they were by so many warriors of note. Then king Jayadrath of dreadful prowess and courage and true of word, came into the field of battle and cut down their bows. And enraged Duryodhan of envious temper with his bright arrows like fire wounded Yudhishtir, Bhim, Nakul, Sahdev, Shree Krishna and Arjun. The Pandavas, O king were wounded in battle by the enraged Kripacharya Shal, Shalya and Chitrasena as the gods are by the hosts of Danavas. Seeing Shikhandi broken of weapons by Bhishm, Yudhishtir thus addressed him, — ' You gave me your word in the presence of your father that

कृता प्रतिज्ञा ॥ २० ॥ त्वया न चैनां मफलां करोषि देवप्रते यन्न निहसि युद्धे ।
 मिथ्याप्रतिज्ञो भव माप्रवीर रक्षस्व धर्मस्व कुल यशश्च ॥ २१ ॥ प्रेक्षस्व भीष्म युधि
 भीमवेगो सर्वास्तपन्त मम सैन्यसघात् । शरीरजालैरतिविग्नवेगै फाल यथा फालहतं
 क्षणेन ॥ २२ ॥ निकृत्तचाप समरेनपेक्ष पराजित ज्ञान्तनवेन चाजौ । विहाय वन्द्य
 नथ सोदरांश्च फव यास्यसे नानुरूप तवेदम् ॥ २३ ॥ दृष्ट्वाहि भीष्म तमनन्तवीर्य्यं
 भग्नञ्च सैन्यं द्रवमाणमेवम् । भीतोसिन्नून् द्रुपदस्य पुत्र तथा हिते सुपयणोप्रदृष्टः
 ॥२४॥ अज्ञायमानेच धनञ्जयेपि महादह्ये सग्नसके नृवीरे । कथ हि भीष्मात् प्रथितः
 पृथिव्यां भय त्वमद्य प्रकरोषि वीर ॥ २५ ॥ स धर्मराजस्य वचा निशम्य रुक्षाक्षरं
 विप्रलापानुवक्षम् । प्रत्यादेशं मन्यमानो महात्मा प्रतत्तरे भीष्मवधाय राजन् ॥ २६ ॥
 तमापतेन्त महता ज्वेन शिखण्डिन भीष्ममभिद्रवन्तम् । निवारयामास हि शल्य
 माङ्गि ॥ २० ॥ तुम अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करके क्यों नहीं भीष्मजीको मारते हो, हे
 नरोत्तम तुम असत्य प्रतिज्ञावाले मतहो धर्म यश और कुलकी रक्षा करो तुम अत्यन्त
 तीव्र प्रकाशित बाणोंके समूहों से मेरी सेनाके सब यूथोंके संतप्त करनेवाले और युद्ध
 में भयकारी रूप भीष्मको ऐसा देखो जैसे कि कानपुरके लणभरमें सबकोमारें युद्ध
 में राजालोग भीष्मके हाथसे दूटे धनुषजाले हुए तुमको ऐसा उचित नहीं है कि अपने
 सगे भाई और बान्धवों को छोड़कर जातेहो, यह बात तुम्हारे योग्य नहीं है हे द्रुपद
 के पुत्र तू उस अतुल पराक्रमी भीष्म को और इस छिन्न भिन्न भागी हुई सेना
 का देखकर अवश्य भयभीत है और तेरे मुखकी शोभा विगड़ी हुई है, वड़े भारी
 युद्ध में चारों ओरसे जातेहुए अर्जुनके साथ भिड़े हुए नरवीर भीष्मको देखो हे वीर
 तू पृथ्वीपर विख्यात होकर क्यों भीष्मजी से शत्रुता करता है ॥ २५ ॥ हेराजा उस
 महात्माने धर्मराज के रूपे अनेक मर्म स्पर्श करने वाले वचनोंको सुनकर आज्ञाको
 मानकर भीष्मके मारने की शीत्रता करी, उस समय बड़े वेगसे भीष्मके सम्मुख
 आतेहुए शिखण्डीको शल्यने बड़े दुर्जेयत्रोर अस्त्रोंमें रोका हेराजा महाइन्द्रके समान

'with your arrows bright like the sun you will destroy Bhishm of
 dreadful vows. Why do you not redeem your promise by slaying
 him ? Donot break your promise, best of men, protect Dharm Fame
 and family With your bright and sharp arrows you can destroy
 armies. Look at dreadful Bhishm as Death the destroyer of all The
 bows of the warriors are cut down by Bhishm Your leaving your
 brother's aid relations is not worthy of you It is not worthy of you
 son of Drupad, that you seem lighted at the sight of dreadful
 Bhishm and the scattered army The glory of thy face is gone Look
 at brave Bhishm engaged in fight with Arjun Pergrious in the
 world, you call yourself Bhishm's enemy in vain' Hearing the
 taunts of Dharmraj, touching his vital parts he hastened to destroy
 Bhishm. Shalya checked the advance of Shikhandi-against-Bhishm,-

पुनस्त्रेण धीरेण सु दज्जेयेन । २७ । स चापि हृत्वा समुदाय्यमाणमस्त युगान्ताग्नि
 सनकाशान् । ननुमुहोहं पश्यन् पुत्रा राजन् महन्द्रप्रतिमप्रभावः । २८ ॥ तस्यां व
 त्तत्रैव महापुत्रोऽपि शरैस्तदस्त्रं प्रतिजायमानं शयाद्वाह गन्धर्वास्त्रं शिखण्ड्यधोम
 प्रतिपातमस्य ॥ २९ ॥ तदस्त्रमस्त्रेण विदाय्यमाणं पस्थाः सुरा ददशु पार्थिवाश्च ।
 भीष्मस्तु राजन् समरे महात्मा धनुश्चक्रिप्रध्वजमेव चापि ॥ ३० ॥ छित्त्वानदत्
 पाण्डुसुतस्यधीरो युधिष्ठिरस्याजमोदस्य राज । तत समुत्सृज्य धन सवाणः युधि-
 स्थिरं वीक्ष्य भयामिभूतम् । ३१ ॥ गदाप्रगृह्याभिपपात सस्ये जयद्रथ भीमसन् पदाति ।
 तमोपतन्तं सहसा जघन जयद्रथ सगद भीमसेनम् । ३२ ॥ विव्याध धोरैर्मदण्डक
 न्यै शितै शरै पञ्चशतै समन्तात् । अचिन्त यित्वा स शरोस्तरस्वी वृकोदर
 भीष्मपरीतचेता । ३३ ॥ जघान घाहान् समरे समतात्पारावतान् सिन्धुयजस्य
 संत्ये । ततोशिबीक्ष्याप्रतिमनावस्तवात्मजस्वरमाणो रथत । ३४ ॥ अश्याययौ भीम

प्रभाववाला वह दुपडका पुत्र उत मठयाग्निके समान 'भकाशित' 'अस्त्रको' देखकर
 मोहित नहीं हुआ और उडे धनुष के बाणों से उस 'अस्त्रको' नाशकरके उसी स्थान
 में नियतदृशा फिर शिखण्डी ने इस के नाश करनेवाले दुस्तर 'विरुणास्त्रको' किया
 उता अस्त्रसे अस्त्रको रुकेदुए को स्वर्गपानी देवता और 'गानात्रोने देवा' । फिर
 उस महात्मा वीर भीष्मजी ने युद्ध में अजपीठ उशी पारुडने युधिष्ठिर के धनुषको
 जहज धना समेत काटकर 'पदा शेरुं' किया इसके पीछे भीमसेन युधिष्ठिर को
 भयभीत देखकर बाणों समेत धनुषको छोड़कर, गदा को हाथ में लिये, पैदल ही
 सग्राम में जयद्रथ के सम्मुख आया, जयद्रथ ने गदाधारी भीमसेन को बड़े
 वेग से आता हुआ देखकर परराज के दरुड के समान धोरें ना बाणों से
 चारोंभर घायल किया फिर क्रोध में वर्ण भीमसेनने बाणों को छुल न मानकर,
 राजा शिशु के पारासत नाम सब घोडों को मारा फिर अतुल प्रभाव इन्द्र के समान
 अस्त्रधारी आपरा पुत्र विजनेन बड़ी शीघ्रता से अवन रथ के द्वारा भीमसेन के

with his sharp arrows Drupad's son Shikhandi, of prowess like
 that of Indra was not frightened at the sight of his weapons (light
 like the fire of pālyā) but stood firmly destroying his weapons with
 the arrows discharged from his huge bow. Then Shikhandi drew
 out his Varunastra to destroy his weapons. The gods of heaven and
 the prince saw his weapons checked by the Varunastra 30. The great
 warrior Bhishm roared a tremendous roar after cutting asunder the
 jointed bow and limbs - of Yudhishtir. Finding Yudhishtir terrifi-
 ed, Bhishm left his bow and arrows and with mace in his hand has-
 tened on foot to destroy Jayadrath. Seeing Bhishm coming in haste
 with his mace, Jayadrath with his arrows dreadful like the staff of
 Yama wounded him from all sides. Bhishm in the excess of rage

सेनं नियन्तुः समुद्यतास्त्रो सुरराजकल्पः । भीमोऽप्यथेन सहसा विनद्य प्रमुद्ययौ गन्ध्या
 तर्जयानः ॥ ३५ ॥ समुद्यतां तां यमदण्डकल्पां दृष्ट्वा गदान्ते कुरवः समन्तात् ।
 विहाय सर्वे तथ पुत्रमुग्रं पातं गदायाः परिहसुकामाः ॥ ३६ ॥ अपक्रान्तास्तुमुले
 संप्रमदं मुदाशरणे भारत मोहनीयि । अमृतचेतास्त्वथ चित्रसेना महागदामापतेन्ती
 निरीक्ष्य ॥ ३७ ॥ रयंसमुत्सृज्य पदातिराजो प्रगृह्य खड्गं विपुलश्च चर्म । अघप्लुतः

प्राप्य रथं सुचित्र
 अघोऽवगद्गामिव
 सम्प्रहृष्टाः । स्व

नरथमद्रे

पदशीतोऽध्यायः ॥ ८२ ॥

भारतनेको सम्मुखंगया तत्र भीमसेनभी खूब गजकर गदा से उसको रोकता हुआ
 सम्मुख गया। फिर वह कौरव लोग चहुँ ओरको यमदण्ड के समान गदा उठाये
 भीमसेनको देखकर सब आपके पुत्रोंको छोड़कर उस भयकारी गदा से प्रचने के
 लिये इच्छा करनेवाले हुए और उस बड़े भारी तुमुल युद्ध से दूर हटगये फिर
 चित्रसेन आती हुई महायोर गदाको देखकर रथको त्यागकर युद्धभूमि में पड़लही
 निमनः खड्ग और दालको लेकर रथ से पृथ्वीपर ऐसे कदा जब कि प्रबल के
 कोशसे सिंहकूदाहोयह गदा भी बड़े जडाऊ रथोंको पाकर घाटे और सारथी
 समेत रथको विध्वंसन करके पृथ्वीपर ऐसे गिरी जैसे कि आकाशसे गिराहुई वही
 उल्लित उल्ला पृथ्वीको जाती है, आपके पुत्र और भाई अत्यन्त मसन्न उस बड़े
 आश्चर्यको देखकर एक साथीस गज और चारों ओर से सेनासमेत सबीने उसका
 प्रशंसा करी ॥ ४० ॥

... of the arrows and killed all the horses of the king of
 Sindh. ... Then your son Chitransen of Indra like prowess and matchless
 strength, faced Bhimsen. The latter with a loud roar faced him with
 his mace, 35. Then the Kauravas seeing him with his mace raised on
 high, left your sons, and desirous of escaping the dreadful mace, fled
 away from the field of battle. And Chitransen seeing that dreadful
 mace left his chariot and with his bright sword and shield jumped
 down from his chariot like a lion springing from the hill side. The
 mace meeting with the gem-encrusted chariot destroyed it together
 with the horses and driver and fell down on earth like lightning. All
 your sons roared cheerfully at the sight of that wonder and all the
 warriors praised his work." 40.

सञ्जय उवाच । विरयं तं समासाद्य चित्रसेनं यशस्विनम् । रथमारोपयामास
 विकर्णस्तनयस्तव ॥ १ ॥ तस्मिंस्तथा वर्त्तमाने तुमुले संकुले भृशम् । भीष्मः शान्तनव
 स्तूर्णं युधिष्ठिरमुपाद्रवत् ॥ २ ॥ ततः सरथनाग्भ्यां समकम्पत सृञ्जयाः । मृत्योराक्ष्य
 मनुप्राप्तं मेनिरे च युधिष्ठिरम् ॥ ३ ॥ युधिष्ठिराणि कौरव्यो यमाभ्यां सहितं प्रभुः ।
 महेश्वासे नरव्याघ्रं भीष्मं शान्तनवं ययौ ॥ ४ ॥ ततः शरसहस्राणि प्रमुञ्चन् । पांडवो
 युधि । भीष्मं संछादयामास यथा मेघो दिवाकरम् ॥ ५ ॥ तेन सम्यक् प्रणीतानि शर
 जालानि मारिष । प्रतिजग्राह गाङ्गेयः शतशोधसहस्रशः ॥ ६ ॥ तथैव शरजालानि
 भीष्मेणास्तानि मारिष । आकाशे समदृश्यन्त खगमानां व्रजा इव ॥ ७ ॥ तिमिर्बाधेन
 कौ-तेयं भीष्म शान्तनवो युधि । अदृश्यं समरे चक्रे शरजालेन भागशः ॥ ८ ॥ ततो

अध्याय ८७ ॥

संजय बोले कि इस के अनन्तर आपके पुत्र विकर्ण ने उन विरय और प्रसन्न
 चित्त चित्रसेन को पाकर रथपर सवार किया, इसरीति से उस अत्यन्त कठिन
 तुमुल युद्धके वर्त्तमान होने पर शान्तनु के पुत्र भीष्मजी ने वड़ी शीघ्रता से युधिष्ठिर
 के सम्मुख दौड़े, उसके पीछे संजयनाम बड़े बलवान् क्षत्रियोंने, रथहाथी और
 घोड़ों समेत अत्यन्त कोपित हाकर युधिष्ठिर को काल के मुखमें गया जाना फिर
 समर्थ धर्मराज युधिष्ठिर भी नकुल सहदेव दोनों अपने भइयों समेत उस बड़े
 घनुपर्धाशी नरोत्तम भीष्मजी के सम्मुख गया, इस के पीछे पांडवों ने हजारों बाणों
 से भीष्मको ऐसा ढक दिया जैसे कि सूर्य को बादल ढक देता है । १५। फिर गांगेय
 भीष्मजी ने उन युधिष्ठिर को अच्छी रीति से छोड़े हुये, हजारों बाणों को अपने
 बाणों से रोक दिया हे राजा फिर इसी रीति से भीष्म केभी छोड़े हुए बाणों
 आकाश में ऐसे दिखाई दिये जैसे कि पक्षियों के समूह उड़ते हैं इन भीष्मजी ने
 क्षणमात्र में ही युधिष्ठिर समेत उनके सब बाण समूहों को गुप्त कर दिया फिर

CHAPTER LXXXVII

"Your son Vikarn," continued Sanjaya, finding Chitrasen's desti-
 tute of chariot with a cheerful mind, took him up on his own. Thus
 when the battle was raging furiously, Bhishm the son of Shantanu
 rushed upon Yudhishtir, and the brave Srinjaya warriors with their
 chariots, elephants and horses, much enraged, knew Yudhishtir as if
 fallen in the jaws of Death. Powerful Dharmraj Yudhishtir too,
 followed by his two brothers Nakul and Sahadev faced the great
 archer Bhishm the bet of men. Then the Panadvas hid Bhishm with
 thousands of arrows as clouds hide the sun. Bhishm the son Ganga,
 checked with his arrows those thousands of well discharged ones. In
 the same manner, the arrows discharged by Bhishm looked in the
 sky like the flights of birds and hid Yudhishtir and his arrows in a

युधिष्ठिरो राजा कौरव्यस्य महात्मन । नाराचंप्रेषयामास क्रुद्ध आशीविषीपमम् ॥ ९ ॥
 असंप्राप्तं ततस्तन्तु श्रुत्प्रेण महारथ । चिच्छेद्द समरे राजन् भीष्मस्तस्य धनुश्च्युतम्
 ॥ १० ॥ तन्तुच्छिद्यत्वा रणे भीष्मो नाराचंकालसम्मितम् । निजघ्ने कौरवेन्द्रस्यहयान्
 काञ्चनभूषणान् ॥ ११ ॥ हताभन्तु रथं त्यक्त्वा धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः । आक्रोहहृत्पत्नं
 नकुलस्वमहात्मनः ॥ १२ ॥ यमावपि हि संक्रुद्धः समासाय रणे तदा । दारैः सञ्जादया
 मास भीष्मः परपुरञ्जयः ॥ १३ ॥ तौ तु दृष्ट्वा महाराज भीष्मवर्षणप्रपीडितौ । जगाम
 परमां चिन्तां भीष्मस्य वधकांक्षया ॥ १४ ॥ ततो युधिष्ठिरो वदयान् रात्रस्तौ न सम
 बोध्यत् । भीष्मं शान्ततर्धं सर्वे निहनेतिसुहृद्गणान् ॥ १५ ॥ ततस्ते पार्थिवा सर्वे
 भुक्त्वा पार्श्वस्य भाषितम् । महता रथबंधेन परि वधः पितामहम् ॥ १६ ॥ स समन्तात्
 परि वृत्तः पितादेव व्रतस्तव । चिकीड धनुया राजन् पातयानो महारथान् ॥ १७ ॥ तं

युधिष्ठिर ने महा क्रोधित होकर सर्प के समान नाराच भीष्मजी के ऊपर फेंके फिर
 वहाँ महारथी भीष्मजीने अपने धूमनाम बाण से उसके छोड़े हुए बाणों को बीचही
 में काटा । १० । उसकाल समान नाराचको काटकर भीष्मजी ने सुवर्ण भूषित
 युधिष्ठिर के घोड़ों को मारा, फिर युधिष्ठिर उस मृतक घोड़ों के रथको त्याग कर
 शीघ्रही महात्मा नकुल के रथपर सवार हुआ, फिर शत्रुपुर के विजयी भीष्म ने
 क्रोध युक्त दोनों नकुल सहदेव कोभी बाणों से आच्छादित कर दिया, फिर राजा
 युधिष्ठिर भीष्म के बाणों से अत्यन्त पीड़ित उन दोनों भाइयों को देखकर भीष्मजी
 के मारने की इच्छा से बड़े चिन्ता युक्त हुए, इस के पीछे युधिष्ठिर ने उन अपने
 आज्ञावर्ती राजाओं को और मित्र समूहों को सावधान किया और कहा कि इस युद्ध
 में भीष्मजी को मारो । १५ । फिर सब राजाओंने युधिष्ठिर के वचन को सुनकर बड़े
 रथ समूहों समेत पितामह को घेर लिया हे राजा चारों ओर से घिरे हुये आपके
 पिता देवव्रत भीष्म बाणों से महारथियों को गिराते हुए धनुषक्रीड़ा करनेवाले

moment. Yudhishtir in a rage discharged his sharp arrows like
 serpents at Bhishm, but the latter cut them down in the way
 with his sharp arrows, 10 And having cut down that fatal arrow,
 Bhishm killed the gold bedecked horses. Leaving the chariot of
 which the horses were dead, Yudhishtir at once mounted that of
 Nakul. Then Bhishm the conquerer of enemies, in the excess of
 anger, hid both Nakul and Sahadev with his arrows. Seeing both
 his brothers much wounded with the arrows of Bhishm, Yudhishtir
 was plunged in thought, wishing to destroy him. Then he roused
 the princes and allies who obeyed his orders and told them to slay
 Bhishm. By Yudhishtir's orders all the kings surrounded the
 grandfather with their chariots on all sides. Surrounded on all sides,
 your father Devabrat played with his bow, destroying the warriors
 with his arrows. Roaming in the field of battle the Pandavas looked

चरन्त रणे पार्था ददशु कौरव युधि । मृगमध्य प्रविश्येव यथा सिंहशिशु वने ॥११॥
 तर्जयान रणे शूराभ्यासयानञ्च सायकै । हृत्वा भ्रेसुर्महाराज सिंह मृगगणाद्य १९॥
 रणे भारतसिंहस्य ददशु क्षत्रियागतिम् । अग्नर्वायुसहायस्य यथाकक्ष दिधक्षत ॥२०॥
 शिरासि रथिना भीष्म पातयामास सयुगे । तालेभ्य परिपक्वानि फलालि कुशलो
 नर ॥ २१ ॥ पतद्भिश्च महाराज शिरोनिर्घरणीतले । बभूव तुपुलः शब्दः पततामश्म
 नामिव । २२ ॥ तस्मिन् सुनुमुले युद्धे वर्त्तमाने भयानके सर्वपापेव सैन्यानामाप्नी
 द्वयतिकरो महान् ॥ २३ ॥ भिन्नेषु तेषु ब्यूहेषु क्षत्रियाइतरंतरम् । एकमेक समाह्वय
 युद्धायैवावतस्थिरे ॥ २४ ॥ शिखण्डीतु समासाद्य भरताना पितामहम् । अभिदुद्राव
 बगेन तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥२५॥ अनाहत्य ततो भीष्मस्त शिखण्डिनमाहवे । प्रययौ
 सृञ्जयान् कुद्ध स्त्रीत्व चिन्त्य शिखण्डिन ॥ २६ ॥ सृञ्जयास्तु ततो हृत्वाहृष्टमीष्म

होगये, संग्राम भूमि में घूमते हुए भीष्मजी को पांडवों ने ऐसा देखा जैसे कि बड़े
 वन के मध्यभागों में प्रवेश करके सिंह घूमता है, फिर युद्ध में शूरों को घुड़कते
 और वारणों से उड़ते हुए भीष्मको देखकर सब पांडवी सेना ऐसी भयभीत हुई, जैसे
 कि सिंह को देखकर मृगों के पंथ कपित होते हैं, उस समय सब क्षत्रियों ने
 भीष्मजी की गतिको उस युद्धभूमि में ऐसा देखा, मानों वायुका सखा, अग्नि सूखेवन
 को जलारहा है, वहा भीष्म ने रथियों के शिरों को ऐसा गिराया, जैसे कि बुद्धिमान
 मनुष्य ताल वृत्तके पक्के फलों को गिराता है, हे राजा पृथ्वी पर गिरते हुए शिरों
 के ऐसे बड़े कठन शब्द हुए जैसे कि गिरते हुए पत्थरों के शब्द होते हैं, उसमहा
 भयानक घोर युद्धके होनेपर सबनेना में बड़ा खेद उत्पन्न हुआ, फिर जनबुद्धिके
 दृष्टने पर क्षत्री लोग परस्पर में एकएक को बुलाकर युद्धके मिमित्त सम्मुख त्रियत
 हुए, फिर शिखण्डी भरतवशिष्यके पितामहको प्राकर बड़े वेग से तिष्ठ, तिष्ठ वचना
 को कहता हुआ सम्मुख दौडा इसके पीछे भीष्मजी उस शिखण्डी को तिरस्कार

on Bhishm like a lion roaming in a large forest in the midst of a flock
 of deer. Then darting the warriors in battle and killing them with
 his arrows Bhishm was the terror of the Pandav armies as a lion is
 of a flock of deer. All the kshatryas looked upon his prowess in the
 field of battle as if he were Agni the friend of wind burning a dry
 forest. 20 He filled the heads of men as a skilful man fells down the
 ripe fruits of a palm tree. The heads of warriors fell down with a
 crash like that of falling stones. All the warriors were much disturb-
 ed in mind by the fury of the attack. Then on the breaking through
 of the arrays, the warriors challenged one another and fought duels.
 Then meeting the grandfather of the Bharats, Shikhandi hastened
 towards him with a cry of 'stay, stay'. But disregarding him on
 account of his former womanhood, Bhishm turned towards the

महारणे । सिंहनादाश्च विविधाश्चक्षुः शस्त्रविमिश्रितान् ॥ २७ ॥ तत प्रचरते युद्ध
व्यतिषत्तरथद्विपम् । पदिचंमा दिशमासाद्य स्थिते सचितरिप्रभो ॥ २८ ॥ घृष्टयुम्नोऽथ
पाञ्चाल्य सात्यकिश्च महारथ । पीडयन्तो भृश सैन्य शक्तितोमरवृष्टिभिः ॥ २९ ॥
शस्त्रैश्च धनुर्भीराजन् जघ्नतुस्तात्रकारणे । ते हन्यमाना समरे तात्रका भरतर्षभ
॥ ३० ॥ आर्या युद्धे मतिं कृत्वा न त्यजन्ति स्मसंयुगम् । यथोत्साहतु समरे निजघ्न
स्तावकारणे ॥ ३१ ॥ तत्राक्रन्दो महानासीत्तावकानां महात्मनाम् । उष्यतां समरे
राजन् पार्षतेन महात्मना ॥ ३२ ॥ तक्षत्वा निन्द धोर तावकाना महारथी । विन्दानु
विन्दावावन्त्यौ पार्षत प्रत्युपस्थितौ ॥ ३३ ॥ तांतस्य तुरगात् हत्वा त्वरमाणौ महारथी
छादयामासतुरुभौ शरवर्षणं पार्षतम् ॥ ३४ ॥ अथल्लुप्त्याथ पाञ्चाल्यो रथात् पूर्ण
महारथ । आररोह रथं तूर्णं सात्यकेऽपि महात्मन ॥ ३५ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा

करके उसके स्त्रीपने को निचारते हुए संजयों के सम्मुख गये फिर प्रसन्न चित्त
सजय लोगों ने महारथी भीष्म को देखकर शस्त्रके शब्दोंमपेत बड़े सिंहनादको
किया । २७। तदनन्तर भीष्मकी दिशामें नियत होकर सूर्यके वर्तमान होनेपर रथ
हाथियों समेत युद्ध जारीहुआ हे राजा फिर बरछी तोमरों की वर्षा से सेनाको
अत्यन्त पीडित करते हुए पांचालदेशी घृष्टयुम्न और महारथी सात्यकी ने, अनेक
प्रकारके वाणोंमें आपके शरीरोंको घायल किया परन्तु आपके उनत्रायल शरोंने उड़ी
बुद्धिमानी से युद्धभूमिको नहीं त्यागा और बड़े उत्साहसे लोगोंको मारा । ३१। हे राजा
वहां महात्मा घृष्टयुम्नके हाथमें त्रायलहुए आपके पुत्रों के बड़े शब्दहुए, फिर आपके
पुत्रों के घोर शब्दोंको सुनकर महारथी विन्द अनुविन्द और अवन्ति देश के राजा
लोग सवमिलकर घृष्टयुम्न के सम्मुख हुए, फिर उन शीघ्रता युक्तशेनों महारथियों
ने उनके घोड़ोंको मारकर वाणों की वर्षा से घृष्टयुम्न को ढकदिया, तब महावन्ती
घृष्टयुम्न शीघ्रही रथसे कूदकर बड़े महात्मा सात्यकी के रथपर चढ़गया । ३५। फिर उड़ी

Sanjaya who seeing the grandfather in their midst, cheerfully
blew their conchs and uttered war cries 27 A fierce battle ensued
when the sun was on the opposite side (West) Wounding the warriors
with spears and tomars Dhrishtadyumn of Panchal and brave Sat-
yaji discharged arrows at them, but your warriors in spite of wounds
wisely remained firm on the field of battle and returned their blows
with great courage 31 Wounded by the arrows of Dhrishtadyu-
mna your sons uttered loud cries Vind and Anuvind the princes
of Avanti hearing the loud cries hastened to encounter Dhrishta-
dyumn Those two brave warriors soon killed his horses and hid him
with the shower of their arrows. The great warrior Dhrishtadyumn
at once jumped down from his chariot and mounted that of Satyaji.
Thereupon Yudhishtir with a large army rushed on to encounter the

महत्या सेनया वृतः । आवन्त्यौ समरे कुन्दावभ्ययात् स परन्तपौ ॥ ३६ ॥ तथैवतव
 पुत्रोपि सर्वोद्योगेन मारिय । वि दानुविन्दौ समरे परिवार्यावतस्थिवान् ॥ ३७ ॥
 अर्जुनश्चापि संकुद्धः क्षत्रियान् क्षत्रियवर्षभ । अयोधयत संग्रामे वज्रपाणिरिवासुरान्
 ॥ ३८ ॥ द्रोणस्तु समरे कुद्धः पुत्रस्य प्रियकृत्तव व्यधमत् सर्वपाञ्चालास्तूलराशिं
 वानलः ॥ ३९ ॥ दुर्योधनपुरोगास्तु पुत्रास्तत्र विशाम्पते । परिवार्य्य रणे भीष्मं युयुधु-
 पाण्डवैः सह ॥ ४० ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा लोहितायति भास्करे । अत्रयीत् तावकान्
 सर्वोश्वरध्वमिति भारत । ४१ ॥ युध्यतान्तु तथा तेया कुर्वतां कर्म दुष्करम् ।
 अस्तं गिरिमथारूढे अ प्रकाशति भास्करे ॥ ४२ ॥ प्रावृत्तत नदी धारा शोणितौघतर-
 द्विणी । गोमायुगणसङ्कीर्णा क्षणेन क्षणदामुगे ॥ ४३ ॥ शिवाभिरशियाभिश्च रुषद्विर
 भैरवैरवम् । घोरमायोधनं जज्ञे भूतसंघै समाकुलम् ॥ ४४ ॥ राक्षसाश्च पिशाचाश्च
 तथान्ये पिशिताशिनः । समन्ततो व्यदृश्यन्त शतशोथ सहस्रशः ॥ ४५ ॥ अर्जुनोऽथ

सेना समेत राजा युधिष्ठिर उन क्रोधयुक्त अवन्ति देशके राजाओं की ओर दौड़ा,
 और इसीप्रकार आपका पुत्रभी विन्द और अनुविन्द को रक्षित करके नित्य हुआ
 ॥३७॥ हे क्षत्रियोत्तम धृतराष्ट्र युद्धमें अर्जुन ने भी अत्यन्त कोपयुक्त होकर क्षत्रियों
 से ऐसा युद्ध किया जैसे कि असुरों से वज्रधारी इन्द्र ने कियाथा, फिर युद्ध में
 कुद्ध आपके पुत्रों के शुभाचिन्तक द्रोणाचार्यने सबपांचालदेशियों को ऐसे गष्ट किया
 जैसे कि तूलराशिको अग्नि भस्म करदेता है, फिर आप के दुर्योधनादि पुत्र
 भीष्मजी को रक्षित करके पांडवोंसे युद्ध करने लगे ॥४०॥ इस के पीछे सूर्य के
 अरुण होने पर राजा दुर्योधन आपके सब शूरवीरों से बोला कि शीघ्रता करो,
 फिर इसी प्रकार इनके लड़ते और कठिन कर्म करते हुए सूर्यके अस्तगत होने पर
 रात्रि के प्रारंभमें भयानक रुधिरकी नदीबही जिसमें हजारों शृगाल वर्त्तमानथे और
 भूत समूहों से व्याप्त संग्राम भूमि चारोंओर को घूमते हुए अशुभ शृगालो से

prince of Avanti, while your sons stood firmly to protect them Arjun
 too much enraged, fought against those warriors, O king, as Indra the
 wielder of vajra had fought against the Daityas Dronacharya the
 well wisher of your sons angrily smote the Panchals as fire consumes
 a heap of straw Your sons, Duryodhan and others, fought against
 the Pandavas for the protection of Bhishm. 40 After this, when
 the sun had assumed a reddish hue, Prince Duryodhan ordered your
 warriors to make haste The battle continued, till at the close of the
 day there flowed a river of blood where thousands of jackals were to
 be seen The field of battle strewn over with dead bodies and the
 wandering of the enormous jackals was very dreadful to behold Thou-
 sands of rakshases, pishachas and cannivorous beings were to be seen
 on all sides Having defeat d the armies of Susubma and other

सुशर्मादीन् राजन्मान् सपदानुगान् । विजित्य पृतनामध्ये यथा स्वशिविरं प्रति ॥ ४६ ॥
 युधिष्ठिरोपि कारुण्यो भ्रातृ भ्रांसहितस्तथा । यथास्वशिविरं राजा निशायां मनया
 वृत ॥ ४७ ॥ भीमसेनोपि राजेन्द्र दुर्योधनमुत्तानुरयान् । अजित्य तत मह्ये
 यथास्वशिविरं प्रति ॥ ४८ ॥ दुर्योधनोपि वृपतिः परिवार्य्य महारणे । भीष्मिंशान्तनयं
 तृणं प्रयात शिविरं प्रति ॥ ४९ ॥ द्रोणो द्रोणि कृप शल्य कृतवर्मा च सात्वतः ।
 परिचार्य्य चम्पु सर्गो प्रतयुः शिविरं प्रति ॥ ५० ॥ तथैव सात्यकी राजन् धृष्टयुञ्जय
 पार्यत । परिवार्य्यरणे योधान्ययुः शिविरं प्रति ॥ ५१ ॥ एवमेते महाराज तावका
 पाण्डवः सह । पर्य्यर्चन्त सहिता निशाकाले परन्तव ॥ ५२ ॥ तत स्वशिविरं
 गत्वा पाण्डवाः कुरवस्तथा । न्यर्चन्त महाराज पूजन्त परस्परम् ॥ ५३ ॥ रक्षां कृत्वा
 तत गुरारं न्वश्वपुत्रान् यथाविधि । अनीय च शस्त्रानि मत्वा च विविधैर्ज्जैः
 ॥ ५४ ॥ कृतस्वस्त्ययता सर्वे संस्तुर्यतश्च वान्दिभिः । गीतवादिप्रशब्देन व्यक्रीडन्त

महामयानक होगई और हजारों राज्ञम पिशाच और अनेक मांसाहारी जीवभी
 चारों ओर के दृष्टपड़े इसके पीछे अनुभू भी सुशर्मा आदि राजाओं को उन के
 साथियों समेत विजय कर के सेना में जाकर अपने डेरों को गये फिर युधिष्ठिर भी
 सेना समेत भाइयों को साथलिये शत्रु के समग अपने डेरको गये, और भीमसेन
 भी दुर्योधनादि महारथी राजाओं को विजय करके अपने डेरोंको गये, दुर्योधन
 भी भीष्मजीको मध्यमें करके डेरकोगया, और द्रोणचर्य्य कृपाचार्य्य अश्वत्यामा
 शल्य कृतवर्मा यादव यह सबसेनाको मध्य में करके डेरोंको गये । ५० । इसीप्रकार
 सात्यकी और धृष्टयुञ्ज वीरों को मथनकरके डेरों को गये हेमहाराज इसरीतिसे यह
 शत्रु मन्तापी अथके मवशूवीर राजिके समान पाण्डवोंसाइतलंडे, हेराभा इसरीति
 से पांडव और कौरव परस्पर प्रशंसा करते अपने २ डेरोंमें स्थितहुए, वह सब वीर
 अपने रक्षारकरके और गुल्मनाम सेनाको बुद्धिके अनुसार देखकर और भालों
 समेत सफाई से स्नानकर ब्राह्मणों से आशीर्वादिमांग वंदीजनोंने प्रशंसितहो गतिवाधों

princes, Arjun returned to his own army and from there to his camp. Yudhishtir with his brothers and armies went to camp for the night, Bhimsen too, having conquered Duryodhan and other mighty princes went to camp. Duryodhan with Bhishma in the middle went to camp. Dronacharya, Kripacharya, Ashwathama, Shalya and Kritvarma the yadav went to camp with their armies. Satwika and Dhrishtadyunn, having killed many warriors went to camp. Thus O king, your foe striking warriors and the Pandavas returned with the night and stayed in their camps praising one another. All those warriors having fortified their camps and examined the armies, washed their weapons and their bodies and with benedictions of Brahmans and the praises of bards, joined in recreation. The recreation

यशस्विन ॥ ५५ ॥ मुहूर्तादिव तत्सर्वं ममत्रत् स्वर्गसाधिभम् । न हि युद्धकथांकाचि
 त्प्रा कुर्वन् महारथा ॥ ५६ ॥ ते प्रसुप्ते बले तत्र परिश्रान्तजने नृप । हस्तयश्चवहुले
 राशौ प्रेक्षणीये चभूयन्तु ॥ ५७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सप्तमदिवस युद्धावहारे
 सप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥

समय उवाच । परिणाम्य निशान्तान्तु सुरप्राप्ता जनेश्वरा । कुर्य पाण्डवाधैव
 पुनर्युद्धाय निर्ययु ॥ १ ॥ तत शब्दो महानासीत् सैन्ययोरुभयोर्युप । निर्गच्छमानयो
 सन्धे सागरप्रतिमो महान् ॥ २ ॥ ततो दुष्येधनो राजा चित्रसेनो विविशति । भीष्मश्च
 रथिनां श्रेष्ठो भारद्वाजश्च वै नृप ॥ ३ ॥ एकीभूता सुसयत्ता कौरवाणा महाचमूम् ।
 व्यूहायविदधूराजन् पाण्डवान् प्रति दशिता ॥ ४ ॥ भीष्म वृत्वा महाव्यूह पितातव
 विशाम्पते । सागरप्रतिमं घोर चाहनोर्मितरङ्गिणम् ॥ ५ ॥ अत्रत सर्वसैन्यानां भीष्म

समेत आनन्द से क्रीडा करनेलगे फिर एक मुहूर्तमेंही वह सब क्रीडास्थान स्वर्ग के
 तुल्यहो गया वहा किमी महारथीने भी युद्धकी कथाका वर्णन नही किया फिर वह
 दोनोंमैनाश्रों के वीर हाथी घोडों समेत बडे आनन्दपूर्वक सोये ॥ ५७ ॥

अध्याय ८८ ॥

समय बोले कि सुख पूर्वक सोये हुए कौरव और पांडवों समेत राजा लोग
 रात्रिको व्यतीत करके फिर युद्धके निमित्त गये, और संग्राम भूमि में जाने वाले
 वीरों के बडे २ शब्द समुद्र के समान हुए, तब राजा दुष्येधन चित्रसेन विविशति
 भीष्मनी द्रोणाचार्य ब्राह्मण इननर बडे मावधान और एक मन कौरवोंके महारथी
 कुच शस्त्र धारियों ने पांडवों के मम्मु । व्यूहों को अलंकृत किया फिर शत्रु
 के पुत्र आपके पितामह भीष्मजी मागर के समान भयानक सपारी रूपी लहरों से
 लहरातेहुए महाव्यूहको शोभित करके । १ । मात्र देशी दक्षिण देशी और अग्नि

ground was like the paradises in a moment. There no mention of war
 was made by any warrior. Then the warriors of the two armies and
 their beasts slept soundly for the night. 57

CHAPTER XXXVIII

Sanjaya continued. Having soundly slept for the night, the
 princes with the Kauravas and the Pandavas went again for battle.
 The roar of the warriors going to battle was like that of the ocean.
 Then Prince Duryodhan, Chitrasena, Vishmahi, Bhishma and Drona
 charaya the Brahman all these Kaurava warriors, wide awake and well
 united, armed with weapons and armour arranged their armies in
 front of the Pandavas. Then Shantana's son, your grandfather
 Bhishma, moving like the surge of the sea in his carriage, embellished

शान्तनवो ययौ । मालवैर्दाक्षिणात्यैश्च भावन्त्यैश्च ममन्वित ॥ ६ ॥ नतोन्तरमेघासी
 झारद्वज प्रतापवान् । कुलिन्दैः पारदैश्चैव तथा क्षुद्रकमालवैः ॥ ७ ॥ द्रोणादनन्तरं
 यत्तो भगदत्तः प्रतापवान् । मगधैश्च कलिङ्गैश्च पिशाचैश्च विशाम्पते ॥ ८ ॥ प्राग्ज्यो
 तिपादनुप । कौसल्योश्च वृहद्वलः । मेकले कुरु विन्दैश्च त्रैपुरैश्च ममन्वित ॥ ९ ॥ वृहद्वला
 ततः शूरखिगतं प्रस्थलाधिपः । काम्बोजैर्घुमुभि सार्द्धं यवनेश्च सहस्रशः ॥ १० ॥ द्रोणि
 स्तुरभसः शूरखिगतादनुभारत । प्रययौ सिंहनादेन नादयानो धरातलम् ॥ ११ ॥ तथा
 सर्वेण सैन्येन राजा दुर्योधनस्तदा । द्रोणिरनन्तरं प्रायात् सौदर्यं परिवारितः ॥ १२ ॥
 दुर्योधनादनु तत कृपः शारद्वतो ययौ । एचमेव महाव्यूहं प्रययौ सागरोपमम् ॥ १३ ॥
 वैजुस्तत्र पताकाश्च श्वेतछत्राणि च विभो । अङ्गदान्यत्र चिप्राणि महार्हाणि धनुषिच
 ॥ १४ ॥ तंतु दृष्ट्वा महाव्यूहं तावकादां महारथः । युधिष्ठिरोद्वीर्णं पार्षतं पृतनापं

देशियों से संयुक्त सब सेनाओं के अग्रगामी होकर चले इसके पीछे प्रतापवान्
 द्रोणाचार्यजी पुलिंदपारद क्षुद्रक और मालवी लोगोंके साथहुए हेराजा फिर प्रतापी
 सावधान राजा भगदत्त मगध कलिङ्ग और पिशाचोंसमेत द्रोणाचार्य के पीछे हुआ
 और राजा वृहद्वल कौशल्य मेकल त्रैपुर और चिबुकों समेत प्राग्ज्योतिष के राजा
 भगदत्तके पीछे चला उसकेपीछे त्रिगर्त देशी महाशूर पराक्रमी राजा प्रस्थल बहुतसे
 काम्बोजों से युक्त होकर नियतहुआ । १० । इसके पीछे महावेगवान् शूरवीर अश्वत्यामा
 त्रिगर्त देशियों के पीछे अपने सिंहनाद से पृथ्वीको शब्दापमान करताहुआ चला
 इमी प्रकार से इसके पीछे राजा दुर्योधन सब भाइयों समेत सब मेना के साथ
 अश्वत्यामा के पीछे चला इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य जी दुर्योधन के पीछे
 चले इमरीति से सागर के समान वह बड़ाव्यूह चला, उस व्यूहकी पताका श्वेत
 छत्र जड़ाऊ वाजूवन्दतोमर धनुषों समेत महा शोभायमान हुई, फिर महारथी युधि-
 स्थिर आपके बेटों के उस बड़े व्यूहको देखकर बहुत जल्दी से अपने सेनापति

the great array The people of Malav, South county, Avanti and
 other places moved on with their leaders Then glorious Dronacharya,
 together with the Palinds, Parads, Kshudraks and malavia, joined
 the array. Glorious and watchful king Bhagdatla with Magadhas,
 Kalings and Pishachas, brought up the rear of Dronacharya, and
 Prince Vrihadval with the Kaushalyas, Mekals, Traipuras and
 Chibuks, followed Bhagdatla the king of Pragjyotish Then the brave
 warriors of Trigart and their king Prasthal stationed themselves with
 numberless Cambojes. Ashwathama of great glory and valour, sta-
 tioned himself behind the warriors of Trigart and went on ringing
 the earth with his cries Prince Duryodhan with his brothers and
 warriors followed Ashwathama Sharadwat Kripacharya followed
 Duryodhan Thus like an Ocean that huge array moved on. The
 array was decked with banners, white shades, jewelled armlets, to-

तिम् ॥ १५ ॥ पश्य व्यूहं महेश्वास निर्मितं सागरोपमम् । प्रतिव्यूहन्त्वमीषि हि कुरु
 पार्यंतसत्वरम् ॥ १६ ॥ ततः स पार्यंत क्रूरो व्यूहश्चक्रे सुदारुणम् । शूङ्गायकमहा
 राज परव्यूहविनाशनम् ॥ १७ ॥ शूङ्गाश्यां भीमसेनश्च सात्यकिश्च महारथ । रथेते
 कणाहसैस्तथा ह्यपदातिभिः ॥ १८ ॥ ताश्यां वभौ नरश्रेष्ठ श्वेताश्व कृष्णास्तारथि ।
 मध्ये युधिष्ठिरो राजा माद्रीपुत्रो च पाण्डवो ॥ १९ ॥ अथोत्तरे महेश्वासा सहस्रै
 न्यानराधिपा । व्यूहं तं पूरयामासुः व्यूहशास्त्रविशारदा ॥ २० ॥ अभिमन्युस्तत पश्चा-
 द्द्विराटश्च महारथः । द्रौपद्याश्च संदृष्टा राक्षसश्च घटोत्कचः ॥ २१ ॥ प्रथमेतन्म
 हा-यूह व्यूहमारन पाण्डवा । अतिघ्नन् समरे शूरा योद्धुकामा जयैषिणः ॥ २२ ॥
 भेरीशब्दश्च विमलैर्विमिश्रे । शङ्खनि स्वनैः । श्वेडितास्फोटितोत्कुर्णनादिताः सर्वतो
 दिशः ॥ २३ ॥ तत शूरा समासाद्य समरे ते परस्परम् । नैत्रैरनिमिषैराजश्वैश्चन्त पर

धृष्टद्युम्नसे बोला । १५। कि हे वड़े धनुषधारी, धृष्टद्युम्न इम समुद्र के समान रचे हुए
 व्यूहको देखो और तुमभी उसके समान शीघ्रही हमारे व्यूहको अलंकृत करो, इस
 के पीछे उत्तम शूर धृष्टद्युम्न ने वड़े भयानक शत्रुओं के व्यूह के नाश करने वाले
 श्रृंगहटक नाम व्यूहको बड़ी उत्तमता से बनाया, उस व्यूहमें महारथी भीमसेन
 और सात्यकी तो हजारों हाथी घोड़े रथ पदातियों समेत शिखररूप हुए, और
 नरोत्तम श्वेत घोड़े वाला श्रीकृष्णको स रथा रखनेवाला अर्जुन नाभि के ऊपर
 वर्तमान हुआ और मध्य में राजा युधिष्ठिर और नकुल सहदेव दोनों भाई हुए,
 इसी प्रकार व्यूहशास्त्र में कुशल बुद्धि बड़े धनुषधारी अन्य महारथियों ने सेना
 समेत उस व्यूहको पूर्ण किया २०। और महारथी अभिमन्यु विराट् द्रौपदी के
 पुत्र और घटोत्कच राक्षस उसके पीछे हुए, हे राजा इमरीति से वह व्यूहवीर
 पांडव अपने व्यूहको रचकर युद्धाभिलाषी विजय के चाडने वाले संग्राम भूमि
 में आकर नियत हुए, शंखस्वने से युक्त भेरियों के कठोर शब्द वा सिंहनाद और

arms and bows. Mighty Yudhishtir, seeing the great array of your
 sons, thus addressed Dhrishtadyumna the commander of his armies —
 "Mighty archer Dhrishtadyumna, look at this ocean like array
 and form your own array like this." Thereupon brave Dhrishtadyu-
 mna made carefully the array known as Shringhatak the destroyer of
 the hosts of enemies. In that array mighty Bhimsen and Satyaki,
 with thousands of elephants, horses, chariots and foot soldiers, formed
 the horn; the best of men, riding the white horses and having Shree
 Krishna for the driver, Arjun stationed himself at the navel. In
 the middle were king Yudhishtira and the two brothers Nakul and
 Sahadev, and other warriors skilful in forming arrays and great
 archers and warriors with Bhimsen filled up the array. Valiant
 Abhimanyu, Virat, the sons of Draupadi and Ghatotkach the
 rakshas followed him. Thus, O king the Pandavas, brave in war,
 having formed the array with a desire to win, stationed themselves

स्परम् ॥ २४ ॥ नामभिस्ते मनुष्येन्द्र पूर्य योधाः परस्परम् । युद्धाय ममयत्तन्त
 समाहूयतरेतरम् ॥ २५ ॥ ततः प्रघृते युद्धे घोररूपं भयावहम् । तावकानां
 परेशय निघ्ननामितरेतरम् ॥ २६ ॥ नाराच्या निशिता संख्ये सम्पतन्तिस्मभारत ।
 व्यात्ताननाभयकरा उरगा इव संघश ॥ २७ ॥ निष्पेर्गुर्विमलाः शक्यस्तेलधीता सुते
 जनाः । अभ्युद्वेभ्यो यथा राजन् भ्राजमानाः शतह्रदाः ॥ २८ ॥ गदाश्च विमलैः पट्टैः
 पिनद्धाः स्वर्णमूर्धितैः । पतन्त्यस्तत्र हृद्यन्ते गिरिशृङ्गोपमाः शुभा ॥ २९ ॥ निर्गिञ्च
 शाश्च व्यहृश्यन्त विमलाम्बरसन्निभाः । आर्यभाणि विचित्राणि शतचन्द्राणि भारत
 ॥ ३० ॥ अशोभन्त रणे राजन् पात्यमानानि सर्वश । ध्वन्योन्यं समरे सेने युध्यमाने
 नराधिप ॥ ३१ ॥ अशोभेतां यथा देव दैत्यसेनेसमुद्यते । अभ्यद्रवन्त समरे तेऽन्योन्यं धै
 समन्ततः ॥ ३२ ॥ रथास्तु रथिभिस्तूर्णं प्रेषिताः परमाहवे । युपैर्गुगानि संक्लिप्य

युजाओं के शब्दों में शब्दायमान सब दिशाएँ अत्यन्त भयानक विदित हुई इस
 के पीछे उन शूरवीरों ने परस्पर सम्मुख हाँकर एकने एकको टकटके नेत्रों से
 देखा हे राजा वह शूरवीर पूर्वनामों के द्वारा परस्पर में बुला बुलाकर युद्ध के
 निमित्त वर्तमान हुए, इसके अनन्तर परस्पर मारने वाले आपके पुत्र और
 पांडवी सेना का महा घोर और भयानक रूप युद्ध जारी हुआ, हे भरतर्षभ उस
 युद्ध में वड़ेतीक्ष्ण नाराचों की ऐसी वर्षाहुई जैसे कि महाभयानक दंशकरनेवाले
 सर्प चारों ओरसे गिरने होंगे, और तेलसे युद्ध तीक्ष्णवरछियांभी चारों ओरसे ऐसी
 गिराँ जैसे कि बादलों से प्रकाशमान विजली गिरतीहै और रेशमी वस्त्रों से पड़ेहुए
 सुवर्णपेनटितपर्वत के शिखर के समान बड़ी २ गदा और निर्मल आकाश के
 समान खड्ग और सूर्य चंद्रमाओं से चिह्नित उत्तम ढालें यह सब गिरती हुई
 बड़ी शोभायमान हुई हे राजा वह खड्ग ढालें पृथ्वीपर गिरीहुईं सब ओर से
 शोभायमान हुई फिर वह परस्पर युद्ध करनेवाली दोनों सेना ऐसी शोभित हुई

in the field of battle. The harsh peals of trumpets mixed with the
 blasts from conchs, war cries and beating of arms, made a dreadful
 noise in the field of battle. Then the warriors facing one another
 gazed at their adversaries. And those warriors, O king, called one
 another by their names and challenged to fight. Then the battle
 between your sons and the Pandavas, killing one another, was very
 severe and awful. The shower of sharp arrows in the battle was
 very severe and awful. The shower of sharp arrows in the battle
 was like the fall of venomous serpents biting dreadfully. Rubbed
 over with oil the sharp spears fell down from all sides like lightning
 flashes detached from clouds. Sheathed in silk cloth, huge, gold
 bedecked maces like mountain peaks, the swords like the clear sky and
 the large shields bearing suns and moons, looked very glorious in
 their fall. The swords and shields fallen on the ground, O king, were
 shining on all sides. Then the two fighting armies looked glorious

युयुधु पार्थिवर्षमा ॥ ३३ ॥ दन्तिना युध्यमानानां सद्यर्षात् पावकोऽभवत् । दन्तेषु भरतथष्ट सधूम सर्वतादिशम् ॥ ३४ ॥ प्रासैरभिहता केचिद्रजयोधा समन्तत । पतमाना स्म दृश्यन्ते गिरिशृङ्गाव्रगा इव । ३५ ॥ पादाताश्चाप्यदृश्यन्त निजान्तोऽथ परस्परम् । चित्ररूपधरा शूरा नखरप्रासयोधिनः ॥ ३६ ॥ अन्योन्यन्ते समासाद्युद्धपाण्ड्यसैनिका । अस्त्रैर्नानाविधैर्धारेण निन्युर्यमक्षयम् ॥ ३७ ॥ तत शान्तनवा भीष्मो रथशेनेन नादयत् । अश्यागमद्रण पार्थान् धनु शब्देन मोहयत् ॥ ३८ ॥ पाण्डवाना रथाधापिनः जदन्ता भैरव स्वनम् । अश्वद्रघन्त सयत्ता धृष्टद्युम्न पुरागमा ॥ ३९ ॥ तत्र प्रवृत्ते युद्धे तत्र तेराञ्च भारत । नराद्वयरथनागानां ज्योतिषक परस्परम् ॥ ४० ॥

इति महा० भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि अष्टमदिवसयुद्धारम्भे अष्टाशीतोऽध्याय ॥८८॥

जैमे कि देव दानवों की सेनाहोती है उस समय एकएकके सम्मुख दौड़े रथी रथियों के साथ बहुत जल्दी से भेगे गये और उत्तम राजा लोग रथके जुओं को जुओं में मिलाकर युद्ध करनेलगे, हे राजा सबओर लडतेहुए हाथियोंकी गसाव से दातों के ऊपर मधुम अग्नि उत्पन्न होगये कोई हाथी के सवार हो जगी फरसों से घायल हुए सब ओरसे गिरते हुए ऐसे दृष्टपडे जैमे कि पर्वतके शिखर से दृष्ट गिरतेहै और विचित्र रूपधारी शूर वीर नख और फरसों से युद्ध करनेवाले पदाती पांशपर में मारते हुए हुए पडे, फिर उन कौरव और पाण्डवों की सेनाके मनुष्यों ने परस्पर सम्मुख होकर युद्ध में नाना प्रकारके बाणों से एकने दुसरेको यमपुर को भेजा और रथ वा धनुष के शब्दों से गर्जना करते हुए भीष्म जी पाण्डवों के सम्मुख गये, और पाण्डवों के भी सावधान रथी धृष्टद्युम्न को आगे किये हुये बडे भयानक घोर शब्दों को करते हुए कौरवों के सम्मुख दौड़े, इसके पीछे आपके शूर वीरोंके और पाण्डवोंके वीरोंका युद्ध जारी हुआ और मनुष्य हाथी घोडे और रथोंका परस्पर मेल न हुआ ४० ॥

like the armies of gods and danavas. Soldiers rushed against one another. The charioteers rushed against one another and yoked to yoked they fought hard. Fire and smoke appeared on the tusks of fighting elephants. Some riders wounded by battle axes were seen falling here and there like trees from mountain peaks. The foot soldiers in various colours were seen fighting with nails and axes and killed one another. The kaurav and Pandav armies, facing each other, sent the warriors to the region of Yam with their arrows. Raising a tremulous noise with his chariot and bow, Bushini faced the Pandavas, who led by Dhrishtadyumna the skilful charioteer and uttering loud war cries, rushed against the Kauravas. Then a severe battle ensued between the warriors of your sons and those of the Pandavas and there was no order amongs men elephant, horses and chariots. 40

सञ्जय उवाच । भीष्मन्तु समरे क्रुद्ध प्रतपन्त समन्तत । न शक्यु पाण्डवा
 द्रष्टुं तपन्तमिव भास्करम् ॥ १ ॥ तत सर्वाणि सैन्यानि धर्मपुत्रस्य, शासनात् ।
 अभ्यद्रवन्त गांगेय मह्यन्त शितैशरे ॥ २ ॥ स तु भीष्मो रणश्लाघी सोमफान्
 सहस्रस्रज्यान् । पाञ्चालांश्च महेश्वासान् पातयामास सायकैः ॥ ३ ॥ ते घञ्च
 माना भीष्मेण पाञ्चाला सोमकै सह । भीष्ममेवाभ्ययुस्तूर्णं त्यक्त्वा मृत्युकृतं
 भयम् ॥ ४ ॥ स तेषा रथिनाम्बीरो भीष्म शान्तनवो युधि । चिच्छेद सहस्रापजन्
 याहृतय शिरासि च ॥ ५ ॥ निर्यादरथिनश्चक्रे पिता देवप्रतप्तव । पतिताम्युत्तमा-
 द्भानि ह्यभ्योहयसाविनाम् ॥ ६ ॥ निर्मनुष्याश्च मातङ्गान् शयानान् पर्वतोपमान् ।
 अपदयाम महाराज भीष्माख्येण प्रमोहितान् ॥ ७ ॥ न तत्रासीत् पुमान् कश्चित्
 पाण्डवाना विशाम्पते । अन्यत्र रथिना श्रेष्ठाद्भोमसेनान् महाबलात् ॥ ८ ॥ सु

अध्याय ८९ ॥

संजय बोले कि पाण्डव लोग युद्धमें क्रोधित चारों ओरसे मंत्त करके
 वाले भीष्मजीके देखनेको भी ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि छत्यन्त प्रचंड सूर्य के
 कोई नहीं देखसक्ता है, इसके पीछे धर्म पुत्र युधिष्ठिरकी आज्ञासे पाण्डवों की मव
 मेना भीष्मजी के सम्मुख टौड़ी, फिर उमप्रतापी भीष्मने सृजय लोगों को सोमकों
 समेत शिर-बड़े धनुषधारी पांचालदेशियों को शायकों से आच्छादित किया हु
 भीष्मने वायज हुए सोमकों समेत पांचाल देशी भयको त्यागकर शीघ्र भीष्मजी
 के सम्मुख जापहुँचे, तब उम शान्तनु के पुत्र बलवान् भीष्म ने उन रथियोंकी
 भुजाओंको अस्त्रों समेत काटकर रथोंसे विरथ करदिया । फिर खड्गोंमें सवारोंके
 शिर गिगये हेमहाराज ह्य ने भीष्मजीके अङ्गने अत्यन्त मोहित विना शिरके हाथियों
 को प्रेमा देला जैसे कि विना वृक्षके पर्वत होते है, उम काल वहाँ रथियों में श्रेष्ठ
 महाबली भूमसेन के विवाय पाण्डवोंका कोई भी मनुष्य नियत नहीं हुआ, उस ने

CHAPTER LXXIX

Sanjaya continued — The Pandavas were unable to look at
 Bhishm burning all round in his rage, as no one can gaze at the bright
 sun. Then by Yudhishtir's order the whole army of the Pandavas
 rushed against Bhishm, but the latter hid with his arrows the Sri
 jaya, the Somaks and the great archers of Panchal. Wounded by
 Bhishm the Panchals and the Somaks, setting aside all fear faced
 Bhism but the brave son of Shantanu cut down the arms of those
 charioteers bearing weapons and made their chariots useless. With
 the sword he headed the horsemen. We saw O king elephants made
 limbless and headless by his weapons like hills destitute of trees. No
 warrior of the Pandavas could remain firm there except in ghaty Bhim
 the best of charioteers. He checked Bhishm in battle and the de-
 was great in the encounter between those
 s rai ed war cres in great cheer 10. When

हि भीष्मं समासाद्य ताडयामास संयुगे । ततो निष्ठानकी घोरो भीष्मभीमिसमा
गमे ॥ ९ ॥ यभ्रुव सर्वसैन्यानां धोररूपो भयानकः । तथैव पाण्डवा हृष्टा सिंहानाद्
मथानदन् ॥ १० ॥ ततो दुर्योधनो राजा सांख्यैः परिवारितः । 'भीष्मं' जुगोप समरे
वर्धमाने जनक्षये ॥ ११ ॥ भीमस्तु सारथिं हत्वा भीष्मस्य रथिनाम्बरः । विदुताम्बि
रथे तस्तिन् द्रवमाणे समन्ततः ॥ १२ ॥ सुनामस्य शरेणाशु शिरश्चिच्छेदमारत ।
क्षुरप्येण सुतीक्ष्णेत स हतो न्यपतः भुवि ॥ १३ ॥ हते तस्मिन् महास्रज तव पुत्रे । महा
रथे । नामृष्यन्त रणे शूराः सोदराः सप्त संयुगे ॥ १४ ॥ आदित्यकेतुर्वहवाशी कुण्डः
धारो महोदरः । अपराजितः पण्डितको विशालाक्ष सुदुर्जयः ॥ १५ ॥ पाण्डवं चित्र
सन्नाहा विचित्रकवचध्वजा । अष्टवद्रवन्त संग्रामे योद्धुकामारिर्मेदनाः ॥ १६ ॥
महोदरस्तु समरे भीमं विव्याध पत्रिभिः । नवभिर्वज्रसफादीन्मुचिं वृत्रहं यथा

युद्धमें भीष्मजीको पाकर गोक दिया फिर भीम और भीष्मकी सम्मुखता में सब
सेनाओं को निष्ठानक महाघोर और भयानकहुआ और पाण्डवों ने प्रसन्नहोकर वह
सिंहन द किया १० इसके पीछे बड़ेघोर नाश के वर्तमान होनेपर अपने निज भाइयोंसमेत
दुर्योधनने आकर भीष्मजीकी रक्षाकरी, फिर रथियों में श्रेष्ठ भीमसेनने भीष्मजी
के सारथीको मारकर बड़े वेगवान् घोड़ेवाले रथपर बैठकर धनुषको तान बड़ी शीघ्रता
से अपने क्षुरप्रवाण से सुनाम के शिरको काटा वह शिरके कटनेही पृथ्वीपर गिरपड़ा
हे महाराज उस महारथी आपके पुत्रके मरने पर उसके आदित्यकेतु वहवाशी
कुण्डधार महोदर अपराजित पांडतक, विशालाक्ष दुर्जय नाम शूरीर संगे भाई
गडाऊ कवच अस्त्रादिकोंसे अलंकृत होकर उस भीमसेन के सम्मुख दौड़े १६ उस
समय महोदर ने वज्रके समान नौबाणों से भीमसेनको ऐसा घायल किया जैसे
इन्द्रने नमुचिको कियाथा, फिर आदित्यकेतु ने सत्तर बाणों से वहवाशीने पांच
बाणोंसे कुण्डधार ने नौ बाणसे विशालाक्ष ने सात बाणसे और महारथी अपरा-

the slaughter of the armies was great, Duryodhan and his brothers
came to Bhishma and protected him. Bhim the best of charioteers
killed the driver of Bhishma's chariot and mounted on his swift
chariot with his bow drawn, with much dexterity he beheaded Sunabh
by his sharp arrow. On the death of your brave son, O king, his
brothers Adityaketu, Bahwashi, Kunddhar, Mahodar, Aparajit,
Panditak, Vishalaksh and Dujaya, armed with weapons and golden ar-
mour rushed against Bhim 16 Mahodar wounded Bhim severely with
nine arrows as Indra had pierced Namuchi. Then Adityaketu wound-
ed him with seventy arrows, Bahwa-hi with five, Kunddhar with nine,
Vishalaksh with seven and brave Apurajit with many. Again Pandi-
tak wounded him with three arrows 20 Wounded - by those arrows
mighty Bhim on the destroyer of foes, drew his bow with his left hand

॥ १७ ॥ आदित्यकेन सप्तत्या चत्वारो चापि पञ्चभि । नरत्या कुण्डधारश्च विशा
लाक्ष्य पचभि ॥ १८ ॥ अपराजितो महाराज पराजिष्णुमंहारथम् । शरैर्वहुभि
रानच्छेद्भीमसेनं महाबलम् ॥ १९ ॥ रणे पण्डितकान्न त्रिभिर्बाणे समाप्यत् । स
तत्र ममूयै भीम शत्रुभिर्विधमाहवे ॥ २० ॥ धनु प्रपीड्य धामेन करेणामित्रकार्शेन ।
शिरश्चिच्छेद् समरे शरेणानतपर्वणा ॥ २१ ॥ अपराजितस्य मुनस तव पुत्रस्य
संयुगे । पराजितस्य भीमेन निपपात शिरो महोम ॥ २२ ॥ अथापरेण भटलेन
कुण्डधार महारथम् । प्राहिणान्मृत्युलोकाय सर्वं लोकस्य पश्यत ॥ २३ ॥ ततः
पुनरमेयात्मा, प्रसन्धाय शिलीमुखम् । प्रेषयामास समरे पण्डित प्रति मारत २४ ॥
स शर पण्डित हत्या विवेश धरणीतराम् । यथा नर निहत्याशु मुजग कालत्रो
दित ॥ २५ ॥ विशालाक्षशिरश्छित्त्वा पातयामासभूतले । त्रिमि शरैर्वीनात्मा
स्मरन् फलेशं पुरातनम् ॥ २६ ॥ महोदर महोपास नाराचनस्तनाररे । विज्याध

जितने अनेक बाणों से महापत्नी भीमसेन को व्याकुल कर दिया, फिर पण्डितके
तानाशयमे घायल किया ॥ १७ ॥ इसके पीछे इन सत्रके बाणोंसे पीड़ित शत्रुसंतापी महा
बली भीमसेननं क्रोधयुक्त हो बाणें हाथते दृढ धनुषको खचकर मुनग्रन्थी वाले
बाणों से आपके पुत्र अपराजित के शिरको काटा फिर बड़ गिर पृथ्वी पर
गिरा, इसके पीछे सत्र सेनाके देखत हुए दूरसे भल्ल मे महापत्नी कुण्डधारको
कालत्रोद किया, हे भर्तृपति फिर बड़े साहसी भीमसेनने धनुष में शिली
मुख बाणको चढ़ाकर पण्डितक को मारा, वह बाण पण्डितकको मारकर पृथ्वी
में ऐसे प्रवेश करगया जैसे कि कालका भेजा सर्व मनुष्य को काटकर पृथ्वी में
घुमजाता है ॥ २५ ॥ फिर पूर्ण समय के दुःखोंको स्मरण करके प्रमत्तचित्त भीमसेनने
तानाशय से विशालाक्ष को मारकर पृथ्वी पर गिराया, हेराजा बड़े धनुषधारी
महोदर को नाराचमे छाती के ऊपर घायल किया वहभी मृतक होकर भूमिमें गिरा,
फिर एक बाण से आदित्यकेतु के छत्र को काटकर बड़े तीक्ष्ण भल्ल से उसके

in great anger and with arrows having hidden knots, beheaded your
son Aparajit The head fell down on the ground And within sight
of the armies with another dart he killed Kundhar Then, Bhim-
sen of great prowess, put to his bow an arrow sharpened on stone and
killed Panditak with it Having killed Panditak that arrow entered
the ground as a serpent sent by Death does after biting a man 25 Then
remembering the former wrongs Bhimsen with three arrows killed
Vishalaksh who fell down dead on earth Then he wounded the great
archer Mahoder with an arrow on the breast and he too fell down
dead on earth, Then having cut down the umbrella of Adityaketu
with an arrow he beheaded him with another dart Then Bhimsen
in the excess of wrath with arrows having hidden knots sent Bah-

समरे राजन् स हतोन्यपतद्भुवि ॥ २७ ॥ आदित्यकेतो केतुर्धृष्टिगणेन सयुगे ।
 भङ्गेन भृशतीक्ष्णेत शिरीषच्छेद्भारत ॥ २८ ॥ घट्वाशिन ततो भीम शरेणानत
 पर्वणा । प्रेषयामास सङ्कुद्धो यमस्य सदनं प्रति ॥ २९ ॥ प्रदुद्रुमुन्ततस्तेन्ये पुत्रास्तव
 विशाम्पते । म-यमाना हि तत्सत्य सभाया तस्य भाषितम् ॥ ३० ॥ ततो दुर्योधं
 नो राजा भ्रातृन्यसनकर्शित । अग्रवीत्ताववान् घोधान् भीमोय युधिवध्यताम् ॥ ३१ ॥
 एवमेत महेष्यासा पुत्रास्तव विशाम्पते । भ्रातृन् सन्दृश्य निहतान् प्रास्मरस्तहि
 तद्वच ॥ ३२ ॥ यदुक्तवान् महाप्राज्ञ क्षत्ता हितमनामयम् । तदिव समनुप्राप्तं
 वचनं दिव्यदशिन ॥ ३३ ॥ लोभमोहसमाधिष्ट पुत्रप्रीत्या धनाधिप । न बुध्य
 सेपुरा यत्तत् तथ्यमुक्त वचोमहत् ॥ ३४ ॥ तथैव च वधार्थाय पुत्राणां पाण्डवो
 बली । नून जातो महाबाहुर्धृथा हान्तिस्म कौरवान् ॥ ३५ ॥ ततो दुर्योधनो राजा
 भीष्ममासाद्य सयुगे । बु येन महन्नाधिष्ठो विललापसुदु खित ॥ ३६ ॥ निहताभ्रातर-

भी शिरको काटा, फिर अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेन ने गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से
 वहवाशीको भी यमलोकको भेजा, इसके पीछे आपके और सबके सभाके मध्य में
 कहे हुए भीमके वचनोंको सत्य जानकर युद्धभूमिसे भागे ॥ ३० ॥ तदनन्तर भाइयों के
 दुःखसे पीडामान् राजा दुर्योधन आपके सब पुत्रों को बुलाकर यह बोला कि हे
 भाइयो इस भीमसेनको मारो, इस रीति से इन धनुषधारी आपके पुत्रोंने भाइयोंको
 मारा हुआ देख कर उस वचन को याद किया जो बड़े शुभ चिन्तक विदुरजी ने
 हितकारी समझ कर कहाथा वही उन महात्मा का वचन अब सत्य २ वर्तमान हुआ
 है हे राजा तुम लोभ मोह में भरे हुए पुत्रकी मीति से नहीं जानतेहो पूर्व समयमें
 सत्यहितकारी वचन कहागयाया निश्चय कर के महाबाहु बलवान् भीमसेन तेरेपुत्रोंके
 मारने के लिये ऐसाही उत्पन्न हुआहै जैसा कि कौरवोंको मार रहाहै ॥ ३५ ॥ इसके पीछे
 राजा दुर्योधन भीष्म के पाम जाकर महा रोद युक्त होकर रोदन करनेलगा
 कि मेरे शूरवीर भाई युद्ध में भीमसेन के हाथ मे मारेगये, इसीप्रकार और सब सेना

wash to the region of Yam. Then the rest of your sons, believing
 the words of Bhishma said in the court to be true, fled from the field
 of battle 30 Sorry for the death of his brothers Prince Duryodhan
 called all your sons together and said to them — "Kill this Bhishma,
 brothers!" Your brave sons seeing their brothers dead, remembered
 the words which the well wisher Vidur had said for their benefit.
 His words have proved true. Out of love for your ambitious and
 foolish son you do not know what true and beneficial words were said.
 Surely brave Bhishma is born to destroy your sons as well as other
 Kauravas 35 Then Prince Duryodhan went to Bhishma and wept for
 sorrow, saying, "My brothers are killed by Bhishma in battle and
 he is destroying our armies. You always express your disinterested

भूरा भीमसेनन मे युधि । यतमानास्नयान्येपि हन्यन्ते सर्वे सैनिकाः ॥ ३१ ॥ भवाश्च
 मध्यस्थतया नित्यमस्मानुपेक्षते । सोऽहं कुपश्चात्पटं पश्य दैवमिदमम ॥ ३८ ॥
 एतच्छ्रुत्वा च क्रूरपितादेवव्रतस्तव । दुःख्योधनमिदं वाच्यमध्यात् साधुलोचन
 ॥ ३९ ॥ उक्तमेतन्मया पूर्वं द्रोणेन विचुरेण च । गान्धार्या च यशस्विन्या तच्च तात
 न बुद्धवाद् ॥ ४० ॥ समयश्च मया पूर्वं कृतो वै शत्रुकर्शन । नाहं युधि नियोक्त
 व्यो नाप्याचार्ये कथञ्चन ॥ ४१ ॥ यं यं हि धार्तराष्ट्रणा भीमो द्रक्ष्यति सयुगे ।
 हतिष्यति रणे नित्यं सत्यमेतद्ब्रवीमि ते । ४२ ॥ सत्यं राजन् स्थिरं भूत्वा रण
 कृत्वा दहोमतिम् । योऽयस्य रणे पार्थाद् स्वर्गं इत्या परायणम् ॥ ४३ ॥ न
 शक्या पाण्डवा जेतुं सैद्रैरपिसुरासुरैः । तस्माद्युद्धे स्थिराकृत्वा मतिर्युष्पस्वभारत ॥ ४४ ॥
 इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि आदित्यकेतुप्रभृतिवधे

एकोनवतितमोऽध्यायः ॥ ८९ ॥

के मनुष्य भी मारे जाते हैं, आप सदेव हमको उदासीनपने से त्याग
 करत हो मैं कुमार्ग में वर्तमान हूँ मेरी अभाग्यता देखिये, संभव वाले कि इस वचन
 को सुनकर आपके पिता भीष्मजी उस अशुभात् करनेवाले दुःख्योधन से यह वचन
 बोले कि मैंने और द्रोणाचार्य विदुर गांधारी आदि ने प्रथमही कहा था परन्तु हेतात
 तुमने उसको नहीं समझा, मैंने प्रथम तुम्हारे साथ नियम किया है सो मैं और
 आचार्यजी दोनों किसी रीति से तुम को छोड़ने को नहीं, धृतराष्ट्र के पुत्रों में से
 युद्ध में जिस २ को भीमसेन देखेगा उसको सत्य २ ही पारे बिना नहीं छोड़ेगा,
 सो स्वर्गको अपना स्थान समझ कर मनको स्थिर कर के पाण्डवों से युद्ध करो
 हे भरतर्षभ इन्द्रादिक देवता भी पाण्डवों के जीतनेको समर्थ नहीं है इस हेतुस युद्धमें
 स्थिरबुद्धी होकर संग्राम करो ॥ ४४ ॥

ness in our cause, while I stay in the evil path. Look my at my bad
 luck." "Having heard these words," continued Sanjaya, "your father
 Bhishm said to the weeping Duryodhan — "I as well as Dronacharya,
 Vidur, Gandhari and others have already warned you, but you were
 indifferent to hear their advice. I have already given you my word
 that the acharya and I will never forsake you. It is true that
 whoever of the sons of Dhritrashtra will meet Bhismet, will meet his
 death. So with a firm mind, regarding paradise to be your proper
 residence fight against the Pandavas. Indra and other gods, O best
 of Bharats, are unable to conquer the Pandavas, therefore fight out
 with a firm resolution." 44



धृतराष्ट्र उवाच ॥ दृष्ट्वा मे निहतान् पुत्रान् बहूनेकेन सजय । भीष्मो द्रोण
 वृषस्यै किम कुर्वत सयुगे ॥ १ ॥ अह-न्यहनि मे पुत्रा क्षय गच्छन्ति सजय । मयेह
 सर्वथास्त देवेनाप हता भृशम् ॥ २ ॥ यत्रमे तनया सर्वे जीय तेन जयत्युत । यत्र
 भीष्मस्य द्रोणस्य वृषस्यच महात्मन ॥ ३ ॥ सौमदक्षेदचश्रीरैस्य भगदत्तस्यचोभयो
 अश्वत्थामनस्तथा तात शूराणाम निवर्तिताम् ॥ ४ ॥ अन्येषाञ्चैव शूराणा मध्यगास्त
 नयामम । यदहन्यन्त सप्रामे किम-यद्भागधेयत ॥ ५ ॥ नहि दुर्योधनो मन्द पुराप्रोक्त
 मबुध्यत । वार्यमाणो मयातात भीष्मेण विदुरेणच ॥ ६ ॥ गाधायञ्चैव दुर्मथा सतत
 हित काम्यया । नाबुध्यतपुरामोहात् तस्यप्राप्त मिद फलम् ॥ ७ ॥ यद्भीमसेन समरे
 पुत्रान्मम विचेतस । अह-न्यहनि समुद्धो नयतेय मसादनम् ॥ ८ ॥ सजय उवाच ।
 इद तत्समनुप्राप्त क्षुर्वचन मुत्तमम् । नबुद्धघानसि विभो प्रोच्यमान हित तदा ॥ ९ ॥

अथ य ॥ ९० ॥

धृतराष्ट्र ने कहा हे संजय एक भीमसेन के हाथसे मेरेबहुत से पुत्रों को
 मराहुआ देखकर भीष्म द्रोण कृपाचार्य आदिने क्या २ किया और मेरे पुत्र
 प्रतिदिन युद्धमें नाशहोते हैं इससे हेसूत मैं मानताहू कि सवरीति से प्रारब्ध से हीन
 हू, कि मेरे शत्रुनाश होतेहैं और विजय नही पाते, भीष्म, द्रोणाचार्य कृपाचार्य
 भुरिश्रवा, भगदत्त, अश्वत्थामा आदि बड़े २ प्रतापी लोगोके मध्य में मेरे पुत्र वर्त
 मान होकर भी मारेजाते हैं यहां प्रारब्ध से दूसरी कौनसी बातहै, हे तातमेरे और
 भीष्म विदुरआदि अनेक सुहृदों के समझाने और निषेध करने से भी निर्वुद्धी
 दुर्योधननेपहले वचनों को नहीं समझा और हितकारिणी अपनी माता गाधारी
 केभी वचनको उसदुर्बुद्धीने नहींसमझा उसीका यहफल पारहा है, बहमहाक्रोधो
 भीमसेन युद्ध में प्रतिदिन मेरेपुत्रों कोही अधिकता से मारकर, यमलोक में पहुँचाताहै
 सजयबोले कि हे समर्थ विदुरजीका वह उत्तम वचनवर्तमान हुआहै जोविदुर ने कहाथा

CHAPTER XC

Dhritrashtra said " What did Bhishm Drona, Kripacharya and others do at seeing many of my sons destroyed by Bhimsen ? My sons are killed every day in battle, I believe therefore, Sat, that I am luckless. My sons are destroyed and gain no victory. In the midst of great men like Bhishm, Kripacharya, Bhurisshrava, Bhagdat and Ashwathama and others the destruction of my sons can be ascribed to nothing but fate. In spite of the remonstrances of Bhishm, Vidur, myself and other well wishers foolish Duryodhan did not become wise. He was unwise to disregard the advice of his nobles. Grihanchand is reaping the fruit of his so doing. In fact Bhimsen destroys most of my sons in battle." Sanjaya replied — " The prediction of Vidur is coming to be true. He told you to stop gambling and to avoid enmity with the Pandavas. You disregarded the

नियारय सुतान् वृतात् पाण्डवोन् मादुहेति च । सुदृढ हितकामानां व्रुवनां तत्तदेव च ॥ १० ॥ न शुभ्रपति यद्वाक्य मूर्धं पथ्यमिगोऽधम । तदेव त्वांमनुप्रात वचन साधुमापितम् ॥ ११ ॥ विदुरद्रोणभीष्माणां तथान्येषां हितैषिणाम् । अहृत्वाग्रचन पथ्य क्षयं गच्छन्ति कौरवाः ॥ १२ ॥ तदेतत् समनुप्रात पुत्रमेव विशाम्पते । तस्मात्प्र वृणुष्वेव यथा युद्धमरुतं ॥ १३ ॥ मध्याहने सुमहार्षेऽत्र मश्राम समवधत् । लोकक्षयकरो राजसन्मैः निगदत् वृणु ॥ १४ ॥ तत् सर्वाणि सैव्यानि धर्मपुत्रस्य शासनात् । सर्वान्यभ्यवर्तन्त भीष्ममेव जिप्रासया ॥ १५ ॥ धृष्टद्युम्न शिखण्डी च सात्यकिश्च महारथ । युत्तानीका महाराज भीष्ममेव समभ्ययु ॥ १६ ॥ विराटो द्रुपदश्चैव सहिता सर्वसोमके । अभ्यद्रवन्त सश्राम भीष्ममेव महारथम् ॥ १७ ॥ केष्या धृष्टकेतुश्च कुन्तिभोजश्च ददित । युत्तानीका महाराज भीष्ममेव

कि पुत्रों को जुवा खेलेसे निषेध करो और पाण्डवों से शत्रुतापतकरो सो उन धुभ चितक मित्रों के वचनों को तुमने ऐसे नहीं मीना जैसे कि रागी अपनी नीरोगी करने वाली शौपरी को नहीं साता है वही साधुओं का कहाहुआ वचन आपके आगे वर्तमान हुआहो ११ यह सब कौरव लोग अपने धुभचिन्तक विदुर द्रोणाचार्य भीष्म और अन्य बहुत से हितधारियों के वचनों को न मानकर नाशहोते जाते हैं, इसके पीछे हे राजामध्याह्न के समय ससारका नाशकारी बड़ा भागी भयानक युद्ध जो प्रारभ हुआ उसको शुरुमे सुनो कि धर्मपुत्र युधिष्ठिर की आज्ञा से पाण्डवों की सर्वसेना महाकोपित होकर भीष्म के मारने के लिये सम्मुख टौड़ी हे महाराज धृष्टद्युम्न शिखण्डी सात्यकी यहतीनों अपनी २ सेना समेत भीष्म के सम्मुख गये १६ विराट् द्रुपद आदि महारथ भी सर्वसोमकों समेत भीष्म के सम्मुख गये और पाचों भाई के रूप धृष्टकेतु कुन्तिभोज आदि भी सकवचधारी होकर सेना समेत भीष्म के सम्मुख गये, अर्जुन और द्रौपदी के पाचों पुत्र और पराक्रमी

advice of your friends like a patient who does not take doses of curative medicine. The very same surtly predictions are coming before you 11 The Kauravas who disregarded the advice of their well wishers, Vidur, Dronacharya, Bhishm and other friends are being destroyed. Then, O King, at midday commenced a furious battle destructive of the world. Hear from me all about it — By the order of Yudhishtir the just all the Pandav army much enraged, rushed on to slay Bhishm 16 Driishtadyumn, Shikhandi and Satyaki with their armies faced Bhishm Virat, Drupad and other warriors too along with the Somals the five Karkaya brothers Dhrishtaketu, Kuntabhoj and others sheathed in armour, encountered him Arjun with the five sons of Draupadi and valliant Chekitan faced the kungs sent by Duryodhan. Likewise Abhimanyu, valliant Ghatotkach and enraged Bhismen rushed against the Kauravas. 20 Two parties of the

समभ्ययु १८॥ अर्जुनोद्रौपदेयाश्च चेकितानश्चर्यवीर्यान् । वुर्योवनसमादिष्टान्पराह
 सर्वान् समभ्यय ॥ १९ ॥ अभिमन्युस्तथा शूरा ह्येडिम्नश्च महारथ ॥ भीमसनश्च सक
 द्दस्तभ्यधावत कौरवान् ॥ २० ॥ त्रिधाभूतेरेवध्वन्त पाण्डवै कौरवा युधि । तथै
 व कौरवैराजश्रवभ्य त पर रण ॥ २१ ॥ द्राणस्तु रथिन धेष्टान् सामकान् सृजयै
 सह । अभ्यधावत सकुद्ध प्रेययिष्यन् यमक्षयम् ॥ २२ ॥ तत्राकन्दो महानासीत्
 सृजयाना महात्मनाम् । वध्वता समर राजन् भारद्वाजेन धन्विना ॥ २३ ॥ द्रोणत
 निहतास्तत्र क्षत्रिया वहवो रण । त्वचष्टताह्यदृश्यन्त व्याधिकिल्बिषा नरा इव
 ॥ २४ ॥ कूजना क्रन्दताश्चैव स्तनताश्चैव भारत । अनिश शुश्रुव शब्द क्षुत्
 क्लिष्टाना नृगामिव ॥ २५ ॥ तथैव कौरवेयाणा भीमसना महाबल । चकार पदन
 घोर कुद् काल इवापर ॥२६॥ वध्वता तत्र सैन्याना मन्योन्येन महारणे । प्रावृत्तत

चेकितान उनसवराजाम्रों के सम्मुख गये जिन को कि दुर्योधन ने आज्ञा दी थी,
 इसीप्रकार वीर अभिमन्यु और महारथी घटोत्कच और क्रोधित भीमसन भी
 कौरवों के सम्मुख दौड़ा । २० । हे राजा पांडवों के दुर्योधनसे तो कांसव मारेगये
 और कौरवों से भी उधर के लोग मारेगये फिर महारथी द्रोणाचार्य
 बड़े क्रोधयुक्त होकर मृजियों सहित सोमक का मारतेहुए पांडवों के
 सम्मुख गये उसयुद्धमें द्रोणाचार्य के हाथसे मरतेहुए महात्मा मृजियों के बड़े २
 शब्दहुए उसस्थानमें द्रोणाचार्य के हाथसे मरेहुए बहुत से क्षत्री ऐसे
 तडफडाते दिखाई दिये जैसे कि रोगयुक्त मनुष्य विकलहोकर तडफडाते हैं
 युद्ध में बोलते गर्जते पुकारते हुए शूरवीरोंके ऐसे शब्दसुने गये जैसे कि भूखभे
 व्याकुल मनुष्योंके शब्द निकलाकरतेहैं । २५ । इसीप्रकार द्वितीयकालके समान क्रोध
 रूप महाबली भीमसेन ने कौरवों के महाघोर नाशको किये, उस महाघोर युद्ध
 में परस्पर सब सेनाओं के मरने से रुधिर की घोर भयानक नदी जारी हुई। हे
 महाराज कौरव और पाण्डवों की वह महायुद्ध घोर लड़ाई यमराज के पुरकी

Pandavas destroyed the Kauravas and the latter killed the warriors
 of the opposing side. Valiant Dronacharya much enraged destroyed
 the Srinjayas and the Somals and then encountered the Pandavas.
 The Srinjaya warriors, destroyed by Dronacharya made a great noise.
 The warriors wounded by him shook like those who are overtaken by
 sickness. The cries and roars of the warriors resembled those of the
 starving people. 25 In the same manner like a second Death, valiant
 Bhimsen much enraged, destroyed the Kauravas in large numbers. In
 that dreadful battle the opposite sides destroying one another produced
 a river of blood. The dreadful battle between the Kauravas and the
 Pandavas, O King, augmented the region of Yamraj. Then full of
 anger and destitute of pride Bhimsen destroyed the army of elephants
 and sent it to the region of Yam. Killed by the darts of Bhimsen

नदी घोरा रुधिरौघप्रवाहिनी ॥ २७ ॥ स संग्रामो महाराज घोररूपोभवन्महान् ।
 कुङ्कणां पाण्डवानाञ्च यमराश्रुविवर्धनः ॥ २८ ॥ ततो भीमो रणे कुड्यो रमसश्च
 विशोपतः । गजानीकं समासाद्य प्रेषयामास सृत्यवे ॥ २९ ॥ तत्र भारत भीमेन
 नाराचामिहंतागजाः । पेतुर्नदुध संपुञ्ज दिशश्च पत्रिवन्नसु ॥ ३० ॥ छिन्नहस्ता
 महानागाश्छिन्नगात्राश्च मारिय । क्रोञ्चवद्व्यनदन्मताः पृथिवीमधिशरते ॥ ३१ ॥
 नकुलः सहदेवश्च ह्यानीकमभिद्रुतौ । ते ह्याः काचनापीडा वक्त्रमाण्डपरिच्छदाः

॥ ३२ ॥ वधमाना व्यहृद्यन्त शतशोपमहलशः । पतद्भिस्तुरगै राजन् समास्ती
 र्यंत मेदिनी ॥ ३३ ॥ निर्जिज्जुवैश्च भवसद्भिश्च कृजद्भिश्चगतासुभिः । हयैर्वसौ
 नरश्रेष्ठ नानारूपधरैर्यतः ॥ ३४ ॥ अर्जुनेन हतैः संख्ये तथा भारत राजमि । प्रथमौ
 वसुधा घोरा तत्र तत्र विशाम्पते ॥ ३५ ॥ रथैर्भनैर्ध्वजैश्चिन्नैर्निकृत्तैश्च महायुधैः ।
 चामरैर्व्यजनैश्चैवच्छत्रैश्च सुमहाप्रभैः ॥ ३६ ॥ हारैर्निष्कैः सकेयूरैः शिरोभिध
 सकुण्डलैः । उष्णोपैरपविष्टैश्च पताकाभिश्च सर्वश ॥ ३७ ॥ अनुकर्षे शुभैराजन

छदि करने वाली हुई इसके पीछे क्रोधमें भरे निरभिमानी भीमसेन ने हाथियों
 की सेनाको मारकर यमपुर भेजा वहाँ भीमसेन के नाराचों से मरे हुए हाथी अचेत
 होकर शब्द करते दिशाओं में घूमते हुए पृथ्वीपर गिरे। ३०। हे राजा पृथराष्ट्र वह सूँढ़
 और भ्रंगों से रहित हाथी क्रीच पत्नी के समान शब्द करते हुए पृथ्वीपर मारकर
 सोये, और नकुल सहदेव दोनों भाई घोड़ों की सेनाके सम्मुख गये वहाँ सुवर्ण
 भूषणों से अलंकृत सैकड़ों और हजारों घोड़े मरे कटे टपटे उस समय वह
 पृथ्वी गिरे हुए घोड़ों से पूर्ण हुई, और बहुतेसे जिह्वा से रहित श्वास लेते हुए
 शब्दायमान मृतकरूप अनेक रंग वाले घोड़ों से पृथ्वी बड़ी शोभायमान हुई, हे
 भरतर्षभ इसी प्रकार से अर्जुन के हाथ से मरे हुए राजाओं से भी भयानक पृथ्वी
 महाशोभा को प्राप्त हुई। ३५। बड़े शस्त्रों से टूटे रथ ध्वजा और प्रकाशित छत्रों से वा
 टूटे हुए चापर और व्यजनों से अथवा हार केयूरदिक आभूषणों से युक्त कुंडल
 पारी शिर अनेक प्रकारकी पताकाओं से, और रथों की अनेक रंगवाली दोरियों
 से युक्त रथों से ढकी हुई पृथ्वी ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि वसन्त ऋतु में फूलों

and made insensible the elephants fell down with hideous cries. Devoid of
 trunks and limbs the elephants cried like herons and fell down dead on
 earth. The two brothers Nakul and Sahadev faced the squadron of horses
 and killed hundreds and thousands of horses decked with gold trappings,
 filling the ground with their dead bodies. The earth looked glorious
 with the carcasses of horses of different colours, tongueless, gasping and
 neighing. In the same manner, O best of Bharats, the scene on the
 field of battle was awful on account of the corpses of the kings killed
 by Arjun. Broken by powerful weapons, the chariots destitute of
 banners, bright sun shades, fly flappers, fans, garlands and other or-
 naments, heads decked with earrings, banners of sorts and chariot ropes

योद्धैत्रशैवसरश्मिभिः सस्त्रीणां वसुधाभाति वसन्ते कुसुमैरिव ॥ ३८ ॥ पद्मेपक्षयो
वृक्ष पाण्डुनामपि भारत । कुञ्जेशान्तनवे भीष्मे द्रोणेचरथसत्तमे ॥ ३९ ॥ अश्वत्थामि
रूपे चैव तथैव कृतवर्माणि । तथेतरेषु कुञ्जेषु ताण्डानामपिपक्षय ॥ ४० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि अष्टमदिवसयुद्धे

नवतिमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

संजय उवाच ॥ वर्तमाने तथा रौद्रे राजन् धीरधरक्षणे । शकुनिः सौबल श्रीमान्
पाण्डवान् समुपाद्रघत् ॥ १ ॥ तथैव सात्त्वतो राजन् हार्दिक्य परधीरहा । अभ्यद्रव
तसप्राप्ते पाण्डवानावरुधिनीम् ॥ २ ॥ तत काम्बोज मुख्यानां नदीजानाच धाजिनाम् ।
आरदाना महीजानां सिन्धुजानांच सर्वश ॥ ३ ॥ वनायुजाना शुम्भाणां तथा पर्वतवा
सिनाम् । धाजिनांवद्भूमिः सख्ये समन्तात् परि वारयन् ॥ ४ ॥ ये चापरे तित्तिरिजा

से शोभित होती है, जिसप्रकार से भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य
अश्वत्थामा कृपाचार्य और कृतवर्मा इन सबके क्रोधरूप होने से पाण्डवों के
शूरवीरों का नाश हुआ उसी प्रकार पाण्डवों के कोपित होने से आपके भी वीरों
का नाश हुआ ॥ ४० ॥

अर्थात् ९१ ॥

संजय बोले हे राजा इस प्रकार उत्तम वीरों के नाशहोनेपर सुबलका पुत्र
श्रीमान् शकुनि और शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला यादव कृतवर्मा पाण्डवों की
सेना के सम्मुख गया, फिर काम्बोज देशी उत्तम घोड़े व नदी के समीप उत्पन्न
होनेवाले अरट्ट देशी व सिन्धु देशी आदि सब प्रकार के घोड़े और वनायुज देशी
श्वेतरूप पहाड़ी घोड़े इन सब प्रकारके अनेक घोड़ोंके द्वारा युद्धके चारो ओरको नियत
करके दूसरे प्रकार तित्तिरिज वायुके समान वेगवान् सुवर्ण भूषणों से अलङ्कृत श्रेष्ठ

of different colours beautified the earth like flowers in the season of
spring The destruction of Pandav armies caused by Bhishma, Dro-
nacharya the best of charioteers Ashwathama Kripacharya and
Kritvarma was as great as that of your armies caused by angry
Pandavas 40

CHAPTER XCI

Sanjaya said — "On the destruction of those warriors, O king,
Subal's son shakuni and Kritvarma the Yadav, destroyer of warlike
foes, faced the Pandav armies Then with good horses of Camboj of
Aratta by the river side and of Sindh, the white horses of mountain
fores's, stationed all round in the field of battle and with horses of the
colour of partridge swift like the wind, decked with gold ornaments,
sheathed in armours of the best make Arjun's son Itawan faced that

जयनाथातरुहसः । सुवर्णां लंकृतै रेतैर्यमंवाद्भिः सुकम्पितैः ॥ ५ ॥ ह्यैर्योतजघैर्मुण्यैः
पाण्डवस्यनुतो बली । अश्वघर्तत तत्सैन्यं दृष्टरूपः परन्तपः ॥ ६ ॥ अर्जुनस्य सुतःश्री
मां निरावाद्याम वीर्यवान् । स्तुयायां नागराजस्य जातः पार्थेन धीमता ॥ ७ ॥ ऐराव
तेन सा दत्ता भनपत्या महात्मना । पत्यौ हते सुपणैः कृपणा वीनचेतना ॥ ८ ॥ भा
र्यायै तां च जैमाह पार्थः कामवशानुगाम् । एवमेव भ्रमुत्पशः परद्वेषेर्जुनात्मजः ॥ ९ ॥
सगाग लोके संवृद्धो माप्राच परि रक्षितः । पितृव्येण परित्यक्तः पार्थद्वेषाद्भुरात्मना
॥ १० ॥ रूपवान् बलसम्पन्नो गुणवान् सत्य विक्रमः । इन्द्रलोकं जगामाशुं श्रुत्वा
तप्रार्जुनकृतम् ॥ ११ ॥ सोभिगम्य महाबाहुः पितरं सत्य विक्रमः । अश्वघावदव्यग्रो
चिन्तयेन कृतांजलिः ॥ १२ ॥ न्यवेदयत्तत्रात्मानं मर्जुनस्य महात्मनः । इरावानस्ति मद्भ
न्ते पुत्रमाहं तवप्रभो ॥ १३ ॥ मातुः समागमो यद्व च तत्र सर्वं प्रत्य वेदयत् । तत्र सर्वं

रचना किये हुए कबचों को धारण करने वाले वायुके समान शीघ्रगामी उत्तम घोड़ों
समेत बलवान् रूपवान् श्रीमान् पराक्रमी अर्जुन का पुत्र इरावान् उससेना के
सन्मुख हुआ यह इरावान् अर्जुन का पुत्र नाग कन्या में इस रीति से उत्पन्न
हुआ था कि ऐरावत नाम नागों के राजाने गरुडजी से महा दुःखित होकर अर्जुन
को अपनी कामवती कन्यादी तब अर्जुनने उस कामासक्त को अपनी स्त्री बनाने के
लिये श्रृंण किया इसरीतिसे यह अर्जुन का पुत्र दूसरे के क्षेत्र में उत्पन्न हुआ, वह
माता से रक्षित होकर नागलोक में बड़ा हुआ और अर्जुन की शत्रुता से उसके
चाँबाने उसको प्रथककिया १० फिर वह रूपवान् पराक्रमी गुणोंसे संपन्न सत्य परा
क्रमी अर्जुन को स्वर्ग में वर्त्तमान सुनकर शीघ्रही इन्द्र लोकको गया, वहाँ उस
सावधान सत्य पराक्रमी ने हाथ जोड़ कर पिता के पास जाकर दण्डवत् की, और
अपने दो अर्जुन के सम्मुख वर्णन किया कि हे प्रभु आप का कल्याण हो मैं
इरावान् नाम आपका पुत्र हूँ और जैसे माता का मिलाप हुआ था वह सब वर्णन

army. This Iravan the son of Arjun was born in the daughter of the king
of Nagas. For Airavat the king of Nagas, much distressed by Garur,
gave his daughter Kaiwati to Arjun and the latter accepted her
for his wife. Thus this son of Arjun was born in a widow. He was
brought up by his mother in the region of Nagas; his uncle being an
enemy of Arjun did not take care of him 10. Then that handsome, brave
warrior of good qualities, hearing of Arjun's visit to paradise, went to
the region of Indra. There that wise man of true prowess went to
his father and with joined palms having saluted him, introduced him-
self thus,—“May you be happy, lord,” said he, “I am Iravan your
son.” He related to Arjun how he had met his mother. Then Ar-
jun remembered what had happened, and in the palace of Indra see-
ing his son to be like himself in good qualities, embraced him cheer-

यथाकृतं मनुस्समार पाण्डव ॥ १४ ॥ परिष्वज्य सुतञ्चापि आत्मनः सहश गुणे ।
 प्रीतिमान नयत् पार्थो देवराज निवेशने ॥ १५ ॥ सौर्जनेन समाह्वतो देवलोकं तदा नृप ।
 प्रीतिं पूर्वं महाबाहुः स्वकार्यं प्रति भारत ॥ १६ ॥ युद्धकाले त्वयास्माकं साह्यं देवमि-
 त्तिप्रभो । वाढमित्येव मुक्त्वा तु युद्धकाल इहागतः ॥ १७ ॥ कामवर्णं जयैरश्वैर्वह्निभि-
 र्संहृतो नृप । ते हया कांचनापीडा नानावर्णा मनोजवाः ॥ १८ ॥ उत्पेतुः सहसाराजन्
 हंसा इव महादधौ । ते त्वदीयान् समासाद्य हयसंघान् मनोजवान् ॥ १९ ॥ क्रौडै-
 क्रौडानभिष्मन्तो घोणामिश्च परस्परम् । निपेतुः सहसा राजन् सुवेगाभिहता मुषि-
 ॥ २० ॥ निपतद्भिस्तथा तैश्च हयसंघैः परस्परम् । शुश्रुवे दाहणः शब्दः सुवर्णं पतने
 यथा ॥ २१ ॥ तथैव तावका राजन् समेतान्योन्य माहवे । परस्परवधं घोरं चक्रुस्ते
 हयसादिनः ॥ २२ ॥ तस्मिंस्तथा घर्तमाने संकुले तुमुले श्रमम् । उभयो रपि संशान्ता

किया तब अर्जुन ने उसका यथार्थ वृत्तान्त जैसा हुआ था सब स्मरण किया
 वह अर्जुन देवराज के भवन के भीतर गुणों में अपने समान पुत्रको देखकर
 बहुत स्नेहसे मिलकर मसन्न हुआ । १५ । हे भरत वंशी धृतराष्ट्र तब इन्द्र-लोक
 में वह महाबाहु इरावान् अर्जुन से बोला कि हे पिता आप मुझे कोई काम कर-
 ने की आज्ञा दीजिये, अर्जुनने कहा कि हे पुत्र युद्ध के समय तुम को हमारी
 सहायता करनी उचित है उसकी आज्ञा को स्वीकार करके युद्ध के समय वह
 उन पूर्वोक्त उत्तम घोड़ों समेत वहां आया जो अकस्मात् ऐसे ऊँचे होकर चलने
 लगे जैसे कि महा समुद्रमें हंस चलते हैं वह शीघ्रगामी घोड़े आपके घोड़ों के
 समूहों को पाकर, अपनी तीव्रता से पृथ्वी पर छाती से छाती को नाकों से नाकों
 को परस्पर धायल करतेहुये दौड़े । २० । इस रीति से उस परस्पर दौड़ते हुये घोड़ोंके
 समूहोंसे ऐसे भयकारी शब्द सुनेगये जैसे कि गरुड़ के गिरने में होते हैं, इसी प्रकार
 घोड़ों के सवारों ने भी परस्पर में मिलकर एक ने एक का नाश किया, इस रीतिके

fully. 15. Then in the region of Indra, Iravan said to Arjun--"Give me some work to do, father." "You must help me in the coming war." replied Arjun. The son accepted the father's offer and in due course came there with those good horses which strode with raised heads like swans in the sea. Those swift horses meeting your own rushed against them, striking with their noses and breasts 20. The sounds made by the rushing of horses against one another were dreadful like the fall of Garur. Then the horsemen meeting together, destroyed one another. When the battle was raging so furiously the horses on both sides ran on all sides. The warriors whose arrows were exhausted and the horses were dead, were themselves killed 25. When the squadron of horses was nearly destroyed, the brothers of Shakuni, brave warriors came into the field of battle, riding horses

हृत्संघाः समन्ततः ॥ २३ ॥ प्रक्षीणसायकाः शूरा निहताश्वाः ध्रमातुराः । दित्यंसम
 नुप्रातास्तक्षमाणाः परस्परम् ॥ २४ ॥ ततः क्षीणे ह्यानीके किञ्चिच्छेपे च मारत ।
 सौबलस्यानुजाः शूरा निर्गता रणमूर्धनि ॥ २५ ॥ वायुवेगसमस्पर्शाद् जवे वायु
 समांश्चते । आकृष्ट बलसम्पन्नाश्च वयःस्यास्तुरगोत्तमान् ॥ २६ ॥ गजो गवाक्षो हृष
 भश्चर्मवानार्जव-शुकः । पडेते बलसम्पन्ना निर्ययुर्महतो बलात् ॥ २७ ॥ वाय्वर्थाणाः
 शकुनिना तैश्च योधिर्महाबलैः । सन्नद्धा युद्धकुशलारौद्ररूपामहाबलाः ॥ २८ ॥ तद्
 नीकं महाबाहो भित्वा परमदुर्ज्जयम् । बलेन महता युक्ताः स्वर्गायाविजयैषिणः २९ ॥
 विविशुस्ते तदा हृष्टा गान्धारा युद्धदुर्मदाः । तान् प्रहृष्टस्तदा हृष्ट्वा इरावानपि
 धीर्यवान् ॥ ३० ॥ अन्नवीत् समरे योधात् विचित्रान्दारुणायुधान् यथैते धाञ्च
 राष्ट्रस्य गोधाः सानुगवाहनाः ॥ ३१ ॥ हन्यन्ते समरे सर्वे तथा नीतिविधीयताम् ।

कठिन और-तुपुल युद्धके होनेपर दोनों ओर के घोड़ों के समूह भी चारों ओर से
 भ्रमण करने लगे, जिनके कि वाण अत्यन्त निवृत्त गये और घोड़े भी मारे गये
 उन शूरवीरों ने नाशको पाया । २५। फिर घोड़ोंकी सेना के नाश होने और कुछ शेष
 रहजाने पर शकुनी के छोटे भाई महाशूरवीर युद्ध भूमि में वायुके समान तीव्र
 स्पर्श युक्त और शीघ्रगामीपने में तीव्र वायु के समान प्रसन्न रूप तर्क्य घोड़ों पर
 चढ़कर आये, गज, गवाक्ष, हृषभ, चर्मवान, आर्जव शुक यह छत्रों महावीर
 गान्धारकुनाद युद्ध में दुर्मद बड़ीसेना समेत महा प्रवीण भयानकरूप अतिबली
 कवच आदि से अलंकृत शकुनि और अपने बड़े २ वीरों से निपोधित होकरभी
 विजयाभिलाषी हो उस बड़ी कठिन सेनाको चीरकर स्वर्ग के निमित्त युद्ध
 में आये उस समय पराक्रमी इरावान भी उन राजकुमारों को धाया हुआ
 देखकर अपनेशस्त्र आभूषणोंसे अलंकृत वीर पुरुषोंसे बोला । ३०। कि जिस प्रकार से
 दुर्योधन के यह सब शूरवीर मारेजायें वही काम तुमको करना उचित है । यह

swift as the wind cheerful and youthful. Gaj, Gawaksh, Vrishabh
 Charmvan, Arjav and Shuk, the brave warriors of Gandhar, invin-
 cible in battle, followed by a large army, very wise, dreadful, very
 strong, armed with arms and armours, although forbidden by Shakuni
 and other great warriors, came into the field of battle desirous of para-
 dise, passing through the impregnable forces. Valliant Iravan, see-
 ing the advance of those princes addressed his warriors decked with
 arms and ornaments:—"You should cause the destruction of all these
 warriors of Duryodhan." Iravan's soldiers obeyed his orders and des-
 troyed their armies. Seeing the destruction of their warriors by those of
 Iravan, the sons of Suval, of unbearable temper surrounded him on all
 sides and rushed upon him with their clubs and battle axes. 35. Wound
 ed by those warriors and bleeding, Iravan looked like an elephant

वाहमित्येवमुक्त्वाते सर्वे घोषा इरावत ॥३१॥ जघ्नुस्तेर्षावलानिकं बुर्ज्जयन्ममेरपरे ।
 तदनीकमनीकेन समरे वीक्ष्य पातितम् ॥३२॥ अमृधमाणास्तेसर्वे सुवलस्यात्मजाः ।
 इरावन्तमभिदुत्य सर्वतः पर्यवारयन् ॥ ३३ ॥ ताडयन्तः शितैः प्रासैश्चोदयन्तः
 परस्परम् । ते शूराः पर्येवावन्त कुर्वन्तो मद्बुद्धुलम् ॥ ३५ ॥ इरावानथ निर्भिन्न-
 प्रासैश्चक्षिणोर्माहात्मिभिः । खड्गता रुधिरैणाकस्तोर्षोर्विन्द इव द्विपः ॥ ३६ ॥ पुरतोपि
 च पृष्ठे च पार्श्वयोश्च भृशहतः । एको यद्भुभिरत्यधैर्ष्याद्वाजन्ने विव्यथे ॥ ३७ ॥
 इरावानपि संदुष्टः सर्वोस्ताम्रिशितैः शरैः । मोहयामास समरे चित्थ्या परपुरत्रय
 ॥ ३८ ॥ प्रासानुत्कृष्य तरसा स्वशरीरादरिन्दन । तैरेव ताडयामास सुवलस्यात्मजा
 नरणे ॥ ३९ ॥ विकृष्य च शितं खड्गं गृहीत्वाच शरत्वरम् । पदातिर्दुतमागच्छजिज्ज
 घासु सर्वेऽत्र युधि ॥ ४० ॥ ततः प्रत्यागतप्राणाः सर्वे ते सुवलत्मजाः । भूय क्रो

घ्नकर इरावान् के शूरां ने अंगीकार कर के, उन्होंकी दुर्जन सेनाको मारा युद्ध में
 इस सेना से मारीहुई अपनी सेनाको देखकर, मडा असहिष्णु सुवलके पुत्रों ने
 इनाय न् को घागे औरसे घेरलिया और बड़े परशों से और परिघोंसे प्रहार करते
 हुए उनके ऊपर दौड़े ॥३५॥ इरावान्भी उन धीरोंसे घायन रुधिरमें डूबाहुआ ऐसा
 विदित हुआ जैसे कि दण्डोंसे घायल हाथी होताहै, हे राजा यह अकेलौ उर्ध्वसर्व से
 हाथ छाती पीठ और कुक्षिपर पायल होने पर भी पीडित नहीं हुआ, फिर शत्रु
 के पुरको विजय करने वाले अत्यन्त क्रोधयुक्त इरावान् ने भी उन सबको अपने
 तीक्ष्ण बाणों से घायल किया, फिर उस शत्रुइन्ताने अपने शरीर में से सब परशों
 को उखाड़कर उन्ही परशों से सुवलके पुत्रों को घायल किया, इसके पीछे अपने
 तीक्ष्ण खड्ग और ढालको धारणा करके बड़ी शीघ्रता से उन सुवलके पुत्रों के
 मारनेको पैदलहीगया ४० फिर चैत-यहोकर क्रोधमें भरेहुए वह सब सुवलके पुत्रभी
 इरावान्के सम्मुख गये तब तो इरावान् अपने खड्गकी हस्तलाघवता को दिखलाता

wounded by staffs Wounded by them on his arms, breast, back and
 sides, he was not disheartened in spite of his being alone against so
 many. Then Iravan the conquerer of enemies in great anger wound-
 ed them all with his arrows. And that destroyer of enemies having
 removed weapons from his body, wounded the sons of Suval with
 their own weapons. Then taking up his sharp sword and shield, he
 quickly rushed on foot to slay the sons of Suval 40 The enraged sons
 of Suval carefully encountered Iravan who rushed against them all
 showing the dexterity of his hand. All those princes, riding their
 carriage, could not match him in swiftness of movement and surround-
 ing him on all sides, they desired to capture him. But singly he went
 to them and cut down their limbs 46. They all died of the wounds ex-
 cept one of them who escaped with his life by the great exertion of his

घसमाविष्टा इरावन्तमभिदुता ॥ ४१ ॥ इरावानपि सङ्गेन दर्शयन् पाण्डिलाघवम् ।
 अभ्यवर्त्तत तान् सर्वान् सौवल्गान् बलद्वयिन् ॥ ४२ ॥ लाघवेनाथ चरत सर्वे त
 सुवल्गमजा । अन्तर नाभ्यगच्छन्त चरन्त शीघ्रगैर्हयै ॥ ४३ ॥ मूयिष्ठमघत सख्ये
 स्रग्मदृश्य तत पुन । परिवार्य्य भूर्त्वा सर्वे वृहीतिसुपचक्रसु ॥ ४४ ॥ अथाभ्यास
 गताना स सङ्गेनामिश्रकर्षण । असिहस्ताथापहस्तास्तेषा गात्राण्यकुन्तत ॥ ४५ ॥
 आयुधानि च सर्वथा धाहूनापित् भूषितान् । अपतन्त विद्वत्ताप्ता मृता भूमौ गतासव
 ॥ ४६ ॥ वृषभस्तु महाराज वक्रुधा परिरक्षित । अमुच्यत महायैत्रास्रमाहीरा
 वकर्त्तनात् ॥ ४७ ॥ तान् सर्वान् पतितान् इष्टया सुता दुष्योधनस्तथ अभ्यभा
 पत सकुट्टो राक्षसघोरदर्शनम् ॥ ४८ ॥ आपर्ष्यन्तु महेश्यास मायाधिनमरिन्दमम् ।
 वैरिण भीमसेनस्य ष्यातवक्रुधेन वै ॥ ४९ ॥ पश्यवीर यथाहोप फाल्गुनस्य सुतोचली ।

हुआ उन सत्रके सम्मुख दौड़ा, उस समय उन सब पुत्रों ने अपनी गीघ्र गामी
 सवारियों सेभी उसकी तांत्रताको नहीं पाया, फिर उसको घेरकर मवने पक
 ढना चाहा, परन्तु उस अकूले महाबली नेही पासज.कर उनसब खड्गधनुष धारिणों
 के अर्गोंको काटा और अर्गों के कटतेही वहमव मृतक होकर पृथ्वीपर गिरे । ४६।
 हे महाराज इनमें से एक वृषभही इस घोर रद्र युद्धमें से बची सहायताओं से बचा
 फिर आपका पुत्रइन शुरवीरोंका भराहुआ देखकर, महाक्रोध में भराहुआ महाबली
 शत्रुहन्ता मायावी आर्यश्रृंग राक्षस जो कि बकामुर के बच में भीमसेनका शत्रुथा
 उम से बोला, हे वीर देसों जैसे कि इसपराक्रमी और मायावी अर्जुन के पुत्र ने
 विजयकर्म से सेनाके नाश को किया है सो हे तात तूभी इच्छानुचारी मायावी अस्त्र
 विद्या में कुशलहै। ५०। और पाँढवोंसे शत्रुता करनेवाला है इस हेतुसे इस इरावान् को
 युद्ध में तुम मारो, उसकी आज्ञापातेही वह घोररूप राक्षस बडा सिंहनाद करता
 हुआ अर्जुन के पुत्र के पास गया और दोसहस्र युद्धसे शेष बचेहुए घोड़ों से
 महाबली इरावान् के मारने का अभिलाषी हुआ, फिर अत्यन्त पराक्रमी शत्रुहन्ता

assistants Seeing those warriors dead, your son, much enraged said to the de
 outful rakshas, Aryashung the mighty destroyer of foes who was Bhim's adversary at the time of his killing Valasur —"Look here, brave warrior! You are cunning, skilful in war, capable of going everywhere at will and an enemy to the Pandavas 50 Kill Iraavan in battle as that brave and cunning son of Arjun has conquered and destroyed my armies " At Duryodhan's command, the dreadful rakshas rushed upon Arjun's son with a tremendous roar, wishing to destroy him and his two thousand horse which remained with him after the last battle 55 Dexterous Iraavan the mighty destroyer of foes, checked the rakshas desirous of killing him. Soon the brave rakshas, seeing his advance, artfully conjured up rakshas' horsemen armed with weapons, and meeting the two thousand horsemen of Iraavan both parties des

मायावी विप्रिय घोरं माकार्पान्मे घलक्षयम् ॥ ५० ॥ तच्च कामगमत्तात मायाखे च
 विशारदः । कृतवैरश्च पार्थेन तस्मादेनं रणे जहि ॥ ५१ ॥ चाढमित्येवमुक्त्वा तु राक्षसो
 घोर दर्शन । प्रययौ सिंहादेन यत्रार्जुनसुतो युवा ॥ ५२ ॥ आरूढैर्युद्धकुशलेष्विमल-
 प्रासयोधिभिः । धीरैः प्रहारिभिर्युक्तैः स्वैरनोकैः समारुत ॥ ५३ ॥ ततः शैप्यमहा
 राज द्विसाहस्रैर्हयोत्तमैः । निहन्तुकामः समरे इरावन्त महाबलम् ॥ ५४ ॥ इरा
 वानपि संकुद्धस्त्वरमाणः पराक्रमी । हन्तुकाममभिप्रवृत्तो राक्षसं प्रत्यवारयत् ॥ ५५ ॥
 तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य राक्षस सुमहाबलः । त्वरमाणस्ततो मायां प्रयोक्तुमुपचक्रमे ॥ ५६ ॥
 तेन मायामयाः शृष्टा हयास्तावन्तपवहि । आरूढा राक्षसैर्घोरैः शूलपाट्टिशपाणिभिः
 ॥ ५७ ॥ ते संरब्धाः समागम्य द्विसाहस्राः प्रहारिणः । अचिराद्मयामासुः प्रेतलोकं
 परस्परम् ॥ ५८ ॥ तस्मिंस्तु निहते सैन्ये तापुमौ युद्धदुर्मदौ । संग्रामे व्यवतिष्ठेतां
 यथा वै वृत्रवासवौ ॥ ५९ ॥ प्राद्वचन्तमभिप्रेक्ष्य राक्षसं युद्धदुर्मदम् । इरावान्
 क्रोधसंरब्धो धारयन् सुमहाबलः ॥ ६० ॥ समभ्यासगतस्याजौ तस्य खड्गेन

शीघ्रता करनेवाले इरावान् ने अपने मारने के इच्छावान उस राक्षसको रोका । ५५।
 इसके अनन्तर शीघ्रता से बड़े महाबली राक्षस ने उस आते हुए को देखकर
 मायाको प्रकट किया, अर्थात् उस ने उतनेही मायारूपी घोड़े जिनपर शूल
 पाट्टिश धारण किये हुए घोर राक्षस सवार थे प्रकट किये; फिर उन दो हजार
 क्रोधर प्रहार करनेवालों ने सम्मुख होकर थोड़ेही समय में परस्पर युद्ध करके
 एकने प्रकटको प्रेतलोकमें भेजा; उस सेनाके मरने पर वह युद्ध में दुर्मद दोनों ऐसे
 युद्ध करने लगे जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रने युद्धकिया था, उस युद्ध में दुर्मद
 राक्षस को सम्मुख आया हुआ देखकर महाबली इरावान् बड़े क्रोधसे उसके ऊपर
 दौड़ा । ६०। और उस निर्बुद्धी के धनुषको अपने खड्ग से काटकर पांच प्रकार के
 पांच वाणों से व्याकुल किया, फिर वह अपने धनुषको टूटा जानकर बड़े क्रोधसे
 इरावान् को अपनी माया से मोहित करके बड़ी तीव्रतासे आकाश में पहुँचा, इस

troyed each other. On the destruction of the two armies, the two warriors fought like Indra and Vritrasur. Seeing the brave rakshas before him, brave Iravan rushed upon him, and cutting down his bow with his sword he wounded him with five arrows of five sorts⁵⁷. Finding his bow broken, in great anger he deprived Iravan of his reasoning and ascended in the air with great rapidity. Iravan too, followed him in mid air and cut down his limbs. That best of rakshases, wounded again and again became whole of body and youthful in appearance like Iravan who knew all Dharm and was invincible and beautiful. The *maya* produced from the bodies of rakshases is youthful and assumes any form at will. Thus the body of that rakshas, cut again and again, became whole. When Iravan cut the body of the brave rakshas with arrows and axes again and again, he assumed a form

राजंस्तव तेषां च संकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्नुनथापि निहतं पुत्रमौरस्म । जघान समरे
 शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तावका राजन् सृष्ट्याश्च सहस्रतः ।
 जुहुवतः समरे प्राणाभिजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विक्रवा धिरया श्चिद्रक्षा
 मुक्ताः । बाहुभिः समयुध्यन्तं संम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज
 घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे
 सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोऽप्य हयास्तया ॥ ८६ ॥ तत्रमारुत
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥
 तथैव भीमसेनस्य पार्षतेऽप्य च भारत । रौद्रमासीद्रणे युद्धं सात्यकस्य च धन्विनः ॥ ८८ ॥
 दृष्ट्वा द्रौणस्य चिक्रातं पाण्डवान् भयमा विदात् । एक एव रणे शक्योनिहन्तु सर्वं
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः पृथिव्या शूरैर्योयमत्रैः समावृतः । इत्यग्रन् महा राज
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ वसन्ताने तथा रौद्रे सग्रामे भरतर्षभ । उभयोः सैनयोः शूरा
 नामुप्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ आधिष्ठा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहाबलाः । तावका पाण्डवे

इसी रीति से उस युद्धमें प्राणों को होमकर सृंजी लोगों ने आपके शूरवीरों को पर-
 स्पर में मारा, नंगोशिर कवचों से रहित रथहीन दृष्टे धनुष परस्परमें भिड़े हुये शूरवीर-
 भुजाओं से युद्ध करने लगे, इसी प्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये पर-
 न्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी बाणोंसे महाराथियोंको मारा । ८५। उनभीष्मजी के हाथमें
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े नवार और पदाती मार गये, हे भरत
 वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको
 जाना और इस प्रकार में युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्दार सात्यकीकाभी
 युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार
 नेको समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों ममेत कैसे न होंगे हे
 भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहानि पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में अस
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षमभादि अनेक प्रकारके घोर

Bhishm' Seeing the great prowess of Bhishm, we thought him to
 be equal in strength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrishta-
 dyumn and Satyaki the great archer fought very bravely. At the
 sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so
 terrified that they thought him alone capable of destroying all the ar-
 mies and was sure to destroy them all with the assistance of the
 famous warriors of the world. When the battle was thus raging, the
 warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those
 of the Pandavas fought hard in the manner of rashshas and others.

राजंस्त्व तेषां च संकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्नर्जुनथापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे
 शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तापदा राजन् सृष्ट्याश्च सहस्राः ।
 जुह्वतः समरे प्राणास्त्रिजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशो विक्रवचा विरया श्लिष्टशका
 मुंका । बाहुभिः समयुध्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज
 घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां, पाण्डवान् परतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे
 सैन्ये बहवो मानया हता । दन्तिनः सादिनैव रथिनोश्च हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपदयाम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥
 तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्य च भारत । रौद्रमासीद्रणे युद्धं सात्यकस्य च धन्वित ॥ ८८ ॥
 दृष्ट्वा द्रोणस्य विक्रान्त पाण्डवान् भयमा विशत् । एक एव रणे शकोनिहन्तु सर्व
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुन युधिष्ठा शूरैर्योधयते समाहृतः । इत्यग्रन् महाराज
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ वत्समाने तथा रौद्रे सत्रामेभरतर्षभ । उभयोः सेनयोः शूरा
 नामृष्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ धाविष्ठा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहाबलाः । तावका पाण्डवे

इसी रीति से उस युद्ध में प्राणों को होमकर सृजी लोगों ने आपके शूरवीरों को पर-
 स्पर में मारा, नंगोशिर कवचों से रहित रथहीन दृष्टे धनुष परस्पर में भिड़े हुये शूरवीर-
 भुजाओं से युद्ध करते लगे, इसी प्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये पर-
 न्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी वाणोंसे महाराथियोंको मारा ॥ ८५ ॥ उनभीष्मजी के हाथमे
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारे गये, हे भरत
 वंशी वहाँ हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको
 जाना और इस प्रकार मे युद्ध में भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्धार सात्यकीकाभी
 युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार
 नेको समर्थ है तो सवपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे
 भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्ध होने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में अस्त्र
 हिष्णु होकर लुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishm' Seeing the great prowess of Bhishm, we thought him to
 be equal in strength to Indra In the same manner, Bhimseh, Dhrishta-
 dyumn and Satyaki the great archer fought very bravely At the
 sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so
 terrified that they thought him alone capable of destroying all the ar-
 mies and was sure to destroy them all with the assistance of the
 famous warriors of the world When the battle was thus raging, the
 warriors on both sides fought recklessly Your warriors and those
 of the Pandavas fought hard in the manner of raksasas and others.

राजस्तथ तेषांच सकुले ॥ ८१ ॥ अज्ञानन्तु नथापि निहत पुत्रमौरसम् । जवान समरे
 शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिण ॥ ८२ ॥ तथैव तावका राजन् ख्याय्य सहस्रदा ।
 जुह्वयत समरे प्राणाभिजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विक्रवा विरया ऋषका
 मुक्ता । वाहुभिः समयुध्यन्त सम वेता परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज
 धान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरतप ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे
 सैन्ये बहवो मानया हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रमारत
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपद्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥
 तथैव भीमसेनस्य पार्वतस्यच भारत । रौद्रमासोद्ग्रेणयुद्ध सात्यकस्यच घञ्चिन ॥ ८८ ॥
 दृष्ट्वा द्रोणस्य विक्रांत पाण्डवान्भयमा विशन् । एक एव रणे शकोनिहन्तु सर्व
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुन पुंथिया शूरेयोधयाते समावृत । इत्यग्रन् महा राज
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ वत्तमाने तथा रौद्रे सग्रामे भरतपम । उभयोः सेनयोः शूरा
 नानृप्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ आविष्टा इव युध्यन्ते रत्नोन्मामहावला । तावका पाण्डवे

इसी रीति से उत्तयुद्धमें प्राणों को होमकर सृजी लोगों ने आपके शूरवीरों को पर-
 स्पर में माग, नगेशिर कवचों से रहित रथहीन दूरे धनुष परस्परमें भिड़ेद्वये शूरवीर
 भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कपति द्वये पर
 स्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी वाणोंसे महारथियोंको मारा । ८५। उनभीष्मजी के हाथसे
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत
 वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको
 जाना और इस प्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्दार सात्यकीकाभी
 युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार
 नेको समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों ममेत कैसे न होंगे हे
 भरतपम इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में अस
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरसत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to
 be equal in strength to Indra In the same manner, Bhimsen, Dhrishtady-
 dyumn and Satyaki the great archer fought very bravely At the
 sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so
 terrified that they thought him alone capable of destroying all the ar-
 mies and was said to destroy them all with the assistance of the
 famous warriors of the world When the battle was thus raging, the
 warriors on both sides fought recklessly Your warriors and those
 of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

राजस्तव तेषां च संकुले ॥ ८१ ॥ अजातन्तर्जुनश्चापि निहतं पुत्रमौरसम् । जयान समरे
 शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तावदा राजन् सृष्टयाश्च सहस्रशः ।
 जुहुवतः समरे प्राणाञ्जिजघ्नुरिनरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशो विक्रवचा विरया श्छिन्नका
 मुंका । वाङ्मनिः समयुष्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगर्भीष्णो निज
 यान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे
 सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोश्च हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रमारुत
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपदयाम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥
 तथैव भीमसेनस्य पार्यतस्य च मारुतः । रौद्रमासौद्रिणे युद्धं सात्यकस्य च धन्विनः ॥ ८८ ॥
 दृष्ट्वा द्रोणस्य चित्रांतं पाण्डवान् भयमा विदात् । एक एव रणे शक्तो निहन्तु सर्वं
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः पृथिव्या शूरैर्योद्यतां समाहृतः । इत्यग्रन्-महाराज
 रणे द्रोणेन पीडिताः ॥ ९० ॥ वसन्तमाने तथा रौद्रे संग्रामे भरतपते । उभयोः सेनयोः शूरा
 नामृष्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ आधिष्ठा इव युष्यन्ते रक्षोमूनामहायलाः । तावकाः पाण्डवे

इसी रीति में उन युद्धमें प्राणों को होमकर सृजी लोगों ने आपके शूरवीरों को पर-
 स्पर में मारा, मंगेशिर कवचों में रहित रथहीन दृष्टे धनुष परस्परमें भिड़े हुये शूरवीर-
 भुजाओं से युद्ध करने लगे, इसी प्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये पर-
 न्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी चाणोंमें महारथियोंको मारा । ८५। उनभीष्मजी के हाथमें
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत स रथ हाथी घोड़े तवार और पदाती मारे गये, हे भरत
 वंशी वही हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको
 जाना और इस प्रकार में युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्दार सात्यकीकाभी
 युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार
 नेको समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों ममेत कैसे न होंगे हे
 भरतपते इसरीति में घोरयुद्ध होने पर दोनों औरके शूरवीर लोग परस्पर में अस
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षमभादि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to
 be equal in strength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrish-
 dyumn and Satyaki the great archer fought very bravely. At the
 sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so
 terrified that they thought him alone capable of destroying all the ar-
 mies and was sure to destroy them all with the assistance of the
 famous warriors of the world. When the battle was thus raging, the
 warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those
 of the Pandavas fought hard in the manner of rāshshas and others.

राजंस्तव तेषां च संकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्नर्जुनथापि निहतं पुत्रमौरसम् । जवान समरे
 गुरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तापका राजन् सृष्ट्याश्च सहस्राः ।
 जुहुवतः समरे प्राणाभिजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विक्रवचा धिरया श्चिद्रथका
 मुंका । वाहुभिः समयुध्वन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज
 धान महारथान् । कल्पयन् समरे सेनां पाण्डयानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे
 सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनैव रयिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रमारुत
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥
 तथैव भीमसेनस्य पार्षतेऽप्यच भारत । रौद्रमासीद्रणे युद्धं सात्यकस्य च धन्विनः ॥ ८८ ॥
 एष्ट्वा व्रीणस्य विक्रांत पाण्डवान्भयमा विशत् । एक एव रणे शकोनिहन्तु सर्वं
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः पृथिव्या शूरैर्योद्यताते समावृतः । इत्यग्रन् महा राज
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ वत्समाने तथा रौद्रे संग्रामं भरतर्षभ । उभयोः सेनयोः गुरा
 नामृष्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ धाविष्ठा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहाबलाः । तापका पाण्डवे

इसी रीति से उस युद्धमें प्राणों को होमकर सृजी लोगों ने आपके शूरवीरों को पर-
 स्पर में घारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन दृष्टे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूरवीर-
 भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपति हुये पर-
 न्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी वाणोंसे महाराथियोंको मारा । ८५। उनभीष्मजी के हाथसे
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत
 वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको
 जाना और इस प्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्दार सात्यकीकाभी
 युद्धमहाभयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार
 नेको समर्थ है तो सत्रपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों ममेत कैसे न होंगे हे
 भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्ध होने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में अस
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma: Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to be equal in strength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrishtadyumna and Satyaki the great archers fought very bravely. At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capable of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world. When the battle was thus raging, the warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

राजंस्तथ तेषां च संकुले ॥ ८१ ॥ अजातकुंभश्चापि निहतं पुत्रमौरसम् । जवान समरे
 शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तावदा राजन् सुयाथ सहस्रशः ।
 जुह्वतः समरे प्राणाभिज्जघ्नुरिनरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विक्रवचा विरया श्लिष्टप्रका
 मुंका । वाहुभिः समयुध्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिर्भीष्मो निज
 घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे
 सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥
 तथैव भीमसेनस्य पार्यतस्त्रच भारतः । रौद्रमासीद्रणे युद्धं सात्यकस्य च धन्विनः ॥ ८८ ॥
 दृष्ट्वा द्रौणस्य विक्रांतं पाण्डवान्मयमा विशत् । एक एव रणे शक्तोनिहन्तु सर्वं
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः पृथिव्या शूरयोधमाते समावृतः । इत्यत्रन्-महाराज
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ यत्समाने तथा रौद्रे संग्रामेनरतपम । उभयोः सेनयोः शूरा
 नामृष्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ धाधिष्ठा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहाबलाः । तावकाः पाण्डवे

इसी रीति से उस युद्धमें प्राणों को होमकर मृजी लोगों ने आपके शूवीरों को पर-
 स्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन दृष्टे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूवीर-
 भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये पर-
 न्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी वाणोंमें महाराथियोंको मारा ॥८५॥ उनभीष्मजी के हाथमें
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत
 वंशी वहाँ हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको
 जाना और इस प्रकार में युद्धमें भीमसेन पृष्टघुम्न और धनुद्धर सात्यकीकाभी
 युद्धमही भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार
 नेको मर्पथ है तो सबपृथ्वी के बड़े पराक्रमी शूवीरों ममेत कैसे न होंगे हे
 भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूवीर लोग परस्पर में अत
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षमआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma' Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to
 be equal in strength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrishta-
 dyumn and Satyaki the great archer fought very bravely. At the
 sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so
 terrified that they thought him alone capable of destroying all the ar-
 mies and was sure to destroy them all with the assistance of the
 famous warriors of the world. When the battle was thus raging, the
 warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those
 of the Pandavas fought hard in the manner of raksasas and others.

तादृशीं मायां राक्षसस्य बुरात्मन ॥ ७१ ॥ इरावानपि संकुञ्चो मायां स्रुं प्रचक्रमे ।
 तस्य क्रोधाभि भूतस्य समरेषु निवर्तिन ॥ ७२ ॥ योन्वयो मातृकस्तस्य स पत्रमभि
 पेदिवान् । स नागैर्बहुनी राजन् निराञ्चान् संवृतो रणे ॥ ७३ ॥ दधार सुमहदूपमन्त्र
 इव भोगवान् । ततो बहुविधनागैश्चाद्यामास राक्षसम् ॥ ७४ ॥ छाद्यमानस्तु नागैः
 स ध्यात्वा राक्षसपुंगवः । सौपर्ण रूपमास्थाय भक्षयामास पद्मनाम् ॥ ७५ ॥ मायया
 भक्षिते तस्मिन् नन्वये तस्य मातृके । विमोहित मिरावन्ते न्यहनद्राक्षसोसिना ॥ ७६ ॥
 सकुण्डले समकुटं पद्मेन्दुसदशप्रभम् । इरावत शिरो रक्ष पातयामास भूतले ॥ ७७ ॥
 तस्मिन्स्तु निहते धीरे राक्षसेनार्जुनात्मजे । विशोका समपद्यन्त धार्तराष्ट्रा सराजकाः
 ॥ ७८ ॥ तस्मिन् महति संग्रामे तादृशे भैरवे पुनः । महान् व्यतिकरो घोरः सेनयोः
 समपद्यत ॥ ७९ ॥ गजा हयाः पदाताश्च विमिश्रादन्ति मिहनाः । रथाश्वा दन्तिनश्चैव
 पत्तिमिस्तत्र सूदिताः ॥ ८० ॥ तथा पत्तिरथौचादच हयाश्च ध्रुवो रणे । रथिभिर्निहतौ

हे राजा बहुतसे सर्पोंसे युक्त उस इरावान ने शेषनाग के समान अपने महान् रूपा
 को धारण किया और अनेक नागों से उसराक्षसको घेरा, फिर उस राक्षसों में
 श्रेष्ठने अपना गडरूप धारण करके उनघोररूप सर्पोंको खाया। ७५। माया से उसके
 ननसारी सर्पोंके भक्षणहोजानेपर वह इरावान अचेत हुआ फिर उस अत्यन्त मोहित
 इरावान को राक्षस ने खड्ग से मारकर उसके कुंडल मुकुटधारी चन्द्रमाके समान
 प्रकाशमान शिर को पृथ्वीपर गिराया उसराक्षसके हाथ से उस इरावान के मरने
 पर धृतराष्ट्र के सब पुत्र शोकसे निवृत्त होकर बड़े प्रसन्नहुए, फिर उस भयकारी
 महायुद्ध में दोनों सेनाओं का घोर नाश होना प्रारंभहुआ रथ हाथी घोड़े पदाती
 सवार वह सब परस्पर में युद्ध कर करके और पत्तियों के हाथों से नाशको
 प्राप्तहुये। ८०। इसी प्रकार उसतुमुल युद्ध मेंआपके और उन्होंके अनेक घोड़े पति
 और रथियों के समूह रथियों के हाथों से मारे गये, और उस पुत्रको मृतक न
 जाननेवाले अर्जुन ने भी भीष्मजी के रक्षा उन शूरवीर राजाओं को मारा

Iravan by the rakshas all the sons of Dhritrashtra relieved of sorrow,
 were much pleased. Then in that dreadful war a terrible destruction
 of armies began. Chariots, elephants, horses and foot-soldiers were
 destroyed by the warriors. In that dreadful battle the horses, war-
 riors and charioteers of both sides were destroyed by the charioteers.⁸⁰
 Not knowing of the death of his son, Arjun too, destroyed the princes
 who protected Blushm. The Sinjayas, sacrificing their lives in that
 great battle, destroyed your warriors. Warriors destitute of helmets,
 armours, chariots and bows, fought against one another with fists.
 Seeing the Pandya armies, mighty Bishm killed the warriors with
 his arrows piercing the vital parts.⁸⁵ Many charioteers, elephant ri-
 ders, horse and foot soldiers of Yudhishtir's army were destroyed by

राजस्तव तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्नुत्तथापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे
 शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तावदा राजन् सुश्याश्च सहस्राः ।
 जुह्वतः समरे प्राणाभिजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशो विक्रवा विरया श्लिष्टशका
 मुक्ताः । चाहुभिः समयुष्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज
 घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे
 सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोश्च हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रमारुत
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपद्व्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥
 तथैव भीमसेनस्य पापैतस्यच भारत । रोद्रमासोद्गणेयुद्धं सात्यकस्यच धन्विनः ॥ ८८ ॥
 दृष्ट्वा द्रोणस्य विक्रान्तं पाण्डवान्भयमा विशत् । एक एव रणे शकोनिहन्तु सर्व
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः प्रथिया शूरैर्वीरैश्चैव समावृतः । इत्यग्र-महाराज
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ वर्तमाने तथा रोद्रे संग्रामेमरुतपम । उभयोः सेनयोःशूरा
 नामृष्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ धाविष्ठा इव युष्यन्ते रक्षोभूतामहाबलाः । तावकाःपाण्डवे

इसी रीति में उसयुद्धमें प्राणों को होमकर मृजी लोगों ने आपके शूरीरों को पर-
 स्पर में मारा, नगेशिर कवचों से रहित रथहीन दूरे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूरीर-
 भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपति हुये पर-
 स्पर भीष्मजी ने मर्म भेदी चाणोंसे महाराथियोंको मारा ॥८५॥ उनभीष्मजी के हाथसे
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती पारेगये, हे भरत
 वंशी वही हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको
 जाना और इस प्रकार में युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्दार सात्यकीकाभी
 युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार
 नेको समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों ममेत कैसे न होंगे हे
 भरतर्षभ इसरीति से वारयुद्ध होने पर दोनों ओरके शूरीर लोग परस्पर में अत
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma: Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to
 be equal in strength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrishta-
 dyuma and Satyaki the great archer fought very bravely. At the
 sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so
 terrified that they thought him alone capable of destroying all the ar-
 mies and was sure to destroy them all with the assistance of the
 famous warriors of the world. When the battle was thus raging, the
 warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those
 of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

याश्च संरब्धास्तात धन्विनः ॥ ९२ ॥ नस्म पश्यामहे कंचिन् प्राणान्यःपरिरक्षति ।
संग्रामे दैत्यसंकाशे तन्मिन् वीरवरक्षये ॥ ९३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भूमिवधपर्वणि अष्टमदिवसयुद्धे
एकनवतितमोऽध्यायः ॥ ९१ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । इरावन्तन्तु निहत इष्ट्वा पायांमहारथाः । संग्रामे किमकुर्वन्त
तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । इरावन्तन्तु निहतं संग्रामे वीक्ष्यराक्षस ।
व्यनदत् सुमहानादं भ्रमसेनिर्घटोत्कचः ॥ २ ॥ नदतस्तस्य शब्देन पृथिवीसागरा-
म्बरा । स पर्यतवना राजेश्चाल सुभृशं तदा ॥ ३ ॥ अन्तरीक्षं दिशश्चैव सर्वांश्च
प्रदिशस्तथा । तं श्रुत्वा सुमहानादं तव सैन्यस्य भारत ॥ ४ ॥ ऊरुस्तम्भ सममवद्रे
पयुः स्वेद पवच । सर्वं पय महाराज तावका दीनचेतसः ॥ ५ ॥ सर्वतः समवेष्टन्त
युद्धं वरते हँ इमने उस देव दानवों के युद्धकी समान संग्राममें किसी को ऐसा न
देखा जो अपने प्राणों की रक्षाकरताहो ९३ ॥

अध्याय ९२ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें इरावान् को मरा देखकर पांडवों ने क्या किया उस
को मुझ से कहो, संजयबोले कि भीमसेन का पुत्र घटोत्कच राक्षस उस इरावान्को
युद्धमें मराहुमा देखकर महाध्वनि से गर्जा, उसकी गर्जना से पर्वत और समुद्रों
समेत पृथ्वी चलायमान हुई, और दिशा विदिशाओं समेत आकाश भी शब्दायमान
हुआ और उस महाघोर शब्दको सुनकर आपकी सेना में भी सबको मस्वेद हुआ
और सब धीर महाखेदित होकर सब ओरसे ऐसे भयभीत हुए जैसे कि सिंहसे
भयभीत हाथी होते हैं, उम राक्षस ने इसघोर शब्दको करके, महाज्वलित रूप

We saw none caring for his life in that battle like that of the gods and
the danavas 93

CHAPTER XCII

"Tell me Sanjaya," asked Dhritrashtra, "how the Pandavas
behaved at seeing Irawan dead." "Bhim's son, Ghatotkach the
rakshasa," replied Sanjaya, "roared a loud roar at the death of
Irawan. The earth with her mountains and seas trembled with his
roar, and all the directions in the sky rang with the echo. The
bodies of your warriors were covered with sweat to hear that dread-
ful sound. The warriors of your army were afraid of that sound as
elephants are at the roar of a lion. Having made that roar the
rakshasa lifted up his spear, and in a dreadful form, accompanied by
armed rakshasas, enraged like Death, began to strike. Seeing that

सिंहाद्रीता गजा इव सुमहानाद्यं निर्घातमिव राक्षसः ॥ ६ ॥ ज्वलितं शूलमुद्यम्य रूपं
 कृत्वा विभीषणम् । नानारूपप्रहरणैर्द्वैतो राक्षसपुङ्गवे ॥ ७ ॥
 आजघान सुसं क्रुद्धः कालान्तक्यमोपमः । तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य संक्रुद्ध
 भीमदर्शनम् ॥ ८ ॥ स्वं बलञ्च भयात्तस्य प्रायशो विमुखीकृतम्
 । ततो दुर्योधनो राजा घटोत्कचमुपाद्रवत् ॥ ९ ॥ प्रगृह्य विपुलं चापं सिंह
 बह्वयनदन्मुहुः । पृष्ठतोनुयथो चैनं प्रवद्विः पर्वतोपमं ॥ १० ॥ क्रुद्धजरेर्दशसा-
 दैर्त्वेर्द्वानामधिपः स्वयम् । तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य गजानीकेन संवृतम् ॥ ११ ॥ पुत्रंतय
 महाराज क्षुफोप स निशाचरः । ततः प्रववृते युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् ॥ १२ ॥
 राक्षसानाञ्च राजेन्द्र दुर्योधनबलस्यच । गजानीकञ्च सम्प्रेक्ष्य मेघवृन्दमिवाद्येतम्
 ॥ १३ ॥ अश्वधावन् सुसंक्रुद्धा राक्षसाः शस्त्रापाणयः । नदन्तो विविधान्नादान्मेघा
 इव सन्धिधृतः ॥ १४ ॥ शरशकपृष्टिनाराचैर्निग्नन्तो गजयोधिनः । मिन्दिपालैस्तथ
 शूलको धारण कर उग्ररूप होके नाना प्रकार के रूप और शस्त्रधारी राक्षसों को
 सायलिये काल मृत्यु के समान क्रोधी होकर मारना प्रारंभकिया इसक्रोधयुक्त भया
 नक रूप राक्षसको आता देखकर, और उसके भयसे अपनी सेना का मुख फेरना
 देखकर राजा दुर्योधन बड़े भारी धनुषको लेकर सिंह के समान गर्जना करता
 हुआ घटोत्कचके सम्मुख गया इसके पीछे वंगदेशियों का राजा चलते हुए पर्वता
 कार दशहजार हाथियों को सायलेकर गया उस हाथियों की सेना समेत
 आपके पुत्रको देखकर वह रक्तसमहाक्रोधाग्निरूप होगया ॥११॥ फिर रोमहर्षण
 महातुमुल युद्ध आरिहुआ, उस समय राक्षसों से और आपकी सेनासे युद्धहोनेलगा
 फिर बादलों के समूहों के समान युद्ध में प्रवृत्त हाथियों की सेना को देखकर, विजली
 से अनेक शस्त्रों को धारण किये हुए बादलों के समान गर्जनाकरते हजारों राक्षस
 सम्मुखदाँडे, बाण चरली दुधाराखद्ग नाराच मिन्दिपाल शूल मुद्गर और परशो

angry rakshas of dreadful visage coming towards him and seeing as well
 the return of his army by his fear, Prince Duryodhan took up his
 heavy bow and with a lion's roar faced Ghatotkach Then the king
 of Bang with ten thousands of elephants like moving hills, went
 to the help of your son. Seeing Duryodhan accompanied by that
 army of elephants, the rakshas became red like fire with anger. 11.
 Thereupon a furious battle ensued between your armies and the
 rakshases Spread like a mass of clouds was the army of elephants to
 which the rakshases came armed with weapons like lightning and
 roaring like thunder. Arrows, spears, double edged swords, naraches,
 Bhindpals, darts, clubs and battle axes were used by the rakshases
 to destroy the riders and hills and trees to destroy the elephants.
 We saw, O king, elephants with heads broken by the rakshases,
 falling down on earth with the loss of blood. When the elephants,

शूलैर्मुहुरं सपरश्वधं ॥ ११ ॥ पर्वताग्रैश्च वृक्षैश्च निजघ्नस्ते महागजान् । भिन्नकुम्भान् विरुधिरान् भिन्नगात्राश्च घारणान् ॥ १६ ॥ भूपद्वयम् महाराजं बध्यमानान्निशाचरं । तेषु प्रक्षीयमाणेषु भग्नेषु गजयोधियु ॥ १७ ॥ दुर्योधनो महाराजराक्षसान् समुपाद्रवत् । अमर्षवशमापन्नस्त्यक्त्वा जीवितमात्मन ॥ १८ ॥ सुमोच निशितान् घाणान् राक्षसेषु परनय जघान च महेश्वास प्रधाना स्तत्र राक्षसान् ॥ १९ ॥ सकुड्वा भरतश्छत्र पुत्रा दुर्योधनस्तथ । बेगवन्त महाराद्राघपुञ्जिह्वप्रमाथिनम् ॥ २० ॥ शरैश्चतुभिश्चतुरा निजघान् महाबल । तत पुनरमेयात्मा शरधर्षे दुरासदम् ॥ २१ ॥ सुमोच भरतश्छत्र निशाचरवलं प्रति । तत्तु दृष्ट्वा महत्कर्म तव पुत्रस्य मारिष ॥ २२ ॥ ऋधनाग्निं प्रज्ज्वाल्य भूमसेनिर्महाबल ।

इत्यादि शस्त्रोंने हाथियों के सवागों को मारकर उन राक्षसों ने पर्वत और वृक्षा से हाथियों को मारा हे राजा हमने राक्षसों के हाथसे दृष्टेहुए मत्तकोंसमेत हाथियोंको रुधिर स रविन होकर मरा हुआ देखा उन हाथी और हाथीवानों के पराजित होने पर, महातोषरूप होके दुर्योधन आने जीवनकी आशाका त्यागकर उन राक्षसों के सम्मुखगया हे शत्रुमर्षी उस वहे धनुषधारी दुर्योधन ने वहाँ जाकर अपने तीक्ष्ण शरों की वर्षासे वहे २ राक्षसों को मारकर अपने महातीत्र चारवाणों से उसमहाभयकर घोररूपवाले घटोत्कचको घायल किया ॥ २१ ॥ फिर वह राक्षस इन्द्रधनुष के समान अपने धनुषको खिंचकर, वषेधमे दुर्योधन के सम्मुख गया उसमृत्यु समान रानस वो आता हुआ देखकर आपका पुत्र दुर्योधन पीडार्मान् नहीं हुआ तब अत्यन्त रक्तनेत्र कोपसे युक्त वह राक्षस इसमे कइने लगा कि अत्रमे उन अपने माता पितामे अमृण होजाऊगा जिनको कि तुम्हानिर्दयी ने वनवासी किया, और

and then riders were vanquished Duryodhan much enraged and despairing of his life fixed the rakshas and O destroyer of foes the great archer Duryodhan having destroyed great the rakshas with the shower of his arrows wounded Ghatotkach the dreadful rakshas 21 Then drawing his bow he slew of India the rakshas rushed upon Duryodhan Your son Duryodhan was not disheartened at the sight of the rakshas coming upon him like Death and the latter with eyes flood red in anger said — 'Yes I shall be able to satisfy the debt of my parents when by your cruelty you sent into exile and deceitfully won my grating Smul wretch it was you who brought Duryodhan into court while she was in her natural course wearing the garland Your well wisher foolish Javadiath disregarding my parents absconded

स विस्कार्य मद्दद्यापमिन्द्राशनिसमप्रभम् ॥ २३ ॥ अभिदुद्राय पेगेन दुःख्योघन
मरिदमम् । तमापतन्तमुद्वीक्ष्य कालसृष्टमिवान्तकम् ॥ २४ ॥ न विज्यथे महाराज पुत्रो
दुःख्योघनस्तत्र अथैनमत्रवीत् क्रुद्ध क्रोधसरकलोचन ॥ २५ ॥ अद्यानृण्य गमिष्यामि
पितृणां मातुरेव च । ये त्वया सुनुशसेन दीर्घकालं प्रवासिता ॥ २६ ॥ यच्च ते
पाण्डवाराजं लल्लुते पराजिता । यच्च त्र द्रौपदी कृष्णा एकवन्त्रा रजस्वला ॥ २७ ॥
समामानीय दुर्बुद्धे बहुधा फटेशिता त्वया । तत्र च प्रियकामेन आश्रमस्या दुरात्मना
॥ २८ ॥ सैन्धवेन परामृष्टा परिभूय पितॄन् मम । एतेषामपमानानामन्येषाव कुलाश्रम
॥ २९ ॥ अन्तमय गमिष्यामि यद्वि नोन्मुख्यसे रणे । एव मुक्त्वा तु हेडिम्नो महद्वि
स्कार्य कार्मुकम् ॥ ३० ॥ सन्दश्य दर्शनरौष्ट सुक्किणी परिललिह्य महता शरवर्षेण
दुःख्योघनमवाकीरत् । पर्वतं वारिधाराभि प्रावृषाव बलाहक ॥ ३१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मव्रजपर्वणि द्वावदशे

द्विन्वविंशतितमोऽध्यायः ॥ ९२ ॥

संजयदवाच ततस्तथाप्यर्तुदु सहदान्न वैरपि । द्वाययु धिराजेंद्रो यद्यार्च्य
महाद्विप ॥ १ ॥ तत क्रोधसमा विष्टोनि श्वस्तत्रिव्रजगः । सशयं परमं प्रात
पुत्रन्मोमरतर्षभ ॥ २ ॥ सुमोचनिशितास्ती क्षणाशारात्वाभ्यं चर्षिशर्ति । तेऽपतन्स

छलसे घूतमें जीता और पापात्मा निर्वुद्धी एकसूत्रा रजस्वला कृष्णाद्रौपदी को जो
तुमने सभा में लाकर महादुःखित किया और तेरे अर्थ चाहनेवाले दुर्बुद्धी जयद्रथ
ने मेरे पितालोगों को निरादर करके आश्रम में नियत द्रौपदी को पकड़ कर
हरण किया हे कुलध्वंसी महानीच उन अपराधों का फल मैं अब तुम्हको देकर
उनका प्रतीकार पाऊंगा, फिर आठों को चबाकर घड़ोत्वक ने धनुष को खंचकर
मारे बाणों के दुःख्योघन को ऐसे ढकादिया जैसे कि वर्षा ऋतु में बादल जलकी
धाराओं से पर्वत को ढक देते हैं ॥ २९ ॥

अध्याय २३ ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर राजा दुःख्योघन ने दानवोंसे भी असह्य उन
बाणों की वर्षा को ऐसे सहा जैसे कि बड़ाहाथी पानी की वर्षा को सहलता है हे
भरतवंशी इसक पीछे क्रोधमें पूर्ण सर्ष की समान आसल्लेते हुए आपके पुत्रने वड़े

with Draupadi from the hermitage into the forest Mean wretch,
curse of thy family, I shall now give you the reward of your wicked
deeds Then biting his lips in anger, Ghatotkach drew his bow and
covered Duryodhan with his arrows as clouds hide a hill with the
shower of rain " 29

CHAPTER XCIII

Sanjaya said — ' Prince Duryodhan bore the shower of arrows,
unbearable by Daityas, as an elephant stands under a shower of rain.
Then filled in anger and sighing, you son in a great suspense, dis

हसाराजस्तस्मिन् राक्षसपुगवे ॥ ३ ॥ आशी विपाद्भवद्वा पर्वते गंधमादने-। सते
 विंद्म स्रघ्न रक्तप्रभिन्नश्चकुजर ॥ ४ ॥ दध्नेमतिविनाशाचराह सपि शिताशन
 । जग्राह च महा शक्ति गिरोणाम दृष्टिर्षी ॥ ५ ॥ सप्रदीप्तामहोत्काभा मशाने
 ज्वलिताभिः । समुदिच्छन्महा बाहुर्जिं घासुस्तन यंतव । ६ ॥ तामुद्यताम मित्रे
 ह्यवंगानाम धिपस्त्रयन् । कुजर गिरिशकाशराक्षसं प्रत्यचोदयत् ॥ ७ ॥ सनाग
 प्रवरणाजौ वलिना शीघ्रगामिना । ततो दुर्योधनरथस्तं मार्गं प्रत्यघर्तत् ॥ ८ ॥
 रथच वारयामास कुजरेण सुतस्थते । मार्गमावारित दृष्ट्वा राक्षसवंगेनधी मता
 ॥ ९ ॥ घटोत्कचो महाराज क्रोधस रक्तलोचन । उद्यतांता महा शक्तिं तस्मिं
 श्चिक्षेपवारण ॥ १० ॥ सतयभिहतो राजंस्तेन बाहुप्रमुक्तया । संजातरुधिरौ तपीड
 पपात चममारच ॥ ११ ॥ पतत्यधगजे चापि वंगानामीश्वरोबली । जवेनसम भिद्र

सन्देहसे युक्तहोकर पच्चीस नाराचोंको छोड़ा वह नाराच बाण उस राक्षस परपैसे
 जाकर गिरे, जैसीकि गन्धमादन पर्वतपर क्रोधयुक्त सर्प गिरतेहैं उन बाणोंसे घायन
 मद्वाले हाथीके समान रुधिरगिरते, उस मांसाहारी राक्षस ने राजा के मारने
 का विचार किया और पर्वतोंके चीरने वाली घड़ी बरछी को लिया । ५। फिर आपके
 पुत्र के मारने के लिये उस महाबाहु ने उस महाघोर उलकाके समान प्रकाशमान
 बरछी को उठाया उस समय महाशीघ्रता करने वाले वंगदेशी राजाने उस उठाई
 बरछी को देखकर पर्वताकार अपने हाथी को उस राक्षस के ऊपर चलाया और
 उस शीघ्रचलेनवाले हाथी के द्वारा आप उस मार्ग में वर्तमान हुआ जिधर दुर्योधन
 का रथया अर्थात् उस हाथी से आपके पुत्र के रथको गुप्तकरदिया उस वंगदेशके
 राजा करके मार्गको बन्द देखकर घटोत्कच ने महा क्रोधितहोकर उस उठाई हुई
 बरछी को हाथीपर फेंका । १०। उस बरछी के प्रहार से वह हाथी महापीड़ित होकर

charged twenty five arrows which fell over the rakshas like angry
 serpents on Gandhamadna hills Wounded by those arrows and en-
 raged like a mad elephant with the blood dropping down, the can-
 nibal rakshas thought of destroying the king and took up a spear
 which could pierce a hill 5. Then that brave warrior raised up the
 dreadful spear, bright like fire, to kill your son Seeing this the king
 of Bang rushed against Bhum with his elephant huge like hill and
 came between him and the chariot of Duryodhan. Seeing the king
 of Bang impeding the way, Ghotkch in a rage hurled the spear at
 the elephant which struck by the dart fell down dead by the
 wound The king of Bang hastened to jump down from the falling
 elephant 10 Duryodhan, seeing the fall of the huge elephant and the
 turning back of the army, was much disheartened, and remembering
 the duties of a warrior stood firmly as a hill even when the soldiers

त्यजगाम धरणीतलम् ॥ १२ ॥ दुर्योधनोपि सम्प्रेक्ष्य पतितं धरधारणम् । प्रमग्नश्च
 चलं दृष्ट्वा जगाम परमां व्ययाम् ॥ १३ ॥ क्षत्रधर्मं पुरस्कृत्य आत्मनश्चामिमानिताम् ।
 प्रात्तेपक्रमणे राजा तस्थौ गिरिरिवाचलः ॥ १४ ॥ सन्धाय च शितं वापं फालाग्निस्म
 तेजसम् । मुमोच परमरुद्धस्तस्मिन् घोरे निशाचरे ॥ १५ ॥ तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य वाण
 मिन्द्राशनिप्रसम् । लाघवान्मोचयान्नास महात्मा वै घटोत्कचः ॥ १६ ॥ भूयश्च विनता
 क्रोधं क्रोधसंस्कलोचनः । प्रासयामास सैन्यानि युगान्ते जलदो यथा ॥ १७ ॥ तं श्रुत्वा
 निनदं घोरे तस्य भीमस्य रक्षसः । आचार्य्यमुपसङ्गम्यभीष्मः शान्तनवोब्रवीत् ॥ १८ ॥
 यथैष निनदो घोटः भ्रूयते राक्षसेरितिः । द्वैडिभ्यो युधपते नूनं राक्षा दुर्य्योधनेन ह ॥ १९ ॥
 नैव शक्यो हि संप्रामे जेतुं भूतेन केनचित् । तत्र गच्छत भद्रं यो राजानं परिरक्षत
 ॥ २० ॥ अभिदुतो महाभागो राक्षसेन महात्मना । पताद्धिवः परं हृत्यं सर्वेषां नः परं-
 न्तवा ॥ २१ ॥ पितामहवचः श्रुत्वा त्वरमाणा महारथाः । उत्समं जवनास्थाय प्रययुर्ध्र
 गिरकर मर गया फिर वह बंगदेशी बलवान राजाभी बहुत शीघ्र हाथी में उल्लङ्कर
 पृथ्वीपर वड़ी तीव्रता से गया, दुर्य्योधनने उतागिरे हुये बड़े हाथी को और सेनाके
 हटाने को देखकर बड़े खेदको पाया, और रागा दुर्य्योधन क्षत्री धर्मको विचार
 अपने अहंकारको करके सेनाके भाग जानेपर भी पर्वत के समान अचल होकर
 युद्धमें खड़ा रहा, फिर महाक्रोधित होकर बड़े धनुषको खिंचकर एकबड़े तीक्ष्णवाण
 को उस राक्षस पर छोड़ा ॥ १५ ॥ उस इन्द्र वज्रके समान आतेहुये वाणको देखकर घटो
 त्कचने बड़ी हस्तलाघवतासे निष्फल कर दिया और लालनेत्र करके बड़े क्रोध
 पूर्वक भयानक शब्द से गर्ज ॥ को करके सेना को ऐसा भयभीय कर दिया जैसे
 कि प्रलय काल में बादल सबको भयसे पीडित करते हैं, उस राक्षस के उसवार
 शब्द को सुनकर शांतनुके पुत्र भीष्मजी द्रोणाचार्य्य के पास जाकर बोले कि
 यह राक्षसका घोर और भयानक शब्द सुनाजाता है निश्चय करके यह घटोत्कच
 ही राजादुर्य्योधन से लड़ताहै युद्धमें इस राक्षस को कोई जीव विजय नहीं करसक्ता
 है आपका श्रेयहो आपवहीं जाकर राजाकी सब ओरसे रक्षाकरो ॥ २० ॥ वह महाभाग
 दुर्य्योधन बड़े साहसी राक्षससे लड़ताहै हे शत्रु संतापियो तुम्हारा और हममवक

had left him. Then in a rage drawing his huge bow, he discharged a sharp arrow at the rakshas 15 Seeing that arrow coming towards him like the vajra of Indra, Ghatotkach made it futile by his swift movement and with eyes red in anger roaring a dreadful roar, terrified the armies as the clouds of *pralaya* do Hearing the tremendous roar of the rakshas, Bhishm the son of Shantanu came to Dronacharya and said, " We hear the deep and dreadful roar of the rakshas, surely Ghatotkach in fighting with Prince Duryodhan, No mortal can vanquish the rakshas in battle. Go there in person and protect the king, may you be happy 20. Great Duryodhan is fighting with the dreadful rakshas. It is our duty to protect the king, O destroyer of

कौरव ॥ २२ ॥ द्रोणश्च सोमदत्तश्च बाह्लीकोय जयद्रथ । कृपो भूरिश्रवा शल्य
 भावन्त्य सवृहद्वल ॥ २३ ॥ अश्वत्थामा विकर्णश्च चित्रसेनो विविशति । रथाश्चा
 नेकसाहस्राथे तेषामनुयायिन ॥ २४ ॥ अभिदुत परीप्सन्त पुत्र दुर्योधन तव ।
 तदनीकमनादृष्यं पालितन्तु महारथैः । २५ ॥ आततायिनमायान्त प्रेक्ष्य राक्षससत्तम ।
 नाकम्पत महाबाहुर्मताक इव पर्वत ॥ २६ ॥ प्रगृह्य विपुल चाप शक्तिमि परिवारित ।
 शूलमुद्गरहस्तैश्च नानाप्रहरणैरपि ॥ २७ ॥ तत समभवद्युद्ध तुमुल लोमहर्षणम् ।
 राक्षसानान्च सुर्यस्य दुर्योधनवलस्य च ॥ २८ ॥ धनुषा कूजता शब्द सर्वतस्तु
 मुहो रणे । अश्रूयतमहाराज घशाना दह्यतामिव ॥ २९ ॥ अस्त्राणां पात्यभानानां
 कवचेषु शरीरिणाम् । शब्द समभवद्राजन् गिरीणामिव भिद्यताम् ॥ ३० ॥ वीरबाहु
 विस्मृष्टाना तोमराणा विशाम्पते । रूपमार्साद्विद्यन्स्थाना सर्पाणामिव सर्पताम् ॥ ३१ ॥

भी उत्तमकर्म है पितामहके इसरचनको घुनकर शीघ्रता करनेवाले महारथी द्रोणा
 चार्य सोमदत्त बाह्लीक जयद्रथ कृपाचार्य भूरिश्रवा शल्य अश्रुयन्ति का राजा
 वृहद्वल अश्वत्थामा विकर्ण चित्रसेन विविशति और हजारों उनके पीछे चलने
 वाले रथ वह सब मिले हुये आपके पुत्र दुर्योधन की रक्षा के लिये वहां गये जहाँ
 राजादुर्योधन था । २५ । फिरवह राक्षसोत्तममहाबाहु घटोत्कच उस दुर्जय महारथियों
 से राक्षित मारनेकी इच्छा रखने वाली सेनाको आताहुआ देखकर मनाक पर्वत के
 समान भयभीत नहीं हुआ, और शूल मुद्गर आदि अनेकप्रकार के शस्त्रधारी
 राक्षसोंसे युक्त घटोत्कच बड़े धनुषको खिंचकर खड़ाहुआ, फिरघटोत्कच और दुर्योधन
 की सेना का महारोमहर्षण युद्ध जारी हुआ उस समय हे राजा धनुष की टंकारों
 के महाकठिन शब्द चारोंओर से ऐसे सुनाई दिये जैसे कि जलतेहुये घाँसों के
 शब्द होतेहैं, और शरीर के कवचों पर लगनेवाले अस्त्र शस्त्रों के भी ऐसे शब्द
 होतेथे जैसे कि फटेहुये पहाड़ों के महाशब्द होतेहैं । ३० । हे राजा वीरोंकी भुजाओं से

foes!" (Hearing the words of the grandfather, dexterous Dronacharya together with Somdatta, Valhik, Jayadrath, Kripacharya, Bhurisshrava, Shalya Brahadval the prince of Avanti, Ashwathama, Vibarn Chitrseen, Vinshati and thousands of others riding on chariots, went to help Duryodhan and reached the place where Duryodhan was 25 Then Ghtotkach the best of rakshases, seeing that army protected by those warriors coming to destroy him was not moved like Menak hill Asssted by rakshases armed with spears and clubs, Ghatotkach stood with his bow drawn The battle was severe between the armies of Ghatotkach and Duryodhan The hard sounds from the twanging bows were heard on all sides like the burning of bamboos and the sounds of striking the weapons on the bodies were like the rending of mountains. 30 The tomars hurled by warriors looked like serpents running in the sky. Then much engaged and roaring dreadfully, the prince of rakshases taking up his huge bow cut down with a half moon shaped dart the

ततः परमसंकुक्षो विस्कार्य्य सुमहद्भुतः । राक्षसेन्द्रो महायाहुविन्दन् भैरवं रचम् ॥ ३२ ॥ आचार्य्यस्यार्द्धचन्द्रेण कुक्षीभिर्बद्धेद् कार्मुकम् । सोमदक्षस्य भल्लेन ध्वजञ्चोन्मथ्य चानदत् ॥ ३३ ॥ बाह्वलीकञ्च त्रिभिर्वाणैः प्रत्यविष्यत् स्तनान्तरे । हृषमेकेन विव्याध चित्रसेनं त्रिभिः शरैः ॥ ३४ ॥ पूर्णापतविसृष्टेन सन्ध्याप्रणिहितेन च । जघ्रुवशं समासाद्य विकर्णं समताडयत् ॥ ३५ ॥ न्यपीदत् स्व रथोपस्थे शोणितेन परिप्लुतः । ततः पुनरमेयात्मा नाराचोऽददा पञ्च च ॥ ३६ ॥ मूर्ध्नि श्वसि संकुक्षः प्रादिहोद्भ्रतर्षभ । ते धर्मं भित्त्वा तस्याशु विविशुर्धरणीतलम् ॥ ३७ ॥ विविशतेषु द्रौणेयपन्तारौ समताडयत् । तौ पेततुरथोपस्थे रदमीनुत्सृज्य पाजिनाम् ॥ ३८ ॥ सिन्धुराष्टोर्द्धचन्द्रेण वाराहं स्वर्णभूपितम् । उन्मथाममहाराज द्वितीयेनाच्छिन्नदनुः ॥ ३९ ॥ चतुर्भिरथ नाराचै रावन्त्यस्य महात्मनः । जघान चतुरो वाहान् क्रोधसंरकलोचनः ॥ ४० ॥ पूर्णापतविसृष्टेन पीतेन निशितेन च । निर्विमेदं महाराज राजपुत्रं वृद्धदलम् ॥ ४१ ॥

फेंके हुये तोमरोंके ऐसे रूप दिखाई दिये जैसे कि आकाश में चनतेहुये सपों के आकार दिखाई देतेहैं इसके पीछे अत्यन्त क्रोधरूप भयकारी गर्जना करतेहुये उस राक्षसों के राजा ने बहुतबड़े धनुष को लेकर, अर्द्धचन्द्र नाम वाणमे द्रोणाचार्य्य के धनुषको काटके भल्ल से सोमदक्ष की ध्वजाको तोड़ता हुआ महा गर्जना करके बाह्वलीक को तीन वाणने छाती परघायल किया और एक वाणसे कृपाचार्य्य को तीन वाणसे चित्रसेन को, घायल करके कानतक खिंचेहुए वाणसे विकर्णको घायल किया ॥३५॥ फिर बहविकर्ण रुधिर भरे देहसेरथमें बैठा इसके पीछे उस पराक्रमी ने पन्द्रह नाराच भूरिश्रवा पर फेंके वह नाराच उसके कवचको काट कर पृथ्वी पर गिरे, फिर विविशति और अश्वत्थामा के सारथियों को घायल किया जिसके मारे वह घोड़ों की रस्सियों को छोड़कर पृथ्वी पर गिरपड़े और अर्द्धचन्द्र वाणसे राजा सिन्धुके मुनहरी वाराहको और दूसरेवाण से उसके धनुष को काटा, फिर क्रोध से अत्यन्त रक्तनेत्र ने आने चार नाराचों से महात्मा राजा

low of Dronacharya, and cutting down with an arrow the banner of Somdatt, he wounded Vahlik with three arrows in the breast with a loud roar. And wounding Kripacharya with one arrow and Chitra-sen with three he pierced Vikarn with his arrows discharged from his bow drawn to the ear. 35. Blood flowed down from the wounds of Vikarn seated in the chariot. Then that warrior discharged fifteen arrows at Bhurishrava and they fell down on the ground piercing through his armour. Then he wounded the chariot drivers of Vivinshati and Ashwathama and they fell down from their seats leaving the reins of horses. With a half-moon-shaped arrow he pierced the loar of the king of Sindh and with another he cut down his low. Then with eyes red in anger he killed the four horses of the king of Avanti with four darts. And with a sharp arrow he

स गढविद्धो व्यथितो रथोपस्थ उपाविशत् । भृशं क्रोधेन चाविष्टो रथस्थो राक्षसा
धिपः । ४२ ॥ चिक्षेपनिशितांस्तीक्ष्णाञ्छरानाशीविषोपमान् । विभिदुस्तेमहाराज शल्यं
युद्धविशारदम् ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि हैडिम्बयुद्धे

त्रिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९३ ॥

संजय उवाच ॥ विमुखीकृत्य सर्वांस्तु तावकान् युधि राक्षसः । जिघांसुर्भरत
श्रेष्ठ दुर्योधन मुपाद्रघत् ॥ १ ॥ तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य राजानं प्रति वेगितम् । अभ्यधावत्
जिघांसन्तस्तावका युद्धदुर्मदाः ॥ २ ॥ तालमात्राणि चापानि विकर्षन्तो महारथाः ।
तमेकमभ्यधावन्त नदन्त सिंहसंघवत् ॥ ३ ॥ अथैनं शरवर्षेण समन्तात् पर्यवाकिरन्
पर्यन्तं धारिधाराभिः शरदीव वलाहकाः ॥ ४ ॥ स गढविद्धो व्यथितः शोभार्दित इव
द्विपः । उत्पपात तदाकाशं समन्ताद्वैनतेयवत् ॥ ५ ॥ व्यनदत् सुमहानादं जीमूत इव

अचान्तिके चारों घोड़ों को मारा हे महाराज फिर बड़े तीक्ष्ण बाणसे राजा बृहद्रथको
घायल किया वह भी महा घायल होकर रथमें बैठ गया फिर रान्तसाधिप घटोत्कचने
सर्पाकृति अनेक बाणों से राजाशल्यको व्यथित किया ४३ ॥

अध्याय ९४ ॥

संजय बोले कि फिर वह राक्षस आपके सब योद्धाओं को युद्ध में भगाकर
मारने की इच्छा से दुर्योधनके सम्मुख दौड़ा; उस राक्षस को राजा के ऊपर आता
दंडाकार मारने के इच्छावाले युद्ध में दुर्मद आपके भी शूरवीर उसके समुत्त दौड़े,
यह मजबूत ताल वृत्तके सप्तान धनुषोंको खँचेहुए सिंहोंके समान गर्जना करते हुए
उप अंकलेके ऊपर दौड़े, और बाणों की वर्षा से उसको चारों ओरसे ऐसे ढकादया
जैसे कि शरद ऋतु में बलाहक नाम बादल अपनी जल धाराओं से पर्वत को ढक
देते हैं। ५। दण्डमे घायल हाथी के समान वह अत्यन्त घायल घटोत्कचगडके समान

pierced prince Brahadval who sat down much wounded in his chariot.
Then Ghatotkach the prince of rakshases wounded Shalya with
several arrows like serpents" 47.

CHAPTER XCIV

Sanjaya said:—"Having put all your warriors to flight, the rakshas desirous of slaying your son rushed against him. Seeing him coming upon the prince, your invincible warriors desirous of slaying him, hastened to encounter him. All those warriors with their bows like palm trees drawn, rushed upon the rakshas alone roaring like lions and covered him with the shower of their arrows as clouds in the cold season hide a hill 5. Like an elephant wounded by a god, Ghatotkach much wounded sprang like Garur on all sides up in the air and ringing

शारदः । दिशः खं विदिशश्चैव नादयन् भैरवस्वनः ॥ ६ ॥ राक्षसस्य तु तं शब्दं श्रुत्वा
 राजा युधिष्ठिरः । उवाच भरत श्रेष्ठ भीमसेनं मरिदमम् ॥ ७ ॥ युध्यते राक्षसो नूनं
 धार्तराष्ट्रमंहारथैः । पथास्य ध्रुयते शब्दो नदतो भैरवस्वनस्य ॥ ८ ॥ अति भारञ्च
 पश्यामि तस्मिन् राक्षस पुंगवे । पितामहश्च संहुदः पांचालान् हन्तुं मुद्यतः ॥ ९ ॥
 तेषां च रत्नार्थीयं युध्यते फाल्गुन परे । एतज्ज्ञात्वा महाबाहो कार्यद्वयमुपस्थितम्
 ॥ १० ॥ गच्छ रक्षस्व ह्येदमिदं संशयं परमं गतम् । भ्रातृवचनमाज्ञाय त्वरमाणो वृको
 दरः ॥ ११ ॥ प्रययौ सिंहनादेन त्रासयन् सर्वपार्थिवान् । वेगेन महताराजन् पर्वकाले
 ययोदाधिः ॥ १२ ॥ तमन्यगात् सत्यधृति सौचित्तिर्युद्ध दुर्मदः । श्रेणिमान् वसुदानथ
 पुत्रः काश्यपस्य च मित्रः ॥ १३ ॥ अभिमन्यु मुखार्थैव द्रौपदीया महारथाः । क्षयं देवश्च

चारों ओरसे आकाश को उछला, और भयानक शब्द करता हुआ दिशा विदिशा
 समेत आकाशको शब्दायमान करके शरदःश्रुतु के वादलों के समान महा घोर
 गर्जना करने लगा इसके पीछे हे भरतर्षभ उस राक्षस के शब्द को सुनकर राजा
 युधिष्ठिर शत्रु विजयी भीमसेन से बोले, कि निश्चय वह घटोत्कच राक्षस धृतराष्ट्र
 के महारथी पुत्रों से लड़ रहा है क्योंकि यह महाघोर शब्दकी गर्जना उसी की सुनी
 जाती है इस समय उस राक्षस के ऊपर मुझको बड़ी भारी - विपत्ति जान पड़ती
 है और अत्यन्त कोपयुक्त भीष्मजी पांचाल देशियों के - भारनेको युद्धमें प्रवृत्त हैं
 उन पांचालों की रक्षाके निमित्त अर्जुन ही शत्रुओं से लड़ता है हे महाबाहु इस बात
 को जानकर दोकाम वर्त्तमान हुए १०। अब चलकर बड़ी विपत्तिसे घटोत्कचकी रक्षा
 करो यह भाई के वचन सुनतेही शीघ्रता करनेवाला भीमसेन अपने सिंहनादसे सब
 राजाओं को डराता हुआ ऐसे महावेग से वहां पहुँचा जैसे कि पर्वकालमें समुद्र
 जाता है, और इस के पीछेही सत्यधृति युद्ध में दुर्मद सुचिन्ती श्रेणिमान
 वसुदान और महासमर्थ काशिराजकापुत्र यह सब गये, और अग्रवर्त्ती अभिमन्यु

all the directions will his tremendous roars he thundred like the clouds
 in Winter. Hearing his sound, O king, Prince Yudhishtir said to
 the conquering Bhimsen, "Surely this Ghatotkach the rakshas is
 fighting against the sons of Dhritrastra, for this tremendous roar can
 be of no one else. Meseems he is in a great trouble and Bhishun in the
 excess of his rage, is engaged in destroying the Panchals. For the
 protection of the Panchals, Arjun is fighting against the enemies.
 Under these circumstance there are two things to do 10. Let us protect
 Ghatotkach from the great trouble." Having heard these words
 from his brother, dexterous Bhimsen, terrifying all the warriors with
 his leonine roar, hastened to reach there like the ocean at the full
 moon. Following him went the wise warriors Suchitti, Vasudan and
 the powerful son of the king of Kashi. Led by Abhimanyu, the five
 brave sons of Draupadi, Kshatradev, Vikrant, Kshatradharma and

विक्रान्तः क्षत्रधर्मा तथैवच ॥ १४ ॥ अनुपाधि पतिश्चैव नीलः स्थंघलमास्थितः । मह
ताशरवंशेन हैडिभ्यं पर्यवारयत् ॥ १५ ॥ कुञ्जरैश्च महामत्सै पद्सहस्रैः प्रहारिभि
वभ्यरक्षन्त सहिता राक्षसेन्द्रं घटोत्कचम् ॥ १६ ॥ सिंहनादेन महता नेमिघोषेण वै
वह । खुरशब्दनिपातैश्च कम्पयन्तो बभ्रुन्धराम ॥ १७ ॥ तेषामापततां श्रुत्वा शब्द
न्तं तावकं बलम् । भीमसेन भयोद्धिग्नं विचर्णं वदन् तथा ॥ १८ ॥ परिवृत्त महाराज
परित्यज्य घटोत्कचम् । ततः प्रवृत्ते युद्धे तत्र तेषां महारमनाम् ॥ १९ ॥ तावकानां
परेषांच संग्रामेषु निवर्त्तिनाम् । नानारूपाणि शस्त्राणि विसृजन्तो महारथाः ॥ २० ॥
अन्योन्य मभिधावन्त सम्प्रहार प्रचक्रिरे । ध्यतिश्वकं महारौद्रं युद्धं भीरुभयापहम्
॥ २१ ॥ ह्यागजैः समाजग्मु पदाता रथिभि सह । अन्योन्य समरे राजन् प्रार्थयाना-
समभ्ययुः ॥ २२ ॥ सहसाचाभवर्त्तिभ्रं सन्निपातान्महद्रजः । गजादवरथपत्तीना पद्
नेमि समुद्धतम् ॥ २३ ॥ घूम्रारुणंरजस्तीभ्रं रणभूमिं समावृणोत् । नैव स्वेन परे राजत्

के साथ द्रौपदी के महारथी पुत्र क्षत्रदेव विक्रान्त क्षत्रधर्मा और नील नाम
अनुपदेश का राजा अपनी सेना में नियत होकर चला यह सब शूर रथों के समूहों
समेत घटोत्कचकी रक्षा के लिये उसके चारों ओर को नियतहुए, इन सब वीरोंके
साथ तहादुर्मद मतवाले छःसहस्र हाथी थे इन सवहाथियोंकी और रथोंकी गर्जना
और ध्वनियों से पृथ्वी शब्दायमान होगई उन आते हुआँ के शब्दको सुनकर आप
की सेना भीमसेन के भय से महा व्याकुलहोकर रूपान्तर दशाको प्राप्तहुई, हे महा
राज वह सेना घटोत्कचको छोड़कर चारों ओर को घूमने लगी फिर सम्मुख लड़ने
वाले आपके और दूमरों के शूवीरों का नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रों समेत
युद्ध होना प्रारम्भ हुआ । २० । और परस्पर सम्मुख दौड़तेहुए महारथियोंने बड़े महार
किये और अत्यन्त भयकारी घोरयुद्ध होनेला, वं डे हाथियोंके साथ और पदाती रथि
यों के साथ युद्ध करने लगे उस युद्धमें परस्पर एक दूसरेको चाहेतेहुए सम्मुख गये
उसममय अनेक हाथी घोड़े रथ पैदलों के समूहोंसे उठोहुई बहुत भारी घूल उड़ी

Nil the prince of Anup, with his army, followed by the hosts of charioteers, went to help Ghatotkach and stationed themselves round him. Six thousand elephants of great prowess accompanied the warriors. The sounds of these elephants and chariots rang all over the earth. Hearing those sounds the state of your army was quite changed with fear of Bhishm, and leaving Ghatotkach alone all the warriors dispersed in different directions. Then the warriors on both sides fought with different weapons and rushing against one another they fought hard and the battle was hard on the two sides. The horsemen fought against the elephant riders and the foot soldiers against charioteers. They rushed against one another. With the armies of elephants, horses, chariots and foot-soldiers there rose a great

समजानद् परस्परम् ॥ २४ ॥ पिता पुत्रं न जानीते पुत्रो वा पितरं तथा । निर्मयादितथा
 मृते वैशसे लोमहर्षणे ॥ २५ ॥ शस्त्राणां भरतश्रेष्ठ मनुष्याणां च गर्जताम् । सुमहान्मथ
 षष्ठ्युद्-प्रेतानामिव भारत ॥ २६ ॥ गजधाजि मनुष्याणां शोणितान् तरङ्गिणी । प्राव
 तैत नदी तत्र केशदावलशाद्वला ॥ २७ ॥ नराणाञ्चैव कायेभ्यः शिरसां पततां रणे ।
 शुश्रुवे सुमहान्छब्दः पतता मद्भ्रमा मिव ॥ २८ ॥ विशिरस्कर्मनुष्यैश्च छिन्नाग्राश्च
 वारणैः । अश्वैः सम्भिन्न देहैश्च संकीर्णामूढसुन्धरा ॥ २९ ॥ नानाविधानि शस्त्राणि
 यिसृजन्तो महारथाः । अन्योन्यमभिधावन्तः सम्प्रहारार्थमुद्यताः ॥ ३० ॥ हया ह्यान्
 समासाद्य प्रेषिता ह्यमादिभिः । समाहत्य रणेन्योन्यं निपेतुर्गतज्जीविताः ॥ ३१ ॥ नरा
 नरान् समासाद्य क्रोधरक्तक्षणा भृशम् । उरांस्युरोभिरन्यान्यं समाश्लिष्य निजक्षिते
 ॥ ३२ ॥ प्रेषिताश्च महामात्रैर्वारणाः परवारणैः । अश्व्यन्त विषाणात्रैर्वारणानेव

फिर उस काली और लाल रंगवाली उग्र धूलिसे संग्रामभूमि ऐसी आच्छादित
 होगई कि जिसमें अपने पराये की कुछ पहचान न होसकी, इसप्रकार के रोमहर्षण
 करनेवाले महाप्रलयकाल में पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको भी नहीं पहचाना । २५।
 हे भरतराज उसयुद्ध में शस्त्रों के और गर्जना करनेवालों के प्रेतों केसे महाघोर
 शब्दहुए, फिर वहां हाथी घोड़े रथपैदलोंके रुधिरसे नदी बह निकली उसमें शिरोंके
 घालही कुमुदिनी सपेन शाद्वलये उससंग्राम में मनुष्यों के गिरते हुए शिरोंके ऐसे
 महा शब्द सुनाई दिये जैसे कि गिरतेहुए पत्थरों के शब्दहोते हैं फिर बिना
 शिरके मनुष्य और अंगभंग हाथी घोड़ों के शरीरोंसे पृथ्वी व्याप्त होगई औरबड़े २
 महारथी परस्पर में नानाप्रकारके शस्त्रोंको महारकरतेहुए एकएकके सम्मुख मारने
 को प्रवृत्तहुए । ३० । फिर सवारों से शोभित घोड़े घोड़ों से लड़ते २ मरकर
 पृथ्वीपर गिरे, और क्रोधसे रक्तनेत्र मनुष्यों ने दूसरे मनुष्योंको पाकर एकने
 दूसरेको छातीसे छाती मिलाकर मारा, फिर पीछे के हाथियों ने बड़े २-शरीर

cloud of dust and the field of battle was so surrounded by the black and red dust that the warriors on the two sides could not know friends from foes. In that dreadful battle like that of pralaya, the father did not know the son 25. The sounds of weapons and the roars of warriors in that battle were like those of hobgoblins. A river of blood flowed down from the elephants, horses, charioteers and foot-soldiers, having the hair of heads for its weeds, The sounds of the fall of the heads of the warriors were like those of stones falling down. The headless bodies of men and parts of the bodies of elephants and horses covered the face of the earth. Great warriors discharged different sorts of weapons against one another. 30. Horsemen fought against horsemen and fell dead on the field of battle. With eyes red in anger the warriors fought abreast and destroyed their adversaries. The elephants rushed against elephants and pierced their huge bodies with their

संयुगे ॥ ३३ ॥ ते जातरधिगेत्पीडा पताकाभिरलंकृताः । संसक्ताः प्रयदृश्यन्त
मेघा इव सविद्युतः ॥ ३४ ॥ केचिद्भिन्ना विषाणाग्नैर्भिन्नकुम्भादिव तोमरे । विनदन्तो
भ्रमधावन्त गज्जमाना घना इव ॥ ३५ ॥ केचिद्वस्तैर्द्विधा च्छिन्नैर्द्विच्छन्नाग्रास्तथापरे ।
निपेतुस्तुमुके तस्मिंश्छिन्नपक्षा इवाद्रयः ॥ ३६ ॥ पादर्थेस्तुदारितैरन्येधारणैर्येव्यारणा ।
सुमुचु शोणितं भूरि धातूनिव महीधरा ॥ ३७ ॥ नाराचनिहतास्त्वन्ये तथा विद्धाश्च
तोमरेः । विनदन्तो भ्रमधावन्त विगृह्णा इव पर्वताः ॥ ३८ ॥ केचित् क्रोधसमाविष्टा
मदान्धा निरवग्रहाः । रथान् हयान् पदातीक्ष्व ममृदु शतशो रणे ॥ ३९ ॥ तथा हया
ह्यारांहेस्ताडिताः प्रासतोमरे । तेन तेनाभ्यवर्त्तन्त कुर्वन्तो व्याकुला दिशः ॥ ४० ॥
रथिनो रथिभिः सार्द्धं कुलपुत्रास्तनुत्पजः । पर शक्तिं समास्थाय चक्रु कर्माण्यमीशवत्
॥ ४१ ॥ स्वयम्बर इवामर्षं प्रजहृ रितरेतरम् । प्रार्थयाना यशो राजन् स्वर्गं वा युद्ध

मुलवाले शत्रुके हाथों के सम्मुख होकर दांतोंकी नोकों से हाथियोंको भारा वह
पनाकाओं से शोभित हाथी रुधिरसे पीड़ितहोकर ऐसे संसक्त दिखाई देतेथे जैसे
कि बादलोंम विजन्नी दीखतीहै ३५ कोई हाथीदांतों की नोकोंसे घायल और तोमरों
से फूटेहुए कुंभ बादलोंके समान गर्जते हुए सम्मुख दौड़े, कोई टूटी सूंडवाले वा
टूटे अंगवाले हाथी युद्धमें ऐसे गिरे जैसे कि टूटे पर्वत और कितनेही कुशोंमेंघायल
हाथियोंने बहुतसा रुधिर ऐसा डाला जैसे कि पर्वत धातुओंको गेरते हैं, और बहु
तेरे तोमरोंसे और नाराचोंसे घायल और पीड़ितहोकर शब्द करतेहुए ऐसे दौड़े
जैसे कि विनाशिलरके पहाड़ होतेहैं, और अनेक क्रोधयुक्त मदान्ध हाथियोंने क्रो
धितहोकर हजारों रथयेड़े और पदातियों को मर्दन किया, इसीप्रकार अश्वसवारों
के पास और तोमरोंसे घायल घोड़े दिशाओं को व्याकुल करते हुए प्रत्येक मार्गमें
सम्मुख हुए ४० । कुलीन और शरीर त्यागने वाले रथियोंने वही सामर्थ्य से निर्भयता
पूर्वक रथियोंसे युद्धकिया, हे राजा युद्धमें कुशल यश और स्वर्गके अभिलाषी
वीरोंने उस स्वयंवर के समान युद्धमें एकने एकको परस्पर में हरण किया,

tusks The elephants decked with banners and streams of blood
flowing from their bodies looked like clouds with lightning 35. Some
elephants wounded with the points of tusks and tomars rushed on
thundering like clouds, others with broken trunks and limbs fell
down on earth like the pieces of hills Elephants wounded in their
sides dropped streams of blood as mountains drop minerals, others
wounded by tomars and arrows ran away shrieking with pain like
mountains without peaks. Mad elephants in excessive rage trampled
thousands of chariots, horses and foot-soldiers. In the same manner,
horses wounded by prases and tomars rushed on all sides in anguish. 40
The dying warriors of noble blood fought fearlessly against charioteers.
Dexterous in battle, desirous of fame and paradise the warriors took
up one another like brides in a swayamvar. Thus when the battle

शालितः ॥४२॥ तस्मिंस्तथा वर्त्तमाने संप्रामे लोमहर्षणे । चाक्षराङ्गं महत् सैन्यं प्रायशो विमुञ्चि कृतम् ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि हैडिम्बयुद्धे
चतुर्विंशतिवर्षोऽध्यायः ॥ २४ ॥

सत्राय उवाच । स्वसैन्यं निहतं दृष्ट्वा राजा दुर्योधन स्वयम् । अन्यधावत संकुद्रो भीमसेन मरिन्दमम् ॥१॥ प्रगृह्य सुमहश्चाप मिन्द्राशानिसमस्वनम् । महता शरवर्षण पाण्डवं समवाकिरत् ॥२॥ अर्द्धचन्द्रश्च सन्धाय सुतीक्ष्णं लोमवादिनम् । भीमसेनस्य चिच्छेद् चापं क्रोधसमन्वितः ॥३॥ तदन्तरच्च सम्प्रेष्य त्वरमाणो नहारत् । प्रसन्धे शितं बाणं गिरिणामपि दारणम् ॥ ४ ॥ तेनोरासि महाराज भीमसेनमताडयत् । स गाढ चिद्रो व्यथितः क्षुब्धिकणी परिसंलिहत् ॥ ५ ॥ समाललभ्ये तेजस्वी ध्वजं हेमपरिष्कृतम् । तथा घिमनसं दृष्ट्वा भीममेतं घटोत्कचः ॥ ६ ॥ क्रोधेनाग्निप्रज्ज्वाल दिग्धक्ष

इसी प्रकार से इस रोमहर्षण युद्ध के भारभङ्गेने पर दुर्योधन की प्रबल सेना बहुधा भगाई गई ॥ ४३ ॥

अध्याय २५ ॥

संजय बोलें किराजादुर्योधन अपनी सेनाका नाशदृष्ट्वा देखकर अत्यन्त क्रोधित-होकर आपभी उस शत्रुजैता भीमसेनके सम्मुख दौड़ा, और इन्द्र धनुषके समान शब्दायमान धनुषके बाणों की वर्षाकरके भीमसेनको ढक दिया, और क्रोधभरकर अत्यन्त तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाणसे भीमसेन के धनुष को काटकर बड़ीशीघ्रता से समयको पाकर उसने पर्वतोंके भी तोड़नेवाले तीक्ष्णबाणको धनुष पर चढ़ाया, हे राजा उस बाणसे भीमसेन को छाती पर चापत्त किया, फिर उस तेजस्वी भीम ने होठों को चाटकर अपनी सुनदरी ध्वजा को पकड़ लिया, उस समय उदोत्कच भीमसेन को व्याकुल देख कर, क्रोधरूपी अग्निसे जालिबहुआ औरमहाक्रोधयुक्त अभिमन्यु भादिमहा

was raging furiously, many of Duryodhan's brave warriors left the field." 43.

CHAPTER XCV

"Seeing the destruction of his own army," continued Sanjaya, "Prince Duryodhan, in the excess of rage, rushed against Bhim the destroyer of foes and hid him with the arrows shot from his bow sounding like Indra's bow. In the excess of rage, having cut down Bhim's bow with an arrow of the shape of half moon and thus gaining time, he soon put up a sharp arrow capable of piercing through a mountain. That arrow, O king, wounded Bhim in the breast. The latter, licking his lip in anger, held fast the staff of his golden banner. Ghatotkach was inflamed with the fire of wrath at the sight of Bhim's

त्रिव पावक । अभिमन्युमुखाद्यापि पाण्डवाना महारथा ॥ ७ ॥ समभ्यधावन् क्रोधा
 न्तो राजान जातसभ्रमा । सम्प्रेक्ष्यै तान्सवतत सकुब्धान् जातसम्भ्रमान् ॥ ८ ॥ भार
 द्वाजो प्रवीढ्वाक्य तावकाना महारथान् । क्षिप्रगच्छन् भद्रघो राजान परिरन्त ॥ ९ ॥
 सशय परम प्रात मोजन्त व्यसनाणिवे । पते कुब्धा महेष्वासा पाण्डवाना महारथा
 ॥ १० ॥ भीमसेन पुरस्कृत्य 'दुर्योधनमुपाद्रयन् । नानाविधानि शस्त्राणि विस्त्रिजन्तो
 जयेभूता ॥ ११ ॥ नवन्तो भैरवाश्वास्त्रासयन्तर्धे भूमिपान् । तदाचार्य्यवच श्रुत्वा
 सोमदत्तपुरोगमा ॥ १२ ॥ तावका समवर्तत पाण्डवानामनीकिनीम । कृपोमूरि
 श्रवा शल्यो द्रोणश्चो चिर्विशति ॥ १३ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च सैन्धवोथ दृहद्रथ ।
 भावन्त्यौ च महेष्वासी कौरव पर्यधारयन् ॥ १४ ॥ त विशतिपद गत्वा सम्प्रहार
 प्रवृत्तिरे । पाण्डवा धातंराष्ट्रश्च परस्परजिघांसव ॥ १५ ॥ पद्यमुपत्वा महाबाहुर्महादि
 स्कार्य कार्मुकम् । भारद्वाजस्ततो भीम पडविशत्या समाप्यन् ॥ १६ ॥ भूयश्चैन

रथी राजा को पुकारते हुए सम्मुख दौड़े अत्यन्त क्रोधयुक्त उन लोगों को आता
 हुआ देखकर, भारद्वाज द्रोणाचार्य जी आप के महारथियों से बोले कि तुम्हारा
 कल्याणहो तुम शीघ्रजाओ और बड़े दुःस समुद्रमें पड़ेहुए राजाको चारों ओर से
 रक्षाकरो, यह महाकोपयुक्त पाण्डवों के धनुषधारी महारथी अनेक प्रकार के शस्त्रों
 को चलाते और शस्त्रों की गर्जनाओं से राजाओंको भयभीत करते सब भीमसेन
 को आगे करके दुर्योधन के सम्मुख गये, द्रोणाचार्य के इस वचन को सुनकर
 सोमदत्त को अग्रगामी कर के वह सब आपके शूरवीर पाण्डवों के सम्मुख पहुँचे
 कृपाचार्य्य भूरिश्रवा शल्य अश्वत्थामा चिर्विशति । ११ । चित्रसेन विकर्ण
 जपथ्य दृहद्रथ और बड़े धनुषधारी राजा भवन्ती ने चारों ओरसे दुर्योधन को
 रक्षित किया । १४ । और परस्पर मारने की इच्छा से उन पाण्डव और
 धृतराष्ट्र के पुत्रों ने बीस २ चरण चलकर प्रहारोंको किया, फिर भारद्वाज
 द्रोणाचार्यने बड़े धनुषको लेकर छवीस चाणोंसे भीमसेनको पीड़ित कर के अनेक

wound, and Abhimanyu and other warriors much enaged, rushed on
 challenging the Prince. Seeing the advance of those enraged war
 riors Bha adwaj D onacha y a o d d you warriors to protect the
 Prince from the coming dang - saying: Those enag d Pandav war
 riors using diff rent sorts of weapons and trufy ng the warriors with
 their roars are led by Bhim on agun t Dur vodhan. Protect him
 from danger, may you be happy!" At the command of Di o b y our
 warriors led by Somdatta advanced against the Pandavas. Kripacharya,
 Bhushuvva Shalya Ashvatham Vivinshati Chitrasen Vikarn,
 Jafadrath, Vrahadvai and the great reber princes of Avanti protected
 Dhriyodhan an all sides. Anlwishing to destroy one another, the
 Pandavas and the sons of Dhrit ashtra advanced twenty paces on
 each side and discharged their weapons. Then taking up his mighty

महाबाहु शरैः शीघ्रमयाकिरत् । पर्वत वारिधाराणि प्राचुर्याव घलाहक
 ॥ १७ ॥ त-प्रत्यविध्यदशभिर्भामसेन शिलीमुख । त्वरमाणो महेष्यास-
 मये पाद्वै मदावल ॥ १८ ॥ स गाढशिद्धो यथितो ययोवृद्ध भारत ।
 प्रनष्टसह सहसा रथोपस्थ उपाविशत् ॥ १९ ॥ गुरुप्रव्यथित दृष्ट्वा राजा बुर्व्योधन
 स्वयम् । द्रोणायनिश्च सकुद्धो भामसेनमभिदुतौ ॥ २० ॥ तावापतन्तौ सप्रेक्ष्य काला
 भक्तयमोपमो । भीममनो महाबाहुर्गदामादाय सत्वरम् ॥ २१ ॥ यमप्युत्थ रथाहूर्ण
 तस्थो गिरिर्दिवाचल । समुद्यम्य गदा गुनी कालदण्डोपमा रणे ॥ २२ ॥ तमुद्यतगद्
 दृष्ट्वा केलासमिन् नृदिग्गम । क्षौरवो द्रोणपुत्रश्च सहितोवभ्यधावताम् ॥ २३ ॥ तावा
 पतन्तौ सहितौ त्ररितौ वलिनावरो । अभ्युधावत यगेन त्वरमाणो वृकोदर ॥ २४ ॥
 समापनन्त सम्प्रेक्ष्य सकुद्ध मीमदर्शनम् । समभ्यभावस्तरिता क्षौराणा महारथा-

जन्प्राणोसे एभे शीघ्र दक टिया जेमे कि जन्की धारोसे उलाहक नाम दादल
 पर्वतको दकदेते है, वहे धनुष्यारी महाबली शीघ्रतायुक्त भीमसेनेने शिलीमुख नाम
 दशगणों से उनको घायल किया फिर वह दृढ़ द्रोणाचार्य अत्यन्त घायल और
 पीड़ित होकर अक्रमाव रथमें बैठगये गुरु को पीडामान देखकर आप राजा
 दुर्योधन और अश्वत्थामा वहे क्रोधितहो के भीमसेन के सम्मुख गये,
 फिर महाबली भीमसेन उन काल और गुरुके समान दोनों को आता हुआ
 देखकर, शीघ्रही रथ से उठ यमदण्डके समान अपनी भारी गदाको लेकर
 युद्ध में पर्वतकार निदाल होकर खड़ा हुआ फिर शिखरधारी पर्वतके समान
 उस उठी हुई गदाको देखकर दुर्योधन और अश्वत्थामा दोनों एक साथही उसके
 सम्मुख दौड़े, भीमसेन भी उन तीव्र दौड़नेवालों को सम्मुख आता देखकर वही
 शीघ्रता में उनपर दौड़ा, फिर उस क्रोधयुक्त भयानक भीमसेन को आता हुआ
 देखकर कौरवों के महारथी यह दोनों-भी शीघ्रता से दौड़े और सबों ने आकर

bo vs Dronacharya wounded Bhimsen with twenty-six arrows and hid
 him with the cover of arrows as winter clouds do a mountain with
 the showers of rain. In his turn, the great archer Bhishm of great
 prowess wounded him with ten arrows sharpened on stone. Old
 Dronacharya, much wounded and distressed, sat down of a sudden in
 his chariot. Seeing the archer in distress, Prince Duryodhan
 himself together with Ashwathama much enraged faced Bhimsen.
 Valiant Bhishm seeing their advance like that of Time and Death, at
 once jumped down from his chariot and with his heavy mace like the
 staff of Yam stood firmly like a hill in the field of battle. Seeing
 that mace upraised, Ashwathama and Duryodhan rushed together
 against him. Bhimsen too seeing the advance of the two swiftly
 running warriors, rushed against them. Dierful Bhimsen, much

मद्वत्यामानमवच । प्रायशश्च महृष्वासा ये प्रधाना सकौरघा ॥ ४४ ॥ रिपुस्ता
 रथिन सर्वे राजानश्च निपातिता । हयाश्वेष हयारोहा सत्रिकृत्ता सहस्रश ॥ ४५ ॥
 तद्दृष्ट्या तावक सैन्य विद्रुत शिविर प्रति । मम प्राक्रोशता राजस्तथा द्रुपद्वर्तस्यच
 ॥ ४६ ॥ युध्यध्व मा पलायध्व मायैषा राक्षसीरण । घनोत्कच प्रमुक्ते तिनानां तिष्ठन्त
 विमाहिता ॥ ४७ ॥ नैवते श्रद्धुभीता वदन्तो रावयोर्वच । नाथ प्रद्रुषतो दृष्ट्वा जय
 प्राप्ताश्च पाण्डवा ॥ ४८ ॥ घनोत्कचन संहिता सिंहनारान् प्रचक्रिर । शख दुन्दुभि
 निर्घोषे स ॥ तान् मेदिरे भृशम् ॥ ४९ ॥ एव तव वल सर्वैर्हैडिभ्यन् दुरात्मना । सूर्या
 स्तमन ग्लायाम प्रभग्न विद्रुत दिश ॥ ५० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि षैडिम्बमायाया
 पवनवर्तितमोऽध्यायः ॥ ९८ ॥

आदि जो बड़े धनुषधारी कौरवीय शूरीय ये उन सबको राजालोंगों ने भी
 रथ मारथी हाथी घोड़ों समेत उस ने पृथ्वीपर गिराया, हे राजा उम अपनी सेना
 के डेरोंकी ओर भागता हुआ देखकर मेन और देवव्रत भीष्मजीने बहुत २ प्रकार
 कि डरामत यह राक्षसी माया घनोत्कच की पैदा कीहुई हे डमको मुनकर भी वह
 महा श्रचेत होकर नियत नहीं हुए उन भयभीतोंने हम दोनोंके कहनेपर भी विश्वास
 नहीं किया उस सेना को भागाहुआ देखकर विजय पानेवाले पाण्डवों ने घनोत्कच
 समेत मिलकर बड़े सिंहनादोंको किया और शखदुन्दुभी भी चारों ओर से अच्छी
 रीति से वजाई, इस रीतिसे सायंकालको सूर्यास्त के समय दुष्टात्मा घनोत्कच की
 मायामे आप का सब सेना चारोओरको भागी ॥ ५० ॥

well as the kings accompanying them were struck down to the ground
 together with their chariot drivers elephants and horses. Seeing them
 flying towards your camp Druvbat and I tried again and again to stop
 and comfort them, saying that it was nothing but the deception of the
 rakshases but in spite of our efforts they could not be brought back
 and would not believe us. At the sight of their rout the conquering
 Pandavas and Ghatotkach together raised a tremendous war cry and
 blew their conchs and trumpets. Thus in the evening at sunset all
 your armies were dispersed by the deception of mischievous Gatot
 kach २०



सञ्जय उवाच । तस्मिन् महाहि सक्रन्दे राजा दुर्योधनस्तदा । गाङ्गेयमुपसद्मस्य
 विनयेनामिवाच च ॥ १ ॥ तस्य सर्वं यथावृत्तमाख्यातु मुपचक्रमे । घटोत्कचस्य
 विजयमात्मनश्च पराजयम् ॥ २ ॥ कथयामास दुर्धर्यो विनि स्वस्य पुन पुन । अप्रवीच
 तदा राजन् भीष्म कुसृपितामहम् ॥ ३ ॥ भवन्त सभुपाधित्य वासुदेव यथा परै ।
 पाण्डवैर्विप्रहो घोर - सभारब्धो मया प्रभो ॥ ४ ॥ एकादश समाख्याता ब्रह्मैहि
 पयश्च यामम । निदेशे तव तिष्ठन्ति मया सार्धं परन्तप ॥ ५ ॥ सोऽह भरतशार्दूल
 भीमसेन पुरोगमै । घटोत्कच समाधित्य पाण्डवैर्युधिनिर्जित ॥ ६ ॥ तन्मे दहति
 गात्रात्रि शुष्कवृक्षमिवानल । तदिच्छामि महाभाग त्वत्प्रसादात् परन्तप ॥ ७ ॥
 राक्षसापसद् हन्तु स्वयमेव पितामह । इवा समाधित्य दुर्धर्यं तन्मे कर्तुंत्वमर्हासि ॥ ८ ॥
 एतच्छत्रातु वचन राजो भरतसत्तम । दुर्धर्योऽधनमिदं वाच्य भीष्म शान्तनवोऽब्रवीत्
 ॥ ९ ॥ शृणु राजन् ममवचो यत्त्वा घस्यामि कौरव । यथा त्वया महापुत्र चर्चितव्यै

अथाय ॥ १६ ॥

सजय बोले हे महाराज उमवड़े शब्द के होनेपर राजा दुर्योधन ने भीष्मजी
 के समीप जाके बड़ी नम्रता पूर्वक दणवत करके, घटोत्कचकी विजय और अपनी
 पराजय होनेके मुख्य वृत्तान्तको बड़ी श्वासा लेकर बर्णन किया और पितामह से
 कहनेलगा, कि हे प्रभु मैंने वासुदेवजीके समान आपको अपना रक्षक समझकर बड़ी
 भयकारी शत्रुतापांडवोंसे करी है हे शत्रुहन्ता जो मेरी ग्यारह अज्ञातहिणी प्रतिद्वंद्वे वहमव
 मुक्त समेत, आपकी आज्ञामें नियत हैं । ७ । हे भरतर्षभ ऐसा योग होने परभी मैं भीम
 सेन आदि पांडव जिनका कि घटोत्कच रक्षक है उनसे पराजय हुआ, वह भीमसेन
 मेरे अंगों को ऐसा जलारहाई जैसे मूखे वृक्षको आग्निजलाताई, हे शत्रुहन्ता पितामह
 आपमें दुर्जय पुरुषकी रक्षा में होकर आपकी कृपासे उस नीच राक्षसको मैं अपने
 हाथमें माराचाहता हूँ आपसे मनोरथको पूरा करने को योग्यहो, दुर्योधन के इस

CHAPTER LXXVI

Sanjaya said, 'On hearing that sound Prince Duryodhan went to
 Bhishm and humbly bowing down to him, recounted the facts of the
 conquest of Ghatotkach and his own defeat with deep sighs, saying
 "Knowing you to be my protector like Vasudev I have, O grandfather
 contracted enmity with the Pandavas I and my eleven akshauhins O
 destroyer of foes obey your orders 5 Being so united, O best of Bharats
 I have been defeated by Bhimsen and other Pandavas led by Ghatot
 kach Bhimsen burns the parts of my body as fire does dry wood
 Protected by a personage like you, O grandfather, destroyer of
 enemies I wish to slay that despicable rakshas with my own hand
 You have the power to satisfy the desire of my mind" To those
 words of Duryodhan, Bhishm the son of Shantanu made the following

परन्तर ॥ १० ॥ आत्मा रक्ष्यो रजे तात सर्वावस्थ्यास्वरिन्दम । धर्मराजेन संप्रामस्त्वया
 कार्ये सदानव ॥ ११ ॥ अर्जुनेन यमाश्रया वा भीमसेनेन वा पुनः । राजवर्मे पुरस्हत्य
 राजा राजानमावर्जति ॥ १२ ॥ अहं द्रोणः कृपाद्रौणिः कृतवर्मा च सात्वतः । शल्यश्च
 सौमद्रक्षिष्य विकर्णश्च महारथाः ॥ १३ ॥ तव च भ्रातरः श्रेष्ठा दुःशासनपुरोगमाः ।
 त्वदर्थे प्रतियोत्स्यामो राक्षसं तं महाबलम् ॥ १४ ॥ रोद्रे तस्मिन् राक्षसेन्द्रे यदि ते
 नुशयो महान् । अयं वा गच्छतु रणे तस्य युद्धाय दुर्मते ॥ १५ ॥ भगदत्तो महीपालः
 पुरन्दरसमो युधि । पलावदुक्त्वा राजानं भगदत्तमथाव्रवीत् ॥ १६ ॥ समस्तं
 पार्थिवेन्द्रस्य वान्यं वाक्यविशारदः । गच्छ शीघ्रं महाराज हैहिस्र्यं युद्धदुर्मदम् १७ ॥
 वारयस्व रणे यत्तो मिततां सर्ववन्विनाम् । राक्षसं क्रूरकर्माणं यथेन्द्रस्तारकं पुरा
 ॥ १८ ॥ दिग्गानि तव शस्त्राणि विक्रमश्च परन्तप । समागमश्च बहुभिः पुरामूढमदैः

वचनको मुन कर शान्तु भीष्मजी यह वचन बोले, हे कौरवेन्द्र जो मैं वचन कहता हूँ
 उस को मुनकर उसीके अनुभार तुमको भी करना योग्य है । १० । हे शत्रुहन्ता पुत्र
 युद्ध में सब प्रकारसे अपना शरीर रक्षा के योग्य है हे निष्पाप तुमको मदैव धर्म
 राज से युद्ध करना उचित है, और अर्जुन नकुल सहदेव अथवा भीमसेनके साथ
 युद्ध करना उचित है राजा राजधर्म को आगे करके किसी राजा के सम्मुख होता
 है, मैं और द्रोणाचार्य कृपाचार्य अश्वत्थामा कृतवर्मा यादव शल्य भूरिश्रवा महारथी
 विकर्ण औरतरे वह सब भाई जिनमें अग्रगण्य दुःशासन है, यह सबतरे निषिद्ध उस
 महाबली राक्षस से लड़ेंगे । १४ । उस स्वरूप राक्षसों के राजा से जो तेरी बड़ी
 शत्रुता है तो उस दुर्बली राक्षस के युद्ध के लिये भगदत्त को भेनो यह काकर
 राजा भगदत्त से बोले कि हे महाराज तुम बड़ी शीघ्रता से उस दुर्मद यथेत्कच के
 सम्मुख जाओ और सब राजाओं के देखने हुए उस कठिनकर्मा राक्षसको ऐसे हटा-
 ओ जैसे कि पूर्व समय में इन्द्र ने तारकको हटायाथा, हे शत्रुहन्ता तुम्हारे पास

reply:—"Hear my words, Prince of Kauravas, and act upon them 10. My son, destroyer of foes, one's own body is worthy of protection by all means. You may fight against Dharmraj, Arjun, Nakul, Sahadev or Bhimsen by all means. A king may justly fight with another king. I as well as Dronacharya, Kripacharya, Ashwathama, Kritvarma the Yadav, Shalya, Bhurishrava, valliant Vikarn and all your brothers led by Dushasan will fight for you against the powerful rakshas. 14. Send Bhagatta against that prince of rakshases, if you are inclined to kill him." Then turning towards Bhagdatta he said, "Hasten to encounter with the dreadful rakshas, king, and within sight of all the warriors defeat the dreadful rakshas of great prowess as Indra in the days of yore had defeated Tarak. You have divine weapons, O destroyer of enemies. You are full of prowess and have in former days fought many rakshases. You are worthy of fighting.

सह ॥ १९ ॥ त्व तस्य नृपशार्ङ्गल प्रतियोद्धा महाहवे । स्वधलेनोच्छ्रितो राजन्
 जहि राक्षसपुङ्गवम् ॥ २० ॥ एतच्छ्रुत्वा तु वचन भीष्मस्य पृतनापते । प्रययौ सिंह
 नादेन परानभिमुखो दुतम् ॥ २१ ॥ तमाद्रवन् सम्प्रेक्ष्य गज्जन्तमिव तोयदम् । अभ्य
 वचन्त सनुद्धा पाण्डवाना महारथा ॥ २२ ॥ भीमसेनोभिमन्युश्च राक्षसश्चघटोत्कच ।
 द्रोपदेया सत्यधृति क्षत्रदेवश्च भारत ॥ २३ ॥ चेदिषो वसुदानश्च दशाशधिपति
 सथा । सुप्रतीकेन ताथापि भगदत्तोप्यु पाद्वधत् ॥ २४ ॥ तत समनघयुद्ध घोररूप
 भयानकम् । पाण्डूना भगदत्तेन यमराश्रद्धिधर्धनम् ॥ २५ ॥ प्रयुक्ता रथिभिर्घाणा भीम
 वेगा सुतेजना । ते निपेतुर्महाराज नागेषु च रथेषु च ॥ २६ ॥ प्रभिन्नाश्च महानागा
 विनीता हस्तिसादिभि । परस्पर समासाद्य सधिपेतुरभीतवत् ॥ २७ ॥ गदान्धा रोप
 सरब्धा विपाणाभ्रमहाहवे । विभिदुर्हन्तमुसलै समासाद्य परस्परम् ॥ २८ ॥ ह्याद्य
 चामरापीडा प्रासपाणिभिरास्थिता । चादिता सादिभि क्षिप्र निपेतुरितरेतरम् ॥ २९ ॥

दिव्य अस्त्र है और महापराक्रमीहो और पूर्वसमय में भी तुमने बहुतसे धमुराँसे सम्मुख
 ता करी है, हे राजेन्द्र तुम इस युद्ध में उस राक्षस से युद्ध करने के योग्यहो, इस से
 हेराजा तुम अपनी बड़ी सेनाके बलसे राक्षसको मारो। २० यह भीष्मजीके वचनोंको
 सुनकर भगदत्त बड़े सिंहनाद पूर्वक शत्रुओंके सम्मुख गया और पाँदवों केभी
 आगे लिखेहुए महाबली गरमा उस क्रोध युक्त बादल के समान गर्जते भगदत्तको
 देखकर सम्मुख आकर वर्त्तमानहुये भीमसेन, अभिमन्यु, घटोत्कच, द्रोपदी के पुत्र,
 सत्यधृति, क्षत्रदेव, चेदिकाराजा, वसुदान, और दशाशधिपति सुप्रतीक हाथी पर
 सवार भगदत्तके सम्मुखगये, और भगदत्तकेसाथ पाँदवोंका खवयुद्धहुआ वधयुद्ध
 बढ़ामयानक और यमराजके पुरका वृद्धिकारक था । २५ रथियों ने बड़े २ भयानक
 बाणों से रथी और हाथियों को मारा और बड़े २ मदान्मत्त हाथियों को हाथीवानों
 ने-सगाम भूमिमें लेजाकर बड़ी निर्भयतामे एक एक के पीछे दौड़ाया फिर
 हाथियों ने परस्परमें अपने २ तीक्ष्ण दातोंसे घायल किया, चमर और प्रासधारी

with the dreadful rockets, kill him with the help of your armies" 20
 Having heard the words of Bhishm, Bhagdatta faced the enemies
 with a roar, and seeing the advance of Bhagdatta there came on to
 fight against him the following warriors of the Pandavas, namely
 Bhimsen, Abhimanyu, Ghatotkach, the sons of Drupadi, Satya
 dhriti, Kshatrudev, the king of Chedi Vasudan and the king of
 Dasharn All these warriors encountered Bhagdatta who rode on his
 elephant named Supratik The battle between the two parties was
 very severe and dreadful and filled the region of Yamraj 25 The
 charioteers with their dreadful arrows killed the charioteers and
 elephant riders and the drivers of elephants goaded their beasts
 fearlessly against others in the field of battle The elephants wounded
 one another with their sharp tusks. The horsemen armed with larded

पादाताश्च पदात्योश्चैस्ताडिताः शक्तितोमरेः । न्यपतन्त तदा भूमौ शतशोप सहस्रान् ॥ ३० ॥ रथिनश्च रथैराजन् कर्णिनालीकसायकैः । निहत्य समर वीरान् सिंहनादान् विहेदिरे । ३१ ॥ तस्मिंस्तथा वीर्यमाने सप्रामे लोमहर्षणे । भगदत्तो महेष्वासोः श्रीमसेन मथाद्रवत् ॥ ३२ ॥ कुञ्जरेण प्रभिन्नैत सप्तधा स्वता मद्म । पर्वतेन यथा तोय स्वभागेन सर्वश ॥ ३३ ॥ फिरञ्छरसहस्राणि सुप्रतीकशिरोगत । ऐरावतस्थो मघवान् चारिधारी इवानघ ॥ ३४ ॥ स भीम शरचाराभिस्ताडयामास पार्थिव । पर्वत चरिधारिभिस्तपान्ते जलदो यथा ॥ ३५ ॥ भीमसेनस्तु सकृच्च पादरक्षान् परशतान् । निजघान महेष्वास सरध्व शरवृणिभिः ॥ ३६ ॥ तान्दृष्ट्वा निहतान् कुञ्जो भगदत्त प्रतापवान् । चोदयामास नागेन्द्र भीमसेनरथ प्रति ॥ ३७ ॥ स नाग प्रेषितस्तेन वाणोज्यास्येदितो यथा । अभ्यधावत् धेगेन भीमसेनमरिन्दमम् ॥ ३८ ॥ तमाप

घोड़ों के सवार नियत हुये और बड़ी शीघ्रतासे एकदूसरे पर दौड़े, तब हजारों पदाती शत्रुओं के बरछी आदि शस्त्रों से मरेहुये प्रथी पर गिरे । ३० । और रथियों के शायकों से अन्य रथी घायल होकर गिरे फिर युद्धमें गिराने वाले वीरों ने सिंहनाद किये, इस प्रकार के रोमहर्षण युद्ध के जारी होने पर बड़ा धनुषधारी भगदत्त बड़ेभारी ससांग मद्धौत्री गजेन्द्रकी सवारी के द्वारा भीमसेन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि जलके छिडकनेवाले बादल बड़े पर्वतके ऊपर जाते हैं फिरउसने उस सुप्रतीक हाथी के शिरपर सवार होकर हजारों बाणों को ऐसे वर्षाया जैसे कि ऐरावत हाथीपर चढाहुआ इन्द्रजलकी धाराओं को वर्षाता है, उस राजाने वाणोंमें भीमसेनको ऐसा घायल किया जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल जलकी धाराओंसे पर्वत को घायल करता है । ३५ । फिर बड़े धनुषधारी भीमसेनने अत्यन्त क्रोधित होकर वाणों की वर्षासे सैकड़ों पादरक्षकों को मारा फिर बड़े प्रतापवान् भगदत्त ने उन पादरक्षकों को माराहुआ देखकर बड़े क्रोधसे अपने गजेन्द्रको भीमसेनके रथ पर पेशा, जैसे कि धनुषसे चनाया हुआ बाण जाता है उसीप्रकार उसकापेशा हुआ हाथी

missiles and fly flappers rushed against one another. Thousands of foot soldiers slain by spears and other weapons of enemies lay on earth. 30 Charioteers wounded by the arrows of other charioteers fell on earth. The warriors roared like lions. When the battle was raging so furiously Bhagdatta the great archer riding his huge elephant which dropped juice from seven places in his body faced Bhimsen as raining clouds pass over a mountain. From his elephant named Supatik he showed thousands of arrows as Indra sends forth showers of rain from the bark of Airavat. He showered his arrows over Bhimsen as a cloud send forth rain over a mountain. 35 Then the great archer Bhimsen in great anger killed hundreds of the king's guards with his arrows. Bhagdatta of great prowess seeing his foot guards slain sent his huge elephant against Bhimsen in great anger.

तन्तं सम्प्रेक्ष्य पाण्डवानां महारथाः । अप्यवसन्त वेगेन भीमसेनपुरोगमाः ॥ ३९ ॥
 केकयाभ्यामिमन्युद्वय द्रौपदेयाश्चसर्वशः । दशार्णाधिपति-शूरः क्षत्रदधमास्त्रि । ४० ॥
 चेद्विपथिकेतुद्वय संरंध्याः सर्वं पत् ते पुंउत्तमास्त्राणि दिव्यानि दर्शयन्तो महायलाः
 ॥ ४१ ॥ तमेकं कुञ्जरं कुद्राः समन्तात् पर्यवहारयन् । स विद्रो बहुमियाणैर्धर्यं चत
 महाक्षिपः ॥ ४२ ॥ सञ्जातयधिगेर्त्पाडो धातुचित इवाद्रिराट् । दशार्णाधिपतिद्वयापि
 गजं भूमिधरोपमम् ॥ ४३ ॥ समास्थितौमिदुद्राव-भगदत्तस्य धारणम् । तमापतन्तं
 संमरं गजं गजपतिः स च ॥ ४४ ॥ दधार सुप्रतीकोपि घेलेय मकरालयम् । धारितं
 प्रेक्ष्य नागेन्द्रं दशार्णस्य महात्मनः ॥ ४५ ॥ साधुसाध्विति सैन्यानि पाण्डवेयान्य
 पूजयन् । तत प्राग्ज्योतिषः कुद्रस्तौमराम् घं चतुइश ॥ ४६ ॥ प्राहिणोत्तस्य नागस्य
 प्रमुखे नृपमत्तम् । धर्मं मुख्यं तनुत्राणं शातकुम्भपरिष्कृतम् ॥ ४७ ॥ विद्वान्यं प्राधि-

भी शत्रुजित भीमसेनके ऊपर वही श्रीप्रगतिसे दौड़ा, उमझतेहुये हाथी को देख
 कर, भीमसेनके आगे चलनेवाले अभिमन्यु पांचोंकेकय द्रौपदी के पांचों पुत्र राजा
 दुश्शार्ण क्षत्रदेव । ४० । चेदिका राजाचित्रकेतुइन सवने क्रोध युक्त होकर दिव्य
 अस्त्रोंके द्वारा, उस अकंले हाथीको चारों ओर से घेर लिया वह महागजेन्द्र दश
 बाणों से घायल होकर रुधिरको ढालता हुआ ऐसा महाशोभायमान हुआ, जैसे
 कि धातुओंमें चित्रित गिरिराज पर्वत शोभित होता है । ४१ । फिर पर्वतके
 समान हाथी पर निवार राजा दुश्शार्ण भी भगदत्त के हाथी पर दौड़ा, तब उन
 हाथियोंके राजा सुप्रतीक ने उस आते हुये हाथी को ऐसे रोका जैसे कि किनारा
 समुद्र को रोकता है । ४२ । महात्मा राजा दुश्शार्ण के हाथी को रुद्राहुआ देखकर
 पाण्डवों की सेना ने साधुसाधु करके प्रशंसा करी इस के पीछे बड़े क्रोधयुक्त राजा
 प्राग्ज्योतिष ने चौदह- तोमर उमहाथी के ऊपर फेंके वह सब तोमर स्वर्णमयी
 कवचको भेदन करके उसके शरीर में ऐसे प्रवेश करगये जैसे सर्प वापी में प्रवेश

Like an arrow discharged from a bow, the elephant goaded by the
 king rushed against Bhim. Seeing that elephant coming towards them,
 Abhimanyu, the five Kaikeya brothers, the five sons of Draupadi,
 king Dusharn, Kshatradev, 40 the king of Chodi and Chitraketu
 the leaders of Bhimsen's army armed with celestial weapons, surround-
 ed the elephant in great rage. Wounded by ten arrows, the huge
 elephant, bleeding from wounds, looked glorious like a mountain vari-
 gated with its minerals 43. Mounted on his elephant huge like
 a mountain, king Dusharn rushed against king Bhagdatta. Supratik
 the prince of elephants, seeing that elephant coming towards him,
 checked him as the shore does the ocean 45 Seeing the elephant of
 the king of Dusharn thus checked, the Pandavas raised a cry of 'good,
 good'; and praised him. Then the king of Pragjyotish discharged

कौञ्च महाराज चर्मवाग्नी समाहितम् । भग्नेन्तु स्वबलं दृष्ट्वा भगदत्तेन धीमता
 ॥ ५७ ॥ घटोत्कचाय संक्रुद्धो भगदत्तमुपाद्रवत् । विकटः पुरुषो राजन् दीप्तारथो
 दीप्तलोचनः ॥ ५८ ॥ रूपं विभीषणं कृत्वा रोषेण प्रेञ्चलक्षिव । जग्राह विभलं शूलं
 गिरिणामपि दोरणम् ॥ ५९ ॥ नागं जिघांसुः सहसा चिक्षेप च महाबलः । सविस्तु
 लिङ्गमालामिः समन्तात् परिवेष्टितः ॥ ६० ॥ तमापतन्तं सहसा दृष्ट्वा प्राग्ज्योतिषो
 नृपः । चिक्षेप रुचिरं तीक्ष्णमथ चन्द्रं सुदारुणम् ॥ ६१ ॥ चिच्छेद तन्महच्छूलं तेन
 बाणेन वेगवान् । उत्पपात द्विधा च्छिन्नं शूलं हेमपरिभूतम् ॥ ६२ ॥ महाराजिन्यया
 भ्रष्टा शकमुक्ता नभोगता । शूलं निपातितं दृष्ट्वा द्विधा कृत्तं च पार्थिवः ॥ ६३ ॥ रुक्म
 वृण्डां महाशक्तिं जग्राहग्निशिखोपमाम् । चिक्षेप तां राक्षसस्य तिष्ठतिष्ठितं चाप्रवीत्
 ॥ ६४ ॥ तामापतन्तो सम्प्रेक्ष्य विषतस्यामशनीमिव । उत्पत्य राक्षसस्तूर्णं जग्राह च
 ननाद च ॥ ६५ ॥ धमञ्ज्यै चैनां त्वरितो जानुन्यारोप्य भारत । पश्यतः पार्थिवेन्द्रस्य

से पीड़ित अपनी सेना को देखकर, बड़े क्रोध में भराहुआ घटोत्कच भगदत्त के
 सम्मुख गया । राजा उत्तमिन्द्ररूप क्रोधसे लाल, नेत्र पराक्रमी, घटोत्कचने अपने
 रूपको भयानक करके पर्वतोंके भी तोड़ने वाले बड़ेउग्र शूलको हाथमें लिया, और
 हाथीके मारने की इच्छासे अकस्मात् घुमाकर फेंका, वहशूल चारों ओरसे अग्नि
 कणों करके व्याप्तया ६० उस अकस्मात् गिरते हुये शूलको देखकर राजा प्राग्ज्योतिष
 भगदत्तने बड़ेमन्दर तीक्ष्ण भयानक अर्द्धचन्द्र नाम बाणको फेंककर उसशूल को
 काटा तब वह सुनहरी शूल दोखण्ड होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि, इन्द्रकावज्र
 आकाश से गिरता है हे राजा शूलको टूटा और, गिराहुआ देखकर भगदत्त बड़ी तीक्ष्ण
 सुनहरी बरछीको लेकर राक्षसपर फेंककर तिष्ठतिष्ठ इस वचनको करने लगा, उस
 आकाशसे गिरतीहुई बरछीके समान बरछीको देखकर उसरान्तसने बड़ी शीघ्रता से
 उछलकर पकड़ा और महागर्जना को किया । ६५ और शीघ्रही उस बरछी को घोटू

by that elephant and standing as if it were in fire and wounded by
 the enraged Bhagdatta, the Pandav army was much distressed. At
 this Ghatotkach much enraged rushed against Bhagdatta. Ghatot-
 kach of wonderful form with eyes red in anger, assumed a dreadful
 shape and took up a dreadful spear that could pierce through a moun-
 tain, he hurled it with an intention to kill the elephant. The spear
 had flames of fire on all sides. 60. Seeing the spear coming suddenly
 upon him, Bhagdatta the king of Pragjyotish cut it with a beautiful
 sharp and dreadful arrow of the shape of crescent. The golden spear
 cut by the arrow into two pieces fell down on earth like the vajra of
 Indra. Seeing the spear cut and fallen, Bhagdatta took up a very
 sharp spear made of gold and hurled it at the rakshas with a cry of 'stay
 stay.' Seeing the spear falling from the sky like vajra, the rakshas
 with a jump held it in his hand and roared a loud roar. 65 And

शान् क्षिप्र घल्मीकमिव पन्नगाः । स गाढविद्धो व्यथितो नागो भरतसत्तम ॥ ४८ ॥
 उपावृत्तमद्ः क्षिप्रमभ्यवर्त्तत वेगिनः । स प्रदुग्धाघ-वेगेन प्रणदन् भैरवं रवम् ॥ ४९ ॥
 सम्मर्द्धानः स्वचल वायुर्धृक्षानिवीजसा । तस्मिन् पराजिते नागे पाण्डवानां महारथाः
 ॥ ५० ॥ सिंहनादं विनद्योच्चैर्युद्धायैवावतस्थिरे । ततो भीमं पुरस्कृत्य भगदत्तमुपा-
 द्रयन् ॥ ५१ ॥ किरन्तो विविधान् वाणान् शास्त्राणि विविधानि च । तेषामापततां
 राजन् संकुशानाममर्दिणाम् ॥ ५२ ॥ भ्रुत्वा स निनदं घोर ममर्पाद्गतसाध्वसः ।
 भगदत्तो महेष्यास स्व नागं प्रत्यचोदयत् ॥ ५३ ॥ भंकुशांगुष्ठ बुदितः सगज प्रघरो
 युधि । तस्मिन् क्षणे समभवत् साम्बत्तक इवानलः ॥ ५४ ॥ रथसंघांस्तथा नागान्
 हृष्यांश्च सह साविभिः । पादातांश्च सुसंकुशः शतशोथ सहस्रशः ॥ ५५ ॥ अमृद्नात्स
 मरे नागं संप्रधानंस्ततस्ततः । तेन संलोक्यमानन्तु पांडवानांचलं महत् ॥ ५६ ॥ सञ्चु

करता है, फिर वह महा घायल और पीड़ामाने मर्दान्तहाथी बड़े भयानक शब्द
 को करके प्रथमतो सम्मुख हुआ फिर बड़ी शीघ्रता से अपनी सेना को दवाता कु-
 चलता हुआ महाव्याकुल होकर ऐसा दौड़ा जैसे कि वायु अपने बलसे वृक्षों को गिरा
 ता हुआ जाता है । ५० । उस हाथी के पराजय होने पर पाण्डवोंके महारथियों ने, बड़े
 उच्च स्वर से सिंहताद किया और सब युद्ध के निमित्त सम्मुख नियत हुये । इस
 के पीछे भीमसेन को आगे करके नाना प्रकार के अस्त्र अस्त्रों को फेंकते मारते
 भगदत्तके सम्मुख गये हे राजा उन अत्यन्त क्रोधयुक्त आतेहुये असह्य लोगों के
 भयानक शब्दों को सुनकर क्रोध से निर्भय बड़े धनुषधारी भगदत्त ने अपने हाथी
 को चलायमान किया, फिर अंकुशरूपी उंगलीसे पीड़ामान हाथी उसयुद्धमें सर्वैक
 अग्नि के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर हजारों रथ समूहोंको हाथी घोड़े सवार
 और पदातियों समेत मारता तोड़ता कुचलता हुआ इधर उधर को दौड़ा । ५५ ।
 उस हाथीसे घायल मलयाग्नि में नियत होने के समान क्रोधयुक्त भगदत्त के हाथ

fourteen tomars which pierced through the golden armour and entered his body as a serpent enters an ant-hill Excessively wounded and distressed the huge elephant shrieked loud, and facing the enemy for a moment, ran away trampling and killing the warriors of his own party as the wind destroys the trees in its fury. 50. When the elephant was thus vanquished, the Pandav warriors roared like lions and faced the enemy in the field of battle. Discharging different sorts of weapons and led by Bhimsen, they rushed against king Bhagdatta. Hearing the sounds of those enraged warriors coming towards him in great force, the intrepid archer Bhagdatta moved his elephant in a rage. Goaded by the hook the elephant, enraged like the fire of pralaya, rushed hither and thither, destroying and trampling thousands of chariots, elephants, horsemen and foot soldiers 55. Wounded

कौच महाराज चर्मवाणौ समाहितम् । भगन्तु स्वयल इष्ट्या भगदत्तेन धीमता
 ॥ ५७ ॥ घटोत्कचाय सक्रुद्धो भगदत्तमुपाटवत् । विकट पुरुषो राजन् दीप्तायो
 दोसलोचन ॥ ५८ ॥ रूपं विभीषणं कृत्वा रोषेण प्रज्वलन्निव । जग्राह विमलं शूलं
 गिरिणामपि क्षरणम् ॥ ५९ ॥ नाग जिघासु सहसा चिक्षेप च महाबल । सविस्फु
 लिङ्गमालामि समन्तात् परिवेष्टित ॥ ६० ॥ तमापतन्त सहसा दृष्ट्वा प्राग्ज्योतिष
 नृप । चिक्षेप रुचिरं तीक्ष्णं मर्धचन्द्रं सुदाहणम् ॥ ६१ ॥ चिच्छेद् तन्महच्छल तेन
 बाणेन वेगवान् । उत्पपात द्विधा च्छिन्नं शूलं हेमपरिष्कृतम् ॥ ६२ ॥ महाशान्दिय्या
 ब्रष्टा शत्रुमुक्ता नभोगता । शूलं निपातितं दृष्ट्वा द्विधा हृत्तं च पार्थिव ॥ ६३ ॥ दकम
 दण्डा महाशक्तिं जग्राद्वाग्निशिखापवाम । चिक्षेप तां राक्षसस्य तिष्ठतिष्ठेति चात्रवीव
 ॥ ६४ ॥ तामापतन्तो सम्प्रेक्ष्य वियत्स्यामशानीमिव । उत्पत्य राक्षसस्तूर्णं जग्राह च
 ननाद् च ॥ ६५ ॥ धमञ्ज्यैनां त्वरितो जानुन्धारोप्य भारत । पश्यत पार्थिवेन्द्रस्य

से पीड़ित अपनी सेना को देखकर, बड़े क्रोध में भराहुआ घटोत्कच भगदत्त के
 सम्मुखगया हे राजा उत्तविकटरूप को अपने लाल नेत्र पराक्रमी घटोत्कचने अपने
 रूपको भयानक करके पर्वतोंके भी तोड़ने वाले बड़ेउग्र शूलको हाथमें लिया, और
 हाथके भारने की इच्छासे अकस्मात् घुमाकर फेंका वहशूल चारों ओरसे अग्नि
 कणों करके व्याप्तया ६० उस अकस्मात् गिरते हुये शूलको देखकर राजा प्राग्ज्योतिष
 भगदत्तने बड़ेसुन्दर तीक्ष्ण भयानक अर्द्धचन्द्र नाम बाणको फेंककर उसशूल को
 काटा तब वह सुनहरी शूल दोखरह होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि इन्द्रकाबज्र
 आकाश से गिरता है हे राजा शूलको टूटा और गिराहुआ देखकर भगदत्त बड़ी तीक्ष्ण
 सुनहरी बरछीको लेकर राक्षसपर फेंककर तिष्ठतिष्ठ इस वचनको कहने लगा, उस
 आकाशसे गिरतीहुई बज्रके समान बरछीको देखकर उसरान्तसने बड़ी शीघ्रता मे
 उछलकर पकड़ा और महागर्जना को किया । ६५ । और शीघ्रही उस बरछी को घोटू

by that elephant and standing as if it were in fire and wounded by
 the enraged Bhagdatta, the Pandav army was much distressed' At
 this Ghatotkach much enraged rushed against Bhagdatta Ghatot-
 kach of wonderful form with eyes red in anger, assumed a dreadful
 shape and took up a dreadful spear that could pierce through a moun-
 tain, he hurled it with an intention to kill the elephant. The spear
 had flames of fire on all sides 60 Seeing the spear coming suddenly
 upon him Bhagdatta the king of Pragjyotish cut it with a beautiful
 sharp and dreadful arrow of the shape of crescent The golden spear
 cut by the arrow into two pieces fell down on earth like the vajra of
 Indra Seeing the spear cut and fallen, Bhagdatta took up a very
 sharp spear made of gold and hurled it at the rakshas with a cry of stay
 stay' Seeing the spear falling from the sky like vajra, the rakshas
 with a jump hold it in his hand and roared a loud roar 65 And

तद्वृत्तमिधामवत् ॥ ६६ ॥ तद्वेस्य कृतं कर्म राक्षसेन बलीपता । त्रिवि देवा
सगन्धर्वा मुनयथापि विस्मिता ॥ ६७ ॥ पाण्डवाथ महाराज भीमसेनपुत्रेणमा ।
सायुसाश्विनिनावन पृथिवीमन्वनादयन् । ६८ ॥ त तु ध्रुवा महानात् प्रदृष्टाना
महात्मनाम् । नामृष्यत महेश्वासी भगदत्त प्रतापघात् ॥ ६९ ॥ स विस्फार्य मह
श्चाप मिद्राशनिसमप्रभम् । तर्जयामास धेगेन पाण्डवाना महारथान् ॥ ७० ॥ विद्य
जन् विमलास्तीक्ष्णाशाराचान् ज्वलनप्रभान् । भीममेकन विन्वाथ राक्षस नवभि शैरे
॥ ७१ ॥ अभिमयु त्रिभिश्चैव केषयान् पञ्चभिस्तथा । पूर्णायतविद्युत्प्रेत शरेणानत
पर्वणा ॥ ७२ ॥ विभेद दक्षिणं घातु क्षत्रवेवस्य चाहवे । पपात सहसा तस्य सशरधनु
रुत्तमम् ॥ ७३ ॥ द्रौपदेयास्तत पञ्च पञ्चभि समताडयत् । भीमसेनस्य च क्रोधा
त्रिजघान तुरङ्गमान् ॥ ७४ ॥ अज केसरिण चास्य चिच्छेत् विशिखैस्त्रिभि ।

पर राखर राजा के देखनेही देखने तोड़ डाला यह सबको आश्चर्यसा हुआ । ६६ ।
पराक्रो राक्षस से किये हुए उस कर्म को देखकर आकाश में गन्धर्वों समेत देवता
और मुनि भी आश्चर्य करने लगे, हे महाराज जिनमें भीमसेन अग्र गणनीय है
उन पाण्डव लोगों ने ध्रुवधनु शब्दों से पृथ्वी को शब्दायमान किया, फिर 'बड़ा
धनुषधारी प्रतापवान भगदत्त' पाण्डवों के उस अत्यंत आनन्दकारी शब्द
को सुनकर न सहसका । ६९ । और इन्द्र के बज्रके समान बड़े धनुष को चढ़ाकर
उसने पाण्डवों के महाराथियों को घुड़का । ७० । फिर निर्मल स्वच्छ प्रकाशमान
नाराचों को छोड़ते हुये भगदत्त ने एक बाणसे भीमसेन को और नी बाणों से
राक्षसों को घायल करके तीन बाणसे अभिमयु को पांच से कंकय लोगों को
व्याकुल किया और फिर अच्छे प्रकारसे खेंचे और मुके ग्रन्थीवाले बाणसे, क्षत्र
देवकी दक्षिण भुजा को ऐसा घायल किया कि वह भुजा धनुष समेत अक्षरमात पृथ्वी
पर गिरपड़ी, फिर पांच बाणों से द्रौपदी के पुत्रों को घायल करके बड़े क्रोधसे

within sight of the king he broke it into pieces with the help of his
knee. This was a wonder. Seeing the wonderful deed of the rakshas
the gandharvas, gods and munis on high were much amazed. The
Pandavas led by Bhimsen rang the directions with their warcries. Then
the great archer Bhagdatta of great prowess could not bear the joyful
sounds of the Pandavas and taking up his bow like the vajra of Indra
challenged the Pandav warriors. 70 Then discharging his bright
arrows, Bhagdatta wounded Bhimsen with one arrow, the rakshas
with nine. Alun anyu with three and the Karkayus with five, and
with well drawn low discharging arrows having hidden knots so wound-
ed Kshatadevas right arm that it was severed from his body and
fell down with the bow. Then wounding the sons of Draupadi in a
rage, he killed Bhimsen's horses. Then with three sharp arrows, he

तिथिमद् त्रिनिधान्ये सारथि चास्य पत्रिमः । ७५ ॥ स गाद्विद्धोऽप्यथितो रथोपस्थ
 उपाविशत् । विशोकं भरतभेष्टं भगदत्तं संयुगे ॥ ७६ ॥ ततो भीमो महाबाहुर्भि-
 रथा रथिनांवरः । गदां प्रगृह्य वेगेन प्रचस्फन्द रथोत्तमात् ॥ ७७ ॥ तमुद्यतगदं दृष्ट्वा
 सगृह्णामिव पर्वतम् । तावकानां सर्वे घोरे समपद्यत भारत ॥ ७८ ॥ एतस्मिन्नेवकाले
 तु पाण्डवः कृष्णसारथिः । आजगाम महाराज निज्जन्तशत्रुं समन्ततः ॥ ७९ ॥ यत्रतो
 पुरुषध्यामौ पितापुत्रौ महाबलौ । प्राग्ज्योतिषेण संयुक्तौ भीमसेनघटोत्कचौ ॥ ८० ॥
 दृष्ट्वाच पाण्डवो भ्रातॄन् युध्यमानान्महाराथान् । त्वरितो भरतभेष्ट तत्रायुध्यत्किर-
 द्धरात् ॥ ८१ ॥ ततो दुर्योधनो राजा त्वरमाणो महाराथः । सेनामचोदयत् सिंघं रथ-
 नागाद्वसंकुलोम् ॥ ८२ ॥ तामापतन्तीं सहस्रा कौरवाणां महाबलम् । मभिमुद्रायवे-
 भीमसेन के घोड़ों को मारा, फिर विशिखनाम तीन बाणों से सिंहके चिह्न
 रखनेवाली उसकी ध्वजा को काटा और दूसरे तीन बाणों से उसके सारथी को
 घायल किया ७६ हे भरतर्षभ युद्ध में भगदत्तसे अत्यन्त घायल और पीड़ित वह विशोक
 सारथी रथके भीतर बैठगया, इसके अनन्तर रथियों में भेष्ट महाबाहु भीमसेन
 विर धाँहकर बड़ी शीघ्रतासे गदाको हाथमें लेकर उस रथ से कूदा, हे राजा उस
 पर्वतके समान उठाई हुई गदाको देखकर आपके शूरों में बहाभय उत्पन्न हुआ,
 इसके पीछे श्रीकृष्ण भगवान्को सारथी रखने वाला पाण्डव भर्जुन चारों ओर से
 शत्रुओंको मारता हुआ वहाँ आ पहुँचा अहाँ कि वह महाबली पुरुषोत्तम पिता पुत्र
 भीमसेन और घटोत्कच प्राग्ज्योतिष के राजा भगदत्त से युद्ध कर रहे थे हे भरतर्षभ
 वह भर्जुन युद्धकरते हुए महारथी भाइयों को देखकर अत्यन्त क्रोधसे बाणों की वर्षा
 करके युद्ध में प्रवृत्त हुआ, उसके पीछे महारथी राजा दुर्योधन ने बड़ी शीघ्रता से
 रथ-हाथी घोड़ों से संयुक्त सेनाको भेजा, फिर श्वेत घोड़े रखनेवाला पाण्डव भर्जुन
 बड़े वेग से उस अकस्मात् आनेवाली कौरवी महासेना के सम्मुख गया, और राजा

cut down his ensign bearing the figure of a lion and with three more wounded the driver. 75. Excessively wounded and distressed by Bhagdatta, Vishok the driver sat down within the chariot. Then the best of charioteers, valliant Bhimsen, destitute of chariot, jumped down from it mace in hand. Your warriors were much terrified at the sight of that mace upraised like a mountain. Then Arjun the Pandav having Shree krishn for his chariot driver, came on destroying the foes where the father and son, Bhimsen and Ghatotkach were fighting against prince Bhagdatta. 80. Seeing his brave brothers engaged in fight, O best of Bharats, Arjun began to fight discharging his weapons. Then the great warrior Prince Duryodhan sent an army of chariots, elephants and horses in great hastâ. Arjun the possessor of white horses rushed against the Kaurav army which was

नेन पाण्डव इवतवाहन ॥ ८३ ॥ भगदत्तश्च समरे तेन नागेन भारत । विमृग्नन्पाद
वचलं युधिष्ठिरमुपाव्रथत् ॥ ८४ ॥ तदासीत्सुमहद्युद्धं भगदत्तस्य मारियः । पञ्चाले
पाण्डवैश्च केकयैश्चाद्युधैः ॥ ८५ ॥ भीमसेनोपि समरं तावुभौ केशवाञ्जुनौ ।
अभावपद्यथावृत्तं मिरावद्वधमुत्तमम् ॥ ८६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भगदत्तपराक्रमे
पडनवतितमोऽध्यायः ॥ ९६ ॥

सञ्जय उवाच । पुत्रं विनिहतं ध्रुत्वा इरावन्तं धनञ्जय । दुःखेन महताविष्टो
नि इवसन् पन्नगो यथा ॥ १ ॥ अग्रवीर्यं समरे राजन् धासुदेवमिदं वच । इव नूनमहा
प्राज्ञा विदुरा दृष्टवान् पुरा ॥ २ ॥ कुरुणो पाण्डवानाञ्च क्षयं धारं महामति । स ततो
निवारितवान् धृतराष्ट्रजनेश्वरम् ॥ ३ ॥ अन्ये च बहवो धीराः सप्राप्ते मधुसूदन ।

भगदत्त उस अपने हाथी के द्वारा पांडवों की सेना को मर्दन करता हुआ युधिष्ठिर
के सम्मुख गया, इसके पीछे हे राजा धृतराष्ट्र वहां भगदत्त का और पांडवोंका युद्ध
पांचालदेशी और केकयदेशी लोगों समेत बड़े २ अस्त्र शस्त्रों के द्वारा महा भयानक
हुआ, फिर भीमसेन ने भी उसी युद्ध में उन केशव और अर्जुन दोनों महात्माओं से
इरावानके मारेजानेका जैसा दृष्टान्त हुआ सब यथार्थ वर्णन किया । ८६ ।

अध्याय ९७ ॥

संजय बोले हे राजा उस इरावान नाम पुत्रको मरा हुआ सुनकर बड़े खेद और शोकसे
भरा, सर्प की समान श्वासा लेता हुआ अर्जुन वामुदेवजी से यह वचन बोला कि
परम चतुर बुद्धिमान् सत्यवक्ता विदुरजी ने पूर्वसमय में बड़े निश्चय से इस कौरव
और पांडवों के महाघोर नाशको देखाथा इसी कारण उन्होंने राजाधृतराष्ट्र से
निषेध किया था, हे मधुसूदनजी इस के विशेष बहुतमे वीर लोग युद्ध में जैसे कौरवों

thus advancing King Bhagdatta destroying the Pandava armies
with the help of his elephant encountered Yudhishtir Then, O
king Dhritrashtra the battle between Bhagdatta and the Pandavas
assisted by the kaikayas and the Panchals, using weapons and
missiles was very severe. Bhimsen then gave Keshav and Arjun in
the field of battle, a detailed account of the death of Iravan as it hap-
pened' 86

CHAPTER XCVIII

"Hearing of the death of Iravan," said Sanjaya, "Arjun was fill-
ed with grief and dismay, and sighing like a serpent said to Vasudev
Surly Vidur had already foreseen the great destruction of the Kaura-
vas and the Pandavas as he forbade Dhritashtra. As many brave
warriors are destroyed by the Kauravas as I have slain them. All
this battle is being done for the sake of wealth. I despise a wealth

निहताः कौरवैः मन्थे तथास्मानिञ्च कौरवाः ॥ ४ ॥ अर्थहेतोर्नरेष्ट क्रियते
 कर्म कृत्स्नितम् । धिगर्थान् यत्कृते ह्यर्थं क्रियते क्षातिसंशयः ॥ ५ ॥ अधनस्य
 मृतं श्रेयं न च क्षातिवधाद्धनम् । किन्तु प्राप्स्यामहेकृष्णं हत्वा क्षातीन्समागतान् ॥ ६ ॥
 दुर्योधनापराधनं शकुने सौवलस्य च । क्षत्रिया निधनं यान्ति कर्णदुर्मन्त्रितेन च
 ॥ ७ ॥ इदानीं च विजानामि मुकृतं मधुसूदन । कृतं राक्ष महाबाहो पाचताक्षसु-
 योधनम् ॥ ८ ॥ राज्याहं पञ्चधाभ्रामा नाकार्षीत् स च दुर्मतिः । इन्द्र्या हि-
 क्षत्रियान्दूरान् शयानान् धरणीतले । ९ ॥ निन्दामि भृशमात्मानं धिगस्तु क्षत्रे
 जीविकाम् । अशकमिति मानंते घ्रास्यन्ते क्षत्रिया रणे ॥ १० ॥ युद्धन्तु मेन क्वचिन्
 क्षातिनिर्मधुसूदन । मञ्जोदय हयान् शीघ्रं धात्तुराश्चमूं प्रति ॥ ११ ॥ प्रतरिष्येमहा-
 पारं भुजाभ्यां समरोद्धरिम् । तायं याप यितुं कालो विद्यते माधव पर्याचत् ॥ १२ ॥

के हाथ से मारेगये उसी प्रकार युद्ध में मरे; हाथ से भी अनेक कौरव मारेगये; हे
 महेत्तम यह सब युद्ध कर्म केवल धनही के निमित्त किये जाते हैं ऐसे धन आदि को
 धिक्कार है जिन के कारण ऐसा जातिवालों का नाश किया जाता है । ५ । इस
 जाति के माने से तो निर्धनही मरना श्रेष्ठ है हे श्रीकृष्णजी हम जान वालोंको मार
 कर क्या फल पावेंगे, दुर्योधन और सुव्रत के पुत्र शकुनी के अपराध अथवा करण
 की बुरी मलाहों से क्षत्रीलोगों का नाश हुआ जाता है, हे महाबाहु श्रीकृष्णजी अब
 मैं अच्छी रीति से जानत हूँ कि राजा युधिष्ठिर ने बड़ा अच्छा काम किया कि
 दुर्योधन से आधेराज्य वा पांचही गांवोंको अभिलषा चाही और उस निर्बुद्धी ने
 वह भी उनकी अभिलषा पूरी नहीं की मैं इस युद्ध भूमि में मोते हुए बड़े २ शूर
 वीर क्षत्रियों को देखकर, अनेको अत्यन्त बुरा कहकर क्षत्री की जीविका को
 अत्यन्त धिक्कार देता हूँ, हे मधुसूदनजी मैं जातिवालों से युद्ध करना चाहूँ तो सब
 क्षत्री लोग मुझको युद्ध में असमर्थ समझेंगे । १० । इस कारण हे मधुसूदन आपसोई
 को जीवही दुर्योधन की सेना में ले चलो, अब मैं भी अपनी भुजाओं से इस युद्ध
 रूपी महासमुद्रको जीवही तरुगा क्योंकि यह समय किसी स्थान पर भी असमर्थ

for which kinsmen are slain 5. To die in poverty is better than the
 destruction of kinsmen. What shall we gain Krishna, after destroying
 them. By the fault of Duryodhan and Shakuni the son of Su'al
 and the wicked council of Karan all this destruction of Kshatryas is
 taking place. I know well, brave Krishna, that Prince Yudhishtir
 was right in that he wished to take half the kingdom or even five
 villages from Duryodhan, but the latter would not part with even
 that much. Seeing these great warriors sleeping on the field of battle,
 I blame myself and the work of a kshatrya. The Kshatryas will think
 me to be weak, if I donot fight against my kinsmen 10. Drive
 therefore my horses into the field of battle, Madhusudan. I too,

पवमुक्तस्तु पाथेन केशव परवीरहा । चादयामास तान्भ्यान् पाण्डुरान् घातरहसः ॥ १३ ॥ अथ शब्दो महानासीत् तव सैन्यस्य भारत । माग्तोद्भूत वेगस्य सागरस्यैव पर्याणि ॥ १४ ॥ अपराहणे महाराज सम्राण समपद्यत । पर्जन्यसमनिर्घोषो भीष्मस्य सह पाण्डवै ॥ १५ ॥ ततो राजस्तरु सुता भीः सेनमुपाद्रवन् । परिवार्ये रणे द्रोण वसवो वासव यथा ॥ १६ ॥ तत शान्तनवे भीष्म हृषश्च रथिनावर । भगदत्त मुश माचघनञ्जयमुपाद्रवन् ॥ १७ ॥ हार्दिकयो वाहलिकश्चैव सात्यकि समभिदुता । अम्ब एकस्तु नृपति रभिमन्युमंघस्थित ॥ १८ ॥ शेयास्त्यन्ये महाराज शेवानेव महारथान् । तत प्रवृत्ते युद्ध घोररूप भयावहम् ॥ १९ ॥ भीमसेनस्तु सम्प्रेद्य पुत्रास्तव जनेदवर । प्रजज्वाल रणे कुसो हविषा हव्यधाडिष ॥ २० ॥ पुत्रास्तु तव कौन्तेय छादयाश्चक्रिरे

होने का वर्चमान नहीं है, इस प्रकार अर्जुन के वचनों को सुनकर शत्रु संहारि केशव जी ने उन श्वेतरूप वायुके समान तन्निगामी घोड़ों को हाँका, इनके पीछे हे राजा आप की सेना में ऐसा महा शब्द हुआ जैसे कि पर्व के समय वायुमें उठे हुए वेगवान् समुद्रका घोर शब्द होता है, हे महाराज अपराहनके समय भीष्मजी के और पांडवलोहों के युद्धमें वादल के समान शब्द हुए ॥१५॥ इसके पीछे हे राजा आपके पुत्र युद्धमें द्रोणाचार्यको रक्षितकरके भीमसेनके सम्मुख ऐंसे गये जैसे इन्द्रको राक्षस करके अष्टवमुजाते है, फिर शन्ननुकेपुत्र भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य, भगदत्त, मुशर्मा, यह सब अर्जुनके सम्मुखगये और, कृत्तवर्मा व वाहलीक सात्यकी के सम्मुख हुए और राजा अंबटक अभिमन्यु के सम्मुख वर्त्तमान हुआ, इन के विशेष शेष वचे हुए शुरवीर जवेदुर मशरथिषा के सम्मुख गये फिर महा भयानक युद्ध मारम्भ हुआ, हे राजा फिर भीमसेन आपके पुत्रोंको देखकर ऐसा क्रोधित होकर अभिनरूप हुआ जैसे कि हव्य को पाकर अग्नि प्रचण्ड होवे है, फिर आप के पुत्रों ने वाणों से भीमसेन को ऐसा ढक दिया, जैसे कि वर्षाऋतु में वादल

shall with my arms cross the ocean of battle, for it is no time to stand still like a weakling' On hearing the words of Arjun, Keshav the destroyer of foes drove those white horses swift as wind. Then there was an uproar in your army like that of the ocean caused by the wind at the full moon. Bhishm and the Pandavas thundered like clouds in the field of battle in the afternoon. Then, O king, your sons protected Dronacharya in battle who faced Bhishm like Indra protected by the Vasus. Then Bhishm the son of Shantanu, Kripacharya the best of charioteers, Bhagdat and Susharma encountered Arjun, Kritvarma and Vahlik and Satyaki and king Amvashata met Abhimanyu. The rest of the warriors encountered the remaining army on the opposite side. A dreadful battle ensued. Then, O king, Bhishm, seeing your sons there he became furious like fire on pouring libations. Your sons hit Bhishm with their arrows as clouds in the

शरैः । प्रावृषीव महाराज जलदीह्यपर्वतम् ॥ १ ॥ संच्छाद्यमानो वहुधा पुत्रैस्तव विशां
 पते । सुविक्रमीमलिहन् वीर शार्दूल इव दर्पितः ॥ २२ ॥ व्यूढोरस्कं ततो भीम पातया
 मास भारत । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन सोमवद्गगनजीवित ॥ २३ ॥ धरप्रेण तु मल्लेन पीते
 ननिशितननु । अपातयत् कुण्डलिनं सिंह शुद्रमृगं यथा ॥ २४ ॥ ततः सुनिशितात्
 र्षीतान् समादत्त शिखीमुखात् । ससर्ज्जं त्वरवा युक्तं पुत्रांस्ते प्राप्य मारिप ॥ २५ ॥
 प्रेषिता भीमसेनेन शरास्ते हृदध-वना । अपातयन्त पुत्रास्ते रथेभ्यः सुमहारयात्
 ॥ २६ ॥ अनाधृष्टिं कुण्डभेदिं वैराट्दीर्घलोचनम् । दीर्घबाहुं सुबाहुश्च तथैव कनक
 ध्वजम् ॥ २७ ॥ प्रपततस्म वीरास्ते चिन्तुर्भरतर्षभ । यसन्ते पुष्पशयलाद्भृताः प्रप
 तितादय ॥ २८ ॥ ततः प्रदुष्टुषु शेषास्तवपुत्रा महाह्वये । त कालमिद्य मग्न्यन्तो भीम-
 सेन मशयलम् ॥ २९ ॥ द्रोणस्तु समर वीर निर्दहन्तं सुतांस्तव । यथाद्रिं चारिधारा
 नि समन्ताद्दृपकिरच्छरैः ॥ ३० ॥ तत्राद्भुतमपद्याम कुन्तीपुत्रस्य पीरुपम् । द्रोणेन
 पर्वतको दह देने है । २१ । हे राजा आपके पुत्रोंमें बहुत दके हुए होठों को चावते
 शार्दूलके समान गर्हित महाशली भीमसेनने, अत्यन्त तक्षिण क्षुरपवाणसे व्यूढोरस्क
 को ऐसा गिराया -किं वह मरगया; फिर दूसरे पीले तीक्ष्ण भल्लसे कुंडली कोभी
 ऐसे गिराया जैसे कि छोटेमृगको सिंह गिराताहै, इसके पीछे हेराज वहीश्राघ्रतामे
 भीमसेन ने अत्यन्त तक्षिण शिखीमुख वाणों को हाथों में लिया । २२ । और आपके
 पुत्रोंपर छोड़े उनभीमसेनके चलायेहुए वाणोंने आपके महारथी अनाधृष्ट, कुण्डभेद,
 वैराट, दीर्घलोचन, दीर्घबाहु, सुबाहु, कनकध्वज पुत्रोंको पृथ्वीपर गिराया और सब
 वीर गिर कर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि यसन्तऋतु में गिरे ओग पड़ेहुए लालर
 फूल होतेहैं, । २८ । इसके पीछे आपके शेष बचेहुए पुत्र भीमसेन को काल के
 समान जानकर युद्ध से भाग गये, फिर द्रोणाचार्य ने आपके पुत्रों के जलने
 वाले भीमसेन को वाणों की वर्षा करके चारों ओरसे ऐसा दक दिया जैसे कि
 चादल जलकी धाराओं से पर्वतको दहता है, । ३० । वहाँ हमने कुन्ती के पुत्र

rainy season hide a hill 21 Excessively hidden by your sons and
 biting his lips, valliant Bhimsen, proud as a lion, killed Vyudhorask
 with a sharp arrow By another yellow dart he felled Kundali as a
 lion kills a small deer. Then O king, he took up in his hand very
 sharp arrows grinded on stone 25 He discharged them at your sons.
 By those arrows Bhimsen caused the fall of your sons Anadhrisht,
 Kund bhed, Vanat, Dughlochan, Dughvahu, Suvahu and Kanak-
 dhvaj. All these warriors, lying on the ground, looked glorious like
 red flowers lying on earth in the sea-son of Spring The rest of your
 sons, regarding him as dangerous as Death, fled from the field of
 battle. Then Dronacharya hid Bhimsen the destroyer of your sons
 with his arrows as clouds hide a mountain with the showers of rain
 30 There we saw the prowess of Bhimsen, the son of Kunti, who

धार्यमाणोपि निजघ्ने यत् सुतास्तव ॥ ३१ ॥ यथा गोवृषभो वर्षे सन्धारयति खात्
 पतत् । भीमस्तथा द्रोणमुक्त शरवर्षमदीधरत् ॥ ३२ ॥ अद्भुतञ्च महाराज तत्र चक्रे
 गोदर । यत् पुत्रास्तेऽवधीत्सख्ये द्रोणसैव न्यवारयत् ॥ ३३ ॥ पुत्रेषुपुत्रधीरेषु चिक्रीडा
 ज्ञेनपूर्वज । मृगेष्विव महाराज धरन् व्याघ्रो महाबल ॥ ३४ ॥ यथाहि पशुमध्यस्था दार
 यत पशून् वृक । वृकादरस्तव सुतास्तथा व्यद्रावयद्रणे ॥ ३५ ॥ गाङ्गेयोभगदत्तश्च
 गौतमश्च महारथा । पाण्डवं रभस युद्धे धारयामासुरर्जुनम् ॥ ३६ ॥ अक्षैरक्रानि
 संघार्य तेषासोतिरथो रथे । प्रधीरास्तव सैन्येषु प्रेषयामास मृत्यवे ॥ ३७ ॥ अभिम-
 न्युत्सुराजान मन्वष्ट लोकविश्रुतम् । विरथ रथिनाश्रेष्ठ धारयामास सायकैः ॥ ३८ ॥
 विरथो ध्वजमानस्तु सौभद्रेण यशस्विना । अवप्लुत्य रथात्पूर्णं मंबष्टोवसुधाधिप ३९ ॥
 आसिं चिक्षेप समरे सौभद्रस्य महात्मन । आरुरोह रथं चैव हार्दिकस्य महाबल
 भीमसेन के पराक्रम को देखा कि जिसने द्रोणाचार्य के रोकने पै भी आपके
 पुत्रों को मारा, है राजा जैसे कि आकाश से गिरेहुए जलको गो वृषभ जंगल में
 संहते है उसी प्रकार द्रोणाचार्य के वाणोंको भीमसेन ने सहा, फिर वहाँ भीमसेनने
 दूसरा अद्भुत कर्म किया कि आपके वेष्टोको मारकर द्रोणाचार्य को भी रोक,
 अर्जुन का बड़ाभाई आपके वीरपुत्रोंका महापीडा देनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि
 मुर्गाके मध्य में महावली व्याघ्र पीडा देनेवाला होताहै जैसे कि भेड़िया पशुआ
 के बीचमें नियत होकर पशुओं को व्याकुल और चलायमान करता है इसी प्रकार
 भीमसेन ने युद्ध मे आपके पुत्रोंको भगादिया । ३५ । फिर भीष्मजी भगदत्त और
 महारथी कृपाचार्य ने युद्ध में वेगवान् अर्जुन को धारण किया अर्थात् उसके वाणों
 को सहा उम अति रथी ने युद्ध में उन सब के अश्वोंको अपने अश्वों से रोककर
 आपकी सेना के वड़े २ वीरोंको मारा, और अभिमन्यु ने भी रथियों में श्रेष्ठ
 संसार मे विरयात राजा अश्व को शायकों से विरथ कर दिया, फिर उम यश-
 स्वी अभिमन्यु ने विरथ हुए राजा अश्व ने शीघ्रही रथ से कूद महात्मा अभिम यु

Although checked by Dronacharya could not be kept back from kill-
 ing your sons. Bhishma bore the arrows of Dronacharya as cattle
 undergo the shower of rain in a forest. Bhishma then performed
 another wonder having killed your sons he checked Dronacharya. The
 elder brother of Arjun destroyed your sons as a lion destroys a herd
 of deer. As a wolf entering a flock disturbs and disperses them, so did
 Bhishma cause your sons to scamper away. 35. Then Bhishma, Bhag-
 datt and valiant Kripacharya bore the velocity of Arjun's arrows.
 That brave warrior, having checked the weapons of other warriors
 with his own, killed the great warriors of your army. Abhimanyu
 too, with his arrows, cursed the best of charioteers, famous King
 Amvasht to leave his chariot. Made destitute of chariot by Abhi-

॥ ४० ॥ आपतं तनुं निस्त्रिंश युद्धमार्गविशारद् । त्वात्पवात् व्यसयामासुः सौभद्र परवी
रहा ॥ ४१ ॥ व्यसित वास्य निस्त्रिंश सौभद्रेण रणे तदा । साधुसाध्यति सैन्यानां
प्रणादोभूद्धिनाम्पते ॥ ४२ ॥ धृष्टद्युम्नमुत्रास्त्यन्ये तत्र सैन्यमयोधयन् । तथैवं तावथा-
सर्वे पाण्डुसैन्यमयोधयन् ॥ ४३ ॥ तत्राक्रन्दो महानाम्नीतय तेपाञ्च भारत । निजता
दृढमन्योन्य कुर्वता कर्षा दुष्करम् ॥ ४४ ॥ अन्योन्य हि रणे शूरा, केशेप्राक्षिप्यमानिन ।
नखदन्तैर्युध्यन्त मुष्टिगिर्जानुभिस्तथा । ४५ ॥ तलैश्चैवाय निस्त्रिंशैर्बाहुभिश्च
सुमस्यितैः । धिक्वम्प्राप्य चान्योन्यमनयन् यममादमम् ॥ ४६ ॥ न्यहनन् च पिता
पुत्रं पुत्रश्च पितर तथा । व्याकुलीकृतसर्वाङ्गा युयुधुम्नत्र मानवा । ४७ ॥
रणे त्वाकृष्णि चापानि हेमपृष्ठानि भारत । हतानामपिन्द्रानि कलापाञ्च महाघना ४८
जातरूपमयं पृष्ठै राजतैर्निशिता शरा । तैलधौताप्यराजन्त निर्मुक्तसुजगोपमा । ४९ ॥
हस्तिदन्तमरुत्खड्गात् जातरूपपरिष्कृतात् । चर्माणि चापविद्धानि वनमचिप्राणि

के ऊपर अपने खड्ग को फेंका और बड़ी शीघ्रता से महाबली कृतवर्पा के रथ पर
मवार हुआ । ४० । फिर युद्ध में महाकुशल शत्रुहन्ता अभिमन्यु ने उस गिरते हुए
खड्ग को अपनी तीव्रता से निष्फल किया तब अभिमन्यु से निष्फल किये हुए
खड्ग को देखकर सैना के लोगों ने मांथु शब्द उच्चारण किया, और जैसे कि
धृष्टद्युम्न आदि वीर लोग श्रेष्ठ की सेना से लड़े उसी प्रकार आपके सब वीर पुरुष
भी पांडवों की सेना से लड़े हे भरतर्षभ वहां परस्पर में मारोंको मारते और कठिन
कर्मोंको करते हुए आपके और पांडवों के वीरों के महाशब्द हुए । ४१ । युद्ध में
मजमनीय वीर लोग परस्पर में बलों को रेंचकर नख दांत और मुष्टिका और
नाथियों में भी युद्ध करनेवाले हुए और अत्रकाश पाकर त्रमाचों तलवारों और
अच्छे नियत भुजों से बहुतोंने बहुतोंको यमपुरीमें भेजा, उसयुद्ध में पिताने पुत्रकोभी
मारा अर्थात् सब मनुष्य सर्वांगरहित व्याकुल हो होकरभी युद्धको करतेहुए, हे राजा
धृतराष्ट्र युद्ध में मरेहुए वा घायल शूरवीरों के सुनहरा पृष्ठवाने सुन्दर धनुष और

manyu, King Amvashit soon jumped down from his chariot and
having hurled his sword at him, mounted the chariot of Kritvarma 40
Then dexterous in battle Abhimanyu the destroyer of foes made
the falling sword futile by his own swiftness. Seeing that sword
made useless by Abhimanyu, the people raised cries of good and well.
Your warriors fought as bravely against the Pandav warriors as
Dhrishtadyumn and other warriors fought against your army Kill
ing one another and doing hard deeds your warriors and the Pandavas
made a great noise. Brave warriors of great merit in battle dragged
others by the hair and wounded them with their nails, teeth, bows
and kicks. On some occasions they used slaps, swords and strong
arms to destroy their adversaries. Fathers destroyed their sons in

धृतिनाम् ॥ ५० ॥ सुवर्णं विकृतमासान् पतिशान् हग्मपितान् । जातम्पमयाश्चर्षी
 शकीधकनकोऽञ्जला ॥ ५१ ॥ सुसन्नाहाश्च पतिता सुसन्तानि गुरुभिश्च । परिधानपट्टि
 शायैर्भिदिपालाश्च मारिष ॥ ५२ ॥ पतितान् विविधाथापाधिचान्हेम परिष्कृतान् ।
 ह्युवाच ह्युविधाकाराश्चामरान् व्यजनानि च ॥ ५३ ॥ नाना विधानि शस्त्राणि प्रगृह्य पति
 तानय । जीवन्त इव दृश्यन्ते गतसत्रामहारथाः ॥ ५४ ॥ गदाविमथितैर्गात्रैर्मुसलैर्भि
 श्रमस्तका । मज्जवाजिरथदुप ॥ शेरतेस्मनग क्षिता ॥ ५५ ॥ तथवाद्भवन्नागाना शरी
 रैर्विप्रभौ तदा । सञ्जना वसुधाराजन् पर्वतेरिव सर्वश ॥ ५६ ॥ समरे पतितैश्चैव
 शस्त्राण्यशरभोमरैर्निर्लिखै पट्टिशै प्राप्ते रयस्वन्तै परदग्ध ॥ ५७ ॥ परिषैर्भिदि
 पालश्च शतध्नीभिश्च मारिष । शरीरै शस्त्र निर्भिन्नै समास्तीर्यत मेदिनी ॥ ५८ ॥
 विशम्भैरलाशब्दैश्च शानितावपरिष्कृतै । गतासु भिरमिध्वन प्रियभौ निचितामही ५९

तगीर अथवा सुनङ्गी स्पहरी पुत्रवाले छोडेहुए तीक्ष्णधार वागुत्तलमे शुद्ध
 क्रिय हुए सर्पों के समान शोभायमान हुए, हाथीदात की मूढाने सुवर्ण मे
 गन्धि सङ्ग धनुष दाठ पराश, दुधारे, खड्ग, शक्ति, कवच, भारीमुशल, परिष,
 पट्टिग, धियिडपाल अनेक प्रकारके गिरेहुए धनुष और अनेक प्रकार की झूलचमर
 पवे वा अनेक प्रकार के शस्त्रधारी महारथी और मरे मनुष्य भी जीवते मे दिखाई
 देते है । ५८ । हे राजा गदाओं मे मथे हुए अगों समेन मुगलों से दृटे शिर घायल
 हाथी घोडे और रथ पृथ्वी पर गयन कर रहे है अर्थात् विछ हुए है, उनहाथी घोडे
 रथ और मनुष्यों मे ढकी हुई पृथ्वी मय और से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि
 पर्वतों मे शांभन हाता है, युद्धभूमि में गिरी हुई वरछी और दुधारे खडग बाण
 तोमर पट्टिश पराश भल्ले छोडे के फरसे परिष धियिडपाल शतध्नी और शस्त्रों मे
 मरे हुए शरीरों मे पृथ्वी साधारतर विदित होती है अल्प शब्द के वा वीर्य शब्द के
 मृतक मनुष्यों के समूहों से व्याप्त हुई पृथ्वी महाशोभित चिदितहुई, तन्त्र केयूर

the hurry of the battle. The golden bows of the warriors killed or
 wounded in battle quivers and arrows having silver or gold
 feathers sharpened and oiled looked like serpents. The gold decked
 swords with iron handles bows shields missiles double edged swords
 spears armours clubs and other weapons lying down together with
 the fine trophies of spoils made the heads of warriors look as
 they were like 54. Brought in by elephants and clubs
 elephants horses and chariots are lying on the ground. Strewed over
 with them the earth looks glorious as if covered with mountains.
 Fallen over the field of battle spears double edged swords, tomars,
 darts axes clubs blades of slings and other weapons and the
 bodies cutly them cover the whole earth. Crying low and loud,
 crowds of dying warriors embolden the face of the earth. Decked with

सतलत्रे सकेयूरवाहुमिदचन्दनोक्षिते । ह्यग्निहस्तापर्मदिलुध्रे रुग्मिश्च तरस्यिनाम् ॥ ६० ॥ वद्धचूडामणिर्दत्त शिगमिदच सकुण्डले । पतितंश्रृंगपभाक्षणा वभौ भारत मेदिते ॥ ६१ ॥ करवै शोणित दिग्धर्विप्रकीर्णैश्च काचने । रराज सुमश सुमि शान्ता चिं भिरियातने ॥ ६२ ॥ विप्रविद्ध कलापैश्च पतितैश्च शरामने विप्रकीर्ण शरैश्चैव रुक्म पुनै समन्तत ॥ ६३ ॥ रथैश्च सर्वता भनै किंकिणीजालपुत्रिते । घाजिमि दचहृत्तैर्वाणे सुस्त जिह्व सशोणिते ॥ ६४ ॥ अनुश्रुपे पताकामि रपासङ्गैर्ध्वजैरपि । प्रवीराणामहासलैर्विप्रकीर्णैश्चपाहुरे ॥ ६५ ॥ सुस्तहस्तैश्चमातङ्गै शयानैर्विचमौमही । नानारूपैरलकारै प्रमदेवाभ्यलकृता ॥ ६६ ॥ दन्तिमिदचापरैस्तत्र सप्रासैर्गाढवेदनै । करै शब्द विमुञ्चद्भि शीकरञ्च मुहुर्मुहु ॥ ६७ ॥ विचमौ तद्रणस्थानं स्पन्दमानै र्निवाचले । नानारागै कम्बलैश्च परिस्तोमैश्च दन्तिनाम् ॥ ६८ ॥ वैदूर्यमणि दण्डैश्च पतितै रकुशै शुभैः । घटाभिदचगजेन्द्राणा पतितामि समन्तत ॥ ६९ ॥ विपाटिद

रक्षक और चन्दन चर्चित मुजा हाथियों की शूड के समान कटी जंपा और चूडामणि बंधे हुए उत्तम शूंगों के कुडलधारी शिरो से पृथ्वी अपूर्वही शोभा दे रही है । ६१ । और हे भरतवशी सुवर्णके फैले हुए रुधिरसे भरे कवचों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि निर्धम अग्निशयों से शोभित होती है, दृष्टे घनप तरकम और फैले हुए सुनहरी पुत्रवाले बाणों से और चारों ओर से घट्टों से युक्त दृष्टे हुए रथों से वा बाणोंसे मारे हुए रुधिर में भरे तिनकी गिह्वा मुस्त से बाहर निकली थी उनयोड़ोंसे वा खेंची हुई पताकाओं से और उपासगिक ध्वजझोंसे और वीरोंकी खांपाड़ियों से वा बिखरी हुई चोटियों से और शूडदृष्टे हुए हाथियों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नानाप्रकार के आभूषणोंसे अलकृतस्त्री शोभित होती है । ६६ । वडा बहुत पीाडत सुडोंसे शब्दकरते हुए पराशों समेत अन्य हाथियों से वह युद्धभूमि ऐसी शाभित हुई जैसे कि चलते हुए पहाडों से शोभाय मान होती है, नानाप्रकार के रगवाले हाथियों के कम्बलों से वा परश तोमरों से और वैदूर्यमणिवाले शुभ अकुशों से व चारों ओर से गिरे हुए गजेन्द्रों के घट्टों

armlets, guards and sanadil paste, the covered arms, the thigh like the trunks of elephants and the heads of warriors wearing earings and head jewels make the ground look yet more beautiful 61 Covered with blood stained and gold billed armurs the earth looked as if covered with fire without smoke With the broken bows and quivers, the arrows with golden feathers strewn all over, el rrots and their blls lying all over, the discharged arrows, the bleeding horses with their tongues lolling out, broken banners, skulls of warriors strewn over like peaks and the trunkless elephants, the earth looked beautiful like a damsel decked with various sorts of ornaments and jewels 66 With other elephants, wounded in trunks and shreking, the field of battle looked beautiful as if it had mountains moving on it. The field of battle looked like starlit sky with the coloured trappings of elephants,

विचित्राणि कुर्यान् रघुशस्तया । श्रेयसादिचक्रुपैश्च रुक्मकन्याभिरेवच ॥३०॥ य
 न्त्रैश्च बहुधादिउन्नैस्नामरैश्चापि काचनै । अश्वानां रेणुकापिलै रुक्मचउन्नैरदरुद्रै
 ॥ ३१ ॥ सादिना भुजगंश्चिउभ्रै पनितै साङ्ग देस्तया । प्रामंश्चविमलैस्तीक्ष्णैर्विमला
 मिस्तयष्टिभि ॥ ३२ ॥ उष्णीषैश्च तथा चित्रैर्विमृद्धैस्ततस्तत । विचित्रैर्वाणवर्षैश्च
 जातरूपपरिष्कृतै ॥ ३३ ॥ अश्वान्तरपरितोमै राकवैर्मृदितैस्तथा । नरैश्च चडामणिभि
 विचित्रैश्चमहाधनै ॥ ३४ ॥ उभैस्तथापविद्देश्च चामरैर्यत्नैती । पद्मन्दुयुतिभि
 श्रेयैश्च घटैर्नैश्चरुक्मडलै ॥ ३५ ॥ कृतसमभूमिरुपर्यै वाटाणा ममलकै । अपविष्टै
 महाराज सुवर्णैश्चकुण्डलै ॥ ३६ ॥ ग्रहनक्षत्रशश्या धोरिवासाहसुन्दर्य । एवमेते
 महासेन मृतिते तत्र भारत ॥ ३७ ॥ परस्पर समासाद्य तर तेषाञ्चसयुगे । तेषुभ्रान्तैषु
 मग्नेषु मृदितेषुच भारत ॥ ३८ ॥ रात्रि समभयत्तत्र नापश्याम तता नुग म् । ततो
 पहार सेनानाप्रचक्रु कुलाण्डवा ॥३९॥ रजनीमुखेसु रीद्रेतु घत्तेमान महा मये । अब
 हार ततः कृत्वा मरिता कुलाण्डवा । न्यविशन्त यथाकाल गत्वास्त्र शिविरंतदा ८०
 इति महा० भीष्मप० भीष्मवधप० अष्टमदिवनयद्वावहारे सप्तनवांतमोऽऽपायः ॥९॥

से और विचित्रविचित्र झल और शीवाओं के भूषणों से या हाथीके बाजं वानी
 सुवर्ण की रक्षियोंने बाजवन्दों समेत गिरीहुई भुजाओं से वा शुद्ध तीक्ष्ण परशों
 से और निर्मल दुधारा खड्गों से विचित्र वाणों की वर्षामे जोकि राक नामभृगके
 रोमोंसे बनेहुए अत्यन्त मृदुधे वा राजाओंकी अपत्य चडामणिषोंसे वा दृष्ट छत्र
 चामर व्यजन और चन्द्रकमल के समान मुखों के प्रकाशों से और हे महाराजनीरों
 की अच्चे प्रकार से रची हुई डकी मूछते पृथ्वी ऐसी होगई जैसे कि नक्षत्र समूहों
 मे प्रकाशमान आकाश होताहै । ३७। हे भरतर्षभ इसप्रकार आप की आर लक्ष्मी
 यह दोनों बेना युद्ध में परस्पर सम्मुखहोकर गईं गईं होगई, उन सेनाओं के
 थकने और तिरैरिरेहोने और मर्दन हानेपर, रात्रिहोगई इसके पीछे हमने
 चलने वालों को नहीं देखा फिर कौरव पांडवों ने सेनाओं का विश्राम किया
 रात्रि के प्रारंभ होजानेपर कौरव और पाण्डव एकसाथही सदैव के समान
 अपने २ डेरों में नियतहुए ८० ॥

battle res missiles, jewelled goads, bells of elephants strewn all over,
 coverings of various colours necklaces of elephants, gold chains, ma-
 chines, arms of warriors decked with jewels, sharp axes, bright double
 edged swords, shower of arrows covered over with soft deerskin, head
 jewels of princes broken shades chamars and fans, faces bright as the
 moon or lotus flowers and with the fine beards and moustaches of
 warriors 17 Thus O best of Bharats the armies of both sides met
 in battle and were destroyed When these armies were thus tired and
 dispersed or destroyed, the night came on. We could not see them
 going to their camp The two parties took rest for the night and
 both Kauravas and Pandavas slept during the night as usual " 80 "

सञ्जय उवाच । ततो दुर्योधनो राजा शकुनिवापि सौवलः । दुःशासनश्च पुत्रस्तं
 सूतपुत्रश्च हृजयः ॥ १ ॥ समागम्य महाराजं मन्त्रं चकुर्विवाक्षितम् । कथं पाण्डुमुता
 सङ्घर्षे जेतव्याः सगणावति ॥२॥ ततो दुर्योधनो राजा सर्वोन्तानाह मन्त्रिणः । सूत
 पुत्रं समागम्य सौवलञ्च-महाबलम् ॥ ३ ॥ द्रोणा भीष्मः कृपः शल्यः सौमदत्तिश्च
 संयुगे । न पार्यान् प्रतिवाचन्ते न जाने तच्च कारणम् ॥ ४ ॥ अथप्यमानास्ते चापि
 क्षपयन्ति बलं मम । स्तोस्मि क्षीणबलः कर्णं क्षीणशस्त्रश्च संयुगे ॥ ५ ॥ निरृतः पाण्डवः
 शूरैरवध्यैर्दिवतैरपि । सोऽहं सशयमापन्नः प्रहरिष्ये कथं रणे । तमप्रवीन्महाराज सूत
 पुत्रो नराधिपम् ॥ ६ ॥ कर्ण उवाच । माशौच भरतधेनु करिष्येहं प्रियं तव । भीष्म-
 शान्तनववस्त्रेण प्रपदातु महारणात् ॥७॥ निवृत्ते युधि गात्रेये न्यस्तशस्त्रेचभारत । बह
 शर्प्यान् हनिष्यामि सखितान् सर्वसौमके ॥ ८ ॥ पश्यतो युधि भीष्मस्य शपे सत्येन ते
 नृप । पाण्डवेषु दयां नित्यं स हि भीष्मः करोति वै ॥ ९ ॥ अशकश्च रणे भीष्मो जितुं

अध्याय ९८ ॥

संजय बोले कि इसहे पीछे राजा दुर्योधन और सुवलकापुत्र शकुनि, दुःशासन
 और हृजयकर्ण इनमयने मिलकर सलाहकरी कि पाण्डवों को सेना समेत कैसे विजय
 करना चाहिये, यह सुनकर राजा दुर्योधन महाबली शकुनि और कर्ण को सम्मुख
 करके उनसब मन्त्रियों से बोला, कि द्रोणाचार्य, भीष्म, कृपाचार्य, शल्य, भूरिश्रवा
 यह सब मिले हुये पाण्डवों को युद्ध में पीड़ानहीं देते हैं इसका कारण मैं नहीं जानता
 हूँ, बहसब बिना घायल हुएही मेरीसेनाका नाशकरे डालते हैं, हे कर्ण मैं युद्ध में
 अपनी सेना और शस्त्रों से नाशयुक्तहोकर देवताओंसे भी अजेय शूरवीर पाण्डवों से
 निरादर कियागयाहूँ इस सन्देहमें पड़ा हुआ मैं युद्धको कैसे करूंगा । ६ । हे राजा
 यह सुनकर कर्ण ने कहा कि हे भरतर्षभ चिन्तामतकरो मैं तुम्हारे हितको करूंगा शतनु
 के पुत्र भीष्मजी शीघ्रही युद्धसे निवृत्त होजायँ, युद्धसे भीष्मजी के हटजाने और
 सखियोंमें रहित होजानेपर मैं सब सौमकों समेत पाण्डवों को भीष्मजी के देखनेहुएही

CHAPTER XCVIII

Sanjaya said, " Then Prince Duryodhan and Shakuni the son of Saval with Dushasan and invincible Karan met in council to determine how to conquer the Pandavas. Prince Duryodhan thus addressed brave Shakuni, Karan and other ministers:—"Dronacharya, Bhishm, Kripacharya, Shalya and Bhurishrava to, ether donot destroy the Pandavs, what is the reason ? They destroy our armies without being themselves wounded With my armed warriors, O karan, I think myself invincible by the gods and yet I am being despised by the Pandavas. Being so doubtful how shall I fight out?" On hearing this, O king, Karan said, " Remove all care form your mind, best of Bharats; for I shall gratify your desire. Let Bhishm the son of Shantanu desiat from fighting. On his giving up arms, I shall, with-

मेतान् महारथान् । अभिमान्नी रणे भीष्मो जेतुमेतान् महारथान् । अभिमान्नी रणेभीष्मो नित्यं चापि रणोत्प्रिय ॥ १४ ॥ स कथं पाण्डवान् युद्धं जेष्यते तात सद्भ्रतान् । स त्वं शीघ्रमिति । गत्वा भीष्मस्य शिरः प्रति ॥ १५ ॥ अनुमान्य गृहं वृद्धं शत्रुन्यास्य आरतः । न्यस्तशस्त्रं ततो भीष्मे निहतान् मर्त्यं पाण्डवान् ॥ १६ ॥ भयैकेन रणे राजन् समुद्दग्गणवाञ्छवन्नि । पंचमुक्तस्तु कर्णेन पुत्रो दुर्योधनस्तव । १७ ॥ अग्रवीरुः स्यात्तैश्च दुःशासनमिदं वच । अनुयायं यथा सर्वं संजीभयति सर्वेश ॥ १८ ॥ दुःशासनतथा क्षिप्रं सर्वमेवोपपादय ॥ पंचमुक्त्वा ततो राजन् कर्णमाह जेतद्वर ॥ १९ ॥ अनुमान्य रणे भीष्म मेवोह द्विपदाभ्यरम । आगमिष्ये तत क्षिप्रं स्वत्सकाशमरिन्दम ॥ २० ॥ अपक्रान्ते ततो भीष्मे प्रहरिष्यसि सपुगे । निष्पण्णत ततस्तपे पुत्रस्तव विशम्पते ॥ २१ ॥ सदितो स्यात्तुभितैस्तु देवैरिव शतक्रतु । ततस्त नृपशास्त्रं शास्त्रं लभस्विक्रमम् ॥ २२ ॥

माझगा हे राजा यही मीरेसमुख मर्त्य मकल्प पूर्वक, प्रतिज्ञाको कृत्वा, और शपथ से कहताह कि वह भीष्म निश्चय करके पांडवों पर दया करता है, इसे भीष्मजी युद्ध में उन महारथियों के विजय करने को असमर्थ है । १० । यह भीष्म युद्ध में महाअहकारी और युद्धहीको सदैव भिय मानताहै, हे तात वह सम्मुख आये हुए पांडवों को युद्ध में कैसे विजय करेगा सा तुम शीघ्रही यहां से भीष्म के डेर में जाकर, उन वृद्ध गृहको नमस्कार करके शत्रु के त्यागने के लिये कहो हे राजा भीष्मजी के शस्त्र त्यागने पर युद्ध में सना और मित्रा समेत पांडवों को मुक्त अकेले कही हाथ से मराहुआ देखोगे कर्ण के पंच वचन सुनकर आप का पुत्र दुर्योधन, अपने भाई दुःशासन से बोला कि यात्राको सब सामान सब प्रकारसे तैयार हो । ११ । ऐसा दुःशासन को वह दुर्योधन कर्ण से बोला, कि हे शत्रुओं के विजय करने वाले मैं एकपक्ष भीष्मको युद्धके लिये समझकर और भणाम करके शीघ्रही तरे सम्मुख आऊगा, उमके पीछे भीष्मजी के हट जाने पर तुम युद्धमें प्रहार करोगे, हे राजा ऐसा कहकर आपका पुत्र अपने भाई

in sight of Bhishm destroy all the Pandavas with the Somaks. I make a true promise in your presence and swear that Bhishm is, I wd, to the Pandavas and therefore incapable of conquering them 10. He is proud of his power and loves battle, but he can not conquer the Pandavas. You may be pleased to go at once to Bhishm's camp, and humbly ask that old man to give up arms. You will see all Pandavas with their armies and friends slain by me alone as soon as Bhishm gives up fighting. Hearing the words of Karan your son Duryodhan said to Dushasan his brother. Let there be every thing ready for my departure. 15. Then turning to Karan he said 'Destroyer of foes, I shall soon come back to you after asking Bhishm the best of men to desert from fighting and paying my respects to him. You will fight in the field of battle when Bhishm gives up fighting. Having said

आराहयस्य तेषु प्राप्ता दुःशासनस्तदा । अद्भुतो बद्धमुकुटो हस्ताभरणवान्पु ॥१९॥
धात्तिराज्ञा महाराज विवभा स पथि व्रजन् । भण्डोपुष्पनिकाशेन तुपनीयनिभेनच २०॥

स्वयामरा द्वाये ॥ ३९ ॥ सम्पुज्य

राजा गाह्यस्य पशोस्थितः ॥ ३९

वसिष्ठः काले संभृत्य स्वमुजं तदा ॥ २७ ॥ हस्तिहस्तापमं शीक्ष सधेशशुनिवहणम् ।

समेत एमीः शीघ्रतासु चला जेम कि देवताओं समेत इन्द्र जाता है, इस के पीछे राजा भी म अष्ट भिह समान पराक्रमी दुःश्यापनको भाई दुःश्यामन ने शीघ्र ही पाई पर सवार किया । १९ । हे धृतराष्ट्र धाजुवन्द आर मुकुट हस्त भूषणादि से अलंकृत वह दुःश्यापन प्राण में चलता हुआ भिण्डी के फल आर सुवर्ण के समान प्रकाशमान उत्तम चन्द्रनादि से सगभित देह निमल वस्त्रादिका को पहरे सिंह समान गति से पना शोभापमान हुआ जैसे कि आकाश में निमल किरण युक्त सूर्य प्रकाशमान होता है भीष्म के डरे में जाते हुये उस नरोत्तम के पीछे सब लोको के बड़े धनुषधारी शरवीर आर महाधनुषर भाई लोग ऐसे चल जसे कि इन्द्र के पीछे देवता चलते हैं हे नराजम इसी प्रकार कोई हाथी पर कोई रथ पर कोई घोड़े पर सवार होकर उसके साथ हुये, राजा की रक्षा के निमित्त वह सुहृदजन जिन्होंने शस्त्राको त्यागकर दिये थे एक साथ ही ऐसे प्रकट हुये जसे कि इन्द्र की रक्षा के निमित्त देवता स्वर्ग में प्रकट होते हैं, कोरवों का रामा अपने सब कोरवलोगों से सभित उन यशस्वी भीष्मजी के डरेको गया, उस समय उसके पीछे तो

this, your son hastened with his brothers to go to Bhishm as Indra does with the gods. Then Dushasan helped Duryodhan, the best of kings and full of prowess like a lion, to ride his horse. 19. Adorned, O king, with armlets diadem and finger-jewels, looking like a golden flower, his body anointed with sandal and other scents, wearing fine clothes and walking like a lion, Duryodhan looked like the sun with his pure rays in the sky. Going to the camp of Bhim, that best of men was followed by the famous archers and warriors of the world and his brothers, mighty bowyers, like Indra followed by gods. Some of his followers, O best of men, were mounted on elephants, some on chariots, and others on horse backs. Those of his friends who had laid aside their weapons, came at once to guard the king as gods, in the heaven, do to protect Indra. The prince of the Kauravs, followed by

वान् । तद्मादहंसि गांयेय कृपाकर्तुं मदिप्रभो ॥ ३७ ॥ जहि पांडुरसुतान्चैरात् महद्ब्रह्म
 वानवान् । अहं स्वर्गान् महावीज निहनिष्यामि सोमफान् ॥ ३८ ॥ पञ्चानान् कैकयेः
 साधकंरुधायेति भारत । एवञ्चः सत्यमेवास्तु जहिपाण्डु भ्रमागतात् ॥ ४१ ॥
 सोमकांश्च महद्घास्तान् सत्यवाग्मेवभारत । दययाप दिघाराजव हेभ्यसावान्ममप्रभो
 ॥ ४० ॥ मद्भाष्यतयावापि ममरक्षसि पांडवान् । अनुचारीहि स्वमेरे कर्णं माहवशोमि-
 नम् । ४१ ॥ स जप्यति रणे गार्धान् ससुहृद्गणयान्धवान् । स एवमुक्त्वा नृपतिः
 पुत्रो बुभुक्षोर्धनस्तव । नोवाच वचनं किञ्चिन्नोभ्यं सत्यपराक्रमम् ॥ ४२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वनिष्ठे भीष्मवचनपर्वणि भीष्मदुर्योधनसम्वादे

श्रेष्ठनवातितमोऽध्यायः २८ ॥

इन्द्र समेत देव दानवों के भी विजय करने की अभिमाणा रखते हैं तो इन पाण्डवोंको उन के सहायकों समेत विजय करना कितनी बात है हे गांयेय भीष्मजी आप मुझपर कृपा करने को योग्य है, आप उनवीर पांडवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र दानव लोगोंको मारता है हे महाराज मैं सब सोमकों को पाङ्गा फिर कैकयोंको और पांचालों समेत केकय लोगोंको भी पाङ्गा आप अपने वचनको मन्त्रकरके सम्मुख आयि हुए पाण्डवोंकी गोरो और बड़े घनुपधारी सोमकोंकोभी मारकर अपने वचनकी सत्यकरो हे भरतवंशी भीष्मपितामह दयासे यामरे वैरभावसे श्रेयो मेरी भारंघ हीनतासे जो आप पांडवोंकी रक्षा करते हो तो युद्ध में शोभा बानेवाले कर्णको आज्ञादी, वह कर्ण युद्धमें सब सनाथीरमुहदों समेत पांडवोंको मारिगा, आपका पुत्र इस प्रकारके वचन कहकर फिर उस सत्य पराक्रमी भीष्मजी से कुछ नहींबोला ॥ ४२ ॥

gods and daṇavas with Indra, how easy it is for us to conquer the Pan-
 dāvas and their allies? I crave your favour, Bhishm the son of Ganga.
 Kill the Pandāvas as Indra does the daṇavaḥ. I shall, O king, des-
 troy all the Somaks and the Panchāls together with the Kaikayas.
 Fulfil your promise by killing the Pandavas when they face you, fulfil
 also your promise of killing the Somaks, Grandfather, Bhishm, des-
 cendant of Bharat! If through kindness to them, or unkindness to me
 or through my misfortune you spare the Pandavas, allow the great
 warrior Karṇa to do the work. He will destroy all the Pandavas and
 their allies in battle." Having said these words to Bhishm of true
 prowess, your son became silent." 42.



प्रगृह्णन् जलीक्षणा मुद्यतान् सर्वतो विश ॥ २८ ॥ शुभाय मधुरा वाचो नानादेशनि
वासिनाम् । संस्तूयमान् सूतैश्च मागधैश्च महायशा ॥ २९ ॥ पूजयान्दृचतान् सर्वान्
सर्वलोके श्वरेऽश्वर । प्रदीपैः काञ्चनैस्तत्र गन्धतैलावसेचितै ॥ ३० ॥ परैवप्रमर्हां
राजं प्रज्वलद्भिः समन्तत । सतैः परिकृतो राजा प्रदीपैः काञ्चनैर्ज्वलन् ॥ ३१ ॥
शुभे चन्द्रमा युको दीप्तैरिव महाप्रहैः । काञ्चनोष्णीपिणस्तत्र घेन्नद्भ्रष्टरपाणय
॥ ३२ ॥ प्रोत्साहयन्त शनकैस्तं जन सर्वतो विशाम । सम्प्राप्यतु ततो राजा भीष्मस्य
सदनं शुभम् ॥ ३३ ॥ अवतीर्य हयाञ्चापि भीष्म प्राप्य जनेश्वर । अभिधाद्य ततो
भीष्म नियुगण परमासने ॥ ३४ ॥ काञ्चने सर्वतो भद्रे स्पृष्ट्वाऽस्तरणसदृशे । उवाच प्रां
जलिभीष्मं वाष्पकठोद्युलोचनः ॥ ३५ ॥ त्वां वर्यहि समाभित्य सयुगे शत्रुसूदन ।
उत्सहे मरणजेतु सैद्रानपि सुरा मुरान् ॥ ३६ ॥ किमुपांडुसुतान्वीराभससुहृद्गणघां

शिर लोग और और पास सब भाई बन्धु अपने सुन्दर भुज दण्डों में झंजुली
साधे हुये और देशनिवासियों से भीठे वचनों को सुनता हुआ वह महायशस्वी
सूत भाग्यों से प्रशंसित होकर उनसब अपनी प्रजाओं को प्रसन्न करने लगा
। ३० । वहां महात्मा पुरुषों ने सुगन्धित वस्तुओं से पूर्ण सुवर्ण के दीपकों के द्वारा
उसको चारों ओरसे प्रकाशित किया, फिर उन सुवर्ण के बड़े २ दीपकों के प्रकाश
से महामकाशमान, वह राजा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बड़े २ ग्रहों से संयुक्त
चन्द्रमा प्रकाशमान होता है उम स्थान पर सुनहरी सितार आदि बाजे हाथों में
रखनेवाले मनुष्य सबओर से उन मनुष्योंकी भीठे वचनों से हटानेवाले हुए फिर
राजा भीष्म के शुभ डेरे को पाकर घोड़े से उतर भीष्म के सम्मुख उनका नम
स्कार करके उत्तम आसन पर बैठगया । ३५ । वह डेरा सुनहरी उत्तम विछाँनों
से भरे दिशा में कल्याणरूप था उम में बैठेहुए भीष्मजी से राजा दुर्व्योधन हाथ
जोड़ेहुए गवगदवाणी में बोला कि हे शत्रुहंता हमलोग युद्ध में आयेमे रहित होकर

all the Kaurays went to the tent of Bhishm Followed by warriors
and surrounded by his brothers and kinsmen with depressed arms,
Prince Duryodhan went on hearing the sweet words of the old men and
the praises of the bards and pleased his subjects in this manner 30.
Great men illumined his way from all sides with gold lamps fed by
scented materials. Looking glorious in the light of gold lamps, the king
appeared like the moon surrounded by stars. A band of musicians
went on in front, playing sweet tunes to clear the way. Having
reached the tent of Bhi-hm, the king dismounted from his horse, and
having paid his respects to him sat on the best seat : 35 Golden
carpets were spread all over the tent where Bhishm sat, and the
princes with joined palms and choiced voices thus addressed him, — ' Be
our p 55: 1 by 711 dnt 77r of 574, we aspre to conquer the

यान् । तस्माद्देहिस्ति गांश्वेय कृपां कर्तुं मयि प्रमां ॥ ३७ ॥ अहि पांडुरसुतान्वेत्तान् महैर्द्रव्य
दानवान् । अहं सर्वान् महाराज निहनिष्यामि सोमफान् ॥ ३८ ॥ पञ्चालान् केकयैः
साधैकरूपैश्चिति भारत । त्यद्वचः सत्यमेवास्तु ऊहिपाथोद् भ्रमागतात् ॥ ४१ ॥
सोमकांश्च महैश्वासान् सत्यवाग्मेव भारत । दयेयाय दिवाराजश्च ह्येषसावानममप्रभो
॥ ४० ॥ मद्रभायतयावापि ममैरस्तसि पांडवान् । अनुचानीहि समरे कर्ण माहवयोमि-
तम् ॥ ४१ ॥ स जेष्यति रणे पार्थान् समुहहृणयान्धवान् । स एवमुक्त्वा नृपतिः
पुत्रो वुर्य्योधनस्तव । नोवाच वचनं किञ्चिज्जीप्यं सत्यपराक्रमम् ॥ ४२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मदुर्योधनसम्वादे
अष्टमवर्ततमोऽध्यायः २८ ॥

इन्द्र समेत देव दानवों के भी विजय करने की अभिलाषा रखते हैं । तो इन पाण्डवोंको उन के सहायकों समेत विजय करना कितनी बात है हे गांश्वेय भीष्म भी आप मुझपर कृपा करने को योग्य हो, आप उनवीर पांडवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र दानव लोगों को मारता है हे महाराज मैं सब सोमकों को मारूंगा फिर केरूपोंको और पांचालों समेत केकय लोगों को भी मारूंगा आप अपने वचन को मत्स्यकरके सम्मुख आपसे हुए पाण्डवों को मारो और बड़े धनुषधारी सोमकों कोभी मारकर अपने वचनको सत्यकरो हे भरतवंशी भीष्मपितामह दयासे आभरे वैरभावसे अथवा मेरी आरंभ हीनतासे जो आप पांडवों की रक्षा करते हो तो युद्ध में शोभा दानैवाले कर्ण को भेड़ादी, वह कर्ण युद्धमें सब सेनाभार सुहृदों समेत पांडवों को मारेगा, आपका पुत्र इस प्रकारके वचन कहकर फिर उस सत्य पराक्रमी भीष्मजी से कुछ नहींबोला ॥ ४२ ॥

gods and dānavas with Indra, how easy it is for us to conquer the Pan-
davas and their allies! I crave your favour, Bhishma the son of Ganga.
Kill the Pandavas as Indra does the dānavas. I shall, O king, des-
troy all the Somaks and the Panchala together with the Kaikayas.
Fulfil your promise by killing the Pandavas when they face you, fulfil
also your promise of killing the Somaks. Grandfather, Bhishma, des-
cendant of Bharata. If through kindness to them, or unkindness to me,
or through my misfortune you spare the Pandavas, allow the great
warrior Karna to do the work. He will destroy all the Pandavas and
their allies in battle." Having said these words to Bhishma, of true
 prowess, your son became silent." 42.



सञ्जय उवाच । चोकराल्यस्तव पुत्रेण सीतविभो महामना । दुःखमहताविधा
 तावाच प्रियमण्वपि ॥ १ ॥ स भवत्या सुचिरं कालं दुःखरोपसमन्वितं । स्वसमानो
 यथा नागः प्रभुश्रीं धोकरालोकया ॥ २ ॥ उद्भृत्य चक्षुषीं कोपाग्निदहननिधं भारत
 स्वविचासरगन्धर्वं लोकलोकविदावरः ॥ ३ ॥ अग्रवीत तव पुत्रं स सामपुत्रं मिदं
 धत्तं । कित्वा दुष्यंतिनवमोयाकराल्येपकृन्तासि ॥ ४ ॥ घटमानं यथाशक्ति कुर्वी
 ष्यन्ति तव प्रियम् । ज्जुह्वाने समरे प्राणास्तवैव प्रियकोम्यया ॥ ५ ॥ यदा तु पाण्डवः
 गुरं पाण्डवेभितमत्पर्वतं पताजित्यरणे शक्रं पथ्यासि तत्रिदृशेणम् ॥ ६ ॥ यदा त्वया
 महाबाहो गन्धर्वैर्हतमोजसा । अमोचयत् पाण्डुसुतः पथ्यासि तत्रिदृशेणम् ॥ ७ ॥
 द्रवमाणेषु शूरेषु सादरेषु तव प्रभो । सुतपुत्रे च राधेय पथ्यासि तत्रिदृशेणम् ॥ ८ ॥
 यद्भवन् सहितात् सवान् विराटनगरं तदा । एक एव समुद्यतः पथ्यासि तत्रिदृशे
 णम् ॥ ९ ॥ प्राणैश्च युधि सरंधं मां च निजित्यमयुगे । पासांसि स समादत्तं पथ्यासि

अध्यायः ॥ १९९ ॥
 सञ्जयवाले किं आपके पुत्रके उचनरूपी भालों से अत्यन्त घायल और वचन
 रूपी सत्ताकामे भिदे हुए संपत्ती सिमान प्रशासलेते बड़े साइसी महकटामें पड़े हुए
 भीष्मजी बड़ी बिलम्ब तक शोचरूपी ध्यान में मग्न होकर अपने क्रोधसे देव दनुज
 मनुष्याकी भस्म करनेवाले बड़े क्रोधसे दोनों तेशोंको खोलकर बड़ी मधुरबाणी
 द्वारा आपके पुत्र से वचन बोले कि हे दुष्यंतिन इसामकार से अपनी सामर्थ्यके
 अनुसार उपाय करके तेरो हतके लिये अपने प्राणोंको होमते हुए मुझको तू अपने
 वचनरूपी भालोंसे क्या पायल करता है । १ । जित दशामें किं शूरवीर प्राणदत्ता
 ने युद्ध में इन्द्रको विजय करके खांडव वनमें अग्निको तृप्त किया और हे महाबाहू
 जब गन्धर्वोंके पराक्रम से तुझ पकड़े हुएको तेरो भाई बन्धु और कर्ण आदि बड़े ३ शूरों
 के भीगतान पर प्रकल पांडव अजुनेने छुटाया यही दृष्टान्त तुमको शोचनके योग्य
 है । और विराटनगर में हम सब के समुख अकेला अर्जुनही हुआ । वहभी दृष्टान्त

CHAPTER XCIX

Wounded by the darts of your son's taunts and pierced by those verbal spears, said Sanjaya, "great Bhishm remained long plunged in thoughtful predicament, heaving deep sighs of distress. Capable of destroying gods, danavas and men with his anger, he opened wide both his eyes in anger and in a very sweet tone said to your son, "This trying to the test of my ability and sacrificing my life for your sake, I am wounded by your taunts. You must bear in mind how the Pandavas conquered Indra and burnt the forest of Khandev. Remember how you and your brothers captivated by the gandharvas were liberated by Arjun when Kaurav and other warriors had been put to flight by them. You must remember that Arjun faced us all at

तन्निद्रशतम् ॥ १० ॥ तथा त्रेणि महेश्वाने शारदत मथापिच । गोम्रेह जितयात्पूर्व
 पर्याप्त तन्निद्रशतम् ॥ ११ ॥ विजित्यत्र यदा कर्ण सदा पुढवामानितम् । उत्तरार्ध
 वृत्तौ वस्त्रे पर्याप्त तत्रिदशतम् ॥ १२ ॥ निवातकवचान् सुदे प्रासवेनापि दुजयात् ।
 जितवान् समर पायः पर्याप्त तन्निद्रशतम् ॥ १३ ॥ कोहि शक्तो रूपे जेतु पाण्डव रम
 से तदा । यस्य गांसा जगद्गाता शोखत्रकादाधरः ॥ १४ ॥ मामुदेवानन्त शक्तिः सृष्टि
 सहायकारकः । सर्वदेवयो वृन्दवः परमात्मा सनातनः ॥ १५ ॥ उक्तोहि ब्रह्मशाराजन
 तारदाद्यमहापिभिः । त्वन्त मोहाश्र जानीषे वाच्या वाच्य सुयोधन ॥ १६ ॥ सुसर्पेहि
 नरः सदान् वृक्षान् पश्यति कांचनान् । तथा त्वमपि गान्धारे विपरीतानि पश्यसि ॥ १७
 इत्ये गेरे महत्तन्त्रात्त गणपतेः इह मन्त्रये ॥ सुयुषश्चतानध तण सवयामः सुयुषोभव

भागमानेपर युद्ध दुर्मेद्रोणाचार्य्यभोर

भुक्तो संग्राम में विजय करके वस्त्र उतार लिये वह भी दृष्टान्त योग्य है । १० ।
 इसी प्रकार गोहरण में भी बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य की भी
 विजय किया वह भी दृष्टान्त ठीक है, जब कि सब पुरुषों में बड़े धनुर्धर कर्णको
 विजय करके उत्तमके लिये वस्त्र दिये वह दृष्टान्त भी बहुत है, अर्जुन ने इन्से
 भी कठिन्ता पूर्वक विजय दाने व

किया वह भी दृष्टान्त बहुत है, तब
 युद्ध में विजय करने को समर्थ होय भर दुःश्याघन जिसका रत्ता कर्ण वाद्य जगद
 का स्वामी शत्रु वक्र गदा पय धारण करने वाला, महा शक्तिमान्, मामुदेव सृष्टि
 सहाय का करने वाला सर्वेश्वर देव देव परमात्मा सनातनहै, जिसका कि तारदादि
 महापिशा ने भी तुम्हको समझाया इतना जानकर भी इदबुद्धी तू माहस करने और
 न करने की बातको भी नहीं जानता है । १६ । मरने की इच्छा रखने वाला पुरुष
 जैसे कि सब वृत्ताको स्वर्णमयी देखता है उसी प्रकार हे गान्धारी के पुत्र तू भी
 विपरीत बातों को देखता है, तैने आप पाण्डव और मूर्जियों से बड़ी भारी शत्रुता

Virat and when your brothers had run away he conquered invincible
 Dronacharya and me and took off our clothes. 10. At the occasion
 of the cap and the great archer
 Ashvath after conquering the
 Kauravas, and this is a sufficient example of his bravery. Arjun con-
 quered the rakshases known as Nibat Kabaches whom Indra himself
 could not conquer and this is a sufficient example. Who is then brave
 enough to conquer Arjun in battle? He has for his guardian the
 wielder of conch, discus, mace and lotus, mighty Yasudev, the destroyer
 of the world, lord of all gods, eternal lord who has been pointed out as
 such to you by Narad and other rishis. Knowing these facts, O fool-
 ish Daryodhan, a dying person

॥ २८ ॥ अहन्तु सोमकान् सर्वान् पञ्चालाश्च समा गतान् । निहन्तिष्ये नरव्याघ्र धञ्ज
 पित्वा शिखण्डिनम् । २९ । तैर्वाहि निहत सख्ये गमिष्य यमसादनम् । तान् वा निह
 त्यसमरे प्रीतिं दास्याम्यह तव ॥ २० ॥ पूर्वं हि स्त्री सपुत्रपुत्रा शिखण्डी राजवेदमनि ।
 वरदानोत् पुमान् जात सैषा वै स्त्री शिखण्डिनी ॥ २२ ॥ तमह न हनिष्यामि प्राणश्यामे
 पि भारत । यासीं प्राणिर्मिता धात्रा सैषा वै स्त्री शिखण्डिनी । २२ ॥ सुखं स्वपिहि
 गान्धारे इवोऽस्मि कर्षा महारणम् । य जना कथं यिष्यति यायत् स्थास्यति मेविनी
 ॥ २३ ॥ एवंमुक्तस्तवसुतो निर्जगाम जनेश्वर । अभिवाद्य गुरुं सूर्णां प्रययौ स्व निषे
 शानम् ॥ २४ ॥ आगम्यतु ततो राजा विसृज्यच महाजनम् । प्रविवेश ततस्तूर्ण क्षय
 वाङ्मु क्षयकरः ॥ २५ ॥ प्रविष्ट स विशां ताञ्च गमयामास पार्थिव । प्रमातायाच शब्दे
 करी है इस से युद्ध भूमि में उन से तू संग्राम करियो हमभी देखेंगे, हे नरोत्तम मैं
 शिखण्डी को छोड़कर सम्मुख आये हुए सब सोमकोंको और पांचालोंको मारुंगा,
 मैं युद्धमें उनके हाथसे मराहुआ यमलोकको जाऊंगा या मैही उनको मारकर तुम्हको
 प्रसन्न करुंगा । २० । क्योंकि प्रथम राजमहल में शिखण्डी स्त्री होकर उत्पन्न हुआ
 था फिर वरदानसे पुरुष हुआ है निश्चय करके यह शिखण्डी स्त्री है इससे हे
 दुर्योधन मैं अपने प्राण जाते हुए भी उसको कभी न मारुंगा जो इसको ईश्वर ने
 प्रथम स्त्री उत्पन्न किया था इसीसे यह शिखण्डी अथ भी निश्चय स्त्री है हे गान्धारीके
 पुत्र ध्रानन्द से शयनकर मैं प्रातःकालही ऐसा महामारी युद्ध करुंगा जिसको
 मनुष्य जब तक पृथ्वी नियतरहेंगी तब तक कहाकरेंगे, हे राजा भीष्मजी से ऐसे
 बचनों को सुनकर आपका पुत्र मस्तकसे उनको दण्डवत् करके हेरेमे बाहर निबल
 अपने निवासस्थान को गया, और सब साथ के लोगों को बिदाकरके शीघ्रही
 अपने हेरे में प्रवेश कर गया । २५ । वहाँ रात्रिभर सोया, प्रातःकाल उठ कर

contrary to what they are You have intentionally made the Pandvas
 and the Srinjayas your enemies and we shall see what prowess you
 can show aga nst them I shall O best of men, kill all the Somaks
 and Panchals who face me in battle with the exception of Shikhandi
 I shall either be killed in battle and go to the region of Ym. or shall
 please you by their slaughter 20 For Shikhandi orgnally nas
 born a woman in the palace of the king and then was changed to
 manhood through a boon, he is surely a w man and I shall not kill him
 even if I am in the danger of losing my life. Because he was born a
 woman, he must be regarded as such. Sle p soundly, son of Gandhari:
 I shall in the morning, make a hard fight which shall be remembered
 till the end of the world" Hearing these words from Bhishm,
 Duryodhan bowed down to him and went out to his residence. Then
 dismissing all his companions, he entered his tent 24. There he slept
 during the night and rising early in the morning, he ordered the

र्षां प्रातरुत्थायतान्नुप ॥ २६ ॥ राज्ञ सम्राजापयत सेनां योजयतेति ह । अथ भीष्मो
 रणे कुड्डो निहनिष्यति सोमकान् ॥ २७ ॥ दुर्योधनस्य तन्नुन्या राज्ञो विलपितंपदु ।
 मन्यमान मत्त राजन् प्रत्यादेश निप्रात्मन ॥ २८ ॥ निर्वैद्वं परमं गतां विनिन्द्यपर
 वश्यताम् । दीर्घं दृष्यो शान्तनयो थोद्धुत्तामोर्जुन रणे ॥ २९ ॥ इन्द्रि तेनतु तन्माराया
 गाङ्गे येन विचिन्तितम् । दुर्योधनो मशुराज दु शान्तन मचोदचत् ॥ ३० ॥ दु शान्तन
 रयास्त्वर्ण युज्यन्तां भीष्मरक्षिण । द्वाविंशति मत्रीकानि सर्वोपयेवामिचोदय ॥ ३१ ॥ इदं
 हि समनुभास वर्षपूगाभि चिन्तितम् । पाण्डव्यान् सत्सैन्यान् वधो राज्यस्यचागम ३२
 तत्र कार्यतमं मन्ये भीष्मस्यगानि रक्षणम् । इतो मुत्त सहस्र स्वयंभुव्यात् पर्याथ
 सयुगे ॥ ३३ ॥ अत्रवीद्वि विशुद्धात्मा नाह हन्या शिखण्डिनम् । स्त्रीं पूर्वको हामो रा
 जस्तस्माद्भुज्यां मया रणे ॥ ३४ ॥ लोकसाक्षेः परह पितु प्रिय चिकीर्षया । राज्य

उत्तने राजाओं को आज्ञा करी कि सेनाको तैय रकरा अब युद्धमें लौप हेकर
 भीष्म नी सेमकों को मारेंगे, हे राजा रात्रि में दुर्योधनके उन बड़े भारी विन्दाप
 को मुन और अपना निरादर समझ बड़े वैराग्य का होकर दूसरे को दोष दर्शन
 करने की निन्दा करके युद्ध में अर्जुन से संग्राम करने के उभिन्त भीष्मजी ने
 बड़ा ध्यान किया और दुर्योधन ने शरीर की चेष्टा में भीष्मजी की बड़ी चिन्ता
 को जानकर दुःशामन में कहा । ३० । कि हे दुःशामन भीष्मजी के रत्ता करने
 वाले रथ बहुत शीघ्र तैयार हों और जईम अनीक सेना को भी भेरेणा करदो,
 कि बहुत काल से विचार किया गया सम्पूर्ण सेना समेन पाण्डव लोगों का मरण
 अब अच्छी तरह से प्राप्त हुआ उस स्थान में भीष्मजी की रत्ता को ही मैं बड़ा
 काम जानता हूँ वह रक्षित कियाहुआ भीष्म हमारा महायक होकर पाण्डवों को
 मारेगा, क्योंकि इमने बड़े शुद्ध मन करण से कहाहे कि मैं शिखण्डीको नहीं
 मारूंगा इस निमित्त कि वह पहले स्त्रीया वह युद्ध में युक्तमे त्याज्य है, और सब
 संसार इस बातको जानताहै कि मैंने पिताकी प्रीति के निमित्त राज्य करनेको

princes to arrange the army, informing them that Bhishma would
 destroy the Somakas. Hearing of the excessive lamentations of Duryo-
 dhan in the night and feeling his dignity wounded, Bhishma lost
 all love for the world, and commenting on the evil practice of back
 biting, he thought a great deal of his desire to fight against Arjun.
 Seeing indications of thoughtfulness on the face of Bhishma Duryo-
 dhan said to Dushaan, 'Prepare soon chariots for the protection of
 Bhishma and order twenty two *ushas* (*divisions*) of the army to be
 ready 31 The long wished for destruction of the Pandavas and their
 armies at hand. I think the protection of Bhishma to be the highest
 duty. Well protected he will help me to destroy the Pandavas, for
 with a true intention he said that he would not slay Shikhandi
 who was originally a woman and that all the world knew that for the

स्फूर्ति महाबाहो खियश्च त्यक्तवान्पुरा ॥ ३५ ॥ नैव चाहं खियं जातु न स्त्रीपूर्व कथ
 इचन । हन्यांयुधि नरश्रेष्ठ सत्य मेतद् व्रथीमिते ॥ ३६ ॥ अयं स्त्रीपूर्वको राजशिशुश्च
 ष्ठी यदि ते श्रुतः । उच्योगे कथितं यत्तत्तथा जाता शिखण्डिनी ॥ ३७ ॥ कन्या भूत्वा
 पुंमान् जातः सच मां योधयिष्यति । तस्याहं प्रमुखे वाणान् न मुञ्चेयं कथञ्चन ३८ ॥
 युद्धेहि क्षत्रियांस्तात पाण्डवाना जयेपिण । सर्वां नन्यान् हनिष्यामि सम्प्राप्तान् इण
 मूर्धनि ॥ ३९ ॥ पर्व मां भरतश्रेष्ठ गाङ्गेयः प्राह शारत्रवित् । तत्र सर्वात्मना मन्ये गाङ्गे
 यस्यैव पालनम् ॥ ४० ॥ अरक्ष्यमाणं हि वृको हन्यात् सिंहं महाहवे । मा वृकोणेश
 गाङ्गेयं घातयेम शिखण्डिना ॥ ४१ ॥ मातुलः शकुनिः शल्यः कृपो द्रोणो विविशतिः ।
 पत्नारक्षन्तु गाङ्गेयं तस्मिन्गुप्ते ध्रुवोजयः ॥ ४२ ॥ पतच्छ्रुत्वातु ते सर्वे दुर्योधन वच
 स्तदा । सर्वतो रथ धशेन गाङ्गेय पर्यधारयन् ॥ ४३ ॥ पुत्राश्च तव गाङ्गेयं परिवार्यं ययु
 र्मुवा । कम्पयन्तो भुवं धाञ्च क्षोभयन्तदञ्च पाण्डवान् ॥ ४४ ॥ ते रथैः सुप्रसंयुक्तैर्दति

और स्त्री संग्रह को त्याग किया है । ३५ । इस निमित्त हे नरोत्तम मैं किसी दशा में भी
 युद्ध में इस जन्म की स्त्री को व पूर्व जन्मकी स्त्री को कभी न मारूंगा यह मैं सत्य
 सत्य तुम से वर्णन करता हूं, हे गजा यह शिखण्डी जिसको कि आपने सुना है
 यह स्त्रीया फिर उद्योग करनेसे यह शिखण्डिनी न.ममे उत्पन्न हुई जो कन्या होकर
 मुझसे युद्ध करेगी उस पर मैं कभी अपना शस्त्र न चलाऊंगा, हे तात मैं पाण्डवों
 की विजय चाहनेवाले क्षत्रियों को या युद्ध में मम्युक्त आये हुए अन्य क्षत्रियों को
 भी संग्राम करके मारूंगा, यह भरतर्षभ गांगेय भीष्मजी ने मुझ से कहा है इस से मैं
 सर्वात्मभाव से ही भीष्मजीकी रक्षाको चाहता हूं । ४० । क्योंकि बिना रक्षा किये
 हुए सिंह को भेड़िया भी मारमक्ता है मेरा मामा शकुनि शल्य कृपाचार्य द्रोणाचार्य
 विविशति यह सब मिनकर बड़ी सावधानी से भीष्मजी की रक्षाकरें उसके रक्षित
 होने से अवश्य विजय होगी, तब तो सब लोगों ने दुर्योधन के इस वचनको सुनकर
 सब ओर से रथों के समूहों से भीष्मजी की रक्षा करी, फिर भीष्मजी की रक्षा करके

love of his father he had forsaken the flourishing kingdom and the
 society of women 35. He has promised to spare one who was
 a woman in this life as well as in the former one. Shikhandi was
 formerly a woman and therefore he would not lay hands on him. With
 this exception he would slay all the kshatryas of the Pandavas desirous
 of conquest or any other warriors seeking battle with him. All
 this was said to me by Bhishm the son of Ganga and therefore with
 all my heart I am desirous of Bhishm's protection 40. A wolf may
 slay an unprotected lion. My uncle Shakuni, Shalya, Kripacharya
 Dronacharya and Vivinshati should protect him jointly. Victory
 will fall on our side if he is well protected" Hearing these words of
 Duryodhan, all the warriors mounted on chariots, protected Bhishm
 from all sides. Surrounding Bhishm, your sons went on shaking

मिथु महाारयाः । परिचार्ये रणे भीष्मं दंडिताः समवस्थिताः ॥ ४५ ॥ यथा देया सुरे
 युद्धे त्रिदशा वज्रधारिणम् । सर्वेतेस्म व्यतिष्ठन्तु रक्षतस्तं महारथम् ॥ ४६ ॥
 ततो दुर्योधनो राजा पुनर्घोषमवधीत् । सव्यं चक्रं युधामन्यु रत्तमौजाय दक्षिणम्
 ॥ ४७ ॥ गोतारायर्जुनस्थैतायर्जुनोपि शिखण्डिनः । रक्ष्यमाणः स पार्येण तथास्मा
 मिर्त्रिर्वर्जितः ॥ ४८ ॥ यथा भीष्मं ननो हन्या दुःशासन तथा कुरु । भ्रातृस्तद्वचनं
 श्रुत्वा पुत्रो दुःशासनस्तव ॥ ४९ ॥ भीष्मं प्रमुखतः कृत्वा प्रययौ सह सेनया । भीष्मन्तु
 र्यवन्देन हृष्ट्वा समभित्तुतम् ॥ ५० ॥ अर्जुनो रथिना श्रेष्ठो धृष्टद्युम्न मुवाचह । शिख
 ण्डिनं नररुपाद्यं भीष्मस्य प्रमुखेनृप । स्थापयस्वाद्यपाञ्चाल्य तस्य गोसाहसित्युत ॥ ५१ ॥
 इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मत्रयपर्वणि दुर्योधनदुःशासनसम्वादे
 नवनवतितमोऽध्यायः ॥ ९९ ॥

आपके बेटे पृथ्वी और आकाश को कम्पायमान करके, पाण्डवों को भयभीत
 करातेहुए बड़े प्रसन्न होकर चले, वह सब महारथी बड़ी रीतिसे नियत कियेहुए
 रथियों से भीष्मजी को मध्य में रक्षित कर के कवच और अस्त्र शस्त्रोंको धारण
 कियेहुए ऐसे सब इकठे हुए जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में देवता और
 वज्रधारी इन्द्रकृदे यह सब इस प्रकारसे उस महारथी को रक्षित करके नियतहुए
 । ४६ । तदनन्तर राजा दुर्योधन ने फिर अपने भाई से कहा, कि अर्जुन के वाम
 और का रक्षक युधामन्यु और दक्षिण भागका उत्तमौजा यह दोनों हैं और अर्जुन
 भी शिखण्डीका रक्षक है, वह अर्जुन से रक्षित और हम से त्यागाहुआ शिखण्डी
 जैसे भीष्मको और हमको नहीं मारे हे दुःशासन तुम वही उपायकरो, फिर आपका
 पुत्र दुःशासन भाई के इस वचनको सुनकर भीष्मजी को आगे करके सेना के साथ
 में चला, और रथियों में भेष्ट अर्जुन रथियों के समूहों से भीष्मजी को चारों ओरसे
 रक्षित देखकर धृष्टद्युम्न से बोला कि हे राजा धृष्टद्युम्न अब नरोत्तम शिखण्डी को
 भीष्म के सम्मुख नियत करो मैं उस का रक्षक हूँ ॥ ५१ ॥

the earth and sky and terrifying the Pandavas with their cheerful
 mood. All these warriors, properly stationed round Bhishm with
 their chariots and elephants, arms and armour looked like Indra
 surrounded by gods in the war of the gods and asurs, 46. Then Prince
 Duryodhan, again addressing his brother, said, "Yudhadmanyu
 protects Arjun from the left and Uttamanuja from right, and Arjun
 himself protects Shikhandi. Let not Shikhandi, protected by Arjun
 and deserted by us, kill Bhishm and ourselves. You must look to
 this Dushasan." Your son Dushasan, hearing these words of his
 brother, followed the army led by Bhishm. And Arjun the best of
 charioteers, seeing Bhishm well protected by the hosts of charioteers,
 said to Dhrishtadyumna, "Let Shikhandi face Bhishma, I shall
 guard him." 51.

सञ्जय उवाच । तत शान्तनुवो भीष्मो निययौ सह सेनया । ब्यूहञ्चाब्यूहत
 महत् सर्वतोमद्रमारमन ॥ १ ॥ कृपाश्च कृतवर्मा च शैब्यश्चैव महारथः । शकुनि सैन्धव
 वश्वेध काम्वोजश्च सुदक्षिण ॥ २ ॥ भीष्मेण सहिताः सर्वे पुत्रैश्चतस्र भारत । अग्रत
 सर्वं सैन्याना ब्यूहस्य प्रमुखे स्थिताः ॥ ३ ॥ द्रोणो भूरिश्रवा शल्यो मगदक्षश्च
 भारविः । दक्षिणं पक्षमाधित्य स्थिता ब्यूहस्य दक्षिणा ॥ ४ ॥ अश्वत्थामा सामदक्षश्चा
 वन्त्यौ च महारथौ । महत्या सेनया युक्ता धामं पक्षमपालयन् ॥ ५ ॥ दुर्योधनो महा
 राज त्रिगर्त्तं सर्वतो वृत्तः । ब्यूहमध्ये स्थिता राजन् पाण्डवान् प्रति भारत ॥ ६ ॥
 अलम्बुषा रथभेष्ट शुतायुश्च महारथः । पृष्ठत सर्वसैन्याना स्थितौ ब्यूहस्य दक्षिणौ
 ॥ ७ ॥ एवञ्च त तदा ब्यूह कृत्वा भारत सावका सञ्ज्ञाः समददयन्त प्रतान्तरवा
 ग्नय ॥ ८ ॥ ततो युधिष्ठिरौ राजा भीमसेनश्च पाण्डवः । नकुल सहदेवश्च माद्रीपु

त्रध्याय ॥ १०० ॥

संजय बोले कि इसके पीछे शंतनुके पुत्र भीष्मजी अपनी सेना को सायलेकर
 चले और अपनी बुद्धिसे सर्वतोमद्र नाम ब्यूह को तैयार किया, और कृपाचार्य
 कृतवर्मा महारथी शब्य शकुनि शैब्य कांबोज सुदक्षिण यह सब भीष्मजी और आप
 के पुत्रों समेत सेनाके अग्रगामा होकर ब्यूहके मुखपर नियत हुए और द्रोणाचार्य
 भूरिश्रवा शल्य मगदक्ष यह सब शस्त्र और कवचोंका धारणकरके ब्यूह के दक्षिण
 भाग में रक्तकही कर नियत हुए, और अश्वत्थामा सोमदक्ष और दोनों अवन्ति
 देश के महारथी राजा यह सब बड़ी सेना समेत ब्यूह के वामभाग में रक्तक हुए
 । ५ । और हे भरतवंशी धृतराष्ट्र राजा दुर्योधन सब और से त्रिगर्त्त देशियों से
 संयुक्त ब्यूह के मध्यमें पाण्डवों के सम्मुख नियत हुआ, रथियों में भेष्ट अलंबुष और
 महारथी शुतायु यह दोनों कवच शस्त्रधारी ब्यूहकी सब सेनाओं के पीछे नियत हुए,
 हे भरतर्षभ उससमय आप के शूरवीर शस्त्र कवचों से अलंकृत ऐसे दृष्टपड़े जेने कि
 अत्यन्त संतप्त करनेवाली अग्नियां होती हैं, इनके पीछे राजा युधिष्ठिर-भीमसेन

CHAPTER C

Sanjaya said "Then Bhishm the son of Shantanu with his army
 proceeded to form a phalanx known as the Best-of-all. Kripacharya,
 Kritvarma, valliant Sharjya, Shakuni, Saundhavy, Camboj, Sudakshin,
 Bhishm and your sons, leading the army, stood at the mouth of the
 array, Dronacharya, Bhurishnava, Shalya and Bhagdatta, armed with
 arms and armour, stood at the right wing, and Ashwathama, Somdatta
 and the two princes of Avanti, together with a large army, protected
 the left flank 5. Prince Duryodhan with all the Trigartas stood in
 the middle to face the Pandavas. Alamvush the best of charioteer
 and valliant Shrutayau, armed with weapons and armour, stood behind
 all the armies Your warriors decked with weapons and armour look
 ed like burning floss. Then prince Yudhishtir, Bhimsen and the

ब्राह्मणावपि ॥ ९ ॥ अग्रत सर्वसैन्यानां स्थिताभ्यूहस्य दक्षिता । घृष्टयुग्मो विराटश्च
 सात्यकिश्च महारथ ॥ १० ॥ स्थिता सैन्येन महता परानीकविनाशना । शिखण्डी
 विजयश्चैव राक्षसश्च घटोत्कच ॥ ११ ॥ चेकितानो महाबाहु कुन्तिभोजश्च धीर्य
 वान् । स्थिता रणे महाराज महत्या सेनया वृता ॥ १२ ॥ अभिम-धुर्महे-वांसो द्रुपदश्च
 महाबल । युयुधानो महेश्व सो युधामन्युश्च धीर्यवान् ॥ १२ ॥ कैकयः श्वेतदक्षश्चैव
 स्थिता युद्धाय दक्षिता । एव तेषि महाभ्यूह प्रतिब्यूह सुदुर्जयम् ॥ १४ ॥ पाण्डवा
 सम्ये शूरा स्थिता युद्धाय दक्षिता । तावकास्तु रणे यत्ता सहसेना नराधिप ॥ १५ ॥
 अश्रुघोषरुगे पार्थाय भीष्म कृत्वाग्रतो नृप । तथैव पाण्डवाराजन् भीमसेनपुरोगमा
 ॥ १६ ॥ भीष्मे योद्धुमर्षीपुंसन्त सग्रामे विजयैषिण । श्वेडा किलकिला शङ्खान्
 क्रकचान् गाविषाजिका ॥ १७ ॥ भेरीमुद्गङ्गणवान् नादयन्तश्च पुष्करान् । पाशवा
 अश्वत्थन्त नदन्तो भेरवान् रथान् ॥ १८ ॥ भेरीमुद्गङ्गशङ्खानां दुन्दुभीनाञ्च नि वनै ।

धीर मात्री के दोनों पुत्र नकुल और सहदेव भी शस्त्र और कवच धारण क्रिये हुए
 पहन शोभा युक्त अपने व्यूहकी सब सेनाओं के आगे नियत हुए और घृष्टयुग्म
 विराट महारथी सात्यकी । १० । यह सब शत्रुहन्ता वीर बहुतमी सेना समेत नियत हुए
 शिखण्डी घटोत्कच राक्षस, महाबाहु चेकितान, कुन्तिभोज यह सब भी बहुतसी सेना
 समेत युद्धमें उपस्थित हुए, और महा धनुषधारी अभिमन्यु और महाबली द्रुपद
 और कैकयलोग शस्त्रादिसे अलंकृत होकर युद्धके निमित्त नियत हुए इसरीति से
 वह शूवीर पाण्डवलोग भी दुर्जेय व्यूहको रचकर शत्रुओं के सम्मुख संग्राम भूमिमें
 युद्धके निमित्त वर्तमान हुए, हेरात्रा फिर युद्ध में कुशल आपके पुत्र और सेना
 समेत सब राजा लोग भीष्मजी को आगे कर के संग्रामभूमि में पाण्डवों के सम्मुख
 गये । १५ । इसी प्रकार पाण्डव लोगभी भीमसेन को आगे करके भीष्मके लड़नेकी
 इच्छा से विजयाभिलाषी होकर सिंहाद पूर्वक किलकिला शब्दों को करके और
 भेरी मृदंगादि वाजोंसे और दुन्दुभियोंसे शत्रुओंको भय उत्पन्न करतेहुए बड़े मग्न
 चित्त कौरवों के सम्मुख वर्तमान हुए, पृथक् २ रीति से मत्येक से मँकायेहुए सिंह

two sons of Madri Nakul and Sahadev armed with arms and armour,
 stood in the van of all the armies in front of the array Dhishtadyumna
 Virat, valiant Satyaki 10 all these brave warriors, dest- of, ers of
 enemies, together with a large army, stood behind Shikhandi, Gha-
 totkach the rakshas, brave Chekitan and Kuntibhoj were stationed
 with their armies The mighty archer Abhimanyu, brave Drupad
 and the Kaikayas, armed with weapons stood ready for battle Thus
 the brave Pandavas too, having formed the invincible array stood
 ready to fight facing the enemy Your sons, skilful in battle and the
 princes with the armies led by Bhishm, faced the Pandavas 15 The
 Pandavas too, led by Bhimsen, desirous of gaining victory against
 Bhishm, roaring like lions with a tremendous roar and causing fear to

उत्कृष्ट सिंहादंश्च घलितंश्च पृथग्विधैः ॥ १९ ॥ ध्वज प्रतिनदन्तस्तान् गच्छामन्वरा
 न्विता । सहसैवाभिसङ्क्रुद्धास्तदासातुम्ल महत् २० । ततोऽन्योन्यं प्रधावन्त सम्भार
 प्रचक्रिरे । तंत शब्देन महता प्रचक्रभ्ये वसुधरा ॥ २१ ॥ पक्षिणश्च महाघोरं ध्याह
 रन्तो विषम्रमुः । सःप्रदचेदित सूर्यो निष्पन्न समपयत् ॥ २२ ॥ वसुधश्च धातास्तु
 मुला शंसन्तः सुमहद्भयम् । घोरश्च घोरनिहोदा शिवास्तत्र घवाशिरः । २३ ॥ वेद
 यन्तो महाराज महद्वैशसमागतम् । दिशः प्रचलिताराजन् पालुवर्षपपातोच ॥ २४ ॥
 रुधिरं समुन्मिधमस्थिवर्षं तथैव च । रंदा वाहनानाञ्च नेत्रेभ्यः प्रापत्ज्जलम्
 ॥ २५ ॥ सुस्रुवुश्चसकृन्मूत्रं प्रध्यायन्तो विशाम्भते । अन्तर्हिता महानादाः ध्रुयन्तेभरत
 र्षम् ॥ २६ ॥ रक्षसा एतयादाना नदता भैरवान् रवान् । सम्पतन्तश्च हृदयन्त गोमायु
 षलघापसा ॥ २७ ॥ ध्यानश्च विविधैर्नादैर्वाशन्तस्तत्र मारिय । उचलिताश्च महा
 च्कावै समाहृत्य दिवाकरम् । निपेतु सहसा भूमौ वेदयन्त्यो महद्भयम् ॥ २८ ॥ महा

नादों से गर्जना करते हुए हम सबलोग बड़ी शीघ्रता से उनके सम्मुख हुए, और
 भकस्पात अत्यन्त क्रोधित होकर बड़े कठोर शब्दों को करते हुए परस्परमें सम्मुख
 दौड़कर बड़े २ महार करने लगे । २० । इसके होतेही पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान
 हुई, और बड़े भारी कठोर शब्दों को करते हुए पक्षी धमने लगे, और बड़ा प्रकाश
 मान सूर्य उस समय मभा से रहित हुआ और बड़ी भयानक कठोर शब्दवाली
 तीक्ष्ण बायु चली, हे महाराज वहां घोरनाश के सूचक नाना रूपधारी भयानक
 शृंगालों के समूह भी कठोर शब्दों को करने लगे, और सब दिशाओं में दिग्दाह
 हुआ और धूलकी वर्षाहुई और रुधिर से संपुक्त हाडों की वर्षाहुई, और गेने हुए
 बाहनोंने घड़े ध्यान में प्रवृत्त होकर मूत्र और विष्ठाको धर दिया । २५ । और हेराजा
 मांसभंसी राक्षसों केभी बड़े २ अशुभ शब्द वहां गुप्त सुने गये और गोमायु या
 कौबों के क्रुद्ध भी गिरते हुए दृष्ट पड़े और नाना शब्दों से कुत्ते घुंसने और रीने
 लगे, और सूर्य को आच्छादित करके बड़े भारी उल्कापातभी पृथ्वी पर हुए
 इसके पीछे पांडवों की और दुर्योधन की बड़ी सेना शंख और मृदंगों के शब्दों

the enemies with the sounds of trumpets, drums and other musical instruments, faced the Kauravas with cheerful minds and much enraged of a sudden, rushing with tremendous war cries, began to smite. 20. With this the earth shook and the birds screamed with a dreadful noise. The sun lost his brightness and the storm of wind blew with a tremendous roar. Significant of great destruction, dreadful jackals howled ominously, the directions lit up, dust fell and blood and bones fell down from the sky. The beasts with tears in their eyes dropped urine and excretion. 25. The cannibal rakeshases noisily made a terrible noise and crows swooped down. Dogs howled ominously and the sun being hidden by the dust there fell from the sky sparks

न्यनीकानि महासमुद्रुथे ततस्तयो पाण्डवघातं राधयो । चक्रम्पिरे शहस्रद्वन्द्वनि
स्वने प्रकम्पितानीव धनानि वायुना ॥ २९ ॥ नरेन्द्रनागादवसमाकुलानामभ्यायती
नामशिवे सुहृत् । धम्य पोपस्तुमुलद्वयूना धार्ताकुतानामिव सागराणाम् ॥ ३० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि उत्पातदर्शने

शततमोऽध्यायः १०० ॥

सञ्जय उवाच । अभिमन्युर्योदार पिशङ्गैस्तुरगोत्तमै । अभिदुद्राव तेजस्वी
दुष्योधनवर्ल महत् ॥ १ ॥ विकिरन् शरवर्षाणि धारिधाराइवाम्बुद । न शेषु समरे
कुञ्ज सौमद्रमरिसुदतम् ॥ २ ॥ शक्रीधिण गाहमान सेनासागरमक्षयम् । निवारयितु
मपशजो स्वदीपा कुरुदन्धन ॥ ३ ॥ तेन मुक्ता रणे राजन् शय शत्रुनिवर्हणा ।
क्षत्रियाननयन्शूरात् प्रतराजनिधेशानम् ॥ ४ ॥ यमदण्डोपमान् घोरान् ज्वलिताशीवि-
षापमान् । सोमद्र समरे कुञ्ज प्रेययामास सायकान् ॥ ५ ॥ सरथान् रथिनस्तूर्ण हयां

में ऐसी कम्पायमान हुई जैसे कि वायु के वेग से वन कम्पायमान होते हैं,
हे राजा हाथी घोड़े और रथों से पूर्ण अगुम मुहूर्त में आई हुई सेनाओं के ऐसे
कठोर शब्द हुए जैसे कि वायु से उठे हुए समुद्रके शब्द होते हैं ३० ॥

अध्याय १०१ ॥

संजय बोले कि बड़ा रथी और तेजस्वी अभिमन्यु पिगल वर्ष के उत्तम घोड़ों
के ढाग बादल की जलधाराओं के समान बाणों की वर्षा करता हुआ दुष्योधन
की सेनाके सम्मुख गया उस के हटाने को आपके महाबली शत्रुहन्ता महा वचन
शस्त्रधारी गुरवीर लंगभी समर्थ नहीं हुए,, हे राजा उस के छोड़े हुए शत्रु संहारी
बाणों ने युद्ध में अनेक क्षत्रियों को मारकर यमपुर को भेजा, फिर युद्ध में क्रोधित
अभिमन्यु ने यमदण्ड और ज्वलित सर्पाकार घोरबाणों को छोड़कर बड़ी क्षत्रिया
से रथी समेत रथों को और सवारों के साथ घोड़ों को और हाथियों समेत

of fire The dimes of Duryodhan and the Pandavas shook with the
rounds of conchis and trumpets as forests shake with the storm of wind
Full of elephants, horses and chariots collected in evil time the army
of warriors made an uproar like that of a stormy ocean" 30

CHAPTER CI

Sanjaya said — 'Mighty and glorious charioteers Abhimanyu, rid-
ing his yoll in horses and showering his arrows like rain, faced the ar-
my of Duryodhan, even your strong warriors, destroyers of foes and
wielders of arms were unable to cop. with him His arrows destroyers
of enemies, killed numerous Lshatryas and sent them to the region of
Yam. Then enraged Abhimanyu discharging his dreadful and serpent
like arrows soon destroyed the charioteers with chariots, horsemen
with horses and elephant ride's with elephants. All the kings cheer

इवैव ससादिन । गजारोहाइव सगजान् वारयामास फाल्गुनि । तस्य तत कुर्यत कर्म
 महत् संख्ये मदीभूत । पूजयान्बक्रिरे ह्यष्टा प्रशशंसुइव फाल्गुनिम् ॥ ७ ॥ तांश्च
 नीकानि सौमद्रो द्रावयामास भारत । तूलरारी निवाकाशे मासत सर्वतो दिशम् ८ ॥
 तेन पिद्राव्यमाणानि तव सैन्यानि भारत । आतारं भाष्यगच्छ तपके मन्नाइव द्विषा
 ॥ ९ ॥ विद्राव्य सर्वसैन्यानि तावकानि नरोत्तम । अभिमन्यु स्थितो राजन् विधूमोग्नि
 रिखज्वलन् ॥ १० ॥ न चैन तावकाराजन् विपेदुररिघातिनम् । प्रदीप्त पावक पद्म
 पतङ्गा कालचोदिता ॥ ११ ॥ प्रहरन् सर्वं शत्रुभ्य पाण्डवानां महारथ । अदृश्यत
 महेष्वास सखञ्च इघासव ॥ १२ ॥ हेमपृष्ठ धनुस्त्रास्य दहशो विचरद्दिश । तोयवेषु
 रथा राजन् राजमाना दातवृदा । १३ ॥ शरादद्य निशिता पीता निश्चरन्तिस्मस्युगे ।
 वनात् कुञ्जद्रुमाद्राजन् भ्रमराणामिव प्रजा ॥ १४ ॥ तथैव चरतस्तस्य सौमद्रस्यमहा

हाथीवानों को चूर्णकर डाला । ६ । युद्ध में ऐसे महाकर्म करनेवाले अर्जुन के पुत्र
 अभिमन्यु की सब राजाओं ने बड़ी प्रसन्न चित्ततासे धन्य २ करके प्रशंसा करी
 हे राजा उस सुभद्रा के पुत्र ने उन सेनाओं को ऐसे घायल किया जैसे कि वायु
 आकाश में रुईको चारों ओर को बखेरदेता है, और हे राजा उस अभिमन्यु से
 भगी हुई तुम्हारी सेनाको कोई रत्नक ऐस नहीं मिला जैसे कि कीचमें फँसे हुए
 हाथी को कोई रत्नक नहीं मिलसक्ता, फिरवह अभिमन्यु आपकी 'सब सेना को
 भगाकर निर्दूम अग्नि के समान क्रोधमें भराहुआ स्थिर होगया । १० । हे राजा
 इसको देखकर आपके शूरवीर-लोग ऐसे नहीं सहसके जैसे कि बालके शेरित
 पतंग अत्यन्त प्रकाशमान अग्नि को, फिर बहपंडवों का महारथ उग्रधनुषधारी
 मवेशत्रुओं को घायल करता हुआ शत्रुधारी इन्द्रके समान दृष्टपडा, और उसके
 सुवर्ण की पृष्ठवाला धनुष दिशाओं में घूमता हुआ ऐसा दिखार्ई दिया जैसे कि बादलों
 में प्रकाशमान विजयी होती है, अत्यन्त नीक्षण नौक पीतरंग विप के भरे हुए बाण
 युद्ध में घूमनेलगे हे राजा जैसे कि फूले दृष्टवाले वन से भँवरों के समूह

fully praised the great works of Abhimanyu the son of Arjun. That
 of Sabhar, O King expressed the armies as the wind does the
 masses of cotton you find put to flight by Abhimanyu found no
 protector like an elephant sunk in mud. Having dispersed your ar-
 mies, Abhimanyu stood enraged like smokeless fire. 10 Your war-
 riors, O King could not bear the sight of him as insects fated to die
 cannot bear the sight of burning fire. Then that mighty archer of
 the Pandava looked like Indra wounding all enemies. And his bow
 of golden back, circling on all sides, looked like lightning in the midst
 of clouds. Very sharp pointed arrows of yellow colour, flew
 in the field of battle. Like swarms of black bees issuing out of a

राम । रथेन वाञ्छनाद्गेन दृष्टुर्नान्तर जना ॥ १५ ॥ मां हयित्वा रूप शोणं द्रीलिञ्च
 सृष्टद्वलम् । सैन्धवञ्च महेश्वासो व्यचरत्ततु सुपुञ्च ॥ १६ ॥ मण्डलीकृत मेयास्य
 धनु पश्यामभारत । सूर्यमण्डलसकाशं दहतलघु वाहिनीम् ॥ १७ ॥ त दृष्ट्वाक्षत्रि
 या शूरा प्रतपंततरस्थिनम् । त्रिफाल्गुनमिम लीक मेनिरे तस्य कर्मभिः । १८ । तना
 विता महाराज भारती सा महाचमू । व्यन्नमन्त्रे तत्रैव योपि मद्भवशादिषु ॥ १९ ॥
 द्राघयित्वा महासैन्य कम्पयित्वा महाराथान् । नश्यामास सुहृदो मयं क्रित्त्वेव घासव
 ॥ २० ॥ तेन विद्राव्यमाणानि तव सैन्यानि सयुगे । चक्रुस्तस्वन् घोर पञ्चान्नितनदोप
 मम् ॥ २१ ॥ त भुत्वा निन्द घोर तव सैन्यस्य भारत । मादतोद्भूतवेगस्य सागरस्यैव

निकन्ते हुए दृष्ट नहीं आते; उसी प्रकार मनुष्यों ने सुनहरी अंगवाले रथों से
 घूमते उस महात्मा अभिमन्यु का अन्तर अर्थात् अवकाश नहीं देता । १५ ।
 कि यह बड़ा धनुषधारी उत्तमहस्तभाष्य करनेवाला बन कृपाचार्य्य द्रोणाचार्य्य
 अश्वत्थामा दृष्ट्वा और जयद्रथको मोहित करके अत्यन्तता से घूमा, हे घृतराष्ट्र
 आपकी सेना भस्म करनेवाला उस अभिमन्यु का धनुष सूर्यमंडल के समान मंडली
 करनेवाला हमने देखा, बड़े २ शूरवीर क्षत्रियों ने उस वेगवान् शीघ्रगामी कठिन
 दौड़नेवाले अभिमन्युको देखकर उसके कर्मों से इस लोकको दो अर्जुनका रखनेवाला
 माना, हे महाराज उस अभिमन्यु से पीड़ामान् आपकी सेना स्यान् २ पर ऐसी
 अत्यन्तता से घूमी जैसे कि तरुणताके मद में भरी हुई स्त्री उधर उधर घूमती है,
 फिर सेना समेत महाराथियों को घायल और कम्पायमानकरके उस अभिमन्यु ने
 अपने सुहृदों को ऐसा प्रबल किया जैसे कि इन्द्र ने मय दैत्यको जीतकर सबको
 ममन्न किया था । २० । और युद्ध में अभिमन्यु से भगाई हुई आपकी सेनाओं ने
 ऐसी पीडा के भयानक शब्दकिये जैसे कि भयकारी नादल की गर्जना के शब्द
 होते हैं, इमरीते के आपकी सेनाके शब्दों को सुनकर राजा दुर्योधन आर्यभुङ्ग

forest in bloom' the arrows issuing out of chariots were invisible on
 account of their swiftness 15— Having made Kripacharya, Drona
 charya, Ashwathama, Brahadval and Jaysdrath insensible the swift
 archer moved incessantly¹ We saw, O King, the bow of Abhimanyu
 the destroyer of your armies, moving in a circle like the sun The
 great warriors seeing the exceedingly swift movement of Abhimanyu
 and his brave deeds thought that there were two Arjuns in the world.
 Wounded by Abhimanyu your armies, O King, rushed hither and thither
 like a young woman who has lost her senses. Then wounding
 and shaking the army of warriors Abhimanyu made his party as strong
 as Indra had made all the people after conquering the Mays danavas
 20 Put to flight by him your armies uttered dreadful noises of distress
 like those of thundering clouds² Thus hearing the distressing sounds
 of your warriors, Prince Duryodhan said to Aryabhring the rakshas

पर्वणि । २९ ॥ दुर्योधनस्तदा राजश्राप्यगुह्यिमभाषत । एष कार्णिमहाबाहो द्वितीय
 इव फाल्गुनः ॥ २३ ॥ चर्म द्रावयते क्रोधाववृत्रो देव चर्ममिव । तस्य चान्यत्र पश्या
 भिसंयुगे भेषजं सहतु ॥ २४ ॥ श्रुत्वा राक्षसश्रेष्ठ सर्वे विद्यासुपारगम् । स गत्वा
 त्वरितं धीरं जडि सौमद्रमाहवे ॥ २५ ॥ वयं पापं हनिष्यामो भीष्मद्रोणपुरोगमाः ।
 स पथमुक्तो बलवान् राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् ॥ २६ ॥ प्रययौ समरे तूष्णं तव पुत्रस्य
 शासनान् । नर्दमानो महानार्दं प्रावृषीष बलाहकः ॥ २७ ॥ तस्य शब्देन महता
 पाण्डवानां बलं महत् । प्राललत् सर्वतो राजन् वातोदधत्तद्वार्ष्णवः ॥ २८ ॥ बहवश्च
 महाराज तस्य नादेन भीषिताः । प्रियान् प्राणान् परित्यज्य निपेतुर्धरणीरले ॥ २९ ॥
 कार्णिश्रापि मुदा युक्तः प्रवृष्टां सशरं घनुः । नृत्यन्निष रथोपस्थं तद्रक्षः समुपाद्भवत्
 ॥ ३० ॥ ततः स राक्षसः कुञ्जः सम्प्राप्यैवाञ्जुनि रणे । नातिदूरे स्थितां तस्य द्रावणां

नाम राक्षस से बोला कि हे महाबाहो यह दूसरे अर्जुन के समान अभिमन्यु क्रोध से सेनाको ऐसे भगाये देता है जैसे कि देवताओं की सेना को एत्रासुर भगाता था तुम सर्व विद्या और शस्त्र सम्पन्न के सिवाय इस युद्ध में इसका मारने वाला मुझको कोई नहीं दिखाई देता सो तुम शीघ्र ही जाकर इस अभिमन्यु को मारो । २६ । और हम सब भीष्म और द्रोणाचार्य्य को आगे करके अर्जुन को मारेंगे, इस प्रकार से वह आज्ञादिया हुआ प्रतापी बलवान् राक्षसाधिप वर्षा ऋतु के पादल के समान बड़े शब्दों को करता हुआ आपके पुत्रकी आज्ञासे शीघ्र ही युद्ध भूमि में गया, हे राजा उसके भयंकर शब्द से पांडवों की बड़ी सेना सब ओर से घेसी चलायमान हुई जैसे कि वायु से उठा हुआ समुद्र चलायमान होता है । २८ । बहुत से मनुष्य तो उसके भयकारी शब्दही से अपने प्यारे जीवनको त्यागकर पृथ्वी पर गिर पड़े । २९ । परन्तु शूरवीर अभिमन्यु बड़ी प्रसन्नता से युक्त बाणों समेत धनुष को हाथों में लेकर नाचता हुआ सा रथ में बैठकर उस शीघ्रत के सम्मुख पहुँचा । ३० । इसके पीछे उस क्रोधयुक्त राक्षस ने युद्ध में अभिमन्यु को पाकर उसकी समीपी सेना को घायल किया इस रीति से उस

"Like a second Arjun much enraged Abhimanyu is dispersing all the armies as Virtrasur did the armies of gods; I see none of my warriors capable of slaying him. Go at once and kill him. 25. All of us, led by Blushm and Dronacharya, will slay Arjun." Thus ordered that brave warrior the princes of rakshasa making a loud noise like that of thundering clouds, at once rushed to battle by the order of your son, and with his dreadful cries the armies of the Pandavas were agitated like the ocean with the storm of wind. 28. Many men lost their dear lives by his dreadful sound and fell down on earth; but brave Abhimanyu cheerfully hold his bow and arrows and as if dancing in his chariot he faced the rakshas. 30. Then the enraged rakshas, coming face to face with Abhimanyu wounded his attendant warriors, and seeing the

भास वै चमूम ॥ ३१ ॥ तां वध्यमानाञ्च तथा पाण्डवानां महाचमूमः प्रत्युद्ययो रणं
 रक्षो देवसेनापथावलः । ३२ ॥ विमर्दः सुमहानासीत् तस्य सन्वस्य मारिषः । रक्षसा
 धाररूपेण वध्यमानस्य संयुगे ॥ ३३ ॥ ततः शरसहस्रेस्तां पाण्डवानामहाचमूमः ।
 व्यद्रावपद्रणे रक्षो दशयत् स्वपराक्रमम् । ३४ ॥ सा वध्यमाना च तथा पाण्डवानाम
 तीकिनी । रक्षसा धाररूपेण प्रवुद्राव रणभयात् ॥ ३५ ॥ प्रमूढा च रणं सेनां
 पश्चिमी धारणा पथा । ततानिद्रुद्राव रणं द्रौपदेयान् महायत्नात् ॥ ३६ ॥ ततु
 कुम्भा महश्चसा द्रौपदेयाः प्रहारिणः । राक्षसं दुद्रुवुः सहये प्रहाः पञ्च रवि यथा
 ॥ ३७ ॥ वीर्यं चन्द्रिन्तलेस्तु पीडितो राक्षसोत्तमः । यथा युगक्षये घोरे चन्द्रमाः
 पञ्चभिर्ग्रहेः ॥ ३८ ॥ प्रतिविम्ब्यन्ततो रक्षो विभेद निशितः शरः । सर्वपांरवी
 वेस्तूर्णकुण्ठाग्रिमहावलः ॥ ३९ ॥ स तीभिन्नतनुत्राणः शुशुभे राक्षसोत्तमः । मरी
 च्चिभिरिवाकस्य संस्पृतो जलक्षो महान् ॥ ४० ॥ विपक्षः स शरैश्चापि तपनीय

पाण्डवकी घायल और भागी हुई बड़ी सेना को देखकर वह राक्षस युद्ध में उसके
 सम्मुख ऐसे गया जैसे कि देवताओं की सेना के सम्मुख दैत्यों का राजा वासिष्ठा
 था, हे घृतराष्ट्र युद्ध में उस घोर राक्षस ने सेना का बड़ा मर्दन किया, और अपने
 पराक्रम को दिखाकर हजारों बाणों को फेंका; तब तो वह पाण्डवी सेना भर
 से महाव्याकुल होकर भाग निकली, जैसे कि हाथी कमलानियों को मर्दन
 करता है उसी प्रकार सेना को मर्दन करके युद्ध भूमि में द्रौपदी के पुत्रों के सम्मुख
 गया । ३६ । तब वह बड़े घनुपवारी प्रहार करनेवाले महाबली द्रौपदी के पुत्र भी
 महा क्रोधरूप होकर उसके सम्मुख ऐसे गये जैसे कि पांच ग्रह सूर्य को सम्मुख से
 घेरते हैं, फिर उन पांचों महाबली यूरोंने उसको ऐसा घायल किया जैसे कि युगके
 अन्त में अर्थात् मलय होने के समय में पांच भयकारी ग्रह चन्द्रमा को पीड़ा देते हैं
 इस के अनन्तर महाबली प्रतिविध ने अत्यन्त शीघ्रता से तीक्ष्ण धारवाले सोहे के
 बाणों से उस राक्षस को अत्यन्त घायल किया, उन बाणों से कटे हुए कवचवाला
 वह राक्षस ऐसा अत्यन्त शोभयमान हुआ जैसे कि सूर्य की किरणों से गर्भित
 बड़ा बादल होता है । ४० । हे राजा वह अर्थ शृंग राक्षस सुवर्ण जटिन बाणों से

army of the Pandav wounded and dispersed, the rakshas faced him as
 Bali the prince of the daityas had faced the armies of gods. That
 dreadful rakshas made a dreadful slaughter of the armies and discharged
 thousands of arrows to show prowess, putting to flight the Pandav
 armies. And trampling the armies as an elephant tramples a clump of
 lotuses, he faced the sons of Draupadi. 36. The great archers, the
 sons of Draupadi faced him much enraged like five constellations
 surrounding the face of the earth. Then the five warriors wounded
 him as severely as five dreadful constellations distress the moon at
 the end of a yug. Then brave Pratibindh with very sharp edged

परिच्छेदे । आप्यंशुद्विधंभौ राजन् वीर्यशुद्ध इवाचलः ॥ ४१ ॥ ततस्ते आतरः
 पञ्च राक्षसेन्द्रं महाश्वे । विष्णुपुनिर्गितधीर्गणैः सपत्नीयविभूषितः ॥ ४२ ॥ त निः
 भिन्न शरैश्चैर्भुजगैः कोपितैरिव । अलम्बुयो भूद राजन् नागेन्द्र इव कुतुहे ॥ ४३ ॥
 सोतिविद्भो महाराज सुहृत्समथ मारिव । प्रविवेश तमो वीधे पीडितस्तेर्महारायैः
 ॥ ४४ ॥ प्रतिलङ्घ्य ततः सहा क्रोधेन द्विगुणीकृतः । चिच्छेद सायकास्तेषां
 पञ्चाश्व धनुषि च ॥ ४५ ॥ एकैकं पञ्च भिर्गणैः राजघानस्मयति च । अल-
 म्बुयो रथोपस्थे चूर्णयति महारथ ॥ ४६ ॥ त्वरमाण सुसंरक्ष्यो ह्यपस्तेषां कृ-
 त्मानाम् । जघान राक्षसः क्रुद्धः सारथीश्च महाबलः ॥ ४७ ॥ भिभू च सुव-
 र्णः पुनश्चैनासुसंशितः । शरैर्बहुविधाकारैः शतशोथसहस्रशः ॥ ४८ ॥ विरयाः प्रभ-
 वासात् कृत्वा तत्र स राक्षसः । अभिबुद्राथ वेगेन हन्तुं कामोनिशाचरः ॥ ४९ ॥ तानपि
 तान् रथे तेन राक्षसेन वृत्तात्मना । इवाजुनसतः संख्ये राक्षसं स मुपाद्रवत् ॥ ५० ॥ तयो-

भिदाहुआ ऐसा शोभित विदित होता है जैसे कि प्रकाशित शिखरवाला पर्वत
 शोभायमान होता है, फिर उन पांचों भाइयों ने उस राक्षस को बड़े तीक्ष्ण शस्त्रों
 मयी बाणों से घायल किया । ४२। तब तो महाविप भरे सपों के समान बाणों से
 विदीर्ण वह गजेन्द्र रूप राक्षस बड़ा क्रोधयुक्त होकर एक मुहूर्त मात्र तो बचेत
 होगया, फिर उस क्रोध से द्विगुणित पराक्रमवाले ने उनके बाण धनुष और ध्वजा-
 ओंको काटा । ४५ । और रथमें बैठेहुए नाचते और भावचर्य करत महारथी
 अलम्बुष ने मृत्येक को पांच र बाणों से घायल करके बड़ी शीघ्रता से उन महात्मा-
 ओं के घोड़े और सारथियों को मारा, और बहुत प्रकारके अनेक रूपके हजारों बाणों
 में उनके शरीरों को घायल किया इन सबकर्मोंको कर के उनसबके मारने की इच्छा
 करके वह राक्षस बड़ी तीघ्रता से उनके पास गया, अर्जुन का पुत्र अभिबुद्र उस
 दुष्टात्मा में अपने भाइयों को पीडित देखकर शीघ्रही उसके सम्मुख गया । ५० ।

swift arrows made of iron, wounded the rakshas. Pierced through
 the armour by golden arrows, the rakshas was glorious to behold like
 a mountain of shining peak. Then the rakshas wounded the five
 brothers with very sharp golden arrows. 42. Wounded by those
 arrows like venomous serpents, the rakshas like an angry elephant,
 became insensible for a moment, and then becoming doubly energetic
 with rage he cut their bows and arrows. 45. Seated in his chariot,
 dancing and wondering brave Alambush wounded each of them with
 five arrows and killed their horses and drivers. He pierced through
 their bodies with thousands of arrows and having done all this, the
 rakshas desirous of slaying them, rushed upon them. Abhimanyu the
 son of Arjun, seeing his brothers distressed by the rakshas, hastened
 to face him. 50. The battle between them was as severe as that bet-

समन्वययुद्धं वृत्रवत्सवयोरिव । वृत्रशुस्तावकाः सर्वे पाण्डवाश्च महारथाः ॥ ५१ ॥
 समेतौ महायुद्धे क्रीधन्तीतौ परस्परम् । महाबली महाराज श्रीधर्मरक्तलोचनौ ॥ ५२ ॥
 परस्परमवक्षेतां कालानिलसमी युधि । तयोः समागमा घोरो वभूव कद्रुकोदयः ५३ ॥
 यथा देवासुरे युद्धे शक्रशम्बरयोः पुरा ॥ ५४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवपर्वणि नवमदिवसपुद्गारश्मि अलम्बुष-

भिमन्युसमागमे एकाधिशततमोऽध्याया ॥ १०१ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । भाजेति समरेभूत् वितिष्णन्तं महारथान् । अलम्बुषः कथयुद्धं
 प्रत्यक्षयत्संजय ॥ १ ॥ आप्येर्शाकि कथञ्चैव सोमन्द्रः परवीरहा । तन्ममाच द्रुप तथेन
 यमायुर्वेदा संयुगे ॥ २ ॥ धनञ्जयश्च किं वक्तुं ममसन्त्येषु संयुगे । भीमो वा रथिनां
 श्रेष्ठो रक्तलो वा घटोत्कचः ॥ ३ ॥ नकुलः सहदेवो वा सात्यकिर्वा महारथः । एतदा
 वदस्वने सत्यं कृशं श्रोतसि संजय ॥ ४ ॥ संजय उवाच । हन्ततेह प्रवक्ष्यामि संप्रथमं
 वरां उत दोषो का ऐसा महायुद्ध हुआ जिता कि इन्द्र और हनुमत् का - हुआ था
 युद्ध तो अपने तब पुत्रों ने और महारथी पाण्डवों ने देखा कि दोनों परस्पर
 क्रीड़ाक्रीडा युद्ध और साल २ नेत्र करके अत्यन्त लड़े और युद्ध में कासागिन के
 समान दोनों वीरों ने अपने को देखा फिर दोनों का भयकारी युद्ध ऐसा अभिय
 युद्ध पड़ा जिता कि पूर्वे समय में देवता और असुरों के युद्ध में इन्द्र और
 शम्बरका हुआया ॥ ५४ ॥

अध्याय ॥ १०१ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्ध में अलम्बुष राक्षस किस रीति से पाँचों महा
 रथियों को मारता हुआ शूवीर अभिमन्यु के सम्मुख हुआ और शत्रुओं के वीरों को
 मारनेवाला अभिमन्यु कैसे २ उस अलम्बुष से लड़ा इसको पयायिता से मुझसे बर्णन
 करो, रथियों में श्रेष्ठ भीमसेन घटोत्कच, राक्षस - नकुल सहदेव और महारथी
 सात्यकी यह सब कैसे २ लड़े और अज्ञेय के युद्ध में मेरी सेना में क्या क्या
 हुआ इन सब बातों के बारे में भागे पर २ बर्णन करो, संजय बोले कि हे अश्व-धृतराष्ट्र

ween Indra and Virāṭasur. The Pandavas as well as your sons
 witnessed the fighting of the two warriors who with eyes red in great
 anger fought with each other. The two warriors of fiery temper
 fought like Indra and Sambar in the war of gods and asura. 53.

CHAPTER CII

"How did Alamvush the rakshas beat the five warriors?" asked
 Dhritrashtra of Sanjaya, "how did he face Abhimanyu and how did
 Abhimanyu the destroyer of foes encounter him? Pray tell me all
 this in detail. How did Bhimsen the best of charioteers, Ghatotkachi
 the rakshas, Nakul, Sahadev and brave Satyaki fight, and what was
 done is my army in the war with Arjun? Pray give a detailed account
 of all these facts." "I shall tell you of that thrilling war," replied

लोमहर्षणम् । यथाभूदाक्ष सेन्द्रस्य सौभद्रस्य च मारिय ॥ ५ ॥ अर्जुनश्च यथा संख्ये
भीमसेनः पाण्डव । नकुल सहदेवश्च रणे चक्रुः पराक्रमम् ॥ ६ ॥ तथैव तावका सर्वे
भीष्मद्रोणपुर सरः । अद्भुतानि चिन्त्रिजाणि चक्रुः कर्मोप्यर्भतिवत् ॥ ७ ॥ अलम्बुपस्तु
समरे अभिमन्यु महारथम् । विनद्य सुमहानाद तर्ज्जयित्वा मुहुर्मुहुः ॥ ८ ॥ अभिमु
द्राद्य वेगेन तिष्ठतिष्ठति चाद्रवीत् । अभिमन्युश्च वेगेन सिंहवह्निदन्धुः ॥ ९ ॥ आप्य
शुद्धिं महेश्वास पितुरत्यन्तवैरिणम् । तत समीपतु सख्ये त्वरितौ नरराक्षसी १० ॥
रथाश्या रथिनौ श्रेष्ठी यथावै देवदानवो । मायावी राक्षसश्रेष्ठो दिव्यास्त्रैश्चैव फाल्गुनि
॥ ११ ॥ ततः कार्पिंगमहाराज निशितैः सायकैस्त्रिभिः । आप्ये शुद्धिं रणे विष्वा पुनर्वि
व्याध पचमि ॥ १२ ॥ अलम्बुपोपि सकुद्धः कार्पिणं नवभिरोन्मुगे । दृष्टि विध्याध
वेगेन तोत्रैरिव महाद्विपम् ॥ १३ ॥ ततः शरसहस्रेण क्षिप्रकारी निराचर । अर्जुनस्य

मै उत रोमहर्षण युद्धको तुम से कहनाहू जो उत राक्षस और अभिमन्यु ने किया है
और जैसे कि पाण्डव अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव और सात्यकी ने युद्धमें पगलप
किया है, और जो २ कठिन कर्म आपके उन शूरोंने किया जिनके कि अग्रगामी
भीष्म और द्रोणाचार्य थे उतको और जैसे २ किंग अलम्बुप युद्ध में बड़े शब्दसे
गर्जकर वा घडककर महारथी अभिमन्यु के सम्मुख गया और बड़ी तीव्रता से तिष्ठ
तिष्ठ शब्द करके सिंह के समान गर्जना करता हुआ अभिमन्यु पिता के महाशत्रु
अलम्बुप के सम्मुख जैसे गया तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ शीघ्रता करने वाले नर और
राक्षस युद्धमें रथों के द्वारा देवदानव के समान सम्मुख हुए मायाका जाननेवाला
राक्षस और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु यह दोनों दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले थे,
फिर अभिमन्यु ने तीन तीक्ष्ण वाणों से अलम्बुप को घायन करके पांचवाणों से
विदीर्ण किया, और अत्यन्त क्रोधयुक्त अलम्बुप ने भी नौ वाणों से अभिमन्यु
के हृदयको ऐसा घायन किया, जैसे कि अंकुश से बड़े हाथी को करते हैं । ११ ।

Sanjaya, "I shall tell you of the doings of the rakshas and Abhimanyu
of the brave deeds of the Pandava Arjun, Bhishma, Nakul, Sahadev
(Satyaki) I shall tell you of the brave deeds of your warriors
who were led by Bhishma and Dronacharya as well as of
Alamvush who, roaring and flashing, faced Abhimanyu and how the
latter, roaring like a lion and uttering forth the cry of 'stay, stay,'
rushed upon Alamvush the great enemy of his father. Both the
best of charioteers, man and rakshas, mounted on swift chariots, faced
each other like gods and Danavas. The rakshas, skilful in the use of
maya and Abhimanyu the son of Arjun were both skilful in the use
of celestial weapons. Having wounded Alamvush with three arrows,
Abhimanyu pierced him with five more. Alamvush too, much enrag-
ed, wounded Abhimanyu in the breast with nine arrows as they do
an elephant with a goad. 13 Then, O best of Bharats, Alamvush

सुते मन्व्ये पीडयामास आरत ॥ १४ ॥ अभिमन्युस्तत दृष्टो नवभिर्घ्नत पर्वभिः । वि-
भेद् निशितैर्वाणै राक्षसेन्द्रं महोरसि ॥ १५ ॥ ते तस्य विविशुस्कर्णं फार्य निभिद्यममै
सु । सनैर्विभिन्नसर्वाद्ग शुभुभे राक्षसोत्तमः ॥ १६ ॥ पुष्पितं किशुकै राजन् संस्तीर्ण
इव पर्वतः । सन्धारयाणश्च शरान् हेम पुंसान् महायत्न ॥ १७ ॥ विवभौ राक्षसश्रेष्ठः
सज्जाल इव पर्वतः । तत क्रुद्धो महाराज आप्यं शृङ्गिरंघणः ॥ १८ ॥ भेदेन्द्रप्रतिमं
कार्षिणं छादयामास परिभिः । तेन ते विशिषामुक्ता यमदण्डोपमाः शिताः ॥ १९ ॥
अभिमन्युं विनिर्मिद्य प्राविशन्तधरातलम् । तथेवार्जुनितामुक्ताः शरा कनकमूषणाः
॥ २० ॥ अलम्बुपं विनिर्मिद्य प्राविशन्त धरातलम् । सोमद्रस्तु रणे रक्ष शरं सन्ना
पर्वभि ॥ २१ ॥ चक्रे विमुच मासाय मयं शक्र इवाहवे । विमुचश्च रणे रक्षं द
मानं रणे रिणा ॥ २२ ॥ प्रादुश्चक्रे महामायां तामसीं परतापनाम् । ततस्ते तमन्ना सर्वे

हे भरतर्षभ इन के पीछे शीघ्रता करने वाले अज्ञम्बुप ने अपने हजार बाणों से अभिमन्युको पीड़ितान् किया, फिर महाक्रोध भरे अभिमन्यु ने भी ग्रन्थी वाले नौ बाणों से राक्षसों के राजा को बड़ी छाती पर घायल किया, वह बाण मर्माँ में प्रवेश करके शीघ्रही उसकी देह में घुसगये उन बाणों से वह संतप्त सन शरीर में घायल होकर ऐसा शोभायमान हुआ, जैसे कि फूले हुए किशुक वृक्षों से पर्वत शोभित होताहै और सुनहरी पुंसवाने बाणों से उसकी ऐसी अद्भुत शांभाहूर् जैसे अग्नि वाले पहाड़की होती है इनके पीछे महाक्रोध युक्त असह्य अज्ञम्बुप ने बाणों से महादृढ़ के समान अभिमन्यु को ढकदिया. फिर उसके बाण अभिमन्यु को घायल करके पृथ्वी में घुसगये इसीप्रकार अभिमन्यु के छोड़े सुवर्ण जटित बाण भी अज्ञम्बुप को घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगये फिर अभिमन्यु ने युद्धमें अच्छे युद्धे हुए ग्रन्थी के बाण अज्ञम्बुपके ऐसे मारे जिनके मारे उमने ऐसे मुक्त फेर लिया जैसेकि इन्द्रके मारे हुए बाणोंसे मयदैत्यने मुक्तफेर लियाथा फिर राक्षसाधिपने अपनी तामसी बड़ी मायासे अन्धकार को प्रकटकिया उम अन्धकारमें वहसय गुप्तहोगये, तय

fiercely wounded Abhimanyu with thousands of arrows, and the latter too, much enraged pierced that prince of rakshases with nine arrows in the breast. The arrows pierced the vital parts in his body and the rakshas with the wounds on his body, looked beautiful like kinshuk trees in bloom on a mountain. With the arrows having golden feathers stuck to his body, he looked glorious like a volcano. Then enraged Ajamvush of unlearnable nature hid Abhimanyu with his arrows like those of Indra. His arrows having pierced through the body of Abhimanyu, entered the ground. Then Abhimanyu pierced him with his arrows of hooked points and the rakshas turned face like Maya daitya wounded by Indra. The rakshas prince thereupon created a storm of darkness by his art of darkness and hid all the comba-

धृताश्वत्थं महीपते ॥ २३ ॥ नाभिगन्धुमपदयन्त नैव स्वान् न परान् रणे । अभिमन्यु
 श्वत्तद्दृष्ट्वा घोररूपं महत्तमः ॥ २४ ॥ प्रादुर्भक्तं तवत्युग्रं भास्करं कुलन्दनः । तत
 प्रकाशमभवज्जगत् सर्वं महीपते ॥ २५ ॥ ताञ्चाभिजग्निवान् माया राक्षसस्य दुरात्म
 नः । संकुम्भमहावीर्यो राक्षसेन्द्रं नरोत्तम ॥ २६ ॥ द्वाद्दधामास समरे शरैः सन्नत
 पर्वभिः । यद्दधीस्तथान्या मायाश्च प्रयुक्तास्तेन रक्षसा ॥ २७ ॥ सर्वाश्च विदनेषाम्ना
 चारयामास फाल्गुनिः । हतमायःततो रक्षो वध्यमानरचसायकैः ॥ २८ ॥ रथत्रयैश्च सं
 त्यज्य प्रादुर्भूतं महतो मयात् । तस्मिन् विनिर्मिते तृणं कूटयोधिनि राक्षसे ॥ २९ ॥
 आर्जुनि समरे सैन्यं तावकं सं ममर्द्धह । मदान्वो गन्धनगोश्च सपत्ना पद्मिनीमिव
 ॥ ३० ॥ ततः शान्ततवो भीष्मः सैन्यं दृष्ट्वाभिः विदुतम् । महता शरवर्षेण सौमद्रं
 पर्यं चारयत् ॥ ३१ ॥ कौट्टीकृत्यच सं घोरं घातं राक्षसं महारथम् । एकं सुबहवो युजे
 न राक्षसको न अपने शूरवीरों को न शत्रुओंको अभिमन्यु ने देखा इसमहाभयकारी
 मन्त मायाको देखकर अभिमन्युने प्रकाशमान तारनाम अस्त्रको प्रकटकिया तबसब
 संतार दीखने लगा । २५ । और प्रकाश के होनेही उन निर्बुद्धी दुरं त्ना राक्षसकी
 प्रबल मायाको दूरकरके बड़े धीर पराक्रमी नरोत्तम अभिमन्युने उस राक्षसाधिपको
 पुद्गमें गुप्तप्रन्थी वाले बाणों से टकदिया फिरउस राक्षस ने अनेक मायाकरी
 परन्तु सब मायाओंको उस महाअस्त्रह अभिमन्युने दूर किया फिर मायाके नाशहो-
 तेही सायकों से घायल होकर वह राक्षस बड़ा भयभीत होके रथको उठी स्थान में
 छोड़कर भागगया फिरउम कठिन पुद्ग कर्चा राक्षसके शीघ्र विजय होनेपर पुद्गमें
 मट्टहोकर अभिमन्युने आपकी सेनाका ऐसा विध्वंसनकिया जैसे कि मदनोत्तम
 वासी गजेन्द्र निर्बल कुमुदिनियों के वनको विध्वंसकरना है । ३० । इनके पीछे
 शान्तनुके पुत्र भीष्मजीने अपनी सेना को भागाहुआ देखकर बाणों से शत्रुओं से
 अभिमन्युको टकदिया, फिर घृतराष्ट्र के महारथी पुत्रों ने ऊपर से घात करके

ants under it. 23. Neither the rakshas nor the warriors of both sides were discernible to Abhimanyu. Seeing that dreadful delusion, Abhimanyu discharged his light producing weapon known as Sour (solar) and the firmament was again clear. 25. Thus dispelling darkness caused by the unwise and ill-natured rakshas, brave Abhimanyu hid him by his arrows having hidden knots. The rakshas detected various deceptions, but Abhimanyu, skilled in the use of all weapons, made all his schemes futile. With the destruction of his artfulness, the rakshas wounded by arrows and afraid, left his chariot and fled from the field of battle. After the conquest of that warrior rakshas Abhimanyu began to destroy your armies as a mad elephant of the forest tramples down the helpless lotuses. 30. Then Bhishma the son of Saantana, seeing his army put to flight, bid Abhimanyu with his sharp shower of arrows. The sons of Dhritrashtra then surrounded that

ततः सायकैर्बभूव ॥ ३२ ॥ स तेषां रथिनां धीर- पितुस्तुल्य पराक्रमः । सद्यो बाहु
 देवस्य विक्रमेण बलेन च । ३३ ॥ उभयोः सदसौ कर्म स पितुर्मातुलस्य च । रणे
 बहुविधं शक्रे सर्वशस्त्रभृतां धरः ॥ ३४ ॥ ततो धनञ्जयो 'धीरो धिनिर्घ्नस्त
 सैनिकान् । आसत्साद रणे भीष्मं पुत्रप्रेप्सुरमर्षणः ॥ ३५ ॥ तपैव समरे राजन्
 पिता देवव्रतस्तथ । आसत्साद रणे पार्थ स्वर्मातुरिव मादकरम् ॥ ३६ ॥ ततः
 सदयनागाश्वाः पुत्रास्तव जनेश्वर । परिव्रज्य रणे भीष्मं जुगुपुञ्ज समन्वतः ॥ ३७ ॥
 तथैव पाण्डुर्वा राजन् पदिवात्यैर्धनञ्जयम् । रणाय महते युक्तां वंशिता भरतर्षभ
 ॥ ३८ ॥ शारद्व्रतस्ततो राजन् भीष्मस्य प्रमुखे स्थितम् । अर्जुनं पञ्चविंशत्या
 सायकानां समाधिनात् ॥ ३९ ॥ प्रत्युद्गम्याथ विष्याथ सात्यकिस्तं शितः शरैः ।
 पाण्डवप्रियकामार्थं शार्दूल इव कुञ्जरम् ॥ ४० ॥ गौतमोपि स्वारायुक्तो माघबन्धविर्भिनः ।

से घेरकर युद्धमें अनेकों ने अकेले को बहुतसे बाणों से अत्यन्त घायल किया, उस
 पिता के समान बली व बल पराक्रम में बासुदेवजीके तुल्यतव शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ
 धीर अभिमन्युने उन रथियों के सम्मुख पिता और मामाके समान अनेक प्रकारके कर्मोंको
 किया । ३४ । उसके पीछे पुत्रको चाहते और आपकी सेनाको मारते श्रेष्ठयुक्त
 धीर अर्जुनने युद्ध में अपने पुत्रको पापा, इसी प्रकार अन्य आने धीरों को भी
 सम्मुख लड़ते हुए पापा और भाप के पिता देवव्रतने लड़ाई में अर्जुन को ऐसे
 सम्मुख पाया जैसे कि राहु सूर्य को सम्मुख पाता है, इसके पीछे रथ हाथी और
 घोड़ों समेत आपके पुत्रों ने युद्ध में भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित किया,
 हे रामा धृतराष्ट्र इसी प्रकारसे अनेकत पांडव अर्जुनको घेर कर बड़े युद्धके सिपे
 गट्टचढ़ाए, इसके पीछे कृपाचार्य्य ने पञ्चीस बाणों से भीष्म के आगे दर्शमान
 अर्जुन को दण्डदिया फिर सात्यकीने अर्जुन के प्रियकरने की इच्छा में सम्मुख
 जाकर उनको तीक्ष्णबाणों से ऐसा घायल किया जैसे कि शार्दूल हाथीको घायल
 करता है । ४० । और अत्यन्त कोपयुक्त श्रीभगवाकरनेवाले कृपाचार्य्य जाने भी केक

warrior on all sides and many of them united together wounded the
 single. Valliant Abhimanyu the best of warriors, strong like his father
 and full of prowess like his uncle Vasudev, performed deeds of valour
 like those of his father and uncle. Then out of love for his son killing
 your warriors, brave Arjun, much enraged, approached him and found
 him opposed by many. Then your father Devabrat met Arjun in
 combat as Bahu meets the sun. Your sons protected Bhishm with
 chariots, elephants and horses, and surrounding the Pandev Arjun they
 fought against him. Then Kripacharya with twenty five arrows hit
 Arjun who opposed Bhishm. Satyaki, wishing to please Arjun, faced
 him and wounded him with his arrows as a lion wounds an ele-
 phant. 40. Skillful Kripacharya, much enraged, wounded Satyaki

शरैः । हृदि विज्याथ संकुद्धः कंकपत्रपरिच्छेदः ॥ ४७ ॥ शैनेयोपि ततः क्रुद्धश्चापमा
 नम्र वेगवान् । गौतमान्तकरं तूर्णं समाधत्त शिलीमुखम् ॥ ४२ ॥ तमापतन्तं वेगेन
 शक्राशनिवमयुतिम् । द्विधा चिच्छेद संकुद्धो द्रौणिः परमकोपनः ॥ ४३ ॥ समुत्
 खुज्याथ शैमथो गौतमं गयिनांवरः । अश्वद्रवद्रणे द्रौणिं राहुः खे शशिनं यथा ॥ ४४ ॥
 तस्य द्राणमुत्थापं द्विधा चिच्छेद्भारत । अथेनं छिन्नधन्व्यानं ताडयामास सात्यकीः
 ॥ ४५ ॥ सोन्यत्र कार्मुकमादाय शत्रुघ्नं भारसाधनम् । द्रौणिं पश्या महारोज घाह्वो
 ररसि चापंयत् ॥ ४६ ॥ स विद्धो ध्यथितश्चैव मुहूर्त्तं कदमलायुतः । निपसादाथो
 पस्थे ध्वजयष्टिं समाधिनः ॥ ४७ ॥ प्रतिलभ्य ततः संज्ञांश्रेणपुत्रः प्रतापवान् । वाष्पंयं
 समरे कुद्धो नाराचेन समापंयत् ॥ ४८ ॥ शैनेयं स तु निर्भिद्य प्राविशच्छरणीतलम् ।

पद्म युक्त गौ वाणों से सात्यकी को हृदय में घायल किया फिर वेगवान् क्रोध
 भरे सात्यकी ने अपने धनुषको लेकर कृपाचार्य के नाश करनेवाले शिलीमुख
 नाम वाणको धनुषपर चढ़ाया उस समय अत्यन्त क्रोध से भरे हुए अश्वत्यामा ने
 उस तीव्रतासे गिरते हुए इन्द्र वज्र के समान वाणको दोस्थानों में काटा, इसके
 पीछे रथियों में भ्रेष्ठ सात्यकी कृपाचार्य को त्यागकर युद्ध में अश्वत्यामा के
 सम्मुख ऐसे गया जैसे कि आकाश में चन्द्रमा के सम्मुख राहुजाता है । ४४ । हे
 भरतवंशी द्रोण के पुत्र अश्वत्यामा ने उसके धनुष के दो खण्ड करके उसको मारे
 वाणों के अच्छादित करदिया फिर सात्यकी ने शत्रुओं के मारनेवाले दूसरे धनुष
 को खिंचकर साठ वाणों से अश्वत्यामाकी छाती और दोनों भुजाओं को घायल
 किया उन वाणों से घायल और पीड़ित होकर अश्वत्यामा महात्याकुल व अचेत
 होकर कई मुहूर्त्तरु ध्वजाके आश्रयसे रथमें बैठगया, थोड़ेही समयमें अश्वत्यामाने
 सचेतही बड़े क्रोधसे सात्यकीको नाराच वाणने घायल किया, वहवाण सात्यकी
 को घायल करता हुआ पृथ्वीमें ऐसे घुमगया जैसे किवस्तन् ऋतुमें सर्पका बलवान्

in the breast with nine arrows having vulture quills, and Satyaki
 much enraged sharply bent his bow and desirous of killing Kripacharya,
 put to his bow an arrow whetted on stone Ashwathama exceedingly
 enraged, cut that swift arrow like the vajra of India, in two places.
 Then Satyaki the best of charioteers left Kripacharya and rushed
 against Ashwathama as Rahu goes against the moon. 44 The latter
 cut down his bow and hid him with his arrows. Satyaki then took
 up another bow destructive of enemies and discharging from it sixty
 arrows, wounded him on the breast and arms. Wounded and pained
 by them, Ashwathama became unconscious for some time and held
 his banner staff to keep himself from falling down. On regaining
 consciousness he wounded Satyaki with a long shafted arrow. Hav-
 ing wounded Satyaki that arrow entered the ground as a young and
 powerful snake enters his hole in the season of Spring 49. Then

षसन्तकाले बलवान् विलं सर्पशिशुयथा ॥ ४९ ॥ अथा परेण भल्लेन माधवस्य ध्वजो
 त्तमम् । चिच्छेद् समरे द्रौणिः सिंहमाव्ं मुमोच ह । ५० ॥ पुनश्चैनं शरैर्वोरैश्छादया
 मास भारत । निद्राघान्ते महाराज यथा भेषो दिवाकरम् ॥ ५१ ॥ सात्यकीपिमहाराज
 शरजालं निहत्य तत् । द्रौणिमथ्या किरतूणं शरजालं रणे कथा ॥ ५२ ॥ तांपयामास
 च द्रौणिं शैभेयं परवीरहा । विमुक्तो भेषजालेन ययैव तपनस्तथा । ५३ ॥ शराणांच
 सहस्रेण पुनरेव समुद्यतः । सात्यकिश्छादयामास ननाद् च महाबलः ॥ ५४ ॥ दृष्ट्वा
 पुत्रं चतं प्रसंतं राहुणेव निशाकरम् । बन्धद्रवत् शैनेयं भारद्वाजः प्रतापवान्
 ॥ ५५ ॥ विन्याध च सुतीक्ष्णं पृथक्केन महामुधे । परीपसन् स्वसुतं राजन् बाष्पे
 नाभिपीडितम् ॥ ५६ ॥ सात्यकिस्तु रणे हित्वा गुरुपुत्रं महारथम् । द्रोणं विन्याध
 विशाया सर्वं पारशवैः शरैः ॥ ५७ ॥ तदन्तरममेयात्मा क्रौन्तेयः शत्रुतापनः । मथ्य

यच्या विल्लमें प्रवेश करता है । ४९ । फिर अश्वत्थामाने दूमरे भल्ल से सात्यकी
 की उत्तम ध्वजाको काटकर बड़े सिंहनाद पूर्वक उसको महायोर बाणों से ऐसा
 ढकादिगा जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल सूर्यको ढकदेता है हे महाराज फिर सात्यकीने
 भी बड़ी शीघ्रतासे उस बाणोंके जालको काटकर अपने बाणसमूहोंसे अश्वत्थामाको
 आच्छादित करदिया । फिर उसशत्रुहन्ता सात्यकीने अश्वत्थामाको ऐसा संतप्त किया
 जैसे कि स्वच्छ आकाशवाला सूर्य सत्रको अत्यन्त तपाता है, इसके पीछे बड़े उपाय
 करनेवाले सात्यकी ने बड़ी गर्जनाओंको करके हजारों बाणोंसे अश्वत्थामाको व्याप्त
 करदिया, तबसाहूमे असेहुए सूर्यके समान अपनेपुत्रको देसकरप्रतापवान् द्रोणाचार्य
 जी इस सात्यकी के सम्मुख गये । ५५ । हे राजा सात्यकी के हाथसे पीढ़ापान्
 अपने पुत्रको चाहते हुए द्रोणाचार्य ने उसको युद्ध में बड़े तीव्र पृथक्बाणसे
 घायल किया फिर सात्यकी ने युद्धमें गुरुके पुत्र महारथी को छोड़कर लोहमयी
 बाणों से द्रोणाचार्यजी को महा व्याकुल किया, उसी अन्तर में बड़ा साहसी

having cut down his good banner with another dart, Ashwathama
 roared like a lion and hid him with his arrows as clouds in the
 rainy season hide the sun. Satyaki with great velocity cut down
 that network of arrows and his Ashwathama with a swarm of
 his own. That destroyer of foes then heated Ashwathama as
 does the sun when the sky is clear. With great skill Satyaki
 hid Ashwathama with thousands of arrows and uttered loud
 roars. Then seeing his son like the sun arrested by Rahu, Drona-
 charya faced Satyaki. 55. Out of affection for his son who was
 wounded by Satyaki, Dronacharya wounded the latter with his very
 sharp arrows. Satyaki then left the son of Acharya and wounded
 Dronacharya with his steel arrows. In the meantime, valiant

इवद्रणे कुड्डो द्रोणे प्रति महारथम् ॥ ५८ ॥ ततो द्रोणश्च पाप्यश्च समेपातां महाशुभे ।
पया बुधश्च शुक्रश्च महाराज नमस्तले ॥ ५९ ॥

इतिथी महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलपुङ्गे द्रोणार्जुन-

समागमे ऽथधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०२ ॥

धृतराज उवाच । कथं द्रोणो महेश्वास पाण्डवश्च धनञ्जय । समीपतू रणे
पत्नी तावुमी पुत्रपर्यभौ ॥ १ ॥ मियोद्धि पाण्डवो नित्य भारद्वाजस्य भीमतः । आचार्यश्च
रणे नित्य मियः पाप्यस्य सञ्जय ॥ २ ॥ तावुमी रथिनी सत्ये हृष्टौ सिंहाघिनोत्कटौ ।
कथं समीपतुयंतौ भारद्वाजधनञ्जयौ । ३ । सञ्जय उवाच । न द्रोण समरे पाप्ये
जानीते मियमारमन क्षत्रधम पुरन्दरुत्प पाप्यो वा गुण्मार्हणे ॥ ४ ॥ न क्षत्रिया रणे
धजन् वृज्ययति परस्परम् । निर्मथ्यादे हि बुध्यन्ते पितृभिर्भ्रातृभिः सह ॥ ५ ॥ रणे

शत्रुसनापी महारथी क्रोध भरा अर्जुन युद्धमें द्रोणाचार्य के सम्मुख गया फिर
द्रोणाचार्य और अर्जुन ने उन घोर युद्ध में ऐसी बड़ी सम्मुखता करी जैसी कि
आकाश में बुध और शुक्रने करीथी ५९ ॥

अध्याय १०२ ॥

धृतराज बोले हे संजय युद्ध में कुशल दोनों पुरुषोत्तम अर्थात् बड़े धनुषधारी
द्रोणाचार्य और पाण्डव अर्जुन परस्पर कैसे सम्मुख हुए, हे संजय वह अर्जुन उस
बुद्धिमान् द्रोणाचार्य का सदैव प्यारा है और आचार्यजी भी अर्जुन को सदैव
प्यारे हैं, वा दोनों महारथी युद्ध में प्रसन्न चित्त सिंहाकी समान मदोन्मत्त और
सावधान होके किस रीति से युद्धकरने को प्रवृत्त हुए, संजय बोले कि द्रोणाचा-
र्यजी युद्ध में अर्जुन को अपना प्यारा नहीं जानते हैं इसी प्रकार अर्जुन भी सत्री
धर्मको आगे करके गुरुको युद्ध में प्यारा नहीं मानता है, हे राजा क्षत्री लोग
परस्पर में एक दूसरेको त्याग नहीं करते हैं किन्तु पिता और माई

Arjun of great courage and destroyer of foes went against Drona-
charya much enraged and met him in a severe combat like that of
Buddhi and Shukra in heaven." 59.

CHAPTER CIII

" Describes the encounter between the two skilful warriors and
best of men, viz., Dronacharya the great acher and Arjun the
Pandav " said Dhanrashtra to Sanjaya, " Arjun is always dear
to Dronacharya and the former has equal regard for the latter, how
did the two warriors, with cheerful minds like two maddened lions,
fight against each other in earnest? " " Dronacharya casts aside his
love for Arjun at the time of fighting," replied Sanjaya, " and
likewise Arjun's idea of kshatrya duty overcomes that of love for his
preceptor. Kshatryas, O king, do not spare any one in battle they

मादा पापेन द्रोणे निद्वित्रिभि शरैः । नाचिन्तयच्छ तान् घाणान् पार्थचापस्यु
 तान् युधि ॥ ६ ॥ शरवृष्ट्या पुन पार्थ इडादयामास तं रणे । स प्रजत्थाल रोपेणमहो
 म्पिदिशोर्जित ॥ ७ ॥ ततार्जुन रणे द्रोण शरैः समतपर्वभि । छादयामास राजेन्द्र
 न विरक्षेय भारत ॥ ८ ॥ ततो दुर्योधनो राजा सुशर्माणमबोधयत् । द्रोणाय समरे
 राजन् पार्थिवमहजकारणात् ॥ ९ ॥ त्रिगर्त्तराडपि क्रुद्धो धरामायन्यफार्मुकम् । छाद
 यामास समरे पार्थ चाणैरयो मुखै ॥ १० ॥ ताभ्यां मुक्ताः शरा राजप्रन्तरिक्षे विरे
 जिरे । हसा इव महाराज शरत्काले नमस्तले ॥ ११ ॥ ते शराः प्राप्य कौन्तेयं समन्ता-
 द्विविशु प्रभो । फलमारुतन यद्भ्रु स्वादुवृष्टं विदद्भमा ॥ १२ ॥ बर्जुनस्तु रणे
 नात् धित्तय रथिनाघरः । त्रिगर्त्तराजं समरे सपुत्रं विष्यधे शरैः ॥ १३ ॥ ते विष्यमा
 ना पापेन कालेनैव युगक्षये । पार्थमेवाश्रयवर्त्तन्त मरणे कृतनिधया ॥ १४ ॥ सुगुड

के साथ में भी अनर्थादा से लड़ते हैं हे राजा युद्धमें अर्जुन के तीन बाणों से
 घ यत्र द्रोणाचार्यजीने अर्जुन के धनुष से गिरेहुए बाणों को विचार नहीं किया,
 फिर अर्जुन युद्धभूमि में बाणों की वर्षा करता हुआ ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसे कि
 बड़े पन में दृढ़ि पानेवाला अग्नि मचयद होजाता है, फिर द्रोणाचार्य नेभी शी-
 ग्रही गुप्तप्रन्थीराले बाणों से अर्जुन को दकदिया, तदनन्तर राजा दुर्योधन ने युद्ध
 में द्रोणाचार्य की मर्नपत्र के कारण राजा सुशर्मा को आज्ञाकरी, उस त्रिगर्त
 के क्रोधयुक्त राजा ने भी अपने धनुषको अच्छे प्रकार खैचकर लोहे की पुंरवाले
 बाणों से अर्जुन को आच्छादित करदिया । १० । हे राजा उन दोनों के छोड़ेहुये
 बाण अन्तरेक्ष में प्रेषे प्रकाशमान हुए जैसे कि शरदऋतुके आकाश में हंसशोभित
 होतेहैं, वह बाण चारोंधेरसे अर्जुन को पाकर ऐसे मचेष्टहुए जैसे कि फलों के
 बोम्ब से फुकेहुए दलों में पक्षी मनेश करने है, फिर रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने
 बड़ी मर्नना कत्के मारे बाणों के पुत्र समेत त्रिगर्त्त के राजा को घायल कर दिया
 जैसे कि युग के अन्त में काल से घायल होतेहैं वसी महार अर्जुन से घायल

fight against their fathers and brothers. Wounded with three arrows
 of Arjun, O King, Dronacharya took no notice of them. At this
 Arjun, showering his arrows was exceedingly enraged like the
 advancing fire in a forest. Dronacharya too, hid Arjun with the
 shew of his arrows having hidden knots. Then Prince Duryodhan
 called king Sisharma to assist Dronacharya, and that enraged
 Trigart too, drew his bow and hid Arjun with his feathered
 arrows. The arrows discharged by both looked
 like birds flying on high in the winter season. The arrows
 entered the chariot of Arjun as birds enter the foliage of a fruit
 bearing tree. Then Arjun the best of charoteers with a long roar
 wounded the king of Trigart and his son with the shower of arrows

धारयुष्टिञ्च पाण्डवस्य रथं प्रति । शरवृष्टिं ततस्तान्तु शरयुधैः समन्ततः ॥ १५ ॥
 प्रतिजग्राह राजेन्द्र तोययुष्टिमिवाचलः । तत्राद्भुतमपश्याम धीमत्सोर्हस्तव्याघ्रम्
 ॥ १६ ॥ विमुक्तां बहुभिर्युधैः शस्त्रवृष्टिं पुरासदाम् । यदेको वारयामास मारुतोन्नग-
 णानिव ॥ १७ ॥ कर्मणातेन पार्थस्य तुतुपुण्ड्रवदानवाः । अथकृद्धो रणे पार्थ खिगर्तान्
 प्रति भारत ॥ १८ ॥ सुमोचास्त्रं महाराज वायव्यं पृथनामुचे । प्रादुरासीत्ततो वायुः ह्योम
 याणो नभस्तलम् ॥ १९ ॥ पातयन् वै तरुणान् चिनिष्कंश्चैव सैनियान् । ततो द्रोणे
 भिवीक्ष्यैव वायव्यास्त्रं सुदारुणम् ॥ २० ॥ शैलमन्दमहाराज घोरमस्र सुमोच ह ।
 द्रोणेन युधि निर्मुक्ते तस्मिन्नस्त्रे नराधिप ॥ २१ ॥ प्रशशाम ततो वायुः प्रसभ्राश्च
 दिशोदश । ततः पाण्डुसुतो वीरखिगर्त्तस्य रथप्रजाद ॥ २२ ॥ निरुत्साहानुरणेचक्रे
 विमुखात् विपराम्भान् । ततो दुष्टयोधनश्चैव कृपश्च, रथिनांवरः ॥ २३ ॥ अश्वत्था

और मरने में निश्चय करनेवाले वह लोग अर्जुन केही सम्मुख आकर वर्तमान हुए
 । १४ । और युद्धमें उन लोगोंने अर्जुन के रथ पर बाणों की वर्षाकरी और
 अर्जुन ने अपने बाणों से उनके बाण जालों को ऐसे रोका जैसे कि जलकी
 वर्षा को पर्वत रोकता है हे राजा वहाँ हमने अर्जुन की हस्तमाधरता को भी
 अपूर्व देखा कि जो अकेले ने बहुत से वीरोंकी छोड़ी हुई अस्र बाणों की
 वर्षाको और शस्त्रों को ऐसे रोक़ा जैसे कि वायु बादलोंके समूहोंको रोकदेता है,
 अर्जुन के उस कर्म से देवता और दानव भी महामसन्न हुए हे राजा अर्जुन ने महा
 क्रोधित होकर सेना के मुखरूप त्रिगर्त्त देशियों के ऊपर वायव्य अस्त्रको छोड़ा
 उस में से आकाशको व्याकुल करते या देवताओंके समूहोंको गिराते और नेनाओं
 को मारते हुए वायु प्रकटहुए फिर द्रोणाचार्य जी ने बड़े भयकारी वायव्य अस्त्र
 को देखकर । २० । दूसरे शैल्य नाम घोर अस्त्रको छोड़ा उमद्रोणाचार्यके उम अस्त्र
 के छोड़तेही वहवायु शान्त होगई और दशोदिसा प्रसन्नहुई इस के पाँछे उमवीर
 अर्जुन ने त्रिगर्त्त राजा के रथों के समूहोंको, वेउत्साह व निर्मल व मुल फेरनेवाला

like those of Death. Thus wounded by Arjun, they faced him
 believing in their death 14 They showered arrows at the chariot
 of Arjun and the latter with the network of his arrows checked them
 as a mountain checks a shower of rain. There we saw, O king, the
 wonderful swiftness of Arjun who checked the shower of their
 arrows as the wind does the masses of clouds. The gods and the
 danavs were pleased at the prowess of Arjun. He discharged his
 Vayavya (airy) weapon at the Trigartas who led the army. It
 produced winds disturbing the skies, making the crowds of gods fall
 from their seats and destroying the armies. Seeing the effect of that
 weapon Dronacharya discharged another, known as Shailya, which
 subsided the storm of wind and the people were pleased. Then

मातया शल्यः कांबोजश्च सुदक्षिणः । विन्दानुविन्दावाचन्त्यौ वाह्लिकः सह
 वाह्लिके ॥ २४ ॥ महता रथवंशेन पाण्डुस्यावाचरन् दिशः । तथैव भगदत्तश्च युता
 युद्ध महाबलः ॥ २५ ॥ गजानीकेन भीमस्य तत्रवारयतां दिशः । भूरिश्रवाः शल्यश्चैव
 सीधलश्च विशाम्पते ॥ २६ ॥ शरीरैर्विमलैस्त्रिदशैर्मोद्रीपुत्रावधारयत् । भीमस्तु
 संहतः सङ्घे पाँचराष्टः ससैतिकैः ॥ २७ ॥ युधिष्ठिरं समासाद्य तपेत पर्यवार
 यत् । आपतन्तं गजानीकं हृष्ट्वा पायो वृकोदरः २८ ॥ लेलिहन् सुविकर्णधीरो
 मृगराडिश्च कानने । भीमस्तु रथिनश्चेष्टो गदां गृह्य महाहथे ॥ २९ ॥ अवप्लुत्य रथ
 पूर्णं तव सैन्यान्वभीपयत् । तमुद्धीक्ष्य गदाहस्तं ततस्ते गजसादिनः ॥ ३० ॥ परि-
 व्रज्ये यत्ता भीमलेनं सनन्तः । गजमध्वगनुव्रातः पाण्डव स न्यराजत ॥ ३१ ॥
 मेघैजालस्य महतो यथा मध्यगतो रविः । इवधमत् स गजानीकं गदया पाण्डवर्षभः

किया, इसके पीछे दुर्योधन व रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य अश्वत्थामा शल्य
 कांबोज सुदक्षिण विन्द अनुविन्द अवन्तिके राजा लोग वाह्लीक देशियों समेत
 राजा वाह्लीक इन सब वीरों ने रथों के समूहों से अर्जुन की दिशाको
 रोकादिया । २५ । उसी प्रकार भगदत्त व महादत्ता श्रुतायु इन दोनों ने हाथियों
 की सेना समेत भीमसेन की दिशाओं को रोक और भूरिश्रवा शल्य शकुनी
 इस मवने बड़े तीव्र क्षणों से माद्री के दोनों पुत्र नकुल सहदेव को घेरलिया और
 मेना वा धृतराष्ट्र के सय पुत्रों समेत भीष्मजी ने युधिष्ठिर को पाकर सब ओर
 से घेरलिया, फिर भीमसेन ने उग गिरती हुई हाथियों की सेनाको देखकर उनके
 सिंशक समान होठोंको चट्टते हुए अपनी बड़ी गदाको लेकर सीधही रथसे कूदके
 आपसी सेनाओं को भयभीत किया इसके पीछे युद्धमें कुशल उन हाथियों के सवारों
 ने भीमसेन को गदा धारण किये देखकर ३०। चारों ओर से घेरलिया तब वह
 भीमसेन हाथियों के मध्यवर्ती होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बादलोके बड़े

bravo Arjun made the hosts of Trigart charioteers powerless and they turned back out of despair. Then Duryodhan, Kripacharya the beat of charioteers, Ashwathama, Shalya, Camboj, Sudakshin, Vind and Anuvind the two princes of Avanti and Vahlk with his countrymen checked Arjun from all sides 25. In the same manner, Bhagdatta and mighty Shrutayu with their armies of elephants checked Bhimsen from all directions; and Bhurishrava, Shalya and Shakuni checked with their arrows the advance of Nakul and Sahadev the two sons of Madri. Bhishm with all the sons of Dhritrashtra and the armies surrounded Yudhishtir. Seeing the armies of elephants falling on him, Bhimsen licked his lips like a lion and taking up his huge mace, jumped down from his chariot and terrified your armies. The elephant riders saw Bhimsen race in hand (30) and surrounded him on all sides. Surrounded by those huge elephants Bhimsen looked

१) ३२ ॥ महाभारतमनुलं मातरिभेव संततम् । ते वध्यमाना पलिनो भीमसेन
 वृन्तिनः ॥ ३३ ॥ आर्तनादं रणे चकुर्वाञ्जस्तो जलदा इव । वधुधा वारितश्चेव
 विधाणैस्तत्र वृन्तिभिः ॥ ३४ ॥ कुलाशोकं निभः पार्थं शुशुभेरणमूर्धनि । विधाणे
 वृन्तिनं गृह्य निर्विधाणमयाकरोत् । ३५ ॥ विधाणेन च सेनेव कुम्भेश्याहृत्यवृन्तिनम् ।
 पातयानास समरे दृग्दहस्त इवान्तकः ॥ ३६ ॥ शोणिताकांगवो विभ्रद मेदोमञ्जा
 कृतवृन्ति । कृताश्वद्वं शोशितेन वद्वन् प्रत्यहदयत् । ३७ ॥ एव ते वध्यमानाश्च
 हतशोषामहागजाः । प्राद्वधेन दिशो राजन् विवृर्ननं स्वकंवलम् ॥ ३८ ॥ द्रुपद्विस्तीर्ण
 धानगीः समंताद्भ्रनर्धेन । वुष्येधन पल सर्वं पुनरास्तिपरासमुत्थम् ॥ ३९ ॥

इतिथी महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपधपर्वणि संकुलपुद्गे

त्रयधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०१ ॥

जालमें बर्तमान होकर सूर्य शोभित होता है और वीर भीमसेनने अपनी गदासे
 हाथियोंकी सेना को ऐसे पृथक् २ करदिया जैतकि व यु बड़े और अतिरूप फैले
 हुए बादलों के जालों को पृथक् २ काता है उस महाबली भीमसेन से पापत
 बादलों के सभान गर्नेनाले हाथियों ने पीड़ायुक्त शब्द नित्य और हाथियों के
 दांतों से बहुत जागल हुआ भीमसेन रणभूमि में फूले हुए अशोकके समान शोभित
 हुआ फिर हाथीको दांतपर से पकड़कर बिना दांत कर दिया और उठी दांत से
 हाथी के मुखको घायल करके रणभूमि में गिराया उस समय मृत्यु समान दण्ड
 हाथ में नित्य गस्तकों की चरवी से शोभित रुधिर भरे देह से रुधिर में डूबी हुई
 गदाका घाण करनेवाला भीमसेन रुद्र के समान दृष्ट पड़ा इस रीति से सब
 हाथी मारेगये और मरने से बचेपचाये बड़े हाथी अपनीही सेना को दबाते
 मर्दन करते इधर उधरका भागगये उन चारों ओर को भागते हुए उनबड़े २
 हाथियों के जरण से दुःखधिनकी सचमेना मुख फेरगई ३९ ॥

glorious like the sun surrounded by clouds. With his mace he dis-
 persed the army of elephants as the wind disperses the clouds. Wound-
 ed by mighty Bhimsen the elephants thundring like clouds uttered
 shrieks of distress; and exceedingly wounded by elephants, Bhimsen
 looked beautiful like the ashoka tree. He pulled out the tusks of the
 elephants and felled them in the field of battle with the bows of the
 tusks. Holding the fatal staff in hand, stamed with the feet of the
 heads, with his body and mace rooking in blood, Bhimsen looked like
 Rudra. Thus nearly all the elephants were slain, while the rest,
 huge ones, fled hither and thither crushing their own warriors,
 and with those huge elephants all the army of Duryodhan turned
 back." 39.

सञ्जय उवाच । मध्याह्नेः महाराज संश्रामं समपद्यत । लोकक्षयकरो रीक्षो
 भीष्मस्य सह सोमकैः ॥ १ ॥ गांगेयो रथिनां श्रेष्ठः पांडवगामनीकिनीमः व्यधमानि
 शिखेर्वागैः शतशोयसहस्रशः ॥ २ ॥ संममर्षच्च तत्तत्सैन्यं पितादेवप्रतलव । घातवाना
 मिव लूनानां प्रकरंगोगणात् ॥ ३ ॥ धृष्टयुम्नः शिखण्डीच विराटो द्रुपदस्तथा । भीष्म
 मास्ताय समरे शरैर्जैः नृमहारायम् ॥ ४ ॥ धृष्टयुम्नं ततो विध्वा विराटच्च शरैर्बलिभिः ।
 द्रुपदस्य च नाराचं प्रेषयामास भारत ॥ ५ ॥ तेन विद्धा महेष्वासा मोक्षेणा नित्र
 कर्षिणा । चुक्रुधुः समरे राजन् पादरूपप्राङ्घोरगाः ॥ ६ ॥ शिखडीति च विध्वाय भरता
 मापित्यमहं । स्त्रीमयं मंतसाध्यात्वा नास्मै प्राहरद्व्युत ॥ ७ ॥ धृष्टयुम्नस्तु समरेक्रोधे
 नागिनरिवज्वलन् । पितामहं त्रिभिर्वागैर्वाह्वोरुसि चार्पयत् ॥ ८ ॥ द्रुपदः पञ्चविंश

अध्याय १०४ ॥

सञ्जय बोले कि हे राजा मध्याह्न के समय सोमकोंसे भीष्मजी का युद्ध
 प्रसंग हुआ वह महायोर युद्ध लोकों के नाशका करने वाला भयंकर रूप था।
 रथियों में श्रेष्ठ गंगापुत्र भीष्मजी ने अपने साक्ष्य बाणों से पांडवों की हजारों
 सेनाओं को तितरिबितर कर दिया और ऐसा मर्दन किया जैसे कि कैंलों का समूह
 बहुत से कटे हुए नाज के ढेरको कर देता है, धृष्टयुम्न शिखण्डी विराट् और द्रुपद
 ने युद्ध में महारथी भीष्मको पाकर बाणों से घायल कर दिया इस के पीछे भीष्म
 ने धृष्टयुम्न को घायल कर तीन बाणों से विराट् को व्यथित करते हुए द्रुपद के
 ऊपर नाराचको चलाया । ५ । तब तो उस भीष्म से घायल शत्रुदृष्टना बड़े धनुषधारी
 चरण से झुये हुए तर्प रूप क्रोधयुक्त शिखण्डी ने उस भरतपेशियों के पितामह भीष्मजी
 को घायल किया और उस अजेयने उक्तो स्त्री व्यथान करके इसपर मदार नहीं किया
 फिर क्रोध रूप धृष्टयुम्न ने अपने तीन बाणों से पितामहकी छाती और भुजाओं पर
 घायल किया द्रुपद ने पञ्चीस बाणसे विराट् ने दश बाणों से और शिखण्डी ने

CHAPTER CIV

"At midday," said Sanjaya to Dhritrashtra, "Bhishm fought against the Somaks. That severe battle was destructive of the world and dreadful in the extreme. Ganga's son Bhishm the best of charioteers dispersed thousands of the Pandav charioteers with his sharp arrows and trampled them down as a herd of oxen does a heap of cut corn. Dhrishtadyumna, Shikhandi, Virat and Drupad met brave Bhishm in battle and wounded him with their arrows. Having wounded Dhrishtadyumna, Bhishm pierced Virat with three arrows and discharged an arrow at Drupad. 5. Wounded by Bhishm Shikhandi the great archer and destroyer of foes, enraged like a serpent trodden under foot, wounded Bhishm the grandfather of the Bharatas; but the invincible one, knowing him to be a woman, did not discharge at him his weapons in return. Then Dhrishtadyumna,

एषा विराटोदशभि शरैः । शिखंडीपञ्च त्रिशत्याभीष्मं विज्याधसायकैः । ९ ॥ सोति
 विद्धो महाराज शोणितोवपरिप्लुतः । घसन्ते पुष्पशवलो रक्ताशोक इयावमौ ॥१०॥
 तान् प्रत्यविष्यद् गात्रेयस्त्रिभिस्त्रिभिरजिह्वनैः । द्रुपदस्य च भस्तेन धनुश्चिच्छेदमा-
 रिष ॥ ११ ॥ सौन्यत्कार्मुकमादाय भीष्मं विज्याधपञ्चभिः । सारथिञ्च त्रिभिर्घातै
 निशिनैरपमूर्धनि ॥ १२ ॥ तथा भीमो महाराज द्रौपद्याः पञ्चचात्मजाः । केकया
 घ्रातरं पञ्च सात्यकिश्चैव सात्वतः ॥ १३ ॥ जभ्यद्भवन्त गात्रेयं युधिष्ठिरपुरोगमाः ।
 त्रिरक्षिपतः पाञ्चाल्यं धृष्टद्युम्नपुरोगमा ॥ १४ ॥ तथैव तायकाः सर्वे भीष्मर
 क्षार्थमुद्यताः । प्रत्युद्युः पाण्डुसेनां सहसैः यानराधिर ॥ १५ ॥ तत्रासीत् सुमहमुद्धं
 तव तेषाञ्च संकुलम् । नराश्वरयतामानां यमराष्ट्रनिवर्धनम् ॥ १६ ॥ रथी रथिनमा
 साद्य प्राहिणाद्यमसादनम् । तथैतरान् समासाद्य नरनागाश्वसादिनः ॥ १७ ॥ अनयद्

पश्चीम शायकों से भीष्मजी को घायल किया, फिर अत्यन्त घायल रुधिर भरे
 शरीरसे वह पितामह ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि वनन्तऋतु में फूला हुआ लाल
 अशोक होता है । १० । इसके पीछे गंगापुत्र भीष्मजीने सीधे चलने वाले तीन १
 बाणों से उन सबको घायल किया और भस्म से द्रुपद के धनुष को काटा, फिर
 द्रुपद ने दमरे धनुष को लेकर पांच बाणों से उनके शिरको घायल किया और
 अत्यन्त तीक्ष्ण तीन बाणों से मारथी को व्यथित किया, इसी प्रकार ने भीमसेन
 व द्रौपदी के पांचों भाई केकय व यादव सात्यकी जिन में अग्रगामी युधिष्ठिर थे
 और पांचाछ जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न था रत्ना पूर्वक यह सब लोग भीष्मजी
 के सम्मुख दौड़े । १२ । हे राजा इसी प्रकार से आप के शरवीर भीष्मजीकी रत्ना
 के लिये उष्य करने वाली सेनाओं समेन पांडवों सेनाके सम्मुख गये वहां आपके
 और पांडवोंके मनुष्य घोड़े हाथी सवार और रथोंका बड़ा भारी युद्ध हुआ वहयुद्ध

much enraged, wounded Bhishm in the breast and arms with three
 arrows. Drupad wounded him with twentyfive arrows, Vnat with
 ten and Shikhandi with twentyfive. Much wounded and reeking in
 blood, the grandfather looked glorious like the blooming ashok
 tree in Spring. 10. Then Bhishm the son of Ganga wounded them
 with three arrows each and cut down the bow of Drupad with one.
 Taking up another bow, Drupad wounded him in the head with five
 sharp arrows and with three more arrows of exceeding sharpness
 wounded his driver. In the same manner, Bhimisen, the five sons of
 Draupadi, the five Kailaya brothers and Satyaki the Yadav, all led
 by Yudhishtir, and the Panchals headed by Dhrishtadyumna, well
 protected, rushed against Bhishm. 15. In the same manner, O King,
 your warriors with the armies, trying to protect Bhishm, encountered
 the Pandav armies. Your men and those of the Pandavas, mounted
 on horses, elephants and chariots, fought very bravely. That battle

परलोककाय शरैः सन्नतपर्वभिः । शरैश्च विविधैर्वीरैस्तत्र तत्र विशाम्पते ॥ १८ ॥
 रथास्तु रथिभिर्हीना इतसारथयस्तथा । विप्रदुताश्च समरे दिशो जग्मुः समन्ततः १९ ॥
 मृदन्तस्तेनराजराजन् हयांश्च सुबहून्रणे । चातायमानाहृदयन्ते गन्धर्वाणामपमाः २० ॥
 रथिनश्च रथिर्हीना धर्मिणलेजसा युताः । कुण्डलोष्णीपिणः सर्वे निष्काङ्गदधिभूषणाः
 ॥ २१ ॥ देवपुत्रसमाः सर्वे शौर्ये शक्रसना युधि । ऋद्धया वैश्रवणश्चाति नयेनच
 बृहस्पतिम् ॥ २२ ॥ सर्वे लोकेश्वराः शरास्तत्र तत्र विशाम्पते । विप्रदुता व्यहृदयन्त
 प्राकृताश्च शतवाः ॥ २३ ॥ दन्तिनश्च नरश्रेष्ठ हीनाः परमसादिभिः । मृदन्तः
 स्वान्यनीकानि निपेतुः सर्वशब्दगाः ॥ २४ ॥ धर्मभिश्चानैरथिभिः पताकाभिश्चमारिष ।
 छत्रैः सितैर्हमर्द्धैश्चासुरैश्च समन्तत ॥ २५ ॥ विशीर्षाविप्रधावन्तो हृदयन्तेस्मदिशोदश ।

भीष्मराजके पुरकी दृष्टिका करने वाला था नहां रथीने रथी को यमलोकमें भेजा
 और अन्य मनुष्योंने हाथी घोड़े और रथों को सम्पूर्ण पाकर गुप्त ग्रन्थीवाले वाणों
 से परलोक को पहुँचाया हे राजा जहाँ तहाँ नाना प्रकारके धोरवाणोंसे रथी रथोंसे
 हीन हुएजय सारथी भी मारिगये तत्र चारों ओर को भागगये हे राजा युद्धमें गंधर्व
 नगरके समान बहुत से घोड़े मनुष्योंको खूदते मर्दन करते भागते हुए दृष्टपड़े । २० ।
 और रथी रथियोंसेहीन कवचधारी और तेजयुक्त कुंडल मंटीलक्षण और वाज्रयुद्ध
 आदि भूषण धारी, सब देवकुमारों के समान और युद्धमें बलसे इन्द्र के समान धनसे
 कुंभर को और चित्तसे बृहस्पति को भी उल्लंघन करने वाले, सब संसारके शूरवीर-
 राजा जहाँ तहाँ ऐसे भागे हुए दृष्टपड़े जैसे कि साधारण मनुष्य होते हैं, हे नरोत्तम
 हाथी अपने श्रेष्ठ सवारों से हीन अपनी सेनाओं को मर्दन करते हुए सब शब्दों के
 पीछे चलने वाले दौड़े, हे श्रेष्ठ ढाल चमर पताका सुन्दर मुनहरी दण्डवाले क्षत्रा-
 दिक । २६ । चारों ओर भागे हुएों के साथ दशों दिशाओं को दौड़नेहुए दृष्टपड़े

caused much increase in the population of the region of Yam. Chariot-
 eers sent charioteers to the abode of Yam and others, encountering
 elephants, horses and chariots, sent them to the other world. With
 dreadful arrows of different sorts the charioteers were deprived of
 chariots and drivers and ran away in all directions. As in the city
 of gandharvas, many horses were to be seen running and trampling
 men. 20. Charioteers, destitute of chariots, decked with armours, bright
 carriages, turbans, arrows, armlets and other ornaments, like the sons
 of gods, full of prowess like Indra, wealthier than Kuyer and more
 magnanimous-minded than Vrihaspati, the warriors and princes of
 the world were seen running hither and thither like ordinary
 men. The elephants, O best of men, deprived of their riders ran
 away shrieking and trampling their own men. Shields, fly flappers,
 banners and shades with golden handles were seen as if running
 along with those who fled. Elephants huge as clouds, were seen as

नवमेवप्रतीकाशा जलदोपग्नि स्वना ॥ २६ ॥ तथैवदन्तिभिर्हीना गजारोहा विशा
 म्पते । प्रधावन्तो न्वदश्यन्त तव तेगन्धु सकुले ॥ २७ ॥ नानादेशमुत्थाध तुरगान्हे
 मभूषितान् । धानायानानद्राक्ष शतशोयसहस्रश ॥ २८ ॥ अश्वाराहान् हतैरश्वैर्युं
 हीतासीन् समन्तत । द्रवमाणानपद्रयाम प्राव्यमाणार्दच संयुगे ॥ २९ ॥ गजो गज
 समासाय द्रवमाण महाहवे । ययौप्रमूद्य तरसायादातान् धाञ्जिनस्तथा ॥ ३० ॥ तथैव
 च रथान् राजन् प्रममर्हणे गज । रथाश्चैव समासाय पतितस्तुरगान् भुधि ॥ ३१ ॥
 प्यमृद्मन् समरे राजस्तुरङ्गादच नरानरणे । एव ते वधुधा राजन् प्रत्यमृद्मन्परस्परम्
 ॥ ३२ ॥ तस्मिन् रौद्रे तथा युद्धे पर्यमाने महामये । प्रावर्त्तत नदी घोरा शोषिता
 प्रतरङ्गिणी ॥ ३३ ॥ अस्थिसंघातसम्वाधा केशशैबलशाहला । रघुहृदा शरावर्षाहव
 मीना दुपसदा ॥ ३४ ॥ शोर्षापलतमाकीर्णा हस्तिप्राहसमाकुला । कवचोष्णीपफेनीया

वादलके रूप हाथी घन कीसी गर्जना करने वाले विदितहुए, हेराजा इसी प्रकार
 उस तुमुल युद्धमें आपके और पांडवों के हाथियों के सवार हाथियों से रहित दौड़ते
 दृष्टिगोचर हुए, नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होने वाले सुवर्णिग भूषणों से अलंकृत
 हजारों घोड़ों को भी भागता हुआ देखा, घोड़ों के मरने से चारों ओर को हाथ में
 खड्ग लिये भागेरुए घेड़ोंके सवारों को देखा, उती बड़े युद्धमें भागतेहुए हाथी
 को पाकर हाथी बड़ी तीव्रता-युक्त पदातियों को और घोड़ों को मर्दन करता
 हुआ गया ॥३०॥ इसी प्रकार हाथीने रथियोंको और पृथ्वी पर पड़े हुए रथी और
 घोड़ोंको पाकर घोड़ों ने मनुष्यों को मर्द । किया और बहुतसोंने परस्पर में मर्दन
 किया इस प्रकार उस भयानक युद्धमें रुधिर की महा अर्थकर नदीभी वर्तमान देखी
 खड्ग रथों से गंरेहुए केदारूप होवाल रथरूपहृद बाणरूप चक्र घोड़े रूप मछलि-
 या रथने वाली दुष्प्रत्य विररूप पत्यरोंने व्याप्त हाथी रूप ग्राहोंसे न्याकुल और
 कवच मंडील रूपके फेनीये भरी धनुष रूप वेग खड्ग रूपी कछुए रखने वाली,

if running along with those who fled Elephants, huge as clouds, were
 seen scampering with their thunder like strokes. In the same manner,
 O king the elephant riders belonging to both the armies, were seen
 running away without their elephants. Decked with ornaments of
 different sorts thousands of horses of different countries were to be
 seen scampering in all directions. The horsemen with swords in their
 hands were to be seen running away without horses. Elephants
 were to be seen trampling down the horse and foot 30. In the same
 manner, the elephants trampled down the chariots, the chariots
 crushed the horses and the horses crushed those on foot. Others
 crushed one another producing a dreadful river of blood on the field.
 That river, full of swords, having hair for its weeds, chariots for its
 pools arrows for eddies, horse for fish, rare heads for stones, elephants
 for crocodiles armours and turlans for foam, bones for torrent, sword

धृतराष्ट्रसिंहकृत्पा ॥ ३५ ॥ पताकापञ्जद्वाराया मयंकूलापहारिणी । कव्यादहम
 सकीर्णा यमराष्ट्रविवर्धनी ॥ ३६ ॥ तानदी क्षत्रिया शूरा रचनागहयद्भवे । प्रते
 कर्तव्यो राजन् मयं त्यक्त्वा महारथाः ॥ ३७ ॥ अपोवाहरेण भीरुः कश्मलेनामि
 सहताम् । यथा वैतरणीप्रैतान् प्रेतराजपुर प्रति ॥ ३८ ॥ प्राक्कोशत्र क्षत्रियास्तत्र हृष्टवा
 बहैरस महत् । दुर्योधनापराधेन गच्छन्ति क्षत्रियाः क्षयम् ॥ ३९ ॥ गुणवरसु मय
 द्वेष धृतराष्ट्रो जनेश्वर । कृतान् पाण्डुपुत्रेषु पापात्मा लोममाहित ॥ ४० ॥ एवमह
 चिधावाच धृष्टकेतुः परस्परम् । पाण्डवस्यसंयुक्ताः पुत्राणां ते सुदारुणाः ॥ ४१ ॥
 ता निशम्य ततो पाच सर्वं योधे रुद्राहता । भागस्त्वत् सर्वं लोकस्य पुत्रो
 दुर्योधनतव ॥ ४२ ॥ भीष्मद्रोण कृपश्चैव शल्यश्चोवाच भारत । सुधर्मगतद्वारा
 किं चिरं वृद्धयेति च ॥ ४३ ॥ तत्र प्रवृत्ते युद्धं कुरुणांपाण्डवै सह । अत्रयत्कृतं

पताका ध्वजा रूप दृत्तों से संयुक्त मृत्युक्षपी किनारे रखनेवाली नाशकारी माँस
 भरी राक्षस रूप हंता से युक्त नदी यमराज के देशकी अत्यन्त बढ़ाने वाली थी । ३५।
 हे राजा महे - शूरवीर महारथी क्षत्रियों ने भय को त्यागकर रथहाथी घोड़े रूप
 नैदागोंके द्वारा उसनदी को तरा, युद्धमें भयभीत मूर्च्छावान् मनुष्यों को ऐसेदूर
 पहुँचाया जैसे वैतरणी नदी प्रेतराजके पुरमेंतेलोंको पहुँचाती है, वहाँ क्षत्रीलोग
 उसबड़ी वनमको लेकर पुकारे कि दुर्योधन के अपराधसे क्षत्री लोगोंका नाश
 होताहै, पापात्मा लोनी राजा धृतराष्ट्रने गुणवान् पांडवों से कैसे शत्रुता करी । ४०।
 इस प्रकार पांडवों भी प्रशमा से भरेहुए आपके पुत्रों समेत सेना के अनेक प्रकार
 के भयानक शब्द परस्पर में सुनेगये, इसके पीछे सवमंसारका अपराधी आपकापुत्र
 दुर्योधन उन शूरीरों के कहेहुए वचनोंको सुनकर, भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य
 शल्य इत्यादि से दोलात्रि आपलोग अहंकार को त्यागकर युद्ध करो विलम्बवर्षों
 करनेडो, इनकेपीछे पांडवाका और कौरवोंका महाघोर भयानक युद्धजारी हुआ, हे

for to to see banne s for treas, Death for its banks and destructive
 cannibal rai shia es for its swa is, augmented the population of Yam's
 abode 35 Mighty warriors casting aside fear, crossed that river
 through the boats of elephants and chariots, and cast away the terri-
 fied and the fainting for away as the Baitarni does the dead in the
 region of Yam. Seeing that great destruction, the warriors cried out-
 "Kshatryas are being destroyed for the fault of Duryodhan What
 enmity has the sinful and avaricious Dhritrashtra contracted with
 the Pandavas?" 40. Thus eulogising the Pandavas and blaming
 your sons, the cries of your warriors were heard on all sides. Then
 the culprit of the whole world, your son Duryodhan, hearing those
 words of his warriors, addressed Bhishm, Dronacharya, Kripacharya,
 Shalya and others, saying, "Fight without selfishness Why do you
 delay?" Then there was a severe fight between the Kauravas and

राजन् सुधोरं वैशसं तदा ॥ ४४ ॥ यत्पुरा न निगृह्णासिं धार्यमाणो महात्मनिः ।
 वैचित्रवीर्यं तस्येदं फलं पश्यसुदारुणम् ॥ ४५ ॥ न हि पाण्डुसुता राजन् ससैन्याः
 सपदानुगाः । रक्षन्ति समरे प्राणान् कौरवाद्यपि संयुगे ॥ ४६ ॥ पतस्मात् कारणा
 दोरो वसन्ते स्वजनक्षयः । वैवादा पुरुषव्याघ्रं तव चापनयान्नुप ॥ ४७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वण्यणि सहकुलपुत्रे

चतुरधिकशतोऽध्यायः ॥ १०४ ॥

सञ्जय उवाच । अर्जुनस्तान् नरव्याघ्रः सुशर्मन्विचरानृपात् । अनयत् प्रेतराजस्य
 सदनं सायकैः शितैः ॥ १ ॥ सुशर्मापि ततो वाणैः पार्यं विध्याद्य संयुगे । वासुदेवश्च
 सतत्या पार्यश्च नवभिः पुनः ॥ २ ॥ तन्निवार्यं शरीरेण शकसूनुर्महादयः । सुशर्म
 णो रणे योधान् प्राहिणोद्यमसादनम् ॥ ३ ॥ ते वध्यमानाः पार्येण कालेनेव युगक्षये ।

विचित्र वीर्य के पुत्रजोपूर्व समय में महात्माओं के कहने को तुमने नहीं माना उसी
 का यह महाभयकारी फल तुम देखो हे राजा पांडव लोग सेना और सायक चलने
 वालों समेत अपने प्राणों की रक्षा नहीं करते हैं और कौरव लोग भी अपने प्राणों
 की रक्षा नहीं करते हैं, हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र इनहेटु से सूचित होता है कि यातो देव
 की इच्छा से अथवा आपके अन्याय भे मनुष्यों का भयकारी और प्रलय रूपी नाश
 वर्तमान है ४७ ॥

अध्याय १०५ ॥

संजय बोले कि पुरुषोत्तम अर्जुन ने सुशर्मा के पीछे चलनेवाले उन राजाओं
 को तीक्ष्ण वाणों से प्रेतराज के पुरको पहुंचाया, इस के पीछे सुशर्मा ने अर्जुन को
 वाणों से घायल करके वासुदेव जी को सत्तर वाणों से और अर्जुन को
 नौ वाणों से घायल किया तब इन्द्र के पुत्र महारथी अर्जुन ने अपने वाणों से
 उनको रोककर सुशर्मा के शूखीरों को यमलोक में भेजा, हे राजा जैसे कि

the Pandavas Son of Vichitravirya! you paid no attention to the
 prophecy of great men and therefore you see this dreadful fruit. The
 Pandavas with their armies and followers, O king, donot care for
 their lives nor do the Kauravas care. Thus it is seen, O best of men,
 that this destruction like that of pralaya is raging on either side
 through the will of God or through your injustice." 47.

CHAPTER CV

Best of men," said Sanjaya to Dhritrashtra, "with his sharp arrows,
 Arjun sent the attendant warriors of Susharma to the region of Yam
 Susharma wounded Arjun with nine arrows and Shree Krishna with
 seventy. Then brave Arjun the son of Indra, having checked him
 with his arrows sent his followers to the region of Yam. Like those

ध्वद्रवन्त रणे राजन् भये जते महारथाः ॥ ४ ॥ उत्सृज्य तुरगान् कैचित् रथान्
 कैश्चिच्च मारिष्य । गजानन्ये समुत्सृज्य प्रद्रवन्त त्रिशो दश ॥ ५ ॥ क्षपरे तु तदा
 द्रौप्य वीजितानगरथात्रणे । स्वरथा परया युक्ता प्राद्रवन्त विशाम्पते ॥६॥ पादाताध्यापि
 शस्त्राणि समुत्सृज्य महारणे । निरपेक्ष्वाध्यघ्रावन्त तेन तेनस्म भारत ॥७॥ वार्य्यमाणाः
 सुवह्नुशस्त्रैर्गतेन सुशर्मणा । तथान्यैः पार्थिवश्रेष्ठैर्न व्यतिष्ठन्त संयुगे ॥८॥ तद्वलं प्रद्रुतं
 दृष्ट्वा पुत्रो दुःश्र्योघनस्तव । पुरस्ङ्क्ष्य रणे भीष्मं सर्वसैन्यपुरस्कृतः ॥ ९ ॥ सर्वोद्योगेन
 महता धनञ्जयमुपाद्रवत् । त्रिगर्त्ताधिपतेरथं जीवितस्य विशाम्पते ॥१०॥ सपक्व समरे
 तस्यो क्तिरन् बहुविधाद् शरान् । भ्रातृभिः सहितः सर्वैः शेषाहि प्रद्रुता नराः ॥ ११ ॥
 तथैव पाण्डया राजन् सर्वोद्योगेन दशिताः । प्रययुः फाल्गुनार्थाय यत्रभीष्मोव्यतिष्ठत्
 ॥ १२ ॥ ज्ञापमाना रणे घोर्य्य घोरे गाण्डोचधन्वन । हाहाकारकृतोत्साहा भीष्मजग्मुः

युगके अन्त में काल से प्रेरित लोग होते हैं इनी प्रकार अर्जुन से घायल हुए
 वह महारथी युद्ध में भयभीत होकर कोई तो घोड़ों को त्यागकर कोई रथ कोई
 हाथियों को त्यागकर दशों दिशाओं में भागे । ५ । और कोई शूर रथ छोड़े
 और हाथीकोही लेकरयड़ी द्वाघ्रतामेभागे, और पदातीलोग भी उम युद्ध में शत्रुओं
 को त्यागकर अनिच्छावान् होकर जहांतहांमे भागे, उससमय मुशर्मा मनसे हारकर
 त्रिगर्त्त के राजा और अन्य बहुत से उत्तम राजाओं के रोकेने से नहीं रुकसका,
 तब आपका पुत्र दुःश्र्योघन गेना समेत उन शूरवीरों को भागता हुआ देखकर युद्ध
 में भीष्मजी को आगे करके सब सेना के आगे वड़े उपायों समेत राजा त्रिगर्त्त के
 जीवन के लिये अर्जुन के सम्मुख गया। १०। हेराजा वह युद्धमें अनेक प्रकारकेवाणों
 की वर्षा करता हुआ सभ भाइयों समेत युद्ध में वर्त्तमान रहा और शेष सब मनुष्य
 भागगये, हे राजा इसीप्रकारसे पण्डव लोग भी सब उपायों समेत अर्जुन के लिये
 कवच शस्त्र धारण किये वहांगये जहांपरकि भीष्मजी नियतथे, यह सब बीरगांडवि

who are actuated by Death at the end of the yug, those warriors
 terrified in battle, ran hither and thither leaving their horses, chariots
 and elephants. 5. Some of the warriors ran away with their cha-
 riots, horses and elephants. The foot soldiers too, leaving their arms
 in the field of battle, lost their courage and ran away in all directions.
 Then Susharma lost heart and ran away in spite of the chocking of
 Trigart and other warriors. Then your son Duryodhan, seeing the
 flight of those warriors hastened with a large army led by Bhisma to
 the rescue of the king of Trigart and encountered Arjun. 10. Show-
 ering their arrows of different sorts, Duryodhan and his brothers
 stood firmly in the field of battle. The Pandavas too, in the same
 manner, armed with weapons and armour, went there to help Arjun
 against Bhisma. All these warriors know the prowess of Arjun the

भवतिः शरैः ॥ २१ ॥ नताद् बलयोन्नादं सौमद्रः परवीरहा । हताश्वापु रथाशूणं सा
 बलुग्य महारथः ॥ २२ ॥ आरुरोह रथं तूष्णं दुर्मुखस्य विशाम्पते । द्रोणोऽधुपक्षं मित्वा
 शरैः सञ्जतपवामिः ॥ २३ ॥ सारथिञ्चास्य विभ्याथ त्वत्मानः पराक्रमी । पीड्यमानस्त
 तो राजा द्रुपदो वाहिनीमुखे ॥ २४ ॥ अयायोज्ज्वलैरश्वैः पूर्वैरमनुस्मरन् । भीमसेन-
 शतु राजानं मुहुर्त्तादिव वाहिलकम् ॥ २५ ॥ व्यद्वस्तरथं चक्रे सर्वसैन्यस्य पश्यत ।
 ससम्भ्रमो महाराज सशयं परमं गत ॥ २६ ॥ अघञ्जुत्य ततो वाहाद्वाहलीकः पुरुषो-
 त्तमः । आरुरोह रथं तूष्णं लक्ष्मणस्य महारणे ॥ २७ ॥ सात्यकिः कृतवर्माणं धारयित्वा
 महारणे । शरैर्वहुविधैः राजन्नाससाद् पितामहम् । स विभ्या गारतं पश्या निशितैर्लो-
 मवाहिभिः । नून्यन्निवरथोपस्थे विबुन्धानो महश्नुः २९ तस्यायसामर्होऽशक्तिः विक्षेपाथ

को। मारकर बड़े वेग से गर्जा इस के पीछे यह महारथी चित्रसेन मृतक घोड़ों
 के रथ से शीघ्र ही कूदकर दुर्मुख के रथ पर सवार हुआ फिर शीघ्रताकरने
 वाले पराक्रमी द्रोणाचार्य ने द्रुपद को गुनगुनी वाले बाणों से घायल करके उसके
 सारथी को भी घायल किया, फिर सेना मुखपर पीड़मान रागा द्रुपद पूर्व
 शत्रुता को स्मरण करके बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्ध से हट गया, फिर
 भीमसेन ने एक मुहुर्त्त में सय सेना के देखते हुए राजा वाहलीक को घोड़े रथ और
 सारथी से राहित कर दिया ॥ २५ ॥ तदनन्तर पुरुषोत्तम वाहलीक भवारी से उतरकर
 व्याकुल होके महा मन्देह युक्त हुआ, और शीघ्र ही लक्ष्मण के रथ पर सवार हो गया
 और सात्यकी ने कृतवर्मा को हटाकर बहुतसे बाणों के द्वारा पितामह को पाया
 और तीक्ष्ण साठ बाणों से उनको घायल कर बड़े धनुष को कंपता हुआ रथ में
 बैठा हुआ नाचता सा दृष्ट पड़ा फिर पितामहने इनहंगी बड़ी विचित्र वेगवान् नाग
 कन्या के समान शुभ सोहे की बड़ी भारी शक्ति को उस के ऊपर फेंका उस मृत्युके

roared a tremendous roar. Then brave warrior Chitrasen jumped
 down from the chariot of which the horses were dead and mounted
 that of Durmukh. Then Valliant Dronacharya of great swiftness,
 having wounded Drupad with his arrows having hidden knots,
 wounded the driver of his chariot. Being thus wounded, Prince
 Drupad the commander of the army, remembering his former enmity,
 betook himself from the field of battle by means of his swift horses.
 Then Bhimsen, within sight of all, deprived king Vahlk of horses,
 chariot and driver in a moment 25. Vahlk the best of men alighted
 from his carriage and in a state of great anxiety mounted the chariot
 of Lohshman. Satyaki pushed Kritvarma aside and showered his
 arrows at the grandfather. Having wounded him with sixty arrows,
 he was seen shaking his bow and looked as if dancing on his seat in
 the chariot. Then the grandfather hurled at him a golden spear of
 wonderful sharpness like the daughter of a Naga, made of good

समन्तत ॥ १३ ॥ ततस्ताकध्वजं शूर पाण्डवानां धरुथिनीम् । छादयामास समरे
 शरैः सशतपर्वभिः ॥ १४ ॥ एकीभूतास्ततः सर्वे कुरव सह पाण्डवैः । अमुष्यन्त
 महाराज मध्य प्राप्ते दिवाकरे ॥ १५ ॥ सात्यकिः कृतवर्माणं विध्वा पञ्चमिराशुम् ।
 क्षतिप्रदाह्वये शूरं किरन् वाणान् सहस्रशः ॥ १६ ॥ तथैव दुपदो राजा श्रेण विध्वा
 क्षिते शरे । पुनर्विन्धाद्य सप्तत्या सारथिञ्चास्य पञ्चभिः ॥ १७ ॥ भीमसेनस्तु राजान
 बाह्लीकं प्रपितामहम् । विध्वान्दन्महानाद शान्तेः इयं क्षणने ॥ १८ ॥ भास्कुनिश्चि
 सेनेन चिञ्चो बहुमिराशुम् । अतिप्रदाह्वयशूरं किरन् वाणान् सहस्रशः ॥ १९ ॥
 चित्रसेन त्रिनिषांशैर्विन्धाद्य समरं शूशम् । समागतांशौ च रणे मयाम नौ रथरोचताम
 ॥ २० ॥ यथादिवि महायोरी राजन् बुधशनैश्चरौ । तस्यास्वयन्पुरा हया सूतञ्च

धनुष्यारी के युद्ध में पराक्रम को जानते और हाशकार से उत्पन्न उरगड को न
 रखनेवाले चारों ओर से भीष्मजी के सम्मुख गये फिर तालध्वज भीष्मजी
 ने मुसप्रथी के वाणों से पांडवों की सेना को दक दिया, हे राज इतने पीछे
 आकाश के मध्यवर्ती सूर्य के होने पर सब कौरव और पांडवों में एकत्र होकर
 युद्ध मारम्भ हुआ । १५ । सात्यकी वीर कृतवर्मा को पांच वाणों से घायल करके
 हजारों बाण छोड़ता हुआ युद्ध में नियत हुआ इसी प्रकार राजा दुपद ने श्रेणा
 चार्म्य जी को तीक्ष्ण वाणों से घायल करके फिर उत्तर वाणों से घायल किया
 और पांच वाणों से उनके सारथी को व्यथित किया, फिर भीमसेन गजपादाह
 लीक और पितामह को घायल करके ऐसी महागर्जना से गर्जा जैसे विध्वंस म
 सिंह गर्जता है, चित्रसेन के बहुत वाणों से घायल अभिमन्यु ने युद्ध में चित्रसेन
 को तीन वाणोंसे अत्यन्त घायल किया फिर युद्ध में भिड़े हुए बड़े दोनों बड़े शरीर
 वाले जैसे शोभायमान हुए जैसे कि आकाश में बड़े घोर बुध और शनैश्चर शोभित
 होते हैं । २० । अबुहन्ता अभिमन्यु नौ वाणों से मृत समेत उसके चारों पोंडों

wielder of the Gandiv and with natural courage opposed Bhishm
 who with his banner of palm tree covered the Pandav armies under
 the shower of his arrows having hidden knots. When the sun had
 reached the middle of the sky O king the battle began between the
 Kauravas and the Pandavas 13 Valiant Satyaki having wounded
 Kritvarma with five arrows stood in the field of battle discharging
 thousands of arrows In the same manner Dripad wounded Lions
 charyangam and again with seven y arrows and his coachman with
 five Having wounded king Valhik and the grandfather, Bhim
 roared a loud roar as a lion does in a forest Wounded by many
 arrows of Chitrasen Abhimanyu exceedingly wounded him with
 three arrows Engaged in fighting the two warriors of huge bodies
 looked like mighty Buth and Satun in the sky 20 Having killed
 his four horses and the coachman with nine arrows, Abhimanyu

भवन्तिः शरैः ॥ २१ ॥ मनाद् बलवान्नादं सौभद्रः परवीरहा । हनाद्यागु रयातूर्णं सा
 धत्तुन्य महारथ ॥ २२ ॥ आरुरोह रथं तूर्णं कुमुक्षस्य विशाम्पते । द्रोणश्चद्रुपदं मित्या
 शरैः सन्नतपवनिः ॥ २३ ॥ सारथिञ्चास्य विध्याथ त्वरमाणः पराक्रमी । पीड्यमानस्त
 तो राजा द्रुपदो घाहिनीमुने ॥ २४ ॥ अपायाञ्जयनेरदधैः पूर्वैश्चरन्नुस्मरन् । भीमसेन-
 स्तु राजानं मुहुर्त्तादिव याहितकम् ॥ २५ ॥ व्यश्वस्तुरथं चक्रे सयमेभ्यश्च पश्यतः ।
 ससम्भ्रमो महाराज सशयं परमं गतः ॥ २६ ॥ अघञ्जुरथ ततो दाहाद्वाहलीकः पुरुयो-
 उत्तमः । आरुरोह रथं तूर्णं लक्ष्मणस्य महारणे ॥ २७ ॥ सात्यकिः कृतयर्माणं पारयित्वा
 महारणे । शरैर्बहुविधं राजन्नाससाद् पितामहम् । स विध्या गारुणं पथ्या निशितैलौ-
 मवाहिभिः । नृत्यन्निवरघोपस्थं विबुन्पानो महद्भुः २९ तस्यायसामर्होशक्तिः चिक्षेपाथ

को। मारकर बड़े वेग से गर्जा इस के पीछे वह महारथी चित्रसेन घृतक घोड़ों
 के रथ से शीघ्र ही कूदकर दुर्मुख के रथ पर सवार हुआ फिर शीघ्रताकरने
 वाले पराक्रमी द्रोणाचार्य ने द्रुपद को गुमग्रन्थी वाले बाणों से घायल करके उसके
 सारथी को भी घायल किया, फिर सेना मुजपर पीड़मान् राजा द्रुपद पूर्व
 शत्रुता को स्मरण करके बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्ध से हट गया, फिर
 भीमसेन ने एक मुहूर्त में सब सेना के देखते हुए राजा वाहलीक को घोड़े रथ और
 सारथी से रहित कर दिया ॥ २५ ॥ तदनन्तर पुरुयोत्तम बाह्लीक मवारी से उतरकर
 न्याकुल होके महा सन्देश युक्त हुआ, और शीघ्र ही वृक्ष्मण के रथ पर सवार हो गया
 और सात्यकी ने कृतवर्मा को हटाकर बहुतसे बाणों के द्वारा पितामह को घायल
 और शीघ्र साठ बाणों से जनको घायल कर बड़े धनुष को कंपता हुआ रथ में
 बैठा हुआ नाचता सा दृष्ट पड़ा फिर पितामहने सुनहरी बड़ी विचित्र वेगवान् नाग
 कन्या के समान शुभ लोहे की बड़ी भारी शक्ति को उसके ऊपर फेंका उस मृत्युके

roared a tremendous roar. Then brave warrior Chitrasen jumped
 down from the chariot of which the horses were dead and mounted
 that of Durmukh. Then Valliant Dronacharya of great swiftness,
 having wounded Drupad with his arrows having hidden knots,
 wounded the driver of his chariot. Being thus wounded, Prince
 Drupad the commander of the army, remembering his former enmity,
 betook himself from the field of battle by means of his swift horses.
 Then Bhimsen, within sight of all, deprived king Vahlik of horses,
 chariot and driver in a moment 25. Vahlik the best of men alighted
 from his carriage and in a state of great anxiety mounted the chariot
 of Lalshman. Satyaki pushed Kritvarma aside and showered his
 arrows at the grandfather. Having wounded him with sixty arrows,
 he was seen shaking his bow and looked as if dancing on his seat in
 the chariot. Then the grandfather hurled at him a golden spear of
 wonderful sharpness like the daughter of, a Naga, made, of good

पितामहः । हेमचित्रां महावेगां नागकन्योपमां शुभाम् ॥ ३० ॥ तामापतन्तीं सहसा
 मृत्युकल्पां सदुर्जयाम् । व्यंसयामास घाण्ण्यो लाघनेन महायशाः ॥ ३१ ॥ अनासाद्य
 तु घाण्ण्यै शक्तिं परमव्याख्या । न्यपतद्धरणीपृष्ठे महोल्केव महाप्रभा । ३२ ॥ घाण्ण्यं
 यस्तु ततो राजन्ध्रं शक्तिं कनकप्रभाम् । वेगवद्गृह्य चिक्षेप पितामहरथं प्रति ॥ ३३ ॥
 घाण्ण्यमुजवेगेन प्रणुजासा महाहये । अभिदुद्राव वेगेन कालरात्रियथा भरम् ॥ ३४ ॥
 तामापतन्तीं सहसा द्विधा चिच्छेद भारतः । क्षुरप्राभ्यां सुतीक्ष्णाभ्यां स व्यशील्येन
 मेदिनीम् ॥ ३५ ॥ छित्वा शक्तिन्तु गाङ्गेय मात्यकिं नचभिः शरैः । आजघानोरसि
 कुक्षः प्रहसन्प्रयुक्तशरैः ३६ तत सरथनागाभ्याः पाण्डवा पाण्डुपुर्वजाः । परिव्यरणे भीष्मं
 माधवशरणकारणात् ॥ ३७ ॥ तत प्रयवृते युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् । पाण्डवानां कुरु
 णाञ्च समरे विजयैषिणाम् ॥ ३८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मवाण्येय युद्धे
 पञ्चाधिकशतोऽध्यायः ॥ १०५ ॥

समान अस्मात् गिरती हुई शक्ति को अपने तेजसे सात्यकी ने निष्फल करा दिया । ३० । फिर वह शक्ति सात्यकी को न पाकर पृथ्वी पर गिरपड़ी इस के पीछे सुवर्ण के समान अपनी बरछी को सात्यकी ने बड़ी तीव्रतासे पितामह के रथपर फेंका उस सात्यकी की भुजाके वेग से वह शक्ति बड़ी तीव्रतासे उनके पास ऐसी गई जैसे कि मनुष्य के पास कालरात्रि आती है हे राजा उस अकस्मात् गिरती हुई तीव्र शक्ति को भीष्म जीने तीक्ष्णतुरप्रवाहों से दोखरडकरके पृथ्वीपर गिरा दिया फिर शत्रु मन्तापी गंगापुत्र भीष्मने उस शक्ति को तोड़ नौ घाणों से बहुत हँसतेहुए उसको छाती पर घायल किया तदनन्तर रथ हाथी और घोड़ों समेत सात्यकी की रक्षा के लिये पाण्डवों ने भीष्मजी को घेर लिया फिर युद्धाभिलाषी पाण्डव लो-
 गोंका और कौरवोंका रोमहर्षणकरनेवाला महाघोर युद्ध हुआ ३८ ॥

steel and very heavy; but Satyaki by his skill made useless the spear falling suddenly like Death. 30. The spear fell down on earth without touching Satyaki. Then Satyaki hurled with great force his golden spear at the grandfather. The spear leaving the powerful arm of Satyaki approached him like the night of Death; but Bhishm cut it down into two pieces with his sharp arrows. Then Bhishm the son of Ganga, destroyer of foes, having cut it down, wounded Satyaki on the breast with nine arrows smiling all the while. Then for the protection of Satyaki the Pandavas surrounded Bhishm with their chariots, elephants and horses and the Pandavas desirous of battle fought a severe fight against the Kauravas " 37.

सञ्जय उवाच । शूरा भीष्मं रणे कुशं पाण्डुर्यमिरीरुतम् । यथा मेघमहापद्म
 तपान्ते क्षिप्रि भास्करम् ॥ १ ॥ दुर्योधनो महाराज दुःशासनमभापत । एष शूरो
 महेश्वासी भीष्म-शूरनिपुणम् ॥ २ ॥ छादितः पाण्डवैः शूरैः समन्ताद्भरतर्षभ । तस्य
 कार्यं त्वया वीर रक्षणं सुमहात्मनः ॥ ३ ॥ रक्षमाणोहि समरे भीष्मोस्माकं पितामहः ।
 निहन्यात् समरे यत्तान् पाञ्चालान् पाण्डवैः सह ॥ ४ ॥ तत्र कार्यतमं सन्ये भीष्मस्यै
 धामिरक्षणम् । गोप्ता श्लेष महेश्वासी भीष्मोस्माकमहाव्रत ॥ ५ ॥ स मथान् सर्वसैन्ये
 न परिवार्य्य पितामहम् । समरे कर्म कृषाणं दुष्कर परिरक्षतु ॥ ६ ॥ स एवमुक्तः
 समरे पुत्रो दुःशासनस्य । परिवार्य्य स्थितो भीष्मं सैन्येन महता वृत्- ॥ ७ ॥ ततः
 शतसहस्राणां हयावां सुयलात्मजः । विमलप्रासहस्रानामृष्टितोमरधारिणाम् ॥ ८ ॥
 क्षिप्तानां स्वेषानां बलस्थानां पताकिनाम् । शिखितैर्युद्धकुशलं रूपेतानां नरोत्तमैः

अध्याय १०६ ॥

संजय बोले कि हे महाराज जैसे कि वर्षा ऋतुके आकाश में बादलोंमें ढके हुए सूर्य को देखते हैं इसी प्रकार युद्धमें युद्धरूप पाण्डवों से घिरे हुए भीष्मको देखकर दुर्योधन उस दुःशामन से बोला कि यह बड़ा धनुषधारी शूरो का मारने वाला भीष्म चारों ओरसे बड़े वीर पाण्डवों से घिरा हुआ है उनकी रक्षा तुम लोगोंको करनी अवश्य है, क्योंकि वह हमारा पितामह भीष्म युद्ध में पाण्डवों मनेन पांचालोंको मारेगा इस स्थानपर भीष्म जीकी रक्षा करना ही मैं बड़ा काम मानता हूँ यह बड़ा धनुष धारी महाव्रत भीष्म हमारा बड़ा भारी रक्षक है। ६। तो अपनी सबसेना समेत उस कठिन युद्ध कर्मी भीष्मकी प्रीति से रक्षा करो इस प्रकारसे बड़े भाई की आज्ञाको सुन कर आपके पुत्र दुःशासन ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी को चारों ओर से मध्य में करके रक्षित किया, फिर मुवलके पुत्र शकुनी ने बड़े बख्ख प्राप्त खड्ग तोमर धारी शुभ्रवस्त्रोंसे शोभित अर्धकार में भरे बड़े बलवान ध्वजा धारी

CHAPTER CVI

Sanjaya said, "Seeing Bhishm surrounded by the enraged Pandavas like the sun hidden by clouds, Duryodhan said to Dushasan, This great archer Bhishm the destroyer of foes is surrounded by the brave Pandavas; it is incumbent on you to protect him. Our grandfather Bhishm will slay the Pandavas and the Panchals. The protection of Bhishm is to be my highest duty at this time, for this great archer Bhishm of mighty vows is our greatest protector. 5. So with all your army and love you must protect mighty Bhishm." On hearing the command of his elder brothers, your son Dushasan surrounded Bhishm with a large army and protected him on all sides. Then Shakuni the sun Suval with a great many warriors bearing bright swords and tomars, clad in fine clothes, proud of prower, ban-

॥ ९ ॥ नकुलं सहदेवञ्च धर्मराजञ्च पाण्डवम् । न्यवारयन्नरभ्येष्टान् परियाच्यं सम-
न्ततः ॥ १० ॥ ततो दुर्योधनो राजा शराणां ह्यसादिनाम् । अयुतं प्रपयामास पांड-
वानां निवारणे ॥ ११ ॥ तैः प्रविष्टैर्महावेगैर्मगत्मद्गिरिबाह्वे । क्षुराहता धरा राजंश्चकम्पे
श्च मनाद् च ॥ १२ ॥ क्षुरशब्दम् सुमहान् वज्रिनां शुश्रुषे तदा । महावेशघनस्येष दृष्ट-
मानश्च पथते ॥ १३ ॥ उत्पतन्निश्च तैस्तत्र समुद्भूतं महद्रजः । विचाकरपथं पाप्य
च्छाद्ययामास मानकरम् ॥ १४ ॥ वेगवद्भिर्हयैस्तैस्तु क्षीभिना पाण्डवी चमूः ।
निपतन्निर्महावेगैर्हसैरिय महत्सरः ॥ १५ ॥ ह्यतांस्तैश्च शब्देन न प्राप्तायत किञ्चन ।
ततो युधिष्ठिरा राजा माद्रीपुत्री च पांडवी ॥ १६ ॥ प्रत्यघ्नंस्तरसां वेगं समरे ह्यसादि-
नाम् । उद्धृतस्य महाराज प्रावृट्कालेतिपूर्य्यनः ॥ १७ ॥ पीणमास्यामस्तु वेगं यथा
वेला महोदधेः । ततस्तं रथिनो राजन् दारैः सजतपवामिः ॥ १८ ॥ न्यश्रुन्तन्नुसमाज्ञाने

शिक्षित युद्ध में कुशल अनेक नरोत्तम वीरों के और लाखों घोड़े रथ हाथियों के
सवारों समेत मिलकर, नकुल सहदेव और धर्मराज नरोत्तम युधिष्ठिर को चारों
ओर से घेरकर रोक लिया । १० । और राजा दुर्योधन ने दश सहस्र घोड़े के
सवारोंका पूथ पांडवों के बड़े युद्ध में भेजा हे राजा वह युद्ध में गरुड़ के समान
शीघ्रगामी उन पहुंचने वाले घुड़चढ़ों से घायल पृथ्वी के कंपाने वाली शब्दों को
करते हुए वर्तमान हुए, उस समय घोड़ों के खुरों के ऐसे महा शब्द सुनेगये जैसे
कि पर्वतों में जलते हुए बांसों के बड़े वनमें शब्द होते हैं, उस भूमि में घोड़ों के
उड़लने से ऐसी पूर्य्य उड़ी जिससे कि सूर्य्य का रथ दक गया, फिर उन शीघ्रगामी
घोड़ों की सेनासे पांडवों की सेना ऐसी व्याकुल हुई जैसे कि गिरते हुए बड़े शीघ्र
गामी हंसों से तड़ाग व्यथित होना है । १५ । वहां घोड़ों के हींसनेके शब्द से कुछ
नहीं जाना गया इसके पीछे नकुल सहदेवने युद्धमें अपनेवेगसे सवारों के बड़े भारी
वेगोंको घेरोका जैसे कि वर्षाकृत्तुमें पूर्णमासीके दिन अत्यन्त उमगेहुए पूर्ण समुद्र
के जल वेगको समुद्रका किनारा रोकता है इनके पीछे इन रथियों ने गुप्तग्रन्थीवाले

nored, trained and skillful in battle, and with millions of horsemen,
elephant riders and charioteers checked Nakul, Sahadev and Dharam,
raj Yudhishtir the best of men. 10. Prince Duryodha sent
a body of a myriad horio against the Pandavas who encountered in
battle the new coming horsemen, swift as Garuda and shaking the
earth with their cries. The sounds from the hoofs of horses were
heard like the burning of a forest of bamboos on a mountain. With
the bounding of horses there arose a storm of dust hiding the sun.
The army of the Pandavas was so harrassed by the swift horsemen
as a lake is agitated with the fall of a flight of swans. 15. No other
sounds were audible above the noighing of horses. Then Nakul and
Sahadev checked the great advances of the horsemen as the shore
desists the rise of the mighty ocean on the day of the full moon. Then

छरेण वृक्षस्तद्विनाम् । ते निपेतुर्महापाज निहता वृक्षमन्विभिः ॥ १९ ॥ मार्गेरित्र महा-
 न्नाक वृक्षकम् गिरिगह्वरे । तेपि प्रासैः सुनिशितैः शरैः सप्रतपवन्भिः ॥ २० ॥ स्वह-
 स्तान्मुक्षमाङ्गानि विचरन्तो दिशो दृष्ट । अन्याहता ह्यवातोहा ऋषिनिर्मत्तवन् ॥ २१ ॥
 मत्स्यजन्तुसमाङ्गानि फलानीय महाहुमाः । ससाविनो ह्यपा राजस्तत्र तत्र निर्वृष्टः ॥
 २२ ॥ वृत्तिकाः पात्यमानाश्च प्रत्यदृश्यन्त सर्वशः । बध्वमाना ह्यवाश्वेन प्राङ्मुख
 मन्वर्हिताः ॥ २३ ॥ यथा सिंह समासाद्य मृगाः प्राणपरायणाः । पाण्डवाश्च महापाज
 शित्वा यन्महाभूधे ॥ २४ ॥ दम्भुः शंकाश्च मेरीच वाटपामासुराहवे । ततो बुभुक्षोश्चक्रे
 हीनो ह्यह्ना सैन्ध्वं पराजितम् ॥ २५ ॥ अग्रधीह भरतभेष्ट मद्राजमिदं वचः । एव
 कम्बुज्जतो भ्वेष्टो यमाभ्या सहितो रणे ॥ २६ ॥ पश्यतां धी महाबाहो सेनां प्राबलति
 प्रभो । तं वारुण महाबाहो वेलेष मकरालयम् ॥ २७ ॥ त्वं हि संभूय सेत्ययं मसङ्गवन्

बाणों से घोड़ों के सवारोंको काटा और इनके काटतेही वह सब मारकर पृथ्वीपर
 बेशे गिरपड़े । १९ । जैसे कि पहाड़ी वन में हाथियों से हाथी गिरपड़ते हैं, फिर
 इन्होंने दिशों दिशाओं में घूमते हुए अत्यन्त तीक्ष्ण प्रास और गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों
 से सवारोंको काटा, और दुधारा खड्गों से मरेहुएयोड़ों के सवारों ने शिरोंको ऐसे
 स्वायंकरदिया जैसे कि बड़ाट्टल फलों को भक्षण कर देताहै उसयुद्धमें सवारोंसेबन
 बोड़ोंका नाशहोगया फिर घायल घोड़े भयभीत और पीड़ित होकर ऐसे भागे, जैसे
 कि बाणोंको भियममभनेवालेमृग सिंहकोदेखकर महाव्याकुलता से भागते हैं, हेराजा
 इसरीतिसे पाण्डव लोगोंने सब शत्रुओं को विजय कर के शस्त्रोंको बजाया और मेरी
 बुभुक्षोशको भी बजनाया इसके पीछे राजा दुष्योधन अपनीसेनाको पराजित देखकर
 । २५ । महाहु।सीहो राजाप्रदसे कहनेलगा कि हे महाबाहो यहनकुल सहदेव समेत
 पाण्डका बहादुर राजायुधिष्ठिरयुद्धमें तुम्हारे देखतेहुए हमारी बड़ी सेनाको घायलकर
 के भगाताहै, उसको तुम ऐसेरोकी जैसे कि समुद्रको किनारा रोकताहै, सदैव आप

the charioteers cut down the horsemen with their arrows having
 hidden knots and they fell dead on the ground (19) like elephants
 struck down by elephants in a hill forest. Then wandering in all
 directions, they cut down the heads with their sharp arrows having
 hidden knots. The horsemen dropped their heads, cut down by double
 edged swords as trees drop their flowers. There was a great des-
 truction of horses and their riders in that great battle. The horses,
 wounded and terrified, scampered away as a herd of deer runs away
 for life at the sight of a lion. Thus, O king, the Pandavas having
 conquered the enemies sounded their conchs trumpets and horns. Prince
 Bhishma, finding his army vanquished, (25) in great distress said
 to the king of Madra, "Prince Yudhishtir the eldest son of Panda,
 together with Nakul and Sahadev is wounding and putting to flight
 your armies within your sight; be pleased to check him as the shore does

विक्रमः । पुत्रस्य तव तद्वाक्यं श्रुत्वा शल्य प्रतापवान् ॥ २८ ॥ स ययौ रघवशेन यत्र
 राजा युधिष्ठिरः । तदापतद्दे सहसा शल्यस्य सुमहद्वलय ॥ २९ ॥ महौघवेन संमरे
 धारयमास पाण्डवः । मद्रराजञ्च समरे धर्मराजो महारथः ॥ ३० ॥ दशभिः सायकैस्तुर्न
 मात्रघान स्तनान्तरे । मकुलः सहदेवश्च तं सप्तभिरजिह्वभिः ॥ ३१ ॥ मद्रराजोपि तान्
 सर्वानाजघान त्रिमिस्त्रिभिः । युधिष्ठिरं पुनः पश्या विस्वाघ निशितैः शरैः ॥ ३२ ॥
 माद्रीपुत्रौ च सम्भ्रान्तौ द्राभ्या द्राभ्यामताडयत् । ततो भीमो हावाहूर्द्धा राजा
 धमाहवे ॥ ३३ ॥ मद्रराजरथं प्राप्ते मृत्यो रास्यगतं यया । अभ्यपद्यत संग्रामे युधिष्ठिर
 मभिप्रजित् ॥ ३४ ॥ ततो युद्धं महाघोरं प्रायत्तत सुदारुणम् । अपरां दिशमास्थाय
 पतमाने दिघाकरे ॥ ३५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि शल्यधर्मराज समांगमे

पट्टधिकशतोऽध्यायः । १०६ ॥

असह्य और महावली सुनेजातेहो इसभापके पुत्र के बचनको सुनकर वह प्रतापवान्
 शल्य बहुतसे रथोंसमेत वहाँ गया जहाँकि राजायुधिष्ठिरथा वहाँ जाकर शल्यकी सेना
 अकस्मात् जाकर गिरि, तब महारथी पाण्डव धर्मराजने उसबड़ी सेनासमेत राजा मद्रके
 महावेगको रोककर वड़ी शीघ्रतापूर्वक द्रमयाणों से घायल किया, इसी प्रकार ही
 सातहीसात वाणों से नकुल सहदेवनेभी घायल किया । ३१ । फिर शल्यने भी उन
 सबको तीन २ वाणोंसे घायल करके बड़े तीक्ष्ण साठवाणों से राजा युधिष्ठिरको
 घायलकिया, और भ्रान्तियुक्तहोकर उन दोना नकुल सहदेवको भी दो २ वाणोंमें
 व्यथितकिया इसके अनन्तर शत्रुहन्ता महावली भीमसेन राजाको युद्ध में देखकर
 और कालके मुखमें वर्त्तमान के समान राजमद्र के आगेहुए रथको देखकर बड़ेवेग
 से उस युद्धमें राजा युधिष्ठिर के पाम जापहुँचा, उस के पीछे पाँचम और में
 नियतहोकर सूर्य के चलने पर बड़ा घोर मयानक युद्ध जारी हुआ ॥ ३५ ॥

the sea. You are reported to be the most powerful and irresistible." Hearing these words of your son, Shalya of great prowess attacked Yudhishtira with good many chariots. Shalya's army fell on him all of a sudden. Then Dharma, the mighty Pandava checked the king of Madra and his army and wounded him with ten arrows. Nakul and Sahadev wounded him with seven arrows. 31. Shalya then wounded them with three arrows each and Pandava Yudhishtira with sixty. He again in confusion wounded Nakul and Sahadev with two arrows each. Then Bhishma, the destroyer of foes, seeing the king engaged in fighting and seeing the king of Madra in his chariot coming like one fallen in the jaws of death, went to help Yudhishtira. At this time when the sun was going towards the west, a dreadful fighting began." 35

सञ्जय उवाच । ततः पिता तप कुशो निशितैः सात्यकीक्षमैः । आनघान् रणे
पापीदं सहस्रान् समन्ततः ॥१॥ भीमं द्वादशभिर्विष्वया सात्यकिं नवभिः शरैः । नकुलं
च त्रिभिर्विष्वया सहदेवञ्च सप्तभिः ॥२॥ युधिष्ठिरं द्वादशभिर्बाहुधोरसि चापयत् ।
धृष्टद्युम्नन्ततो विष्वया ननाद सुमहायुधः ॥ ३ ॥ तं द्वादशाभ्यर्मेकुलो माधवदधं त्रिभिः
शरैः । धृष्टद्युम्नञ्च सप्तत्या भीमसेनञ्च सप्तभिः ॥ ४ ॥ युधिष्ठिरं द्वादशभिः प्रत्यविष्य
तुपितामहम् । द्रोणस्तु सात्यकिं विष्वया भीमसेनमविष्यत् ॥ ५ ॥ एकैकं पञ्चभिर्बाणैः
समदण्डोपमेः शितैः । तौ च तं प्रत्यविष्येतां शिमश्रिमिरजिह्वानोः ॥ ६ ॥ तौ शरैश्च
महानानं द्रोणं ब्राह्मणमुद्भवम् । सौवीराः कितवाः प्राच्याः प्रतीच्योर्दीच्यमालवाः
॥ ७ ॥ अश्रीपादाः शरसेनाः शिवयोधयसातयः । संग्रामे नाजहुर्मूर्ध्नि चक्ष्मणानाः
शितिः शरैः ॥ ८ ॥ तथैवाण्ये महीपालानान्देशममागताः । पाण्डवान्प्रयत्सेन्त

अध्याय १०७ ॥

संजयजीने कि प्रपुके पिता भीष्मजीने बड़े कोपमे तीक्ष्णधार के चत्तम बाणों
से सेना समेत पांडवोंको ऐसे घायल किया कि भीमसेनको बारह बाणों से सात्यकी
को नौबाणों से नकुलको तीनबाणों से और सहदेव को सातबाणों से युधिष्ठिरको
बारहबाणों से भूमा और छतीपर घायलकर धृष्टद्युम्नको व्यथितकरके बड़ेवेगसे गर्जना
की फिर नकुलने बारहबाणों से सात्यकीने तीनबाणोंसे धृष्टद्युम्नने सत्तरबाणोंसे भीमसेन
ने सातबाणोंसे । युधिष्ठिरने बारहबाणों से पितामहको घायल किया । फिर द्रोणने
सात्यकी को और भीमसेनको घायलकरके प्रत्येकको पांच तीक्ष्ण बाणोंसे व्यथित
किया और दोनोंने तीन २ बाणोंसे उन ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य को ऐसाघायल
किया जैसे कि चावकोसे बड़े दाधीको घायलकरतेहैं सौवीर कितव पूर्वी पश्चिमी और
उत्तरी मालवी, अश्रीपाद शरसेन शिवय और वशातयने युद्धमें भीष्मको घायलहोकर
भी त्याग नहीं किया । ८ । इतमपर नानाप्रकारके शस्त्रों को हाथमें रखनेवाले अनेक

CHAPIER CVII

Sanjaya said:—“Your father Bhishma in the excess of anger with very sharp arrows wounded the Pandavas and their armies. He wounded Bhimsea with nine arrows, Satyaki with nine, Nakul with three and Sahadev with seven, and having wounded Yudhishtir with twelve arrows on the breast and arms he pierced Dhrishtadyumna and roared a loud roar. Then Nakul wounded him with twelve arrows (4) Satyaki with three, Dhrishtadyumna with seventy, Bhimseen with seven and Yudhishtir with twelve. Drona wounded Satyaki and Bhimseen with five arrows each, while the latter wounded that best of Brahmans with three arrows each, as a large elephant is wounded with goads. The Sauters, the Kitiyas and the Eastern, Western and Northern Malavis did not desert Bhishma. 8. In the same manner, armed with different sorts of weapons, the princes of

विदिवायुधपाणय ॥ १ ॥ तथैव पाण्डवाराजन् परिव्रज्. पितामहम् । स समस्ताद
परि वृतो रथैर्वैरपरजित ॥ १० ॥ गहनोऽग्निर्विवोत्सृष्टः प्रज्ज्वाल दहति वराहः ।
रथाम्बुगारश्चापार्थिवसिंशक्तिगवेन्धन ॥ ११ ॥ शरस्फुल्लिङ्गो भीष्मान्निर्वाह
त्रियवैभवात् । सुवर्णपुंखैरिषुभिर्गोभेषु सृजेन्नै ॥ १२ ॥ कर्णिनालीकनाराचेस्का
धाम्नास तद्वलम् । अपातपरश्वर्जावेष रथिनश्च शितै शरैः ॥ १३ ॥ सुण्डलाढवना
नीव चकार स रथमजान् । निर्मनुष्यान् रथान् राजन् गजानम्बाञ्च संयुगे ॥ १४ ॥
भक्तोऽस्य स मदाबाहुः सर्वशस्त्रप्रतापवरः । तस्य ज्यातलनिर्घोषं विस्फुरितमिवाशने
॥ १५ ॥ निशङ्ग्य सर्वसूतानि समकम्पन्त मारुतः । अमोघाह्वयतन् धाणा पिङ्गुलेमरत
वैभ ॥ १६ ॥ नासज्जन्त तनुत्रेषु भीष्मचापव्युता शराः । हतवीरान् रथान् राजन्
संयुक्तान् ज्वनैर्हेयैः ॥ १७ ॥ अपद्याम महाराज द्वियमाणान् रणाजिरे । वैदिकाशि
करुणाणा सहस्राणि चतुर्दश ॥ १८ ॥ महारथा समाख्याता कुलपुत्रास्वतुल्यजः ।

देखांसि आये हुए दूसरे राजासो ग पाण्डवों के सम्मुख वर्तमान हुए, इस रीतिसे
पाण्डवोंने चारोंओर से पितामहको घेरलिया फिर अनेकरथोंसे घिरेहुए उन अज्ञेय
शत्रुओंके धनोंको आगिनके समानजलानेवाले पितामहने बड़े २ शूरवीर लशियोंको
भस्म कर दिया, और गृध्रपत्न युक्त सुन्दर सुनहरीं पुंखवाले अनेक प्रकारके नाराच
नाम बाणोंसे उससेनाकोभी टककर बड़े आसिधारवाले बाणोंसे रथियोंके समूहोंको
गिराया ॥ ११ ॥ और रथोंके समूहोंको भी मुण्ड तालवनों के समान कर दिया फिर
उस महाबाहु ने रथ हाथी घोड़ोंको भी सबारोंसे रहित कर दिया उसके शत्रुवकी
भयपचाका शब्द इन्द्र वज्रके समान शब्दायमानया उसके सुनेसे सब जीवमात्र
कम्पायमानहोतेथे और हे राजा उन आपके पितामह के बाण निष्फल नहीं गिरते
थे, हमने शीघ्रगामी घोड़ोंको मृतक शूर वीरवाले रथोंको और चंदेरी काशी और
क्रोश देशियोंके चौदहहजार मशरथी शूरवीर कुलीन युद्ध में देखके त्यागनेवालों

various lands faced the Pandavas The Pandavas surrounded the
grandfather from all sides Surrounded by innumerable chariots the
invincible grandfather destroyer of foes burnt down the hosts of
warriors as fire does forests Having covered the large army with
his beautiful gold feathered arrows of vulture quills and long shafted
ones he cut down the charioteers with his sharp edged arrows 13
He made the chariots like a forest of headless palms Then that great
warrior made the elephants, horses and chariots riderless The
sound of his bowstring rang like that of vajra and shook all the hearers
with terror The arrows of the grandfather did not fall in vain
We saw the chariots drawn by swift horses destitute of riders Four
teen thousands of the warriors of Chandri, Kashi and Krosh, of good
families and ready to die, turned back, and thousands of warriors with

अपराधितः सर्वे सुवर्णं चित्तव्रजाः ॥ १९ ॥ संग्रामे भीष्ममासाद्य स्याद्विनाश्वमि-
 चागतकम् । निमग्नाः परलोकाय सवाजित्यकुञ्जराः ॥ २० ॥ मग्नास्तोपस्कपात्र कांश्चि-
 ज्जगत्सकृद्भारत । अपश्याम महापुत्र शतशोथ सहस्रशः ॥ २१ ॥ सब्रह्मणेरेयेभ्यो
 श्वैरथिभिश्च निपातितैः । शरैः सुकवचैरिच्छन्ने पश्चिदं द्रव्यं विशाम्यते ॥ २२ ॥ गदामि
 भिन्विापलेभ्य निशितैश्च शिलीमुखैः । मनुकैर्यथासङ्गैश्च भेभ्यो मरिच ॥ २३ ॥ बाहु-
 मिः कार्मुकैः सङ्घैः शिरोभिश्च सकुण्डलैः ; तलत्रैरङ्गुलित्रैश्च ध्वजैश्च विनिपातितैः
 ॥ २४ ॥ चापैश्च बहुधाच्छिन्नैः समास्तीर्यते मेघिनी । हतारोहा गजा राजन् ह्याश्च
 ह्यसादिनः ॥ २५ ॥ न्यपतन्त गतप्राणाः शतशोथ सहस्रशः । यतमानापि ते शीघ्र-
 द्रवमाणान् महारथान् ॥ २६ ॥ नादाकनुषान् धारयितुं भीष्मबाणप्रपीडितान् । भरेण
 समधीर्येण धर्म्यमाना महाबभूवुः ॥ २७ ॥ अमज्यत महाराज न च ह्यी सह धावतः ।
 आविद्धरथनागादं पतितं ध्वजसंकुलम् ॥ २८ ॥ अनिकं पाण्डुपुत्राणां द्वाहाश्रुतमचेतनम् ।
 अजानात्र पिता पुत्रं पुत्रश्च पितरौ तथा ॥ २९ ॥ प्रियं सखायञ्चाक्रम्ये सखा वैश्वला-
 त् कृतः । विमुच्य कवचानन्ये पाण्डुपुत्रस्य सैनिकाः ॥ ३० ॥ प्रकीर्ये केद्यान् धावन्तः
 मृत्युदयन्त सर्वशः । तद्गोकुलमिवोद्धान्त मुकुभ्रातरयकवचम् ॥ ३१ ॥ इदं
 पाण्डुपुत्रस्य सैन्यमात्संस्पर्धं तदा । प्रमज्यमानं सैन्यन्तु इदं यादवमण्डनः ॥ ३२ ॥
 उवाच पार्थ भीमस्तुं निमृष्ट रथमुत्तमम् । अयं स कालः समाप्तः पार्थ यः क्वसितस्त-
 व ॥ ३३ ॥ महारास्मिन्नरथं यात्र नचेन्मोहाद्विमुह्यते । यत् पुराकथितं श्रीरथं

को मुखफेरनेवालदेव्या और हजारों वीरोंको मुनहरी ध्वजायुक्त हाथीरथ मोड़ों
 समेत भीष्मजी के हाथसे मरे हुए परलोक के निमित्त देखा । २० । इनके सिवाय
 हजारों रथोंको ऐसा देखा कि जिनके पहिये आदि अनेक रथों के अंगदूगयेये,
 और कवचों समेत गिराये हुए रथोंसमेत सबार जिन के कि बाण कवचं टूटे हुये थे
 उनको भी देखा इस युद्ध में पिताने पुत्रको पुत्र ने पिता को भी मार डाला, और
 प्रारम्भके बलसे प्रेरित मित्रने प्रिय मित्रको भी मारा फिर पादबोंकी दूसरीसेनाके
 मनुष्य कवचको उतार धारके बालोंको फैलाते हुए सबभौरको हृष्टपंडे तब पादबों
 की गौर्धों के समान पृथक् चलायमान सेना को रथकूबरके समान पीडायमान देखकर
 श्रीकृष्णजी रथको रोककर अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन यह वह समय वर्धमान
 हुआ है जो तेरा भयीहृदै । ३३ । हेनरोत्तम जो तू मोहते अज्ञान नहीं है तो अब महार

golden banners, mounted on elephants, chariots and horses, were slain by Bhishm. 20. Besides these, thousands of chariots were to be seen destitute of chariots, arrows and armour. Fathers and sons slew each other in the fury of the battle. Friends actuated by Fate, slew their friends. Another army of the Pandavas, destitute of armour, were seen running in confusion with dishevelled hair. Seeing the army of the Pandavas dispersed like a herd of cows and distressed like yoke-encumbered beasts, Shree Krishn checking the reins of the chariot horses said to Arjun:- " This is the time which you longed for. 33.

तथा समागम ॥ ३४ ॥ विराटनगरे तातसञ्जयस्य समीपत । भीष्मद्रोणमुखात्
 सर्वांश्च धार्तराष्ट्रस्य सैकिकान् ॥ ३५ ॥ सानुघ-धान् हनिष्यामि ये मां योतस्यन्ति
 संगरे । अत तत्र कुरु वांस्तथ सत्य धाक्यमरिन्दम ॥ ३६ ॥ क्षत्रधर्ममनुरधृत्य युधस्यं
 विगतञ्जर । इरुक्ता वासुदेवेन तिर्य्यसृष्टिरघोमुख ॥ ३७ ॥ आकाम इव यीमत्सु
 दिग् वचनमग्रवीत् । अथध्याना वधं कृत्या राज्य या नरफोत्तरम् ॥ ३८ ॥ दुःखानि
 धनघासे या किनु मे सुहृत भवेत् । चोदयाद्धान् यतोभीष्म करिष्ये वचनतथ ॥ ३९ ॥
 पातयिष्यामि दुधर्यं भीष्म कुरुपितामहम् । स धाश्वान् रजतप्ररयाश्चोदयामास,
 माधव ॥ ४० ॥ यतोभीष्मस्ततो राजन् दुष्प्रेक्ष्यो रदिमघानिव । ततरतत् पुनरावृत्त
 युधिष्ठिर चल महत् ॥ ४१ ॥ दृष्ट्वा पाथ महापाद् भीष्मायोद्यतमाहधे । ततो भीष्म-
 कर्णे हीर'भाई अर्जुन पूर्व समय में विराट नगरके मध्यमें उन राजाओं के मिलने में जो
 तुपने सृजय के सम्मुख कहाया कि मैं दुयाधन की सब सेनासमेत उन भीष्म
 द्रोणाचार्यको सब साथियों समेत मारुंगा जो मुझसे लड़ेंगे, हे शत्रुओंके विजय
 करनेवाले अर्जुन नू अपने उस वचनको सत्यकर, क्षत्रीधर्म को स्मरण करके दुःख
 को दूरकरके युद्धकर इसप्रकार वासुदेवजी के वचनों को सुनकर अर्जुन बहुत नम्र
 और अधोमुखहोकर निष्पृहके समान यह वचन बोला कि अवश्यरुद्ध गुरु लोगों
 को मारकर अन्त में नरकका देने वाला राज्यहो वा वनवास में दुःखहो अथवा
 अन्य मेरा कोईसा प्रयोजन सिद्धहो आपघोड़ोंको तीव्रकरके जहां भीष्म हैं वहां
 रथको लेवलिये मैं आपके वचनको करुंगा, वहां कौरवों के दुर्जय पितामह भीष्म
 जी को गिराऊंगा यह सुनतेही माधवजीने चांदी के समान श्वेत घोड़ोंको अष्टे
 प्रकारसे चलायमान किया । ४० । और जिम और को मूर्य के समान दुःख से
 देखने के योग्य बड़े प्रतापवान् भीष्मजी थे वहां पहुँचे उसके पीछे युधिष्ठिरकी वह
 बड़ी सेना भी जो उम युद्ध में भीष्म के लिये तैयारथी अर्जुन को देखकर फिर

Use your weapon, best of men, if you are not out of your mind! Do you remember, brave Arjun, what you fearfully said to Sanjaya at Virat in the midst of kings? You said that you would slay the armies of Duryodhan together with Bhishm, Drona, Arjuna and others who should come against you in battle. Fulfil your promise, Arjun, the destroyer of foes! Recall the duties of a shatriyas and fight without hesitation! Hearing the words of Vasudev, Arjun with his head downcast for bashfulness, said, "Whether the slaughter of old and respectable men lead me to the kingdom of hell, or to pangs of exile, turn the horses of my chariot to the place where Bhishm is. I shall obey your orders and shall slay in battle the invincible grandfather of the Kuruvans." At this Madhav drove swiftly the horses white as silver (16) till they reached the place where glorious Bhishm, difficult to be girded at like the sun, was stationed. Then the great army of

कुक्षेत्रे सिंहयज्ञिनदम्बुह ॥ ४२ ॥ घनघ्नपरमं शीघ्रं शरवर्षैरवाकिलत् । क्षणं स
 रयस्तस्य सहय सहस्राणि ॥ ४३ ॥ शरवर्षेण महता न प्रातायत भारत । वासुदेवस्त्य
 सम्भ्रान्तौ धैर्यमास्थाय सत्वर ॥ ४४ ॥ घोदयामास तानश्वाव धिनुन्नान् भीष्मसाय
 के । तत पाशौ धनुर्गृह्य दिव्य जलदनि स्वनम् ॥ ४५ ॥ पातयामास भीष्मस्य धनु
 श्छिद्यो शिते शरै । सच्छिन्नधन्वा कौरव्य पुनरन्यन्महद्गु ॥ ४६ ॥ निमेषान्तर
 मात्रेण सज्य चक्रे पिता तप । चकार्यचततोदोऽर्था धनुर्जलदनि स्वनम् ॥ ४७ ॥ अथा
 स्य तदापि कुदाश्चिच्छुद्ध धनुर्जुग ॥ तस्य तत्र पूजयामास लाघव शान्तना सुत ॥ ४८ ॥
 गागेयस्त्व ब्रवीष्याय धीन्वि श्रेष्ठ मरिदम् । साधुसाधु महाबाहो साधु कुन्तीमतेति
 च ॥ ४९ ॥ समाभाष्यैषमपर प्रपृष्ट रुधिर धनु । भुमोच समर भीष्म शयान् पार्य
 रयप्रति ॥ ५० ॥ अदर्शयद्वासुदेवो हययाने परं यत्नम् । मोघान् कुर्वन् शरस्तस्य

लौट्झाई तदनन्तर भिष्के समान बारम्बार गर्भना करते कौरवों में श्रेष्ठ भीष्मजी
 ने अपने बाणोंकी वर्षासेश्रीर्जुनी अर्जुनके रथको टकाटिया तब क्षणभरमेंही उसका
 घोड़े और सारथी सपेत रय, भीष्मके बाणों की वर्षा से दिखाई नहीं दिया इसके
 अनन्तर भ्रान्तीमें भरेहुए शीघ्रता करनेवासे वासुदेवर्जने धैर्यता में नियतहोकर
 उन घोड़ोंको जो कि भीष्मके बाणों से व्यथितथे अत्यन्त तीव्र किया और
 अर्जुन जे बादल के समानदिग्मधनुष को लेकर अपने तीक्ष्णबाणों से भीष्मजी के
 धनुष को काटकर पृथ्वीपर गिराया फिर धनुष टूटेहुए आपके पिता ने निमेषमात्र
 मेंही दूसरे धनुषको तैयार किया और उस बादल के समान शब्दायमान धनुषको
 अपनी दोनों भुजाओं से खेंचो, फिर अर्जुन ने उन के उस धनुषको भी काटा
 शन्ननु के पुत्र भीष्म ने उसकी उस हस्तलाघवता की बड़ी प्रशंसा करी कि हे
 महाबाहु कुन्ती के पुत्र बहुत अच्छा बहुत अच्छा इस प्रकार की वार्त्ता करके दूसरे
 उत्तम धनुष को लेकर बाणों को अर्जुन के रथपर फेंका वहां वासुदेव जीने घोड़ों
 के चलाने में अपने बड़े दनको दिखाया । ५० । फिर भीष्म के बाणों में घायल

of Yudhishtir, ready for the encounter of Bhishm, came back at the
 sight of Arjun. Then roaring like a lion, Bhishm the best of the
 Kauravas, hid Arjun's chariot with the shower of his arrows. The
 chariot together with the horses and driver was quite out of sight
 by the shower of Bhishma's arrows. Vasudev who was confused for
 a short time with the fury of the onslaught, recollected himself and
 drove swiftly the horses which were wounded by Bhishma's arrows.
 Arjun took up his divine bow like a cloud and with his sharp arrows
 cut down the bow of Bhishm. The latter soon prepared another bow
 and drew it with both arms with a sound like thunder. Arjun cut
 down this second bow also. Bhishm praised the dexterity of Arjun's
 hand, saying 'Good, brave son of Kunti, good!' Thus saying he
 prepared another bow and discharged arrows at the chariot of Arjun.

महद्वलानि निर्वशयन् ॥ ५१ ॥ शुश्रुमाते नरन्यामौ तौ भीष्मदारविहृतौ । गोवृषाविष
 संरन्धो विषाणोऽखिबिताकितौ ॥ ५२ ॥ वासुदेवस्तु समेष्व पापस्य मृदुयुद्धताम् ।
 भीष्मश्च शरवर्षाणि ह्यङ्गत्तमनिश युधि ॥ ५३ ॥ प्रपपन्तमिवादित्यं सभ्यमासाद्य
 हेनवोः । वरात् वरात् विनिघ्नन्तं पाण्डुपुत्रस्य सैनिकान् ॥ ५४ ॥ युगान्तमिव कुर्वन्
 भीष्म भीषिद्विर वले । मामृष्यत महाबाहुर्माधवः परवारहा ॥ ५५ ॥ उत्सृज्य रजत
 प्रस्वाद् ह्यात् पापस्य मरिच । वासुदेवस्ततोयोगी प्रबस्कन्द महारयात् ॥ ५६ ॥
 जनिदुद्राव भीष्मं स भुजग्रहणोयली । प्रतोदपाणिलेजस्वी सिंहवद्विनदम्मुहुः ॥ ५७ ॥
 वारुणिव पञ्चर्षो स जगती जगदीश्वर । क्रोधताघ्रेक्षणः कृष्णो जिघांसुरमितप्रातिः
 ॥ ५८ ॥ प्रसन्त इव चेतांसि तावकानां महाहवे । इष्या माधवमाक्रन्दे भीष्मायोधत

वर दोनों नरोत्तम उनके बाणों को निष्फल करते मंडलोंको दिखाते हुए ऐसे
 भीमायमान हुए, जैसे कि सींगों के महारोंसे छिन्नभिन्न चिह्नित किये हुए वृषभ
 होते हैं, फिर वासुदेव जीने भर्जुन के मृदु युद्धको और पांडवों की सेनापर बड़ी
 तीव्रता से बाणों की वर्षा करते और दोनों सेनाओं के मध्यवर्ती सूर्य के
 समान तपते और पांडवों के बड़े २ शूरवीरों को मारतेहुए युधिष्ठिर की सेना
 में मलय मचाते भीष्मको देखकर, समा न करने वाले शत्रुहृता माधव वासुदेव
 जी भर्जुन के श्वेत घोड़ों को छोड़कर बड़े रथसे उतर शय में चावुक लिये
 सिंह के समान बारंबार गर्जते चरणों से पृथ्वी को विदर्षि करते क्रोध से रक्तनेत्र
 किये मारने के उत्सुक भापके शूरवीरों को भयभीत करते बड़े तेजस्वी जगत्कर्ता
 बड़े वेगसे भीष्मके सम्मुख गये । ५७ । हेराजा भीष्मजी के सम्मुख वर्तमान
 माधवजी को देखकर उस युद्ध में जहां तहां भयभीत लोग देखी २ वार्त्ता करने
 लगे कि भीष्म मारागया मारागया पीताम्बरधारी नीलमणि के समान रंगवाले

Then Vasudev showed his skill in driving the horses. 50. Wounded by
 the arrows of Bhishm, the two best of men made his arrows futile,
 and performing circular movements they looked beautiful like strong
 oxen wounded by horns. Vasudev noticed the mild fighting of Arjun
 as well as the fast shower of arrows over the Pandav armies sent forth
 by Bhishm who standing in the midst of the two armies diffused heat
 like the sun, slaying the great warrior of the Pandavas and spreading
 destruction through the armies of Yudhishtir. At this the unforgiv-
 ing destroyer of enemies, Madhav gave up the reins of Arjun's
 white horses and alighting from the huge chariot whip in hand
 rushed towards Bhishm. Roaring like a lion, breaking the earth un-
 der his feet, with eyes red in anger wishing to slay and terrifying your
 warriors, glorious creator of the world faced Bhishm. 57. Seeing
 Madhav face to face with Bhishm, the terrified people in the field of
 battle cried out, "Bhishm is slain, Beishm is slain." Running

मतिके ॥ ५९ ॥ हतो भीष्मो हतो भीष्मस्तत्र तत्र पचो महत् । अश्रयत महाराज
वासुदेवमया सदा ॥ ६० ॥ पीतकौशेयस्त्रयीतोमणिदयामो जनार्दन । शुशुभे चित्रवन्
भीष्म विभुन्मालीपयापुद्ग ॥ ६१ ॥ ससिंह इव मातङ्ग य्यर्षमर्षमर्षमर्ष । अमिदुद्राय
चेगेन त्रिनन्द थाड्वर्षम ॥ ६२ ॥ तमापतन्त सम्प्रेष्य पुण्डरीकाक्षमाहवे । ससन्धम
रणे भीष्मो विचकर्ष महरुनु ॥ ६३ ॥ उवाच चैव गोविन्दमसम्भ्रान्तेन चेतसा ।
पहोहि पुण्डरीकाक्ष देवदेव नमास्तुते ॥ ६४ ॥ मामद्य मात्वतश्रेष्ठ पानयस्व महाहवे ।
त्वया हि देव सशामं हतस्थायि ममानत्र ॥ ६५ ॥ श्रेय एव पर वृष्णलोके भवति
भवति । सम्भावितोस्मि गोविन्द भूलोक्ये नायस्युगे ॥ ६६ ॥ प्रहरस्व यथेष्टं व दासो
स्मि तव चानय । अन्यगेष तत पार्थ समभिटुष्य केशवम् ॥ ६७ ॥ निजग्राह
महाबाहुवाहुभ्या परिगृह्यथं । निगृह्यमाण पाथेन कृष्णो राजीव लोचन ॥ ६८ ॥ ज

जनार्दनभी भीष्मकी ओर दौड़ने हुए ऐमे श्रीभायमान हुए जैसे कि विद्युतरूपमाला
धारी रादल होता है और जैसे कि सप्तका स्वामी सिंह उत्तमहाधी की ओर दौ-
ड़ता है उसी प्रकार यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी गर्जना करते तीव्रता से भीष्मके सम्मुख
गये, युद्धमें आतेहुएउन कमलदललोचन को देखकरभीष्मने सावधान चित्त होकरबड़े
धनुषको खिचकर । ६२ । बड़ी स्थिरचित्तता से उनकोहाथ जोडकर कहा है पुंडरीकाक्षजी
आपआइये हे देवदेव आपकी नमस्कार है हे यादवेन्द्र अथ सुभको आपदम महायुद्ध
में गिराओ, हे निष्पाप श्रीकृष्णजी युद्धमें आपके हाथमें सुम्मारहुएवाभी सत्र
ओरमें बड़ा कल्याण होता है, हे गोविन्दजी अदम्य युद्ध में तीनों लोक से प्रतिष्ठा
पाया गया हूं । ६५ । हे निष्पाप मैं आपका निरस्त-देह दामह आप इच्छाके समान
प्रहार करो, इसके अनन्तर पीछे २ जाने वाले अर्जुन ने केशवजी के पासजाकर
अपनी दोनों भुजों में उन महाबाहुको ढावकर पकड़ लिया, अर्जुन में
पकड़े हुए कमल लोचन पुष्पोत्तम श्रीकृष्णजी इसको लेकर बड़ी तीव्रता में

towards Bhishma, Janardan in his yellow clothes looked glorious like
a cloud garlanded with lightning Shree Krishna the best of the
Yadavas rushed upon Bhishma with loud roars as the king of beasts, lion
rushes upon a huge elephant Seeing the lotus eyed one coming
towards him, Bhishma carefully drew up his bow (62) and with a
composed mind thus addressed him with joined palms, 'Welcome
Pundarikash ! I bow to you god of gods ! Kill me in the field of
battle best of Yadavas ! killed by you, unless Shree Krishna, I shall
attain great glory. I am respected by the three worlds, Govind 63.
I am surely your slave, unless one Discharge your weapon as you
like ' Arjun who followed the footsteps of Krishna, approached in
the meanwhile and caught him in both his arms Held fast by
Arjun, the lotus eyed Krishna, best of male beings rushed along with

गामे वैनमादाय ज्ञेयेन पुरुषोत्तमः । पार्थस्तु विष्टुश्च घलाचरणौ परवीरहा ॥ ६९ ॥
 निजप्राह हृषीकेश कथं चिदशमे पदे । ततएवमुवाचासौः क्रोधपर्यां कुलेश्वरम् ७०
 निःश्वसन्तं यथा नागमज्जनः प्रणयारसखा । निवर्त्तस्व महाबाहो मानृतं कर्तुमर्हसि ७१ ॥
 यत्त्वया कथितं पूर्वं न योतस्यामीति केशव । मिथ्यावादीति लोकास्त्वां कथं विष्पन्ति
 माधव ॥ ७२ ॥ ममैव भारः सर्वो हि हनिष्यामि पितामहम् । शपे केशव शस्त्रेण सत्येन
 सुकृतेन च ॥ ७३ ॥ अन्तं यथा गमिष्यामि शत्रुणां शत्रुसदनम् । अथैव पश्य दुर्धरं
 पात्यमानं महारथम् ॥ ७४ ॥ तारापतिमिवापूष्णमन्तकाले यदृच्छया । माधवस्तु बभूवः
 श्रुत्वा फाल्गुनस्य महात्मनः ॥ ७५ ॥ अकिञ्चिदुक्त्वा सक्रोध आरुरोह रथं पुनः । ती
 रथस्थौ नरव्याघ्रौ भीष्मः शान्तनवः पुनः ॥ ७६ ॥ यवर्षे शरवर्षेण मेघो ब्रूयाथा यथा-
 च्छली । प्राणानां वक्ष्ये योधानां पितां देवप्रतस्तथ ॥ ७७ ॥ गमामिभिरिवा दित्यस्तेजां

चले, फिर शत्रुओं के वीरों के मारने वाले अर्जुन ने बड़े बलसे किसी प्रकार
 करके दशवैदी चरण पर दोनों चरणों को पकड़ लिया, तदनन्तर पीड़ामान
 सुखा अर्जुन उन क्रोधसे व्याकुल सर्पके समान झाम लेने वाले श्रीकृष्ण जैसे
 यह वचन बोला । ७० । हे महाबाहु कीकृष्णजी आपलौटिये और अपने उस
 वचनको और सत्यको न छोड़िये जो आपने कहाथा कि हमनहीं लडोगे क्योंकि हे माधव
 जो तुम ऐसा करोगे तो संसार आपको मिथ्यावादी कहेगा यह सब काम मेरा है
 मैं पितामह को माहंगा, हे केशव मैं शस्त्र सत्यता और अपने उत्तम कर्मकी
 शपथ सताहूँ कि मैं शत्रुओं को मारकर जीतूंगा आप इसी समय इस महावैजय
 भीष्मको गिराहुआ ऐसे देखोगे जैसे कि युग के अन्त प्रलय में देवइच्छा से चन्द्रमा
 गिरताहै यह सुनकर क्रोधभरे माधवजी अर्जुनसे कुछ न बोलकर रथपर सवार हुए
 । ७१ । फिर शान्तनुके पुत्र भीष्मने उनदोनों रथपर सवार नरोत्तमों पर ऐसे बाणों
 की वर्षाकरी जैसे कि पर्वत पर बादल जलको बरसाते हैं, उन आपके पिता

him in great haste. Then Arjun the de-stroyer of the warriors
 of the enemies somehow caught with great force both his feet
 at the tenth pace. Arjun in great distress thus addressed his
 enraged friend Shree Krishna who much agitated with anger breathed
 hard like a serpent 70. "Turn back, mighty Shree Krishna," said
 Arjun, "do not break your promise of remaining neutral. The
 world will call you a liar, if you will fight. It is my duty to slay
 the grandfather. I swear, O Keshav, by my arms, truth and duty
 that I shall slay and win the enemies. You will see the invincible
 Bhishma fallen like the moon at the end of the yug." Having heard
 this, enraged Madhav returned no reply to Arjun and mounted on
 the chariot. 75. Then Bhishma the son of Shantanu sent forth on the
 two best of men his shower of arrows as a cloud sends forth rain on a

सि शिशिरान्तये । यथा कुरूणां मैत्र्यानि यमञ्जु युधि पाण्डवा ॥ ५८ ॥ तथा
पाण्डवसैन्यानि यमञ्जु युधि ते पिता । हत विदुस्तस्म्याम्बु निरुत्सहा विचैतस
॥ ७९ ॥ मर्ष्यं गताभिधादितं प्रतपन्तं स्थतेजसा । तं यथ्यमागं श्रीभूमं दातदोष
सहस्रेश ॥ ८० ॥ निर्गतिस्तु न शुकुस्ते श्रीभूमममार्तिम रणे । युवांषु समरे कर्माण्य
तिमोनुपविक्रमम् ॥ ८१ ॥ द्रोणाश्चक्रु महाराज पाण्डवा मयपीडिताः । तथा
पाण्डवसैन्यानि द्राव्यमाणानिभारते । ८२ ॥ आतार नाप्यगच्छन्त गाधः पंकगता इव ।
पिपीलिकादयधुष्णा युधला बलिना रणे ॥ ८३ ॥ महारथं भारत दुष्प्रकम्प शरोधिण
प्रतपन्तं बरेन्द्रान् । श्रीभूम न शुकु प्रतिषीक्षितुंते शराचिभ्यं सूर्य्यनिघातप तम् ॥ ८४ ॥
त्रिमृदन्तस्तस्यतु पाण्डुसेनामस्तं जगामाय सहस्ररश्मिम् । ततो बलानां भ्रमकारि
ताना मनोऽबहारे प्रतिमम्बभूध ॥ ८५ ॥

इति श्री महाभारते श्रीभूमपर्वणि श्रीभूमवधपर्वणि नवमादिवमपुद्गममाहो

सप्तशतिकाशतोऽध्यायः ॥ १०७ ॥

देवत्रय ने शूरवीर लोगों के प्राणों को ऐसे लिया जैसे कि शिशिर ऋतु में सूर्य
तेजों को आकर्षण करता है, और जैसे कि पाण्डवों ने कौरवों की सेना को
छिन्नभिन्न किया उसी प्रकार आप के पिता ने भी पाण्डवों की सेना को अशुभ्य
एकरा दिया, मृतक और भागे हुए असाहसी व अचेत पाण्डवों की सेना युद्ध में अशि-
तीय भीष्मके देखने को भी ऐसे समर्थ नहीं हुई जैसे कि मध्याह्नवर्ती अपने तेजसे
तपाने वाले सूर्यको नहीं देखसक्ते । ८० । हेमहाराज भयमे तुःखी हुए पाण्डवोंने
दृष्टिको वीक्षकरी हे भरतवंशी इम प्रकार से भागी हुई पाण्डवों की सेना ने ऐसे
अगनारत्नक कोई नहीं पाया जैसे कि कीचमें फंसी हुई गौका कोई रत्नक नहीं हो-
ताई और युद्धमें वह निर्वस सेना बड़े बन्धके हाथसे चैंडियों के समान घायल
हुई । ८१ । उन महारथी दुर्नय बाणरूपी किरणरत्ननेवाले राजाओं के तपानेवाले
सूर्य की समान भीष्म के देखने को कोई समर्थ नहीं हुआ फिर सूर्य अस्तावल
को प्राप्त हुए तदनन्तर परिश्रम से यकी हुई सेनाओं के मनका विधाम हुआ अर्थात्
युद्ध समाप्त हुआ ॥ ८५ ॥

mountain Your father Devabrat took away the lives of men as the sun in Winter draws away light. Your father destroyed the armies of the Pandavas as the latter had done with the Kauravas. Dead and flying, terrified and insensible, the Pandav army was unable to gaze at Bhishma the matchless warrior like the sun at midday. 80 The terrified Pandavas looked on at the great destruction. The dispersed army of the Pandavas found no protector like a cow stuck in mud. That great and invincible charioteer, having arrows for his rays was not looked at like the sun by any warrior. Then the sun set down and the armies retired for the night. 84

सञ्जय उवाच । युधातामेव तेषाम्भु भास्वरेऽलमपागत । सन्प्रसमभवद्दे-
 वा न पश्याम तनो रणम् ॥ १ ॥ ततो युधिष्ठिरं राजा सन्ध्यां स हृद्य भारत ।
 यद्यतानञ्च भीष्मेण त्यक्त्वा भयविह्वलम् ॥ २ ॥ स्वसैन्यञ्च परावृत्त पला-
 यनपरायणम् । माभ्यञ्च युधि सख्य पीडय त महारथम् ॥ ३ ॥ सामवाध-
 जितान् दृष्ट्वा निलसादान् महारथम् । चिन्तयित्वा ततो राजाभवहारमराचयत् ॥
 ४ ॥ ततोऽवहारं यथा चक्रे राजा युधिष्ठिरं । तथैव तव सेयानामवहारा-
 ह्यभूत्तथा ॥ ५ ॥ ततोऽवहारं सैन्यानां कृत्वा तत्र महारथा । यद्यिदं त-
 कुरथेष्टसमामक्षेत्रविश्वनाहं ॥ ६ ॥ भीष्मस्य समरे कर्म चिन्तयानास्तु पाण्डवा । मा-
 भन्त तद्देशान्ति भीष्मवाणप्रपीडिता ॥ ७ ॥ भीष्मोपि समरजित्वा पाण्डवान्
 सहस्रञ्जयान् । प्रयमानस्तव सुतेर्नृमानव भारत ॥ ८ ॥ न्यविशत कुरभि-

अथ ॥ १०८ ॥

दशवैदिके युद्धका भारम्भ ।

सजयवाले कि युद्ध करते हुए सूर्य के अस्त होने के समय भयकारी संध्या
 वर्त्तमान हुई और युद्ध करना मग्य औरसे उन्मत्त हुआ, इसके पीछे राजा युधिष्ठिर
 ने स पाको देवकर और भीष्म के हाथ से घायल शस्त्रत्यागने वाली भयसे
 महाव्याकुल व शत्रुओं से घिरी भागने की इच्छा करने वाली अपनी सेना को
 जान और युद्ध में क्रोधित पीडादेनेवाले महारथी भीष्म को देव सामकों को सह
 सरहित पराजय रूप जानकर बड़ीचिन्नापूर्वक विश्रामको चाहार्इस प्रकार आपकी
 मेनाका विश्रम हुआ हे कौरवोत्तम घृतराष्ट्र फिरयुद्ध में घायल शरीरवाले महा-
 रथी वैश सेनाओंका विश्रामकरके स्थानहूए । ६ । और युद्धमें भीष्मकेकर्म को शोचते
 उन के वाणों से अत्यन्त पीडामान पाडवों ने शान्ती को नहीं पाया और चिन्ता
 से व्याकुलरहे फिरभीष्मभी पाडवों समेत सृजियोंको विजयकरके आपके पुत्रों से

CHAPTER CVIII

The tenth day Sanjaya said After the battle at sunset the scene
 in the evening was dreadful and the battle stopped in all quarters
 Seeing in the evening his army wounded by Bhishm, lying about
 arms much distressed with terror surrounded by enemies and
 ready to flight seeing as well the high-handedness and rage
 of Bhishm and finding the Souras powerless and almost van-
 quished Prince Yudhishtira with a feeling of depression gave
 orders of retreat to his army In the same manner your armies too
 went to take rest Then the wounded warriors took rest Thinking
 of Bhishm's work and much wounded by his arrows the Pandavas
 could find no rest and peace of mind Bhishm too having conquered
 the Panjavis and the Sanjyas, returned to the camping ground
 much honoured and pursued by your sons and surrounded by the

सार्धं दृष्टरूपैःसमन्ततः । ततो रात्रिः समभवत् सर्वमृतप्रमोहिनी ॥ ९ ॥ तस्मिन्
 रात्रिमुखे घोरं पाण्डवावृष्टिग्निः सह । सृष्टयाश्च दुरोधर्षा मन्त्राय समुपाविशन्
 ॥ १० ॥ आत्मनिःश्रेयसं सर्वं प्राप्तकालं महाबलाः । मन्त्रयामासुरव्यग्रा मन्त्रनिश्रय
 क्रोधिदाः ॥ ११ ॥ ततो युधिष्ठिरोराजा मन्त्रयित्वा चिरं रूप । वासुदेवं समुद्रीक्ष्यव-
 चनञ्चेवमाददे ॥ १२ ॥ कृष्ण पश्य महात्मानं भीष्मंभीमपराक्रमम् । गजं नलयनानीध
 विमृद्नन्तं घले मम ॥ १३ ॥ न चैवंनं महात्मानमुत्सहामो निरोक्षितुम् । लेलिहामानं
 सैन्येषु प्रपृष्टमिव पाथकम् ॥ १४ ॥ यथा घोरं महानागस्तक्षको वै विषोत्वणः ।
 तथा भीष्मो रणे कुक्ष्मीक्ष्णशस्त्रः प्रतापवान् ॥ १५ ॥ गृहीतचापः समरे प्रमुञ्चन्नि
 शिताञ्छरान् । शक्यो जेतुंयम-कुक्षो घञ्जपाणिश्च देवराट् ॥ १६ ॥ वरुणः पाशभृचापि
 सगदो वा धनेश्वरः । न तु भीष्म- सुसंकुद्धः शक्योजेतुं महाहवे ॥ १७ ॥ सोहमेवंगते
 पूज्य और स्तुतिमान होकर चारोंओर से प्रमत्तरूपकौरवों समेत निवासस्थान में
 वर्त्तमान हुए निसर्पीछे सबजीवोंको प्रमत्तकरने वाली रात्रि वर्त्तमानहुई उसघोररात्रिके
 प्रारंभमें दुर्जय प एडव मंजय और वृष्णीलोग सलाहकरनेके लिये बैठे। १०। उनसाव-
 धान मंत्रके निश्चयमें पंडित मवमहाबलियोंने अपनेकल्याणको विचारकिया, इसके
 पीछे राजा युधिष्ठिरने बहुत विलम्बतक विचारांशकरके वासुदेवजीको देखकर यह
 वचन कहा, कि हे श्रीकृष्णजी जैसे कि हाथी कमल के बनोंको मर्दनकरता है इसी
 प्रकारसे मेरी सेना के मर्दन करेवाले भयके उत्पन्न कर्त्ता महात्मा भीष्मको देखो,
 कि इस अत्यन्त प्रबल अग्नि के समान सेनाओं के चाटने वाले महात्मा के देखने
 को हम सब समर्थ नहीं होते हैं, जैसे कि बड़ा विष भरा तक्षक नाग होता है इसी
 प्रकारके यह युद्धमें, क्रोधिन महातेजस्वी शस्त्रधारी भीष्म हैं, युद्ध में धनुष हाथ में
 लिये तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते क्रोधरूप यमराज और घञ्जधारी इन्द्रको वा
 पाशधारी वरुण और गदाधारी कुबेर को भी विजय करना संभव है परन्तु महा
 युद्धमें क्रोध संयुक्त भीष्मजी का विजय करना महा कठिन और असंभव है, हे श्री

cheerful Kauravas. Then the night commenced giving happiness to all beings. In the early part of that dark night the Pandavas, the Srinjayas and the Vrishnis met in council. 10. Those wise warriors skilful in council thought of their welfare. Then Prince Yudhishtir after deep thought thus addressed Vasudev:—" Bhishm the terror of our armies destroys my warriors as an elephant tramples down a clump of lotuses. We are unable to look at that destroyer of armies like a burning fire. He is like a venomous snake much enraged in the field of battle. It is easy to conquer the enraged Yam discharging his sharp arrows, Indra the wielder of vajra, Varun the bearer of noose or Kuber the maze bearer; but it is very difficult to conquer the enraged Bhishma in battle. Endowed with small wisdom as I am, O Krishn, I

वृष्ण निमग्न शोकसागरे । अत्मनो बुद्धिर्दार्ढ्यल्याद् भीष्ममासाद्य सयुगे ॥ १८ ॥ वन
यास्यामि दुर्धर्ष श्रेयोवै तत्रमे गतम् । न युद्ध रोचतेवृष्ण हन्ति भीष्मो हि न सदा
॥ १९ ॥ यथा प्रज्वलित वह्निं पतद्ग्न समभिद्रवत् । एकतोमृत्युमभ्येति तथाह भीष्म
भीयिवान् ॥ २० ॥ क्षय नीतोस्मि वाष्णेय राज्यहेतो पराक्रमी । भ्रातरश्चैवमेशूरा
सायकैर्भेदशपीडिता ॥ २१ ॥ मत्कृते भ्रातृसौहार्दाद्रान्यग्रथा वन गता परिकलिष्टा
तथा कृष्णा मत्कृते मधुसूदन ॥ २२ ॥ जीवित बहुमन्यह जीवित ह्यद्य दुर्लभम् । जीवि
तस्याद्य शेषेण चरिष्ये धर्ममुत्तमम् ॥ २३ ॥ यद्वितेहमनुप्राह्यो भ्रातृभि सह केशव ।
स्वधर्मस्याविरोधेन हित व्याहर केशव ॥ २४ ॥ पच श्रुत्वा वचस्तस्य कारण्याद्बहुवि
स्तरम् । प्रत्युवाच तत कृष्णः सान्त्वयानो युधिष्ठिरम् ॥ २५ ॥ धर्मपुत्र विपादत्र मा

कृष्णजी मैं अपनी बुद्धि की अल्पज्ञता से युद्धमें ऐसी दशाके द्वारा भीष्म को पाकर
शोक समुद्र में डूनाहुआ हूँ । १८ । हे अजेय मैं वनको जाऊंगा निश्चयकरके मेरा
कल्याण वनही में वर्तमान है हे माधव मैं युद्ध को अच्छा नहीं समझताहूँ क्योंकि
भीष्मजी सदैव हमारे शरीरों को मारते है, जैसे कि पनंगपक्षी बड़ी देदीभि
अग्निकी ओर को दौडताहुआ एक साथ भस्म होता है इसी प्रकार हम अग्नि के
समान भीष्म को भी देखते है कि जो इसकी ओर को गया वही भस्महुआ
। २० । हे श्रीकृष्णजी राज्य के निमित्त पराक्रम करनेवाला मैं नाश होने में ही
हूँ और मेरेशरवीर भाई भी शायकों से अत्यन्त पीडामान है, हे मधुसूदनजी
वह मेरे भाई भायपपने की प्रीति से मेरेही कारण राज्य से अष्टहोकर वन को
गये और मेरेही कारण से द्रोपदी भी महा दुःख में पडी, मैं जीवनको बहुत मानता
हूँ वह जीवन अन्त दुःख से प्राप्त होने के योग्य है अन्त मैं शेष अवस्था से उत्तम
धर्मको करूंगा, हे केशवजी जो मैं भाइयों समेत आप का कृपापात्रहू तो अपने धर्म
की अविरोधतासे मेरे हितको करो इसप्रकार के उसके विस्तार युक्त वचनों को
सुनकर बड़ी करुणा से श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर को विस्वासित करके यह वचन

am plunged in the ocean of grief on account of Bhishm 18 I shall
go into exile, O madhu I see happiness now here but in a forest.
I donot think the war will do me any good, Madhav, for Bhishm
destroys our armies Like an insect which falls as soon as it looks upon a
burning fire, we can not look Bhishm in the face 20 I myself am nearly
dead in the attempt to win the kingdom, and my brothers too are
much wounded by arrows My brothers, O destroyer of Madhu, were
deprived of kingdom out of love for me and sent into exile It was
for my sake that Drupadi underwent great hardships I love my
life, but it is difficult to maintain it I shall therefore, live a life of virtue
the rest of my days If you are kind to me keshav, do me good as
far as it is not contradictory to the dictates of your Dharma " Hearing

कृष्याः सत्यसङ्गरः । वक्ष्यते प्रतरः शूरः बुद्ध्याः शत्रुसूचनाः ॥ २६ ॥ अर्जुनोमीम
 सैनश्च वाय्वग्निममतेजसी । मारुद्भिर्पुत्रौ च विक्रान्ता त्रिदशानामिवेश्वरी ॥ २७ ॥
 मांशापि युद्धे सौहार्दाद्योत्सुखे भीष्मेणपाण्डव । स्वतुप्रयुक्तो महाराज किं न कुर्यामहा
 हवे ॥ २८ ॥ हनिष्यामि रणे भीष्ममाह्वयं पुरुषवर्मभम् । पश्यतां धार्तराश्रुणांयदिने
 चञ्चलिकालगुनः ॥ २९ ॥ यदि भीष्मे हते वीरे जयं पश्यसि पाण्डव । हन्तास्म्येकारये
 नाथ कुरुक्षेत्रं पितामहम् ॥ ३० ॥ पश्य मे विक्रमं राजन् महेन्द्रस्यैव संयुगे । विसृ
 ष्यन्तं महास्त्राणि पातयिष्यामि तं रथात् ॥ ३१ ॥ यः शत्रुः पाण्डुपुत्राणां मरुच्छत्रुःस
 न संशयः । मर्त्या भवन्तीया ये ये मर्त्यास्तथैव ते ॥ ३२ ॥ तव भ्राता मम सखा

बोले, हे धर्म पुत्र सत्यर्मकल्प तुम व्याकुलता को भतेपरो तेरे शूरवीर दुर्जयर्षाई
 शत्रुओं के मारनेवाले हैं, अर्जुन और भीमसेन वायु और अग्नि के समान
 तेजस्वी हैं और दोनों नकुल और सहदेव देवताओं के ईश्वर भगवान्-इन्द्रके
 समान पराक्रमी हैं, हे पाण्डव तुम मुझको आज्ञा दो कि मैं भी तुम माइयों की
 प्रीति से भीष्म के साथ लड़ूंगा हेराजा युधिष्ठिर जो तुम मुझको भी युद्ध में
 मट्ट करोगे तो मैं भी जस महा युद्ध में सब कुछ करसक्ताहूँ, जो अर्जुन नहीं
 चाहता है तो मैं पुरुषोत्तम भीष्म को बुलाकर धृतराष्ट्रके पुत्रोंके देखते हुएही माहूँ
 गा, हे पाण्डव जो तू वीर भीष्म के मरनेपरही विजय देखता है तो मैं एकही रथके
 द्वाग कौरवों के वृद्ध पितामह को मारूंगा । ३० । हे राजा तुम युद्ध में महाइन्द्रके
 समान मेरे पराक्रम को देखो मैं बड़े ९ अर्क्षोंको छोड़कर उसको रथमेंगिराऊंगा,
 क्योंकि जो पाण्डवों का शत्रु है वह मेरा भी शत्रु है जो तुम्हारे निमित्त धनआदि
 हैं वह मेरे हैं और जो मेरे हैं वह तुम्हारे हैं । ३२ । आपका भाई मेरा मित्र और

In his grief in details, Shree Krishna felt much pity on Yudhishtir and thus consoled him, saying, " O son of Dharm, of true vows, be not disturbed in mind. Thy brave and invincible brothers are destroyers of enemies. Arjun and Bhimsen are glorious like Agni and Vayu, and both Nakul and Sahadev are full of prowess like Indra the chief of gods. Allow me to fight against Bhishma for your sake. I can do everything, in battle, Prince Yudhishtir, if you will engage me in fighting. I shall, if Arjun be unwilling, challenge Bhishm and shall kill him in the presence of the sons of Dwaitashtra. If, O Pandava, you see your victory in the death of Bhishm, I shall with a single chariot kill the old grandfather of the Kauravas. 30. You will see O king, my prowess like that of Indra. I shall, with mighty weapons, make him fall from his chariot, for the enemy of the Pandavas is my enemy, my prosperity lies in yours and my wealth belongs to you as well. 32. Your brother is my friend. kineman

सम्बन्धी शिष्य एव च । मांस्तान्युत्कृत्य दास्यामि फाल्गुनार्थे महीपते ॥ ३३ ॥ एष
चापि नरव्याघ्रो मत्कृते जीवित त्यजेत् । एष न सम्यस्तात तारयेम परस्परम् ॥ ३४ ॥
स मा नियुक्त्वाजेन्द्र यथायोद्धा भवाम्यहम् । प्रतिज्ञातमुपप्लव्येयसन्नपार्थेनपूर्वत
॥ ३५ ॥ घातयिष्यामि गाङ्गेय मितं लोकस्य सन्निधौ । परिरक्ष्यमिदं तव च धृत्वा पार्थस्य
घीमत ॥ ३६ ॥ अनुशातन्तु पार्थेन मया कार्थ्यनसंशय । अथ वा फाल्गुनस्यैव भार
परिमितोरणे ॥ ३७ ॥ सहनिष्यति सप्राप्ते भीष्म परपुरञ्जयम् । अशक्नोमपि कुर्व्याद्विरणे
पार्थ समुद्यत ॥ ३८ ॥ त्रिदशान्वा समुत्तान् सहितान् दैत्यदानवै । निहन्यादर्जुन
सस्ये किमुभीष्म नराधिप ॥ ३९ ॥ विपरीतो महावीर्यो गतसत्त्वोत्पज्विन । भीष्म
शान्तनयो नून कर्त्तव्य भावदुष्यते ॥ ४० ॥ युधिष्ठिर उवाच । एवमेतन्महाबाहोयथा
वदसि माधव । सर्वे ह्येतेनपर्यास्तास्तव वेगविधारणे ॥ ४१ ॥ नियत समवाप्स्यामि

सम्बन्धी होकर शिष्यभी है हे युधिष्ठिर मैं अर्जुनके निमित्त अपने मांसको भी काटकर
देसक्ता हूँ और वह नरोत्तम अर्जुन भी मेरे निमित्त जीवनको त्यागकरसक्ता
है हे तात हमारा यह नियम है कि हम परस्पर के दुःख से छूटें, सो तुम मुझको
युद्ध करने की आज्ञा दो पूर्व में जो अर्जुनने प्रतिज्ञा की है उसको पहले से चाह
रहे है सब लोक के सम्मुख गागेय भीष्म को मारुंगा उस बुद्धिमान अर्जुन का
यह वचन रत्नाकरने के योग्य है, मुझको अर्जुनका प्रण पूराकरना योग्य है यह
निस्तन्देह है कि वह शत्रुओं का विजय करनेवाला अर्जुन युद्ध में अवश्य भीष्म
को मारेगा और युद्ध में अच्छी रीति से प्रवृत्त होकर असंभव कठिन कर्मों कोभी
करेगा, यह अर्जुन युद्ध में क्रोशित होकर देवता और दैत्यों को भी मारसक्ता है
तो हे राजा भीष्म का मारना इसको कितनी बड़ी बात है, निश्चय करके महा
पराक्रमी शतनु का पुत्र भीष्म विपरीतता और निर्बलता से थोड़ी आयु रखनेवाला
होकर करने के योग्य कर्म को नहीं जानता है । ४० । युधिष्ठिर बोले हे महाराज
महाबाहु आपका यह सब कथन यथार्थही है निश्चय करके आपका वेग किसी

and pupil, I can cut as my own flesh for Arjun's sake Yudhishtir says, Arjun the best of men can lay down his life for my sake We strive to rid each other from misery allow me to fight Arjun's former promise to kill Gangeya in the presence of all warriors is worthy of respect and desirable I am bound to satisfy Arjun's desire Undoubtedly, Arjun the destroyer of foes is sure to kill Bhishma in battle and will achieve other hard and impracticable deeds When enraged in battle, Arjun can destroy the gods and demigods the destruction of Bhishma is not so very difficult Surely Shantanu's son Bhishma of great prowess does not know what to do because he is old and his life is short" 40 "You are quite right from Prince" said Yudhishtira in reply "surely your velocity

सेवप्रतयशंसितम् । यस्य मे पुरुषव्याघ्र भवान् पक्षे व्यवस्थितः ॥ ४२ ॥ सन्द्रानपि
रणे देवान् जपेय जपतां पर । त्विया नार्थेन गोविन्द किमु भीष्मं महारथम् ॥ ४३ ॥ न
तु त्वामनृतं कर्तुमुत्सहं स्वात्मगो वात् । अयुष्यजानः साहस्य यथोक्तं कुटुमाव
॥ ४४ ॥ समयस्तु कृतः कश्चिन्मम भीष्मणसंयुगे । मन्त्रयिष्यं तवार्थाय न तु योतस्ये
कथञ्चन ॥ ४५ ॥ दुर्योधनार्थं योत्स्यामि सत्यमेतदिति प्रभो । स हि राजस्य मे
दाता मन्त्रस्यैव च माधव ॥ ४६ ॥ तस्माद्देवव्रतं मृत्यो यद्योपायार्थमात्मनः । रुचताः
सहिता सर्वे प्रावाम मधुसूदन ॥ ४७ ॥ तवैव सहितागत्वा भीष्ममाशु नरोत्तमम् ।
न चिरात् सर्वं चाष्ण्य मन्त्रं पृच्छाम कौरवम् ॥ ४८ ॥ स वक्ष्यति हिनं वाक्प्यं सत्य
मस्मान् जनार्दन । यथा च वक्ष्यते कृष्ण तथा कर्तास्मिसंयुगे ॥ ४९ ॥ स नो जयस्य
दाता स्यान्मन्त्रस्य च हृदव्रतः । धालाः पित्रा विहीनाश्च तेन संवर्धिता वयम् ॥ ५० ॥

के सहने के योग्य नहीं है, इसको अपने मन की इच्छा के अनुसार मैं अवश्य प्राप्त
करूंगा जब कि आप से कृपानिधि इपारे पक्षपर लड़े हैं हे महाविजयस्वरूप
गोविन्दजी तुम से अपने नाथ के साथ होकर युद्ध में सब देवताओं सेपत इन्द्र
कोभी हम विजय करमक्ते हैं तो इन महारथी भीष्मजी का विजय करना कितनी
बातहैं मैं आपको मिथ्यावादी करना योग्य नहीं समझताहूँ हे माधवजी आप युद्ध
किये बिनाही अपने स्वाभाविक बल पुरुषार्थ से अपने वचन के अनुसार हमारी
सहायता करो, भीष्म ने मुझसे प्रणकिया है कि युद्ध में सलाह करूंगा परन्तुतेरे
अर्थ कभी न लडूंगा मैं दुर्योधन केही लिये लडूंगा इसमें सन्देह नहीं है कि
वह भीष्मजी मुझको राज्य की सलाह के देनेवाले हैं इस कारण से हम सब मिल
कर आपको साथ लेकर उनके शरीर के मारने के निमित्त उस देवव्रत के पास
चलें, हे जनार्दनजी वह हमसे हमारे अभीष्ट सत्य सत्य वचनोंको कहेंगे और जैसा
वह कहेंगे वैसाही हम युद्धमें करेंगे, वह हृद व्रत भीष्म हमारी विजय और कीर्ति
का देनेवाला होगा क्योंकि पिताकर के विहीन हमबालकों को उन्होंने ने सबकर

is unbearable. I own that on my side I have in you an ocean of kind-
ness. Invincible Govind, having you for our protector we can win
Indra and the gods; it is not difficult to conquer Bhishma. But
I would not make you break your word; for without engaging in
battle, Madhav, you can with your natural strength and prowess
help us as you have promised. Bhishma has promised to give me advice
in wartime, though he will fight for Duryodhan and not for me. No
doubt he will advise me how to gain kingdom; we shall therefore go
with you to Devabrat in order to contrive his death. He will, O Janar-
dan, tell us truly how to gain our object and we shall act upon his
advice in battle. Bhishma the observer of true vows will lead us to
victory and fame; for he brought us up from childhood when we were
fatherless. 50. I desire, Madhav, to slay my old grandfather Bhishma; are

तश्चेत्पितामहं वृद्धं हन्तुमिच्छामि माधव । पितृ पितरमिष्टञ्च धिगस्तु क्षत्रजीवि-
 काम ॥ ५१ ॥ सम्जय उवाच । ततोऽर्वाचमहाराज चाण्डेयः कुरुनन्दनम् । रोचतेमे
 महाप्राज्ञ राजेन्द्र तव भाषितम् ॥ ५२ ॥ देवव्रत कृती भीष्मः प्रक्षिंतनापि निर्दहेत् ।
 गम्भीरां स वयोपायं प्रष्टुं सागरगामुनः ॥ ५३ ॥ वस्तुमर्हति सत्यं स त्वयापृष्टो विशेष
 पतः । ते वयं तत्र गच्छामः प्रष्टुकुर्वितामहम् ॥ ५४ ॥ गत्वा शान्तनव वृद्धं मन्त्रं
 पृच्छाम भारत । स घो वासुपति मन्त्रं यं तेन योत्स्यामहे परान् ॥ ५५ ॥ एवमामन्वते
 धीराः पाण्डवाः पाण्डुपूर्वजम् । जम्बुस्तेसहिताः सर्वे वासुदेवश्च धीर्यवान् ॥ ५६ ॥
 विमुक्तशस्त्रकनका भीष्मस्य सदनं प्रति । प्रविश्य च तदा भीष्मं शिरोभिः प्रणिपेदिरे
 ॥ ५७ ॥ पूजयन्तो महाराज पाण्डवा भरतर्षभम् । प्रणम्य शिरसाच्चैनं भीष्मं शरण

से भरण पोषणकर के इतना बड़ा किया है । ५० । हे माधवजी जो मैं अपने पिता
 के भी पितावृद्ध भीष्म पितामह को मारना चाहता हूँ, ऐसे सूत्री धर्म को और
 क्षत्रियों की जीविकाको धिक्कार है, संजय वाले हे महाराज फिर श्रीकृष्णजी
 कौरवनन्दन युधिष्ठिरसे कह ने लगे कि हे बड़ेजानी राजेन्द्र तेरा कहना मुझको
 अच्छालगत्रा है शुभकर्मी देवताओं के बराबर ब्रतरखनेवाला जो दृष्टि सेभी दूसरे
 को भय कर मक्ता है उस भीष्मके पास उमी से उसके मारने का उपाय पूछने
 के निमित्त जाओ, वह तेरेपूछने पर तुझ से सत्यही सत्य कहेगा इस से हम सब
 मित्रकर उन कौरवों के पितामह के पास पूछने के हेतु चले, हे भरत वंशी हम
 वृद्ध भीष्मसे मिलकर सलाह को पूछे वह हमको जो सलाह देगा उसी के अनुसार
 हम शत्रुओंसे युद्ध करेंगे, हे पांडुके बड़े भाई धृतराष्ट्र वह वीर पांडव इस रीतिसे
 सलाह करके सबने वासुदेवजी समेत शत्रुओं से राहित होकर उस भीष्म के डेरों में
 प्रवेश करके उनको बड़ीनम्रता पूर्वक प्रणाम किया, हे राजा इसरीति से श्रीकृष्ण
 समेत पांडव लोग शिर से प्रणाम करते हुए भीष्मजीके समीप बैठने के स्थानों में

not kshatriya dharma and kshatriya life blameable?" Sanjaya continued
 "Then, O great king, Shree Krishna said to Yudhishtira the joy of
 Kauravas, " I like your idea, wise Prince. Let us go to Bhishma
 the virtuous, of true vows like gods, who can by his mere look burn
 others, in order to seek from his own lips [the manner of his death-
 Being asked by you, he will speak the truth. Let us therefore all
 go together to ask of the grandfather of the Kauravas what is to be
 done. We shall take counsel of old Bhishm, O descendant of Bharat,
 and shall act accordingly in fighting against our enemies." Thus
 having consulted together, the Pandavas together with Vasudev,
 went without arms in the tent of Bhishm and humbly bowed down
 to him. And thus bowing down with their heads, the Pandavas
 with Shree Krishna, approached the seat of Bhishm. Then brave

मभ्ययु ॥ ५८ ॥ तानुवाच । ह्यत्राहुर्मोमः कुरपितामह । स्वागत तत्र वाप्येयस्मागत-
 स्तेघनञ्जय ॥ ५९ ॥ स्वागतं धर्मपुत्राय भीमाय यमयोस्तदा । किं वा कार्यं करोम्य
 घयुष्माकं प्रीतिवर्धनम् ॥ ६० ॥ सर्वात्मनापि कर्त्तास्मि यदपि स्यात् सुदुष्करम् ।
 तथा प्रयाणं गात्रेयं प्रीतियुक्तं पुनः पुनः ॥ ६१ ॥ उवाच राजा दीनात्मा प्रीतियुक्तं मिदं
 वच- । कथं ज्ञेयं सर्वत्र कथं राज्यं लभेमहि ॥ ६२ ॥ प्रजानां संशयो न स्यात् वधं तन्मं
 यद् प्रभो । भवान् हि नो वधोपायं व्रवीतु स्वयमात्मन ॥ ६३ ॥ भयतं समरेषीर
 विपहेम कथं वचम् । न हि ते सूक्ष्ममप्यस्ति रन्ध्रे कुरपितामह ॥ ६४ ॥ मण्डलेनैव
 धनुषाद् दृश्यसे संयुगे सदा । आददानं सन्धानं विकर्षन्तं घनुर्न च ॥ ६५ ॥ पर्याग
 स्त्वां महाबाहो रथे सूर्यनिधापरम् । रथाभ्यनरनागानां हन्तारं परवीरहन् ॥ ६६ ॥ को
 योत्सहते जेतुं त्वा पुमान् भरतर्षभ । वर्धता शरवर्षाणि सयुगे वैशामं कृतम् । ६७ ॥

पहुँचे, तब वीरवों के पितामह महाबाहु भीष्मजी श्रीकृष्ण जीभे बोले कि हे कृष्ण
 आपका आना शुभदायकहो और हे अर्जुन तेराभी आना सफलहो, और युधिष्ठिर
 भीमसेन नकुल सहदेव काभी आना मंगल कारीहो यह कहकर कहा कि अब मैं
 तुम्हारी प्रीति का बढ़ाने वाला कौनसातुम्हारा शिष्टाचारकर्त्ता । ६० । मैं तुम्हारे
 दुःखसेभीकरने के योग्य हितको आत्मा से करनेको उपासित हूँ उस प्रकारकेप्रीतिपूर्वक
 चारचार वचन कहनेवाले गांगेय भीष्मजी से महादुःखीचित युधिष्ठिर बड़ी
 प्रीति में डूबकर यह वचन बोलाकि हे सर्वज्ञ हम कैसे सब को विजय करें और
 कैसे राज्यको पावें, और किमरीति से प्रजालोगों का नाशनहो हे प्रभु इस को
 हमसे कहिये और अपने भी मरण का उपाय हमको बताइये हे महावीर हम युद्धमें
 कैसे आपको सहसकें हे हमसब के पितामह आपके किमीसूक्ष्म दोषको भी हमनहीं
 जानते, तुमसद्वैव युद्ध में धनुष मंडल के साथहीदृष्ट पड़तेहो हे महाबाहु हमयोग
 आपको धनुष चढ़ाते बाणनेते स्थानते और द्वितीय सूर्यके समान रथपर सवारहोते

Bhishm the grandfather of the Kauravas thus addressed Shree Krishn— " You are welcome Shree Krishn and you too, Arjun, will gain the object of your desire Yudhishtir, Bhimsen, Nakul and Sahdev too are welcome " Then he said, "What should I do to secure your love and pleasure? 60 I am ready with all my soul to do the most difficult work for your sake." Hearing the affectionate words of Bhishm, repeated again and again, Yudhishtir, plunged in deep love said, " How, O omniscience, shall we conquer all and win our kingdom? How can we avoid bloodshed? Tell me this as well as the manner of your death. How can we bear you in battle, mighty warrior? We do not know the least weakness of yours grandfather. You are always seen circling your bow in the field of battle; we can not see you riding your chariot like a second sun

क्षय नीताहि पृतना सयुगं नहतीमम । यथा युधि जयेमत्वा यथा राज्य भूशमम । ६८ मम स-वस्य च क्षेम त म ग्रहि पितामह । ततोऽर्षीच्छान्तनय पाण्डवान् पाण्डुपूर्वज ॥ ६९ ॥ न कथञ्चन कौन्तय मधि जीवति मयुगे । जयो भवतिसर्वज्ञ सत्यमेत-प्रवीणिते । ७० ॥ निज्जिते मधि युद्धेन रणे जेष्यथ पाण्डवा । क्षिप्र मधि प्राहरष्व यदीच्छथ रणे जयम् । ७१ ॥ अनुजानामि ध पार्था प्रहरष्व यथासुखम् । एव हि सुरत मन्ये भवता विद्वितोऽहम् । ७२ ॥ हते मयि हत सर्वं तस्मादेव विधीयताम् । युधिष्ठिर उवाच । ब्रहि तस्मादुपाय नो यथा युद्ध जयेमहि ॥ ७३ ॥ भवन्त समरे क्रुद्ध वण्डहस्ताग्निवान्तकम् । शक्योवज्रधरो जेतु घरुणोथ यमस्तथा ॥ ७४ ॥ न भवान् समरे शक्य सेन्द्रैरपि सुरासुरै । भीष्म उवाच । सत्यमेत-महाबाहोयथा

हुए भीमही देख नक्ते है देशत्रुओं के बीरलोगों के मारने वाले हे रथघोड़े मनुष्यों के मारने वाले, हे भरतर्षभ अबकिसपुरुषकी सामर्थ्य है जो आपको युद्धमें विजय करके आपने अपनेबाणों की वर्षाकरके युद्धमें प्रलयमचाकरमेरीबड़ी सेनाकाना-शकियाहै अबजैसी रीतिसे हमतुमको युद्धमें विजयकरके राज्यकोपावें और मेरी सेनावचेहे पितामहवही आपको कहना योग्यहै इसके अनन्तर पाण्डुके पिताभीष्मजी सब पाण्डवोंसे बोले, कि हे सर्वज्ञ युधिष्ठिर मेरे जीवतेहुए युद्धमें जैसेकि विजय नहीं होतीहै उसको मैं तुम्ह से कहता हू ॥७०॥ हे पाण्डव लोगो युद्धमें मेरे विजय होने पर युद्धकेही द्वारा तुम शत्रुओं को विजय करोगे जो युद्ध में विजय चाहतेहो तो शीघ्रही मुझपर प्रहार करो, हेकुन्तीके पुत्रो मैं तुमको आज्ञा देनाहू तुम आनन्दसे मेरेऊपर प्रहार करोमैं इसरीति के कर्म को बहुत उत्तम मानताहू और मुझको तुम अच्छी रीति से जानतेहो कि मेरेही मरने पर शत्रुओं की सब सेना भ्रष्टही काल में मारी जायगी इसहेतु से तुम ऐसा कर्म करो, युधिष्ठिर बोले कि वह उपाय बतलाइये जिस से कि दडहाथ मे लिये मृत्यु के समान युद्धमें क्रुद्धरूप आपको

when putting arrows to your bow Destroye of the warriors chariots, horses and men of the enemy best of Bharats who can conquer you in battle? You have with the shower of your arrows, annihilated my large army, now let me know grandfather how to conquer you get the kingdom and save my armies At this Bhishm the father of Pandu thus addressd the Pandavas, I shall tell you, wise Yudhishtir, why you cannot gain victory as long as I live 70 Having conquered me in battle O Pandav, you will defeat all the enemies by fighting Lay hands on me if you desire victory I give you permission sons of kunti, to discharge cheerfully your weapons at me I approve this sort of work You know well that all the army of the enemies will be extupated soon after my death and therefore you should do it ' Tell me said Yudhishtir how we can

यत्रासि पाण्डव ॥ ७५ ॥ नाहं जेतु रणे शक्यः सैन्द्रैरपि सुरापुरैः । आत्तशस्त्रो रणे
 यत्तो गृहीतवरकामुकः ॥ ७६ ॥ ततो मां न्यस्तशस्त्रं तु एते हन्युर्महारथाः । निक्षिप्त
 शस्त्रे पतिते विमुक्तयक्षध्वज ॥ ७७ ॥ द्रवमाणे च भीते च तवास्मीति च घादिभिः ।
 स्त्रियांस्त्रीनामधेये च विकले चैकपुत्रिणि ॥ ७८ ॥ अग्रशस्ते नरे चैव न युञ्जं रोचते
 मम । इमं मे गुणुराजेन्द्र संकल्पं पूर्वचिन्तितम् ॥ ७९ ॥ अमङ्गल्यध्वजं दृष्ट्वा न
 युध्येयं कदाचन । य एष द्रौपदो राजस्तव सैन्ये महारथः ॥ ८० ॥ शिखण्डी समरा
 मर्षा शूरध्व समितिञ्जयः । ययामवच स्त्री पूर्वं पश्चात् पुंस्त्व समागतः ॥ ८१ ॥
 जानन्ति च भवन्तोपि सर्वमेतद्यथातथम् । अर्जुनः समरे शूरः पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्

विजयकरे, वज्रधारी इन्द्र वरुण कुबेर और यमराज भी विजय करने को
 योग्य हैं, परन्तु आप युद्धमें देवेन्द्र समेत देवता और असुरों से भी
 विजय करने के योग्य नहीं हैं, भीष्मजी बोले हे महाबाहु पांडव जो
 तू कहता है वह सत्यही है यथार्थ में मुझको इन्द्रसमेत देवता और असुरभी विजय
 करनेको समर्थ नहीं होसके, जोकि शस्त्रोंकाधारण करनेवाला युद्ध में कुशल उत्तम
 धनुषका खंचने वाला मैंहूँ इसहेतु से यह सब महारथीयुद्धशस्त्रों के त्यागने वालेको
 मारें, शस्त्र त्यागने वाले पृथ्वी पर पड़े कवच और ध्वजासे रहित भागेहुए भयभीत
 और शरणमें आयेहुए वा सृकिके समान नाम रखने वाले व्याकुल वा एक पुत्र वाले
 से अथवा नीच मनुष्य के साथ युद्ध करना मैं उत्तम नहीं समझताहूँ, हे राजेन्द्र
 पूर्व विचार कियेहुए मेरे इस संकल्पको सुनों कि मैं अमंगल रूप ध्वजा को देख
 करकभी नहीं लड़ता, हे राजा तेरी सेनामें यह द्रुपदकावेडा महारथी युद्धमें क्रोधरूप शूर
 वीर युद्धको जीतने वाला शिखण्डी नामहै । ८० । यह जैसे कि स्त्री हुआ और
 पीछे से पुरुषके चिह्न पाये इसका जैसा कि वृत्तान्तहै उसकोतुमभी जानतेहो शूर

conquer you in battle when you loam like Death the bearer of staff, Indra the wielder of vajra, Varun, Kuver and Yamraj may be conquered, but you are invincible by Indra and the gods and danavas." " You are right," replied Bhishma, "undoubtedly the gods headed by Indra and the danavas cannot conquer as long as I use my weapons dexterously in battle and draw my good bow. Let the warriors therefore slay me when I have laid aside my arms. I donot like to fight with one who has laid down arms, one lying on the ground, without armour and banner, running away, terrified, seeking refuge, having a woman like name, distressed, father of one son or a low born. Hear, O king the resolution which I have arrived at: I never fight with one having ominous banner; in thy army, O king, Drupad's son, Shikhandi is a brave and invincible warrior 80. You know already how a woman at first he gained manhood. I shall not

॥ ८२ ॥ मामेव विशिखेस्तीक्ष्णैरभिद्रवतु दशित । अमङ्गल्यध्वजे तस्मिन् स्त्रीपूर्व
विशेषत ॥ ८३ ॥ न प्रहर्तुमभीप्सामिगृहीतेषु कथंचन । तदतर समासाद्य पाण्डवो
मांधनञ्जय ॥ ८४ ॥ शौर्यार्तयतु क्षिप्र समन्ताद् भरतर्यभ । न त पश्यामि लोकेषुमा
ह्वन्याद्यःसमुचतम् ॥ ८५ ॥ ऋतेरुष्णा-महाभागात् पाण्डवाद्वा धनञ्जयात् । एतस्मा
त्पुरोघ्राय कचिदप्य ममाग्रत ॥ ८६ ॥ आत्तशस्त्रो रणे यत्तो गृहीतवरकामुक । मां
पातयतु धीमत्सुरेव तवजयोधुवम् ॥ ८७ ॥ एतत् कुर्य्य कोतेय यथोक्तं मममुग्रत ।
संग्रामेधात्तरार्द्राश्च ह्वन्या सर्वान् समागतान् ॥ ८८ ॥ सञ्जय उवाच । तेतु ब्रह्म
ततः प्रार्थां जन्मु स्वशिविरं प्रति । अभिवाचमहात्पान भीष्म कुचपितामहम् ॥ ८९ ॥
तथोक्तवति गाङ्गेये परलोकाय दीक्षिते । अर्जुनो दु खस-तसः सर्वाडमिदमब्रवीत्

वीर युद्धमें शस्त्रोंसे अलंकृत अर्जुन शिखण्डी को आगे करके विशिख वाणोंसे
भेरेसम्मुख जो आयेतो धनुषबाण हाथमें लिये हुएभी उसअभंगली ध्वजावाले वा पृथ्वी
में स्त्रीरूप रखने वाले पर मैं किसी दशामें भी प्रहार करना नहीं चाहताहूँ हेराजेन्द्र
युधिष्ठिर उस सेनाको पाकरशीघ्रही पांडव अर्जुनमुझे चारोंओर को बाणोंसे मारे, मैं
सब लोकों में महानुभाव श्रीकृष्णजी और पांडव अर्जुनके सिवाय किसीको नहीं
देखताहूँ जो मुझ युद्ध में प्रयत्नको विजय करसके इस कास्स-यह शस्त्रधारण करने
वाला और उत्तम धनुषधारी अर्जुन किसी दूसरेको मरेआगे नियत करके, मुझको
मारे निश्चय कर के इतरीति से तेरी विजयदे हे सुन्दरव्रत युधिष्ठिर तुमदूसरे
वचनको प्रतिपालन करो और युद्धमें सम्मुख होने वाले सब धृतराष्ट्र के पुरों को
मारो संजय बोले कि इन वार्त्तालापोंके पीछे वह पांडव लोग सब बातों को जानकर
भीष्मजीको दण्डप्रतकरके अपनेडेरों को गये, परलोक जानेको उत्सुकदीक्षा किये
हुए गांगेय भीष्मजी के इतयकार करने पर दुःख से शोच ग्रस्त अर्जुन वड़ी लज्जा
से यह वचन बोला हे माधवजी मैं युद्ध करनेके दृढ़ महाज्ञानी बुद्धिमान कौरवों के

discharge my weapons at Sukhandi who has an ominous banner and
who was formerly a woman, if he comes before me with bow and ar
rows and is followed by Arjun the brave in fight and armed with
weapons Let Arjun and his army wound me with his arrows from
all sides I see none except mighty Krishna and Arjun the Pandav
that can conquer me in battle Then let this armed archer Arjun
preceded by the other, discharge his weapons at me This is the only
way to your conquest Act upon my advice, virtuous Yudhishtir,
and destroy all the sons of Dhritrashtra in battle" Sanjaya contin
ued.— 'Having thus conversed together, the Pandavas learnt all that
was necessary, and having bowed down to Bhishm went to their
camp Hearing the words of Bhishm the son of Gangā, desirous of
departing to the next world, Arjun plunged in grief and shame, thus
addressed Krishna — "How shall I fight against the head of the

॥ ९० ॥ गुरुणा कुम्भं न कृतप्रद्वेन धीमता । पितामहेन सप्राम कथं योद्धामिमगाधव
 ॥ ९१ ॥ प्रीडिता हि मया मातः पासुदेव महात्मना । पासुरुपितगात्रेण महात्मापरुषी
 कृत ॥ ९२ ॥ यस्याहमधिष्ठ्याद्वा बाल किलगदाग्रज । ततित्यजोच पितर पितु
 पाण्डुमहात्मन ॥ ९३ ॥ नाह वातन्तव पितुन्नातास्मि तव आत्म । इति गमत्रधी
 हाये य स वध्य कथं मया ॥ ९४ ॥ काम वध्यतु मे य मे नाह योत्स्ये महात्मना ।
 जयो वास्तुयथो वामे कथं वा वृष्ण मन्य स ॥ ९५ ॥ वासुदेव उवाच । प्रतिग्रय
 वव जिष्णा पुग भीष्मस्य संयुगे । क्षत्रयर्षेस्थित पार्थ कथं नैत हनिष्यसि ॥ ९६ ॥
 पातयेन रथात् पार्थ क्षत्रिय युद्धदुर्मदम् । नाहत्वा युधि गागेय विजयस्ते न वि
 प्यति ॥ ९७ ॥ इष्टमेतत्पुरादयैर्गमिष्यति यमक्षयम् । यच्छ्रे हि पुरा पार्थ तत्तया न

पितामह भीष्मजी के माय कैभ युद्धकरूगा । ९० । हे वासुदेव जी बाल्यावस्था में
 खेतीने हुए घूठभरे देहसे मैंने बड़े साहसी पितामह को धूल में मिलाया, निश्चय
 करके हे श्रीकृष्णजी मुझ बालकने जिमकी बगलमें चढ़कर अपने पितामहान्माण्डु
 के पिताको तात कहाहै, हेमाधवजी जिमने बाल्यावस्थामें मुझको कहाया कि मे
 तेरेपितामह तातहू तेरातात नहींहू उम को मैं किमप्रकार से मारने के योग्यहू वह
 अपनी इच्छाके अनुसार मेरी सेनाको मारे परन्तु उस महात्मा के सायनही लड़गा
 मेरीविजय होय वा मृत्युहो हे श्रीकृष्णजी चाहौ आप मुझे किसी प्रकार से जानौ,
 वासुदेव जी बोले कि हे विजय करने वाले अर्जुन तुम पृथ्वी समय में युद्धके बीच
 भीष्मके मारने का मण करके क्षत्री धर्ममें नियतहुएहो सो तुमसे उमको नहीं
 मारोगे, हे अर्जुन इस युद्ध में दुर्मद क्षत्री को रथ में गिराओ तुमयुद्धमें गगापुत्रको
 बिनापारे समारमें विजय और शीर्षि को नहीं पाओगे, आगे के समय में देवताओं
 ने देखा था कि तुम यमलोक को जाओगे सो हे अर्जुन वह बात स्थिया नहीं है,

family, Blishma the wise grandfather of the kauravas 90 I have,
 O Vasudev often made the body of the grandfather dirty with my
 dust stained feet when I was playing in childhood Surely O
 Krishna the father of the great Pandu whom when in his boyhood
 called father and who in my childhood told me that he was not my
 father, but my father's father, I cannot find it in my heart that I
 should kill him I let him, at his desire, destroy my armies, but I
 shall not fight against him whether I conquer or die O Krishna or
 whatever you may think of me " You have already made a pro
 mise, said Krishna " that you will kill Blishma in battle
 How is it that you say you will not kill him? Come the fulfil of
 that great warrior from his chariot, O Arjun You can neither gain
 victory nor so idly time with at killing Blishma The gods have
 already foreseen that you would go to the region of Yam and this
 cannot be false None except you not even Indra the wielder of

तदन्यथा ॥ ९८ ॥ न हि भीष्म दुराधर्षं व्यात्तानतमिवान्तकम् । त्वदन्य शपनुया
 योद्धमपि वज्रधर स्वयम् । ९९ ॥ जहि भीष्म स्थिरो भूत्वा शृणुचेदं वचो मम ।
 यथोवाच पुराशक्रं महाबुद्धिर्वृहस्पतिः ॥ १०० ॥ ज्यैषां समपि चेद् वृद्धं गुणैरपि
 समन्वितम् । आततायिनमायान्त हन्याद् घातक्रमात्मन ॥ १०१ ॥ शाश्वतोपस्थितो
 धर्मः क्षत्रियाणां धनञ्जय । योद्धव्य रक्षितव्यञ्च यत्प्रपञ्चानुस्युभिः । १०२ ॥
 अर्जुन उवाच । शिखण्डी निघन कृष्ण भीष्मस्य भाविताभुवम् । एवैष हि
 सदा भीष्म पाञ्चाल्य विनिवर्तते ॥ १०३ ॥ ते वय प्रमुञ्जे तस्य पुरस्कृत्य शिखण्डि
 नम् । गाङ्गेय पातयिष्याम उपायेनेति मे मति ॥ १०४ ॥ अहमन्यान्महेष्वासाद्धार
 यिष्यामि सायकैः । शिखण्डपि युधां श्रेष्ठ भीष्ममेवाभियोधयेत् ॥ १०५ ॥ श्रुताहि

तेरेसिवाय आप वज्रधारी इन्द्रभी इस महाबली मृत्यु के समान अर्जय भीष्म से
 लड़ने के लिये समर्थ नहीं है इसे तू स्थिरहोकर भीष्मको मार और इस मेरेवचनको
 सुनकर जैसे कि पूर्वकाल में बड़े बुद्धिमान वृहस्पतिजीने इन्द्र से कहाया कि
 अपने मारनेवाले आततायी आनिवालेको मारेचाहे वहगुणोंसे भराहुआ कुलका
 वृद्धभीहो ॥१००॥ हे अर्जुन युद्धकरना रत्नाकरना दूसरेके गुणोंमें दोषलगानेवालेका
 पूजन न करना यहक्षत्रियोंका सनातन धर्मचन्नाआया है, अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी
 शिखण्डी भीष्मजीका अवश्य कालहोगा क्योंकि भीष्मजी उस पांचालदेशी
 शिखण्डीको युद्धमें देखकर सदैव लौटजातेहै, इसे हम शिखण्डीको उस के सम्मुख
 कर के युक्तियों से उस गांगेय भीष्मको युद्धमें अवश्य मारेंगे यह मेरा मतहै, मैं
 अपने शायकोंसे अन्य बड़े २ धनुषधारियों को रोकूंगा और शिखण्डीबड़े युद्धकर्ता
 भीष्मकेही आगे युद्धकोकरे, मैंने उन कौरवेन्द्र भीष्मजी केही मुखसे सुना है कि
 मैं शिखण्डी को नहीं मारूंगा निश्चय यह पूर्व समय में कन्या होकर पुरुष बना है,

vajra, can cope in battle with brave Bhishm who is invincible like
 Death Be therefore steady in killing Bhishm and hear the words
 which are the same as wise Vrihaspati said to Indra, 'Kill your
 enemy who attacks you whether he be full of virtues or the head of
 your family' 100 Fighting protecting and not giving respect to one
 who paints a virtuous character black are the old practices of ksha-
 tryas' Arjun said "Shikhandi will surely be cause of Bhishm's
 death, O Krishna, for Bhishm a'ways turns back from battle at
 seeing him We shall make Shikhandi to face Bhishm and thus
 shall kill him with a'fulness This is my resolution I shall check
 the other great archers with my arrows and Shikhandi will be able
 to fight against Bhishm I have heard it said by Bhishm himself
 that he would not kill Shikhandi who was transformed from
 womanhood to manhood Thus the Pandavas came to resolution

धृतराष्ट्रस्यत्याहं हन्यां शिखण्डिनम् । कन्या होपापुरा भूत्वा पुरुषःसमपद्यत ॥१०६॥
इत्येवंनिश्चयं कृत्वा पाण्डवाः सहभाषवाः । अन्तुमान्यमहात्मानं प्रययुर्दृष्टमानसाः ॥१०७॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि नवमादिवसाहारचतुस्रो मन्त्रे
अष्टाधिकशतोऽध्यायः ॥ १०८ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं शिखण्डी गाङ्गेयमश्वसेत सयुगे । पाण्डवांश्च कथं भीष्म
सन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥१॥ सञ्जय उवाच । ततस्तेपाण्डवाः सर्वे सूर्यस्योद्ययनं प्रति ।
तावत्प्रमानासु भेरीषु मृदङ्गेष्वानकेषु च ॥ २ ॥ ध्मायत्सुदधिवर्णेषु जलजेषुसमस्ततः ।
शिखण्डिनं पुरस्कृत्य निर्याताः पाण्डवायुधि ॥ ३ ॥ कृत्वाऽपूहं महाराज सर्वशत्रु
निवर्हणम् । शिखण्डी सर्वं सैन्यानामग्र आसीद्विशाम्पते ॥ ४ ॥ चक्ररक्षौ ततस्तस्य
भीमसेनयनञ्जयौ । पृष्टनो द्रौपदेयाश्च सौमद्रक्षेत्र वीर्यवान् ॥५॥ सात्यकिचेकितानश्च
तेषां गोता महारथः । धृष्टमुन्मत्ततः पश्चात् पञ्चालैरभिरक्षितः ॥ ६ ॥ ततो युधिष्ठिरो

इम प्रकार से पांडव लोग अपने बांधवों समेत निश्चय करके और महात्माओंका
प्रतिष्ठा पूर्वक स्तुति पूजन करके ममन् चित्त अपने २ डेरोंको गये १०७ ॥

अध्याय ॥ १०९ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि शिखंडीनेयुद्धमें किसरीति से गांगेयजीको उल्लंघन किया
और भीष्मजीने किसरीति से पांडवोंको उल्लंघन किया हे संजय इसको मुझे सम
झाकर कहो, संजय बोले कि प्रातःकाल सूर्योदयके समय भेरी मृदंग ढोल आदि
वाजोंके बजने और चारों ओर से दधिवर्ण शंखों के बजने पर वह सब पांडव
शिखंडी को आगे करके युद्ध भूमि में गये, हे महाराज राजा धृतराष्ट्र सब
शत्रुओं के नाश करनेवाले व्यूहकी करके सब सेनाओं के आगे शिखण्डी हुआ,
इसके पीछे भीमसेन और अर्जुन उसके चक्र के रत्नकहुए और द्रौपदी के बेटे
और पराक्रमी अभिमन्यु पीछेकी ओर हुए, फिर सात्यकी चकितान और उनके

and having paid respect and praises to their elders went cheerfully to their respective camps." 106.

CHAPTER CIX.

How did Shikhandi," as'ed Dhritrashtra of Sanjaya, "defeat
Bhishm the son of Ganga in battle, and how did Bhishm annoy the
Pandavas? Pray tell me all this in detail." " In the morning," said
Sanjaya, " the Pandavas led by Shikhandi entered the field of
battle and were accompanied by the sounds of trumpets, drums and
conchs white as the curds of milk. Having formed an array destruc-
tive of enemies, Shikhandi led the army. Bhimsen and Arjun
protected the wheels of his chariot; the sons of Drupadi and Abhi-
manyu were at his back and behind them were Satyaki, Chekita

राजापमात्र्या सहितः प्रभुः । प्रययौ सिंहानादेम नादयन् भरतपंथं ॥ ७ ॥ विराट
 स्तुतः पश्चात् स्वेन सैन्येन सवृत । द्रुपद्व महाबाहो ततः पथाद्रुपाद्रवत् । ८ ॥
 केरुपात्रानर पञ्च धृष्टकेतुश्च धीर्यवान् । जघन पालयामासुः पाण्डुसैन्यस्यभारत
 ॥ ९ ॥ एते बृहमहासैन्यं पाण्डवास्तत्र वहिनीम् । अश्वपद्वन्तं सग्रामे त्यक्त्वा
 जीवितमात्मन ॥ १० ॥ तथैव कुरवो राजन् भीष्मे वृत्त्वा महारथम् । अग्रतः
 सर्पसैन्यानांप्रययुः पाण्डवान्प्रति ॥ ११ ॥ पुत्रैस्तव दुराघर्षो रक्षितः सुमहाबलः ।
 तत्रो द्रोणो महेश्वासः पुत्रश्चास्य महाबल ॥ १२ ॥ भगदत्तस्ततः पश्चाद्गजानी
 फेन संवृतः । कृपश्च कृतवर्माश्च भगदत्तमनुव्रतौ ॥ १३ ॥ काम्येजराजो यलघांस्तत
 पदन्नात्सुदक्षिणः । मागधश्चजयत्पेनः सौबलश्चबृहद्बलः ॥ १४ ॥ तथैवाप्य
 महेश्वासः सुशर्मप्रमुत्तानृणः । जघन पालयामासुस्तथ सैन्यस्यभारत ॥ १५ ॥

पीछे पांचाल देशियोंसे रक्षित महारथी धृष्टद्युम्न उनका रक्तकहुआ इसके अनन्तर
 नकुल सहदेव समेत सबका प्रभु राजा युधिष्ठिर सिंहानादों को करता हुआ चला
 उनके पीछे राजा विराट अपनी सेनाको साथ लेकर चला है महाबाहु उसके
 पीछे राजा द्रुपद चला, फिर पांचोंभाई केकय और पराक्रमी धृष्टकेतु ने पांडवी
 सेना के जंघास्थान को रक्षित किया, इस रीतिसे पाण्डव लोग अपने वड़े बूढ़
 को रच कर और अपने जीवन की आशा को त्याग कर युद्ध भूमि में आपकी
 सेनाके सम्मुख आये । १० । हे महाराज इसी प्रकारसे कौरव लोगभी सब सेनाओं
 के आगे महारथी भीष्मको करके पाण्डवों के सम्मुख गये, वह अनेय भीष्म
 आपके शूरवीर पुत्रों में रक्षित थे उनके पीछे वड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य और
 उनका महाबली पुत्रथा, इस के पीछे हाथियोंकी सेना समेत राजा भगदत्त और
 इसकी रजामें कृपचार्य और कृतवर्माथे, इसकेपीछे राजा काम्योज सुदक्षिण जय
 सेन राजा मागध शकुनि और बृहद्बल थे, हे राजाइसीप्रकारसुशर्मा आदि अन्य

and Dairshatadyunn protected by the Panchal warriors. After them
 went Yudhishtir the lord of all, roaring like a lion and accompanied
 by Nakul and Sahadev. Then came the king of Virat together with
 his armies and was followed by king Drupad. The five Karkays
 brothers and Dirshitakeou protected the rear of the Pandav armies.
 Thus the Pandaves, having arranged their great army careless of
 their lives faced your armies 10. In the same manner, O king, the
 Kaurav armies led by Bhishma faced the Pandaves. The invincible
 Bhishma was guarded by your sons and behind them were the great
 archers Dronacharya and his valiant son. Behind them was king
 Bhagdatta with his army of elephants protected by Kripacharya and
 Krishna ma. Then came the kings of Comraj, Sudakshin and Jayatsen,
 the king of Magdh, Shakuni and Bahubal Sushama and other
 great archers protected the rear. On each day, Bhishma the

दिवसे दिवसे प्राप्ति भीष्मः शान्तनयो युधि । आसुरानकरोद्धवहान् पंशाचानथ राक्ष
 सान् ॥ १६ ॥ ततः प्रवृत्ते युद्धं तत्र तेषाञ्च भारत । अन्योन्यं निम्नतां राजन् यमराट्
 विघर्षणम् ॥ १७ ॥ अर्जुनप्रमुखाः पार्थाः पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । भीष्मं युद्धेऽथव-
 तन्त क्रिरन्तो विविधान् शगन् ॥ १८ ॥ तत्र भारत भीष्मं ताडितास्तावकाः शरैः ।
 रुधिरैश्चपरिक्लिप्ताः परलोकां ययुस्तदा ॥ १९ ॥ नकुलः सहदेवश्च सात्यकिश्चमहा
 रथः । तव सैन्य समासाद्य पीडयामासुरोजमा ॥ २० ॥ ते वध्यमानाः समरे तावका
 भरतर्षभ । नाशयनुघन् धारयितुं पाण्डवानामहङ्गलम् ॥ २१ ॥ ततस्तुताघकं सैन्यं
 घप्य मानं समन्ततः । सुमम्प्राप्तं दश दिशः काल्यमानं महारथैः ॥ २२ ॥
 प्रातारं नाशयगच्छन्त तावका भरतर्षभ । वध्यमानाः शिर्तवर्षी-पाण्डवैःसहसृज्जयैः
 ॥ २३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । पीडयमानं वल दृष्ट्वा पार्थभीष्मः पराक्रमी । यद्दर्शा

वडे धनुषवारी राजाओंने आपकी सेना के जघनस्थान को रक्षित किया, मृत्युक
 दिनके वर्तमान होनेपर शान्तनुके पुत्र भीष्मने युद्धके भीतर आसुर पंशाच और
 राक्षस व्यूहों को अलंकृत किया, हे भरतवंशी उस के पीछे परस्पर में मारतेहुए
 आप के पुत्रोंका और पाण्डवोंका यमराज के देशकी वृद्धि करनेवाला महायोरयुद्ध
 जारीहुआ अर्जुन आदि पांडव शिखंडीको अ.गेकरके नानाप्रकारके बाणोंकी वपा
 करतेहुए युद्धमें भीष्म के समस्त वर्तमानहुए, वहाँ आपके शूरवीर भीष्मनेके बाणों
 से घायल रुधिर में डूबेहुए परलोकको सिधारे, और महारथी सात्यकी और नकुल
 सहदेवने आपकी सेनाका पाकर अनेपराक्रमसे पीड़यामान् किया ॥ २० ॥ हेराजा युद्धमें
 घायल वह आपके शूरवीर पांडवों की वही सेनाके रोकने को समर्पणहींहुए, फिर
 आपकी सेना चारों ओर से घायल दशो दिशाओं में प्रयत् २ होकर महारथियोंके
 हाथमें अधिक व्याकुल होकर भागी, हे भरतर्षभ पांडवों के तीक्ष्ण बाणों से घायल
 सृजियों समेत आपके शूरवीरों ने कोई अपना रक्त नहीं पाया, धृतराष्ट्र बोले हे
 संजय पराक्रमी भीष्मने पांडवों के हाथ से पीड़यामान् सेना को देखकर युद्धमें क्रोध

son of Shantannu had formed Asur, Paishach and rakshes arrays.
 Then there was a severe fighting between your sons and the Panda-
 vas, slaying each other and augmenting the population of Yam's
 abode. Arjun and other Pandavas led by Shikhandi faced Bhishm
 with showers of arrows. Your warriors, wounded by the arrows of
 Bhimsen, went to the region of Yam. Valliant Satyaki, Nakul and
 Sahadev annoyed your warriors with their arrows. 20. Wounded
 in battle, your warriors were unable to check the army of the Panda-
 vas Your army wounded on all sides, dispersed in different directions
 and ran away much wounded. Wounded by the sharp arrows of the
 Pandavas and the Srinjayas your warriors could find no proper or."
 " Tell me Sanjaya, all that valliant Bhishm did at seeing his army

द्रुपे कुक्षस्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ २४ ॥ कथंया पाण्डवानुयुजे प्रत्युघात परन्तप ।
 त्रिनिघ्नन् सोमकान् धीरस्तदाचक्ष्व ममानघ ॥ २५ ॥ सञ्जय उवाच । आचक्षे
 ते महाराज यदकार्षीत् पितातप । पीडिते तव पुत्रस्य सैन्ये पाण्डवसृञ्जयै ॥ २६ ॥
 महृष्टमनस शूरा पाण्डवा पाण्डुपुत्रज । अश्वसन्त निघ्नन्तस्तव पुत्रस्यघाहिनीम्
 ॥ २७ ॥ त घिनाश मनुष्येन्द्र नरवारणवाजिनाम् । नामृष्यत तदा भीष्म, सैन्यघात
 रणे परै । २८ । स पाण्डवान् महेश्वास पञ्चालाश्चैव सृञ्जयान् । नाराचैर्वत्स
 दन्तैश्च शितैरञ्जलिकैस्तथा ॥ २९ ॥ अभ्यवर्षत दुर्धर्षस्त्यक्त्वा जीवितमात्मन ।
 स पाण्डवाना प्रघरान् पञ्च राजान् महारथान् ॥ ३० ॥ आत्तशस्त्रो रणे यत्नाद्वा
 रयामास सायकै । नानाशास्त्रास्त्रवैस्तान् धीर्यामर्षप्रघेरितै ॥ ३१ ॥ निजघ्ने समरे
 कुश्रो हस्त्यश्च चामित बहु । रथिनोऽपातयद्वाजान् रथेभ्य पुरपर्यभ ॥ ३२ ॥ सादि

रूप होकर जो २ किया उसको मुझमें कहौ, वह शत्रु सन्तापीधीर सोमकों को
 मारता हुआ युद्ध में केने पाण्डवों के सम्मुख गया उसको भी हे निष्पाप मुझ से
 वर्णनकर, संजय बोले कि हेमहाराज जो पाण्डवोंसे और मृजियोंसे पीडितआपकी
 सेनाको देखकर जो २ आपके पिताने किया उसको मैं कहता हूं, हे पांडुके बड़े
 भाई वह अत्यन्त मसन्नचित्त शूर पाण्डव आपकेपुत्रकी सेनाको मारते हुए सम्मुख
 वर्त्तमान हुए, तब भीष्मजीने शत्रुओंके हाथ से पीडित मनुष्य हाथी घोड़ों के नाश
 को देखकर नहीं सहा, और उस बड़े धनुषधारी अजेयने अपने जीवनको त्याग
 करके वत्सदन्त अंजलिक सत नाम वाणों से पाण्डवों के ऊपर वर्षा करी हे रामा
 उस शस्त्र उठानेवालेने युक्ति से पाण्डवोंके अत्यन्त प्रबल पांच महारथियों को
 शायक नाम वाणों से वा नानामकार के क्रोध से छोड़े हुए अस्त्रों से रोका ॥३१॥
 हे पुरुषोत्तम इसके विशेष उन्होंने असंख्य हाथी घोड़े और रथ से रथियों को भी
 गिराया शत्रुओंके विजय करनेवाले घोड़े के सवारों को घोड़ों की पीठसे और

wounded by the Pandavas," asked Dhritrashtra, "how did he
 slay the Somaks and face the Pandavas. Give a detailed account of
 all this, innocent one." O' king,' replied Sanjaya "I shall tell you all
 that your father did at seeing your armies wounded by the Pandavas
 and the Srinjayas. The cheerful Pandavas, O elder brother of Pan-
 du, faced him with a severe slaughter of the armies of your son
 Bhishm could not bear the destruction of men, elephants and horses
 by the enemies and the invincible archer not caring for his life, show-
 ed on them his arrows known as Vatsdant and Anjalik. That great
 warrior checked the five valliant Pandavas with sharp arrows and
 other weapons discharged in anger 31. Besides this, he felled many
 warriors from their elephants, horses and chariots. He struck down
 the great horsemen from their horses, the elephant riders from the

नश्चाद्यपृष्ठेभ्यः पादातांश्च समागतान् ॥ ३३ ॥ गजारोहान् गजेभ्यश्च परेषां जय
कारिणः । तनेक समरे भीष्मं त्वरमाणं महारथम् ॥ ३४ ॥ पाण्डवाः समवर्तन्त
वज्रहस्तमिवासुराः । शक्राशनिसमस्पर्शान् विमुषन्निशिताञ्छरान् ॥ ३५ ॥ दिव्यदृश्यत
सर्वासु धोरं सन्धारयन् वपुः । मण्डलीभूतमेवास्य नित्यं धनुर्दृश्यत ॥ ३६ ॥ संप्रामे
युध्यमानस्य शक्रचापौषमं महत् । तद्दृष्ट्वा समरे कर्म पुत्रास्तव विशाम्पते ॥ ३७ ॥
विस्मयं परमं गत्वा पितामहमपूजयन् । पार्या विमनसो भूत्वा प्रैक्षन्त पितरंतव ३८
युध्यमानं रणेभूरं विप्रचित्तिमिवामराः । न चैनं वारयामासुर्ध्यांस्ताननमिवान्तकम्
॥ ३९ ॥ दशमं हनि संप्राप्ते रथानीकं शिखण्डिनः । अदहन्निशितैर्वाणैः कृष्णवर्त्म्य
भाननम् ॥ ४० ॥ तं शिखण्डी त्रिभिर्वाणैरभ्यधिष्यत्सलान्तरे । आशीविषमिव क्रुद्धं
कालसृष्टमिवान्तकम् ॥ ४१ ॥ सतेनातिभृशं विद्धः प्रेक्ष्य भीष्मः शिखण्डिनम् ।

हाथी के सवारों को हाथीकी पीठ से और सम्मुख आनेवाले पदातियोंको भी गिराया, फिर युद्धमें शीघ्रता करनेवाले महारथी अकेले भीष्मके सम्मुख पांडव लोग ऐसेहुए जैसे कि अमुर लोग वज्रधारी इन्द्रके सम्मुख हुए थे, वहां इन्द्र वज्र के समान वाणों को छोड़तेहुए भीष्मजी सब दिशाओं में महा भयानक रूप को करते हुए दृष्ट पड़े और इनका धनुषभी इन्द्र धनुष के समान मंडल रूप दृष्टगोचर हुआ हे राजा आपके पुत्रों ने युद्धमें उस कर्म को देखकर बड़े आश्चर्य में होके पितामहकी प्रशंसा करी, और पाण्डवोंने उदासहोकर युद्धमें लड़तेहुए आपके शूर पिता को ऐसा देखा जैसे अमुर लोगोंने विप्रचित्ती को देखा था, दशवें दिन के वर्त्तमान होने पर इस मृत्युके समान भीष्मको शिखंडीकी रथवाली सेनाने नहीं रोका, जैसे कि अग्नि वनको जलाना है उसी प्रकार शिखंडी ने अपने तीक्ष्ण वाणों से सेना को भस्मकरके अपने तीन वाणोंसे उसकी छातीको घायल किया । ४० । जो कि कालपुरुषकी उत्पन्न की हुई मृत्यु और डाढ़में विष धारण करने वाले सर्पकी

back of elephants and the foot soldiers facing him in battle. Bhishm of great dexterty in battle alone harrassed all the Pandavas as Indra the wielder of vajra had done to the asurs. Discharging his arrows like the vajra of Indra, Bhishma's dreadful form was seen in all directions and his bow was seen moving in a circle like Indra's bow. Your sons, O king, wondered at and praised his work in the field of battle, while the Pandavas looked sorrowfully at your brave father fighting his battle as the asurs had done at the sight of Viprachitti. On the tenth day Shikhandi's charioteers could not check Bhishm like death. As fire burns a forest, so did Shukhandi consume your army with his arrows and pierced him with three arrows in the breast 40. Like the death caused by the god of death and enraged like a venomous serpent, brave Bhishm finding himself wounded by Shi.

अनिच्छन्निध संकुदः प्रहसन्निदमप्रवीत् ॥ ४२ ॥ काममभ्यस वा मा या न त्वां
 योत्स्ये कथञ्चन । यैव हि त्वं कृता धात्रा सैव हि त्वं शिखण्डिनी ॥ ४३ ॥ तस्य
 तद्वचनं श्रुत्वा शिखण्डी क्रोधमूर्च्छितः । उवाचैनं तथा भीष्मं रुक्मिणी परिस
 लिहन् ॥ ४४ ॥ जानामित्वा महाबाहो क्षत्रियाणां भयङ्करम् । मया श्रुतञ्च ते युद्धं
 जामदग्न्येन वैसह ॥ ४५ ॥ दिव्यश्च ते प्रभावोयं मयाच बहुश श्रुतः । जानन्तपि
 प्रभावन्ते योत्स्येद्याहं त्वयासह ॥ ४६ ॥ पाण्डवानां प्रियं कुर्वन्नात्मनश्च नरोत्तम ।
 अद्यत्वां योधयिष्यामि रणे पुरुषसत्तम ॥ ४७ ॥ ध्रुवञ्चत्वां हनिष्यामि शपे शत्येन ते
 व्रतः । पतच्छ्रुत्वा च महाकप्यं यत् कृत्यं तत् समाचर ॥ ४८ ॥ काममभ्यस वामा
 यानमे जीवन् प्रमोक्ष्यसे । सहृष्ट क्रियतां भीष्म लोकोयं समितिञ्जय ॥ ४९ ॥

समान क्रोधी महाबली भीष्मथे वह महाधनुर्धारी अपनेको शिखंडीसे घायल देखकर
 अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धको न चाहकर हँसते हुए यह वचन बोले कि तू इच्छाके
 समान युद्धकर चाहै न कर परन्तु मैं किसी प्रकार से भी तुझ से नहीं लड़ूंगा,
 क्योंकि निश्चय करके ईश्वरसे उत्पन्न की हुई तू वही शिखंडिनी है भीष्मके इस
 वचन को सुनकर क्रोध में भराहुआ शिखण्डी होठोंको चबाता हुआ भीष्म
 जीसे बोला कि हे महाबाहु क्षत्रियों के नाशकरने वाले मैं तुझको जानताहूँ,
 और तेरा परशुरामजीके साथ युद्धकरना भी सुना और बहुतसा तेरा दिव्य
 प्रभाव सुना, हे नरोत्तम अब मैं तेरे प्रभावको जानताहुआ भी पाण्डवोंके और
 अपने प्रयोजनको सिद्ध करनेके निमित्त तुझसे लड़ूंगा, और युद्ध में संग्राम
 करके अवश्य तुझको मारूंगा यहतेरे आगे सत्य २ शपथ करताहूँ, मेरे इस
 वचन को सुन कर जो तुझे करना उचितहो उसे अवश्यकर इच्छाके अनुसार
 चाहै युद्धकर या न कर तू मेरे हाथ से जीवता न छूटेगा, हे युद्ध में विजय
 करने वाले भीष्म तुम इसलोकको अच्छी रीति से प्रसन्नकरो, संजय बोले कि
 ऐसे ३ वचनरूपी वाणों से अत्यन्त विदीर्ण हृदय करके झुकी हुई गाँठवाले

Shikhandi, was much enraged, yet not liking to fight against him, he
 said with a smile:— "I shall not discharge my weapons on you
 whether you do so or not; for surely thou art Shikhandini a girl
 produced by God" At this Shikhandi bit his lips in anger and said,
 "Brave Bhishm, destroyer of foes, I know you, I have heard of
 your battle with Parashuram and of your great fame. Knowing all
 this, I shall fight with you for the sake of the Pandavas and for my
 sake. I shall surely kill you in battle, I make a true vow and swear
 in your presence. Do what you like after hearing this from me.
 Whether you fight or not, I shall not spare your life. Make the
 people of this world happy, Bhishm the conquerer!" Sanjaya conti-
 nued that having wounded Bhishm's heart with his taunts, Shikhandi

सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा ततो भीष्मं पञ्चामिनंतपर्वामिः । अविध्यत रणे भीष्मं
 प्रणुत्रं वाक्यस्त्रायकं ॥ ५० ॥ तस्यतद्वचनं श्रुत्वा सव्यसाची महारथः । फालो
 यमिते सञ्चिन्य शिखण्डिनमचोदयत् ॥ ५१ ॥ अहंत्यामनुयातृस्यामि परात् विद्राघ
 पदशरं । अभिद्रघ सुसेरब्धो भीष्मं भीमपराक्रमम् ॥ ५२ ॥ न हि ते संयुगे पीडां
 शकः कर्तुं महाबलः । तस्माद्घ महाबाहो यत्तो भीष्ममभिद्रघ ॥ ५३ ॥ अहत्वासमरे
 भीष्मं यदि चास्यासि मारिय । अघहास्योऽस्य लोकस्य भविष्यसि मया सह ॥ ५४ ॥
 नाचहास्या यथावीर भवे मपरमाहवे । तथा कुरु रणे यत्नं साधयस्व पितामहम्
 ॥ ५५ ॥ अहन्ते रक्षण युद्धे करिष्यामि महाबल । चाग्यत् रथिनः सर्वान् साध
 यस्वपितामहम् ॥ ५६ ॥ द्रोणञ्च द्रोणपुत्रञ्च कृपाञ्चायसुषोधनम् । चित्रसेनं
 विकर्णञ्च सिन्धवञ्च जयद्रथम् ॥ ५७ ॥ विन्दानुविन्दावावन्तौ काम्बोजञ्चसुद
 क्षिगम् । भगदत्तं तथागूरं मागधञ्चमहाबलम् ॥ ५८ ॥ सौमदत्तितथा शूरमाप्यं

पांच वाणों से युद्ध भूमि में भीष्मजी को घायल किया; फिर महारथी अर्जुन ने
 उसके इनवचनों को सुनकर यहविचार किया कि धन्य यही समय है ऐसाजानकर
 शिखंडीको प्रेरणाकरी । ५० । और कहा कि मैं शत्रुओंको वाणोंसे हटाताहूँ
 तेरेपीछेडूँगा तुमअत्यंतक्रोधित होकर उत्तभयानक बलरूपवाने भीष्म के सम्मुख
 जाओ, यहमहाबली युद्धमें तेरे पीड़ा देनेको समर्थ नहीं है इसहेतुसे हे महाबाहो
 अब युक्ति पूर्वक भीष्मके सम्मुखजाओ हे शिखंडी जो तू भीष्मको विनामारेहुए
 युद्धमें जायगा तौ मेरी और तेरीदोनों की इसलोक में हँसीहोगी, हे वीर जैसे
 इस लोकमें हमारी तुम्हारी हँसी न होय वही तुमको युद्धमें उपायकरना योग्य है;
 हे महाबली मैं सब रथियोंको रोक्ताहूँ युद्ध में तेरी सहायता करूँगा तुम अबवध
 पितामहको विजयकरो, मैं दोणाचार्य अश्वत्थामा कृपाचार्य दुष्योधन चित्र
 सेन विकर्ण जयद्रथ सिन्धका राजा विन्द अनुविन्द और अवन्ति देशके राजा

pierced him with five arrows having knots. Arjun heard Shikhandi's words and knowing that it was the time for action, instigated him to go on. 50. He said, "I shall disperse the enemies fighting from behind you; you may with much force face Bhishma of dreadful form and strength. This valliant man is unable to give you truble in battle; ther efore, O brave warriors, attack Bhishma carefully. Both you and I will be laughed at by the world, if you will return from the field of battle without killing him. You should so act today in the field of battle that you and I may not be laughed at. I shall help you, brave man by checking all the charioteers and you are sure to conquer the grandfather. As the coast checks the waters of the Ocean, I shall check Dronacharya, Ashwathama, Kripacharya, Duryohan, Chitrasen, Vikarn, Jayadrath the Ling of Sindh, Vind and

शुद्धिञ्च राक्षसम् । त्रिगर्त्तराजञ्च रणे सह सर्वैर्महारथैः ॥५९॥ अहमाकारयिष्यामि
बेल्व मकरालयम् । कुलञ्च सहितान् सर्वान् युध्यमानान् महाबलान् । निघारयि-
ष्यामि रणे साधयस्व पितामहम् ॥ ६० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दशमदिवसयुद्धारम्भ भीष्म-
शिखण्डप्रलापे नवाधिकशतौऽध्यायः ॥ १०९ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं शिखण्डी गान्धेय मध्यधावत् पितामहम् । पाञ्चाल्य-समरे
कुब्जो धर्मात्मानं यत्प्रव्रतम् ॥ १ ॥ केऽरक्षन् पाण्डवानोके शिखण्डिनमुदायुधाः । खर
माण्डवराकाले जिगीषन्तो महारथाः ॥ २ ॥ कथं शान्तनवो भीष्म स तस्मिन्
दशमेहनि । अयुध्यत महावीर्य पाण्डवैः सहस्रस्यैः ॥ ३ ॥ न मृष्यामि रणे भीष्मं प्रत्युद्यतं
शिखण्डिनम् । कथिन्नरथभङ्गोस्य धनुर्वाशीर्यतास्यतः ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच । नाशीयंत

काम्बोज मुदाक्षिण शूर भगदत्त महाबली राजामगध सोमदत्ति राक्षसोके राजा आर्ष्य
शृङ्ग भौर त्रिगर्त इनसबको सब महाराथियोंसमेत युद्धमें ऐमे रोकूंगा जैसे कि किनारा
या समुद्रकी मर्यादा समुद्रको रोकतेहैं मैं सब सेना से लड़ताहुआ महाबली कौरवों
को हटाऊंगा तुम पितामह को विजयकरो ६० ॥

अध्याय ११० ॥

धृतराष्ट्र बोले कि युद्ध में क्रोधयुक्त पांचालदेशी शिखंडी किसरीति से उस
धर्मात्मा सावधान व्रत गंगेय भीष्मपितामह के सम्मुखदौड़ा । १ । पाण्डवों की सेनामें
युद्धके समय कौन, कौन से शस्त्रधारी विनयाभिलाषी शीघ्रताकरनेवाले महाराथियोंने
शिखंडी की रक्षाकरी, और वहशान्तनुके पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्म उस दशवें दिनमें
पाण्डव और मृजियों से कैसे २ युद्ध करनेवाले हुए मैं युद्धमें शिखंडी को भीष्मजी
के सम्मुख जातेहुए शान्ती को नहीं पाताहूँ अर्थात् सहनहीं सकताहूँ चाहे इन भीष्म
जीका रथ दूटगया वा खंचते २ धनुष के खण्ड भी होगयेहोंपरन्तु तौमी शिखण्डी

Anuvind the princes of Avanti, Camboj, Sudakshin, valliant Bhag-
datta, brave king of Magadh, Somdatti, Aryashring the prince of
rakshases and Trigart. Fighting against all the army, I shall push
back the Kauravas, you may conquer the grandfather." 59.

CHAPTER CX

"How did Shikhandi of Panchal, enraged in battle, rush upon
Bhisma the son of Ganga of true vows," asked Dhritrashtra of
Sanjaya, "and which of the Pandav warriors, desirous of victory,
hastened to protect the former. How did Shantanu's son Bhisma of
true prowess, fight against the Pandavas and the Srinjayas on the
tenth day? I can ill bear the news of Shikhandi going against
Bhisma. Shikhandi could not withstand him even when Bhisma's
chariot and bow were broken into pieces." "O best of Bharats."

धनुश्चास्य रथमङ्गो न चाप्यभूत् । युध्यमानस्य संग्रामे भीष्मस्य भरतर्षभ ॥ ५ ॥
 निम्नः समरे शत्रून् शरैः सन्नतपर्शभिः । अनेकशतसाहस्रान्नायकानां महारथा-
 ॥ ६ ॥ तथा दग्धिगणा राजन् इयाश्चैव सुसज्जिताः । अश्ववर्त्तन्त युद्धाय पुरस्कृत्य
 पितामहम् ॥ ७ ॥ यथाप्रतिज्ञं कौरव्य स चापि समितिभ्यः । पार्थोनामकरोद्भीष्मः
 सततं समितिक्षयम् ॥ ८ ॥ युध्यमानं महेश्वासं विनिम्नन्तं पराद् शरैः । पाण्डवाः
 पाण्डवैः सार्द्धं सर्वे ते चाश्वधारणम् ॥ ९ ॥ दशमेहनि सम्प्राते ततस्तांरिपुवाहिनीम् ।
 कीर्ष्यमाणांशितैर्वाणैः शतशोयसहस्रशः ॥ १० ॥ न हि भीष्मं महेश्वासं पाण्डवाः
 पाण्डुपूर्वज । अशक्नुवन् रणे जेतुं पाशद्वस्तमिवान्तकम् । ११ ॥ अयोपायान्महाराज
 सभ्यसाची धनञ्जयः । त्रासयन् रथिनः सर्वाद् योमत्सुरपराजितः ॥ १२ ॥ सिंह
 वद्दिनदन्तुच्चैर्धनुर्ग्यांघिक्षिपन्मुहुः । शरैघान् विभृजन् पार्थां व्यचरत् कालचद्रेणे

की सामर्थ्य न थी जो उन के सम्मुख जासके, संजयबोले कि हे भरतर्षभ युद्धमें लड़ते और युद्धग्रन्थी वाले वाणों से शत्रुओं को मारने में इस भीष्मका न धनुष टूटा न रथ खंडितहुआ हे राजा आपके पुत्रोंकेलाखों महारथी, और हजारोंही अलंकृत हाथी घोड़े पितामह को आगेरुके युद्धकरनेके लिये सम्मुख वर्त्तमानहुए, उसयुद्धमें भी सत्य प्रतिज्ञ भीष्मजी ने अपने प्रणके अनुसार पाण्डवोंकी सेनाका वारंवार नाश किया, फिर पाण्डवों समेत उनसब पांचालदेशियों ने वाणों से बड़े २ शत्रुओं के मारनेवाले युद्धमें प्रवृत्त धनुषधारी भीष्मको क्षमा न किया फिर दशवें दिनके वर्त्तमान होनेपर शिखंडी आदि हजारों शत्रुओंको भीनासमेत बाणोंसे पृथक् करदिया । १० । हे राजा युद्धमें पाण्डवनोग बड़े धनुषधारी भीष्मजी के विजय करनेको ऐसे नहीं समर्थहुए जैसे कि पाशधारी यमराजके विजयकरनेको कोई समर्थ नही, इसके पीछे सभ्यसाची धाण फेंकनेवाला अर्थात् चार्येहाथसे भी बाण चलानेवाला सर्वसंतारी धन का जीतनेवाला अर्जुन सब रथियोंको भयभीत करताहुआ सम्मुख आया, वह अर्जुन सिंहकेसमान ऊंचे स्वरसे गर्जना करके प्रत्यंचाको वारंवार खिंचता और वाणोंकी

said Sanjaya in reply. " Bhishm's bow was not broken when he was discharging arrows to kill the enemies, nor was his chariot broken. Millions of your son's warriors and thousands of well decked elephants and horses followed the grandfather to do battle. In that battle too, Bhishm of true vows again and again destroyed the armies of the Pandavas. But the Pandavas and the Panchals did not spare Bhishm the destroyer of enemies having sharp arrows. On the tenth day of battle he dispersed thousands of the enemies, Shikhandi and others together with their armies. 10. The Pandavas could not conquer in battle the great archer Bhishm like Yam the bearer of noose. Then invincible Arjun the conquerer of wealth who could discharge arrows with both hands, came to the front terrifying the warriors. Roaring like a lion, twanging his bowstring again and again, and showering

॥ १३ ॥ तस्य शब्देन विव्रस्तास्तावका भरतर्षभ । सिंहस्येव मृगाराजन् व्यद्रघन्त
महाभयात् ॥ १४ ॥ जयन्ते पाण्डवं दृष्ट्वा तव सैन्यञ्चाभिपीडितम् । दुर्योधनस्ततो
भीष्ममग्रवीद् भयपीडितः ॥ १५ ॥ एवपाण्डुसुतस्तात श्वेताश्व कृष्णसारथिः । दहते
मामकान्सर्वान् कृष्णवर्णेषु काननम् । १६ ॥ पश्य सैन्यानि गाङ्गेय द्रवमाणानि
सर्वराः । पाण्डवेन युधांश्रेष्ठ काल्यमानानि संयुगे १७ ॥ यथा पशुगणान् पाल
सङ्कालयति कानने । तथेदं मामकं सैन्यं काल्यते शत्रुतापन ॥ १८ ॥ धनञ्जयशरै
र्भङ्गं द्रवमाणं ततस्ततः । भीमोप्येव दुराधर्षो विद्रावयति मे वलम् ॥ १९ ॥ सास्य
किश्रेकिनानश्च माद्रीपुत्री च पाण्डवौ । अभिमन्युः सुविह्वान्तो, वाहिर्नो द्रवतेमम २०
धृष्टद्युम्नस्तथा शूरो राक्षसश्च घटोत्कचः । इन्द्रावयतां सहस्रा सैन्यं मममहारेण
॥ २१ ॥ वध्यमानस्य सैन्यस्य, सर्वैरेतैर्महारथैः । नान्याङ्गतिम्प्रपद्यामि स्थाने

वर्षा करताहुआ, युद्धमें काल के समान आकर विचरताहुआ, हे राजा आपके शूरवीर
उसके शब्दसेही भयभीतहोकर बड़ीभयातुरतासे ऐसेभागे जैसेकि सिंहके शब्दसे मृग
भागते है फिर विजय करनेवाले पाण्डवों को और आपकी पीड़ामान् सेनाको देख
कर अत्यन्त दुखी दुर्योधन भीष्मजीसेबोला, हे तात यह श्वेत घोड़ेवालाश्रीकृष्णजी
को सारथीरखनेवाला पाण्डव अर्जुन मेरे सब शूरवीरों को ऐसे भस्मकिये डालताहै
जैसे अग्नि वनको भस्मकरता है हे गांवेयभीष्मजी पाण्डवके हाथसे सबप्रकारसे छिन्न
भिन्न युद्धसे भागीहुई सेनाओंको देखो, जैसे कि वनमें गाय चराने वाला सब
पशुओंके समूहोंको पृथक् २ कर के हांकता है इसी प्रकार यह शत्रुसंतापी मेरी
सेनाको हांक छिन्नभिन्न करता है, अर्जुन के वाणोंसे विदीर्ण जहां तहां से भागी
हुई मेरी सेनाको महादुर्जय भीमसेनभी वैसेही भगाता है, और सात्यकी चकितान
वा माद्री के पुत्र दोनों नकुल सहदेव और बड़ावली अभिमन्युयह सब मेरी सेनाको
भगारहे हैं । २० । इसी प्रकार शूरवीर धृष्टद्युम्न और घटोत्कच राक्षसनेभी मेरी
सेनाको भगायाहै, हे भरतर्षभ देवताओंके समान बल रखनेवाले आपके सिवाय इन

his arrows, he roamed in the field of battle like Yam Your warriors,
O King, were terrified at his sound and ran away in terror as a flock
of deer does at the roar of a lion. Then seeing the Pandavas con-
quering and his army distressed, Duryodhan said to Blisim —
“Father, this Arjun the Pandav possessor of white horses, having
Krishn for the driver, burns down all the warriors as fire burns a
forest. Do you see, son of Ganga, our armies dispersed by the
Pandav like a herd of cows driven by the herdsman. Wounded by
Arjun's arrows and driven away in all directions, my armies are
defeated by invincible Bhim en Satyaki, Chekitan, the two sons of
Madri—Nakul and Sahadev, and valliant Abhimanyu are all putting
my armies to flight 20) In the same manner, valliant Dhrishtadyumna
and Ghatotkach the rakshas have caused the flight of my armies. O

युद्धे च भारत । २२ ॥ ऋते त्वां पुरुष्यान्न देवतुल्याराक्रमम् । पर्याप्तस्तु
भवान् शीघ्रं पीडितानां गतिर्भय ॥ २३ ॥ एवमुक्त्वा महाराज पिता देव
व्रतस्तव । चिन्तयित्वा मुहूर्त्तन्तु कृत्वा निश्चयमात्मनः ॥ २४ ॥ तवसन्धार
यन् पुत्रमग्रवीच्छान्तनोः सुतः । दुर्योधन विजानीहि स्थिरो भूत्वा
विशाम्पते ॥ २५ ॥ पूर्वं काल तव मया प्रतिव्रतं महाबल । हत्वा दशसहस्राणि
क्षत्रियाणां महात्मनाम् ॥ २६ ॥ संग्रयादन्यपयातस्य मेतत् कर्म ममाह्निकम् । इति
तत् कृतवांश्चाहं यथोक्तं भरतर्षभ ॥ २७ ॥ अद्य चापि महत् कर्म प्रकरिष्ये महा
बल । अहं वाद्यहतः शेष्ये हनिष्ये वाद्य पाण्डवान् ॥ २८ ॥ अद्य ते पुरुष्यान्न प्रति
मोक्ष्ये ऋणन्तव । भर्तृपिण्डकृतं राजन् निहतः पृतनामुखे ॥ २९ ॥ इत्युक्त्वा भरतश्रेष्ठ
क्षत्रियान् प्रथमञ्छरैः । आसत्साद दुराधर्यः पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ ३० ॥ अनीक
मध्ये तिष्ठन्नं गात्रिं भरतर्षभ । आशीविषमिव कुर्वं पाण्डवाः प्रत्यवारयन् ॥ ३१ ॥

महारथियों से वायल हुई सेनाका कहीं कोई आश्रय नहीं दिखाई देता है हे
पुरुषोत्तम आप समर्थ हैं इसमें शीघ्र ही इन महादुखियों के आश्रय हजिये हेराजा इस
प्रकारसे कहेहुए आपके पिता देवव्रत भीष्मजी एक मुहूर्त्त तक शोचमें मग्नहो अपने
निश्चयको करके, आपके पुत्र से मिलकर बोले कि हे राजा दुर्योधन तुम स्थिर
बुद्धी से समझो, हेमहावली मैंने पूर्वमयमें तुम्हने वचन पूर्वक प्रण कियाया कि
दश हजार महात्मा क्षत्रियों को मारकर, युद्धसे प्रथक हूंगा, यह मेराप्रतिदिनका कर्म है
सो हे दुर्योधन मैंने अपने वचनके अनुसार उसको पूरा किया, और अबभी वड़े कर्मको
करूंगा अर्थात् मैं मृतकहोकर शयन करूंगा अथवा पाण्डवोंको मारूंगा हेराजा अब
मैं स्वामी के ऋण से निवृत्त होकर सेनाके मुखपर मृतकहोकर तेरेऋण को चुका
ऊंगा, यह कहकर क्षत्रियोंको वाणों से आच्छादित करते हुए अजेय भीष्म ने
पाण्डवों की सेनाको सम्मुख पाया ॥ ३० ॥ हे भरतर्षभ घृतराष्ट्र उस सेना में नियत
सर्पके समान क्रोधरूप गांगेय भीष्मजी को पाण्डवों ने युद्धभूमि में आकर रोका,

best of Bharats, possessor of godlike strength, I see no refuge for my
wounded warriors except yourself. You have the power, best of men,
protect therefore these distressed soldiers at once." Thus addressed,
O king, your father Devabrat Bhishma remained plunged in thought
for a short time, and then having formed a resolution in his mind, he
said to your son—"Hear attentively, Prince Duryodhan. I have al-
ready given you word, mighty one, that I shall leave the field of
battle after slaying ten thousand warriors. This is my daily work
and I have been doing it according to my promise. I shall do it
again. I shall lie down dead or shall destroy the Pandavas. I shall
now die at the entrance of the army after having satisfied the debt
which I owe you as my master." Thus saying, he covered the
warriors who encountered him with the shower of his arrows 30. O best

दशनेहनि भीष्मस्तु दर्शयन् शक्तिमारमन । राजन् शतसहस्राणि सोवधीत् कुरु
 नन्दन ॥ ३२ ॥ पञ्चालानाम्च ये श्रेष्ठा राजपुत्रा महारथा । तेषामादत्त तंजांसि
 जले सूर्य्य इवांशुभिः ॥ ३३ ॥ हत्वा दशसहस्राणि कुञ्जराणां तरस्विनाम् । सा-
 रोहाणां महाराज हयानाञ्चायुतन्तथा ॥ ३४ ॥ पूर्णे शतसहस्रे पादातानानरोत्तम ।
 प्रजज्वाल रगे भीष्मो विधूम इव पाथकः ॥ ३५ ॥ न चैव पाण्डवेयानां केचिच्छेकुर्नि
 रीक्षितुम् । उत्तर मार्गमास्थाय तपन्तमिध भास्करम् ॥ ३६ ॥ ते पाण्डवेयाः संख्या
 महेश्वासेन पीडिताः । घघायाभ्यद्रवन् भीष्मे सुहृजयाश्च महारथाः ॥ ३७ ॥
 संयुध्यमानो बहुभिर्भीष्म शान्तनवस्तथा । अवकीर्णो महोमरुः शैलो मेघैरिवावृत-
 ॥ ३८ ॥ पुत्रान्तु तव गाङ्गेयं समन्तान् पर्य्यधारयन् । महत्या सेनया सार्द्धं ततो
 युद्धमवर्षत ॥ ३९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दुर्योधनभीष्म संवादे
 दशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११० ॥

हे धृतराष्ट्र दशवें दिन अपनी सामर्थ्य को दिखाते हुये उस भीष्म पितामह ने लाखों
 कोही मारडाला, पांचाल देशियों में जो श्रेष्ठ और महारथी राजकुमार थे उनके
 पंजों को ऐसे ऐंचलिया जैसेकि सूर्य्य अपनी किरणोंसे जलको खेंचता है, हे महाराज
 दशहजार शीघ्रगामी हाथियोंको और इतनेही सवारों समेत घोड़ोंको मारा पूरे एक
 लाख पदातियों के मरने पर भीष्मजी युद्ध में ऐसे क्रोधयुक्त हुए जैसे निर्धूम अग्नि
 होताहै, पाण्डवों के शूरवीरों में से कोई भी इस सूर्य्य समान संतप्त करनेवाले
 भीष्म के सम्मुख देखने को समर्थ नहीं हुआ, तब उस युद्ध में बड़े धनुषधारी से
 पीड़ामान् पाण्डवों के वह शूरवीर महारथी संजय भीष्म के मारने के निमित्त
 सम्मुख गये और जैसे कि बड़ा मेघ पर्वत वादलोंसमेत जाताहै वैसेही शतनु के
 पुत्र भीष्मभी अच्छे २ शूरवीरों समेत राक्षित होकर चले, फिर आपके पुत्रों ने
 बड़ी सेना समेत भीष्मजी को चारों ओर से राक्षित किया और युद्धजारी हुआ । ३९ ।

of Bharats, standing in the midst of the army like an angry serpent
 the son of Ganga was checked by the Pandavas. Showing his
 prowess on that tenth day, the grandfather slew thousands of warriors
 He drew the energy out of the Panchal warriors as the sun with his
 rays draws out water. Having killed ten thousands of swift going
 elephants, ten thousands of horses together with their riders and a
 hundred thousand foot soldiers, Bhishm was enraged in battle like
 smokeless fire. None of the Pandav warriors could look at Bhishma's
 face glorious like the sun. Wounded by that great archer, the
 Pandav and Srinjaya warriors faced Bhishm in order to slay him.
 Like the huge Meru hill covered by clouds, Bhishm protected by
 good warriors, advanced. Your sons with a large army protected him
 and the battle continued." 39.

सञ्जय उवाच । अर्जुनस्तु रणे राजन् दृष्ट्वा भीष्मस्य विक्रमम् । शिखण्डिन
मथोवाच समभ्येहि पितामहम् ॥ १ ॥ न चापि भीस्त्वया कार्या भीष्माद्य फय
ञ्चन । अहमेन शरैस्तीक्ष्णैः पातयिष्ये रथोत्तमात् ॥ २ ॥ एवमुक्तस्तु पाथेन
शिखण्डी भरतर्षभ । अभ्यद्रवत गाद्रेयं श्रुत्वा पार्थस्य भाषितम् ॥ ३ ॥ धृष्टद्युम्न
स्तथा राजन् सौभद्रश्च महारथः । दृष्ट्वाद्याद्रवतां भीष्मं श्रुत्वा पार्थस्य भाषितम्
॥ ४ ॥ विराटद्रुपदौ वृद्धो कुन्तिभोजश्च दंशितः । अभ्यद्रवत गाद्रेयं पुत्रस्य तव
पश्यतः ॥ ५ ॥ नकुलः सहदेवश्च धर्मराजश्च वीर्यवान् । तथेतदाणि सैन्यानि
सर्वाण्येव विशाम्पते । ६ ॥ समाद्रवन्त गांगेय श्रुत्वापार्थस्यभाषितम् प्रत्युद्य युष्मावकाश्च
समेतांस्तानमहारथान् ॥ ७ ॥ यथाशक्ति यथोत्साहं तन्मेनिगदत-अणु । चित्रसेनो महा
राज चेकितावं समभ्ययात् ॥ ८ ॥ भीष्ममेप्सुं रणयान्तं शृपं द्वाघ्रशिशुर्षया । धृष्ट

अध्याय ॥ १११ ॥

संजय बोले कि हे राजा फिर अर्जुन युद्धमें भीष्मके पराक्रमको देखकर शिखण्डि से बोला कि तुम पितामह के सम्मुख होजाओ, अब तुम भीष्मजी से किसी प्रकारका भय मत करो मैं इन भीष्मजी को अपने उत्तम वाणों के द्वारा रथसे विराजंगा हे राजा अर्जुन के ऐसे वचनको सुनकर वह शिखण्डी भीष्म के सम्मुख गया, और इमी प्रकार धृष्टद्युम्न और महारथी अभिमन्यु यह दोनोंभी अर्जुन के वचनों से प्रसन्न चित्त होकर भीष्मजी के सम्मुख गये, विराट और द्रुपद यह दोनों छद्म और शस्त्रों से अलंकृत राजा कुन्तभोज यह तीनों आपके पुत्रके देखते हुए भीष्मके सम्मुख गये, और नकुल सहदेव और पराक्रमी धर्मराज युधिष्ठिर और अन्य सब सेनाके लोगभी उनके सम्मुख गये, उससमय नकुल और सहदेव दोनों अर्जुनके वचनोंको सुनकर आपके पुत्रके देखते हुए भीष्मके सम्मुख दौड़े, फिर आप के शूखीरभी अपनासामर्थ्य और साहस के द्वारा उन इकट्ठेहुए महाभारतीयों के सम्मुख

CHAPTER CXI

Sanjaya continued:—"Seeing the prowess of Bhishm, Arjun thus addressed Shikhandi, "You may now face Bhishm. You need not be afraid of him, for I shall with my arrows cause his fall from his chariot." On hearing these words of Arjun, Shikhandi faced Bhishm. In the same manner, Dhristadyumn and valliant Abhimanyu, much pleased at the words of Arjun, encountered Bhishm. Virat and Drupad, the two old warriors, and Prince Kuntbhaj adorned with weapons, encountered Bhishm in the presence of your sons. Nakul, Sahdev and Yudhiahtir the just with other warriors also faced him. Nakul and Sahdev rushed against Bhishm on hearing the words of Arjun. Your warriors too, as far as it lay in their power, encountered

धुम्नं महाराज भीष्मान्तिक सुपागतम् ॥१॥ त्वरमाणं रणे यत्तं कृतवर्मा न्यवारयत् ।
भीमसेनं सुसंकुद्ध गाङ्गेयस्य घघैषिणम् ॥ १० ॥ त्वरमाणो महाराज सौमदक्षि-र्यधार
यत् । तथैव नकुलं शूरं किरन्तं सायकान् बहून् ॥ ११ ॥ विकर्णो धारयामास इच्छन्
भीष्मस्य जीवितम् । सहदेवं तथा राजन् यान्त भीष्मरथं प्रति ॥ १२ ॥ धारयामास
संकुद्धः कृपः शारद्वतो युधि । राक्षसं क्रूरकर्माणं भैमसेनि महाबलम् ॥ १३ ॥ भीष्मस्य
निधनं प्रेप्तुं दुर्मुखोऽश्वत्थवद्वली । सात्यकिं समरेयान्तं तव पुत्रो न्यवारयत् ॥ १४ ॥
अभिमन्युं महाराज यान्तं भीष्मरथं प्रति । सुदक्षिणो महाराज काम्बोज-प्रत्यधारयत्
॥ १५ ॥ विराटद्रुपवी वृद्धौ समेतावरिर्मर्दनी । अश्वत्थामा तत वृद्धो धारयामास
भारत ॥ १६ ॥ तथा पाण्डुसुतं ज्येष्ठ भीष्मस्य वधकाक्षिणम् । भारद्वाजो रणे यत्तो धर्म-
पुत्रमधारयत् ॥ १७ ॥ अर्जुनं रभसयुद्धे पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । भीष्मप्रेप्तुं महाराज

गये उनका वृत्तान्त मुझसे सुनो, हे महाराज भीष्मकी रक्षाके निमित्त चित्रसेनतो चेकि-
तानके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि व्याघ्रका बच्चा बैलके सम्मुख जाता है हे राजा
भीष्मके समीप आये हुए शीघ्रता करनेवाले युद्धमें कुशल धृष्टद्युम्नको कृतवर्माने रोका
। १० । और शीघ्रता करने वाले सोमदत्त ने भीष्मजी के मारने की इच्छा रखने
वाले महाक्रोधित भीमसेनको रोका, इसी प्रकार भीष्मजी के जीवनके चाहनेवाले
विकर्ण ने बहुत शायकोंके फेंकने वाले शूर नकुलको रोका, ऐसेही युद्ध में अत्यन्त
क्रोधी शारद्वत कृपाचार्यने भीष्मके रथपर जाते हुए सहदेवको रोका । १३ । और बल-
वान् दुर्मुख उसभीष्मके मारनेमें प्रवृत्त भीमसेनके पुत्र घटोत्कच राक्षसके सम्मुख हुआ,
और युद्धमें जाते हुए सात्यकीको आपके पुत्रने रोका और भीष्मके रथपर जाते हुए अ-
भिमन्युको, राजा काम्बोज सुदक्षिण ने रोका और शत्रुओं के मारने वाले विराट् और
द्रुपद दोनों वृद्धोंको क्रोध युक्त अश्वत्थामाने रोका हे राजा भीष्म के मारनेको उत्सुक

them. Hear of me what they did: for the protection of Bhishm, Chitrasen faced Chekitan as a lion's whelp faces an ox Kritvarma checked Dhrishtadyumn the dexterous in battle who was approaching Bhishm. 10. Somdatta hastened to check angry Bhim'sen desirous of slaying Bhishm. In the same manner, desirous of protecting Bhishm's life, Vikarna checked Nakul who was discharging many arrows. Likewise Kripacharya much enraged in battle, checked Sahadev advancing against the chariot of Bhishm 13. Valliant Durmukh faced Ghatotkach the son of Bhim desirous of slaying Bhishm. Your son checked the advance of Satyaki, and Sudakishin the king of camboj checked Abhimanyu's advance. Enraged Ashwathama checked the advance of Virat and Drupad the two old warriors. Dronacharya checked the advance of Pandu's eldest son, Yudhishthir the just desirous of slaying Bhishm, and the great archer

भास्यन्त दिशी दश ॥ १८ ॥ दुःशासनो महेश्वासे धारयामास संयुगे । अन्ये च
 तावका योधाः पाण्डवानां महारथान् ॥ १९ ॥ भीष्मस्याभिमुखान्यातान् धारयामासु-
 राहवे । धृष्टद्युम्नस्तु सैन्यानि प्राक्रोशंस्तु पुनः पुनः ॥ २० ॥ अभ्यद्रवत संरथ्यो भीष्म
 मेकं महारथः । एषोर्जुनो रणे भीष्मं प्रयाति कुरुनन्दन ॥ २१ ॥ अभ्यद्रवत मामैष्ट
 भीष्मो हि प्राप्स्यते न वः । अर्जुनं समरे योद्धुं नोत्तमहेतापि वासव ॥ २२ ॥ किमु
 भीष्मो रणे धीरा गतसंघाऽप्यजीवितः । इति सेनापतेः श्रुत्वा पाण्डवानां महारथाः
 ॥ २३ ॥ अभ्यद्रवन्तं संदृष्ट्वा गाङ्गेयस्य रथमग्रति । आगच्छमानान् समरे वार्योघान् प्रथ
 यन्निव २४ अवारयन्त संदृष्ट्वास्तावकाः पुढर्षमाः । दुःशासनो महाराज भयं त्यक्त्या
 महारथः ॥ २५ ॥ भीष्मस्य जीचिताकांक्षी धनञ्जयमुपाद्रवत् । तथैव पाण्डवाः दूपा

पांडुके वड़े पुत्र धर्मराज युधिष्ठिरको द्रोणाचार्यने और शिखण्डी को आगे करके
 युद्धमें बेगवान् भीष्मको चाहने दशो दिशाओं के प्रकाश करनेवाले अर्जुनको वड़े
 धनुषधारी दुश्शामने रोका, और आपके अन्य शूस्वीरों ने भीष्मके सम्मुख
 जाते हुए पांडवों के महारथियों को युद्धमें रोका ॥२०॥ इसके पीछे क्रोधयुक्त
 महारथी धृष्टद्युम्न अकेलाही चारंवार अपनी सेनाओं को इस रीतिसे पुकारता हुआ
 भीष्मके सम्मुख गया, कि यह कौरवनन्दन अर्जुन युद्ध में भीष्मके सम्मुख जाता है
 समीप आजाओ डरो मत भीष्मही का नाश होगा तुम्हारा नहीं होगा, युद्धमें
 अर्जुन से लड़ने को इन्द्रभी साहम नहीं करमक्ता है हे वरिष्ठयोगी फिर वह निर्वल
 थोड़ेजीवनवाला भीष्म युद्धमें क्या करमक्ता है, पांडवों के महारथी सेनापति के इस
 वचनको सुनकर वह सब अत्यन्त प्रसन्न मन होकर अर्जुनके रथके समीप गये पुरुषोंमें
 श्रेष्ठ अत्यन्त प्रमन्न चित्त आपके शूस्वीरों ने बहुतसी सामर्थ्योंसे युक्त वड़े पराक्रमी
 योंके समान युद्धमें आनेवालों को रोका, फिर भीष्म के जीवनका चाहनेवाला महा
 रथी दुश्शामन भयको त्यागकर अर्जुन के सम्मुख गया. इसीप्रकार शूस्वीर पांडव

Dushasan checked Arjun who led by Shikhandi was desirous of killing Bhishm and who illumined the ten directions by his glory. Your other warriors checked the advance of the other warriors of the Pandavas ready to assail Bhishm 20. Then the enraged warrior Dhrishtadyumn alone faced Bhishm, saying again and again to his warriors:—" Arjun the joy of the Kauravas is advancing against Bhishm; come on never without fear; for Bhishm will be killed and not you. Even India has not the courage to fight against Arjun; what can Bhishm who is infirm and of small duration of life, do against him?" Hearing these words from the brave commander of the Pandav forces, they cheerfully approached the chariot of Arjun. Your warriors the best of men, bravely and cheerfully checked the advancing men. Valliant Dushasan, desirous of protecting Bhushma's life fearlessly encountered Arjun. In the same manner the brave Pandavas

गाङ्गेयस्य रथमप्रति ॥ २६ ॥ अश्वद्रवन्त संग्रामे तव पुत्रान् महारथा । तत्राद्भुतमप
 श्याम चित्ररूपं विशास्यते ॥ २७ ॥ तु शासनरथं प्राप्य यत् पर्यन्तव्यचरत । यत्
 वारयते वेला क्षुब्धतोय महार्णवम् ॥ २८ ॥ तथैव पाण्डव कुर्क्षं तव पुत्रो न्यवारयत् ।
 उभौ तौ रथिनः श्रेष्ठाभुमौ भारत दुर्जयौ ॥ २९ ॥ उभौ चन्द्राकंसदृशते काश्या दीप्या
 च भारत । तथा तौ जातसंरम्भाव-योग्यवधकांक्षिणौ ॥ ३० ॥ समीयतुर्महासंख्ये ऋथ
 शकौ यथा पुरा । तु शासनो महाराज पाण्डव विशिलैस्त्रिभिः ॥ ३१ ॥ घासुदेवञ्च
 विशत्या ताडयामास सपुगे । ततोऽुनो जातमन्युर्वाण्येयं वीक्ष्य पीडितम् ॥ ३२ ॥ तु शा
 सनं शतेनाज्ञी नाराचाना समार्षयत् । ते तस्य कवचं भिन्वा पपु-शोणितमाह्वे ॥ ३३ ॥
 दुःशासनस्त्रिभि क्रुद्धः पार्थ-विन्वाध पत्रिभि । ललाटेभरतश्रेष्ठ शरै सन्नतपर्कभि ॥ ३४ ॥
 ललाटस्थैस्तु तैर्वाणे शुशुभे पाण्डवो रणे । यथामेवमहाराज धृङ्गेरत्यथमुच्छ्रितै ॥ ३५ ॥

लोगभी भीष्मजी के रथकेपास आप के महारथी पुत्रोंके सम्मुखगये, हे राजा वह
 हमने अपूर्व रूप के आश्चर्यको देखा कि अर्जुन ने दुश्शासन के रथको पाकर
 उल्लसन नहीं किया, जैसे कि मर्यादा वा किनारा जल से व्याकुल
 समुद्रको रोकता है उसी प्रकार आपके पुत्र ने क्रोधयुक्त पांडव अर्जुनको रोक़ा, वह
 दोनों रथियों में श्रेष्ठ दुर्जय पुरुष शोभा और प्रकाश से चन्द्रमा और सूर्य के
 समान विदित होतेथे । ३० । इसी प्रकार वह दोनों क्रोधभरे परस्पर मारने के
 इच्छावान् युद्ध में ऐसे बड़े जैसे कि पूर्व समय में यमराज और इन्द्र बड़ेथे, फिर
 दुश्शासन ने विशिलनाम तीन वाणोंसे अर्जुनको और वीसवाण से वासुदेवजी को
 घायल किया, तदनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुन ने श्रीकृष्णजी को पीड़ामान् देखकर
 युद्धभूमि में नाराचानाम वाणों के एक सैकड़से दुश्शासनको घायल किया उन
 वाणोंने उसके कवचको काटकर उसके रुधिर को पिया फिर महाक्रोधी दुश्शासन
 ने गुप्तग्रन्थी वाले तीन वा पांचवाणोंसे अर्जुन को ललाटपर घायल किया उन

faced your sons near Blushma's chariot. The sight we saw there-
 O king, was wonderfully strange: Arjun could not pass over Dusha-
 san's chariot and your son checked the enraged Pandav Arjun, as the
 coast does the troubled waters of the ocean The two best of chariot
 eers, on account of their beauty and glory, looked like the moon and
 the sun 30 Thus the two enraged warriors, desirous of slaying
 each other, advanced like Yam and Indra in the days of old With
 three sharp arrows Dushasan wounded Arjun and with twenty
 he wounded Shri Krishn. Arjun, much enraged at the sight of
 Krishna's wounds, discharged, a hundred long shafted arrows at
 Dushasan They pierced through his armour and drank his blood
 Then Dushasan of exceedingly hot temper wounded Arjun on the
 forehead with three and five arrows, and with those arrows stuck on

सोतिविद्धो महेश्वासः पुत्रेण तत्र धन्विना । ध्याराजत् रणे पार्थः किंशुकः पुं-
 चानिव ॥ ३६ ॥ दुःशासनन्ततः कुङ्कः पीडयामास पाण्डवः । पर्वणीव सुसंकुद्धो
 राहुः पूर्णं निशाकरम् ॥ ३७ ॥ पीड्यमानो बलवता पुत्रस्तथ विशाम्पते । विध्याथ
 समरे पार्थ कंकपत्रैः शिलाशितैः ॥ ३८ ॥ तस्य पार्थो धनुश्छित्वा रथञ्चास्य त्रिभिः
 शरैः । आजघानततः पश्चात् पुत्रं ते निशितैः शरैः ॥ ३९ ॥ सौग्यत्कामुकमादायभी
 मस्य प्रमुखे स्थितः । अर्जुनं पंच विंशत्या बाह्वोहरसिवाप्ययत् ॥ ४० ॥ तस्य
 कुद्धो महाराज पाण्डवः शयुतापनः । अग्निपिहिशिखान् घोरान् यमदण्डीपमान् वदत्
 ॥ ४१ ॥ अघ्राप्तानेषु यान् चाणान् चिच्छेद् तनयस्तव । यतमानस्य पार्थस्य तद्दुः
 तमिवाभवत् ॥ ४२ ॥ पार्थश्च निशितैर्वापैरविध्वस्तनयस्तव । ततः कुद्धो रणे पार्थः

काटपर नियत बाणों से वह अर्जुन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि अत्यन्त ऊंचे
 ऊंचे शिखरों से मेरु पर्वत शोभित होता है फिर वह बड़ा धनुषधारी अर्जुन आपके
 धनुषधारी पुत्र से अत्यन्त घायल होकर युद्धमें ऐसा शोभायुक्त हुआ जैसा कि
 फुलाहुआ किंशुक वृक्ष होता है इसके पीछे अर्जुन ने उसको भी दुःशासन को ऐसा
 पीड़ित किया, जैसे कि पर्वके दिन अत्यन्त क्रोधयुक्त राहु पूर्णचंद्रमाको दुःखित करता
 है हे राजा पराक्रमी अर्जुनसे पीड़यमान् आपके पुत्रने, कंकपत्रवाले शिलापर तीक्ष्ण
 किये हुए बाणों से अर्जुन को फिर पीड़यमान् किया तबतो अर्जुन ने उसके धनुष
 को काटकर तीन बाणोंसे उसके रथको खंडित किया, उसके पीछे तीक्ष्ण बाणों
 से उसके शरीरको घायल किया फिर भीष्मके आगे नियत होकर उसने दूसरे
 धनुषको लेकर अर्जुन को पश्चीस २५ बाणों से भुजा और छातीपर घायल
 किया हे राजा फिर शत्रु संतापी क्रोधयुक्त अर्जुन ने उसके ऊपर यमराज के
 दण्ड के समान महाभयानक विशिख नाम बहुत से बाणों को चलाया तब आप
 के पुत्रने अर्जुन के उन बाणों को बीचमेंही काटा । ४२ । वह आश्चर्यसा हुआ

his forehead, Arjun looked glorious like mount Meru with its very
 high peaks. The great archer Arjun, excessively wounded by your
 son's arrows, looked beautiful like the Kinshuk tree in bloom. Then
 Arjun so wounded Dushasan of hot temper as on the day of full moon
 Rahu in its great rage harrasses the moon. Wounded by the darts
 of valliant Arjun, your son again wounded him with his sharp arrows
 having vulture feathers. Then having cut down his bow, Arjun
 broke his chariot with three arrows and pierced through his body with
 his sharp arrows. Then standing before Bhishm, Dushasan wounded
 Arjun with twenty five arrows on the breast and arms. Then, O
 King, Arjun the destroyer of foes, much enraged, discharged at him
 dreadful arrows like the staff of Yam, but your son cut them down
 in the way. 42. The sight was wonderful to behold. Then your

शरान् सन्धाय कार्मुके ॥ ४३ ॥ प्रेयथामास समरे स्वर्णपुष्पाञ्छिलाशितान् ।
 न्यज्जंभते महाराज तस्य कावे महात्मनः ॥ ४४ ॥ यथा हसा महाराज तडागं
 प्राप्य भारत । पीडितदेव पुत्रस्ते पाण्डवेन महात्मना ॥ ४५ ॥ हित्वा पार्थरणे
 तूर्णं भीष्मस्य रथमाव्रजत् । अगाधे मज्जतस्तस्य द्वीपो भीष्मोऽभवत्तदा ॥ ४६ ॥
 प्रतिलङ्घ्य तत्र संज्ञा पुत्रस्तत्र विशाङ्गते । अवारयत्ततः शूरो भूयस्वपराक्रमी ॥ ४७ ॥
 शरैः सुनिशितैः पार्थ यथा वृत्रं पुरन्दरः । निर्विभेद् महाकायो विव्यथे नैव चार्जुनः ४८

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि अर्जुनदुःशासनसमागमे

एकादशाधिकशतोऽध्यायः ॥ १.११ ॥

फिर आपके पुत्र ने तीक्ष्णचारवाले बाणोंसे अर्जुन को व्यथितकिया, इस के पीछे
 युद्धमें क्रोधभरे अर्जुन ने सुनहरी पुंखवाले वा शिलापर धिमेहुए बाणों को धनुष
 पर चढ़ाकर युद्धमें फेंका, हे राजा वह बाण उसमहात्मा के शरीरमें ऐसे प्रवेश
 करगये जैसे कि तडाग को पाकर हंस प्रवेश करजाते हैं महात्मा पांडव के हाथ से
 पीडित आपकापुत्र युद्ध में अर्जुन को छोड़कर शीघ्रही भीष्मजी के रथके पास
 गया तब भीष्मजी उस अगाध जन के डूबेहुएको आधाररूप द्वीप होगये इसकेपीछे
 हे राजा आपके शूरवीर पुत्रने चैतन्यहोकर फिर महा तीव्र बाणों से अर्जुन को
 ऐसा दकदिया जैसे कि बड़े शरीरवाले इन्द्रने वृत्रासुर को आच्छादित कियाया
 उसके घायल करनेपरभी अर्जुन पीड़ामान् नहीं हुआ ४८ ॥

son wounded Arjun with sharp arrows. Thereupon Arjun, much
 enraged in the field of battle, put to his bow arrows sharpened on
 stone and furnished with gold feathers, and discharged them at him
 Those arrows pierced through the body of that great warrior as
 swans enter a lake. Wounded by the great Pandav your son left
 Arjun and hastened to approach Bhishma's chariot. Bhishma protect-
 ed him as an island protects a man fallen into deep sea. Then, O king,
 your valiant son, having regained his consciousness, again covered
 Arjun with very sharp arrows as Indra covered the big body of
 Vritrasur, but Arjun was not disturbed in spite of those wounds." 48.



सञ्जय उवाच ॥ सात्यकिं दशित युद्धे भीष्मायाश्च्युत रणे । आर्ष्यंगृह्णिमहेष्वा
सो धारयामास सयुगे । १ ॥ माधवस्तु सुसकुद्धो राक्षस नयमि शरैः । आजघान
रणे राजन् प्रहसन्तिव भारत ॥ २ ॥ तथैव राक्षसो राजन् माधव नयमि शरैः । अर्द्ध
पामास राजेन्द्र सकुद्धः । निशिपुद्गवम् ॥ ३ ॥ शैनेप शरस्वघातु प्रेषयामास सयुगे ।
राक्षसाय सुसकुद्धो माधव परवीरहा ॥ ४ ॥ ततो रक्षो महाबाहु सा यकि सत्य रि
क्रमम् । विभ्याध विशिखैस्तीक्ष्णै सिंहनाद ननादच ॥ ५ ॥ माधवस्तु भूश यिद्धो राक्ष
सेन रणे तदा । धार्यमाणश्च तेजस्वी जहासच ननादच ॥ ६ ॥ भगदत्तस्तत कुद्धो
माधव निशितै शरैः । ताडयामास समरे तार्श्ररिय महागजम् ॥ ७ ॥ विहाय राक्षस
युद्धे शैनेयो रथिनांयर । प्राज्योतिषाय चिक्षेप शरान् सन्नत पर्यण । ८ ॥ तस्य
प्राज्योतिषो राजा माधवस्य महद्बु । चिच्छेद शतधारेण भलेन वृत्तहस्तघत ॥ ९ ॥

अध्याय ११२ ॥

संजय बोले कि युद्ध में शस्त्रोंसे अलंकृत भीष्म के सम्मुख जाते हुए सात्यकी
को बड़े धनुषधारी आर्ष्यंगृह्णने युद्धभूमि में रोका, हे राजा फिर अत्यन्त क्रोधित
और हँसते हुए सात्यकीने नौ बाणों से राजस को घायल किया, इक्षीनकार अत्यन्त
कोपयुक्त राजसने भी शिनिषों में श्रेष्ठ सात्यकीको पीडित किया, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त
शत्रुहन्ता सात्यकीने बाणोंकी वर्षा राजस परकी और राजसने तीक्ष्ण विशिखों से
उस सत्यपराक्रमी महाबाहु सात्यकी को घायल करके बड़े सिंहनाद को किया,
फिर राजसके हाथसे अत्यन्त घायल और रंकाहुआ महातेस्वी सात्यकीभी हँस
हँस करगर्जा इमपीछे क्रोधयुक्त भगदत्तने तीक्ष्णशरोंसे सात्यकी को ऐसा घायल
किया जैसे कि चावकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं फिर रथियों में श्रेष्ठ
सात्यकी ने उस राजसको छोड़कर गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से राजा प्राज्योतिष
को घायल किया और बड़े इस्त्रमावरी राजा प्राज्योतिषने उस सात्यकी के बड़े

CHAPTER CXII

Sanjaya continued — "Aryashring the great archer checked Satyaki going in the field of battle against Bhishma armed with weapons. Then, O king, Satyaki much enraged, yet with a smile on his face, wounded the rakshas with nine arrows. In the same manner, the enraged rakshas wounded Satyaki the best of Shims. Then Satyaki the destroyer of enemies, much enraged, showered his arrows over the rakshas, and the latter having wounded the former with his sharp arrows, roared a loud roar. Then much wounded by the rakshas and checked by him, Satyaki too laughed and roared. Then Bhagdata in anger wounded Satyaki with his sharp arrows as an elephant with goads. Then Satyaki the best of charioteers left the rakshas and wounded the king of Pragjyotish with arrows having hidden knots. The king of Pragjyotish showed the swiftness

अथान्यद्गुरुरादाय वेगवत् परवीरहा । भगदत्त रणेकुद्ध विध्वाद्य निशिते शूरे ॥ १० ॥
 सोतिविद्धो महेश्वास सृञ्जिकणी परिसंलिहन् । शक्तिं कनकवैदूर्यं भूषिता मायसीं
 दृढाम् ॥ ११ ॥ यमदण्डोपमां घोरां चिक्षेप परमाहवे । तामापतन्तीं सहसा तस्य
 वाहुर्लेरिताम् ॥ १२ ॥ सात्यकि समरे राजन् द्विधा चिच्छेद् सायकैः । तत
 पपात सहसा महोत्केय हतप्रभा ॥ १३ ॥ शक्तिं विनिहतां दृष्ट्वा पुत्रस्तव विशाम्भ
 ते । महता रथशेन धारयामास माघघ्नम् ॥ १४ ॥ तथा परिवृत्त दृष्ट्वा धाण्यं
 यानां महारथम् । दुर्योधनो भृश कुद्धो भ्रातन् सर्वानुवाचह ॥ १५ ॥ तथा
 कुष्ठ कौरव्या यथा घ सात्यकी युधि । न जीवन् प्रति निर्याति महतोस्मात् रथ
 प्रजात् ॥ १६ ॥ तस्मिन् हते हत मन्ये पाण्डवानां महद्वलम् । तथेति च वचस्तस्य
 परिगृह्य महारथा ॥ १७ ॥ शैनेय बोधयामासुर्भीष्मायाभ्युद्यतरणे । काम्बोजराजो

धनुषको सौ धारवाले भल्ल से काटा, फिर उम शत्रुहन्ता ने दूसरे वेगवान् धनुष
 को लेकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से भगदत्त को घायल किया । १०। फिर इस अत्यन्त
 घायल होठोंको चाबते बड़े धनुषधारीने सुवर्ण और वैदूर्यमणिसे अलंकृत यमराज
 के दण्ड के समान महा भयानक लोहेकी दृढ़शक्ती को फेंका हे राजा उसके
 हाथने भेरित उस अकस्मात् गिरतीहुई शक्तीको सात्यकी ने अपने बाणों से दो
 खण्ड कर के पृथीपर गिराया फिर आपके पुत्र ने शक्ती को दूराहुआ देखकर
 बड़े रथों के समूहों से सात्यकी को घेरा फिर उस सात्यकी को घिराहुआ देखकर
 अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन अपने भाइयोंसेबोला, कि हे कौरवो अब ऐसा करो जिससे
 कि सात्यकी हमारे इन रथसमूहोंसे जीवता न लौटे, उसके मरने पर मैं पाण्डवों की
 बड़ी सेनाको भी मृतकही मानताहूं तब महाराथियों ने कहा कि ऐसाही होगा, यह
 कहकर भीष्म केही आगे सात्यकीसे युद्धकिया और महावली राजा काम्बोजने
 भीष्मकी ओर जातेहुए युद्धमें प्रवृत्त अभिमन्युको रोका, अभिमन्युने गुप्त प्रन्थीवाले

of his hand by cutting Satyaki's bow with a very sharp edged dart
 Then that destroyer of enemies took up another bow and wounded
 Bhagdatta with very sharp arrows 10. Then that great archer
 much wounded and biting his lips in anger discharged a hard spear of
 iron, like the staff of Yam decked with gold and jewels, but Satyaki
 cut down into two pieces with his arrows the spear so hurled and
 coming suddenly upon him Seeing the spear cut down, your son
 surrounded Satyaki with a great many chariots Seeing Satyaki sur-
 rounded by them, enraged Duryodhan said to his brothers—
 "Kauravas! do so contrive that Satyaki may not leave the net work
 of our chariots alive. At his death I believe that all the army of
 the Pandavas will be destroyed" The warriors said in reply
 that they would do as they were told and began to fight against
 Satyaki in the presence of Bhishm The mighty king of Kamboj

बलवान् वारयामास संयुगे ॥ १८ ॥ आर्जुनिर्नृपतिर्विध्या शरैःसन्नत पर्वभिः । पुनरेव
 चतुःपश्या राजन् विध्याध तं नृप ॥ १९ ॥ सुदक्षिणस्तु समरे पुनर्विध्याध पञ्चभिः ।
 सारथिञ्चास्य नयमि रिच्छन् भीष्मस्य जीवितम् ॥ २० ॥ तद्युद्धमासीत् मुमुहत्तयो
 त्तत्रसमागमे । यदाश्वधावशक्नेयं शिखण्डी शत्रुर्शनः ॥ २१ ॥ विराटद्रुपदौ वृद्धौ
 वारयन्तौ महाचमूम् । भीष्मच युधि संरब्धा चाद्रुपन्तौ महारथौ ॥ २२ ॥ अश्वत्यामा
 रणे क्रुद्धः समियाद्रथसत्तमः । ततः प्रयवृते युद्धं तयोस्तस्यच भारत ॥ २३ ॥ विराटो
 दशभिर्मल्लै राजधान परन्तप । यतमानं महेष्यासं द्रौणिमाहयशोभिनम् ॥ २४ ॥
 द्रुपदश्च त्रिभिर्चाणैर्विध्याध निशितैस्तदा । गुरुपुत्रं समासाद्य प्रहरन्तौ महाबलौ
 ॥ २५ ॥ अश्वत्यामाततस्तौ तु विध्याध बहुभिः शरैः । विराटद्रुपदौ धीरौ भीष्मं
 प्रति समुद्यतौ ॥ २६ ॥ तत्राद्भुतमपदयाम वृद्धयोश्चरितं महत् । यद्द्रौणिसायकान्

वाणोंसे राजा को घायल करके चौंसठ वाणों से फिर व्यथित किया, इसके अन
 न्तर राजा सुदाक्षिण ने पांच वाणोंसे घायल करके नौ वाणों से उसके सारथी को
 घायल किया । २०। वहां उनदोनोंकी सम्मुखतामें बड़ाभारी युद्ध हुआ और शत्रुहन्ता
 शिखण्डी गांगेयजीकी ओर दौड़ा और युद्धमें क्रोधयुक्त महारथी दोनों विराट्
 और द्रुपद उस सेना को हटातेहुए भीष्म की ओर की दौड़े तब महाक्रोधित महारथी
 अश्वत्यामा उनके सम्मुखगया तदनन्तर उसके साथ उन दोनों का बड़ा युद्ध जारी
 हुआ फिर राजा विराट् ने उस उपाय करनेवाले और युद्ध में शोभा पानेवाले बड़े
 धनुषधारी अश्वत्यामाको दश भल्लों से घायल किया फिर द्रुपदने तीक्ष्ण धारवाले
 तीन वाणों से घायल किया फिर वह दोनों गुरु के पुत्रको सम्मुख पाकर प्रहार
 करने लगे, तदनन्तर अश्वत्यामाने उन भीष्मजी के ऊपर युद्ध में प्रवृत्त विराट् और
 द्रुपदको अनेक वाणों से घायल किया । २६। वहां हमने उन दोनों वृद्धोंके बड़ेभारी

checked Abhimanyu who was coming towards Bhishm. Abhimanyu,
 having wounded the king with his arrows having hidden knots,
 pierced him again with sixtyfour arrows. Then king Sudakshin
 wounded his coachman with five and nine arrows. 20. The two
 warriors fought very hard. Shikhandi the destroyer of foes rushed
 upon Bhishm and the two warriors Virat and Drupad, much enraged
 in battle, rushed against Bhishm, pushing aside the armies. Then
 valliant Ashwathama much enraged faced him and the two fought
 very bravely. Then the king of Virat with ten darts wounded the
 great archer Ashwathama and Drupad wounded him with three.
 Then the two warriors finding themselves face to face with the son
 of acharya, began smiting him with their arrows. Ashwathama then
 wounded with many arrows the two warriors Virat and Drupad
 advancing against Bhishm. 26. There we saw the bravery of the

घोषान् प्रत्येधारयतां युधि ॥ २७ ॥ सह देवं तयायान्तं कृप शारद्वतोभ्यधात् ।
 यथा नागो घने नागं मत्तो मत्तनपाद्भवत् ॥ २८ ॥ कृपश्च समर शूरो माद्रीपुत्र
 महारथम् । आजघान शरैस्तूर्ण सप्तथारुस्मभूषणैः ॥ २९ ॥ तस्य माद्रीसुतश्चप
 द्विधा चिच्छेद सायकैः । अथेनं त्स्निग्धन्वान विष्याथ नवभिः शरैः ॥ ३० ॥ सोम्यत्
 कार्मकमादायसमरेभारसाधनम् । माद्रीपुत्रं सुसंहृष्टो दशभिर्भिदिशितैः शरैः ॥ ३१ ॥
 आजघानो रसि कुक्ष इच्छन् भीष्मस्य जीवितम् । तथैव पाण्डवो राजञ्छारद्वतम
 मर्षणम् ॥ ३२ ॥ आजघानो रसि कुक्षो भीष्मस्य ययकक्षया । तयोर्युद्धं समभवत्
 घोररूपं भवावहम् ॥ ३३ ॥ नकुलन्तु रणे कुक्षो विकर्णः शत्रुनापन । विष्याथसाय
 कं पथ्या रक्षन् भीष्मं महाबलम् ॥ ३४ ॥ नकुलोपि भूय विद्वलव पुत्रेण धीमता ।
 विकर्ण सप्तसप्तत्या निर्विभेद् शिलीमुखैः ॥ ३५ ॥ तत्र तौ नरशार्दूलौ भीष्महेतोः परन्तपौ ।

कर्मको देखा कि युद्ध में अश्वत्यामा के महाघोर भयानक बाणों को रोका, और
 कृपाचार्यजी उस जातेहुए सहदेवके सम्मुख ऐंभे गये जैसे कि वन में पनवाला हाथी
 मतवाने हाथी के सम्मुख जाताहै, वहां शीघ्रशी शूरवीर कृपाचार्यने बड़े तीव्र मचर
 बाणोंसे सहदेव को घायल किया, फिर सहदेव ने उनके धनुष के स्रण्ड २ करके
 नौ बाणों से उनको घायल किया । ३० । भीष्मके जीवन को चाहते उस भयानक
 चित्त और क्रोध में युक्त कृपाचार्य ने माद्रीनन्दन सहदेवको तीव्र दश बाणों मे
 छाती के ऊपर घायल किया हे राजा इमप्रकार भीष्मके मारने की इच्छासे असह
 क्रोध भरे सहदेव ने कृपाचार्यको भी छातीपर घायल किया तब उन दोनों
 का महाघोर और भयानक युद्धहुआ, इसके पीछे शत्रुसंतापी युद्धमें व्रोजित
 महाबली विकर्ण ने नकुलको सात बाणों से घायल किया तब आपके पुत्रमे अत्य
 न्त घायल नकुलने भी सत्तर शिलीमुख बाणोंमे विकर्णको घायल किया, फिर
 उन शत्रुसंतापी वीरोंने भीष्मके कारण परस्पर में ऐंभे प्रहार किये जैसे कि गो-

two old kings in checking the flight of Aswathama's arrows. Kripa
 charya rushed upon Sahadev as one mad elephant in a forest in he
 against another. Valant Kripacharya soon wounded Sahadev with
 seventy sharp arrows. Sahadev in his turn cut his bow into pieces
 and wounded him with nine arrows 30 Desirous of protecting
 Bhishma's life, cheerful minded and enraged, Kripacharya wounded
 with ten swift arrows Sahadev the son of Madri in the breast. Desir
 ous of slaying Bhishm, untearable and enraged, Sahadev wounded
 Kripacharya on the breast and the two warriors fought very bravely
 Then the destroyer of enemies, enraged in battle, the brave warrior,
 Vikarn wounded Sahadev with seven arrows Much wounded by
 your son, Nakul, with seventy seven arrows sharpened on stone,
 wounded Vikarn on the breast. Then these warriors, destroyers of
 enemies, fought against each other on account of Bhishm like two

अन्योन्यं जघ्रतुर्वीरौ मांष्टे गोटुपनाविव ॥ ३६ ॥ घटोत्कचं रणयान्तं निघ्नन्तं तववादि
 नीम । दुर्मुखः समरे प्राधाद् भीष्महेतोः पराक्रमा ॥ ३७ ॥ हृदिभ्यस्तु रणे राजन्
 दुर्मुखं शत्रुतापनम । आजघानोरनि कुक्षः शरैःपानतपर्वणा ॥ ३८ ॥ भीमसेनमुतशापि
 दुर्मुखः समुल्लैः शरैः । पश्यावीरौ नदन् दृष्टो विन्नाथ रणमूर्च्छति ॥ ३९ ॥ घृष्टघुम्नं
 तथायान्तं भीष्मस्य वधकाक्षिणम् । हाद्विन्यो वारयामात् स्वश्रेष्ठे महारथ्ये ॥ ४० ॥
 हाद्विक्यः पार्थेववापि विध्वाणन्वभिराधरैः । पुनः पञ्चाशतानूर्णे तिष्ठ तिष्ठेति
 चात्रवीत् ॥ ४१ ॥ आजघान महाबाहुः पार्थिते महारथ्य । ते चैव पार्थिवो राजन् हाद्विक्यं
 नयमिःशरैः ॥ ४२ ॥ विन्नाथ निशितस्तीक्ष्णः कद्रुपश्चरजिहमैः । तथोः समभवद्युद्धं
 भीष्महेतोर्माहाह्वये ॥ ४३ ॥ अन्योन्यानि शय्युक्तं यथा वृत्रमहेन्द्रयोः । भीमसेनं तथा
 पान्ते भीष्मं प्रति महारथ्यम् ॥ ४४ ॥ भूरिश्रवाभययात्तुं तिष्ठतिष्ठेति चात्रवीत् । सौम

शाला में दो टपभपहार करते हैं, भीष्म के कारण से पराक्रम करने वाला दुर्मुख
 युद्धमें आपकी सेनाको मारने वाले और घृते हुए घटोत्कच के सम्मुख गया
 । ३७ । फिरक्रोधयुक्त घटोत्कच ने गुप्तग्रन्थी वाले शरों से उस शत्रुसंतापी दुर्मुख
 को छातीपर घायल किया, फिर गर्जना पूर्वक प्रमत्त चित्त दुर्मुखने भी सुन्दर
 मुपराते नाठ बाणों से भीमसेन के पुत्र घटोत्कचको घायल किया, इसीप्रकार
 पंजरधी कृतवर्मा ने भीष्मके मारनेकी इच्छा रखनेवाले रथियों में श्रेष्ठ जातेहुए
 घृष्टघुम्न को रोका । ४० । फिर कृतवर्मानेभी पांच तीक्ष्ण बाणोंसे घृष्टघुम्नकोघायल
 करके पचास बाणों से शीघ्रही छाती में घायल किया, इसी प्रकार घृष्टघुम्न ने
 तीक्ष्ण कंकपक्षवाले नौ बाणों से कृतवर्मा को घायल किया युद्धमें भीष्मके कारण
 उने दोनोंका ऐमाकटिन युद्धहुआ जैसेकि वृत्रामुर और इंद्रका हुआया, इसीप्रकार
 भूरिश्रवा उन भीष्मकी ओर जाते महारथी भयमेन के सम्मुख शीघ्रता से गया
 और तिष्ठ २ शब्द बोला, उसके पीछे तोमदच के पुत्र भूरिश्रवाने युद्ध में तीक्ष्ण

angry bulls in the fold. Showing his prowess for the sake of Bhishm, Durmukh faced Ghatotkach who was roaring there and destroying your armies 37. Enraged Ghatotkach wounded Durmukh the terror of enemies on the breast with arrows having hidden knots. Then with a roar Durmukh of cheerful spirit wounded Ghatotkach the son of Bhim with sixty arrows. In the same manner, Kritvarma checked Dhrishtadyumn the best of charioteers, desirous of slaying Bhishm 40. Kritvarma too, with five and fifty iron arrows wounded Dhrishtadyumn on the breast. In the same manner, Dhrishtadyumn wounded Kritvarma with nine sharp arrows having vulture quills. The two heroes fought for the sake of Bhishm like Indra and Vritrasur. Bhurishrava encountered brave Bhim who was going towards Bhishm and stopped him with a stay, stay. Then Bhurishrava the son of Gandatta wounded Dhrishtadyumn

दक्षिणधोमीममाजघान सनान्तरे ॥ ४५ ॥ नाराचेन भृतीक्षणेन द्रुमपुत्रेण सयुगे ।
 उरस्थेन वभौ तेन भीमसेन प्रतापवान् ॥ ४६ ॥ स्कन्दशक्त्या यथा कौच पुरा
 नृपतिस्तम । तौ शरान् सूर्यसकाशान् कर्मारपरिमाज्जितान् ॥ ४७ ॥ अन्योन्यस्य
 रणे क्रुद्धौ चिक्षिपाते नरपभौ । भीमो भीष्मवधाकाक्षी सौमदक्षि महारथम् ॥ ४८ ॥
 तथा भीष्मजये गृध्नु सौमदक्षिस्तु पाण्डवम् । कृतप्रतिकृते यत्तौ योधयामासतुरणे
 ॥ ४९ ॥ युधिष्ठिरन्तु कान्तेय महत्या सेनयादृतम् । भीष्मामिमुपमायान्त भारद्वाजो
 न्यवारयत् ॥ ५० ॥ द्रोणस्य रथनिर्घोष पर्जन्य नित्दोषमम् । श्रुत्या प्रभद्रका
 राजन् समकम्पन्त मारिप ॥ ५१ ॥ सा सेना महती राजन् पाण्डुपुत्रस्य संयुगे ।
 द्रोणेन वारिता यत्ता न चचालपदात् पदम् ॥ ५२ ॥ चेकितान रणे यत्त भीष्म
 प्रति जनेश्वर । चित्रसेनस्य सुन क्रुद्धरूपमवारयत् ॥ ५३ ॥ भीष्महेतो पराश्रान्त

मुनहरी पुंखवाले नाराच वाणसे भीमसेनको छती में घायल किया प्रतापवान् भीम
 सेन उस छाती पर नियत हुए वाणसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्व समयमें
 स्वामिकार्त्तिकजी की शक्तीसे कौचनाम पर्वत शोभायमान हुआ था, युद्धमें
 क्रोधयुक्त उन दोनों नरोत्तमों ने सूर्य के समान प्रकाशित और साफ किये हुए
 वाणों को परस्परमें फेका, फिर भीष्म के मारने की इच्छारखने वाले भीमसेनने
 महारथी भूरिश्रवाको और भूरिश्रवा ने भीमसेन को घायल किया, महार पर
 महार करने में कुशल वह दोनों युद्धमें संग्रामकर्त्ता हुए फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य
 जी ने बड़ी सेना समेत भीष्मके सम्मुख जाते हुए कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को
 रोका हेराजा द्रोणाचार्य के रथका शब्द बादल के समान था उसको सुनकर
 । ५० । प्रभद्रक नाम राजकुमार बड़े कम्पायमान हुए और पाण्डवों की वह
 बड़ी सेना बुद्धिमान द्रोणाचार्य से रोकी हुई चरण से एक पदभी चलाने वाली
 नहीं हुई और युद्धमें कुशल भीष्म के ऊपर कोप युक्त चेकितान को आप के पुत्र
 चित्रसेन ने रोका पराक्रमी चित्रसेन भीष्मजी के लिये पराक्रमकरने वाली हुआ हेराजा

son on the breast with sharp arrows having golden feathers With
 the arrows piercing his breast, Bhimsen looled glorious like Kraunch
 mountain pierced in the days of old with the spear of Lord
 Kartikeya Enraged in little the two best of men discharged at
 each other bright arrows glorious as the sun Bhim desirous of slay
 ing Bhishm wounded Bhurisharya and was himself wounded by him
 in return The two clever warriors fought valiantly Bhardwaj
 Dronacharya with his huge army checked the advance of Yudhish
 thir the son of Kunti The sound from the chariot of Dronacharya
 was like the peal of thunder on hearing which (50) the Prabhadraks
 shook with fear The large army of the Pandavas checked by
 Dronacharya, remained motionless Your son Chutrasen checked

चित्रसेनः पराक्रमी । चेकितान परं शक्या योधयामास भारत ॥ ५४ ॥ तथैवचेकि
तानोपि चित्रसेनमवारयत् । तद्युद्धमासीत् सुमहत् तयोस्तत्र समागमे ॥ ५५ ॥
अर्जुनो धार्थ्यमाणस्तु बहुशस्तत्र भारत । विमुषीकृत्य पुत्रं ते सेनां तव ममईह
॥ ५६ ॥ दुःशासने पि परया शक्या धार्थ्यमवारयत् । कथं भीष्मं ननो हन्या दिनि
निश्चित्य भारत ॥ ५७ ॥ सा पथ्यमाना समरे पुत्रस्य तव वाहिनीः । खोष्यते
यधिभिः श्रेष्ठैस्तत्र तथैव भारत ॥ ५८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वन्द्वसमागमे
द्वादशाधिकशतौऽध्यायः ॥ ११२ ॥

सञ्जय उवाच । अथ धीरो महेश्वासी मत्तवारणविक्रमः । समादाय महेश्वायं
मत्तवारणवारणम् ॥ १ ॥ विधुन्वानो नरश्रेष्ठो द्राव्ययाणो बरुयिनीम् । पृतनां
पाण्डवेयानां गाहमानो मदायञ्ज ॥ २ ॥ निमित्तानि निमित्तञ्चः सर्वतो धार्य धी-

उस चित्रसेनने बड़ी सामर्थ्य से चेकितानसे युद्ध किया इसी प्रकार चेकितानने भी चित्र-
सेन को रोका, उस समय पर उन दोनों का युद्ध बहुत बड़ा हुआ और वहाँ पर रूके
हुए अर्जुन ने बहुत प्रकार से, आपके पुत्र का मुल मोड़कर आपकी सेनाका मर्दन
किया और दुःशासनने भी बड़ेपराक्रमसे यहनिश्चय करके अर्जुनको रोका कि
यह किसी प्रकारसे हमारे पितामह भीष्मजीको नहीं मारे हेभरतर्षभयुद्धमें आप के
पुत्रकी वह घायल हुई सेना उत्तम २ रथियों समेत जहाँ तहाँ अचेत होकर
गिरी और भाग गई ५७ ॥

अध्याय ११२ ॥

सञ्जय बोले कि फिर बड़े धनुषधारी मतवाले दायी के समान पराक्रमी
नरोत्तम महाबली द्रोणाचार्य भी महागमेन्द्र के हटने वाले बड़े धनुष को लेकर
सबको कँपते सेना को घायल करते हुए पाण्डवी सेना को मर्राते संतप्त करते हुए

Chakitan who came furiously against Bhishm. Chitrasen did deeds
of valour for the sake of Bhishm. The two warriors fought very
bravely and checked each other. Their fighting was tremendous.
Arjun checked there in his advance made your son turn back and
destroyed your armies. Dushasan too, desirous of protecting
Bhishm, checked Arjun. The army of your son wounded in battle
fell senseless here and there or left the field of battle." 57.

CHAPTER CXIII.

Sanjaya said: Then the great archer, full of prowess like a mad
elephant, best of men, valliant Dronacharya took up his large bow
capable of turning back a huge elephant, wounding and shaking the
Pandav armies, and seeing signs on all sides, said to his son Ashwa-

यध्वान् । प्रतपन्तमनीकानि द्रोण, पुत्रमभापत ॥ ३ ॥ अयं हि द्विवसस्तात यत्र
 पार्थो महाबल । त्रिधांसु, समरं मीधं परं यत्नं करिष्यति ॥ ४ ॥ उत्पतन्ति
 हि मे वाणा धनुः प्रस्फुरतीवच । योग मस्त्राणि गच्छन्ति हरे मे वचते मतिः ॥ ५ ॥
 दिव्यशान्तानि घोरान्णे व्याहरन्ति मृगछिजाः । नीचैर्गुह्रानि लीयन्ते भारतानां
 चमूं प्रति ॥ ६ ॥ नटप्रभ इवादित्यः सर्वतो लोहिता दिशः । रसते द्ययते
 भूमि कम्पतीव च सर्वशः ॥ ७ ॥ कङ्कुगृध्रा बलाकाश्च व्याहरन्ति मुहुर्महुः ।
 शिवाश्वैवाशिवा घोरा वेद्यन्त्यो महद्भयम् ॥ ८ ॥ पपात महती चोल्का मध्ये
 नादित्यमण्डलात् । स्रजन्वश्च पारथा मानुमावृत्य तिष्ठति ॥ ९ ॥ परिवपस्तथा
 घोरश्चन्द्रभास्करयोरभूत् । वेद्यानो भयं घोरं राज्ञा देहावर्कचर्चनम् ॥ १० ॥ देव
 तायतनस्याथ कौरवेन्द्रस्य देवताः । कम्पन्ते च हसन्ते च नृत्यन्ति च रुदन्ति च ॥११॥

सब और से बिहनों को देखकर अपने पुत्र अश्वत्यामा से बोले । ३ । हे पुत्र
 यह वह दिन है जिसमें युद्धके बीच भीष्मको मारना चाहता महाबली अर्जुन बड़े २
 उपायोको करेगा तयोक्तिमें वाण उछलनेहै और धनुष कंपायमान होताहै और अस्त्रयोग
 को मान होने है और मेरी मति कूर्वर्त्तमान है दिशाओंमें शास्त्रीसे रहित भयकारी पशु
 पत्नी बोलनेहै और भरत शिशियोंकी सेनामें गृध्र नीच पक्षियोंके साथ बैठे हैं, सूर्यमभासे
 रहित हैं और दिशा सब आरसे लाल है और पृथ्वी सब प्रकार से शब्दायमान
 और पी, डिन होकर कांपती है कंक गृध्र और बलक वारम्पार बोलते हैं अशुभ
 भयानक शृगाल बड़े भय को प्रकट करतेहुए बोलतेहैं सूर्यमण्डलमें बड़े उल्कापात
 होते हैं एत वंश परितः सूर्य को ढककर नियत है इसी प्रकार, चन्द्रमा और सूर्य
 का भयकारी प्रदेश अर्थात् पारस नाम मण्डल राजाओं के शरीरों का नाश कर
 ने वाला महाभयको उत्पन्न करता हुआ वर्त्तमान हुआ है । १० । और राजा कुरु
 के मन्दिर में विराजमान देवता कांपते हँसते नाचते और रोवते हैं ग्रहों ने सूर्य
 को दक्षिणशेकर चिह्नसे रहित कर दिया और भगवान् चन्द्रमानीचे मुख होकर

thamr. " This is the day on which Arjun will try his best to kill
 Bhishm in battle; for my arrows jump up, the bow shakes and other
 weapons offer resistance My ideas are going wrong and the beasts
 and birds in all directions utter ominous sounds. Vultures are perched
 side by side with lower birds in the army of the Kauravas The sun is
 dim and the directions are all The earth gives out sounds and signs
 of trouble Kank birds, vultures and herons cry again and again.
 Ominous and dreadful jackals utter cries of distress The sun's orb
 is giving out large sparks of fire and a bar is seen hiding the sun.
 The circles round the sun and the moon portend a dreadful slaughter
 of kings 10- The gods in the palace of the king of Kurus are
 shaking, laughing dancing and weeping The stars to the right of
 the sun have changed their signs and the moon hangs down her face-

अपसन्त्य ग्रहाश्चक्रुरलक्ष्माणं त्रिवाकरम् । अत्रात्रशिराश्च भगवा नृपातिष्ठन् चन्द्रमा
 ॥ १२ ॥ वयूपि च नटे-द्राणां त्रिगताभानि लक्षये । धातंराष्टस्य संन्येषु नच भ्राजति
 दक्षिता ॥ १३ ॥ सेनयोरनयोथापि समन्ताच्छयते महान् । पाञ्चजन्यस्य निर्घोषे
 गाण्डीवस्य च निस्त्रत ॥ १४ ॥ भुवमास्थाय शिभत्सु रुत्तमास्त्राणि सयुगे ।
 अपास्या न्यान् रणे योधानप्येष्यति पितामहम् ॥ १५ ॥ दृष्यन्ति रोगकृपाणि सीदतीर
 च मे मन । चिन्तयित्वा महाबाहो भीष्माज्जेनसमागमम् ॥ १६ ॥ तच्चेह निरु
 तिप्रक्ष पाञ्चाल्य पापचैतसम् । पुरस्कृत्य रणे पार्थो भीष्मस्यायोधनं गत ॥ १७ ॥
 अत्रवीच्य पुरा भीष्मो नाह हन्या शिष्मणिडनम् । स्त्री होषा विहिता धात्रा दीराच्च
 स पुन पुमान् ॥ १८ ॥ समद्रव्यध्वजश्च यद्दसेनिर्महायलः । न चागद्रुदिके
 तस्मिन् प्रहरेदापगामुत ॥ १९ ॥ एतद्विचिन्तयानस्य मज्जा सीदति मे भृशम् ।

वर्तमान हुए राजाओं के शरीर शोभा से रहित दीख रहे हैं वह शस्त्रधारी अलंकृत
 राजा लोग दुर्योधन की सेनामें शोभायमान नहीं हैं दोनों सेनाओं में चारों ओर
 को जसी पांचजन्य शंख और गाण्डीवधनुष के शब्द सुने जाते हैं निश्चय करके
 वीर अर्जुन युद्ध में दिव्य अस्त्रों को धारण करके युद्ध करने वाले अ य शूर वीरों
 को छोड़कर पितामह के सम्मुख जायगा, हे महाबाहु अश्वत्थामा भीष्म और
 अर्जुन की सम्मुखता को शोचकर मेरेरोयें खड़े हुए जाते हैं और चित्त भी
 पीड़ामान् होता है वहां अर्जुन उस लक्ष्मी और पापात्मा शिखंडी को आगे करके
 भीष्म के मारने को गयाहे पूर्व समय में भीष्मने कहा था कि मैं शिखंडी को नहीं
 मारंगा क्योंकि उसको ईश्वर ने पहले स्त्री किया था फिर प्राग्ध मे पुरुष होगया
 है, यह यज्ञसेन का पुत्र महावली अशुभ ध्वजावाला है इस हेतु से गांगेय भीष्मजी
 उस अमान्य रूप पर प्रहार नहीं करेंगे यह विचारकर मेरेचित्त में बड़ा खेद होता

The faces of the kings have lost their splendour: the princes armed and decked in the armies of Duryodhan donot look splendid. On all sides and in both the armies are heard the sounds of the conch Panchjanya and the bow Gandiv. Surely brave Arjun, armed with divine weapons, leaving other warriors aside, will face the grandfather. My hair, brave Ashwathama, stand on end when I think of the encounter between Bhishma and Arjun. My mind is distressed to think that Arjun under the cover of that deceitful and wicked Shikhandi has gone to slay Bhishma. Bhishma has already said that he will not lay hands on Shikhandi who was originally a woman and turned to manhood as luck would have it. This son of Yajnasen is of great strength and has ominous banner and therefore Bhishma will not discharge his weapons at him. I am much distressed when I happen to think of this Shikhandi desirous of fighting and eager

उर्येजान् । प्रतपन्मनीकानि द्राण पुत्रमभाषत ॥ ३ ॥ अथ हि दिवसस्तात यत्र
 पार्यो महाबल । जित्रासु समर भीष्म पर यत्न करिष्यति ॥ ४ ॥ उत्पतन्ति
 हि म वाणा वदु प्रस्फुरतीवच । योग मन्त्राणि गच्छन्ति भूरे मे वक्षते मति ॥ ५ ॥
 दिव्यशान्तिनि घोराण व्याहरन्ति मृगशिजा । नीचैशुधानि लीयन्ते भारताना
 चमू प्रति ॥ ६ ॥ नटप्रभ इवादित्य सर्वतो लोहिता दिश । रसते घ्यथते
 भूमि कम्पनीव च सवश ॥ ७ ॥ कङ्कगृध्रा बलाकाश्च व्याहरन्ति सुहृमृदु ।
 शिवाश्चैवाशिया घोरा वेद्यन्त्यो महद्भयम् ॥ ८ ॥ पपात महती चोल्का मध्ये
 नादित्यमण्डलात् । स ऊव-वश्च पारथा भानुमावृत्य तिष्ठति ॥ ९ ॥ परिवपस्तथा
 घोरश्च-द्रभास्करयोरभूत् । वेद्यानो भव घार राक्षा देहावर्कत्तनम् ॥ १० ॥ देव
 तायतनस्याव कौरव-द्रस्य देवता । कम्पन्ते च हसन्ते च नृत्यन्ति च रुदन्ति च ॥११॥

सब और से बिह्नो को देखकर अपने पुत्र अश्वत्थामा से बोले । ३ । हे पुत्र
 यह वह दिन है जिसमें युद्धके बीच भीष्मको मारना चाहता महाबली अर्जुन वदे २
 उपायोंको करेगा क्योंकिमेरे बाणउछलनेहै और धन्य कपायमान होताहै और असुरयोग
 को मानहोते है और मेरी मति कूर्पच जान है दिशाओंमें शान्तीमें रहित भयकारी पशु
 पत्नी योग्यते, और भरतशिश्योंकी भेनामे गृध्र नीच पक्षियोंकेसाथबैठे है, सूर्यमभासे
 रहित है और दिशा मत्र औरमे लाल है आर पृथ्वी सब प्रकार से शब्दायमान
 और पी डेन होकर कापनी है कफ गृध्र और बलक वाग्म्यार बोलते हैं अशुभ
 भयानक शान्त बड़े भय को प्रकट करेहूए बोलतेहैं सूर्यमण्डलमेंसे बड़े उल्कापात
 होते हैं एक वज्र परिव मर्त्य को ढककर नियत हैं इसी प्रकार चन्द्रमा और सूर्य
 का भयकारी प्रदेश अर्थात् पारस नाम मण्डल राजाओ के शरीरों का नाश कर
 ने वाला महाभयको उत्पन्न करता हुआ वर्चमान हुआ है । १० । और राजा कुरु
 के मन्दिर में विराजमान देवता कांपते हंसते नाचते और रोचते हैं ग्रहों ने सूर्य
 को दक्षिणहोकर चिह्नसे रहित कर दिया और भगवान् च दूमानिचे मुख होकर

tham This is the day on which Arjuna will try his best to kill
 Bhishma in battle, for my arrows jump up the bow shafts and other
 weapons offer resistance My iders are going wrong and the beasts
 and birds in all directions utter ominous sound Vultures are perched
 side by side with loer birds in the army of the Kauravas The sun is
 dim and the directions are red The earth gives out sounds and signs
 of trouble King birds vultures and herons cry again and again
 Ominous and dreadful noises utter cries of distress The sun's orb
 is giving out large sparks of fire and a bar is seen hiding the sun
 The circles round the sun and the moon portend a dreadful slaughter
 of King 10- The gods in the place of the king of Kurus are
 shaming laughing dancing and weeping The stars to the right of
 the sun have changed their signs and the moon hangs down her face

अपसव्य ब्रह्मधकुरलक्ष्माणं दिवाकरम् । अत्राकृशिराथ मग्ना नृपातिष्ठत चन्द्रमाः
 ॥ १२ ॥ वपुषि च नरेन्द्राणां विगतामानि लक्षये । धार्तराष्ट्रस्य सैन्येषु न च भ्राजति
 दंशिताः ॥ १३ ॥ सेनयोरुभयोथापि समन्ताच्छ्रूयते महान् । पाञ्चजन्यस्य निर्घोषो
 गाण्डीवस्य च निस्वनः ॥ १४ ॥ भुजमास्थाय क्षिप्तस्तु रुचमास्त्राणि संयुगे ।
 अपास्या न्यान् रणे योधानस्येष्यति पितामहम् ॥ १५ ॥ दृष्यन्ति रोमकूपाणि सीदतीद्य
 च मे मनः । चिन्तयित्वा महाबाहो भीष्मानुनसमागमम् ॥ १६ ॥ तच्चेह निरु
 तिप्रक्षं पाञ्चाल्य पापघतसम् । पुरस्कृत्य रणे पार्थो भीष्मस्यायोचनं गतः ॥ १७ ॥
 अत्रैवाच्च पुरा भीष्मो नाहं हन्यां शिकण्डिनम् । स्त्री होषा विहिता धाम्ना देवान्च
 स पुनः पुमान् ॥ १८ ॥ जमदग्न्यध्वजश्चैव यावत्सेनिर्महाबलः । न चामद्भुलिको
 तस्मिन् प्रहरेदापगामुतः ॥ १९ ॥ एतद्विचिन्तयानस्य मञ्जा सीदति मे भृशम् ।

वर्तमान हुए राजाओं के शरीर शोभा से रहित दीख रहे हैं वह शङ्खधारी असंक्रुत
 राजा लोग दुर्योधन की सेनामें शोभायमान नहीं हैं दोनों सेनाओं में चारों ओर
 को उसी पांचजन्य शंख और गाण्डीवधनुष के शब्द सुने जाते हैं निश्चय करके
 वीर अर्जुन युद्ध में दिव्य अस्त्रों को धारण करके युद्ध करने वाले अन्य शूर वीरों
 को छोड़कर पितामह के समुत्त जायगा, हे महाबाहु अश्वत्थामा भीष्म और
 अर्जुन की सम्मुखता को शोचकर मेरेरोयें खड़े हुए जाते हैं और चित्त भी
 पीड़ामान होता है वहां अर्जुन उस छली और पापात्मा शिकंडी को आंग करके
 भीष्म के मारने को गयाहै पूर्व समय में भीष्मने कहा था कि मैं शिकंडी को नहीं
 मारंगा क्योंकि इसको ईश्वर ने पहले स्त्री किया था फिर प्रारब्ध से पुरुष होगया
 है, यह यज्ञसेन का पुत्र महाबली अशुभ ध्वजावाला है इस हेतु से गांगेय भीष्मजी
 उस अमंगल रूप पर प्रहार नहीं करेंगे यह विचारकर मेरेचित्त में बड़ा खेद होता

The faces of the kings have lost their splendour: the princes armed and decked in the armies of Duryodhan donot look splendid. On all sides and in both the armies are heard the sounds of the conch Panchjanya and the bow Gandiv. Surely brave Arjun, armed with divine weapons, leaving other warriors aside, will face the grandfather. My hair, brave Ashwathama, stand on end when I think of the encounter between Bhishm and Arjun. My mind is distressed to think that Arjun under the cover of that deceitful and wicked Shikhandi has gone to slay Bhishm. Bhishm has already said that he will not lay hands on Shikhandi who was originally a woman and turned to manhood as luck would have it. This son of Yajyason is of great strength and has ominous banner and therefore Bhishm will not discharge his weapons at him. I am much distressed when I happen to think of this. Shikhandi desirous of fighting and enrag-

अभ्युद्यतोरणे पार्थः कुरुवृद्धमुपाद्रवत् ॥ २० ॥ युधिष्ठिरस्य च क्रोधो भीष्मञ्चा
 र्जुनसङ्गत । मम चास्त्र समाग्भः प्रजानामशिवं ध्रुवम् ॥ २१ ॥ मनस्वी यलवान्
 शूरः कृतास्त्रो लघुविक्रम । शूरपाती दृढेपुद्ग च निमित्तज्ञश्च पाण्डवः ॥ २२ ॥ अजेयः
 समरे चापि देवैरपि सवासवैः । यलवान् युद्धिमाधैव जितकलेशो युधांधर ॥ २३ ॥
 विजयी च रणे नित्यं भैरवज्ञश्च पाण्डवः । तस्य मार्ग परिहरन् द्रुतं गच्छ यतव्रत
 ॥ २४ ॥ पश्याद्यैतमहाघोरे संयुगं वैशसं महत् । हेमच्चित्राणि शूराणां महाग्नित्व
 शुभानि च ॥ २५ ॥ कथंचान्य घदीर्यन्ते शरैः सप्रतपर्वभिः । छिद्यन्ते च
 ध्वजाप्राणि तोमराश्च धनुषि च ॥ २६ ॥ प्रासादश्च विमलास्तीक्ष्णाः शक्यस्यश्च
 कनकोज्ज्वलाः । वैजयन्त्यश्च नागानां संयुद्धेन किरिटिना ॥ २७ ॥ नायं संरक्षितुं

है युद्धमें प्रवृत्त चित्त क्रोधभरा शिखंडी भी कौरवों के दृढ़ पितामह भीष्मजी के
 सम्मुख गया है । २० । युधिष्ठिर को क्रोध और अर्जुन से सम्मुख हुआ भीष्म
 और यहाँपर मेरा युद्धसम्बन्धी कर्मका प्रारम्भ यह सब बातें निश्चय करके
 मजाप्राँ के अकल्याण की करनेवाली हैं, पांडव अर्जुन साहसी पराक्रमी शूरीर
 अस्त्र शस्त्रों का ज्ञाता बड़े तीक्ष्ण दूर गिरने वाले बाणोंका फेंकनेवाला और लक्ष्य
 भेदी अर्थात् लक्ष्य का जाननेवाला है, यह अर्जुन इन्द्र समेत देवताओं से भी
 युद्धमें दुर्जय और अजेय है और पराक्रमी बुद्धिमान् दुःख रोगादि का जीतने
 वाला शूरीरोंमें श्रेष्ठ युद्धमें सदैव विजयी और भयकारी अस्त्रोंका फेंकने वाला है
 हे सावधान व्रत पुत्र तुम अर्जुन के मार्ग को रोकते हुए शीघ्र जाओ अब इस
 महा भयकारी युद्धमें इस बड़े नाश को देखो शूर लोगों के कवच जो सुवर्ण से
 जटित और बड़े मंगल स्वरूप हैं वह सब गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से तोड़े जाते हैं और
 ध्वजा तोमर धनुषमी खंड २ क्रिये जाते हैं, और अत्यंत क्रोधयुक्त अर्जुन के हाथ
 से साफ और तेजपास और सुवर्ण के समान उज्ज्वल शक्तियाँ और हाथियाँ

ed in battle has also gone to face the grandfather, 20 . Yushthir's
 anger, Arjun's encounter with Bhishm and my fighting here all these
 things portend ill to the people. Arjun the Pandav is courageous,
 strong, valliant and clever in the use of weapons and he throws his
 sharp arrows far and hits the mark. Arjun is invincible by Indra
 and other gods. He is full of prowess, wise, conquerer of pain and
 sickness, best of warriors, ever conquering, terror-striking and dis-
 charger of weapons. Haste, son, check Arjun's advance and see
 the dreadful slaughter in battle. The armours of the warriors, gold
 bedecked and of beautiful make, are being pierced by arrows having
 hidden knots and the banners, tomars and bows are being broken
 into pieces. Sharp prases, spears bright as gold, and banners on
 elephants are being cut down by Arjun. It is no time, my son to
 remain idle and to rely or the assistance of others Think of heaven

कालः प्राणान् पुत्रोपजीविभिः । याहि स्वर्गं पुरस्कृत्य यशसे विजयाय च ॥ २८ ॥
 रथनागहवायर्चा महाघोरां सुदुर्गमाम् । रथेन संप्रामनदां तरत्येव कपिध्वजः ॥ २९ ॥
 ब्रह्मण्यता दमो दानं तपश्च चरितं महत् । इहैव हृदयते पार्थे भ्राता यस्य धनञ्जयः
 ॥ ३० ॥ भीमसेनश्च धलवारु माद्रीपुत्री च पाण्डवौ । वासुदेवश्च धार्व्यो यस्य
 नाथो व्यवस्थितः ॥ ३१ ॥ तस्यैव मन्वुप्रभवो धार्तराष्ट्रस्य दुर्मतेः । तपोदग्ध
 शिरस्य कोपो दहति भूरतीम् ॥ ३२ ॥ एव संदृश्यते पार्थो वासुदेवव्यपाश्रयः ।
 दारयन् सर्वसैन्यानि धार्तराष्ट्राणि सर्वशः ॥ ३३ ॥ एतदालोक्यते सैन्यं सोभ्य
 माणं किरीटिना । महोर्मिनसं सुमहत्तमिनेय महाजलम् ॥ ३४ ॥ हाहाकिलकिला
 शब्दाः श्रूयन्ते च समुखे । याहि पाञ्चालदायाद् महं यास्ये युधिष्ठिरम् ॥ ३५ ॥
 दुर्गमं हान्तर राज्ञो व्यूहस्यामिततेजसः । समुद्रकुक्षिप्रतिभं सर्वतोतिरथैः स्थितैः

की वैजयन्ती अर्थात् पत्ताका दूरही है हे पुत्र दूसरेके आश्रयसे समयव्यतीत करने
 वालोंसे प्राणोंकी रक्षाकामेका यह समय नहीं है स्वर्गको मुख्य करके यश और
 विजयकेनिमित्ततुमजाओ, यह वानरध्वज अर्जुनकेद्वारा हाथी घोड़े और रथोंसे
 लहराती बड़ीभयकारी अतिअगम्य युद्ध रूपी नदीको तरता है, इसलोकमें युधिष्ठी-
 रहीमें कियाहुआ बड़ाभारी तप दान वा विचकी शान्ती और ब्राह्मणोंकी रक्षा
 करना दृष्ट पड़ता है जिसकेभाई अर्जुन । ३० । वा महाबली भीमसेन वा माद्री के
 पुत्र नकुल सहदेव और नाथ वासुदेवजी वर्तमानहैं । ३१ । उस दुर्बुद्धी जल
 कुक्कुड़ दुर्योधनके अभिमान से उत्पन्न यह तपरूप क्रोध भरतवंशियों की सेना को
 भस्मकरे डालताहै, यह वासुदेवजी का आश्रय रखनेवाला अर्जुन दुर्योधनकी सब
 सेनाओं को सब रीतिसे छि न भिन्न करता विदित होरहाहै, यह सबसेना अर्जुनके
 हाथसे व्याकुल बड़े तरंगोंसे युक्त नानामकारके जलजीवोंसे व्याकुल समुद्रकी समान
 देखनेमें आती है, हाथ हाथऔर कलकलाशब्द सेना के मुखपर सुने जातेहैं तुमराजा
 हुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न के सम्मुख जाओ मैं युधिष्ठिर के सम्मुखजाऊंगा । ३५ ।

and go for victory and fame. Arjun of monkey's standard is crossing by means of his chariot the dreadful and hard-to-cross river having elephants, horses and chariots for its tides. It appears that Yudhishtir alone is the seat of penances, charity, peace of mind and protection of Brahmans. He has on his side his brothers Arjun, valliant Bhimson and Nakul and Sahadev the sons of Madri and Vasudev the lord of all.31. Produced by the folly of the unwise waterfowl Duryodhan, this ascetic anger will cousume all the armies. Arjun, relyng on the help of Vasudev, is dispersing the Kaurav armies. All these armies are disturbed by Arjun like an angry sea with big waves and aquatic animals. The sounds of grief and anger are prominent throughout the armies You may go and face Dhrishtadyumn the son of Drupad and I shall encounter Yudhishtir.35.

॥ ३६ ॥ सत्यकिश्चाभिमन्युश्च धृष्टद्युम्नवृकोदरौ । पर्यरक्षन्त राजानं यमो च
मनुजेश्वरम् ॥ ३७ ॥ उपेन्द्रसदृश इयामो महाशाला इवोद्गतः । एष गच्छत्यनी
काग्ने द्वितीय इव फाल्गुनः ॥ ३८ ॥ उत्तमास्त्राणि चाधत्स्व शृहीरवा च महद्भुजः ।
पापंते याहि राजानं युध्यस्व च वृकोदरम् ॥ ३९ ॥ कोहि नेच्छेत् प्रियं पुत्रं जी
वन्तं शाश्वतीः समाः । क्षत्रधर्मन्तु सम्प्रेक्ष्य ततस्त्वां नियुतज्ज्वहम् ॥ ४० ॥
एष चाति रणे भीमो दहते वै महाचमूम् । युद्धेषु सदशस्तात यतस्य
घरुणस्य च ॥ ४१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दोणाश्वत्थामसंवादे

त्रयोदशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११३ ॥

सञ्जय उवाच । भगदत्तः कृपः शल्यः कृतवर्मा तथैव च । विन्दानुवि-दावावन्त्ये
सैन्धवश्च जयद्रथः ॥ १ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च तथा दुर्मर्षणादयः । दशैते तावका योधा

वड़े तेजस्वी राजा युधिष्ठिर के वड़े व्यूहका मध्य सब ओरको नियत अति
राथियों से समुद्रकी कुत्तिके समान कठिनतासे पार उतरने के योग्य है, सात्यकी
अभिमन्यु धृष्टद्युम्न भीमसेन नकुल सहदेव इन सब ने राजा युधिष्ठिर को चारों
ओर से रक्षित किया है, निष्णु के समान श्याम वड़े शालि वृक्षके समान उन्नत
दूसरे अर्जुन के समान यह शूरवीर सेना के आगे जाता है, इससे तुम वड़े धनुषको
ले उत्तम अस्त्रोंको धारणकर राजा धृष्टद्युम्न के सम्मुख जाकर भीमसेनसे लड़ो,
कौनसामगुण्य अपने प्यारे पुत्रको सदैव चिरंजीवी नहीं चाहता है मैं क्षत्रीधर्म को
देखकर उसके कारण से तुम को आज्ञा देताहूँ कि १४०। यह भीम महायुद्ध में बड़ी
सेनाको नाश करताहै हेपुत्र यह भीमसेन युद्धमें यमराज और वरुणके समानहै १४१।

अध्याय ११४ ॥

संजय बोले कि उस महात्मा द्रोणाचार्यके इसवचनको सुनकर भगदत्त कृपा
चार्य शल्य कृतवर्मा विन्द अनुविन्द अवन्तिदेश के राजालोग वा सिन्धु का राजा

The centre of glorious Prince Yudhishtir's array, having brave
warriors on all sides, is hard to cross like the ocean. Satyaki,
Abhimanyu, Dhrishtadyumna, Bhimsen, Nakul and Sahadev protect
prince Yudhishtir on all sides. Dark-skinned like Vishnu, tall as a
sal tree and brave like a second Arjun is the commander of the
armies. You may go armed with your good weapons and with your
bow encounter Dhrishtadyumn and Bhimsen. What man will not
wish long life to his son; but I, firm on Kshatrya duty, send you
against Bhim who is destroying this large army in the field of battle
like Yamraj or Varun. 41.

CHAPTER CXIV

Sanjaya continued:—" Having heard the words of Dronacharya,
Bhagdatt, Kripacharya, Shalya, Kaitvama, Vind, Anuvind, the

भीमसेनमयोधयन् ॥ २ ॥ महत्या सेनया युक्ता नानादेशसमुत्थया । भीष्मस्य समरे
 राजन् प्राययाना महद्यशः ॥ ३ ॥ शल्यस्तु नवभिर्बाणैर्भीमसेनमताडयत् । कृतवर्मा
 त्रिभिर्बाणैः कृपश्च नवभिः शरैः ॥ ४ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च भगदत्तश्च मरिचि । दशभि
 र्दशभिर्बाणैर्भीमसेनमताडयत् ॥ ५ ॥ संधवश्च त्रिभिर्बाणैर्भीमसेनमताडयत् । विन्दानु
 विन्द्वाचावन्त्या पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः ॥ ६ ॥ दुर्मर्षणस्तु विशत्या पाण्डवं निशितैः
 शरैः । स तान् सर्वान् महाराज राजमानान् पृथक् पृथक् ॥ ७ ॥ प्रवीरान् सर्वलोकस्य
 वाचंशान् महारथान् । जघान समरे वीरः पाण्डवः परवीरहा ॥ ८ ॥ सप्तभिः शल्य
 माविष्यत् कृतवर्माणमष्टभिः । कृपस्य सशरं चापं मध्ये चिच्छेद् भारत ॥ ९ ॥ अथैनं
 छिन्नधन्वानं पुनर्विधासपत्नभिः । विन्दानुविन्दां च तथा त्रिभिरिति मताडयत् ॥ १० ॥

जयद्रथ चित्रसेन विकर्ण दुर्मर्षण आदि आपके इन दश शूरवीरों ने युद्धकिया, वह
 राजा लोग नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होनेवाले वही सेना समेत थे और
 भीष्म के वड़े यशको चाहनेवाले थे उनमें से शल्य ने नौ बाणों से कृतवर्मा ने तीन
 बाणों से कृपाचार्य ने नौ बाणों से भीमसेनको घायल किया और चित्रसेन भगदत्त
 और विकर्ण ने दश २ बाणों से जयद्रथ ने तीन बाणों से व्यथित किया । ५ ।
 और अगन्ति देशके राजा विन्द अनुविन्द ने पांच २ बाणों से और दुर्मर्षणने
 तीक्ष्णवारके वीर बाणों से भीमसेन को घायल किया, हे महाराज फिर उन सब
 पृथक् शोभायमान महाभारती धृतराष्ट्र के पुत्रोंको, युद्ध में घायलकरके शत्रुओं
 के मारनेवाले वीर पाण्डव भीमसेन ने सात बाणसे शल्य को आठ से कृतवर्मा को
 घायनकर, कृपाचार्यके बाण समेत धनुष को बीच में से काटकर फिर उस दूटे
 धनुषवाले को सात बाणों से घायल किया, वैसेही अगन्तिदेश के राजा विन्द
 अनुविन्द को तीन २ बाणों से और दुर्मर्षण को बीस बाणों से और चित्रसेन को

princes Avanti, the king of Sindh, Jayadrath, Chitrasen, Vikarn,
 Durmarshan and others—all these ten warriors encountered Bhimsen.
 They were accompanied by the warriors of different climes and were
 desirous of Bhishm's fame. Shalya wounded Bhim with nine arrows,
 Kritvarma wounded him with three, Kripacharya with nine Chitrasen
 Bhag.atta and Vikarn wounded him with ten arrows each and Jayad.
 rath with three 5. Vind and Anuvind, the princes of Avanti, wounded
 him with five arrows each and Durmarshan pierced him with twenty
 sharp arrows The destroyer of enemies, Bhimsen the brave Pandav
 wounded all these sons of Dhritrashtra in battle. he pierced Shalya
 with seven arrows and kritvarma with eight, and having cut the bow
 and arrow of Kripacharya from the middle he wounded him with
 seven arrows. In the same manner he wounded Vind and Anuvind
 with three arrows each, Durmarshan with twenty and Chitrasen

दुर्मर्षेणञ्च विशतया चित्रसेनश्च पञ्चमि । विकर्णं दशभिर्बाणैः पञ्चमिञ्च जयद्रथम् ॥११॥ विश्वा भीमो न दक्षुष्ट सैन्धवञ्च पुनरित्रमि । अधान्यञ्च नुरादाय गौतमो रथिना वरः ॥१२॥ भीमश्चिञ्चाद्य सरस्वती दशभिर्निशितैः शरैः । स विश्वो दशभिर्बाणैस्तोत्रै र्वि महाक्षिपः ॥१३॥ तम क्रुद्धो महाराज भीमसेन प्रतापवान् । गौतम ताडयामास शरैर्वहुभिराहवे । १४ ॥ सैन्धवस्य तथाश्याम्य सारथिञ्च त्रिभिः शरैः । प्राहिणो मृ- त्युलोकाय कालान्तकसमद्युतिः ॥१५॥ हताश्यासु रथात्तूर्णमवप्लुत्य महारथः । शर- धिक्षेप निशितान् भीमसेनस्य सयुगे ॥१६॥ तस्य भीमो धनुर्मध्ये ह्याश्यां चिच्छेत् मरिच । भल्लाश्यां भरतश्रेष्ठ सैन्धवस्य महारथिनः ॥१७॥ स छिन्नधन्वा विरयो हताश्वो हतसारथि । चित्रसेनरथ राजप्राख्यो ह त्वरान्वित ॥१८॥ अत्यद्भूतरण कर्म कृतवांस्तत्र पाण्डव । महारथान् शरीरिभ्यवा पारयित्वा च मरिच ॥१९॥ विरथ सैन्धव

पांच बाणसे घायल किया, । १० । फिर विकर्णको दश बाणों से जयद्रथको पांच बाणसे घायलकर फिर उमी को तीन तीक्ष्ण बाणों से व्यथित कर के बड़े प्रसन्न चित्त होकर भीमसेन गर्जना करने लगे, तत्र रथियों में श्रेष्ठ क्रोधयुक्त कृपाचार्य ने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्ण धारवाले द्वादश बाणों से भीमसेनको घायल किया वह बारह बाणोंसे ऐसा घायल हुआ जैसे कि चावकोंसे हाथी घायल होता है, इस के पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने, युद्धमें अनेक बाणों से कृपाचार्य को घायल करके तीन बाणों से जयद्रथ के घोड़े और सारथीको मृत्युके लोक में भेजा फिर उस महारथी ने मृगक घोड़ों के रथ से शीघ्रही कूदकर । १५ । भीमसेनके ऊपर तीक्ष्णधारवाले बाणों को फेंका हे राजा धृतराष्ट्र भीमसेन ने दो भल्लों से उस महात्मा जयद्रथ के धनुष को मध्य में से काटा, वह दृष्टेधनुषरथहीन शीघ्रता करने वाला जयद्रथ जिसके घोड़े और सारथी मरगये थे । १७ । चित्रसेन के रथपर सवार हुआ वहाँ पांडव भीमसेन ने युद्ध में अपूर्व कर्म को किया । १८ । अर्थात् उसने सब लोगों के देखते बाणों से महारथियोंको घायल कर के जयद्रथको विरथ किया,

with five 10. Then he wounded Vika n with ten arrows, and having wounded Jayadrath with five and three arrow he began to roar loud. Then Kripacharya the best of charioteers, having taken up another bow, wounded Bhimsen with twelve arrows as an elephants is wounded with darts. Then Bhamsen enraged and full of prowess, wounded Kripacharya with many darts and with three darts sent Jayadrath's horses and coachman to the region of Yam. That great warrior soon leapt down from the chariot of which the horses were dead 15. He then showed his sharp arrows on Bham. The latter with two darts cut down Jayadrath's bow from the middle. Then Jayadrath with his bow cut down and deprived of the use of his chariot of which the horses and driver were dead, mounted the chariot of Chitrasen. There Bhimsen the Pandav did prodigies of valour. 18. Within sight of

घके सर्वलोकाय पश्यतः । तदा न ममृषे शल्यो भीमसेनस्य विक्रमम् ॥ २० ॥ स
सन्धाय शरांस्तीक्ष्णान् फमारपरिमाञ्जितान् । भीमं विम्याद्य समरे तिष्ठतिष्ठेति चाब्र
वीत् ॥ २१ ॥ कृपथ कृतवर्मा च भगदत्तश्च वीर्यवान् । विन्दानुविंदावायव्यो चित्रसेनश्च
संयुगे ॥ २२ ॥ दुर्मर्षणो विकर्णश्च सिन्धुराजश्च वीर्यवान् । भीमं ते विव्यधुस्तूर्ण शल्य-
हेतारिन्दमाः ॥ २३ ॥ स च तान् प्रतिविष्याद्य पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः । शल्यं विष्याद्य
सप्तत्या पुनश्च दशभिः शरैः ॥ २४ ॥ तं शल्यो नयभिभिः पा पुनर्विष्याद्य पञ्चभिः ।
सारथिञ्चास्य भलेन गाढं विष्याद्य मर्गणि ॥ २५ ॥ विशोकं प्रेक्ष्य निर्भिन्नं भीमसेनः
प्रतापयान् । मद्रराजं त्रिभिर्ध्वजैश्शङ्कोरसि चार्पयत् ॥ २६ ॥ तथेतान् महेष्यासांस्त्रि-
भिस्त्रिभिरजिह्वगैः । ताडयामास समरं सिंहवद्विननाद च ॥ २७ ॥ ते हि यत्ता महे-
तव शल्यने भीमसेनके पराक्रम को नहीं सहा और वड़े तीक्ष्ण बाणों को धनुषपर
चढ़ाकर । २० । भीमसेन को घायल किया और तिष्ठ २ वचनको उच्चारण किया
इस को देखकर पराक्रमी कृपाचार्य कृतवर्मा भगदत्त । २१ । और भ्रवन्तिदेश के
राजा विन्द अनुविन्द दुर्मर्षण विकर्ण पराक्रमी जयद्रथ इन सब शत्रु विजयी
लोगोंनेभी शल्यको देखकर शीघ्रही भीमसेनको घायल किया और उसने उन सबको
पांच २ बाणोंसे घायल किया । २१ । शल्यको सत्तर बाणों से और दश भल्लों
से घायल किया फिर शल्यने उसको नौ बाणों से घायल करके पांच बाणों से
फिर व्यथित कर दिया । २४ । और एक भल्ल से उसके सारथी को मर्मस्थल
में घायल किया इसके पीछे उस प्रतापी भीमसेन ने अपने विश्वकनाम सारथी
को घायल देखकर । २५ । तीन बाणों से मद्र के राजा शल्यको भुजा और
छाती पर घायल किया, इसी प्रकार सीधे चलनेवाले तीन २ बाणों से अन्य २
बड़े २ धनुषधारियों को व्यथित करताहुआ सिंह के समान गर्जना करी, फिर
उन सावधान बड़े २ धनुषधारियों ने युद्धमें कुशल भीमसेन को तीक्ष्ण नोक

all he wounded the 20 warriors and made Jaya-drath chariotless. Shalya could not bear to see his prowess and put up sharp arrows to his bow. 20 Having wounded Bhimsen he cried out 'stay, stay. At this valliant Kripachary, Kirtvama, Bhagdatta, Vind and Anuvind the two princes of Avanti, Durmaishan, Vikarna, and valliant Jayadrath, all these conquerers of foes followed the example of Shalya in wounding Bhimsen and he in his turn, wounded them with five arrows each. 23. He wounded Shalya with seventy arrows and ten darts, Shalya wounded him with nine and five arrows and his coachman with one. Glorious Bhimsen seeing Vishwak his coachman wounded, pierced the king of Madra with three arrows on the breast and arms. In the same manner he wounded the other great archers with three arrows each going straight and then roared like a lion. Then those mighty and skilful archers wounded Bhimsen, clever in fighting,

प्रासा. पाण्डव युद्धकोविदम् । त्रिभिस्त्रिभिरकुण्ठाप्रैर्भृश मर्मस्वताडयन् ॥ २८ ॥
 सौतिविद्धा महेश्वासा भीमसेनो विचये । पर्वतो धरिधाराभिर्बर्षमाणैरिवाम्बुदः
 ॥ २९ ॥ स तु क्रोधसमाविष्ट पाण्डवाना महारथ । मद्रेश्वर त्रिभिर्वर्षिर्भृशं विधा
 महायशा ॥ ३० ॥ कृपञ्च नवभिर्वाणैर्भृश विधा समंतत । प्राग्ज्योतिषं शतैराजै
 राजन् विधाद्य स्वायके ॥ ३१ ॥ ततस्तु सशर चापं सात्वतस्य महात्मनः । क्षुप्रेण
 सतीक्षणेन चिच्छेद् कृतहस्तवत् ॥ ३२ ॥ तथा न्यद्धनुरादाय कृतवर्मा वृकोदरम् । आज
 घान ब्रुवामिध्वे नाराचेन परन्तप ॥ ३३ ॥ भीमस्तु समरे विधा शल्यं नवभिरायसै ।
 भगदत्त त्रिभिश्चैव कृतवर्माणमग्रि ॥ ३४ ॥ द्वाभ्या द्वाभ्यास्तु विधाद्य गातमप्रभु
 तीन् रथान् । ते पित समरे राजन् विच्यधुर्निक्षिप्तैः शरैः ॥ ३५ ॥ स तथा पीड्यमानोपि

वाले तीन २ वाणों से मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल किया परन्तु वह अत्यन्त
 घायल वड़ धनुषधारी भीमसेन ऐसे पीड़ामान नहीं हुआ । २८ । जैसे कि जल
 धारा वर्षा करने वाले बादलों से पर्वत पीड़ा नहीं पाता है फिर उस वड़े यश-
 स्वी महारथी पाण्डव भीमसेन ने क्रोधमें भरके सत्य राजा को तीन वाणों
 से अत्यन्त घायल करके युद्धभूमि में सौ शायकों से राजा प्राग्ज्योतिष को
 घायल किया । ३० । इसके पीछे इसी यशस्वीने कृपाचार्य को वाणों से अत्यन्त
 घायल करके अपनी हस्तलावता से महात्मा कृतवर्मा के बाण समेत धनुष
 को । ३१ । अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरों से काट्य और इमी प्रकार से कृतवर्मा ने दूसरे
 धनुषको लेकर भीमसेन को । ३२ । दोनों मृकुटियों के मध्य में नाराच बाणसे
 घायल किया फिर शत्रु संताती भीमसेन ने शल्य को नौ लोहेके बाणों से
 घायल करके । ३३ । तीन वाणों से भगदत्तको आठ बाणों से कृतवर्माको और
 दो २ वाणोंसे कृपाचार्य आदि रथियोंको घायल किया । ३४ । इन सर्वोंनेभी इसको
 तीक्ष्णधारके बाणोंसे घायल किया । ३५ । फिर महारथियोंके सब शस्त्रोंसे पीड़ामान

with three arrows each in the vital parts, but that great archer, though much wounded, was not distressed at all as a mountain is not distressed by the fall of rain. Then the great warrior Bhimsen the Pandav, much enraged, wounded the king of Madia with three arrows and the king of Pragjyotish with a hundred 30. Then having wounded brave Kripacharya with his arrows, he showed the swiftness of his hand in cutting down the bow of Kuntvarma. The latter took up another bow and wounded Bhim in the middle of the bow. Then Blum the destroyer of enemies, wounded Shalya with nine iron arrows and having stuck Bhagdatta with three, he pierced Kuntvarma with eight and kripacharya with two 34. Those warriors too, wounded him with their sharp arrows 35. Exceedingly wounded by their arrows, Blim did not care for them as straw and ironed fire

सर्वशस्त्रैर्महारथैः । मत्वा तृणेन तांस्तुल्यान् विचचारगतःयय ॥३६॥ ये चापि रथिनां
 श्रेष्ठा भीमाय निशितान् शरान् । प्रेषयामासुरव्यग्राः शतशोथ सहस्रश ॥ ३७ ॥ तस्य
 शार्कं महावेगा भगदत्तो महारथः । चिक्षेप समरे वीर स्वर्णदण्डा महामते । ३८ ॥
 तोमरं सैन्यवीं राजा पटिशन्चमहामुजः । शतश्रीं च कृपा राजान्तर शल्यश्च सुयुगे
 ॥ ३९ ॥ अथेतरं महैष्यासा पञ्च पञ्च शिला मुपान् । भीमसेन समुद्दिश्य
 प्रेषयामासुरोजसा ॥ ४० ॥ तोमरश्च द्विवा चक्रे पुरभेणा निलारमजः ॥ पटिशश्च
 त्रिभिर्वाणैश्चिच्छेद तिलकाण्डयत् ॥४१॥ स विभेद शतश्रीश्च नगभिः कडपत्रिभिः ।
 मद्राजप्रयुक्तव शरैर्छरामहारथः ॥ ४२ ॥ शार्कविच्छेदसदृसा भगदत्त रितारणे ।
 तथेतरान् शरान्घोरान् शरैः सप्रतपवर्षभिः ॥ ४३ ॥ भीमसेना रणश्लाघी त्रिथैकैक
 समाच्छिनत् । ताद्य सर्वात् महैष्यासान् त्रिभिर्वाणिभिरताडयत् ॥ ४४ ॥ ततो
 घनञ्जयस्तत्र वर्त्तमाने महारणे । आजगाम रथेनार्जा भीमं दृष्ट्वा महारथम् ॥ ४५ ॥

वह भीमसेन भी उनको दृष्टके समान कर दुःख से रहित प्रसन्न मुखहोकर भ्रमण
 करने लगा । ३६ । उन सावधान रथियों में श्रेष्ठ लोगों ने भी भीमसेन के ऊपर
 हजारों तीक्ष्ण वाणोंको चलाया । ३७ । महावीर भगदत्त ने उस बुद्धिमानके ऊपर
 बर्षी वेगवान् प्रकाशित सुनहरी दण्डवाली शक्तीको और राजा जयद्रथने तमरको
 महाभुजने पट्टिशको कृपाचार्यने शननीको शल्यने वाणको । ३९ और अन्य बड़े
 धनुषधारियों ने भीमसेनको लक्ष अर्थात् निशाना बनाकर पांच २ शिलीमुस
 वाणों को बड़े पराक्रम से चलाया । ४० । तब वायुपुत्र भीमसेन ने तोमरको तो
 क्षुरप्रनाम वाणने दो खण्ड किये और तीस वाणने पट्टिश को तिल के कांड के
 समान काटा । ४१ । नौ वाणों से शननी को तोड़ राजामद्र के चलाये
 हुए वाणको काटकर भगदत्तकी चन्दाईहुई शक्ती को काटडाला इसी प्रकार युद्ध
 में प्रशंसनीय भीमसेनने गुप्तवन्धी वाले वाणोंसे अन्य भयानक वाणों को काटा
 अर्थात् प्रत्येक के खण्ड २ कर दिये और उन सब धनुषधारियों को तीन २
 वाणोंसे घायल किया । ४४ । इसके पीछे वहां घोरयुद्ध के होनेपर अर्जुन उस युद्ध

of pain with a cheerful mind. The wisest and best of char.oteers too,
 discharged thousands of arrows at him Valiant Bhagdatta dis-
 charged at him a swift and bright spear with gold handle Prince
 Jayadrath hurled a *tomar*, Kripacharya a *Shataghni*, Dhalya his arrows
 and others great archers, having made him the r mark, discharged at
 him five arrows each 40. Then Bhim the son of Vayu cut the *tomar*
 in two by one sharp arrow and *pattish* with three Ho cut the
Shataghni with nine arrows, and having cut down the arrow of the
 king of Madra, he cut into pieces the spear of Bhagdatta. Thus
 Bhimsen, clover in battle, cut down other arrows too having hidden
 knots and wounded those archers with three arrows each. 44. At
 this when the battle was raging furiously, Arjun saw brave Bhim-

निघ्नन्त समरे शत्रून् योधयानश्च सायके । तौ तु तत्र महात्मानौ समेतौ धीस्य
पाण्डवौ ॥ ४६ ॥ न शशसुर्जय तत्र तावका पुरुषर्षभा । अघार्जुन रणे भीम
योधयन्त महा रथान् • ४७ ॥ भीष्मस्य निघनाकाक्षी पुरस्कृत्य शिष्यण्डिनम् ।
आसस्ताद् रणे धीरास्तावकान् दश भारत ॥ ४८ ॥ यस्म भीम रणे राजन् योधयन्तो
व्यवस्थिताः । भीष्मसुता नथा विष्वङ्गीमस्य प्रियकाम्यया ॥ ४९ ॥ ततो दुर्य्यो
धनो राजा सुशर्माणमचोदयत् । अर्जुनस्य धर्धार्थीय भीमसेनस्य चोभयो ॥ ५० ॥
सुशर्मन् गच्छ शीघ्र त्व वलीधै परिवारित । जहि पाण्डुसुतावेतौ धनञ्जयवृकोदरो
॥ ५१ ॥ तच्छ्रुत्व वचन तस्य त्रैगर्त्त प्रस्थलाधिप । अभिद्रुत्य रणे भीम मर्जुन
वैव धन्विनौ ॥ ५२ ॥ रथैरनेक साहसैः समन्तात् पर्यवारयत् । तत प्रवृत्ते युद्ध
मर्जुनस्य परै सह ॥ ५३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीमार्जुन पराक्रमे

चतुर्दशधिकशतोऽयावः ॥ ११४ ॥

में शत्रुओं को मारता सायकों से लड़ता महारथी भीमसेन को देखकर रथपर बैठा
हुआ युद्धभूमि में आया वहाँ उन दोनों महात्मा पाण्डवों को युद्धमें प्रवृत्त देखकर
। ४६ । आपके शूरवीर पुरुषोंने वहाँ अपने विजयकी आशा नहीं की फिर युद्धमें
महाराथियों से लड़ते हुए भीमसेन को देखकर भीष्म के मारने की इच्छाकरने
वाले अर्जुन ने शिखंडी को आगे करके उस युद्धमें आपके उन दश शूरों को पाया
जो भीमसेन से युद्धकरने में नियतथे उनको अर्जुन ने भीमसेन की प्रसन्नता के
लिये बाणों से घायल किया । ४९ । फिर राजा दुर्योधनने अर्जुन और भीमसेन
इनदोनों के मारने के निमित्त राजासुशर्मा को आज्ञाकरी । ५० । कि हेसुशर्मा तुम
अपनी सेनासमेत शीघ्रही जाकर इनदोनों पांडव अर्जुन और भीमसेन को मारो । ५१ ।
फिर प्रस्थलाधिप राजा सुशर्मने उसके उस वचनको सुन युद्ध में जाके भीमसेन
और अर्जुन दोनों धनुषधारियों को । ५२ । हजारों रथियों समेत चारों ओरसे घेर
लिया फिर अर्जुन से और शत्रुओं से युद्ध होना मारभ हुआ ५३ ।

sen there and came on to him in his chariot, killing the enemies in
the way And seeing the two Pandavas engaged there in battle
your warriors despaired of their own victory Seeing Bhim engaged
in fighting Arjun desirous of slaying Bhishm and led by Shikhandi,
met in combat those ten warriors who were engaged in fighting with
Bhim To please the latter he wounded them all with his arrows 49
Prince Duryodhan ordered king Susharma to kill Arjun and Bhim,
saying, "Go, Susharma with your armies and kill both Arjun
and Bhim." Susharma the king of Prasthal, at the order of
Duryodhan, surrounded Bhim and Arjun with thousands of chariots
and the fight was hard between Arjun and the enemies" 53

संजयउवाच ॥ अर्जुनस्तुरणे शल्यं यत्मानं महारथं । छादयामास समरं शरैः सन्नत
 पर्वभिः ॥ १ ॥ सुशर्माणं कृपाञ्चैव त्रिभिरिभिरपि ध्वयत । प्राग्ज्योतिषं च समरे संघ-
 धञ्च जयद्रथं ॥ २ ॥ चित्रसेनं विकर्णञ्च कृतवर्माणमेव च । दुर्मर्षणञ्च राजेंद्रं ह्यावृत्योञ्च
 महारथौ ॥ ३ ॥ एकैकं त्रिभिरानलं कंकरीदणवाजितैः । शरै रतिरथो युद्धे पाण्डव
 याहिर्नोतथ ॥ ४ ॥ जयद्रथो रणे पार्थ विघ्नाभारत सायकैः । भीमं विघ्न्याथ तरसा चित्र
 सेनरथे स्थितः ॥ ५ ॥ शल्यश्च समरे जिष्णुं कृपश्च रथिनां वरः । विघ्नघाते महाराज
 बहुधामभेदिभिः ॥ ६ ॥ चित्रसेना दयश्चैव पुत्रास्तव विशापते । पञ्चभिः पञ्चभिस्तूर्ण
 संयुगे निशितै रशैः ॥ ७ ॥ आजघ्नुरर्जुनसंख्ये भीमसेनञ्च मारिय । तौ तत्र रथिनां
 श्रेष्ठौ कौन्तेयौ भरतर्षभौ ॥ ८ ॥ अपाण्डयेतां समरे त्रिगर्तानां महद्वलं । सुशर्मापि रणे
 पार्थ शरैर्नैव भिराशुगैः ॥ ९ ॥ ननाद्वलवन्नादं शासयामो महद्वलं । अन्ये च रथिनः

अध्याय ११५ ॥

संजय बोले कि फिर अर्जुन ने युद्ध में उपाय करनेवाले महारथी शल्य
 को गुप्तगन्धीवाले बाणोंसे ढककर सुशर्मा कृपाचार्य राजाप्राग्ज्योतिष जयद्रथ राजा
 सिंघ इनसबको तीन २ बाणों से घायल किया, और चित्रसेन विकर्ण कृतवर्मा दुर्म-
 र्षण और अत्रन्तिदेशके महारथी राजाओग । ३। इन सबको कंक और मोरपक्षबाछे
 तीन २ बाणों से घायल किया और युद्धमें अतिरथी जयद्रथने आपकी सेनाको
 बाणों से पीड़ित करते हुए अर्जुन को शायकों से घायल करके चित्रसेनके रथपर
 बैठकर बड़ीतीव्रतासे भीमसेनको घायल किया । ५ । हे राजा रथियों में श्रेष्ठ शल्य
 और कृपाचार्य ने मर्मभेदी बाणों से अर्जुन को अनेक रीतिसे घायल किया । ६ ।
 और चित्रसेन आदि आपके पुत्रों ने तीक्ष्ण धारवाले पांच २ बाणों से, अर्जुन और
 भीमसेनको घायल किया वहां उन भरतवंशियों में और रथियों में श्रेष्ठ दोनों
 पाण्डवोंने । ८ । त्रिगर्त देशियों की बड़ी सेनाको पीड़ामान् किया फिर सुशर्माभी

CHAPTER CXV

Sanjaya continued:—"Having covered valliant Shalya with his arrows, Arjun wounded Susharma, Kripacharya, king Pragjyotish and Jayadrath the king of Sindh with three arrows each. He then wounded Chitrasen, Vikarn, Kritvarma, Durmarshan and the brave warrior princes of Avanti each with three arrows having peacock feathers. And wounding your armies with arrows, valliant Jayadrath wounded Arjun, and having mounted upon Chitrasen's chariot he wounded Bhim with great swiftness. 5. Shalya the best of charioteers, O king, and Kripacharya wounded Arjun in different ways. Your sons, Chitrasen and others, each of them wounded Bhim and Arjun with five arrows having sharp edges. Then the two Pandavas, best of charioteers and Bharats, cut down the large

शूरा भीमसेन घनंजया ॥ १० ॥ विष्यधुनिशिनैर्जाणं रक्षमपुत्रैरजिहामै । तेषाच रथिना
 मेषै कौंतेयौ भरतपुत्रौ ॥ ११ ॥ श्रीडमानो रयोदारौ चित्ररूपौ बृहद्दयतां । आमिपेन्मू
 गवामध्ये सिंहाविषमदोत्कटौ ॥ १२ ॥ छिन्वाधनुषिशूराणा शराश्च बहुधारणे । पात
 यामास तुवीरौ शिरसि शतशो नृणा ॥ १३ ॥ रथाश्च वर्योभग्ना ह्यथा शतशो हता ।
 गजाश्च सगजारोहा पेतुस्त्वयामहाहवे ॥ १४ ॥ रथिन सादितथापि तत्र तत्र निपुदिता
 दृश्यते बहवो राजन्वेपमाना समतत ॥ १५ ॥ हतैर्गजपदान्योर्ध्वान्जिभिश्चानिपुदितै ।
 रथैश्च बहुधामनैः सतास्तीर्यतमेदिनी ॥ १६ ॥ छत्रैश्च उन्वाच्छिन्नैर्ध्वजैश्च त्रिनि
 पातितैः । अक्रुशै रपविद्धैश्च परिस्तोमैश्च भारत ॥ १७ ॥ केयूरै रगदरैरै राक्वमृदि
 तैस्तथा । उष्णीषैर्धृष्टिमिश्चैष चामरव्यजनैरपि ॥ १८ ॥ तत्र तत्रापि श्वैश्च घाहुमि
 तीव्रगामी नौ त्राणौते अर्जुन को घायल करके वड़ी सेनाको भयभीत करता हुआ
 बड़े शब्द से गर्जा और अन्य शूरवीर रथियों ने भीमसेन और चर्जुन को सीधे
 चलनेवाले मुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण धारके त्राणों से घायल किया उन रथियों के
 मध्य में भरतशिशियों में श्रेष्ठ कुंती के पुत्र महारथी श्रीडाकस्ते हुए ऐसे अपूर्व
 रूपसे आये जैसे कि वेलोंके मध्य में मांसकी इन्डा रखने वाले मतवाले दो सिंह
 आते हैं । १२ । उन दोनों वीरोंने युद्ध में शूरों के धनुषोंको बहुत प्रकार से काटकर
 सैकड़ों मनुष्यों के शिरोंको गिराया । १३ । बहुतसे रथदूटे सैकड़ों घोड़े मारेगये
 और सवारों समेत हाथी पृथ्वी पर गिरे । १४ । रथी और सवार भी नहीं वहा
 नाशको प्राप्त चारों ओर से कँपते हुए दृष्टिआये । १५ । मृतक हाथी घोड़े पदाती
 और अनेकप्रकारसे दूटेहुए रथों से पृथ्वी सविस्तरसी होगई, हे राजा कनेक प्रकार
 से दूटेहुए छत्र और गिराई हुई ध्वजा और खडित अक्रुश परशु केयूर वाजुन्द
 हार कोमल मृगचर्म मंडील दुधारे सङ्ग चामर वा व्यजनोंसे और जहातर्हा कटी हुई

army of Prigartas Susharma too, having wounded Arjun with nine
 arrows, terrified the large army and roared a loud roar And other
 brave charioteers too, wounded Bhimson and Arjun with straight
 going and sharp edged arrows having golden feathers In the midst
 of those charioteers entered the two valliant sons of Kunti, best of
 Bharats, like two lions desirous of flesh coming playfully in a strange
 way in the midst of a herd of bulls 12 The two warriors cut down
 in various ways the bows and heads of other warriors by hundreds
 Many chariots were broken, hundreds of horses were killed and
 elephants with their riders lay dead on the ground Chariots and
 their riders too, were destroyed here and there and were to be seen
 shaking 15 The ground was strewn over with the dead horses,
 elephants and foot soldiers and with the broken chariots The
 broken umbrellas, the fallen banners the broken goads, res armlets,
 bracelets soft deer skins, turbans, double edged swords, fly flappers

धृन्मोक्षितः । ऊर्मिदध नरेद्रापां समास्तीयेत मेदिनी ॥ १९ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम रणे
 पार्थस्य निष्क्रमम् । शरं सपाथ्यं तान् धीरान् मद्र जघान महाबल ॥ २० ॥ पुत्रस्तु
 तवतं हृत्वा भीमार्जुनपराक्रम । गागेयस्य रथाभ्याश-मुपजग्मे महाबलः ॥ २१ ॥ ह्यपश्च
 कृतवर्मा च सैन्धवश्च जयद्रथः । विन्दानुविन्दापापन्त्यां नाजहुः संयुगं तदा ॥ २२ ॥
 ततो भीमो गृहेऽपासः फाल्गुनश्च महारथः । कौरवाणां चमूं धीरां शशं बुधुवतू रणे
 ॥ २३ ॥ ततो वह्निं गवाजानामयुनान्ययेद्रानिच । धनञ्जयत्ये तूर्णं पातयन्तिस्मभू
 मिपा. ॥ २४ ॥ ततस्तान् शरजालेन सन्निवार्यं महारथान् । पार्थः समन्तात् समरे
 प्रेषयामास मृत्यये ॥ २५ ॥ शङ्करु समरे छिण्णं कीडशिपु महारथ । आजघानोरसि
 बुद्धो भङ्गे स्रक्षतपर्वणि ॥ २६ ॥ तस्य पार्थो घनुदिष्ट्या हस्तापापञ्च पञ्चभिः ।
 अत्यन्तं सायकस्तीक्ष्णभृंग विन्याय मर्षणि । २७ ॥ अथान्यद्भुतुरादाय समरे भारसा

राजाओं की चन्दनचर्चित भुजा और जंजाओं में भी पृथ्वी आच्छादित दीप्तवी
 थी, वहां हमने युद्धके बीच अर्जुन के अपूर्व पराक्रम को देखा कि उन महावली
 ने उन सशूरवीरों को बाणों में ढककर घायल कर दिया । २० । फिर आपका
 महावली पुत्र भीमसेन और अर्जुन के उस पराक्रम को देखकर गागेय भीष्मजी
 के पास गया । २१ । तब कृपाचार्य कृतवर्मा जयद्रथ राजागिरि और अत्रन्ति देश
 के विन्द अनुवि द नाम राजाओं ने युद्धको नहीं त्यागा । २२ । इसके पीछे वड़े
 धनुश्वारी भीमसेन और महारथी अर्जुन युद्धमें कौरवोंकी महाभयकारी मेनाकी ओर
 दौड़े । २३ । उसके पीछे राजाओं ने उड़ी नीत्रामे मोरके नमान चित्रित हजारों छाखों
 किन्तु अंतर्णों बाणों को अर्जुन के रथपर गिराया । २४ । तब अर्जुनने चारों ओर
 में उन महावर्षियों को बाणोंके जालमें रोककर मृत्यु के लोकों को भेजा । २५ ।
 फिर कौशयुक्त युद्धमें कीड़ा करने महारथी शरपने गुप्त ग्रंथीवाले धरलों में अर्जुन
 को छातीपर घायल किया । २६ । तब अर्जुनने उसके घनुपको तेड़ पांचबाणोंसे उस
 के हस्तबाणको काटके तीक्ष्ण शायकों से उसके मर्षस्वलोंको अत्यन्त घायल किया

and fans, the severed arms of the lings, sandal pasted, and other things covered the ground. Then we saw in the field of battle the wonder working prowess of Arjun who covered and wounded all those warriors with his arrows 20. Then your brave son, seeing the prowess of Bhim and Arjun, went to Bhishma the son of Ganga. Kripacharya, Kritvarma, Jayadrath the king of Sindh, and Vind and Anuvind the two princes of Avanti did not desert the field of battle. Then the great archer warriors, Bhim and Arjun rushed up on the dreadful army of the Kauravas and the warriors with great dexterity discharged hundreds of thousands of arrows, peacock coloured, at the elimit of Arjun, but the latter destroyed the network of their arrows and sent them to the region of Yim 25. Vallant Shalya with arrows having hidden notes, as if playing in battle, wounded

धनम् । यद्रेश्वरो रणे जिष्णु ताडयामास रोपित ॥ २८ ॥ त्रिभि शरैर्महाराज वासुदे
 वष पञ्चभिः । भीमसेनञ्च नवभिर्घाहोरसि चार्पयत् ॥ २९ ॥ ततो द्रोणो महाराज
 मागधञ्च महारथ ॥ दुर्व्योधनसमादिष्टौ त देशमुपजग्मतु ॥ ३० ॥ यत्र पार्थो महा
 राज भीमसेनश्च पाण्डव । कौरव्यस्य महासिनां जगत् सुमहारथौ ॥ ३१ ॥ जयत्से
 नस्तु समरे भीमः भीमायुध युधि । विव्याध निशितैर्वाणैरष्टभिर्भरतर्षभ ॥ ३२ ॥ त भीमो
 दशभिर्विध्वा पुनर्विव्याध पञ्चभिः । सारथिञ्चास्य भलेन रथनीडादपातयत् ॥ ३३ ॥
 वद्भ्रान्तैस्तुरगै सोध द्रवमाणै समन्तत । मामधोपखृतो राजा सधसैन्यस्य पश्यत्
 ॥ ३४ ॥ द्रोणश्च विधर दृष्ट्वा भीमसेन शिलीमुखै । विव्याध वाणैर्निशितै पञ्चवष्टि
 भिरापसै ॥ ३५ ॥ त भीम समरश्लाघी शुद्धपितृसम रणे । विव्याधपञ्चवभिर्भैल्लथ

। २७ । फिर क्रोधयुक्त राजा मद्रने दूसरे बड़े दृढ़धनुष को लेकर वाणों से अर्जुन
 को व्यथित किया ॥ २८ ॥ तीन वाणों से अर्जुन को पांच वाणों से वासुदेवजी
 को नर णों मे भीमसेन को भुजा और छाती पर घायल किया । २९ । इसके
 पीछे महारथी द्रोणाचार्य और राजा मगध यह दोनों दुर्व्योधन की आज्ञासे उस
 स्थानपर पहुँचे । ३० । जहाँ कि बड़े महारथी अर्जुन और भीमसेन ने कौरवी दुर्व्यो
 धन की बड़ी सेनाको माराया फिर जयसेन ने भयकारी शस्त्रवाले भीमसेनको तीन
 आठवाणों से घायल किया । ३१ । और भीमसेनने उसको दश वाणों से घायल
 करके पांच वाणोंसे फिर घायल किया और एक भल्ल से उसके सारथीको रथ के
 बैठने के स्थान से गिरादिया । ३३ । फिर वह राजा मगध सब सेना के देखतेहुए
 चारों ओर को बहकेहुए घोड़ों के कारण से युद्धसे दूर चलागया । ३४ । द्रोणा
 चार्यने समय पाकर तीक्ष्ण धारवाले लोहे के शिलीमुख नाम पैंसठ वाणों से
 भीमसेन को घायल किया । ३५ । हे भरतवंशी युद्धमें प्रशंसा पानेवाले भीमसेन ने

Arjun on the breast Arjun then cut down his bow and having cut
 asunder his hand guard with five arrows, wounded him in the vital
 parts very severely. Thereupon the king of Madra much enraged,
 taking up a hard bow, wounded Arjun with three arrows, Vasudev
 with five and Bhim with nine arrows on the breast and arms. In
 the meantime valiant Dronacharya and the king of Magadh came
 there by Duryodhan's order (30) where the great charioteers Arjun
 and Bhim were destroying the Kaurav armies. Jayasen wounded
 Bhim of dreadful arms with eight arrows of very keen edge.
 Bhimsen wounded him with ten and five arrows and with one dart
 he caused the driver to fall down from his seat on the chariot. Then
 the king of Magadh was taken far from the sight of the armies by the
 driverless horses. Dronacharya found an opportunity to pierce sixty-
 five iron arrows, sharpened on stone, through the body of Bhim, but
 the latter praiseworthy in battle wounded the venerable preceptor

पश्या च मारुत ॥ ३६ ॥ अर्जुनस्तु सुशर्माणं विधाया बहुभिरापसं । व्यधमन्तस्य तत्र
सैष्यं महाभ्राणि यवानिलः ॥ ३७ ॥ ततो भीमद्रव राजा च कौसत्यश्च वृहद्बल ।
समयश्चन्त सद्बुद्धा भीमसेनधनञ्जयौ ॥ ३८ ॥ तथैवपाण्डवा द्रुपदो धृष्टद्युम्नश्च पाण्डवः ।
अभ्यद्रवन् रणे भीष्म व्यादितास्यमित्रान्तकम् ॥ ३९ ॥ शिखण्डी तु समानाद्य भार
तानां पितामहम् । अभ्यद्रवत सहस्रो भयत्पक्त्रा महारथात् ॥ ४० ॥ युधिष्ठिरमुखा
पार्या पुरस्हत्य शिखण्डिनम् । अयोधयन् रणे भीष्म सहिता सर्वसृजयैः ॥ ४१ ॥
तथैव तापका सर्वे पुरस्हत्य यतव्रतम् । शिखण्डिप्रमुधान् पार्यान् बोधयन्तिस्म सयुगे
॥ ४२ ॥ तत प्रवृत्ते युद्धे कौरवाण भयावहम् । तत्र पाण्डुसुते सार्धं भीष्मप्यभिजय
प्रति ॥ ४३ ॥ तावकानां जये भीष्मो ग्लह आसीद्विशाम्भते । तत्र हि यूनमासक विजया
येतराय वा ॥ ४४ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु राजेन्द्र सत्रसेन्यान्व्य चोदयत् । अभ्यद्रवत गाङ्गय

पिता के समान गुह्यको भी पैसठ भल्योसे घायल किया । ३६ । फिर अर्जुनने बहुत
से लोहेके बाणों से सुशर्मा को घायन करके उनकी उस भुजाको ऐसे अलग
कर दिया जैसे कि वायु बादलों को अलग करदेताहै । ३७ । उनके पीछे भीष्म
और राजा कौशल्य वृहद्बल यह सब अत्यन्त बोधयुक्त होकर भीमसेन और
अर्जुनके सम्मुख गये । ३८ । इसी रीतिसे दूर पांडव और पर्यंतका पुत्र धृष्टद्युम्न
उस मृत्युके समान भीष्मके सम्मुख गये । ३९ । और अत्यन्त प्रव्रत चित्त शिखण्डी
भरतवंशियों के पितामहको पाकर और उसने निर्भय होकर सम्मुख हुआ । ४० ।
और युधिष्ठिर आदि पांडव सब मंत्रियों समेत शिखण्डीको आगे करके युद्ध में
भीष्मजी से युद्ध करनेलगे । ४१ । इसप्रकार आपके सबपुत्र भीष्मजीको आगे करके
युद्ध में उन पांडवोंसे जिनका अग्रवर्ती शिखण्डी था युद्ध करने में प्रवृत्त हुए । ४२ ।
उसके पीछे वहां पर भीष्मकी विजय के विषय में कौरवों का भयकारी युद्ध पांडवों
के साथ जारीहुआ हे धृतराष्ट्र तब भीष्मजी आपके पुत्रों की विजयके ग्लह अर्थात्
चौपड़के दाव हुए वहां पर विजय वा पराजय के निमित्त दून प्रारम्भ हुआ फिर
धृष्टद्युम्न ने सब सेनाको आज्ञाकरी कि हे श्रेष्ठ रथियो निर्भय होकर भीष्मके

with sixty five darts 36 Arjun then wounded Susharma with many iron arrows and covered his arm as the wind does the clouds. Then Bhishm with Princes Kosal and Vrihadbal, much enraged, encountered Blum and Aijun. In the same manner, the brave Pandav and Dhrishtadyumn the descendant of Parshat faced deadly Blushm, and Shukhandi with a cheerful mind fearlessly encountered the grandfather of Bharat. 40 Yuddhishtim and other Pandavas with the Srinjayas, led by Shukhandi, fought against Bhishm. In the same manner, your sons led by B'ishm encountered the Pandavas led by Shukhandi. Then for the victory of Bhishm the Kauravas and the Panjavas fought a dreadful battle. Bhishm

मौमैष्ट रथसत्तमा, ॥ ४५ ॥ सेनापतिष्व ध्रुत्वा पाण्डवानां वरुधिनी । भीष्मं समभ्य
यान्तुर्ण प्राणाभ्यस्तव महाहवे ॥ ४६ ॥ भीष्मैषि रधिनां श्रेष्ठः प्रतिज्जग्राह तां चम्पू ।
आतन्ती महाराज वेलामिव महोद्वाधि । ४७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वण्यि भीमार्जुन पराक्रमे

पंचदशान्विक्रान्तोऽध्यायः ॥ ११५ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं शान्तनवो भीष्मो दशमेहनि सञ्जय । अगुध्यत महा
वीर्य्यः पाण्डवैः सह सञ्जयै ॥ १ ॥ कुरवश्च कथंयुद्धे पाण्डवान् प्रत्यचारयन् ।
जाचश्च मे महायुद्धं भीष्मस्याहवशोभिन ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । कुरवः पाण्डवै
सार्धं यदयुध्यत भारत । यथा च तद्भूयुद्धं तच्च वक्ष्यामि स्वाम्प्रथम ॥ ३ ॥
गमिता, पण्डोकाय परमाग्न्यैः किरिटितः । अह्नयहनि संकुचालावकानां महारथा

सम्मुख चलो मन में किसी प्रकार भी सन्देह मतकरो । ४५ । तव पांडवों की
सेना अपने सेनापति के वचन को सुनकर प्राणों के मोहको त्यागकर उस
महायुद्ध में शीघ्र ही भीष्म के सम्मुख गई । ४६ । हे महाराज रथियों में
श्रेष्ठ भीष्मजी ने उस आई हुई नई सेना को ऐसा रोका जैसे कि महासमुद्र को
किनारा रोकता है ४७ ॥

अध्याय ११६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय शतनु के पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्मजी दशवें दिन पांडव
और सृजियों के साथ कैभर युद्धकरतेहुए और कौरवोंने युद्धमें पांडवोंको कैसे रोका
हे संजय तू युद्धमें शोभापानेवाले भीष्मजीके महाभारी युद्धको मुझसे वर्णन कर के
कह । २। संजय बोले कि हे भरतवंशी कौरव लोगोंने पांडवोंके साथ जैसे युद्धकिया
और जैसे युद्धहुआ वह यथार्थ तुम से कहताहूं । ३ । अर्जुन के बड़े अस्त्रों से आप के
महारथी अत्यन्त क्रोधपूर्वक प्रतिदिन परलोकमें भेजेगये । ४। और युद्धको विजयकरने

then was the bet in the game for victory and defeat Dhrishtadyumna
gave an order to all his armie, to advance fearlessly against Blushu
without hesitation 45. The warriors careless of their lives rushed
upon Bhishm at the word of command and Blushm checked that
advancing army as the coast checks the waters of the ocean " 47.

CHAPTER CXVI

Dhritishktra said, " How did the son of Shantanu, Bhishm of
great prowess, fight against the Pandvas and the Sanjayas on that
tenth day ? How did the Kamavas check the Pandvas ? Give me
Sanjaya, a detailed account of the great war of Blushm " Sanjaya-
s. I shall tell you how the kam was and the Pandvas fought against
each other and the events of the war as they happened 3 By the
powerful weapons of Arjun your engaged warriors were sent every

॥ ४ ॥ यथाप्रतिज्ञं कौरव्यः स चापि समितिञ्जयः । पार्थानामकरोद्धीप्सः सततं
समितिक्षयम् ॥ ५ ॥ कुर्वन्निः सहितं भीष्मे युध्वमानेपरन्तप । अर्जुनञ्च सपाञ्चाल्यं
संशयो विजये भवत् ॥ ६ ॥ दशमेहानि तस्मिंस्तु भीष्मार्जुनसमागमे । अवर्त्तत
महारौद्रः सततं समितिक्षयः ॥ ७ ॥ तस्मिन्नुत्तमो राजन् भयशश्च परन्तपः ।
भीष्मः शान्तनवो योषान् जवान परमाश्रवित् ॥ ८ ॥ येषामज्ञातकल्पानि नामगो
त्राणि पार्थिव । ते हतास्तत्र भीष्मेण शूराः सर्वेऽनिवर्त्तिनः ॥ ९ ॥ दशाहानि
ततस्तप्त्वा भीष्मः पाण्डववाहिनीम् । निरविद्यत धर्मात्मा जीवितेन परन्तप ॥ १० ॥
स क्षिप्रं बधमन्विच्छन्नात्मनोभिसुन्दरेण । न हन्यां मानवश्रेष्ठान् संग्रामे सुबहूनि
॥ ११ ॥ चिन्तयित्वा महाबाहुः पिता देवव्रतस्तव । अज्ञासस्यं महाराज पाण्डव
वाक्यमवब्रवीत् ॥ १२ ॥ युधिष्ठिर महाप्राज्ञ संशशास्त्रशिखर । शुण्ण्य वचनं

वाले उम कौरवी भीष्मने भी अपने क्रियेद्वेष सत्यसंकल्पके अनुसार पाण्डवोंकी सेनाका
सदैव नाश किया । ५। हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र कौरवों समेत भीष्म और धृष्टद्युम्नसमेत
अर्जुन इनदोनों युद्धकरनेवालोंकोअपने २ विजय करने में सन्देह हुआ । ६। फिर
उस दशवेंदिन के युद्धमें भीष्म और अर्जुनकी सम्मुखता में बारम्बार बड़ी भयकारी
प्रलय वर्चमानहुई, उसदिनमें शत्रुसंतापी उत्तम अस्त्रों के ज्ञाता भीष्मजीने हजारों
बड़े २ शूरीरों को मारा । ८। उनओगों के नाम और गोत्र अज्ञातकल्पके समान
थे अर्थात् नहीं मालूम सेही थे वह युद्ध में पीठ न मोड़नेवाले महाराज भीष्मजी के
हाथ से मारेगये । ९। इसके पीछे धर्मात्मा भीष्मजी ने दशदिन तक पाण्डवी सेना
को अच्छीरीति से संनप्त करके जीवन से वैराग्य पाया । १०। वह युद्ध में सम्मुख
शीघ्रही अपने मरनेका इग रीति से विचार करनेवाला हुआ कि मैं युद्धमें बहुतसे श्रेष्ठ
मनुष्यों को नहीं मारूंगा । ११। हे महाराज आप के पिता देवव्रत महाबाहु भीष्मजी चि-
न्ता करके पाण्डवोंके सम्मुख होकर यह वचनबोला । १२। कि हे बड़ेजानी सर्वशास्त्रज्ञ

day to the other world. The conquerer in battle, Bhishm the Kaurav destroyed every day the army of the Pandavas according to his promise. The Kauravas with Bhishm and Arjun with Dhrishtadyumna on both sides were doubtful of their victory. On the tenth day both Arjun and Bhishm fought very hard. Bhishm the destroyer of enemies and skilful in the use of weapons killed thousands of great warriors on that tenth day. The names and families of the warriors who, not turning their face from the battle met their death at the hands of Bhishm, cannot be told. Having destroyed the armies of the Pandavas for ten day, Bhishm, left all regard for his life. 10. While in the field of battle his thoughts about his death ran thus:—"I shall not slay any more good warriors in battle." Your father Devarat, better known as Bhishm of great arms, with this thought uppermost

[४१२]

तापस्यं स्वर्गं जगत् ॥ १३ ॥ निर्धिगोस्मि भृशं तात देहेनानेन भारत ।
 स्वर्गं प्रमत्तं कालं सुग्रहं प्राणिनोरण ॥ १४ ॥ तस्मात् पार्थ पुरोधाय पञ्चालान्
 वृथास्तथा । मध्ये कियतां यतो मम वेर्विच्छसि प्रियम् ॥ १५ ॥ तस्य तन्म
 तमात्राय पाण्डव सत्यदर्शन । भीष्मं प्रति वयो राजा सप्रामे सह खञ्जये ॥ १६ ॥
 धृष्टद्युम्नस्ततो राजन् पाण्डव्य युधिष्ठिर । श्रुत्वा भीष्मस्य तां वाचं चोदयामास
 तुर्वलम् ॥ १७ ॥ अभिद्रव्यथ युध्वं भीष्मं जयत सयुगे । रक्षिता सत्यसन्धेन
 त्रिष्णुना रिपुजिष्णुना ॥ १८ ॥ अयञ्चापि महेष्यास पार्षतो घाहिनीपति । भीम
 सेतथ समरे बालविष्यति वा भ्रमम् ॥ १९ ॥ माघो भीष्मान्द्रय किञ्चिदस्त्वद्य युधि
 खञ्जया । भुव भीष्मं विजेष्याम पुरस्वृत्य शिखण्डिनम् ॥ २० ॥ ते तथासमय

पुत्र युधिष्ठिर मेरे इस स्वर्ग के देनेवाले धर्मरूपी वचनों को सुन । १३ । हे भरतवशी वेदामै
 इस शरीरसे अत्यन्त प्रीति रहित हूँ और युद्ध में अनेकों नीवधारियों को मारते हुए मेरा
 समय व्यतीत हुआ । १४ । इस हेतुसे जो तू मेरा भला चाहता है तो तू अर्जुन को
 और इसी प्रकार पांचालदेशियों को और संजियों को आगेकर के मेरे मारने का विचार
 पूर्वक उपायकर । १५ । सत्यदर्शी पांडव राजा युधिष्ठिर उन के इस अभिप्रायके मतको
 जानकर सृष्टियों समेत युद्ध में भीष्मजी के सम्मुख गया । १६ । हे राजा उसके पीछे
 धृष्टद्युम्न और पांडव युधिष्ठिर ने भीष्म जीके ऐसे वचनोंको सुनकर सेनाको आज्ञा
 करी । १७ । कि चलकर युद्ध करो और युद्धमें सत्यसंकल्पएकही रथसे विजय करने
 वाले अर्जुन से रक्षित होकर तुम भीष्म जी को विजयकरो । १८ । निश्चय करके
 यह बड़ा धनुषधारी सेन पाति धृष्टद्युम्न और भीमसेनभी युद्धमें तुम्हारी रक्षाकरेंगे
 । १९ । हेसृष्टियों अब युद्धमें तुमको भीष्मसे कोई प्रकारका भयनहीहोगा निश्चय
 करके हम शिखण्डी को आगेकरके भीष्मको विजयकरेंगे । २० । वह क्रोधसे

in his mind, said to the Pandavas, "Wise and learned son, Yudhis
 thir, hear my words which are giver of paradise Descendant of
 Bharat! son! I have lost all love for my body I have lost much
 time in killing the living beings in battle You should, if thou
 would t do me good, contrive for my death with the assistance of
 Arjun the Srinjays and the Panchals" The truthful Pandav,
 Prince Yudhishtir learning the object of his desire, faced Bhishm in
 company with the Srinjyas 16 Then Dhrishtadyumna and
 Yudhishtir the Pandav, hearing the words of the grandfather, ordered
 the armies to advance for battle and to conquer Bhishm under the
 guidance of Arjun of true vows and conquerer with a single chariot 18
 Surely this great archer Dhrishtadyumna the commander of armies
 and Bhimsen will protect you in battle You will have no cause of
 fear from Bhushm O Srinjaya surely, led by Shikhandi we shall

दशमेहनि पाण्डवाः । ब्रह्मलोकपरं भूत्या एङ्गमु. क्रोधमूर्च्छिताः ॥ २१ ॥
 शिखण्डिनं पुरस्कृत्य पाण्डवश्च धनञ्जयम् । भीष्मस्य पातने यत्नं परं ते संमा-
 स्यताः ॥ २२ ॥ ततस्त्रय सुतादिष्टा नानाजनपदेवराः । द्रोणेन सह पुत्रेण सह
 सेना महं बला ॥ २३ ॥ दुःशासनश्च यलवान् सह सर्वे सहोदरे । भीष्मं समरे
 मध्यस्थं पाण्डवाश्चक्रिरे तदा ॥ २४ ॥ ततस्तु तावकाः शूरा परस्कृत्य महाप्रथम् ।
 शिष्यं हीप्रमुखान् पार्थिवं योद्यन्तिस्म संयुगे ॥ २५ ॥ चेदिश्विस्तु सपञ्चालैः
 सहितो वानरध्वजः । यथा शान्तनवे भीष्मं पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ॥ २६ ॥ द्रोणपुत्रं
 शिनेनेता घृष्टकेतुस्तु पौत्रध्वम् । अभिमन्युः सहामात्य दुर्योधनमयोधयत् ॥ २७ ॥
 विराटस्तु सहानीक सहसेनं जयद्रथम् । वृद्धक्षत्रस्य द्वापाद् माससावपर्यत् ॥ २८ ॥
 मद्राजं महेश्वास सहसेनं युधिष्ठिरः । भीमसेनोसिगुप्तस्तु नागानीकमुपाद्रथत्

मूर्च्छित पाण्डव दशवें दिन उत्ती प्रकार का नियम करके ब्रह्मलोक को उच्चम मानते
 हुए सब मिलकर चले । २१ । और शिखण्डी को और पाण्डव अर्जुन को आगे
 करके भीष्मके गिराने के लिये बड़े उपायोंमें नियतहुए । २२ । उसके पीछे आपके
 पुत्रकी आज्ञासे नानादेशों के राजालोग द्रोणाचार्य अश्वत्थामा और सेना समेत
 महायुद्धी धनुषधारी दुःशासनसब अपने इष्ट मित्र और विरादरी वालोंसे युक्त इन
 सबोंने आकर युद्धमें नियत भीष्मजीको चारोंओरसे रक्षितकिया । २३ । इसके पीछे
 आप के शूरीर पुत्र भीष्मजी को आगे करके उन पाण्डवोंसे लड़नेके लिये जिनका
 कि अग्रगभी शिखण्डीया युद्धमें प्रयत्नहुए । २४ । फिर वह वानरध्वज अर्जुन चेदरी
 देशके और पांचाल देशके लोगों के साथ शिखण्डी को आगे करके शान्तनुके पुत्र
 भीष्मजी के सम्मुख गया । २५ । सात्यकीने अश्वत्थामाको और घृष्टकेतुने कौरवोंको और
 अभिमन्युने मंत्रियों समेत असदुर्योधनको युद्धमें सम्मुखहोकर युद्धकिया । २७ । और सेना
 समेत राजाविराट ने वार्द्धक्षेमके पुत्र जयद्रथसे सेनासमेत सम्मुखता करी । २८ । और
 युधिष्ठिरने बड़ेधनुषधारी सेनासमेत राजामद्रको सम्मुखपायाऔर चारोंओर से रक्षित

conquer Bhishm 20. On that tenth day, the Pandavas insesibel
 with anger and firm on their resolve, went together thinking highly
 of the region of Braham, and led by Shikhandi and Arjun they tried
 hard to slay Bhishm. Then by the order of your son, the princes of
 various countries together with Dronacharya, Ashwathama and
 Dushasan the mighty archer, followed by their armies, friends and
 allies, protect.d Bhishm from all sides. Then your brave sons, led by
 Bhishtm, were ready to fight against the Pandavas led by Shi-
 khandi. 25 Arjun of monkey's standard, together with the people
 of Chanderi and Panchal, led by Shikhandi, proceeded to encounter
 Bhishm the son of Shantanu. Satyaki met with Ashwathama in
 combat. Dhushketu with the Kauravas and Abhimanyu with Dur-

॥ २९ ॥ अग्रधृष्यमनावार्ये सर्वशस्त्रभूताम्बरम् । द्रौणिं प्रति ययौ वसतः पाण्डवान्यः
सह सोदरैः ॥ ३० ॥ कर्णिकारध्वजश्चैव सिंहकेतुरारिन्दम । प्रपुञ्जगाम सौमद्र राज
पुत्रो वृहद्रथः । ३१ ॥ शिक्षण्डिनश्च पुत्रास्ते पाण्डवश्च धनञ्जयम् । राजनि समरे
वार्ये मणिपेतुर्जिघांसवः ॥ ३२ ॥ तस्मिन्नतिमहाभीमे सेनयोर्ये पराक्रमे । सम्प्रधावत्
स्वनीकेषु मेदिनी सम कम्पत ॥ ३३ ॥ तान्यनीकान्यनीकेषु समसञ्जत भारत ।
तावकानां परेषाम्च दृष्ट्वा शान्तनयं रणे ॥ ३४ ॥ ततस्तेषां प्रतप्ताना मन्यो
म्यमभिधावताम् । प्रादुरासीन्महाशब्दो विदुः सर्वासु भारत ॥ ३५ ॥ शस्त्रदुग्दु
मिघोपश्च धारणानां च वृंहितैः । सिंहनादय सैन्यानां दारुणं समयद्यत ॥ ३६ ॥

भीमसेन बड़ीसेनाकी ओर चला । २९ । और मतवाला धृष्टपुम्न अपने निज भाइयों और
नातिदारों समेत उस अज्ञेय सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ स्वाधीन न होनेवाले अश्वत्यामाके
सम्मुख गया । ३० । शत्रुओंका विजय करनेवाला सिंहकी ध्वजासे युक्त राजकुमार
वृहद्रथ उस कर्णिकार वृत्तकी चिह्नवाली ध्वजावाले अभिमन्युके सम्मुख गया । ३१ ।
आपके सब राजा सेनाओंसमेत शिखण्डी और पाण्डव अर्जुन के मारनेके इच्छावान
युद्धमें अर्जुनके सम्मुख दौड़े । ३२ । उस समय उन भयानक सेनाओं समेत तुम्हारे
पुत्रोंके दौड़ने से पृथ्वी अच्छे प्रकार से कंपायमान हुई । ३३ । भरतर्षभ भीष्मजी को
युद्धमें देखकर आपके पुत्रोंकी और पाण्डवों की सेनापरस्परमें बड़े २ पराक्रमोंको
कर करके लड़ी । ३४ । इसके पीछे उन अत्यन्त पीड़ामान परस्पर दौड़नेवालों
का बड़ा भारी महाशब्द सब ओर को जारी हुआ । ३५ । और शस्त्र दुन्धुभियों के
उत्पन्न हुआ । ३६ । सब राजाओंका चन्द्रमा और सूर्यके समान तेज वा शूर वीर

yodhan and his counsellors. King Virat and his armies met Jayad-
rath the son of Vardhksheem and his armies. Yudhishtir found the
great archer Prince of Madra and his army face to face with him and
protected on all sides, Bhimsen rushed upon the great army. Proud
Dhrishtadyumna with his brothers and allies faced invincible Sahwa-
thama the best of arm-bearers. 30. Prince Vrahadval of lion's
standard, the conqueror of foes faced Abhimanyu who had the
Larnikar tree for his ensign. All your warriors together with the
armies, desirous of slaying Shikhandi and Arjun, rushed to fight
against the latter. The earth shook with the rushing on of your
sons and their armies. Seeing Bhim in the field of battle, the armies
of your sons and those of the Pandavas fought very bravely. Then
there was a tremendous noise at the meeting of the two armies. 35. The
scene was very dreadful with the uproar made by the peals of conchs
and trumpets, the shrieks of elephants and the leonine roars of the
warriors. The sun-and-moon like glory of all the kings and warriors

सा च सर्वनरेद्राणां चन्द्राकंसदशी प्रभा । वीराङ्गदकिरीटेषु निष्प्रभा समपघत ॥ ३७ ॥
 राज्ञो मेघास्तु सञ्जय. शस्त्रविद्युद्गिराट्वाः । धनुषाञ्चापि निघोषो दारणः समपघत
 ॥ ३८ ॥ बाणसंज्ञप्रणादाक्ष भेरीणाञ्च महास्वनाः । रथघोषश्च सञ्जये सेनयोद्यमयो
 रपि ॥ ३९ ॥ पाराशक्त्युष्टिसंघैश्च चाणोघैश्च समाकुलम् । निष्प्रकाशमिघाकाशं सेनयोः
 समपघत ॥ ४० ॥ भयोन्मयं रथिन पेतुर्वाजिनश्च महाहवे । पुञ्जरान् कुञ्जरा जघ्नुः
 पादाताश्च पदातयः ॥ ४१ ॥ सत्रासीत् सुमहद्युद्धं कुरुणां पाण्डवैः सह । भीष्महेतोर्न
 रण्याच्च ह्येनवीरामिमे यथा ॥ ४२ ॥ तेषां समागमो घोरां पभूचयुधि सङ्गतः । जघ्मो
 ष्वस्य बधार्थाप जिगीयूणां महाहवे ॥ ४३ ॥

इति धी महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मोपदेशे

षोडशधिकशतोऽध्यायः ॥ ११६ ॥

सञ्जय उवाच । अमिमन्मयुर्महाराज तव पुत्रमवोधयत् । महत्या सेनया युक्तं
 भीष्महेतोः पराक्रमी ॥ १ ॥ दुष्योधनो रणे कर्णिनं नवमिनंतपर्वभिः । आजगामो

लोगों के बाजूबन्द और मुकुटप्रभामे रहित होगये ॥ ३७ ॥ शस्त्ररूपी विजलीसे युक्त धूलके
 बादल उत्पन्न हुए और धनुषों के भी भयकारी शब्दवर्त्तमान हुए ॥ ३८ ॥ दोनोंसेना-
 ओंका आकाश शक्ति पाश औरदुधारे खण्ड औरवाणोंके समूहोंसे व्याप्त होकर
 प्रभासे रहित होगया । ४० ॥ उसचड़े भारी युद्धमेंरथी घोड़े हाथी ऐसे परस्पर में लड़े
 कि हाथीको हाथीने पदाती को पदातीने मारा, हे नरोत्तम वहाँ भीष्मके कारण
 पांडव और कौरवोंका ऐसा महाभारीयुद्ध हुआ जैसा कि पराये मांस के निमित्त दोबान
 पत्तियोंका युद्ध होताहै । ४२ ॥ उनविजयाभिनापी शूरोरोंका भयानकयुद्ध परस्पर
 में एक एकके मारने के निमित्त वर्त्तमानहुआ । ४३ ॥

अध्याय ॥ ११७ ॥

संजय बोला हे महाराज पराक्रमी अभिमन्मयु ने भीष्मके कारण वही सेनासे
 संपुक्त आपके पुत्रसे युद्ध किया । १ । तब क्रोधयुक्त दुष्योधन ने झुकीगाँठ वाले

and of their b acoblets and diadems, faded The clouds of dust arose
 having bright weapons for lightning and the sounds from the bows
 were tremendous. The space between the two armies was filled with
 nooses, double edged swords and flights of arrows. 40. In that battle
 the charioteers, horsemen and elephant riders fought and slew one
 another. The battle between the Kauravas and the Pandavas on
 account of Bhishma was very severe like that of two hawks for the
 flesh of another bird. The warriors desirous of conquest fought to
 slay one another. 43.

CHAPTER CXVII

Sanjaya said, " Brave Ahhimanyu fought against your son and
 his large army on account of Bhishma. Then cursed Duryodhan

॥ ३९ ॥ अप्रभुस्यमनावायं सर्वशस्त्रभूताम्बरम् । द्रौणिं प्रति ययौ बभूवः पाञ्चानन्यः सह सोदरैः ॥ ३० ॥ कर्णिकारध्वजश्चैव सिंहकेतुररिन्दम । मरुत्पुञ्जगाम सौमद्र राजपुत्रो वृहद्रथः ॥ ३१ ॥ शिखण्डिनश्च पुत्रास्ते पाण्डवश्च धनञ्जयम् । राजभिः समरे पार्थ अभिपेतुर्जिघांसवः ॥ ३२ ॥ तस्मिन्नतिमहामीमे सेनयोर्वै पराक्रमे । सम्प्रधावत् स्वनीकेषु मेदिनी सम कम्पत ॥ ३३ ॥ तान्यनीकान्यनीकेषु समसज्जन्त भारत । तावकानां परेषाम्बु दृष्ट्वा शान्तनयं रणे ॥ ३४ ॥ ततस्तेषां प्रतप्ताना मन्यो न्यमभिधावताम् । प्रादुरासीन्महाशय्यो दिवु सर्पासु भारत ॥ ३५ ॥ शङ्खदुन्दुभिघोषश्च धारणानां च वृंहितैः । सिंहनादश्च सैन्यानां दाहण समपद्यत ॥ ३६ ॥

भीमसेन बड़ीसेनाकी ओर चला । २९ । और मतवाला घृष्टद्युम्न अपने निज भाइयों और नातेदारों समेत उस भ्रजेय सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ स्वाधीन होनेवाले अश्वत्थामाके सम्मुख गया । ३० । शत्रुओंका विजयकरनेवाला सिंहकी ध्वजासे युक्त राजकुमार वृहद्रथ उस कर्णिकार वृत्की चिह्नवाली ध्वजावाले अभिमन्युके सम्मुख गया । ३१ । आपके सब राजा सेनाओंसमेत शिखण्डी और पांडव अर्जुन के मारनेके इच्छावात् युद्धमें अर्जुनके सम्मुख दौड़े । ३२ । उस समय उन भयानक सेनाओं समेत तुम्हारे पुत्रोंके दौड़ने से पृथ्वी अच्छे प्रकार से कंपायमान हुई । ३३ । भरतर्षभ भीष्मजी की युद्धमें देखकर आपके पुत्रोंकी और पांडवों की सेनापरस्परमें बड़े २ पराक्रमोंकी कर करके लड़ी । ३४ । इसके पीछे उन अत्यन्त पीड़ामान परस्पर दौड़नेवालों का बड़ा भारी महाशब्द सब ओर को जारी हुआ । ३५ । और शंख दुन्दुभिघों के शब्द वा हाथियों की चिंहाड़ अथवा सेनाके मनुष्योंके सिंहनादोंसे महामारी भय उत्पन्न हुआ । ३६ । सब राजाओंका चन्द्रमा और सूर्यके समान तेज वा शूर वीर

yodhan and his counsellors. King Virat and his armies met Jayadrath the son of Vardhksheem and his armies. Yudhishtir found the great archer Prince of Madra and his army face to face with him and protected on all sides, Bhimsen rushed upon the great army. Proud Dhrishtadyumn with his brothers and allies faced invincible Ashwathama the best of arm-bearers, 30. Prince Vrahadval of lion's standard, the conqueror of foes faced Abhimanyu who had the Larnikar tree for his ensign. All your warriors together with the armies, desirous of slaying Shikhandi and Arjun, rushed to fight against the latter. The earth shook with the rushing on of your sons and their armies. Seeing Blim in the field of battle, the armies of your sons and those of the Pandavas fought very bravely. Then there was a tremendous noise at the meeting of the two armies, 35. The scene was very dreadful with the uproar made by the peals of conchs and trumpets, the shrieks of elephants and the lionine roars of the warriors. The sun-and-moon like glory of all the kings and warriors

रसि क्रुद्ध पुनश्चैव त्रिभिः शरैः ॥ २ ॥ तस्य शक्तिं रणे दाष्णिमृत्योघोरा स्वसामिष।
 प्रेषयामास सकुद्धो दुर्योधनरथ प्रति ॥३॥ तामापत तीं सहसा घोररूपा विदाम्पते ।
 द्विधा विच्छेदते पुत्र सुरमेण महारथ ॥४॥ तांशक्तिपतितादृश्वकाणि परमकोपनं ।
 दुर्योधन त्रिभिर्वाणैर्वाहोरसि चार्पयत् ॥ ५ ॥ पुनश्चैन शरैर्घोरै राजघानस्तनातरे ।
 यशभिर्मरतधेष्ट भरताना महारथ ॥६॥ तद्युद्धमभवद्घोर चिररूपश्च भारत । इन्द्रिय
 प्रीतिजनन सर्वपाथिः पूजितम् ॥ ७ ॥ भीष्मस्य निधनार्याय पायस्य विजयाय च ।
 युयुधाते रण घोरौ सौभद्रकुरूपद्वौ ॥ ८ ॥ सात्याकि रमस युद्धे द्रौणिर्ब्राह्मणपुङ्गव ।
 आजघानोरसि क्रुद्धो नाराचन परन्तप ॥ ९ ॥ शौषोपि गुणे पुत्र सर्वमर्मसु भारत ।
 यताडयद् मेवात्मा नवभिः कडुवाजितैः ॥१०॥ अश्वत्थामा तु समरे सात्याकि नवभिः
 शरैः । त्रिदशता च पुनस्तूर्ण वाहोरसि चार्पयत् ॥११॥ सोतिविद्धो महध्वासो द्रोणपु

नव वाणों से अभिमन्युको व्यथित करके तीन वाणों से फिर उस को घायल
 किया । २ । तब अत्यन्त कोपयुक्त अभिमन्यु ने मृत्युके समान भयकारी शक्ती को
 दुर्योधन के रथपर चनाया । ३ । हेराजा आपके पुत्र महारथीने उस अक्रुस्मात् गिरती
 हुई भयकारी शक्तीको सुरम वाणोंमें दो खड कर दिये । ४ । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त
 अभिमन्यु ने उसदूत्कर गिरी हुई शक्ती को देखकर दुर्योधन की भुजा और छाती
 को तीन वाणों से घायल कर दिया हे राजा वह भयकारी युद्धमें अपूर्व रूप का
 चित्तका आनन्द देनेवाला सवराजाओंसे पूजितहुआ वह सुभद्राकापुत्र और कौरवों
 में श्रेष्ठ दुर्योधन दोनों शरवीर भीष्म के मारने वा अर्जुन के विजय के निमित्त
 युद्ध करनेवाले हुए शत्रुओंके तपानेवाले युद्धमें बेगवान् व ह्मणोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामा
 ने सात्यकी को नाराचनाम वाणसे छतीपर घायल किया । ९ । फिर बड़े
 बुद्धिमान् सात्यकाने भी गुरूके पुत्रको नववाणोंसे सवमर्षस्थलोंमें घायल किया । १० ।
 तिस पीछे अश्वत्थामा ने सात्यकी को नव वाणों से छातीपर और तास वाणों से

with nine arrows having holed joints wounded Abhimanyu and
 again pierced him with three more. Thereupon Abhimanyu much
 enraged hurled a deadly spear at Duryodhan's chariot but your
 brave son cut with his arrow the spear coming on towards him
 Abhimanyu much enraged at the sight of that falling spear wounded
 the breast and arm of Duryodhan with three arrows That dreadful
 battle O king was pleasing to the mind and respected by all the
 kings The son of Subhadr and Duryodhan the best of the hours
 was both warriors fought for the death of Bhishm and the victory of
 Arjun Ashwathama the destroyer of foes clever in battle and
 best of Brahmans wounded Satyaki on the breast with an arrow
 known as Narach Satyaki the wise too, wounded the preceptor's
 son with nine arrows in the vital parts of the body 10 Then
 Ashwathama wounded Satyaki on the breast with nine arrows and on

श्रेण सात्वतः । द्रोणपुत्रं त्रिभिर्याणिराजघान महायशः ॥ १२ ॥ पौरवो धृष्टकेतुश्च शरै
 राच्छाद्य संयुगे । बहुधा दारयाञ्चक्रे महेष्यासं महारथः ॥ १३ ॥ तत्रैव पौरवं युद्धे
 धृष्टकेतुमहारथः । त्रिशता निशितैर्वाणिविध्याधाशु महाशुभ्रः ॥ १४ ॥ पौरवस्तु धनु-
 दिच्छत्या धृष्टकेतोर्महाथ । ननाद् बलवन्नादं विभ्याथ च शितैः शरैः ॥ १५ ॥ सान्यत्
 कामुकमादाय पौरवं निशितैः शरैः । राजघान महाराज त्रिसप्तत्या शिलीमुखैः ॥ १६ ॥
 तौतुतत्र महप्यासौ महामात्रौमहारथौ । महता शरवर्षेण परस्परविध्यताम् ॥ १७ ॥
 अन्योन्यस्य धनुश्छित्वा हयाग्रहत्वाचभारत । विरथावसिषुद्धा १ समीचनुरमर्षणौ १८ ॥
 आर्षमे चर्मणो चित्रे शतचन्द्रपुररुहते । तारकाशतचित्रं च निस्त्रिंशौ सुमहाप्रभौ
 ॥ २९ ॥ प्रवृष्ट विगलौ राजंस्तावन्वोन्यमभिदुतौ । चासितसहमे यत्तौ सिंहाविष महा
 पते ॥ २० ॥ मण्डलानि विचित्राणि गतप्रथा गतानि च । चेरतुदंशयन्तौ च प्रायंयन्तौ

भुजाओपर घायल किया । ११ । द्रोणाचार्य के पुत्रने अत्यन्त घायल बड़े धनुष
 धारी यशवान् सात्यकी ने अश्वत्थामा को तीन वाणों से घायल किया । १२ ।
 महारथी पौरवने बड़े धनुषधारी धृष्टकेतु को वाणोंसे ढककर अत्यन्त घायल किया, इसी
 प्रकार महारथी धृष्टकेतुने शत्रितासे तेजधारवाले वाणोंसे पौरव को घायल किया । १४ ।
 फिर महारथी पौरव धृष्टकेतु के धनुषको काट कर महाघोर शब्दसे गर्जा और तीव्र वाणों
 से घायल किया । १५ । हेमहाराज उसने दूसरे धनुषको लेकर गिलीमुखनाम तीक्ष्ण
 वाणोंसे पौरवको व्यथित किया । १६ तबवहां उनदोनों बड़ेधनुषधारी शोभायमान
 महारथियोंने वाणोंकी बड़ीवर्षासे परस्परमें घायल किया । १७ । वहदोनों क्रोधयुक्त
 परस्पर में धनुष काटकर वा घोड़ों को मारकर विरथ हो खड्गमहारी युद्ध करने
 के लिये सम्मुख हुए । १८ । हे राजा वह दोनों शूरवीर अत्यन्त स्वच्छरूप सूर्य
 चन्द्रमा से प्रकाशित खड्ग और उत्तम चित्रोंसे चित्रित ढालों को । १९ । ब्रेकर
 परस्पर में ऐसे सम्मुख गये जैसे कि महा वन में सिंहनी के पिलाप में उपाय
 करने वाले दो सिंह होते हैं । २० । परस्पर दिखाने और चारते हुए दोनों

the arms with thirty. Much wounded by the son of *ucharya* the
 great archer *Satyaki* of great glory, wounded him with three arrows.
 Valliant *Paurav* covered the great archer *Dhrishtaketu* with his
 arrows and wounded him much. In the same manner, brave *Dhrisht-*
ketu wounded *Paūrav* with his swift and sharp arrows. The brave
Paurav cut down the bow of *Dhrishtketu* and with a loud roar wound-
 ed him with his arrows. 15. He took up another bow and with
 arrows sharpened on stone wounded *Paurav*. The two great archers
 then showered their arrows and wounded each other. The two
 enraged warriors cut down each other's bows and having killed the
 horses they jumped down from their chariots and faced each other to
 fight with swords. The two brave warriors with clean swords, bright
 like the sun and the moon, and good shields worked over with figures

परस्परम् ॥ २१ ॥ पौरवो धृष्टकेतुस्तु शंखदेशे महासिना । ताडयामास संकुञ्जस्तिष्ठ
 तिष्ठति चाग्रयात् ॥ २२ ॥ चन्द्रि राज्ञोपि समरे पौरव पुरुषर्षभम् - आजघान शिताम्रेण
 जत्रदेशे महासिना ॥ २३ ॥ तावन्व्योन्यं महाराज समासाद्य महाहवे । मन्व्योन्यधेगाभिहतो
 नितुत्तुररिन्दमौ ॥ २४ ॥ तत स्वयमंगीव्य पौरवं तनयस्तथ । अयत्सेनो रणेनाजाबपो
 बाहुरणोजिवात् ॥ २५ ॥ धृष्टकेतुस्तु समरेमाद्रीपुत्रः प्रतापवान् । भयोबाहुरणेभूतः सहदेवः
 पराक्रमी ॥ २६ ॥ चित्रसेनः सुशर्माण विद्या बहुमिरायसैः । पुनर्विध्याद्य त वश्या
 पुनश्च नवभिः शरैः ॥ २७ ॥ सुशर्मो तु रणे क्रुद्धस्तथ पुत्रं विशाग्तं । दशानि
 दशमिभ्यश्च विध्याद्य निशितैः शरैः ॥ २८ ॥ चित्रसेनश्च तं राजं क्षिप्रतानतपर्षभिः ।
 आजघान रणे क्रुद्धः स च तं प्रत्यविष्यत् ॥ २९ ॥ भीष्मस्य समरे राजत्रयशो
 मानश्च पर्ययत् । सौमद्रेः राजपुत्रन्त बृहद्बलमयोघयत् ॥ ३० ॥ पार्थ हेतोः

वीरों ने विभिन्न दाहैवायें मंडलों को किया । २१ । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त पौरव
 बड़े खड्ग से धृष्टकेतु को शंखनाम भंग में घायल करके अर्थात् बाणों के नीचे
 छाती के ऊपर इधर उधरके हाड़ों में प्रहार करके तिष्ठ तिष्ठ यह शब्द बोले । २२ ।
 राजा चन्देरीने भी युद्ध में पौरव को तीक्ष्ण धार वाले बड़े खड्ग से शत्रुदेश
 नाम भंगमें अर्थात् जाड़े में घायल किया । २३ । हे शत्रुहन्ता यह दोनों महा
 युद्ध में परस्पर भिड़े हुए तीक्ष्णता से घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े । २४ ।
 उसके पीछे आपका पुत्र जितमेन युद्ध भूमि में पौरवको अपने रथपर सवार करके
 उसी रथके द्वारा युद्धभूमि से दूर लेगया । २५ । फिर माद्रीका पुत्र प्रतापवान्
 शूर पराक्रमी सहदेव युद्धमें धृष्टकेतु को वूरलेगया । २६ । चित्रसेन ने सुशर्मा को
 बहुत से सोहे के बाणों से घायल करके फिर साठ बाण से और नव बाणों से
 घायल किया । २७ । तब उस क्रोधयुक्तने भी उस चित्रसेन को क्रुकी गंड वाले
 तीस बाणों से घायल किया फिर अपने उसको घायल किया । २९ । हे राजा
 भीष्म के युद्ध में यशकीर्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुए अभिमन्यु ने बृहद्बल

of various sorts, faced each other in battle as two furious lions wishing
 to secure a lioness, meet each other in a forest Showing their prowess
 and desirous of fighting they turned right and left in circles. Then
 Paurav, much enraged, wounded his adversary on the breast and cried
 out 'stay, stay.' The prince of Chanderi too, wounded Paurav on the
 the jaw bone. The two warriors wounded by each other, fell down on
 earth. Then your son Jitsen took up Paurav on his chariot and
 carried him far away from the field of battle 25. Valliant Sahadev
 the son of Madri lifted up Dhrishtaketu and took him away out of
 the field of battle Chitrassen wounded Susharma with many iron
 arrows numbering sixty and nmo. The other too, much enraged,
 wounded Chitrassen with thirty arrows having hooked points. They
 wounded each other In the war of Bhishm, Abhimanyu aspiring

पराक्रान्तो भीष्मस्यायोधने प्रति । अर्जुनि कौसलेन्द्रस्तु विष्वा पञ्च मिरायसैः ॥ ३१ ॥ पुनर्विध्याध विशत्या शरैः सज्रतपर्वामि । सौमद्रः कौसलेन्द्रस्तु विष्वाधाध मिरायसैः ॥ ३२ ॥ नाकल्पयत समामे विध्य ध च पुनः शरैः ॥ कौसल्यस्य चतुश्चापि पुनश्चिचउद् फालगुनि ॥ ३३ ॥ भाजवान शरैश्चापि त्रिशता कङ्क पशिमिः ॥ सोम्यत् कार्मुकमादाय राजपुत्रेवृहदलः ॥ ३४ ॥ फालगनि समरे कुडो विध्याध बहुभिः शरैः । तयोर्बुद्धं समभवत् भीष्महतोः परन्तप ॥ ३५ ॥ संर ष्ययोर्महाराज समरे विज्रयोभिनी । बया देवासुरे युद्धे वलिचासपयोदभूत् ॥ ३६ ॥ भीमसेनो रथानीकं घोषपद् बहुबर्षो जित । यथा शक्यो वज्रपाणिर्धोरयन् पर्वतोत्त मान् ॥ ३७ ॥ ते वष्यमाना भीमेन मातङ्गा गिरिसभिमा । निपेतुर्दुर्वा सहिता नादयन्तो वसुधराम् ॥ ३८ ॥ गिरिमात्रा हि ते नागा मिश्राश्चनचयोपमा । विरे

नाम राजकुमार से युद्ध किया । ३० । और अर्जुन के कारण से भीष्म की युद्ध-भूमि में पराक्रम करने वाला हुआ और राजा कौशल ने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को पाँच लोहे के बाणों से घेरा कर । ३१ । फिर गुप्तग्रन्थी वाले बीस बाणों से घायल किया और अभिमन्यु ने राजा कौशलको आठलोहे के बाणों से घायल और कम्पायमान करके उसके धनुष को भी काटा । ३३ । और कंकपलवाले तीस बाणों से भी घायल किया उस युद्ध में क्रोधयुक्त राजकुमार वृहद्वलने दूसरे धनुषको लेकर । ३४ । अभिमन्यु को बहुत से बाणों से घायल किया हे शत्रुओं के संतप्त करनेवाले उन दोनोंका युद्ध भीष्म के कारण ऐसा अच्छा हुआ जैसा कि देवता और असुरों के युद्ध में राजा बलि और इन्द्रका हुआ । ३६ । भीमसेन रथों की सेनासे लड़ता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वज्रको धारण करने वाला इन्द्र उत्तम पर्वतों को फाड़ता हुआ शोभित होता है । ३७ । भीमसेन के हाथ से घायल पर्वतों के समान वह सब हाथी एक साथ ही पृथ्वीको शब्दायमान करते हुए भूमिपर गिरे । ३८ । पर्वतके समान टूटैहुर वर हाथी पृथ्वीपर

for fame and greatness, fought against Prince Vrahadbal 30. He fought for the love of Arjun in the battle field of Bhishm. Prince Kosal wounded Arjun's son Abhimanyu with five and twenty iron arrows having hidden knots and Abhimanyu having wounded and shaken his adversary with eight iron arrows, cut down his bow. With thirty arrows having peacock feathers he wounded him again. Enraged in battle, Prince Vrahadbal took up another bow and wounded Abhimanyu with many arrows. The two heroes, O destroyer of foes, fought like Indra and Bali in the war between the gods and the danavas 36. Bhishm fighting against the army of chariots looked graceful like Indra the wielder of vajra breaking through mountains. Wounded by Bhimsen the elephants as huge as hills fell on earth ringing the air with their shrieks. The elephants

जुयंघुघां प्राप्ता विकीर्णा इव पर्वताः ॥ ३९ ॥ युधिष्ठिरो महेश्पासो मद्रराजानमा
 ह्ये । महत्या सेनया गुप्तं पाडयामास सङ्गतम् ॥ ४० ॥ मद्रेश्वरश्च समरे धर्म
 पुत्रं महारथम् । पाडयामास संरघो भीष्महेतोः पगाक्रमो ॥ ४१ ॥ विराटं सिन्धवो
 राजा विघ्ना सन्नतपर्वभिः । नवभिः सायकैस्तीक्ष्णैश्चिन्शता पुनरार्पयत् ॥ ४२ ॥
 विराटश्च महाराजं सिन्धवं वाहिनीपतिः । त्रिंशद्भिर्निशितवर्णैराजघातस्तनान्तरे
 ॥ ४३ ॥ चित्रशामुकनिर्भ्रशौ चित्रवर्मायुधधृजौ ॥ रेजनुदिवत्ररूपी तौ समागमेतस्य
 सिन्धवौ ॥ ४४ ॥ द्रोणः पाञ्चालपुत्रेण समागम्य महारणे । महासमुदयं चक्रे शरैः
 सन्नतपर्वभिः ॥ ४५ ॥ ततो द्रोणो महाराजं पापंतस्य महद्धनुः । छित्वा पञ्चाश
 तैरूणां पार्यंतं समविध्यत् ॥ ४६ ॥ सोन्यत् कर्मिकमादाय पार्यंतः परवीरहा ।
 द्रोणास्य निपतौयुद्धे प्रेषयामास शायकान् ॥ ४७ ॥ ताच्छरच्छरघातेन चिच्छेद

वर्तमान ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि दूटे हुए पहाड़ होते हैं ३९ । वही सेना
 रक्षित बड़े धनुषधारी युधिष्ठिर ने युद्ध में सम्मुख आये हुए राजा मद्रको पीड़ामान
 किया । ४० । फिर क्रोधयुक्त महारथी राजा मद्र ने भीष्म के कारण से धर्म पुत्र
 युधिष्ठिरको पीड़ामान किया । ४१ । राजा सिन्धने गुप्तग्रन्थी वाले नव बाणों से
 विराटको वेधकर तीस बाणों से घायल किया । ४२ । फिर वाहिनीपति विराटने
 राजा सिन्धको तीक्ष्ण धारवाले तीस बाणों से छाती में घायल किया । ४३ ।
 वह दोनों जड़ाऊ धनुष खड्ग चर्म ध्वजा शस्त्रवाले अपूर्व रूप विराट और
 जयद्रथ युद्ध में महाशोभायमान हुए । ४४ । द्रोणाचार्य ने अपूर्व युद्ध के बीच
 धृष्टद्युम्न के साथ बड़ेकर गुप्तग्रन्थीराले बाणों से महाप्रबल युद्ध किया । ४५ ।
 इसके पीछे द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के बड़े धनुष को काटकर पचास बाणों में
 उसको वेधा । ४६ । फिर धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर द्रोणाचार्य के देखने
 हुए शायकों को चत्रया । ४७ । उस महारथी ने बाणों के महारसेही उन बाणों

fallen down on the ground looked like huge mountains broken into
 pieces. Protected by a large army the great archer Yudhishtir
 wounded the king of Madra who was opposing him in battle. 40.
 40. The valliant king of Madra, much enraged on account of
 Bhishm, wounded Yudhishtir the son of Dharm. The king of
 Sindh wounded and pierced king Virat with nine and thirty arrows
 having hidden knots and king Virat wounded the king of Sindh
 with thirty sharp edged arrows on the breast. The two warriors,
 Virat and Jayadrath, armed with jewelled bows, swords, banners
 and weapons, looked wonderfully glorious in battle. In that wonder-
 ful battle Dronacharya and Dhrishtadyumn fought very valliantly
 with arrows having hidden knots 45. Then Dronacharya cut down
 the bow of Dhrishtadyumn and pierced him with fifty arrows.
 And the latter, taking up another bow, discharged his arrows at

समहारयः । द्रोणोऽपदपुत्राय प्राहिणोत्पञ्च सायकान् ॥ ४८ ॥ ततःक्रोधोमहाराज
 पार्षतः परवीरहा । द्रोणाय चिक्षेप गदां यमदण्डोपमां रणे ॥ ४९ ॥ तामापतन्तो
 सहसा हेमपट्विभूषिताम् । शरैः पञ्चाशता द्रोणो वारयामास संयुगे ॥ ५० ॥
 सा छिन्ना बहुधा राजन् द्रोणचापच्युतैः शरैः । चूर्णीकृता विंशीर्यन्ती पपात
 बसुधातले ॥ ५१ ॥ गदां विनिहतां दृष्ट्वा पार्षतः शत्रुहापनः । द्रोणाय धार्कं चिक्षेप
 सर्वपादशर्षां शुभाम् ॥ ५२ ॥ तां द्रोणो नयमिषाणैश्चिच्छेद् धुधि भारत । पार्षतञ्च
 महेश्वास पीडयामास संयुगे ॥ ५३ ॥ एवमेतन्महायुद्धं द्रोणपार्षतयोरिभूत् । भीष्मं प्रति
 महाराज घोररूपं भयानकम् ॥ ५४ ॥ अर्जुन प्राप्य गान्धेयं पीडयन्निशितैः शरैः । अथ
 द्रवत सम्मत्तो वने मत्त मिषद्विभम् ॥ ५५ ॥ प्रत्युद्ययौ च तं राजा भगदत्तः प्रतापवान् ।
 त्रिधाभिन्नेनानेन मदधिेन महाबलः ॥ ५६ ॥ तमापतंतं सहसा महद्भ्रगज सन्निभं ।

को कादा फिर द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के लिये पांच शायकों को चलाया । ४८।
 इतके पीछे क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने यमदण्ड के समान गदाको द्रोणाचार्य के
 ऊपर फेंका । ४९ । और द्रोणाचार्य ने उस गिरने वाली गदाको पचास बाणों
 से रोका । ५० । हे राजा द्रोणाचार्य के धनुष से निकले हुए बाणों ने उस गदा
 को चूर्ण करके पृथ्वी पर गेरा । ५१ । शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न ने गदाको टूटीटुई
 देख कर सब लोहमयी दृढ़शक्ती को द्रोणाचार्य के ऊपर फेंका । ५२ । फिर द्रोणा-
 चार्य ने भी उस बड़े धनुषवारी धृष्टद्युम्न को पीड़ित किया । ५३ । हे राजा इस
 प्रकार भीष्म के सम्मुख द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न का महा भयानक रूप बुद्ध
 हुआ । ५४ । फिर तीक्ष्ण बाणों से सबको पीड़ित करता हुआ गांगेय भीष्मजी
 को पाकर उन के सम्मुख ऐसा गया जैसे कि वन में अत्यन्त मतवाला हाथी
 मदोन्मत्त गजेन्द्रके सम्मुखहोवे । ५५। प्रतापवान् महाबली राजा भगदत्त तीन अंगोंसे
 मदचूने वाले महा मतवाले हाथी की सवारीसे सम्मुख गया । ५६ । तब अर्जुन बड़े

the former and cut down his arrows with his own. Dronacharya then discharged five arrows at him and Dhrishtadyumn much enraged hurled at him his mace like the staff of Yam; but Dronacharya checked it with fifty arrows. 50. The arrows shot from the bow of Dronacharya broke the mace into pieces. Seeing his mace cut down, Dhrishtadyumn the destroyer of foes hurled a hard spear, made entirely of iron, at Dronacharya. The latter too, wounded the former with his weapons. Thus in the presence of Bhishm there was a severe fight between Dronacharya and Dhrishtadyumn. Wounding all with his sharp arrows, he rushed against Dronacharya as one mad elephant rushes against another in a forest. 55. Mighty king Bhagdatta of great prowess came upon the back of the elephant who dropped juice from three parts of his body. Arjun carefully faced

पर्यन्त समास्याय भीमस्तु प्रत्यपद्यत ॥ ५७ ॥ ततो गजगणो राजा भगदत्त प्रतापवान् । अर्जुन शरदयेण धारयामास मयुगे ॥ ५८ ॥ अर्जुनस्तु ततो नाग मायान्त रजतो पत्ने । विमलैरायसैस्तीक्ष्णैरविभयत महारणे ॥ ५९ ॥ शिखण्डिनञ्च धौन्तेयो याहि याहीत्यधोदयत् । भीष्म प्रति महाराज जह्नेनमिति चाब्रवीत् ॥ ६० ॥ प्राग्ज्योतिषस्तनो हित्वा पाण्डव पाण्डुपूर्वज । प्रययौ त्वरितो राजन् द्रुपदस्य स्व प्रति ॥ ६१ ॥ ततोर्जुनो महाराज भीष्ममभ्यद्रवद्रुतम् । शिखण्डिन पुरस्सृत्य ततो युद्धमपसृत ॥ ६२ ॥ ततस्ते तावका जरा पाण्डव रभस युधि । समभ्यधावन् प्रोशन्तस्तद्द्रुतमिवाभयत् ॥ ६३ ॥ नानाविधान्यनीवानि पुत्राणान्ते जनाधिप । अर्जुनो व्यधमत् सार्व दिधीवाभ्राणि मारुतः ॥ ६४ ॥ शिखण्डीतु समासाद्य भरतानां पितामहम् । इयुभिस्सूर्गमध्यग्नो षड्भूमि ससमाधिनीत् ॥ ६५ ॥ रयान्यगारक्षार्पाधिचरसि शक्तिगदेन्धन । गरमघमहाबाल क्षत्रियान् समरेदहत् ॥ ६६ ॥ यथाग्नि सुमहानिद्ध कक्षे चरति मानिल । तथा जज्वाल

उपाय में नियत होकर उस गजेन्द्र ऐरावतके समान महानली गिरते हुए हाथीके सम्मुख हुआ । ५७ । उसके पीछे प्रतापवान् भगदत्तने बाणों की वर्षासे ढकदिया । ५८ । फिर अर्जुनने चाँदीके समानस्वच्छ लाहेके बाणोंसे उस आते हुए हाथीको बेधा । ५९ । हे महाराज फिर अर्जुनने शिखण्डीको भीष्मकी ओर भेरित किया और कहा कि जाओ इसकोमारो । ६० । हेपांडुके ज्येष्ठभ्राता घृतराष्ट्र फिरराना प्राग्ज्योतिष अर्जुनको डोढ कर शीघ्रही द्रुपदके रथके समीपगया । ६१ । इसकेपीछे अर्जुन शिखण्डीको आगेकरके शीघ्रही भीष्मके सम्मुखगया और युद्ध जारीहुआ । ६२ । तदनन्तर आपके शूरवीर पुत्र पुकारते हुए वहे वेगसे अर्जुन के सम्मुख दौड़े वह आश्चर्यसा हुआ । ६३ । वहाँ अर्जुन ने आपके पुत्रोंकी नानाप्रकार की सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न करादिया जैसे कि वायु आकाशमें बादलोंको छिन्न भिन्न करदेताहै । ६४ । फिर उस सावधान शिखण्डीने भरतवशियोंके पितामह भीष्मको पाकर अनेकबाणोंसे ढकदिया । ६५ । उस रथरूप अग्निशाला और धनुषरूप ज्वाला वा खड्ग शक्तीरूप इन्धन वा बाण संपूर्णरूप भज्वालितरूप वाले भीष्मने युद्धमें क्षत्रियोंको मरम कर दिया

that powerful elephant coming on like Airavat the prince of elephants. Then glorious Bhagdatta hid him with the shower of his arrows. With iron arrows bright as silver, Arjun wounded that advancing elephant. Then he sent Shikhandi against Bhishm saying, "Go and kill him 60 The king of Pragjyotish O elder brother of Pandu, left Arjun and hastened to encounter Drupad in his chariot. Then Arjun following Shikhandi hastened against Bhishm and began fighting. Then your brave sons came up roaring against Arjun. It was a wonderful sence. Arjun dispersed the armies of your sons as the wind disperses the clouds. Clever Shikhandi covered the grand father with his arrows. 65 In that sacrificial ground having chariots

भीष्मोऽपि विश्वान्यस्त्राग्युदीरयन् ॥ ६७ ॥ सोमकांश्च रणे भीष्मो जम्भे पार्थपदानुगान् ।
 ग्यचारयत तत्र सैन्यं पाण्डवस्य महारथः ॥ ६८ ॥ सुवर्णपुष्करिणुभिः शितैः सप्तनपर्वभिः ।
 नादयन् स विशो भीष्मः प्रदिशश्च महाहवे ॥ ६९ ॥ पातयन् रथिनो राजन् हयांश्च सह
 सादिभिः । सुण्डतालवज्रानीच चकार स रथप्रज्ञान् ॥ ७० ॥ निर्मितुष्यान् रथान् राजन्
 गजानद्रथांश्च संगुणे । चकार समरे भीष्मः सर्वशस्त्रभृताम्बरः ॥ ७१ ॥ तस्य ज्यातल
 निर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशुनेः । निशम्य सर्वतो राजन् समकम्पन्त सैनिकाः ॥ ७२ ॥
 भमोघा स्वगतन् वाणाः पितुस्ते मनुजेदधरः । नासज्जन्त शरीरेषु भीष्मचापव्युताः शराः
 ॥ ७३ ॥ निर्मितुष्यान् रथान् राजन् सुयुक्तान् जयनेर्हथैः । घातापमानान्द्राक्षं ह्रियमा
 णान् विशाम्पते ॥ ७४ ॥ वैदिकाशिकरूपाणां सहस्राणि चतुर्दश । महारथाः समाख्याताः

। ६६ । जैसे कि वन में वृद्धियुक्त बड़ी अग्निवायु के साथ घूमती है उसी प्रकार
 दिव्यअस्त्रोंको चलाते हुए भीष्मजीभी अग्निकी वर्षा करनेवासे हुये । ६७। भीष्मजी
 ने अर्जुन के पीछे चलने वाले सोमकों को मारकर सब सेनाको भी रोका । ६८ ।
 हे राजा भारी युद्धमें दिशा और विदिशाओंको शब्दायमान करने और सुनहरी
 पुंखवाले वा गुणग्रन्थी वाले वाणोंसे । ६९ । रथी घोड़े और सवारोंको गिराते
 हुए भीष्मने रथके सवृहोंको मुण्ड ताल वनोंके समान कर दिया । ७० । सब शस्त्र
 धारियों में श्रेष्ठ भीष्मने युद्ध में रथ हाथी और घोड़ों को सवारों से रहित किया
 । ७१ । हे राजा उसके धनुष प्रत्यंचा के ध्वज के समान शब्दको सब ओर से
 सुनकर सब सेना अत्यन्त कम्पायमान हुई । ७२ । इसके पीछे वह वाण बारम्बार
 सफल होकर गिरे और भीष्म के धनुष ने निकले हुए वाण शरीरोंमें लग २ कर
 पारही होगये । ७३ । हे राजा मैंने तीव्रगामी घोड़ों से युक्त और वायुके समान
 चलने वाले रथों को बिना सवारों के धरे हुए देखा । ७४ । चन्देरी काशी क्रोश
 देशियों के कुलीन महारथी शरीरके मोहको त्यागने वाले महा प्रतिद्ध युद्धसे

for altar, bows for fire, swords and spears for fuel, glorious Bhishma
 burnt down with his arrows many a warrior in the field of battle.
 Bhishma went on spreading fire as the wind carries with it fire in a
 burning forest. Bhishma killed the Somaks who followed Arjun and
 checked the whole army. Filling all the directions of the field of
 battle with sounds and slaying the riders of chariots and horses with
 his arrows having hidden knots, Bhishma made the groups of chariots
 like a forest of headless palms 70. Bhishma the best of warriors
 made the chariots, elephants and horses riderless in the field of battle.
 Hearing the vajra like sounds of his bowstring, all the army shook
 with fear. The arrows fell again and again hitting the marks and
 pierced through the bodies of those they touched. I saw, O king,
 chariots swift as wind made riderless. The noble warriors of
 Chanderi, Kashi and Krosh, setting aside all love for life, not turning

कुलपुत्रास्तनुत्यजः ॥ ७५ ॥ अपरायस्तिनः शूरा सुवर्णविकृतध्वजाः । संभ्रामे भीष्ममा
साद्य सवाजिरथकुञ्जराः ॥ ७६ ॥ जग्मुस्ते परलोकाय ध्यादितास्यमिधान्तकरम् । न
तत्रासीद्रिणे राजन् सोमकानां महारथः ॥ ७७ ॥ यः संभ्राप्य रणे भीष्मं जीवियतेस्ममनो
दधे । तांश्च सर्वान् रणे घोधान् प्रेतराजपुरं प्रति ॥ ७८ ॥ नीतानमन्यन्त जना इहृषा
भीष्मस्यधिक्रमम् । न कश्चिदेनं समरे प्रत्युवाति महारथः ॥ ७९ ॥ श्रुते पाण्डुसुतं वीरं
श्वेतादवं कृष्णसारथिम् । शिखण्डिनश्च समरे पाञ्चाल्यममितौजसम् ॥ ८० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे

सप्तदशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११७ ॥

सञ्जय उवाच । शिखण्डीनुरणे भीष्म मासाद्यपुदपर्वमम् । दशभिर्निशितैर्भले राज
घान स्तनान्तरे ॥ १ ॥ शिखण्डिनन्तु गाङ्गेयः क्रोधदीप्तेन चक्षुषा । सम्प्रेक्षत कटाक्षेण
निर्हृहृषिभारत ॥ २ ॥ स्त्रीत्यं तस्य स्मरन् राजन् सर्वलोकस्य पश्यतः । नाजघान

मुख न मोहनेवाले अति शूर सुनहरी ध्वजावाले घोड़े रथ हाथियों समेत उस
मृत्युके समान भीष्मको युद्ध में पाकर परलोक को सिधारे हे राजा उसयुद्ध में
सोमकों का ऐसा कोई महारथी नहीं हुआ । ७७ । जो युद्धभूमि में भीष्म को पाकर
जीवता हुआ जावे सबमनुष्यों ने भीष्मजी के पराक्रम को देखकर उन सब शूरवीरों
को यमपुर को पहुँचा हुआही माना युद्धमें । ७९ । श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णजी
को सारथी रखनेवाले वीर अर्जुन और घड़े तेजस्वी पांचालदेशी शिखण्डी के
सिवाय कोई महारथी उनके सम्मुख नहीं गया ८० ॥

अध्याय ११८ ॥

संजय बोले हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र शिखण्डी ने युद्ध में भीष्मजी को पाकर
तीक्ष्ण धारवाले दश भल्लों से छाती में घायल किया । १ । फिर तिरछी दृष्टि
से भस्मकरते हुए भीष्मजीने क्रोधयुक्त नेत्रोंसे शिखण्डीको देखा । २ । हेराभा उसके
स्त्रीपनको ध्यान करते हुए भीष्मजीने सबके देखतेहुए महार नहीं किया और उस
their faces from the field of battle, exceedingly brave, with golden
banners, horses, chariots and elephants, died in battle before dreadful
Bhishm. None of the Somak warriors went away alive from the
field of battle after encountering Bhishm. The people who saw
Bhishma's prowess believed that he would send all the warriors to
the region of Yam. No warrior could oppose him except Shikhandi
and Arjun whose white horses were driven by Krishn." 30

CHAPTER CPVIII

Sanjaya said to Dhritrashtra, " Having encountered Bhishm in
battle, Shikhandi wounded him with ten darts in the breast. Bhishm
then turned his eyes in anger towards Shikhandi as if he would burn
him down; but remembering his womanhood he gave him no reply
with his weapons and Shikhandi did not know it. Then Arjuna said

रणे भीष्मः स च तन्नावधुस्रवान् ॥ ३ ॥ अर्जुनस्तु महाराज शिखण्डिनममायत । यमि
द्रघस्व त्वरितं जहि चेन्न पितामहम् ॥ ४ ॥ क्विप्ते विघ्नक्षया वीर जहि भीष्मं महार
थम् । नह्यन्यमनुपश्यामि कश्चिद्यौधिष्ठिरे वले ॥ ५ ॥ यः शकः समरे भीष्मं प्रति
योद्धुं मिहाहवे । श्रुते र्पां पुरुषव्याघ्र सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ ६ ॥ पचमुक्तस्तु पाप्येन
शिखण्डी भरतपंथ । शूरनामाधिष्ठेर्त्तुं पितामहमयाकिरत् ॥ ७ ॥ अचिन्तयित्वा ताव
धानान् पिता देघप्रतरतव । अर्जुनं समरे दुःखं धारयामास सायकैः ॥ ८ ॥ तथैव च
चम् सयां पाण्डवानां महारथः । अप्रेषीत् स शरैस्तीक्ष्णैः परलोकाय मागि ॥ ९ ॥
तथैव पाण्डवा राजन् सैन्येन महता वृताः । भीष्म सञ्छादयामासुर्मेषा इव दिवाकरम्
॥ १० ॥ स समन्तात् परिहृतो भारतो भरतपंथ । निर्दंदाहरणे शूराव चने घन्धिरिप
ज्वलन् ॥ ११ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम तव पुत्रस्य पौरुषम् । अयोधयच्चयत् पार्थ जुगोपच
पितामहम् ॥ १२ ॥ कर्मणा तेन समरे तव पुत्रस्य घन्विनः । दुःशासनस्य तुतुपु सर्वे

शिखण्डीने उसको नहीं जाना । ३ । इसके पीछे अर्जुनने शिखण्डी से कहा कि
शीघ्रही इन पितामह को सम्मुख चढकर मारो । ४ । हे वीर मैंने मारनेकीही
इच्छासे तुम्हको आगे किया है कि तुम इस महारथी भीष्मको मारो मैं युधिष्ठिर
की सेनाभर में किसी औरको ऐसा नहीं देखताहूँ जो तेरे सिनाप इस प्रबल युद्धमें
भीष्मजी के सम्मुख युद्ध करनेको समर्थ होंवे हे पुरुषोत्तम मैं यह सत्यहीसत्य करता
हूँ । ५ । फिर अर्जुनसे इसरीति से कहेहुए शिखण्डीने शीघ्रही नानाप्रकारके बाणों से
पितामहको दक दिया । ६ । इम के पीछे आपके पिता देवव्रत भीष्मजीने उन बाणों
को तुच्छ समझ कर क्रोधपुक्तहोके युद्धभूमि में अर्जुनको शायकोंसेरोका । ७ । इसी
प्रकार उसमहारथी अर्जुनने सबवेनाको अपनेबाणोंसे परलोकमें भेजा । ८ । इसप्रकार
बड़ीसेना समेत पाण्डवों ने भीष्मको ऐसे घेरलिया जैम कि घादल सूर्यको घेरलेतेहैं
। ९ । फिर चारों ओरसे घिरेहुए भीष्मजी ने शूरवीरोंको ऐसा भस्मीभूत किया
जैसे कि कोपित अग्नि वनको भस्मकरदेताहै । ११ । वहाँ हमने आपके पुत्रके
पुरुषार्थ को देखा जो अर्जुन से युद्धकरके पितामह को रक्षित किया । १२ ।

to Shikhandi, "Hasten to face the grandfather and slay him. I have put you before me in order to slay him. I see none in Yudhishtir's army except you, who can withstand him in battle, and what I say is the truth." Thus addressed by Arjun, Shikhandi soon hid the grandfather with his arrows. Then your father Devabart Bhishm, disregarding those arrows, checked Arjun with his shafts. In the same manner, valliant Arjun sent the warriors to the region of Yam. The Pandavas surrounded Bhishm as clouds do the sun. 10 Then surrounded on all sides, Bhishm began to destroy the warriors as fire in its fury does a forest There we saw the prowess of your son who fought against Arjun and protected the grandfather. From

लोका महात्मनः ॥ १३ ॥ यदेक समरे पार्थान् साज्जुमान् समयोषयत् । न चैनं पाण्डया युद्धे वाग्यामासुख्यम् ॥ १४ ॥ दुःशासनेन समरे रथिनोविधीकृताः । साद्रि नोनम मपेयासा हस्तिनाक्ष गदाचला ॥ १५ ॥ विनिर्भक्ताः शरैस्तीक्ष्णैर्निपेतुर्मघातले शरानुरास्तधैवान्ये दन्तिनो विद्वतादिश ॥ १६ ॥ यद्य भिरिच्छन्तं प्राप्य ज्वले हीनाच्छिद्यन्वणम् । तथा जज्वाल पुत्रस्ते पाण्डु सेनां विभिर्दहत् ॥ १७ ॥ तं भारतमहामात्रं पाण्डवानां महारथ । जेतुं नोत्सहते कश्चिन्प्राङ्मुघातुकथञ्चन ॥ १८ ॥ ऋते महेन्द्रनयान्द्रुपेताश्वात् कृष्णसारथे । सहितं समरे राजन् निर्दिश्य विज- योर्जुनः ॥ १९ ॥ भीष्मजेजामिदुद्राय सर्वं सैन्यस्य पश्यतः । धिजितस्तपुशोऽपि भीष्मयाहुव्यपाश्रयः ॥ २० ॥ पुत्रः पुनः समाश्रय्य प्रायुषत मदोत्कट । भर्जुनस्तु

आपके धनुषधारी पुत्र दुश्शासन के कर्ममें युद्ध में सब लोगों को विश्वास हुआ कि । १३ । इस अज्ञे नेही अज्ञेन से उसके सब माथी पाण्डवों समेत युद्ध किया और प्रत्यक्ष म उनको पाण्डव लोग युद्ध से नहीं हटासके । १४ । उस युद्ध में दुश्शासन के हाथ से रथी विरथ हुए और बड़े धनुषधारी सवार और महाबली हाथी । १५ । तीक्ष्णबाणों में घायल होकर पृथ्वी पर गिरे और इसी प्रकार बाणों से पीड़ितमान अन्य हाथी चारों दिशाओं में भागे । १६ । जैसे कि अग्नि इन्धन को पाकर प्रकाशित ज्वालन होकर प्रत्यक्ष कोपयुक्त होता है उसी प्रकार पाण्डवों को मनाका जगता हुआ आपका पुत्र भी ज्वलित अग्नि के समान होगया । १७ । हे भरतवशीपाण्डवोंके किसी महारथी ने ज्वलताडे वाले श्रीकृष्ण महागज को सारथी बनानेवाले महारथी इन्द्रके पुत्र अर्जुन के सिवाय उस बड़े शोभायमान के विजय करनेको साहस और उत्साह नहीं किया और न किसी रीति से सम्मुख जानिका विचार किया । १८ । हे राजा फिर वह विजयी अर्जुन युद्ध में उनको जीतकर सब सेना कं देखते हुए भीष्मजो के सम्मुखगया और वह पराजय पाने वाला आपका पुत्र महामदो-मत्त उन भीष्मकोको भुजाओं

the prowess of your son Dushasan, all the people believed that he alone was capable of withstanding Arjun and other Pandavas. Dushasan destroyed the chariots of the warriors, and the great archers, horsemen and powerful elephants, wounded by sharp arrows, fell down on earth. Other elephants wounded by arrows fled in all directions. As fire fed by fuel burns and blazes up furiously, so did your son destroy the Pandav armies 17. None of the Pandav warriors, O king except the valliant son of Indra, Arjun who had Krishan for the driver of his white horses, dared to conquer him in battle, nor did any one oppose him. Then Arjun the conquerer, having conquered him in battle within sight of all the warriors, faced Bhishm, and your son, de'cated in battle, took refuge with Bhishm. 20.

रणे राजन् योधयन् संन्यराजत ॥ २१ ॥ शिखण्डीतु रणे राजन् त्रिव्याधेन पितामहम् ।
 शरैरशनिसेस्पर्शैस्तथा सर्वधियोपमैः ॥ २२ ॥ न च स्म ते रजं चक्रुः पितुस्तथ जने
 दधर । समयमानस्तु गाङ्गेयस्तान् धाणान्जगृहे तदा ॥ २३ ॥ उष्णाक्षो हि नरोयद्भज्ज
 जलधाराः प्रतीच्छति । तथा अग्राह गाङ्गेयः शरधाराः शिखण्डिन ॥ २४ ॥ तं क्षत्रिया
 महाराज दृग्धुर्वारमाह्वे । भीष्मं दृहन्तं सैन्यानि पाण्डवाना महारमनाम् ॥ २५ ॥
 ततोऽब्रवीच्च सुतः सर्वसैन्यानि मारिय । अभिद्रवत संग्रामे फाल्गुनं सर्वतो रणे
 ॥ २६ ॥ भीष्मो च समरे सर्वान् पालयिष्यति धर्मवित् । ते मयं सुमहत्पुत्र्या
 पांडवान्प्रतियुध्यत ॥ २७ ॥ हेमतालेन महता भीष्मसिष्ठति पालयन् । सर्वेषां धार्तरा-
 व्राणां समरे शमं धर्मच ॥ २८ ॥ त्रिदशपि समुद्युक्तानालं भीष्म समासितुम् ।
 किमुपायां महारमानं मर्धमृता महाबलाः ॥ २९ ॥ तस्माद्द्रवत मायोधा फाल्गुनं
 का आश्रयलेकर । २० । वारंवार साहस्यको करके फिर युद्ध करनेलगा तब वह
 अर्जुन युद्ध में लड़ताहुआ महा शोभायमान हुआ । २१ । हे राजा फिर शिखण्डी
 ने युद्ध में बज्रके समान स्पर्शत्राले धिपभरे सर्पके समान धारणों से पितामह को
 घायल किया । २२ । उन धारणों से आपके पिताकुछ भी पीड़ित नहीं हुए उस
 समय आश्चर्य्य करते हुए भीष्मजीने उन धारणों को मह लिया । २३ । जैसे
 प्याससे दुःखी मनुष्य जलकी धाराओं को चाहताहै उसी प्रकार भीष्मजी ने
 शिखण्डीकी वाणधाराओं को सहजहीमें सहलिया । २४ । फिर क्षत्रियोंने महान्मा
 पांडवों की सेनाओं के भस्म करनेवाले भीष्मजी को युद्धमें भयंकर देखा । २५ ।
 इसके पीछे आपका पुत्र सब सेनाओं से बोला कि युद्ध में सब मोर से अर्जुन के
 सम्मुख जाओ । २६ । धर्म के जानने वाले भीष्मजी युद्धमें तुमसब की रक्षाकरेगे
 वह भयको अतन्त्र त्यागकरके पांडवोंके सम्मुख युद्धकरते हैं युद्धमें धृतराष्ट्रके सब
 पुत्रों के सुखरूप चित्तकी रक्षाकरते हुए भीष्मजी सुनहरी तालध्वजासमेत निपतर्हें
 । २७ । २८ । उपाय करनेवाले देवतालोगभी भीष्मके सम्मुख खड़े होनेको समर्थ नहीं

Again taking courage he engaged in battle. Arjun fighting there was very glorious to behold. Again Shikhandi wounded the grandfather with his arrows hard of touch like vajra and poisonous like serpents. Your father was not disturbed with those arrows and bore them to the great amazement of all. 23. As one afflicted with thirst looks expectantly for a shower of rain, Bhishm bore patiently the shower of Shikhandi's arrows. The kshatryas then looked at the dreadful form of Bhishm the destroyer of Pandav armies. Your son then ordered his seldiers to attack Arjun on all sides, saying, "Bhishm who knows his dharm well, will protect you in battle. He is fighting fearlessly against the Pandavas and is standing in the battle field with his golden standard of palm tree, pleasing the sons of

प्राप्य संयुगे । अहमद्य रणे यत्तो घोषयिष्यामि पाण्डवम् ॥ ३० ॥ सहितः सर्वतो
 यत्सैर्घञ्जिर्वसुधाधिपैः । तच्छ्रुत्वा तु घ्नो राजंस्तवैः पुत्रस्यधन्विनः ॥ ३१ ॥
 सर्वे घोषा सुसंरब्धा बलवन्तो महावलाः । ते विद्वा कलिङ्गाश्च दासैरकगणायह
 ॥ ३२ ॥ अभिपेतुर्निपादाश्च सौवीराश्च महारणे । घाह्लिका दरदाश्चैव प्रती-
 ष्योदीमालयाः ॥ ३३ ॥ अभिषाहाः शूरसेनाः शिषयोय वशातयः । शाल्वाः
 शकास्त्रिगर्ताश्च अम्बष्ठाः केकयै सह ॥ ३४ ॥ अभिपेतु रणे पार्थ पतङ्गा इव पावकम् ।
 स तान् सर्वान् शतानीकान् महाराज महारयान् ॥ ३५ ॥ विद्यान्यखाणि सच्चिन्म्य
 प्रसन्धाय धमञ्जयः । स तैस्त्रैर्महावेगैर्ददाहाशु महावलाः ॥ ३६ ॥ शरप्रता
 पैर्धोमत्सुः पतङ्गानिव पावकः । तस्य घाणसहस्राणि सृजतो दृढधन्विनः ॥ ३७ ॥
 दीप्यमानमिवाकाशे गाण्डीयं समदृश्यत । ते शरार्त्ता महाराज विप्रहीर्णमहाश्वजाः

हैं तो मरण धर्मवाले पांडव उस महात्मा के सम्मुख होनेको कैसे समर्थ होसके हैं
 । २९ । इस निमित्त मेरे शूरवीर लोग जाकर युद्धमें अर्जुन को पाकर संग्राम करो
 अब युद्ध में चैतन्यहोकर मैं तुमसब राजाओं समेत पांडव युधिष्ठिरसे लड़ूंगा हे राजा
 आपके धनुषधारी पुत्रके इस वचनको सुनकर । ३१ । सब शूरवीर लोग अत्यन्त
 क्रोधयुक्त महावली विदेह कलिंग दासैरक गण निपाद सौवीर वाल्हीक दरदभौर
 पदिचमोत्तरीय राजा लोग मालव । ३१ । अभिषाह शूरसेन शिष्य वशातय शाल्वशक
 त्रिगर्त केकयों समेत अम्बष्ठ । ३४ । यहसब उस महायुद्ध में अर्जुनके सम्मुख दौड़े
 हे राजा जैसे कि पतंग और शलभा अग्नि में गिरते हैं इसी प्रकार युद्धमें उस अद्रि
 नीय अर्जुन की ओरको दौड़े । ३५ । फिर उसमहावली अर्जुनने दिव्य ब्रह्मोंको
 विचार पूर्वक प्रयोग करके उन बड़े उत्तम दिव्य ब्रह्मों और बाणों के उष्ण
 तेजसे शीघ्रही इन सबसेना समेत महारथियों को ऐसे भस्म किया जैसे कि अग्नि
 पतंगोंको भस्म करदेताहै । ३७ । उसमहावली अर्जुनका वह गांडवि धनुष हजारों

Dhritrashtra Even the great gods dare not withstand him; how
 can the Pandavas who are only mortals oppose him. All my warriors
 should therefore oppose Arjun and I with all my princes shall fight
 against Yudhishtir." Hearing these words of your son, the archer,
 (31) all the warriors in great anger—valliant Videh Keling the
 Dasairaks, the Nishadas, the Sauvirs, the Vahlks, the Daradas, the
 princes of the North-west, the Malvas, the Shursenas, the Shivayas,
 the Vatashayas, the Shalwashaks, the Trigartas, the Kaikayas and
 the Amvashtas—rushed upon Arjun. They ran against Arjun as
 insects fall into the burning fire. 35, Valliant Arjun then carefully
 discharged his divine weapons and with them as well as with the fire
 of his arrows, he soon destroyed those warriors as fire does the insects.
 The Gandiv bow of mighty Arjun, discharging myriads of arrows,

॥ ३८ ॥ नाशयन्तं राजानः सहिता वानरध्वजम् । सध्वजा रथिनः पेतुर्दया
 रोहा हयैः सह ॥ ३९ ॥ सगजाश्च गजारोहाः किरीटिशरताडिताः । ततोर्जन
 मुजोत्सृष्टैवृत्तासीदसुन्धरा ॥ ४० ॥ विद्रवद्भिश्च बहुधा चलैपशां समन्ततः ।
 अथ पार्थो महाराज द्रावयित्वा परुथिनीम् ॥ ४१ ॥ दुःशासनाय सु बहून् प्रेष
 यामास सायकान् । ते तु भित्त्वा तत्र सुतं दुःशासनमयोमुखाः ॥ ४२ ॥ धर्षो
 विविशुः सर्वे यत्मीक मिव पन्नगाः । हयांश्चास्य ततो जघ्ने सारथिञ्च न्यपात
 पत् ॥ ४३ ॥ विविशतिञ्च विशत्पा विरथं कृतयान् प्रभुः । आजघान भृशश्चैव
 पद्भिमन्त्रतपर्वभिः ॥ ४४ ॥ कृपं विकर्णं शल्यञ्च विध्वा बहुभिरायसैः । चकार विर
 थांश्चैव कौन्तेय दधेतयाहनः ॥ ४५ ॥ एघन्ते विरथाः सर्वे कृपः शल्यश्च मारिष्य ।
 दुःशासनो विकर्णश्च तथैवच विविशतिः ॥ ४६ ॥ सम्प्राद्वन्त समरे निर्झिताः सत्य

वाणों को छोड़ता हुआ आकाश में प्रकाशमान दृष्टपदा वह वाणोंसे पीड़ामान-
 रांजासोग जिनकी वड़ी २ ध्वजा दृष्टगईर्यी एक साथ उस वानरध्वज अर्जुन के
 सम्मुख वर्तमान नहीं रहे । ३९ । अर्जुनके वाणों से घायल रथी लोग ध्वजारथों समेत
 और घोड़ों समेत अश्वारूढ वा हाथियों समेत हाथियोंके सवार पृथ्वीपर गिरे । ४० ।
 इसके पीछे अर्जुन के हाथोंके छूटे हुए वाणों से और चारों ओरसे राजाओंकी भागी
 हुई सेनाओं से पृथ्वी व्याप्त होगई । ४१ । फिर अर्जुन ने सेनाको भगाकर दुःशासन
 के ऊपर बहुतसे वाणोंकी वर्षा की । ४२ । वह लोहके सवराण आपके पुत्र दुःशासन
 को । ४३ । केवंचर पृथ्वी में ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि सर्पवामी में प्रवेश करता
 है तदनन्तर प्रभु अर्जुन ने उस के घोड़ों को मारकर सारथी को गिराया और
 वासवाण से विविशतिको रथने विरथ करदिया । ४४ । और झुकीगांडवाले
 पाँच वाणों से अत्यन्त घायल भी किया इसी रीति से उसदेवत घोड़ेवाले अर्जुनने
 कृपाचार्य कर्ण और शल्यको बहुतसे लोहे के वाणोंसे घेसकर विरथकर दिया
 हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इस प्रकार वह सवकृपाचार्य और शल्य विरथ हुए । ४६ ।

looked glorious in the air. The princes afflicted by arrows, with broken banners, could no longer withstand his fury. Wounded by his arrows, the bannered charioteers, horsomen with their horses and riders of elephants fell down on earth. 40. Then the ground was filled with the arrows of Arjun and the dead bodies of the warriors slain. Having put the army to flight, Arjun discharged many arrows at Dushasan. Those iron arrows having pierced through Dushasan's body entered the ground as a serpent enters a mole hill. He then killed his horses and driver and with twenty arrows made Vivinshati destitute of chariot. With five arrows having bent heads he wounded him severely. Thus Arjun the possessor of white steeds, having pierced Kripacharya, Karan and Shalya with many

साधिना । पूर्वाहणे भरतक्षेत्रे पराजित्य महास्थानम् ॥४७॥ प्रज्ज्वाल रणे पापों विधुम
इव पावकः । तथैव शस्त्रवर्षेण भास्करो रस्मिघानिव ॥ ४८ ॥ अन्वपानि महाराज ताप
यामास पार्थिवान् । परांमुष्णीकृत्य तथा शस्त्रवर्षेर्महारथान् ॥ ४९ ॥ प्रायश्चयत सप्राप्ते
शोणितोदां महानदीम् । सभ्येन कुरसैन्यानां पाण्डवानाञ्च भारत ॥ ५० ॥ गजाश्चर
थसंघाश्च बहुधा रथिमिर्हताः । रथाश्च निहता नागैर्हयाश्चैव पदातिभिः ॥ ५१ ॥ अथ
राविच्छिद्यमानानि शरीराणि शिरांसि च । निपेतुर्हिंसु सर्वांसु गजाश्चरथयोधिनाम्
॥ ५२ ॥ छत्रमायोधने राजन् कुण्डलाङ्गुधारिभिः । पतितैः पारथ्यमानैश्च राजपुत्रैर्महा
रथैः ॥ ५३ ॥ रथनेमिनिकृत्तैश्च गजैश्चैवावपोधितैः । पादाताभ्याप्यघातन्त सादृशाश्च
ययोधिनः ॥ ५४ ॥ गजाश्च रथयोधाश्च परिपेतुः समन्ततः । विकीर्णाश्च रथा मूमौ भङ्ग
चक्रयुग्ध्वजाः ॥ ५५ ॥ तद्गजाश्चरथयोधाना रुधिरैण समुक्षितम् । छत्रमायोधने

और युद्ध में अर्जुनसे पराजित दुश्शासन विकर्ण और विविंशति मुखकी मोड़गये
। ४७ । हे भरतर्षभ मध्याह्नकाल में अर्जुन महाराथियों को विजय करके युद्ध में
निर्धूम आग्निके समान प्रकाशमान हुआ । ४८ । इसीप्रकार वाणों की वर्षासे अन्य
राजाओं को वा महाराथियों के मुर्तियों को फिरवाके युद्ध में रुधिर रूप जल रखने
वाली बड़ी नदी को जारी किया । ५० । फिर पांडव और कौरवोंकी सेनाओं में
बहुधाहाथी घोड़े और रथोंके समूह रथियों के हाथ से मारे गये । ५१ । हाथियों
से रथ और पैदलोंसे घोड़ेमारे गये और बीचमेंसे कटेहुए हाथी घोड़े रथ और
वीरसवारों के शरीर दिशाओं में गिरे हे राजाकुण्डल वाजुवन्द धारण करनेवालों
से युद्धभूमि आच्छादित होगई । ५३ । और गिरे वा गिरतेहुए महारथी राजकुमारों
से वा रथोंकी नेमियों से कटे और मरेहुए हाथियों से भी वह युद्धभूमि ढकगई
। ५४ पैदल भी दौड़े और अश्व सवार घोड़ों समेत दौड़े वा हाथी घोड़े और रथों
के शूरवीर चारों ओर से गिरे । ५५ । और वह रथ जिनके पहिये जुए ध्वजा

arrows of iron, caused them to leave their chariots. Thus Kripacharya
Shalya and others, O Dhritasashtra, were forced to leave their chariots.
Defeated in battle by Arjun, Dushasan, Vikarn and Vivinshati turned
their faces. Having conquered those warriors by mid day, Arjun
shone in the field of battle like smokless fire, causing the other kings
and warriors to turn back with the force of his arrows, he caused a
large river of blood to flow, 50. Then in the armies of the Pandavas
and Kauravas many elephants, horses and chariots were destroyed
by the charioteers. Chariots were destroyed by elephants and horses
by foot soldiers. The elephants, horses and chariots with the dead
bodies of warriors fell down in all directions and the ground was spread
over with the bodies of those who wore ear-rings and armlets. The
foot soldiers and war horses with riders were seen in all
directions. 55. The chariots with their and bai wheels

रेजे टकाञ्च मिय शास्त्रम् ॥ ५६ ॥ श्वातः पाकाश्च गृधाश्च वृषा गोमायुभिः
सह । प्रणहुर्भक्ष्यमासाद्य धिक्कृताश्च सुगण्डिजाः ॥ ५७ ॥ घवुर्यद्विघाथैष द्विदु
सर्वासु मावताः । दृश्यमानेषु रक्षःसु भूनेषु च नदरासु च ॥ ५८ ॥ काञ्चनानि
च दामानि पताकाश्च महाधनाः । ध्रूयमाना व्यदृश्यन्त सहस्रा मास्तेरिताः ॥ ५९ ॥
द्वेतच्छत्रसहस्राणि सध्वजाश्च महारथाः । धिक्कीणाः समदृश्यन्त शतशोयसहस्रशः
॥ ६० ॥ सपताकावमातेगा द्विशोजगमुः शरानुगः । क्षत्रियाथ मनुष्येद्रगदाशक्ति धनु
र्धराः ॥ ६१ ॥ समंततश्च दृश्यन्ते पतिता धरणीतले । ततो भीष्मो महाराज दिव्यमख
मुदीरयन् ॥ ६२ ॥ अश्वधावत कौन्तेय मिततां सर्वधन्यिनाम् । तं शिखण्डी रणे पान्त
मश्वद्रुषत दीशतः ॥ ६३ ॥ ततः समाहरद्भीष्मस्तद्वह्नं पावकोपमम् । त्यरितः पांड

दूट गई थी पृथ्वीपर पड़े हुए हाथी घोड़े और रथ समूहों के धरि में छिड़की हुई
व दकी हुई वह युद्धभूमि ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि शरदऋतुका लाल बादल
होना है फिर कुत्ते कौवे गिद्ध भेड़िये गृमान और विपरीत रूपके पशु पत्नी अपने
भक्षको पाकर शब्द करने लगे और सब दिशाओं में अनेक प्रकार की वायु
चली । ५८ । राक्षसों के देखने और जीवों के शब्द करनेपर सुनहरी रस्ती व
मासा व बहुमूल्य की पताका । ५९ । अकस्मात् हवामें चलायमान होकर दृष्टि
गोचर हुई हजारों श्वेत छत्र व बड़े २ रथ ध्वजाओं समेत दूटे हुए दिखानेपड़े और
बाणों से पीड़ामान हाथी पताकाओं समेत चारों दिशाओं को चलेगये । ६१ ।
हे महाराज गदाशक्ति और धनुष के धारण करनेवाले चञ्चलीय चारों ओर से
पृथ्वीपर पड़े हुए दृष्ट आये । ६२ । इस के पीछे भीष्मजी ने दिव्य अस्त्रों को
मकट किया और सब धनुषधारियों के देखने हुए अर्जुन के सम्मुख दौड़े । ६३ ।
तब शस्त्रों से अलङ्कृत शिखण्डी उन भीष्मजी के सम्मुख पहुँचा इसको देखतेही
भीष्मजीने उस अग्निके समान मकट किये हुए अस्त्रको खँचलिया । ६४ । हे राजा

broken down fell on earth, and the ground covered and besprinkled with the blood of elephants, horses and charioteers looked glorious like the red cloud of Winter. Dogs, crows, vultures jackals, wolves and other strange looking birds and beasts howled at the prospect of their food and the winds blew from all quarters. At the sight of rakshases and the sounds of animals, golden ropes, chaplets and banners were seen fluttering with the sudden gust of wind. Thousands of white umbrellas and huge chariots with banners were to be seen lying on the ground and the elephants bearing banners, wounded with arrows, fled in all directions. 61. The wielders of prases, spears and bows were seen fallen on the ground. Then Bhishm drew out his divine weapons, and in the presence of all the warriors rushed upon Arjun; but Shikhandi, armed with weapons, came face to face with him and at the sight of him he withdrew his weapon

घोराजमध्यम इवेतवाहन ॥ ६४ ॥ निजघ्ने तावक सैन्य मोहयित्वा पितामहम् ॥ ६५ ॥
इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे

अष्टादशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११८ ॥

सञ्जय उवाच । सम धृष्टेऽप्यनीकेषु भूषिष्ठेऽप्यनिवर्त्तिन । ब्रह्मलोकपरा सर्वे सम
पद्यन्त भारत ॥ १ ॥ नह्नीकमनीकेन समसज्जत संकुले । रथान् रथिभिः सार्धं पादा
तान् पदातिभिः ॥ २ ॥ अश्वानाश्वैर्युध्यन्त गजान् गजयोधिभिः । उन्मत्तवन्महाराज
युध्यन्ते तत्र भारत ॥ ३ ॥ महान् व्यतिकरो रौद्र सैनयो समपद्यत । नरनागगणेष्वेव
विकीर्णेषु च सर्वश ॥ ४ ॥ क्षये तस्मिन्महाराट्त्रे निर्विशयमजायत । ततः शल्य इव
धैव चित्रसेनश्च भारत ॥ ५ ॥ दुःशासतो विकर्णश्च रथानास्थायभास्वरात् । पाण्ड
वानां रणे दूरा ध्वजिनीं समकम्पयन् ॥ ६ ॥ सावध्यमाना समरे पाण्डुसेना महात्मभिः ।

श्वेत घोड़े रखनेवाले मन्त्रेण पाण्डव अर्जुन ने शीघ्रही पितामह को मोहित करके
आपका सेनाको मारा ६५ ॥

अध्याय ॥ ११९ ॥

संजय बोले कि हे भरतवंशो इस रीति से उन बहुतसी सेनाओं के तैयार होने
पर युद्धमें मुख न मोड़नेवाले सब शूरवीर ब्रह्मलोक को उत्तम माननेवाले वर्त्तमान
हुए, इस तुमुल युद्ध में सेनासे सेना नहीं भिड़ी किन्तु इस रीति से लड़े कि रथी
रथियों से पदाती पदातियों से घोड़े घोड़ों से हाथी हाथियों के सवारों से युद्ध
करनेवाले हुए हे राजा उन्मत्त के समान युद्ध करने वाली दोनों सेनाओंको 'बड़ा
भयकारी दुःख वर्त्तमान हुआ अर्थात् सबप्रकार से मनुष्य और हाथियोंके मरनेपर
उस भयकारी नाशरूप प्रलयमें अनीति जारी हुई इसके पीछे शल्य कृपाचार्य
चित्रसेन दुःशासन विकर्ण इन सब शूरों ने प्रकाशित रथों पर सवार होकर पाण्डवों
की सेनाको बहुतकम्पायमान किया हे राजा युद्ध में महात्माओं के हाथसे घायल

glorious like fire Then the possessor of white horses, Arjun the
middle one of the Pandavas, soon made the grandfather insensible
and destroyed your armies"

CHAPTER CXIX

Sanjaya continued: "Thus, O descendant of Bharat, when
numerous armies were ready, the warriors unwilling to turn their
faces from the field of battle and desirous of departure to the region of
Brahm, stood there. In that dreadful battle the two armies did not
meet together, the charoteers fought against charoteers, horsemen
met horsemen, o'elephant riders fought against the riders of elephants
The two armies fighting furiously came to great grief After the
slaughter of men and elephants in that dreadful distraction like
pralaya, there was much harm done Then the great warriors

धाम्यते बहुधा राजन् मारुतेनेव नीर्जले ॥ ७ ॥ यथा हि शैशिरः कालो गवां मर्माणि
 कृन्तति । तथा पाण्डुसुतानां वै भीष्मो मर्माणि कृन्तति ॥ ८ ॥ तथैव तव सैन्यस्य पापेन
 च महात्मना । नवमघमतीकाशाः पातिता बहुधा गजाः ॥ ९ ॥ सृष्टमानाश्च दृश्यन्ते
 पापेन नरस्युषाः । इषुभिस्ताड्यमानाश्च नारायैश्च सहस्रतः ॥ १० ॥ पेतुरात्तस्पर्योरं
 कृत्वा तत्र महागजाः । धानद्धामरगैः कार्यनिहतानां महात्मनाम् ॥ ११ ॥ छत्रमायोधनं
 रेजे शिरांमिश्च सकुण्डलैः । तस्मिन्नेव महाराज महावीरवरक्षये ॥ १२ ॥ भीष्मे च
 युधि धिक्रान्ते पाण्डवे च धनञ्जये । तं पराक्रान्तमालोक्य राजन् युधि पितामहम्
 ॥ १३ ॥ अश्पवत्तन्त ते पुत्राः सर्वसैन्यपुरस्कृताः । इच्छन्तो निधनं युद्धे स्वर्गं कृत्वाप
 राणम् ॥ १४ ॥ पाण्डवानभ्ययर्चन्त तस्मिन् वीरवाक्ष्ये । पाण्डवापि महाराज स्मरन्तो

पाण्डवोंकी सेना अनेक प्रकार से ऐमे घुमा जैसे कि जन्म वायुके कारण नौका
 घूमती है, जैसे कि अत्यंत जाड़ा मौसमोंको सतागई उसीप्रकार भीष्मजी पाण्डवोंके
 मर्मों को काटतेहैं । ८। महात्मा अर्जुन के हाथ से तुम्हारी सेनाके बहुत से हाथी जो
 कि नवीन वादलके समान थे युद्धमें गिराये गये । ९। अर्जुनके हाथ से सेनाके प्रधान
 लोग मर्दन कियेहुए दृष्टआते हैं और वहां पर नाराच नाम बाणों से घायल हुए
 हजारों । १० । बड़े २ हाथी दुख से महाभयानक शब्दोंको करके गिरेपड़े
 मृतक हुए महात्माओं के भूषणों से अलकृत शरीरों से । ११ । और कुण्डल
 धारी शिरों से ढकीहुई युद्धभूमि बड़ी शोभायमान हुई हे राजा उत्तम वीरोंके
 वड़े नाश होने पर युद्ध में भीष्म और पाण्डव अर्जुन की परस्पर में चढ़ाईयां
 होनेपर वह आपके सब पुत्र जिनके कि आगे सेना चलतीथी युद्ध में पितामहको
 पराक्रम करने वाला देखकर स्वर्गकोही श्रेष्ठ स्थान मानकर युद्ध में मरण को
 चाहते हुए । १४ । उस उत्तम वीरोंके नाश में पाण्डवों के सम्मुख हुए हे

Shalya, Kripacharya, Chitransen, Dushasana and Vikarna, mounted on
 glorious chariots, destroyed the armies of the Pandavas. Wounded
 in battle by those great men, the armies of the Pandavas turned
 round like a boat in the midst of stormy waters. As winter cuts the
 cattle to the quick so did Bhishm with the Pandav armies. Many
 elephants of your army, like new clouds, were destroyed in battle by
 Arjun. The principal warriors of your army are to be seen destroyed
 by Arjun, and wounded by long shafted arrows, thousands of elephants
 fell down with loud shrieks. The field of battle looked grand by the
 dead bodies of great men decked with ornaments and the heads
 decked with ear-rings. At the destruction of the great warriors in
 the war between Bhishm and Arjun the Pandav, your sons with
 their armies seeing the great prowess of the grandfather, desired to
 die in battle for the sake of paradise. 14. They faced the Pandavas
 during that destruction of the warriors. Engaged in battle for the

विविधान् बहून् ॥ १५ ॥ फलेशान् कृतान् सपुत्रेण स्वया पूर्वं नराधिप । भयं त्यक्त्वा
 रणे शूरा ब्रह्मलोकाय तत्पराः ॥ १६ ॥ तावकांस्तव पुत्रांश्च योधयन्ति प्रहृष्टवत् ।
 सेनापतिस्तु समरे प्राह सेनां महारथः ॥ १७ ॥ धमिद्रवत गात्रेयं सोमका
 सुश्रेयः सह । सेनापतिवचः श्रुत्वा सोमकाः सृञ्जयाश्चते ॥ १८ ॥ अभ्यद्र
 यन्त गात्रेयं शरवृष्टयासमाहताः । वध्यमानस्ततो राजन् पिता शान्तनवस्तथ
 ॥ १९ ॥ अमर्षवशमापन्नो योधयामास सृञ्जयान् । तस्य कीर्त्तिमतस्तात
 पुरा रामेण धीमता ॥ २० ॥ सम्प्रदत्ताश्रशिक्षावै परानीकविनाशिनी । सतां शिक्षाम
 चिष्टाय कुर्वन् परयलक्षयम् ॥ २१ ॥ अहन्यहनि पार्यानां वृद्धः कुरुपितामहः । भीष्मो
 दशसहस्राणि जघान परवीरहा ॥ २२ ॥ तस्मिन्नु दशमे प्राप्ते दिवसे भरतर्षभ । भीष्मे
 णकेन मत्येवुपाञ्चालेषु संयुगे ॥ २३ ॥ गजाश्च भमितं हत्वा हताःस्तत महारथाः ।

महाराज ब्रह्मलोक के लिये युद्धमें प्रहृत शूरवीर पाण्डव पूर्व समय में पुत्र
 समेत आप के दिये हुए नाना प्रकार के कष्टोंको स्मरण करते युद्ध में भयको
 त्याग कर । १६ । अत्यन्त प्रमथके समान आपके पुत्र और शूरवीरों से
 लड़ने हैं किा महारथी सेनापति ने अपनी सेनासे कहा कि सब मृजियों समेत
 सोमक लोग शीघ्र भीष्मके सम्मुख चलो वड सोमक और मृजयनाम क्षत्री सेना
 पति के वचनको मुनकर । १८ । शत्रुओं की वर्षामे घायल हुए भीष्मजी के सम्मुख
 गये हे राजा इसके पीछे आपके पिता भीष्मजी महा घायल और क्रोध के
 वशीभूत होकर उन मृजियों से युद्ध करनेलगे हे तात पूर्वसमय में बुद्धिमान
 परशुरामजी ने उस को अच्छे प्रकारसे शिक्षाकरी जोकि शत्रुकी सेनाके नाश
 करनेवासे और कौरवोंके वृद्ध पितामह भीष्मने उस शिक्षाको काममें लाकर शत्रु-
 शौकी सेनाका नाशकरते हुए प्रतिदिन पाण्डवों की दशहजार सेनाको मारा
 । २० । हे भरतर्षभ उस दशवें दिनके वर्तमान होनेपर अकेले भीष्मने युद्धमें मरत्य
 और पांचाल देशी सेना । २३ । दश हजार हाथियोंका यूथ मारकर सात महारथी

sake of paradise, the brave Pandavas remembered the former wrongs
 done to them by yourself and your sons and setting aside all fear in
 lattle, with cheerful minds face your sons and warriors. Then the
 brave commander ordered the armies of Srinjaya and Somak warriors
 to hasten against Bhishm. At the commands of their chief the
 Srinjayas and the Somaks faced Bhishm who was much wounded.
 Then your father much wounded and enraged, fought against the
 Srinjayas. Bhishm the old grandfather of the Kauravas used to
 his advantage the knowledge of arms which he had formerly
 acquired of Parashuram and killed ten thousand warriors of the
 Pandavas each day. 22. On that tenth day Bhishm alone killed ten
 thousand elephants of Matsya and Panchal with seven warriors of

हन्वा पञ्चसहस्राणि रथानां प्रपितामहः ॥ २४ ॥ नराणाञ्च महायुद्धे सहस्राणि चतु
 दश । दन्तिनाञ्च सहस्राणि हयानामयुतं पुनः ॥ २५ ॥ शिक्षावलेन निहतं पित्रातथ
 विशाम्पते । ततः सर्वं महीपानां क्षपयित्वा धरुयिनीम् ॥ २६ ॥ विराटस्य त्रियोन्नाता
 शतानीको निपातितः । शतानीकञ्च समरे हत्वा भीष्मः प्रतापवान् ॥ २७ ॥ सहस्राणि
 महाराज रात्रां भल्लैरपातयत् । उद्धिन्वाः समरे योद्या विक्रोशांति धनञ्जयम् ॥ २८ ॥
 ये च केचन पार्थानामभिपाता धनञ्जयम् । राजानो भीष्ममाम्नाद्य गतास्ते यमस्तादनम्
 ॥ २९ ॥ एवं दशदिशो भीष्मः शरजालैः समन्ततः । अतीत्यसेनापार्थानामवतस्थे
 चमूले ॥ ३० ॥ स कृत्वा सुमहत् कर्म तस्मिन् वै दशमेहनि । सेनयोरन्तरे तिष्ठन्
 प्रवृद्धीतशरसनः ॥ ३१ ॥ नचैनं पार्थिवाः केचिञ्चका राजन् निर्दिक्षितुम् । मध्ये
 प्रातं यथा भीष्मे तपस्तं भास्करं दिवि ॥ ३२ ॥ यथा दैत्यचमूराकस्तापया मास संयुगे ।

मारे फिर पांच हजार रथियोंको मारकर प्रवल युद्धमें मनुष्यों के चौदह हजार
 समूहको मारके हाथियोंके बहुत हजार और घोड़ों के दश हजार गूथ पराक्रम के
 द्वारा आपके पिता के हाथ से मारे गये इसके पीछे सब राजाओं की सेना
 को इधर उधर करके । २६ । विराटके प्यारे भाई शतानीकको रथमे गिराया हे
 राजा प्रतापवान् भीष्मने शतानीकको मारकर । २७ । हजारों राजाओं को
 भल्लोंमे मारडाला और जो कोई राजा पाण्डवों के वा अर्जुन के आगे पीछे चारों
 ओर को चलनेवाले थे । २८ । वह राजानोंगभी भीष्मको पाकर यमलोकको
 सिधारे भीष्मजीने इस रीति से चारों के जालों से चारों ओर की दशों दिशाओं
 को ढक दिया । २९ । और आप पाण्डवों की सेनाको उल्लंघन करके सेना मुखपर
 नियत हुआ वह उस दशवें दिन में बड़े कर्मको कर के । ३० । धनुषको हाथमें पकड़नेवाला
 दोनों सेनाओंके मध्यमें नियतहुआ कोई राजालोग युद्धमें उसके देखनेको ऐसे समर्थ नहीं
 हुए । ३१ । जैसे कि ग्रीष्म ऋतुमें आकाश स्थल संतप्त करने सूर्य को नहीं देखसक्ता
 और जैसे कि इन्द्रने युद्ध में दैत्योंकी सेनाको तपाया । ३२ । इसी प्रकार भीष्म

renown, five thousands of charioteers and fourteen thousand men. He destroyed many thousands of elephants and ten thousands of horses by his great prowess. Then having dispersed the army of kings he felled Shatanik the dear brother of king Virat. Having slain Shatanik, valliant Bhishm destroyed thousands of warriors with his darts and whatever warriors of the Pandavas followed Arjun were sent by Bhishm to the region of Yam. With the network of his atrows he filled all the directions and having crossed the army of the Pandavas he stood at the entrance. He did prodigies of wonder on that tenth day, 30. With the bow in his hand he stood in the midst of the two armies and none of the warriors could gaze at him like the sun standing high in heaven in Summer. He destroyed the Pandav armies as Indra did the armies of the danavas Devaki's

तथा भीष्म पाण्डवेषां स्तापयामास भारत । तथा चैन पराक्रान्तगालोऽप्य मधुसूदनः ।
 उवाच देवकीपुत्र प्रीयमाणो धनञ्जयम् ॥ ३४ ॥ एष शान्तनवो भीष्मः सैन्यो
 रन्ततेस्थितः । सन्निहत्य बलादेन विजयस्ते भविष्यति ॥ ३५ ॥ बलात् संस्तम्भयस्येन
 यत्रैवा भिद्यते चमूः । न हि भीष्मशरानन्यः सोढुमुत्सहते विभो ॥ ३६ ॥ ततस्तस्मिन्
 क्षणे राज्ञश्चोदितो धानरध्वजः । सध्वजं सरथ साथं भीष्ममन्तर्दधे शरैः ॥ ३७ ॥
 सचापि क्रुमुमुष्याना मृषमः पाण्डवेरितान् । शरव्रातैः शरव्रातान् बहुधा विदु
 धावतान् ॥ ३८ ॥ ततः पञ्चालराजश्च धृष्टकेतुश्च वीर्यवान् । पाण्डवो भीः सनदच
 घृष्ट्युम्नदच पार्षतः ॥ ३९ ॥ यमौ च चेकितानदच केकयाः पञ्च चैवह । सात्यकिदच
 महाबाहुः सौमद्रोष्यदोत्कचः ॥ ४० ॥ द्रौपदेयाः शिष्यण्डी च कुन्तिभोजदच
 धीर्यवान् । सुशर्मा च विराटदच पाण्डवेया महाबलाः ॥ ४१ ॥ एते चान्ये च बहवः

जी ने पाण्डवों के शूचीरों को भी संतप्त किया मधुदैत्य के मारनेवाले देवकी
 के पुत्र श्रीकृष्णजी इस प्रकार पराक्रम करनेवाले भीष्मको देखकर अपने मित्र
 अर्जुन से बोले कि यह शान्तनुका पुत्र भीष्म दोनों सेनाओं में नियत है । ३४ ।
 वड़े बलसे इसको मारकर तेरी विजय होगी तू बलसे इसको वहाँ नियत कर जहाँ
 यह रोना घायल होता है । ३५ । हे समर्थ भीष्मके बाण मरने को कोई साहस
 नहीं करता है इसके अनन्तर उस क्षण में प्रेरित धानरध्वज अर्जुन ने । ३६ ।
 बाणों से भीष्मको ध्वजा रथ और घोड़ों समेत गुप्त करदिया फिर उस प्रतापी
 भीष्मनेभी पाण्डवों के चलाये हुए बाण समूहोंको अपने बाणों से अनेक प्रकार
 करके छिन्न भिन्न करदिया । ३८ । इसके पीछे राजा द्रुपद और पराक्रमी धृ-
 केतु पाण्डव भीष्मने घृष्ट्युम्न नकुल सहदेव चेकितान पांचोभाई केकय । ३९ ।
 महाबाहु सात्यकी अभिमन्यु यदोत्कच द्रौपदी के पांचोपुत्र शिष्यण्डी पराक्रमी
 राजा कुन्तिभोज । ४० । सुशर्मा राजा विराट् यह सब बहुतसे पाण्डवों के शूचीर
 भीष्मजीके शायकोंसे पीड़ामानहुए । ४१ । अर्जुनके हाथ से पीड़ित शूचीर शोक

son Shree Krishna the destroyer of Madhu, seeing the prowess of Bhishm, said to his friend Arjun: "Bhishm the son of Shantnu is standing between the two armies 34. Thy conquest lies in killing him. Force him with the strength of your arms to move from the place where the armies are long wounded. They are unable to withstand his arrows." Thus advised, Arjun of monkey's standard hid with his arrows the banner, chariot and horses of Bhishm; but the latter destroyed with his arrows the network of the Pandava's arrows. Then Prince Drupad, valliant Bhimsen, Dhrishtadyunn, Nakul, Sahadev, Chekitan, the five Kailaya brothers, Shikhandi, valliant king Kuntibhoj. 40. Susharma, king Virat and other warriors of the Pandavas were wounded by his arrows. The warriors wounded by his arrows were plunged in the ocean of grief. The

पीडिता भीष्मसायकैः । समद्धताः फाल्गुनेन निमग्नाः शोकसागरे ॥ ४२ ॥ ततः-
 शिखण्डी वेगेन प्रगृह्य परमायुधम् । भीष्ममेवामिदुद्राद्य रथमाणः किराटिना ॥ ४३ ॥
 ततोऽस्यानुचरान् हत्वा सर्पान् रण विभागवित् । भीष्ममेवामिदुद्राद्य वीमत्सुरपर
 जितः ॥ ४४ ॥ सात्यकिश्चेकितानश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । विराटो द्रुपद्श्चैव माद्री-
 पुत्रौ च पाण्डवौ ॥ ४५ ॥ बुद्धयुभीष्ममेवाजौ रक्षिता दृढघन्वता । अभिमन्युश्चसमरे
 द्रौपद्याः पञ्च चात्मजाः ॥ ४६ ॥ बुद्धयुः समरे भीष्मं समुद्यतमहायुधाः । ते सर्वे दृढ-
 घन्वानः संयुगेष्वपलायिनः ॥ ४७ ॥ यद्बुधाः भीष्ममानच्छ्रेमार्गणैः क्षतमार्गणैः । विप्य
 नान् वाणगणान् ये मुक्ताः पार्थिवोत्तमैः ॥ ४८ ॥ पाण्डवानामदीनात्मा व्यग्राहतधरु-
 यिनीम् । चक्रे शरविघातञ्च क्रीडशिव पितामहः ॥ ४९ ॥ नाभिसन्धत्तपाञ्चादये
 स्मयमानो मुहुर्मुहुः । स्त्रीत्यं तस्यानुसंस्मृत्य भीष्मो वाणान् शिखण्डिने ॥ ५० ॥

ममद्रुमे दृवगये इसके पीछे बड़ी तीव्रतासे शिखण्डी उत्तम धनुषको लेकर ४२। अर्जुन
 से रक्षाक्रियाहृत्वा भीष्मकेसंमुखचलायुद्धके प्रकारोंकाज्ञाता अजेयअर्जुन भीष्मकेसब
 साथियोंकोमारकर उनके सम्मुखचला सात्यकी चैकितान धृष्टद्युम्न-४४, विराट् द्रुपद-
 माद्रीके-दोगों पुत्र यहसब दृढ धनुषयुक्त अर्जुनसे रक्षित होकर युद्धभूमि में भीष्मके
 सम्मुख गये । ४५ । और अभिमन्यु वा द्रौपदीके पांचोपुत्र यह भी बड़े शस्त्रोंके
 धारण करनेवाले युद्ध में भीष्मकी ओर चले । ४६ । और दृढधनुषधारी युद्ध में
 मुख न मोड़नेवाले वाणोंसे घायत उन सबने भी पितामह भीष्मको वाणोंकी बड़ी
 बर्षसे आच्छादित किया । ४७ । फिर प्रसन्निचित भीष्मने उन वाण समूहों को
 जिनको कि उत्तम राजाओंने छोड़ा था काटकर पांडवोंकी सेनाको मक्काया । ४८।
 क्रीडा करतेहुए पितामहने वाणों को निष्फलकर बारम्बार आश्चर्य युक्त होकर
 उसके स्त्रीपने को स्मरणकर के वाणोंको पांचालदेशी शिखण्डी पर नहीं चलाया
 फिर उस महारथीने द्रुपदकी सेनामें सात रथियोंको मारा । ५० । इसके अनन्तर

Shikhandi taking up his good bow, protected by Arjun, faced Bhi-
 shm, and Arjun, skilful in all the ways of war, killed all the followers
 of Bhishm and encountered him. Satyaki, Chekitan, Dhrishtadyumn,
 Virat, Drupad, the two sons of Madri and other great archers,
 protected by Arjun, faced Bhishm in battle 45. Abhimanyu and
 the five sons of Draupadi, armed with powerful weapons, rushed to-
 wards him. Those wielders of hard bows, firm in the field of battle,
 though wounded by arrows covered the grandfather with the shower
 of their arrows. Bhishm with a cheerful mind cut down the arrows
 discharged by those princes and wounded the Pandav warriors. The
 grandfather, as if in play, cutting again and again those arrows in a
 wonderful manner and remembering the womanhood of Shikhandi of
 Panchal, did not discharge his arrows at him. Then the brave
 warrior struck down seven charioteers of Drupad's army. 50 .

जधान हुपदानीके रथान्सप्त महारथः । ततः किलकिलाशब्दः क्षणेन संभ्रमस्तदा ५१
मत्स्यपाञ्चालक्षेत्रीनां तमेकमभिधाषताम् । ते नराश्वरथमातैर्मार्गणैश्च परस्पर
॥ ५२ ॥ तमेकं छादयामासुर्मैघा इव दिघाकरम् । भीष्मं भागीरथीपुत्रं प्रतपन्तप्ये
रिपुम् ॥ ५३ ॥ ततस्तस्य च तेषाम्च युद्धे देवास्त्रोपमे । किरीटी भीष्ममानच्छेत्
पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ॥ ५४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मपराक्रमे

एकोनविंशतिप्रश्नोऽध्यायः ॥ ११२ ॥

सञ्जय उवाच । पवन्ते पाण्डवाः सर्वे पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । विव्यधुः समरे
भीष्मं परिघार्य्य समन्ततः ॥ १ ॥ शतघ्नीभिः सुघोराभिः परिघैश्च परस्वधैः । मुह
रैर्मुसलैः प्रासैः क्षेपणीयैश्च सर्वश ॥ २ ॥ करैः कनकपुंखैश्च शक्तिसोमरकम्पनैः ।
नाराचैर्वत्सदन्तैश्च भुशुण्डीभिश्च सर्वैस् ॥ ३ ॥ शताड्यन् रणे भीष्मं सहिताः सर्वे

क्षणमात्रही में उस अकेले की ओर दौड़ते हुये मत्स्य पांचाल और चंदेरी
देशके शत्रियों का कलकला शब्द उत्पन्नहुआ । ५१ । हे शत्रुसंतापी उन मनुष्यों
ने रथके समूह और घाणों से उस युद्ध में शत्रुके तपानेवाले भागीरथी के पुत्र
अकेले भीष्म को ऐसे ढक दिया जैसे कि बादल सूर्यको ढकदेते हैं इस के
पीछे देव दानवोंके समान दोनोंके युद्धमें अर्जुनने शिखंडी को भागेकरके भीष्म
को मोहित किया । ५३ ।

अध्याय १२० ॥

संजय बोले कि इसप्रकार से उन सब पांडवों ने शिखंडी को भागे करके
और युद्ध में चारों ओर से भीष्मजी को घेरकर घायल किया । १ । बड़े भयानक
शतघ्नी परिघ फरसे मुद्गल मुशल मास क्षेपणी कनकपुंखवाले शरशक्ति तोमर
कंपन नाराच वत्सदन्त भुशुण्डी आदि अनेक शस्त्रों के द्वारा युद्ध में सब शत्रियों

Immediately after this there was a great noise from the armies of Matsya, Panchal and Chandori warriors rushing against him. With their numerous chariots, O destroyer of enemies, they so covered brave Bhishm under the flight of their arrows as clouds hide the sun. Then in that war, like that of the gods and danavns, Arjun from behind the back of Shikhand: discharged his arrows and made Bhishm insensiblo." 53.

CHAPTER CXX

Sanjaya continued:— "Thus led by Shikhandi, the Pandavas surrounded Bhishm and wounded him with dreadful *Shataganis*, clubs, axes, *mudgals*, *mushals*, *prases*, missiles, arrows with golden feathers, spears, *tomars*, *lampuns*, *valsants*, *bhushundis* and other weapons. All the Srinjayas discharged their weapons at once and

सृज्या । स विशीर्णतनुत्राण पीडितो बहुभिस्तदा ॥ ४ ॥ न विध्यये तदाभीष्मो
मिद्यमानेषु मर्मसु । सन्दीप्तशरचापाग्निरत्नप्रपद्यतमारुतः ॥ ५ ॥ तेमिनिर्होदसगतापो
महास्रोदपपाषक । चित्रचापमहाज्वालो वीरक्षयमहंन्धन ॥ ६ ॥ युगात्ताग्निसम
प्रक्षय परेषां समपद्यत । विहरय रथसघानामन्तरेण धिनि स्रुत ॥ ७ ॥ दृष्टपते स्म
मरेन्द्राणां पुनर्मध्यगतदचरन् । तत पाञ्चालराजश्च घृष्टकेतुमचिन्त्य च ॥ ८ ॥
पाञ्चालीकिर्मीमप्य माससाद् विशाम्पते । ततः सात्यकिर्मीमञ्च पाण्डवश्च धन
ञ्जयम् ॥ ९ ॥ द्रुपदश्च विराटश्च घृष्टयुम्नश्च पार्वतम् । भीमघोषैर्महाघेगैर्मंभोरण
भेदिभिः ॥ १० ॥ पडेताभिश्चितैर्भीष्म भविष्याद्योत्तमै शरैः । तस्य तेनिशितार वाणात्
सन्निवार्ये महारथाः ॥ ११ ॥ दशभिर्दशभिर्भीष्ममर्हयामासुर्यो जसा । शिखण्डीमुम
हाबाणात् यान्मुमोश्च महारथ ॥ १२ ॥ नचकुले दजतस्य स्वर्णगुञ्जाः शिलाशिताः ।

ने एकसाधही भीष्म को बहुत प्रकार से घायल किया तब वह भीष्म दृष्ट क्वच
बहुतशस्त्रोंसे पीड़ामान ४ और मर्मस्थनों के घायलहेने परभी दुःखी नहींहुए जिसके
बाण और शस्त्रों से मकटहेने वाली प्रकाशित आग्नि और रथकी चक्रपारा का शब्द व
परदेश आदि वड़े २ शस्त्रोंका प्रकाश और जुड़ाऊ घनुपवाले वड़े २ शूरवीरोंकानाशही
बड़ाइधनया । ६ । वह मलयामिनके समान शत्रुओं के सम्पुलहुधा और अरकाञ्च
पाकर रथों के समूहोंमें से बाहर निकलगया फिर राजाओं के मध्यमें वत्तमानहोकर
घूमता दृष्टपदा इसके पीछे राजा पांचाल और घृष्टकेतुको ध्यान न करके पाण्डवों
की सेना के मध्यवर्चीहोकर भीष्मजी ने सात्यकी भीमसेन अर्जुन द्रुपद विरोट
घृष्टयुम्न इन छः महारायियोंको वड़े भयकारी युद्धमें घायल करनेवाले उत्तम तीक्ष्ण
बाणोंसे घायल किया फिर उन महारायियोंने उनके उन तीक्ष्णबाणों को दूरकरके
बड़ेवेगसे दश दशबाणों के द्वारा भीष्मजीको पीड़ामान किया और महारथी
शिखण्डीने सुनहरी पुंखवाले शिनापर तीक्ष्णकिये बाणोंकोमारा वह बाण शीघ्रही

wounded Bhishm on all sides Bhishm with his armour broken and
wounded with different sorts of weapons in the vital parts felt no
pain. Having his arrows and weapons for blazing fire of which the
rumbling of his chariot wheels was the din, the mighty weapons were
the light and the dead bodies of the warriors having jewelled bows,
formed the fuel! Thus like the fire of *pra'aya* he faced his enemies
and in good time got clear of the lines of their chariots Then he
was seen roaming in the midst of the princes. And disregarding the
king of Panchal and Dhrishtaketu, he wounded with his dreadful
arrows the six warriors of the Pandavas, namely Satyaki, Bhimsem,
Arjun, Drupad, Virat and Dhrishtadyumna Those warriors however
removed his arrows and wounded him with ten arrows each Valiant
Shukhandi discharged his arrows having golden feathers and sharpened
on stone. They pierced through his body. Then enraged Arjun

ततः किंटीसंरब्धो भीष्ममेवाश्रयधावत ॥१३॥ शिखण्डिनं पुरस्हत्य धनुश्चास्यसमा
 छिन्नत । भीष्मस्य धनुषदलेदे नामृष्यन्तमहारथाः ॥ १४ ॥ द्रोणश्च कृतधर्मांच सैम्य
 वश्च जपद्रथः । भूरिध्रवाः शलः शल्यो भगदत्तलक्ष्यैवच ॥ १५ ॥ ससैतेपरमकुद्धा कि
 रोद्दिनमभिद्रता । तत्र शस्त्राणि दिव्यानि दर्शयन्तो महारथाः ॥ १६ ॥ अभिपेतुर्धरां
 कुद्धाच्छाद्यन्तश्च पाण्डवम् । तेषामापततां शब्दः शुश्रुवे फाल्गुने प्रति ॥ १७ ॥
 उद्धृतातां यथाशब्दः समुद्राणां युगक्षये । जनतानयत गृह्णीत घित्त्यध्वमचकरोत् ॥ १८ ॥
 इत्यासीत्तुमुलः शब्दः फाल्गुनस्य रथे प्रति । तं शब्दं तुमुलं श्रुत्वा पाण्डवानां महा
 रथाः ॥ १९ ॥ अश्रयधावन् परीप्सन्तः फाल्गुनं भरतर्षभ । सात्यकिर्भीमसेनश्च
 घृष्टयुग्ंधं पार्षतः ॥ २० ॥ विराटद्रुपदौ चोमौ राक्षसश्च घटोत्कचः । अभिमन्युश्च
 संकुहः ससैते क्रोधमूर्च्छिताः ॥ २१ ॥ समश्रयधावंस्वरिताभिश्चकार्मुकधारिणः । तेषां
 सममवयुद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् ॥ २२ ॥ संभ्रामे भरतधेष्ट, देवानां दानवैरिव ।

भीष्मजीके शरीरमें प्रवेश करगये इसके पीछे क्रोधयुक्त अर्जुनने शिखंडीको आगे
 करके भीष्मजीके सम्मुख दौड़कर उनके धनुषको काटा फिर द्रोणाचार्य कृत-
 वर्मा महारथी जपद्रथ भूरिध्रवा शल्य और भगदत्त भीष्मके धनुष को तोड़ना
 न सहकर बड़े क्रोधयुक्तहोकर सातोमिलकर अर्जुनके सम्मुखगये वहां दिव्य अस्त्रों
 को दिखातेहुए । १६ । पांडवोंको शस्त्रोंसे दकते उन सबक्रोधभरे महारथी पुरुषोंके
 ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि प्रलयकाल में उठेहुए समुद्र के शब्द होतेहैं और अर्जुन
 के रथपर ऐसे कठिन शब्दहुए कि लेचलो पकड़ो घायल करो मारो । १८ । हे
 राजा पांडवों के महारथी उम कठिन कठोर शब्दको सुनकर अर्जुन को चाहते हुए
 उन महारथियों के सम्मुख दौड़े सात्यकी भीमसेन घृष्टयुग्न् विराट द्रुपद नकुल
 सहदेव घटोत्कचराक्षम और अत्यन्तक्रोधयुक्त अभिमन्यु महाक्रोधमें ज्वलित होकर
 अपूर्व धनुषोंको लिये उनसातोंमहारथियोंके सम्मुख दौड़े इनमवलोगोंका युद्धपेसा

led by Shikhandi rushed against Bhishm and cut down his bow. Dronacharya, Kritvarma, valliant Jayadrath, Bhurishrava, Shalya and Bhagdatta could not bear that injury to Bhishma's bow and all those seven warriors together faced Arjuu. Then displaying their divino weapons and covering the Pandavas with their weapons, the sounds of those enraged warriors were heard like that of the angry ocean at the end of the Yug. Approaching Arjun's chariot they cried out, "Take him, seize him, wound him, kill him," The Pandav warriors hearing those cries, rushed against them for the sake of Arjun. Satyaki, Bhimsen, Dhrishtadyumn, Virat, Drupad Nakul, Sahadev, Ghato'kach the rakshas and enraged Abhimanyu, all these warriors much enraged took up their wonderful bows and rushed upon the seven. Then the battle between the two parties was as

शिशुवर्डीतु रणे श्रेष्ठो रक्षमाणः किराटिना ॥ २३ ॥ अविध्यद्दशभिर्भीष्मं छिन्नघन्या
 नमाहवे । सारथिं दशभिर्दशस्य ध्वजध्वजेन चिच्छिन्दे ॥ २४ ॥ सांग्मत् वामुकं
 मादाय गात्रेयो वेगवत्तरम् । तदप्यस्य शिर्तवाणैस्त्रिभिश्चच्छेद् फाल्गुन ॥ २५ ॥
 एव स पाण्डवः क्रुद्ध आत्तमात्तं पुनःपुनः । धनुश्चिच्छेद् भीष्मस्य सत्र्यमार्चीपर
 न्तपः ॥ २६ ॥ सच्छिन्नघन्या संक्रुद्धः सुक्किणी परिसंलिहन् । शक्तिजग्राह तरसा गिरीणा
 मपि दारणीम् ॥ २७ ॥ ताञ्च चिक्षेप संक्रुद्धः फाल्गुनस्य रथं प्रति । तामापवन्ती
 सग्नेस्य ज्वलन्तीमशनीमिध ॥ २८ ॥ समावृत्त शिताद् भल्लान् पञ्च पाण्डवमन्दन ।
 तस्य चिच्छेदतां शक्तिं पञ्चधा पञ्चमि शरैः ॥ २९ ॥ संक्रुद्धोमरतश्रेष्ठ भीष्मवाहुप्रवेरि
 ताम् । सापपात तयाच्छिन्ना संक्रुद्धेन किराटिना ॥ ३० ॥ मेघवृन्दपरिभ्रष्टा विच्छि-
 न्महाघोर रोमहर्षणद्रुम्भा ॥ २१ ॥ जैसाकिदैत्योसं और देवताओसे हुआथा फिर युद्धमें
 अर्जुनमे रक्षित शिखंडीने उन दूटे धनुषवाले भीष्मको दशबाणोंसे बेधा औरदहाई
 बाणोंमे सारथीको घायल किया और एकबाणसे उसकीध्वजाकोभीछेदडाला ॥ २४ ॥
 गांगेय भीष्मजी बड़े वेगवान् दूसरे धनुषको लेकर युद्धकरने लगे अर्जुन ने उन
 के उस धनुषकोभी तीन तीक्ष्ण बाणों से काटा । २५ । इसरीति से उसशत्रुसंतापी
 क्रोधभरे अर्जुन ने बारंबार लिये हुए भीष्मके धनुषोंको काटा । २६ । तब उन
 दूटे धनुष अत्यन्त क्रोधयुक्त होठोंको चावतेहुए भीष्मजीने पर्वतों कोभी फाड़ने
 वाली घोरशक्ती को हाथ में लिया । २७ । और बड़े क्रोधमे उस शक्ती को
 अर्जुन के रथपर फेंका उस वज्रके समान प्रकाशमान आतीहुई शक्ती को देखकर
 पांडुनन्दन अर्जुन ने पांच तीक्ष्ण भल्लोंको हाथ में लिया और उनकी उस
 शक्ती को पांचबाणों से टुकड़े टुकड़े करदिया । २९ । हे राजा अर्जुन ने भीष्मकी
 भुजासे फेंकी हुई शक्ती को काटा फिर अर्जुन से कटीहुई शक्ती रथसे ऐमे गिर-
 पड़ी । ३० । जैसे कि बादलोंके समूहों से अलग होकर बिजली गिरती है शत्रु-

ferous as that between the gods and danavas. Then Shikhandi, protected by Arjun, wounded Bhishm, whose bow was cut down, with ten arrows, with ten more he wounded his driver and with one he pierced through his banner. Bhishm the son of Ganga then took up another bow and began fighting. Arjun cut down the other bow too, with three sharp arrows. Thus in his rage Arjun the destroyer of enemies again and again cut down Bhishm's bow. 26 Much enraged at the cutting of his bows, Bhishm biting his lips in anger, took up a dreadful spear capable of piercing mountains and in great rage hurled it at Arjun's chariot. Seeing that spear coming on like bright vajra, Arjun the joy of Pandu, took up five darts in his hand and with them he cut down the spear in pieces. Hurled by the arms of Bhishm the spear was cut down by Arjun and it fell off the chariot (30) as lightning from clouds. Bhishm the destroyer of the

द्वेष शतहृदा । छिन्नांतां शक्तिमालोक्य भेषमः क्रोधसमन्वितः ॥ ३१ ॥ अचिन्तयद्भजे
वीरो युद्धपापपरपुत्रजयः । शकोहं धनुषैकेन निहन्तु सर्वगण्डवान् ॥ ३२ ॥ यद्येषां
न भवेद्गोप्ता विश्वक्सेनो महाबलः । कारणद्वयमास्थाप नाहं योत्स्यामिपाण्डवान्
॥ ३३ ॥ अवध्यत्वाच्च पाण्डूनां स्त्रीभावाच्च शिखाण्डिनः । पित्रा तुष्टेन
मे पूर्वपदाकाली मुद्रावहम् ॥ ३४ ॥ स्वच्छन्दमरणं दत्त मवध्यत्वरणे तथा । तस्मात्स्यु
महं मन्ये प्राप्तकालमिवात्मनः ॥ ३५ ॥ एवं ज्ञात्वा व्यवसितं भीष्मस्यामिततेजसः ।
ऋषयो वसवधैव वियत्स्था भीष्ममग्रवन् ॥ ३६ ॥ पक्षे व्यवसितं तात तद्स्माकमपि
प्रियम् । तत् कुरुष्व महापज युद्धे युधि निवर्तय ॥ ३७ ॥ अस्य चाप्यस्य निधने प्रापु
रासीच्छिवोनिलः । अनुलोमः सुगन्धो च पृषतैश्च समन्वितः ॥ ३८ ॥ देवदुम्भुभ्य
इवैव सम्प्रणेदुर्महास्वनाः । पपात पुष्पहृष्टिश्च भीष्मप्योपरि मारिष ॥ ३९ ॥ नव

शोकं पुरोंके विजयकरने वाले वीर भीष्म ने उस टूटी हुई शक्ति को देखकर युद्ध
में चिन्ताकरी कि मैं अकेले धनुष से सब पाण्डवों के मारने को कैसे समर्थ हूंगा
। ३२ । दूसरे इन्हीं के रक्षक महाबली श्रीकृष्णजी हैं इन दोनों कारणों से
मैं पाण्डवों से नहीं लड़ूंगा प्रथम तो पाण्डवों के अवध्यहोने से, दूसरे शिखंडी के
स्त्रीपनेसे पूर्वसमय में मेरे प्रतन्न चित्त पिताने काली नाम मायाको विवाहा
। ३४ । उससमय मुझको वरदान दिया था कि तू अपनी इच्छा के अनुसार
मरेगा और युद्धमें सबसे अवध्य होगा इसकारण से मैं अपनी मृत्यु को समय पर
वर्त्तमान मानता हूँ । ३५ । बढ़तेजस्वी भीष्मजी के इस प्रकारके निश्चयको
जान कर आकाशमें नियत ऋषियों ने और अष्ट वसुओं ने भीष्मजी से कहा
। ३६ । हे तात तुमने निश्चय किया वही हमको भी अभीष्ट है हे महाराज तुम
इसी को करो और युद्धमें अपने चित्तको हटाओ । ३७ । इसवचन के सपास
होने पर चारोंओर से वह वायु प्रकटहुई जो कि आनन्दरूप त्रिविध प्रकार से
सुगन्ध युक्त थी । ३८ । उस समय देवताओं की भी दुन्दुभिर्या अच्छे प्रकार

enemies seeing his spear broken down thought within himself:—“With
a single bow I can not destroy the Pandavas who have mighty
Shree Kaishn for their protector. I shall not fight against the
Pandavas for two reasons:— firstly they are not destructible and
secondly on account of the womanhood of Shikhandi. Formerly, my
father of cheerful spirit married my stepmother Kali and granted me
the boon that I should die when I desired and should not be killed in
battle Now I think that this is the proper time for me to die.” At
this resolution of Bhishm there came a sound from the rishis and the
eight Vasus staying in mid air, “Your resolution is desirable to us
Do as you say and remove your mind from battle.” As soon as
these words were finished there blew from all quarters a breeze

तच्छुभे कश्चिद्यत्तयां सम्बद्धतां नृप । श्रुते भीष्म महाबाहुं माञ्चाणि-मुनितेजसा
 ॥ ४० ॥ सम्भ्रमश्च महानासीत् त्रिदशानां विशाम्पते । पतिष्यति रथाद्भीष्मे सर्वलो
 कप्रिये तदा ॥ ४१ ॥ इति देवगणानाञ्च वाक्यं श्रुत्वा महातपाः । ततः शान्तनवो भीष्मो
 भीमत्सुं नारयणचर्त ॥ ४२ ॥ सिघ्रमान- शिखण्डौ सर्वापरणभेदिभिः । शिखण्डौ तु
 महाराज भरतानः पितामहम् ॥ ४३ ॥ आजघानोरसि क्रुद्धो नवभिर्निशितैः शरैः ।
 सतेना भिहतः संख्ये भीष्म- कुरुपितामह ॥ ४४ ॥ नाकम्पत महाराज्जितिक्रमेयथा
 बलः । ततः प्रहस्य धीमत्सुवर्षाक्षिपन् गाण्डिव धनुः ॥ ४५ ॥ गाण्ये पञ्चविंशत्या
 बुद्धकाण्डं समाप्यत् । पुनः पुन शतैरेनं त्यरमाणो धनञ्जयः ॥ ४६ ॥ सर्वगात्रेषु
 संक्रुद्धः सर्वमर्मस्वताडयत् । एवमन्यैरति भृशं विध्यमानः सहस्रश ॥ ४७ ॥
 तानप्याशु शरैर्भीष्म प्रतिव्याध महारथः । तैश्च मुक्तञ्जरात् भीष्मा युधि सत्यपरा

से बर्जा और भीष्मजी के ऊपर पुष्पांकीवर्षा हुई, हे राजा व्यासमुनिके तेजसे
 भरे और महाबाहु भीष्म के सिवाय उन वार्त्तालाप करनेवालों के वचनको किसी
 ने भी नहीं सुना । ४० । तब सब लोकके प्यारे भीष्मजी के रथ से पृथक्होने
 पर भीष्मके चाहने वाले सब देवताओं को बड़ा आश्चर्य हुआ । ४१ । इस के
 पीछे शतनुका पुत्र वेजस्वी भीष्म देवगणों के वचनको छुनकर अर्जुन के सम्मुख
 नहीं रहा । ४२ । जो कि सब पक्षों के तोड़नेवाले तीक्ष्ण बाणों से भी घायल
 या तो भी क्रोधयुक्त शिखंडी ने भरतवंशियों के पितामहको । ४३ । तीक्ष्ण धार
 के नौ बाणों से छातीपर घायल किया वह कौरवों के पितामह भीष्मजी युद्ध में
 उस ब्रह्मर से घायल होकर भी ऐसे कंपायमान नहीं हुए जैसे कि भूकम्प होने पर
 पर्वत नहीं हिलता इस के पीछे गांडीव धनुष को खंचनेवाले अर्जुन ने हंसकर
 गाण्ये भीष्मजीको बुद्धक नामके पञ्चीस बाणों से घायल किया फिर शीघ्रता
 करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने जैसे भीष्मको सैकड़ों बाणों से सब अंग
 और मर्मस्थलों पर घायल किया इसीप्रकार दूसरे शत्रुओं ने भी इनको अनेक
 प्रकारसे घायल किया । ४७ । फिर महारथी भीष्मने शीघ्रही उनको अपने बाणों से

giving pleasure and charged with sweet odours. The trumpets of the
 gods sounded and there was a shower of flowers over Bhisma. None
 except Bhisma and myself favoured of Vayas, could hear that
 talk. 40. All the gods were filled with wonder when Bhisma the
 favourite of all the world fell down from his car. After hearing the
 words of the gods Bhisma encountered Arjun no more. Already
 wounded by the sharp arrows, the grandfather of the Bharats was
 again wounded by furious Shikhandi with nine arrows in the breast,
 but Bhisma did not shake even with these fresh wounds and
 remained firm as a mountain at the time of earthquake. Then Arjun
 the wielder of Gandiv wounded the son of Ganga with twenty five

क्रमः ॥ ४८ ॥ निवारयामास शरैः समं सन्नतपर्यभिः । शिखण्डीतु रणे घाणात् यान्
मुनेषु महारथः ॥ ४९ ॥ न चकृते रुजं तस्य शक्यमपुंखाः शिलाशिताः । ततः किरि
टीसंकुञ्जो भीष्ममेवाभ्यवर्तत ॥ ५० ॥ शिखण्डिनं पुरस्कृत्य धनुषास्य समाच्छि
नत् । अथैतेन वभिर्विध्वा ध्वजगकेन चिच्छिन्दे ॥ ५१ ॥ सारथिं विशिखैश्चास्य दशभिः
समकम्पयत् । सोऽन्यत् कार्मुकमादाय गाङ्गेयो बलवत्तरम ॥ ५२ ॥ तदप्यस्य शितैर्भङ्गे
स्त्रिधा त्रिभिरघातयत् । निमेषार्धेन कौंतेय आत्तमात्रं महारणे ॥ ५३ ॥ एवमस्य धनुं
प्याजौ चिच्छेद् सुबहून्यथ । ततः शास्तनयो भीष्मो धीमत्सुं नात्यवर्तत ॥ ५४ ॥
अथैनं पञ्चविंशत्या क्षुद्रकाणां समार्पयत् । सोऽतिविद्धो महेश्पासो दुःशासन

घायलकिया और उनके छोड़े हुए बाणों की गुप्तप्र-धीवाले बाणों से जहाँका तहाँ
रोंक दिया । ४८ । इसके पीछे महारथी शिखंडी ने युद्धमें जिन बाणोंको छोड़ा
उन मुनहरीपुंखवाले तीक्ष्णधार युक्त बाणोंने उन भीष्मजी को पीड़ित नहीं किया
। ४९ । इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन शिखण्डी को आगे करके भीष्म
के सम्मुख वर्त्तमान हुआ और उनके धनुष को काटा उसीप्रकार इनको दशबाणोंसे बेध
कर एक बाणसे उन की ध्वजा को भी काटा और दश विशिखवाणों से उनके सारथी
को अत्यन्त कम्पायमान किया । ५१ । फिर भीष्मने दूसरे मलय धनुषको लेकर तैयार
किया इस धनुषके भी अर्जुनने तीन तीक्ष्ण भल्लों से तीन खंडकिये । ५२ । इसीप्रकार
से अर्जुन ने आधेही निमेष में उस युद्धभूमिमें हाथमें लिये हुए उनके अनेक धनुषोंको
काटा । ५३ । फिर शांतनु के पुत्र भीष्म अर्जुन के सम्मुख वर्त्तमान नहीं हुए
तब अर्जुन ने उनको क्षुद्रक नाम पञ्चीस बाणों से घायल किया । ५४ । फिर
वह अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी भीष्मजी दुःशासन से बोले कि इस पाँदवों के
महारथी युद्धमें क्रोधरूप अर्जुन ने युद्ध के बीच हजारों बाणों से मुझको घायल

arrows with a smiling face. Then much enraged he pierced all parts of his body with hundreds of arrows. Then valliant Bhishm soon wounded him with his arrows and checked the flight of his arrows with his arrows having hidden knots. Shikhandi the brave warrior again discharged his arrows, but those arrows having golden feathers did not trouble him much. Then Arjun much enraged, stepping behind Shikhandi; encountered Bhishm and cut down his bow. 50. Having wounded him with ten arrows, he cut down his banner with one and wounded his chariot driver with ten more. Then Bhishm prepared another strong bow which was cut into three parts by Arjun's three arrows. Then Arjun cut down several bows of Bhishm. At the son of Shantanu encountered Arjun no more, and the latter again wounded him with twenty five arrows. 54. Exceedingly wounded, Bhishm the mighty archer said to Dushasan, "This mighty charioteer of the Pandavas, Arjun the embodiment of anger,

मभापत ॥ ५५ ॥ एष पाथो रणे दुःखः पाण्डवानां महारथः । शरैरेकसाहस्रैर्मा
मेवाभ्य हनद्रणे ॥ ५६ ॥ न वैप समर शक्यो जेतुं वज्रभृता अपि । न चापि
सहिता वीरा देवदानवराक्षसाः ॥ ५७ ॥ मात्रावापि शका निर्जेतुं किम् मर्त्या
महारथाः । एवं तयो सम्बद्धतोः फाल्गुनो निशितैः शरैः ॥ ५८ ॥ शिखण्डिनं
पुरस्हत्य भीष्मं विध्याध संयुगे । ततो दुःशासनं भूयः स्मयमानस्याब्रवीत् ॥ ५९ ॥
अतिविद्धः शितैर्घाणैर्भृशं गाण्डीवधन्वना । वज्राशनिसमस्पर्शां अर्जनेन शरायुधि
॥ ६० ॥ मुक्ताः सर्वेऽन्वयाच्छिन्ना नेमं चाणाः शिखण्डिनः । निहन्तमाना मर्माणि
ददावरणभेदिनः ॥ ६१ ॥ मुसला इव मे प्रान्ति नेमे चाणाः शिखण्डिनः । वज्रदण्ड

किया है यह अर्जुन युद्धमें वज्रधारी इन्द्रभे भी विजय करनेके योग्य नहीं है
। ५५ । और धीर देवता दानव राक्षसभी सब मिलकर मेरे विजय करनेको
समर्थ नहीं हैं फिर पृथ्वी के नर महारथी क्या पदार्थ हैं । ५६ । इस रीति से इन
दोनों के वार्त्तालाप होनेपर अर्जुन ने शिखंडी को आगे करके भीष्मजीको तीक्ष्ण
धारवाले बाणों से फिर घायल किया । ५७ । तब तो उस गांडीवधनुषधारी के
तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त घायल और आश्चर्य युक्त भीष्मजी दुःशासन से कह-
ने लगे । ५८ । कि युद्ध में इन्द्रवज्रके समान अर्जुन के छोड़े हुए स्पर्श करने
वाले बाण सब सफट्ट हुए हैं इस से विदित होता है कि ये बाण शिखंडी के नहीं
हैं । ५९ । वड़ेदड़ और मर्मस्थलों के काटने वाले पर्वतों को भेदनकरने वाले बाण
मुसलोंके समान मुक्तकोमारते हैं यह बाण किसी मकार से शिखंडी के नहीं हैं । ६० ।
वज्रदण्ड के समान स्पर्शवाले वा वज्रके समान तीक्ष्ण कण्ट से सहने के योग्य
बाण मेरे प्राणों को पीड़ा देते हैं इससे यह शिखण्डी के बाण नहीं हैं । ६१ ।
यमदूर्तों के समान अभिय गदा और परिवे के समान स्पर्शवाले बाण मेरे

has wounded me with thousands of arrows. Surely Arjun is in-
vincible even by Indra the wielder of vajra 55. Valliant gods, danavas
and rakshases joined together cannot conquer me; what to say of
mortal men?" When the two were thus talking together, Arjun
preceded by Shikhandi again wounded Bhishm with his sharp arrows.
Exceedingly wounded by the sharp arrows of the wielder of Gandiv
and much amazed, Bhishm thus addressed Dushasan:—"The arrows
discharged by Arjun, hard to the touch like vajra, have all done
their work; I think therefore that those arrows were not discharged by
Shikhandi. Very hard, piercing the vital parts and capable of break-
ing through mountains, those arrows hit me like maces; they cannot
belong to Shikhandi. 60. Hard to the touch like Brahm-dand, sharp
and unbearable like vajra, the arrows give me pain and therefore
they could not belong to Shikhandi. Like the unwelcome messengers
of Yam, the arrows hard as maces and clubs, draw life out of me.

समस्पर्शा षड्वेग वुरासदा ॥ ६२ ॥ मम प्राणानारुजन्ति नेमे घाणाः शिखण्डिन ।
 नाशयन्तीव मे प्राणान् यमदृता इवाहिताः ॥ ६३ ॥ गदापरिघसंस्पर्शा नेमे
 घाणाः शिखण्डिनः । भुजगा इव संक्रुद्धा लेलिहाना विपोल्यणाः ॥ ६४ ॥ समा
 विशन्ति मर्माणि नेमेघाणां शिखण्डिनः । अर्जुनस्य इमयाणां नेमेघाणां शिखण्डिनः ॥ ६५ ॥
 कृन्तन्ति मम गात्राणि माघमासे गवाइव । सर्वे ह्यपि न मे दुःखं कुर्युरप्ये
 नराधिपाः ॥ ६६ ॥ धीर गाण्डीव धन्वान् मृते जिष्णु कपिध्वजम् । इति प्रपञ्चा
 न्तनवो विघ्नक्षुरिव पाण्डवान् ॥ ६७ ॥ शक्तिभीष्म सपार्थाय ततश्चिक्षेप भारत । तामस्य
 विशिष्यैश्छित्वा त्रिधा त्रिमिरपातयत् ॥ ६८ ॥ पश्यतां कुरुवीराणां सर्वेषां तव भारत ।
 चर्मोधारूप गाङ्गेयो जातरूपपरिहृतम् ॥ ६९ ॥ खड्गंचान्यतर प्रेम्सुर्मृत्योरप्रेजयायवा ।

माणों को निकालते हैं यह बाण शिखण्डी के नहीं हैं । ६२ । सर्पों के समान
 अत्यन्त क्रोधयुक्त विषभरे चाटते हुए मेरे मर्मों में प्रवेश करते हैं इसमें यह बाण
 शिखण्डी के नहीं हैं । ६३ । यह बाण अश्वत्थ अर्जुन के हैं शिखण्डी के नहीं
 हैं क्योंकि यह बाण मेरे अंगों को ऐसे चूर्ण किये डालते हैं जैसे कि भाद्रपदके
 महान में प्रचण्ड सूर्य अंगों को संतप्त करके चूर्णोद्भूत करते हैं । ६४ । विजयी
 गांडीव धनुषधारी वानरध्वज धीर अर्जुन के सिवाय अन्य पृथ्वी के सवराजा
 लोग भी मुझको व्यथित नहीं करसके । ६५ । हे भरतरुण इस प्रकार बोलते बा
 पाण्डवोंको भस्मकरना चाहते उन शतनु के पुत्र भीष्मने अर्जुन के ऊपर श-
 क्तीको छोड़ा । ६६ । इसको देखकर अर्जुन ने आपके तब कौरवी धारोंके देखते
 हुए इनकी शक्तीको विशिखनाम तीनबाणों से काटकर गिराया । ६७ । फिर
 दोबाणों में से एकको चाहते गांगेय भीष्मजी ने सुवर्ण जटिन डाल और तब-
 वारको मृत्यु के लिये वा विजय के निमित्त हाथ में पकड़ा । ६८ । तब अर्जुन ने
 उत्तरप से नहीं उतरेहुए की उस डालको शायकनाम बाणों से सी डुकड़े
 किया यह यज्ञ आश्चर्यता हुआ । ६९ । इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने अपनी

those are not Shikhandi's arrows. Like venomous serpents much
 enraged with tongues projected, the arrows enter my vital parts and
 therefore they cannot be Shikhandi's arrows. They are certainly
 Arjun's and not Shikhandi's, for these arrows are withering up my
 limbs like the sun of Bhadrpad. Except conquering Arjun, the
 wielder of the Gandiv, who has a monkey's figure on his banner, none
 of the kings of the world can wound me." Thus talking and wishing
 to destroy the Pandavas, Bhishm the son of Shantanu hurled a spear
 at Arjun, and seeing that spear coming towards him, Arjun in the
 presence of all the warriors of the Kauravas, cut it down with three
 arrows. Then remembering his adored god, Bhishm the son of Gan-
 ga took up his sword and shield for death or victory; but before he
 could dis-mount his chariot, Arjun cut his shield into hundred pieces

तस्य तच्छ्रुत्वा चर्म व्यधमत्सायकैस्तथा ॥ ७० ॥ रथादनयकृदस्य तद्द्रुमुतमिवा
भवत् । ततो युधिष्ठिरो राजा स्वान्पत्नीकान्पुत्रोदयत् ॥ ७१ ॥ अमिद्रवत गाङ्गं मा
वोस्तुभयभण्यपि । अथ ते तोमरैः प्रासैर्याणैर्वैद्यैः समन्ततः ॥ ७२ ॥ पद्दृशिष्यं स्तुति
क्रियैर्नारायणैश्च तथा शितैः । वत्सदन्तैश्च भल्लैश्च तमेकमभिदुद्रुषुः ॥ ७३ ॥ सिंहा
दन्ततो घोरः पांडवानामभूत्तदा । तथैव तव पुत्राथ नेदुर्भीष्मजयैपिणः ॥ ७४ ॥ तमेक
मभ्यरक्षन्त सिंहानानां चक्रिरे । तत्रार्सात्तुमुलं युद्धं तायकानां परैः सह ॥ ७५ ॥
दशमेहनि राजेन्द्र भीष्मार्जुनसमागमे । आनीदृगाङ्ग इवावर्त्तो मुहूर्त्समुदधोरिव ॥ ७६ ॥
सैन्यानां युध्यमानानां निम्नतामितरंतरम् । असौम्यरूपा पृथिवी शोणितकामवत्तदा
॥ ७७ ॥ समञ्च विपश्चैव न प्रात्रापत किञ्चन । योधानामयुतं हरथा तस्मिन् स

सेनाओं को आझाकी कि भीष्म के सम्मुख जाओ तुमको थोड़ासा भीष्म न होगा
। ७० । यह सुनकर वह सेना चारों ओरसे तोमर भास वाणसमूह पहिना सुन्दर
खण्ड तोड़नाराच । ७१ । वत्सदन्त और भल्लों समेत उस अकेले के सम्मुख
गये इसके पीछे पांडवों के महाभयकारी सिंहाद जारी हुए । ७२ । इती मकार
भीष्मकी विजय चाहने वाले आपके पुत्रभी गजे और उम अकेले भीष्मके और
पास बनेमान होकर सिंहाद करनेलगे । ७३ । हेराजेन्द्र वहां दशवें दिन भीष्म
और अर्जुनको सम्मुखतामें आपके पुत्रोंका युद्ध अन्य लोगोंसे महाघोर रूपहुआ
। ७४ । परस्पर में मारती और लड़ती हुई सेनाके भ्रमण चक्र एक मुहूर्त्त पर्यन्त
गडा और समुद्रके गिर्वावके समान हुए । ७५ । तवपृथ्वी अगुभरूपी औरसोपरेसे
पूरी होगई उस समय अच्छा बुरा कुछनहीं मालूम हुआ । ७६ । वह भीष्म उस
दशवें दिन में दश हजार वीरों को मारकर मर्मस्थलों में महाघायल होनेपर भी
युद्ध में नियतरहे । ७७ । इसके पीछे उससेना मुखपर नियत धनुषधारी अर्जुन ने

with his sharp arrows. It was a wonder. Then Yudhishtir ordered
his armies to face Bhishm without fear. 70. At this the warriors
armed with tomars, prases, arrows, pattishas, swords, sharp arrows,
vatsdants and darts, faced Bhishm. Then the Pandavas roared like lions.
In the same manner, desirous of Bhishma's conquest, the Kauravas
raised their war erics and having stationad themselves all round him,
began roaring like hoas. On that tenth day in the encounter of
Bhishm and Arjun, your sons fought very valliantly against other
foes. The rounds of the armies killing and fighting against one
another were like the tides of the Ganges and the sea for some
time. The ground became hideous and full of blood and nothing
good or bad, was discernible. Having killed ten thousand warriors
on that tenth day, Bhishm remained firm in battle although he was
much wounded in the vital parts. Then, stationd on the entrance

दशमेहनि ॥ ७८ ॥ अतिप्रदाहवे भीष्मो भिद्यमानेषु भर्मसु । ततः सेनामुखे तस्मिन् स्थितः पार्थोघनुर्धरः ॥ ७९ ॥ मध्येन कुरुसैन्यानां द्रावयामास धाहिनीम् । घषभेत ह्याङ्गीताः कुन्तीपुत्राङ्गनमयात् ॥ ८० ॥ पीड्यमाना शितैः शस्त्रैः प्राद्रवामरणतदा । सौवीराः कितवा प्राच्या प्रतीच्योवीच्यमालवाः ॥ ८१ ॥ अभीपाहाः शूरसेनाः शिवपोषवशातयः । शालवा श्रयास्त्रिगर्ताश्च अम्बष्ठाः फेकपै सह ॥ ८२ ॥ सर्वपते महात्मानः शरार्त्ता प्रणपीडिताः । सग्रामे नाजहुर्भीष्म युध्यमान किरीटिना ८३ ॥ ततस्तमेकं घहृष्टः परिवार्य्यसमन्ततः । परिकल्प्यकुरुन् सर्वाद् शरवर्षैरवाक्षिरन् ॥ ८४ ॥ निपातयत् गृह्णीत युध्यध्व मवकन्तत । इत्यासीत् तुमुलः शब्दो राजन् भीष्मरथ प्रति ॥ ८५ ॥ निहत्य समरे राजन् शतशोथ सहस्रशः । न तस्यासीदनिर्भ्रंशं गात्रेष्ठयमु लन्तरम् ॥ ८६ ॥ एषंभूतत्तत्र पिता शरैर्विशकलीकृतः । शिताग्रैः फालगुनेनाजौ प्राक् कौरवी सेनाके मध्यमे से सेनाको भगाया । ७८ । तव ह्युत्त श्वेतघोड़े रखनेवाले कुन्ती के पुत्र अर्जुनसे भयभीत व वीक्ष्य शस्त्रों से पीडमान होकर युद्ध से भागे । ७९ । सौवीर कितव व पूर्वो पश्चिमी और उत्तरोय राजा व मालव देशा अभीपाह शूरसेन शिवय वशातय शालव आश्रय त्रिगर्त श्रवश्रु फेकपों समेत इनसब घाणों से पीडित और घावोंसे दुःखी महात्माओंने युद्धमें अर्जुनके साथ लड़तेहुए भीष्मको त्याग नहीं किया इसके पीछे बहुतसे क्षत्रियों ने चारों ओरसे उस अकेले को घेरकर । ८२ । और सबकौरवों को हटाकर घाणों की वर्षा से ढकादिया और गिराओ पकड़ो लड़ो काटो यह काठेन शब्द भीष्म के रथ के पासहुए और युद्धमें हजारों को मारकर । ८४ । उसके शरीर में दोज दलका भी अन्तर घावोंसे बाकी नहींरहा ऐसी दशावाले अर्जुन के वीक्ष्य नोकवाले घाणों से अत्यन्त घायल किये हुए आपके पिता भीष्मजी कुछ मूर्ख के शेष रहनेपर आपके पुत्रों के देखतेहुए रथ परसे आशेश होकर पृथ्वी पर गिम्पड़े । ८६ । हेभरतवंशो रथ से भीष्मजी के

of the army, Arjun hit the centre of the Kaurava army and put it to flight. Afraid of Kunti's son Arjun the possessor of white horses, and wounded by his arrows, we fled from the field of battle. 79. The Sauvira, the Kitava, the Eastern, Western and Northern princes, the Malava, the Avishahs the Shursenas, the Shivaya, the Vashataya, the Shalwa, the Ashrayas, the Trigartas, the Amvashtas and the Kalkayas, although pierced with arrows and smarting with the wounds, did not desert Bhishm as long as he fought against Arjun. Then many kshatrya warriors having surrounded him and pushed back the Kauravas, covered him with their arrows and the cries of "Pull, seize, fight and cut" were heard round the chariot of Bhishm. Having killed thousands there was not the space of an inch left unwounded on his body. Thus wounded by the sharp pointed arrows

शिराः प्रापतद्रथात् ॥ ८७ ॥ किञ्चिच्छेपे दिनकरे पुत्राणां तत्र पश्यताम् । द्राहेति द्विवि
 देघानां परिधिधानाञ्च भारत ॥ ८८ ॥ पतमाने रथाङ्गीष्मे यमूच समहास्यत । सम्पतन्त
 मभिप्रेक्ष्य महात्मानं पितामहम् ॥ ८९ ॥ सह भीष्मेण सर्वेषां प्रापतन् इन्द्रयानिनः । स
 पपात महाबाहुयसुधा मनुनादयन् ॥ ९० ॥ इन्द्रध्वज इवोत्पद्यः केतु सर्वधनुष्मताम् ।
 धरणीं न स पस्पर्श शरसंघैः समावृतः ॥ ९१ ॥ शरतल्पे महेष्वासं शयानं पुरुषवभम् ।
 रथात् प्रपतितं चैनं दिव्यो भाव शमाविशत् ॥ ९२ ॥ अश्ववर्षञ्च पर्जन्यः प्राकम्पत
 च मेदिनी । पतद् स दृश्ये चापि दक्षिणेन दिवाकरम् ॥ ९३ ॥ संज्ञां चोपालमद्वीरः
 कालं सञ्चिन्त्य भारत । अन्तरिक्षे च शुभ्राव दिव्या वाचः समन्ततः ॥ ९४ ॥ कथमहा

गिरतेही राज.ओं में और आकाशके देवताओं में हायर आदि बहुत मे शब्द होने
 लगे । ८७ । उस महात्मा पितामहको गिरतेहुए देखकर भीष्मके साथ हमसबके भी
 हृदयफटगये । ८८ । वह महाबाहु इन्द्र ध्वजा के समान ऊंचा और सबधनुषधारि-
 यों में ध्वजा रूप भीष्म पृथ्वी को अच्छी रीति से कंपायमान करता गिरा । ८९ ।
 उन बाणसमूहों से वेधित होनेपर भी भीष्मजी ने पृथ्वी को स्पर्श नहीं किया
 अर्थात् बाण शय्याही के ऊपर रहे फिर उस बाणशय्या पर सोते हुए बड़े धनुष-
 धारी पुरुषोत्तमरूप रथसे गिरेहुए भीष्मजी में दिव्यभाव प्रविष्ट हुआ बादल वर्षा
 करनेलगे पृथ्वी कंपायमान हुई । ९१ । उस गिरते हुए ने भी दक्षिण दिशा में
 नियत सूर्य को देखा हे भरतर्षभ उसप्रतापी शूरवीर ने कालज्ञानको विचार कर
 सावधानी को पाया । ९२ । और अन्तरिक्ष में चारों ओर से यह दिव्य वचन
 सुने कि सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महात्मा पुरुषोत्तम भीष्म दक्षिणायन सूर्य वर्च-
 मान रहने पर किमी प्रकार से भी अपना शरीर नहीं त्यागेगा भीष्मजी इस वचन
 को सुनकर बोले कि मैं अभी नियत वर्चमान हूँ । ९४ । पृथ्वीपर गिरेहुए उत्तरा-

of Arjun, your father, a little before sunset, with a sight of your sons,
 fell down prone from his chariot. At the fall of Bhishma from the
 chariot, there were cries of sorrow raised from the kings and the gods
 on high. Our hearts broke with his fall. That valliant man, tall as
 Indra's banner, shook the earth with his fall, but pierced with arrows
 as he was, he did not touch the ground and remained upraised on the
 bed of arrows. While lying on that bed of arrows, the great archer,
 best of men, Bhishma fallen down from his chariot, exhibited signs of
 his divine origin: rain fell from clouds and the earth shook. 91. At his
 fall he saw the sun in his southern course and thinking of the unfit-
 ness of the time he regained his senses. He heard these words from
 the mid air:— "Mighty Bhishma the best of men bearing arms, will
 not leave his mortal frame as long as the sun will stay in the South."
 On hearing these words Bhishma said:— "I am yet alive" and longing

रमा गात्रेय सर्वशस्त्रमृतावर । काल कर्त्ता नरश्याम्र सम्प्राप्ते दक्षिणायने ॥ ९५ ॥
 शिष्योन्मीति च गात्रेयस्तच्छ्रुत्वा वाक्यमग्रवात् । धारयामास च प्राणान् पतितोपि
 महीतले ॥ ९६ ॥ उत्तरायणमन्विच्छन् भीष्म कुरुपितामहः । तस्य तन्मतमाज्ञाय गन्तुं
 हिमवत गुता । ९७ ॥ महर्षीन् हसरूपेण प्रेषयामास तत्रचै । तत सम्पातिनो हस्ता
 स्वयंरिता मानसौकस ॥ ९८ ॥ आजग्मु सहिता द्रुं भीष्म कुरुपिता महम् । यत्रशंते
 नरश्रेष्ठ शरतल्ये पितामहः ॥ ९९ ॥ तेषुभीष्मं समासाद्य ऋषयो हंसरूपिण । अपश्य
 ष्टर तल्पस्थ भीष्म कुरुकुलोद्ग्रहम् ॥ १०० ॥ ते त वृष्ट्वा महात्मान कृत्या चापि प्रद
 क्षिणम् । गात्रेयं भरतश्रेष्ठ दक्षिणे नच भास्करम् ॥ १०१ ॥ इतरेतरमामन्त्र्य प्राहुस्त
 मनीषिणः । भीष्म कथं महात्मासद् सस्थाता दक्षिणायने ॥ १०२ ॥ इत्युक्त्वा प्रसिधता
 हस्ता दक्षिणामभितो दिशम् । सम्प्रेक्ष्य वै महाबुद्धिश्चितपित्वाच्च भारत ॥ १०३ ॥ तानग्र
 यग को चाहते उन कौरवों के पितामह भीष्मजी ने प्राणों को धारण किया । १९५।
 हिमाचन की पुत्री श्रीगंगाजीने उन के अभिमायको जानकर महर्षि लोगोंको हंस
 रूप करके उनके समीप भेजा । १२९। इसके पीछे वह बहुत उड़ने वाले शीम्रगामी
 हंस एक साथी उन कौरवों के पितामह भीष्मजी के देखनेको । १२७ उम स्थानपर
 प्राये जहां नरोत्तम भीष्म पितामह शरशय्या पर सोतेथे वहां आकर हंसरूप महर्षियों
 ने उम शरशय्या पर नियतहुए कौरव भीष्मजी को देखा और उनको दक्षिणायन
 सूर्य में पड़ाहुआ देखकर बड़ी परिक्रमा कर परस्पर में सलाह करके यह कहा
 । १०० । कि भीष्म महात्मा दक्षिणायनमें कैसे जायगा ऐसा कहकर वह हंस दक्षि
 णकी ओरको चलेगये । १०१ । हे भरतपंथ यड़े बुद्धिमान भीष्मजी अच्छी रीति से
 उनको देख विचारकर शोच पूर्वक बोले कि हे महर्षियों मैं किसी रीतिसे भी दक्षिणायन
 सूर्य में नहीं जाऊंगा यही मेरे मनमें दृढ़ता है उत्तरायण सूर्य होने पर मैं अवश्य
 अपने प्राचीन स्थान पर जाऊंगा । १०३ । हे हंसरूप महात्मा लोगों मैं आप लोगों से

for the Northern course of the sun the grandfather of the Kauravas did not die 95 Ganga the daughter of Himachal, knowing the object of his desire, sent to him the Maharshis in the disguise of swans. These swift going swans came at once to see the grandfather of the Kauravas to the place where he was lying on the bed of arrows. They saw him lying there on the arrowy bed, and seeing him lying down during the southern course of the sun, they went round him and said unannously. 100 "This great Bhisim cannot depart from this world when the sun is in its southern course." Having said this, the swans flew away towards the south. Bhisim the wise, having looked at them carefully, said, "I am resolved, O great rishis, not to leave this world during the southern course of the sun, but as soon as he changes his course towards the north I

धीच्छान्तनयो नाहं गन्ता कथञ्चन । दक्षिणावर्त्तं आदित्ये पतन्मे मनसि स्थितम् १०४
 गमिष्यामि स्वकं स्थानमासीद्यन्मे पुरातनम् । उदगायन आदित्ये हंसाः सत्यं प्रथीमि
 वः ॥ १०५ ॥ धारयिष्याम्यहं प्राणानुत्तरायणकाक्षया । वैश्वर्यभूतः प्राणानामस्सर्गो
 हि यतो मम ॥ १०६ ॥ तस्मात् प्राणान् धारयिष्ये ममर्षुदगायने । यद्य दत्ता वरो
 मह्यं पित्रा तेन महात्मना ॥ १०७ ॥ छन्दतो मृत्युरित्येयं तस्य चास्तु द्रस्तथा । धार
 यिष्ये ततः प्राणानुत्तरात्सर्गो नियते सति ॥ १०८ ॥ इत्युक्त्वा तास्तदा हंसाः स शैते शर
 तन्वयः । एवं कुरुणा पतिते शृङ्गे भीष्मे महाजसि ॥ १०९ ॥ पाण्डवाः सुहृजयाश्च
 सिंहनादं प्रचक्रिरे । तस्मिन् हत महासत्ये भरतानां पितामह ॥ ११० ॥ न किञ्चित्
 प्रत्यपद्यन्त पुत्रारसे भरतयेभ । सम्मोदश्चैष तुमुल्लुः कुरुणामभवत्तदा ॥ १११ ॥ ह्य

कहताहं कि मैं उत्तरायण की इच्छा से प्राणों को धारण करूंगा । १०४ । क्योंकि
 अपने प्राणोंका त्यागना मेरेही स्वाधीन है इस हेतुसे उत्तरायण सूर्य में प्राण
 त्यागकरने की इच्छासे मैं तबतक अपने प्राणोंको धारण करूंगा । १०५ । उस
 महात्मा पिताने जो मुझको अपनी इच्छाके अनुसार जब चाहे तब मरें यह
 जो वर प्रदान किया है उसको मैं वैसेही समझता हूं और वास्तव में भी वह
 यथार्थ है । १०६ । इस कारण देहत्याग निश्चय होजाने पर भी अपने प्राणों को
 धारण करूंगा उन हंतों से ऐसा कहकर शर शय्या पर शयन कर गये । १०७ ।
 इस प्रकार उस बड़े पराक्रमी कौरवोंके वृद्ध और प्रधान भीष्मजी के गिराने पर
 पाण्डवोंने और शंजियोने सिंहनाद किया । १०८ । हे राजा उनबड़े बलिष्ठ
 मतापवान् कौरवों के वृद्ध पितामह के आसन्न मृत्युहोने पर आपके पुत्रोंने कुछ
 करने के योग्य कर्म को नहीं माना । १०९ । उस समय कौरवोंको बड़ा भारी
 मोह उत्पन्नहुआ उसकेपीछे छुपाचार्य औरदुर्योधनआदि सबलोग स्वासाधों को
 लेलकर बड़ाखुदन करनेलगे और इसी व्याकुलतामें बहुत विलम्ब तक अचेत नियत

*shall depart to my old seat in heaven. I say to you, great wishes in
 the form of swans, that I shall live and wait till then; for my life
 is in my power and I will not die till the sun has changed his course
 towards the north. 105. My mighty father granted me the boon
 that I should live as long as I desired. I think his words were true
 to the letter. I shall therefore keep my life although the desertion
 of this body is certain." Having said this to the swans, he lay down
 again on his arrowy bed. Thus the mighty ancestor of the
 Kauravas fell, and the Pandavas with the Scinjays raised
 a leonine roar. At the fall of that mighty ancestor of the
 Kauravas and his being at the point of death, your sons knew not
 what to do. The Kauravas were then very dejected, and Duryo-
 dhan and others wept with deep sighs. They remained insensible*

दुःख्योधनमुखा नि भवस्य रुरुदुस्तत । विपादाच्च चिरंकालनतिष्ठत् विगतेन्द्रियाः ॥ ११२ ॥ दध्युदचैव महाराज न युद्धे दधिरे मनः । ऊरुग्राहगृहिताश्च नाश्रुघ्रावन्त पाण्डवान् ॥ ११३ ॥ अयध्ये शान्तनो पुत्रे हते भीष्मे महौजासि । अभावः सहसा राजन् कुरुराजस्य तर्कितः ॥ ११४ ॥ हतप्रवीरास्तु वयं निहृत्ताश्च शितैः शरैः । कर्त्तव्यं नामि जानीमो निर्जिना सभ्यसाचिना ॥ ११५ ॥ पाण्डवाश्च जयं लब्ध्वा परत्र च परां गतिम् । सर्वे दध्मुर्गहाशंखान् शूणः परिषवाहवः ॥ ११६ ॥ सोमकाश्च सपञ्चालाः प्राहृष्यन्तजनेभ्यः । ततस्तूर्य्यसहस्रेषु नदत्सु समहावलः ॥ ११७ ॥ आस्फोटयामास भृशं भीमसेनो ननाद च । सेतयोरुभयोश्चापि गाङ्गेये निहते विभौ ॥ ११८ ॥ संन्यस्य वीराः शस्त्राणि प्राध्यावन्त समन्ततः । प्राक्रोशन् प्राद्रवन्श्चान्ये जग्मुर्मोहं तथा परे

होकर मश शोचप्रस्तासे युद्धमें विचित्रहीं लगाया । १११ । हृदयके ग्राह से पकड़ेहुये अर्थात् शोचसे प्रसितहोके पाण्डवों के सम्मुख भी नहीं दौड़े । ११२ । जिनके कि वड़े २ शूरवीर मारेगये ऐसे हमलोगोंने दुःख्योधनका नाशहोना विचित्रसे विचारकिया । ११३ । अर्जुनसे परास्तहोकर हमलोगोंने करने के योग्यकर्म कोभी नहींजाना और परिष के समान भुजाधारी सवशूरवीर पाण्डवोंने इसलोक में तो विजयस्वी कीतिको और परलेक में उत्तम गतिको पाकर बड़े २ शंखों को बजाया हे राजा पांचालों समेत सोमकलोग अत्यन्त प्रसन्न हुए । ११५ । फिर हजारों शर्जों के वजने पर उस महावली भीमसेन ने भुजदण्डों के कठिन शब्द किये अर्थात् दोनों खंभ ठोककर बड़ी गर्जनाकरी । ११६ । उस समर्थ गांगेय भीष्मजी के आसन्न मृत्युहोने पर दोनों सेनाओं के शूरवीरों ने शस्त्रोंको त्यागकरके चारों ओरसे बड़ा ध्यान किया । ११७ । कोई पुकारा कोई भागा कोई अचेत हुआ किसीने क्षत्रीकुलकी प्रशंसाकरी किसी ने भीष्मजी की प्रशंसा करी । ११८ । ऋषियों ने और पितरों ने भी महाव्रत भीष्मजी की प्रशंसा करी

for a long time and did not rejoin in battle on account of sorrow. 111. Being much dejected in mind they did not rush against the Pandavas. At the death of our great warriors, we thought that the destruction of Duryodhan was sure. Defeated by Arjun we did not know what to do, and all the Pandav warriors with their arms like clubs, got victory and fame in this world and the regions of the righteous in the next. They blew their conchs and the Somaks with the Panchals wore much pleased. 115. At the sounds of thousands of the musical instruments, valliant Bhimsen made a great noise by the beating of his upper arms and roared a loud roar. When mighty Bhishm the son of Ganga was at the point of death, the warriors of both the armies laid down their arms and remained plunged in deep thought. Some cried out, some fled, some became insensible, some praised the

॥ ११९ ॥ क्षत्रं चान्येभ्यनिन्दन्त भीष्मं चान्येभ्यपूजयन् । ऋषयः पितरश्चैव प्रशशंसं
स्मर्माव्रतम् ॥ १२० ॥ सरतानाञ्च ये पूर्वं ते चैतं प्रशशंसिरे । महोपनिषद्वच्चैव
योगमास्थाय वीर्यवान् । जपन् शान्तनवो धीमान् कालाकांक्षी स्थितोभवत् ॥ १२१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मपराक्रमे

विंशत्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १२० ॥

पृतराष्ट्र उवाच । कथमासंस्तदा योषा हीता भीष्मिण सञ्जय । वलिना देव
कल्पेन गुर्वर्थे ब्रह्मचारिणा ॥ १ ॥ तदैव निहतान् मन्ये कुरुनभ्यांश्च पाण्डवैः ।
न प्राहरद्यदा भीष्मो घृणित्वाद्द्रुपदारमजम् ॥ २ ॥ ततो दुःखतरं मन्ये किमन्यत्
प्रमविष्यति । यदाहं पितरं श्रुत्वा निहतं स्मसुदुर्मतिः ॥ ३ ॥ अश्मसारमयं नूनं
हृदयं मम सञ्जय । श्रुत्वा विनिहतं भीष्म शतधा यन्न दार्यते ॥ ४ ॥ यद्यन्य

और भरतवंशियों के जो पूर्व के स्वर्गवासी पुरखालोग थे उन्हीं ने भी उनकी
बड़ी प्रशंसा की । ११९ । पराक्रमी और बुद्धिमान् भीष्मजी महा उपनिषद्रूपी
योग में वर्त्तमान होकर जपमें प्रवृत्त उत्तरायण सूर्य काल के इच्छावान्
होकर नियत हुए १२१ ॥

अध्याय १२१ ॥

पृतराष्ट्र बोले हे संजय उन पराक्रमी देवता के समान गुरु पिता ब्रह्मचारी
भीष्म से पृथक् होकर शूरीर लोग किसदशा में होकर कौन काम करनेलगे
। १ । जबकि भीष्मजी ने दयाकरके शिखण्डी के ऊपर किसी शस्त्रका प्रकार नहीं
किया तभी से मैं कौरवों को पांडवों के हाथ से मृतकरूप मानता हूँ । २ । हे
संजय अब इससे अधिक दूसरा कौनसा दुःखहोगा कि पिता को भी मृतक सुनकर
में निर्बुद्धी जीता हूँ । ३ । हे तात निश्चयकरके मेरा हृदय लोहे से भी कठोर
है जो अपने पिता भीष्मजी को भी सुनकर सौ दुकड़े नहीं होता हे सुन्दर व्रत

kshatriyas and some praised Bhishm. The rishis and pitars too, praised Bhishm of dreadful vow and the forefathers of the Bharats residing in heaven, gave him much praise. Valliant and wise Bhishm engaged in *yog* and *jap*, waited there for the northern course of the sun." 120.

CHAPTER CXXI

Dhritrashtra said:—"What did the warriors do, Sanjaya, after being separated from Bhishm the grandfather, venerable like a god? When I heard that he, out of mercy spared Shikhandi and did not wound him in return, I thought that the Kauravas were all slaughtered by the Pandavas. What grief can be greater, O Sanjaya, than that I am alive after hearing the death of my father! Surely my heart must be harder than iron as it does not break into a hundred pieces at hearing the news of my father's death. Let me

निहतेनाजो भीष्मेण जयमिच्छता । चेटित कुर्वसिहेन तन्मे कथय सुव्रत ॥ ५ ॥
 पुनः पुनर्नमृष्यामि हतं देवव्रतं रणे । नहतो जामदग्नयेन दिव्येस्त्रैरयं पुरा ॥ ६ ॥
 स हतो ग्रीपयेथेन पाञ्चाल्येन शिखण्डिना । सञ्जय उवाच । सायाहने निहतो भूमौ
 धार्तराष्ट्रान् विपादयन् ॥ ७ ॥ पञ्चालानां द्रवौ हर्षं भीष्मः कुरुपितामहः । स
 शोते शरतल्पस्थो मेदिनीमस्पृशंस्तदा ॥ ८ ॥ भीष्मे रथात् प्रपतिते प्रच्युते धरणी-
 सले । हाहेति मुमुक्षुः शब्दो भूतानां सम पद्यत ॥ ९ ॥ सीमावृक्षे निपतते कुरूणां समि-
 तिञ्जये । सेनयो रमयो राजन् क्षत्रियान् भयमाविशत् ॥ १० ॥ भीष्मं शान्तनयं दृष्ट्वा
 विशीर्णकवचध्वजम् । कुरवः पर्यवसन्त पाण्डवाश्च विशाम्पते ॥ ११ ॥ यं तमः संवृ-
 त्तमभूवासीद्भानुर्गतप्रभः । ररासपृथिवी चैव भीष्मे शान्तवे हते ॥ १२ ॥ अयं ब्रह्मविदां

धारी संजय यहाँ युद्धभूमि में विजयाभिलाषी कौरवोत्तम आसन्न मृत्यु भीष्मजी
 ने जो काम किया वह मुझ से कहे । ५ । मैं युद्ध में मृतक देवव्रत भीष्मको
 वारम्बार स्मरण करके अर्धैर्य होता हूँ कि जो भीष्म पूर्वं समय में परशुरामजी
 के भी दिव्य अस्त्रों से नहीं मारागया वह द्रुपद के पुत्र पांचाल देशी शिखण्डी
 के हाथ से मारागया । ६ । संजय बोले कि सायंकाल के समय घृतराष्ट्र के
 पुत्रों के व्याकुल करनेवाले पांचाल देशियों को कौरवों के पितामह भीष्म जी ने
 आनन्द दिया, और वाणशय्यापर नियत पृथ्वी को बिना स्पर्श किये शयन
 करनेवाले हुए रथसे भीष्मके गिरने और पृथ्वीतल से ऊपर पड़ने पर जीवोंका
 हाय हाय शब्द अत्यन्ततासे हुआ कौरवों के युद्ध की सीमाके वृक्षरूप महाविजयी
 भीष्मके गिरने पर । ७ । दोनों सेनाओं के क्षत्रियों में महाभय उत्पन्न हुआ हे राजा शंतनु
 के पुत्र भीष्मको दृष्टा कवच और ध्वजा से रहित देखकर चारों ओरसे कौरव और पांडव
 वर्तमान हुए आकाश में अंबेरी छागई सूर्यमें अप्रकाशता आगई । ११ । और पृथ्वी
 ऐसे शब्दों से शब्दायमान हुई कि यह ब्रह्मज्ञानियों में वा ब्रह्मके जानने वालों में

know, good Sanjaya, all that Bhishm the best of Kauravas desirous of
 victory and fated to die did in the field of battle. Rememoring Deva-
 brat Bhishma's death in the field of battle, I become impatient again
 and again to think that he who was not killed by the divine weapons
 of Parashuram, is now destroyed by Shikhandi of Panchal the son of
 Drupad."6. "By the approach of evening," said Sanjaya, "Bhishm
 the grandfather pleased the Panchals to the great grief of the
 Kauravas. Lying on the bed of arrows without touching the ground,
 Bhishm fallen from his chariot caused great grief to all the people.
 At the fall of Bhishm the great conquerer and boundary tree of the
 Kaurav war, great fear was caused among the warriors of both the
 armies. Seeing Bhishm with the armour and banner broken the
 Kauravas and the Pandavas gathered on all sides; the sky became
 dark and the sun's light dimmed. 11. The earth was filled with the

श्रेष्ठो ह्ययं ब्रह्म विद्वान्धरः । इत्यभाषन्त भूतानि शयान पुरपर्यभ्रम ॥ १३ ॥ अयं पितर
माज्ञाय कामार्त्तं शान्तनुं पुरा । ऊर्ध्वरेतसमात्मानं चकार पृथपर्यभ्रम ॥ १४ ॥ इति स्म
शरतल्पस्थं भरतानां महत्तमम् । ऋषयस्त्वभ्यभाषन्त संहिताः सिद्धचारणैः ॥ १५ ॥
हते शान्तनवे भीष्मे भरतानां पितामहे । न किञ्चित् प्रत्यपद्यन्त पुत्रास्तथ हि मारिष्य
॥ १६ ॥ विषण्णवदनाश्चासन् हतश्रीकाश्च भारत । अतिष्ठन् व्रीडिताश्चैव हिया युक्ता
शधोमुखाः ॥ १७ ॥ पाण्डवाश्च जय लब्ध्वा संप्रामशिरसि स्थिताः । सर्वे दम्भुमहा
शंखान् हेमजालपरिष्कृतात् ॥ १८ ॥ हर्षोत्तर्ग्यसहस्रेषु वाद्यमानेषु चानघ । अपश्याम
महाराज भीमसेनं महाबलम् ॥ १९ ॥ चिक्रीडयान् फान्तेय हर्षेण महतायुतम् । निहत्य
तरसा शत्रुं महाबलसमन्वितम् ॥ २० ॥ सम्भोदथापि तमल वुरुणामभवत्ततः । कर्ण
दुष्योन्धनौ चापि निःश्वसेतां मुहुर्मुहु ॥ २१ ॥ तथा निगतितं भीष्मे कौरवार्णां पिता

श्रेष्ठ है । १२ । जीवों ने उस सोतेहुए पुरुषोत्तम के विषय में यह वचन कहा
कि पूर्व समय में इसी श्रेष्ठ पुरुषने अपने पिता शान्तनु को कामाग्नि से पीड़ित
जानकर अपने को ब्रह्मचारी किया और चारणां समेत ऋषियों ने उन बाण
शय्य पर नियत कौरवों के पितामह भीष्मजी के आसन्न मृत्युहोने पर यह
वचन कहा । १५ । कि आपके पुत्रों ने कुछ करने योग्य कर्मको नहीं
जाना हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उनशोभा में रहित विन्न स्वरूप लज्जा युक्त इसी से
भर युद्ध में मृत्यु पाण्डवों ने विजय को पाकर । १७ । सुवर्ण जालों से अलंकृत
बड़े बड़े शंखा को बजाया हे निष्पाप बड़े आनन्द के हजारों वाजों के
बजने पर हमने महाबली कुन्तो के पुत्र भीमसेन को बड़ी प्रसन्नता युक्त क्रोड़ा
करता हुआ देखा । १९ । बड़े बली पांडव शत्रुका अपने वंग से मारकर
महा प्रसन्न हुए तब कौरवों में महा काठिन घोड़े उत्पन्न हुआ । २० । इसीपाकर
भीष्म जी के मरने पर कर्ण और दुष्योन्धन ने भी वारम्बार डवात लिये । २१ ।

sounds of 'He was the best of those who know Brahm' People remarked about that best of men lying there—“This is he who in former times Knowing his father Shantanu to be burning in the fire of lust, observed a vow of perpetual celibacy Seeing the grandfather of the Kauravas lying on the bed of arrows from head to foot and ready to die, the rishis said —15. “The sons of Dhritrashtra did not act wisely.” Splendourless and ashamed full of enmity and engaged in battle, the Pandavas having got victory blew their conchs decked with the network of gold At the sound of thousands of the musical instruments we saw mighty Bhimsen, the son of Kunti, beating time in his glee. The valliant Pandavas having killed the enemy by their prowess, were choorful in spirit and the Kauravas were much chagrined. 30. At the fall of Bhishm Duryodhan and Karen heaved sighs of distress All the people wept for grief and there was confusion

महे । दाहाभूतमभूत् सर्वे निर्मर्यादमवर्त्तत ॥ २२ ॥ दृष्ट्वाच पतितं भीष्मं पुत्रो दुःशासनस्तथ । उत्तमं जघमास्थाय द्रोणानीकमुपाद्रुषत् ॥ २३ ॥ भ्रात्रा प्रस्थापितो धीरः स्वेमानीकेन दशितः । प्रययौ पुरुषव्याघ्रः स्वसैन्यं स विपादयत् ॥ २४ ॥ तमायात्तमभिप्रेक्ष्य कुरवः पर्यवारयन् । दुःशासनं महाराज किमयं वक्ष्यतीति च ॥ २५ ॥ ततो द्रोणाय निहतं भीष्ममाचष्ट कौरवः । द्रोणस्तन्नामिषं ध्रुवा मुमोह भरतर्षभ ॥ २६ ॥ सत्सामुपलभ्याशु मारुद्वाजः प्रतापघान् । निवायामास तदा स्वान्यनीकानि मरिष्य ॥ २७ ॥ विनिवृत्तान् कुरुन् दृष्ट्वा पाण्डव्यापि स्वसैनिकान् । वृत्तैः शीघ्राश्वसंयुक्तैः समन्तात् पर्यवारयन् ॥ २८ ॥ निवृत्तेषु च सैन्येषु पारं, पर्येण सर्वशः । निर्मुक्तफवचाः सर्वे भीष्ममीयुर्नराधिपाः ॥ २९ ॥ व्युपरस्य ततोऽयुद्धाघोधा ततसहस्रशः उपतस्युर्महात्मनं

सब हाय हाय रूप हुआ और अमर्यादा वर्त्तमान हुई आपका पुत्र दुःशासन भीष्मजी को गिरा हुआ देखकर । २२ । वड़ी तीव्रता में नियत होकर द्रोणाचार्य की सेना में गया वह भाई का भेजा हुआ अपनी सेना से अलंकृत धीर दुःशासन अपनी सेनाको विह्वल करता हुआ गया हे राजा कौरवों ने उस भाये हुए दुःशासन को देखकर चारोंओरसे इस निमित्त घेर लिया कि दीसिये यह क्या कहता है । २४ । इसके पीछे दुःशासन ने भीष्मजी के मरनेका वृत्तान्त द्रोणाचार्य जी से कहा । २५ । तब द्रोणाचार्य उसके अमिष वचनको सुन कर शोक से अचेतहोगये फिर उसप्रतापवान् द्रोणाचार्य ने सचेतहोकर । २६ । अपनी सेनाओं को और कौरवों ने भी लौटेहुए अपने कौरवी लोगों को देखकर अपनी मवल सेनाको निषेधकरदिया । २७ । और शीघ्रगामी घोड़ों पर सवार अपने दूर्तों को इधर उधर भेजकर सब को निषेध करवादिया । २८ । फिर सबराजालोग अपने २ फवचोंको उतार २ कर भीष्मजी के पासगये तदनन्तर लाखों शूरीर युद्ध को विभ्राम करके उसमहात्मा भीष्मके पास आकर ऐसे नियतहुए जैसे कि देवता लोग ब्रह्मानी के पास इकट्ठे होते हैं हे राजा इसके पीछे सब पांडव लोग

throughout. At the sight of Bhishma's fall your son Dushasana hastened to the army of Dronacharya. Sent by his brother with his army, brave Dushasan went on upsetting the minds of the soldiers. At his arrival the Kauravas surrounded him on all sides to hear what he had to say to them. He related to Dronacharya the account of Bhishma's death, and hearing that unwelcome news Dronacharya swooned. On regaining consciousness he ordered his soldiers to desist from fighting and other Kauravas followed his example. They sent swift messengers all round the army to stop fighting. Then all the warriors put off their armour and went to Bhishma, and millions of warriors, leaving the field of battle, collected all round him like gods round Brahma. Then the Pandavas and the Kauravas, seeing

प्रजापतिमिधामराः ॥३०॥ ते तु भीष्मं समासाद्य शयानं भरतर्षभम् । अग्निवाचाय तिष्ठ
 न्त पाण्डवाः कुरुभिः सह ॥ ३१ ॥ अथ पाण्डून् कुंभैश्च प्रणिपत्याप्रतः स्थितान् ।
 भीष्मभापत धर्मात्मा भीष्मः शाश्वतनवंस्तदा ॥३२॥ स्वागतं वोमहाभागः स्वागतंघोमहा
 रथाः । तुष्यामि दर्शनाच्चार्हं युष्माकममरोपमाः ॥ ३३ ॥ अग्निमन्त्रयाय तानेवं शिर
 सालम्बताम्रधीत् । शिरो मे लम्बतेत्ययं मुपधानं प्रदीपताम् ॥ ३४ ॥ ततो नृपा सजा
 जहस्तनूनि च मृदूनिच । उपधानानि मुख्यानि नैऋत्तानि गितामहः ॥३५ ॥ अथाग्रधी
 भरभ्याम्रः प्रहसन्निव तादनुपात् । नैतानिषीदशप्यासु युक्तरूपाणि पार्थिवाः ॥ ३६ ॥
 ततो भीक्ष्य नरश्रेष्ठ गन्धमापत पाण्डवम् । धनञ्जयदीपघातुं सर्वलोकमहारथम् ३०॥
 धनञ्जय महाबाहो शिरो मे ताव लम्बते । क्षीयतामुपधानेनै यशुकमिहमन्यसे ॥३८॥
 इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दशमदिवसावहारे
 एकविंशत्यधिश्चतोऽध्यायः ॥ २१ ॥

भी कौरवों समेत उस शयनकरते हुए भीष्मजी को पाकर । ३० । दोनों हाथोंसे
 दण्डवत्करके नियतहुए इसके पीछे शतनुकेपुत्र भीष्मजी सबकी धयायोग्य शिष्टाचारी
 करके अपनेसम्मुख बैठेहुए पांडव और कौरवोंसे बोले हे महाभागो तुम्हारा आगमन
 सफल हो और हेमहारथी लोगो तुम्हारा आगमन अग्रहो । ३१ । हे देवताओंके
 समान पुरुष लोगो मैं तुम्हारे देखनेसे बड़ा प्रसन्न होताहूँ इन सबलोगों से ऐसा
 कहकर फिर शिरको लटकाये हुए कहने लगे । ३२ । कि मेराशिर अत्यन्त लटकता
 है इससे मुझे तकिया दो यह सुनकर राजाओं ने बड़े उत्तम मृदुस्पर्शवाले तकिये
 लाकर दिये । ३३ । इन तकियों को पितामहने नहींचाहा और हँसकर राजाओं
 से कहा कि । ३४ । हे राजाओ यह तकिये वीरोंकी शय्याओं पर शोभित नहीं
 होते हैं फिरसब लोकके महारथी प्रतापी पांडव अर्जुनको देखकर बोले कि हेमहाबाहु
 अर्जुन मेरा शिर लटकता है तू मुझको उचित तकिये देदे । ३८ ।

him lying there, stationed themselves after saluting him with both hands. Then Bhishma the son of Shantanu, having asked of their welfare, said to the Kauravas and Pandavas seated before them, "You are welcome, great men, may you be happy and prosperous, brave warriors! men like gods, I am much pleased to see you." Having said this he again continued with his head lying low:—"My head is hanging painfully, pray give me a pillow." At this the kings brought him soft pillows; but the grandfather was not satisfied and with a smiling face he said to them, "These pillows are not befitting the warrior." Then looking towards Arjun the world's bravest warrior, he said:—"My head hangs down, brave Arjun, give me a fitting pillow." 37.

सहय उवाच । समारोप्य महच्छाप मभिवाद्य पितामहम् । त्रेत्राभ्यामधुपूर्णाभ्या
 मिदं वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ आह्लापय कथं श्रेष्ठ सर्वशस्त्रधरावर । प्रेष्योहं तवतुर्धय क्रियतां
 किं पितामह ॥ २ ॥ तमग्रवीच्छातनव शिरोमेतात लम्बते । उपधानकुरुश्रेष्ठ फाल्गुनो
 पक्षवृद्धमे ॥ ३ ॥ शरान्स्थानुरूपवै शीघ्रं घोरं प्रयच्छमे । त्वं हि पार्थ समर्थो वै श्रेष्ठ सर्व
 धनुष्मताम् ॥ ४ ॥ क्षत्रधर्मस्य वेत्ता च बुद्धिसत्वगुणाश्रित । फाल्गुनोपितधेत्युक्त्वा च यवसाय
 मरोचयत् ॥ ५ ॥ गृह्यानुमन्त्रां गीवशरात्रसप्रतपर्वणः । अनुमान्य महात्मानं भारतातामहा
 रथम् ॥ ६ ॥ त्रिभिरस्वीह्यैर्महावेगैरन्वगुणाच्छिर शरैः अभिप्रायेतु विदितेधर्मात्मासथ्यसा
 थिता ॥ ७ ॥ अनुपपन्नरतश्रेष्ठो भीष्मो धर्मार्थतत्त्ववित् । उपधानेन दक्षेन प्रत्यनन्दक

अध्याय ॥ १२२ ॥

संजय बोले कि इमवचनको सुननेही अर्जुन बड़े भारी धनुष को हाथमें लेकर
 धनुषातयुक्तही पितामहको दण्डवत्करके यह वचनबोला । १ । हे कौरवोंमें श्रेष्ठ
 सब शस्त्रधारियों के शिरोमणि महादुर्जय पितामह मैं आपका दामहूँ आपमुझ को
 जो आज्ञा दें वही मैं करूँ । २ । भीष्मजीने कहा हे तात कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुनपेरा
 शिरलटकता है तू मुझको तकियादे । ३ । हे वीर बहुतशीघ्र मेरे शयनके योग्य
 तकियादे दे हे अर्जुन तूही समर्थहोगा तूही सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ होगा तूही
 क्षत्रीधर्मका जानने वाला बुद्धिमान सतागुणयुक्त होगा यह सुनकर अर्जुन ने भी
 बहुत श्रेष्ठ कहकर, उपाय और पारिश्रमको अंगीकारकिया । ४ । और गांडीवधनुष
 को हाथमें लेकर गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों को अभिमंत्रितकर भीष्मजीकी प्रतिष्ठाकरके,
 तीक्ष्ण और वेग युक्त तीनबाणों से उनके शिरको सीधाकिया चित्तका भ्रियज्ञात
 होने पर धर्मात्मा और मूलधना के जाननेवाले भरतर्षभ भीष्मजी इम कर्मको देख
 कर अर्जुनपर अस्यन्त प्रमन्नहुये और इमतकिये के देनेसे अर्जुनकी बड़ी मर्शसाकी

CHAPTER CXXII

"As soon as Arjun heard those words," said Sanjaya, "he took up in his hand his large bow with tears in his eyes, and bowing down before him he said, "Best of the Kauravas and prince of warriors, invincible grandfather, I am at your service to do your behest." "My head hangs down, son, best of the Kauravas," replied Bhishm, "give me a pillow. Hasten, O warrior, to give me a pillow suitable for my repose. Thou alone canst give it. Thou art the foremost of archers. Thou knowst the duties of a Kshatriya and art wise and endowed with *satogun*." At this Arjun said 'Very well' and accepted the undertaking 5. Having taken up the Gandiv bow he pronounced aphorisms on his arrows having ludden knots, and with three sharp arrows he respectfully upraised the head of the grandfather. Virtuous Bhishm the best of Bharats was exceedingly pleased with Arjun at thus giving him the object of his desire and eulogised him for giving

नञ्जयम् ॥ ८ ॥ प्राहसर्वाङ्गं नमुद्रीश्व भर्तान् भारतं प्रति । कुन्तीपुत्रं युवां श्रेष्ठं सुहृ
 दां प्रीतिवर्धनम् ॥ ९ ॥ शयनस्यानु रूपं मे पाण्डवोपहितं त्यथा । यथा यथा प्रपद्यथाः
 शयने स्वामहं तया ॥ १० ॥ एवमेव महापाहां धर्मेषु परितिष्ठता । स्वतत्प्यं क्षत्रियेणा
 जी शरत्क्षयगतेनये ॥ ११ ॥ एवमुक्त्वा तु भीमदत्तं सर्वास्तानप्रधीद्वचः । राशश्च राज
 पुत्रांश्च पंडवा तन्निर्दिष्टयताम् ॥ १२ ॥ पश्यच्चमुपधानं मे पाण्डवेनामिसन्धितम् । शि
 द्येहमस्यः शय्यायां यावदावत्तनं रवे ॥ १३ ॥ येन दामां गमिष्यन्ति ते च प्रेक्षन्ति मां
 नृपाः । दिग्धैश्च वणाक्रान्तां यदा गन्ता दिग्गकरः ॥ १४ ॥ नूनं सताश्वयुक्तां रयेनेत्त
 मतेजसा । विमोक्षयेहं तदा प्राणान् सुहृदः सुप्रियानिव ॥ १५ ॥ पत्निः खान्यतामत्र
 ममायसदने नृपाः । उपासिष्ये विषस्वन्त मेवं शरशताचित् । उपारमभ्यं संप्रामाद्
 धैरमुत्सृज्य पार्थिवः ॥ १६ ॥ सञ्जय उवाच । उपातिष्ठन्नथो वैधाः शय्योद्धरणको-

। ८ । और सब भरतवंशियोंके मध्यमें इस श्रेष्ठ मित्रोंकी प्रीतिके बढ़ाने वाले कुन्ती
 के पुत्र अर्जुन से बोले कि । ९ । हे पांडव तुमने शयनके समान मुझको तर्किया
 दिया और जो कदाचित् विपरीत कर्म करते तो मैं अवश्य तुमको शाप देता । १० ।
 हे महाबाहु धर्ममें नियत शरशय्यापर वर्त्तमान क्षत्रीको युद्धभूमि में निश्चय करके
 इसीरिति से शयनकरना योग्य है । ११ । इस रीति के बचन अर्जुन से कह कर
 और पास बैठे हुए राजकुमारों से बोले । १२ । कि पांडवके लगाये हुए मेरे तकिये
 को देखो मैं इसशय्या पर तबतक शयन करूंगा जबतक कि सूर्य दक्षिण मार्ग
 से उत्तर मार्ग में अर्थात् दक्षिणायन से उत्तरायण होजायेंगे । १३ । जो राजा
 उस समय मुझको मिलेगा वह मुझको देखेगा । १४ । जब सूर्य सात घोड़ों के उत्तम
 प्रकाशवान रथपर चढ़कर कुबेर की दशा को जावेगा तब मैं भी अपने सुहृद् इष्ट
 मित्रों समेन प्राणों को त्यागूंगा । १५ । हे राजालोगो यहां मेरे निवासस्थान पर
 तुम खाई को खुदवाओ क्योंकि मैं इसरीति से हजारों बाणों से छिदे हुए शरीरसे
 सूर्य की उपासना करूंगा और तुम सब शत्रुताको त्यागकर युद्ध मतकरो । १६ ।

him the pillow. In the midst of all the descendants of Bharats, he thus addressed Arjun the joy of his friends:— " You have given me. O Pandav, a pillow to mach my bod. I should have cursed you, if you had acted otherwise. 10. A kshatrya, firm on duty and lying on the bed of arrows in the battle field, should certainly repose like this." Having said such words to Arjun, he turned to the princes sitting by, saying, " Look at the pillow which the Pandav has furnished for me. I shall repose on this bed as long as the sun would take to change his course from South to North; the kings who come to me then, will see me. When the sun on his brilliant chariot drawn by seven fleet horses will turn in the direction of Kuver, I shall have my body with my friends. Dig a ditch round me warriors; for, with my body pierced by thousands of arrows, I shall adore the sun. I

विदा । सर्वोपकरणैर्धुका । कुशलै साधुशिक्षिता ॥ १७ ॥ तान् दृष्ट्वा जाह्नवीपुत्र
 प्रोवाच तनय तत्र । धनं दत्त्वा विद्वान्पुत्रान् पूजयित्वा चिकित्सका ॥ १८ ॥ एवमते
 मयेदारि वैधै कार्थमिहास्तिकं । क्षत्रधर्मे प्रशस्ताहि प्राप्तोस्मि परमागतम् ॥ १९ ॥
 नैव धर्मो महीपाला शरत्पगतस्य मे । एभिरेव शैश्चाह वृग्धव्योस्मि नराधिपा
 ॥ २० ॥ तच्छ्रुत्वा पचन तस्य पुत्रो दुर्योधनस्तथ । वैद्यान् विसर्जयामास पूजयित्वा
 यथाहंत ॥ २१ ॥ ततस्ते विस्मय जग्मुर्नानाजनपदेश्वरा । स्थितिं धर्मे परादृष्ट्वा
 भीष्मस्यामिततेजस ॥ २२ ॥ उपधानवतोदृत्वा पितुस्तेमन्त्रजेश्वरा । सहितापाहवा
 सर्वे क्रुवन्महाराथा ॥ २३ ॥ उपगम्यमहात्मान शयान शयने शुभे । तेभिवाचततो
 भीष्म वृत्त्याच त्रिप्रदक्षिणम् ॥ २४ ॥ विधाय रक्षाभीष्मस्य सर्वे एव समन्तत । धीरा
 स्वशिचिराण्येव ध्यायन्त परमातुरा ॥ २५ ॥ निवेशयाशुपुगाच्छ्रुत् सायाह्ने रुधिरौ

इसके अनन्तर हे राजा वहाँ सय भूषण और चिकित्सा के यन्त्रों से अलंकृत
 पीड़ितों से स्तूयमान सर्ववैद्य लोग आनकर वर्त्तमानहुए । १७ । गांगेय भीष्मजी
 उनको देखकर आपके पुत्र से बोले कि इन वैद्योंको सत्कार करके दक्षिणापूर्वक
 तुम विदाकरदो । १८ । अब यहाँ मेरी यह दशाहोने पर मुझको वैद्योंसे क्या प्रयो-
 जन है क्योंकि मैं क्षत्री धर्म में श्रेष्ठ होकर परम गतिको प्राप्त हूँ । १९ । हे राजाभो
 मुझ बाणशय्यापर वर्त्तमानकापही धर्म है कि मैं इन्हीं बाणोंसेमते जलाया जाऊँ । २० ।
 उन के इस वचनको सुनकर आपके पुत्र दुर्योधनने अपनी योग्यता के अनुसार
 उन वैद्योंको पारतोपिक देकर विदाक्रिया । २१ । फिर नानादेश के राजाओंने
 बड़े तेजस्वीभीष्मजीको अपने धर्ममें दृढ़ देखकर बड़ा आश्चर्य किया । २२ । इसकेपीछे
 आपके पिताको ताकिया देकर वहसय महारथी राजा वा पांडव और कौरव एक
 साथही शुभशय्यापर सोतेहुए मरात्मा भीष्मकेपास जाकर दंडवत् पूर्वक तीनपरि-
 क्रमाकर । २४ । सायंकाल के समय सबवीर चारों ओर से ध्यानकरते बड़े डाली

advise you to give up enmity and bloodshed." In the meantime
 others came to the place, all the physicians, praised by the wise, with
 medicines and surgical instruments Bhishm the son of Ganga, casting
 his eye on them, said to your son, "Dismiss these physicians with
 donations and respect. What can the physicians avail me in this
 state of health? I have got all that a Kshatrya, firm on his duty,
 should desire. It is my duty and do not, that, lying on the bed of
 arrows as I am, I should be burnt along with these arrows." 20 At
 this, your son Duryodnan dismissed the physicians with donations
 befitting his rank. The princes of different countries, finding Bhishm
 firm on his duty, were much amazed. Then having furnished a pillow
 for your father, all the kings with the Kauravas and the Pandavas
 bowed to Bhishm who was lying on the bed of arrows and having
 turned round him three times retired to their respective tents with

द्विताः । निविष्टान्पांडवांधियप्रीयमाणान्महारथान् ॥ २६ ॥ भीष्मस्यपतने हृष्टानुपगम्यमहा
 यदः । उवाच माधवः काले धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ २७ ॥ दिष्टयाजयसि कौरव्य दिष्टयामीभ्यो
 निपप्रतितः । अयध्वो मानुषैरेव सत्यसन्धोमहारथः ॥ २८ ॥ अथवा देवतैः सार्धं सर्वदा
 स्वस्व पारगः । त्वान्तु चचुर्हण प्राण्यद्गंधो घोरेण स्रुवा ॥ २९ ॥ पशुमुष्णे धर्मराजः
 प्रत्युवाच जनाईमप । तव प्रसादाद्दिजयः क्रोधात्तव पराजयः ॥ ३० ॥ रवीहिनः शरणं
 कृष्ण भणानाममयङ्कर । अनाध्वर्यो जयस्तेषां देवात्वमसि केशव ॥ ३१ ॥ रक्षितासमरे
 नित्यं नित्यञ्चापि हिते रतः । सर्वथात्वां समासाद्य नाध्वर्यमिति मे मतिः ॥ ३२ ॥ पशु
 मुक्तः प्रत्युवाच स्तनयमानो जनार्दन । तयैवैतद्युक्तरूपं वचनं पार्थिवोत्तम ॥ ३३ ॥

इति महा० भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वाविंशत्याधिकशतोऽध्यायः ॥ १२२ ॥

रुधिर से भरेहुए अपने २ डेरोंमें विश्राम करनेके लिये गये और महायज्ञी माधवजी
 उस मसन्न चिच वेहेहुए महारथी भीष्मजी के गिरनेपर मसन्न हृदय पांडवोंके पास
 जाकर समय पाकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर से कहनेलगे । २७ । हे कौरव तुममारव्य से
 विजय पातेहो और यह मनुष्यों से भवध्य सत्यमतिज्ञ महारथी भीष्म मारव्य से
 गिरायागया । २८ । अथवा देवताओं समेत सयशस्त्रों में पूर्ण तुम्हनेत्र से मारनेवाले
 को पाकर घोर नेत्र से भस्मशो गया । २९ । यह सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने श्री
 कृष्णजी को उचर दिया कि आपके मसन्नहोनेसे विजय है औरआपकेही अमसन्न
 होने से पराजय है । ३० । हे पशुमयहारी श्रीकृष्णजी आपही ह्याररेरक्षाके स्थानहो
 और उन लोगोंको विजयकापाना कुछ भाग्यचर्य नहीं है जिनके हिनकरने में सदैव
 मटत चिच और युद्धमें सदैव रक्षकहो आपको सबमकार से मात होकर विजयका
 होना कुछ भाग्यचर्य नहीं है यहमेरा मत है । ३२ । इस रीतिके युधिष्ठिर के वचनों
 को सुनकर श्रीकृष्णजी बड़ी मन्दमुमकान समेत बोले कि हेराजाओं में श्रेष्ठ युधि-
 ष्ठिर यहकहना तुम्ही को योग्य है । ३३ ॥

heavy hearts. Mighty Madhav went to the Pandavas sitting much
 pleased at the fall of Bhishm, and in his leisure thus addressed
 Yudhishtir:- "You have got victory by your good luck and it
 was by your good fortune that invincible Bhishm of true vows was
 slain. We may say that he was burnt by thy wrathful eyes which
 can slay all the gods armed with weapons" To these words of
 Shri Krishn, Yudhishtir made the following reply:- "Victory goes
 hand in hand with your pleasure and defeat goes along with your
 displeasure, 30. O dispeller of the fear of your devotees, Shree
 Krishn, you are our only refuge. It is not difficult for them to gain
 victory who alway have you for their well-wisher and protector in
 battle. I think it is not strange for us to gain victory when you are
 on our side." On hearing these words of Yudhishtir, Shree Krishn
 smiled very slowly and said, "O best of kings; Yudhishtir, such
 words can come from thee alone" 33.

सञ्जय उवाच ॥ द्युष्टायान्तु महाराज सर्वेभ्यो सर्वेपार्थिवाः । पाण्डवा
 धार्तराष्ट्रश्च उपातिष्ठन् पितामहम् ॥ १ ॥ तं वीरशयने वीरं शयानं कुरुसत्तमम् । अग्नि
 पाद्योपतस्थुर्ध्वं क्षत्रियाः क्षत्रियर्षभम् ॥ २ ॥ कन्वाक्षन्वनचूर्णैश्च लाजैर्माल्लैश्च सर्वशः ।
 अघाकिरञ्जान्तनवं तत्र गत्वा शहस्रशः ॥ ३ ॥ स्त्रियोवृद्धास्तथा बालाः प्रेक्षकाश्च पृथ
 ग्जनाः । समभ्ययुःशान्तनवं भूतानीव तमोनुदम् । ४ ॥ नृपाणि शतसंख्यानि तथैव तटनसं
 काः । शिल्पिनश्च तथा जग्मुः कुरुवृद्धं पितामहम् ॥ ५ ॥ उपारम्य च युद्धेभ्यः सन्नाहान्
 विप्रमुच्यते । आयुधानि च निक्षिप्य सहितः कुरुपाण्डवः ॥ ६ ॥ अन्वासन्तदुराचर्ष
 देवव्रतमरिन्दमम् । अन्योन्यं प्रीतिमन्तस्ते यथापूर्वं यथावयः ॥ ७ ॥ सापार्थिवशतकीर्णा

अध्याय । १२३ ।

संजय बोले हे महाराज राजिके व्यतीत होने पर सवराजा वा पाण्डव और
 धृतराष्ट्र के पुत्र पितामह के पास वर्तमान हुए । १ । तृतीयलोग उन कौरवोत्तम
 क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ वीरशय्या पर सोतेहुए वीर भीष्मजी को दरदवत करके उनके पास
 नियत हुए । २ । वहाँपर हजारों कन्वाओं ने जाकर चन्दन चूराखील और संव
 प्रकारकी मालाओंसे भीष्मजी का पूजन किया । ३ । वृद्धास्त्री वा बाला स्त्री और
 देखने वाले अन्य सावधान लोगभी उनभीष्मजी के समीप ऐसे गये जैसे कि सूर्य
 की उपासनाको मनुष्य और स्त्री जाते हैं । ४ । तालस्वर समेत ईश्वर का
 वर्णनकरने वाले वाजिगाजे समेत नाचनेवाले नट नागर और कारीगर लोग भी
 वृद्ध पितामह भीष्मजी के पासगये । ५ । वह कौरव पांडवपुद्गों से निट्टहो घरीर
 के कपचादिकों को उतार सब शस्त्रोंको त्याग एकसाथ मिले हुए । ६ । उनवृज्जप
 शत्रुंजप देववन भीष्मजी के पामआकर बैठगये और सबलोगपूर्वके समान प्रस्था
 के क्रमसे परस्पर में प्रीतिमान थे, वह सैकड़ों राजाओं से व्याप्त भीष्मजी से

CHAPTER CXXIII

Sanjaya continued.—“At the close of the night, all the kings
 with the Pandavas and the sons of Dhritrashtra came to the grand-
 father and sat by him after bowing to that best of the Kauravas and
 kshatriyas lying on the warlike bed. Thousands of girls came there
 and worshipped him with sandal powder, fried paddy and garlands.
 Old and young women and wise men came to Bhishma as if to
 worship the sun. Singers, players, dancers, acrobats, artisans and
 others too, came to see the old grandfather. The Kauravas and the
 Pandavas having given up fighting and put off their armour and
 their arms, came together and sat by the invincible destroyer of
 enemies, Devabrata Bhishma. As in the days of old they behaved
 affectionately in the order of their ages. Consisting of thousands of
 kings, the court of the descendants of Bharat, glorious by the
 presence of Bhishma, looked beautiful like the sun's orb in the sky.”

समित्तीर्ष्यशोभिता । शुशुभे मारतीदीप्ता द्वितीयादित्यमण्डलम् ॥ ८ ॥ धियमो च
 नृपाणां सा गङ्गामुतमुपासताम् । वृक्षानामिव द्वेषेण पितामहमुपासताम् ॥ ९ ॥ भीष्म
 स्तुवेदनां धैर्याग्निगृह्य भरतपत्न । अमिततः शरैश्चैव निःश्वसन्पुरगो यथा ॥ १० ॥
 शरमित्तकयोपि शस्त्रसन्तापमूर्च्छितः । पानीयमित्त संप्रेष्य राजस्तान् प्रत्यभापत
 ॥ ११ ॥ तत्रस्ते क्षत्रिया राजन् नृपाजहुःस्ममन्ततः । मक्ष्यान्नुच्चावचान् राजन् वारि
 कुम्भांश्च शीतलान् ॥ १२ ॥ उपानेतन्नुपानीयं हृष्ट्या शान्तनयोप्रवृत् । नाद्यतीतामया
 शक्या भोगाः केचनप्रानुयाः ॥ १३ ॥ अथक्रान्तो मनुष्येभ्यः शरशय्यां गतोऽहम् । प्रती
 क्षमाणस्तिष्ठामि निगृह्ये शशि सूर्ययोः ॥ १४ ॥ एषमुक्त्वा शान्तनयो निन्दन् वाफ्येन
 पाधिवान् । अर्जुनं द्रष्टुमिच्छामीत्यभ्यभाषत भारत ॥ १५ ॥ अथोपेत्य महापादुरभिषाद्य
 पितामहम् । अतिव्रत प्राञ्जलिः प्रव किं करोमीति चाप्रवृत् ॥ १६ ॥ तदृष्ट्वा पाण्डवं

शोभायमान भरतवंशियों की सभा ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि आकाश में सूर्य
 मंडल शोभित होता है । ८ । गंगाजी के पुत्र की उपासना करनेवाले राजाओंकी यह
 सभा ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी की उपासना करने
 वाली देवसभा होती है । ९ । भरतवंशियों में अश्रु बाणों से पीड़ामान सर्प के समान
 आस लेने बाणों से पीड़ित शरीर और शल्लोकें प्रहार से मूर्च्छितान् भीष्मजी उन
 राजाओंको देखकर धैर्य से पीड़ाको सहकर यह वचन बोले कि हमारे लिये जल
 को लाओ । ११ । इसके पीछे उनक्षत्रियों ने चारों ओर से छोटे बड़े भोजन पात्र
 और शीतलजलके घटादिक पात्रों को भँगाया । १२ । भीष्मजी उसप्रकार से
 ल्याये हुए जलको देखकर बोले कि हे तान अरकोई मानुषी भोग मुक्त से
 भोगानर्ही जाता । १३ । मैं मनुष्यों से पृथक् वारुणस्थायपर वर्त्तमान चन्द्रमा और
 सूर्य के लौटने की बात देखना हुआ नियतहूँ । १४ । हे धृतराष्ट्र भीष्मजी इस
 प्रकार से कहकर अपने मुखमें राजाओं की निन्दा करते हुए फिर बोले कि मैं अर्जुन
 को देखा चाहता हूँ । १५ । इनके पीछे महाबाहु अर्जुन पितामहके समीप
 दण्डवत् पूर्वक आकर बड़ीनम्रतामें झुका हुआ नियत हुआ और हाथ जोड़ कर

The assembly of kings adoring Bhishm the son of Ganga, looked
 glorious like the assembly of gods adoring Brahma. Best of the
 descendants of Bharat, wounded by arrows, sighing like a serpent on
 account of the wounds of arrows and insensible on account of the
 wounds of other weapons, Bhishm, looking at the assemblage of kings
 and bearing the pangs with patience, said, "Fetch me water to
 drink." 11. Those kshatriyas brought large and small vessels full of
 cold water; but Bhishm casting his eye on them, said, "I can no
 longer enjoy human things. I am lying on the bed of arrows
 separate from men and waiting for the change of the Sun's course."
 Having said this, Bhishm rebuked those kings, saying, "I wish to
 see Arjun." At this brave Arjun approached the grandfather bow-

राजभ्रमिवाद्याप्रतस्थितम् । अभ्यभाषत धर्मात्मा भीष्मजीतोघनञ्जयम् ॥ १७ ॥
 दह्यनीव शरीरं मे संबृतस्य तवेपुभिः । मर्त्याणि परियुयन्ते सुखञ्च परिशुष्यति ॥ १८ ॥
 वेदमार्त्तशरीरस्य प्रयच्छापो ममाञ्जुन । एवंहि शक्तो महेष्वास दातुमागो यथाधिधि
 ॥ १९ ॥ अर्जुनस्तु तथेत्युक्त्वा रथमारुह्य धीर्यवान् । धर्मिष्ठं पलवत् कृत्वा गांडीवं
 व्याक्षिपद्धनुः ॥ २० ॥ तस्य ज्यातलनिर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशनेः । धिध्रेसुः सर्वभूतानि
 सर्वं ध्रुत्वाच पार्षियाः ॥ २१ ॥ ततः प्रदक्षिणं कृत्वा रथेन रथिनाथरः । शयाने भरत
 श्रेष्ठं सर्वशस्त्रभृतांवरम् ॥ २२ ॥ सन्ध्याय च शरं दीप्तमभिमन्व्य स पाण्डवः । पाञ्ज्या
 ख्येण संयोग्य सर्वलोकस्थ पश्यतः ॥ २३ ॥ अविध्यत् पृथिवीं पार्थः पाद्वै भीष्मस्य

बोला कि मुझे क्या आज्ञाहोती है । १६ । फिर धर्मात्मा भीष्मजी बहुत प्रसन्न होके
 उसविनीत हाथजोड़े हुए वर्तमान संसारके धनादि संपत्तियों के विजय करने वाले
 अर्जुन को अपने सम्मुख सड़ा हुआ देखकर बोले । १७ । कि तेरे बाणोंसे भरा
 हुआ मेराशरीर जलरहा है और मर्मस्थलों में बड़ीपीड़ा है मुख सूखा जाता है । १८
 हे अर्जुन मुझ दुःख से पीड़ावान् को बलपिच्छा दे दे बड़े धनुषधारी तूही बुद्धि के
 अनुसार जल देने को समर्थ है । १९ । इतनी बातके सुनतेही उस पराक्रमी अर्जुन
 ने बहुत अच्छा ऐसा कहकर रथपर सवारहो बड़े पराक्रमी गांडीवधनुष को प्रत्यंचा
 युक्त करके बलसे खेंचा । २० । उसकी प्रत्यंचा का "और धनुषकी टंकारका शब्द
 इन्द्रवज्रके समान था उस शब्दको सुनकर सब जीवधारी और राजालोग भयभीत
 होगये । २१ । तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने रथके द्वारा उसभरतर्षभ महाशस्त्र
 धारी सोतेहुए भीष्मजी की परिक्रमा करके धनुष पर प्रकाशवान् अभिमंत्रित बाण
 को चढ़ाकर मेघ अस्त्र से संयुक्त करके सब लोगों के देखते हुए । २३ । भीष्मजी
 के दक्षिण ओर में पृथ्वी को वेधा उसके घेघतेही पृथ्वी में से निर्मल महा शुभ

ing and stood there with downcast head. Then with joined palms
 he said, "What is your wish?" 16. Virtuous Bhishmu, much pleased
 with the humble attitude of Arjun the conquer of the world and
 seeing him standing in his presence, said, "Full of thy arrows my
 body is burning and I feel much pain in the vital parts. My mouth
 is parched. Give me, distressed with pain as I am, water to drink.
 Thou alone, O great archer, canst supply me water by your
 wisdom!" At this Arjun said, "Very well" and mounting his
 chariot, he put string to the Gandiv bow of great strength and pulled
 it with great force. 20. The sound of his bow and bowstring was
 like that of the vajra of Indra causing fear to the kings as well as
 the other living beings. Then Arjun the best of charioteers having
 gone round the sleeping warrior Bhishmu, the best of Bharats, put to
 his bow bright arrow and having inspired it with aphorism and united
 it with the weapon producing water, pierced with it the ground to

दक्षिणे । उत्पपात ततो धारा धारिणो विमलाशुभा ॥ २४ ॥ शीतस्यामृतकल्पस्य
 दिव्यमन्धरसस्य च । अतर्पयत्ततः पार्थः शीतया जलधारया ॥ २५ ॥ भीष्मं कुरूणा
 मृतमं दिव्यकर्म पराक्रमम् । कर्मणा तेन पार्थस्य शक्रस्यंथ विकुर्यतः ॥ २६ ॥ विस्मयं
 परमं जग्मुस्तत्ते धनुषाधिपाः । तत् कर्म प्रेक्ष्य भीम सो रतिमानुपविक्रमम् ॥ २७ ॥
 संप्रावेणस कुरवो गावः शीतार्दिता इव । विस्मयाच्चोत्तरीयानि व्याधिष्वन् सर्वतो
 नृपाः ॥ २८ ॥ शंखदुन्दुभिर्निर्घोषस्तुमुलः स्रवतोमघत् । एत शान्तनयश्चापि राजन्
 वीभक्तमुनत्र शीत् ॥ २९ ॥ सर्वपाधिष्वीराणां सन्निधौ पञ्चयन्निव । नैतच्छिष्यं महा
 वाहो स्वयि कौरवनन्दन ॥ ३० ॥ फथितो नारदेनासि पूर्वविरमितघने । वामुदेवमहाय
 स्वैवमहत् कर्म कटिपसि । ३१ ॥ यमोत्सहनि देवेन्द्रः सह देवैरपिभ्रमम् । विदुस्त्वां
 निघने पार्थ सर्वज्ञस्य तद्विद् ॥ ३२ ॥ धनुर्वेदागामे रुस्व पृथिःपांप्रवरो नृप ॥ ३३ ॥

पवित्र जलकी धारा ऊपरकी ओर फुवारे के समान निकली । २४ । वह जल
 महाशीतल अमृत के समान दिव्य मुगन्धित और रससे भरा हुआ था उसशीतल
 जलकी धारा से अर्जुन ने कौरवों में भेष्ट दिव्य कर्म और बलबाले भीष्मजी को
 तृप्तकरा दिया इस के पीछे इन्द्रके समान अर्जुन के उत्तकर्म से । २६ । उनमत्र
 राजाओंको बड़ा आश्चर्य्य हुआ अर्जुन के इम अमानुषी कर्म और बलको देखकर
 कौरव लोग ऐसे महाकंपायमान हुए जैसे कि शीतसे कंपायमान औंयें होती हैं राजा
 लोगों ने बड़े आश्चर्य्य से सब ओरको अपने २ दुपट्टोंको हिलाया । २८ । और
 सब ओरसे शंख दुन्दुभियों के कठिनशब्द हुये हे राजा उस जलसे तृप्त हुए भीष्म
 जी सब शूरवीर राजाओं के सम्मुख बड़ी प्रशंसा करके अर्जुन से यह वचन बोले
 कि हे महाबाहु हे कौरवनन्दन यह तुझमें आश्चर्य्य कीं बातनहीं है । ३० । हे बड़े
 तेजस्वी तुमको नारदजीने प्राचीन ऋषि वर्णन किया है तुम वामुदेवजीके संगदोकर
 बड़े २ कर्षे करोगे । ३१ । जिस कर्म के करनेकी देवताओं समेत इन्द्रभी असमर्थ हैं
 वह तुम करसकोगे हे अर्जुन मुख्य वृत्तान्तके ज्ञाता लोगोंने तुमको सब ज्ञानीकुलमात्र

the right of Bhishm within sight of all. As soon as the arrow
 pierced the ground, there came out of it a fountain of pure water,
 cold and sweet to the taste like nectar and sweet scented. With that
 fountain of cold water Arjun quenched the thirst of brave Bhishm.
 All the kings wondered at the Indra-like prowess of Arjun. The
 Kauravas trembled at the superhuman deed and strength of arms
 as cows shake by cold. The kings fluttered their cloths at the
 wonderful deed and loud peals of conchs and trumpets were heard
 on all sides. Satisfied by the drink, Bhishm praised Arjun's work
 in the presence of all the kings, saying, "It is not strange for you,
 joy of Kauravas. 30. O glorious one, thou art spoken of as an
 ancient rishi by Narad and, accompanied by Varsudev, you will do
 great deeds. Thou canst do deeds impossible to Indra and other

मनुष्या जगति श्रेष्ठाः पक्षिणां पतंगेश्वर । सर्पितां सागरः श्रेष्ठो गीर्वरिष्ठा चतुष्पदाम् ॥ ३४ ॥ आदित्यस्तेजसां श्रेष्ठो गिरिणा हिमवान् चर । जातीनां ब्राह्मणः श्रेष्ठः श्रेष्ठस्त्वमसि धन्विनाम् ॥ ३५ ॥ नवै श्रुते धार्तराष्ट्रेण वाक्यमयोच्यमानं विदुरेण वैव । द्रोणिन रामेण जनादनेन मुहुर्मुहुः सञ्जयेनापि चोक्तम् ॥ ३६ ॥ परित्यजिहिं विसंभक्त्यो दुर्योधनो न च तच्छ्रद्धयाति । स शप्यते वै निहतश्चिराय शान्नातिगो भीम-धत्ताभिभूत ॥ ३७ ॥ एतच्छ्रुत्वा तद्वचः कौरवेन्द्रो दुर्योधनो दीनमना बभूव । तमग्रवींशन्तनयोभिर्वीक्ष्य निशेध राजन् भवयतिमन्यु ॥ ३८ ॥ हृष्ट दुर्योधने तस्ते यथा पार्थेन धीमता । जलस्य धारा जनिता शीतस्यामृतगन्धिनः ॥ ३९ ॥ पतस्य कर्त्ता

का निधनज्ञानाहै । ३२ । तुम उत्तम धनुषधारियों में अद्वितीयहो और पृथ्वीके सब मनुष्योंमें तुम अत्यन्त श्रेष्ठहो इस संसार में मनुष्य सब से उत्तम है पक्षियों में गरुड श्रेष्ठ है । ३३ । नदियों में समुद्र श्रेष्ठ है पशुओं में गौ उत्कृष्ट है मकाशवानों में सूर्य श्रेष्ठ है पर्वतों में हिमालय जातियों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है इसी प्रकार तुम धनुष धारियों में श्रेष्ठ हो धृतराष्ट्रके पुत्र ने मेरा कहना वा विदुरजी द्रोणाचार्य परशुराम जी और श्रीकृष्णजी का जो कहना और बारंबार संजयका भी कहना नहीं सुना । ३५ । निश्चयकरके निर्बुद्धी और अवेतों के समान दुर्योधन उम करनेपर श्रद्धा नहीं करता है वह शास्त्रके विपरीत कर्मकर्त्ता भीमसेनके बलने हाराहुआ मरा हुआ बहुत काल तक सोवेगा । ३६ । कौरवोंका राजा दुर्योधन उनके इस वचनको सुनकर चित्त से उदास होगया इस को उदास देखकर भीष्मजी ने कहा कि हे राजा अबभी समझकर निरहंकारी होजाओ । ३७ । हे दुर्योधन तुमने यह देखा जैसे कि बुद्धिमान अर्जुन ने शीतल अपृतकोतुल्य सुगन्धिपॉसि व्याप्त उत्तम जलकी धारा उत्पन्नकरी । ३८ । इमलोकमें इसकर्मकाकरने वाला दूसरा कोईमनुष्य नहीं है आग्नेय वारुण सौम्य वायव्य वैष्णव ऐन्द्र पाशुपति पारमेष्ठ्य

gods; those who know the reality, say that thou art the death of all kshatriyas. You are matchless among warriors and are the best among men. Man is foremost of all beings in this world; garur is foremost among birds; the Ocean is foremost among rivers; cow is the best of beasts; the sun holds the first place amongst luminaries; Himalyas amongst mountains, Brahmans among the four orders and you among the archers. The son of Dhritrashtra disregarded my advice as well as that of Vidur, Dronacharya, Parashuram, Krishna and Sanjaya. 35 Surely, Duryodhan is foolish and unwise enough to disregard that advice. Doing deeds against the dictates of the Shastras, he will sleep long defeated and slain by Bhim." Duryodhan the prince of the Kauravas was displeased at these words and seeing him in that state Bhishma said, "Be wise even now O king, and give up self conceit. You have seen, Duryodhan, how Arjun

लोकस्मिन् नान्यः कश्चन विद्यते । आग्नेयं वारुणं सौर्यं वायव्यमथ वैष्णवम् ॥ ४० ॥
 ऐन्द्रं पाशुपतं ब्रह्मं पारमेष्ठ्यं प्रजापतेः । धातुस्त्वष्टुश्च सवितुर्व्यस्यतमथापिया
 ॥ ४१ ॥ सर्वस्मिन्मानुषे लोके वेरयेको हि धनञ्जयः । कृष्णो धा देवकीपुत्रो नान्यां
 घेदेह कश्चन ॥ ४२ ॥ अशक्यः पाण्डवस्तात युद्धे जेतुं कथंचन । अमानुषाणि कर्माणि
 तस्यैतानि महात्मनः ॥ ४३ ॥ तेन सत्वं वता संख्ये शूराणां ह्यशोभिता । कृतिना समरे राजन
 सन्धिर्मघनु माचिरम् ॥ ४४ ॥ यावत् कृष्णो महाबाहुः स्वाधीनः कुरुसत्तम । तावत्
 पापेन शूरेण सन्धिः ते तात युज्यताम् ४५ यावत्ते च मू. सर्वाः शूरेः सत्तत्पर्याभि. नाश
 पतंर्जुनस्तायत्सन्धिस्ते तावद्युज्याताम् ॥ ४६ ॥ यावत्सिद्धिन्ति समरे हतशेषाः सहोदराः
 नृपाथ यह्यो राजस्तावत् सन्धिः प्रयुज्यता ॥ ४७ ॥ न निर्हर्तते पावत् क्रोधर्दं ते
 क्षणधूमम् । सुविष्टिरो रणे तावत् सन्धिस्ते तात युज्यताम् ॥ ४८ ॥ नकुलः सहदेवश्च

भजापत धाता त्वष्टा और सविता के अस्त्र और सौरि इन सर्व अस्त्रों को भी
 इम नर लोक में अकेला अर्जुनही जानता है वा देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी जानने
 हैं इनदोनों महापुरुषों के सिवाय इस लोक में दूसरा कोई नहीं जानता है
 । ४१ । हे तात युद्ध में इन पाण्डवों को देवता और अमुर भी जीतनेको समर्थ
 नहीं हैं जिस महात्मा के यह अमानुषी कर्म हैं हे राजा उम युद्धमें पराक्रमी शूरवीर
 युद्धमें शोभापाने वाले अर्जुनके साथ सन्धिकरने में विलम्ब मतकरो । ४२ । हे
 कौरवोत्तम जवतक महाबाहु श्रीकृष्णजी अपने स्वाधीन हैं तवतक शूरवीर अर्जुन
 के साथ तुम्हकोसन्धिकरलेना योग्य है । ४४ । हे तात जवतक अर्जुन गुप्तग्रन्थी
 वाले वाशों से तेरी सब सेनाका नाश नहीं करे तवतक तुम्हको सन्धिकरलेना अ-
 त्यन्तही योग्य है । ४५ । हे राजा जवतक युद्धमें मरनेसे शेष बचेहुए अपने निज
 बांधव लोग वा बहूतसे राजालोग नियत हैं तवतक सन्धिसेजाय और जवतक कि
 क्रोधसे अग्निरूप नेत्र युधिष्ठिर इस तेरी सेनाको भस्मनहीं करता है वा पाण्डव
 नकुल सहदेव और भीमसेन सब ओर से सेनाका नाशनहीं करें । ४८ । तवतक

the wise produced the fine fountain of water cold as nectar and full
 sweet scented, None in this world can do it. None in this world
 knows the use of the weapons of Agni, Varun, Som, Vayu, Vishnu,
 Indra, Pashupati, Parmeshthi, Prajapati, Dhata, Twashta, Savita
 and Surya except Arjun and Shree Krishn. 41. Even the gods
 and asurs are unable to conquer the Pandavas. You must have no
 hesitation in contracting peace with one who can do such superhu-
 man deeds. Make peace with Arjun so long as Krishn is with us.
 You can make peace with Arjun so long as his arrows having hidden
 knots have not destroyed all your warriors. 45. It is well to have
 peace so long as some of our kinsmen and many kings are alive and
 so long as Yndhishtir with his fiery eyes has not burnt your armies

मोमसेनश्च पाण्डवः । यावच्चतु महा राज नाशयन्ति न सर्वशः ॥ ४९ ॥ तावत्ते
पाण्डवैर्वीरिः सौहार्दं मम रोचते । युष्मद् महन्तमेवास्तु तात संक्षाम्य पाण्डवैः ॥ ५० ॥
एतत्तु रोषतां वाक्यं यदुक्तोसि मयानव । एतन्न क्षेममह मन्ये तव सैव कुलस्यच
॥ ५१ ॥ स्थकथा मनुंयुपशाम्य स्त्रं पार्थैः पर्व्याप्तमेतद्यत् कृतं फाल्गुनेन । भीष्मत्वां
तादस्तु वः सौहृद्भ्यश्च जीवन्तु शेषाः साधु राजन् प्रसीद ॥ ५२ ॥ राज्यस्यार्थं दीयतां
पाण्डवानां मित्रं प्रस्थ धर्मराजोभियातु । मामिन्द्रभृक् पार्थिवानां जघन्यः पापां कीर्त्ति
प्रापस्यसे कौरवेन्द्र ॥ ५३ ॥ ममावसानाच्छान्तिरस्तु प्रजानां संगच्छन्तां पार्थिवाः प्रीति
मन्तः । पिता पुत्रं मातुल भागितेयो ज्ञाता चैव भ्रातर प्रेतु राजन् ॥ ५४ ॥ मत्वे देवं
प्राप्तकाल वचो मे मोहाविष्टः प्रतिपत्स्यस्वयुद्धयां । तत्पश्यन्तेपतदन्ताः स्थ सर्वे सत्या

वीर पाण्डवों के साथ तेरी प्रीतिहीना मुझको अभीष्टही हेतात मैं चाहताहूँ कि यह
महामवन युद्धभी मरण पर्यन्तरहै तू अवश्य पाण्डवों से सन्धिकर । ४९ ।
इस बातको तू मनसे समझकर अंगीकारकर हेतात यह मैंने तुझको समझाया है
यादे तू समझगा तो तेरी और कुल के लोगोंकी कुशल अवश्य होगी । ५० ।
अहंकारको त्यागकरके पाण्डवों से सन्धिकर अर्जुनके इतने ही करनेको तू बहुत
समझ भीष्मकेही मरखान्तसे तुम्हारी और पाण्डवोंकी प्रीतिही यह बहुतश्रेष्ठहै इसी
प्रीतिमें शेष बचेहुएसत्री वचनार्थेगे हे राजा मेरे इस कहेनपर मसन्नहोके पाण्डवों
के आधे राज्यको देदो और धर्मराज राजा युधिष्ठिर इन्द्रप्रस्थको जाय हे कौरवेन्द्र
तू भिन्नसे शत्रुता करनेवाला राजाओंमें नीच मतहो नहीं तो पापरूपी अपकीर्त्तिको
पावेगा । ५२ । मेरेनाश होने से प्रजाओं को सुखहो और प्रीति रखनेवाले राजा
लोग परस्पर में मिलें हे तात पिता पुत्र से मामा भानभे से भाई भाई से आनन्द
पूर्वक मिलें जो मोहसे भरेहुए निर्बुद्धितासे समय के अनुसार मेरेकहे हुए वचन को
नहीं मानेगा तो अन्व में महादुःखों को पावेगा और सबकी एकसीही दशा है मैं
इस बातको सत्यही कहता हूँ । ५४ । गानेय भीष्मजी राजाओंके मध्य में घड़ी

and the Pandavas Bhim, Nakul and Sahadev have not destroyed
them. I like to see you united with the brave Pandavas. I shall
be happy, if this war ends with my death. Be sure to make peace
with the Pandavas. Act upon my advice; your welfare and that
of your kinsmen depends upon it 50. Give up selfishness and make
peace with the Pandavas. What Arjun has done is sufficient. Let
Bhisma's death be the restoration of friendship between the
Kauravas and the Pandavas. Thus the rest of the kshatriyas will
not die. Be pleased to give half the kingdom to the Pandavas.
Take Prince Yudhishtir to Indraprasth. Princes of the Kauravas,
donot achieve sinful notoriety among kings by incurring the reproach
of meanness and making foes of friends. Let the people be happy
with my death and the loving kings meet together. Let fathers

मेतां भारतीमीरयानि ॥५५॥ पतद्वाङ्मयसौटदादापगेषो मध्ये रागां भारतं आवयित्वा ।
 तूष्णीमासीच्छल्यसन्तप्तमर्मा योज्यात्मानं वेदनां सन्नियम्य ॥ ५६ ॥ सञ्जय उवाच ।
 धर्मार्थसहितंवाक्यं श्रुत्वा हितप्रनामयम् । नारोच्यतपुत्रस्ते मुमुर्षु रिष भेषजम् ५७॥
 इति महा० भीष्मपर्वणि भीष्मवर्षणि त्रयविंशतिकशततमोऽध्यायः ॥ १२३ ॥

सञ्जय उवाच । ततस्ते पार्थिवाः सर्वे जग्मुः स्थानालयान् पुनः । तूष्णीं भूते महा
 राज भीष्मे शान्तनुन्दने ॥ १ ॥ श्रुत्वा तु निहतं भीष्म राधेयः पुरुषर्षभः । ईयदागत
 सन्नासस्त्वरयोपजगामह ॥ २ ॥ स ददर्श महात्मानं शरतल्पगतं तदा । जन्मशय्या-
 गतं धीरं कात्तिकेयमिव प्रभुम् ॥ ३ ॥ निर्मोलात्तक्षं तं धीरं साधुकण्ठस्तदा वृषः ।
 भीष्मभीष्ममहाबाहो इत्युवाच मदाद्युतिः ॥४॥ राधेयोहं कुरुश्रेष्ठ नित्यमक्षिगतस्तव ।
 द्वेष्योहं तव सर्वत्र इति चैनमुवाचह ॥ ५ ॥ तद्भुत्वा कुरुभृजोहि यलात्संवृतलोचनः

शुभचिन्तकतासे कौरवोंके राजा दुर्योधन को यह वचन सुनाकर मालोसि पीड़ित अंगों
 के दुःखोंको सहकर मनबुद्धिको आत्मामें लयकरके मौन होगये । ५५। संजयबोले कि
 आपके पुत्रने धर्म अर्थ से संयुक्त होकर प्रियकारी निर्दोष निरुपाधि वचनोंको सुनकर
 ऐसे स्वीकार नहीं किया जैसे कि सन्निकट मरनेवाला पुरुषवैद्यकी औषधीको नहीं
 अंगीकार करताहै ५६ ॥ अध्याय १२४ ॥

संजय बोले हे महाराज शतनुके पुत्र भीष्मजीके मौनहोनेपर वह सब राजा लोग
 फिर अपने२ डेरोंको गये । १। पुरुषोत्तम कर्ण भीष्मजीको मृतकसुनकर कुलेकृष्याकु
 लसाहोकर बड़ी शीघ्रतासे उनकेपासगया । २। वहां उसने जब उसमहात्मा समर्थ शूर
 धीर जन्मशय्या पर वर्चमान स्नामिकार्तिकके समान शरशय्यापर नियत भीष्मजीको
 देया । ३। तब अश्रुपारतोसे गदगद करठहोकर बढ़तेजखी कर्ण उस निमलित्तासने
 बोला हेमहाबाहु भीष्म हे कौरवोत्तम में राधाका पुत्र सदैव आपके नेत्रोंके आगेरहने
 वालाहूं हेसर्वज्ञ में आपकाद्रेपी हूं इन बातों को सुनकर बड़ेबलसे नेत्रों को खोलकर
 गांगेय भीष्मजीने अपने निवासस्थान को एकांतरूप देखकर स्थानके रत्नोंको

meet sons, maternal uncles with sisters, sons and brothers with
 brothers. You will fall into deep misery, if you will not give ear to
 my advice and all others will suffer with you. I speak the truth:”
 Having said these words to Duryodhan the prince of the Kauravas,
 Bhishm suffering from the pangs of darts, became silent and fell in
 meditation. Sanjaya says, “Your son heard those words full of wisdom
 and profit, but did not accept them as a person about to die refuses to
 take medicine.” 56. CHAPTER XXIV

Sanjaya said, “When Bhishm the son of Shantanu had become
 silent, all the kings went away to their respective tents. Karan the
 best of men, having heard of Bhishm’s fall, came to him with a dis-
 tressed mind. Soaring him on the bed of arrows, like Lord Kartikeya
 lying at his birth on his bed of reeds, glorious Karan with tears in his
 eyes and voice choked said to Bhishm whose eyes were closed, “Valliant
 Bhishm, best of the Kauravas, I am Radha’s son who was always hateful

शनैरुद्धीक्ष्य सत्नेह मिद्वंचनमग्रवीत् ॥६॥ रहितं धिष्यमालोक्य समुरसार्थं च रक्षिणः
 पितेषुपुत्रं गांगेयः परिरभ्यैकगणिना ॥ ७ ॥ एह्येहि मे विप्रतीपस्वर्धसत्वं मयासह ।
 यदिमानाधिगच्छेयानते श्रेयोभुवं भवेत् ॥ ८ ॥ कीर्तेयस्त्वं नराभियो नतवाधिरथ पिता ।
 सूर्यजस्त्वं महात्माहो विदितो नारदान्मया ॥ ९ ॥ कृष्णक्षपायनाच्चैव तच्चसत्यं न
 संशयः । न च द्वेषोस्ति मे तात त्वयि सत्यं प्रयोमिते ॥ १० ॥ तेजोवधनिमित्तन्तु परप
 त्याहमग्रुवं । एकस्मात्पाण्डवान्सर्वा नवाक्षिपासि सग्रत ॥ ११ ॥ यनासि बहुशोराहा
 चोदितः पूतनंदन । जातोसि धर्मलोपिन ततस्ते युद्धिरीदृशी ॥ १२ ॥ नीचाध्वयान्मत्स
 रेण द्वेषिणीं गुणिनामपि । तेनासि बहुशो रुक्षं धावित. कुरुससदि ॥ १३ ॥ जानामि
 समरे धीर्यं शत्रुभिर्दुःसहं भुभि । ब्रह्मग्यता च शौर्यञ्च दातेव परमास्थितिम् ॥१४॥
 न त्वया सहशः कश्चित् पुरुषेण्धमरोपम । कुलभेदमयाच्चाहं सदा परपमुकवान्

उठाकर जैसे कि पिता पुत्रपर स्नेहकरताहै उसीप्रकारसे कर्णको एकहाथसे छातीके
 द्वारा मिलकर घड़े धीरेर यहवचन बोले । ७। कि हे मेरेद्वेषी आओर तू मेरेसाथ ईर्ष्या
 करताहै जो तू मुझको महीं मिलता तो निश्चयकरके तोराभला नहीं होता । ८। तू
 राधाका पुत्रनहींहै किन्तु कुन्तीकाही पुत्रहै और तेरापिता अधिरथीनहींहै सूर्यका पुत्र
 है यहभेद मुझको नारदजीनि बतायाहै । ९। और व्यासजी वाकेशवजीसेभी विदित
 हुआ इसमें किसी बातकाभी सन्देह नहीं है और यहवातभी मैं सत्य २ कहताहूँ कि
 तेरेसाथ मेरी किसीप्रकारकी भी द्वेषता नहीं है । १०। मैंने तेरे तेज नष्टहोने के लिये
 कठोर वचनकहे थे हे सुन्दरव्रतवाले कर्ण तू अक्रमात् सब पांडवोंको मारेगा । ११।
 हेमृतनन्दन इसीकारणसे राजा दुर्योधन ने तुमको धारवार कहकर उष्कत किया है
 तू धर्मके यूपसे उत्पन्न हुआ है इसहेतुसे तेरी ऐसी बुद्धि है । १२। गुणवान् मनुष्यों
 की बुद्धिभी नीचों के संगसे वा ईर्ष्यासे द्वेष करनेवाली होजाती है इसीहेतुसे कौरवों
 की सभामें बहुधा रूपेर वचन सुनेगये १३ मैं युद्धमें तेरे पराक्रमको पृथ्वी भरके
 भी शत्रुओंसे असह्य जानताहूँ और वेद ब्राह्मण की रक्षाकरने में शूरतामें और दान
 में तेरी बड़ी हड़ताको जानताहूँ । १४। मनुष्यमात्रों में तेरेसमान देवताओं के समान

in your sight." At this Bhishm opened his eyes with great exertion and seeing his habitation deserted, he ordered the guards to move away, and as a father loves a son, he embraced Karan with one arm at

॥ १५ ॥ इत्यखे चारुसन्धाने लाघवेस्त्रयले तथा । सदृशः पादगुनेनासि कृष्ण नचमहा
 रमना ॥ १६ ॥ कर्ण काशियुटे गत्या त्वयैकेनधनुष्मता । कन्यार्थं कुरुराजस्य राजानो
 मृदिनायुधि ॥ १७ ॥ तथा च यत्नवान् राजा जरासन्धो दुरासदः । समरे समरश्लाघि
 न्तयथा मन्त्रशोभवत् ॥ १८ ॥ ब्रह्मप सतपार्थाच्च तज्जमा च यलेनच । देवगर्भममः
 संवधे मनुष्यैरधिको युधि ॥ १९ ॥ व्यपनीतोच मनुयुग्मे पस्त्र्या प्रति पुराकृतः । दैवं
 पुरयकरिण न शक्यमतिवर्तितुम् ॥ २० ॥ सौन्दर्या पाण्डवाजीरा भ्रातरस्तेऽगिन्मूढन ।
 सद्गच्छतेर्महाबाहो ममचेदिच्छसिप्रियम् ॥ २१ ॥ मयाभवतुनिर्घतं धैरमादित्यनन्दन ।
 पृथिव्यांसर्वराजानो मघत्वचानिरामया ॥ २२ ॥ कर्ण उवाच । जानाम्येव महाबाहो
 सर्वमेतन्न संशयः । यथावदस्तिमेभीष्म कौन्तेयोहृदममृतजः ॥२३॥ अथकर्णस्त्वहंकुन्त्या

पराक्रमी कोई नहीं है मैंने कुलकी द्वेषनाके भयमे सदैव कटोरखषण कहे । १५। पाण
 और अर्जुनके चलायमें और हस्तलापवतामेंवा अक्षयवर्षमें तू महात्मा श्रीकृष्णजी और
 अर्जुन के समान है । १६ । हे कर्ण तुम्ह अकेले धनुषपारी ने काशीपुरी में जाकर
 कुरुराजकी कन्याके निमित्त बड़े राजाओंका युद्धमें मर्दन किया । १७। इमीप्रकार
 पराक्रमी और दु रासे विजयहोनेवाला कीर्तिपान् राजाभरामन् युद्धमें तेरेसमान नहीं
 हुआ । १८। तुम वेद और ब्राह्मणोंकी रक्षाकरनेवाले अपने तेज यत्नमे युद्धकरनेवाले
 देवगर्भके समान युद्धमें मनुष्यों से अधिकहो । १९। अब वह मेराकोय दूरहुआ जो
 पूर्वमय में मैंने तुम्हपर कियाथा देवी वातको अर्थात्होनहारको कोईभी उपायसे
 उल्लंघन नहीं करसक्ता २०। हे शत्रुहन्ता यह वीर पांडव तेरेसगेभाई हैं हे महाबाहु
 जो तू मेराहित चाहताहै तो उनसे मिलापकर । २१। हे सूर्यनन्दन अब तू मेरेकहनेसे
 शत्रुताको त्यागकर जिसमे कि पृथ्वी के सवराजालोग निर्बन्धहों । २२। कर्ण ने
 कहा हे महाबाहु भीष्मजी मैं यह निस्तन्दह मयप्रकार मे जानताहूँ कि मैं कुन्ती का
 पुत्रहूँ परन्तु मुझे कुन्ती ने त्यागकर दिया तब सूत ने मेरा पोषण किया इस से

reason why you spoke harsh words in the camp of the Kauravas. I know that thy prowess is unbecomable by all thy foes. I know also thy regard for Brahman-, thy courage and thy attachment to alms giving. O godlike man, thou art matchless. From fear of dissensions I always spoke ill of thee. In bowmanship, in the use of weapons in lightness of hand and in the strength of arms thou art a match for Arjun or Krishn. At Kashi you alone crushed all the kings to fetch a bride to the King of Kurus. Even King Jarasandh of great prowess could not withstand thee. You are the protector of the Vedas and Brahmanas and like the progeny of gods you are above men in the field of battle. All my former anger against you is subsided, but none can overstep Fate by worldly means. 20. The brave Pandavas, O destroyer of foes, are your own brothers. Mix with them if you would please me. Take my advice and leave the side of the enemy so that all the princes of the world may not be destroyed." To this Karan made the following reply— I know well that I am Kunti's son and not

शनैरुद्धीह्य सस्नेह मिद्वचनमग्रवीत् ॥६॥ रहितं धिष्यमालोक्य समुत्सर्ग्य च रक्षिणः
 पितेवपुत्रं गांनेव. परिःर्यैकपाणिना ॥ ७ ॥ एहोहि मे विप्रतीपस्पर्धसत्त्वं मयासह ।
 धदिमानाधिगच्छेधानते श्रेयोयुयं भवेत् ॥ ८ ॥ कौंतेयस्त्वं नराभेयो नतवाधिरथ पिता ।
 सूर्यजस्त्वं महापाहो विदितो नारदान्मया ॥ ९ ॥ कृष्णद्वैपायनाच्चैव तच्च सत्त्वं न
 संशयः । न च द्वेषोऽस्ति मे तात त्वयि सत्त्वं प्रयोमिते ॥ १० ॥ तेजोवधनिमित्तन्तु परुष
 त्याहमग्रवं । शकस्मात्पाण्डवान्सर्वा नवाक्षिपासि सग्रत ॥ ११ ॥ यनासि बहुशाराशा
 घोदितः एतन्दन । जातोसि धर्मलोपेन ततस्ते युद्धिरीदृशी ॥ १२ ॥ नीचाध्यायान्मत्स
 रेण द्वेषिणीं गुणिनामपि । तेनासि बहुशो रूक्षं धाधितः कुरुससदि ॥ १३ ॥ जानामि
 समरे धीर्यं शत्रुभिर्दुःसहं भुभि । ब्रह्मग्यता च शौर्यञ्च दागेव परमांस्थितिम् ॥१४॥
 न त्वया सहशः कश्चिद्य पुरुषेष्वमरोपम । कुलभेदमयाच्चाहं सदा परुषमुकवान्
 उठाकर जैसे कि पिता पुत्रपर स्नेहकरताहै उसीप्रकारसे कर्णको एकहाथसे छातीके
 द्वारा मिलकर घड़े धीरेर यहवचन बोले । ७। कि हे मेरेद्वेषी आओर तू मेरेसाथ ईर्ष्या
 करताहै जो तू मुझको महीं मिलता तो निश्चयकरके तोराभला नहीं होता । ८। तू
 राधाका पुत्रनहींहै किन्तु कुन्तीकाही पुत्रहै और तेरापिता अधिरथीनहींहै सूर्यका पुत्र
 है यहभेद मुझको नारदजीने बताया है । ९। और व्यासजी वाकेशवजीसेभी विदित
 हुआ इसमें किसी बातकाभी सन्देह नहीं है और यहवातभीमें सत्य २ कहताहूँ कि
 तेरेसाथ मेरी किसीप्रकारकी भी द्वेषता नहीं है । १०। मैंने तेरे तेज नष्टहोने के लिये
 कठोर वचनकहे थे हे सुन्दरव्रतवाले कर्ण तू अकस्मात् सब पांडवोंको मारेगा । ११।
 हेमृतनन्दन इसीकारणते राजा दुर्योधन ने तुमको बारबार कहकर उद्युक्त किया है
 तू धर्मके यूपते उत्पन्न हुआ है इसहेतुसे तेरी ऐसी वृद्धि है । १२। गुणवान् मनुष्यों
 की वृद्धिभी नीचों के संगसे वा ईर्ष्यासे द्वेष करनेवाली होजाती है इसीहेतुसे कौरवों
 की सभा में बहुधा रूखेर वचन सुनेगये १३ मैं युद्धमें तेरे पराक्रमको पृथ्वी भरके
 भी शत्रुओंसे असद्य जानताहूँ और वेद ब्राह्मण की रक्षाकरने में शूरतामें और दान
 में तेरी बड़ी हृदताके जानताहूँ । १४। मनुष्यमात्रों में तेरेसमान देवताओं के समान

in your sight." At this Bhishm opened his eyes with great exertion and seeing his adversary absent, he ordered the guards to move away, and as a father loves a son, he embraced Karan with one arm and said these words very slowly:—"Come my opponent and adversary. Certainly it would not be well for thee if you had not come to me. You are the son of Kunti and not of Radha; your father is Surya and not the chariot driver. I have got this information from Narad, Vyas and Keshav too, know this and there is no doubt about it. I tell you truly that I bear no enmity against you. 10. I said harsh words in order to deprive thee of thy zeal and that you may not destroy all the Pandavas at once. It is why Prince Duryodhan instigates you again and again. You came into this world in a sinful way and therefore thy heart is so inclined. Even good men may lean towards wickedness by the society of bad men and this was the

॥ १५ ॥ इष्ये च्छस्त्रान्धाने लाघवेस्त्रले तथा । मरुदाः फाल्गुनेनामि कृष्णं नचमहात्मना ॥ १६ ॥ कर्णं काशियुरं गत्वा त्वयंकेनचनुभ्रमता । कन्यार्थं कुरुराजस्य राजानो मृदितायुधि ॥ १७ ॥ तथा च यत्नान् राजा जरासन्धो दुरासदः । समरे समरश्लाघि न्मत्पया सशोभवत् ॥ १८ ॥ अथ च सत्पयार्थं च तजसा च यलेनच । देवगमंसमः संवधे मनुष्यैरशिको युधि ॥ १९ ॥ ध्यपनीतोच मनुष्यैः पस्त्रां प्रति पुराकृत । दैवपुरुषकारेण न शक्यमतिरतिनुम ॥ २० ॥ सौर्य्यां पाण्डुगामोरा द्वातरस्तेऽग्निसूदन । सद्गच्छतेर्महागहो ममचेदिच्छसिप्रियम् ॥ २१ ॥ मयागयतुनिर्जं चं घंरमादित्यनन्दन । पृथिव्यांसंराजानो भवन्वचनिरामया ॥ २२ ॥ कर्ण उवाच । जानाम्येव महायाहो सर्वमेतन्न संशयः । यथावदसिमेभीष्म कौन्तेयोर्हंनमृतज ॥ २३ ॥ अथकर्णस्तवहंकुन्त्या

पराक्रमी कोई नहीं है मैंने कुलकी द्वेषनाके भयसे सदैव कटोरवचन कहे । १५। पाण और अश्वीके चलानेमें और हस्तशायनतामें वा अश्वयन्में तू महात्मा श्रीकृष्णजी और अर्जुन के समान है । १६ । हे कर्ण तुझे अकेले धनुषपारीने काशीपुरी में जाकर कुरुराजकी कन्याके निमित्त बड़े राजाओंका युद्धमें मर्दन किया । १७। इमीप्रकार पराक्रमी और दु खसे विनयहोनेवाला कीर्तिमान् राजाजरासन्ध युद्धमें तेरेसमान नहीं हुआ । १८। तू वेद और ब्राह्मणोंकी रक्षाकरनेवाले अपने तेज यन्त्रे युद्धकरनेवाले देवगर्भके समान युद्धम मनुष्यों से अधिकहो । १९। अब वह मेराक्रोध दूरहूआ जो पूर्ववचन में मैंने तुझपर कियाथा देवी वातको अर्वाचनहोनाहारको कोईभी उपायोंमें उल्लंघन नहीं करसक्ता २०। हे शत्रुहन्ता यह वीर पांडव तेरेसगेभाई हैं हे महाबाहु जो तू मेरा हित चाहताहै तो उनसे मिनापकर । २१। हे सूर्य्यनन्दन अब तू मेरेकहनेसे शत्रुताको त्यागकर जिससे कि पृथ्वी के सवराजालोग निर्विघ्नहों । २२। कर्ण ने कहा हे महाबाहु भीष्मजी मैं यह निस्तन्देह मनप्रकारसे जानताहूँ कि मैं कुन्ती का पुत्रहूँ परन्तु मुझे कुन्ती ने त्यागकर दिया तब सूत ने मेरा पोषण किया इस से

reason why you spoke harsh words in the camp of the Kauravas. I know that thy prowess is unbearable by all thy foes. I know also thy regard for Brahman-, thy courage and thy attachment to alms giving O godlike man, thou art matchless From fear of dissensions I always spoke ill of thee In bowmanship, in the use of weapons in lightness of hand and in the strength of arms thou art a match for Arjun or Krishna. At Kashi you alone crushed all the kings to fetch a bride to the King of Kurus. Even king Jarasandh of great prowess could not withstand thee You are the protector of the Vedas and Brahman and like the progeny of gods you are above men in the field of battle. All my former anger against you is subsided, but none can overstep Fate by worldly means. 20. The brave Pandavas, O destroyer of foes, are your own brothers Mix with them if you would please me Take my advice and leave the side of the enemy so that all the princes of the world may not be destroyed "To this Karan made the following reply— I know well that I am Kunti's son and not

सूतेन च विवर्धितः । भुङ्क्त्वा दुःख्यो धनैश्चर्ये न मिथ्या कर्तुं मुत्सहे ॥ २४ ॥ वसुदेवसुतो
 यद्भद्रपाण्डवाय हृदप्रतः । वसुदेव शरीरस्य पुनर्दारतथापशः ॥ २५ ॥ सर्वदुःख्यो धन
 स्याथे त्यक्तमे भूरिदक्षिण । माचैतद्दवाधिमरणं क्षत्रस्यादिति कौरव ॥ २६ ॥ कौपिताः
 पाण्डवानित्यंसमाभित्य सुयोधनम् । अवश्यभावी ह्यर्थोयं योनशक्यो निवर्तितुम् ॥ २७ ॥
 दैव्यं पुरुषकारेणको निवर्त्तितुमुत्सहेत् । पृथिवीक्षयशंसीनि निमित्तानिपितामह ॥ २८ ॥
 भवद्भिरुपलभ्यानि कथितानि च संसदि । पाण्डवावावसुदेवश्च विदिताममसपेशः ॥ २९ ॥
 अजेयाः पुरुषैरभ्यैरिति तांश्चोरसहामहे । विजायिष्येरणे पाण्डू निमित्तेनिश्चितमनः ॥ ३० ॥
 नच शक्यमवच्छष्टं वैरेतेतदसुदारुणम् । धनञ्जयेनयोत्स्येहं स्वधर्मप्रीतमानसः ॥ ३१ ॥
 अनुजानीष्वमांतात युद्धाय कृतनिश्चयम् । अनुज्ञातस्त्वया धीरयुध्येयमिति मे मतिः ॥ ३२ ॥

दुःख्यो धनके ऐश्वर्यको भोगकर उसको निष्फलकरना मैं उचित नहीं समझता हूँ
 जैसे कि वसुदेव जीके पुत्र श्रीकृष्णजी पाण्डवों के निमित्त हृद प्रतवाले हैं उसी प्रकार
 मैंने भी । २५। धन जन पुत्र स्त्री परिवार और कीर्ति दुःख्यो धनके निमित्त विचारकर
 लिये हैं हे बड़ी दक्षिणावाले कौरव कुल क्षत्री में रोगादिकों से मरना योग्य नहीं
 समझता हूँ । २६ । मैंने दुःख्यो धन के आश्रय में होकर पाण्डवों को संदेव प्रोथित किया
 है और होतव्यता है वह तो अवश्यही होगी उसका मिटाने वाला कोई भी नहीं है कौन
 सा मनुष्य होनहारको उपारोंके द्वारा लौटा सकता है हेपितामह संसारके मनुष्योंके नाश
 कारी चिह्न आपलोगोंने देखे हैं और सभामें वर्णन किये पाण्डव और वासुदेवजी सब
 प्रकारसे मेरे जाने हुए हैं । २९। वह अन्य मनुष्य से अजेय है परन्तु उत्साह पूर्वक कह-
 ताहूँ कि मैं उन पाण्डवों को विजय करूंगा यह मेरे चित्तका निश्चय है । ३०। जोकियह
 महा भयकारी शत्रुता त्यागकरने के योग्य नहीं है इस कारण अपने धर्ममें प्रसन्न चित्त
 होकर मैं अर्जुनसे लड़ूंगा । ३१। हे तात युद्धके निमित्त तुम्हीं निश्चय करके युद्धको
 आज्ञादो आपकीही आज्ञा से मैं युद्ध करूँ यही मैं चाहता हूँ । ३२ । और जो मैंने नि-

of the Sut. But he brought me up when I was deserted by Kunti' and
 having enjoyed Duryodhan's wealth, I donot like to desert him. All
 my wealth, sons, wives will I sacrifice for the good of Duryodhan and
 shall be as faithful to him as Krishn is to the Pandavas. Being born
 a kashtrya I donot like to die of sicknois or other causes. Being attach-
 ed to Duryodhan I have always looked down upon the Pandavas. Fate
 will have her course; none can undo her works. You have seen, O
 grandfather, the signs destructi o of the world and have spoken of them
 in the assembly. I know that the Pandav (Arjun) and Vasudev are
 invincible and yet I aspire to conquer them. I am resolved to do this.
 30. I shall fight against Arjun because I donot like to set aside this
 great enmity. I ask your own permission to fight, and it is the desire
 of my heart that I should fight with your consent I ask your pardon
 for all the harsh words which I ever uttered." At this Bhishm said,

युद्धविप्रतीपंवा रजसाधापलाक्षया । यन्मयेहकृतं किञ्चित्तन्मेत्थं क्षन्तुमर्हसि ॥३३॥
 भीष्म उवाच । न चेच्छक्यमवच्छृंघैरमेतत्सुदारणम् । अनुजानामि कर्णत्वायुत्पत्यस्य
 स्वर्गकाम्यया ॥ ३४ ॥ निर्मन्मुर्गतसंरम्भः कृतकर्मारेणसमह । यथाशक्तिपथोत्साहंसतो
 वृत्तेषुवृत्तयान् ॥ ३५ ॥ अहैरधामनुजानामि यदिच्छसि तदाप्नुहि । क्षत्रधर्मजितौ
 वडोकानवाप्स्यसि धनञ्जयात् ॥३६॥ युध्यस्वनिरहङ्कारो पलवीर्येवपाश्रयः । धर्म्यादि
 युद्धाच्छ्रेयोपत्यक्षत्रियस्य न विद्यते ॥३७ ॥ प्रथमेहि कृतोपलः सुमहान् सुखिरमया ।
 न चैवशक्तिः कर्तुं कर्णं सत्यं प्रधीमिसे ॥ ३८ ॥ सञ्जय उवाच । इत्युत्थति गाद्रेये
 मभिवाप्सोपमञ्च्यन् । राधेपो रथमारुह्य प्रायाक्षय सुतंप्रति ॥ ३९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मकर्णसमागमे

चतुर्विंशत्पत्रिकशतौऽध्यायः ॥ १२४ ॥

समाप्तञ्चेदम्भीष्मपर्व ।

युद्धिता व चपलता मे अत्यन्त बुरी । निपरोत वार्त्ता करी आप उन मेरे कठोर बचनों
 को क्षमा करनेके योग्य हैं । ३१। भीष्मजी बोले कि जो यह अत्यन्त भय उत्पन्न करने
 वाली शत्रुता त्याग करनेके योग्य नहीं है तो हे कर्ण मैं तुम्हको आशा देता हूँ कि स्वर्ग
 की इच्छासे तू युद्ध कर । ३४। क्रोध अहंकार से रहित बल और साहसके अनुसार
 युद्धमें क्षमा करनेवाला शक्ति और उरसाह के समान संतलोगोंकी वृत्ती करे । ३५। मैं
 तुम्हको आशा देता हूँ और जो तू चाहता है उसको मैंसही क्षत्रीधर्मसे पराजय पानेवा-
 ले निस्तपदेह वचन लोकोको पाते हैं । ३६। अहंकार रहित बलिष्ठ अमनी सामर्थ्य के
 आश्रयमें रहने वाले को धर्म युद्धके सिवाय क्षत्री का कल्याण करनेवाला दूसरा कोई
 भी धर्म नहीं है । ३७। अर्थात् बहुतकाल तक सन्धिमें बहुतसा उपाय किया परन्तु करने
 को समर्थ नहीं हुआ हे कर्ण यह तुम्हमे सत्यही सत्य कहता हूँ । ३८। संजय बोले कि
 गांगेय भीष्मजी के इस प्रकार कहने पर राधाका पुत्र कर्ण दण्डवत् पूर्वक अत्यन्त स्तु-
 तिकर रोता हुआसा अपने रथपर सवारहोकर आपके पुत्रके पास आया । ३९ ॥

" If you donot like to withdraw yourself from war, I give you per-
 mission to fight for the sake of heaven. Purge thyself of anger and
 selfishness and be brave and forgiving in battle. Do as you like I give
 you permission. Even the conquered in war gain good regions. 36. Free
 from pride, powerful and self relying men have no other duty than
 war. I always tried to have peace but all my efforts were in vain. I
 speak the truth, Karan." Sanjaya said that on hearing the words of
 Bhishm the son of Ganga, Karan bowed down to him with tears in
 his eyes and took leave of him. He then mounted his chariot and
 came back to Duryodhan. 39.



CONTENTS OF BHISHM PARVA.

अध्याय विषय	पृष्ठ	Chapter	Subject	Page
१ कौरव पांडवों के युद्धमें नियम	४२३५	1.	Rules in the War.	4235
२ भयानक उत्पात	४०	2.	Dreadful omens.	40
३ " " "	४५	3.	" " "	45
४ स्वयंवर जंगम वर्णन	५८	4.	Moveables and Immoveables	58
५ जम्बूखण्ड	६१	5.	Jambukhand.	61
६ जम्बूद्वीप	६४	6.	Jambudwip.	64
७ मेरु पर्वतके उत्तरीय भाग	७१	7.	North of Meru.	71
८ पर्वत वासी	७६	8.	Hill Tribes.	76
९ नदी और देश	७९	9.	Rivers and countries.	79
१० जम्बूखण्ड	८७	10.	Jambukhand.	87
११ शाकद्वीप	८९	11.	Shakdwip.	89
१२ जम्बूखण्ड	९४	12.	Jambukhand.	94
१३ भीष्ममृत्युश्रवण	४३२१	13.	The Fatal News.	4301
१४ धृतराष्ट्र संजय सम्वाद	३	14.	Dhritrashtra and Sanjaya.	3
१५ दुर्योधन दुःशासन "	१३	15.	Duryodhan and Dushasan.	13
१६ सेना का वर्णन	१६	16.	The armies.	16
१७ " " "	२०	17.	" " "	20
१८ " " "	२५	18.	" " "	25
१९ सेनाव्यूह	२८	19.	The Array.	28
२० " " "	३४	20.	" " "	34
२१ युधिष्ठिर अर्जुन सम्वाद	३८	21.	Yudhishthir and Arjun.	38
२२ कृष्णाजुन सम्वाद	४०	22.	Krishna and Arjun.	40
२३ दुर्गा स्तोत्र	४३	23.	Durga-stotra.	43
२४ योदों के चित्तकी दशा	४६	24.	The warriors.	46
२५ भगवद्गीता प्रारंभ	४९	25.	The Bhagwadgita.	49
२६ सांख्य योग	५६	26.	Sankhya-yog.	56
२७ कर्म योग	६७	27.	Karan-yog.	67
२८ ब्रह्मार्पण योग	७४	28.	Brahmarpan-yog.	74
२९ संन्यास योग	८१	29.	Sanyas-yog	81
३० अध्यात्म योग	८६	30.	Adhyatm-yog.	86
३१ विज्ञान योग	९३	31.	Vijyan.	93
३२ ब्रह्म योग	९७	32.	Brahm-yog.	97
३३ राज गुह्य	४४०१	33.	Raj-guhya.	4101
३४ विश्वनि	६	34.	of Divine Nature.	6
३५ विश्वरूप	१२	35.	Vishwarup.	12
३६ " " "	२२	36.	" " "	22
३७ जीव ब्रह्म	२५	37.	Soul and Brahm.	25
३८ प्रकृति	३०	38.	Prakriti.	30.
३९ पुरुषोत्तम योग	३४	39.	Purshottam.	34
४० समाप्तिभाग	३७	40.	The Destinies.	37

अध्याय	विषय	पृष्ठ	Chapter	Subject	Page
४१	श्रद्धा	४१	41.	Faith.	41
४२	तत्त्व निर्णय	४५	42.	Salvation.	45
४३	युद्ध की तयारी	५७	43	The War.	57
४४	बाण वृष्टि	७१	44.	The shower of Arrows.	71
४५	युद्ध का वर्णन	७५	45	The war.	75
४६	"	८६	46.	"	86
४७	श्वेत युद्ध	९२	47.	Shwet's battle.	92
४८	श्वेत वध	४५००	48.	Shwet's death.	4500
४९	प्रथम दिन का युद्ध	१४	49.	First day's battle.	14
५०	क्रौंच व्यूह	२०	50.	The phalanx.	20
५१	युद्धकी तयारी	२७	51.	The Preparations.	27
५२	द्रोण और द्रुपद का युद्ध	३१	52	Drona and Drupad.	31
५३	धृष्टद्युम्न का युद्ध	३९	53.	Dhrishtadyumna.	39
५४	कलिंग वध	४४	54	Kaling's Death.	44
५५	लक्ष्मण और अभिमन्यु	५८	55.	Lakshman and Abhimanyu.	58
५६	अर्धचन्द्र व्यूह	६३	56.	The Crescent Array.	63
५७	घोर युद्ध	६६	57.	The latter.	66
५८	भीम और युधिष्ठिर की वीरता	७०	58	Bravery.	70
५९	तीसरे दिन का युद्ध	७६	59	The Third day.	76
६०	चौथे दिन का युद्ध	९५	60	The Fourth day.	95
६१	अभिमन्यु की वीरता	४६००	61.	Abhimanyu.	4600
६२	भीमयुद्ध	४	62	Bhim.	4
६३	भीमकी वीरता	१२	63.	Do.	12
६४	चौथे दिनका युद्ध	१६	64	The Fourth day's battle	16
६५	भीष्मजी की मति	२६	65	Bhishma's advice.	26
६६	नारायण स्तुति	३५	66.	Narayan's Praise	35
६७	नारायण महिमा	४०	67.	Narayan's greatness.	40
६८	ब्रह्मस्तव	४२	68.	Brahmastav.	42
६९	भीष्मकायावल होता	४५	69	Bhishma wounded.	45
७०	परस्पर युद्ध	४९	70.	The latter.	49
७१	"	५२	71.	"	52
७२	भीष्मकायुद्ध	५७	72	Bhishma's fighting.	57
७३	"	६१	73.	"	61
७४	सात्यकी और भुरिश्रवा	६६	74.	Satyaki and Bhurishrava.	66
७५	मकरव्यूह	७१	75.	The Crocodils Array.	71
७६	धृतराष्ट्र और सञ्जय सम्वाद	७५	76.	Dhrtrashtra and Sanjaya.	75
७७	"	७८	77.	"	78
७८	भीमसेन व चित्रसेन	८७	78.	Bhimsen and Chitrassen.	87
७९	भीष्मयुद्ध	८९	79.	Bhishma's bravery.	89
८०	भीमसेन व भीष्म	९१	80.	Bhimsen and Bhishma.	91
८१	भीष्म दुर्योधन सम्वाद	९९	81.	Bhishma and Duryodhan.	99
८२	व्यूह रचना	४७-२	82.	The Phalanx	4702

अध्याय	विषय	पृष्ठ	Chapter	Subject	Page
८३	शैलघथ	७	83.	The Death of Shangk	7
८४	धृतराष्ट्र सम्भव-सम्वाद	१५	84.	Dhritrashtra and Sanjaya	15
८५	अर्जुनकी वीरता	२१	85	Arjun's bravery.	21
८६	अर्जुन व भीष्म	२८	86	Arjun and Bhishm.	28
८७	भीष्म और युधिष्ठिर	३४	87.	Bhishm and Yudhishtir.	34
८८	भगदत्तकी वीरता	४०	88.	Bhagdatta's bravery.	40
८९	दुर्योधन भीष्म सम्वाद	४५	89	Duryodhan and Bhishm.	45
९०	मत्तमातंगोंकानाश	५०	90.	Destruction of Matta-Matangi.	50
९१	इरावानकी उत्पत्ति	५४	91.	Iraavan's origin.	54
९२	घटोत्कच व दुर्योधनयुद्ध	६४	92.	Ghatotkach and Duryodhan.	64
९३	" "	६७	93.	" "	67
९४	" "	७२	94.	" "	72
९५	भीमसेन व अश्वत्थामा	७७	95.	Bhim and Ashwathama.	77
९६	इरावान वध	८३	96.	Iraavan killed.	83
९७	छटा दिन	९२	97.	The sixth day.	92
९८	दुर्योधन भीष्म सम्वाद	४८०१	98.	Duryodhan and Bhishm.	4801
९९	" "	६	99	" "	6
१००	अर्जुन और भीष्म	१२	100.	Arjun and Bhishm.	12
१०१	अलम्बुष व अभिमन्यु	१५	101.	Alamvush and Abhimanyu	15
१०२	" "	२१	102.	" "	21
१०३	द्रोणाचार्य व अर्जुन	२८	103	Dronacharya and Arjun.	28
१०४	अर्जुन व भीष्म	३३	104.	Arjun and Bhishm.	33
१०५	अर्जुन व सुशर्मा	३८	105.	Arjun and Susharma.	38
१०६	कौरवी सेना का परास्त होना	४३	106.	Defeat of the Kaurav army.	43
१०७	पांडवों की सेना का नाश	४७	107.	Destruction of the Pandav army.	47
१०८	भीष्म की मृत्युका उपाय	५६	108.	Plan of Bhishm's death.	56
१०९	शिखंडी व भीष्म	६९	109.	Shikhandi and Bhishm.	69
११०	दुर्योधन भीष्म सम्वाद	७६	110.	Duryodhan and Bhishm.	76
१११	दुश्शासन व अर्जुन	८१	111.	Dushasan and Arjun.	81
११२	द्वन्द्व युद्ध	८७	112.	Duelling.	87
११३	द्रोणाचार्य व अश्वत्थामा	९३	113.	" "	93
११४	भगदत्तादि व भीष्म	९८	114.	" "	98
११५	शिखंडी व भीष्म	४९०५	115.	" "	4905
११६	दशवें दिन का युद्ध	१०	116.	The tenth day.	10
११७	" "	१५	117.	" "	15
११८	" "	२४	118.	" "	24
११९	" "	३२	119.	" "	32
१२०	भीष्म वध	३८	120.	Bhishm's fall.	38
१२१	बाणों का तकिया	५३	121.	The pillow of arrows.	53
१२२	" "	५८	122.	" "	58
१२३	भीष्मोपदेश	६२	123.	Bhishm's advice.	62
१२४	भीष्म व करण का सम्वाद	६५	124.	Bhishm and Karan.	65